Barcode - 99999990000743
Title - choirasi vaishnavm ki varta
Subject - history
Author - parik,dawarka das
Language - hindi
Pages - 1135
Publication Year - 1955
Creator - Fast DLI Downloader
https://github.com/cancerian0684/dli-downloader
Barcode EAN.UCC-13
9 999999 000074

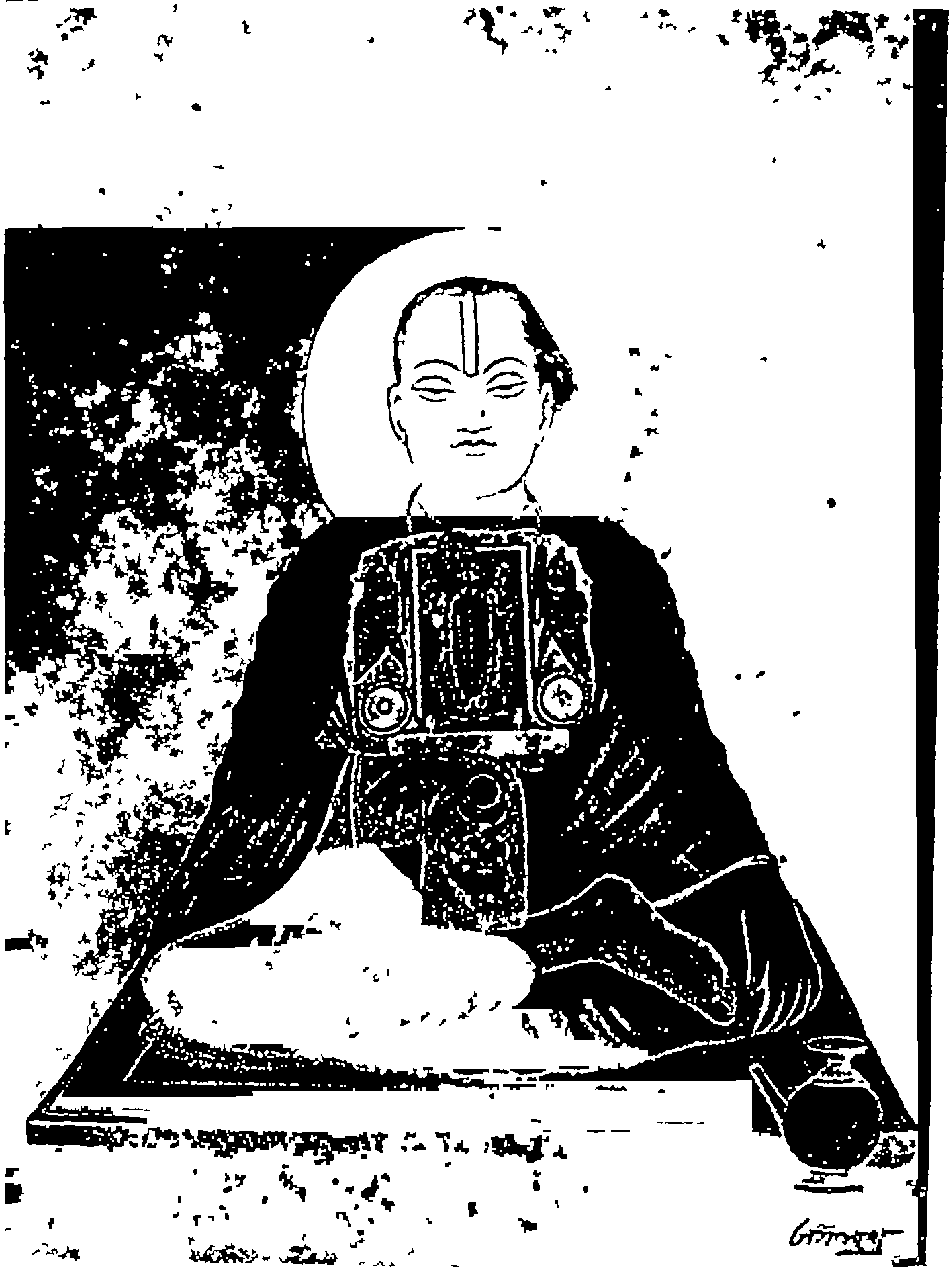

श्रीमन्महाप्रभु वल्लभाचार्यजी.

" नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि-शायिन ।
लक्ष्मीसहस्र-लीलाभि: सेव्यमान कलानिधिम् ॥ "

—सुबोधिनी [१० स्क० मङ्गलाचरण की कारिका]

श्रीवल्लभीय ग्रन्थमाला पुष्प—३

गो० श्रीहरिरायजी प्रणीत

* चौरासी वैष्णवन की वार्ता *

[तीन जन्म की लीला भावना वाली]

सं० १७५२ की प्रति—

[गुजराती अविकल अनुवाद सह]

गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज, कांकरौली की आज्ञानुसार.

★

सपादक, प्रकाशक :

द्वारकादास परीख

मंत्री, अष्टछाप स्मारक समिति, मथुरा.

★

द्वितीय संस्करण
प्रति १२५०

मूल्य १०)

सं. २०१० वि.
वल्लभाब्द ४७६

★

मुद्रक :

पंडित मोतीदासजी चेतनदासजी

श्री कबीर प्रिन्टींग प्रेस,

'चेतनधाम', सीयाबाग–वडोदा.

ता० १७–२–५४

मिलने का पता :— (१) 'श्रीवल्लभीय सुधा' कार्यालय–मथुरा.

(२) मोरवाला जीन–डभोई.

प्रासङ्गिक

※

श्रीमन्महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश की प्रेरणा से आज से पाच वर्ष पूर्व हमने प्रस्तुत ग्रंथकी प्रथम आवृत्ति 'अग्रवाल प्रेस' मथुरा से प्रकाशित की थी। उस समय कागजो एव प्रकाशनों पर सरकार का कठोर नियन्त्रण था। उसके फल स्वरूप हम को काफी खर्च के बाद भी बडी मुश्किल से प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन की स्वीकृति प्राप्त हुई थी और वह भी केवल ८८० पृष्ठों में ही। इन पृष्ठों में ये वार्ताएँ बडिक टाइपों में ग्रंथ में प्राप्त ११६ पदों के पूरे उद्धरणों के साथ छपना सर्वथा असभव था। इसलिये ८० वार्ताओं को बडिक टाइपों में छाप कर शेष अष्टछाप की बृहद् चार वार्ताओं को छोटे टाइपों में लेना आवश्यक हो गया था। और पदों का भी सिर्फ प्रारंभिक अश दे कर ही हमें सतोष मानना पडा था। पदों को पूरे नहीं देने में एक कारण और भी था और वह ग्रंथ की अनेक 'सूचियाँ' एवं 'परिचय' आदि की बृहद् प्रस्तावना देना भी। हमारा यह प्रकाशन-प्रयास केवल साहित्यिक दृष्टि से हुआ था, इसलिये हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में इन वार्ताओं की प्रामाणिकता एवं प्राचीनता का ज्ञान कराना हमारे लिये अत्यावश्यक था। उसके लिये अनेक 'सूचियाँ' ग्रंथ परिचय' आदि विस्तृत निबंध देने भी अपेक्षित थे। हमें सतोष है कि इस हमारे प्रयत्न से हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के तटस्थ विद्वानोंने ८४ वार्ताओं की प्रामाणिकता स्वीकार कर ली है और विरोध पक्ष के अनेक तर्कों को निरुपयोगी भी मान लिया है। इधर सम्प्रदाय में, पूरे पद न दे सकने की हमारी विवशता का अन्यथा प्रचार भी हुआ। साथ में उसकी बहुमूल्य कीमत का भी उस अन्यथा प्रचार में उपयोग किया गया था। पूरे पदों को न देने का कारण तो हम ऊपर कह आए ही हैं अत कीमत के विषय में भी हम कुछ स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहते हैं। हमारे सभी प्रकाशन प्रचारार्थ ही होते हैं, उसमें स्वस्वार्थ साधने की व्योपारी-भावना सर्वथा नहीं होती है। फिर भी प्रकाशन बहुमूल्य होता है उसके कई कारण हैं, जिनमेंसे मुख्य ये हैं-१ हमारे प्रकाशन डेढ, दो हजार से ज्यादा नहीं छपते हैं २ प्रकाशनों के कागज आदि उत्तमोत्तम होते हैं। ३ चित्रों आदि का व्यय भी काफी होता हैं, ४ पुस्तक उपलब्धि, सपादन आदि में भी काफी खर्च होता है, ५ हिन्दी साहित्य में प्रचारार्थ १०० से अधिक पुस्तकें बिना मूल्य दी जातीं हैं। ऐसे कई कारणों से इन प्रकाशनों की बहुमूल्यता समझ में आ सकती है। **यह भी स्पष्ट कह देना आवश्यक है कि इन ग्रंथों की बिक्री के द्रव्य को श्रीमद् भागवत की वृत्ति के समान ही हम निषिद्ध समजते हैं। अतः यह हमारे उपयोग का नहीं है। हमने जिस योजना से इस कार्य को प्रारंभ किया है वह पूर्ण होने पर इसका शेष द्रव्य 'अष्टछाप स्मारक-समिति' को सौंप दिया जायगा जिसमेंसे 'सुधा' प्रकाशित होती रहेगी। हम ऐसी भूल करना सर्वथा नहीं चाहते कि बिक्री के इस तुच्छ द्रव्य के बदले में हमारी अपनी असाधारण मूल्यवान् भगवद् भावजनक सेवा का बलिदान दें।** अस्तु

हिन्दी, गुजराती सम्मिलित इस-संस्करण के प्रकाशन का कारण भी हमें स्पष्ट कर देना आवश्यक है, जिससे किसी के हृदय में हरिफाई आदि का भी भ्रम न हो।

पांच वर्षों में हमारा प्रथम सस्करण विशेषतः गुजरात के साम्प्रदायिक जगत में ही समाप्त हुआ तब हिन्दी साम्प्रदायिक जगत में इनकी मांग वढ़ी। इसलिये हिन्दी में इसके द्वितीय सस्करणकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इधर कई एक प्रतिष्ठित व्रजभाषा के अध्ययनशील गुजराती व्यक्तिओंने इसके अध्ययनात्मक अविकल गुजराती अनुवाद की भी जोरोंसे माग की। इसलिये हमकों उसका अविकल गुजराती अनुवाद करना पडा और उसके साथ ही उसे सयुक्त रूपमें प्रकाशित करना भी आवश्यक हुआ। इस अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद में सबसे वडी मुश्किली उसकी भाषा की है। मूल व्रजभाषा की वार्ताएँ प्रधानतः वातचीत्त की ग्राम्य व्रजभाषा है। अतः मूलवार्ता में कई वाक्य अपूर्ण भी मिलते हैं।

इन अपूर्ण वाक्यों को तो कोंस के शब्दों से पूर्ण कर लिया जा सकता है और कर भी दिया है। किंतु उसके अविकल गुजराती अनुवाद की भाषा में गुजराती भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सकता है। जैसा कि प्रायः प्रत्येक वाक्य मूल में 'सो' से प्रारभ होता है जिसका गुजराती अर्थ 'ते' होता है। वेर वेर यह 'सो' ('ते') का आना भाषा के प्रौढ रूप को आच्छादित कर देता है। अत. भाषाविज्ञान के आधुनिक विद्वानों को यह कंकर की तरह अखरेगा। फिर भी अविकल अनुवाद में उसको छोडा नहीं जा सकता है। अत पाठकों को चाहिए कि उसके उच्चारण के समय उस पर कम भार देकर वाचे। क्योंकि हम पहले ही कह आए है कि ये वार्ताएँ वातचीत की भाषा में हैं। अतः उसमें 'तकिया कलाम' की तरह 'सो' का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसी प्रकार अन्य भी स्थानों में कई अप्रचलित प्राचीन रूपों के कारण भी अविकल अनुवाद की गुजराती भाषा प्रौढ एव मनोहर नहीं हो सकती है, जैसा कि 'श्रीआचार्यजी आपु कहे' इसका गुजराती अविकल अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहे' होता है। जहा यह वाक्य वर्तमानकाल के लिये प्रयुक्त हुआ है वहा तो उक्त अनुवाद ठीक ही रहेगा किंतु जहा यही वाक्य भूतकाल में आया है वहा उसका अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कह्युं' अथवा श्रीआचार्यजी (ए) पोते कह्यु' ऐसा ही करना होगा। किंतु इससे प्राचीन व्रजभाषा का वह स्वारस्य प्रकट नहीं होता है जो मूल के पढने से हृदय में भाव रूप से ज्ञात होता है। इस प्रकार अन्य भी कई स्थलों में अविकल अनुवाद से भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सका है। फिर भी जहा तक हो सका है हम मूल से दूर नहीं गए हैं। अनुवाद में भी हमारा उद्देश्य वार्ताकार की भाषा, शब्द, भाव, शैली से जहां तक हो सके दूर या विमुख न होना ही रहा है। क्योंकि मूल वार्ता महानुभावों की वाणी होने से हृदय में भावों को प्रकट करने में एवं उसके रसास्वाद को लेने में विद्युत के 'करट' के समान कार्य करती है। अतः उस करंट को गुजराती अनुवाद में भी जहां तक हो सका है छोडा नही गया है। इसी प्रकार जहा तक हो सका है अर्थ समझाने के लिये भी अपने घर के शब्द नहीं मिलाये हैं, जहा अपने घर के शब्द धरने आवश्यक प्रतीत हुए वहॉ कोंस में वा पृथक् विवेचन रूप से उन्हें पादटीप मे ही रखे हैं। इसी प्रकार प्राकृत शब्दों को भी जहा तक हो सका है नहीं आने दिया है। 'साम्प्रदायिक भाषा' एव शब्दों की जहां तक हो सका है रक्षा ही की है। इस प्रकार हमने यथाबुद्धि अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद की दृष्टि से इस गुजराती अनुवाद को प्रकाशित किया है। इसीलिये हमने गुजराती एव व्रजभाषा के दो भिन्न ग्रंथ नहीं किये हैं। फिर भी कीमत प्रथम आवृत्ति से भी कम रु १०) ही रखी है।

यहा यह भी कह देना आवश्यक है कि हमने प्रथम केवल गुजराती अनुवाद की जाहिरात की थी जिसका मूल्य प्रथम से रु. ३) और पीछे से रु ५) जाहिर किया था। अतः जिन महानुभावों ने प्रारंभ से रु. ३) दिया है उनको अब सिर्फ ५) ही देने होंगे। यदि उनको यह सम्मिलित सस्करण की अपेक्षा न हो तो वे अपने रुपए वापिस भी ले सकते हैं।

प्रासङ्गिक

※

श्रीमन्महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश की प्रेरणा से आज से पांच वर्ष पूर्व हमने प्रस्तुत ग्रथकी प्रथम आवृत्ति 'अग्रवाल प्रेस' मथुरा से प्रकाशित की थी। उस समय कागजो एवं प्रकाशनों पर सरकार का कठोर नियन्त्रण था। उसके फल स्वरूप हम को काफी खर्च के बाद भी बड़ी मुश्किल से प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन की स्वीकृति प्राप्त हुई थी और वह भी केवल ८८० पृष्ठों में ही। इन पृष्ठों में ये वार्ताएँ वहिक टाइपों में ग्रथ में प्राप्त ११६ पदों के पूरे उद्धरणों के साथ छपना सर्वथा असभव था। इसलिये ८० वार्ताओं को वहिक टाइपों में छाप कर शेष अष्टछाप की वृहद् चार वार्ताओं को छोटे टाइपों में लेना आवश्यक हो गया था। और पदों का भी सिर्फ प्रारंभिक अश दे करही हमें सतोष मानना पडा था। पदों को पूरे नहीं देने में एक कारण और भी था और वह ग्रथ की अनेक 'सूचियाँ' एवं 'परिचय' आदि की बृहद् प्रस्तावना देना भी। हमारा यह प्रकाशन-प्रयास केवल साहित्यिक दृष्टि से हुआ था, इसलिये हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में इन वार्ताओं की प्रामाणिकता एवं प्राचीनता का ज्ञान कराना हमारे लिये अत्यावश्यक था। उसके लिये अनेक 'सूचियाँ' ग्रथ परिचय' आदि विस्तृत निवध देने भी अपेक्षित थे। हमें सतोष है कि इस हमारे प्रयत्न से हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के तटस्थ विद्वानोंने ८४ वार्ताओं की प्रामाणिकता स्वीकार कर ली है और विरोध पक्ष के अनेक तर्कों को निरुपयोगी भी मान लिया है। इधर सम्प्रदाय में, पूरे पद न दे सकने की हमारी विवशता का अन्यथा प्रचार भी हुआ। साथ में उसकी बहुमूल्य कीमत का भी उस अन्यथा प्रचार में उपयोग किया गया था। पूरे पदों को न देने का कारण तो हम ऊपर कह आए ही हैं अत कीमत के विषय में भी हम कुछ स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहते हैं। हमारे सभी प्रकाशन प्रचारार्थ ही होते है, उसमें स्वस्वार्थ साधने की व्योपारी-भावना सर्वथा नहीं होती है। फिर भी प्रकाशन बहुमूल्य होता है उसके कई कारण हैं, जिनमेंसे मुख्य ये हैं-१ हमारे प्रकाशन डेढ, दो हजार से ज्यादा नहीं छपते हैं २ प्रकाशनों के कागज आदि उत्तमोत्तम होते हैं। ३ चित्रों आदि का व्यय भी काफी होता हैं, ४ पुस्तक उपलब्धि, सपादन आदि में भी काफी खर्च होता है, ५ हिन्दी साहित्य में प्रचारार्थ १०० से अधिक पुस्तकें विना मूल्य दी जातीं हैं। ऐसे कई कारणों से इन प्रकाशनों की बहुमूल्यता समझ में आ सकती है। **यह भी स्पष्ट कह देना आवश्यक है कि इन ग्रंथों की विक्री के द्रव्य को श्रीमद् भागवत की वृत्ति के समान ही हम निषिद्ध समजते हैं। अतः यह हमारे उपयोग का नहीं है। हमने जिस योजना से इस कार्य को प्रारंभ किया है वह पूर्ण होने पर इसका शेष द्रव्य 'अष्टछाप स्मारक-समिति' को सौंप दिया जायगा जिसमेंसे 'सुधा' प्रकाशित होती रहेगी। हम ऐसी भूल करना सर्वथा नहीं चाहते कि विक्री के इस तुच्छ द्रव्य के बदले में हमारी अपनी असाधारण मूल्यवान् भगवद् भावजनक सेवा का बलिदान दें।** अस्तु

हिन्दी, गुजराती सम्मिलित इस संस्करण के प्रकाशन का कारण भी हमें स्पष्ट कर देना आवश्यक है, जिससे किसी के हृदय में हरिफाई आदि का भी भ्रम न हो।

पाच वर्षों में हमारा प्रथम सस्करण विशेषत: गुजरात के साम्प्रदायिक जगत में ही समाप्त हुआ तब हिन्दी साम्प्रदायिक जगत में इनकी मांग वढ़ी। इसलिये हिन्दी में इसके द्वितीय सस्करणकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इधर कई एक प्रतिष्ठित व्रजभाषा के अध्ययनशील गुजराती व्यक्तिओंने इसके अध्ययनात्मक अविकल गुजराती अनुवाद की भी जोरोंसे माग की। इसलिये हमको उसका अविकल गुजराती अनुवाद करना पडा और उसके साथ ही उसे सयुक्त रूपमें प्रकाशित करना भी आवश्यक हुआ। इस अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद में सवसे वडी मुश्किली उसकी भाषा की है। मूल व्रजभाषा की वार्ताएँ प्रधानतः वातचीत की ग्राम्य व्रजभाषा है। अतः मूलवार्ता में कई वाक्य अपूर्ण भी मिलते हैं।

इन अपूर्ण वाक्यों को तो कौंस के शब्दों से पूर्ण कर लिया जा सकता है और कर भी दिया है। किंतु उसके अविकल गुजराती अनुवाद की भाषा में गुजराती भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सकता है। जैसा कि प्राय: प्रत्येक वाक्य मूल में 'सो' से प्रारभ होता है जिसका गुजराती अर्थ 'ते' होता है। वेर वेर यह 'सो' ('ते') का आना भाषा के प्रौढ रूप को आच्छादित कर देता है। अतः भाषाविज्ञान के आधुनिक विद्वानों को यह कंकर की तरह अखरेगा। फिर भी अविकल अनुवाद में उसको छोडा नहीं जा सकता है। अत पाठकों को चाहिए कि उसके उच्चारण के समय उस पर कम भार देकर वाचे। क्योंकि हम पहले ही कह आए हैं कि ये वार्ताएँ वातचीत की भाषा में हैं। अत: उसमें 'तकिया कलाम' की तरह 'सो' का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसी प्रकार अन्य भी स्थानों में कई अप्रचलित प्राचीन रूपों के कारण भी अविकल अनुवाद की गुजराती भाषा प्रौढ एव मनोहर नहीं हो सकती है, जैसा कि 'श्रीआचार्यजी आपु कहे' इसका गुजराती अविकल अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहे' होता है। जहा यह वाक्य वर्तमानकाल के लिये प्रयुक्त हुआ है वहा तो उक्त अनुवाद ठीक ही रहेगा किंतु जहा यही वाक्य भूतकाल में आया है वहा उसका अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कह्युं' अथवा श्रीआचार्यजी (ए) पोते कह्यु' ऐसा ही करना होगा। किंतु इससे प्राचीन व्रजभाषा का वह स्वारस्य प्रकट नहीं होता है जो मूल के पढने से हृदय में भाव रूप से ज्ञात होता है। इस प्रकार अन्य भी कई स्थलों में अविकल अनुवाद से भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सका है। फिर भी जहा तक हो सका है हम मूल से दूर नहीं गए हैं। अनुवाद में भी हमारा उद्देश्य वार्ताकार की भाषा, शब्द, भाव, शैली से जहा तक हो सके दूर या विमुख न होना ही रहा है। क्योंकि मूल वार्ता महानुभावों की वाणी होने से हृदय में भावों को प्रकट करने में एव उसके रसास्वाद को लेने में विद्युत के 'करट' के समान कार्य करती है। अतः उस करंट को गुजराती अनुवाद में भी जहा तक हो सका है छोडा नही गया है। इसी प्रकार जहा तक हो सका है अर्थ समझाने के लिये भी अपने घर के शब्द नहीं मिलाये हैं, जहां अपने घर के शब्द धरने आवश्यक प्रतीत हुए वहाँ कौंस में वा पृथक् विवेचन रूप से उन्हें पादटीप में ही रखे हैं। इसी प्रकार प्राकृत शब्दों को भी जहा तक हो सका है नहीं आने दिया है। 'साम्प्रदायिक भाषा' एव शब्दों की जहा तक हो सका है रक्षा ही की है। इस प्रकार हमने यथाबुद्धि अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद की दृष्टि से इस गुजराती अनुवाद को प्रकाशित किया है। इसीलिये हमने गुजराती एव व्रजभाषा के दो भिन्न ग्रंथ नहीं किये हैं। फिर भी कीमत प्रथम आवृत्ति से भी कम रु १०) ही रखी है।

यहा यह भी कह देना आवश्यक है कि हमने प्रथम केवल गुजराती अनुवाद की जाहिरात की थी जिसका मूल्य प्रथम से रु. ३) और पीछे से रु ५) जाहिर किया था। अतः जिन महानुभावों ने प्रारंभ से रु. ३) दिया है उनको अब सिर्फ ५) ही देने होंगे। यदि उनको यह सम्मिलित संस्करण की अपेक्षा न हो तो वे अपने रुपए वापिस भी ले सकते हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
૬૬	૧૮	હું લૌકિક છે	હું લૌકીક છું
૭૨	૨૧	પધરાવી લાવ્યા (પહેલા)	પધરાવી લાવ્યા, પ્રીતિ પૂર્વક સેવા કરવા લાગ્યા (પહેલા)
૭૬	૨૨	એક કામ હતો	એક કામ હતુ.
૮૯	૨૨	સાત્વિક ભક્ત છે.	સાત્વિક ભક્ત છે પદ્મનાભદાસની આજ્ઞામાં તત્પર છે
૯૨	૨૧	તે તુલસાંનો વૈષ્ણવ પર	તે તુલસાંનું વૈષ્ણવ પર
૧૧૩	૨૪	ચાલીને જતા.	ચલાવીને જતા
૧૨૫	૧૭	બધાનો ઉત્તર મળ્યો.	બધાને ઉત્તર મળ્યો.
૧૩૨	૨૮	શ્રીગુસાંઇજી ભગવદીયના ગુન..કહે	શ્રીગુસાંઇજીએ ભગવદીયના ગુણ. કહ્યા.
૧૫૧	૧૯	દોઢ ગઇ પરન્તુ	દોઢ ગઇ, સૂઇ રહ્યા પરન્તુ
૧૫૧	૨૧	યધપિ એ જલ	યદ્યપિ એમણે જલ
૧૬૭	૩૧	પ્રભુજીદ્વારા થશે	પ્રભુજીની દ્વારા થાય
૧૮૨	૧૫	સેવા નથી કરી	સેવા ન કરી.
૧૯૩	૨૦	શ્રીનવનીત પ્રિયજી પણ રોકે નહીં	શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ પણ રોક્યા નહીં.
૨૨૨	૨૩	(લહેરીયા દાર પાઘ)	(જરીની પાઘ)
૨૩૨	૩૦	મુકુંદદાસે કહી	મુકુંદદાસે કહ્યું.
૨૩૪	૧૬	બતાવે છે	બતાવીએ છીએ
૨૪૬	૨૯	વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડે	વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડયું
૨૬૨	૩૧	તેજ પ્રકારે	તેમજ
૩૦૭	૨૨	સેવા કરે	સેવા કરો
૩૦૮	૨૭	હતો, અષ્ટભુજાજી	હતું. અષ્ટભુજાજી
૩૧૭	૨૨	ગોપાલદાસે પદ્મારાવલને	ગોપાલદાસને પદ્મારાવલે
૩૨૧	૩૦	પુરુષોત્તમ જોશીને કહ્યુ	પુરુષોત્તમ જોશીની વહુને કહ્યું.
૩૩૯	૨૭	વેષથી તેમજ તે ઝાડ	વેષથી તેજ પ્રકારે તે ઝાડ
૩૪૨	૨૮	વૈષ્ણવ થાય તો	વૈષ્ણવ થઇએ તો
૪૨૪	૨૫	ભંડારમાં દે છે	ભંડા માં દઉં છુ
૪૨૪	૨૮	વાસુદેવદાસને કર્યાં હશે	વાસુદેવદાસે કર્યા હશે
૪૪૩	૩૦	એમનું શરીર	એમનાં શરીર
૪૪૯	૩૧	આપ પધારે ?	આપ પધાર્યા ?
૪૮૦	૨૯	જે બીજા પ્રકારે	જો બીજા પ્રકારે
૪૮૪	૨૮	એ રહે છે કે	એ રહે કે
૫૦૩	૨૦	બીજો થાન પણ	અને થાન પણ

—(अनुसंधान ' प्रासङ्गिक ' पत्र ३ पर)

શેઠ શ્રી. બાલાભાઇ દામોદરદાસ (અમદાવાદ.)

(જન્મ સંવત ૧૯૧૪ આસો વદ ૩)

શેઠ શ્રી બાલાભાઇ દામોદરદાસ

સ્થળ : અમદાવાદ. **જન્મ :** સં. ૧૯૧૪ આસો વદ ૩.

કેળવણી : મેટ્રીક પાસ. **ગુરુદેવ :** નિ. ગો. શ્રી મદુલાલ મહારાજશ્રી.

જીવનની મહત્વની વિગત :–તેમના પિતાશ્રી દામોદરદાસ મહોલ્લાલ એક શરાફને ત્યા મુનીમગીરી કરતા હતા તેમના માતાજીનું નામ મહાકોરબાઇ હતું. રા. બા. રણછોડલાલ છોટાલાલ, શેઠ પ્રેમાભાઇ હીમાભાઇ, શ્રી અચરતલાલ ગિરધરલાલની સાથે તેઓને સારી મિત્રતા હતી. અમેરીકા, ઇગ્લેંડ વગેરેથી રૂ ના ભાવ મંગાવી તેઓ વ્યાપાર કરતા. આથી આ મંડળી ‘ શોધન ’ ના નામથી ઓળખાતી આજે તેના કુળની એક અટક છે પિતાજીના સ્વર્ગવાસ બાદ તેઓ રૂ ૨૫-૦-૦ ના માસિક પગારથી શાહપુર મીલમાં સ્ટોરકીપરની નોકરી પર રહ્યા. રૂ. ૫૦ ના પગારથી માધુબાઇ મીલ્સમાં સેલ્સમેન તરીકે જોડાયા. સાહસિક વૃત્તિથી મધ્યમ સ્થિતિમાં હોવા છતા શેઠ મંગળદાસ ગિરધરદાસની ભાગીદારીમાં ‘ ધી આર્યોદય સ્પીનીગ એન્ડ વીવીગ મીલ્સની સ્થાપના કરી તેના એજન્ટસ તરીકે મંગળદાસ એન્ડ બાલાભાઇની કું. ના નામથી શરૂઆત કરી વ્યાપારી કુનેહથી આ મીલ આજે પણ સારી ચાલે છે.

સને ૧૯૦૫ માં પોતાના પુત્ર સાકરલાલ બાલાભાઇની કું. એજન્ટસના નામથી “ ધી સારંગપુર કોટન મે. કું. લી. ” એ નામની મીલ ઉભી કરી **સારંગપુર મીલ નં. ૧ ઉભી કરી.** સને ૧૯૨૨ મા ધી સીલ્વર કોટન મીલ્સના એજન્ટસ ગોપાલભાઇ બાલાભાઇની કુ. એ નામથી મીલની સ્થાપના કરી બીજી કેટલીક મીલોમા તેઓ ડાયરેકટર છે. ૯૪ વર્ષની ઉંમરે પણ તેઓ મીલમા જાય છે. કામકાજનું ધ્યાન રાખે છે. દરરોજ શ્રી ગુસાંઇજીની બેઠકે અસારવા તથા સાંજે શ્રી નટવરલાલ શ્યામલાલના મંદિરે દર્શન કરવા જાય છે. મથુરાંમા ૨૫ વર્ષ ઉપર રૂ. ૮૦૦૦૦) ના ખર્ચે “ દામોદરભુવન ” નામની ધર્મશાળા બંધાવી છે. કાંકરોલીમા “ મહાકોર ભુવન ” ધર્મશાળા બંધાવી છે. વ્રજમા જતીપુરા શ્રી ગિરિરાજજીમાં મોતી મહેલમા “ કુંજ ભુવન ” નામે ધર્મશાળા બંધાવી છે.

સં ૧૯૪૪ મા ચિ. ગો. શ્રી નટગોપાલજી બાવાશ્રીના યજ્ઞોપવિત પ્રસ્તાવમા કમિટીના અધ્યક્ષ તરીકે રહ્યા હતા મંદિરના બાંધકામમા તથા સેવાના કાર્યમા અગ્રેસર રહ્યા હતા. સ્થાનિક વૈષ્ણવ મહાસભાના અધ્યક્ષ છે સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોમા યથાશક્તિ મદદ કરે છે. જાહેર જીવનમાં ગુજરાત વૈશ્ય સભા, મીલ ઓનર્સ એસોસીએશન, મ્યુનીસીપાલિટીમાં રહી સેવા બજાવી છે. તેમના પત્ની રૂક્મણીબાઇની ઉમર ૭૫ વર્ષની થઇ ત્યાં સુધી સાથે રહી તીર્થયાત્રાઓ કરતાં. તેમનું અલગ જીવનચરિત્ર છાપેલુ છે.

શ્રી નાથદ્વારા અને વ્રજની પરિક્રમામા રહીને બન્ને પતિ પત્ની કુટુંબ સહિત ધાર્મિક જીવન ગાળતા પરીણામે તેમના પુત્ર પૌત્ર પુત્રીઓ મોતી બ્હેન, સમરથ બ્હેન, શિવગંગા બ્હેન, પુત્રવધુ અ. સૌ ચંપા બ્હેન વગેરે સેવાપરાયણ જીવન ગાળે છે. પ્રભુને ભોગ ધરાવીને લે છે. સુબોધીનીજી વિગેરેના પ્રવચન સાંભળે છે. શરૂઆતમા તેઓશ્રી સરયુદાસજી વગેરે મર્યાદામાર્ગીય ભક્તોના સમાગમમા હતા. ૫ ભ. ગો. શ્રી મનોહરદાસજી વગેરે મહાનુભાવી ભક્તોના સમાગમમાં આવતા

પુષ્ટિમાર્ગની અલૌકિક સિદ્ધિઓનું જ્ઞાન થયું અને પોષણુ મલ્યું નિ. ગો. શ્રી મટુજી મહારાજે નાથદ્વારામાં આપને બ્રહ્મસબધ આપ્યું હતું. શ્રી યમુના મહારાણીજી, ગો. શ્રી રણુછોડલાલજી મહારાજ વિગેરેની કૃપાથી રોજ ચારથી પાચ કલાક ધાર્મિક ગ્રંથો વાચે છે હરિ, ગુરૂ, વૈષ્ણુવ પ્રત્યે સારી ભાવના સેવે છે. શરીર સપત્તિ સારી છે. યાદ શકિત સારી છે. સ્વભાવે બુદ્ધિશાળી, આનદી અને મિલનસાર છે. ૮૪ વૈષ્ણુવોની વાર્તાનું ભાવભાવના સાથેનુ પુસ્તક પ્રકટ કરવા શ્રી દ્વારકાદાસ પરીખને ઘણી સારી આર્થીક મદદ કરી હતી

ખાસ શૉખ : પુષ્ટિમાર્ગીંય પુસ્તકોનું વાંચન, સત્સંગ, રમતગમત,

લગ્ન : સ્વ રૂક્ષ્મણી બહેન.

સરનામું : એલિસબ્રિજ, પો. બો ન ૧૯, ટે. નં. ૭૦૦૫

પરિવારની નોંધ : એક પુત્ર શેઠ શ્રી સાકરલાલ બાલાભાઇ તથા પુત્રીઓ

પ. ભ. શેઠ બાલાભાઇ દામોદરદાસનાં ધર્મપત્ની
ગો. વા. પ. ભ. રૂક્ષ્મણીબા (અમદાવાદ)
(જન્મ સવત ૧૯૨૦ પોસ વદ ૪)

પ. ભ. શેઠ બાલાભાઇ દામોદરદાસનાં ધર્મપત્ની
ગો. વા. પ. ભ. રૂક્ષ્મણીબા.

પ ભ રૂક્ષ્મણીબાનો જન્મ સ. ૧૯૨૦ની સાલમા પોસ વદ ૪ ના રોજ વીસા પોરવાડ મેશ્રી વણિક જ્ઞાતિમાં સાધારણ વૈશ્ણુવ કુટુંબમાં થયો હતો. માતા તેમજ પ્રમાતા બન્નેને મરજાદ હતી. તેથી તેમના વૈષ્ણુવતાના સારા સંસ્કાર ગર્ભથી જ હતા. પિતા નાની ઊમરમા મૂકી હરીશરણ થયેલા તેથી માતા તથા દાદીમાના હાથ નીચે ઉછરેલા. તે પ્રખ્યાત શોધન કુટુંબમા શેઠ બાલાભાઇ દામોદરદાસ સાથે દેહસંબંધથી જોડાયાં.

શ્રી રૂક્ષ્મણીએને પ્રથમ મર્યાદાભકતો, મહાત્મા સરયુદાસજી મોહનદાસજી વિગેરેનો સત્સંગ કરેલો. પુષ્ટિભકિતની વ્યાખ્યામા કહેલું છે તે પ્રમાણે દઢતા બધાયા પછી પુષ્ટિ ભગવદ્ભકનો જેવા કે બચુભાઇ જેકીશનદાસ, મનોહરદાસજીના સત્સંગથી ભાવનામાં વૃદ્ધિ થઇ. ૪૦ વર્ષ સુધી મર્યાદામાર્ગીય ભકતોના સમાગમ પછી જે શુદ્ધ પુષ્ટિ જીવ છે તેને પ્રભુ પોતા તરફ આકર્ષણના પ્રસંગો કરી આપે છે.

સંવત ૧૯૬૦ માં કાંકરોલીવાળા-બાળકૃષ્ણુલાલજી મહારાજની વ્રજપરિક્રમા માં કુટુંબ સાથે ગયા હતાં. વ્રજભૂમીનો પ્રતાપ તેમ વલ્લભકુળના ભાવના પ્રધાન સ્વરૂપોથી આકર્ષાઇ સેવામાં ચિત્ત ચોટયુ અને ઘરમા સેવા પધરાવી રાજસેવા કરવા લાગ્યાં. પુષ્ટિભકતો તેમજ ગોસ્વામી બાળકોને ઘેર બોલાવી તન મન ધનથી સેવા કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા છે. તેઓ સફળ મનોરથી હતા.

મનોરથો.

(૧) ભગવદ્ સ્વરૂપ શ્રીમદ્-ભાગવત છે એવુ તે માનતાં જેથી સપ્તાહો દ્વારા તેનું શ્રવણ કરતાં. હષિકેશ, મથુરા સિદ્ધપુર, નૈમિષારણ્ય, વગેરે સ્થળોએ જઇ શ્રીમદ્ ભાગવત સપ્તાહ દ્વારા ભાવપૂર્વક શ્રવણ કરતા.

(૨) પોતાનું દ્રવ્ય યોગ્ય માર્ગે ખર્ચાય તે અર્થે મથુરામાં સુયોગ્ય સગવડવાળી પોતાના જેઠ તેમજ પતિને આગ્રહ કરી સં. ૧૯૭૫ ની સાલમાં પોતાના સસરાના નામથી દામોદરભુવન નામની ધર્મશાળા રૂા. ૮૦ હજારના ખર્ચે બધાવી હતી.

(૩) સવત ૧૯૭૬ મા મધુસુદનલાલજી મહારાજની સાથે કુટુંબ સહિત વ્રજ પરિક્રમા પગે ચાલીને કરી હતી.

દરસાલ એક વખત વ્રજમાં અને એક વખત નાથદ્વારમાં શ્રીમુખ જોયા વગર તેમને ચેન પડતું નહી તેથી પંદર વીસ દિવસ રહી. ફરીથી પાછાં જલ્દી બોલાવવાની પ્રાર્થના કરી. સંતોષપૂર્વક શ્રી દર્શન કર્યા બાદ કમને પાછા નીકળતા.

> ' રસિક સ્નેહી દીનતા ભજન અનન્યતા જુષ્ટ
> દયા વૈરાગ્ય ઉદારતા તે કહીયે જનપુષ્ટ '

આમ તે મહારાણીજીના પક્ષનાં હતાં, એટલે દરેક પુષ્ટિ જીવ ઉપર તેમજ શ્રી વલ્લભકુળ ઊપર એક રસપ્રીતિથી દીનતા સહ ટહેલ કરી યથાયોગ્ય સેવા ટહેલ કરતાં

ગો શ્રી ૧૦૮ નિત્યલીલાસ્થ ગોવર્ધનલાલશ્રીની આજ્ઞાથી ' મોતી મહેલમાં ' કુંજ ભુવન નામે સારી સગવડવાળી જગ્યા બધાવી તેનો જતીપુરામાં ઘણી વખત લાભ લીધો છે.

એક વખત શ્રીજીદ્વારમાં ફાગણમાં લાલબાગમાં મોટી ગોઠ આલકો તથા વૈષ્ણવોની કરાવેલી. ત્યાં શ્રી ગોવર્ધનલાલજી તથા દામોદરલાલજી બન્ને હાથી ઉપર પધારે અને સચાના હાથના પપથી કેસુડાંનો છંટકાવ પોતે વૈષ્ણવો પર કરે અને લાલબાગમા પ્રસાદ લે તેવી ગોઠવણ કરી મનોરથ કર્યો હતો. વાવ, કુવા, ગૌશાળા વગેરે બંધાવી પરોપકારી કાર્યો કર્યા હતાં.

વ્રજમાં ગયા ત્યાં કુંદવારા દ્વારા વ્રજવાસીઓના ગામો જમાડે, રાસલીલા તેમજ મંદિરોમાં સામગ્રી પહોચાડવી તેમજ વૈષ્ણવોને ધોતી સાડી વહેંચવી વગેરે કાર્યો દ્વારા દ્રવ્યનો સદુપયોગ કર્યો છે.

પુસ્તકપ્રકાશન દ્વારા—અંગત પૈસાથી વર્ષઉત્સવનાં પદોનું પુસ્તક છપાવી મંદિરો તથા વૈષ્ણવોમાં વહેંચેલુ પૈસાનો સદ્વ્યય કર્યો છે.

સંવત ૧૯૮૧ ની સાલમા નટવરલાલ શામલાલના—તેમના ગુરુઘરના—મંદિરને રીપેર કરવા વૈષ્ણવોએ કમર કસી. તેથી પ્રભુ પ્રેરણાથી તેમણે તે અંગેનુ સર્વકાર્ય પોતાના પતિને હસ્તક લેવા પ્રેર્યા અને ત્રણ લાખનો ખર્ચ કરી વૈષ્ણવોના સાથથી જે ખુટયા તે પોતે ઉમેરી મંદિરોને સંગીન અવસ્થામાં મૂકયાં

એક વખત શ્રી નાથદ્વારા ગયેલા. ત્યા તેમના મનમા ઉત્કટ ભાવના થઇ કે એક વખત શ્રી ઠાકોરજી મારા હાથની સામગ્રી આરોગે.

જાણે પ્રભુએ તેમની પ્રાર્થના સાભળી હોય તેમ શ્રી દામોદરલાલજીને પ્રેરણા થઇ તેમણે શાકગરીયાજીને ઉથાપનમા ટેરાગાં નારગીની જવાપુરી શ્રી રૂક્ષ્મણીબાને નવડાવી તેમના હસ્તક ધરાવવા કહ્યું. પોતાના હક્ક પર તરાપ વાગતી હોય તેમ શ્રી શાકગરીયાજીનો વિરોધ હોવા છતાં તેનો અલૌકિક લ્હાવો શ્રી રૂક્ષ્મણીબાને પ્રાપ્ત થયો હતો.

સવત ૧૯૮૯મા પોતાના ઘરના ઠાકુરજી સાથે શ્રી રણછોડલાલજી મહારાજશ્રી પધરાવી વૈષ્ણવસહિત વૈભવથી વ્રજમા અનેક સ્થળોએ આદર પૂર્વક યાત્રા કરી હતી.

સંવત ૧૯૯૪ ની સાલમાં કાકરોલીવાળા વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજને ત્યા પ્રથમ લાલના પ્રાગટ્ય નિમિત્તે શ્રી દ્વારકાંધિશને વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમા પધરાવી છપ્પન ભોગનો મનોરથ કર્યો હતો. તેમના ગૃહમાં નવનીતલાલજીનું લગ્ન કાનપુર થવાનુ હતુ. આ પ્રસંગે શ્રીજીની છેલ્લી ઝાંખી કરવાની ઇચ્છાથી અશકત શરીર હોવા છતા પણ વદ ૧૨ ના રોજ લગ્ન હોવાને લીધે હિમતભાઇ સાથે કારતક વદ ૬ ના રોજ નીકળી સાતમના કાંકરોલી આવી આઠમના છપ્પન ભોગના દર્શન કરી, ૯ ની મંગળાની ઝાખી કરી, મહાપ્રસાદ લઇ ૧૦ ના રોજ નીકળી ૧૧ ના રોજ સહીસલામત ઇશ્વરકૃપાથી આવી પહોચતા કુટુબીઓના આનંદનો પાર રહ્યો ન હતો

પ. ભ. મનોહરદાસજીનો સં. ૧૯૭૯ની સાલથી સત્સંગ થયો હતો તેમને કેટલીક વખત છ, છ મહીના પોતાને ત્યા રાખી સત્સંગનો લાભ લેતા અને યોગ્ય બરદાસ્ત કરતા તેમના પુત્ર—પુત્રીઓ પૌત્રો દરેકને ત્યા ઠાકુરજી બિરાજે છે.

પ. ભ મનોરથી અને પ્રેમના સ્રોત સરખા શ્રી રૂક્ષ્મણીબેન સ. ૧૯૮૪ ના અષાડ વદ ૪ ના રોજ શ્રી રણછોડલાલજી તેમજ શ્રી ગોવિદલાલજી સુરતવાળાની હાજરીમા આ ફાની દુનિયાનો ત્યાગ કરી પરમ ગતિને પામ્યા

— ८४ वैष्णवों की वार्ताओं की सूची —

★

वार्ता-सं०	नाम	पृष्ठ सं०	प्रसंग सं०
१	दामोदरदास हरसानी	१	१०
२	कृष्णदास मेघन	२७	८
३	दामोदरदास संभलवाले	४१	८
३/१	लौंडी	६६	१
४	पद्मनाभदास	६८	७
४/१	तुलसां	८९	३
४/२	पारवती	९५	१
४/३	रघुनाथदास	९७	१
५	रजो क्षत्राणी	१०२	१
६	सेठ पुरुषोत्तमदास	१०८	१०
६/१	रुक्मिनी	१२८	३
६/२	गोपालदास	१३३	२
७	रामदास सारस्वत	१३५	२
८	गदाधरदास कपिल	१४६	३
९	बेनीदास माधवदास	१५९	२
१०	हरिवंस पाठक	१६९	१
११	गोविंददास भल्ला	१७४	३
१२	अम्मा क्षत्राणी	१८३	२
१३	गज्जन धावन	१८९	२
१४	नारायणदास ब्रह्मचारी	१९५	५
१५	एक क्षत्राणी	२०४	२
१६	जीयदास सूरी	२१७	१
१७	देवा कपूर क्षत्री	२१९	१
१८	दिनकर सेठ	२२१	१
१९	दिनकरदास मुकुंददास	२२८	९
२०	प्रभुदास जलोटा क्षत्री	२३८	४
२१	प्रभुदास भाट	२५०	१
२२	पुरुषोत्तमदास–स्त्री-पुरुष	२५६	१
२३	त्रिपुरदास कायस्थ	२६३	२
२४	पूरनमल जेंवल	२७४	१
२५	जादवेंद्रदास कुम्हार	२८१	३
२६	गुसाईदास सारस्वत	२८४	१
२७	माधवभट्ट काश्मीरी	२८७	४
२८	गोपालदास बासवाड़े वाले	२९५	१
२९	पद्मारावल साचोरा	३०८	४
३०	पुरुषोत्तम जोसी सांचोरा	३१७	१
३१	जगन्नाथ जोसी	३२३	४
३१/१	जगन्नाथ जोसी की माता	३३२	१
३१/२	नरहरि जोसी	३३८	३
३२	राना व्यास सांचोरा	३४८	२
३३	रामदास साचोरा	३६१	१
३४	गोविंद दुबे सांचोरा	३७१	३
३५	राजा दुबे माधो दुबे	३८४	१
३६	उत्तमश्लोकदास	३९८	१
३७	ईश्वर दुबे साचोरा	४०२	१
३८	बासुदेवदास छकड़ा	४०४	७
३९	बाबावेनु, कृष्णदास घघरी जादव खवास	४२६	१
४०	जगतानंद सारस्वत ब्रा०	४३७	१
४१	आनददास विश्वंभरदास	४४०	१
४२	अड़ेल की एक ब्राह्मणी	४४६	१
४३	प्रयाग की एक क्षत्राणी	४५१	१
४४	गोरजा समराई सास बहू	४५६	१
४५	कृष्णादासी	४६३	२
४६	बूला मिश्र	४६९	१
४७	रामदास मेवाड़ा, मीराबाई के प्रोहित	४७९	१
४८	रामदास चौहान	४८४	२
४९	रामानंद पंडित	४९०	२
५०	विष्णुदास छीपा	५०२	३

वार्ता-सं०	नाम	पृष्ट सं०	प्रसंग सं०
५१	जीवनदास क्षत्री	५१४	१
५२	भगवानदास सारस्वत	५२३	१
५३	भगवानदास साँचोरा	५२८	१
५४	अच्युतदास सनोढिया	५३४	१
५५	अच्युतदास गौड ब्राह्मण	५३७	१
५६	अच्युतदास सारस्वत ,,	५४३	१
५७	नारायणदास कायस्थ	५४७	१
५८	नारायणदास भाट	५५५	१
५९	नारायणदास लुहाणा दीवान	५५९	१
६०	सिंहनंद की एक क्षत्राणी	५६९	१
६१	दामोदरदास की माता वीरबाई	५७९	१
६२	दोऊ स्त्री पुरुष सिंहनद के	५८९	१
६३	अडेल का एक सुतार कारीगर	५९८	१
६४	एक क्षत्री जाको अन्य मार्गीसों स्नेह हतो	६०२	१
६५	लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री	६०९	१
६६	कविराज भाट	६१२	१
६७	गोपालदास पंजाब के	६१५	१
६८	जनार्दनदास चोपडा क्षत्री	६१९	१
६९	गडू स्वामी सनाढ्य	६२५	१
७०	कन्हैयालाल क्षत्री	६२८	२
७१	नरहरदास गोडिया	६३९	१
७२	नरहर सन्यासी	६४७	२
७३	सदू पांडे, भवानी, नरो	६५४	४
७४	गोपालदास जटाधारी	६६५	२
७५	कृष्णदास स्त्री पुरुष	६७३	१
७६	सतदास चोपडा क्षत्री	६८२	४
७७	सुन्दरदास माधोदास	६९५	१
७८	मावजी पटेल और विरजो	७०६	२
७९	गोपालदास क्षत्री नरोडाके	७१३	४
८०	बादरायणदास	७२२	१
८१	सूरदास	७२६	१
८२	परमानंददास	७८८	७
८३	कुंभनदास	८३७	१५
८४	कृष्णदास अधिकारी	९११से९८६,	१०

— चित्रसूची —

※

सं.	नाम	पृ.
१	श्रीवल्लभाचार्यजी ('नमामि हृदये शेषे' वाला चित्र)	मुख पृष्ठ पर
२	श्रीवल्लभाचार्यजी तीन सेवकों सहित	१०
३	श्रीद्वारकानाथजी	४६
४	दामोदरदास दीवान सभलवाले का घर	६९
५	सेठ पुरुषोत्तमदास का घर काशी	१०८
६	श्रीमहाप्रभुजी की पर्णकुटी अडेल	३०६
७	श्रीमहाप्रभुजी की बैठक उज्जैन	३१०
८	श्रीनाथजी का प्राकट्य	६६१
९	सामुद्रिक वैष्णवोंका चित्र	७११
१०	सूरदास	७३७
११	परमानंददास	७९५
१२	कुंभनदास	८५७
१३	श्रीनाथजी (त्रिरंगी चित्र)	८६१
१४	कृष्णदास	९७७

★

श्रीहरिः ।

* श्रीकृष्णाय नमः * श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः *

चौरासी वैष्णवन की वार्ता-

★

अथ चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये ताकौ भाव श्रीहरिरायजी कहत हैं सो लिख्यते-

★

श्रीहरिरायजी कृत भावप्रकाश—

चौरासी वैष्णवन कौ कारन यह है, जो-दैवी जीव चौरासी लक्ष योनि में परे हैं, तिनमें तें निकासिवे के अर्थ चौरासी वैष्णव किये । सो जीव चौरासी प्रकार के हैं । राजसी, तामसी, सात्विकी, निर्गुण, ये चार प्रकार के (भूतल में) गिरे, तामें तें गुणमय राजसी, तामसी, सात्विकी, रहन दिये, सो श्रीगुसांईजी उद्धार करेंगे ।

श्रीआचार्यजी विना श्रीगोवर्द्धनधर रहि न सके, तातें अपने अंतरंगी निर्गुण पक्षवारे चौरासी वैष्णव (प्रगट) किये । सो एक एक लक्ष योनिमें तें एक एक वैष्णव निर्गुण वारे को उद्धार (इन) वैष्णवन द्वारा किये ।

ભાવપ્રકાશ—

ચોરાશી વૈષ્ણવોનું કારણ આ છે, જે-દૈવી જીવો ચોરાશી લાખ યોનીમાં પડયા છે તેમાંથી નિકાળવાને અર્થ ચોરાશી વૈષ્ણવો કર્યા. તે જીવ ચોરાશી પ્રકારના છે. રાજસી, તામસી, સાત્વિકી, નિર્ગુણ એ ચાર પ્રકારના ભૂતલમાં ગિર્યા (પડયા) તેમાંથી ગુણમય રાજસી, તામસી, સાત્વિકી, રહેવા દીધા. તેમનો શ્રીગુસાંઈજી ઉદ્ધાર કરશે.

શ્રીઆચાર્યજી વિના શ્રીગોવર્દ્ધનધર (લીલામાં) રહી ન શકયા તેથી પોતાના અંતરંગી નિર્ગુણ પક્ષ વાળા ચોરાશી વૈષ્ણવોને પ્રકટ કર્યા (ભૂતલમાં) તે એક એક લક્ષ યોનિમાંથી એક એક વૈષ્ણવ નિર્ગુણવાળાનો ઉદ્ધાર (આ લીલાના) વૈષ્ણવો દ્વારા કર્યો.

और रस शास्त्र में रसादिक विहार के आसन चौरासी वर्णन किये हैं। सो न्यारे न्यारे अंग के भावरूप ये चौरासी वैष्णव रस लीला संबंधी निर्गुन हैं, श्रीठाकुरजी के अंगरूप। तातें शास्त्र रीति सों आसन चौरासी या भाव सों अलौकिक हैं।

और श्रीआचार्यजी के अंग द्वादस हैं, सो स्वरूपात्मक है। एक एक अंग में सात सात धर्म हैं। ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य ये छह धर्म, एक धर्मी सातमो। या प्रकार बारह सत्ते चौरासी वैष्णव, श्रीआचार्यजी के अंग रूप अलौकिक सर्व सामर्थ्य रूप हैं।

और साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम की लीला चौरासी कोस ब्रज में है। सो एक एक जीवकों अंगीकार करि, दैवी जीव जो चौरासी लक्ष योनि में गिरे हैं, तिनकौ उद्धार करि, चौरासी कोस ब्रज में जो जीव (जा) लीला संबंधी है, तिनकों तहां प्राप्त करिवे के अर्थ चौरासी वैष्णव अलौकिक प्रगट किये।

इह भाव तें चौरासी वैष्णव श्रीआचार्यजी के हैं।

બીજુ રસશાસ્ત્રમાં રસાદિક વિહારનાં આસન ચોરાશી વર્ણન કર્યા છે. તે ભિન્નભિન્ન અંગના ભાવ રૂપ એ ચોરાશી વૈષ્ણવો રસ લીલા સબંધી નિર્ગુણ છે. શ્રીઠાકુરજીના અંગરૂપ. તેથી શાસ્ત્ર રીતિથી આસન ચોરાશી આ ભાવથી અલૌકિક છે.

અને શ્રીઆચાર્યજીનાં અંગ દ્વાદશ છે તે સ્વરૂપાત્મક છે. એક એક અંગમાં સાત સાત ધર્મ છે. ઐશ્વર્ય, વીર્ય, યશ, શ્રી, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય એ છ ધર્મ એક ધર્મી સાતમો. આ પ્રકારે બાર સાતાં ચોરાશી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના અંગરૂપ અલૌકિક સર્વ સામર્થ્ય રૂપ છે.

વળી સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરૂષોત્તમની લીલા ચોરાશી કોસ વ્રજમાં છે. તે એક એક જીવનો અંગીકાર કરી, દૈવી જીવ જે ચોરાશી લાખ યોનીમાં પડયા છે તેમનો ઉદ્ધાર કરી ચોરાશી કોસ વ્રજમાં જે જીવ (જે) લીલા સબંધી છે તેને ત્યાં પ્રાપ્ત કરાવવાને અર્થ ચોરાશી વૈષ્ણવ અલૌકિક પ્રગટ કર્યા.

આ ભાવથી ચોરાશી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના છે.

ભાવપ્રકાશનું-રહસ્ય-શ્રીહરિરાયજીનો કહેલો આ ભાવપ્રકાશ નિગૂઢ છે. તેથી અત્રે તેના રહસ્યનું ઉદ્ઘાટન કરવું આવશ્યક છે. આ ભાવપ્રકાશમા દૈવી જીવોનુ સ્વરૂપ અને તેના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયાને કહેવામા આવી છે. શ્રીવલ્લભાવતારના પુષ્ટિ દૈવી જીવોના મૂળ સ્વરૂપની સંગતિનો સામ્પ્રદાયિક ઇતિહાસ આ પ્રકારે છે—

सो एक दिन श्रीगोकुलनाथजी चौरासी वैष्णवन की वार्ता करत कल्याण भट्ट आदि वैष्णवन के संग रसमग्न होइ गये, सो श्रीसुबोधिनीजी की कथा

એક દિવસ શ્રીગોકુલનાથજી ચોરાશી વૈષ્ણવોની વાર્તા કરતાં કલ્યાણ ભટ્ટ આદિ વૈષ્ણવોની સગે રસમગ્ન થઇ ગયા. તે શ્રી સુબોધિનીજીની કથા

બૃહદ્વામન પુરાણને અનુસાર પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણનો આવિર્ભાવ સારસ્વત કલ્પમાં મુખ્યતઃ શ્રુતિઓને અર્થે વ્રજમાં થયો હતો. પ્રભુએ આવિર્ભૂત થઇને વ્રજમાં અનેક લીલાઓ કરી તે પર્યંતના સર્વેય પ્રયત્નો શ્રુતિરૂપા આદિ ભક્તોના ઉદ્ધારાર્થેજ હતા. યદ્યપિ આપ ઇચ્છતા કે શ્રુતિઓ મારા મૂળધામની લીલામા પ્રાપ્ત થાવ તો વિના કોઇપણ પ્રકારના પ્રયત્ને જ, આવિર્ભૂત થયા વિના પણ તેમ થતુ જ તથાપિ આપને ભૂતલ ઉપર પુષ્ટિમાર્ગને પ્રકટ કરવો હતો તેથી આપે ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થઇને **સ્વ સ્વરૂપ વડે** વિવિધ લીલાઓ કરી શ્રીગોપીજનોનો સમુદ્ધાર કર્યો. તે વડે એ સિદ્ધાતને પણ પ્રકટ કર્યો કે **પુષ્ટિમાર્ગમાં જીવના ઉદ્ધાર અર્થે પ્રભુ પ્રયત્ન કરે છે.** જ્યારે મર્યાદામાર્ગમા જીવને સ્વયં પ્રયત્ન કરવો પડે છે. આમ મર્યાદામાર્ગથી પુષ્ટિમાર્ગની વિલક્ષણતા પણ પ્રકટ થઇ. તદુપરાત આપે પોતાના પુષ્ટિમાર્ગની સર્વોત્કૃષ્ટતાને પણ સિદ્ધ કરી. જે ગોપિકાદિ સ્ત્રી ભક્તોમા આપે પોતાના સાક્ષાત્ સ્વરૂપવાળા અનુગ્રહ માર્ગને સ્થાપિત કર્યો તે ભક્તો શ્રીઉદ્ધવજીના શબ્દોમા " **क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचारदुष्टा.** "...... ....

એ પ્રકારના હતા. અર્થાત્ કેવળ સાધન રહીત જ નહી કિન્તુ લોકવેદના ધર્મોથી વિપરીત ગતિવાળાં પણ હતાં છતા તેમના ઉપર પરમ અનુગ્રહ કરી તેમને પોતાના અપર સ્વરૂપ એવા પ્રેમનુ દાન કર્યું અને તેમને પુષ્ટિમાર્ગના ગુરુની કક્ષાએ સ્થાપ્યા. તેથી જ બ્રહ્મા, મહાદેવ અને ઉદ્ધવ આદિ પરમ ઉચ્ચ શ્રેણીના ભક્તો પણ તેમના ચરણ–રજની સદાય આકાક્ષા રાખે છે. એટલું જ નહી કિન્તુ સ્વયં ભગવાન પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ પણ તેમની ઇચ્છાને સદાય આધીન રહે છે. આ જ પુષ્ટિમાર્ગની સર્વોત્કૃષ્ટતા છે.

આ પુષ્ટિમાર્ગનો ભવિષ્યમાં પણ ભૂતલ ઉપર પુનઃ પ્રકાશ કરવો છે એમ વિચારીને ઉક્ત વ્રજસ્થ ભક્તોમાંથી કેટલાક ભક્તોને આપે ભૂતલ ઉપર રાખ્યા. એ વડે પુષ્ટિસ્થ પ્રભુએ પોતાના કાર્યની 'તર્કાગોચરતા' 'સર્વ તંત્ર સ્વતત્રતા' અને 'વિરુદ્ધ ધર્માશ્રયત્વ' ને પણ પ્રકટ કર્યું. કેમ કે વૈદિક સિદ્ધાતને અનુસાર ભગવાનનું જેને દર્શન–સ્પર્શન થાય તેની ભૂતલ ઉપર સ્થિતિ ફરી સભવતી જ નથી એટલે કે તેને જન્મ જન્માતર હોઇ શકે નહીં. પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમા કેવળ ભગવદીચ્છા જ એક માત્ર પ્રમાણ રૂપ હોઇ અત્રે બધુ જ શક્ય છે. પ્રભુની ઇચ્છા જે પ્રકારથી જેની સાથે જેવી ક્રીડા કરવાની હોય છે તે પ્રકારથી તેની સાથે પોતે તેવી ક્રીડા કરે છે. તેમા વેદ આદિ નિયામક હોતાં નથી. પ્રભુનાં સ્વતત્ર અને વિરુદ્ધ ધર્મ ક્રીડનનાં અનેક દૃષ્ટાતો શ્રીમદ્ભાગવતાદિમાં છે. અત તેમાંથી કેવળ અહી એક જ દૃષ્ટાત આપી ઉક્ત વાતને સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે.

રાક્ષસી પૂતના છળ કરીને પ્રભુ પાસે આવી તેનો આપે તત્કાળ મોક્ષ કર્યો અને ભક્ત મુચુકુંદને સ્વયં દર્શન આપીને પણ તેનો બીજા જન્મમાં ઉદ્ધાર કર્યો. આ પ્રકારનું પ્રભુનું સર્વતત્ર સ્વતત્ર વિરુદ્ધ ધર્મવાળું ક્રીડન છે. એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે પુષ્ટિમાર્ગમાં પ્રભુની ઇચ્છા જ એક માત્ર પ્રમાણ છે.

कहन की सुधि नाहीं, सो अर्द्धरात्रि होइ गई। तब एक वैष्णव ने श्रीगोकुलनाथजी सों विनती करी, जो–महाराजाधिराज! आज कथा कब कहोगे?

કહેવાની સુધિ રહી નહી. તે અર્ધરાત્રિ થઇ ગઇ ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીગોકુલનાથજીને વિનંતી કરી, જે મહારાજાધિરાજ! આજ કથા કયારે કહેશો? અર્ધ-

'સંવાદ'ને અનુસાર ભગવદીચ્છાથી જે જીવો ભૂતલ ઉપર રહ્યા તેમને જન્મ જન્માતરો પ્રાપ્ત થયા. અને 'સહસ્ત્ર પરિવત્સર' જેટલો કાળ તેમને પ્રભુથી વિછુરે થયો તેથી કૃષ્ણ વિયોગ જનિત 'તાપકલેશાનંદ'નું તેમનામાથી તિરોધાન થયુ ત્યારે ભગવદીચ્છાથી આ ભૂતલના જીવોની સુધિ શ્રીસ્વામિનીજી દ્વારા પ્રભુને આવી. એટલે આપને તે જીવોના ઉદ્ધારનો વિચાર આવ્યો

આ સમયે આપે **નામાત્મક સ્વરૂપ** વડે લીલા કરી જીવોના ઉદ્ધારનો સંકલ્પ કર્યો કેમકે રૂપ અને નામ એમ બે પ્રકારથી પુષ્ટિમાર્ગમા આપ સ્થિત થયા છે. રૂપલીલા વડે આપે શ્રીગોપીજનોનો ઉદ્ધાર પૂર્વે કર્યો છે. તેથી દ્વિતીય નામલીલા રૂપથી આપે આધુનિક દૈવી જીવોના ઉદ્ધારનો સંકલ્પ કર્યો. ત્યારે નામ–સ્વરૂપના અધિષ્ઠાતા વાક્પતિ-વૈશ્વાનરને આપે ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થવાની આજ્ઞા આપી અને વિષ્ણુ અને વ્યાસને પ્રિય એવા ગૂઢાર્થરૂપ શ્રીમદ્ભાગવતના સ્વારસ્યને પ્રકટ કરી તે દ્વારા દૈવી જીવોના ઉદ્ધાર કરવાનો નિર્દેશ કર્યો. આજ્ઞાનુસાર શ્રીમદ્-વલ્લભ ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા.

શ્રીમદ્વલ્લભ ભૂતલ ઉપર પધાર્યા એટલે શ્રીગોવર્ધનધર પણ ત્યા રહી શકયા નહીં. કેમકે ઉભયમા પરસ્પર અતીવ સ્નેહ છે અન્ય પ્રકારે અધિષ્ઠાતા દેવ વિના નામ–સ્વરૂપની સ્થિતિ સંભવ નથી તેથી આપ પોતાના અંતરંગી નિર્ગુણ–કેવળ ભાવરૂપ, આનંદરૂપ-દૈવી જીવોને લઇ સાક્ષાત નામાત્મક શ્રીમદ્ભાગવત સ્વરૂપ દ્વાદશાંગવાળા શ્રીગોવર્ધનધર શ્રીનાથજીના રૂપથી ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા. આ કેવળ ભાવરૂપ દૈવી જીવો તે ભૂતલના જન્મજન્માંતરને પ્રાપ્ત થયેલા દૈવી-જીવોના આધિદૈવિક રૂપ હતા તેમને શ્રીગોવર્ધનધરે બ્રહ્મસંબંધ કરાવવાની આજ્ઞા સમયે શ્રીમદાચાર્યચરણમા ભાવપ્રકારથી સ્થાપ્યા. એટલે એ શ્રીઆચાર્યજીના દ્વાદશ અંગ રૂપ સ્વરૂપાત્મક થયા. તે ઐશ્વર્ય, વીર્ય, યશ, શ્રી, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય અને ધર્મી એ સાત ગુણ–ગુણી સ્વરૂપ હતા. એટલે દ્વાદશાંગના સાત ગુણ, ગુણી પ્રકારે ૮૪ સંખ્યાત્મક હતા. સિદ્ધાંતાનુસાર ગુણ-ગુણીનો અભેદ હોવાથી તે સર્વેય નિર્ગુણ સર્વ સામર્થ્ય રૂપ હતા તદુપરાંત રાજસ, તામસ અને સાત્ત્વિક ભાવ–ભેદ વાળા અંશ–અંશી કોટાનકોટી જીવોને પણ શ્રીગોવર્ધનધરે શ્રીમદાચાર્યચરણમા ભાવ–તત્ત્વ–રૂપથી સ્થાપ્યા હતા તેમને શ્રીમદાચાર્યચરણે પાછળથી શ્રીવિટ્ઠલેશમા સ્થાપ્યા હતા. જેમા રપર સગુણ અંશી પ્રકારનાનો સમુદ્ધાર પોતે કર્યો. અને અન્ય અંશાત્મક સગુણ જીવોનો સ્વવંશ દ્વારા આજ પર્યંત શ્રીવિટ્ઠલેશ કરી રહ્યા છે. શ્રીમદાચાર્યચરણમા સ્થિત આ લીલાસ્થ આધિદૈવિક સ્વરૂપો અંગરૂપ હોવાથી, તેમજ અંગના ધર્મ રૂપ રસ ના આસનો હોઇ, તે તે અંગના આસનના ભાવરૂપ પણ છે એથીપણ રસ ના સંબંધે તેમની નિર્ગુણતા સિદ્ધ થાય છે એવી રીતે વ્રજ ચોરાશી કોસમા પ્રભુની વિશિષ્ટ પ્રકારની એક એક લીલાની સ્થિતિ હોઇ, તેમજ અંગના ધર્મ રૂપ તે લીલાઓ હોઇ તેમની એક એક કોસમા તે તે અંગ રૂપી જીવોની પ્રાધાન્યતા માની ગઇ છે. એથી ભૂતલ.સ્થિત

अर्द्धरात्रि गई। तब श्रीमुखतें श्रीगोकुलनाथजीने कही, (जो) आज कथा को फल कहत हैं। वैष्णव की वार्ता में सगरो फल जानियो। वष्णव उपरांत और कछु पदारथ नाहीं है। यह पुष्टिमार्ग है सो वैष्णव द्वारा फलित होयगो। श्री आचार्यजी हू यही कहते, जो–दमला! तेरे लिये मार्ग प्रगट कियो है। तातें वैष्णव की वार्ता है सो सर्वोपरि जानियो। या प्रकार चौरासी वष्णव श्रीआचार्यजी के निर्गुन पक्ष के मुखिया जाननें।

રાત્રિ ગઇ. ત્યારે શ્રીમુખથી શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું, જે આજ કથાનું ફલ કહીએ છીએ. વૈષ્ણવની વાર્તામાં સઘળું ફળ જાણજો. વૈષ્ણવ ઉપરાંત બીજો કોઇ પદાર્થ નથી. આ પુષ્ટિમાર્ગ છે તે વૈષ્ણવ દ્વારા ફલિત થશે. શ્રીઆચાર્યજી પણ એજ કહેતા, જે 'દમલા! તારા માટે માર્ગ પ્રકટ કર્યો છે' તેથી વૈષ્ણવની વાર્તા છે તે સર્વોપરિ જાણજો. આ પ્રકારે ચોરાશી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના નિર્ગુણ પક્ષના મુખિયા જાણવા.

ભૌતિક સ્વરૂપોનો તેમનાજ આધિદૈવિક સ્વરૂપો વડે ઉદ્ધાર કરાવી ત્યા તે તે લીલામાં તેમની સ્થિતિ કરાવી. આ પ્રકારે આધિદૈવિક અને આધિભૌતિક દૈવી જીવોનાં સ્વરૂપો ને જાણ્યા પછી હવે દૈવી જીવોના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયાને કહેવામા આવે છે. પુષ્ટિમાર્ગની દૈવી જીવોના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયા આ પ્રકારે છે. પ્રથમ તેમને તેના આધિદૈવિક સ્વરૂપનો સંબંધ કરાવી તેમને ભગવાન સાથેના સાક્ષાત્ સંબંધને યોગ્ય કરવામાં આવે છે. કેમકે આધિદૈવિક ભગવાનનો ભૌતિક પદાર્થો સાથે સાક્ષાત્સંબંધ થઇ શકે નહી. એથીજ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ સાક્ષાત્ રૂપથી વ્રજમાં પ્રાદુર્ભૂત થયા ત્યારે નિત્યલીલાના વૃંદાવન આદિ સ્થાનો, શ્રીગિરિરાજજી આદિ પર્વતો અને શ્રીયમુનાજી આદિ નદી તેમજ વૃક્ષાદિની સાથે નિત્યસિદ્ધા શ્રીગોપીજનોનાં ભાવાત્મ રૂપો જે પ્રભુના સ્વરૂપમાં સિદ્ધ હતા તેમનો તે તે નામરૂપ સ્થલ, વ્યક્તિ આદિમા તેમના પોતાના સ્પર્શ દ્વારા પ્રવેશ કરાવ્યો હતો. જેથી સમગ્ર વ્રજ વ્યાપિ વૈકુંઠ ગોલોક રૂપ થયું. અને તેને ભગવાનના આધિદૈવિક ચરણારવિંદનો સ્પર્શ થયો. શ્રીગોપીજનો આદિને પણ ભગવાનનો સાક્ષાત્ સંબંધ થયો. ત્યારેજ લીલા દ્વારા તે સર્વેયનો સમુદ્ધાર કર્યો. 'વેણુગીત'ની સુબોધિની તથા 'વિદ્વન્મંડન' આદિથી આ વાત સિદ્ધ છે.

એ પ્રક્રિયાને અનુસારજ શ્રીમદાચાર્યચરણે પણ બ્રહ્મસંબંધનો પ્રકાર યોજ્યો છે અને તે દ્વારા તેના અધિદૈવિક ભાવ રૂપનો તેનામા પ્રવેશ કરાવ્યો છે. ત્યારેજ તે જીવ નિર્ગુણ રસમય બ્રહ્મની સેવાનો આધિકારી થઇ શકયો. તેથીજ આપે સેવામાં ભૌતિક પાચ દોષોને ન માનવાની માર્મિક આજ્ઞા કરી છે.

એજ પ્રકારે કૃષ્ણના લીલાત્મક ભૌતિક સ્વરૂપાદિમા પણ આચાર્યશ્રી તે તે લીલાના ભાવ સ્થાપન વડે તેમની આધિદૈવિકતાનો પ્રકાશ કરની તેમને સાક્ષાત્ કરી આપે છે એથીજ અત્ર વૈદિક 'મૂર્તિ-પ્રતિષ્ઠા વિધાન'નુ સ્થાન જોવામાં આવતું નથી.

अब रहे राजसी, तामसी, सात्विकी, गुणमय। तिनके उद्धारार्थ श्रीगुसांईजी ने चौरासी वैष्णव राजसी किये, चौरासी वैष्णव तामसी किये (और) चौरासी वैष्णव सात्विकी किये। ये तीनों जूथ मिलि के दोयसौ बावन श्रीगुसांईजी के अंग संबंधी हैं।

या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के सेवकन को भाव कहे।

अब श्रीआचार्यजी के चौरासी वैष्णवनकी वार्तानिमें गूढ आसय श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं, तहां श्रीहरिरायजी कछुक भाव प्रगट करत हैं, पुष्टिमार्गीय वैष्णवन के जनाइवे के अर्थ।

अब प्रथम सेवक सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दामोदरदास, जिन कों श्रीआचार्यजी 'दमला' कहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास कों 'दमला' कहते। सो यातें, जो–दमला, सो 'अमला', मल करि कै रहित। तहां यह संदेह होय, जो–साधारण वैष्णव में मल नाहीं, तो दामोदरदास के दरसन तें, इनके नाम

હવે રહ્યા રાજસી, તામસી, સાત્વિકી, ગુણમય તેમના ઉદ્ધારાર્થ શ્રીગુસાંઈજીએ ચોરાશી વૈષ્ણવ રાજસીકર્યા, ચોરાશી વૈષ્ણવ તામસી કર્યા (અને) ચોરાશી વૈષ્ણવ સાત્વિકી કર્યા. એ ત્રણે યુથ મળીને બસો બાવન શ્રીગુસાંઈજીના અંગ સંબંધી છે.

આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી, શ્રીગુસાંઈજીના સેવકોનો ભાવ કહ્યો.

હવે શ્રીઆચાર્યજીના ચોરાશી વૈષ્ણવોની વાર્તાઓમા ગૂઢઆશય શ્રીગોકુલનાથજી કહે છે ત્યા શ્રીહરિરાયજી કંઈક ભાવ પ્રગટ કરે છે, પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોને જણાવવાને અર્થ

હવે પ્રથમ સેવક તે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના દામોદરદાસ, જેમને શ્રીઆચાર્યજી 'દમલા' કહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસને 'દમલા' કહેતા. તે એથી, જે–દમલા તે અમલા, મલ કરીને રહિત. ત્યાં આ સંદેહ થાય, જે-સાધારણ વૈષ્ણવમાં મલ નથી તો દામોદરદાસના દરશનથી, એમનું નામ લેવાથી

लिये तें पाप जाय, तो इनको नाम दमला सो अमला कहे, ताको प्रयोजन कहा ? यह संदेह होय तहां कहत हैं, जो-यह भक्तिमारग में श्रीठाकुरजी में प्रीति होइ तहां तांई अमल है। जब श्रीठाकुरजी तें अधिक श्रीआचार्यजी में प्रीति होय तब तासों अमला कहिये। दामोदरदास को एक दृढ भाव श्रीआचार्यजी में है। क्यों, जो दामोदरदास की गोदि में माथो धरि कै श्रीआचार्यजी पोढ़े हते, सो गोवर्द्धनधर साक्षात् पधारे तब बरजे " निकट मति आवो, महाप्रभुजी जागेंगे " ऐसो दृढ भाव है, जो-उठि कै श्रीठाकुरजी कों दंडोत हू न किये।

और श्रीगुसांइजी पूछे, जो-श्रीठाकुरजी सों बडे क्यों कहे ? तब दामोदरदास ने कही, जो-दान बडो के दाता बडो ? दाता जहां चाहे तहां दान चल्यो जाय। जहां चाहे तहां दाता दान कूं राखे। यह भाव दृढ़ है। तातें श्रीआचार्यजी 'दमला' कहते। जो-कोइ प्रकार सों अन्य संबंध को गंध हू नाहीं है। तातें अमला है।

और इनको नाम दामोदरदास यातें हैं, जो-'पुरुषोत्तम सहस्र नाम' में श्रीआचार्यजी कहे हैं, " दामोदरो भक्तवश्यो " और श्रीसुबोधिनीजी में विस्तार करिके लिखे हैं। जो-पुरुषोत्तम साक्षात् भक्तन के बस दिखाये। सो अपनो

પાપ જાય તો એમનું નામ દમલા તે અમલા કહ્યું તેનું પ્રયોજન શું ? આ સંદેહ હોય ત્યાં કહે છે, જે-આ ભક્તિમાર્ગમાં શ્રીઠાકુરજીમાં પ્રીતિ હોય ત્યાં સુધી અમલ છે. જ્યારે શ્રીઠાકુરજીથી અધિક શ્રીઆચાર્યજીમાં પ્રીતિ હોય ત્યારે તેને અમલા કહીએ. દામોદરદાસનો એક દ્દઢભાવ શ્રીઆચાર્યજીમાં છે. કેમ ? જે-(એક સમય) દામોદરદાસની ગોદીમાં શ્રીમસ્તક ધરીને શ્રીઆચાર્યજી પોઢયા હતા. તે (સમયે) શ્રીગોવર્દ્ધનધર સાક્ષાત્ પધાર્યા. ત્યારે રોક્યા (જે) નિકટ ન પધારો, શ્રીમહાપ્રભુજી જાગી જાશે. એવો દ્દઢભાવ છે. જે ઉઠીને શ્રીઠાકુરજીને દંડવત પણ ન કર્યા.

વળી શ્રીગુસાંઇજી પૂછે, જે શ્રીઠાકુરજીથી મોટા કેમ કહ્યા ? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે-દાન મોટું કે દાતા મોટો ? દાતા જ્યાં ઇચ્છે ત્યાં દાન ચલ્યો જાય। જ્યાં ઇચ્છે ત્યાં દાતા દાનને રાખે, આ ભાવ દ્દઢ છે તેથી, શ્રીઆચાર્યજી દમલા કહેતા જે-કોઇ પ્રકારથી અન્ય સંબંધનો ગંધ પણ નથી. તેથી 'અમલા' છે

અને એમનું નામ દામોદરદાસ એથી છે, જે 'પુરુષોત્તમ સહસ્રનામ' માં શ્રીઆચાર્યજી કહે છે " દામોદરો ભક્તવશ્યો " અને શ્રીસુબોધિનીજીમાં વિસ્તાર કરીને લખે છે, જે પુરુષોત્તમ સાક્ષાત ભક્તોને વશ દેખાડયા તે પોતાના ...

बंधन छोड़ि न सके, और जसोदाजी को, व्रजभक्तन को स्वरूप दिखाये। जसोदाजी इतने भक्त हैं, जो–श्रीठाकुरजी कों बांधे। सो उन भक्तन की संमति देखि के बंधाने, जो–दाम व्रजभक्त लाये हैं। परंतु जसोदाजी को बंधन छुड़ायवे की सामर्थ नाहीं है। तातें यमलार्जुन वृक्ष गिरे, तब सोर भयो, तब व्रजभक्तन ने दाम छोर हैं। तातें श्रीठाकुरजी सों जसोदाजी बड़े, श्रीदामोदरजी सों व्रजभक्त बड़े। सो भक्तवत्सलता प्रगट करी।

तैसें ही दामोदरदास नाम करि, दामोदर जो–अनन्य भक्त हैं–तिनके बस श्रीआचार्यजी हैं। तातें कहते, 'दमला! यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कियो है।" तामें यह आयो, जो–और भक्त बोहोत हैं परन्तु तेरे मैं बस हों, यह जताये।

और दामोदरदास को अलौकिक स्वरूप है सो ललिताजी को प्रागट्य है। उहां सगरी रहस्य–लीला में श्रीस्वामिनीजी की आज्ञाकारी जैसे ललिताजी, तैसे ही इहां आचार्यजी की आज्ञाकारिनी ललितारूप दामोदरदास। जो–जनम ही तें बाल ब्रह्मचारी सखी रूप, गृहस्थाश्रम कों जानत नाहीं।

છોડી ન શકયા. અને જશોદાજીનું, વ્રજભક્તોનું સ્વરૂપ દેખાડયું. જશોદાજી એટલાં ભક્ત છે, જે શ્રીઠાકુરજીને બાંધ્યા. તે ભક્તોની સંમતિ જોઇને બંધાયા, જે દોરડું વ્રજભક્તો લાવ્યાં છે. પરંતુ જશોદાજીનું બંધન છોડાવવાનું સામર્થ્ય નથી. તેથી યમલાર્જુન વૃક્ષ પડયાં ત્યારે કોલાહલ થયો. ત્યારે વ્રજભક્તોએ દામ છોડયાં છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીથી જશોદાજી મોટાં, શ્રીદામોદરજીથી વ્રજભક્તો મોટાં, તે ભક્ત-વત્સલતા પ્રકટ કરી.

તેજ પ્રકારે દામોદરદાસ નામ કરી, દામોદર, જે–અનન્ય ભક્ત છે તેમના વશ શ્રીઆચાર્યજી છે. તેથી કહેતા 'દમલા! આ માર્ગ તારા માટે પ્રગટ કર્યો છે. તેમાં એ આવ્યું. જે બીજા ભક્તો ઘણા છે પરતુ તારે હું વશ છું એમ જણાવ્યું.

અને દામોદરદાસનું અલૌકિક સ્વરૂપ છે તે લલિતાજીનુ પ્રાગટય છે. ત્યાં સઘળી રહસ્ય–લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની આજ્ઞાકારી જેમ લલિતાજી તે પ્રકારે અહીં આચાર્યજીની આજ્ઞાકારિણી લલિતારૂપ દામોદરદાસ. જે જન્મથી જ બાલબ્રહ્મચારી, સખી રૂપ, ગૃહસ્થાશ્રમને જાણતા નથી.

सो ललिताजी को भाव यह कीर्तन में जाननो—

❀ राग केदारो ❀

हँसि हँसि दूध पीवत नाथ ।
मधुर कोमल बचन कहि कहि, प्रानप्यारी साथ ॥ १ ॥
कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियो ललिता हाथ ।
लाड़िली अचवाय पहले, पाछें आप अघात ॥ २ ॥
चिंतामनि चित्त बस्यो सजनी, निरखि पिय मुसिकात ।
स्यामा स्याम की नवल छवि परि 'रसिक' बलि बलि जात ॥ ३ ॥

याको यह भाव है, जो–दोऊ स्वरूप रतन खचित सज्या ऊपर बिराजे हैं, तहां ललिताजी कनक कटोरा में दूध ओटि के मिश्री सुगंध डारि ले आई। तब ललिताजी ने विचार कियो, जो–दोऊ स्वरूप बिराजे हैं तातें पहले में श्रीस्वामिनीजी के हाथ में दउंगी तो श्रीठाकुरजी कों पान कराय कै पान करेगी। तहां मनोरथ सिद्ध न होयगो। तातें श्रीठाकुरजी के हाथ में दऊंगी तब पहले पान श्रीस्वामिनीजी करेगी। तातें दूधको कटोरा श्रीठाकुरजी के हाथ में दियो। तब "लाड़िली अचवाय पहलें पाछें आप अघात।" काहेतें उनके हाथ सों वे आरोगे। उनके हाथ सों चिंतामनि रूप श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के हृदय में है वे आरोगे। तातें श्रीस्वामिनीजी के पान किये तें श्रीठाकुरजी तृप्त होत हैं।

તે લલિતાજીનો ભાવ આ કીર્તનમાં જાણવો—

* રાગ કેદારો *

હઁસિ હઁસિ દૂધ પીવત નાથ।...... (ઉપર જુઓ)

આનો આ ભાવ છે, જે બન્ને સ્વરૂપ રતન જડિત શયા ઉપર બિરાજે છે, ત્યાં લલિતાજી કનક કટોરામાં દૂધ ઓટિને મિશ્રી સુગંધ પધરાવી લે આવ્યાં ત્યારે લલિતાજીએ વિચાર કર્યો, જે બન્ને સ્વરૂપ બિરાજે છે તેથી પહેલાં હુ શ્રીસ્વામિની-જીના હાથમાં દઇશ તો શ્રીઠાકુરજીને પાન કરાવીને (પછી) પાન કરશે ત્યાં મનોરથ સિદ્ધ થશે નહી. તેથી શ્રીઠાકુરજીના હાથમાં દઇશ ત્યારે પહેલા પાન શ્રીસ્વામિનીજી કરશે તેથી દૂધનો કટોરો શ્રીઠાકુરજીના હાથમાં દીધો. ત્યારે 'લાડિલી અચવાય પહેલે પાછેં આપ અધાત' કેમકે એમના હાથથી એ આરોગે (અને) તેમના હાથથી ચિંતામણી રૂપ શ્રીઠાકુરજી શ્રીસ્વામિનીજીના હૃદયમાં છે તે આરોગે. તેથી શ્રીસ્વામિનીજીના પાન કરવાથી શ્રીઠાકુરજી તૃપ્ત થાય છે. આ પ્રકારે લલિતાજીની

या प्रकार ललिताजी की प्रीति चातुर्य देखि कैं श्रीठाकुरजी मुसिकाने। यह नवल छबि दूध पान करिवे के समय की शोभा ऊपर मैं–श्रीहरिरायजी–बलिहारी जात हौं।

या प्रकार कौ भाव दामोदरदास को श्रीआचार्यजी महाप्रभुन में है। तातें न्यारी श्रीठाकुरजी की सेवा नाहीं पधराई। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ठाकुर हैं। यह "मानसी सा परामता" मानसी सेवा के अधिकारी हैं। लीला रस में मगन रहत हैं।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप ब्रज में पांउ धारे तब दामोदरदास साथ हे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासकों दमला कहते और कहते, जो–"दमला ! यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कियो है।"

सो श्रीगोकुल में चोंतरा एक गोविंदघाट ऊपर हतो, सो ता ठोर छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी आप विश्राम करते। ताके पास श्रीद्वारकानाथजी को मंदिर है। तहां श्रीआचार्यजी कों चिंता उपजी। क्यों जो–श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी है, जो–जीवन कों ब्रह्मसंबंध करवाओ। तातें श्रीआचार्यजी ने बिचार्यो, जो–जीव

પ્રીતિ ચાતુર્ય જોઇને શ્રીઠાકુરજી હસ્યા. એ નવલ છબિ દૂધપાન કરવાના સમયની શોભા ઉપર હુ–શ્રીહરિરાયજી–બલિહારી જાઉં છું.

આ પ્રકારનો ભાવ દામોદરદાસનો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીમાં છે. તેથી અલગ શ્રીઠાકુરજીની સેવા નહીં પધરાવી (કેમકે) શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ઠાકુર છે. એ 'માનસી સા પરામતા' માનસી સેવાના અધિકારી છે લીલારસમાં મગન રહે છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપે વ્રજમાં ચરણ ધર્યાં ત્યારે દામોદરદાસ સાથ હતા. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ દામોદરદાસને 'દમલા' કહેતા અને કહેતા, જે—"દમલા આ માર્ગ તારા માટે પ્રકટ કર્યો છે"

શ્રી ગોકુલમાં ચોતરા એક ગોવિંદઘાટ ઉપર હતો. તે જગ્યાએ છોંકર (શમીવૃક્ષ) ના નીચે શ્રીઆચાર્યજી આપ વિશ્રામ કરતા. તેની પાસે શ્રીદ્વારકાનાથજીનું મંદિર છે. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીને ચિંતા ઉપજી. કેમ? જે–શ્રીઠાકુરજીએ આજ્ઞા આપી છે, કે જીવોને (તમે) બ્રહ્મ (ના) સંબંધ કરવાઓ. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર્યું, કે

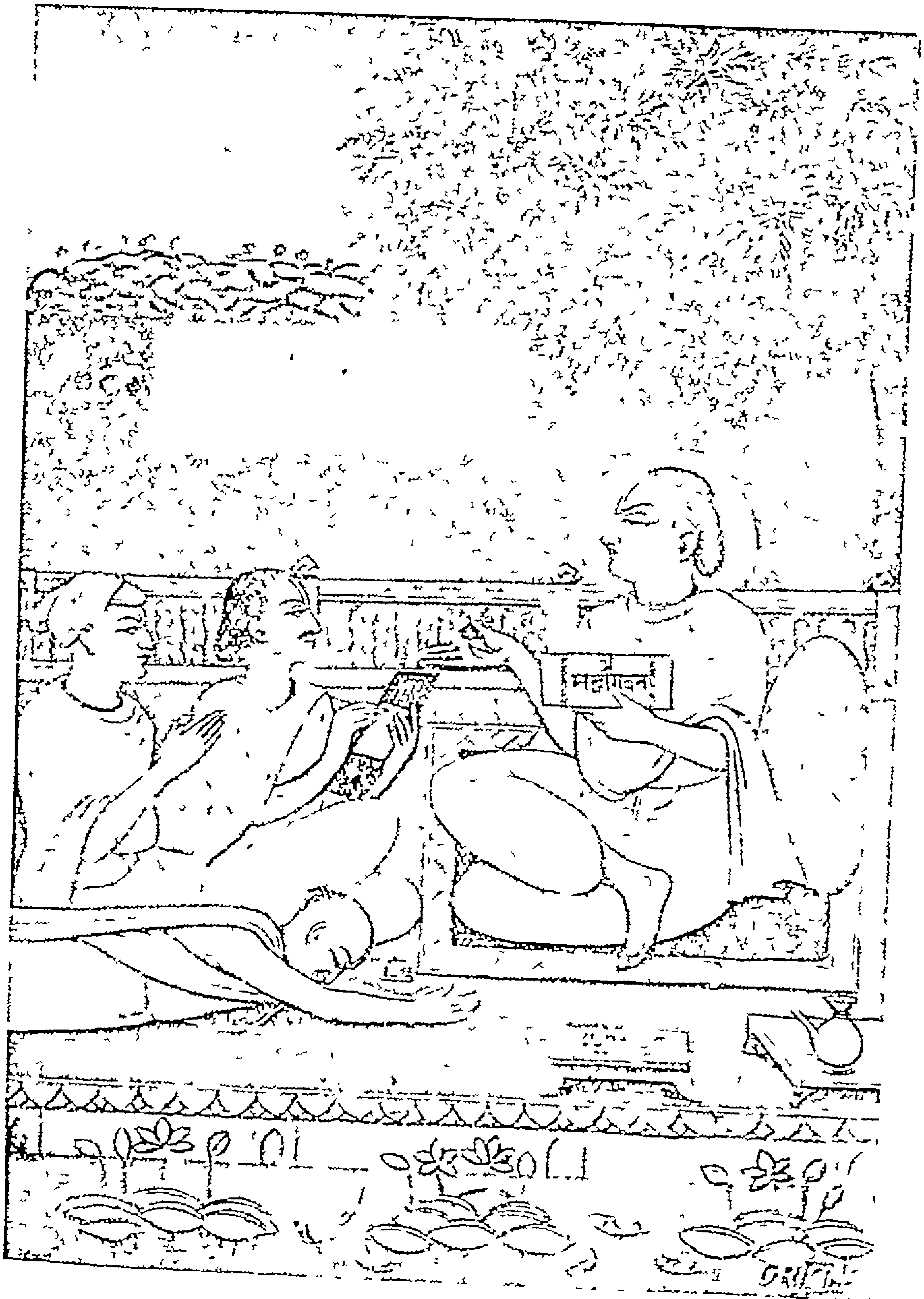

तीन सेवकों का चित्र.

१–दण्डवत् करने वाले . श्रीदामोदरदास हरसानी ।

२–हाथ जोड़ कर बैठे हुए कृष्णदास मेघन ।

३–लिखने वाले : माधवभट्ट काश्मीरी ।

तो दोषसहित हैं, और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तो गुणनिधान हैं, ऐसे संबंध कैसे होय ? तातें चिंता उपजी, सो अत्यंत आतुर भये ।

ता समें श्रीठाकुरजी तत्काल प्रगट होइके श्रीआचार्यजी सों पूछी, जो-तुम चिंतातुर क्यों हो ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहे, जो-जीव को स्वरूप तो तुम जानत ही हो, दोषवंत है । जो-तुमसों जीवनको संबंध कैसे होय ? तब श्रीठाकुरजी कहें, जो- "तुम (जा) जीव कों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवृत्त होइंगे, तातें तुम जीवनकों अंगीकार करो ।"

भावप्रकाश—जीवन के उद्धारिवे की चिंता भई ताको कारन यह जो-उत्तम वस्तु कों अंगीकार कराइ सुख लेय, प्रीतम कों मध्यम वस्तु दोष सहित जीव कैसे अंगीकार कराइये ? यह मारग की रीति है ।

तथा जगत में महात्मी जीव हैं, जो-आप ब्रह्मसंबंध करावें तो लोक में जीव कों दृढ़ विश्वास कोइ एक कों होय । तातें श्रीठाकुरजी के श्रीमुख तें ब्रह्मसंबंध की आज्ञा कराये । तामें जीवनकों दृढ़ विश्वास कराये, जो-श्रीआचार्यजी कों वचन दिये हैं, जाकों ब्रह्मसंबंध होइगो ताकों न छोड़ेंगे । यह महात्म्य तें जीव ब्रह्मसंबंध करेंगे, तातें श्रीठाकुरजी सों कहवाये ।

જીવ તો દોષ સહિત છે. અને શ્રીપૂર્ણ પુરુષોતમ તો ગુણ નિધાન છે. એમ સંબંધ કેમ થાય? તેથી ચિંતા ઉપજી. તે (થી) અત્યંત આતુર થયા.

તે સમયે શ્રીઠાકુરજી (એ) તત્કાલ પ્રકટ થઇને શ્રીઆચાર્યજીને પુછયું, જે તમે ચિંતાતુર કેમ છો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ કહે, જે-જીવનુ સ્વરૂપ તો તમે જાણો જ છો (કે) તે દોષવંત છે. (તેથી) તમારી સાથે જીવોનો સંબંધ કેવી રીતે થાય? ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, જે-તમે (જે) જીવને 'નામ' (અષ્ટાક્ષર, પંચાક્ષર મંત્ર) આપશો તેના સકલ દોષ નિવૃત્ત થશે તેથી તમે જીવોનો અંગીકાર કરો.

ભાવપ્રકાશ—જીવોને ઉદ્ધારવાની ચિંતા થઈ તેનું કારણ એ, જે ઉત્તમ વસ્તુને અંગીકાર કરાવી સુખ લે, પ્રીતમ ને મધ્યમ વસ્તુ દોષ સહિત જીવ કેમ અંગીકાર કરાવીએ? આ માર્ગની રીતિ છે.

તથા જગતમાં મહાત્મી જીવ છે, જો આપ બ્રહ્મસંબંધ કરાવે તો લોકમાં જીવને દૃઢ વિશ્વાસ કોઇ એકને થાય. તેથી શ્રીઠાકુરજીના શ્રીમુખથી બ્રહ્મસંબંધની આજ્ઞા કરાવી. તે વડે જીવોને દૃઢ વિશ્વાસ કરાયો, જે, શ્રીઆચાર્યજીને (શ્રીઠાકુરજીએ) વચન આપ્યું છે. (કે) જેને બ્રહ્મસંબંધ થશે તેને નહીં છોડે. આ મહાત્મ્યથી જીવ બ્રહ્મસંબંધ કરશે. તેથી શ્રીઠાકુરજીથી કહેવડાવ્યું.

ये बातें श्रावण सुदि एकादसी के दिन मध्यरात्र कों भई। प्रातःकाल पवित्रा द्वादसी हती। तातें पवित्रा सूत को सिद्ध करि राख्यो हतो, सो पवित्रा धराये। ता समे के अक्षर हैं, ताको श्रीआचार्यजी ने "सिद्धान्त-रहस्य" ग्रन्थ कियो है।

ता समे दामोदरदास नेक दूरि सोये हते। तातें दामोदरदास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो दमला! तें कछु सुन्यो? तब दामोदरदास ने कह्यो, जो-महाराज! मैंने श्रीठाकुरजी के वचन सुने तो सही, परि समुझ्यो नाहीं।

तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो-मोकों श्रीठाकुरजी ने आज्ञा कीनी है, जो-तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध करवावो, तिनकों हों अंगीकार करूंगो। और जिनकों तुम नाम देउगे तिनके सकल दोष निवृत्त होइंगे, तातें ब्रह्मसंबंध अवश्य करनो।

भावप्रकाश—दामोदरदास ने कही, जो-मैंनें श्रीठाकुरजी के बचन सुने परि समुझ्यो नाहीं। ताको कारन यह जताये, जो-एकादशाध्याय में भगवद्गीता में श्रीठाकुरजी के वचन है, जो अपुने पढ़िकै समुझो चाहे सो समुझे न जाय, जब गुरु कृपा करें तब समुझो जाय। तातें श्रीठाकुरजी के कहेतें दामोदरदास समुझे

એ વાર્તા શ્રાવણ સુદિ એકાદશીના દિવસે મધ્ય રાત્રિએ થઈ. પ્રાતઃકાલ પવિત્રા દ્વાદશી હતી. તેથી પવિત્રું સૂતનું સિદ્ધ કરી રાખ્યું હતું, તે ધરાવ્યું. તે સમયના અક્ષર છે. તેનો શ્રીઆચાર્યજીએ 'સિદ્ધાંત-રહસ્ય' ગ્રન્થ કર્યો છે.

તે સમયે દામોદરદાસ થોડી દૂર સોયા હતા. તેથી દામોદરદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, જે દમલા! તેં કંઈ સાંભળ્યું? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે-મહારાજ! મેં શ્રીઠાકુરજીનાં વચન સાંભળ્યાં તો ખરા પણ સમજ્યો નહીં.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ કહે, જે મને શ્રીઠાકુરજીએ આજ્ઞા કરી છે, જે તમે જીવોને બ્રહ્મસંબંધ કરાવડાવો. તેને હું અંગીકાર કરીશ. અને જેને તમે નામ દેશો તેના સકલ દોષ નિવૃત્ત થશે. તેથી બ્રહ્મસંબંધ અવશ્ય કરવું.

ભાવપ્રકાશ—દામોદરદાસે કહ્યું, જે મેં શ્રીઠાકુરજીનાં વચન સાંભળ્યાં પણ સમજ્યો નહીં. તેનુ કારણ એ સૂચવ્યુ, જે-એકાદશાધ્યાયમાં ભગવદ્ગીતામાં શ્રીઠાકુરજીનાં વચન છે જે આપ મેળે ભણીને સમજવા ઇચ્છે તે (યથાર્થ) ન સમજાય. જ્યારે ગુરુ કૃપા કરે ત્યારે સમજી શકાય તેથી શ્રીઠાકુરજીના કહેવાથી

तब श्रीठाकुरजी के सेवक भये। तातें दामोदरदास तो श्रीआचार्यजी के सेवक हैं, जब श्रीआचार्यजी समुझावें तब ही समुझे।

यह कहि यह जताये, जो-हृदय में दृढ़ ज्ञान गुरु की कृपा ही तें होय। स्वामी-सेवक भाव प्रगट दिखाये। जो दामोदरदास समुझे तो श्रीआचार्यजी की बराबरि ज्ञान कह्यो जाई, तातें कहे मैं समुझ्यो नाहीं। अथवा कहे, जो-मैं समुझ्यो नाहीं, सो मेरे समुझिवे को कहा प्रयोजन है? आप कहें ताके समुझिवे को प्रयोजन मोकों है।

और कथा कहत में श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों कहते, जो-दमला! बड़ी बार भई है, श्रीठाकुरजी की वार्ता नाहीं करी।

भावप्रकाश—ताको तात्पर्य यह है, जो-श्रीठाकुरजी की वार्ता आपु श्रीस्वामिनीरूप दामोदरदास ललिता सखीरूप सों नाहीं करी। ललिता सों एकांत रहस्य वार्ता, श्रीठाकुरजी के मिलन को प्रसंग प्रथम जा प्रकार लीला करी है सो नाहीं करी। सो करन के लिये सबन के आगे ऐसे कहतें, कथा कहत समय, जो-ठाकुरजी की वार्ता नाहीं करी।

દામોદરદાસ સમજે ત્યારે (તો) શ્રીઠાકુરજીના સેવક થયા (કહેવાય) તેથી દામોદરદાસ તો શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છે જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી સમઝાવે ત્યારે જ સમઝે. એ કહીને એમ સૂચવ્યુ, જે હૃદયમાં દઢજ્ઞાન ગુરુની કૃપાથી જ થાય. (એમાં) સ્વામી-સેવકભાવ પ્રકટ બતાવ્યો. જે દામોદરદાસ સમઝે તો શ્રીઆચાર્યની બરાબરી જ્ઞાન (દામોદરદાસમાં છે એમ) કહેવાય તેથી કહે હું સમઝ્યો નહીં. અથવા કહે, જે હું સમઝ્યો નહીં, મારે તે સમઝવાનું શું પ્રયોજન છે? આપ કહો તેને (જ) સમઝવાનું પ્રયોજન મારે છે.

અને કથા કહેતાંમાં શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસને કહેતા જે-દમલા! બહુવાર થઈ છે શ્રીઠાકુરજીની વાર્તા નથી કરી.

ભાવપ્રકાશ—તેનું તાત્પર્ય એ છે, જે શ્રીઠાકુરજીની વાર્તા આપ શ્રીસ્વામિની રૂપ દામોદરદાસ લલિતા સખી રૂપથી નથી કરી. લલિતાથી એકાંત રહસ્ય વાર્તા, શ્રીઠાકુરજીના મળવાનો પ્રસંગ પ્રથમ જે પ્રકારે લીલા કરી છે તે નથી કરી તે કરવાને માટે બધાની આગળ એમ કહેતા કથા કહેતી સમય, જે શ્રીઠાકુરજીની વાર્તા નથી કરી.

वार्ता-प्रसंग २—और श्रीआचार्यजीने श्रीठाकुरजी की पास तीन वार यह माँग्यो, जो-मेरे आगे दामोदरदास की देह न छूटे। ताको हेतु यह है, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सन्यास ग्रहण करिवे को बिचार मन में करे। ता समे श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी दोऊ भाई बालक हते। तातें मारग की वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास कों समझाइ कै थापी। दामोदरदास सों कछु गोप्य न राख्यो।

और श्रीआचार्यजी श्रीभागवत अहर्निस देखते, कथा कहते और दामोदरदास सुनते। और मारग को सब सिद्धांत, भगवल्लीला-रहस्य श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास के हृदय विषे स्थाप्यो।

दामोदरदास के हृदय विषे मारग स्थापि कितेक दिन पाछे श्रीआचार्यजी आप सन्यास ग्रहण किये। तब कितेक दिन पाछे श्रीगुसांईजी ने श्रीअक्काजी सों पूछी, जो-आचार्यजी ने मार्ग प्रगट कियो है सो उत्सव को कहा प्रकार है ? हम तो कछु जानत नाहीं। तब अक्काजी ने कह्यो, जो-मार्ग तथा उत्सव को प्रकार सब दामोदरदास सों कह्यो है, सो उनसों तुम पूछो। तुमसों दामोदरदास सब कहेंगे।

વાર્તા પ્રસંગ—૨ અને શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીની પાસે ત્રણવાર એ માગ્યું, જે મારી આગળ દામોદરદાસની દેહ ન છૂટે. તેનો હેતુ એ છે, જે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપે સન્યાસ ગ્રહણ કરવાનો વિચાર મનમા કર્યો. તે સમયે શ્રીગોપીનાથજી તથા શ્રીગુસાઇજી બેઉ ભાઈ બાળક હતા. તેથી માર્ગની વાર્તા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ (એ) દામોદરદાસને સમજાવીને (તેમના હૃદયમાં) સ્થાપી (હતી) દામોદરદાસથી કંઈ ગોપ્ય ન રાખ્યું (હતું).

અને શ્રીઆચાર્યજી શ્રીભાગવત અહર્નિશ અવલોકતા. કથા કહેતા અને દામોદરદાસ સાંભળતા. અને માર્ગનો બધો સિદ્ધાંત. ભગવલ્લીલા રહસ્ય શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસના હૃદય વિષે સ્થાપ્યુ (હતુ).

દામોદરદાસના હૃદય વિષે માર્ગ સ્થાપી કેટલાક દિવસ પછી શ્રીઆચાર્યજી આપે સન્યાસ ગ્રહણ કર્યો. ત્યારપછી કેટલાક દિવસ બાદ શ્રીગુસાઇજીએ શ્રીઅક્કાજીને પૂછ્યું, જે. આચાર્યજીએ માર્ગ પ્રકટ કર્યો છે. તે. ઉત્સવનો શો પ્રકાર છે ? અમે તો કંઈ જાણતા નથી. તેથી અક્કાજીએ કહ્યું. જે માર્ગ તથા ઉત્સવનો બધો પ્રકાર દામોદરદાસને કહ્યો છે. તે એમનાથી તમે પૂછો. તમને દામોદરદાસ બધું કહેશે.

तब श्रीगुसांईजी दामोदरदास के घर पधारे। तब दामोदरदास ने बहुत सन्मान करि भक्तिभावसों घरमें पधराये। ता पाछे श्रीगुसांईजी ने उत्सव के प्रकार पूछे, सो सब दामोदरदास ने कहे।

भावप्रकाश—यामें संदेह बहोत हैं, जो–श्रीआचार्यजी कर्तुम्, अकर्तुम्, अन्यथा कर्तुम्, सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं, सो श्रीठाकुरजी पास क्यों मांगे?

ताको अभिप्राय यह है, जो–दामोदरदास कों प्रेमलक्षणा भक्ति दृढ़ होय चुकी है, और ललिताजी को स्वरूप हैं। सो श्रीठाकुरजी कों परमप्रिय हैं। ललिताजी मध्या हैं, दोउ स्वरूप की सेवा में मगन हैं। सो इनकों श्रीआचार्यजी के दर्शन और श्रीठाकुरजी के दर्शन दोउ में भाव है। जातें श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी सों कहे, जो–मैं दामोदरदास कों जैसे नित्य अनुभव करावत हों तैसे तुमहू नित्य अपने स्वरूप को अनुभव कराइयो। यह कहिके यह जताये, जो दामोदरदास पर अत्यंत प्रीति श्रीआचार्यजी की है। तातें जाने, जो–मति कहूँ मेरे पाछें दमला कोई बात सों दुःख पावे, तातें श्रीठाकुरजी सों कहे।

और मार्ग दामोदरदास के हृदय में स्थापन किये सो श्रीगुसांईजी के लिये। ताको तात्पर्य यह है, जो–यद्यपि श्रीगुसांईजी ईश्वर हैं, बालक हैं, तो

ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી દામોદરદાસના ઘરે પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસે બહુ સન્માન કરી ભક્તિભાવથી ઘરમાં પધરાવ્યા. ત્યારપછી શ્રીગુસાંઇજીએ ઉત્સવનો પ્રકાર પૂછ્યો, તે બધો દામોદરદાસે કહ્યો.

ભાવપ્રકાશ—આમાં સંદેહ ઘણો છે, જે, શ્રીઆચાર્યજી કર્તુમ્ અકર્તુમ્ અન્યથા કર્તુમ્ સર્વ સામાર્થ્યયુક્ત છે તે શ્રીઠાકુરજી પાસે કેમ માંગ્યું? તેનો અભિપ્રાય આ છે, જે દામોદરદાસને પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ દઢ થઇ ચુકી છે. અને લલિતાજીનુ સ્વરૂપ છે. તે શ્રીઠાકુરજીને પરમ પ્રિય છે. લલિતાજી મધ્યા છે, (તેથી) બન્ને સ્વરૂપોની સેવામાં મગન છે. તેથી એમને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન અને શ્રીઠાકુરજીનાં દર્શન બન્નેમાં ભાવ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને કહ્યું, જે–હુ દામોદરદાસને જેમ નિત્ય અનુભવ કરાઉ છું તેમ તમે પણ નિત્ય તમારા સ્વરૂપનો અનુભવ કરાવજો.

આ કહીને એ સૂચવ્યું, જે દામોદરદાસ ઉપર અત્યંત પ્રીતિ શ્રીઆચાર્યજીની છે. તેથી જાણે, જે, કદાચ એમ ન થાય જે મારી પાછળ દામોદરદાસ કોઇ વાતથી દુઃખ પામે, તેથી શ્રીઠાકુરજીને કહ્યુ.

અને માર્ગ દામોદરદાસના હૃદયમાં સ્થાપન કર્યો તે શ્રીગુસાંઇજીને માટે. તેનું તાત્પર્ય એ છે, જે યદ્યપિ શ્રીગુસાંઇજી ઇશ્વર છે, બાલક છે, તો શું થયું? પરંતુ

कहा भयो ? परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनो भक्तिमार्ग दामोदरदास के हृदय में स्थापन करते । आपु श्रीमुख तें कहते, "यह मार्ग दमला तेरे लिये प्रगट कियो है । " तातें वैष्णव के हृदय में स्थापन करें तो आगे वैष्णवन में फैले । जो श्रीगुसांईंजी के हृदय में प्रथम धर्म रहे, तो गोकुल में ही धर्म रहतो । गोकुल में तो पहले ही सों शेष अशेष माहात्म्य धारण किये हैं । काहेतें, बिन्दु सृष्टि है, और वैष्णव सो तो नादसृष्टि है । तातें इनकों तो भक्ति दियेतें होइ । यातें गोपालदास गाये हैं " भक्तिमारगीय जीव स्वतंतर केवल भक्त न थाय ।" तातें भक्तिमार्गीय जीव स्वतंत्र है, दैवी, परंतु केवल आप तें भक्ति न बढ़े । तातें श्रीआचार्यजी 'नवरत्न' में कहे हैं, जो-"निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ।"

या प्रकार भक्तन के हृदय में राखें, तातें भक्तिमार्ग प्रकट भयो । नहीं तो ईश्वरमार्ग कहावतो (तहां) केवल ईश्वरमार्ग कहावे, भक्तिमार्ग में ईश्वर मार्ग हू कहावे । जहां भक्ति तहां भगवान, जहां भक्ति नाहीं तहां भक्तिमार्ग की रीति सों भगवान न रहें, अंतरयामी ह्वे रहें । तातें भक्तन को उत्कर्ष जामें होई सो भक्तिमार्ग कहावे ।

શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોતાનો ભક્તિમાર્ગ (તો) દામોદરદાસના હૃદયમાં સ્થાપન કરતા. (હતા) આપ શ્રીમુખથી કહેતા, આ માર્ગ દમલા તારા માટે પ્રકટ કર્યો છે. તેથી વૈષ્ણવના હૃદયમાં સ્થાપન કરે તો આગળ વૈષ્ણવોમાં ફેલે. જો શ્રીગુસાંઇજીના હૃદયમાં પ્રથમ ધર્મ રહે તો ગોકુલમાં જ ધર્મ રહેતો. ગોકુલમાં તો પહેલાથી જ શેષ–અશેષ મહાત્મ્યને ધારણ કરાવ્યુ છે (સ્થાપ્યું જ છે) કેમ કે બિન્દુ–સૃષ્ટિ છે. અને વૈષ્ણવ એ તો નાદ–સૃષ્ટિ છે. તેથી એને તો ભક્તિ દીધાથી થાય. તેથી ગોપાલદાસે ગાયું છે—" ભક્તિમાર્ગીય જીવ સ્વતંતર કેવળ ભક્ત ન થાય " તેથી ભક્તિમાર્ગીય જીવ સ્વતંત્ર છે દૈવી, પરતુ કેવળ પોતાની મેળે (તેને) ભક્તિ ન વધે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી 'નવરત્ન' માં કહે છે, જે

" નિવેદનં તુ સ્મર્તવ્ય સર્વથા તાદૃશૈર્જનૈઃ "

આ પ્રકારે ભકતોના હૃદયમાં રાખ્યો તેથી ભક્તિમાર્ગ પ્રકટ થયો. નહીં તો ઈશ્વરમાર્ગ કહેવાતો. (ત્યાં) કેવળ ઈશ્વરમાર્ગ કહેવાય. ભક્તિમાર્ગમાં ઈશ્વરમાર્ગ પણ કહેવાય. જ્યાં ભક્તિ ત્યાં ભગવાન. જ્યાં ભક્તિ નહીં ત્યાં ભકિતમાર્ગની રીતિથી ભગવાન ન રહે. અંતર્યામી થઇ રહે. તેથી ભકતોનો ઉત્કર્ષ જેમાં હોય તે ભકિતમાર્ગ કહેવાય.

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय दामोदरदास और श्रीगुसांईजी एकांत में बैठे हते। तब श्रीगुसांईजी दामोदरदास सों पूछे। जो-तुम श्रीआचार्यजी कों कहा करि के जानत हो? तब दामोदरदास ने कह्यो, जो-हम तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों जगदीस सो संसार में सब कोऊ कहत हैं जो सबतें बड़े जगदीस श्रीठाकुरजी हैं, तिनतें अधिक करि जानत हैं। तब श्रीगुसांईजी दामोदरदास सों कहे, जो-तुम ऐसे क्यों कहत हो! जो-श्रीठाकुरजी तें बड़े हैं? तब दामोदरदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यौ, जो-महाराज! दान बड़ो के दाता बड़ो? काहुके पास धन बहोत है तो कहा करे? देई ताको जानिये। और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सर्वस्व धन श्रीनाथजी हैं। सो हम जैसे जीवनकों आपु दान कियो है। तातें हम श्रीआचार्यजी कों सर्व ते बड़े करि जानत हैं।

वार्ता-प्रसंग ४—बहुरि एक समय श्रीगुसांईजी बैठक में बैठे हते। द्वै चार वैष्णव कुंभनदास, गोविंददास आदि एकांत हसिवे खेलिवे के लिये पास बैठे हते। आपु उनसों हँसत खेलत मसकरी करत बहोत ही प्रसन्नता में खेल की वार्ता करत हते। ता समें दामोदरदास तहाँ आये। तब श्रीगुसांईजी बहोत आदर सन्मान

વાર્તા પ્રસંગ—૩ ફરી એક સમય દામોદરદાસ અને શ્રીગુસાંઇજી એકાંતમાં બેઠા હતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી દામોદરદાસને પૂછે, જે-તમે શ્રીઆચાર્યજીને શું કરીને જાણો છો? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે, અમે તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને જગદીશ, જે સંસારમાં સર્વજણ કહે છે જે સર્વથી મોટા જગદીશ ઠાકુરજી છે તેમનાથી (પણ) અધિક કરી જાણીએ છીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી દામોદરદાસને કહે, જે તમે એમ કેમ કહો છો જે શ્રીઠાકુરજીથી મોટા છે? ત્યારે દામોદરદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, જે મહારાજ! દાન મોટું કે દાતા મોટો? કોઈની પાસે ધન બહુ છે તો શું કરે? દે તેનું જાણિએ. અને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુનું સર્વસ્વ ધન શ્રીનાથજી છે. તે અમારા જેવા જીવોને આપે દાન કર્યું છે. તેથી અમે શ્રીઆચાર્યજીને સર્વથી મોટા કરી જાણીએ છીએ.

વાર્તા પ્રસંગ—૪ ફરી એક સમય શ્રીગુસાંઇજી બેઠકમાં બિરાજ્યા હતા. બે ચાર વૈષ્ણવો કુંભનદાસ, ગોવિંદદાસ આદિ એકાંત હસવા ખેલવાને માટે પાસે બેઠા હતા. આપ એમનાથી હસતા, ખેલતા, મશ્કરી કરતાં બહુજ પ્રસન્નતામાં ખેલની વાર્તા કરતા હતા. તે સમયે દામોદરદાસ ત્યાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ બહુ આદર

किये। पाछें दामोदरदास तहाँ आय के दंडवत् करि के बैठे। तब श्रीगुसांईजी सों दामोदरदासने कह्यो, जो-महाराज! अपनो मारग निश्चिंतता को नाहीं। यह मार्ग है सो तो अत्यंत कष्ट आतुरता को है, दुःख को है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम धन्य हो। साँची कहत हो। परि हमकों जब श्रीआचार्यजी की कृपा होइगी तब कष्ट आतुरता होइगी। यह मार्ग तो श्रीआचार्यजी के अनुग्रह विना न होई।

तब दामोदरदास दंडवत् किये और कहें, जो-हमकों राजसों एकवेर बिनती करनी सो करी। पाछे आप प्रभु हो, भली जानोगे सो करोगे। परि यह मारग तो या भाँतिको है। तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और कहैं, जो-हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे। जो-तुम न कहोगे तो और कौन कहेगो? तुमकों देखत हैं तब चित्त अति प्रसन्न होत है, तातें सुखेन कहो। आप सारिखे श्रीआचार्यजी के सेवक जानिके कहत हैं। पाछें दामोदरदास की सिक्षा अंगीकारि करत भये। तातें बड़े सो बड़े।

भावप्रकाश—यह लोकरीति सों विरुद्ध है। जो-सेवक स्वामीसों सिक्षा करें। यह संदेह होय तहां कहत हैं, दामोदरदास ललितारूप हैं। सो

સન્માન કર્યું. પછી દામોદરદાસ ત્યાં આવીને દંડવત કરીને બેઠા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીને દામોદરદાસે કહ્યું, જે મહારાજ! આપણો માર્ગ નિશ્ચિતતાનો નથી. આ માર્ગ છે તે તો અત્યંત કષ્ટ આતુરતાનો છે, દુઃખનો છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, જે, તમે ધન્ય છો. સાચી (વાત) કહો છો. પરંતુ અમને જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીની કૃપા થશે ત્યારે કષ્ટ આતુરતા થશે. આ માર્ગ તો શ્રીઆચાર્યજીના અનુગ્રહવિના ન હોય (ન બને).

ત્યારે દામોદરદાસે દંડવત કર્યા. અને કહ્યું, જે અમને રાજથી એકવાર વિનતી કરવી (હતી) તે કરી. પછી આપ પ્રભુ છો ભલી જાણશો તે કરશો. પરંતુ આ માર્ગ તો આ પ્રકારનો છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી બહુ પ્રસન્ન થયા અને કહે, જે અમને આ વાર્તા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ તમારી દ્વારા કહી. જો તમે ન કહેશો તો બીજો કોણ કહેશે? તમને જોઇએ છીએ ત્યારે ચિત્ત અતિપ્રસન્ન થાય છે તેથી સુખેથી કહો. આપના જેવા શ્રીઆચાર્યજીના સેવક જાણીને કહે છે. પછી દામોદરદાસની શિક્ષા અંગીકાર કરતા થયા. તેથી મોટા તે મોટા.

ભાવપ્રકાશ—આ લોકરીતિથી વિરૂદ્ધ છે, જે સેવક સ્વામીને શિક્ષા કરે આ સંદેહ થાય ત્યાં કહે છે, દામોદરદાસ લલિતા રૂપ છે તે શ્રીચંદ્રાવલીજીને

श्रीचंद्रावलीजी कों (गुसांईजी कों) परकीयारसभाव है । परकीयारस में प्रीति बहोत हैं, अष्टप्रहर चित्त प्यारे सों लग्यो रहत है । सो जारभाव को प्रकार दिखाये। जो-और के संग हांसी कैसी ?

तथा दामोदरदासकी देह मात्र दीसत है, परंतु श्रीआचार्यजी को आवेस अष्ट प्रहर रहत है। जो-मुख सों श्रीआचार्यजी बोलत हैं। तातें श्रीगुसांईजी कहत हैं, जो-हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक दिन दामोदरदास के पिता को श्राद्धदिन हतो। ता दिन श्रीगुसांईजी तहाँ पधारे। वाके पिता को श्राद्ध करवायो। पाछें उत्थापन के समें दामोदरदास दरसन कों आये। तब श्रीगुसांईजीने कही, जो-मोकों श्राद्ध की दक्षिणा देउ। तब दामोदरदास ने कही, जो-दक्षिणा में एक बात कहूँगो। सो 'सिद्धान्तरहस्य' के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान कहे। यह ऐसी बात है। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-आगे कहो। तब दामोदरदास ने कही, जो मैंने तो इतनो संकल्प कियो है। तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहें। पाछें दामोदरदास ने मारग की प्रणालिका कही। श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ग्रन्थनकी टीका और रहस्यवार्ता श्रीगुसांईजीकी आगे सब कहें।

(શ્રીગુસાંઇજીને) પરકીયા રસભાવ છે પરકીયા રસમાં પ્રીતિ ઘણી છે. અષ્ટપ્રહર ચિત્ત પ્યારાથી લાગ્યું રહે છે. તે જારભાવનો પ્રકાર દેખાડયો. જે બીજાની સગે હાંસી કેવી ?

તથા દામોદરદાસની દેહ માત્ર દેખાય છે પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીનો આવેશ અષ્ટપ્રહર રહે છે. જે, મુખથી શ્રીઆચાર્યજી બોલે છે. તેથી શ્રીગુસાંઇજી કહે છે, જે, અમને આ વાર્તા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ તમારી દ્વારા કહે.

વાર્તા પ્રસંગ—૫ અને એક દિવસ દામોદરદાસના પિતાનો શ્રાદ્ધદિન હતો. તે દિવસે શ્રીગુસાંઇજી ત્યા પધાર્યા. એમના પિતાનું શ્રાદ્ધ કરાવ્યું. પછી ઉત્થાપનના સમયે દામોદરદાસ દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, જે, મને શ્રાદ્ધની દક્ષિણા દો. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે દક્ષિણામાં એકવાત કહીશ. તે 'સિદ્ધાન્તરહસ્ય' ના ડોઢ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન કહ્યું, એ એવી વાત છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે જે આગે કહો. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે એટલો સંકલ્પ કર્યો છે. ત્યારેશ્રી ગુસાંઇજી ચૂપ થઈ રહ્યા. પછી (તો) દામોદરદાસે માર્ગની પ્રણાલિકા કહી. શ્રીભાગવતની ટીકા શ્રીસુબોધિનીજી, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના ગ્રન્થોની ટીકા અને રહસ્યવાર્તા શ્રીગુસાંઇજી આગળ સર્વ કહ્યું.

ता पाछें श्रीगुसांईजी दामोदरदास कों नमस्कार करन न देते। यातें, जो-श्रीगुसांईजी अपने मनमें यों विचारे, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास के हृदे विषे (सदा) सर्वदा बसत हैं। तो इन पास क्यों नमस्कार करन दीजे? यातें नमस्कार न करन देते। और दामोदरदासकों श्रीगुसांईजी अपनो चरणोदक हू न देते।

पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने दामोदरदास कों दरसन दीनो और आज्ञा दीनी, जो-तू श्रीगुसांईजी को चरणोदक नित्य लीजियो। तब प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसांईजी के पास आये। चरणोदक माग्यो। तब श्रीगुसांईजीने चरणोदक की नाहीं कीनी। तब दामोदरदासने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-मोकों श्रीआचार्यजी की आज्ञा भई है और श्रीआचार्यजी को दरसन भयो है। और कह्यो है, जो-चरणोदक लीजियो। तब श्रीगुसांईजीने चरणोदक दीनो।

भावप्रकाश--श्राद्ध करावये को अभिप्राय यह (है) जो-दामोदरदास के पितरन को उद्धार तो होइ चुक्यो। जब ए भक्त में (है)। मर्यादामारग में नृसिंहजी ने प्रह्लाद सों कह्यो है। एकीस पुरषा भक्त के तरे। सो दामोदरदास तो पुष्टिमार्गीय है। तातें इनके पितर तरे यामें कहा संदेह है? परंतु पुष्टिमार्ग

તે પછી શ્રીગુસાંઈજી દામોદરદાસને નમસ્કાર કરવા ન દેતા. (તે) એથી, જે-શ્રીગુસાંઈજી પોતાના મનમાં એમ વિચારે, જે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસના હૃદય વિષે (સદા) સર્વદા વસે છે. તો એમની પાસે કેમ નમસ્કાર કરવા દઈએ? તેથી નમસ્કાર ન કરવા દેતા, અને દામોદરદાસને શ્રીગુસાંઈજી પોતાનું ચરણોદક પણ ન દેતા.

પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ દામોદરદાસને દર્શન આપ્યું અને આજ્ઞા દીધી, જે, તૂ શ્રીગુસાંઈજીનું ચરણોદક નિત્ય લેજે. ત્યારે પ્રાતઃકાલ દામોદરદાસ શ્રી-ગુસાંઈજીની પાસે આવ્યા. ચરણોદક માંગ્યું. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ ચરણોદકની ના કહી. ત્યારે દામોદરદાસે શ્રીગુસાંઈજીને કહ્યું, જે, મને શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા થઈ છે અને શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન થયા છે, અને કહ્યું છે, જે ચરણોદક લેજે. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ ચરણોદક આપ્યું.

ભાવપ્રકાશ—શ્રાદ્ધ કરાવવાનો અભિપ્રાય એ છે, જે દામોદરદાસના પિતૃઓનો ઉદ્ધાર તો થઇ ચુકયો, જ્યારે એ ભકતમાં છે મર્યાદામાર્ગમાં નૃસિંહજીએ પ્રહ્લાદને કહ્યુ છે, એકવીસ પુરખા ભક્તના તરે, તો દામોદરદાસ તો પુષ્ટિમાર્ગીય છે. તેથી એમના પિતૃઓ તરે એમાં શો સંદેહ છે? પરન્તુ પુષ્ટિમાર્ગના

के संबंध विना पुष्टिमार्ग में अंगीकार न होई। तातें श्रीगुसांईजी को संबंध श्राद्ध द्वारा पाय पुष्टिमार्ग में अंगीकार भयो। जो–दामोदरदास के श्राद्ध तें पुष्टिमार्ग में अंगीकार होई। परंतु गुरु की अपेक्षा है। गुरु विना अंगीकार में दृढ़ अंगीकार नाहीं। तातें श्रीगुसांईजी को संबंध कराये।

तहां यह संदेह होय, जो–दामोदरदास कों श्राद्ध कराये। इनके पितरन को पुष्टि को संबंध भयो। और भगवदीय को नाहीं कराये। सो उनके पितरन को कैसें होयगो? यह संदेह होय तहां कहत हैं, यह पुष्टिमार्गीय दैवी जीव के आधिदैविक (मूलभूत) दामोदरदास हैं। जहां इनके पितरन को पुष्टि संबंध भयो तब सगरे पुष्टिमार्गीय के पितरन को पुष्टि संबंध भयो। जैसे मारग, दामोदरदास के पितरन को पुष्टि संबंध (भयो) ऐसे मारग दामोदरदास के लिये। तामें सगरे पुष्टि मारग के (जीवन के) लिये। या प्रकार मूल में भक्ति ता करि के सब में फेले। या प्रकार दामोदरदास की भक्ति करि के जीव में भक्ति बढ़ी हैं। जीव को सामर्थ्य नाहीं है जो–पुष्टिमारग की भक्ति एक छिन करि सके।

और दक्षिणा में दामोदरदास ने 'सिद्धांत रहस्य' के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान

સંબંધ વિના પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર ન થાય તેથી શ્રીગુસાંઇજીનો સંબંધ શ્રાદ્ધ દ્વારા પામી પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર થયો. જે દામોદરદાસના શ્રાદ્ધ (કરવા) થી (પણ) પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર થાય, પરંતુ ગુરુની અપેક્ષા છે. ગુરુ વિના અંગીકારમાં દૃઢ અંગીકાર નહી. તેથી શ્રીગુસાંઇજીનો સબંધ કરાવ્યો.

ત્યાં આ સંદેહ થાય જે દામોદરદાસને શ્રાદ્ધ કરાવ્યું (તેથી) એમના પિતૃઓને પુષ્ટિનો સંબધ થયો. બીજા ભગવદીયોને નહી કરાવ્યું તે એમના પિતૃઓનું શું થશે? આ સદેહ હોય ત્યાં કહે છે, આ પુષ્ટિમાર્ગીય દૈવી જીવોના આધિદૈવિક (મલભૂત) દામોદરદાસ છે. જ્યાં એમના પિતૃઓને પુષ્ટિ (નો) સંબધ થયો ત્યાં સઘળા પુષ્ટિમાર્ગીયોના પિતૃઓને (પણ) પુષ્ટિસંબધ થયો. જે માર્ગે, (પ્રકારે) દામોદરદાસના પિતૃઓને પુષ્ટિસબંધ (થયો) તેવો માર્ગ (પ્રકાર) દામોદરદાસને અર્થે એમાં સઘળા પુષ્ટિમાર્ગના (જીવો) ને માટે. આ પ્રકારે મૂલમાં ભક્તિ તેનાથી બધામાં ફેલે. આ પ્રકારે દામોદરદાસની ભક્તિ કરીને જીવોમાં ભક્તિ વધી છે. જીવનું સામર્થ્ય નથી, જે પુષ્ટિમાર્ગની ભક્તિ એક ક્ષણ (પણ) કરી શકે.

અને દક્ષિણામાં દામોદરદાસે 'સિદ્ધાંત રહસ્ય' ના ડોઢ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન

कियो । तब श्रीगुसांईजी कहें आगे कहो । तब दामोदरदासने कही, जो–मैंने तो इतनो (ही) संकल्प कियो है । ताको कारन यह है, जो–सत्य संकल्प (तो) इतने ही में सगरो माग्ग है ।

श्रीगुसांईजी चरणोदक दामोदरदास कों न देते, दंडोत् करन न देते । सो यातें, जो–श्रीस्वामिनीजी की अनन्य सखी है । उनही कों करे । तातें दामोदरदास ने हठ नाहीं कियो । चरणोदक न लियो । तातें श्रीआचार्यजी (ने) दामोदरदास कों समझायो । जो–तू श्रीगुसांईजी को चरणोदक लीजियो, दंडोत् करियो । मैं श्रीगुसांईजी के हृदय में बिराजत हूँ । मेरो स्वरूप मोतें प्रगटे है । तब दामोदरदास श्रीगुसांईजी सों यह भेद कहें । तब श्रीगुसांईजी कहे, लेहू । प्रसन्न होइ के चरणोदक दिये । जाने, जो–श्रीआचार्यजी के भावतें लेत है । मेरे भाव तें नाहीं ।

याही तें श्रीगोपीनाथजी (श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र) यद्यपि श्रीगुसांईजी के वड़े भाई हैं । परंतु काहू वैष्णव ने चरणोदक नाहीं लियो । या भाव तें श्रीगुसांईजी के सात बालक और वल्लभकुल के चरणोदक में श्रीआचार्यजी को भाव जनायो । तातें चरणोदक लेनो । दंडोत् करनो । यह सिद्धांत जनायो ।

કર્યું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે આગળ કહો. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે મે તો એટલો (જ) સંકલ્પ કર્યો છે, તેનું કારણ એ છે, જે, સત્ય સંકલ્પ તો એટલામાં જ બધો મારગ છે.

શ્રીગુસાંઇજી ચરણોદક દામોદરદાસને ન દેતા, દંડવત્ કરવા ન દેતા. તે એથી જે શ્રીસ્વામિનીજીની અનન્ય સખી છે (તેથી) એમને જ (દંડવત) કરે. તેથી દામોદરદાસે હઠ ન કર્યો. ચરણોદક ન લીધુ. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસને સમજાવ્યા, જે, તૂ શ્રીગુસાંઇજીનુ ચરણોદક લેજે, દંડવત કરજે. હું શ્રીગુસાંઇજીના હૃદયમાં બિરાજુ છુ. મારૂ સ્વરૂપ, મારાથી પ્રકટયા છે. ત્યારે દામોદરદાસ શ્રીગુસાંઇજીને આ ભેદ કહે ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે લો. પ્રસન્ન થઇને ચરણોદક આપ્યું. જાણે, જે શ્રીઆચાર્યજીના ભાવથી લે છે, મારા ભાવથી નહીં.

તેથી જ શ્રીગોપીનાથજી (શ્રીઆચાર્યજીના મોટા પુત્ર) યદ્યપિ શ્રીગુસાંઇજીના મોટા ભાઇ છે પરંતુ કોઇ વૈષ્ણવે ચરણોદક નહીં લીધું. આ ભાવથી શ્રીગુસાંઇજીના સાત બાલક અને શ્રીવલ્લભકુલના ચરણામૃતમાં શ્રીઆચાર્યજીનો ભાવ દેખાડયો, તેથી ચરણોદક લેવુ, દંડવત કરવા, એ સિદ્ધાંત બતાવ્યો.

वार्ता-प्रसंग ६—और दामोदरदास कों श्रीआचार्यजी तीसरे दिन दरसन देते। मारग की रहस्यवार्ता कहते। ऐसी कृपा करते। और कदाचित तीसरे दिन दरसन न होतो तो ता दिन दामोदरदास के पेट में पीड़ा बहुत होती, अत्यंत कष्ट पावते। और पाछे दरसन होतो तब तत्काल कष्ट निवर्त्त होई जातो। ऐसी भांति केतेक वर्षपर्यंत श्रीआचार्यजी दरसन दीनो, ऐसी कृपा करते। जो बात होती सो सब दामोदरदास श्रीगुसाईंजीकी आगे कहते। और मारग के प्रकार (प्रकाश ?) की वार्ता अहर्निस करते। श्रीगुसांईजी दामोदरदास की ऊपर बहोत कृपा करते और कहते, जो दामोदरदास के हृदय में श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा विराजे हैं।

भावप्रकाश—दामोदरदास कों तीसरे दिन श्रीआचार्यजी दरसन देतें। ताको हेतु यह, जो-तीन दिन लों दरसन को आवेस तामें मगन रहते। तीसरे दिन सरीर की सुधि होती। सो विरह कष्ट होतो। सो दरसन करि फेरि स्वरूपानंद में मगन होई जातें।

वार्ता-प्रसंग ७—और पहले दामोदरदास श्रीगुसांईजी की आधी गादी दाबि के बैठते। सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु

વાર્તા પ્રસંગ-૬—બીજું દામોદરદાસને શ્રીઆચાર્યજી ત્રીજા દિવસે દર્શન આપતા, માર્ગની રહસ્ય વાર્તા કહેતા, એવી કૃપા કરતા. અને કદાચિત્ ત્રીજા દિવસે દર્શન ન થતું તો તે દિવસે દામોદરદાસના પેટમાં પીડા બહુ થતી, અત્યંત કષ્ટ પામતા અને પછી દર્શન થતું ત્યારે તત્કાલ કષ્ટ નિવૃત્ત થઇ જતું. એવી પ્રકારે કેટલાક વર્ષ પર્યંત શ્રીઆચાર્યજીએ દર્શન આપ્યું. એવી કૃપા કરતા. જે વાત હોય તે બધી દામોદરદાસ શ્રીગુસાંઇજી આગળ કહેતા અને મારગના પ્રકાર (પ્રકાશ ?) ની વાર્તા અહર્નિશ કરતા. શ્રીગુસાંઇજી દામોદરદાસની ઉપર બહુ કૃપા કરતા અને કહેતા જે દામોદરદાસના હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ સદા બિરાજે છે.

ભાવપ્રકાશ—દામોદરદાસને તીજે દિવસે શ્રીઆચાર્યજી દર્શન દેતા તેનો હેતુ એ જે ત્રણ દિવસ પર્યંત દર્શનનો આવેશ તેમાં મગન રહેતા. ત્રીજા દિવસે શરીરની સુધ આવતી તેથી વિરહ કષ્ટ થતું. તે દર્શન કરી ફરી સ્વરૂપાનંદમાં મગન થઇ જતા.

વાર્તા પ્રસંગ-૭—અને પહેલા દામોદરદાસ શ્રીગુસાંઇજીની અડધી ગાદી વાળીને બેસતા. તે એક દિવસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ જોયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દામો-

ने देख्यो। तब श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास सों पूछी, जो-दमला! तू श्रीगुसांईजी कों कहा करिके जानत है? तब दामोदरदास ने कही, जो-महाराज! हों तो इनकों तुमारे पुत्र करिके जानत हूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास सों कहे, जो-जैसें तू मोकों जानत है। तैसें इनको स्वरूप जानियो।

वार्ता-प्रसंग ८—एक समें श्रीगुसांईजी बैठे हे। तब दामोदरदास ने कही, महाराज! अपनो मारग निसंगता को नाहीं। रूप प्रगट कर्ता (है)। (और कही, जो) एक समें श्रीमहाप्रभुजी पौढ़े हते। तब श्रीगोवर्धननाथजी आप कहे, जो-जीव को उद्धार करो। लीलाकर्त्ता अवलंबन, सुद्धि करता उद्दीपन भाव, या प्रकार डेढ़ श्लोक कहे।

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि।
साक्षात् भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते॥ १॥
ब्रह्मसंबंधकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः।

यह डेढ़ श्लोक में सब आयो।

भावप्रकाश—सो (अभिप्राय) कहत हैं। श्रावण महिना के पति भगवान है। एक अमल जो उजयारो पक्ष भक्तजनन को है। तिन एकादशि को

દરદાસને પૂછ્યું, જે-દમલા! તું શ્રીગુસાંઇજીને શું કરીને જાણે છે? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે-મહારાજ! હું તો એમને તમારા પુત્ર કરીને જાણું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસને કહે, જે-જેમ તૂ મને જાણે છે તેમ એમનું સ્વરૂપ જાણજે.

વાર્તા પ્રસંગ-૮—એક સમે શ્રીગુસાંઇજી બિરાજ્યા હતા ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપણો માર્ગ નિસંગતાનો નથી. રૂપ પ્રકટ કર્તા છે. (અને કહ્યું જે) એક સમયે શ્રીમહાપ્રભુજી પોઢયા હતા ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આપ કહે, જે જીવનો ઉદ્ધાર કરો. લીલા કર્તા અવલંબન, શુદ્ધિકર્તા ઉદ્દીપનભાવ, એ પ્રકારે દોઢ શ્લોક કહે.

'શ્રાવણસ્યામલે પક્ષે એકાદશ્યાં મહાનિશિ।
સાક્ષાત્ ભગવતા પ્રોક્તં તદક્ષરશ ઉચ્યતે॥
બ્રહ્મસંબંધકરણાત્ સર્વેષાં દેહ જીવયોઃ'।

આ દોઢ શ્લોકમાં બધું આવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—તે, અભિપ્રાય કહે છે. શ્રાવણ મહિનાના પતિ ભગવાન છે. એક અમલ જે ઉજિયારો પક્ષ ભક્તજનોનો છે તે એકાદશીનો દિવસ

दिन प्रभुन को है। एकादश्यां। एकादस इंद्रिय की सुद्धि भक्तजनन कों करायवे कों। महानिशि, जो–अर्द्धरात्रि, रासलीला में साक्षात् भगवान (भक्तन) सों निसंक होई रहस्यवार्ता करत हैं लीला में, तेसे ही श्रीआचार्यजी सों बोले। सगरे अक्षर कहत हैं। यहाँ तांई श्रीआचार्यजी ऊपर भाव। श्रीगोवर्द्धननाथजी अब कहें। ब्रह्मसंबंध करावो। सबकों देह जीवकों। (तातें दामोदरदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो) जो–भक्तिमारग के विस्तार की आज्ञा हैं, सो तुम करो। अज्ञान जीव हैं। याही ब्रह्मसंबंध तें दोष जाइगें, अंगीकार कराये। एक श्लोकमें लीला। आधे श्लोक में मारग की रीति। सब इनमें आयो। या प्रकार श्रीगुसांईजी सों दासोदरदास ने कह्यो।

और ता पाछे दामोदरदास की सहायता सों आपने 'शृंगाररसमंडन' ग्रन्थ कियो।

वार्ता–प्रसंग ९—और प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास सों कह्यो, जो–यह मारग तेरे लिये प्रगट कियो है। जो–जहां लगि श्रीआचार्यजी के मारग की स्थिति है तहां तांई दामोदरदास की (भी) मारग में स्थिति गोप्य है।

પ્રભુનો છે. એકાદશી (એટલે) એકાદશ ઇંદ્રિયોની શુદ્ધિ ભકતજનોને કરાવવા માટે. મહાનિશિ, જે, અર્દ્ધરાત્રિ, રાસલીલામાં સાક્ષાત્ ભગવાન (ભકતો) થી નિશંક થઇ રહસ્ય વાર્તા કરે છે લીલામાં. તે જ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી સાથે બોલ્યા. (તે) સઘળા અક્ષર કહે છે. અહીં સુધી શ્રીઆચાર્યજી ઉપર ભાવ. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી હવે કહે છે, બ્રહ્મસંબંધ કરાવો. બધાને દેહ જીવને. (તેથી દામોદરદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું,) જે ભક્તિમાર્ગના વિસ્તારની આજ્ઞા છે તે તમે કરો. અજ્ઞાન જીવો છે. આ જ બ્રહ્મસંબંધથી દોષો જશે. અંગીકાર કરાવાથી. એક શ્લોકમાં લીલા. અડધા શ્લોકમાં મારગની રીતિ. બધું એમાં આવ્યું. આ પ્રકાર શ્રીગુસાંઇજીને દામોદરદાસે કહ્યું. અને ત્યાર પછી દામોદરદાસની સહાયતાથી આપે 'શૃંગાર રસમણ્ડન' ગ્રન્થ કર્યો.

વાર્તા પ્રસંગ-૯—વળી પ્રથમ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ દામોદરદાસને કહ્યું (હતું) જે આ માર્ગ તારા માટે પ્રકટ કર્યો છે. તે જ્યાં સુધી શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગની સ્થિતિ છે ત્યાં સુધી દામોદરદાસની (પણ) માર્ગમાં સ્થિતિ ગોપ્ય છે.

और दामोदरदास ने कह्यो, जो–मैंने श्रीठाकुरजी के वचन सुने परि समुझ्यो नाहीं। ता समें श्रीआचार्यजी ने कह्यो अज हू, दस जन्म को अंतराय है।

भावप्रकाश—ताको हेतु यह, जो–जब लगि श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मारग की स्थिति है तब लगि दामोदरदास को प्रागट्य फेरि फेरि हैं। (गोप्य रीति सों) मारग को स्तंभ यातें हैं, जो–श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास के हृदय में भगवद्लीला स्थापी। सो संपूर्ण सृष्टि के उद्धार के निमित्त। दामोदरदास के जनम दसलों मारग की स्थिति है, जैसे वल्लभकुल को प्रागट्य है। तैसें हि भक्ति दृढ करन के लिए दामोदरदास को हू अनेक वैष्णवन में प्रागट्य है।

वार्ता–प्रसंग १०—एक समें श्रीआचार्यजी 'सुंदर' सिलाके पास (जाकों 'पूजनी' सिला कहें हैं तहां छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी की बैठक है तहां) दामोदरदास की गोदि में मस्तक धरि आप पौढे हे। ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिरतें श्रीआचार्यजी के पास पधारे। तब दामोदरदास ने सेनही में श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो जो तुम अब हि यहां मति आवो। तुम चंचल हो (तातें) श्रीआचार्यजी जागि उठेंगे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाड़े होय रहे।

અને દામોદરદાસે કહ્યું, જે મેં શ્રીઠાકુરજીનાં વચન સાભળ્યાં પરંતુ સમજ્યો નહી. તે સમયે આચાર્યજીએ કહ્યું, હજી દશ જન્મનો અંતરાય છે.

ભાવપ્રકાશ—તેનો હેતુ આ, જે, જ્યાં સુધી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના માર્ગની સ્થિતિ છે ત્યાં સુધી દામોદરદાસનુ પ્રાકટય ફરી ફરીને છે (ગોપ્ય રીતિથી) માર્ગનો સ્તભ તેથી છે, જે, શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસના હૃદયમાં ભગવલ્લીલા સ્થાપી તે સંપૂર્ણ સૃષ્ટિના ઉદ્ધાર નિમિત્ત, દામોદરદાસના જનમ દશ સુધી માર્ગની સ્થિતિ છે. જેમ વલ્લભકુલનું પ્રાકટય છે તેવી જ રીતે ભક્તિ દૃઢ કરવા માટે દામોદરદાસનું પણ અનેક વૈષ્ણવોમાં પ્રાકટય છે.

વાર્તા પ્રસગ-૧૦—એક સમય શ્રીઆચાર્યજી 'સુંદર' શિલાની પાસે (જેને 'પૂજની' શિલા કહે છે ત્યા શમીવૃક્ષ નીચે શ્રીઆચાર્યજીની બેઠક છે ત્યાં) દામોદરદાસની ગોદીમા મસ્તક ધરીને આપ પોઢયા હતા. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી મંદિરથી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસે સેનમા જ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને કહ્યુ, જે તમે હમણા અહીં ન આવો. તમે ચચલ છો. (તેથી) શ્રીઆચાર્યજી જાગી ઉઠશે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઉભા થઇ રહ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી જાગી ઉઠયા. કહે.

तब श्रीआचार्यजी जागि उठे। कहे, बाबा! उहां क्यों ठाड़े होय रहे हो? पास पधारो। तब श्रीगोवर्द्धनधर पास आय श्रीआचार्यजी सों कहे। जो तुम्हारो सेवक (ने) मोकूं बरज्यो, जो–यहां मति आवो। श्रीआचार्यजी जागि उठेंगे। तातें मैं दूरि ठाढ़ो रह्यौ। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास ऊपर खीजन लागें। जो–तैं श्रीगोवर्द्धननाथजी कों क्यों बरजे? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें। इनसों क्यों खीझत हो? इननें अपनो धर्म राख्यो। इनकों ऐसेहि चाहियें। तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर कों गोदिमें बैठाय कपोल परस करि कहें, बाबा, कछू आज्ञा करो। तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें। मोकों गाय बहुत प्रिय हैं। तब श्रीआचार्यजी सदूपांडे कों बुलाय वेदकर्म करिवे की पवित्री हती सो दे कहे, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों गाय ल्याय देउ।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक कृष्णदास मेघन क्षत्री, सोरों में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो कृष्णदास विसाखा सखी तें प्रगटे हैं। विसाखाजी श्रीस्वामिनीजी की छायारूप हैं। जैसें छाया सरीर के संग लागी डोले तैसें विसाखाजी श्रीस्वामिनीजी के संग रहत हैं। ताही प्रकारसों कृष्णदास हू

બાવા! ત્યાં કેમ ઉભા થઇ રહ્યા છો? પાસે પધારો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર પાસે આવી શ્રીઆચાર્યજીને કહે, જે તમારા સેવકે મને રોક્યો, જે અહીં ન આવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસ ઉપર ખીજવા લાગ્યા. જે, તેં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને કેમ રોક્યા? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, એને કેમ ખિજો છો? એણે એનો ધર્મ રાખ્યો. એને એમ જ જોઇએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને ગોદીમાં બેસાડી કપોલ પરસ કરી કહે, બાવા! કંઈ આજ્ઞા કરો. ત્યારે ગોવર્દ્ધનધર કહે, મને ગાય બહુ પ્રિય છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સદુપાંડેને બુલાવી વેદકર્મ કરવાની પવિત્રી હતી તે દઈ(ને) કહે, આનું દ્રવ્ય કરી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ગાય લાવી દો.

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક કૃષ્ણદાસ મેઘન ક્ષત્રી, સોરજીમાં રહતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહે છે—

ભાવપ્રકાશ—તે કૃષ્ણદાસ વિશાખા સખીથી પ્રકટ્યા છે. વિશાખાજી શ્રીસ્વામિનીજીની છાયા રૂપ છે. જેમ છાયા શરીરની સંગે લાગી ફરે તેમ વિશાખાજી શ્રીસ્વામિનીની સંગે રહે છે. તેજ પ્રકારથી કૃષ્ણદાસ પણ શ્રીઆચાર્યજીના

श्रीआचार्यजी के संग रहत हैं। कृष्णदास में ऐश्वर्य को आवेस बहोत है। सो आगे (वार्ता में) वरनन करत हैं।

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यजी महाप्रभुनें पृथ्वी परिक्रमा करी। तीनों बेर कृष्णदास संग रहे। प्रथम परिक्रमा में बदरीनारायन के 'परली' ओर 'किरणी' नाम पर्वत हैं, तहांते एक बड़ी सिला गिरी। सो कृष्णदास मेघन ने हाथ सों थांभी। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये। सो अलौकिक फल देते। परंतु परीक्षा देखन अर्थ कृष्णदाससों कह्यो, जो-तु माँगि कहा माँगत है? तब कृष्णदास तीन वस्तु मांगे। १ मारग को सिद्धांत हृदयारूढ़ होई। २ मुखरता दोष जाई। ३ मेरे गुरुके घर पधारो और उनकों अंगीकार करो। तामें दोइ वस्तु दीनी। गुरुके घर पधारिवे की नाहीं कीनी।

भावप्रकाश—यह पहले को गुरुभाव हृदय में हतो सो बाहिर प्रगट्यो। तातें अलौकिक दान श्रीआचार्यजी ने छिपाय लियो। दो वस्तु दिये। गुरुकी नाहीं किये। सो दैवी न हतो। दैवी बिना एतन्मारग में अंगीकार नाहीं। या प्रकार दो वस्तु दिये। परंतु और को गुरुभाव रहे। तातें मारग को अनुभव हू न भयो। मुखरताको दोष हू न गयो। प्रथम सामर्थ्य तें कछुक सामर्थ्य हू घटी।

સગે રહે છે. કૃષ્ણદાસજીમાં ઐશ્વર્યનો આવેશ ઘણો છે. તે આગળ (વાર્તામાં) વર્ણન કરે છે

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પૃથ્વી પરિક્રમા કરી. ત્રણે વાર કૃષ્ણદાસ સંગ રહ્યા. પ્રથમ પરિક્રમામાં બદ્રીનારાયણના 'પરલી' અને 'કિરણી' નામ (ના) પર્વતો છે ત્યાંથી એક મોટી શિલા પડી. તે કૃષ્ણદાસ મેઘને હાથથી થાંભી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ બહુ પ્રસન્ન થયા. તે અલૌકિકી ફલ દેતા. પરંતુ પરીક્ષા જોવા માટે કૃષ્ણદાસને કહ્યું, જે-તૂ માંગિ, શું માગે છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે ત્રણ વસ્તુ માગી: ૧ માર્ગનો સિદ્ધાંત હૃદયારૂઢ થાય, ૨ મુખરતા દોષ જાય, ૩ મારા ગુરુના ઘર પધારો અને એમનો અંગીકાર કરો. ત્યારે બે વસ્તુ આપી ગુરુના ઘર પધારવાની ના કહી.

ભાવપ્રકાશ—આ પહેલાંનો ગુરુભાવ હૃદયમાં હતો તે બાહર પ્રકટયો. તેથી અલૌકિક દાન શ્રીઆચાર્યજીએ છિપાવી લીધુ. બે વસ્તુ આપી. ગુરુની ના કહી. તે દૈવી ન હતો. દૈવી વિના આ માર્ગમાં અંગીકાર નથી. આ પ્રકારે બે વસ્તુ આપી. પરંતુ બીજાનો ગુરુભાવ રહ્યો તેથી માર્ગનો અનુભવ પણ ન થયો. મુખરતાનો દોષ પણ ન ગયો. પ્રથમ સામર્થ્યથી કછક સામર્થ્ય પણ ઘટયું.

वार्ता-प्रसंग २—बहुरि श्रीआचार्यजी श्रीबदरिकाश्रम तें आगें व्यासजीकी गुफामें पधारे। सो तहां जीवकी गम्य नाहीं। तातें कृष्णदास सों श्रीआचायजी ने कह्यो, जो-तू ठाड़ो रहियो। (सो) जब श्रीआचार्यजी आगे कों पधारे। तब वेदव्यासजी सामें ही आये। सो श्रीआचार्यजी कों पधराइ के अपने धाम ले गये। पाछें वेदव्यासजीने श्रीआचार्यजी सों कह्यो। जो तुमने श्रीभागवतकी टीका करी है सो मोकों सुनावो। तब श्रीआचार्यजी 'युगलगीत' के अध्याय को एक श्लोक कहे। सो श्लोक। "वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रूरधरार्पितवेणुम्। कोमलांगुलीभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः" ॥१॥ या श्लोक को व्याख्यान कियो, सो तीन दिन में संपूर्ण भयो। तब वेदव्यासजी ने कह्यौ, जो-मैं यह व्यख्यान की अवधारना नाहीं करि सकत, तातें अब क्षमा करो। पाछें श्रीआचार्यजी कह्यौ, जो-तुम वेदांत के ऐसे सूत्र कहा किये, जो-मायावाद पर अर्थ लग्यो। तब व्यासजी ने कह्यो, जो-मैं कहा करूं? मोकूं आज्ञा ही एसी हती। जो-ऐसे करियो। जामें दोइ अर्थ प्राप्त होइ। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-हमने तो ब्रह्मवाद पर अर्थ कियो है, सो सुनायो। सो सुनके वेदव्यासजी बहोत प्रसन्न भये।

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—ફરી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીબદ્રીકાશ્રમથી આગળ વ્યાસજીની ગુફામાં પધાર્યા. ત્યાં જીવની ગમ્ય નથી. તેથી કૃષ્ણદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જે તૂ ઉભો રહેજે. (પછી) જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી આગળ પધાર્યા. ત્યારે વેદવ્યાસજી સામ્હે આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીને પધરાવીને પોતાના ધામ લઇગયા. પછી વેદવ્યાસજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, જે તમે શ્રીભાગવતની ટીકા કરી છે તે મને સંભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી 'યુગલ ગીત' ના અધ્યાયનો એક શ્લોક કહે, તે શ્લોક—

"વામબાહુકૃતવામકપોલો વલ્ગિતભ્રૂરધરાર્પિતવેણુમ્ ।
કોમલાઙ્ગુલીભિરાશ્રિતમાર્ગં ગોપ્ય ઈરયતિ યત્ર મુકુન્દઃ ।"

આ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન કર્યું. તે ત્રણ દિવસમાં સંપૂર્ણ થયું. ત્યારે વેદવ્યાસજીએ કહ્યું, જે હું આ વ્યાખ્યાનની અવધારણા કરી શકતો નથી તેથી હવે ક્ષમા કરો. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જે તમે વેદાંતના એવાં સૂત્રો શું કર્યાં જે માયાવાદ પર અર્થ લાગ્યો? ત્યારે વ્યાસજીએ કહ્યું, જે હું શું કરૂં? મને આજ્ઞા જ એવી હતી, જે એમ કરજો કે જેમાં બન્ને અર્થ પ્રાપ્ત થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જે-અમે તો બ્રહ્મવાદ ઉપર અર્થ કર્યો છે તે સંભળાવ્યો. તે સાંભળીને વેદવ્યાસજી બહુ પ્રસન્ન

ता पाछें वेदव्यासजी सों विदा होइ के श्रीआचार्यजी तीसरे दिन प्रधारे। तब कृष्णदास कों ठाड़ो देखि प्रसन्न भये। कहे, तू ठाड़ो है। तू गयौ नाहीं। सो काहेते? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-महाराज! हौं कहाँ जाउं। मोकों तुमारे चरणारविंद बिना कछू और आश्रय नहीं है। तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये। और कह्यो, जो-माँगि। तब फेरि वेई तीनि वस्तु मांगी। तामें दोई तो दीनी। गुरु के घर की नाहीं कीनी।

भावप्रकाश—और को गुरुभाव हतो। तातें प्रथम तें कछुक सामर्थ्य हू घटी। सो व्यासजी की गुफा में श्रीआचार्यजी कृष्णदास कों संग नहि ले गये। सो यातें 'युगलगीत' को प्रसंग कहनो है। ताकी धारना अब ही कृष्णदास सों होइगी नाहीं। व्यासजी सों हू धारना ना भई। सो यातें व्यासजी कला अवतार हैं। पुरुषोत्तम की बानी भावरूप की धारना कैसें होइ? यह श्रीभागवत व्यासजी में श्रीपुरुषोत्तम आप विराज कें कहि गये। व्यासजी द्वारा मात्र हैं। श्रीभागवत के रस को अनुभव नांहि है। सो रहस्य हरजीवनदास नें या पद में कह्यो है—

थया. ते पछी वेदव्यासजीथी विदाय थईने श्रीआचार्यजी त्रीजा दिवसे पधार्या. त्यारे कृष्णदासने (तेज स्थाने) ઉભો જોઇ પ્રસન્न થયા. કહે, તુ (ત્યારનો) ઉભો છે? તૂ ગયો નહિં, તે કેમ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, જે, મહારાજ! હું ક્યાં જાઉં? મને તમારા ચરણારવિંદ વિના કંઇ બીજો આશ્રય નથી. ત્યારે આ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ બહુ પ્રસન્ન થયા. અને કહ્યું, જે-માંગ. ત્યારે ફરી તેજ ત્રણ વસ્તુ માગી. તેમાં બે તો આપી, ગુરુના ઘરની ના કહી.

ભાવપ્રકાશ—બીજાનો ગુરુભાવ હતો. તેથી પ્રથમથી કંઇક સામર્થ્ય પણ ઘટ્યું. તેથી વ્યાસજીની ગુફામાં શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને સાથે નહી લઇ ગયા. તે એથી, (કે) યુગલગીતનો પ્રસગ કહેવો છે. તેની ધારણા હજુ કૃષ્ણદાસથી નહિં થાય. વ્યાસજીથી પણ ધારણા ન થઇ. તે એ માટે (કે) વ્યાસજી કલા અવતાર છે. (તેથી) પુરુષોત્તમની વાણી ભાવરૂપની ધારણા કેવી રીતે થાય? આ શ્રીભાગવત વ્યાસજીમાં શ્રીપુરુષોત્તમ આપ બિરાજીને કહી ગયા. વ્યાસજી દ્વારા માત્ર છે. શ્રીભાગવતના રસનો અનુભવ નથી. તે રહસ્ય હરજીવનદાસે આ પદમાં કહ્યું છે,

* राग केदारो *

जौंलौं हरि आपुनपौं न जनावें ।
तौंलौं वेद पुरान स्मृति सब पढ़े सुनें नहिं आवें ॥१॥
मुनि विरंचि नारायण मुख सों नारद सों कहि दीनो ।
नारद कहि वेदव्यास सों आप सोध नहि कीनो ॥२॥
वेदव्यास औषध की नांई पढ़ि तन ताप नसायो ।
तिनतें पढ़े मुनि सुकदेवा परिक्षित कों जु सुनायो ॥३॥
जदपि नृपति सुनि व्रज की लीला दसम कही सुकदेवा ।
तोऊ सर्वात्मभाव न उपज्यो तातें करी न सेवा ॥४॥
श्रीभागवत अमृत दधि मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ।
करि आवरन दूरि निजजन के हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥५॥
सेवा अरु श्रृंगार विविध रस श्रीवल्लभ प्रगटायो ।
करि कृपा निज दैवी जीवन पर 'हरजीवन' स्वाद चखायो ॥६॥

या प्रकार श्रीआचार्यजी की कृपा तें रस की प्राप्ति है ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी गंगासागर पधारे। तहाँ श्रीआचार्यजी आप पौढ़े हते। और कृष्णदास पांव दाबत हते। तब श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारे, जो-धान के मुरमुरा होइ तो आरोगें। तब यह बात श्रीआचार्यजी के मन की कृष्णदास मेघन ने जानी। सो इतने में श्रीआचार्यजी कों निद्रा आई। तब कृष्णदास उठिकें गंगासागर उपर आये। तब देखे तो पार एक दीया बरत है। ताकी अटकर तें पेरि कें गंगाजी के पार

રાગ કેદારો

" જોલોં હરિ આપુનપોં ન જનાવેં " × × × (ઉપર જુઓ)

આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી રસની પ્રાપ્તિ છે.

વાર્તા પ્રસંગ ૩—ફરી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી 'ગંગાસાગર' પધાર્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી આપ પોઢયા હતા. અને કૃષ્ણદાસ ચરણ દાબતા હતા. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી આપ મનમાં વિચારે, જે, ધાનના મુરમુરા (પૌંખ) હોઇ તો આરોગીએ. ત્યારે આ વાર્તા શ્રીઆચાર્યજીના મનની કૃષ્ણદાસ મેઘને જાણી. એટલામાં શ્રીઆચાર્યજીને નિદ્રા આવી. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ઉઠીને 'ગંગાસાગર' ઉપર આવ્યા. ત્યારે દેખે તો પાર

ता पाछें वेदव्यासजी सों विदा होइ के श्रीआचार्यजी तीसरे दिन पधारे। तब कृष्णदास कों ठाड़ो देखि प्रसन्न भये। कहे, तू ठाड़ो है। तू गयौ नाहीं। सो काहेते? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-महाराज! हौं कहाँ जाउं। मोकों तुमारे चरणारविंद बिना कछू और आश्रय नहीं है। तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये। और कह्यो, जो-माँगि। तब फेरि वेई तीनि वस्तु मांगी। तामें दोई तो दीनी। गुरु के घर की नाहीं कीनी।

भावप्रकाश—और को गुरुभाव हतो। तातें प्रथम तें कछुक सामर्थ्य हू घटी। सो व्यासजी की गुफा में श्रीआचार्यजी कृष्णदास कों संग नहि ले गये। सो यातें 'युगलगीत' को प्रसंग कहनो है। ताकी धारना अब ही कृष्णदास सों होइगी नाहीं। व्यासजी सों हू धारना ना भई। सो यातें व्यासजी कला अवतार हैं। पुरुषोत्तम की वानी भावरूप की धारना कैसें होइ? यह श्रीभागवत व्यासजी में श्रीपुरुषोत्तम आप विराज कें कहि गये। व्यासजी द्वारा मात्र हैं। श्रीभागवत के रस को अनुभव नांहि है। सो रहस्य हरजीवनदास नें या पद में कह्यो है—

થયા. તે પછી વેદવ્યાસજીથી વિદાય થઈને શ્રીઆચાર્યજી ત્રીજા દિવસે પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસને (તેજ સ્થાને) ઉભો જોઇ પ્રસન્ન થયા. કહે, તુ (ત્યારનો) ઉભો છે? તૂ ગયો નહિં, તે કેમ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, જે, મહારાજ! હું કયાં જાઉં? મને તમારા ચરણારવિંદ વિના કંઇ બીજો આશ્રય નથી. ત્યારે આ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ બહુ પ્રસન્ન થયા. અને કહ્યું, જે-માંગ. ત્યારે ફરી તેજ ત્રણ વસ્તુ માગી. તેમાં બે તો આપી, ગુરુના ઘરની ના કહી.

ભાવપ્રકાશ—બીજાનો ગુરુભાવ હતો. તેથી પ્રથમથી કંઇક સામર્થ્ય પણ ઘટયું. તેથી વ્યાસજીની ગુફામાં શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને સાથે નહી લઇ ગયા. તે એથી, (કે) યુગલગીતનો પ્રસંગ કહેવો છે. તેની ધારણા હજુ કૃષ્ણદાસથી નહિં થાય. વ્યાસજીથી પણ ધારણા ન થઇ. તે એ માટે (કે) વ્યાસજી કલા અવતાર છે. (તેથી) પુરુષોત્તમની વાણી ભાવરૂપની ધારણા કેવી રીતે થાય? આ શ્રીભાગવત વ્યાસજીમાં શ્રીપુરુષોત્તમ આપ બિરાજીને કહી ગયા. વ્યાસજી દ્વારા માત્ર છે. શ્રીભાગવતના રસનો અનુભવ નથી. તે રહસ્ય હરજીવનદાસે આ પદમાં કહ્યું છે,

* राग केदारो *

जौंलों हरि आपुनपों न जनावें ।
तौंलों वेद पुरान स्मृति सब पढ़े सुनें नहिं आवें ॥१॥
सुनि विरंचि नारायण मुख सों नारद सों कहि दीनो ।
नारद कहि वेदव्यास सों आप सोध नहि कीनो ॥२॥
वेदव्यास औषध की नांई पढ़ि तन ताप नसायो ।
तिनतें पढ़े मुनि सुकदेवा परिक्षित कों जु सुनायो ॥३॥
जदपि नृपति सुनि व्रज की लीला दसम कही सुकदेवा ।
तोऊ सर्वात्मभाव न उपज्यो तातें करी न सेवा ॥४॥
श्रीभागवत अमृत दधि मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ।
करि आवरन दूरि निजजन के हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥५॥
सेवा अरु श्रृंगार विविध रस श्रीवल्लभ प्रगटायो ।
करि कृपा निज दैवी जीवन पर 'हरजीवन' स्वाद चखायो ॥६॥

या प्रकार श्रीआचार्यजी की कृपा तें रस की प्राप्ति है ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी गंगासागर पधारे। तहाँ श्रीआचार्यजी आप पौढ़े हते। और कृष्णदास पांव दाबत हते। तब श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारे, जो-धान के मुरमुरा होइ तो आरोगें। तब यह बात श्रीआचार्यजी के मन की कृष्णदास मेघन ने जानी। सो इतने में श्रीआचार्यजी कों निद्रा आई। तब कृष्णदास उठिकें गंगासागर उपर आये। तब देखे तो पार एक दीया बरत है। ताकी अटकर तें पेरि कें गंगाजी के पार

રાગ કેદારો

" જોલોં હરિ આપુનપોં ન જનાવેં " × × × (ઉપર જુઓ)

આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી રસની પ્રાપ્તિ છે.

વાર્તા પ્રસંગ ૩—ફરી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી 'ગંગાસાગર' પધાર્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી આપ પોઢયા હતા. અને કૃષ્ણદાસ ચરણ દાબતા હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ મનમાં વિચારે, જે, ધાનના મુરમુરા (પોંખ) હોઇ તો આરોગીએ. ત્યારે આ વાર્તા શ્રીઆચાર્યજીના મનની કૃષ્ણદાસ મેઘને જાણી. એટલામાં શ્રીઆચાર્યજીને નિદ્રા આવી. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ઉઠીને 'ગંગાસાગર' ઉપર આવ્યા. ત્યારે દેખે તો પાર

गये। तहां एक गांव हतो। तहां खेत में तें गीलो धान कटवायो। टका की जगे द्वै टका दे के मुरमुरा सिद्ध करवाये। पाछे कृष्णदास श्रीगंगाजी में पैरि कें श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी के चरणारविंद दाबि कें जगाये। मुरमुरा आगे राखे। कह्यो, जो–महाराज आरोगो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें पूछी, जो–तू कहां तें लायो? तब कृष्णदास सब वृत्तांत कह्यो। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होई कहें, जो–कछु मांगि। तब वेई तीन वस्तु मांगी। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो–जीव कहा मांगि जानें? या समें जो मांगतो सोई देतो। जो कहेतो तो श्रीठाकुरजी को स्वरूप दिखावतो।

पाछे श्रीआचार्यजी आप सोरों पधारे। तब कृष्णदास ने बिनती करिकें कह्यो, जो–मेरे गुरु कों ले आऊँ? तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो–तू खेद पावेगो। पाछे कृष्णदास इकेलेई गुरु के इहाँ गये। सो जब गुरु ने कृष्णदास कों देख्यो तब कह्यो, जो–तेनें और गुरु किये? तब कृष्णदास नें कह्यो, जो–मैंने तो और गुरु नाहीं किये। मेरे गुरु तो आप ही हो। परि तुम्हारे प्रतापतें मैंने पूर्ण पुरुषोत्तम पाये हैं। तब वाने कह्यो, जो–पूर्ण पुरुषोत्तम कैसें जानिये?

એક દીવો બળે છે. તેની અટકળથી તરીને ગંગાજીની પાર ગયા. ત્યા એક ગામ હતું. ત્યાં ખેતરમાંથી લીલું ધાન કટાયું. ટકાની જગાએ બે ટકા આપી મુરમુરા સિદ્ધ કરવાયા. પછી કૃષ્ણદાસ ગંગાજીમાં તરીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીના ચરણારવિંદ દાબીને જગાવ્યા. મુરમુરા આગળ રાખ્યા. કહ્યું, જે–મહારાજ! આરોગો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પૂછ્યું, જે–તું ક્યાંથી લાવ્યો?' ત્યારે કૃષ્ણદાસે સર્વ વૃત્તાંત કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇ કહે, જે કંઇ માંગ. ત્યારે તેજ ત્રણ વસ્તુ માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જીવ શું માંગી જાણે? આ સમયે જે માંગતો તેજ દેતો. જો કહેતો તો, શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ દેખાડતો (સાક્ષાત્ દર્શન કરાવતો).

પછી શ્રીઆચાર્યજી આપ સોરેં (સોરમજી) પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે વિનતી કરીને કહ્યું, જે મારા ગુરુને લઇ આવું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જે, તું ખેદ પામીશ. પછી કૃષ્ણદાસ એકલા જ ગુરુને ત્યાં ગયા. તે જ્યારે ગુરુએ કૃષ્ણદાસને જોયા ત્યારે કહ્યું. જે. તેં બીજા ગુરુ કર્યા? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, જે, મેં તો બીજા ગુરુ નથી કર્યા. મારા ગુરુ તો આપજ છો પરંતુ તમારા પ્રતાપથી મેં પૂર્ણ પુરુષોત્તમ ને મેળવ્યા છે. ત્યારે તેને કહ્યું, જે પૂર્ણ પુરુષોત્તમ કેમ જાણીએ? ત્યારે

तब गुरु के आगे अग्नि की अंगीठी धकधकात हती । तामेंतें कृष्णदास ने दो हाथ की अंजुली भरि के अंगार हाथ में लिये और कहें, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पूर्ण पुरुषोत्तम होइ तो मेरे हाथ मति जरियो। और, जो-अन्यथा होई तो मेरे हाथ जरि करि भस्म होइ जैयो। सो एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राखी। तब उन गुरु ने भय खाई। तब कह्यो के डारि दे। पाछें उन गुरु ने कृष्णदास के हाथ पकरि के अपने हाथ सों अग्नि डारि दीनी। तब कृष्णदास तहांते खेद पाइ के उठि आये।

यह प्रसंग सब बल्लभाष्टक की टीका में श्रीगोकुलनाथजी ने विस्तारपूर्वक कह्यो है।

भावप्रकाश—सो गंगासागर के तीर पधारे। सो रात्रि कों पोढ़े हते। सो अर्धरात्रि कों मुरमुरा की मन में आई जो भोग धरिये। सो कृष्णदास पर कृपा करन के लिये। काहेतें, पुरुषोत्तम कों कछू वस्तु की अपेक्षा होइ नाहीं। कदाचित होई तो काहू के ऊपर कृपा करन के अर्थ। सो कृष्णदास कों जनाई। तब कृष्णदास तैरिके पार जाय ले आये। यह ईश्वरकार्य है। जीवसों न होइ।

ગુરુની આગળ અગ્નિની અંગીઠી પ્રજ્વલિત હતી. તેમાંથી કૃષ્ણદાસે બે હાથથી ખોબો ભરીને અંગારા હાથમાં લીધા અને કહ્યું, જે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ હોઇ તો મારા હાથ ન બળો. અને જો અન્યથા હોય તો મારા હાથ બળીને ભસ્મ થઇ જાઓ. તે એક મુહૂર્ત સુધી અગ્નિ હાથમાં રાખી. ત્યારે તે ગુરુ ડર્યો. ત્યારે કહ્યું કે નાખી દે. પછી તે ગુરુએ કૃષ્ણદાસના હાથ પકડીને પોતાના હાથથી અગ્નિ નાખી દીધી. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ત્યાંથી ખેદ પામીને ઉઠી આવ્યા.

આ પ્રસંગ બધો 'વલ્લભાષ્ટક' ની ટીકામાં શ્રીગોકુલનાથજીએ વિસ્તારપૂર્વક કહ્યો છે.

ભાવપ્રકાશ—ગંગાસાગરના તીરે પધાર્યા. તે રાત્રિએ પોઢયા હતા. તે અર્દ્ધરાત્રિએ મુરમુરાની મનમાં આવી, જે ભોગ ધરીએ. તે કૃષ્ણદાસ ઉપર કૃપા કરવાને માટે. કેમ જે પુરુષોત્તમને કોઇ વસ્તુની અપેક્ષા હોઇ નહી. કદાચિત્ હોઇ તો કોઇના ઉપર કૃપા કરવા માટે. તે કૃષ્ણદાસને જણાવી. ત્યારે કૃષ્ણદાસ તરીને પાર જઇ લઇ આવ્યા. આ ઇશ્વર કાર્ય છે. જીવથી ન થાય. પછી કૃષ્ણદાસે ચરણ દાબીને જગાવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ આરોગીને બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે કહ્યું માંગ.

तब कृष्णदास चरन दाबि के जनाये (जगाये) तब श्रीआचार्यजी आप आरोगि के बहोत प्रसन्न भये । तब कहे मांगि । पाछे वही तीन वस्तु मांगे ।

तब श्रीआचार्यजी कहे, जीव कहा मांगे ? जीव को माँगनो ही बाधक है । तातें परमानंददास ने गायो है " माँगे सर्वस्व जात हैं परमानंद भाखे " ।

और गुरु को भाव चित्त में हतो । ता करि महाप्रभु के वचन को विश्वास न भयो । जो-एकबार दिये सो दृढ़ हैं । फेरि कहा मांगनो ? और मारग की दुर्लभता दिखाये । श्रीमहाप्रभुजी के मन की बात सुरमुरा की जाने । परतु मारग हृदयारूढ़ कृपा ही तें होइ । दोप को स्वरूप है, जो-मुखरता दोप, जीव को स्वभाव हू जीव के हाथ नाहीं । जब श्रीआचार्यजी छोडावें तब ही छूटे । तातें श्रीआचार्यजी विना और में ईश्वरबुद्धि तथा गुरुबुद्धि करे ताकों एतन्मारग को फल कबहू सिद्ध न होइ । यह भाव जताये । पाछें कृष्णदास गुरु के यहाँ सूँ दुःख पाय, अन्याश्रय छोड़ि, महाप्रभु के पास आये । तब मारग को सिद्धांत हृदयारूढ भयो और मुखरता दोप हू गयो । तातें फेरि श्रीआचार्यजी सों नाहीं मांग्यो । अन्याश्रय एसो बाधक है ।

वार्ता-प्रसंग ४—बहुरि मार्ग हृदयारूढ़ भये पाछे कदाचित् गोप्य वार्ता होइ सो सबन के आगे कहें । तब काहू वैष्णव ने

પછી તેજ ત્રણ વસ્તુ માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે જીવ શું માંગે? જીવનું માંગવુ જ બાધક છે. તેથી પરમનંદદાસે ગાયુ છે, "માંગે સર્વસ્વ જાત હૈં પરમાનંદ ભાખે."

અને ગુરુનો ભાવ ચિત્તમાં હતો તેને કરીને મહાપ્રભુના વચન ઉપર વિશ્વાસ ન થયો. જે એકવાર દીધુ તે દૃઢ છે. ફરી શુ માગવું ? અને માર્ગની દુર્લભતા બતાવી. શ્રીમહાપ્રભુજીના મનની વાત સુરમુરાની જાણી પરંતુ માર્ગ હૃદયારૂઢ કૃપાથી જ થાય. દોપનું સ્વરૂપ છે જે મુખરતા દોપ જીવનો સ્વભાવ પણ જીવના હાથ નથી. જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી છોડાવે ત્યારે છૂટે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી વિના બીજામાં ઇશ્વરબુદ્ધિ તથા ગુરુબુદ્ધિ કરે તેને એતન્માર્ગનુ ફલ કોઇ દિવસ સિદ્ધ ન થાય. આ ભાવ જણાવ્યો. પછી કૃષ્ણદાસ ગુરુને ત્યાંથી દુઃખ પામી અન્યાશ્રય છોડી મહાપ્રભુની પાસે આવ્યા. ત્યારે માર્ગનો સિદ્ધાંત હૃદયારૂઢ થયો. અને મુખરતા દોપ પણ ગયો. ત્યારે ફરી શ્રીઆચાર્યજીથી માંગ્યું નહી. અન્યાશ્રય એવો બાધક છે.

વાર્તા પ્રસગ ૪—ફરી માર્ગ હૃદયારૂઢ થયા પછી કદાચિત ગોપ્ય વાર્તા હોઇ તે બધાની આગળ કહે. ત્યારે કોઇ વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, જે મહારાજ! કૃષ્ણ-

श्रीआचार्यजी सों कही, जो-महाराज! कृष्णदास गोप्य वार्ता सबन के आगे कहत हैं। तब श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों पूछी, जो-तू गोप्य वार्ता सबन के आगे क्यों कहत है? तब कृष्णदास ने कह्यौ, जो-महाराज! आप उनहीं सों पूछिये, जो-मैंने कहा कह्यौ है? तब उन वैष्णव सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो-तुमसों इन कृष्णदास नें कहा वार्ता कही? तब उन वैष्णव नें कह्यौ, जो-महाराज! हमकों तो कछु सुधि रही नाहीं। तब श्रीआचार्यजी मुसिकाई के चुप करि रहे।

भावप्रकाश—मारग हृदयारूढ़ भयो। सो रसके भरते रह्यो न जाई। सो रहस्यवार्ता वैष्णवसों करे। तामें यह जताये, कृष्णदास अपुने अनुभव करन अर्थ कहते। परंतु पात्र बिना रस ठेरे नाहीं। (तातें वैष्णव ने कही, कछु सुधि रही नाहीं)। और कृष्णदास की कछू दामोदरदास तें उतरती दसा। जो-कहे बिना रह्यो न जातो। यह दोऊ भाव जताये।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समें श्रीआचार्यजी सों कृष्णदास नें प्रश्न पूछ्यो, जो-महाराज! श्रीठाकुरजी कों प्रिय वस्तु कहा है? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहत हैं, जो-श्रीठाकुरजी उत्तम

દાસ ગોપ્ય વાર્તા બધાની આગળ કહે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કૃષ્ણદાસને પૂછ્યું જે તું ગોપ્ય વાર્તા બધાની આગળ કેમ કહે છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, જે મહારાજ! આપ એનેજ પૂછીએ, જે મેં શું કહ્યું છે? ત્યારે તે વૈષ્ણવને શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, જે તમને આ કૃષ્ણદાસે શી વાર્તા કહી? ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, જે-મહારાજ! અમને તો કંઇ સુધ રહી નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી હસિને ચુપ થઇ રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—માર્ગ હૃદયારૂઢ થયો. તે રસના ભરથી રહ્યો ન જાય. તે રહસ્યવાર્તા વૈષ્ણવથી કરે. તેમાં આ સૂચવ્યું (જે) કૃષ્ણદાસ પોતાના અનુભવાર્થ કહેતા. પરંતુ પાત્ર વિના રસ ઠરે નહી. (તેથી વૈષ્ણવે કહ્યું, કંઈ સુધ રહી નહીં) અને કૃષ્ણદાસની કઇક દામોદરદાસથી ઉતરતી દશા, જે, કહ્યા વિના રહ્યો ન જતો. એ બન્ને ભાવ સૂચવ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ ૫—વળી એક સમયે શ્રીઆચાર્યજીને કૃષ્ણદાસે પ્રશ્ન પૂછ્યો, જે મહારાજ! શ્રીઠાકુરજીને પ્રિય વસ્તુ શી છે? તેનો પ્રતિઉત્તર શ્રીઆચાર્યજી કહે છે, જે શ્રીઠાકુરજી ઉત્તમ થી ઉત્તમ વસ્તુના ભોક્તા છે. પરંતુ ગોરસ અતિ પ્રિય છે. ગોરસ

तें उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं। परंतु गोरस अति प्रिय है। गोरस शब्देन वाणी कहियत है। ताको भाव अनिर्वचनीय है। और सबन तें भक्त को स्नेहमय प्रभाव अतिप्रिय है। जातें भक्तवत्सल कहवावत हैं।

तब कृष्णदास ने फेर पूछी, जो–श्रीठाकुरजी कों अप्रिय वस्तु कहा है? तब श्रीआचार्यजी नें कह्यौ। जो–श्रीठाकुरजी कों धुंआ समान अप्रिय और नाहीं है। ताहूतें अप्रिय श्रीठाकुरजी कों भक्त को द्वेषी है।

भावप्रकाश—गोरस सो वैष्णव को स्नेह परस्पर, और वैष्णव को क्लेश सो धुंआ। जहां स्नेह तहां श्रीठाकुरजी पधारे जानिये। जहाँ क्लेश तहाँ तें श्रीठाकुरजी दूरि जानिये।

फेरि कृष्णदास ने प्रश्न पूछ्यो, जो–महाराज! श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टि कों ले के स्वधाम पधारे। और राजा दशरथ कों स्वर्ग दियो। सो काहेते? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहे, जो–श्रीरघुनाथजी तो परमदयाल हैं। तातें स्वर्ग दीनो नांतर स्वर्ग की (हू) योग्यता राजा दशरथ कों न हती। काहेते, जो–अपनो वचन सत्य करिवे कों श्रीरामचंद्रजी कों वनवास पठाये। ऐसो कर्म कियो।

भावप्रकाश—यह प्रश्न हीनाधिकारी को है, काहेते, साक्षात पुरुषोत्तम

શબ્દથી વાણી કહેવાય છે. તેનો ભાવ અનિર્વચનીય છે. અને બધાથી ભક્તનો સ્નેહમય પ્રભાવ અતિ પ્રિય છે. તેથી ભક્તવત્સલ કહેવાય છે.

ત્યારે કૃષ્ણદાસે ફરી પૂછ્યું. જે શ્રીઠાકુરજીને અપ્રિય વસ્તુ શી છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું. જે શ્રીઠાકુરજીને ધૂમાડા સમાન અપ્રિય બીજું નથી. તેનાથીય અપ્રિય શ્રીઠાકુરજીને ભક્તનો દ્વેષી છે.

ફરી કૃષ્ણદાસે પ્રશ્ન પૂછ્યો જે. મહારાજ! શ્રીરઘુનાથજી સંપૂર્ણ સૃષ્ટિને લઈને સ્વધામ પધાર્યા. અને રાજા દશરથને સ્વર્ગ દીધું. તે શાથી? તેનો પ્રતિઉત્તર શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યો. જે શ્રીરઘુનાથજી તો પરમ દયાલ છે. તેથી સ્વર્ગ દીધું. નહિ તો સ્વર્ગની (પણ) યોગ્યતા રાજા દશરથને ન હતી. કેમ. જે પોતાનું વચન સત્ય કરવાને શ્રીરામચંદ્રજીને વનવાસ મોકલ્યા. એવું કર્મ કર્યું.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રશ્ન હીનાધિકારીનો છે, શાથી (જે) સાક્ષાત્ પુરુષો-

की लीला तें मन बाहर करि यह प्रश्न कहा ? यामें यह जताये। (कृष्णदास कों) अवही "मानसी सा परा मता" यह फल नाहीं भयो। तब कृष्णदास के समाधान के अर्थ आप कहे, जो-रामचन्द्रजी दयाल है।

यह कहि अपने मारग को सिद्धांत जताये। जो-अपने हठधर्म करि धर्मी, जो श्रीठाकुरजी तिनकों श्रम करावे तो हीन फल धर्म को स्वर्ग ही मिले। श्रीठाकुरजीको फल न मिले।

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समे श्रीआचार्यजी सों कृष्णदास नें फेर प्रश्न पूछ्यो, जो-भक्त होइ के श्रीठाकुरजी की लीला को भेद नाहीं जानत सो काहेतें ? तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-ये विधि पूर्वक समर्पन ज्यों कह्यो है त्यों नाहीं करत।

विधि, सो समर्पन पदार्थ को ज्ञान नाहीं। अहंता-ममता अपनी सत्ता अहंकार को समर्पन। जो-अब दास भयो। प्रभु आधीन हों। प्रभु करें सो सर्वोपर सिद्धांत है। यह भेद अपने में नाहीं। और अपनी योग्यता मानि भगवदीय को संग नाहीं करत है। तातें योग्यता मानें तब प्रभु अप्रसन्न होई जात है। यह मारग दैन्य को है। सो दैन्य नाहीं है। इत्यादिक अंतरायतें अपनो स्वरूप

तमनी लीलाथी मन बाहर करी आवो प्रश्न शो ? आमां आ सूचव्युं (के) (कृष्णदासने) हजु 'मानसी सा परा मता' ए फल नथी थयुं. तेथी कृष्णदासना समाधान अर्थे आप कहे, जे गमचन्द्रजी दयाल छे.

ए कही पोताना मार्गनो सिद्धांत बताव्यो. जे पोताना हठधर्म करीने धर्मी जे श्रीठाकुरजी तेमने श्रम करावे तो हीन फल धर्मनुं स्वर्ग ज मळे. श्रीठाकुरजीनुं फल न मळे.

वार्ता प्रसंग ६—फरी एक समये श्रीआचार्यजीने कृष्णदासे प्रश्न पूछ्यो, जे, भक्त थइने श्रीठाकुरजीनी लीलानो भेद नथी जाणतो ते शा माटे ? त्यारे श्रीआचार्यजीए कह्युं, जे, ये विधिपूर्वक समर्पण जेम कह्युं छे तेम करतो नथी.

विधि एटले समर्पण पदार्थनुं ज्ञान, (ते) नथी. अहंता-ममता पोतानी सत्ता अंहकारनुं समर्पण. जे हवे (हुं) दास थयो, प्रभु आधीन छुं. प्रभु करे ते सर्वोपर सिद्धांत छे. आ भेद (ज्ञान) पोतामां नथी. अने पोतानी योग्यता मानी भगवदीयनो संग नथी करतो. तेथी योग्यता माने त्यारे प्रभु अप्रसन्न थायछे. आ मार्ग दीनतानो छे. ते दैन्य नथी. इत्यादिक अंतरायथी पोतानुं स्वरूप अने

और भगवदीय को स्वरूप, श्रीठाकुरजी को स्वरूप नाहीं जानत है। और भगवद्भक्त को संग करे तो श्रीठाकुरजी की लीला कौ भेद जाने। सो तो योग्यता समज नाहीं करत है। और जो-कछु करत है सो अंतःकरण पूर्वक नाहीं करत है। तातें श्रीठाकुरजी को स्वरूप और लीला को भेद नाहीं जानत है।

उत्तम भक्त को संग करे। श्रीभागवत श्रीसुबोधिनीजी आदि ग्रन्थ को अहर्निस अवगाहन करे। तब भगवद्भाव उत्पन्न होई। श्रीठाकुरजी व्रजभक्तन विषे सदैव रहत हैं। तहां सेवा करि के बंधे हैं। तहां एतन्मार्गीय वैष्णव ताके हृदय में श्रीठाकुरजी विराजत हैं। ताको संग करनो। तहां गजनधावन आदि वैष्णव को दृष्टांत दीनों। जिन-जिन ने भावपूर्वक सेवा करी तिन-तिन के सकल मनोरथ सिद्ध भये। जातें लीलास्थ व्रजभक्तन के भाव को विचार करनो।

जो वैष्णव श्रीठाकुरजी को स्वरूप जानत है। तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जान्यो जाय। जो आज्ञा होइ सो जाने। जो वैष्णव श्रीठाकुरजी कों जानत है, सो जो कछू काज करत है सो श्रीठाकुरजी के अर्थ करत हैं, और श्रीठाकुरजी विषे विरह ताप

ભગવદીયનું સ્વરૂપ શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ નથી જાણતો. અને ભગવદ્ભક્તનો સંગ કરે તો શ્રીઠાકુરજીની લીલાનો ભેદ જાણે. તે તો યોગ્યતા સમજી કરતો નથી. અને જે કંઇ કરે છે તે અંતઃકરણપૂર્વક નથી કરતો. તેથી શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ અને લીલાનો ભેદ જાણતો નથી.

ઉત્તમ ભક્તનો સંગ કરે. શ્રીભાગવત, શ્રીસુબોધિની આદિ ગ્રંથનું અહર્નિશ અવગાહન કરે ત્યારે ભગવદ્ભાવ ઉત્પન્ન થાય. શ્રીઠાકુરજી વ્રજભક્તો વિષે સદૈવ રહે છે. ત્યાં સેવા વડે બંધાયા છે. ત્યાં આ માર્ગના વૈષ્ણવ તેમના હૃદયમાં શ્રીઠાકુરજી બિરાજે છે. તેમનો સંગ કરવો ત્યાં ગર્જન ધાવન આદિ વૈષ્ણવોનું દૃષ્ટાંત દીધું. જેણે જેણે ભાવપૂર્વક સેવા કરી તેના તેના સકલ મનોરથ સિદ્ધ થયા. તેથી લીલાસ્થ વ્રજભક્તોના ભાવનો વિચાર કરવો.

જે વૈષ્ણવ શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ જાણે છે તેમનું સ્વરૂપ અલૌકિક દૃષ્ટિથી જાણ્યું જાય. (કે) જે (તે) આજ્ઞા થાય તે જાણે. જે વૈષ્ણવ શ્રીઠાકુરજીને જાણે છે તે જે કંઇ કાર્ય કરે છે તે શ્રીઠાકુરજીના માટે કરે છે. અને શ્રીઠાકુરજી પ્રત્યે વિરહતાપ-

भाव करत हैं। अपुने स्वदोष को विचार करत हैं। (ऐसे जीव) अपुने स्वरूप विचारे, जो-हों कौन हों? पहले कहा हतो? भगवद् संबंध किये तें हों कौन हो गयो? अब मोकों कहा कर्तव्य? रात्रि-दिवस ऐसे विचार करत रहे तब अपनो स्वरूप जाने। ये प्रागट्य श्रीव्रजभक्तन के अर्थ है। तातें उत्तम संग होइ तो एतन्मार्गीय ठाकुर कों जाने। और शास्त्र पुरान अनेक इतिहास हैं। तातें व्रजराज के घर प्रगटे सो स्वरूप जान्यो न जाय। ये ठाकुर तो तब ही जाने जाय जब भगवद्भक्त को संग करे। सेवा को प्रकार एतन्मार्गीय वैष्णव जानत हैं। तिनसों मिलि, भाव पूछि के सेवा करनी। तब भगवद्भाव उत्पन्न होइ। श्रीठाकुरजी की लीला को सब भेद जाने।

वार्ता-प्रसंग ७—और एक समें श्रीआचार्यजी श्रीबद्रीनाथजी के मंदिर पाँउ धारे। तब वेदव्यासजी साथ हे। तब श्रीआचार्यजी वेदव्यासजी सों पूछी, जो-भ्रमरगीत के अध्याय में उद्धव कों व्रजभक्त पास पठाये। ता प्रसंग में आधो श्लोक घटत है। तब वेदव्यासजीने अर्द्धश्लोक कह्यो, सो श्लोक। "आत्मत्वाद्भक्तवश्यत्वात्सत्यवाक्त्वात्स्वभावतः" सो याकी टीका श्रीआचार्यजी नें पहले

ભાવ કરે છે. પોતાના સ્વદોષનો વિચાર કરે છે. (એવા જીવ) પોતાના સ્વરૂપને વિચારે, જે હું કોણ છું? પહેલા શું હતો? ભગવદ્‌સંબંધ કર્યાથી (હવે) હું કોણ થયો? હવે મને શું કર્તવ્ય છે? રાત્રિ દિવસ એમ વિચાર કરતો રહે. ત્યારે પોતાનું સ્વરૂપ જાણે. એ પ્રાકટ્ય વ્રજભક્તોના માટે છે તેથી ઉત્તમ સંગ હોય તો આ માર્ગના ઠાકુરને જાણે. અને શાસ્ત્ર પુરાણ અનેક ઇતિહાસ છે તેનાથી વ્રજરાજના ઘર પ્રગટ્યા તે સ્વરૂપને જાણ્યું ન જાય. એ ઠાકુર તો ત્યારે જ જાણ્યા જાય જ્યારે ભગવદ્‌ભક્તનો સંગ કરે. સેવાનો પ્રકાર આ માર્ગના વૈષ્ણવો જાણે છે. તેમનાથી મળી, ભાવ પૂછીને સેવા કરવી. ત્યારે ભગવદ્‌ભાવ ઉત્પન્ન થાય. શ્રીઠાકુરજીની લીલાનો બધો ભેદ જાણે.

વાર્તા પ્રસંગ ૭—વળી એક સમયે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીબદ્રીનાથજીના મંદિરે ચરણ ધર્યાં. ત્યારે વેદવ્યાસજી સાથે હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વેદવ્યાસજીને પૂછ્યું, જે, ભ્રમરગીતના અધ્યાયમાં ઉદ્ધવને વ્રજભક્ત પાસે મોકલ્યા તે પ્રસંગમાં અર્ધો શ્લોક ઘટે છે. ત્યારે વેદવ્યાસજીએ અર્દ્ધ શ્લોક કહ્યો, તે શ્લોક—

"આત્મત્વાદ્ભક્તવશ્યત્વાત્સત્યવાક્ત્વાત્સ્વભાવતઃ" તે એની ટીકા શ્રીઆચા-

ही कीनी ही। सो सुनिके वेदव्यासजी कहै, जो-तुम धन्य हो। ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीबद्रीनाथजी के मंदिर में पधारे। ता दिन वामनद्वादसी हती। ता दिन श्रीआचार्यजी व्रत करते। सो फलाहार व्यासजी हू ढूंढे। और कृष्णदास हू ढूंढे। परंतु मिल्यो नाहीं। तब श्रीबद्रीनाथजी ने श्रीआचार्यजी सों कह्यौ। जो-मैनें फलाहार को सर्वत्र खोज कियो। परि पावत नाहीं। तातें तुम रसोई करि के श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि के भोजन करो। तब श्रीआचार्यजी विचारे, जो-श्रीठाकुरजी की इच्छा एसी ही दीसत है। इतने में कृष्णदास ने आइ के कह्यौ, जो-महाराज! इहां कछू फलाहार पाइयत नाहीं। तब वेदव्यासजी द्वारा श्रीठाकुरजी ने कही, जो सामग्री करि भोजन करो। "उत्सवांते च पारणा" यह वचन है। ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु रसोई करिके श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि के आप भोजन कियो।

पाछें ता दिनतें वामनद्वादसी कें दिना व्रत न करते। पाछे श्रीआचार्यजी श्रीबद्रीनाथजी तें बिदा होइके कृष्णदास कों साथ लैकें पधारे।

भावप्रकाश—फलाहार ना मिल्यो। ताको प्रयोजन यह, जो-श्री-

र्यजीએ પહેલાથી કરી હતી. તે સાંભળીને વેદવ્યાસજી કહે, જે, તમે ધન્ય છો. ત્યારપછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીબદ્રીનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. તે દિવસે વામનદ્વાદશી હતી. તે દિવસે શ્રીઆચાર્યજી વ્રત કરતા (હતા). તે ફલાહાર વ્યાસજી પણ ખોળે અને કૃષ્ણદાસ પણ ખોળે. પરંતુ મળ્યો નહીં. ત્યારે શ્રીબદ્રીનાથજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, જે, મેં ફલાહારની સર્વત્ર તપાસ કરી પરંતુ મળતો નથી. તેથી તમે રસોઈ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પીને ભોજન કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી વિચારે, જે શ્રીઠાકુરજીની ઇચ્છા એવી જ દેખાય છે. એટલામાં કૃષ્ણદાસે આવીને કહ્યું, જે-મહારાજ! અહીં કંઇ ફલાહાર પ્રાપ્ત થતો નથી. ત્યારે વેદવ્યાસજી દ્વારા શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, જે સામગ્રી કરીને ભોજન કરો. 'ઉત્સવાંતે ચ પારણા' એવું પણ વચન છે. તે પછી શ્રીઆચાર્યજી આપ રસોઇ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પિને પોતે ભોજન કર્યું.

પછી તે દિવસથી વામનદ્વાદશીના દિવસે વ્રત ન કરતા. પછી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીબદ્રીનાથજીથી વિદાય થઇને કૃષ્ણદાસને સાથે લઇને પધાર્યા.

ભાવપ્રકાશ—ફલાહાર ન મળ્યો તેનુ પ્રયોજન એ, જે, શ્રીઆચાર્યજી

आचार्यजी चाहें सो सबहि मिले । व्यासजी कृष्णदास सारिखे ढूंढनहारे । सो फलाहार यातें न मिल्यो, जो-श्रीआचार्यजी के मन में सामग्री उत्सव की करनी। ऊपर तें मर्यादा राखिवे के लिये फलाहार की कही । सो फलाहार न मिल्यो । तातें वेदव्यासजी द्वारा श्रीठाकुरजी ने कहवाई ।

तातें श्रीगुसांईजी ने सात लालजीन में, बड़े घर (प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी के घर) यह रीति राखी उपवास । और ठौर "उत्सवांते च पारणा" श्रीठाकुरजी सब सामग्री अरोगे ।

वार्ता-प्रसंग ८—(पाछें) श्रीआचार्यजी ने जब आसुरव्यामोह लीला करी, तब कृष्णदास ने हू विप्रयोग करि देह को त्याग कियो । **वार्ता ॥ २ ॥**

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक दामोदरदास संभलवारे क्षत्री, कनौज के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—दामोदरदास कों बालपनें तें विरह हतो, जो-श्रीठाकुरजी की प्राप्ति कौन प्रकार सों होई ? सो दामोदरदास एक समय प्रयाग में आये हते

ચાહે તો બધું જ મળે. વ્યાસજી, કૃષ્ણદાસ સરખા ખોળવાવાળા. તે ફલાહાર એ માટે ન મળ્યો, જે, શ્રીઆચાર્યજીના મનમાં ઉત્સવની સામગ્રી કરવી (એમ હતુ) ઉપરથી મર્યાદા રાખવાને માટે ફલાહારનું કહ્યું. તે (થી) ફલાહાર ન મળ્યો. તેથી વેદવ્યાસજી દ્વારા શ્રીઠાકુરજીએ કહેવડાવ્યું.

તેથી શ્રીગુસાંઇજીએ સાત લાલજીઓ (ના ઘર)માં, મોટા ઘરે (પ્રથમ પુત્ર શ્રીગિરિધરજીને ત્યાં) આ રીતિ રાખી ઉપવાસ (ની) (અને) બીજી જગ્યાએ (૭ ઘરમાં) 'ઉત્સવાંતે ચ પારણા' શ્રીઠાકુરજી બધી સામગ્રી આરોગે.

વાર્તા પ્રસંગ-૮—(પછી) શ્રીઆચાર્યજીએ જ્યારે આસુરવ્યામોહ લીલા કરી ત્યારે કૃષ્ણદાસે પણ વિપ્રયોગ કરી દેહનો ત્યાગ કર્યો. ॥ વાર્તા ૨ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક દામોદરદાસ સંભલવાળા ક્ષત્રી, કનૌજના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—દામોદરદાસને બાલપણેથી વિરહ હતો. જે શ્રીઠાકુરજીની પ્રાપ્તિ કયા પ્રકારે થાય ? તે દામોદરદાસ એક સમય પ્રયાગમાં આવ્યા હતા. મકર

मकर स्नान कों। सो कृष्णदास सों मिलाप भयो। तब चर्चा करत कृष्णदास (मेघन) ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भये हैं। सो दक्षिण में पधारे हैं। कृष्णदेव राजा के समीप मायावाद खंडन किये हैं। उनकी कृपातें निश्चय श्रीठाकुरजी मिलेंगे। मेरे गुरु सों नेह है तिनसों कछु कार्य मेरो भयो नाहीं। तातें अब मैं जहां श्रीआचार्यजी होइंगे तहां जाऊँगो। यह दामोदरदाससों कहि कें कृष्णदास दक्षिण देस गये।

जब तें दामोदरदास के पास तें कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी के पास गये। तब तें दामोदरदास कों विरह बहोत रहे। जो मोकों श्रीआचार्यजी कौन प्रकार मिलेंगे? या प्रकार विरह करत महा महीना में मकर–स्नान दामोदरदास किये। सो महा सुदी १५ कों दामोदरदास मकर–स्नान करत हते। ता समय एक तांबे को पत्र गंगा–यमुना के संगम में ते दामोदरदास के हाथ आयो। सो दामोदरदास घर लाये। जब रात्रि कों दामोदरदास सोये। तब दामोदरदास कों स्वप्न भयो। यह पत्र बांचे ताकी तू सरन जैयो। तब सवारे उठि के प्रयाग में बड़े–बड़े पंडित ब्राह्मण महापुरुष मकर–स्नान कों आये हते। तिन सबन कों बँचायो। कोई बांचि न सके। तब दामोदरदास कासी में सेठ पुरुषोत्तमदास के

સ્નાન માટે. તે કૃષ્ણદાસથી મેળાપ થયો. ત્યારે ચર્ચા કરતાં કૃષ્ણદાસે (મેઘને) કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પ્રકટ થયા છે. તે દક્ષિણમાં પધાર્યા છે. કૃષ્ણદેવ રાજાની સમીપ માયાવાદનુ ખંડન કર્યું છે એમની કૃપાથી નિશ્ચય શ્રીઠાકુરજી મળશે મારે ગુરુથી સ્નેહ છે તેનાથી કંઇ કાર્ય મારૂં થયુ નહીં. તેથી હવે હું જ્યાં શ્રીઆચાર્યજી હશે ત્યાં જઉ છું. આટલું દામોદરદાસને કહીને કૃષ્ણદાસ દક્ષિણ દેશ ગયા.

જ્યારથી દામોદરદાસની પાસેથી કૃષ્ણદાસ મેઘન શ્રીઆચાર્યજીની પાસે ગયા ત્યારથી દામોદરદાસને વિરહ ઘણો રહે. જે, મને શ્રીઆચાર્યજી કોણ પ્રકારે મળશે? આ પ્રકારે વિરહ કરતાં મહા મહિનામાં મકર–સ્નાન દામોદરદાસે કર્યું. તે મહા સુદ ૧૫ મે દામોદરદાસ મકર સ્નાન કરતા હતા તે સમયે એક તાંબાનો પત્ર ગંગા–યમુનાના સંગમમાંથી દામોદરદાસના હાથ આવ્યો (મળ્યો) તે દામોદરદાસ ઘર લાવ્યા. (પછી) રાત્રિએ જ્યારે દામોદરદાસ સોયા ત્યારે દામોદરદાસને સ્વપ્ન થયુ. (કે) આ પત્ર વાંચે તેની તૂ શરણે જજે. ત્યારે સવારે ઉઠીને પ્રયાગમાં મોટા–મોટા પંડિત બ્રાહ્મણ મહાપુરુષ મકર સ્નાન કરવા આવ્યા હતા. તે બધાને વંચાવ્યો. (પરંતુ) કોઇ વાંચી ન શક્યા ત્યારે દામોદરદાસ, કાશીમાં

यहाँ व्यौहार हतो । (तहां गये) खरच की हुंडी सेठ पुरुषोत्तमदास के यहां ले गये हते । तिनसों सगरी बात दामोदरदास ने कही, जो–यह पत्र श्रीआचार्यजी बाँचेंगे । और काहूकी सामर्थ्य नाहीं । मोसों कृष्णदास सेयन कहि गये हैं । जो–श्रीआचार्यजी की सरन तें श्रीठाकुरजी मिलेंगे । (सो) यह सुनिके सेठ पुरुषोत्तमदास हू कों चटपटी लागी, जो–मोकों कब श्रीआचार्यजी को दरसन होइगो ? सो सेठ पुरुषोत्तमदास की वार्ता के भाव में वर्णन करेंगे। या प्रकार दामोदरदास दिन १५ कासी रहे । परंतु पत्र कोऊ न वांच्यो । तब कन्नौज में अपने घर आये । एसे विरह करत कछूक महिना में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कन्नौज पधारे । तब गामके बाहर बागमें उतरे ।

वार्ता-प्रसंग १—जब श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तहां गाम के बाहिर एक बाग हतो तहां आप उतरे, और कृष्णदास कों गाम में पठायो। जो–सीधो सामग्री ले आउ। परि काहू सों कहियो मति। जो–श्रीआचार्यजी आप पधारे हैं।

भावप्रकाश—यह कहे ताको अभिप्राय यह है, जो–दामोदरदास कृष्णदास कों मिलेगो। सो दामोदरदास सों पहिले आपहि कहे, जो–श्रीआचार्यजी

શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ત્યાં વ્યવહાર હતો (ત્યાં ગયા) ખર્ચની હુંડી શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ત્યાં લઇ ગયા હતા. તેમને સઘળી વાત દામોદરદાસે કહી. જે, આ પત્ર શ્રીઆચાર્યજી વાંચશે. બીજા કોઇની સામર્થ્ય નથી. મને કૃષ્ણદાસ મેઘન કહી ગયા છે કે શ્રીઆચાર્યજીની શરણથી શ્રીઠાકુરજી મળશે. એ સાંભળીને શેઠ પુરુષોત્તમદાસને પણ ચટપટી લાગી કે મને ક્યારે શ્રીઆચાર્યજીનું દર્શન થાય? તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસની વાર્તાના ભાવમાં વર્ણન કરીશું. આ પ્રકારે દામોદરદાસ દિવસ ૧૫ કાશી રહ્યા. પરંતુ પત્ર કોઇએ ન વાંચ્યો. ત્યારે કન્નોજમાં પોતાને ઘરે આવ્યા. એમ વિરહ કરતાં કેટલાક મહિનામાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કન્નોજ પધાર્યા. ત્યારે ગામના બાહર બાગમાં ઉતર્યા.

વાર્તા પ્રસંગ ૧—જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી કન્નોજ પધાર્યા (ત્યારે) ત્યાં ગામના બાહર એક બાગ હતો ત્યાં આપ ઉતર્યા. અને કૃષ્ણદાસને ગામમાં મોકલ્યો, કે સીધું-સામગ્રી લઇ આવ. પરંતુ કોઇને કહીશ નહી કે શ્રીઆચાર્યજી આપ પધાર્યા છે.

ભાવપ્રકાશ—એ કહ્યું, તેનો અભિપ્રાય એ છે, કે દામોદરદાસ કૃષ્ણદાસને મળશે. તે દામોદરદાસને પહેલાં પોતે જ કહે કે શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે, તો

पधारे हैं । सो दामोदरदास द्रव्यपात्र है । तातें इनके बुलायवे की अपेक्षा यह मनमें आवे तो कृष्णदासको बिगार होइ । सो ताते बरजि दिये, जो–काहूसों कहियो मति । प्रीति होइगी तो आपुही आवेगो । यह अभिप्राय जाननो ।

और दूसरो अभिप्राय यह है, जो–जा दिन श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तातें पहेलेई श्रीआचार्यजी आपकों (श्रीठाकुरजीकी) आज्ञा भई हती । जो–यहांके (कन्नौज के) जीव पावन करने हैं । तातें श्रीआचार्यजी आप बिचारे, जो–आग्या भई है तो आपही होइगो ताके लिये नाहीं करी हती ।

तब कृष्णदास गाम में गये । सीधो सामग्री सब लीनी । सो सब ले के चले । तहां दामोदरदास राजद्वार तें आवत हते । सो मारग में जात कृष्णदास कों पहचानें । तब दामोदरदास घोड़ा तें उतरि के पास आये । तब दंडवत् करि के कह्यो और पूछयो जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं ? तब कृष्णदास ने बिचार्यो तातें कछु उत्तर दियो नाहीं ।

तब दामोदरदास ने बिचार्यो, जो–आचार्यजी बिना ए काहे कों आवे ? सो जब कृष्णदास चले तब दामोदरदास पाछे पाछे आये । घोड़ा घर पठवाइ दियो ।

દામોદરદાસ દ્રવ્યપાત્ર છે તેથી તેમને બોલાવવાની અપેક્ષા (છે) એમ (જો કૃષ્ણ-દાસના મનમાં) આવે તો કૃષ્ણદાસનો બગાડ થાય, તેથી રોકી દીધા, કે કોઈને કહીશ નહીં. પ્રીતિ હશે તો પોતેજ આવશે. આ અભિપ્રાય જાણવો.

અને બીજો અભિપ્રાય આ છે, કે જે દિવસે શ્રીઆચાર્યજી કન્નોજ પધાર્યા તેના પહેલાં જ શ્રીઆચાર્યજી આપને (શ્રીઠાકુરજીની) આજ્ઞા થઇ હતી. કે અહીંના (કન્નોજના) જીવો (ને) પાવન કરવા છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી આપ વિચારે કે આજ્ઞા થઇ છે તો એની મેળે થશે. તેથી ના કરી હતી

ત્યારે કૃષ્ણદાસ ગામમાં ગયા. સીધુ–સામગ્રી બધું લીધું. તે બધું લઇને ચાલ્યા. ત્યાં દામોદરદાસ રાજદ્વારથી આવતા હતા. તે માર્ગમાં જતાં કૃષ્ણદાસને ઓળખ્યા. ત્યારે દામોદરદાસ ઘોડાથી ઉતરીને પાસે આવ્યા ત્યારે દંડવત્ કરીને કહ્યું અને પૂછયું, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા છે ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે વિચાર કર્યો, કે શ્રીઆચાર્ય-જીની આજ્ઞા નથી તેથી કંઇ ઉત્તર આપ્યો નહીં. ત્યારે દામોદરદાસે વિચાર્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી વિના એ શા માટે આવે ? ત્યારે, જ્યારે કૃષ્ણદાસ ચાલ્યા ત્યારે દામોદરદાસ પાછળ પાછળ આવ્યા. ઘોડાને ઘર મોકલી દીધો.

तब कृष्णदास कों ओर दामोदरदास कों दूरि तें आवत श्रीआचार्यश्री ने देखें। तब दामोदरदास नें दंडवत् किये। तब कृष्णदास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो-तेंने वासों क्यों कह्यो? तब इनने (कृष्णदास नें) कही, महाराज! मैंने तो इनसों नाहीं कही। तब दामोदरदासनें श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज! इननें तो मोसों नाहीं कही। हों तो इनके पाछे चल्यो आयो हूं।

पाछे श्रीआचार्यजी (ने) दामोदरदास सों पूछी, जो-पत्र पायो है सो लायो है? तब दामोदरदास ने विनती कीनी, जो-महाराज! पत्र को कहा काम है? तब श्रीआचार्यजी आप कही, जो-तोकों आज्ञा भई है। जो-पत्र बांचे ताकी सरन जैयो। तातें पत्र ल्याऊ। तब पत्र मंगवायो।

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों कह्यो, जो-तेनें इन सों क्यों कह्यो? यह कहे ताको कारन यह जो 'तेनें आज्ञा नांही' यह कह्यो तामें हमारे पधारनो तो, कह्यो। तब दामोदरदास ने कही, जो-इनने नाहीं कह्यो। मैं इनके पाछे चल्यो आयो हूँ। या प्रकार दैन्यता सिद्ध किये।

और दामोदरदास ने कह्यो, पत्र को कहा काम है? यह कहि दामोदरदास

ત્યારે કૃષ્ણદાસને (અને) દામોદરદાસને દૂરથી આવતાં શ્રીઆચાર્યજીએ જોયા. ત્યારે દામોદરદાસે દંડવત્ કર્યા- ત્યારે કૃષ્ણદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, કે તેં એને કેમ કહ્યું? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, મહારાજ! મેં તો એમને નથી કહ્યું. ત્યારે દામોદરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતિ કરી, જે મહારાજ! એમને તો મને નથી કહ્યું. હું તો એમની પાછળ ચાલ્યો આવ્યો છું.

પછી શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસને પૂછ્યું, કે પત્ર મળ્યો છે તે લાવ્યો છે? ત્યારે દામોદરદાસે વિનંતિ કરી, કે મહારાજ! પત્રનું શું કામ છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કહ્યું, કે તને આજ્ઞા થઇ છે, કે પત્ર વાંચે તેની શરણે જજે. તેથી પત્ર લાવ. ત્યારે પત્ર મંગાયો.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઆચાર્યજીએ કૃષ્ણદાસને કહ્યું, કે તેં એને કેમ કહ્યું? એ (મ) કહે તેનું કારણ આ છે, કે, તેં આજ્ઞા નથી એ કહ્યું, તેમાં અમારૂ પધારવું તો કહ્યું. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું કે એમણે નથી કહ્યું. હું એમની પાછળ ચાલ્યો આવ્યો છુ. આ પ્રકારે દીનતા સિદ્ધ કરી.

અને દામોદરદાસે કહ્યું, પત્રનું શુ કામ છે? એમ કહી દામોદરદાસે એ

ने यह जतायो, जो--आप ईश्वर हो। मोकों अनुभव भयो है। तब (श्रीआचार्यजी) कहे ल्याव, भगवद् आज्ञा होय तेसे हि करनो।

तब श्रीआचार्यजी ने पत्र मंगवायो हतो सो बांच्यो। पाछे वाको अभिप्राय दामोदरदास सों कह्यो। पाछे दामोदरदास कों नाम सुनायो। पाछे श्रीआचार्यजी कों दामोदरदास नें अपने घर पधराये। पाछे दामोदरदास की स्त्री हू सरनि आई। तब दामोदरदास कों और उनकी स्त्री कों समर्पन करवायो। एक लोंड़ी दैवी जीव हती, सोउ सरन आई।

तब दामोदरदास नें विनती करी, जो–महाराज! अब कहा आज्ञा होत हैं अब हम कहा करे? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो–अब तुम सेवा करो। तब दामोदरदास नें कही, जो–महाराज! सेवा कौन प्रकार करे? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, जो–कहूं श्रीठाकुरजी को स्वरूप होय सो देखो। सो एक दरजी के यहां श्रीठाकुरजी को स्वरूप हतो। ताकों द्रव्य देके स्वरूप अपने घर ले आये। पाछें घर सब पोते पात्र सब बदलाये। पाछें श्रीआचार्यजी ने वा स्वरूप कों पंचामृत करवायो। श्रीद्वारकानाथजी नाम धर्यो।

બતાવ્યું કે આપ ઇશ્વર છો. મને અનુભવ થયો છે. ત્યારે (શ્રીઆચાર્યજી) કહે, લાવ. ભગવદ્ આજ્ઞા હોય તેમજ કરવું.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પત્ર મંગાવ્યો હતો તે વાંચ્યો. પછી એનો અભિપ્રાય દામોદરદાસને કહ્યો. પછી દામોદરદાસને નામ સંભળાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજીને દામોદરદાસે પોતાના ઘરે પધરાવ્યા. પછી દામોદરદાસની સ્ત્રી પણ શરણે આવી. ત્યારે દામોદરદાસને અને તેમની સ્ત્રીને સમર્પણ કરવાયું. એક લુંડી દૈવી જીવ હતી તે પણ શરણ આવી.

ત્યારે દામોદરદાસે વિનતી કરી, કે મહારાજ! હવે શી આજ્ઞા થાય છે? હવે અમે શું કરીએ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી આજ્ઞા કરી, કે હવે તમે સેવા કરો. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે મહારાજ! સેવા કયા પ્રકારે કરે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ કહ્યું, કે કોઈ જગો શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ હોય તો જુઓ. તે એક દરજીને ત્યાં શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ હતું. તેને દ્રવ્ય દઇને સ્વરૂપ પોતાને ઘર લઇ આવ્યા. પછી ઘર બધું પોત્યું. પાત્ર બધાં બદલ્યાં. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ એ સ્વરૂપને પંચામૃત કરાવ્યું. શ્રીદ્વારકાનાથજી નામ ધર્યું.

दामोदरदास संभलवाले के ठाकुरजी

श्रीद्वारकानाथजी

[काँकरोली, तृतीय गृह]

भावप्रकाश—श्रीद्वारकानाथजी नाम यातें धरयो, जो-राज रीति सों प्रथम सेवा को विस्तार दामोदरदास के माथे सोंपे हैं।

पाछें सिंहासन पाट बैठाये। दामोदरदास के माथे सेवा पधराय के पाछे श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के भोग समर्प्यो। समयानुसार भोग सरायो। तब बी_ा समर्पन लागे। तब देखें तो पान हरे हैं। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों खीज के कहें, जो-हरे पान श्रीठाकुरजी कों न समर्पिये। उत्तम तें उत्तम सामग्री होइ सो श्रीठाकुरजी कों समर्पिये। श्रीठाकुरजी तो उत्तम तें उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं। (तातें) उत्तम तें उत्तम सामग्री होइ सो श्रीठाकुरजी कों समर्पिये। ता पाछें स्त्री पुरुष भली भाँति सों सेवा करन लागे। सो श्रीद्वारकानाथजी की सेवा भली भांति सों होन लागी। और श्रीआचार्यजी नें आज्ञा दीनी, जो उतर्यो परकालो (वस्त्र को थान) होय तामें तें श्रीठाकुरजी कों न समर्पिये। मारे परकाले मेतें प्रथम श्रीठाकुरजी कों लीजिये। और उत्तम सामग्री होइ तामें ते और ठौर न खरचिये। ता पाछे स्त्री-पुरुष नीकी भांति सों सेवा करन लागे।

ભાવપ્રકાશ—શ્રીદ્વારકાનાથજી નામ એથી ધર્યું કે, રાજરીતિથી પ્રથમ સેવાનો વિસ્તાર દામોદરદાસને માથે સોંપ્યો છે.

પછી સિંહાસન (ઉપર) પાટ બેસાડ્યા. દામોદરદાસના માથે સેવા પધરાવીને પછી શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે રસોઈ કરીને ભોગ સમર્પ્યો. સમયાનુસાર ભોગ સરાવ્યો. ત્યારે બીડા સમર્પવા લાગ્યા. તો દેખે તો પાન લીલાં (કાચાં) છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી (એ) દામોદરદાસને ખીજીને કહ્યું, લીલાં પાન શ્રીઠાકુરજીને ન સમર્પિએ. (પીળાં, પાકેલાં, પાન સમર્પિએ) ઉત્તમથી ઉત્તમ સામગ્રી હોય તે શ્રીઠાકુરજીને સમર્પિએ. શ્રીઠાકુરજી તો ઉત્તમથી ઉત્તમ વસ્તુના ભોક્તા છે. (તેથી) ઉત્તમથી ઉત્તમ સામગ્રી હોય તે શ્રીઠાકુરજીને સમર્પિએ. તે પછી સ્ત્રી-પુરુષ સુંદર રીતિથી સેવા કરવા લાગ્યાં. તે શ્રીદ્વારકાનાથજીની સેવા સુંદર રીતિથી થવા લાગી. અને શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા કરી, કે ઉતરેલું (વાપરેલું) વસ્ત્રનું થાન હોય તેમાંથી (વસ્ત્ર) શ્રીઠાકુરજીને ન સમર્પિએ. આખા થાનમાંથી શ્રીઠાકુરજીને (માટે વસ્ત્ર) લેવું. અને ઉત્તમ સામગ્રી હોય તેમાંથી બીજી જગાએ ન ખર્ચીએ. તે પછી સ્ત્રી-પુરુષ સુંદર રીતિથી સેવા કરવા લાગ્યા.

અને સેવા સામગ્રી થતી તે સોનાના કટોરામાં અમરસ રાખતા. તે એવી ઉચ્ચતાથી કે બીજો કોઇ ન જાણે કે આમા કંઇ સામગ્રી ધરી છે. એ રીતથી દામોદરદાસ સેવા કરવા લાગ્યા.

और सेवा सामग्री ऐसी होती जो–सोने के कटोरा में अमरस राखते, सो ऐसो उच्यतातें सो और कोई न जानें, जो–यामें कछु सामग्री धरी है। या भांति सों दामोदरदास सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—पाछे वस्त्रादिक की रीति बताये। जो–और कार्य में कछु आयो होय तो (सो वस्तु) श्रीठाकुरजी के काम न आवें। जाके अर्थ उठे तिनको प्रसादी कहावे। तातें पहले श्रीठाकुरजी कों सब सामग्री में ते लेनो। श्रीठाकुरजी की सामग्री में ते अन्य ठौर खरच न करनो। या प्रकार पुष्टिमारग की रीति सबकों बताये।

सामग्री पीरी सोने के पात्र में मिलि जाइ। उज्ज्वल सामग्री रूपे के पात्र में मिलि जाइ। यह गूढ भाव जनाये। सोने के मिष श्रीस्वामिनीजी के भाव तें, रुपे के मिष श्रीचंद्रावलीजी के भाव सों सेवा करते।

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे।

और दामोदरदास श्रीठाकुरजी को जल आप भरतें। सो एक दिन दामोदरदास को सुसर दामोदरदास के घर आइके दामोदरदास सों कहन लागे, जो–तुम जल भरि लावत हो, सो हमकों जाति में लज्जा आवति है। तातें तुम मति भरो। लौंड़ो पास जल भराओ।

तब दामोदरदास बिचारे, जो–सूरदासजी गाये हैं। "सूर

ભાવપ્રકાશ—પછી વસ્ત્રાદિકની રીતિ બતાવી. કે બીજા કાર્યમાં કંઇ આવ્યું હોઇ તો (તે વસ્તુ) શ્રીઠાકુરજીના કામ (માં) ન આવે, જેને માટે ખર્ચાય તેની પ્રસાદી કહેવાય. તેથી પહેલાં શ્રીઠાકુરજીને માટે બધી સામગ્રીમાંથી લેવું. શ્રીઠાકુરજીની સામગ્રીમાંથી બીજી જગે ખર્ચ ન કરવું. એ પ્રકારે પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ બધાને બતાવી.

સામગ્રી પીળી સોનાના પાત્રમાં મળી જાય. ઉજ્જવલ સામગ્રી રૂપાના પાત્રમાં મળી જાય. આ ગૂઢ ભાવ સૂચવ્યો. સોનાના મિષે શ્રીસ્વામિનીજીના ભાવથી, રૂપાના મિષે શ્રીચંદ્રાવલીજીના ભાવથી સેવા કરતા.

પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમામાં પધાર્યા. અને દામોદરદાસ શ્રીઠાકુરજીનું જલ પોતે ભરતા. તે એક દિવસ દામોદરદાસનો સાસરો દામોદરદાસને ઘર આવીને દામોદરદાસને કહેવા લાગ્યો કે તમે જલ ભરી લાવો છો તે અમને જાતિમાં લજ્જા આવે છે. તેથી તમે જલ ન ભરો. લુંડી પાસે જલ ભરાવો.

ત્યારે દામોદરદાસે વિચાર્યું, કે સૂરદાસજીએ ગાયું છે, કે "સૂર ભજન કલિ

भजन कलि केवल कीजे लज्जा का'न निवारि" और कीर्तन में गाये हैं। "का'न न काहूकी मन धरिये व्रत अनन्य एक लहीए हो" यह विचारि अस्त्री सों कहे तुमहू जल लेंन चलो। तब दामोदरदास ने दूसरे दिन एक घड़ा तो आप लियो, एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीनो। तब स्त्री भगवदी सो घड़ा (गागरि) ले ससुर के (दामोदरदास के) हाट आगे तें चले। तब दोऊ जने (फेर) वाकी हाटके नीचे होय के निकसे। तब जल लैके आये। तब पाछे दामोदरदास को ससुर आयो। सो आइ के दामोदरदास के पाइन पर्यो। और कह्यो, जो-मैं चूक्यो, जो-तुमसों कह्यौ। अब तें तुमही जल भरो, परि अस्त्रीजन पास जल मति भरावो। आज पाछे हम कछू न कहेंगे। तब आपहि जल भरन लागे। श्रीठाकुरजी दामोदरदास सों सानुभावता जनावन लागे। जो-कछु चाहिये सो दामोदरदास पास मांगि लेइ। बातें करे। सेवा करि के दामोदरदास ने श्रीठाकुरजी कों ऐसे प्रसन्न किये। सो इनकी सेवा देखि के श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। तब आप अपने श्रीमुखतें कहें, जो-जिन राजा अंबरीष न देख्यो होइ सो दामोदरदास कों देखो, राजा अंबरीष तो मर्यादामार्गीय हुतो। और ये पुष्टि-मार्गीय है। इनमें इतनी अधिकताई है।

કેવલ કીજે લજ્જા કા'ન નિવારિ" બીજા કીર્તનમાં ગાય છે "કા'ન ન કાહુ કી મન ધરિયે વ્રત અનન્ય એક લહીએ હો." એ વિચારી સ્ત્રીને કહે, તમે પણ જલ લેવા ચાલો. ત્યારે દામોદરદાસે બીજા દિવસે એક ઘડો તો પોતે લીધો (અને) એક ઘડો સ્ત્રીના હાથમાં આપ્યો. ત્યારે સ્ત્રી ભગવદીય તે (બન્ને) ઘડો (ગાગરી) લઇ સાસરાની (દામોદરદાસના) દુકાન આગળથી ચાલ્યાં. તે બન્ને જણ (ફરી) એની દુકાનની નીચે થઇને નિકળ્યાં. ત્યારે જલ લઇને આવ્યાં. તે પછી દામોદરદાસનો સાસરો આવ્યો. તે આવીને દામોદરદાસના પગે પડયો. અને કહ્યું, જે હું ચૂકયો, કે તમને કહ્યું. હવેથી તમે જ જલ ભરો પરંતુ સ્ત્રીજન પાસે જલ ન ભરાવો. આજ પછી અમે કંઇ નહી કહીએ. ત્યારે પોતે જ જલ ભરવા લાગ્યા. (ત્યારે) શ્રીઠાકુરજી દામોદર-દાસને સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. જે કંઇ જોઇએ તે દામોદરદાસ પાસેથી માંગી લે. વાતો કરે. સેવા કરીને દામોદરદાસે શ્રીઠાકુરજીને એવા પ્રસન્ન કર્યા. તે એમની સેવા જોઇને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે પોતે પોતાના શ્રીમુખથી કહ્યું, કે જેણે રાજા અંબરીષ ન જોયો હોય તે દામોદરદાસને જુઓ. રાજા અંબરીષ તો મર્યાદા-માર્ગીય હતો અને આ પુષ્ટિમાર્ગીય છે. એનામાં એટલી અધિકતા છે.

भावप्रकाश—दामोदरदास जलकी सेवा श्रीयमुनाजी के भावतें करते। तातें श्रीआचार्यजी कहें। मर्यादामें अंबरीष पुष्टि में दामोदरदास राजसेवा किये। तब ततहरा रुपे के, अंबरीष की उपमा कैसे जानिये? जैसे श्रीठाकुरजी की मुखकी उपमा चंद्रमाकी। काहेतें? कहां मर्यादा कहां पुष्टि? कोटि गुनो तारतम्य जाननो।

जब दामोदरदास के सुसरने कही, अस्त्रीसों जल मति भरावो। तब दामोदरदास कहे, जल न भरावेंगे। पाछे ससुर गयो। तब दामोदरदासनें विचार्यो, जो जलकी सेवा (स्त्री जनसों) कराई। सो जो अब मैं छुडाऊँ तो मोकों ससुर की का'नको दोष परे। परंतु एकवार वरजोंगो, प्रीति होइगी तो स्त्री आपुहि न छोड़ेगी। (यों विचार के) जो-एकवार भयों सो सौ वार भयों। अब गामके (लोग तो) जान चुके। अब मैं सेवा क्यों छोड़ों? प्रीति होइगी तो या भांति (विचार के) भरेगी। तातें मैं हठ करिके भराऊं तो प्रीति बिना श्रीठाकुरजी अंगीकार न करेंगे। तातें एकवार बरजों तो सही। तब (स्त्री सों) कहें। अब मैंही जल भरोंगो। तुम मति भरो। तिहारे पिताको लाज लागत है। तब स्त्री नें कही तुमहि भरो। या प्रकार पिताकी का'नको दोष भयो। सो आगें जाय

ભાવપ્રકાશ—દામોદરદાસ જલની સેવા શ્રીયમુનાજીના ભાવથી કરતા. તેથી શ્રીઆચાર્યજી કહે, મર્યાદામાં અંબરીષ; પુષ્ટિમાં દામોદરદાસે રાજ–સેવા કરી. ત્યારે તતહુરા (જલને ગરમ કરવાના હાંડા) રૂપાના, તો અંબરીષની ઉપમા કેમ જાનિયે? જેમ શ્રીઠાકુરજીના મુખની ઉપમા ચંદ્રમાની. કેમ? કયાં મર્યાદા? કયાં પુષ્ટિ? કોટી ગણુ તારતમ્ય જાણવુ.

જ્યારે દામોદરદાસના સાસરાએ કહ્યુ, સ્ત્રીથી જલ ન ભરાવો ત્યારે દામોદરદાસ કહે, જલ નહીં ભરાવીયે, પછી સાસરો ગયો. ત્યારે દામોદરદાસે વિચાર્યુ કે જલની સેવા (સ્ત્રી જન) થી કરાવી તે જો હવે હુ છોડાવુ તો મને સાસરાની મર્યાદાનો દોષ લાગે. પરંતુ એકવાર કહીશ. પ્રીતિ હશે તો સ્ત્રી પોતે જ નહી છોડે. (એમ વિચારીને) જે એકવાર ભર્યુ તે સો વાર ભર્યુ. (લોકો તો) જાણી ચુકયા. હવે હું સેવા કેમ છોડું? પ્રીતિ હશે તો આ પ્રકારે (વિચારીને) ભરશે. તેથી હુ હઠ કરીને ભરાવુ તો પ્રીતિ વિના શ્રીઠાકુરજી અંગીકાર નહી કરે તેથી એકવાર રોકુ તો ખરો ત્યારે (સ્ત્રીને) કહે, હવે હું જ જલ ભરીશ, તમે ન ભરો. તમારા પિતાને લાજ લાગે છે ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, તમેજ ભરો આ પ્રકારે પિતાની 'મર્યાદા' નો દોષ થયો. તે આગળ જઇને અન્યાશ્રય થયો.

के अन्याश्रय भयो। जो दामोदरदास ससुर के आग्रह का'न तें जलकी सेवा छुड़ावते (छोड़ते ?) तो इनहूकों बाधक होतो। तासों फेर सेवा करन लागे।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समें उष्णकाल के दिन हते। तब दामोदरदास श्रीठाकुरजी कों मंदिर में पधराइ पोढ़ाइ के आप चौवारे जाइ सोये। तब श्रीद्वारकानाथजी ने लोंड़ी कों आज्ञा दीनी, जो-तू किंवाड़ खोलि। मोकों गरमी बोहोत होत है। तब लोंड़ी ने मंदिर के किंवाड़ खोले। तब श्रीद्वारकानाथजी ने लोंड़ी सों कह्यौ, जो-पंखा करि। तब लोंडी ने पंखा कियो। तब श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी सों कह्यौ, जो-तू जा, रहन दे। तब लोंड़ी किंवाड़ खुले छोड़िके सोयवे गई। तब सवारो भयो। तब दामोदरदास देखे तो मंदिर के किंवाड़ खुले हैं। तब पूछे, जो-किंवाड़ कौन ने खोले हैं ? तब लोंड़ी ने दामोदरदास सों कह्यो, जो-मोकूँ श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी ही, जो-तू किंवाड़ खोलि। तब मैंने किंवाड़ खोले हैं। तब दामोदरदास ने कही, जो-मोसूँ खोलिवे की क्यों न कही ? आप खोले। फेर दामोदरदास के मनमें आई, जो-श्रीठाकुरजी नें मोसों किंवाड़ खोलिवे की क्यों न कही ? और लोंड़ी सों क्यों कहैं ? परि प्रभु बड़े दयाल हैं। जाके विषे स्नेह होइ। ताही सों संभाषन करे। श्रीआचार्यजी के अंगीकार में

જો દામોદરદાસ સાસરાના આગ્રહ 'મર્યાદા' થી જલની સેવા છોડાવતા (છોડતા ?) તો એમને પણ બાધક થતો. તેથી ફરી સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—વળી એક સમયે ઉષ્ણકાલના દિવસ હતા. ત્યારે દામોદરદાસ શ્રીઠાકુરજીને મંદિરમાં પધરાવી પોઢાવીને પોતે ચૌવારે (ઉપરના ખુલ્લા ચોરામાં) જઇ સોયા. ત્યારે શ્રીદ્વારકાનાથજીએ લુંડીને આજ્ઞા કરી, કે તૂ કમાડ ખોલ. મને ગરમી બહુ જ થાય છે. ત્યારે લુંડીએ મંદિરનાં કમાડ ખોલ્યાં. ત્યારે શ્રીદ્વારકાનાથજીએ લુંડીને કહ્યું કે (તૂ) પંખા કર. ત્યારે લુંડીએ પંખો કર્યો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ લુંડીને કહ્યું, કે તૂ જા (હવે) રહેવા દે. ત્યારે લુંડી કમાડ ખુલ્લાં છોડીને સુવા ગઈ. ત્યારે સવાર થયું. ત્યારે દામોદરદાસ જુએ તો મંદિરનાં કમાડ ખુલ્લાં છે. ત્યારે પુછ્યું, કે કમાડ કોણે ખોલ્યાં છે ? ત્યારે લુંડીએ દામોદરદાસને કહ્યું, કે મને શ્રીઠાકુરજીએ આજ્ઞા કરી હતી કે તૂ કમાડ ખોલ. ત્યારે મેં કમાડ ખોલ્યાં છે. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે મને ખોલવાનું કેમ ન કહ્યું ? તેં પોતે ખોલ્યાં ? પછી દામોદરદાસના મનમાં આવ્યું કે શ્રીઠાકુરજીએ મને કમાડ ખોલવાનું કેમ ન કહ્યું, અને લુંડીને કેમ કહ્યું ? પરંતુ પ્રભુ (તો) બહુ દયાળુ છે. જેના વિષે (માં) સ્નેહ હોય તેનાથી

सब समान हैं। लौकिक में कोऊ ऊंचनीच कहियो (परि) श्रीठाकुरजी स्नेह के बस हैं। पाछें श्रीठाकुरजी ने दामोदरदास सों कह्यो, जो–मैंने खुलाए हैं और इन (नें) खोले हैं। जो–तू यासों क्यों खीझत हैं? तू तो चौवारे जाय सोयो। और मोकों भीतर सुवायो। तब दामोदरदास नें कह्यौ, जो–प्रसाद तब लेहूँ (जब) मंदिर नयो समराऊं। तब स्त्रीनें कह्यौ, जो–ऐसे क्यों बने? यह तो कछु पांच–सात दिनको तो काम नाहीं। तब दामोदरदास नें कह्यो, जो–सखड़ी महाप्रसाद तो नहीं लेऊंगो। फलाहार करूंगो। तब त्योंही करत मंदिर सिद्ध भयो। तब आछो दिन देखि के श्रीद्वारकानाथजी कों मंदिर में बैठाये। तब बड़ो उत्सव कियो। पाछें सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें आपु महाप्रसाद लियो।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी की पास पंखा कराये, परि स्त्री कों नाहिं जताये। सोउ जल की सेवा छोड़ी, तातें इनकों न कहे। काहें तें? पहले स्त्री जल की सेवा न करती तो चिंता नाहीं। (सेवा) करि के छोरनो हतो तो दस–पांच दिन जल भरि कें। पाछें अपने मनतें न भरते तो चिंता नाहीं। ससुर के कहेतें छोड़े, तातें श्रीठाकुरजी लोंडी सों क्विाड खोलाय पंखा की सेवा कराये।

સંભાષણ કરે. શ્રીઆચાર્યજીના અંગીકારમાં બધા સમાન છે. લૌકિકમાં કોઇ ઉંચ નીચ કહેજો (પરંતુ) શ્રીઠાકુરજી સ્નેહને વશ છે. પછી શ્રીઠાકુરજીએ દામોદર-દાસને કહ્યું, કે મેં ખોલાવ્યાં છે અને એને ખોલ્યાં છે. જે, તૂ એને કેમ ખીજે છે? તૂ તો ચોવારે જઇ સોયો અને મને ભીતર સુવાડ્યો? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે પ્રસાદ ત્યારે લઉં (જ્યારે) મંદિર નવું સિદ્ધ કરાવુ. ત્યારે સ્રીએ કહ્યું, કે એમ કેમ બને? આ તો કંઈ પાંચ-સાત દિવસનુ તો કામ નથી. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે સખડી મહાપ્રસાદ તો નહી લઉં. ફલાહાર કરીશ. ત્યારે તેમજ કરતાં મંદિર સિદ્ધ થયું. ત્યારે સુંદર દિવસ જોઇને શ્રીદ્વારકાનાથજીને મંદિરમા (પાટ) બેસાડયા. ત્યારે મોટો ઉત્સવ કર્યો. પછી બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. તે પછી પોતે મહાપ્રસાદ લીધો.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજીએ લુંડીની પાસે પંખા કરાવ્યો પરંતુ સ્રીને નહી જણાવ્યુ. તે પણ જલની સેવા છોડી તેથી તેને ન કહ્યુ. કેમકે પહેલાં સ્રી જલની સેવા ન કરતી તો ચિંતા નહીં (સેવા) કરીને છોડવી હતી તો દશ પાંચ દિવસ જલ ભરિને. પછી પોતાના મનથી ન ભરતી તો ચિંતા નહી. (દામોદર-દાસ) ના સાસરાના કહેવાથી છોડી તેથી શ્રીઠાકુરજી લુંડી પાસે કમાડ ખોલાવી

और श्रीआचार्यजी की यह आज्ञा हैं, जहां तांइ पूरन स्नेह को प्रकार हृदयारूढ़ न होई तहां तांई सेवा (यथा देहे तथा देवे) अपनी देहकों सीत–उष्ण विचारि कें करे । सो दामोदरदास चौवारें सोये । श्रीठाकुरजी कों वियारि आयवे को मारग न हतो । तातें मंदिर की रीति प्रगट कराईवेके लिये श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी सों किंवाड खुलाये । लोंड़ी कों मानसी सेवा को अधिकार हतो । अष्ट प्रहर गोप्य–रीति सों मानसी करती । कोई जानतो नाहीं । तातें श्रीठाकुरजी उह लोंड़ी के उपर वहोत प्रसन्न रहते ।

जब दामोदरदास लोंड़ी पर खीजे । सो श्रीठाकुरजी सहि न सके । जो मोकों प्रिय हैं ता पर खीझत है ? सो लोंड़ी की पक्ष श्रीठाकुरजी ने करी । तथा दामोदरदास कों अपराध तें छोड़ाइवे कों बोले, जो–मेनें यासों खुलाए । तू क्यों खीझत है ? आज पाछें या पर प्रीति राखियो । याको स्वरूप अलौकिक जानियो । तू जाय चौवारे पर सौयो । मोकों वियारि आयवे की ठौर नाहीं । चित्रा सखी होइ अपनी सेवा भूलि गयो ? मंदिर सँवारनो । तब दामोदरदास चौंकि परे, सो यह, जो अपने स्वरूप को अनुभव भयो । तब कहे मन्दिर बने तब खानपान

પંખાની સેવા કરાવી. અને શ્રીઆચાર્યજીની આ આજ્ઞા છે, (કે) જ્યાં સુધી પૂર્ણ સ્નેહનો પ્રકાર હૃદયારૂઢ ન થાય ત્યાં સુધી સેવા (યથા દેહે તથા દેવે) પોતાની દેહને શીત–ઉષ્ણ વિચારીને કરે. તે દામોદરદાસ ચોવારે સોયા. શ્રીઠાકુરજીને પવન આવવાનો માર્ગ ન હતો તેથી મંદિરની રીતિ પ્રકટ કરાવવાને માટે શ્રીઠાકુરજીએ લુંડીથી કમાડ ખોલાવ્યાં.લુંડીને માનસી સેવાનો અધિકાર હતો. આઠે પહોર ગુપ્ત રીતિથી માનસી (સેવા) કરતી. કોઇ જાણતો નહીં. તેથી શ્રીઠાકુરજી તે લુંડી ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન રહેતા.

જ્યારે દામોદરદાસ લુંડી ઉપર ખીજ્યા (ત્યારે) શ્રીઠાકુરજી સહી ન શક્યા (કેમ?) જે (એ) મને પ્રિય છે તેના ઉપર ખીજે છે? (તેથી) તે લુંડીનો પક્ષ શ્રીઠાકુરજીએ કર્યો. તથા દામોદરદાસને અપરાધથી છોડાવાને બોલ્યા કે મેં એની પાસે (કમાડ) ખોલાવ્યાં છે. તૂ કેમ ખીજે છે? આજ પછી એના ઉપર પ્રીતિ રાખજે. એનું સ્વરૂપ અલૌકિક જાણજે. તૂ જઇ ચોવારા ઉપર સોયો. મને પવન આવવાની જગા નહીં। ચિત્રા સખી થઇ તારી સેવા ભૂલી ગયો? મંદિર સિદ્ધ કરવું. ત્યારે દામોદરદાસ ચોંકી પડયા. તે એ, જે, પોતાના સ્વરૂપનો

करूं, यह टेक चित्रा के आवेस में कहे। पाछें कारीगर बुलाय काम लगाये। पाछें स्त्री नें कही खानपान बिना कैसें चलेगो ? एक दिन को काम नाहीं है। तातें खानपान बिना रह्यो न जायगो। वह आवेस रहेंतें, तब खानपान मति करियो। अब तो करो। तब कहे फलाहार लेऊंगो। या प्रकार मंदिर सँवराये। जारी, झरोखा, निजमंदिर, तिबारी, चोक, टेरा, परदा, जैसें लीलासृष्टि में करत हतें ताही भाव सों सगरे मंदिर को ब्योंत किये। मुहूरत देखि पधराये। बड़ो उत्सव (कियो) वैष्णव को समाधान श्रीआचार्यजी की भेट काढ़े।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक दिन दामोदरदास श्रीठाकुरजी कों राजभोग समर्पि सैय्या मंदिर में सैय्या सँवारन गये। तब देखे तो दुलीचा उपर बिलाई ने बिगाड्यो है। तब दामोदरदास ने कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी तो अपनी सैया हू राखि सकत नाहीं। ऐसें कह्यो, तब श्रीठाकुरजी ने थार चोकी उपरसूं लात मारि डारि दीनों और दामोदरदास सों श्रीठाकुरजी नें कह्यो, जो-सेवक तू के सेवक मैं ? सेवक होइ के ऐसें बोलत है ? ऐसे बहुत खीजे पाछें। दामोदरदास नें विनती कीनी ओर बहुत मनुहार करी। सब सामग्री सिद्ध करि

અનુભવ થયો. ત્યારે કહે, મંદિર બને ત્યારે ખાન-પાન કરૂં. આ ટેક ચિત્રાના આવેશમાં કહ્યો. પછી કારીગર (ને) બોલાવી કામે લગાડયા. પછી સ્ત્રીએ કહ્યુ, ખાન પાન વિના કેમ ચાલશે ? એક દિવસનું કામ નથી. તેથી ખાનપાન વિના રહેવાશે નહી. તે આવેશ રહે ત્યારે ખાનપાન ન કરતા. હવે તો કરો, ત્યારે કહે, ફલાહાર લઇશ. આ પ્રકારે મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યું. જારી, ઝરોખા, નિજમંદિર તિવારી, ચોક ટેરા, પડદા જેમ લીલાસૃષ્ટિમાં કરતા હતા તે જ ભાવથી બધા મંદિરની સગવડ કરી. મુહૂર્ત જોઇને શ્રીઠાકુરજીને પધરાવ્યા. મોટો ઉત્સવ (કર્યો) વૈષ્ણવનું સમાધાન, શ્રીઆચાર્યજીની ભેટ કાઢી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—ફરી એક દિવસ દામોદરદાસ શ્રીઠાકુરજીનો રાજભોગ સમર્પિ (ને) શૈય્યા મંદિરમાં શૈય્યા સમ્હારવા ગયા. ત્યારે જુએ તો દુલીચા (ગલીચા-ગાદી) ઉપર બિલાડીએ બગાડ કર્યો છે. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે શ્રીઠાકુરજી તો પોતાની શૈયા (પણ) રાખી શકતા નથી. એમ કહ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ થાલ ચોકી ઉપરથી લાત મારી ફેંકી દીધો. અને દામોદરદાસને શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, કે સેવક તૂ કે સેવક હું ? સેવક થઇને એવું બોલે છે ? એમ બહુ ખીજ્યા. પછી દામોદરદાસે વિનતી કરી અને બહુ જ મનુહાર કરી, બધી સામગ્રી સિદ્ધ કરીને શ્રીઠાકુરજીને

के श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो । श्रीठाकुरजी अरोगे । परि तोहू दोय मास लों बोले नाहीं । पाछे बहोत बिनती करन लागे । तब बोलन लागे ।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी ने राजभोग को थार लात मारि के डारि दियो । सो या भाव तें, जो–श्रीआचार्यजी नें अब ही दासभाव को अधिकार दियो है । और यह हांसी तो सख्य भाव को अधिकार भयो होइ तब ही बने । तातें बिना श्रीआचार्यजी के दिये तू (तें) विशेष भाव कर्यो । तातें तेरो धर्यो भोग नाहीं अंगीकार करूंगो । या प्रकार सिक्षा किये । तातें अधिकार बिना विशेष विचार किये इतनो अंतराय जताये, वैष्णव कों ।

वार्ता–प्रसंग ४—बहुरि एक समय दामोदरदास हरसानी इनके घर पाहूने आये । सो संभलवारे के घर दिन पांच सात रहे । तब इन बहुत भली भांति सों समाधान कियो । पाछें दामोदरदास हरसानी इनसों बिदा होइके अडेल आये । तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों पूछे, जो–दमला ! तू कहां उतर्यो हो ? कहा प्रसाद लियो हो ? तब दामोदरदास हरसानी नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! कन्नौज में दामोदरदास संभलवारेके घर उतर्यो हो ।

ભોગ સમર્પ્યો. (ત્યારે) શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. પરંતુ તોપણ બે મહિના સુધી બોલ્યા નહીં. પછી બહુ જ વિનતી કરવા લાગ્યા. ત્યારે બોલવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજીએ રાજભોગનો થાલ લાત મારીને ફેંકી દીધો તે એ ભાવથી કે શ્રીઆચાર્યજીએ હજુ તો દાસભાવનો અધિકાર દીધો છે અને આ હાંસી તો સખ્યભાવનો અધિકાર હોય ત્યારે બને. તેથી, વિના શ્રીઆચાર્યજીના દીધે, તે વિશેષ ભાવ કર્યો. તેથી તારો ધર્યો ભોગ અંગીકાર નહી કરૂં. આ પ્રકારે શિક્ષા કરી. તેથી અધિકાર વિના વિશેષ વિચાર કરે આટલો અંતરાય સૂચવ્યો, વૈષ્ણવને.

વાર્તા–પ્રસંગ ૪—ફરી એક સમય દામોદરદાસ હરસાની એમને ઘરે પરોણે આવ્યા. તે સંભલવાળાને ઘરે દિવસ પાંચ સાત રહ્યા. ત્યારે એમણે બહુ સારી રીતે સમાધાન કર્યું. પછી દામોદરદાસ હરસાની એમનાથી વિદાય થઇને અડેલ ગયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસને પૂછ્યું કે, દમલા ! તું ક્યાં ઉતર્યો હતો ? શો પ્રસાદ લીધો હતો ? ત્યારે દામોદરદાસ હરસાનીએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! કન્નૌજમાં દામોદરદાસ સંભલવાળાને ત્યાં ઉતર્યો હતો

अनसखड़ी महाप्रसाद लेतो। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवारे उपर अप्रसन्न भये और कहे, (मन में बिचारे जो) यह मेरो अंतरंग सेवक याकों सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लिवायो? यह बात श्रीआचार्यजी के मनकी दामोदरदास संभलवारे नें घर बेठे जानी। जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु मेरे ऊपर अप्रसन्न भये हैं। तब स्त्री सों कही, जो-तू श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करियो। और मैं तो श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल जात हों। तब दामोदरदास अड़ेल कों चले। सो अड़ेल जाइ पहोंचे। तब श्रीआचार्यजी के दरसन किये। साष्टांग दंडवत् किये। तब श्रीआचार्यजी पीठ दे बैठे। तब दामोदरदास संभलवारेने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि के कह्यो, जो-महाराज! मेरो अपराध कहा है? और जीव तो अपराध करत ही आयो है। परि अपराध कर्यो जानिए तो भली बात है। तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो तेनें दामोदरदास हरसानी कों सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लिवायो? और अनसखड़ी प्रसाद क्यों लिवायो? तब दामोदरदास संभलवारे नें श्रीआचार्यजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज, दामोदरदास सों पूछिये! तब श्रीआचार्यजी नें दामोदरदास हरसानी सों पूछी, जो-दमला! तेनें दामोदरदास संभलवारे के यहां सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लियो?

અનસખડી મહાપ્રસાદ લેતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસ સંભલવાળા ઉપર અપ્રસન્ન થયા. અને કહ્યું, (મનમાં વિચાર્યું કે) આ મારો અંતરંગ સેવક તેને સખડી મહાપ્રસાદ કેમ ન લેવડાવ્યો? આ વાત શ્રીઆચાર્યજીના મનની દામોદરદાસ સંભલવાળાએ ઘેર બેઠે જાણી, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ મારા ઉપર અપ્રસન્ન થયા છે. ત્યારે સ્ત્રીને કહ્યું, કે તુ શ્રીઠાકુરજીની સેવા સારી રીતે કરજે. અને હું તો શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન માટે અડેલ જઉં છું. ત્યારે દામોદરદાસ અડેલ ચાલ્યા. તે અડેલ જઇ પહોંચ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કર્યાં. સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પીઠ દઇ બેઠા. ત્યારે દામોદરદાસ સંભલવાળાએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરીને કહ્યું, કે મહારાજ! મારો અપરાધ શો છે? અને જીવ તો અપરાધ કરતો જ આવ્યો છે. પરંતુ અપરાધ કર્યો જાણીએ તો સારી વાત છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તેં દામોદરદાસ હરસાનીને સખડી મહાપ્રસાદ કેમ ન લેવડાવ્યો? ત્યારે દામોદરદાસ સંભલવાળાએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! દામોદરદાસને જ પૂછીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસ હરસાનીને પૂછ્યું, કે દમલા! તેં દામોદરદાસ સંભલવાળાને ત્યાં સખડી મહાપ્રસાદ કેમ ન લીધો?

तब दामोदरदास नें कह्यो, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी प्रातःकाल बालभोग अरोगते सोई लेतो। सो सखडी की रुचि रहती नाहीं, तातें न लेतो। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-तू तो तेरी इच्छा तें न लेतो। परि मोकों तो याके ऊपर बड़ी खुनस भई हती। सो भक्तन के अंतःकरण की भक्ति देखिवे कों प्रभु को नाट्य है। काहे तें, जो-दामोदरदास संभलवारे ने कन्नौज में अपने घर बैठे श्रीआचार्यजी के अंतःकरण की जानी। सो श्रीआचार्यजी तो भक्त के हृदय में सदा स्थित हैं। वह भक्त हृदे की बात कहा न जाने ? परि भक्त परीक्षार्थ यह प्रभु को नाट्य है। पाछें दामोदरदास कों बहुत सन्मान करि के श्रीआचार्यजी ने घर पठाये। तब दामोदरदास अपने घर कन्नौज आइ पहोंचे। पाछें स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—दामोदरदास हरसानी संभलवारे के ऊपर कृपा करन के अर्थ इनके घर पाहुने आये। दामोदरदास संभलवारे तनुजा वित्तजा भली-भाँति सों राजसेवा करे हैं और जो वैष्णव (इनके यहां होय के) श्रीआचार्यजी के दरसन कों जाते तिन सबन के संग न्यारी न्यारी भेट पठावते। वैष्णव को समाधान बहोत करते। खड़िया में बिना कहें खरची वैष्णव कों भरि देते। सो श्रीआचा-

---

ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે, મહારાજ ! શ્રીઠાકુરજી પ્રાતઃકાલ બાલભોગ અરોગતા તે જ લેતો. તે સખડીની રુચી રહેતી નહી. તેથી ન લેતો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તૂ તો તારી ઇચ્છાથી ન લેતો પરંતુ મને તો આના ઉપર બહુ રીસ થઇ હતી. તે ભક્તોના અંતઃકરણની ભક્તિ જોવા પ્રભુનું (આ) નાટ્ય છે. કેમકે, દામોદરદાસ સંભલવાળાએ કન્નૌજમાં પોતાના ઘર બેઠે શ્રીઆચાર્યજીના અંતઃકરણની (વાત) જાણી. તે શ્રીઆચાર્યજી તો ભક્તના હૃદયમાં સદા બિરાજે છે, તે ભક્ત હૃદયની વાત શું ન જાણે ? પરંતુ ભક્ત પરિક્ષાર્થ આ પ્રભુનું નાટ્ય છે. પછી દામોદરદાસને બહુ જ સન્માન કરીને શ્રીઆચાર્યજીએ ઘર મોકલ્યા. ત્યારે દામોદરદાસ પોતાના ઘર કન્નોજ આવી પહોંચ્યા. પછી સ્ત્રી-પુરુષ સારી રીતે સેવા કરવા લાગ્યાં.

ભાવપ્રકાશ—દામોદરદાસ હરસાની સંભલવાળાના ઉપર કૃપા કરવાને માટે એમને ત્યાં પાહુણે આવ્યા. દામોદરદાસ સંભલવાળા તનુજા વિત્તજા સારી રીતિથી રાજસેવા કરે છે અને જે વૈષ્ણવ (એમને ત્યાં થઇને) શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શને જાય તે બધાની સંગે અલગ અલગ ભેટ મોકલતા. વૈષ્ણવનું સમાધાન બહુ જ કરતા. ખડિયા (થેલા) માં વિના કહે ખર્ચી વૈષ્ણવોને ભરી

र्यजी के आगें बड़ाई बहोत भई। जो–आवे सो (बड़ाई) करे। तब श्रीआचार्यजी के मनमें यह आई, जो–हृदय के भीतर को भाव सुद्ध होइ तब काम होइ। जो अन्याश्रय न होइ। यह श्रीआचार्यजी के हृदय की जानिके दामोदरदास हरसानी इनके यहां पाहुने आये (कृपा करनके अर्थ)। सो दामोदरदास के हृदय की सगरी रीति आछी देखी, परंतु स्त्री में रंच पिताकी का'नि जानि सखड़ी महाप्रसाद न लिये। दिन पांच सात रहे। परंतु अपने हृदय को अभिप्राय कछु दामोदरदास सों मार्ग की वार्ता नाहीं कहे। पाछें श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी पूछे कहांते आये? तब बिनती करी, जो–दामोदरदास संभलवारे के यहां पाहुने गयो हतो सो सखड़ी नाहीं लियो, अनसखड़ी लियो। यह कहिके यह जताये, जो–दामोदरदास को भाव दृढ़ है। तातें अनसखड़ी लीनी। स्त्री को भाव दृढ़ नाहीं है तातें सखड़ी (महाप्रसाद) नाहीं लियो। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवारे के ऊपर अप्रसन्न भये। जो–मेरे अंतरंग सेवक कों पायके स्त्रीकूं अन्याश्रय सों न छुड़ायो? फेर ऐसो समें कब पावेगो? सो यह बात श्रीआचार्यजी के हृदय की संभलवारे ने जानी। स्त्रीकों पराश्रय है तातें नाहीं जानी।

हेता. ते श्रीआचार्यजीनी आगळ बहु बडाइ थइ. जे आवे ते (बडाइ) करे. त्यारे श्रीआचार्यजीना मनमां ए आव्युं के हृदयनी भीतरनो भाव शुद्ध होय तो काम थाय. जे अन्याश्रय न थाय. आ श्रीआचार्यजीना हृदयनी जाणीने दामो-दरदास हरसानी एमने त्यां परोणे आव्या (कृपा करवाने माटे). ते दामोदरदासना हृदयनी बधी रीति सुदर जोइ. परतु स्त्रीमां रंचक पितानी मर्यादा जाणीने सखडी महाप्रसाद न लीधो. दिन पांच सात रह्या. परंतु पोताना हृदयनो अभिप्राय कंइ दामोदरदासने मार्गनी वार्ता न कही पछी श्रीआचार्यजी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीए पूछ्यु, क्यांथी आव्या? त्यारे विनती करी, जे दामोदरदास सभलवाळाने त्यां परोणे गयो हतो. ते सखडी नहीं लीधी. अनसखडी लीधी. ए कहीने ए सूचव्यु, के दामोदरदासनो भाव दृढ छे. तेथी अनसखडी लीधी. स्त्रीनो भाव दृढ नथी तेथी सखडी (महाप्रसाद) नहीं लीधो. त्यारे श्रीआचार्यजी दामोदरदास सभलवाळाना उपर अप्रसन्न थया. के मारा अंतरग सेवकने प्राप्त करीने (पण) स्त्रीनो अन्याश्रय न छोडाव्यो. फरी एवो समय क्यारे मळशे? आ वात श्रीआचार्यजीना हृदयनी सभलवाळाए जाणी. स्त्रीने पराश्रय छे तेथी न जाणी—

वार्ता-प्रसंग ५—और सिंहनंद के वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन कों जाते सो कन्नौज में दामोदरदास के घर उतरते । सो दामोदरदास सबन कों प्रसाद लिवावते । ता पाछे जब वैष्णव अड़ेल कों बिदा होते तब जितने वैष्णव होते तिन सबन प्रति एक एक मोहौर, एक एक नारियल, श्रीआचार्यजी की भेट कों पठावते। काहेते ? जो मेरी दंडवत खाली हाथ कैसे करोगे ? सो वे दामोदरदास ऐसे भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ६—और दामोदरदास को ससुर बहुत संपन्न हतो । तिनने एक सौ लोंड़ी बेटी के दायजे में दीनी हती । जो-मेरी बेटी बैठी रहेगी । और कामकाज सब लोंड़ी करेंगी । परि वह लोंड़ी पास काम न करावती । सेवा संबंधी कार्य सब आपुही करती । और लोंड़ी सब और कामकाज करती । सो वह ऐसी भगवदीय ही ।

वार्ता-प्रसंग ७—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदास संभलवारे के घर पौढ़े हते । और दामोदरदास संभलवारे पांव दाबत हते । तब श्रीआचार्यजी इन सों पूछे, जो-तोकों, तेरे मनमें काहू बात को मनोरथ है ? तब दामोदरदासने कह्यौ, जो-महाराज ! मोकों तो आपके अनुग्रह तें काहू बात को मनोरथ रह्यो नाहीं । तब श्री आचार्यजी नें कह्यौ, जो-तु जाइके अपनी स्त्री सों

વાર્તા-પ્રસંગ ૫—વળી સિંહનંદના વૈષ્ણુવ આચાર્યજીના દર્શને જતા તે કન્નોજમાં દામોદરદાસના ઘર ઉતરતા. તે દામોદરદાસ બધાને પ્રસાદ લેવડાવતા. તે પછી જ્યારે વૈષ્ણુવ અડેલ માટે વિદાય થતા ત્યારે જેટલા વૈષ્ણુવ થતા તે બધા પ્રતિ એક એક મોહોર એક એક નારિયલ શ્રીઆચાર્યજીની ભેટનું મોકલતા. શા માટે ? કે, મારી દંડવત ખાલી હાથે કેમ કરશો ? તે દામોદરદાસ એવા ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૬—અને દામોદરદાસનો સાસરો બહુ જ સંપન્ન હતો. તેણે એકસો લુંડીઓ બેટીના દાયજામાં આપી હતી. કે, મારી બેટી બેસી રહેશે. અને કામકાજ બધી લુંડીઓ કરશે. પરંતુ તે લુંડી પાસે કામ ન કરાવતી. સેવા સંબંધી કાર્ય બધું આપ જ કરતી. અને લુંડી બધી બીજું કામકાજ કરતી. તે એવી ભગવદીય હતી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૭—ફરી એક સમે શ્રીઆચાર્યજી આપ દામોદરદાસ સંભલવાળાના ઘરે પોઢયા હતા. અને દામોદરદાસ સંભલવાળા ચરણ દાબતા હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એમને પૂછયું, કે તને તારા મનમાં કોઇ વાતનો મનોરથ છે? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે મહારાજ ! મને તો આપના અનુગ્રહથી કોઇ વાતનો મનોરથ રહ્યો નથી.

पूछि आउ। तब दामोदरदास अपनी स्त्री सों पूछी, जो–तेरे काहू बात को मनोरथ है ? तब स्त्रीनें कह्यो, जो– और तो कछु मनोरथ रह्यौ नाहीं। एक पुत्र को मनोरथ है। तब श्रीआचार्यजी सों आइ के दामोदरदास नें कह्यौ, जो–महाराज ! स्त्री कों तो एक पुत्र को मनोरथ है। तब श्री आचार्यजी आप श्रीमुख ते आज्ञा करे, जो– पुत्र होइगो। पाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीनाथजीद्वार (जतीपुरा) पधारे। ता पाछे समय भयो तब वाके गर्भ की स्थिति भई। ता पाछे केतेक दिन में वा बाखरि में एक डाकोतिया आयो। तब ताको सब स्मार्त की स्त्री पूछन लागी। तब तामें तें काहूने दामोदरदास की स्त्री सों कही, जो–अमूकी तु हू पूछि, तेरे कहा होइगो ? पाछें एक लोंडीने जाइके वा डाकोतिया सों पूछी, जो–कहा होइगो ? बेटा होइगो के बेटी होइगी ? तब वा डाकोतिया ने कह्यौ, जो-बेटा होइगो।

ता पाछे केतेक दिनसें श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे। तब दामोदरदास चरन छूवन लागे। तब श्रीआचार्यजी नें कह्यौ, जो– तू मोकों छुवे मति। तोकों अन्याश्रय भयौ है। तब दामोदरदास नें कह्यौ, जो–महाराज ! हों तो कछू जानत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी नें कह्यौ, जो–तू अपनी स्त्रीकों पूछि। तब दामोदरदास ने अपनी

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તૂ જઇને તારી સ્ત્રીને પૂછી આવ. ત્યારે દામોદરદાસે પોતાની સ્ત્રીને પૂછ્યું, તને કોઈ વાતનો મનોરથ છે ? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, કે બીજો તો કોઇ મનોરથ રહ્યો નથી એક પુત્રનો મનોરથ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવીને દામોદરદાસે કહ્યું, કે મહારાજ ! સ્ત્રીને તો એક પુત્રનો મનોરથ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીમુખથી આજ્ઞા કરી, કે પુત્ર થશે. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીનાથજીદ્વાર (જતીપુરા) પધાર્યા. તે પછી સમય થયો ત્યારે તેને ગર્ભની સ્થિતિ થઈ. તે પછી કેટલાક દિવસમાં તે બાખર (વાડા)માં એક ડાકોતિઆ આયો. ત્યારે તેને બધી સ્માર્તની સ્ત્રિયો પૂછવા લાગી; ત્યારે તેમાંથી કોઇએ દામોદરદાસની સ્ત્રીને કહ્યું, કે અમૂકી તૂ પણ પૂછ તારે શું થશે ? પછી એક લુંડીએ જઇને તે ડાકોતિયાને પૂછ્યું, કે (મારી શેઠાણીને) શું થશે ? બેટા થશે કે બેટી થશે ? ત્યારે તે ડાકોતિયાએ કહ્યું કે બેટા થશે.

તે પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી કન્નૌજ પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસ ચરણ સ્પર્શ કરવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તૂ મને અડીશ નહી. તને અન્યાશ્રય થયો છે. ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, કે મહારાજ ! હું તો કંઈ જાણતો નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તૂ તારી સ્ત્રીને પૂછ. ત્યારે દામોદરદાસે પોતાની

स्त्रीसों पूछी। तब स्त्रीने जो प्रकार भयो हतो सो सब कह्यो। सो सब बात दामोदरदासनें श्रीआचार्यजी सों आय कही। तब श्री-आचार्यजी दामोदरदास सों कहे, जो-पुत्र तो होइगो परि म्लेच्छ होइगो। पाछे श्रीआचार्यजी आप अडेल पधारे।

पाछे यह बात दामोदरदासकी स्त्रीने सुनी, तब तें श्रीठाकुरजी की सामग्री तथा पात्र कों आप स्पर्श न करती। कहेती, जो-मेरे पेट में म्लेच्छ है, तो मैं श्रीठाकुरजी की सामग्री तथा पात्र कैसें छूओं? या भांति सों रहे। पाछें जब प्रसूति के दिन आये। तब दामोदर-दासकी स्त्री नें अपनी महतारी सों कह्यौ, जो-मेरे पुत्र होय तो होत मात्र ही तू तत्काल ले जैयो। मैं वाको मुख न देखोंगी। जो-वाको महोडो हम देखें तो हमारो अनिष्ट होइ। तातें वाको महोडो नाहीं दीखे एसो उपाइ तू करियो। पाछें वाकी महतारी नें त्योंही कियो। प्रसूत होत मात्र तत्काल अपने घर ले गई। सो धाइ कों देकें बड़ो कियो।

भावप्रकाश—एक समें जब श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तब दामोदरदास सों आज्ञा करी, कछू मनोरथ होइ सो मांगि ले। या प्रकार फेरि दामोदरदास की परीक्षा किये। (काहतें ?) जो-स्त्री कों पराश्रय है।

સ્રીને પૂછ્યું. ત્યારે સ્રીએ, જે પ્રકાર થયો હતો તે બધો કહ્યો, તે બધી વાત દામો-દરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને આવીને કહી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસને કહે, કે પુત્ર તો થશે પરંતુ મ્લેચ્છ (બુદ્ધિવાળો) થશે. પછી શ્રીઆચાર્યજી આપ અડેલ પધાર્યા.

પછી આ વાત દામોદરદાસની સ્રીએ સાંભળી ત્યારથી (તે) શ્રીઠાકુરજીની સામગ્રી તથા પાત્રને પોતે સ્પર્શ ન કરતી. (અને) કહેતી, કે મારા પેટમાં મ્લેચ્છ છે તો હું શ્રીઠાકુરજીની સામગ્રી તથા પાત્રને કેમ અડકું? આ પ્રકારથી રહે. પછી જ્યારે પ્રસૂતિના દિવસ આવ્યા ત્યારે દામોદરદાસની સ્રીએ પોતાની માતાને કહ્યું, કે મારે પુત્ર થાય તે થતાં માત્ર જ-તૂ તત્કાલ લઇ જજે. હું એનું મ્હોડું નહીં જોઉં. જો એનું મ્હોડું અમે જોઇએ તો અમારૂં અનિષ્ટ થાય. તેથી તેનું મ્હોડું ન દેખાય એવો ઉપાય તૂ કરજે. પછી એની માતાએ તેમજ કર્યું. પ્રસૂત થતાં માત્ર તત્કાલ પોતાના ઘરે (બાલક)ને લઇ જઇ. અને ધાઇને આપીને તેને મોટો કર્યો.

ભાવપ્રકાશ—એક સમય જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી કન્નૌજ પધાર્યા ત્યારે દામોદરદાસને આજ્ઞા કરી, કંઇ મનોરથ હોય તો માંગી લે. આ પ્રકારે ફરી દામો-દરદાસની પરિક્ષા કરી-કેમકે સ્રીને પરાશ્રય છે. તેની સંગથી આને પણ પરાશ્રય

ताके संगतें याहुकों पराश्रय होई। तो कछु वर दीजे। इतने पुष्टिमार्ग के फलसों रहित होई। परि दामोदरदास तो दृढ़ है। तातें कहे, महाराज! आपु के चरनारविंद की सेवा मिली अब मोकों काहू बात को मनोरथ नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास सों कह्यो, स्त्री कों पूछि आउ। यामें यह जानिये, जो–श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों बोले परि स्त्री सों कछु बोले नाहीं। और स्त्री हू आप आय श्रीआचार्यजी सों बिनती नाहीं कीनी। यामें यह जानिये, जो–(स्त्री) बहोत श्रीमहाप्रभुजी की निकट हूँ नाहीं आवती, और मन में अन्याश्रय हतो। तातें कह्यो, एक पुत्र सेवा अर्थ होय। सो यह विचार नाहीं आयो, जो–पुष्टिमार्ग की सेवा मांगे ते मिले। पुत्र को कहा प्रमान है, जो–सेवा करेगो? इतने यह वचन में (श्रीआचार्यजी ने जान्यो) जो–मेरो आश्रय छूट्यो। जाउ, पुत्र लेके सगरी भक्ति सकामी होइ गई। तातें मुकुंददास ने सप्तम स्कंध में प्रह्लाद नृसिंहजी सों कहे हैं, "स्वामि सों निज अर्थ हि चाहें। निदन भक्ति अवगाहें।" स्वामी सों लौकिक वैदिक अपनो सुख कछु चाहे सो निंदित है, वाको भक्ति न मिले। या प्रकार पुत्र दे आप श्रीगोवर्धनधर पास गिरिराज पधारे। फेरि जब स्त्री ने अन्याश्रय कियो तब आप कन्नौज पधारे। और दामोदरदास कों

થાય તો કંઇ વર આપીએ. એટલે પુષ્ટિમાર્ગના ફલથી રહિત થાય. પરંતુ દામોદર-દાસતો દૃઢ છે તેથી કહે, મહારાજ! આપના ચરણારવિંદની સેવા મળી હવે મને કોઇ વાતનો મનોરથ નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દામોદરદાસને કહ્યું, સ્ત્રીને પૂછી આવ. એમાં એમ જાણિએ કે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસથી બોલ્યા પરંતુ સ્ત્રીથી કંઇ બોલ્યા નહીં. અને સ્ત્રી પણ પોતે આવીને શ્રીઆચાર્યજી પાસે વિનતી ન કરી. એમાં એમ જાણિએ કે સ્ત્રી શ્રીમહાપ્રભુજીની પાસે પણ ઘણી આવતી નહી. અને મનમાં અન્યાશ્રય હતો. તેથી કહ્યું એક પુત્ર સેવા અર્થ હોય. તે એમ વિચાર ન આવ્યો કે પુષ્ટિમાર્ગની સેવા માંગ્યાથી મળે. પુત્રનું શું પ્રમાણ છે કે સેવા કરશે? એટલાં વચનમાં (શ્રીઆચાર્યજીએ જાણ્યું) કે મારો આશ્રય છુટયો. જાઉ પુત્ર લઇને સઘળી ભક્તિ સકામી થઇ ગઇ. તેથી મુકુંદદાસે સપ્તસ્કંધમાં પ્રહ્લાદ નૃસિંહજીથી કહે છે "સ્વામિ સોં નિજ અર્થ હી ચાહે, નિદન ભક્તિ અવગાહે" સ્વામીથી લૌકિક વૈદિક પોતાનુ સુખ કંઇ ચાહે તો નિંદિત છે. એને ભક્તિ ન મળે આ પ્રકાર પુત્ર આપી આપ શ્રીગોવર્દ્ધનધર પાસે ગિરિરાજ પધારે. પછી જ્યારે સ્ત્રીએ અન્યાશ્રય કર્યો ત્યારે આપ કન્નોજ પધાર્યા. અને

चरन यातें छूवन नहीं दिये, जो–स्त्री के हाथ को खानपान दामोदरदास ने कियो है। तातें चरनपरस करिवे को अधिकार नाहीं है। यह दामोदरदास कूं जतायो।

तातें अन्याश्रय बराबरि दोष दूसरो नाहीं है। जैसे, एक पति छोडिकें दूसरो पति करे तब स्त्री को सगरो धर्म जाई। ताही प्रकार अन्याश्रय रंच करे तो वैष्णव को धर्म नाश होई। यह सिद्धांत दिखाये। फेरि स्त्री कों अनन्यता भई, तातें श्रीठाकुरजी की सामग्री–सेवा परस नाहीं करती। तब वह अन्याश्रय पुत्र द्वारा हृदय तें निकर्यो। काहे तें, श्रीभागवत में कहे हैं भक्त कों श्रीठाकुरजी विना और ठौर ममत्व होई सो वस्तु कों श्रीठाकुरजी तत्काल नाश करे। तब ज्ञान वैराग्य दृढ़ होइके आश्रय सिद्ध होई। भक्ति न होइ तो वस्तु गये औरहू अन्याश्रय सदा करे। सो स्त्री की पुत्र में ममता देखि के नष्ट श्रीआचार्यजी ने अपने जानिके किये। तब स्त्री कों ज्ञान भयो। तब अपनी माता सों कहे, जो–मैं पुत्र को मुख न देखोंगी। सों पुत्र होन समय नेत्रन सों पट्टी बांधि लीनी। सो उनकी माता पुत्र को जन्मत ही अपने घर ले गई। तहां पुत्र बरस १० को ह्वै पाछें म्लेच्छ भयो। स्त्री पुरुष मन लगाइकें श्रीद्वारकानाथजी की सेवा करी।

દામોદરદાસને ચરણ સ્પર્શ એથી ન કરવા દીધાં કે સ્ત્રીના હાથનું ખાનપાન દામોદરદાસે કર્યું છે. તેથી ચરણસ્પર્શ કરવાનો અધિકાર નથી. આ દામોદરદાસને જણાવ્યું.

તેથી અન્યાશ્રય બરાબર બીજો દોષ નથી. જેમ એક પતિ છોડીને બીજો પતિ કરે સ્ત્રીનો સઘળો ધર્મ જાય. તેજ પ્રકારે અન્યાશ્રય રંચક કરે તો વૈષ્ણવનો ધર્મ નાશ થાય. આ સિદ્ધાંત દેખાડયો. ફરી સ્ત્રીને અનન્યતા થઇ ત્યારે શ્રીઠાકુરજીની સામગ્રી–સેવા (તો) સ્પર્શ ન કરતી ત્યારે તે અન્યાશ્રય પુત્ર દ્વારા હૃદયથી નિકળ્યો. કેમ ? જે શ્રીભાગવતમાં કહે છે, ભક્તને શ્રીઠાકુરજી વિના બીજી જગ્યાએ મમત્વ હોય તો તે વસ્તુનો શ્રીઠાકુરજી તત્કાલ નાશ કરે. ત્યારે જ્ઞાન વૈરાગ્ય દૃઢ થઇને આશ્રય સિદ્ધ થાય. ભક્તિ ન હોય તો વસ્તુ ગયે બીજો પણ અન્યાશ્રય સદા કરે. તે સ્ત્રીની પુત્રમાં મમતા જોઇને શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનાં જાણી (તેને) નષ્ટ કરી. ત્યારે સ્ત્રીને જ્ઞાન થયું. ત્યારે પોતાની માતાને કહ્યું, કે હું પુત્રનું મ્હોડું નહી જોઉં. તે પુત્ર થવાના સમયે નેત્રો ઉપર પટ્ટી બાંધી લીધી. પછી એની માતા પુત્રને જન્મથી જ પોતાના ઘરે લઇ ગઇ. ત્યાં પુત્ર વરસ ૧૦ નો થઇ પછી મ્લેચ્છ થયો. સ્ત્રી–પુરુષે મન લગાડીને શ્રીદ્વારકાનાથજીની સેવા કરી.

वार्ता-प्रसंग ८—बहुरि एक समय दामोदरदास की देह छूटी। तब स्त्री नें घर में छिपाय राखी। पाछें वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम एक नाव अड़ेल कों भाड़े करि लावो। सो वैष्णव नाव भाड़े करि लाये। तब नाव में श्रीद्वारकानाथजी और घर में की सब सामग्री तृण पर्यंत कछु घर में राख्यो नाहीं। घर में हतो सो सब नाव में धर्यो। तब वैष्णवन सों कह्यो, जो-यह नाव अड़ेल ले जाउ। सब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मंदिर में पहोंचाओ। सो वैष्णव नाव लेके चले। सो कोस तीस चालीस उपर नाव गई। पाछें स्त्री नें प्रगट कियो। जो दामोदरदास की देह छूटी है। तब वैष्णव सब आये। संस्कार कियो। तब दामोदरदास को बेटा तुरक भयो, सो आयो। सो आय के देखे तो घर में कछू नाहीं। जल को करवा भर्यो है। सो देखिके मूंड पटकि रह्यो। पाछें दामोदरदास को ससुर आयो। तिननें बेटी सों कह्यो, जो-बेटी तेनें घर में कछू राख्यो नाहीं? जो-अब तू कहा खायगी? तब वानें कही, जो-तुम देउगे सो खाऊंगी। क्षत्री लोगन के या समें सगे सहोदरे कछू देत हैं। एसी ज्ञाति की रीति है। तब दामोदरदास की स्त्री ने जलपान न कर्यो। सो थोरे ही दिन में देह छूटी। कृति दोउन की साथ भई। तब यह बात केतेक दिन पाछे काहू वैष्णव नें श्रीआचार्यजी आगे कही।

વાર્તા પ્રસંગ-૮—વળી એક સમયે દામોદરદાસની દેહ છુટી. ત્યારે સ્ત્રીએ ઘરમાં સંતાડી રાખી. પછી વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે તમે નાવ અડેલની ભાડે કરી લાવો. તે વૈષ્ણવ નાવ ભાડે કરી લાવ્યા. ત્યારે નાવમાં શ્રીદ્વારકાનાથજી અને ઘરની બધી સામગ્રી તૃણ પર્યંત કંઇ ઘરમાં રાખ્યું નહીં. ઘરમાં હતું તે બધું નાવમાં ધર્યું. ત્યારે વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે આ નાવ અડેલ લઈ જાવ. બધું શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી-ના મંદિરમાં પહોંચાડો. તે વૈષ્ણવો નાવ લઇને ચાલ્યા. તે કોસ ૩૦-૪૦ ઉપર નાવ ગઇ ત્યારે સ્ત્રીએ (વાતને) પ્રકટ કરી કે દામોદરદાસની દેહ છૂટી છે. ત્યારે વૈષ્ણવો બધા આવીને સંસ્કાર કર્યો. ત્યારે દામોદરદાસનો બેટા તુરક થયો તે આવ્યો. તે આવીને જુએ તો ઘરમાં કંઈ નથી. જલનો કરવો ભર્યો છે. તે જોઇને માથું પટકીને રહી ગયો. પછી દામોદરદાસનો સાસરો આવ્યો તેણે બેટીને કહ્યું, કે બેટી! તેં ઘરમાં કાંઇ રાખ્યું નહીં? જે હવે તૂં શું ખાઇશ? ત્યારે તેણે કહ્યું, કે તમે દેશો તે ખાઇશ. ક્ષત્રી લોકોમાં આ સમયે સગાં સંબંધી કંઇ દે છે એવી જ્ઞાતિની રીતિ છે. ત્યાર (પછી) દામોદર-દાસની સ્ત્રીએ જલપાન ન કર્યું. તે થોડા જ દિવસમાં દેહ છુટી. કૃતિ બન્નેની સાથે થઈ. ત્યારે આ વાત કેટલાક દિવસ પછી કોઇ વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજી આગળ કહી

तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो–इनकों ऐसो ही चाहिये। सो वे दामोदरदास तथा उनकी स्त्री ये दोउ श्रीआचार्यजी के सेवक ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये।

भावप्रकाश—पाछें दामोदरदास की देह छूटी। तब स्त्री ने देह छिपाइ यातें राखे, जो–पुत्र म्लेच्छ है। सगरी वस्तु श्रीजी की है सो ले जायगो। तातें नाव भरिकें सब वस्तु श्रीआचार्यजी के यहां पहुंचाई। जब कोस चालीस नाव गई तब स्त्रीने जाहेर कियो। ससुर आदि ज्ञाति के सबने दामोदरदास की देह को संस्कार कियो। पाछें बेटा दोरि के आयो सो देखे तो माटी को करुवा जलसों भर्यो है। और कछु है नाहीं। जब खबर पाई तब नाव लेके दोर्यो। परंतु पायो नाहीं। तब माथो पीटि रह्यो। यामें यह जतायो, जो–लौकिक होइ के अलौकिक वस्तु लेन को उपाय करे सो दुख ही पावे। परंतु हाथ लागे नाहीं।

और ससुर ने कह्यो, कछु राख्यो नाहीं। अब तू कहा खायगी? यह लौकिक पूछ्यो। तब स्त्रीने अलौकिक बात कही, जो–अब तुम देउगे सो खाऊंगी। या समें क्षत्री लोगन में देत हैं। तासों निर्वाह करूंगी। ताको अर्थ यह, जो–श्रीठाकुरजी पधारे सो सेवा विना घर की वस्तु कैसे लेऊं?

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે એને એમ જ જોઇએ. એ દામોદરદાસ તથા તેમની સ્ત્રી એ બેઉ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી તેમની વાર્તાનો પાર નહીં. તે ક્યાં સુધી કહીએ?

ભાવપ્રકાશ—પછી દામોદરદાસની દેહ છુટી. ત્યારે સ્ત્રીએ દેહ સંતાડી એ માટે રાખી કે પુત્ર મ્લેચ્છ છે. સઘળી વસ્તુ શ્રીજીની છે તે લઇ જશે. તેથી નાવ ભરીને બધી વસ્તુ શ્રીઆચાર્યજીને ત્યાં મોકલાવી. જ્યારે કોસ ૪૦ નાવ ગઇ ત્યારે સ્ત્રીએ જાહેર કર્યું. (દામોદરદાસના) શ્વસુર આદિ જ્ઞાતિના બધાએ દામોદરદાસની દેહનો સંસ્કાર કર્યો. પછી બેટા દોડીને આવ્યો તે જુએ તો માટીનો કરવો જલથી ભર્યો છે, બીજું કંઇ નથી. જ્યારે ખબર મળી ત્યારે નાવ લઇને દોડ્યો. પરંતુ મળી નહીં. ત્યારે માથું પીટી રહ્યો. એમાં એ જતાવ્યું, કે લૌકિક થઇને અલૌકિક વસ્તુ લેવાનો ઉપાય કરે તો દુઃખ જ પામે. પરંતુ હાથ લાગે નહીં. અને (દામોદરદાસના) શ્વસુરે કહ્યું. કંઇ રાખ્યું નહીં. હવે તૂ શું ખાઇશ? એ લૌકિક પૂછ્યું. ત્યારે સ્ત્રીએ અલૌકિક વાત કહી. કે હવે તમે દેશો તે ખાઇશ. આ સમયે ક્ષત્રી લોકોમાં દે છે તેનાથી નિર્વાહ કરીશ. તેનો અર્થ એ, કે શ્રીઠાકુરજી

अलौकिक वस्तु के संग गई। सेवा बिना मैं लौकिक हों। सो लौकिक सों निर्वाह करूंगी। या प्रकार स्त्री ने हू देह छोड़ि दियो। क्रिया-कर्म सब दामोदरदास के संग भयो।

❋ लौंड़ी की वार्ता ❋

और वह लौंड़ी बड़ी भगवदीय हती। ताकी वार्ता नाहीं लिखी। सो याते श्रीजमुनाजी की सखी है। लीला में इनको नाम कृष्णावेसनि है। सदा कृष्ण के स्वरूप को आवेस रहतो। सो द्वापर में विदुरजी की स्त्री यह लौंड़ी हती। सो श्रीठाकुरजी में अत्यंत स्नेह। विदुरजी के घर बिना बुलाये जाते। सो अब दामोदरदास के यहां आई। सो लौंड़ी दामोदरदास के ब्याह में आई। याकों पुष्टिसंबंध भयो। मानसी में मगन रहती।

एक दिना दामोदरदास (के) सेवा करत में मन में आई, जो-नकास में जाइ घोड़ा खरीदिये। ताही समय एक वैष्णव दामोदरदास कों मिलन कों आयो। तब लौंड़ी ने कही, नकास में घोड़ा खरीदन गये हैं। तब वह वैष्णव चल्यो गयो। पाछें यह बात काहू ने दामोदरदास सों कही, जो-तुम सेवा में हते (तब) लौंड़ी ने ऐसे कही। तब दामोदरदास लौंड़ी सों पूछी। तब लौंड़ीने

પધાર્યા, તેથી સેવા વિના ઘરની વસ્તુ કેમ લેઉ ? અલૌકિક વસ્તુના સંગ ગઇ. સેવા વિના (હવે) હું લૌકિક છે. તે લૌકિકથી નિર્વાહ કરીશ. આ પ્રકારે સ્ત્રીએ પણ દેહ છોડી દીધો. ક્રિયા કર્મ બધું દામોદરદાસની સાથે થયું.

❋ લુંડીની વાર્તા ❋

અને તે લુંડી બહુ ભગવદીય હતી. તેની વાર્તા નથી લખી તે એ માટે કે (તે) શ્રીયમુનાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ 'કૃષ્ણાવેશની' છે. સદા કૃષ્ણના સ્વરૂપનો આવેશ રહેતો. દ્વાપરમાં વિદુરજીની સ્ત્રી આ લુંડી હતી. તે શ્રીઠાકુરજીમાં અત્યંત સ્નેહ. વિદુરજીના ઘર વિના બુલાયે (શ્રીઠાકુરજી) જતા. તે હવે દામોદર-દાસને ત્યાં આવી. તે લુંડી દામોદરદાસના લગ્નમાં આવી. એને પુષ્ટિસંબંધ થયો. માનસીમાં મગન રહેતી.

એક દિવસે સેવા કરતા દામોદરદાસના મનમાં આવ્યું, કે નકાશમાં (ગુજ-રીમાં)જઇ ઘોડા ખરીદીએ. તેજ સમયે એક વૈષ્ણવ દામોદરદાસને મળવાને આવ્યો. ત્યારે લુંડીએ કહ્યું, નકાશમાં ઘોડા ખરીદવા ગયા છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ચાલ્યો ગયો. પછી એ વાત કોઇએ દામોદરદાસને કહી, કે તમે સેવામાં હતા ત્યારે લુંડીએ એમ

कही, तिहारो मन वा समय कहां हतो ? जहां मन तहां देह जानियो । तब दामोदरदास चुप होइ रहे ।

सो जब नाव में सगरी सामग्री धरी । तामें सामग्री सदृश लोंड़ी हू है । सो वह नाव पर श्रीद्वारकानाथजी के संग गई । तब श्रीआचार्यजी सों वैष्णव ने आइ कही, महाराज! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधारे हैं। ता समें श्रीगोपीनाथजी ठाड़े हते । (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधारे (हैं)। तब श्रीआचार्यजी कहे, वैभव ठाकुर को देखि के तिहारो मन प्रसन्न भयो है ? (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे, तिहारो कहाइके श्रीठाकुरजी की वस्तु में अपनो मन करेगो ताको निरमूल नास जायगो । तब श्रीआचार्यजी कहे, हमारो मारग तो ऐसोई है । सो द्रव्य तें कछुक गोपीनाथजी प्रसन्न भये हते। सो एक पुत्र भयो । परंतु वंस नाहीं चल्यो । पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णव सों आज्ञा किये । सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराइ देउ । श्रीद्वारकानाथजी कों हमारे घर पधराई लावो । तब वह लोंड़ी हू सामग्री रूप है । सो देह सहित श्रीजमुनाजी पास चली गई । सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराई । श्रीद्वारकानाथजी श्री-

---

કહ્યું. ત્યારે દામોદરદાસે લુંડીને પૂછયું. ત્યારે લુંડીએ કહ્યું, તમારૂં મન તે સમયે ક્યાં હતું ? જ્યાં મન ત્યાં દેહ જાણજો. ત્યારે દામોદરદાસ ચુપ થઈ રહ્યા.

જ્યારે નાવમાં સઘળી સામગ્રી ધરી, તેમાં સામગ્રી સદૃશ (સમાન) લુંડી પણ છે. તે નાવ ઉપર શ્રીદ્વારકાનાથજીની સાથે ગઇ. શ્રીઆચાર્યજીને વૈષ્ણવે આવીને કહ્યું, મહારાજ ! શ્રીદ્વારકાનાથજી વૈભવ સહિત પધાર્યા છે. તે સમયે શ્રીગોપીનાથજી ઉભા હતા. (ત્યારે) શ્રીગોપીનાથજી કહે, લક્ષ્મી સહિત નારાયણ પધાર્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ઠાકુરનો વૈભવ જોઇને તારૂં મન પ્રસન્ન થયું છે ? (ત્યારે) શ્રીગોપીનાથજી કહે, તમ્હારો કહેવાઇને શ્રીઠાકુરજીની વસ્તુમાં પોતાનું મન કરશે તેનો નિર્મૂલ નાશ જશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારો માર્ગ તો એવો જ છે. તે, દ્રવ્યથી કંઇક શ્રીગોપીનાથજી પ્રસન્ન થયા હતા. તે, એક પુત્ર થયો પરંતુ વંશ ન ચાલ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ વૈષ્ણવોને આજ્ઞા કરી, સઘળી સામગ્રી શ્રીજમનાજીમાં પધરાવી દો. શ્રીદ્વારકાનાથજીને અમારા ઘરે પધરાવી લાવો. ત્યારે તે લુંડી પણ સામગ્રી રૂપ છે. તે દેહ સહિત શ્રીજમનાજીની પાસે ચાલી ગઇ. સઘળી સામગ્રી શ્રીજમનાજીમાં પધરાવી. શ્રીદ્વારકાનાથજી શ્રીઆચાર્યજીના ઘરે બિરાજ્યા. આ લુંડીની

अलौकिक वस्तु के संग गई। सेवा बिना मैं लौकिक हों। सो लौकिक सों निर्वाह करूंगी। या प्रकार स्त्री ने हू देह छोड़ि दियो। क्रिया-कर्म सब दामोदरदास के संग भयो।

लौंड़ी की वार्ता

और वह लौंड़ी बड़ी भगवदीय हती। ताकी वार्ता नाहीं लिखी। सो याते श्रीजमुनाजी की सखी है। लीला में इनको नाम कृष्णावेसनि है। सदा कृष्ण के स्वरूप को आवेस रहतो। सो द्वापर में विदुरजी की स्त्री यह लौंड़ी हती। सो श्रीठाकुरजी में अत्यंत स्नेह। विदुरजी के घर बिना बुलाये जाते। सो अब दामोदरदास के यहां आई। सो लौंड़ी दामोदरदास के ब्याह में आई। याकों पुष्टिसंबंध भयो। मानसी में मगन रहती।

एक दिना दामोदरदास (के) सेवा करत में मन में आई, जो-नकास में जाइ घोड़ा खरीदिये। ताही समय एक वैष्णव दामोदरदास कों मिलन कों आयो। तब लौंड़ी ने कही, नकास में घोड़ा खरीदन गये हैं। तब वह वैष्णव चल्यो गयो। पाछें यह बात काहू ने दामोदरदास सों कही, जो-तुम सेवा में हते (तब) लौंड़ी ने ऐसे कही। तब दामोदरदास लौंड़ी सों पूछी। तब लौंड़ीने

પધાર્યા, તેથી સેવા વિના ઘરની વસ્તુ કેમ લેઉ ? અલૌકિક વસ્તુના સંગ ગઇ. સેવા વિના (હવે) હું લૌકિક છે. તે લૌકિકથી નિર્વાહ કરીશ. આ પ્રકારે સ્ત્રીએ પણ દેહ છોડી દીધો. ક્રિયા કર્મ બધું દામોદરદાસની સાથે થયુ.

લુંડીની વાર્તા

અને તે લુંડી બહુ ભગવદીય હતી. તેની વાર્તા નથી લખી તે એ માટે કે (તે) શ્રીયમુનાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ 'કૃષ્ણાવેશની' છે. સદા કૃષ્ણના સ્વરૂપનો આવેશ રહેતો. દ્વાપરમાં વિદુરજીની સ્ત્રી આ લુડી હતી. તે શ્રીઠાકુરજીમાં અત્યંત સ્નેહ. વિદુરજીના ઘર વિના બુલાયે (શ્રીઠાકુરજી) જતા. તે હવે દામોદરદાસને ત્યાં આવી. તે લુંડી દામોદરદાસના લગ્નમાં આવી. એને પુષ્ટિસંબંધ થયો. માનસીમાં મગન રહેતી.

એક દિવસે સેવા કરતા દામોદરદાસના મનમાં આવ્યું, કે નકાશમાં (ગુજરીમાં) જઇ ઘોડા ખરીદીએ. તેજ સમયે એક વૈષ્ણવ દામોદરદાસને મળવાને આવ્યો. ત્યારે લુડીએ કહ્યું, નકાશમાં ઘોડા ખરીદવા ગયા છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ચાલ્યો ગયો. પછી એ વાત કોઇએ દામોદરદાસને કહી, કે તમે સેવામાં હતા ત્યારે લુડીએ એમ

कही, तिहारो मन वा समय कहां हतो ? जहां मन तहां देह जानियो । तब दामोदरदास चुप होइ रहे।

सो जब नाव में सगरी सामग्री धरी। तामें सामग्री सदृश लोंड़ी हू है। सो वह नाव पर श्रीद्वारकानाथजी के संग गई। तब श्रीआचार्यजी सों वैष्णव ने आइ कही, महाराज! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधारे हैं। ता समें श्रीगोपीनाथजी ठाड़े हते। (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधारे (हैं)। तब श्रीआचार्यजी कहे, वैभव ठाकुर को देखि के तिहारो मन प्रसन्न भयो है ? (तब) श्रीगोपीनाथजी कहे, तिहारो कहाइके श्रीठाकुरजी की वस्तु में अपनो मन करेगो ताको, निरमूल नास जायगो। तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारो मारग तो ऐसोई है। सो द्रव्य तें कछुक गोपीनाथजी प्रसन्न भये हते। सो एक पुत्र भयो। परंतु वंस नाहीं चल्यो। पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णव सों आज्ञा किये। सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराइ देउ। श्रीद्वारकानाथजी कों हमारे घर पधराई लावो। तब वह लोंड़ी हू सामग्री रूप है। सो देह सहित श्रीजमुनाजी पास चली गई। सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराई। श्रीद्वारकानाथजी श्री-

---

કહ્યું. ત્યારે દામોદરદાસે લુંડીને પૂછ્યું. ત્યારે લુંડીએ કહ્યું, તમારું મન તે સમયે ક્યાં હતું ? જ્યાં મન ત્યાં દેહ જાણજો. ત્યારે દામોદરદાસ ચુપ થઈ રહ્યા.

જ્યારે નાવમાં સઘળી સામગ્રી ધરી, તેમાં સામગ્રી સદૃશ (સમાન) લુંડી પણ છે. તે નાવ ઉપર શ્રીદ્વારકાનાથજીની સાથે ગઇ. શ્રીઆચાર્યજીને વૈષ્ણવે આવીને કહ્યું, મહારાજ! શ્રીદ્વારકાનાથજી વૈભવ સહિત પધાર્યા છે. તે સમયે શ્રીગોપીનાથજી ઉભા હતા. (ત્યારે) શ્રીગોપીનાથજી કહે, લક્ષ્મી સહિત નારાયણ પધાર્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ઠાકુરનો વૈભવ જોઇને તારું મન પ્રસન્ન થયું છે? (ત્યારે) શ્રીગોપીનાથજી કહે, તમ્હારો કહેવાઇને શ્રીઠાકુરજીની વસ્તુમાં પોતાનું મન કરશે તેનો નિર્મૂલ નાશ જશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારો માર્ગ તો એવો જ છે. તે, દ્રવ્યથી કંઇક શ્રીગોપીનાથજી પ્રસન્ન થયા હતા. તે, એક પુત્ર થયો પરંતુ વંશ ન ચાલ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ વૈષ્ણવોને આજ્ઞા કરી, સઘળી સામગ્રી શ્રીજમનાજીમાં પધરાવી દો. શ્રીદ્વારકાનાથજીને અમારા ઘરે પધરાવી લાવો. ત્યારે તે લુંડી પણ સામગ્રી રૂપ છે, તે દેહ સહિત શ્રીજમનાજીની પાસે ચાલી ગઇ. સઘળી સામગ્રી શ્રીજમનાજીમાં પધરાવી. શ્રીદ્વારકાનાથજી શ્રીઆચાર્યજીના ઘરે બિરાજ્યા. આ લુંડીની

आचार्यजी के घर बिराजे। यह लौंड़ी की अलौकिक बात हती। सो लोगन में विरुद्ध सी लागी। तातें श्रीगोकुलनाथजी प्रकास नाहीं किये। सामग्री रूप कहें। पाछें काहू वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, महाराज! सामग्री तो दामोदरदास की स्त्री वैष्णव ने पठाई। सो आप अंगीकारि क्यों नाहीं किये? तब श्रीआचार्यजी कहे, जो–बेटा म्लेच्छ है। सुनके आवे झगरो करे। द्रव्य दुःख को मूल है। दामोदरदास की स्त्री ने पठायो। श्रीमहारानीजी (कों) अंगीकार हू करायो। लौकिक झगरो हू मिटायो। पाछें काहू वैष्णव नें, स्त्री ने हू देह छोड़ी इनकी बात कही। तब श्रीआचार्यजी कहे स्त्री पुरुष भले वैष्णव टेक के हते।

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक पद्मनाभदास कन्नौजिया ब्राह्मन, कनौज के बासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—**सो प्रथम पद्मनाभदास व्यासासन बैठते। सो कन्नौज में आप अपने घर कथा कहते। ऊंचे आसन बैठते। काहूके घर जानो न परतो। वृत्ति घर बैठे चली आवती। या भांति रहते। सो एक समय श्रीआचार्यजी आप कन्नौज पधारे। तब पद्मनाभदास दरसन कों आये। तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी**

અલૌકિક વાર્તા હતી. તે લોકોમાં વિરુદ્ધ જેવી લાગી તેથી શ્રીગોકુલનાથજીએ પ્રકાશ ન કર્યો, સામગ્રી રૂપ કહે. પછી કોઇ વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! સામગ્રી તો દામોદરદાસની સ્ત્રી વૈષ્ણવે મોકલી તે આપ અંગીકાર કેમ ન કરી? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે કે બેટા મ્લેચ્છ છે. સાંભળીને આવે તો ઝગડો કરે. દ્રવ્ય દુઃખનું મૂલ છે. દામોદરદાસની સ્ત્રીએ મોકલ્યું શ્રીમહારાણીજી (ને) અંગીકાર પણ કરાવ્યું. લૌકિક ઝગડો પણ મટાવ્યો પછી કોઇ વૈષ્ણવે સ્ત્રીએ પણ દેહ છોડી એની વાત કહી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સ્ત્રી પુરુષ સારાં વૈષ્ણવ ટેકનાં હતાં.

⁂ ⁂ ⁂

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક પદ્મનાભદાસ કન્નૌજિયા બ્રાહ્મણ,-કન્નૌજમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા પ્રસંગ-૧—તે પદ્મનાભદાસ પ્રથમ વ્યાસાસને બેસતા. તે કન્નૌજમાં પોતે પોતાના ઘરે કથા કહેતા. ઉંચા આસને બેસતા. કોઇના ઘર જવું ન પડતું. વૃતિ ઘર બેઠાં ચાલી આવતી. એ રીતે રહેતા. તે એક સમય શ્રીઆચાર્યજી આપ કન્નૌજ પધાર્યા. ત્યારે પદ્મનાભદાસ દર્શને આવ્યા. ત્યારે પદ્મનાભદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહા-

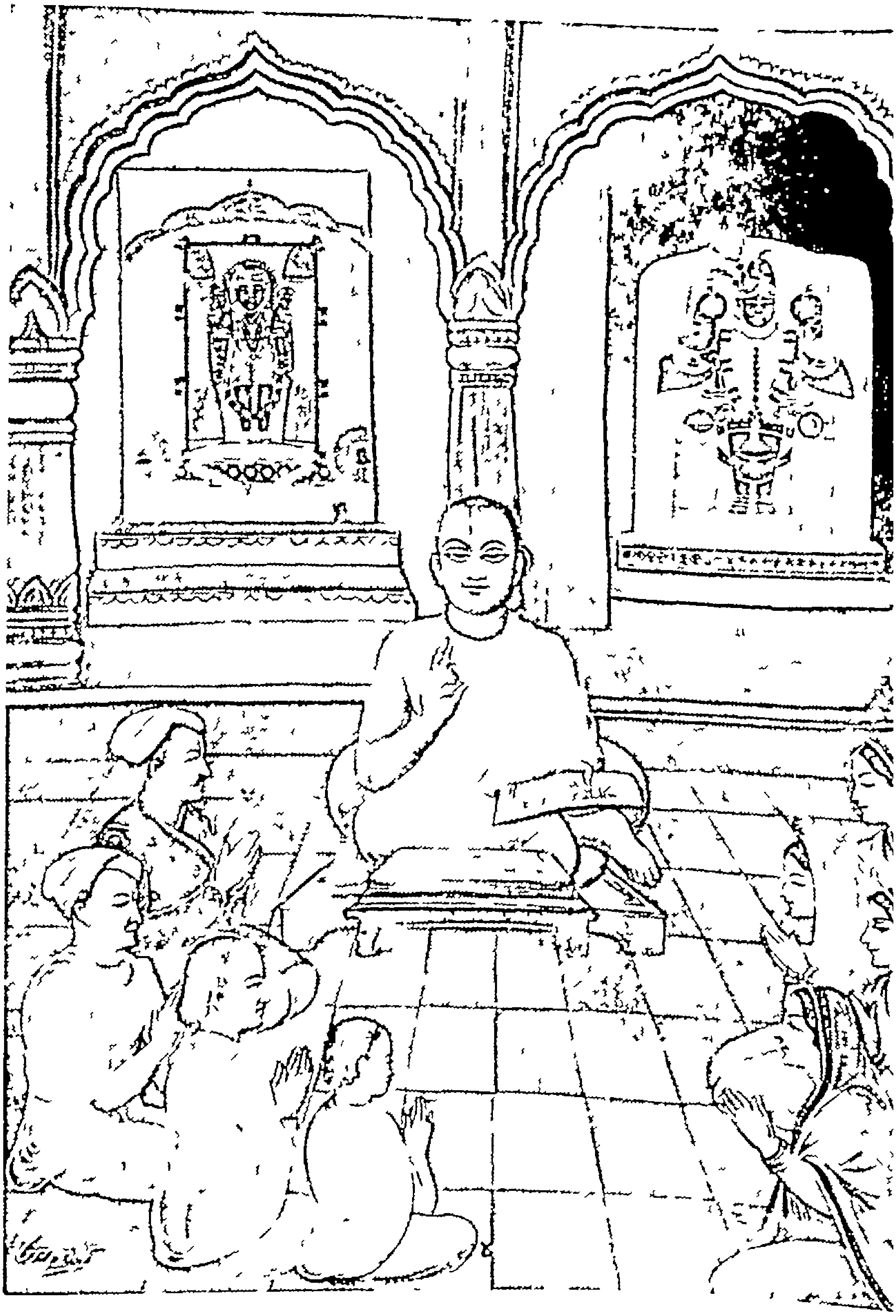

दामोदरदास दीवान संभलवाले का घर, कन्नौज.

बाई ओर क्रमश: —

१ दामोदरदास, संभलवाले। २ पुरुषोत्तमदास महेरा।
३ पद्मनाभदास। ४ रघुनाथदास।

दाई ओर क्रमश —

५ दामोदरदास की स्त्री। ६ तुलसा। ७. पारवती। ८ लोडी।

हाप्रभु के श्रीमुखतें भगवद्वार्ता को प्रसंग सुन्यो। तब जानी,
ो-ए साक्षात ईश्वर हैं। श्री पूर्ण पुरुषोत्तम यही है। सो पुरुषोत्तम
ानि के पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी की सरनि आये। नाम पायो।
ाछे समर्पन करवायो। पाछे उत्थापन के समे श्रीआचार्यजी ने
ोथी खोली। तहां दामोदरदास संभलवारे के घर विराजे हते। सो
ाझनाभ अपने घर तें आये, श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करिके बैठे।
ाब आचार्यजी नें निबंध को श्लोक कह्यो, सो श्लोक—

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम्।
वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ १ ॥
तदभावे यथैव स्यात् तथा निर्वाहमाचरेत् ।
त्रयाणां येन केनापि भजन् कृष्णमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

यह श्लोक पढ़े। सो पद्मनाभदासजी ने अंजुली भरि के
ंकल्प कियो, जो–कथा कहि के वृत्ति न करूंगो। ऐसे श्रीआचार्यजी
ं आगे संकल्प कियो। तब श्रीआचार्यजी कहे, जो–श्रीभागवत
ृत्यर्थ न कहनो और तो तुम्हारि वृत्ति है तुम ब्राह्मन हो। तातें
ौर महाभारत इत्यादिक तो कहनो। तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो–
हाराज! अब तो संकल्प कियौ सो तौ कियौ। तातें कछू न कहनो।
ब श्रीआचार्यजीनें कही, जो–तुम तो गृहस्थ हो। कौन भांति सों
ेर्वाह करोगे? तब पद्मनाभ नें श्रीआचार्यजी सों कह्यौ, जो–

ભુના શ્રીમુખથી ભગવદ્વાર્તાનો પ્રસંગ સાંભળ્યો. ત્યારે જાણ્યું કે એ સાક્ષાત્
ધર છે. શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ એજ છે. તે પુરુષોત્તમ જાણીને પદ્મનાભદાસ શ્રીઆચા-
જીને શરણે આવ્યા. નામ પામ્યા પછી સમર્પણ કર્યું. પછી ઉત્થાપનના સમયે
ીઆચાર્યજીએ પોથી ખોલી. ત્યાં દામોદરદાસ સંભલવાળાના ઘર (આપ) બિરા-
યા હતા. તે પદ્મનાભદાસ પોતાના ઘરથી આવ્યા. (પછી) શ્રીઆચાર્યજીને દંડ-
ત્ કરીને બેઠા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નિબંધનો શ્લોક કહ્યો. તે શ્લોક—

પઠનીયં પ્રયત્નેન સર્વહેતુવિવર્જિતમ્..(ઉપર જુઓ)

એ શ્લોક બોલ્યા. (ત્યારે) પદ્મનાભદાસજીએ ખોબો ભરીને સંકલ્પ કર્યો.
કથા કહીને વૃત્તિ નહીં કરૂં. એમ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ સંકલ્પ કર્યો.
ારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે શ્રીભાગવત વૃત્ત્યર્થ ન કહેવું, બીજું તો તમારી વૃત્તિ
, તમે બ્રાહ્મણ છો. તેથી બીજું મહાભારત ઇત્યાદિ તો કહેવું. ત્યારે પદ્મનાભદાસે
ું કે, મહારાજ! હવે તો સંકલ્પ કર્યો તે તો કર્યો. તેથી કંઇ ન કહેવું. ત્યારે
ીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તમે તો ગૃહસ્થ છો. કઇ રીતે નિર્વાહ કરશો? ત્યારે પદ્મનાભ-

श्रीभागवत वृत्त्यर्थ न कहूँगो । और जिजमान के घर वृत्ति कर लाऊंगो। तातें निर्वाह करूंगो। पाछे जिजमान के घर वृत्त्यर्थ गये। तिननें बहुत आदर कियो । तब पद्मनाभदास के मनमें ग्लानी आई। जो–पहिले तो कबहू भिक्षा करी नाहीं। अब वैष्णव भये पाछे भिक्षा मांगन निकस्यो । सो उचित नाहीं । पहले तो उपवीत गरे में हतो। ताकों तो उचित है, जो–भिक्षावृत्ति करें। परि अब तो गरे में माला पहरी । ताकों तो यह भिक्षा–वृत्ति उचित नाहीं । तब फेरि संकल्प कियो, जो–भिक्षावृत्ति न करूँगो । तब फेरि श्रीआचार्यजीने पूछी, जो–अब निर्वाह कैसे करोगे ? तब पद्मनाभदास ने कही, जो–वैश्य-वृत्ति करि निर्वाह करूँगो । पाछे कोड़ी बेचते, लकड़ी लै आवते । परि और बात न विचारी । देहादि पर्यंत सेवा कीनी । ऐसे टेकी ।

भावप्रकाश—सो पद्मनाभदास चंपकलता सखी है, श्रीस्वामिनीजी की । जब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीसों बिनती करी, जो–हम ब्राह्मन हैं। भिक्षावृत्ति करेंगे । यह टेक देखि श्रीआचार्यजी वहोत प्रसन्न भये । (और कह्यो) जो–वैष्णव कों टेक ही बड़ो धर्म है ।

पाछें पद्मनाभदास के सगरे कुटुम्ब कों (जब) अंगीकार किये तब पद्म-

---

દાસે શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે શ્રીભાગવત વૃત્તિ અર્થે નહી કહું અને જજમાનને ત્યાંથી વૃત્તિ કરી લાવીશ. તેનાથી નિર્વાહ કરીશ. પછી જજમાનને ત્યાં વૃત્ત્યર્થ ગયા. તેણે બહુ જ આદર કર્યો. ત્યારે પદ્મનાભદાસના મનમાં ગ્લાની આવી કે પહેલાં તો ક્યારેય ભિક્ષા કરી નથી. હવે વૈષ્ણવ થયા પછી ભિક્ષા માંગવા નિકળ્યો. તે ઉચિત નહીં. પહેલાં તો જનોઇ ગળામાં હતી તેને તો ઉચિત છે જે ભિક્ષાવૃત્તિ કરે. પરંતુ હવે તો ગળામાં માળા પહેરી. તેને તો આ ભિક્ષાવૃત્તિ ઉચિત નથી. ત્યારે ફરી સંકલ્પ કર્યો કે, ભિક્ષાવૃત્તિ નહીં કરૂં. ત્યારે ફરી શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, કે હવે નિર્વાહ કેવી રીતે કરશો ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે વૈશ્યવૃત્તિ કરી નિર્વાહ કરીશ. પછી કોડી વેચતા, લાકડાં લે આવતા. પરંતુ બીજી વાત ન વિચારી. દેહાદિ પર્યંત સેવા કરી. એવા ટેકી (હતા).

ભાવપ્રકાશ—પદ્મનાભદાસ ચંપકલતા સખી છે, શ્રીસ્વામિનીજીની. જ્યારે પદ્મનાભદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી કે અમે બ્રાહ્મણ છીએ, ભિક્ષાવૃત્તિ કરીશું. એ ટેક જોઇ શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. (અને કહ્યુ) કે વૈષ્ણવને ટેક જ મોટો ધર્મ છે. પછી પદ્મનાભદાસના સઘળા કુટુંબને (જ્યારે) અંગીકાર કર્યું

नाभदास ने कही, महाराज ! हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहे भगवत्सेवा करो । तब पद्मनाभदास ने कही, महाराज ! मैंने तो पुराण महाभारत आदि शास्त्र वहौत देखे हैं । सो मोकों श्रीठाकुरजी के स्वरूप में विश्वास आवनो कठिन है । जो-स्वरूप को माहात्म्य प्रगट होत ही देखूं तब मेरो विश्वास दृढ़ होई । काहेतें विश्वास ही फलरूप है । तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग व्रज चलो । तुमकों (माहात्म्य) दिखावेंगे । तब पद्मनाभदास व्रजकूं चले । सो महावन के पास रमनस्थल है । तहां श्रीजमुनाजी के किनारे (सामने पार कर्णावल में) श्रीआचार्यजी विराजे हते । प्रातःकाल को समय है और श्रीजमुनाजी को कराड़ो टूट्यो । तामें ते एक भगवत्स्वरूप जैसे ताडको वृक्ष (होय) इतने वडे, श्रीआचार्यजी के आगें आइ कहें, मेरी सेवा करो । तब श्रीआचार्यजी कहे, महाराज ! या काल में वैष्णव की सामर्थ्य नाहीं जो-आपकी सेवा-शृंगार करे । सेवा कराइवे को मनोरथ होइ तो भक्तन सों पधराए जाय (एसे) गोदसे वैठो । तब सेवा होई । तब छोटो स्वरूप करि श्रीआचार्यजी के चिवुकसों मस्तक ठाकुरजी को लग्यो इतने वड़े भये । सो स्वरूप श्रीयमुनाजी, गिरिराज, सखा, सखी, गांऊ, कुंज, चौरासी कोस सगरो स्वरूपात्मक चिह्न सहित है । तातें श्रीआचार्यजी

ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, મહારાજ ! અમને શું કર્તવ્ય છે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, ભગવત્સેવા કરો. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મે તો પુરાણ, મહાભારત આદિ શાસ્ત્ર બહુ જોયાં છે. તે મને શ્રીઠાકુરજીના સ્વરૂપમાં વિશ્વાસ આવવો કઠિણ છે. જો સ્વરૂપનું માહાત્મ્ય પ્રકટ થતાં જ જોઉ (ત્યારે) મારો વિશ્વાસ દૃઢ થાય. વિશ્વાસ જ ફલરૂપ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારા સંગે વ્રજમાં ચાલો. તમને (માહાત્મ્ય) દેખાડીશું. ત્યારે પદ્મનાભદાસ વ્રજમાં ચાલ્યા. તે મહાવનની પાસે રમણસ્થલ છે ત્યાં શ્રીજમનાજીના કિનારે (સામે પાર કર્ણાવલમાં) શ્રીઆચાર્યજી બિરાજ્યા હતા. પ્રાતઃકાલનો સમય છે. અને શ્રીજમનાજીનો કરાડો તૂટયો. તેમાંથી એક ભગવત્સ્વરૂપ જેવુ તાડનું વૃક્ષ હોય એટલુ મોટુ શ્રીઆચાર્યજી આગળ આવીને કહે, મારી સેવા કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, મહારાજ ! આ કાલમાં વૈષ્ણવોની સામર્થ્ય નહીં કે આપની સેવા–શૃંગાર કરે. સેવા કરાવવાનો મનોરથ હોય તો ભક્તોથી પધરાવ્યા જાય (એમ) ગોદ જેવા (એટલા ઉંચા થઇ) બેસો. ત્યારે સેવા થાય. ત્યારે નાનું સ્વરૂપ કરી શ્રીઆચાર્યજીના ચિબુકથી મસ્તક શ્રીઠાકુરજીનું લાગ્યું એટલા મોટા થયા. તે સ્વરૂપ શ્રીયમુનાજી, ગિરિરાજ, સખા, સખી, ગામ, કુંજ, ચૌરાશી કોસ (વ્રજ) સઘળું સ્વરૂપાત્મક ચિહ્ન સહિત છે. તેથી

श्रीमथुरानाथजी नाम करे। (और) पद्मनाभदास कों कहै। क्यों तेरो मनोरथ भयो? तब पद्मनाभदास प्रेममें विह्वल होइ कहें। महाराज! आपु सारीखे मेरे धनी हो। आपकी कृपातें कहा न होई? तब श्रीआचार्यजी कहे, "यथा लाभ संतोष" करि भावपूर्वक सेवा करियो। तब आज्ञा मांगि श्रीमथुरानाथजी कों कन्नौज में अपने घर पधराइ लाये। प्रीतिपूर्वक सेवा करन लागे। (पहले) भिक्षावृत्ति करतें। तब पद्मनाभदास के मन में आई, जो–मैं वैष्णव कहाई के भीख मांगो! श्रीआचार्यजी 'यथा लाभ संतोष' सों कहे हैं। और उत्तम पक्ष यही है। "अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः" ॥ २ ॥ या प्रकार अव्यावृत्त को नेम ले सेवा मन लगाई के करन लागे।

वार्ता–प्रसंग २—**एक समे श्रीआचार्यजी प्रयाग में हते। तहां पद्मनाभदास पास हे। तब रात्र प्रहर एक गई हती। तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो–श्रीअक्काजी पार है। सो पार तें पधराय लाओ। सो इतनो सुनि कें उठि चले। तब पांच सात वैष्णव उहां सोये हते। सो कहन लागे, जो–ब्राह्मण बावरो भयो है। या समे कहां जायगो? नाव सब बँधी हैं। घटवारे सब घर**

શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમથુરાનાથજી નામ પાડ્યું. (અને) પદ્મનાભદાસને કહે, કેમ તારો મનોરથ (પૂરો) થયો? ત્યારે પદ્મનાભદાસ પ્રેમથી વિહ્વલ થઇને કહે, મહારાજ! આપ જેવા મારા ધણી છો, આપની કૃપાથી શું ન થાય? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, 'યથા લાભ સંતોષ' કરી ભાવપૂર્વક સેવા કરજો. ત્યારે આજ્ઞા માંગી શ્રીમથુરાનાથજીને કન્નોજમાં પોતાના ઘરે પધરાવી લાવ્યા. (પહેલા) ભિક્ષાવૃત્તિ કરતા ત્યારે પદ્મનાભદાસના મનમાં આવ્યું કે, હું વૈષ્ણવ કહેવાઇને ભીખ માંગું? શ્રીઆચાર્યજી 'યથા લાભ સંતોષ' થી કહે છે, અને ઉત્તમ પક્ષ એજ છે 'અવ્યાવૃત્તો ભજેત્ કૃષ્ણં પૂજયા શ્રવણાદિભિઃ' આ પ્રકારે અવ્યાવૃત્તનો નેમ લઇ સેવા મન લગાવીને કરવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—એક સમયે શ્રીઆચાર્યજી પ્રયાગમાં હતા. ત્યાં પદ્મનાભદાસ પાસે હતા. ત્યાં રાત્રિ પ્રહર એક ગઇ હતી. ત્યારે પદ્મનાભદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે શ્રીઅક્કાજી પાર છે તો પારથી પધરાવી લાવો. તે એટલું સાંભળીને (તરત) ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે પાંચ–સાત વૈષ્ણવો ત્યાં સોયા હતા. તે કહેવા લાગ્યા, કે બ્રાહ્મણ બાવરો થયો છે. આ સમયે ક્યાં જશે? નાવ બધી બાંધેલી છે. ઘાટવાળા બધા ઘર

गये हैं। तातें या बिरियां जायबे की नाहीं। परि याकों (पद्मनाभदास कों) श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की आज्ञा को विश्वास है। जो यह बात अवश्य होइगी। सो घाट ऊपर आये। तब इत उत देखन लागे। इतने में ही अकस्मात् एक लरिका एक डोंगी लेके आयो। तब वानें पद्मनाभदास सों पूछी, जो-तू पार जाइगो? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-हां, हां, जाऊँगो। सो उन पार उतार दीनों। पीछे फेरि पूछ्यो, जो-तू फेरि आवेगो? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-घड़ी दो में आऊंगो। तब उन लरिका नें कह्यो, जो-डोंगी राखत हों, बेग आईयो। पाछे अड़ेल में आइके श्रीअक्काजी कों पधराइ ल्याये। वाही डोंगी में बैठारि पार उतरे। तब, पाछें फेरि देखें तो डोंगी नाहीं। और लरिका हू नाहीं। पाछे श्रीअक्काजी कों पधराय के लाये। तब श्रीआचार्यजी पद्मनाभदास कों आज्ञा दीनी, जो-जाउ, सोय रहो। तब पद्मनाभदास जहां वैष्णव सब जाइ के सोये हते, तहां आये। तब वैष्णव पूछन लागे, जो-तुम कहा करि आये? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-ऐसे श्रीअक्काजी कों पधराय लायो हूं। तब सब वैष्णव नें कह्यो, जो-तुमने श्रीठाकुरजी कों श्रम बहुत करायो। पाछे उन वैष्णव नें (जब) श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! पद्मनाभदास ने श्रीठाकुरजी कों श्रम बहुत

ગયા છે. તેથી આ સમય જવાનો નથી. પરંતુ આમને (પદ્મનાભદાસને) (તો) શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની આજ્ઞાનો વિશ્વાસ છે, કે આ વાત અવશ્ય થશે. તે ઘાટ ઉપર આવ્યા. ત્યારે આમતેમ જોવા લાગ્યા. એટલામાં અકસ્માત્ એક બાલક એક ડાંગી (હોડી) લઇને આવ્યો. ત્યારે તેણે પદ્મનાભદાસને પૂછ્યું, કે તૂ પાર જઇશ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું કે હા! હા! જઇશ. તે એણે પાર ઉતારી દીધા. પછી ફરી પૂછ્યું, કે તૂ ફરી આવીશ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે ઘડી બેમાં આવીશ. ત્યારે તે બાલકે કહ્યું, કે ડાંગી રાખું છું; જલ્દી આવજે. પછી અડેલમાં આવીને શ્રીઅક્કાજીને પધરાવી લાવ્યા. તેજ ડાંગીમાં બેસાડીને પાર ઉતર્યા. ત્યારે પાછું ફરીને જુએ તો ડાંગી નથી, અને બાલક પણ નથી. પછી શ્રીઅક્કાજીને પધરાવીને લાવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પદ્મનાભદાસને આજ્ઞા આપી કે, જાવ સુઇ રહો. ત્યારે પદ્મનાભદાસ જ્યાં વૈષ્ણવ બધા જઇને સૂઇ રહ્યા હતા. ત્યાં આવ્યા. ત્યારે વૈષ્ણવ પૂછવા લાગ્યા, કે તમે શું કરી આવ્યા? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું કે, આવી રીતે શ્રીઅક્કાજીને પધરાવી લાવ્યો છું. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ કહ્યું, કે તમે શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ બહુ જ કરાવ્યો. પછી એ વૈષ્ણવોએ (જ્યારે) શ્રીઆચાર્યજીને

श्रीमथुरानाथजी नाम करे । (और) पद्मनाभदा
भयो ? तब पद्मनाभदास प्रेममें विह्वल होइ कहें ।
हो । आपकी कृपातें कहा न होई ? तब श्रीआ
करि भावपूर्वक सेवा करियो । तब आज्ञा मांगि
अपने घर पधराइ लाये । प्रीतिपूर्वक सेवा करन
तब पद्मनाभदास के मन में आई, जो–मैं वैष्ण
चार्यजी 'यथा लाभ संतोष' सों कहे हैं । और
भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः" ॥ २ ॥ या
मन लगाई के करन लागे ।

वार्ता–प्रसंग २—एक समे श्रीआ
पद्मनाभदास पास हे । तब रात्र प्रहर
दास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो–श्र
तें पधराय लाओ । सो इतनो सुनि कें
वैष्णव उहां सोये हते । सो कहन लागे
है । या समे कहां जायगो ? नाव सब

શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમથુરાનાથજી નામ પાડ્યું.
તારો મનોરથ (પૂરો) થયો ? ત્યારે પદ્મનાભદાસ
રાજ ! આપ જેવા મારા ધણી છો, આપની કૃપાથ
કહે, 'યથા લાભ સંતોષ' કરી ભાવપૂર્વક સેવ
રાનાથજીને કનોજમાં પોતાના ઘરે પધરાવી લા
ત્યારે પદ્મનાભદાસના મનમાં આવ્યું કે, હું વૈષ્ણ
ચાર્યજી 'યથા લાભ સંતોષ' થી કહે છે. અને
ભજેત્ કૃષ્ણં પૂજયા શ્રવણાદિભિઃ' આ પ્રકારે
લગાવીને કરવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—એક સમયે શ્રીઆચાર્યજી
પાસે હતા. ત્યાં રાત્રિ પ્રહર એક ગઇ હતી. ત્ય
કહ્યું, કે શ્રીઅક્કાજી પાર છે તો પારથી પધરાવી
ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે પાંચ–સાત વૈષ્ણવો ત્યાં સોયા
બાવરો થયો છે. આ સમયે ક્યાં જશે ? નાવ બ

रजी कों भोग समर्प्यो। इतने में ही पाछेतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो। तब पूछी, जो-श्रीआचार्यजी कहा करत हैं? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-भोजन करत होइँगे। तब व्यौपारी ने कह्यो, जो-हमारो माल सगरो लूटि गयो है। और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं! तब पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो-यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे। तातें आप सुने नहीं (ऐसें करनो)।

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये। तब पूछी, जो-साँच कहे। तेरो माल कितनो गयो है? तब उन व्यौपारी नें बतायो। तब वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये। ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी। पाछे वा साह ने कह्यो, जो-आज्ञा करो, कैसे पधारे हो? तब पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो-या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये। या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे। तब वा साह नें कही, जो-पद्मनाभदासजी! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ। खतपत्र की कहा बात है? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-पहिले तो खतपत्र लिखूंगो। और पाछे द्रव्य लेउंगो। विना खतपत्र लिखे तो मैं

રસોઇ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પ્યો. એટલામાં જ પાછળથી વેપારી રોતો પીટતો આવ્યો. ત્યારે પૂછ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી શું કરે છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે ભોજન કરતા હશે. ત્યારે વેપારીએ કહ્યું, કે અમારો માલ સઘળો લુટાઇ ગયો છે અને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કરે છે! ત્યારે પદ્મનાભદાસે મનમાં વિચાર્યું, કે આ વાત શ્રીઆચાર્યજી સાંભળશે તો ભોજન નહી કરે. તેથી આપ સાંભળે નહીં (એમ કરવું).

ત્યારે પદ્મનાભદાસ તે વેપારીની બાંહ પકડીને બહાર લઇ આવ્યા. ત્યારે પૂછ્યું, કે સાચું કહે, તારો માલ કેટલો ગયો છે? ત્યારે એ વેપારીએ બતાવ્યું એટલે તે વેપારીનો હાથ પકડીને પદ્મનાભદાસ એક શાહની દુકાને લઇ ગયા. તે શાહે પદ્મનાભદાસની બહુ જ આગતા સ્વાગતા કરી. પછી તે શાહે કહ્યું, કે આજ્ઞા કરો કેમ પધાર્યા છો? ત્યારે પદ્મનાભદાસે શાહને કહ્યું, કે આ વેપારીને આટલું દ્રવ્ય આપવું જોઇએ. એ દ્રવ્યનું ખતપત્ર વ્યાજ અમે લખી દઇશું. ત્યારે તે શાહે કહ્યું, કે પદ્મનાભદાસજી! તમને જેટલું જોઇએ તેટલું દ્રવ્ય લો. ખતપત્રની શી વાત છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે પહેલાં તો ખતપત્ર લખીશ અને પછી દ્રવ્ય લઇશ. વિના

करवायो। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, (जो) यह, जो–कछू भयो है, सो मेरी इच्छा सों भयो है। तातें तुम इन पद्मनाभदास सों कछु मति कहो।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–गुरु के कार्यार्थ प्रभु कों कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णव कों बाधक नाहीं। गुरु के प्रसन्न भये सब कार्य सिद्ध होइ। और उह रात्रि श्रीगुसांईजी के प्रागट्य के गर्भ–स्थिति को मुहूरत हतो। तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये। श्रीठाकुरजी डोंगी लाये। तातें यह जताए, जो–श्रीगुसांईजी के लिये सगरो कार्य करें यामें कहा कहनों? यामें श्रीगुसांईजी के स्वरूप की श्रीठाकुरजी तें अधिकता दिखाए। और पद्मनाभदास को पूरन विश्वास दिखाए। जो–श्रीआचार्यजी के बचन खाली कबहूँ न जाइ। सर्वथा कार्यसिद्ध होयगो।

वार्ता–प्रसंग ३—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोकुल तें अडेल कों जात हते। तब एक ब्यौपारी क्षत्री कछुक वस्तु लेके साथ में चल्यो। सो कन्नोज के उरे रह्यो। श्रीआचार्यजी तो कन्नोज बीच पधारे। ब्यौपारी पाछे रह्यो सो ताके ऊपर चोर परे। वस्तु सब लूटि लीनी। श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के श्रीठाकु-

કહ્યું, કે મહારાજ! પદ્મનાભદાસે શ્રીઠાકુરજીને બહુ જ શ્રમ કરાવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે આ જે કંઇ થયું છે તે મારી ઇચ્છાથી થયું છે. તેથી તમે આ પદ્મનાભદાસને કંઇ ન કહો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં આ સિદ્ધાન્ત થયો, કે ગુરુના કાર્યાર્થ પ્રભુને કષ્ટ (શ્રમ) કરાવે તો વૈષ્ણવને બાધક નથી. ગુરુના પ્રસન્ન થયે બધું કાર્ય સિદ્ધ થાય. અને તે રાત્રિ શ્રીગુસાંઇજીના પ્રાકટ્યના ગર્ભ–સ્થિતિનું મુહૂર્ત હતું. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા કરી. શ્રીઠાકુરજી ડોંગી લાવ્યા. તેથી એ જતાવ્યું કે, શ્રીગુસાંઇજીને માટે બધું કાર્ય (શ્રીઠાકુરજી) કરે તેમાં શું કહેવું? એમાં શ્રીગુસાંઇજીના સ્વરૂપની શ્રીઠાકુરજીથી અધિકતા દેખાડી. અને પદ્મનાભદાસનો પૂરણ વિશ્વાસ દેખાડ્યો, કે શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન ખાલી કદીયે ન જાય. સર્વથા કાર્ય સિદ્ધ થાય જ.

વાર્તા પ્રસંગ–૩—ફરી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીગોકુલથી અડેલ પધારતા હતા. ત્યારે એક વેપારી ક્ષત્રી કેટલીક વસ્તુ લઇને સાથમાં ચાલ્યો. તે કન્નોજની આ તરફ રહ્યો. શ્રીઆચાર્યજી તો કન્નોજના મહીં પધાર્યા. વેપારી પાછળ રહ્યો. તે એના ઉપર ચોર પડ્યા. વસ્તુ બધી લુંટી લીધી. શ્રીઆચાર્યજી આપે

रजी कों भोग समर्प्यो। इतने में ही पाछेतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो। तब पूछी, जो–श्रीआचार्यजी कहा करत हैं? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो–भोजन करत होइँगे। तब व्यौपारी ने कह्यो, जो–हमारो माल सगरो लूटि गयो है। और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं! तब पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो–यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे। तातें आप सुने नहीं (ऐसें करनो)।

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये। तब पूछी, जो–साँच कहे। तेरो माल कितनो गयो है? तब उन व्यौपारी नें बतायो। तब वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये। ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी। पाछे वा साह ने कह्यो, जो–आज्ञा करो, कैसे पधारे हो? तब पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो–या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये। या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे। तब वा साह नें कही, जो–पद्मनाभदासजी! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ। खतपत्र की कहा बात है? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो–पहिले तो खतपत्र लिखूंगो। और पाछे द्रव्य लेउंगो। विना खतपत्र लिखे तो मैं

રસોઇ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પ્યો. એટલામાં જ પાછળથી વેપારી રોતો પીટતો આવ્યો. ત્યારે પૂછયું, કે શ્રીઆચાર્યજી શું કરે છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે ભોજન કરતા હશે. ત્યારે વેપારીએ કહ્યું, કે અમારો માલ સઘળો લુટાઇ ગયો છે અને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કરે છે! ત્યારે પદ્મનાભદાસે મનમાં વિચાર્યું, કે આ વાત શ્રીઆચાર્યજી સાંભળશે તો ભોજન નહી કરે. તેથી આપ સાંભળે નહીં (એમ કરવું).

ત્યારે પદ્મનાભદાસ તે વેપારીની બાંહ પકડીને બહાર લઇ આવ્યા. ત્યારે પૂછયું, કે સાચું કહે, તારો માલ કેટલો ગયો છે? ત્યારે એ વેપારીએ બતાવ્યું એટલે તે વેપારીનો હાથ પકડીને પદ્મનાભદાસ એક શાહની દુકાને લઇ ગયા. તે શાહે પદ્મનાભદાસની બહુ જ આગતા સ્વાગતા કરી. પછી તે શાહે કહ્યું, કે આજ્ઞા કરો કેમ પધાર્યા છો? ત્યારે પદ્મનાભદાસે શાહને કહ્યું, કે આ વેપારીને આટલું દ્રવ્ય આપવું જોઇએ. એ દ્રવ્યનું ખતપત્ર વ્યાજ અમે લખી દઇશું. ત્યારે તે શાહે કહ્યું, કે પદ્મનાભદાસજી! તમને જેટલું જોઇએ તેટલું દ્રવ્ય લો. ખતપત્રની શી વાત છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે પહેલાં તો ખતપત્ર લખીશ અને પછી દ્રવ્ય લઇશ. વિના

करवायो। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, (जो) यह, जो-कछू भयो है, सो मेरी इच्छा सों भयो है। तातें तुम इन पद्मनाभदास सों कछु मति कहो।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-गुरु के कार्यार्थ प्रभु कों कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णव कों बाधक नाहीं। गुरु के प्रसन्न भये सब कार्य सिद्ध होइ। और उह रात्रि श्रीगुसांईजी के प्रागट्य के गर्भ-स्थिति को मुहूरत हतो। तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये। श्रीठाकुरजी डोंगी लाये। तातें यह जताए, जो-श्रीगुसांईजी के लिये सगरो कार्य करें यामें कहा कहनों? यामें श्रीगुसांईजी के स्वरूप की श्रीठाकुरजी तें अधिकता दिखाए। और पद्मनाभदास को पूरन विश्वास दिखाए। जो-श्रीआचार्यजी के बचन खाली कबहूँ न जाइ। सर्वथा कार्यसिद्ध होयगो।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोकुल तें अडेल कों जात हते। तब एक ब्यौपारी क्षत्री कछुक वस्तु लेके साथ में चल्यो। सो कन्नोज के उरे रह्यो। श्रीआचार्यजी तो कन्नोज बीच पधारे। ब्यौपारी पाछे रह्यो सो ताके ऊपर चोर परे। वस्तु सब लूटि लीनी। श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के श्रीठाकु-

કહ્યું, કે મહારાજ! પદ્મનાભદાસે શ્રીઠાકુરજીને બહુ જ શ્રમ કરાવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે આ જે કંઇ થયું છે તે મારી ઇચ્છાથી થયું છે. તેથી તમે આ પદ્મનાભદાસને કંઇ ન કહો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં આ સિદ્ધાન્ત થયો, કે ગુરુના કાર્યાર્થ પ્રભુને કષ્ટ (શ્રમ) કરાવે તો વૈષ્ણવને બાધક નથી. ગુરુના પ્રસન્ન થયે બધુ કાર્ય સિદ્ધ થાય. અને તે રાત્રિ શ્રીગુસાંઇજીના પ્રાકટયના ગર્ભ-સ્થિતિનું મુહૂર્ત હતું. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા કરી, શ્રીઠાકુરજી ડોંગી લાવ્યા. તેથી એ જતાવ્યું કે, શ્રીગુસાંઇજીને માટે બધું કાર્ય (શ્રીઠાકુરજી) કરે તેમાં શું કહેવું? એમાં શ્રીગુસાંઇજીના સ્વરૂપની શ્રીઠાકુરજીથી અધિકતા દેખાડી. અને પદ્મનાભદાસનો પૂરણ વિશ્વાસ દેખાડયો, કે શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન ખાલી કદીયે ન જાય. સર્વથા કાર્ય સિદ્ધ થાય જ.

વાર્તા પ્રસંગ-૩—ફરી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીગોકુલથી અડેલ પધારતા હતા. ત્યારે એક વેપારી ક્ષત્રી કેટલીક વસ્તુ લઇને સાથમાં ચાલ્યો. તે કનોજની આ તરફ રહ્યો. શ્રીઆચાર્યજી તો કનોજના મહીં પધાર્યા. વેપારી પાછળ રહ્યો. તે એના ઉપર ચોર પડ્યા. વસ્તુ બધી લુંટી લીધી. શ્રીઆચાર્યજી આપે

रजी कों भोग समर्प्यों। इतने में ही पाछेतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो। तब पूछी, जो–श्रीआचार्यजी कहा करत हैं? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो–भोजन करत होइँगे। तब व्यौपारी ने कह्यो, जो–हमारो माल सगरो लूटि गयो है। और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं! तब पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो–यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे। तातें आप सुने नहीं (ऐसें करनो)।

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये। तब पूछी, जो–साँच कहे। तेरो माल कितनो गयो है? तब उन व्यौपारी नें बतायो। तब वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये। ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी। पाछे वा साह ने कह्यो, जो–आज्ञा करो, कैसे पधारे हो? तब पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो–या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये। या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे। तब वा साह नें कही, जो–पद्मनाभदासजी! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ। खतपत्र की कहा बात है? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो–पहिले तो खतपत्र लिखूंगो। और पाछे द्रव्य लेउंगो। विना खतपत्र लिखे तो मैं

રસોઇ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પ્યો. એટલામાં જ પાછળથી વેપારી રોતો પીટતો આવ્યો. ત્યારે પૂછયું, કે શ્રીઆચાર્યજી શું કરે છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે ભોજન કરતા હશે. ત્યારે વેપારીએ કહ્યું, કે અમારો માલ સઘળો લુટાઇ ગયો છે અને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કરે છે! ત્યારે પદ્મનાભદાસે મનમાં વિચાર્યું, કે આ વાત શ્રીઆચાર્યજી સાંભળશે તો ભોજન નહી કરે. તેથી આપ સાંભળે નહીં (એમ કરવું).

ત્યારે પદ્મનાભદાસ તે વેપારીની બાંહ પકડીને બહાર લઇ આવ્યા. ત્યારે પૂછયું, કે સાચું કહે, તારો માલ કેટલો ગયો છે? ત્યારે એ વેપારીએ બતાવ્યું એટલે તે વેપારીનો હાથ પકડીને પદ્મનાભદાસ એક શાહની દુકાને લઇ ગયા. તે શાહે પદ્મનાભદાસની બહુ જ આગતા સ્વાગતા કરી. પછી તે શાહે કહ્યું, કે આજ્ઞા કરો કેમ પધાર્યા છો? ત્યારે પદ્મનાભદાસે શાહને કહ્યું, કે આ વેપારીને આટલું દ્રવ્ય આપવું જોઇએ. એ દ્રવ્યનું ખતપત્ર વ્યાજ અમે લખી દઇશું. ત્યારે તે શાહે કહ્યું, કે પદ્મનાભદાસજી! તમને જેટલું જોઇએ તેટલું દ્રવ્ય લો. ખતપત્રની શી વાત છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે પહેલાં તો ખતપત્ર લખીશ અને પછી દ્રવ્ય લઇશ. વિના

लेउंगो नाहीं। तब साह ने कही। जो–तुम्हारी इच्छा। पाछे पद्मनाभदास ने खतपत्र ब्याज लिखि अपनो धरम गहने लिखि दीनो। पाछे ब्यौपारी तो द्रव्य लेके अपने घर गयो। तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो–तू कहां गयो हो ? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो–महाराज ! एक काम हो तहां गयो हो। सो श्रीआचार्यजी आपु तो ईश्वर हैं। तत्काल बात कों जानि गये। तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो–हमकों वा ब्यौपारी के संग कछू बिसावनों हतो कहा ? जो वाको माल देते ? वह पाछें रह्यो तो हम कहा करें ? परि तेनें बुरी करी। जो–रिन काढ़ि के पैसा दीनो। तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो–महाराज ! रिन तो कालिह देऊँगो। यह कितनीक बात है। परि वह ब्यौपारी पुकारतो तो राज भोजन घड़ी दोय अबेरो करते। तो मेरो सगरो जन्मारो बृथा होय जातो। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो–तेने धर्म गहने लिखि दीनो सो कहा है ? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो–महाराज ! ऐसे गाढ़ो लिखे बिना दियो न जाय। पाछे श्रीआचार्यजी आप तो अड़ेल पधारे। पाछे पद्मनाभदास एक राजा हतो ताके पास गये। पाछें राजानें कह्यो, जो–मोकों कृपा करिके कथा सुनावो। तब

ખતપત્ર લખે તો હું લઇશ નહીં. ત્યારે શાહે કહ્યું, કે તમારી ઇચ્છા. પછી પદ્મનાભદાસે ખતપત્ર વ્યાજ લખી પોતાનો ધર્મ ઘરાણે લખી આપ્યો. પછી વેપારી તો દ્રવ્ય લઇને પોતાના ઘરે ગયો. ત્યારે પદ્મનાભદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, કે તું ક્યાં ગયો હતો ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે મહારાજ ! એક કામ હતો ત્યાં ગયો હતો. તે શ્રીઆચાર્યજી તો આપ ઇશ્વર છે. તત્કાલ વાતને જાણી ગયા. ત્યારે પદ્મનાભદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે અમે એ વેપારીની સાથે કંઈ માલનો વીમો કર્યો હતો શું ? તે એનો માલ આપતા ? તે પાછળ રહ્યો તો અમે શું કરીએ ? પરંતુ તેં ખોટું કર્યું, કે રૂણ કાઢીને પૈસા આપ્યા. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે મહારાજ ! રૂણ તો કાલ દઇશ. એ કેટલીક વાત છે. પરંતુ તે વેપારી બુમ પાડતો તો રાજ ભોજન ઘડી બે મોડું કરતા. તો મારો સઘળો જન્મારો વ્યર્થ થઇ જતો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તેં ધર્મ ઘરાણે લખી દીધો તે શું છે ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે, મહારાજ ! એવું કઠિણ લખ્યા વિના આપ્યું ન જાય. પછી શ્રીઆચાર્યજી આપ તો અડેલ પધાર્યા. પછી પદ્મનાભદાસ એક રાજા હતો તેની પાસે ગયા. ત્યારે રાજાએ કહ્યું, કે મને કૃપા કરીને કથા સંભળાવો. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે રાજા ! શ્રીભાગવત

पद्मनाभदास नें कह्यो, जो–राजा! श्रीभागवत तो न कहूंगो। कहो तो महाभारत सुनाउं। तब राजा नें कह्यो, जो–भलो, महाभारत ही सुनावो। तब महाभारत कहन लागे। सो जब युद्ध को प्रसंग आयो, तब सबन के हथियार छुड़ाइ धरे। तब आगे कहन लागे। सो कथा में कोऊ (ऐसो) वीररस उपज्यो सो आपुस में लात मुक्किन सों लरन लागे। पाछें केतेक दिनमें महाभारत समाप्त भयो। तब राजा बहुत दक्षिणा देन लाग्यो। तब पद्मनाभदास ने कह्यौ, जो–इतनो द्रव्य नाहीं लेऊंगो। मेरे माथे रिन है। सो तितनो लेऊंगो। पाछे वा माहकों जितनो मूल व्याज देनो हतो तितनो लीनो। बाकी सब फेरि डार्यो। सो वे पद्मनाभदास ऐसे भगवदीय हे।

भावप्रकाश—तब व्योपारी ने कह्यो, जो–हमारो माल सब लूटि गयो। आप भोजन कों पधारे हैं? यह कह्यो ताको कारन यह, जो–आपु दयाल व्है के जीव दुःखी जानिके भोजन कैसें करत हैं? जो–दयाल है सो परायो दुःख दूरि करिकें भोजन करत है। श्रीआचार्यजी ने कही (जो तैने) व्यौपारी कों द्रव्य क्यों दिवायो? रिन काढ़िके। कछू हम बीमा कियो हतो? पाछें रह्यो लूटि गयो। तें बुरी करी। ताको कारन यह, जो–रिनहत्या माथें लीनी। सो बुरी करी, सरीर को कहा भरोसो है? देह छूटि जाय तो रिन माथे रहे।

તો કહીશ નહીં. કહો તો મહાભારત સંભળાવું. ત્યારે રાજાએ કહ્યું, કે ભલો, મહાભારત જ સંભળાવો. ત્યારે મહાભારત કહેવા લાગ્યા. તે જ્યારે યુદ્ધનો પ્રસંગ આવ્યો ત્યારે બધાના હથિયાર છોડાવી (ને) ધર્યાં. ત્યારે આગળ કહેવા લાગ્યા. તે કથામાં કોઈ (એવો) વીરરસ ઉપજ્યો તે આપુસમાં લાત મુક્કાઓથી લડવા લાગ્યા. પછી કેટલાક દિવસમાં મહાભારત સમાપ્ત થયું. ત્યારે રાજા બહુ જ દક્ષિણા દેવા લાગ્યો. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે એટલું દ્રવ્ય લઇશ નહીં. મારે માથે ઋણ છે તેટલું લઇશ. પછી તે શાહુકારને જેટલું (દ્રવ્ય) મૂલ વ્યાજ દેવાનું હતું તેટલું લીધું. બાકી બધું પાછું દીધું. તે પદ્મનાભદાસ એવા ભગવદીય હતા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યારે વેપારીએ કહ્યું, કે અમારો માલ બધો લુંટાઇ ગયો અને આપ ભોજન માટે પધાર્યા છો? એમ કહ્યુ, તેનું કારણ એ કે પોતે દયાલુ થઇને જીવ દુઃખી જાણીને ભોજન કેમ કરે છે? જે દયાલુ છે તે પારકું દુઃખ દૂર કરીને ભોજન કરે છે. શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું. (કે તે) વેપારીને દ્રવ્ય કેમ અપાવ્યુ ઋણ કાઢીને? કઇ અમે વીમા કર્યો હતો? પાછળ રહ્યો લુંટાઇ ગયો. તે ખોટું કર્યું. તેનું કારણ એ કે ઋણ–હત્યા માથે લીધી. તેં ખોટું કર્યું, શરીરનો શો ભરોસો છે? દેહ છુટી જાય તો ઋણ માથે રહે.

तब पद्मनाभदास ने कही । या व्यौपारी को रुदन सुन घरी दोय आप भोजन अबेरो करते । मेरो जन्म वृथा होइ जातो । (ताको अभिप्राय) सेवक के आगें स्वामी कों कछू श्रम होइ, सेवक श्रम दूरि न करें, तो धर्म जाइ । पाछें धिक्कार वह सेवक कों जीवे सो वृथा है । और रिन की केतिक बात है ? अब चुकाई देऊँगो । ताको कारन यह, जो–काल की कहा सामर्थ्य है ? आपुकी कृपातें बाधक न होइगो । और धरम गहने धर्यो तामें एक भाव यह है, (जो) अपनो वैदिक ब्राह्मन को धर्म गहने धर्यो होइगो यह गौन भाव है। काहेतें, श्रीआचार्यजी की सरन आये । तब (सब) समर्पन कियो । जो–वैदिक धर्म न्यारो रहे, तो पुन्य को फल स्वर्ग भोगनो परे । तातें इनने तो सर्व समर्पन करि एक पुष्टि भक्तिरूप धर्म राखे है। ताहीतें श्रीआचार्यजी हू पूछ्यो, (जो) ऐसो धर्म साहके इहां गहने धर्यो ? परंतु पद्मनाभदास कों श्रीआचार्यजी को स्वरूप हृदयारूढ़ हतो । श्रीआचार्यजी के सुख के लिये धर्महू की अपेक्षा राखें नाहीं । गहने धरे । और व्यौपारीकों द्रव्य देके बहोत मनमें प्रसन्न भये । भली भई (व्यौपारी) इहां आयो । जो–चल्यो जातो तो जहां तहां देसमें निंदा करतो । जो–मैं श्रीआचार्यजी की संग लूटि गयो । काहेतें ? लौकिक राजाके संग लूट्यो न जाइ तो ऐसे ईश्वर के

त्यारे पद्मनाभदासे कह्युं, (के) आ वेपारीनुं रुदन सांभळी घडी बे आप भोजन मोडुं करता (तो) मारो जन्म वृथा थइ जतो. (तेनो अभिप्राय) सेवकना आगे स्वामीने कंइ श्रम थाय (अने जो) सेवक श्रम दूर न करे तो धर्म जाय. पछी धिक्कार ए सेवकने. जीवे तो वृथा छे. अने ऋणनी केटली वात छे ? हमणां चुकावी दइश. तेनुं कारण ए के काळनी शी सामर्थ्य छे? आपनी कृपाथी बाधक थशे नहीं. अने धर्म घरेणे धर्यो, तेमां एक भाव ए छे (के) पोतानो वैदिक ब्राह्मणनो धर्म घरेणे धर्यो हशे. ए गौण भाव छे; केमके श्रीआचार्यजीनी शरणे आव्या त्यारे (बधु) समर्पण कर्युं. जो वैदिक धर्म अलग रहे तो पुन्यनु फल स्वर्ग भोगववुं पडे. तेथी एमणे तो सर्व समर्पण करी एक पुष्टि भक्ति रुप धर्म राख्यो छे. तेथी श्रीआचार्यजीए पण पूछ्युं, के एवो धर्म शाहुकारने त्यां घरेणे धर्यो ? परतु पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीनु स्वरुप हृदयारुढ हतुं. श्रीआचार्यजीना सुखने माटे धर्मनी पण अपेक्षा राखी नहीं. घरेणे धर्यो. अने वेपारीनु द्रव्य दइने बहुज मनमां प्रसन्न थया. भलु थयुं (वेपारी) अहीं आव्यो, जो (अन्यत्र) चाल्यो जतो तो ज्यां त्यां देशमां निंदा करतो, के हु श्रीआचार्यजीनी साथे लुंटाइ गयो. केमके, लौकिक राजानी साथे लुटाइ शके नहीं, तो आवा इश्वरनी

संग लूटि गयो ? सो पद्मनाभदास कहे, मेरे धर्म की परीक्षा अर्थ लूट्यो गयो। सो व्यौपारी कों द्रव्य दियो। अब जहां जाइगो तहां श्रीआचार्यजी की बड़ाई करेगो। मोकों नफा सहित द्रव्य दिये। या भावसों पद्मनाभदास की श्रीआचार्यजी में अनिर्वचनीय प्रीति है।

और राजा जादा द्रव्य देन लाग्यो सो आप (पद्मनाभदास) यातें न लिये, जो-इनकों अव्यावृत को नेम है। वृत्ति के अर्थ कथा नाहीं कहनी। यह संकल्प है। यह सगरो काम श्रीआचार्यजी के सुखके अर्थ किये। सो साह कों रुपैया दिवाय धर्म को कागद लिखे हते सो ले आये। पाछें घर आय सेवा करन लागे।

वार्ता-प्रसंग ४—और पद्मनाभदास के घर बेटी कुमारी हती। ताके निमित्त एक वर श्रीआचार्यजी को सेवक चहियत हतो। सो वैष्णव सों पूछन लागे। तब वैष्णव नें कह्यौ, जो-एक वर श्रीआचार्यजी को सेवक है। परि सनोढ़िया ब्राह्मण है। सो पद्मनाभदास कों सेवक सुनत ही लौकिक व्यवहार की तो सुधि नाहीं आई। वैष्णव नें कह्यौ, जो-भलो वैष्णव है। याकों कन्या दीजिये। तब पद्मनाभदास नें कह्यौ, जो-भलो। तब पद्मनाभदास नें वा वैष्णव कों कुंकुम मंगाई तिलक कियो और कह्यौ, मैं बेटी तुमकों दे चुक्यो। लगन को दिन तुम पूछो ता दिन व्याह करूं। विवाह

સગે લુંટાઇ ગયો? તે પદ્મનાભદાસ કહે, મારા ધર્મની પરીક્ષા માટે લુટાઇ ગયો. તે વેપારીને દ્રવ્ય દીધું. હવે જ્યાં જશે ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીની બડાઇ કરશે. મને નફા સહિત દ્રવ્ય આપ્યું. આ ભાવથી પદ્મનાભદાસની શ્રીઆચાર્યજીમાં અનિર્વચનીય પ્રીતિ છે. અને રાજા વધારે દ્રવ્ય દેવા લાગ્યો. તે આપ (પદ્મનાભદાસે) પોતે એમ ન લીધુ. કે એમને અવ્યાવૃત્તનો નેમ છે. વૃત્તિના અર્થે કથા નહીં કહેવી. એ સંકલ્પ છે. આ બધુ કામ શ્રીઆચાર્યજીના સુખના માટે કર્યું. તે શાહુને રૂપીયા અપાવી ધર્મનો કાગળ લખ્યો હતો. તે લઇ આવ્યા. પછી ઘર આવીને સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૪—પદ્મનાભદાસના ઘર બેટી કુમારી હતી. તેના નિમિત્ત એક વર શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક જોઇતો હતો. તે વૈષ્ણવોને પૂછવા લાગ્યા. ત્યારે (એક) વૈષ્ણવે કહ્યું, કે એક વર શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક છે. પરંતુ સનોઢિયા બ્રાહ્મણ છે તે પદ્મનાભદાસને સેવક સાંભળતાં જ લૌકિક વ્યવહારની તો સુધ નહીં આવી, વૈષ્ણવે કહ્યું, કે ભલો વૈષ્ણવ છે. એને કન્યા આપો. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે, સારૂં. ત્યારે પદ્મનાભદાસે તે વૈષ્ણવને કંકુ મંગાવીને તિલક કર્યું. અને કહ્યું, હું (મારી) બેટી તમને દઈ ચૂકયો. લગ્નનો દિવસ તમે પૂછો તે, દિવસ લગ્ન કરૂં. (એમ) વિવાહ

सही करि प्रसन्न होइ अपने घर आये। तब बड़ी बेटी एक तुलसां हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई। लौकिक पति को मुख नाहीं देख्यो। सो श्रीमथुरानाथजी की सेवा में तत्पर हती, तासों कह्यौ, जो-अपनी बेटी को विवाह अमुके वैष्णव सों सही करि आयो हूं। तब तुलसांने कह्यौ, जो-वह तो सनोढ़िया ब्राह्मण है। हम कन्नौजिया ब्राह्मण है। सो ऐसे कैसे होइ? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-अब तो भई सो भई। तब तुलसां नें कही, जो-सगाई फेरो। तब पद्मनाभदासने कही, जो-छुरी लाओ। अंगूठा काटो। जा अंगूठा करि तिलक कियो है। तब तुलसां ने कह्यो, जो-अंगूठा कैसे काटिये? तब पद्मनाभदास ने कही, तो सगाई कैसे फेरिये? अंगूठा कटे तो सगाई फिरे। पाछें पद्मनाभदास नें विवाह करि दीनों। जाति के सब झख मारि रहे। वैष्णव के कहे को ऐसो विश्वास, तातें सगाई न फेरी।

भावप्रकाश—जब तुलसांने कह्यो, अंगूठा कैसे काट्यो जाय? तब पद्मनाभदासने कह्यौ, श्रीआचार्यजी के सेवक पर तन, मन, धन न्योछावरि करिये। सो सगाई कैसें फेरी जाइ? या प्रकार तुलसांकों मारग को अभिप्राय बताए।

ખરો કરી પ્રસન્ન થઈ પોતાને ઘરે આવ્યા. ત્યારે મોટી બેટી એક તુલસાં હતી. તે લગ્ન થતાં જ વિધવા થઈ હતી. લૌકિક પતિનું મુખ ન જોયું. તે શ્રીમથુરાનાથજીની સેવામાં તત્પર હતી. તેને કહ્યું, કે આપણી બેટીનો વિવાહ અમૂક વૈષ્ણવ સાથે કરી આવ્યો છું. ત્યારે તુલસાંએ કહ્યું, કે તે તો સનોઢીયા બ્રાહ્મણ છે. અમે કનોજીયા બ્રાહ્મણ છીએ. તે એમ કેમ થાય ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે હવે તો થઈ તે થઈ. ત્યારે તુલસાંએ કહ્યું, કે સગાઇ ફેરવો. ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે છરી લાઓ. અંગુઠો કાટો, કેમ જે અંગુઠાથી તિલક કર્યું છે. ત્યારે તુલસાંએ કહ્યું, કે અંગુઠો કેવી રીતે કાપિએ ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, તો સગાઇ કેવી રીતે ફેરિયે ? અંગુઠો કપાય તો સગાઇ ફરે. પછી પદ્મનાભદાસે વિવાહ કરી દીધો. જાતિના બધા જખ મારી રહ્યા. વૈષ્ણવના કહેવાનો એવો વિશ્વાસ, તેથી સગાઈ ન ફેરવી.

ભાવપ્રકાશ—જ્યારે તુલસાંએ કહ્યું, અંગુઠો કેવી રીતે કપાય ? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ઉપર તન, મન, ધન ન્યોછાવર કરીએ તો સગાઇ કેમ ફેરવી જાય ? આ પ્રકારે તુલસાંને માર્ગનો અભિપ્રાય બતાવ્યો. તે દિવસથી તુલસાંનો પ્રેમ વૈષ્ણવોમાં પદ્મનાભદાસના સંગથી થયો તે શ્રીઠાકુરજી

ता दिन तें तुलसां को प्रेम वैष्णवन में पद्मनाभदासके संगतें भयो । सो श्रीठाकुरजी तुलसांहू कों अनुभव जतावन लागे । पाछें प्रसन्न होइके वैष्णवकों अपनी वेटी ब्याहि दिये । जाति सगरी झखि मारि रही । ताको कारन यह है, (जो) जहां तांई दृढ़ स्नेह नाहों, तहां तांई लौकिक वैदिक को डर है । जब दृढ़ स्नेह प्रभु में भयो । तब सगरी चिंता मिटी । लौकिक वैदिक बाधा हूँ न करि सके । ऐसे एक वैष्णव पद्मनाभदास भये ।

वार्ता–प्रसंग ५—और एक क्षत्राणी पद्मनाभदास के घर नित्य आवती । तब पद्मनाभदास की वेटी तुलसांने एक दिन वासों कह्यौ, जो–क्षत्राणी ! तू नित्य क्यों आवत है? तब वा क्षत्राणी नें कही, जो–ए महापुरुष हैं । बड़े भगवदीय हैं । और मेरे संतति नाहीं होति है । तातें आवति हों । तुम मेरी बिनती पद्मनाभदासजी सों करियो । तब एक दिन तुलसां नें पद्मनाभदास सों कह्यौ, जो–या क्षत्राणी के संतति नाहीं । ताके लिये तुमसों विनती करत है । तब पद्मनाभदास नें तुलसां सों कह्यौ, जो–जल लाउ । तब तुलसांने जल आगे लाइ धर्यो । तब वह जल लेके चरणोदक करि वा क्षत्राणी को दियो । और कह्यौ, जो–जा, तेरे पुत्र होइगो । ताको नाम मथुरादास धरियो । पाछें वाके पुत्र भयो । (ताको) नाम मथुरादास धर्यो ।

તુલસાંને પણ અનુભવ જતાવવા લાગ્યા. પછી પ્રસન્ન થઇને (તે) વૈષ્ણવની સાથે પોતાની બેટીનો વિવાહ કરી દીધો. જાતિ બધી જખ મારીને રહી. તેનું કારણ એ છે, કે જ્યાં સુધી દૃઢ સ્નેહ નથી ત્યાં સુધી લૌકિક વૈદિકનો ડર છે. જ્યારે દૃઢ સ્નેહ પ્રભુમાં થયો ત્યારે સઘળી ચિંતા મટી. લૌકિક વૈદિક પણ બાધા ન કરી શકે. એવા એક વૈષ્ણવ પદ્મનાભદાસ થયા.

વાર્તા પ્રસંગ–૫—વળી એક ક્ષત્રાણી પદ્મનાભદાસના ઘર નિત્ય આવતી. ત્યારે પદ્મનાભદાસની બેટી તુલસાંએ એક દિન એને કહ્યું, કે ક્ષત્રાણી ! તૂ નિત્ય કેમ આવે છે ? ત્યારે તે ક્ષત્રાણીએ કહ્યું, કે એ મહાપુરુષ છે. મોટા ભગવદીય છે. અને મારે સંતતી નથી થતી, તેથી હું આવું છું. તમે મારી વિનંતી પદ્મનાભદાસને કરજો. ત્યારે એક દિવસ તુલસાંએ પદ્મનાભદાસને કહ્યું, કે આ ક્ષત્રાણીને સંતતી નથી. તે માટે તમને વિનંતી કરે છે. ત્યારે પદ્મનાભદાસે તુલસાંને કહ્યું, કે જલ લાવ. ત્યારે તુલસાંએ જલ આગે લઇ ધર્યું. ત્યારે તે જલ લઇને ચરણોદક કરી તે ક્ષત્રાણીને આપ્યું. અને કહ્યું, કે જા, તારે પુત્ર થશે. તેનું નામ મથુરાદાસ ધરજે. પછી તેને પુત્ર થયો. (તેનું) નામ મથુરાદાસ ધર્યું.

भावप्रकाश—अपनो चरणोदक क्यों दिये ? भगवदीय अपनी बड़ाई तो करावत नाहीं । तातें श्रीठाकुरजी को चरणोदक दियो होयगो । तहां कहत हैं, जो–पद्मनाभदासनें विचारी, जो–तुच्छ कामना पुत्रादिककी है । याके लिये श्रीठाकुरजी को चरणोदक कहा ? श्रीठाकुरजी कों श्रम काहेकों कराऊं ? तातें अपनो चरणोदक दिये । परंतु पद्मनाभदास सदा श्रीआचार्यजी के स्वरूप में मगन रहत हैं । सो जल ले श्रीआचार्यजी के भाव तें दिये । और इनकों कछू कामना की बड़ाई की अपेक्षा नाहीं है । भगवदीय को आश्रय करें, सो सगरो मनोरथ वाको पूरन होइ । यह पुत्र की कहा बात है ? ताकों (क्षत्राणीकों) पुत्रकामना हती सो पुत्र दिये । परंतु बाधक नाहीं । जो–अपने किये को अहंकार नाहीं । ता समय, जो–बुद्धि की प्रेरणा भई । सो भगवद् इच्छा तें कार्य करत हैं । अपनो कियो जानत नाहीं है । श्रीगुसांईजी लिखे हैं "बुद्धि प्रेरक कृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु" जो–कार्य होत है । जैसी ताकी बुद्धि प्रेरक होई करत है सो कार्य सब कृष्णही को जाननो । जो–अपनो, और को जाने सोई संसार समुद्र में भ्रमत है । तातें पद्मनाभदास ने अपनो चरणोदक दियो । परंतु यह भाव नाहीं, जो–मेरे चरणोदकसों पुत्र होइगो । भगवद्इच्छा तें सब होत है । यह सिद्धांत दिखाए ।

ભાવપ્રકાશ—પોતાનું ચરણોદક કેમ આપ્યું ? ભગવદીય પોતાની મોટાઇ તો કરાવતા નથી. તેથી શ્રીઠાકુરજીનુ ચરણોદક દીધું હશે. ત્યાં કહે છે, કે પદ્મનાભદાસે વિચાર્યું, કે તુચ્છ કામના પુત્રાદિકની છે. એને માટે શ્રીઠાકુરજીનું ચરણોદક શું ? શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ શું કામ કરાવુ ? તેથી પોતાનુ ચરણોદક આપ્યુ. પરંતુ પદ્મનાભદાસ સદા શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપમાં મગન રહેતા હતા. તે જલ લઇ શ્રીઆચાર્યજીના ભાવથી આપ્યું. અને એમને કઇ કામનાની (કે) મોટાઇની અપેક્ષા ન હતી. ભગવદીયનો આશ્રય કરે તો સઘળો મનોરથ તેનો પૂર્ણ થાય. આ પુત્રની શી વાત છે ? તેને (ક્ષત્રાણીને) પુત્ર કામના હતી. તે પુત્ર આપ્યો. પરતુ બાધક નહીં. (કેમ) કે પોતાના કર્યાનો અહકાર નથી. તે સમયે જે બુદ્ધિની પ્રેરણા થઇ તે ભગવદીચ્છાથી કાર્ય કરે છે. પોતાનું કર્યું જાણતા નથી. શ્રીગુસાંઇજી લખે છે કે– "બુદ્ધિપ્રેરક કૃષ્ણસ્ય પાદપદ્મં પ્રસીદતુ" જે કાર્ય થાય છે, જેવી તેની બુદ્ધિપ્રેરક થઇ કરે છે તે કાર્ય બધુ કૃષ્ણનુ જ જાણવું. જે પોતાનું કે બીજાનુ જાણે તેજ સસાર સમુદ્રમાં ભ્રમે છે. તેથી પદ્મનાભદાસે પોતાનું ચરણોદક આપ્યું. પરતુ એ ભાવ(થી) નહીં, કે મારા ચરણોદકથી પુત્ર થશે. ભગવદીચ્છાથી બધું થાય છે. આ સિદ્ધાંત દેખાડયો.

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समें बड़े रामदासजी अपने सेव्य श्रीठाकुरजी कों पद्मनाभदास के घर पधराइ के श्रीनाथजी के दरसन कों गये। सो श्रीनाथजी की सेवामें श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें रहे और श्रीनाथजी की सेवा करन लागे। श्रीनाथजी के भीतरिया भये। तब पद्मनाभदास श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे। कितनेक दिन पाछें मुगल की फौज आई। सो तानें गाम लूट्यो, सो श्रीठाकुरजी कों एक मुगल ले गयो। तब पद्मनाभदास वा मुगल के साथ दिन सातलों रहे। जलपान हू न कर्यो। तब आठमे दिन मुगल सों मुगलानी ने कह्यो, जो-यह ब्राह्मन जलपान नाहिं करत है। याकों सात दिन भये हैं। अन्नजल छोड़े। सो जो-यह मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढ़ेगी। तातें याको देवता है। सो वाकों दे। तब मुगल ने श्रीठाकुरजी पद्मनाभदास कों दिये। सो लेके पद्मनाभदास अपने घर आये। ता पाछे आप स्नान करि श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान करवायो। अंग वस्त्र करि श्रृंगार कर्यो। रसोई करि भोग समर्प्यो। पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर करि पाछें वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। पाछें आप महाप्रसाद लियो। और जा दिन श्रीठाकुरजी कन्नौज में मुगल के हाथ परे। ता दिन

વાર્તા પ્રસંગ-૬—વળી એક સમયે મોટા રામદાસજી પોતાના સેવ્ય શ્રીઠાકુરજીને પદ્મનાભદાસના ઘરે પધરાવીને શ્રીનાથજીના દર્શને ગયા. તે શ્રીનાથજીની સેવામાં શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞાથી રહ્યા. અને શ્રીનાથજીની સેવા કરવા લાગ્યા. શ્રીનાથજીના ભીતરિયા થયા. ત્યારે પદ્મનાભદાસ શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરવા લાગ્યા. તે કેટલાક દિવસ પછી મુગલની ફોજ આવી. તેણે ગામ લુટ્યું. તે શ્રીઠાકુરજીને એક મુગલ લઇ ગયો. ત્યારે પદ્મનાભદાસ એક મુગલની સાથે દિવસ સાત સુધી રહ્યા. જલપાન પણ ન કર્યું, ત્યારે આઠમા દિવસે મુગલને મુગલાનીએ કહ્યું, કે આ બ્રાહ્મણ જલપાન નથી કરતો. તેને સાત દિવસ થયા છે, અન્નજલ છોડે. તે (થી) જો આ મરશે તો તારે માથે હત્યા લાગશે. તેથી તેના દેવતા છે તે એને દે. ત્યારે મુગલે શ્રીઠાકુરજી પદ્મનાભદાસને આપ્યા. તે લઇને પદ્મનાભદાસ પોતાના ઘરે આવ્યા. તે પછી પોતે સ્નાન કરી શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવ્યાં. અંગવસ્ત્ર કરી શૃંગાર કર્યો. રસોઇ કરી ભોગ સમર્પ્યો. પછી સમયાનુસાર ભોગ સરાવી અનોસર કરી પછી વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. પછી પોતે મહાપ્રસાદ લીધો. અને જે દિવસે શ્રીઠાકુરજી કન્નોજમાં મુગલના હાથે પડ્યા, તે દિવસ મોટા રામદાસજીએ પણ એ વાત જાણી, ને તે દિવ-

बड़े रामदासजी ने हू यह बात जानी। सो ता दिन तें बड़े रामदासजी ने हू सात दिनलों भोजन नाहिं कियो। परि श्रीनाथजी की सेवा सावधानतासों करत रहे। यह बात पद्मनाभदासजी ने अपने घर बैठे जानी। जो-रामदासजी ने हू या बात के ऊपर बहोत दुःख पायो। यह जानि पद्मनाभदास श्रीनाथजी के दरसन कों तथा रामदासजी के मिलिवे कों श्रीनाथजीद्वार गये। सो श्रीनाथजी के दरसन किये। पाछें रामदासजी कों मिले। तब रामदासजी सों पद्मनाभदासजी नें कह्यो, जो-हौंतो दुःख पायो सो तो न्याव है। जो-तुम मेरे माथे सेवा पधराय आये। परि तुमने दिन सातलों प्रसाद न लियो, सो काहेते? तब रामदासजी नें कह्यो, जो-तुम कहत हो सो तो साँच, परि मैंहू तो बहोत दिनलों सेवा करी है। तातें इतनो संबंध तो चाहिये। पाछें कितनेक दिन रहिके पद्मनाभदास श्रीनाथजी सों तथा रामदासजी सों बिदा होइके अपने घर कनौज आये। पाछें फेरि सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत दिखाये, जो पुष्टिमार्गीय वैष्णव के ठाकुर अपने घर पधारे तो भिन्न भाव न राखनो। श्रीआचार्यजी के संबंधी जानि माथे पधारे जानि सेवा करनी। और रामदासजी के भाव में यह

સથી મોટા રામદાસજીએ પણ સાત દિવસ સુધી ભોજન ન કર્યું. પરંતુ શ્રીનાથજીની સેવા સાવધાનથી કરતા રહ્યા. એ વાત પદ્મનાભદાસજીએ પોતાના ઘર બેઠે જાણી, કે રામદાસજી પણ આ વાતના ઉપર બહુ જ દુઃખ પામ્યા. એ જાણી પદ્મનાભદાસ શ્રીનાથજીના દર્શને તથા રામદાસજીને મળવા માટે શ્રીનાથજીદ્વાર ગયા. તે શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી રામદાસજીને મળ્યા. ત્યારે રામદાસજીએ પદ્મનાભદાસને કહ્યું, કે હું તો દુઃખ પામ્યો તે તો ન્યાય છે, કે તમે મારા માથે સેવા પધરાવી આવ્યા. પરંતુ તમે દિવસ સાત સુધી પ્રસાદ ન લીધો તે શા માટે? ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું, કે તમે કહો છો તે સાચું પરંતુ મેં પણ ઘણા દિવસ સુધી સેવા કરી છે. તેથી એટલો સંબંધ તો જોઇએ. પછી કેટલાક દિવસ રહીને પદ્મનાભદાસ શ્રીનાથજીથી તથા રામદાસજીથી વિદાય થઇને પોતાના ઘર કનોજ આવ્યા. પછી ફરી સેવા કરવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત દેખાડયો, કે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવના ઠાકુર પોતાને ઘર પધારે તો ભિન્ન ભાવ ન રાખવો શ્રીઆચાર્યજીના સંબંધી જાણી માથે પધારે જાણી સેવા કરવી. અને રામદાસજીના ભાવમાં એ બતાવ્યું, કે

जताए, जो–अपने सेव्य ठाकुर कहूँ पधराइ निश्चिंत न होई। उनके दुःखतें दुःखी होई। उनके सुखतें सुख पावे। यह सिद्धांत दिखाए।

वार्ता–प्रसंग ७—बहुरि एक समय पद्मनाभदास ने विचारी, जो–श्रीठाकुरजी सहित कुटुंब सहित श्रीआचार्यजी के दरसन करिये। श्रीमुख के वचनामृत सुनिये। सो श्रीठाकुरजी सहित कुटुंब सहित अड़ेल में आये। सो कछुक दिन रहे। परि द्रव्य को संकोच बहुत हतो। तातें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पे। सो छोला तलि के समर्पे। सो छोला आछी रीति सों बीनि के पहले दिन भिजोइ राखे, दूसरे दिन नीकी भांति सों तलि के समर्पे। सो या भांति, पातरि में एक मूठि दारि की भावना करते। एक मूठि भात की। एक मूठि खीर की। सागादिक सब को नाम ले न्यारि न्यारि मूठि धरतें। सो श्रीठाकुरजी सगरी सामग्री को भावसों आरोगते। या प्रकार नित्य करें। पाछें एक दिन एक वैष्णव श्रीआचार्यजी सों यह सब प्रकार कहे, जो–महाराज! पद्मनाभदास श्रीठाकुरजी कों या भांति छोला समर्पत हैं। सो एक दिना श्रीआचार्यजी भोग समर्पवे की बिरियां पद्मनाभदास के घर पधारे। सो पद्मनाभदास सों पूछे, जो–यह ढेरि न्यारि न्यारि क्यों है? तब पद्मनाभदास ने कही, यह

પોતાના સેવ્ય ઠાકુરને કોઇ જગાએ પધરાવીને નિશ્ચિંત ન થાય. એમના દુઃખથી દુઃખી થાય, એમના સુખથી સુખ પામે, એ સિદ્ધાંત દેખાડયો.

વાર્તા પ્રસંગ–૭—ફરી એક સમય પદ્મનાભદાસે વિચાર્યું કે શ્રીઠાકુરજીસહિત કુટુંબસહિત શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરીએ. શ્રીમુખનાં વચનામૃત સાંભળીએ. તે શ્રીઠાકુરજીસહિત કુટુંબસહિત અડેલમાં આવ્યા. તે કેટલાક દિવસ રહ્યા. પરંતુ દ્રવ્યનો સંકોચ ઘણો હતો. તેથી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પ્યો તે છોલા (ચણા) તળીને સમર્પ્યા. તે છોલા સુંદર રીતિથી વીણીને પહેલા દિવસે ભિંજાવી રાખ્યા. બીજા દિવસે સુંદર રીતિથી તળીને સમર્પ્યા. તે આ પ્રકારે–(કે) પાતરમાં એક મૂઠી દાળની ભાવના કરતા. એક મૂઠી ભાતની, એક મૂઠી ખીરની, સાકાદિક બધાનું નામ લઈ અલગ અલગ મૂઠી ધરતા. તે શ્રીઠાકુરજી સઘળી સામગ્રીના ભાવથી આરોગતા. એ પ્રકાર નિત્ય કરે. પછી એક દિવસ એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને આ બધો પ્રકાર કહ્યો, કે મહારાજ! પદ્મનાભદાસ શ્રીઠાકુરજીને આ પ્રકારે છોલા સમર્પે છે. તે એક દિવસ શ્રીઆચાર્યજી ભોગ સમર્પવાની વખતે પદ્મનાભદાસના ઘર પધાર્યા. તે પદ્મનાભદાસને પૂછે, કે આ ઢગલી ન્યારી ન્યારી કેમ છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, આ

दारि है। यह भात है। यह खीर है। यह कढ़ि है। यह सागादिक है। या प्रकार सब ढेरि कों सामग्री बताए। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को हृदय भरि आयो। और जान्यो, जो–याके द्रव्य को संकोच है तातें यों करत है। परंतु द्रव्य को उपाय नाहिं करत है। बड़ो धैर्य है। तातें याके ऊपर श्रीठाकुरजी बड़े प्रसन्न हैं। पाछें श्री-आचार्यजी घर पधारे भोजन किये। और श्रीअक्काजी सों कहे। जो–पद्‌मनाभदास के घर द्रव्य को बहोत संकोच है। सो छोला नित्य श्रीठाकुरजी कों धरत है। तब श्रीअक्काजी ने संझा समय सगरी सामग्री सिद्ध करि एक वैष्णव के हाथ पठाई। तब तुलसां ने पद्‌म-नाभदास सों कह्यो, जो–श्रीआचार्यजी के इहां सों सामग्री आई है। तब पद्‌मनाभदास ने कह्यो, हम जाने अब हमकों काढिवे को उपाइ किये हैं। जतन सों धरि राखो। तब तुलसां ने धरि राखी। पाछे दूसरे दिन फेरि सामग्री सांझ कों श्रीअक्काजी ने पठाई। तब तुलसां ने फेरि पद्‌मनाभदास सों कही। तब पद्‌मनाभदास ने कही, हमकों वेगि बिदा दिये। तातें सवेरे चलेंगे। अब यह धरि राखो। पाछें प्रातःकाल भयो। तब श्रीठाकुरजी कों वेगि ही राज-भोग सों पहोंचि, श्रीमथुरानाथजी सों पूछे, जो–महाराज! आपकों

દાળ છે, આ ભાત છે, આ ખીર છે, આ કઢી છે, આ શાકાદિક છે. આ પ્રકારે બધી ઢગલીઓ ને સામગ્રી બતાવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુનું હૃદય ભરી આવ્યું. અને જાણ્યું, કે આને દ્રવ્યનો સંકોચ છે, તેથી એમ કરે છે પરંતુ દ્રવ્યનો ઉપાય કરતો નથી. બહુ ધૈર્ય છે. તેથી એના ઉપર શ્રીઠાકુરજી બહુ પ્રસન્ન છે. પછી શ્રીઆચાર્યજી ઘર પધાર્યા. (પછી) ભોજન કર્યું. અને શ્રીઅક્કાજીને કહે, કે પદ્મનાભદાસના ઘર દ્રવ્યનો બહુ જ સંકોચ છે, તે છોલા નિત્ય શ્રીઠાકુરજીને ધરે છે. ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ સંધ્યા સમય બધી સામગ્રી સિદ્ધ કરીને એક વૈષ્ણવના હાથે મોકલી. ત્યારે તુલસાંએ પદ્મનાભદાસને કહ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજીને ત્યાંથી સામગ્રી આવી છે. ત્યારે પદ્મ-નાભદાસે કહ્યું, અમે જાણ્યું હવે અમને કાઢવાનો ઉપાય કર્યો છે, સાવચેતીથી ધરી રાખો. ત્યારે તુલસાંએ ધરી રાખી. પછી બીજા દિવસે ફરી સામગ્રી સાંજે શ્રીઅક્કા-જીએ મોકલી. ત્યારે તુલસાંએ ફરી પદ્મનાભદાસને કહ્યું, ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, અમને વહેલા વિદાય કર્યા. તેથી સવારે ચાલીશું. હમણાં આ ધરી રાખો. પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને વહેલા જ રાજભોગથી પહોંચી શ્રીમથુરાનાથજીને પૂછે, કે મહારાજ! આપને શ્રીઆચાર્યજીના ઘરે પધારવાની ઇચ્છા હોય તો ત્યાં નાના

श्रीआचार्यजी के घर पधारिवे की इच्छा होइ, तो उहां नाना प्रकार की सामग्री हैं। मेरे इहां तो जो समय जैसो प्राप्त होइ, तैसो धरूंगो। तब श्रीमथुरानाथजी ने कही, मोकों तेरो कियो भावत है। तातें जो धरेगो सो प्रीति तें आरोगूंगो। तब अनोसर कराई, एक नाव भाड़े करि लाये। तुलसां सों कहे। दोउ दिन को सीधो सामग्री है। सो श्रीअक्काजी कों दे आव। तब तुलसां सारी सामग्री श्रीआचार्यजी के यहां दे आई।

पाछें सगरी वस्तु नाव पर धरि श्रीमथुरानाथजी कों नाव पर पधराई श्रीआचार्यजी के पास विदा होन आये। और दंडवत् करि विनती कीनी, जो–महाराज! आज्ञा होइ तो घर जाय। तब श्री-आचार्यजी पूछे, जो–श्रीठाकुरजी कहां है? तब पद्मनाभदास ने कही, महाराज! नाव पर पधारे हैं। तब श्रीआचार्यजी विदा किये। और मनमें विचारे। जो–औंचको पद्मनाभदास क्यों गयो? तब श्रीअक्काजी ने कही, दोय दिन सीधो पठायो सो फेरि दे गये। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो–सीधो पठवायो तातें गयो। नाहीं तो न जातो। ऐसे श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख तें कह्यो। पाछें पद्मनाभ-दास घर जाय सेवा करन लागे।

પ્રકારની સામગ્રી છે. મારે અહીં તો જે સમયે જેવું પ્રાપ્ત હશે તેવું ધરીશ. ત્યારે શ્રીમથુરાનાથજીએ કહ્યું, મને તારું કર્યું રૂચે છે. તેથી જે ધરીશ તે પ્રીતિથી આરો-ગીશ. ત્યારે અનોસર કરાવી એક નાવ ભાડે કરી લાવ્યા. (પછી) તુલસાંને કહ્યું, બન્ને દિવસનું સીધું સામગ્રી છે તે શ્રીઅક્કાજીને દઇ આવ. ત્યારે તુલસાં બધી સામગ્રી શ્રીઆચાર્યજીને ત્યાં દઇ આવી.

પછી સઘળી વસ્તુ નાવ ઉપર ધરી શ્રીમથુરાનાથજીને નાવ પર પધરાવી શ્રી-આચાર્યજીની પાસે વિદાય થવા આવ્યા અને દંડવત કરી વિનતી કરી, કે મહારાજ! આજ્ઞા હોય તો ઘર જાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું. કે શ્રીઠાકુરજી ક્યાં છે? ત્યારે પદ્મનાભદાસે કહ્યું, કે, મહારાજ! નાવ ઉપર પધાર્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વિદાય કર્યા. અને મનમાં વિચાર્યું કે અચાનક પદ્મનાભદાસ કેમ ગયા? ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ કહ્યું, બે દિવસનું સીધું મોકલ્યું તે પાછું દેઇ ગયા છે. ત્યારે શ્રીઆચા-ર્યજીએ કહ્યું, કે સીધું મોકલ્યું તેથી ગયા. નહીં તો ન જાતે. એમ શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી કહ્યું–પછી પદ્મનાભદાસ ઘેર જઇ સેવા કરવા લાગ્યા.

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो–गुरु–द्रव्य श्रीठाकुरजी के द्रव्य तें हू भारी है। तातें श्रीभागवत में (स्कं. ११ अ. १७ श्लोक २८) कहे हैं। भिक्षा मांगि के लाइ गुरु के आगे धरिये। जो–गुरु आज्ञा देइ तो खाई। नाहीं तो भूख्यो रहि जाइ। परंतु मांगे नाहीं। मांगी भिक्षा हू आज्ञा बिना नहि लीनी जाय तो गुरु को (द्रव्य) कैसे लियो जाइ? तातें श्री-आचार्यजी 'विवेकधैर्याश्रय' में लिखे हैं, जो– "त्रिदुःखसहनं धैर्यम्" ॥

जब मुगल ठाकुर ले गयो तब पद्मनाभदास चाहे तो भस्म करि डारें, परि पद्मनाभदास (कष्ट) सहे। आप सात दिन भूखे रहे। वासों कछु न कहे। (यह अलौकिक दुःख कह्यो) लौकिक दुःख जो बेटी परज्ञात कों दीनी। यह ज्ञाति में निंदा सो सहे। खानपानादिक को दुःख सो सहे। परंतु धर्म न छोड़े। तातें श्रीगोकुल-नाथजी श्रीसर्वोत्तम की टीका में लिखे हैं। कोटिन वैष्णवन में दुर्लभ पद्मनाभदास सारिखे हैं। सो श्रीआचार्यजी के मारग को श्रीआचार्यजी के स्वरूप कों जानत हैं।

सो उन पद्मनाभदास की ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सदा प्रसन्न रहते, तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। सो कहां तांई कहिये।

✻ ✻ ✻

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું, કે ગુરુ-દ્રવ્ય શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યથી પણ ભારે છે. તેથી શ્રીભાગવતમાં (સ્કં. ૧૧ અ. ૧૭ શ્લોક ૨૮ માં) કહે છે, ભિક્ષા માંગી લાવીને ગુરુ આગળ ધરીયે. જો ગુરુ આજ્ઞા દે તો ખાય. નહી તો ભૂખ્યો રહી જાય. પરંતુ માંગે નહીં. જો માંગલી ભિક્ષા પણ આજ્ઞા વિના ન લેવાય તો ગુરુનું (દ્રવ્ય) કેમ લેવાય? તેથી શ્રીઆચાર્યજી 'વિવેકધૈર્યાશ્રય' માં લખે છે, કે "ત્રિદુઃખ સહનં ધૈર્યમ્"

જ્યારે મુગલ ઠાકુર લઇ ગયો ત્યારે પદ્મનાભદાસ ધારે તો (તેને) ભસ્મ કરી નાખે પરંતુ પદ્મનાભદાસે (કષ્ટ સહ્યું) પોતે રાતદિવસ ભૂખ્યા રહ્યા. એને કઇ ન કહ્યું. (આ અલૌકિક દુઃખ કહ્યું) લૌકિક દુઃખ (એ) જે બેટી પરજ્ઞાતિને આપી. એ જ્ઞાતિમાં નિંદા તે સહે. ખાનપાનાદિકનું દુઃખ તે સહે. પરંતુ ધર્મ ન છોડે. તેથી શ્રીગોકુ-લનાથજી શ્રીસર્વોત્તમની ટીકામાં લખે છે, કરોડો વૈષ્ણવોમાં પદ્મનાભદાસ સરખા દુર્લભ છે. તે શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગને શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપને જાણે છે.

તે પદ્મનાભદાસની ઉપર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી તેમની વાર્તાનો પાર નહીં, તે ક્યાં સુધી કહીએ?

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास की बेटी तुलसां
तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए लीलामें पद्मनाभदास की सखी है। पद्मनाभदास तो चंपकलता अष्टसखीन में। और चंपकलता की सखी मणिकुंडला, जैसे मणिकी ज्योतिकी कुंडाली चारों ओर फूले। सो (यह) तुलसां सात्त्विक भक्त है। पद्मनाभदास की आज्ञा में तत्पर है।

वार्ता-प्रसंग १—एक दिन तुलसां के घर वैष्णव आयो। सो श्रीआचार्यजी को सेवक हतो। सो श्रीमथुरानाथजी के दरसन राजभोग आरती के किये। तब तुलसां ने उन वैष्णव सों कह्यो, जो–उठो स्नान करो। महाप्रसाद लेउ। तब उह वैष्णव ने कह्यो, जो–होंतो घर जाइ स्नान करूंगो। तब तुलसां चुप करि रही। पाछे वह वैष्णव उठि के अपने घर गयो। तुलसां के मनमें बहोत खेद भयो, जो–मेरे घर तें वैष्णव भूख्यो गयो।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, महाप्रसाद की नाहीं करी, जो–ज्ञात ब्यौहार के लिये लियो नाहीं। सो तुलसां समझ गई। तातें आग्रह नाहीं कियो। यह गौड़ ब्राह्मन हतो और लीला में ललिताजी की सखी है। सोरभा इनको

હવે શ્રીઆચાર્યજીનાં સેવક પદ્મનાભદાસની બેટી તુલસાં, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં પદ્મનાભદાસની સખી છે. પદ્મનાભદાસ તો ચંપકલતા અષ્ટસખીઓમાં, અને ચંપકલતાની સખી મણિકુંડલા, જેમ મણીની જ્યોતિની કુંડાલી ચારે તરફ ફૂલે તેમ, આ તુલસાં સાત્વિક ભક્ત છે.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—એક દિવસ તુલસાંના ઘર વૈષ્ણવ આવ્યો. તે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હતો. તેણે શ્રીમથુરાનાથજીનાં દર્શન રાજભોગ આર્તિનાં કર્યાં. ત્યારે તુલસાંએ તે વૈષ્ણવને કહ્યું, કે ઉઠો, સ્નાન કરો. મહાપ્રસાદ લો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે હું તો ઘર જઇ સ્નાન કરીશ. ત્યારે તુલસાં ચુપ કરી રહી. પછી તે વૈષ્ણવ ઉઠીને પોતાના ઘરે ગયો. તુલસાંના મનમાં ઘણો જ ખેદ થયો, કે મારા ઘરથી વૈષ્ણવ ભૂખ્યો ગયો.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ (કે) મહાપ્રસાદની ના કહી, (કેમકે) જ્ઞાતિ-વ્યવહારને માટે લીધો નહીં. તે તુલસાં સમજી ગઇ. તેથી આગ્રહ ન કર્યો. એ ગૌડબ્રાહ્મણ હતો અને લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. સૌરભા એનું નામ છે.

नाम है। इनके अंगतें अतर गुलाब की सुगंध आवती। यह वैष्णव ललिताजी की सखी है। और तुलसां चंपकलता की सखी है। और तुलसां के बस श्रीमथुरानाथजी हैं। तातें यह वैष्णव नें महाप्रसाद न लियो। जो–ललिताजी की आज्ञा विना कैसें लेउ? तातें यह वैष्णव अपने घर चल्यो गयो। तब तुलसां के मनमें खेद भयो।

तब मनमें आई जो–ज्ञाति व्यौहार के लिये सखड़ी न लीनी होइगी। तो भलो, परि सवेरे पूरी प्रसाद लिवाऊंगी। पाछे मैंदा छानि सिद्ध करि राख्यो। पाछे सोइ रही। ता दिन तुलसां ने महाप्रसाद नाहीं लियो। पाछे रात्रिकों श्रीमथुरानाथजी ने तुलसां सों स्वप्न में कह्यो, जो–सवारे वा वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाइयो। वह वैष्णव अपने घर महाप्रसाद न लेइगो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–काल्हि उह वैष्णव महाप्रसाद लेइगो। तू चिंता मति करे। पाछें श्रीठाकुरजी नें उह वैष्णव कों जताये, जो–तुलसां के इहां महाप्रसाद क्यों न लियो? सवेरे लीजियो। ललिताजी की हू आज्ञा है। सो ललिताजी हू कहे। तुलसां के इहां महाप्रसाद लीजो। हमारे उनके भाव में भेद नाहीं।

वार्ता–प्रसंग २—पाछे प्रातःकाल तुलसां ने पूरी करी। श्री-

એના શરીરમાંથી અત્તર ગુલાબની સુગંધ આવતી. એ વૈષ્ણવ લલિતાજીની સખી છે. અને તુલસાં ચંપકલતાની સખી છે. અને તુલસાંને વશ શ્રીમથુરાનાથજી છે. તેથી એ વૈષ્ણવે મહાપ્રસાદ ન લીધો. (તે એમ) કે લલિતાજીની આજ્ઞા વિના કેમ લઉ ? તેથી આ વૈષ્ણવ પોતાને ઘર ચાલ્યો ગયો. ત્યારે તુલસાંના મનમાં ખેદ થયો.

ત્યારે મનમાં આવ્યું, કે જ્ઞાતિ વ્યવહારને માટે સખડી નહી લીધી હોય તો ભલે, પરંતુ સવારે પૂરી પ્રસાદ લેવડાવીશ. પછી મેંદા છાણીને સિદ્ધ કરી રાખ્યો. પછી સુઇ રહી. તે દિવસે તુલસાંએ મહાપ્રસાદ ન લીધો. પછી રાત્રિએ શ્રીમથુરાનાથજીએ તુલસાને સ્વપ્નમાં કહ્યું, કે સવારે એ વૈષ્ણવને મહાપ્રસાદ લેવડાવજે. એ વૈષ્ણવ પોતાના ઘરે મહાપ્રસાદ લેશે નહીં.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે, કાલ એ વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લેશે, તૂ ચિંતા ન કરીશ પછી શ્રીઠાકુરજીએ તે વૈષ્ણવને જણાવ્યું, કે તુલસાંને ત્યાં મહાપ્રસાદ કેમ ન લીધો ? સવારે લેજે. લલિતાજીની પણ આજ્ઞા છે. લલિતાજી પણ કહે, તુલસાંને ત્યાં મહાપ્રસાદ લેજે, અમારે એમના ભાવમાં ભેદ નથી.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—પછી પ્રાતઃકાલ તુલસાંએ પૂરી કરી. શ્રીઠાકુરજીને જગાડ્યા.

ठाकुरजी कुं जगाये। सेवा सिंगार करन लागी। इतने ही में वह वैष्णव सवारे न्हाय के श्रीठाकुरजी की सेवासों पहोंचि तुलसां के घर आयो। जब तुलसां भोग समर्पि के बाहर आई। तब वा वैष्णव सों जयश्रीकृष्ण कियो। और तुलसां ने कह्यो, जो-उठो स्नान करो, भगवद्स्मरण करो। तब वा वैष्णव ने कही, मैं स्नान करि अपरसही में आयो हूं। (तथा कहुं वार्ता में यह है, जो-स्नान करि तिलक मुद्रा करि भगवद्स्मरण कियो)। समय भये तुलसां ने राजभोग सरायौ, आरती करी। वैष्णव ने दरसन कियो। पाछे तुलसां श्रीठाकुरजी कों अनोसर करि बाहर आई। और वा वैष्णव कों प्रसाद की पातर धरी। तामें पूरी, बुरा, दहींथरा, संधानो धर्यो। और कह्यो, जो-प्रसाद लेउ। तब वा वैष्णव ने कही, जो-यह नाहीं लेउंगो। सखड़ी महाप्रसाद धरो, लेऊंगो। तब तुलसां ने कह्यौ, कछु संकोच मति करो, यह तो ज्ञाति को व्यौहार है। तब वैष्णव ने कह्यो, जो-सो तो साँच। पहले तो मेरे मन में ऐसी ही। परि अब तो आज्ञा भई है। तातें अब तो सखड़ी महाप्रसाद लेउंगो। तब तुलसां (ने) सखड़ी, अनसखड़ी दोऊ धरी, वैष्णव के आगे। पाछे वा वैष्णव ने सखड़ी प्रसाद लियो। प्रसाद ले वह वैष्णव अपने घर गयो। तब तुलसां मनमें बहोत प्रसन्न भई।

સેવા શૃંગાર કરવા લાગી. એટલામાં તે વૈષ્ણવ સવારે ન્હાઇને શ્રીઠાકુરજીની સેવાથી પહોંચીને તુલસાંના ઘરે આવ્યો. જ્યારે તુલસાં ભોગ સમર્પીને બહાર આવી, ત્યારે તે વૈષ્ણવને જયશ્રીકૃષ્ણ કર્યા. અને તુલસાંએ કહ્યું, કે ઉઠો સ્નાન કરો, ભગવદ્-સ્મરણ કરો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, હું સ્નાન કરી અપરસમાં જ આવ્યો છું. (તથા કોઇ વાર્તામાં એ પણ છે, કે સ્નાન કરી તિલક-મુદ્રા કરી ભગવદ્-સ્મરણ કર્યું.). સમય થયે તુલસાંએ રાજભોગ સરાવ્યો આરતી કરી. વૈષ્ણવે દર્શન કર્યાં. પછી તુલસાં શ્રીઠાકુરજીને અનોસર કરી બાહર આવી. અને તે વૈષ્ણવને પ્રસાદની પાતર ધરી. તેમાં પૂરી, બુરો, (ખાંડ), દહીથરા અને અથાણું ધર્યું. અને કહ્યું, કે પ્રસાદ લો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે આ નહીં લઉં. સખડી મહાપ્રસાદ ધરો, લઇશ. ત્યારે તુલસાંએ કહ્યું, કંઈ સંકોચ ન કરો. આ તો જ્ઞાતિનો વ્યવહાર છે. ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે એ તો સાચું, પહેલા તો મારા મનમાં એમ જ હતું. પરંતુ હવે તો આજ્ઞા થઈ છે. તેથી હવે તો સખડી મહાપ્રસાદ લઈશ. ત્યારે તુલસાંએ સખડી, અનસખડી બન્ને ધરી, વૈષ્ણવના આગળ. પછી તે વૈષ્ણવે સખડી મહાપ્રસાદ લીધો. પ્રસાદ લઇ તે વૈષ્ણવ પોતાને ઘર ગયો. ત્યારે તુલસાં મનમાં બહુ જ પ્રસન્ન થઈ.

और काम परवसतें कोई लादे, जो–मारे तब करे। तैसें हमहू प्रीति खानपान में है। सेवा लोगन की निंदा भये तें है, जो–बड़े पद्मनाभदास की संतति, सेवा नाहीं करत। या प्रकार लोगन की प्रतिष्ठा अर्थ। तातें हमकों कहा अनुभव जतावें? सूरदासजी नें गायो है। "सूर अधमकी कौन चलावें उदर भरे अरु सोये"। ऐसे अधम जो हैं, तिनकी बात नाहीं करनी। जो–सरीर को सुख चाहत है। या प्रकार के हम हैं। परंतु श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ को पाठ सदा करियत है। ताको भाव यह, जो–ऐसेहू अधमकों श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ मात्र कहे। भावहू न जानत होइ तो पाठही के किये तें श्रीठाकुरजी सगरो अनुभव जतावे। तातें यह कहि अपनो पुरुषारथ नाहीं कहे। श्रीआचार्यजी को प्रताप कहे, जो–उनके ग्रन्थ के पाठतें कृपा प्रभु करत हैं। या प्रकार प्रेम में लपेटे वचन तुलसां के सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदय भरि आयो।

ऐसी भगवदीय तुलसां हती। जिनके ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। सो कहां तांई कहिये।

※ ※ ※

કામ. બીજું કામ પરવશથી કોઇ બલાત્કારે લાદે કે મારે તો કરે. તેમ અમારી પણ પ્રીતિ ખાનપાનમાં છે. સેવા લોકોની નિંદા થાય તે માટે છે. કે (આવા) મોટાં પદ્મનાભદાસની સંતતી (થઇને) સેવા નથી કરતી? આ પ્રકારે લોકોની પ્રતિષ્ઠા અર્થે. તેથી અમને શો અનુભવ જણાવે? સૂરદાસજીએ ગાયું છે, કે "સૂર અધમની કોન ચલાવે ઉદર ભરે અરૂ સોયે" એવા અધમ જે છે તેની વાત ન કરવી, જે શરીરનું સુખ ચાહે છે. આ પ્રકારનાં અમે છીએ. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થોનો પાઠ સદા કરીએ છીએ. તેનો ભાવ એ કે એવા અધમને પણ શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થ માત્ર કહ્યા. ભાવ પણ ન જાણતો હોય તો પાઠ કર્યાથી પણ શ્રીઠાકુરજી સઘળો અનુભવ જણાવે. તેથી એ કહી પોતાનો પુરુષાર્થ ન કહ્યો. શ્રીઆચાર્યજીનો પ્રતાપ કહ્યો, કે એમના ગ્રન્થના પાઠથી કૃપા પ્રભુ કરે છે. આ પ્રકારે પ્રેમમાં લપેટેલાં વચન તુલસાંનાં સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીનું હૃદય ભરી આવ્યું.

એવી ભગવદીય તુલસાં હતી. જેના ઉપર શ્રીગુસાંઇજી સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નહીં. તે ક્યાં સુધી કહીએ?

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास के बेटा ताकी बहू पारवती तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए राजसी भक्त है। पद्मनाभदास तो चंपकलता अष्टसखीन में। तिनकी सखी सुचरिता, सो इहां पुरुषोत्तमदास मेहरा क्षत्री भये। सो सुन्दर चरित्र सबकों सुखरूप कार्य के करता हैं, ए। और सुचरिता की सखी रूपविलासिनी है। सो यहां पारवती भई। सो लीला में पारवती को रूप बहोत सुन्दर हतो। सो राजसी है। अपनो रूप बहोत सँवारती। सो रूप के गर्व तें लीला सों गिरी।

वार्ता-प्रसंग १—सो पारवती श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती। पुरुषोत्तमदास मेहरा इनकों नीकी भांति सों जानते। सो जब कन्नौज जातें तब याके घर उतरते। सो एक समें पुरुषोत्तमदास मेहरा कन्नौज आइ, अड़ेल श्रीगुसांईजी के दरसन कों गये। यहां पारवती के हाथ पांव सुफेद भये। तब ग्लानि दैन्यता भई। तब अपने पूर्व स्वरूप की हू खबरि परी, जो-मैं पुरुषोत्तमदास की सखी हों। मेरो काम इनद्वारा होयगो। तब पत्र पुरुषोत्तमदास कों लिख्यो, जो-मेरी बिनती तुम श्रीगुसांईजी सों करियो। मेरी देह को यह प्रकार भयो है। तातें मोकों सेवा करत पाक करत बहुत ग्लानि आवति है।

હવે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક પદ્મનાભદાસના બેટા, તેની વહુ પાર્વતી, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ રાજસી ભકત છે. પદ્મનાભદાસ તો ચંપકલતા અષ્ટસખીઓમાં (છે). તેની સખી સુચરિતા તે અહીં પુરુષોત્તમદાસ મહેરા ક્ષત્રી થયા. તે, સુન્દરચરિત્ર, બધાને સુખરૂપ કાર્યના કર્તા છે. એ અને સુચરિતાની સખી રૂપવિલાસિની છે. તે અહીં પાર્વતી થઇ. લીલામાં પાર્વતીનુ રૂપ બહુ સુંદર હતુ. એ રાજસી છે. પોતાનુ રૂપ બહુ સમ્હારતી. તે રૂપના ગર્વથી લીલામાંથી પડી.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—એ પાર્વતી શ્રીઠાકુરજીની સેવા સુંદર રીતિથી કરતી. પુરુષોત્તમદાસ મહેરા એને સુંદર રીતિથી જાણતા. તે જયારે કન્નોજ જતા, ત્યારે એના ઘર ઉતરતા. તે એક સમય પુરુષોત્તમદાસ મહેરા કન્નોજ આવી અડેલ શ્રીગુસાંઇજીના દર્શને ગયા. ત્યાં પાર્વતીના હાથ-પગ સફેદ થયા. ત્યારે ગ્લાની દૈન્યતા આવી. ત્યારે પોતાના પૂર્વ સ્વરૂપની પણ ખબર પડી. કે હું પુરુષોત્તમદાસની સખી છું. મારૂં કામ એમના દ્વારા થશે. ત્યારે પત્ર પુરુષોત્તમદાસને લખ્યો કે, મારી વિનતી તમે શ્રીગુસાંઇજીને કરજો. મારી દેહનો આ પ્રકાર થયો છે. તેથી મને સેવા કરતાં, પાક કરતા બહુ જ ગ્લાની આવે છે.

भावप्रकाश—ताको आशय यह है, जो–मैं (ने) श्रीठाकुरजी सों रूप को गर्व कियो ताको फल पायो। अब कब कृपा करेंगे सो श्रीगुसांईजी सों बिनती करि लिखिये।

यह पत्र पठायो, एक मोहौर श्रीगुसांईजी कों भेट पठाई। सो पत्र पुरुषोत्तमदास नें श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनायो। मोहौर आगे राखी। बिनती कीनी। तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदास कों कहे, जो–दिन दोई चारि में कहूंगो।

भावप्रकाश—सो यातें, जो–लीला में रूप को गर्व ता अपराध तें (यह) भयो। तथा औरहू कोई अपराध न होइ। सो विचारे। तब और अपराध नाहीं देखे।

फेर तीन दिन पाछे श्रीगुसांईजी ने पुरुषोत्तमदास सों कही। जो–पारवती कों पत्र लिखो, जो–थोरे दिन में सरीर को भोग निवृत्त होइगो। सेवा में ग्लानि मति करियो। श्रीठाकुरजी थोरे से दिन में तेरो रोग निवृत्त करेंगे। तब पुरुषोत्तमदास मेहरा ने पारवती कों पत्र लिख्यो। तामें श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के वचन कहे सो लिखि पठाये। सो पत्र पारवती के पास पहोंच्यो। सो पत्र बांचि पारवती प्रसन्नता सों सेवा करन लागी। सेवा करत ग्लानि मन में न लावे। पाछे महिना तीन चारि में हाथ पांव नीके भये।

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ છે કે, મેં શ્રીઠાકુરજીથી રૂપનો ગર્વ કર્યો, તેનું ફલ મળ્યું. હવે ક્યારે કૃપા કરશે તે શ્રીગુસાંઇજીને વિનતી કરીને લખો.

આ પત્ર મોકલ્યો. એક મોહોર શ્રીગુસાંઇજીને ભેટ મોકલી. તે પત્ર પુરુષોત્તમદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વાંચી સંભળાવ્યો. મોહોર આગળ રાખી, વિનતી કરી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પુરુષોત્તમદાસને કહે, કે દિવસ બે ચારમાં કહીશ.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી કે લીલામાં રૂપનો ગર્વ (કર્યો). તે અપરાધથી (આ) થયુ. તથા બીજો પણ કોઇ અપરાધ ન હોય તે વિચારે. ત્યારે બીજો અપરાધ ન જોયો.

ફરી ત્રણ દિવસ પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પુરુષોત્તમદાસને કહ્યું, કે પાર્વતીને પત્ર લખો, કે થોડા દિવસમાં શરીરનો ભોગ નિવૃત્ત થશે. સેવામાં ગ્લાની ન કરતી. શ્રીઠાકુરજી બહુ થોડા દિવસમાં તારો રોગ નિવૃત્ત કરશે. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસ મહેરાએ પાર્વતીને પત્ર લખ્યો. તેમાં શ્રીગુસાંઇજીના શ્રીમુખનાં વચન કહ્યાં. તે લખી મોકલ્યાં. તે પત્ર પાર્વતીની પાસે પહોંચ્યો. તે પત્ર વાંચીને પાર્વતી પ્રસન્નતાથી સેવા કરવા લાગી. સેવા કરતાં ગ્લાની મનમાં ન લાવે. પછી મહીના ત્રણ ચારમાં હાથ-પગ સારા થયા.

तब पारवती बहोत प्रसन्नतासों सेवा करन लागी। तब फेर श्रीगुसांईजी कों पत्र लिखि, पुरुषोत्तमदास मेहरा की पास पठायो। तामें लिखी, जो-महाराज के प्रताप तें नीकी भई हों। और भेट पठाई। सो पुरुषोत्तमदास मेहरा ने श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनायो। तब श्री गुसांईजी बहोत प्रसन्न भये। सो पारवती ऐसी भगवदीय हती, जो-प्रभुन की आज्ञा प्रमाण चलती, तातें श्रीगुसांईजी सदा इनके ऊपर प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। सो कहां तांई कहिये।

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास के नाती, पारवती को बेटा रघुनाथदास, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—पारवती लीला में रूपविलासिनी राजसी भक्त और रघुनाथदासको नाम गुनाभिरान्या। इनमें गुन बहोत, जो-कोई और सों एक दिन में काम होइ सो एक घरि में यह करें। सो ए तामसी है। सो दोऊ सुचरिता की सखी बराबरि की है। पुरुषोत्तमदास मेहरा की दोऊ आज्ञाकारिनी हैं।

वार्ता-प्रसंग १—सो रघुनाथदास कासी गये। तहां बहोत शास्त्र पढ़ि के श्रीगोकुल आये। श्रीगुसांईजी के दरसन किये।

ત્યારે પાર્વતી બહુ જ પ્રસન્નતાથી સેવા કરવા લાગી. ત્યારે ફરી શ્રીગુસાંઇજીને પત્ર લખી પુરુષોત્તમદાસ મહેરાની પાસે મોકલ્યો. તેમાં લખ્યું, કે મહારાજના પ્રતાપથી (હું) સારી થઇ છું. અને ભેટ મોકલી. તે (પત્ર) પુરુષોત્તમદાસ મહેરાએ શ્રીગુસાંઇજીને વાંચી સંભળાવ્યો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી બહુ જ પ્રસન્ન થયા. તે પાર્વતી એવી ભગવદીય હતી. જે, પ્રભુની આજ્ઞા-પ્રમાણ ચાલતી. તેથી શ્રીગુસાંઇજી સદા એના ઉપર પ્રસન્ન રહેતા. તેથી એની વાર્તાનો પાર નહીં. તે ક્યાં સુધી કહીએ?

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક પદ્મનાભદાસના નાતી, પાર્વતીના બેટા, રઘુનાથદાસ, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—પાર્વતી લીલામાં રૂપવિલાસિની રાજસી ભક્ત (છે). અને રઘુનાથદાસનું નામ ગુનાભિરાન્યા (છે). એમાં ગુણ બહુ છે. જે, કોઇ અન્યથી એક દિવસમાં કામ થાય તે એ એક ઘડીમાં કરે. એ તામસી છે. તે બન્ને સુચરિતાની સખી બરાબરીની છે. પુરુષોત્તમદાસ મહેરાની બન્ને આજ્ઞાકારિણી છે.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—તે રઘુનાથદાસ કાશી ગયા. ત્યાં બહુ જ શાસ્ત્ર ભણીને શ્રી-ગોકુલ આવ્યા. શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન કર્યાં. દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ

दंडोत करी। तब श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी के सेवक जानि (के) बहोत आदर सन्मान किये। आप कथा सुबोधिनीजी की कहते। तब रघुनाथदास कों आगे बैठावते। सो एक दिन परमानंद सोनी ने रघुनाथदास सों पूछी, जो–तू तो कासी में बहोत शास्त्र पढ्यो है। सो आज श्रीगुसांईजी ने कहा कथा कही है, सो कहो।

भावप्रकाश—श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास की सखी जानि रघुनाथदास को बहोत आदर करते। और परमानंददास को नाम लीला में चंद्रका है। चंद्रमा की उजियारीवत् इनकी देह की कांति है। श्रीगुसांईजी (श्रीचंद्रावलीजी) अनेक चंद्रमारूप तिनकी अंतरंगिनी यह है। तातें रघुनाथदास सों कटाक्ष के वचन कहे।

तब रघुनाथदास ने परमानंद सोनी सों कह्यो, जो–तुम सांच पूछो तो मैं कछू समुझत नाहीं। श्रीआचार्यजी के मारग की परिपाटी और मारग की बात नाहीं जानत हों। रघुनाथदास को मान सब मर्दन व्हे गयो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–शास्त्रादिक वेद पुरान के पढे तें श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ को सिद्धान्त जान्यो न जाइ। कृपा ही को मारग है। सो कृपा ही तें जान्यो जाइ।

શ્રીઆચાર્યજીના સેવક જાણીને બહુ જ આદર સન્માન કર્યું, પોતે કથા શ્રીસુબોધિનીજીની કહેતા. ત્યારે રઘુનાથદાસને આગળ બેસાડતા. તે એક દિવસ પરમાનંદ સોનીએ રઘુનાથદાસને પૂછ્યું, કે તું તો કાશીમાં બહુ શાસ્ત્ર ભણ્યો છે. તે આજ શ્રીગુસાંઇજીએ શી કથા કહી છે? તે કહો.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીગુસાંઇજી શ્રીઆચાર્યજીના સેવક પદ્મનાભદાસની સખી જાણી, રઘુનાથદાસને બહુ આદર કરતા. અને પરમાનંદદાસનુ નામ લીલામાં ચંદ્રિકા છે. ચંદ્રમાની ઉજિયાળીવત્ એમના દેહની કાંતિ છે. શ્રીગુસાંઇજી (શ્રીચંદ્રાવલીજી) અનેક ચંદ્રમારૂપ તેમની અંતરંગિની આ છે. તેથી રઘુનાથદાસને કટાક્ષનાં વચન કહ્યાં.

ત્યારે રઘુનાથદાસે પરમાનંદ સોનીને કહ્યું, કે તમે સાચું પૂછો તો હું કંઈ સમજતો નથી. શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગની પરિપાટી અને માર્ગની વાર્તા નથી જાણતો. (એમ) રઘુનાથદાસનું માન બધું મર્દન થઈ ગયું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જતાવ્યું, કે શાસ્ત્રાદિક વેદપુરાણના ભણ્યાથી શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થનો સિદ્ધાન્ત જાણ્યો ન જાય. કૃપાનો જ માર્ગ છે. તે કૃપાથી જ જાણ્યું જાય.

पाछे परमानंद सोनी नें श्रीगुसांईजी सों कही, जो–महाराज! रघुनाथदास तो कछू समुझत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी ने रघुनाथदास कों चारि ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़ाए (और) मारग की प्रणालिका कही।

१ 'सिद्धान्तरहस्य' ग्रन्थ में सगरे मारग को सिद्धान्त बताए। २ 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थ में एक आश्रय दृढ़ करि दिये। ३ 'नवरत्न' ग्रन्थ में लौकिक वैदिक चिंता दूरि करि दीनी। ४ 'सेवाफल' में सेवा को फल बताइ दिये। पाछे रघुनाथदास समुझन लागे। श्रीगुसांईजी की कथा को भेद लीला को प्रकार सब जानन लागे। बड़े पंडित भये।

वार्ता-प्रसंग २—सो केतेक दिन पाछे कन्नौज में अपने घर आज्ञा मांगि के आये। भगवत्सेवा में ममत्व बढ्यो। तब माता पारवती सों कह्यो, जो–हौंतो न्यारो होउंगो। श्रीठाकुरजी की सेवा करोंगो।

भावप्रकाश—यह कहेवे में अभिप्राय यह है, जो–पारवती और रघुनाथदास बराबरि की सखी हैं। तामें पारवती राजसी है। और रघुनाथदास तामसी भक्त है। सो पारवती ने श्रीठाकुरजी वस किये हैं, सेवा करि के। सो भेद रघुनाथदास ने देख्यो। सो एऊ बराबरि के तामसी। सो सह्यो न गयो,

---

પછી પરમાનંદ સોનીએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ! રઘુનાથદાસ તો કંઈ સમજતો નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ રઘુનાથદાસને ચાર ગ્રન્થ અર્થસહિત ભણાવ્યા. (અને) માર્ગની પ્રણાલિકા બધી કહી.

'સિદ્ધાંત રહસ્ય' ગ્રન્થમાં સઘળો માર્ગનો સિદ્ધાંત બતાવ્યો, 'કૃષ્ણાશ્રય' ગ્રન્થમાં એક આશ્રય દૃઢ કરી દીધો. ૩ 'નવરત્ન' ગ્રન્થમાં લૌકિક વૈદિક (ની) ચિંતા દૂર કરી દીધી ૪ 'સેવાફલ'માં સેવાનું ફલ બતાવી દીધું. પછી રઘુનાથદાસ સમજવા લાગ્યા. શ્રીગુસાંઇજીની કથાનો ભેદ લીલાનો પ્રકાર બધું જાણવા લાગ્યા. મોટા પંડિત થયા.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—તે કેટલાક દિવસ પછી કન્નૌજમાં પોતાના ઘર આજ્ઞા માંગીને આવ્યા. ભગવત્સેવામાં મમત્વ વધ્યું. ત્યારે માતા પાર્વતીને કહ્યું, કે હું તો અલગ થઈશ. શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરીશ.

ભાવપ્રકાશ—એ કહેવાનો અભિપ્રાય એ છે, કે પાર્વતી અને રઘુનાથદાસ બરાબરની સખી છે. તેમાં પાર્વતી રાજસી છે અને રઘુનાથદાસ તામસી ભક્ત છે. તે પાર્વતીએ શ્રીઠાકુરજીને વશ કર્યા છે. સેવા કરીને. તે ભેદ રઘુનાથદાસે જોયો.

जो-मेरे श्रीठाकुरजी इनने मन लगाइ के बस किये हैं, सो अब मैं बस करों। तातें पारवती तें कहें, मैं न्यारो होइ के सेवा करूंगो।

तब पारवती ने कही, जो-भलेही सेवा करि। प्रीति काहू के बांटे में नाहीं। श्रीआचार्यजी की कृपा ते होइगी। पाछे रघुनाथदास न्यारे भये। सो वाकी माता पारवती जल भरि लावे। पात्र मांजे। श्रीठाकुरजी की परचारगी सब करि पाछे अपने न्यारे घर में आय अकेली लीटी करि के भाव सों भोग धरे। पाछे जल के घूंट सों उतार के लेइ। श्रीठाकुरजी की सेवा शृंगार बिना सगरो राजस खानपान देह सुख सब त्याग कियो। या भांति सों करत दिन द्वै चारि बीते। पाछे श्रीमथुरानाथजी ने कह्यो, तू धन्य है, मेरी सेवा नाहीं छोड़ी। अपनो सुख सब छोडे। मन में तापहू बहुत कियो। अब तू कबहू तो दारि करि। मेरो गरो अकेली लीटी लेत खरखरात है। तब पारवती ने कह्यो, जो-महाराज! तुम तो रघुनाथदास के इहां दारि भात खीरि आदि सब सालन सामग्री नित्य अरोगत हो। गरो क्यों खरखरात है? तब श्रीठाकुरजीने पारवती सों कह्यो, जो-मोकों तो तेरो कियो भावत है। तातें लीटी अकेली आरोगत हों।

તે એ પણ બરાબરીના, તામસી. તે સહન થયુ નહી. કે મારા શ્રીઠાકુરજી (ને) એમણે મન લગાડીને વશ કર્યા છે. તે હવે હુ વશ કરૂ. તેથી પાર્વતીને કહે, હુ અલગ રહીને સેવા કરીશ.

ત્યારે પાર્વતીએ કહ્યું, કે ભલે, સેવા કર. પ્રીતિ કોઇના ભાગમાં નથી. શ્રી-આચાર્યજીની કૃપાથી થશે. પછી રઘુનાથદાસ અલગ થયા. તે એની માતા પાર્વતી જલ ભરી લાવે પાત્ર માંજે-શ્રીઠાકુરજીની પરચારગી બધી કરે. પછી પોતાના ઘરમાં આવી એકેલી લીટી (ઘઉં ચણાની પીળી રોટી) કરીને ભાવથી ભોગ ધરે. પછી જલના ઘૂંટથી ઉતારીને લે. શ્રીઠાકુરજીની સેવા શૃંગાર વિના સઘળું રાજસ ખાનપાન દેહસુખ બધુ ત્યાગ કર્યું. એ પ્રકારે રહેતાં બેચાર દિવસ વીત્યા. પછી શ્રીમથુરા-નાથજીએ કહ્યું, તૂ ધન્ય છે, મારી સેવા ન છોડી. પોતાનું સુખ બધું છોડયું. મનમાં તાપ પણ ઘણો કર્યો. હવે તૂ કોઇક વખત તો દાળ કર. મારૂં ગળું એકલી લીટી લેતાં છોલાય છે. ત્યારે પાર્વતીએ કહ્યું, કે, મહારાજ! તમે તો રઘુનાથદાસને ત્યાં દાળ, ભાત, ખીર, આદિ બધું શાક-સામગ્રી નિત્ય આરોગો છો. ગળું કેમ છોલાય છે? ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પાર્વતીને કહ્યું, કે મને તો તારૂં કર્યું ભાવે છે. તેથી લીટી એકેલી આરોગુ છુ.

भावप्रकाश—यह कहि (यह) जताए, जो-प्रीति की लीटी मोकों प्रिय है। अहंकार करि छप्पनभोग प्रिय नाहीं हैं। रघुनाथदास के इहांहू आरोगत हों। श्रीआचार्यजी की कानि तें। परंतु तेरो कियो बहोत भावत है। यह कहि यह जताए, जो-भक्तजन सुख लेइ श्रीठाकुरजी लिये जानिए। और इतनो कहे पारवती सों, सो पारवती के लिये। जो-मैं अपने गरे को नाम लेउंगो, तब यह सगरी सामग्री करेगी। पाछें प्रसाद लेइगी। तब मोकों सुख होइगो।

या प्रकार पारवती को सुख विचारे। तब पारवती सगरी सामग्री अपने घर करन कों दौरी आवती। दारि, भात, सालन सब करती। पारवती ने विचार्यो, जो-ठाकुरजी सुखी होइ सो करनो।

पाछे रघुनाथदास कछूक दिन सेवा करी। पाछे ज्ञान भयो। जो-पारवती की सेवा अहंकार करि छुड़ाई। तातें प्रभु मोपर अप्रसन्न हैं। तातें भगवदीय सों मिलि के चलूंगो, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइंगे। अहंकार किये मेरी यहू सेवा जाइगी। यह ज्ञान श्रीगुसांईजी ने मारग को सिद्धान्त बतायो हतो, तातें उनकी कृपा तें भयो। तब रघुनाथदास पारवती सों कहे, माता! अब तुम ही सेवा करो। तुम आज्ञा करो सो मैं करूं। मैं चूक्यो। तब पारवती

ભાવપ્રકાશ—એ કહી (એ) જતાવ્યું, કે પ્રીતિની લીટી મને પ્રિય છે. અહંકાર કરી છપ્પનભોગ પ્રિય નથી. રઘુનાથદાસને ત્યાં પણ આરોગુ છું. શ્રીઆચાર્યજીની કાંનિથી, પરંતુ તારી કરી (સામગ્રી) બહુ રુચે છે. એ કહી, એ જતાવ્યું, કે ભક્તજન સુખ લે(એ) શ્રીઠાકુરજી(એ) લીધું જાણીએ. અને એટલું કહ્યું પાર્વતીને, તે પાર્વતીને માટે. કે, હું મારા ગળાનુ નામ લઇશ તો બધી સામગ્રી કરશે. પછી પ્રસાદ લેશે. ત્યારે મને સુખ થશે.

આ પ્રકારે પાર્વતીનું સુખ વિચાર્યું. ત્યારે પાર્વતી બધી સામગ્રી પોતાના ઘરે કરવાને દોડી આવતી. દાળ, ભાત, શાક બધું કરતી. પાર્વતીએ વિચાર્યું, કે શ્રીઠાકુરજી સુખી થાય તેમ કરવું.

પછી રઘુનાથદાસે કેટલાક દિવસ સેવા કરી. પછી જ્ઞાન થયું, કે પાર્વતીની સેવા અહંકાર કરી છોડાવી. તેથી પ્રભુ મારા ઉપર અપ્રસન્ન છે. તેથી ભગવદીયથી મળીને ચાલીશ તો શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થશે. અહંકાર કરવાથી મારી આ સેવા પણ જશે. આ જ્ઞાન શ્રીગુસાંઇજીએ માર્ગના સિદ્ધાંત બતાવ્યો હતો. તેથી એમની કૃપાથી થયું. ત્યારે રઘુનાથદાસ પાર્વતીને કહે, (કે) માતા! હવે તમે જ સેવા કરો. તમે

कों कछु ईरष्या तो नाहीं। सुद्ध भक्त है। सो प्रसन्न होइ रसोई करन लागी। रघुनाथदास सों श्रृंगारादि करावे। या प्रकार ऐसें करत पारवती के संग करि रघुनाथदास कों प्रीति भई। तब दोऊन कों बराबरि अनुभव होन लाग्यो। या प्रकार पद्मनाभदास को परिवार अलौकिक भयो। या प्रकार वैष्णव सात भये। परंतु पद्मनाभदास के कुटुंब सहित वार्ता एक जाननी, तातें वैष्णव ४ भये। वार्ता ॥४॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रजो क्षत्राणी
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो रजो क्षत्राणी लीला में ललिताजी की सखी है। इनको नाम रतिकला है। रति, जो-प्रीति ताकी कला। अथवा रति, जो-विहार ताकी कला, जो-जिनकों श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को विहार सिद्ध हो। यही भाव में मगन हैं। और जानत ही नाहीं। श्रीस्वामिनीजी के लिये नाना प्रकार की सामग्री करनी। निकुंजादिक में रात्रि कों दूधादिक अरोगावनो। यह ललिताजी की सेवा है। तातें यहांहू रजो कों यह नेम, जो-रात्र की सामग्री

આજ્ઞા કરો તે હું કરૂં. હું ચૂક્યો. ત્યારે પાર્વતીને કંઈ ઇર્ષ્યા તો હતી નહીં. શુદ્ધ ભક્ત છે. તે પ્રસન્ન થઇ રસોઇ કરવા લાગી. રઘુનાથદાસ પાસે શૃંગારાદિ કરાવે. આ પ્રકારે એમ કરતાં પાર્વતીના સંગથી રઘુનાથદાસને પ્રીતિ થઈ. ત્યારે બન્નેને બરાબર અનુભવ થવા લાગ્યો. આ પ્રકારે પદ્મનાભદાસનો પરિવાર અલૌકિક થયો. આ પ્રકાર વૈષ્ણવ સાત થયા. પરંતુ પદ્મનાભદાસના કુટુંબસહિત વાર્તા એક જાણવી. તેથી વૈષ્ણવ ૪ થયા. વાર્તા ॥ ૪ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવક રજો ક્ષત્રાણી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—તે રજો ક્ષત્રાણી લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ રતિકલા છે. રતિ જે પ્રીતિ તેની કલા. અથવા રતિ જે વિહાર તેની કલા, કે જેમને શ્રીઠાકુરજી, શ્રીસ્વામિનીજીનો વિહાર સિદ્ધ હતો. આ ભાવમાં મગન છે. બીજું જાણતાં જ નથી. શ્રીસ્વામિનીજીને માટે નાના પ્રકારની સામગ્રી કરવી. નિકુંજાદિકમાં રાત્રિએ દૂધાદિક આરોગાવવું એ લલિતાજીની સેવા છે. તેથી અહીં પણ રજોને એ નેમ કે રાત્રિની સામગ્રી નિત્યનેમથી શ્રીઆચાર્યજીને આરોગાવવી. તે લીલામાં રતિ-કલાને બહુ તાપ હતો. જે શ્રીસ્વામિનીજીને પીરસું એવું ભાગ્ય મારૂં ક્યારે થશે?

नित्य नेम सों श्रीआचार्यजी कों आरोगावनो। सो लीला में रतिकला कों वहोत ताप हतो ! जो–श्रीस्वामिनीजी कों परोसों (ऐसो) भाग्य मेरो कब होय ? काहेतें, (जो) अरोगावनो सो ललिता की सेवा है। सो कैसें मिले ? ललिताजी तो अत्यंत प्रिय मध्याजी हैं। सगरी लीला की सिद्धि करता। सो ताप रतिकला के हृदय को है। (सो) अब श्रीआचार्यजी (श्रीस्वामिनीजी) मनोरथ पूरन करें, ताप मिटाए। काहेतें ? नारायणदास ब्रह्मचारी ब्राह्मन हते। तिनकी करी खीरि श्रीगोकुलचंद्रमाजी खीरि लेवे कों श्रीआचार्यजी सों कहे। तब श्रीआचार्यजी कहे, पाक कैसें लियो जाइ ? पाछे श्रीगोकुलचंद्रमाजी के ग्रन्थ (वाक्य) तें लिये।

और इहां रजो क्षत्राणी हती। ताकी अनसखड़ी आप नित्य नेम सों लेते। सो लीला संबंध को भाव विचारि के। तथा रजो एकांगी अनन्य भक्त के बस होइके, सो प्रेमके भरतें मर्यादा छूटि जाय। यामें रजो को प्रेम जताए। रजो के प्रेमतें मर्यादा स्वरूप को तिरोधान होइ जातो। लीला रस में मगन होइ सामग्री अंगीकार करें।

वार्ता-प्रसंग १—**सो रजो नित्य पकवान सामग्री करि रात्रकों ले आवती। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन आरोगते। वाके नेम हतो।**

કેમકે આરોગાવવું એ લલિતાજીની સેવા છે. તે કેમ મળે ? લલિતાજીતો અત્યંત પ્રિય મધ્યાજી છે. સઘળી લીલાની સિદ્ધિ કર્તા. તે તાપ રતિકલાના હૃદયનો છે. તે હવે શ્રીઆચાર્યજી (શ્રીસ્વામિનીજી) એ મનોર્થ પૂર્ણ કર્યો, તાપ મટાયો. કેમકે ? નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી બ્રાહ્મણ હતા. તેમની કરી ખીર, શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીએ ખીર લેવા માટે શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, પાક કેમ લઇ શકાય ? પછી શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીના વાકયથી લીધો.

અને અહીં રજો ક્ષત્રાણી હતી. તેની અનસખડી પોતે નિત્ય નેમથી લેતા, તે લીલા સબંધનો ભાવ વિચારીને. તથા રજો એકાંગી અનન્ય ભક્તના વશ થઇને. તે પ્રેમના ભરથી મર્યાદા છુટી જાય. એમાં રજોનો પ્રેમ જતાવ્યો. રજોના પ્રેમથી મર્યાદા સ્વરૂપનું તિરોધાન થઈ જતું. લીલા રસમાં મગન થઇ સામગ્રી અંગીકાર કરે.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—તે રજો નિત્ય પકવાન સામગ્રી કરી રાત્રિએ લઇ આવતી. તે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી આરોગતા એને નેમ હતો. તે એક દિવસ લક્ષ્મણ ભટ્ટનો

सो एक दिन लक्ष्मन भट्ट को श्राद्ध दिन हतो। सो श्री-आचार्यजी ने ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हते। तहां घृत थोरो सो चहियत हतो। तब श्री आचार्यजी ने एक वैष्णव सों कह्यो, जो-रजो के इहां ते घृत ले आवो। सो एक वैष्णव जाइ के रजो सों कह्यो, जो-श्रीआचार्यजी ने घृत मँगायो है। तब रजोने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-घृत काहेकों मँगायो है? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो-लक्ष्मण भट्टजी को श्राद्ध दिन आज है। सो ब्राह्मण भोजन कों बुलाए हैं तहां घृत घट्यो है। सो तातें मँगायो है। तब रजो ने कह्यो, जो-घृत मेरे नाहीं है, जाय कहियो। तब वैष्णव फिरि आयो। और श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! रजो के घृत नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहे। जो-एकबार तू फेरि जा। खीजि के कहियो जो घृत दे। तब वह वैष्णव फेरि आयो। रजो सों कह्यो, जो-श्री-आचार्यजी खीझत हैं। तातें घी देउ। तोहू रजो ने घृत दीनो नाहीं। कह्यो, मेरे घृत नाहीं है, कहां ते देऊं? तब वैष्णव फिरि आय श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! रजो घृत नाहीं देत। पाछे और ठौरतें घी मंगाइ काम चलायो। पाछे रात्र भई। तब रजो सामग्री सिद्ध करि श्रीआचार्यजी के पास आई। तब श्रीआचार्यजी पीठि दे बैठे। तब रजोने कह्यो, जो-महाराज, जीव तो दोष ते भर्यो है। अपराध

શ્રાદ્ધ દિવસ હતો. તે શ્રીઆચાર્યજીએ બ્રાહ્મણો (ને) ભોજન અર્થે બોલાવ્યા હતા. ત્યાં ઘી થોડુંક જોઇતું હતું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એક વૈષ્ણવને કહ્યું, કે રજોને ત્યાંથી ઘી લઈ આવો. તે એક વૈષ્ણવે જઇને રજોને કહ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજીએ ઘી મંગાવ્યું છે. ત્યારે રજોએ તે વૈષ્ણવને કહ્યું, કે ઘી શા માટે મંગાવ્યું છે? ત્યારે તે વૈષ્ણવવે કહ્યું, કે લક્ષ્મણ ભટ્ટજીનો શ્રાદ્ધ દિન આજે છે. તે બ્રાહ્મણ (ને) ભોજન (અર્થે) બોલાવ્યાં છે ત્યાં ઘી ઘટ્યું છે. તેથી મંગાવ્યું છે. ત્યારે રજોએ કહ્યું, કે ઘી મારે નથી, જઇ કહેજે. ત્યારે વૈષ્ણવ પાછો આવ્યો, અને શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે, મહારાજ! રજોને (ત્યાં) ઘી નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે એકવાર તૂ ફરી જા. ખીજીને કહેજે, કે ઘી દે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ફરીને આવ્યો. રજોને કહ્યું, કે શ્રી-આચાર્યજી ખીજે છે તેથી ઘી દે. તોપણ રજોએ ઘી દીધું નહીં. કહ્યું, મારે ઘી નથી. ક્યાંથી દઉં? ત્યારે વૈષ્ણવ (એ) પાછા આવીને શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે, મહારાજ! રજો ઘી નથી આપતી. પછી બીજી જગાએથી ઘી મંગાવી કામ ચલાવ્યું. પછી રાત્રિ થઇ. ત્યારે રજો સામગ્રી સિદ્ધ કરી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી. ત્યારે શ્રીઆચા-ર્યજી પીઠ દઇ બેઠા. ત્યારે રજોએ કહ્યું, મહારાજ! જીવ તો દોષથી ભર્યો છે. અપ-

कहा, जो-आप दरसन नाहीं देत? तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-आज लक्ष्मण भट्टजी को श्राद्ध हतो। सो तेंनें घृत क्यों नाहीं दीनो? तब रजोने कही, मेरे घी नाहीं हतो। तव श्रीआचार्यजी ने कही, सामग्री कहाँ ते करि लाई? तब रजोने कही, महाराज! आपु के घर में हू घी हतो क्यों नाहीं लिये? तब श्रीआचार्यजी कहे, उह तो श्रीठाकुरजी को हतो। वामें ते कैसें लियो जाई? तब रजो ने कही, मेरे घर में कौन है? श्रीठाकुरजी तें अधिक आपको स्वरूप है। सो आपकी लीला-संबंधी सामग्री में तें श्राद्ध में कैसे दूं? और मैं लक्ष्मन भट्टकी लोंड़ी नाहीं हों। मैं तो आपकी लोंड़ी हों, आप मेरी परीक्षा लेन अर्थ घी मंगायो। सो पहले वैष्णव पठायो तब तो लौकिक आवेस सों घी घटयो। तब आपु कहे, रजो सों ले आवो। यह लौकिक प्रवाह आज्ञा जानि के मैंने घी की नाहीं करी। सो पाछें आपु यह मनमें विचारे, जो-श्राद्ध के लिये ब्राह्मण भोजन में वेगे चाहिये। फेरि जो उह वैष्णव आईकें कह्यो, जो-खीजि के कहे घी देहू। तब मैं मर्यादा जानी। जो-पुष्टि कार्य में क्रोध को प्रयोजन है नाहीं। काहेतें, भावही सों सगरी वस्तु सिद्ध है। और मर्यादा में तो वेड वस्तु बिना कर्मको नास होई। (वस्तु तें) पूरनता है। तातें

રાધ શા? કે આપ દર્શન નથી દેતા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે આજ લક્ષ્મણ ભટ્ટજીનું શ્રાદ્ધ હતું. તેં ઘી કેમ નહીં આપ્યું? ત્યારે રજોએ કહ્યું, મારે ઘી ન હતું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, સામગ્રી ક્યાંથી કરી લાવી? ત્યારે રજોએ કહ્યું, મહારાજ! આપના ઘરમાં પણ ઘી હતું, કેમ નહીં લીધું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તે તો શ્રીઠાકુરજીનું હતું. તેમાંથી કેમ લેવાય? ત્યારે રજોએ કહ્યું, મારા ઘરમાં કોણ છે? શ્રીઠાકુરજીથી અધિક આપનું સ્વરૂપ છે, તે આપની લીલા-સંબંધી સામગ્રીમાંથી શ્રાદ્ધમાં કેમ દઉં? અને હું લક્ષ્મણ ભટ્ટજીની લુંડી નથી. હું તો આપની લુંડી છું. આપે મારી પરીક્ષા લેવા માટે ઘી મંગાવ્યું. તે પહેલા વૈષ્ણવ મોકલ્યો, ત્યારે તો લૌકિક આવેશથી ઘી ઘટ્યું. ત્યારે આપ કહે, રજો પાસેથી લઈ આવો. આ લૌકિક પ્રવાહ આજ્ઞા માનીને મેં ઘીની ના કહી. પછી આપે એ મનમાં વિચાર્યું, કે શ્રાદ્ધને માટે બ્રાહ્મણ-ભોજનમાં જલ્દી જોઇએ. ફરી તે વૈષ્ણવે આવીને કહ્યું, કે ખીજીને કહ્યું (છે), ઘી દે. ત્યારે મેં મર્યાદા જાણી. (કેમ) જે પુષ્ટિકાર્યમાં ક્રોધનું પ્રયોજન નહીં. કેમકે ભાવથી જ બધી વસ્તુ સિદ્ધ છે. અને મર્યાદામાં તો તે વસ્તુ વિના કર્મનો નાશ થાય. (વસ્તુથી) પૂર્ણતા છે. તેથી વસ્તુને માટે ક્રોધ છે કેમ? એ વસ્તુ આવશ્યક જોઇએ.

वस्तु के लिये क्रोध है। जो–यह वस्तु आवश्यक चाहिये। तातें मर्यादा की आज्ञा हु नाहीं माने। और मर्यादा के कार्यार्थ घी हू नाहीं दियो। पाछें तीसरे पुष्टि के आवेस ते मांगते तो मैं घी देती। और आपको घी मंगावनो हतो। (तो) इतनो उह वैष्णव सों कहि देते, जो–रजो सों कहियो। तेरे पुष्टि–धर्म में हानि नाहीं है, घी दीजो। तो मैं काहे कों फेरती? और महाराज! जानि बूझि के कूआ में कैसे परूं? आपु की कृपा तें इतनो ज्ञान भयो तब मैं घी नाहीं दियो। आपु तो बुद्धि प्रेरक हो। मेरे हृद्य में बैठि के घी देवे की नाहीं कहे। उहां के घी मंगाये। सो मैं बिना मोल की दासी हों। आपु कृपा करिये।

भावप्रकाश—याही तें शिक्षापत्र में कह्यो है। श्रीठाकुरजी की आज्ञा तीन प्रकार की है। लौकिक आज्ञा प्रवाहसे के करन अर्थ। याही तें श्रीभागवत में लौकिक आदि कार्य यह तीन ही बरनन हैं। अलौकिक कार्य में श्रीठाकुरजी को आश्रय और भगवदीय को संग। वैदिक कार्य में तीर्थ देव–पूजा कर्मादि। लौकिक में कुटुंब पालनों खानपान सरीर को सुख। सो तीन्यों फलहू न्यारे न्यारे कहे हैं। लौकिक तें संसार। वैदिक तें स्वर्गादिक। अलौकिक तें भगवद् प्राप्ति। या प्रकार के भेद सों घी नाहीं दियो।

તેથી મર્યાદાની આજ્ઞા પણ ન માની. અને મર્યાદા કાર્યને અર્થે ઘી પણ ન આપ્યું. પછી ત્રીજે પુષ્ટિના આવેશથી માંગતા તો હું ઘી દેતી. અને આપને ઘી મંગાવવું હતું તો એટલું તે વૈષ્ણવને કહી દેતા, કે રજોને કહેજે, તારા પુષ્ટિ ધર્મમાં હાની નથી, ઘી આપજે. તો હું શું કામ ફેરતી? અને મહારાજ! જાણી જોઇને કુઆમાં કેમ પડું? આપની કૃપાથી આટલું જ્ઞાન થયું, ત્યારે મેં ઘી નહીં આપ્યું. આપ તો બુદ્ધિપ્રેરક છો. મારા હૃદયમાં બેસીને ઘી દેવાની ના કહી. ત્યાંથી ઘી મંગાવ્યું. તે હું વિના મોલની દાસી છું. આપ કૃપા કરો.

ભાવપ્રકાશ—તેથીજ શિક્ષાપત્રમાં કહ્યું છે, શ્રીઠાકુરજીની આજ્ઞા ત્રણ પ્રકારની છે. લૌકિક આજ્ઞા પ્રવાહ જેવું કરવાને માટે. તેથી શ્રીભાગવતમાં લૌકિક આદિ કાર્ય એ ત્રણજ વર્ણન કર્યા છે. અલૌકિક કાર્યમાં શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય અને ભગવદીયનો સંગ. વૈદિક કાર્યમાં તીર્થ દેવ–પૂજા કર્માદિ. લૌકિકમાં કુટુંબ પાળવું, ખાનપાન શરીરનું સુખ. તે ત્રણે ફલ પણ અલગ અલગ કહ્યાં છે. લૌકિકથી સંસાર, વૈદિકથી સ્વર્ગાદિક, અલૌકિકથી ભગવદ્પ્રાપ્તિ. એ પ્રકારના ભેદથી ઘી નહીં દીધું.

तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के दरसन दिये। तब रजो ने सामग्री श्रीआचार्यजी के आगे राखी। और कह्यो, जो अरोगो। तब श्रीआचार्यजी ने रजो सों कह्यो, जो–आजु श्राद्ध दिन है। सो दूसरी वेर लेनो नाहीं। तब रजो ने कह्यो, जो–महाराज! घर की होइ सो लोगन के मर्यादा के लिये मति लेहू। यह तो लियो चाहिए।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, जो–लीला के भाव सों अपने निज स्वरूप सों अरोगो। अब मर्यादा को आवेस कहां राखोगे? लीला के आवेस में मन दीजे। भक्तन को मनोरथ पूरन करो। इतनो सुनत ही आप [में] पुष्टिलीला को आवेस ह्वै गयो। मर्यादा की आज्ञा सब जात रही। सामग्री अरोगे। जैसे परमानंदजी गाये, "हरि तेरी लीला की सुधि आवे"। इतनो सुनत ही तीन दिन लों सरीर को अनुसंधान न रह्यो। ऐसे लीला में आवेस होइ, रजो को मनोरथ पूरन किये। तातें रजो एकांगी भगवदीय है।

तब रजो के आग्रह तें श्रीआचार्यजी ताहू दिन सामग्री अरोगे। सो वह रजो क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ५ ॥

* * *

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઇને દર્શન આપ્યાં. ત્યારે રજોએ સામગ્રી શ્રીઆચાર્યજીના આગળ રાખી. અને કહ્યું, કે આરોગો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રજોને કહ્યું, કે આજ શ્રાદ્ધ દિવસ છે તે બીજી વાર લેવું નહીં. ત્યારે રજોએ કહ્યું, કે મહારાજ! ઘરની હોઇ તો લોકોની મર્યાદાને માટે ન લો. આ તો લેવી જોઇએ.

ભાવપ્રકાશ—તેનો અર્થ એ કે લીલાના ભાવથી પોતાના નિજ સ્વરૂપથી આરોગો. હવે મર્યાદાનો આવેશ કયાં રાખશો? લીલાના આવેશમાં મન દો. ભકતોનો મનોરથ પૂર્ણ કરો. એટલું સાંભળતાં જ આપમાં પુષ્ટિલીલાનો આવેશ થઇ ગયો. મર્યાદાની આજ્ઞા બધી જતી રહી. સામગ્રી આરોગ્યા. જેમ પરમાનંદજીએ ગાયું, 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' એટલું સાંભળતાં જ ત્રણ દિવસ સુધી શરીરનું અનુસંધાન ન રહ્યું. એ પ્રકારે લીલામાં આવેશ થઇ રજોનો મનોરથ પૂર્ણ કર્યો. તેથી રજો એકાંગી ભગવદીય છે.

ત્યારે રજોના આગ્રહથી શ્રીઆચાર્યજી તે દિવસે પણ સામગ્રી આરોગ્યા. તે રજો ક્ષત્રાણી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની એવી કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેથી એની વાર્તાનો પાર નહીં. તે કયાં સુધી કહીએ. વાર્તા ॥ ૫ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास काशी में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदास कों दामोदरदास संभलवारे को संग है। जब ताँबे को पत्र बँचाइवे कों कासी गये ता दिन तें सेठ कों श्रीआचार्यजी के दरसन की आरती भई। सो श्रीआचार्यजी पहली पृथ्वी परिक्रमा करि कासी पधारे। तब सेठ ने मनिकर्निका घाट पर श्रीआचार्यजी के दरसन पाये। सो कृष्णदास सों पूछे, श्रीआचार्यजी दक्षिण देस में कृष्णदेव राजा की सभा में मायावाद खंडन किये है, सोई हैं? तब कृष्णदास मेघन ने कही, एही हैं। तब सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी के सन्मुख जाइ दंडोत् किये। बिनती करी, महाराज! कृपा करके सरन लीजे। कृपा करि घर पावन करिए। तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे। सेठकों, सेठ की बेटी रुकिमिनी कों, सेठ के बेटा गोपालदास आदि सब कों नाम सुनाए, ब्रह्मसंबंध कराए। तब सेठ नें बिनती करी, महाराज! अब हमकों कहा कर्तव्य है? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवत् सेवा पुष्टिमार्ग की रीति सों करो। सो सेठ के घर श्रीमदनमोहनजी ठाकुर हते।

पास हजार दस पन्द्रह रुपैया हतो सो घर बनाए। सों नींव में तें श्रीम-

---

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, શેઠ પુરુષોત્તમદાસ કાશીમાં રહેતા હતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—શેઠ પુરુષોત્તમદાસને દામોદરદાસ સંભલવાળાનો સંગ છે. જ્યારે તાંબાનો પત્ર વંચાવવા કાશી ગયા, તે દિવસથી શેઠને શ્રીઆચાર્યજીના દર્શનની આરતી થઇ. તે શ્રીઆચાર્યજી પહેલી પૃથ્વી પરિક્રમા કરી કાશી પધાર્યા ત્યારે શેઠને મણિકર્ણિકા ઘાટ ઉપર શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં. તે કૃષ્ણદાસને પૂછે, શ્રીઆચાર્યજી (એ) દક્ષિણ દેશમાં કૃષ્ણદેવ રાજાની સભામાં માયાવાદ ખંડન કર્યો છે, તેજ છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘને કહ્યુ, એજ છે. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસે શ્રીઆચાર્યજીના સન્મુખ જઇને દંડવત્ કર્યાં. વિનતી કરી, મહારાજ! કૃપા કરીને શરણે લો. કૃપા કરી ઘર પાવન કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દીનતા જોઇ શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરે પધાર્યા. શેઠ ને, શેઠની બેટી રુકમણીને, શેઠના બેટા ગોપાલદાસ આદિ બધાને નામ સંભળાવ્યુ. બ્રહ્મસબંધ કરાવ્યુ. ત્યારે શેઠે વિનતી કરી, મહારાજ! હવે અમને શું કર્તવ્ય છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ભગવત્સેવા પુષ્ટિમાર્ગની રીતિથી કરો. તે શેઠના ઘર શ્રીમદનમોહનજી ઠાકુર હતા. પાસે દસ–પંદર હજાર રૂપૈયા હતા.

सेठ पुरुषोत्तमदास का घर, काशी.

बायें से —

१ पुत्र गोपालदास।

२ सेठ पुरुषोत्तमदास।

३. बेटी रुक्मिनी।

४ सेठ की स्त्री।

दनमोहनजी ठाकुर निकसे। और द्रव्य बहुत निकस्यो, करोड़धुजी कहाए। साठ करोड़ द्रव्य पाये। सो पिता कछुक दिन श्रीमदनमोहनजी की पूजा करि देह छोड़े। पाछे सेठ ने पूजा बहोत दिन लों करी, द्रव्य बहोत कमाए। सो श्रीमदन-मोहनजी कों श्रीआचार्यजी ने पंचामृत स्नान कराए, पाट बैठाये, सेठ के माथे पधराए।

सो सेठ पुरुषोत्तमदास लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं। इंदुलेखा इनको नाम है। और सेठ की बेटी रुकिमिनी इन्दुलेखा की सखी, मोदनी नाम है। और गोपालदास सेठ को बेटा, सो इंदुलेखा की सखी गानकला है। सो सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीमदनमोहनजी की राजसेवा करते। बावन बीड़ा को नेग हतो। याको कारन यह है, जो–लीला में बीड़ा अरोगाइबे की सेवा इंदुलेखा की है। तातें पुरुषोत्तमदास ने बावन बीड़ा राखे। सो श्रीठाकुरजी के भावतें बीस, और बत्तीस बीड़ा श्रीस्वामिनीजी के भावतें। याकौ आसय यह, जो–श्रीठाकुरजी कों बिस्वास प्रिय है। तातें बीसों बिस्वा निश्चयात्मक दृढ़ विश्वास जताइबे कों बीस बीड़ा, श्रीठाकुरजी के भावतें। श्रीस्वामिनीजी कों शृंगार प्रिय हैं, तातें जुगल रूप के सिंगार सोरह दूने बत्तीस भये। या प्रकार श्रीस्वामिनीजी कों

તે, ઘર બનાવ્યું. તે, નીમમાંથી શ્રીમદનમોહનજી ઠાકુર નિકળ્યા. અને દ્રવ્ય ઘણું નિકળ્યું. કરોડધ્વજી કહેવાયા. સાઠ કરોડ દ્રવ્ય મળ્યું. તે પિતાએ થોડાક દિવસ સુધી શ્રીમદનમોહનજીની પૂજા કરી દેહ છોડયો. પછી શેઠે પૂજા બહુ દિવસ સુધી કરી. દ્રવ્ય ઘણું કમાયા. તે શ્રીમદનમોહનજીને શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડયા. શેઠના માથે પધરાવ્યા.

તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની સખી છે. ઇંદુલેખા એમનું નામ છે. અને શેઠની બેટી રૂકમણી ઇંદુલેખાની સખી, મોદની નામ છે. અને ગોપાલદાસ શેઠનો બેટા તે ઇંદુલેખાની સખી ગાનકલા છે. તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ શ્રી-મદનમોહનજીની રાજસેવા કરતા. બાવન બીડાનો નેગ હતો. એનું કારણ એ છે, કે લીલામાં બીડા આરોગાવવાની સેવા ઇંદુલેખાની છે. તેથી પુરુષોત્તમદાસે બાવન બીડાં રાખ્યાં. તે શ્રીઠાકુરજીના ભાવથી વીસ અને બત્રીસ બીડાં શ્રીસ્વામિનીજીના ભાવથી. એનો આશય એ કે, શ્રીઠાકુરજીને વિશ્વાસ પ્રિય છે. તેથી વીસો વિસ્વા નિશ્ચયાત્મક દૃઢ વિશ્વાસ દેખાડવાને વીસ બીડા શ્રીઠાકુરજીના ભાવથી. શ્રીસ્વામિનીજીને શૃંગાર પ્રિય છે. તેથી જુગલ રૂપનો શૃંગાર સોલ દુના બત્રીસ થયા. એ પ્રકારે શ્રીસ્વામિનીજીને

प्रसन्न किये । या प्रकार कहि (यह जताए, जो-) जितनी सेवा सेठ पुरुषोत्तमदास करते, सो भावपूर्वक करते । सामग्री वस्त्र आभूषण हू में ।

और श्रीमदनमोहनजी की सेवा श्रीठाकुरजी के भावतें अधिक श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के भावतें करतें । तातें श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइकें श्रीमदनमोहनजी के दोऊ चरन स्याम दरसन कराए । ताको आसय यह, जो-सर्वाङ्ग गौर, सो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को निजस्वरूप-श्रीस्वामिनीजी को श्रीअंगवर्ण । और चरन दोऊ स्याम, सो श्रीकृष्ण के श्रीअंगवर्ण । तामें चरन स्याम को अभिप्राय, निकुंजादिक लीला में श्रीठाकुरजी दूसरे स्वरूप (श्रीस्वामिनीजी) के चरन-आश्रित हैं । तातें श्रीठाकुरजी के भावतें श्रीआचार्यजी की सेवा दिखाए । या प्रकार सेठ पुरुषोत्तमदास पर अनुग्रह श्रीआचार्यजी किये ।

सो श्रीमदनमोहनजी कों श्रीआचार्यजी ने पंचामृत स्नान कराइ पाट बैठारे, सेठ के माथे पधराए ।

वार्ता-प्रसंग १—**और सेठ कासी मुख्य विश्वेस्वर महादेव, सो कासी के राजा है, तिनके दरसन कों कबहू नहिं जाते। सो एक दिन विस्वेस्वर महादेव ने स्वप्न में सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यो, जो-गांव को नातो तुम नाहीं राखत, तो वैष्णव को नातो तो राखो,**

પ્રસન્ન કર્યા. આ પ્રકાર કહી (એ સૂચવ્યું કે,) જેટલી સેવા શેઠ પુરુષોત્તમદાસ કરતા, તે (બધી) ભાવપૂર્વક કરતા. સામગ્રી, વસ્ત્ર-આભૂષણમાં પણ.

અને શ્રીમદનમોહનજીની સેવા શ્રીઠાકુરજીના ભાવથી અધિક શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના ભાવથી કરતા. તેથી શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને શ્રીમદનમોહનજીનાં બન્ને ચરણ શ્યામ દર્શન કરાવ્યાં. તેનો આશય એ, કે બધું અંગ ગૌર, એ તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનું નિજ સ્વરૂપ-શ્રીસ્વામિનીજીનું શ્રીઅંગ વર્ણ અને ચરણ બંને શ્યામ, તે શ્રીકૃષ્ણના શ્રીઅંગ (નો) વર્ણ. તેમાં ચરણ શ્યામનો અભિપ્રાય નિકુંજાદિક લીલામાં શ્રીઠાકુરજી બીજા સ્વરૂપ (શ્રીસ્વામિનીજી) ના ચરણ આશ્રિત છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીના ભાવથી શ્રીઆચાર્યજીની સેવા દેખાડી. એ પ્રકારે શેઠ પુરૂષોત્તમદાસ ઉપર અનુગ્રહ શ્રીઆચાર્યજીએ કર્યો. તે શ્રીમદનમોહનજીને શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડયા, શેઠને માથે પધરાવ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—શેઠ, કાશી મુખ્ય વિશ્વેશ્વર મહાદેવ કે (જે) કાશીના રાજા છે, તેમના દર્શને કદીયે ન જતા. તે એક દિવસ વિશ્વેશ્વર મહાદેવે સ્વપ્નમાં શેઠ પુરુષોત્તમદાસને કહ્યું, કે ગામનો નાતો તમે નથી રાખતા, તો વૈષ્ણવનો નાતો તો રાખો.

कबहू हम कों महाप्रसाद तो दियो करो। तब सवेरे सेठ पुरुषोत्तमदास सेवा सों पहोंचि कें महाप्रसाद को डबरा बीरा ले विस्वेस्वर महादेव के देवालय कों चले। तब गांव के लोग सब आश्चर्य ह्वे रहे, जो-सेठ कबहू नाहीं आवते सो आजु क्यों आये? सो कितने लोग संग सेठ के चले। सो सेठ महाप्रसाद को डबरा, बीड़ा चारि धरे, श्रीकृष्णस्मरण करिके उठि चले। तब बड़े बड़े सैव ब्राह्मण हते सो सेठ पुरुषोत्तमदास सों कहे, तुम दंडवत् नमस्कार नाहीं किये? श्रीकृष्णस्मरण करि उठि चले सो उचित नाहीं। तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कही, हमारे इनके भगवत्स्मरण को व्यौहार है। तुम पूछि लीजो। तुम सों विस्वेस्वर महादेवजी कहेंगे।

सो उन ब्राह्मणन में एक ब्राह्मण महादेवजी को कृपापात्र हतो। सो उन ब्राह्मण सों महादेवजी ने कही, जो-हमने सेठ सों महाप्रसाद मांग्यो हतो। हमारे इनके भगवत् स्मरण को व्यौहार ही है। तातें इन सों और कछु मति कहियो। ता पाछें बड़े उत्सव के पाछें महाप्रसाद विस्वेस्वर महादेव कों ले जाते।

भावप्रकाश—यह कहिवे को अभिप्राय यह, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास अब सेवक भये तब इनकी आज्ञा में सगरे लोग द्रव्य अर्थ रहें। सो महादेवजी ने

કોઇવાર અમને મહાપ્રસાદ તો આપ્યા કરો. ત્યારે સવારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ સેવાથી પહોંચીને મહાપ્રસાદનો ડબરો (એક મોટુ ઉંડુ વાડકાના જેવું પાત્ર) બીડાં લઇ વિશ્વેશ્વર મહાદેવના દેવાલયે ચાલ્યા. ત્યારે ગામના લોકો બધા આશ્ચર્યવંત થઈ રહ્યા, કે શેઠ કોઈ દિવસ નથી આવતા તે આજ કેમ આવ્યા? તે કેટલાક લોકો તો શેઠની સાથે ગયા. તે શેઠ મહાપ્રસાદનો ડબરો, બીડાં ચાર ધરી શ્રીકૃષ્ણ-સ્મરણ કરીને ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે મોટા મોટા શૈવ બ્રાહ્મણ હતા તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસને કહે, તમે દંડવત્ નમસ્કાર કેમ ન કર્યા? શ્રીકૃષ્ણ-સ્મરણ કરી ઉઠી ચાલ્યા તે ઉચિત નહીં. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસે કહ્યું, અમારે એમને ભગવત્સ્મરણનો વ્યવહાર છે. તમે પૂછી લેજો, તમને વિશ્વેશ્વર મહાદેવ કહેશે.

પછી તે બ્રાહ્મણોમાં એક બ્રાહ્મણ મહાદેવજીનો કૃપાપાત્ર હતો. તે બ્રાહ્મણને મહાદેવજીએ કહ્યું, કે અમે શેઠ પાસે મહાપ્રસાદ માંગ્યો હતો. અમારે એમને ભગવત્સ્મરણનો વ્યવહાર જ છે. તેથી એમને બીજું કંઇ કહેતા નહીં. તે પછી મોટા ઉત્સવની પાછળ મહાપ્રસાદ (શેઠ) વિશ્વેશ્વર મહાદેવને લઈ જતા.

ભાવપ્રકાશ—એ કહેવાનો અભિપ્રાય એ, કે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ હવે સેવક થયા, ત્યારે એમની આજ્ઞામાં બધા લોકો દ્રવ્ય માટે રહે. તે મહાદેવજીએ

जाने, जो–अब सगरे अनन्य होंइगे। तो हमारो महात्म्य हू घटि जायगो, और भगवद् आज्ञा कलिकाल आयो, सो जीवन कों बहिर्मुख करने हैं। और सेठ पुरुषोत्तमदास ने भक्ति फैलाई सो इनसों तो कछु चले नाहीं। तब महादेवजी ने यह उपाइ कियो, जो–सेठजी तो महाप्रसाद देन जाइ, ता करि सगरे लोग महादेवजी के देवालय जान लागे, जो–कोउ बरजे तो उत्तर करें, सेठजी सरीखे जात हैं तो हमारी कहा? महादेवजी बड़े भगवदीय हैं। या प्रकार जीव बहिर्मुख भये। परन्तु यह न जाने, जो–सेठकों आज्ञा भई सो गये, परन्तु रुकिमिनी गोपालदास कबहूँ नाहीं गये, हम कैसे जाइ! परन्तु सबकों उत्तम फल नाहीं देनो है। तातें सेठ पुरुषोत्तमदास हू गये।

वार्ता–प्रसंग २—**और एक दिन विस्वेस्वर महादेवजी ने कालभैरव कों, कोतवाल कासी के हते, तिनसों कह्यो, जो–सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवन के घरतें अर्द्धरात्रिकों आवत हैं अवेरे सवेरे, सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर की चौकी दीजो। कोई छलावा, चोरादिक उपद्रव न करे। तब कालभैरव नित्य सेठ पुरुषोत्तमदास के घर की चौकी पहरा देते।**

જાણ્યું, કે હવે બધા અનન્ય થશે, તો અમારૂં માહાત્મ્ય પણ ઘટી જશે. અને ભગવદાજ્ઞા, કલિકાલ આવ્યો છે તેથી જીવોને બહિર્મુખ કરવા (ની) છે. અને શેઠ પુરૂષોત્તમદાસે ભક્તિ ફેલાવી તે એમના ઉપર તો કંઇ ચાલે નહી. ત્યારે મહાદેવજીએ એ ઉપાય કર્યો. શેઠજી તો મહાપ્રસાદ દેવા જાય, તેથી સઘળા લોક મહાદેવજીના દેવાલયે જવા લાગ્યા. જો કોઇ ટોકે તો ઉત્તર આપે, કે શેઠજી સરખા જાય છે તો અમારી શી (વાત?), મહાદેવજી મોટા ભગવદીય છે. એ પ્રકાર જીવ બહિર્મુખ થયા. પરંતુ એ ન જાણે કે શેઠને આજ્ઞા થઇ તે ગયા. પરંતુ રૂકમણી, ગોપાલદાસ કયારેય ગયા નહી. અમે કેમ જઇએ? પરંતુ બધાને ઉત્તમ ફલ દેવું નથી. તેથી શેઠ પુરૂષોત્તમદાસ પણ ગયા.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—પછી એક દિવસે વિશ્વેશ્વર મહાદેવજીએ કાલભૈરવને, (જે) કાશીના કોતવાલ હતા તેમને, કહ્યું, કે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ વૈષ્ણવોના ઘરથી અડધી રાત્રે આવે છે મોડા–વ્હેલા. તેથી શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરની ચોકી દેજે. કોઇ છળીઆ, ચોર વિગેરે ઉપદ્રવ ન કરે. ત્યારથી કાલભૈરવ નિત્ય શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરની ચોકી પહેરા દેતા..

सो एक दिन वैष्णव के घरतें अर्द्धरात्रि समें सेठ पुरुषोत्तमदास आवत हे। सो घर के द्वार ऊपर तब काहुकों देख्यो। सो पाछें फिरि कें देखें तब पूछे, जो–तू कौन है? तब कालभैरव ने कह्यो, जो–मोकों महादेवजी ने तिहारे घर की चौकी पहरा देवे की कही है, सो नित्य चौकी देत हों। तब सेठ पुरुषोत्तमदास बोले नाहीं, किंवाड़ दै घर में आये।

भावप्रकाश—यह कहि के यह जताये, जो–सेठ ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। परन्तु वैष्णव के संग अर्थ आपु चलाइ के जाते। तातें वैष्णव को संग अवश्य करनों। काहेतें? श्रीआचार्यजी लिखे हैं, " पोषकाभावे तु शिथिलम् " (अर्थात्) पोषक को अभाव होई तब मन सिथिल व्हे जाइ, भक्ति घटि जाइ। सो पोषण सत्संग तें होइ।

और कालभैरव कों महादेवजी राखे सो यातें, जो–कासी में भूत, छलावा बहोत, तथा चोरादिक। सो महादेवजी विचारे, जो–मोकों भगवान् ने कासी को राज दियो है, जातें या गाँव में अन्याव होइ सो मेरे माथें। तातें भगवदीय को कछू बिगार होइ तो भगवान् मोपर अप्रसन्न होइ जाई। और सेठजी हमकों महाप्रसाद (हू) कृपा करिकें दिये, हमारो तो कछू लेत नाहीं। तातें इतनी

તે એક દિવસ વૈષ્ણવના ઘરેથી અર્દ્ધ રાત્રિ સમયે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ આવતા હતા. તે ઘરના દ્વાર ઉપર ત્યારે કોઇને જોયો. તે પાછું ફરીને જોયું, ત્યારે પૂછ્યું, કે તૂ કોણ છે? ત્યારે કાલભૈરવે કહ્યું, કે મને મહાદેવજીએ તમારા ઘરનો ચોકી પહેરો દેવાનું કહ્યું છે. તે નિત્ય ચોકી દઉં છું. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ બોલ્યા નહીં. કમાડ દઇ ઘરમાં આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ કહીને એ જણાવ્યું, કે શેઠ એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. પરન્તુ વૈષ્ણવના સંગ અર્થે પોતે ચાલીને જતા. તેથી વૈષ્ણવનો સંગ અવશ્ય કરવો. કેમકે? શ્રીઆચાર્યજી લખે છે, (કે) "પોષકાભાવે તુ શિથિલમ્" (અર્થાત્) પોષકનો અભાવ હોય તો મન શિથિલ થઇ જાય. ભક્તિ ઘટી જાય. તે પોષણ સત્સંગથી થાય. અને કાલભૈરવને મહાદેવજીએ રાખ્યા, તે એથી કે, કાશીમાં ભૂત, છળીઆ ઘણા તથા ચોર આદિ. તે મહાદેવજી વિચારે, કે મને ભગવાને કાશીનું રાજ આપ્યું છે. તેથી આ ગામમાં અન્યાય થાય તે મારા માથે. તેથી ભગવદીયનો કંઇ બિગાડ થાય તો ભગવાન મારા ઉપર અપ્રસન્ન થઇ જાય. અને શેઠજીએ અમને મહાપ્રસાદ (પણ) કૃપા કરીને આપ્યો. અમારૂં તો કંઇ લેતા નથી. તેથી એટલી ચોકસી તો

चौकसी तो करी चाहिये। तातें कालभैरव सों चौकी पहरा की कहे। (सो यातें), जो–कदाचित् कछु विगार हू होइ तो दंड कालभैरव के माथें। तातें आपु नाँहीं दिये।

वार्ता–प्रसंग ३—और एक दक्षिण देस को ब्राह्मण कासी में आयो, सो सैवी महादेवजी को कृपापात्र हतो। जब महादेवजी दरसन देइ तब वह ब्राह्मण खानपान करे। सो ऐसें करत जन्माष्टमी को उत्सव आयो। सो सेठ पुरुषोत्तमदास बड़े मंडान सों जन्माष्टमी को उत्सव करते। सो महादेवजी जन्माष्टमी के दिन सेठ पुरुषोत्तमदास के घर आये। सो नौमी कों नंदमहोत्सव पाछें दुपहर कों आये। तब ब्राह्मण कों दरसन भयो। तब वह ब्राह्मण नें विस्वेस्वर महादेवजी सों पूछ्यो, जो–कालिह तिहारो दरसन नाहीं भयो। आजु दुपहर कों भयो, ताको कारन कहा ? तब महादेवजी ने कही, मैं जन्माष्टमी को उत्सव देखन कों (सेठ के घर) गयो हो, कालिह सवारे तें। सो आजु आयो। तब वह ब्राह्मण नें कही, जो–ऐसे सेठ कौन हैं ? जिनके घर तुम उत्सव देखन जात हो ? तब विस्वेस्वर महादेवजी ने कही, जो–वे बड़े भगवद्भक्त हैं, हम सों श्रेष्ठ हैं।

भावप्रकाश—ताकौ यह अर्थ, जो–सेठ पुष्टिमार्गीय भगवद्भक्त हैं, हम मर्यादामार्गीय हैं।

કરવી જોઇએ. તેથી કાલભૈરવને ચૌકી પહેરાનું કહ્યું. (તે એથી), કે કદાચિત્ કંઇ બગાડ પણ થાય તો દંડ કાલભૈરવના માથે. તેથી પોતે નહીં દીધો.

વાર્તા પ્રસંગ–૩—વળી એક દક્ષિણ દેશનો બ્રાહ્મણ કાશીમાં આવ્યો. તે શૈવી મહાદેવજીનો કૃપાપાત્ર હતો. જ્યારે (તેને) મહાદેવજી દર્શન દે ત્યારે તે બ્રાહ્મણ ખાનપાન કરે. તે એમ કરતાં જન્માષ્ટમીનો ઉત્સવ આવ્યો. તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ મોટા મંડાન (બંધાણ)થી જન્માષ્ટમીનો ઉત્સવ કરતા. તેથી મહાદેવજી જન્માષ્ટમીના દિવસે શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરે આવ્યા. તે નવમીના નંદ મહોત્સવ પછી બપોરના (દેવાલયમાં) આવ્યા. ત્યારે બ્રાહ્મણને દર્શન થયાં. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે વિશ્વેશ્વર મહાદેવજીને પૂછ્યું, કે કાલ તમારાં દર્શન ન થયાં, આજ બપોરે થયાં, તેનું કારણ શું ? ત્યારે મહાદેવજીએ કહ્યું, કે જન્માષ્ટમીનો ઉત્સવ જોવાને (શેઠના ઘર) ગયો હતો, કાલ સવારથી. તે આજ આવ્યો. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે એવા શેઠ કોણ છે (કે) જેમના ઘરે તમે ઉત્સવ જોવા જાવ છો ? ત્યારે વિશ્વેશ્વર મહાદેવજીએ કહ્યું, કે એ મોટા ભગવદ્ભક્ત છે. અમારાથી શ્રેષ્ઠ છે.

ભાવપ્રકાશ—તેનો એ અર્થ, કે શેઠ પુષ્ટિમાર્ગીય ભગવદ્ભક્ત છે, અમે મર્યાદામાર્ગીય છીએ.

तब ब्राह्मण ने कह्यो, जो-ऐसे भगवद्भक्त हमहू कों करो। तब महादेवजी ने कह्यो, सेठ पुरुषोत्तमदास के सेवक जाइ के होउ। वे नाम सुनावत हैं, उनकों श्रीआचार्यजी की आज्ञा है। तब वह ब्राह्मण ने कही, जो-तुम ही नाम सुनावो। तब महादेवजी ने कही, जो-हमारो दियो नाम फलेगो नाहीं।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, हमारो नाम दिये मर्यादाभक्ति को अधिकारी होइगो। तातें पुष्टिमार्ग को अधिकार उनहीं को है।

तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तमदास के द्वार पर आइ सेठ कों खवर कराई। तब मनुष्यन नें कही, एक ब्राह्मण तुमसों मिलन आयो है। तब सेठ नें कही, जो-माथो खाली करन आयो होइगो।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-महादेवजी को भक्त है, नाम सुनेगो, परन्तु दृढ़ भक्ति बहुत दिन लों पचेंगे तब होइगी।

पाछें सेठ सेवा तें पहोंचिके बाहिर आये। तब वह ब्राह्मण ने दंडवत् कियो। तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कही, तुम यह अनुचित क्यों करत हो? हम क्षत्रिय हैं, तुम ब्राह्मण होइके दंडवत् करत हो? तब उह ब्राह्मण ने कही, जो-हमकों नाम देहु, सेवक करो। तब सेठने कही, हम तो काहू कों नाम देत नाहीं। सेवक नाहीं करत।

ત્યારે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે એવા ભગવદ્‌ભક્ત અમને પણ કરો. ત્યારે મહાદેવજીએ કહ્યું, શેઠ પુરુષોત્તમદાસના સેવક (ત્યાં) જઇને થાવ. તે નામ સંભળાવશે. એમને શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા છે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે તમે જ નામ સંભળાવો. ત્યારે મહાદેવજીએ કહ્યું, કે અમારૂં દીધેલું નામ ફ્લશે નહીં.

ભાવપ્રકાશ—તેનો અર્થ એ, (કે) અમારૂં નામ દીધે મર્યાદા ભક્તિનો અધિકારી થઇશ. તેથી પુષ્ટિમાર્ગનો અધિકાર (તો) એમનો જ છે.

ત્યારે એ બ્રાહ્મણે શેઠ પુરુષોત્તમદાસના દ્વાર ઉપર આવીને શેઠને ખબર કરાવી. ત્યારે મનુષ્યોએ કહ્યું, એક બ્રાહ્મણ તમને મળવા આવ્યો છે. ત્યારે શેઠે કહ્યું, કે માથું ખાલી કરવા આવ્યો હશે.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ, કે મહાદેવજીનો ભકત છે, નામ સાંભળશે, પરંતુ દૃઢ ભકિત બહુ દિવસ સુધી મહેનત કરીશું ત્યારે થશે.

પછી શેઠ સેવાથી પહોંચીને બહાર આવ્યા. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે દંડવત કર્યા. પછી શેઠ પુરુષોત્તમદાસે કહ્યું, તમે આ અનુચિત કેમ કરો છો ? અમે ક્ષત્રિય છીએ. તમે બ્રાહ્મણ થઇને દંડવત્ કરો છો ? ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે અમને નામ આપો. સેવક કરો. ત્યારે શેઠે કહ્યું, અમે તો કોઇને નામ આપતા નથી. સેવક કરતા નથી.

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, नाम देवे वारे, सेवक करवे वारे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु हैं। यह बात तो वह ब्राह्मण समुझ्यो नाहीं।

तब बहोत आग्रह किये, परन्तु सेठ ने नाम नाहीं दियो। तब महादेवजी पास फिरि आयो। कह्यो-सेठ तो नाम नाहीं देत। तब विस्वेस्वर महादेव ने कह्यो, जो-तू फेरि जाइकें सेठजी सों कहियो, जो-मोकों महादेवजी ने पठायो है। जो अबकें नाहीं फेरेंगे। तब वह ब्राह्मण फेरि आइकें सेठजी सों कही, जो-मोकों महादेवजी ने पठायो है, सो नाम देउ।

भावप्रकाश—ताको यह अर्थ, जो-जीव पुष्टिमार्ग को है। तातें नाम देऊ।

तब सेठ ने उह ब्राह्मण कों नाम सुनाय हाथ जोरि कें जै-श्रीकृष्ण कियो। तब वह ब्राह्मण ने कह्यो, तुम मोकों नाम सुनाए, अब हाथ जोरि कें नमस्कार क्यों करत हो? तब सेठ ने कही, हम श्रीआचार्यजी की आज्ञातें नाम देत हैं। हमारे तिहारे गुरु श्री-आचार्यजी महाप्रभु हैं। जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारें तब उनके पास फेरि नाम सुनियो। हमारे तिहारे भगवत् स्मरण को व्यौहार भयो। पाछें वह ब्राह्मण अड़ेल में जाइ श्रीआचार्यजी के

ભાવપ્રકાશ—તેનો અર્થ એ, (કે) નામ આપવા વાળા, સેવક કરવા વાળા તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી છે. એ વાત તો તે બ્રાહ્મણ સમજ્યો નહીં.

ત્યારે બહુ આગ્રહ કર્યો. પરંતુ શેઠે નામ ન દીધું. ત્યારે મહાદેવજી પાસે પાછો આવ્યો. કહ્યું, શેઠ તો નામ નથી આપતા. ત્યારે વિશ્વેશ્વર મહાદેવે કહ્યું, કે તૂ ફરી જઇને શેઠજીને કહેજે, કે મને મહાદેવજીએ મોકલ્યો છે. તેથી (તને) હવે પાછો નહી મોકલે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણ ફરી આવીને શેઠજીને કહ્યું, કે મને મહાદેવજીએ મોકલ્યો છે. તેથી નામ આપો.

ભાવપ્રકાશ—તેનો એ અર્થ, કે જીવ પુષ્ટિમાર્ગનો છે, તેથી નામ દો.

ત્યારે શેઠે તે બ્રાહ્મણને નામ સંભળાવી હાથ જોડીને જૈશ્રીકૃષ્ણ કર્યા. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, તમે મને નામ સંભળાવ્યું. હવે હાથ જોડીને નમસ્કાર કેમ કરો છો? ત્યારે શેઠે કહ્યું, અમે શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞાથી નામ આપીએ છીએ. અમારા તમારા ગુરુ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી છે. જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધારે ત્યારે તેમની પાસે ફરી નામ સાંભળજો. અમારે તમારે ભગવદ્ સ્મરણનો વ્યવહાર

पास नाम निवेदन पाये। तब वह कछूक दिन रहि दक्षिण देस गयो। वैष्णव भयो।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह संदेह हैं, जो–महादेवजी जन्माष्टमी को उत्सव देखन सेठ पास आये। सो श्रीआचार्यजी संबंधी लीला (है), सो गोपालदास गाये हैं–'यह मारग श्रीवल्लभवर नो, जहाँ नहि प्रवेश विधि हर नो'।

यहाँ यह भाव जाननो, जो–सेठ के घर सारस्वत कल्प की पूर्णावतार की लीला है। तहां सगरी लीला हैं। सो महादेवजी कों कल्पाँतर की लीला, सो अंसकला है, ताको अनुभव भयो। यह कहि यह जताए, जो–श्रीआचार्यजी के ठाकुर हैं, तहां पुष्टिमार्गीय वैष्णव कों पूर्ण पुरुषोत्तम के स्वरूप का दरसन होइ। अन्यमार्गी कों ऐसे दरसन न होइ। तातें महादेवजी उह ब्राह्मण सों कहे, जो–सेठ के सेवक होउ। तब तुमारो पुष्टिमार्ग में अंगीकार होइगो।

वार्ता–प्रसंग ४—**और सेठ पुरुषोत्तमदास एक दिन मंदिरमें बैठे हे, मंदिर वस्त्र करत हते। सो दूरितें गोपालदास देखि के मनमें बिचार कियो, जो–अब सेठजी वृद्ध भये हैं। तातें अब मैं सेवामें तत्पर होउं। तब गोपालदास न्हाइ आये। तब गोपालदास के मनकी जानिके**

થયો. પછી તે બ્રાહ્મણ અડેલમાં જઈ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે નામ નિવેદન પામ્યો. પછી તે થોડા દિવસ રહી દક્ષિણ દેશ ગયો. વૈષ્ણવ થયો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સંદેહ છે, કે મહાદેવજી જન્માષ્ટમીનો ઉત્સવ જોવા શેઠ પાસે આવ્યા. તે (જન્માષ્ટમી) શ્રીઆચાર્યજી સંબંધી લીલા છે. તે ગોપાલદાસ ગાય છે કે— "એવો મારગ શ્રીવલ્લભ વર નો રે, જહાં નહીં પ્રવેશ વિધિ હર નો રે."

અહીં એ ભાવ જાણવો, કે શેઠના ઘરે સારસ્વત કલ્પની પૂર્ણાવતારની લીલા છે. (એટલે) તેમાં બધી લીલા છે. તે મહાદેવજીને કલ્પાંતરની લીલા, જે અંશકલા (ની) છે, તેનો અનુભવ થયો. એ કહી, એ જણાવ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજીના ઠાકુર છે ત્યાં પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવને પૂર્ણ પુરુષોત્તમના સ્વરૂપનાં દર્શન થાય. અન્યમાર્ગીયને એવાં દર્શન ન થાય. તેથી મહાદેવજી તે બ્રાહ્મણને કહે, કે તૂ શેઠનો સેવક થા. ત્યારે તારો પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર થશે.

વાર્તા પ્રસંગ–૪—વળી શેઠ પુરુષોત્તમદાસ એક દિવસ મંદિરમાં બેઠા હતા મંદિર વસ્ત્ર કરતા હતા. તે દૂરથી ગોપાલદાસે જોઇને મનમાં વિચાર કર્યો, કે હવે શેઠજી વૃદ્ધ થયા છે. તેથી હવે હું સેવામાં તત્પર થઉં. ત્યારે ગોપાલદાસ ન્હાઇ

बुलाए। बेटा! आगे आउ। तब गोपालदास निकट आइकें देखे तो बीस पचीस बरस के सेठ हैं। तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने गोपालदास सों कही, जो-भगवदीय सदा तरुन हैं। परन्तु जो अवस्था होइ ताको मान दियो चाहिए। तातें आजु पाछें ऐसी मनमें मति लाइयो।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-गोपालदास के मन में यह आई, जो-मैं तरुन हों, सेठजी वृद्ध हैं, अब मैं सेवा में तत्पर होउं। या बात में गोपालदास को बिगार जान्यो, जो-तू, हम कहा सेवा करेंगे? श्रीआचार्यजी जासों कृपा करेंगे वासों ही श्रीठाकुरजी सेवा करावेंगे। सो तरुन कहा, वृद्ध कहा? आजु पाछें ऐसी मनमें कबहू मति लाइयो। सो या प्रकार मान मर्दन करि बेगिही समुझाए। काहेतें? गोपालदास लीला में सेठ की सखी हैं, तातें ए न समुझावें तो और कौन समुझावें?

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समय सेठ दक्षिण में गये। तहां झारखंड में मंदार पर्वत है, ताके ऊपर मंदारमधुसूदन ठाकुर हैं। सो उह पर्वत तें मनुष्य गिरै तो चोट न लगै, अनजाने। और जानि के सगरे पाप कहि कें ऊपर तें गिरै तो देह छूटै। पाछे दूसरे जनम में कामना सिद्ध होय। एसो वा पर्वत को माहात्म्य लोक में प्रसिद्ध है।

આવ્યા. ત્યારે (શેઠે) ગોપાલદાસના મનની જાણીને (તેમને) બોલાવ્યા. (કહ્યું), બેટા! આગળ આવ. ત્યારે ગોપાલદાસ પાસે આવીને જુએ તો વીસ પચ્ચીસ વરસના શેઠ છે. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસે ગોપાલદાસને કહ્યું, કે ભગવદીય સદા તરૂણ છે. પરંતુ જે અવસ્થા હોય તેને માન આપવું જોઇએ. તેથી આજ પછી એવું મનમાં ન લાવીશ.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ, કે ગોપાલદાસના મનમાં એ આવ્યુ, કે હું તરૂણ છુ. શેઠજી વૃદ્ધ છે. હવે હું સેવામાં તત્પર થાઉ. તે વાતમાં ગોપાલદાસનો (શેઠજીએ) બગાડ જાણ્યો, કે તૂ, હું શું સેવા કરીશું? શ્રીઆચાર્યજી જેના ઉપર કૃપા કરશે, તેનાથી જ શ્રીઠાકુરજી સેવા કરાવશે. તે તરૂણ શું? વૃદ્ધ શું? આજ પછી એવું મનમાં કદી ન લાવીશ. આ પ્રકારે માન-મર્દન કરી જલદી જ સમજાવ્યા. કેમકે ગોપાલદાસ લીલામાં શેઠની સખી છે. તેથી એ ન સમજાવે તો બીજો કોણ સમજાવે?

વાર્તા પ્રસંગ-૫—વળી એક સમય શેઠ દક્ષિણમાં ગયા. ત્યાં ઝારખંડમાં 'મંદાર' પર્વત છે. તેના ઉપર 'મંદાર-મધુસૂદન' ઠાકુર છે. તે પર્વતથી મનુષ્ય પડે તો ચોટ ન લાગે, અનજાણે. અને જાણીને બધાં પાપ કહીને ઉપરથી પડે તો દેહ છૂટે પછી બીજા જન્મમાં કામના સિદ્ધ થાય. એવું તે પર્વતનું માહાત્મ્ય લોકમાં પ્રસિદ્ધ છે.

तहां एक बेर श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत पधारे हे। तहां एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास और एक ब्राह्मण वैष्णव विरक्त संग दोउ जने गये। सो उहां रात्रि व्है गई। तातें पर्वत पर सोइ रहे। अर्द्ध रात्र समय एक ब्राह्मण-सिद्ध को रूप धरि श्रीठाकुरजी आपु आये। तब सेठ बोले नाहीं। उह वैष्णव सेठ के संग को पूछे, जो-तुम कौन हो ? तब उन कह्यो, जो-मैं ब्राह्मण हों, या पर्वत पर रहत हों। तुम कौन हो ? तब वाने कही-हम श्रीवल्लभाचार्यजी के सेवक हैं। तब उन ब्राह्मण ने कही, हमारे पास मणि है, तुम लेउगे ? तब वैष्णव ने कही, मणि में कहा गुण है ? तब उह ब्राह्मण ने कही, जितनो द्रव्य चाहिए सो मणि सों मिले। तब उह विरक्त वैष्णव ने कही, जो-मैं कहा करूंगो ? जगदीस सेर चून देइगो। तातें सेठ पुरुषोत्तमदास गृहस्थ हैं, इनकों बहोत खरच हैं, इनकों देउ। तब ब्राह्मण ने कही, जो-सेठजी कों जगावो। तब उह वैष्णव नें जगाइ के सेठजी सों कही, यह मणि लेउ। यासों जितनो द्रव्य चाहिए तितनो होइगो। तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कही, जो-हमारे तो मणि नाहीं चहिए। तब उह सिद्ध-ब्राह्मण मणि लेकै फिरि गयो। तब वैष्णव ने सेठजी सों कह्यो, तुम मणि क्यों न लिये ? तब सेठ ने कही, तू क्यों न लियो ? पहले तो तोकों देत हो।

ત્યાં એકવાર શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં પધાર્યા હતા. ત્યાં એક સમય શેઠ પુરુષોત્તમદાસ અને એક બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવ વિરક્ત બન્ને જણ સાથે ગયા. ત્યાં રાત્રિ થઈ ગઈ. તેથી પર્વત ઉપર સૂઈ રહ્યા. (પછી) અર્દ્ધ રાત્રિના સમયે એક બ્રાહ્મણ-સિદ્ધનું રૂપ ધરી શ્રીઠાકુરજી પોતે (ત્યાં) પધાર્યા. ત્યારે શેઠ બોલ્યા નહીં. તે વૈષ્ણવ શેઠની સાથેનો (હતો, તે) પૂછે, કે તમે કોણ છો ? ત્યારે એણે કહ્યું, કે હું બ્રાહ્મણ છું. આ પર્વત ઉપર રહું છું. તમે કોણ છો ? ત્યારે તેણે કહ્યું, અમે શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના સેવક છીએ. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, અમારી પાસે મણિ છે તમે લેશો ? ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યું, મણિમાં શો ગુણ છે ? ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, જેટલું દ્રવ્ય જોઈએ તેટલું તે મણીથી મળે. ત્યારે તે વિરક્ત વૈષ્ણવે કહ્યું, કે હું (મણીને) શું કરીશ ? જગદીશ શેર ચૂન આપશે. તેથી શેઠ પુરુષોત્તમદાસ ગૃહસ્થ છે એમને બહુ જ ખર્ચ છે. એમને આપો. ત્યારે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે શેઠજીને જગાડો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે જગાડીને શેઠજીને કહ્યું, આ મણિ લો. એનાથી જેટલું દ્રવ્ય જોઈએ તેટલું થશે. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસે કહ્યું, કે અમારે તો મણિ જોઈતો નથી. ત્યારે તે સિદ્ધ બ્રાહ્મણ મણિ લઈને પાછો ગયો ત્યારે વૈષ્ણવે શેઠજીને કહ્યું, તમે મણિ કેમ ન લીધો ? ત્યારે શેઠે કહ્યું, તેં કેમ ન

तब उह वैष्णव ने कही, मैं विरक्त हों, मणि कहा करूंगो? जगदीस सेर चून जहां तहां तें देइगें। तब सेठ ने कही, तोकों सेर चून देइगें तो मोकों दस सेर हू देइगें। कहा जगदीस के कछु टोटो है? सो ब्राह्मण बावरे! मैं श्रीठाकुरजी को आश्रय छोड़ि मणि को आश्रय करूं? पाछे सेठ अपने घर आये।

भावप्रकाश—यह वार्ता में बहोत संदेह हैं, जो–सेठ सेवा छोड़ि कें दक्षिण क्यों गये? इनके कछु कामना तो नाँही। सो दक्षिण में उहां मधुसूदन ठाकुर के यहाँ क्यों गये? तहां कहत हैं, जो–सेठ के मन में यह आई, जो–दक्षिण में श्रीआचार्यजी को जनम है। सो जनमस्थान के दरसन करि आऊं, ताके लिये दक्षिण गये। तब मंदार मधुसूदन ठाकुर सेठजी सों कहे, जो–तुम कृपा करिकें या पर्वत में मेरे पास आओ तो या स्थल को पाप दूरि होय। काहेतें? मेरे यहाँ अनेक पापी आवत हैं, सो कोऊ पर्वततें महात्म्य सुनिकें गिरत है। सो उनके पाप बहोत भये हैं। तातें सगरे तीर्थ गंगाजी आदि भगवदीय के आइवे को मार्ग देखत हैं। तातें तुम या देस में आये हो तो पवित्र करो। और तुम आवोगे तो या तीरथ को महात्म्य बढैगो। तिहारो तो कछू बिगरे है नाहीं, प्रभु के आश्रयतें। या प्रकार

લીધો? પહેલાં તો તને આપતો હતો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, હું વિરક્ત છું. મણિ (લઇને) શું કરતો? જગદીશ શેઠ ચૂન (લોટ) જ્યાં ત્યાંથી આપશે. ત્યારે શેઠે કહ્યું, તને શેર ચૂન દેશે તો મને દશ શેર ચૂન પણ દેશે. શું જગદીશને કંઈ ટોટો છે! તેથી હે બ્રાહ્મણ બાવરા! હું શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય છોડી મણીનો આશ્રય કરૂં? પછી શેઠ પોતાના ઘર આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં બહુ સંદેહ છે, કે શેઠ સેવા છોડીને દક્ષિણ કેમ ગયા? એમને તો કંઈ કામના હતી નહીં? તો પછી દક્ષિણમાં ત્યાં મધુસૂદન ઠાકુરને ત્યાં કેમ ગયા? ત્યાં કહે છે, કે શેઠના મનમાં એ આવ્યું કે દક્ષિણમાં શ્રી-આચાર્યજીનું પ્રાકટ્ય છે. તે જન્મ સ્થલનાં દર્શન કરી આવું. તે માટે દક્ષિણ ગયા. ત્યારે મંદાર મધુસૂદન ઠાકુરે શેઠજીને કહ્યું, કે તમે કૃપા કરીને આ પર્વતમાં મારી પાસે આવો, તો આ સ્થલનાં પાપ દૂર થાય. કેમકે? મારે ત્યાં અનેક પાપી આવે છે. તે કોઇ પર્વતથી માહાત્મ્ય સાંભળીને પડે છે. તેથી એમનાં પાપ ઘણાં થયાં છે. તેથી બધાં તીર્થ ગંગાજી આદિ ભગવદીયના આવવાનો માર્ગ જુએ છે, તેથી તમે આ દેશમાં આવ્યા છો તો પવિત્ર કરો. અને તમે આવશો તો આ તીર્થનું મહાત્મ્ય વધશે. તમારૂં તો કંઇ બગડતુ નથી. પ્રભુના આશ્રયથી. એ પ્રકારે મંદાર મધુસૂદને

मंदार मधुसूदन कहे । तब सेठजी उह परवत पर गये । तब मणि लेइके लुभ्याए । परंतु सेठजी निष्काम हैं, इनकों कछु डर नाहीं । ताते, जो–ऐसे निष्काम होइ यामें तीर्थ कों पवित्र करिवे को सामर्थ होय, तिनकों बाधक न परें । और सकामी कों तीर्थ हू बाधक हैं । यातें, जो–उह स्थल के महात्म्य तें पर्वत तें गिरै तब मनोरथ के फल पावें । यह कहि जताये, जो–मनोरथ कामना कछु वस्तु की कामना भई तब पुष्टिमार्ग सों गिरै । और निश्चय मणि न लिये ताकौ अभिप्राय यह जताए, जो–विना माँगे (हू) कछु फल मिलै ताके लियेमें (भी) बाधक अन्य–संबंध होई, तो कामनातें तो निश्चय अन्याश्रय होय । तातें सेठ नें उह विरक्त वैष्णवसों कही, जो–'बावरे' ताकौ कारन यह, जो–मणि आदि कछू फल देन आवें, तासों बोलनो नाहीं, आपुहि चल्यो जाइ । या प्रकार सेठ के दृढाश्रय हतो ।

वार्ता–प्रसंग ६—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कासी पधारे । सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर उतरे । तब सेठ पुरुषोत्तमदास के ठाकुर श्रीमदनमोहनजी कों पंचामृत स्नान कराइ आपु भोग धरि भोजन किये । तब दामोदरदास हरसानी नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो–महाराज ! यह कहा ? यहां पंचामृत

કહ્યું, ત્યારે શેઠજી તે પર્વત ઉપર ગયા. ત્યારે મણિ લઇને લોભ દેખાડયો. પરંતુ શેઠજી નિષ્કામ છે. એમને કંઇ ડર નથી. તેથી, જે એવા નિષ્કામ હોય એમનામાં તીર્થોને પવિત્ર કરવાનુ સામર્થ્ય હોય. તેમને બાધક ન થાય. અને સકામીને તીર્થ પણ બાધક છે. એથી જે એ સ્થલના મહાત્મ્યથી પર્વત ઉપરથી પડે, ત્યારે મનોરથનું ફલ પામે. એ કહી જણાવ્યું, કે મનોરથ કામના, કોઇ વસ્તુની કામના થઇ, ત્યારે પુષ્ટિમાર્ગથી પડયો. અને, નિશ્ચય મણી ન લીધો. તેનો અભિપ્રાય એ જણાવ્યો, કે વિના માંગે પણ કંઇ ફલ મળે તેના લેવાથી (પણ) બાધક અન્યસંબંધ થાય, તો કામનાથી તો નિશ્ચય અન્યાશ્રય થાય. તેથી શેઠે એ વિરકત વૈષ્ણવને કહ્યું, કે 'બાવરા' તેનું કારણ એ કે મણી આદિ કંઇ ફલ દેવા આવે તેનાથી બોલવું નહીં. એની મેળે ચાલ્યો જાય. આ પ્રકારે શેઠને દૃઢાશ્રય હતો.

વાર્તા પ્રસંગ-૬—વળી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કાશી પધાર્યા. તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ઘરે ઉતર્યા. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઠાકુર શ્રીમદનમોહનજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી પોતે ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાનીએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! આ શું ? અહીં પંચામૃત (થી) ઠાકુરને

ठाकुर कों न्हवाए ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जदपि यह हमारी आज्ञा तें नाम देत है, तऊ इतनी मर्यादा राखी चाहिए।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो-सेवक करें ताके सन्मुख शिष्य के पाप आवत हैं, सो गुरु सामर्थ्यवान होइ, सो पाप कों जरावे। सो सेठ जदपि मेरी आज्ञातें नाम देत हैं, भगवदीय हैं, तातें पाप कहा करें याकों ? परंतु तऊ मर्यादा सों सेव्य कों पंचामृत के न्हवाएतें सेठ के पंचतत्व को सरीर सुद्ध होय, एक यह गौणभाव। और उत्तम भाव यह, जो-सेठ श्रीमदनमोहनजी की श्रीआचार्यजी महाप्रभु के भावसों सेवा करत हैं। तातें श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराइ, श्रीगोवर्द्धनधर रूप करि भोग धरत हैं। यह मुख्य भाव जाननो।

वार्ता-प्रसंग ७—बहुरि एक दिन कासी के राजा के मन में आई, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास सों हम मिलिए। सो राजा गंगा पार रहत हतो। तहां ते प्रातःकाल आयो। ता समय सेठजी छोटी परदनी पहरे गोबर संकेलत हते। तब सेठ के लोगन नें सेठ सों कह्यो, जो-तुम सों मिलन कों राजा आवत हैं। सो आछे वस्त्र पहरिकें गादी पर बैठो। तब सेठ कहे, जो-आवन दे। राजा को कहा डर है ? तब राजा आयो। तब सेठ गोबर भरे हाथ राजा के

ન્હવાયા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, યદ્યપિ એ અમારી આજ્ઞાથી નામ આપે છે, તોપણ એટલી મર્યાદા રાખવી જોઇએ.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ કે, સેવક કરે તેના સન્મુખ શિષ્યનાં પાપ આવે છે. તે (જો) ગુરુ સામર્થ્યવાન હોય તો પાપને બાળે તે શેઠ યદ્યપિ મારી આજ્ઞાથી નામ દે છે, ભગવદીય છે, તેથી પાપ શુ કરે, એમને? પરંતુ તો પણ મર્યાદા (દૃષ્ટિ) થી સેવ્ય (સ્વરૂપ) ને પંચામૃત વડે ન્હવાયાથી શેઠનું પંચતત્વનું શરીર શુદ્ધ થાય એક આ ગૌણ ભાવ. અને ઉત્તમ ભાવ એ, કે શેઠ શ્રીમદનમોહનજીની શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના ભાવથી સેવા કરે છે તેથી શ્રીઆચાર્યજી પંચામૃત સ્નાન કરાવી (તે સ્વરૂપને) શ્રીગોવર્દ્ધનધર રૂપ કરી ભોગ ધરે છે. એ મુખ્ય ભાવ જાણવો.

વાર્તા પ્રસંગ-૭—ફરી એક દિવસ કાશીના રાજાના મનમાં આવ્યું કે શેઠ પુરુષોત્તમદાસને અમે મળીએ. તે રાજા ગંગાપાર રહેતો હતો. ત્યાંથી પ્રાતઃકાલ આવ્યો. તે સમય શેઠજી નાની પરદની (પોતડી) પહેરીને છાણ એકઠું કરતા હતા. ત્યારે શેઠના માણસોએ શેઠને કહ્યું, કે તમને મળવાને રાજા આવે છે. તે સારાં વસ્ત્ર પહેરીને ગાદી ઉપર બેસો. ત્યારે શેઠ કહે, કે આવવા દે. રાજાનો શું ડર છે ? ત્યારે રાજા આવ્યો, ત્યારે શેઠ છાણ ભરેલા હાથથી રાજાની આગળ આવ્યા. ત્યારે, રાજા

आगे आये। तब राजा चतुर हतो सो कहे, सेठजी ! तुम धन्य हो। या संसार में मान बड़ाई एक तिहारी छूटी है। तब सेठ नें कही, हम गृहस्थ हैं, घर को काम कर्‌यो चाहिए। तब राजा प्रसन्न होइके घर गयो। या प्रकार सेठ कों प्रतिष्ठा की चाह रंचक हू नाहीं। गाय की टहल, सो अपने घर को काम कहे।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो-जैसे श्रीठाकुरजी की सेवा जैसे गाय की सेवा। यही घर को काम है। लौकिक वैदिक काम है सो बाहिर को काम हैं। या भांति तें सेठ ने कही।

वार्ता-प्रसंग ८—सो ऐसे सेवा करत जन्माष्टमी आई। तब श्रीआचार्यजी ने नंदरायजी के घर जन्म-उत्सव भयो ता लीला के भाव तें पालना नन्द-महोत्सव किये। तब नंदरायजी, यशोदाजी, गोपी-ग्वाल सों रह्यो न गयो। सो साक्षात् पधारे। नंद-महोत्सव अनिर्वचनीय भयो। सो दरसन सेठ पुरुषोत्तमदास कों, रुक्मिनी कों, गोपालदास कों भये।

भावप्रकाश—काहेतें ? ये लीला संबन्धी पात्र हैं।

पाछें श्रीआचार्यजी ने जसोदाजी गोपीग्वाल सों कहे, जो-या काल में तुम साक्षात् पधारे सो उचित नाहीं। तब सबनने कह्यो,

---

ચતુર હતો તે કહે, શેઠજી ! તમે ધન્ય છો. આ સંસારમાં મોટાઈએક તમારી છુટી છે. ત્યારે શેઠે કહ્યું, અમે ગૃહસ્થ છીએ, ઘરનું કામ કરવું જોઇએ. ત્યારે રાજા પ્રસન્ન થઇને ઘર ગયો. આ પ્રકારે શેઠને પ્રતિષ્ઠાની ચાહના રંચક પણ ન હતી. ગાયની ટહલને પોતાના ઘરનું કામ કહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે જેમ શ્રીઠાકુરજીની સેવા એમજ ગાયની સેવા, એજ ઘરનુ કામ છે. લૌકિક વૈદિક કામ છે, એ બહારનુ કામ છે. એ પ્રકારે શેઠે કહ્યું.

વાર્તા પ્રસંગ-૮—એમ સેવા કરતાં જન્માષ્ટમી આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ, નંદરાયજીના ઘરે જન્મ ઉત્સવ થયો તે લીલાના ભાવથી પાલના નંદ-મહોત્સવ કર્યો. ત્યારે નંદરાયજી, યશોદાજી, ગોપી ગ્વાલથી રહેવાયું નહીં. તે સાક્ષાત્ પધાર્યા. (તેથી) નંદ-મહોત્સવ અનિર્વચનીય થયો. તે દર્શન શેઠ પુરુષોત્તમદાસને, રૂકમણીને, ગોપાલદાસને થયાં.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે એ લીલા સંબધી પાત્ર છે.

પછી શ્રીઆચાર્યજીએ યશોદાજી, ગોપીગ્વાલ, ને કહ્યું, કે આ કાલમાં તમે સાક્ષાત પધાર્યા તે ઉચિત નહીં. ત્યારે બધાએ કહ્યું, જ્યાં તમે સાક્ષાત્ સ્વામિની રૂપ

जहां तुम साक्षात् स्वामिनी रूप व्है उत्सव करो तहां हमसों क्यों रह्यो जाइ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो (अबसों) हम सब तिहारे भेष धरावेंगे। तिनके भीतर व्है पधारियो। तब कहे, जो—आछो भेष सों पधारेंगे। ता दिन तें श्रीआचार्यजी ने भेष की रीति जन्माष्टमी पें किये। या प्रकार प्रथम ही जन्म-उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदास के घर कियो। ता पाछें सेठ पुरुषोत्तमदास नित्य श्रीमदनमोहनजी कों पालने झुलावते। जन्म-उत्सव के भाव में सदा मगन रहते।

वार्ता-प्रसंग ९—और श्रीआचार्यजी के पास वादी बहोत आवें। सो वाद करत संझा व्है जाय। सो आपुके भोजन बिना किये वैष्णव महाप्रसाद लेइ नाहीं। तब श्रीआचार्यजी पत्रावलंबन ग्रन्थ करिकें एक कागद पर लिखे, एक वैष्णव कों दिये, जो—विस्वेस्वर महादेवजी के देवालय में लगाइ भीति सों, यह कहियो—जितने पंडित सैव, ब्राह्मण वादी आवें सो संदेह होइ, सो यामें देख लेउ। जो उत्तर न पावो तो श्रीआचार्यजी पास आइयो। तब वैष्णव 'पत्रावलंबन' ग्रन्थ ले जाइ महादेव के पास भींति में लगाइ, सगरे मायावादी तो तहां आवें ही, तिनसों वैष्णव ने कही, जो—संदेह श्रीआचार्यजी सों पूछनो होइ सो याकों बांचि लेउ। सो सबन कों

થઈ ઉત્સવ કરો ત્યાં અમારાથી કેમ રહેવાય? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે (હવેથી) અમે બધા તમારો વેષ ધરાવીશું. તેમના અંદર (ભાવરૂપથી) પધારજો. ત્યારે કહે, કે સારૂં, વેષ દ્વારા પધારીશું. તે દિવસથી શ્રીઆચાર્યજીએ વેષની રીતિ જન્માષ્ટમી ઉપર કરી. આ પ્રકારે પ્રથમ જ જન્મ ઉત્સવ શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરે કર્યો. તે પછી શેઠ પુરુષોત્તમદાસ નિત્ય શ્રીમદનમોહનજીને પાલને ઝુલાવતા. જન્મ મહોત્સવના ભાવમાં સદા મગન રહેતા.

વાર્તા પ્રસંગ-૯—વળી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે વાદી ઘણા આવે. તે વાદ કરતાં સાંજ થઈ જાય. તેથી આપના ભોજન કર્યા વિના વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લે નહીં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'પત્રાવલંબન' ગ્રંથ કરીને એક કાગળ ઉપર (તેને) લખ્યો. (પછી) એક વૈષ્ણવને આપ્યો, કે વિશ્વેશ્વર મહાદેવજીના દેવાલયમાં લગાડી ભીંતથી, એમ કહેજે, (કે) જેટલા પંડિતો, શૈવ, બ્રાહ્મણો, વાદી આવે તે સંદેહ હોઇ તો આમાં જોઇ લો. જો ઉત્તર ન મળે તો શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવજો. ત્યારે (તે) વૈષ્ણવ 'પત્રાવલંબન' ગ્રંથ લઈ જઈ મહાદેવની પાસે ભીતમાં લગાડી, બધા માયાવાદી તો ત્યાં આવતા જ હતા, તેમને વૈષ્ણવે કહ્યું, કે સંદેહ શ્રીઆચાર્યજીને પૂછવો

उत्तर मिल्यो, सब चुप व्है रहे। और कहे, जो-श्रीआचार्यजी ईश्वर हैं, इतने छोटे ग्रन्थ में हजारन मायावादीन कों निरुत्तर किये।

भावप्रकाश—महादेवजी के पास लगाइवे कौ आसय यह है, जो-हमारो कियो तिहारे इष्ट महादेव कों प्रमाण है। तो तुमकों जीतने कितनीक बात है। और इतने पर या कासी के राजा विस्वेस्वर हैं। उनके पास यह झगरो डारे हैं। खोटे खरे के महादेव साक्षी हैं। अब जो न मानोगे तो तुम कों महादेव दंड देइंगे। या प्रकार महादेव सों कहवाइ सगरे पंडितन कों जीते। जैसे पुष्टिमार्गीयन कों इष्ट व्रजभूमि और श्रीकृष्ण तैसे सैवकों इष्ट कासी, महादेव। सो कासी में महात्म्य दृढ़ जताए बिना जगत में भक्तिमार्ग को विस्तार न होय, वैष्णवन कों पाछे ते सैव द्वेप करि दुख देइ। तातें श्रीआचार्यजी कासी में या प्रकार कौ महात्म्य पत्रावलंबन द्वारा जताए, सबकों। यातें, जो-कोई पंडित बादी काहू वैष्णवसों बोलि न सके।

वार्ता-प्रसंग १०—और एक सेठ के सगे संबंधी में मामा लगत हो। सो सेठजी सों कहे नित्य, जो-गया कों चलौ तो मैं तिहारे संग चलों। तब सेठ कहे, अवकास पाइके चलेंगे। सो चैत महिना आयो। तब उह मामा ने बहोत बहोत आग्रह कियो,

---

હોય તો આને વાંચી લો. તેમાં બધાનો ઉત્તર મળ્યો. બધા ચુપ થઇ ગયા. અને કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી ઇશ્વર છે. આટલા નાના ગ્રંથમાં હજારો માયાવાદીઓને નિરુત્તર કર્યા.

ભાવપ્રકાશ—મહાદેવજીની પાસે લગાડવાનો આશય એ છે, કે અમારો કર્યો તમારા ઇષ્ટ મહાદેવને પ્રમાણ છે. તો તમને જીતવા તે કેટલીક વાત છે? અને એટલા ઉપર આ કાશીના રાજા વિશ્વેશ્વર છે, તેમની પાસે આ ઝઘડો નાખ્યો છે. ખોટા-ખરાના મહાદેવ સાક્ષી છે. હવે જો નહીં માનો તો તમને મહાદેવ દંડ દેશે. એ પ્રકારે મહાદેવથી કહેવડાવીને બધા પંડિતોને જીત્યા. જેમ પુષ્ટિમાર્ગીયોનાં ઇષ્ટ વ્રજભૂમિ અને શ્રીકૃષ્ણ તેમ શૈવીના ઇષ્ટ કાશી (ને) મહાદેવ, તેથી કાશીમાં માહાત્મ્ય દૃઢ જણાવ્યા વિના જગતમાં ભક્તિમાર્ગનો વિસ્તાર ન થાય. વૈષ્ણવોને પાછળથી શૈવ દ્વેષ કરી દુઃખ દે, તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ કાશીમાં આ પ્રકારનું માહાત્મ્ય પત્રાવલંબન દ્વારા જણાવ્યું, બધાને. (તે) એથી કે કોઇ પંડિત વાદી કોઇ વૈષ્ણવથી બોલી ન શકે.

વાર્તા પ્રસંગ-૧૦—અને એક શેઠના સગા સંબંધીમાં મામા લાગતો હતો. તે શેઠજીને કહે નિત્ય, કે, ગયા ચાલો, તો હું તમારી સાથે ચાલું. ત્યારે શેઠ કહે, નવરાશે ચાલીશું. તે ચૈત્ર મહિનો આવ્યો, ત્યારે તે મામાએ બહુ બહુ આગ્રહ કર્યો કે, ગયા

जो–गया चलो। तब सेठ ने दोइ गाड़ी की तैयारी कराई। एक गाड़ी पर राजभोग पाछे सेठ चले। सो कोस पांच छह गये। तब एक बेंगन को खेत (आयो), तामें ते खेतवारे नें सुंदर बेंगन चीनिकें बड़ो टोकरा भरि के धर्यो, सो सेठ की दृष्टि परी। तब सेठजी नें गाड़ी ठाड़ी कराई। यह विचारे, जो–श्रीमदनमोहनजी के सेनभोग लायक साग होइगो। तब वासों कहे, जो–यह बेंगन को कहा लेइगो? तब उह कह्यो, एक रुपैया लगेगो। तब सेठ नें रुपैया दे बेंगन सब गाड़ी में धरि गाडीवान सों कहे, बेगे गाड़ी पाछें कों घर कों हांकि, तोकों एक रुपैया देउंगो। इहां श्रीमदनमोहनजी रुकिमिनी सों कहें, बेग तू उठि कै न्हाइ कें पूरी करि, सेठ साक लेकें आवत हैं। तब रुकिमिनी ने कही, महाराज! सेठ तो गया कों गये हैं। तब श्रीठाकुरजी ने कही, सेठ गया करि आयो, उनकी गया पूरण भई। तू उठि के पूरी वेगे करि। तब रुकिमिनी न्हाइ के, मैदा घर में सिद्ध हतो, सो पूरी करन लागी। पहर एक रात्रि गई हती। कछूक पूरी बाकी रही, तब सेठ घर पर आई पुकारे। तब गोपालदास ने किवाड खोलि दिये। तब सेठ रुकिमिनी सों पूछे, कहा समय है? तब रुकिमिनी ने कही, पूरी करी हैं, साक नाहीं है। तब सेठजी ने कही, मैं साक लायो हों। तब रुकिमिनी ने कही, बेगे सँवारि देउ,

---

ચાલો. ત્યારે શેઠે બે ગાડીની તૈયારી કરાવી. એક ગાડી ઉપર રાજભોગ પછી શેઠ ચાલ્યા. તે કોસ પાંચ છ ચાલ્યા ત્યારે એક રીંગણાનું ખેતર (આવ્યું). તેમાંથી ખેતરવાળાએ સુંદર રીંગણાં વીણીને મોટા ટોકરો ભરીને ધર્યો. તે શેઠની દૃષ્ટિ પડી. ત્યારે શેઠજીએ ગાડી ઉભી રખાવી. એ વિચાર્યું, કે શ્રીમદનમોહનજીના સેનભોગ લાયક શાક થશે. ત્યારે તેને કહ્યું, કે આ રીંગણાનું શું લઇશ? ત્યારે તે બોલ્યો, એક રૂપીઓ લાગશે. ત્યારે શેઠે રૂપીઓ આપી રીંગણાં બધાં ગાડીમાં ધરી ગાડીવાનને કહે, જલ્દી ગાડી પાછળ ઘર તરફ હાંક. તને એક રૂપૈયો આપીશ. અહીં શ્રીમદનમોહનજી રૂકમણીને કહે, તૂ વ્હેલી ઉઠીને સ્નાન કરીને પૂરી કર શેઠ શાક લઇને આવે છે. ત્યારે રૂકમણીએ કહ્યું, મહારાજ! શેઠ તો ગયાએ ગયા છે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, શેઠ ગયા કરી આવ્યો. એમની ગયા પૂરણ થઈ. તૂ ઉઠીને પૂરી જલ્દી કર. ત્યારે રૂકમણી નહાઇને મેદા, ઘરમાં સિદ્ધ હતો તે પૂરી કરવા લાગી. પ્રહર એક રાત્રિ ગઇ હતી. થોડીક પૂરી બાકી રહી ત્યારે શેઠ ઘર ઉપર આવીને પોકાર્યા. ત્યારે ગોપાલદાસે કમાડ ખોલી દીધાં. ત્યારે શેઠ રૂકમણીને પૂછે, શો સમય છે? ત્યારે રૂકમણીએ કહ્યું, પૂરી કરી છે, શાક નથી. ત્યારે શેઠજીએ કહ્યું, હું શાક લાવ્યો છું.

थोरी सी पूरी रही है। तब सेठजी और गोपालदास मिलिकें बेंगन सँवारि दिये। रुकिमिनी ने सामग्री सिद्ध करी। सेठहू न्हाइकें भोग धरे। तब सेठ गोपालदास सों कहे, दस पांच वैष्णव वेगे मिले सो लिवाइ लाउ। तब गोपालदास वैष्णवन कों बुलाइ लाये। इतने समय भयो भोग सराए। सेन आरती करि श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाए। अनौसर कराइ वैष्णवन सों मिलिकें महाप्रसाद लिये। पाछें उह मामा कछूक दिन में गया करि आयो। तब कह्यो, तुम पाछे तें क्यों फिरि आये? तब सेठने कही, मोकों कहा पूछत हो, मेरे घरमें कछु काम हतो। तातें फिरि आयो।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–सामग्री उत्तम देखिये तामें अपने प्रभु को स्मरण करिये। वाकों वहोत मोल में (खरीदिये), झगरो न करिये। अपने सामर्थ प्रमान लीजिये। और भगवत सेवा रूप यह धर्म के आगे सगरे वैदिक धर्म तुच्छ जानिये। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ। सेठ की प्रीति अर्थ दूसरे फिरि सेनभोग श्रीठाकुरजी अरोगे। तातें स्नेह है सोई प्रभु प्रसन्नता को कारन है।

सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

✻ ✻ ✻

ત્યારે રૂકમણીએ કહ્યું, જલ્દી સુધારી દો. થોડી પૂરી (કરવી) બાકી છે. ત્યારે શેઠજી અને ગોપાલદાસે મળીને રીંગણાં સુધારી દીધાં. રૂકમણીએ સામગ્રી સિદ્ધ કરી. શેઠ પણ ન્હાઇને ભોગ ધર્યા. ત્યારે શેઠ ગોપાલદાસને કહે, દશ-પાંચ વૈષ્ણવો જલ્દી મળે તેમને બોલાવી લાવો. પછી ગોપાલદાસ વૈષ્ણવોને બોલાવી લાવ્યા. એટલામાં સમય થયો, ભોગ સરાવ્યા. સેન આરતી કરી શ્રીઠાકુરજીને પોઢાવ્યા. અનોસર કરાવી વૈષ્ણવોને મળીને મહાપ્રસાદ લીધો. પછી તે મામો કેટલાક દિવસમાં ગયા કરી આવ્યો. ત્યારે કહ્યું, તમે પાછળથી કેમ ફરીને પાછા આવ્યા? ત્યારે શેઠ કહ્યું, મને શું પૂછો છો. મારા ઘરમાં કંઇ કામ હતું. તેથી ફરી આવ્યો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત થયો કે, સામગ્રી ઉત્તમ જોઇએ. તેમાં પોતાના પ્રભુનું સ્મરણ કરવું. તેને ઘણા મૂલ્યથી (ખરીદવું), ઝઘડો ન કરવો. પોતાની સામર્થ્ય પ્રમાણે લઇએ. અને ભગવત્સેવા રૂપ આ ધર્મની આગળ બધા વૈદિક ધર્મો તુચ્છ જાણીએ ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થાય. શેઠની પ્રીતિ માટે ફરી બીજી વાર સેનભોગ શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. તેથી સ્નેહ છે તેજ પ્રભુ પ્રસન્નતાનુ કારણ છે.

તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તાનો પાર નહીં, તે ક્યાં સુધી કહીએ.

✻ ✻ ✻

मंगाइ दियो। सो रुकिमिनी पहर रात्रि पिछली सों उठि नित्य नेगतें अधिक सामग्री करें। सो मंगलातें राजभोग पर्यन्त अरोगावे। पाछे उत्थापन के पहर एक पहले न्हाइ सामग्री करें। सो उत्थापन तें सयन पर्यंत अरोगावे। ऐसे करत कितनेक दिन बीते। तब सेठ नें रुकिमिनी सों पूछ्यो, जो–कार्तिक न्हाते तो तोकों कबहू देख्यो नाहीं, तू गंगाजी कौन समय न्हाति है? तब रुकिमिनी कही, मेरे कार्तिक न्हाइवे को कहा काम है? जाकों कछू कामना होइ सो कार्तिक न्हाइ। मैं तो याही भांति न्हात हों। तब सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—तहाँ यह संदेह होइ, जो–रुकिमिनी ने कार्तिक न्हाइवे को नाम लेके सेठ पास सामग्री क्यों लीनी, अरोगाइवे को नाम लेती तो कहा सेठ सामग्री न देते? तहाँ कहत हैं, जो–जैसे कुमारिकान को मन श्रीठाकुरजी सों लाग्यो तब न्यारे मनोरथ (कियो), (सो) जसोदाजी सों कह्यो चाहिये। तब जसोदाजी सों कहे; जो–तुम कहो तो हम कात्यायनी देवी को पूजन करें, मागसिर महिना, श्रीयमुनाजी स्नान। तब श्रीजसोदाजी ने श्रीनंदरायजी सों कहि न्यारी सामग्री पूजन की घी खाँड सब कुमारिकान कों दिये। तब कात्यायनी देवी को मिस करी श्रीयमुनाजी को पूजन कियो। काहेतें? श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी एक

તે રૂકમણી પ્રહર રાત્રિ પાછલીએ ઉઠી નિત્ય નેક (બંધાણ)થી અધિક સામગ્રી કરે. તે મંગલાથી રાજભોગ પર્યન્ત આરોગાવે. પછી ઉત્થાપનના એક પ્રહર પહેલાં ન્હાઇને સામગ્રી કરે. તે ઉત્થાપનથી શયન પર્યંત આરોગાવે. એમ કરતાં કેટલાક દિવસ વીત્યા. ત્યારે શેઠે રૂકમણીને પૂછયું, કે કાર્તિક ન્હાતાં તો તને કદીયે જોઈ નહીં. તૂ ગંગાજી કયા સમયે ન્હાય છે? ત્યારે રૂકમણી કહે, મારે કાર્તિક ન્હાવાનું શું કામ છે? જેને કંઇ કામના હોય તે કાર્તિક ન્હાય. હું તો આ પ્રકારે ન્હાઉં છું. ત્યારે શેઠ પુરુષોત્તમદાસ બહુ પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં એ સંદેહ થાય કે રૂકમણીએ કાર્તિક ન્હાવાનું નામ લઇને શેઠ પાસે સામગ્રી કેમ લીધી? આરોગાવવાનું નામ લેતી તો શું શેઠ સામગ્રી ન આપતા? ત્યાં કહે છે, કે જેમ કુમારિકાનું મન શ્રીઠાકુરજીથી લાગ્યુ, ત્યારે અલગ મનોરથ (કર્યો). તે યશોદાજીથી કહેવું જોઇએ. ત્યારે યશોદાજીને કહે, કે તમે કહો તો અમે કાત્યાયની દેવીનુ પૂજન કરીએ. માર્ગશીર્ષ મહિનો, શ્રીયમુનાજીનુ સ્નાન. ત્યારે શ્રીયશોદાજીએ શ્રીનંદરાયજીને કહીને ન્યારી સામગ્રી પૂજાની ઘી-ખાંડ બધુ કુમારિકાઓને આપ્યુ. ત્યારે કાત્યાયની દેવીનું મિષ (બહાના) કરીને શ્રીયમુનાજીનુ

ही हैं। तातें "पुरुषोत्तमसहस्रनाम" में श्रीआचार्यजी कहे हैं, "कात्यायनी व्रत व्याज सर्वभावाऽऽश्रिताङ्गनः"। कात्यायनी व्रत को व्याज, जो–मिस करि सर्व प्रकार को भाव सगरे अंग में आवेस करि प्रभुको आश्रय कियो, तैसे ही रुकिमिनी ने हू कार्तिक, मार्गसिर, माह, वैसाख इत्यादिक को नाम ले व्रजभक्तन के भाव पूर्वक सेवा करी। यामें यह जताये, जैसे व्रजभक्तन के भाव की खबरि काहुकों न परी तैसे रुकिमिनी के भाव की खबरि काहुकों न परी। और की कहा? सेठ पुरुषोत्तमदास हू रुकिमिनी के हृदय के भावकों पहोंचि न सकते, ऐसो अगाध हृदय हतो।

वार्ता–प्रसंग ३—**बहुरि एक समय रुकिमिनी की देह असक्त भई। तब रुकिमिनी ने कह्यो, अब देह छूटे तो आछो। जा देह तें भगवान की सेवा न भई सो देह कौन काम की? पाछें भगवत् इच्छा तें देह छूटी। तब काहु वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों कही, महाराज! रुकिमिनी ने गंगा पाई। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–ऐसे मति कहो। ऐसे कहो, जो–गंगाजी ने रुकिमिनी पाई।**

भावप्रकाश—काहेतें, जो–गंगाजी किनारे तो अनेक जीव देह छोड़त हैं। परन्तु गंगाजी कों ऐसी भगवदीय कहाँ मिले? या प्रकार श्रीमुखतें कहें। ताको कारन यह, जो–भगवदीय गंगाजी आदि तीरथ कों पवित्र करत हैं। तातें

પૂજન કર્યું. કેમકે શ્રીઠાકુરજી શ્રીયમુનાજી એક જ છે. તેથી 'પુરુષોત્તમ સહસ્રનામ' માં શ્રીઆચાર્યજી કહે છે, 'કાત્યાયનીવ્રતવ્યાજ સર્વભાવાઽઽશ્રિતાંગનઃ" કાત્યાયની વ્રતનું વ્યાજ જે મિષ કરી સર્વ પ્રકારનો ભાવ બધા અંગમાં આવેશ કરી પ્રભુનો આશ્રય કર્યો. તેજ પ્રકારે રૂકમણીએ પણ કાર્તિક, માર્ગશીર્ષ, મહા, વૈશાખ ઇત્યાદિકનું નામ લઇ વ્રજભકતોના ભાવપૂર્વક સેવા કરી. એમાં એ બતાવ્યું, જેમ વ્રજભકતોના ભાવની ખબર કોઇને ન પડી તેમ રૂકમણીના ભાવની ખબર કોઇને ન પડી. બીજાને તો શું ? શેઠ પુરુષોત્તમદાસ પણ રૂકમણીના હૃદયના ભાવને પહોંચી ન શકતા એવું અગાધ હૃદય હતું.

વાર્તા પ્રસંગ-૩—ફરી એક સમય રૂકમણીની દેહ અશક્ત થઈ. ત્યારે રૂકમણીએ કહ્યું, હવે દેહ છૂટે તો સારૂં ! જે દેહથી ભગવાનની સેવા ન થઈ તે દેહ કોણ કામની ? પછી ભગવદ્ ઇચ્છાથી દેહ છુટી. ત્યારે કોઈ વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, મહારાજ ! રૂકમણીએ ગંગા મેળવી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, એમ ન કહો. એમ, કહો, કે ગંગાજીએ રૂકમણી મેળવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, ગંગાજીને કિનારે તો અનેક જીવો દેહ છોડે છે. પરંતુ ગંગાજીને એવી ભગવદીય ક્યાં મળે ? એ પ્રકારે શ્રીમુખથી કહ્યું. તેનું કારણ

नन्ददासजी नें (हू) पंचाध्याई में गायो है–" गंगादिकन पवित्र करन अवनि पर डोलें"। भगवदीय को प्रागट्य जीवन के उद्धारार्थ ही है। जैसे भगवान् को प्रागट्य तैसेही भगवदीय को प्रागट्य हैं। सो 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रंथ में श्रीआचार्यजी भगवदीय को स्वरूप लिखे हैं—

" तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः।
भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् ॥१२॥
स्वरूपेणावतारेण लिंगेन च गुणेन च।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा ॥१३॥

पुष्टिमार्गीय जीव यह संसार के जीवन तें भिन्न हैं, यामें संसय नाहीं। भगवान को रूप हीं हैं। भगवान की सेवा ही के अर्थ जगत में पुष्टि धर्म प्रगट करिवे के लिये जन्मे हैं। भगवान के स्वरूप में, भगवान के अवतार में, भगवान के जैसे गुन हैं, भगवान की जैसी क्रिया हैं, तैसे ही भगवदीय में लक्षण हैं। तातें भगवान में अरु भगवदीय में तारतम्य नाहीं हैं।' या प्रकार श्रीगुसांईजी भगवदीय के गुण सब रुकिमिनी में कहे।

सो यह रुकिमिनी श्री आचार्यजी महाप्रभुन की सेवक ऐसी कृपापात्र भगवदीय हीं। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए।

※ ※ ※

એ કે, ભગવદીય ગંગાજી આદિ તીર્થોને પવિત્ર કરે છે તેથી નંદદાસજીએ (પણ) પંચાધ્યાયીમાં ગાયુ છે, 'ગંગાદિકન પવિત્ર કરન અવની પર ડોલે' ભગવદીયનું પ્રાકટ્ય જીવોના ઉદ્ધારાર્થે જ છે. જેમ ભગવાનનું પ્રાકટ્ય તેમજ ભગવદીયનું પ્રાકટ્ય છે. તે "પુષ્ટિપ્રવાહમર્યાદા" ગ્રન્થમાં શ્રીઆચાર્યજી ભગવદીયનું સ્વરૂપ લખે છે—

"તસ્માજ્જીવાઃ પુષ્ટિમાર્ગે ભિન્ના એવ ન સશયઃ"

પુષ્ટિમાર્ગના જીવ આ સંસારના જીવોથી ભિન્ન (જુદા) છે. તેમાં સંશય નથી. ભગવાનનુ રૂપ જ છે. ભગવાનની સેવાને માટેજ જગતમાં પુષ્ટિધર્મ પ્રકટ કરવાને અર્થે જન્મ્યા છે. ભગવાનના સ્વરૂપમાં, ભગવાનના અવતારમાં, ભગવાનના જેવા ગુણ છે, ભગવાનની જેવી ક્રિયા છે, તેવાંજ ભગવદીયોમાં લક્ષણ છે. તેથી ભગવાનમાં અને ભગવદીયમાં તારતમ્ય નથી. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી ભગવદીયના ગુણ બધા રૂકમણીમાં કહે.

આ રૂક્મણી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની સેવક એવી કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેથી એની વાર્તાના પાર નહી, તે ક્યાં સુધી કહિએ ?

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास के बेटा गोपालदास, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदास लीला में इन्दुलेखा श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं, ताकी सखी गायनकला सो ये हैं। व्रजभक्तन को विरह संयुक्त गायन तिनकी कला गोपालदास में झलकत है। यह कहि यह जताए, जो-गोपालदास विरह में सदा मगन रहते।

वार्ता-प्रसंग १—सो गोपालदास सों श्रीमदनमोहनजी सानुभाव हते, सो जो चहिए सो मांगि लेते। ऐसे सदैव कृपा करते। और गोपालदास कीर्तन बहुत करते। सो एक समय होरी के दिनन में गोपालदास कों बहोत विरह भयो। होरी के भाव संयोग रस की विस्मृति व्हे गई। तब नित्य जैसें व्रजभक्त 'वेणुगीत' 'जुगलगीत' गावत हैं, ता भावसों दोइ कीर्तन 'ललना' कहिकें गाये।

भावप्रकाश—सो ललना को अर्थ यह, जो-व्रज की ललना या प्रकार विरह में गान करति हैं।

सो ललना गावत ही श्रीठाकुरजी लीला सहित दरसन दिये। तब गोपालदास बलिहारी लिये। तातें गाये, जो- "मदनमोहन के वारनें बलि बलि दास गोपाल।"

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક શેઠ પુરુષોત્તમદાસના બેટા ગોપાલદાસ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—શેઠ પુરુષોત્તમદાસ લીલામાં ઇન્દુલેખા શ્રીસ્વામિનીજીની સખી છે. તેની સખી ગાયનકલા તે આ છે. વ્રજભકતોના વિરહ સંયુક્ત ગાયન તેની કળા ગોપાલદાસમાં ઝળકે છે. એ કહી એમ જણાવ્યું, કે ગોપાલદાસ વિરહમાં સદા મગન રહેતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે ગોપાલદાસને શ્રીમદનમોહનજી સાનુભાવ હતા. જે જોઇએ તે માંગી લેતા. એવી સદૈવ (સદા) કૃપા કરતા. અને ગોપાલદાસ કીર્તન બહુ કરતા. તે એક સમય હોરીના દિવસોમાં ગોપાલદાસને બહુ વિરહ થયો. હોરીના ભાવ (રૂપ) સંયોગરસની વિસ્મૃતિ થઈ ગઈ. ત્યારે નિત્ય જેમ વ્રજભક્ત વેણુગીત, યુગલગીત ગાય છે, તે ભાવથી બે કીર્તન 'લલના' કહીને ગાયાં.-

ભાવપ્રકાશ—તે 'લલના' નો અર્થ એ, કે વ્રજની લલના એ પ્રકારે વિરહમાં ગાન કરે છે.

તે લલના ગાતાં જ શ્રીઠાકુરજીએ લીલાસહિત દર્શન દીધાં. ત્યારે ગોપાલદાસે બલિહારી લીધી. (ઓવારી ગયા), તેથી ગાયું, કે-"મદનમોહનને વારને બલિ બલિ દાસ ગોપાલ"

वार्ता-प्रसंग २—सो कितनेक दिन पाछे गोपालदास की देह असक्त भई। तब भगवत् नाम को उच्चार करते। तब श्रीमदनमोहनजी आप हुंकारी देते, एसी कृपा करते। ऐसे करत रात्रि कों गोपालदास कों नींद आवती, फेरि चौंकि कें विरह में पुकारते। श्रीमदनमोहनजी! तब मंदिर सों श्रीठाकुरजी कहते, क्यों पुकारते हो? मैंतो तेरे निकट हों। तब गोपालदास कहते, महाराज! आपु क्यों जागत हो? मेरो तो पुकारिवे को सुभाव पर्‍यो है। तब मदनमोहनजी कहते, मोसों तेरो विरह सह्यो नाहीं जात। तातें तेरो समाधान करत हों। या प्रकार गोपालदास मंदिर को अरु चौक को ताला लगाइ चौखटि पर माथो धरि के, एक वस्त्र बिछाइ विरह में परे रहते। सरीर के सुख की खबरि ही नाहिं रहती। तातें विरह के कीर्तन बहुत गाये हैं।

और श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ सुबोधिनी, निबंध, श्रीगुसांईजी के रहस्य ग्रन्थ सो सब गोपालदास अनोसर में देख्यो करते। समय पर भगवत् सेवा करते। व्यौपार-बनिज लौकिक वैदिक सर्व त्याग करि लीलारस में मगन रहतें। सो श्रीगुसांईजी गोपालदास ऊपर बहोत प्रसन्न रहते। काहेतें, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास को परिवार

વાર્તા પ્રસંગ-૨—તે કેટલાક દિવસ પછી ગોપાલદાસની દેહ અશક્ત થઈ. ત્યારે ભગવન્નામનો ઉચ્ચાર કરતા. ત્યારે શ્રીમદનમોહનજી આપ હુંકારી દેતા, એવી કૃપા કરતા. એમ કરતાં રાત્રિએ ગોપાલદાસને નીંદ આવતી. પછી ચોંકીને વિરહમાં પુકારતા 'શ્રીમદનમોહનજી' ત્યારે મંદિરમાંથી શ્રીઠાકુરજી કહેતા, કેમ પુકારે છે? હું તો તારી પાસે છું. ત્યારે ગોપાલદાસ કહેતા, મહારાજ! આપ કેમ જાગો છો? મારો તો પુકારવાનો સ્વભાવ પડ્યો છે. ત્યારે શ્રીમદનમોહનજી કહેતા, મને તારો વિરહ સહી શકાતો નથી. તેથી તારૂં સમાધાન કરૂં છું. એ પ્રકારે ગોપાલદાસ મંદિરનું અને ચોકનું તાળું લગાડી ચોખટ ઉપર માથું ધરીને એક વસ્ત્ર બિછાવી વિરહમાં પડ્યા રહેતા. શરીરના સુખની ખબર જ ન રહેતી. તેથી વિરહનાં કીર્તન બહુ ગાયાં છે.

અને શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થ સુબોધિની, નિબંધ, શ્રીગુસાંઇજીના રહસ્ય ગ્રન્થ તે બધા ગોપાલદાસ અનોસરમાં જોયા કરતા. સમય ઉપર ભગવત્સેવા કરતા. વેપાર વાણિજ્ય લૌકિક વૈદિક બધું ત્યાગ કરી લીલા રસમાં મગન રહેતા. તેથી શ્રીગુસાંઇજી ગોપાલદાસ ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન રહેતા. કેમકે, તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસનો પરિવાર એવો જ જોઇએ (એમ કહેતા). વિરહની દશા અનિર્વચનીય છે. તેથી ગોપાલદાસની

ऐसो ही चाहिये। विरह की दसा अनिर्वचनीय है। तातें गोपालदास की वार्ता को विस्तार नाहीं किये। सेठ पुरुषोत्तमदास के परिवार सहित वार्ता एक। या प्रकार वैष्णव ग्यारह भये, परन्तु परिवार सहित वार्ता एक गिनवे तें वैष्णव छै भये। वार्ता ॥६॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रामदासजी सारस्वत ब्राह्मण, पूरबमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ए रामदासजी लीला में राधा सहचरी की सखी है। 'प्रेम मंजरी' इनको नाम है। ए कुमारिका के जूथ में है।

सो रामदास के पिता के पास द्रव्य बहोत हतो। परन्तु पुत्र नाहीं हतो। सो सूर्य की उपासना बहोत करी। तब सूर्य प्रसन्न होइ के एक पुत्र दियो। सो रामदासजी बरस आठ के भये तब पिता ने विवाह रामदास को कियो। पाछें देह छोड़ी। सो रामदास कों एक मर्यादामार्गीय वैष्णव को सतसंग भयो। तब मर्यादामार्गीय वैष्णव ने कही, कोई तीरथ करे हो? तब रामदासजी कहे, पिता की देह छूटी, अब घर छोड़ि के कैसे जाँइ? तब वा मर्यादामार्गीय वैष्णव ने कही, भलो! गंगासागर तो तिहारे निकट है। यहां तो न्हाइ आवो, चलो मैं संग

વાર્તાનો વિસ્તાર નથી કર્યો. શેઠ પુરુષોત્તમદાસના પરિવાર સહિત વાર્તા એક, આ પ્રકારે વૈષ્ણવ અગ્યાર થયા પરન્તુ પરિવાર સહિત વાર્તા એક ગણવાથી વૈષ્ણવ ૭ થયા. વાર્તા ॥ ૬ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક રામદાસજી, સારસ્વત બ્રાહ્મણ, પૂર્વમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહે છે—

ભાવપ્રકાશ—એ રામદાસજી લીલામાં રાધા સહચરીની સખી છે. પ્રેમ-મંજરી એમનું નામ છે. એ કુમારિકાના યુથમાં છે. તે રામદાસના પિતાની પાસે દ્રવ્ય ઘણું હતું. પરન્તુ પુત્ર ન હતો. તે સૂર્યની ઉપાસના બહુ કરી. તેથી સૂર્યે પ્રસન્ન થઇને એક પુત્ર આપ્યો. તે રામદાસજી વરસ આઠના થયા ત્યારે પિતાએ રામદાસનો વિવાહ કર્યો. પછી દેહ છોડી. તે રામદાસને એક મર્યાદામાર્ગીય વૈષ્ણવનો સત્સંગ થયો. ત્યારે મર્યાદામાર્ગીય વૈષ્ણવે કહ્યું, કોઇ તીર્થ કર્યું છે? ત્યારે રામદાસજી કહે, પિતાની દેહ છૂટી. હવે ઘર છોડીને કેવી રીતે જાય? ત્યારે તે મર્યાદા-માર્ગીય વૈષ્ણવે કહ્યું, ભલો, ગંગાસાગર તો તારી પાસે છે. અહીં તો ન્હાઇ આવો.

वार्ता–प्रसंग १—सो रामदासजी अष्ट–प्रहर अपरस में रहते। जलपान बीड़ा अपरस में लेते।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो–लौकिक काहू सों बोलते नाहीं। ब्यौहार–बनिज कछू न करते, स्त्रीसंग हू छोड़े।

यां प्रकार भगवत सेवा करते। श्रीठाकुरजी को नेगहू बहोत हतो। द्रव्य हू बहोत हतो। सो कछुक दिन में द्रव्य थोरो सो आइ रह्यो।

भावप्रकाश—ताको अभिप्राय यह, जो–रंच द्रव्यको अहंकार हतो। सो अन्याश्रय श्रीठाकुरजी कों छुड़ाय दैन्य करनो है। तातें द्रव्य थोरो सो रह्यो।

तब रामदास ने बिचार्‌यो, जो–कछू द्रव्य को उपाइ कर्‌यो चहिए। तब पुरब देस में पटवस्त्र बुनावत हैं तिनकों तांती कहत हैं। सो तांतीन कों ब्याज द्रव्य दिये। सो ब्याज बहोत आवन लाग्यो, तब रामदासजी के मन में कछुक हरख भयो। तातें श्रीठाकुरजी आज्ञा किये, जो–तू मोकों तांतीन ऊपर राख्यो ?

भावप्रकाश—ताकौ आसय यह, जो–मैं भाव–प्रीति सों रहत हों। सो पहले द्रव्य पर राख्यो। जो–द्रव्य घट्यो तब ब्याज पर राख्यो। जो–तांती सों

વાર્તા પ્રસંગ-૧—તે રામદાસજી આઠે પહોર અપરસમાં રહેતા જલપાન બીડા અપરસમાં લેતા.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એમ જણાવ્યું કે લૌકિક કોઇથી બોલતા નહીં. વ્યવહાર, વાણિજ્ય, કંઇ ન કરતા. સ્રી સંગ પણ છોડયો.

આ પ્રકારે ભગવત્સેવા કરતા. શ્રીઠાકુરજીનો નેક પણ ઘણો હતો. દ્રવ્ય પણ ઘણુ હતું. તે કેટલાક દિવસમા દ્રવ્ય થોડુંક આવી રહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—તેનો અભિપ્રાય એ, કે રંચક દ્રવ્યનો અહંકાર હતો. તે શ્રીઠાકુરજીને અન્યાશ્રય છોડાવીને દીનતા કરવી છે. તેથી દ્રવ્ય થોડુંક રહ્યું.

ત્યારે રામદાસે વિચાર કર્યો, કે કંઇ દ્રવ્યનો ઉપાય કરવો જોઇએ ત્યારે પૂર્વ દેશમાં કપડાં વણાવે છે તેને તાંતી (વણકરોનો મુખી) કહે છે તે તાંતી લોકોને વ્યાજે દ્રવ્ય આપ્યું. તે વ્યાજ ઘણું આવવા લાગ્યું. ત્યારે રામદાસજીના મનમાં કંઇક હર્ષ થયો તેથી શ્રીઠાકુરજીએ આજ્ઞા કરી, કે તેં મને તાંતી લોકો ઉપર રાખ્યો ?

ભાવપ્રકાશ—તેનો આશય એ, કે–હું (તો) ભાવ–પ્રીતિથી રહું છું. તે પહેલાં દ્રવ્ય ઉપર રાખ્યો. દ્રવ્ય ઘટયું ત્યારે વ્યાજ ઉપર રાખ્યો. તે તાંતીનું

ब्याज आवे। तामें मेरी सेवा (करी)। ब्याज को द्रव्य महा हीन, द्रव्य को मैल। सो तासों (सेवा) करे, सो तापर मैं कैसें रहूँगो ?

तब यह आज्ञा सुनि के रामदास चौंकि परे।

भावप्रकाश—सो यह, जो–हाय हाय! मैं बुरो काम कियो। अब भगवत् इच्छा होइगी सो सही, परन्तु ऐसो कार्य कब हू न करनो।

तब तांतीन पास गये। कहे, मेरो सगरो द्रव्य देहु। तब तांतीन ने कही, तुम कों ब्याज दिये जात हैं तो द्रव्य कहा देय ? कहा थोरे दिनन में (ही) मांगन लागे ? तब रामदासजी कहे, मोकों लरिका साथ काम पर्‍यो है, लरिका कहे सो करनो।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताये, जो–बालक कौ ख्याल विरुद्ध है। कोई खिलोना कों ऊंचे बैठारे, काहू कों नीचे बैठारे। काहू कों फोरि डारे। सोई प्रभु कौ स्वभाव, कर्तुं, अकर्तुं अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्य। जो–मन में आवे सो करें। यह सिद्धांत कहे। परन्तु तांती जाने कोई बालक होइगो।

सो सगरो द्रव्य भेलो करिके रामदासजी कों दिये। सो घर लाये। सेवा करन लागे। सो कछूक दिन में सगरो द्रव्य उठि गयो।

વ્યાજ આવે તેનાથી મારી સેવા કરી. વ્યાજનું દ્રવ્ય મહાહીન, દ્રવ્યનો મેલ તેનાથી સેવા કરે ! તેના ઉપર હું કેમ રહીશ. !

ત્યારે આ આજ્ઞા સાંભળીને રામદાસ ચોંકી પડયા.

ભાવપ્રકાશ—તે એ, કે હાય! હાય! મેં ખોટું કામ કર્યું. હવે ભગવદીચ્છા હશે તે થશે. પરંતુ એવુ કામ કદી ન કરવું.

ત્યારે તાંતી લોકો પાસે ગયા. કહે, મારૂં બધું દ્રવ્ય દો. ત્યારે તાંતી લોકોએ કહ્યું, તમને વ્યાજ આપે જઇએ છીએ તો દ્રવ્ય કેમ દઇએ ? શું થોડા દિવસોમાં (જ) માંગવા લાગ્યા ? ત્યારે રામદાસજી કહે, મારે બાલક સાથે કામ પડયું છે. બાલક કહે તે કરવું.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એ જણાવ્યું, કે બાલકના વિચાર (પરસ્પર) વિરુદ્ધ હોય છે. કોઇ રમકડાને ઉંચે બેસાડે, કોઇને નીચે બેસાડે. કોઇને તોડી નાખે. તેવો જ પ્રભુનો સ્વભાવ, કર્તું, અકર્તું, અન્યથાકર્તુંમ સર્વસામર્થ્ય. જે મનમાં આવે તે કરે. એ સિદ્ધાંત કહ્યો. પરંતુ તાંતીએ જાણ્યું, કે કોઇ બાલક (ઘરમાં) હશે.

તે બધું દ્રવ્ય ભેગું કરીને રામદાસજીને આપ્યું તે ઘર લાવ્યા. સેવા કરવા લાગ્યા. તે થોડા દિવસમાં બધું દ્રવ્ય ઉઠી ગયું.

लेखो निकार। तब बनिया ने कही, तुम लेखो चुकाइ रुपैया १०० अधिक धरि अपने हाथ सों लिखि गये हो, फेरि देखि लेहु। सं वही में श्रीठाकुरजी के हस्ताक्षर देखे, तब चुप करि रहे। तब घ में आइ बिचारे, जो-अब घर में रहनो नाहीं। चाकरी करूंगो।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-घरमें रहों तो श्रीठाकुरजी कं श्रम होय, द्रव्य खानो परें, स्त्री की प्रीति साधारण है। तातें यह खायगी।

तब एक घोरा लिये। हथियार बांधि चाकरि करन प्रयाग मे आये। तब जलपान बीड़ा, बिना अपरस में लेन लागे।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-कछु अपरस को अहंकार हतो, जो-और सों ऐसी अपरस नाहीं बनत सोउ श्रीठाकुरजी छुड़ाई अहंकार मिटाये। औ यह जताये, जो-ऐसी अपरस कौन कामकी, जामें श्रीठाकुरजी कों श्रम करनो परे

पाछें एक दिन रामदासजी प्रयाग तें अड़ेल में श्रीआचार्यज महाप्रभुन के दरसन करन आये। सो पांचो कपरा पहरि हथियार बांधि दंडवत् किये। तब श्रीआचार्यजी रामदास सों देखिकें कहे धन्य है। तब वैष्णव पास बैठे हे सो कहन लागे, महाराज! अब

હિસાબ નિકાળ. ત્યારે વાણીઆએ કહ્યું, તમે હિસાબ ચુકાવી રૂપીઆ સો અધિ ધરી તમારા હાથથી લખી ગયા છો. ફરી જોઈ લો. ત્યારે વહીમાં શ્રીઠાકુરજીન હસ્તાક્ષર જોયા, ત્યારે ચુપ કરી રહ્યા. ત્યારે ઘરમાં આવીને વિચાર્યું, કે હવે ઘરમ રહેવું નહીં. ચાકરી કરીશ.

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ એ, કે ઘરમાં રહું તો શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ થાય દ્રવ્ય ખાવુ પડે, સ્રીની પ્રીતિ સાધારણ છે. તેથી એ ખાશે.

પછી એક ઘોડો લીધો, હથિયાર બાંધી ચાકરી કરવા પ્રયાગમાં આવ્યા. ત્યાં જલપાન બીડા, વિના અપરસમાં લેવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ એ, કે, કંઇક અપરસનો અહંકાર હતો, જે બીજાથી આવી અપરસ નથી રાખી શકાતી, તે પણ શ્રીઠાકુરજીએ છોડાવી અહંકાર મટાડયો. વળી એ જણાવ્યું, કે આવી અપરસ શા કામની, જેમાં શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરવો પડે?

પછી એક દિવસ રામદાસજી પ્રયાગથી અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુન દર્શન કરવા આવ્યા. તે પાંચે કપડાં પહેરી, હથિયાર બાંધી દંડવત કર્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી રામદાસને જોઇને કહે, ધન્ય છે. ત્યારે વૈષ્ણવ પાસે બેઠા હતા તે કહેવ

याकों धन्य क्यों कहत हो? याकी अपरस तो छूटी, सिपाइन में रहत है, हथियार बांधत है? तब श्रीआचार्यजी कहे, यह धन्य है। श्रीठाकुरजी कों श्रम नाहीं करावत है। तातें या समान धीरज काहू कों नाहीं, यह श्रीमुख तें कहे।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-कहा वहोत अपरस सों कार्य होत हैं? पुष्टिमार्गीय धर्म वहोत कठिन है। द्रव्य सगरो गयो, रिन माथे भयो, परन्तु धीरज नाहीं छूट्यो। सो कहा? जो-मन श्रीठाकुरजी में रह्यो। हृदय के भीतर चिंता रूप कष्ट नाहीं भयो। पाछें श्रीठाकुरजी रिन चुकाये। सो मनमें प्रसन्न न भयो। चाकरी को कार्य कियो। अत्र दैन्यता याकों भई है, मन श्रीठाकुरजी में है। या आसयतें श्रीआचार्यजी धन्य कहे।

वार्ता-प्रसंग २—और श्रीआचार्यजी के द्वार आगे एक खाड़ा हतो। सो आपु न्हाइवे कों पधारे, तब कहे, यह खाड़ा अजहू भर्‍यो नाहीं है? यह कहिकें आपतो श्रीयमुनाजी-स्नान कों पधारे, सगरे वैष्णव खाड़ा भरन लागे। तब रामदासजी एक बड़ो टोकरा ले जहां तांई श्रीआचार्यजी न्हाइ के पधारें तहां तांई खाड़ा पूरि बराबर धरति करि दिये। तब श्रीआचार्यजी आपु रामदास कों

લાગ્યા, મહારાજ! હવે એને ધન્ય કેમ કહો છો? એની અપરસ તો છૂટી. સિપાઈઓમાં રહે છે, હથિયાર બાંધે છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એ ધન્ય છે. શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરાવતો નથી. તેથી એના સમાન ધીરજ કોઇને નથી. એમ શ્રીમુખથી કહે.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે શું ઘણી અપરસથી કામ થાય છે? પુષ્ટિમાર્ગીય ધર્મ ઘણો કઠિણ છે. દ્રવ્ય બધું ગયું. ઋણ માથે થયું, પરંતુ ધીરજ નહીં છોડી. તે શુ? કે મન શ્રીઠાકુરજીમાં રહ્યું. હૃદયના મહીં ચિંતા રૂપી કષ્ટ નહીં થયુ. પછી શ્રીઠાકુરજીએ ઋણ ચુકાવ્યું. તે મનમાં પ્રસન્ન ન થયા. ચાકરીનું કામ કર્યું. હવે એને દૈન્યતા થઇ. મન શ્રીઠાકુરજીમાં છે. તે આશયથી શ્રીઆચાર્યજીએ (એમને) ધન્ય કહ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—બીજું શ્રીઆચાર્યજીના દ્વાર આગળ એક ખાડો હતો. તે પોતે ન્હાવાને પધાર્યા ત્યારે કહે, આ ખાડો હજુ ભર્યો નથી? એ કહીને આપ તો શ્રીયમુનાજી-સ્નાન માટે પધાર્યા. (પછી) બધા વૈષ્ણવો ખાડો ભરવા લાગ્યા. ત્યારે રામદાસજીએ એક મોટો ટોકરો લઈ જ્યાં સુધી શ્રીઆચાર્યજી ન્હાઇને પધાર્યા ત્યાં સુધીમાં ખાડો પુરી બરાબર ધરતી કરી દીધી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે રામદાસને

देखे खाड़ा भरते, सगरे कपड़े धूरि सों भरे देखिके फेरि श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहे, रामदास धन्य है।

भावप्रकाश—सो यातें, जो–और वैष्णव आछे कपरा उतारि एक धोती पहरि खाड़ा भरें। रामदास श्रीआचार्यजी की आज्ञा सुनि के परम भाग्य सेवा मानि खाड़ा भर्यो, सिपाइपने की लाज सरम सब छोड़ी। ता पर श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। जो–या प्रकार भगवद् सेवा में प्रतिष्ठा मन में न आवे, छोटी मोटी हीन सेवा भाग्य मानि के करनो। यह सिद्धान्त जताए।

फेरि रामदासजी बरस एक में द्रव्य बहोत कमाइ घर आये। पाछे भली भांति सों सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—सो श्रीठाकुरजी कों धीरज देखनो हतो। पाछे द्रव्य की कहा है? जो चाहिए सो सब सिद्ध है।

वार्ता-प्रसंग ३—पाछे एक दिन स्त्रीने कही, तुम दूसरो व्याह करो तो संतति होइ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो–स्त्री कों रामदास के हृदय के अभिप्राय की खबरि नाहीं। तातें जान्यो, जो–मोसों राजी नहीं हैं, तो दूसरो व्याह करो। व्याह करें एक पुत्र होइ।

ખાડો ભરતા જોઈ, બધાં કપડાં ધૂળથી ભર્યાં જોઈ, ફરી શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, રામદાસ ધન્ય છે.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી, કે બીજા વૈષ્ણવો સારાં કપડાં ઉતારી એક ધોતી પહેરી ખાડો ભરવા લાગ્યા. (ત્યારે) રામદાસે શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા સાંભળીને પરમભાગ્ય સેવા માની ખાડો ભર્યો. સિપાઇપણાની લાજ શરમ બધી છોડી. તે ઉપર શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા, કે આ પ્રકારે ભગવત્સેવામાં પ્રતિષ્ઠા મનમાં ન આવે. નાની, મોટી હિન સેવા ભાગ્ય માનીને કરવી એ સિદ્ધાંત સૂચવ્યો.

પછી રામદાસજી વર્ષ એકમાં દ્રવ્ય બહુ કમાઈ ઘર આવ્યા. પછી સારી રીતે સેવા કરવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજીને ધીરજ દેખવી હતી, પછી દ્રવ્યની શી (વાત) છે? જે જોઇએ તે બધુ સિદ્ધ છે.

વાર્તા પ્રસંગ-૩—પછી એક દિવસ સ્ત્રીએ કહ્યું, તમે બીજો વિવાહ કરો તો સંતાન થાય.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે સ્ત્રીને રામદાસના અભિપ્રાયની ખબર નથી. તેથી જાણ્યું, કે મારાથી રાજી નથી તો બીજો વિવાહ કરો. વિવાહ કરવાથી એક પુત્ર થાય.

तब रामदास ने कही, जो–मोकों पुत्र की इच्छा नहीं है। तब स्त्री ने कही, मेरे एक पुत्र की इच्छा है। तब रामदास ने कही, जो–तिहारे इच्छा है तो श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा बालभाव सों करि। जैसे खानपान सों लडावत है। तिहारो मनोरथ पूरन होइगो। पाछे कछुक दिनन में पुत्र भयो।

भावप्रकाश—सो रामदासजी ने तो भावरूप अलौकिक बात कही, जो–श्रीठाकुरजी कों बालभाव सों लड़ावोगी तो एई बालक होइंगें। जसोदाजी के सौभाग्य कों पावोगी। सो तो स्त्री उत्तम अधिकारी होइ तो समुझे। तातें पुत्र की कामना सहित श्रीठाकुरजी की बालभाव सों सेवा करी। सो श्रीठाकुरजी ने पुत्र दियो। परन्तु रामदासजी के फल कों नहिं पायो। रामदास कों कबहू लौकिक कामना में मन न भयो। तातें श्रीआचार्यजी प्रसन्न रहते। तातें रामदास के भाव की कहां तांई कहिये।

सो रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। सो इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७॥

* * *

ત્યારે રામદાસે કહ્યું, કે મને પુત્રની ઇચ્છા નથી. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, મારે એક પુત્રની ઇચ્છા છે. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, કે તારી ઇચ્છા છે તો શ્રીનવનીતપ્રિયજીની સેવા બાલભાવથી કર. જેમ ખાનપાનથી (લૌકિકમાં) પ્યાર કરે છે (પુત્રને) (તેમ શ્રીઠાકુરજીને કર), તારો મનોરથ પૂરો થશે. પછી કેટલાક દિવસમાં પુત્ર થયો.

ભાવપ્રકાશ—તે રામદાસજીએ તો ભાવરૂપ અલૌકિક વાત કહી, કે શ્રીઠાકુરજીને બાલભાવથી લડાવીશ (પ્રેમ કરીશ) તો તેજ બાલક થશે (બાલકવત્ સુખ આપશે.) યશોદાજીના સૌભાગ્યને મેળવીશ. તે તો સ્ત્રી ઉત્તમ અધિકારી હોય તો સમજે. તેથી પુત્રની કામના સહિત શ્રીઠાકુરજીની બાલભાવથી સેવા કરી. તે શ્રીઠાકુરજીએ પુત્ર આપ્યો. પરંતુ રામદાસજીનું (કહેલું) ફ્લ ન મળ્યું. રામદાસનું મન કોઇ દિવસ લૌકિક કામનામાં ન ગયું. તેથી શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન રહેતા. તેથી રામદાસના ભાવની (વાત) ક્યાં સુધી કહીએ?

તે રામદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તે એમની વાર્તાનો પાર નથી, તે ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥ ૭ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गदाधरदास कपिल सारस्वत ब्राह्मन, कड़ा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो गदाधरदास मकरस्नान कों तीर्थराज प्रयाग वरस के वरस जाते। सो एक समय गदाधरदास प्रयाग में हते। तहां श्रीआचार्यजी पधारे। सो पंडित सब श्रीआचार्यजी सों चर्चा करन आवते। सो गदाधरदास को काका प्रयाग रहतो, तहां गदाधरदास उतरते। सो गदाधरदास को काका पण्डित हतो, परन्तु सैव हतो। सो काका ने गदाधरदास सों कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं। तिनसों कछु सन्देह पूछनो है, सो मैं जात हों। तब गदाधरदास कहे, जो–मैं हूँ चलूंगो, सो दोऊ आये। तब गदाधरदास के काका ने श्रीआचार्यजी सों पूछ्यो, जो–महाराज! ठाकुर तो एक हैं परंतु वैष्णव सम्प्रदाय में न्यारे न्यारे क्यों मानत हैं? कोई कृष्ण कों, कोई राम कों, कोई नृसिंह, कोई नारायण आदि, तामें निश्चय कौन ठाकुर हैं? तब श्रीआचार्यजी कहे, जैसे चक्रवर्ती राजा को राज तो सगरी पृथ्वी पर, और राजा देस देस के गाँव गाँव के, सोऊ राजा कहावें, परन्तु चक्रवर्ती के आज्ञाकारी। तैसे ही पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, सो सर्वोपरि। और अवतार अंसकला करिके होइ, सब श्रीकृष्ण के आज्ञाकारी। ठाकुर सब कों

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક ગદાધરદાસ કપિલ સારસ્વત બ્રાહ્મણ, કડામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—તે ગદાધરદાસ મકરસ્નાન માટે તીર્થરાજ પ્રયાગ વર્ષે વર્ષે જતા. તે એક સમય ગદાધરદાસ પ્રયાગમાં હતા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. તે પંડિત બધા શ્રીઆચાર્યજી સાથે ચર્ચા કરવા આવતા. તે ગદાધરદાસનો કાકો પ્રયાગ રહેતો. ત્યાં ગદાધરદાસ ઉતરતા. તે ગદાધરદાસનો કાકો પણ્ડિત હતો. પરંતુ શૈવ હતો. તે કાકાએ ગદાધરદાસને કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પધાર્યા છે. તેમનાથી કંઇ સંદેહ પૂછવો છે. તે હું જઉં છું. ત્યારે ગદાધરદાસ કહે, કે હું પણ ચાલીશ. પછી બન્ને આવ્યા. ત્યારે ગદાધરદાસના કાકાએ શ્રીઆચાર્યજીને પૂછયું, કે મહારાજ! ઠાકુર તો એક છે પરન્તુ વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયમાં અલગ–અલગ કેમ માને છે? કોઇ કૃષ્ણને, કોઇ રામને, કોઇ નૃસિંહ, કોઇ નારાયણ આદિ તેમાં નિશ્ચય કયા ઠાકુર છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જેમ ચક્રવર્તી રાજાનું રાજ્ય બધી પૃથ્વી ઉપર (અને), બીજા રાજા દેશ દેશના, ગામ ગામના, તે પણ રાજા કહેવાય. પરંતુ ચક્રવર્તીના આજ્ઞાકારી. તેજ પ્રમાણે પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ તે સર્વોપરી, બીજા અવતાર અંશ કલા કરીને

कहिए। तब गदाधरदास को काका चुप करि रह्यो। गदाधरदास दैवी जीव तिनके मन में सिद्धांत वैठि गयो, जो–श्रीआचार्यजी की सरन जइए तो श्रीकृष्ण की प्राप्ति होइगी। तब गदाधरदास ने श्रीआचार्यजी कों दण्डवत प्रणाम करि विनती किये, महाराज! सरन लीजिए। मैं संसार में वहोत भटक्यो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो–तुम अपने काका कों तो पूछो। इनको चित्त दुख पावै तो सेवक काहे कों होउ? तब गदाधरदास के काका ने कही, महाराज! हमारे तो गायत्री मंत्र सों काम है, और तो हम जानत नाहीं, गदाधरदास की ए जाने। ना हम हां कहें, ना हम ना कहें। तब गदाधरदास ने कही, अब मैं आपको दास भयो। अब संसारी जीव सों व्यौहार मेरे नाहीं है। तातें मैं आपु के सरन आयो हौं, कृपा करिके सरन लीजिये। और यह वहिर्मुख कब कहेगो, जो–तू सेवक होउ। या प्रकार गदाधरदास के वचन सुनिके, गदाधरदास को काका उहां तें उठि बाहर आइ ठाड़ो भयो।

तब श्रीआचार्यजी गदाधरदास के ऊपर वहोत प्रसन्न भये। कहे, विना सेवक ऐसी टेक है तो सेवक भये भलो वैष्णव होइगो। पाछे श्रीआचार्यजी कहे, जा, त्रिवेणी न्हाइ आव, तब गदाधरदास न्हाइ के अपरस में आये। तब श्रीआचा-

---

થાય. બધા શ્રીકૃષ્ણના આજ્ઞાકારી. ઠાકુર બધાને કહીએ. ત્યારે ગદાધરદાસનો કાકો ચુપ કરી રહ્યો. ગદાધરદાસ દૈવીજીવ, તેમના મનમાં સિદ્ધાંત બેસી ગયો, કે શ્રીઆ-ચાર્યજીની શરણે જઇએ તો શ્રીકૃષ્ણની પ્રાપ્તિ થશે. ત્યારે ગદાધરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ પ્રણામ કરી વિનતી કરી, મહારાજ! શરણે લો. હું સંસારમાં બહુ ભટક્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે તમે તમારા કાકાને તો પૂછો? એનું ચિત્ત દુઃખ પામે તો સેવક શા માટે થાવ? ત્યારે ગદાધરદાસના કાકાએ કહ્યું, મહારાજ! અમારે તો ગાયત્રી મંત્રથી કામ છે. બીજું તો અમે જાણતા નથી. ગદાધરદાસની એ જાણે, ન અમે હા કહીએ, ન અમે ના કહીએ. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, હવે હું આપનો દાસ થયો. હવે સંસારી જીવથી વ્યવહાર મારે નથી. તેથી હું આપને શરણે આવ્યો છું. કૃપા કરીને શરણે લો. અને આ બહિર્મુખ ક્યારે કહેશે, કે તૂ સેવક થા. આ પ્રકારે ગદાધરદાસનાં વચન સાંભળીને ગદાધરદાસનો કાકો ત્યાંથી ઉઠીને બાહર આવી ઉભો રહ્યો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ગદાધરદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા. કહે, વિના સેવક આવી ટેક છે તો સેવક થયે ભલો વૈષ્ણવ થશે. પછી શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા, ત્રિવેણી ન્હાય આવ ત્યારે ગદાધરદાસ ન્હાઇને અપરસમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆ-

आवते। वैष्णव भये पाछें अव्यावृत से रहते। सो सब ठौर को जानो छोड़ दियो। जो आवे तामें निर्वाह करें। चित्त मानसी सेवा फलरूप में इनको लग्यो। "चेतस्तत्प्रवणं सेवा" या भाव में मगन रहें। तनुजा, वित्तजा जो बने सो करें। बहोत संग्रह करे नाहीं। जो आवे ताकी सामग्री करि श्रीमदनमोहनजी कों भोग धरें। वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाइ देते। यह प्रकार त्याग पूर्वक रहते।

सो एक दिन भगवद् इच्छा तें जजमान के घर तें कछु आयो नाहीं।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो–श्रीठाकुरजी ने इनकी परीक्षा लिये। जो अव्यावृत को संकल्प तो होनो सहज ही है, परन्तु न मिले तब धीरज रहे यह महा कठिन है। ताते कछु न आयो।

तब मंगला में जल की लोटी भोग धरे। सिंगार में, राजभोग में जल ही धरे। पाछे उत्थापन में सेन पर्यन्त जल ही धरे। परन्तु उधारो न लिये।

भावप्रकाश—काहे तें, यह ब्यौहार हैं। और उधारो लेय जहाँ ताँई वाको द्रव्य न देय तहाँ ताँई वाकी सेवा है। इनकी नाहीं। और काल को प्रमाण नाहीं। उधारो लियो देह छूटि जाय तो रिन माथे रहे, जन्म लेनो होइ।

વૃત્ત જેવા રહેતા. તે બધી જગાનું જવું છોડી દીધું. જે આવે તેમાં નિર્વાહ કરે. ચિત્ત માનસી સેવા ફલરૂપમાં એમનું લાગ્યું. 'ચેતસ્તત્પ્રવણં સેવા' એ ભાવમાં મગન રહે. તનુજા-વિત્તજા જે બને તે કરે. બહુ સંગ્રહ કરે નહીં. જે આવે તેની સામગ્રી કરી શ્રીમદનમોહનજીને ભોગ ધરે, વૈષ્ણવને મહાપ્રસાદ લેવડાવી દેતા. એ પ્રકારે ત્યાગપૂર્વક રહેતા.

તે એક દિવસ ભગવદિચ્છાથી યજમાનના ઘરથી કંઈ આવ્યું નહીં.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે શ્રીઠાકુરજીએ પરીક્ષા લીધી, કે અવ્યાવૃત્તનો સંકલ્પ થવો સહજ જ છે પરન્તુ ન મળે ત્યારે ધીરજ રહે, એ મહા કઠણ છે. તેથી કઇ ન આવ્યું.

ત્યારે મંગલામાં જલની લોટી ભોગ ધરી. શૃંગારમાં રાજભોગમાં જલ જ ધર્યું. પછી ઉત્થાપનમાં, સેનપર્યંત જલ જ ધર્યું. પરંતુ ઉધાર ન લીધું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે એ વ્યવહાર છે. બીજું, ઉધારે લે (તો) જ્યાં સુધી તેનું દ્રવ્ય ન દે ત્યાં સુધી તેની સેવા છે. એમની નહીં. અને કાલનું પ્રમાણ નહીં. ઉધારે લીધું (ને) દેહ છુટી જાય તો ઋણ માથે રહે. જન્મ લેવો પડે. એમ

यह शास्त्र में कहे हैं। परन्तु इनके तो काल को डर नाहीं। अन्यावृत श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ग्रन्थ को आश्रय किये।

ऐसे करत रात्रि प्रहर डेढ़ गइ, सोइ रहे। परन्तु छाती में आगि सी लागी, जो–आजु मेरे ठाकुर भूखे रहे।

भावप्रकाश—याको हेतु यह, जो–जदपि ये जल धरिकें मानसी में सब आरोगाये हैं, श्रीठाकुरजी अरोगे हैं। काहेतें? येहू श्रीराधा सहचरी की सखी है। कलकंठी इनको नाम है। कुमारिका के जूथ में हैं। इनकों श्रीयमुनाजी को आश्रय है। राधा सहचरी के गान समय ये सुर भरत हैं। इनहूँ को कंठ वहोत सुन्दर है। तातें जमुनाजी के भाव सों सगरे भोग में जल ही धरे। तातें सगरी सामग्री भाव करि सिद्ध हैं। परन्तु या सामग्री में वैष्णव को समाधान नाहीं। सगरी इन्द्रिय की सेवा नाहीं, सामग्री हाथसों धरे और व्रजभक्तन की मानसी हू करे। और श्रीठाकुरजी को न्यारो मनोरथ हू करे। यह पुष्टिमार्ग की रीति है, जो–सामग्री हाथ सों भोग धरन में प्रीति न होइ तो व्रजभक्तन के भाव हू छूटि जाँइ। ज्ञानमार्ग की रीति व्है जाइ। "पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति" या वाक्य में वोध अर्थ है। मर्यादामार्गीय के भाव में पत्र, पुष्प, फल, जल, जैसो

શાસ્ત્રમાં કહે છે. પરંતુ આમને તો કાલનો ડર નથી. અન્યાવૃત્ત (થઇ) શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના ગ્રન્થનો આશ્રય કર્યો છે.

એમ કરતાં રાત્રિપ્રહર દોઢ ગઇ. પરન્તુ છાતીમાં આગ જેવું લાગ્યું, કે આજ મારા ઠાકુર ભૂખ્યા રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એનો હેતુ એ, કે યદ્યપિ એ જલ ધરીને માનસીમાં બધું આરોગાવ્યું છે, શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા છે; કેમકે એ પણ શ્રીરાધા સહચરીની સખી છે. 'કલકંઠી,' એમનું નામ છે. કુમારિકાના યૂથમાં છે. એમને શ્રીયમુનાજીનો આશ્રય છે. રાધા સહચરીના ગાન સમયે એ સ્વર પૂરે છે. એમનો પણ કંઠ બહુ સુંદર છે. તેથી શ્રીયમુનાજીના ભાવથી બધા ભોગમાં જલ જ ધર્યું. તેથી સઘળી સામગ્રી ભાવવડે સિદ્ધ છે. પરંતુ આ સામગ્રીમાં વૈષ્ણવનું સમાધાન નથી. બધી ઇન્દ્રિયોની સેવા નથી. સામગ્રી હાથથી ધરે અને વ્રજભક્તોની માનસી પણ કરે. અને શ્રીઠાકુરજીને અલગ મનોરથ પણ કરે. એ પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ છે. જો સામગ્રી હાથથી ભોગ ધરવામાં પ્રીતિ ન હોય તો વ્રજભક્તોનો ભાવ પણ છૂટી જાય. જ્ઞાનમાર્ગની રીતિ થઇ જાય. "પત્રં, પુષ્પં, ફલં, તોયં યો મે ભક્ત્યા પ્રયચ્છતિ" આ વાક્યમાં બોધ અર્થ છે. મર્યાદા માર્ગીયના ભાવમાં પત્ર, પુષ્પ,

वैष्णवन कों बुलाइ, महाप्रसाद की पातरि धरी। तब वैष्णव महाप्रसाद लेत बोले, जो–गदाधरदास! रात्रि कों तुम महाप्रसाद दिये सो यह सामग्री तो हमहू करत हैं, परन्तु ऐसो स्वाद नाहीं होत। सो ऐसी क्रिया हमहू कों बतावो। कैसे करी हती? तब गदाधरदास ने कही, कालिह मेरे घर कछू न हतो। सो रात्रिकों रुपैया चारि आये। एक रुपैया की जलेबी बजार सों लायो। या प्रकार सब कहे। तब सगरे वैष्णव गदाधरदास की ऊपर प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—ताको हेतु यह है, जो–श्रीठाकुरजी, श्रीआचार्यजी इनके ऊपर प्रसन्न हैं। सो सगरे वैष्णवन के हृदय में हैं। बुद्धि के प्रेरक श्रीकृष्ण हैं तातें निष्कपट सुद्ध भाव वारे वैष्णव पर कोई अप्रसन्न न होय। या प्रकार वैष्णव प्रसन्न भये। तब गदाधरदासजी ने एक कीर्तन गायो—

" गोविंद–पद–पल्लव सिर पर बिराजमान,
तिनको कहा कहि आवै सुखको प्रमान।
ब्रज–दिनेस देस बसत कालानल हू न त्रसत,
विलसत मन हुलसत करि लीला रस पान।
भींजे नित नैन रहत, हरि के गुनगान कहत,
जानत नहिं त्रिविध ताप मानत नहिं आन।
तिनके मुख–कमल दरस, पावन पदरेंनु परस,
अधम जन 'गदाधर' से पावत सन्मान। "

પાતર ધરી. ત્યારે વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લેતાં બોલ્યા, કે ગદાધરદાસ! રાત્રિએ તમે મહાપ્રસાદ દીધો તે સામગ્રી તો અમે પણ કરીએ છીએ પરન્તુ એવો સ્વાદ નથી થતો. તો એવી ક્રિયા અમને પણ બતાવો. કેવી રીતે કરી હતી? ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, કાલ મારા ઘર (માં) કંઇ ન હતું. તે રાત્રિએ રૂપીઆ ચાર આવ્યા. (તે) એક રૂપીઆની જલેબી બજારથી લાવ્યો. એ પ્રકાર બધો કહ્યો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો ગદાધરદાસની ઉપર પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—તેનો હેતુ એ છે, કે શ્રીઠાકુરજી, શ્રીઆચાર્યજી એમના ઉપર પ્રસન્ન છે, તે બધા વૈષ્ણવોના હૃદયમાં છે. બુદ્ધિપ્રેરક શ્રીકૃષ્ણ છે. તેથી નિષ્કપટ શુદ્ધ ભાવવાળા વૈષ્ણવ પર કોઇ અપ્રસન્ન ન થાય. આ પ્રકારે વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થયા, ત્યારે ગદાધરદાસજીએ એક કીર્તન ગાયું—

'ગોવિંદ–પદ–પલ્લવ સિર પર બિરાજમાન' × × × (ઉપર જુઓ).

जो–मैं अधम जन हौं, परन्तु तुम भगवदीय हो। सो मो सारिखे को सन्मान करत हो । या प्रकार वैष्णवन में और श्रीठाकुरजी में दृढ़ प्रीति एक रस हती । तातें श्रीठाकुरजी और वैष्णव इनके बस हते। ऐसे गदाधरदास उत्तम भगवदीय हे।

वार्ता–प्रसंग २—और एक दिन गदाधरदास ने वैष्णव महाप्रसाद कों बुलाए हते। सगरी सामग्री करी, परन्तु साग कछु न हतो। तब गदाधरदास ने वैष्णव बैठे हते, तिनसों कही– ऐसो कोई वैष्णव है, जो–साग लै आवे! सो माधोदास, वेनीदास के भाई जिनने वेस्या घर में राखी हती सो बोले, कहो तो मैं ले आऊं।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो–मैं वेस्या राखी है, मेरो लायो लेहुगे?

तब गदाधरदास कहे, ले आवो।

भावप्रकाश—सो गदाधरदास के हृदय में दोषदृष्टि नाहीं है। श्रीआचार्यजी को संबंध जानत हैं। तातें कहे ले आवो ।

तब बथुवा की भाजी ले आये। तब गदाधरदास प्रसन्न ह्वै के कहे, वेगे सँवारि देउ।

કહે, હું અધમજન છું. પરંતુ તમે ભગવદીય છો, તે મારા જેવાનું સન્માન કરો છો. આ પ્રકારે વૈષ્ણવોમાં અને શ્રીઠાકુરજીમાં દૃઢ પ્રીતિ એક રસ હતી. તેથી શ્રીઠાકુરજી અને વૈષ્ણવો એમને વશ હતા. એવા ગદાધરદાસ ઉત્તમ ભગવદીય હતા.

વાર્તા–પ્રસંગ–૨—વળી એક દિવસ ગદાધરદાસે વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ (લેવા) માટે બોલાવ્યા હતા. બધી સામગ્રી કરી પરંતુ શાક કંઇ ન હતું. ત્યારે ગદાધરદાસે વૈષ્ણવો બેઠા હતા તેમને કહ્યું, એવો કોઇ વૈષ્ણવ છે, કે શાક લઇ આવે ? ત્યારે માધવદાસ વેણીદાસના ભાઇ, જેમણે વેશ્યા ઘરમાં રાખી હતી, તે બોલ્યા, કહો તો હું લઇ આવું.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે મેં વેશ્યા રાખી છે, મારૂં લાવ્યું લેશો?

ત્યારે ગદાધરદાસ કહે, લઇ આવો.

ભાવપ્રકાશ—તે ગદાધરદાસના હૃદયમાં દોષદૃષ્ટિ નથી. શ્રીઆચાર્યજીનો સંબંધ જાણે છે. તેથી કહે, લઈ આવો.

ત્યારે બથુવાની ભાજી લઇ આવ્યા. ત્યારે ગદાધરદાસ પ્રસન્ન થઇને કહે, જલદી સુધારી દો.

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-प्रीति सों लाये, तब सँवारिबे की मुख्य सेवा हू दिये। तामें जताए, जो-सेवा प्रीति सों करे। कैसे हू होउ ताके हाथ को श्रीठाकुरजी प्रीति सों अंगीकार करें।

पाछें सामग्री सिद्ध करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरें। समय भये भोग सराइ अनोसर करि सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद की पातरि धरें। सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेत साग बखान्यो। तब गदाधरदास परोसत माधवदास पास आये, तब प्रसन्न होइकै माधोदास सों कहे, जो-तिहारो लायो साग श्रीठाकुरजी आरोगे। तातें तोकों हरि-भक्ति दृढ़ होऊ। यह आसीर्वाद दिये।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-रंच सेवा साग की माधोदास दीनता सों किये। तातें श्रीठाकुरजी प्रीतिसों आरोगे। यह तब जानिए, जो-वैष्णव प्रसाद लेइ सराहना करें। तब दोऊ सेवा सिद्ध होय और भगवदीय समान उदार कोऊ नाहीं, जो-रंच साग की सेवा किये जनम जनम को संसार मिटाइ हरिभक्त करि दिये। ऐसे गदाधरदास भगवदीय हे।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन गांव के बाहिर बनजारा आइ उतर्यो। ताकों बेल चहिए। सो गाम में आइ दस-पंद्रह गदाधरदास

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ સૂચવ્યું, કે પ્રીતિથી લાવ્યા, ત્યારે સુધારવાની મુખ્ય સેવા પણ આપી. તેમાં જણાવ્યુ, કે સેવા પ્રીતિથી કરે. કેવો પણ (જીવ) હોય, તેના હાથનું શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી અંગીકાર કરે છે.

પછી સામગ્રી સિદ્ધ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. સમય થયે ભોગ સરાવી અનોસર કરી બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદની પાતર ધરી. ત્યારે વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લેતાં શાકને વખાણ્યું. ત્યારે ગદાધરદાસ પીરસતા પીરસતા માધવદાસ પાસે આવ્યા. ત્યારે પ્રસન્ન થઇને માધવદાસને કહે, કે તારૂં લાવેલું શાક શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. તેથી તને હરિભક્તિ દૃઢ થશે. એ આશીર્વાદ દીધો.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યુ, કે રંચક સેવા શાકની માધવદાસે દીનતાથી કરી. તેથી શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી આરોગ્યા. એ ત્યારે જાણીએ, કે (જ્યારે) વૈષ્ણવ પ્રસાદ લઈ વખાણ કરે. ત્યારે બન્ને સેવા સિદ્ધ થાય. અને ભગવદીય સમાન ઉદાર કોઇ નહીં, કે રંચક શાકની સેવા કરી (તેમાં) જન્મ જન્મને સંસાર મટાડી હરિ-ભક્ત કરી દીધા. એવા ગદાધરદાસ ભગવદીય છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—બીજું, એક દિવસ ગામના બહાર વણઝારો આવી ઉતર્યો હતો. તેને બળદ જોઇતા હતા. તે ગામમાં આવી દશ-પંદર ગદાધરદાસના સગા બ્રાહ્મણ

के सगे ब्राह्मन बैठे हते। सो गदाधरदास की ईर्ष्या करते, जो-भगत भयो है। सो बनजारे ने उन ब्राह्मणन सों पूछ्यो, हमकों बैल मोल कों लेने सो कहां मिलेंगे? तब उन ब्राह्मणन ने कही, गदाधरदास भगत है, उनके यहां जितने चाहिए तितने लेहु। परन्तु यों तो वे न देइंगे। उनके पास रुपैया दे आवो। कहियो, हमकों जहां सों चाहो तहां सों मंगवाइ देहु। पाछे दूसरे दिन जइयो। तब बैल तुमकों मिलेंगे। तब बनजारा १००) रुपैया लै गदाधरदास के पास गयो। कह्यो, हमकों बल लेने हैं। सो तुम मँगाइ देहु। तब गदाधरदास ने कही, बाबा! हमारे बैल कहां? गाँव में पूछो, हम तो जानत नाहीं। तब बनजारे ने १००) रुपैया गदाधरदास के आगे धरि दिये। उठि चल्यो। कह्यो, काल्हि बैल लेन आऊंगो। मोसों गाँव के लोगन ने या भांति बताए हैं। तब गदाधरदास ने जानी, जो-हमारी जातिके ने याकों बहकायो होइगो। तब गदाधरदास ने कही, काल्हि मध्याह्न समे तो न देखोगे। तौउ बनजारा प्रसन्न होइके कहै, जो-आछो। यह रुपैया राखो।

पाछें गदाधरदासजी १००) रुपैया की सामग्री मँगाये। सगरे पाक सिद्ध करि दूसरे दिन भोग धरे। फेरि सगरे वैष्णवन कों परोसत हते मध्याह्न समे, तब बनजारा आयो। तब गदाधरदास

બેઠા હતા. તે ગદાધરદાસની ઇર્ષ્યા કરતા, કે ભગત થયો છે. તે વણઝારાએ બ્રાહ્મણોને પુછ્યું, અમારે બળદ મોલથી લેવા છે. તે ક્યાં મળશે? ત્યારે તે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, ગદાધરદાસ ભગત છે. તેમને ત્યાં જેટલા જોઇયે તેટલા લો. પરંતુ એમ તો એ નહીં આપે. એમની પાસે (પહેલાં) રૂપીઆ આપી આવો. કહેજો, અમને જ્યાંથી ઇચ્છા હોય ત્યાંથી મંગાવી દો. પછી બીજા દિવસે જજો. ત્યારે બળદ તમને મળશે. ત્યારે વણઝારો રૂપીઆ સો લઇ ગદાધરદાસની પાસે આવ્યો. કહ્યું, અમને બળદ લેવા છે. તે અમને મંગાવી આપો. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, ભાઈ! અમારે બળદ ક્યાં? ગામમાં પૂછો. અમે તો જાણતા નથી. ત્યારે વણઝારાએ રૂપીઆ સો ગદાધરદાસની આગળ ધરી દીધા. (પછી) ઉઠીને ચાલ્યો. કહ્યું, કાલ બળદ લેવા આવીશ. મને ગામના લોકોએ આ પ્રકારે બતાવ્યું છે. ત્યારે ગદાધરદાસે જાણ્યું, કે અમારી જ્ઞાતિનાએ આને ભરમાવ્યો છે. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, કાલ મધ્યાહ્ન સમે તો નહીં જોઇ શકો, તો પણ વણઝારો પ્રસન્ન થઇને કહે, કે ભલે, એ રૂપીઆ રાખો. પછી ગદાધરદાસજીએ રૂપીઆ સો ની સામગ્રી મંગાવી, બધો પાક સિદ્ધ કરી બીજા દિવસે ભોગ ધર્યો. પછી બધા વૈષ્ણવોને પીરસતા હતા, મધ્યાહ્ન સમે, ત્યારે વણઝારો આવ્યો. ત્યારે ગદાધરદાસે

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–प्रीति सों लाये, तब सँवारिवे की मुख्य सेवा हू दिये। तामें जताए, जो–सेवा प्रीति सों करै। कैसे हू होउ ताके हाथ को श्रीठाकुरजी प्रीति सों अंगीकार करें।

पाछें सामग्री सिद्ध करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरें। समय भये भोग सराइ अनोसर करि सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद की पातरि धरें। सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेत साग बखान्यो। तब गदाधरदास परोसत माधवदास पास आये, तब प्रसन्न होइकै माधोदास सों कहे, जो–तिहारो लायो साग श्रीठाकुरजी आरोगे। तातें तोकों हरि–भक्ति दृढ़ होऊ। यह आसीर्वाद दिये।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–रंच सेवा साग की माधोदास दीनता सों किये। तातें श्रीठाकुरजी प्रीतिसों आरोगे। यह तब जानिए, जो–वैष्णव प्रसाद लेइ सराहना करें। तब दोऊ सेवा सिद्ध होय और भगवदीय समान उदार कोऊ नाहीं, जो–रंच साग की सेवा किये जनम जनम को संसार मिटाइ हरिभक्त करि दिये। ऐसे गदाधरदास भगवदीय हे।

वार्ता–प्रसंग ३—**और एक दिन गांव के बाहिर बनजारा आइ उतर्‍यो। ताकों बेल चहिए। सो गाम में आइ दस–पंद्रह गदाधरदास**

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ સૂચવ્યું, કે પ્રીતિથી લાવ્યા, ત્યારે સુધારવાની મુખ્ય સેવા પણ આપી. તેમાં જણાવ્યુ, કે સેવા પ્રીતિથી કરે. કેવો પણ (જીવ) હોય, તેના હાથનું શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી અંગીકાર કરે છે.

પછી સામગ્રી સિદ્ધ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. સમય થયે ભોગ સરાવી અનોસર કરી બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદની પાતર ધરી. ત્યારે વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લેતાં શાકને વખાણ્યું. ત્યારે ગદાધરદાસ પીરસતા પીરસતા માધવદાસ પાસે આવ્યા. ત્યારે પ્રસન્ન થઇને માધવદાસને કહે, કે તારૂં લાવેલું શાક શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. તેથી તને હરિભક્તિ દૃઢ થશે. એ આશીર્વાદ દીધો.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે રંચક સેવા શાકની માધવદાસે દીનતાથી કરી. તેથી શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી આરોગ્યા. એ ત્યારે જાણીએ, કે (જ્યારે) વૈષ્ણવ પ્રસાદ લઈ વખાણ કરે. ત્યારે બન્ને સેવા સિદ્ધ થાય. અને ભગવદીય સમાન ઉદાર કોઇ નહીં, કે રંચક શાકની સેવા કરી (તેમાં) જન્મ જન્મનો સંસાર મટાડી હરિ–ભક્ત કરી દીધા. એવા ગદાધરદાસ ભગવદીય છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૩—બીજું, એક દિવસ ગામના બહાર વણઝારો આવી ઉતર્યો હતો. તેને બળદ જોઇતા હતા. તે ગામમાં આવી દશ–પંદર ગદાધરદાસના સગા બ્રાહ્મણ

के सगे ब्राह्मन बैठे हते। सो गदाधरदास की ईरष्या करते, जो-भगत भयो है। सो बनजारे ने उन ब्राह्मणन सों पूछ्यो, हमकों बैल मोल कों लेने सो कहां मिलेंगे? तब उन ब्राह्मणन ने कही, गदाधरदास भगत है, उनके यहां जितने चाहिए तितने लेहु। परन्तु यों तो वे न देइंगे। उनके पास रुपैया दे आवो। कहियो, हमकों जहां सों चाहो तहां सों मंगवाइ देहु। पाछे दूसरे दिन जइयो। तब बैल तुमकों मिलेंगे। तब बनजारा १००) रुपैया लै गदाधरदास के पास गयो। कह्यो, हमकों बल लेने हैं। सो तुम मँगाइ देहु। तब गदाधरदास ने कही, बाबा! हमारे बैल कहां? गाँव में पूछो, हम तो जानत नाहीं। तब बनजारे ने १००) रुपैया गदाधरदास के आगे धरि दिये। उठि चल्यो। कह्यो, कालिह बैल लेन आऊंगो। मोसों गाँव के लोगन ने या भांति बताए हैं। तब गदाधरदास ने जानी, जो-हमारी जातिके ने याकों बहकायो होइगो। तब गदाधरदास ने कही, कालिह मध्याह्न समे तो न देखोगे। तौउ बनजारा प्रसन्न होइके कहै, जो-आछो। यह रुपैया राखो।

पाछें गदाधरदासजी १००) रुपैया की सामग्री मँगाये। सगरे पाक सिद्ध करि दूसरे दिन भोग धरे। फेरि सगरे वैष्णवन कों परोसत हते मध्याह्न समे, तब बनजारा आयो। तब गदाधरदास

બેઠા હતા. તે ગદાધરદાસની ઇર્ષ્યા કરતા, કે ભગત થયો છે. તે વણઝારાએ બ્રાહ્મણોને પુછ્યું, અમારે બળદ મોલથી લેવા છે. તે કયાં મળશે? ત્યારે તે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, ગદાધરદાસ ભગત છે. તેમને ત્યાં જેટલા જોઇયે તેટલા લો. પરંતુ એમ તો એ નહીં આપે. એમની પાસે (પહેલાં) રૂપીઆ આપી આવો. કહેજો, અમને જ્યાંથી ઇચ્છા હોય ત્યાંથી મંગાવી દો. પછી બીજા દિવસે જજો. ત્યારે બળદ તમને મળશે. ત્યારે વણઝારો રૂપીઆ સો લઇ ગદાધરદાસની પાસે આવ્યો. કહ્યું, અમને બળદ લેવા છે. તે અમને મંગાવી આપો. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, ભાઈ! અમારે બળદ કયાં? ગામમાં પૂછો. અમે તો જાણતા નથી. ત્યારે વણઝારાએ રૂપીઆ સો ગદાધરદાસની આગળ ધરી દીધા. (પછી) ઉઠીને ચાલ્યો. કહ્યું, કાલ બળદ લેવા આવીશ. મને ગામના લોકોએ આ પ્રકારે બતાવ્યું છે. ત્યારે ગદાધરદાસે જાણ્યું, કે અમારી જ્ઞાતિનાએ આને ભરમાવ્યો છે. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, કાલ મધ્યાહ્ન સમે તો નહીં જોઇ શકો, તો પણ વણઝારો પ્રસન્ન થઇને કહે, કે ભલે, એ રૂપીઆ રાખો. પછી ગદાધરદાસજીએ રૂપીઆ સો ની સામગ્રી મંગાવી, બધો પાક સિદ્ધ કરી બીજા દિવસે ભોગ ધર્યો. પછી બધા વૈષ્ણવોને પીરસતા હતા, મધ્યાહ્ન સમે, ત્યારે વણઝારો આવ્યો. ત્યારે ગદાધરદાસે

ने कही, भले समय आयो। ए सब ठाकुरजी के बैल हैं। यामें बछरा हू हैं, तरुन हू हैं। जैसे चाहिये तैसे देखि लेहु।

भावप्रकाश—याको आसय यह, बैल धर्म को रूप है। सो गदाधरदास कहे, आजुके काल में धर्म इन वैष्णवन में हैं। सो धर्म लेनो होइ तो देखि ले। बैलकों यह, जो–जा कारज में लगावे सोई करे। नाहीं न करे। जो–खवावै सोई खावै। संतोष करे तैसे ये वैष्णव हैं। जो–जा कार्य में चलत हैं सो प्राप्त होय, तामें संतोष है।

सो बनजारे की सामग्री श्रीठाकुरजी अरोगे। वैष्णव महाप्रसाद लिये। और गदाधरदास प्रसन्न होइके कहें। सो उह बनजारे कों ज्ञान होइ गयो। जो–ए तो भगवद्‌भक्त हैं। गांव के लोगन ने मसखरी करी, लराइवे को उपाय कर्‌यो हतो। परन्तु मेरे बड़े भाग्य हैं, जो–या मिष मो सारिखे पापी की सत्ता अंगीकार किये। अब मैं इनकी सरन जाऊंगो। कृतार्थ होऊं। तब साष्टांग दंडवत् गदाधरदास कों करि कह्यो, मैं रात्रि–दिन संसार समुद्र में भटकत हों। अब तिहारी सरन आयो हूं। मेरो उद्धार करो। तब गदाधरदास नें कही, हम तो सेवक करत नाहीं। परन्तु ए सगरे वैष्णव और हम श्रीआचार्यजी के सेवक हैं, सो अड़ेल में बिराजत हैं, तिनके सेवक

કહ્યું, ઠીક સમય ઉપર આવ્યો. આ બધા શ્રીઠાકુરજીના બળદ છે. એમાં વાછડાં પણ છે. તરૂણ પણ છે. જેવા જોઇએ તેવા જોઇ લે.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે બળદ ધર્મનું રૂપ છે. તે, ગદાધરદાસ કહે, આજના કાળમાં ધર્મ આ વૈષ્ણવોમાં છે. તે ધર્મ લેવો હોય તો જોઇ લે. બળદને, જે કામમાં લગાડો તે કરે, ના ન કહે. જે ખવડાવો તેજ ખાય. સંતોષ કરે. તેવા આ વૈષ્ણવો છે જે કામમાં ચાલે છે તેને પ્રાપ્ત થાય, તેમાં સંતોષ છે.

તે વણઝારાની સામગ્રી શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. અને ગદાધરદાસે પ્રસન્ન થઇને કહ્યું. તેથી તે વણઝારાને જ્ઞાન થઇ ગયું, કે આ તો ભગવદ્‌ભક્ત છે. ગામના લોકોએ મશ્કરી કરી લડાવવાનો ઉપાય કર્યો હતો. પરન્તુ મારાં મોટાં ભાગ્ય છે, કે આ બહાને મારા સરખા પાપીની સત્તા અંગીકાર કરી. હવે હું એમની શરણે જઇશ. કૃતાર્થ થઉં. ત્યારે સાષ્ટાંગ દંડવત્ ગદાધરદાસને કરી કહ્યું, હું રાત્રિ દિન સંસારસમુદ્રમાં ભટકું છું. હવે તમારી શરણે આવ્યો છું. મારો ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, અમે તો સેવક કરતા નથી. પરંતુ આ બધા વૈષ્ણવો અને અમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છીએ. તે અડેલમાં બિરાજે છે. તેમનો સેવક થા.

होउ। पाछें गदाधरदास ने दैवी जीव जानि वाकों महाप्रसाद दिये। तब बनजारा अड़ेल आइ श्रीआचार्यजी पास नाम पाइ कृतार्थ भयो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–भगवदीय के एक क्षन के संग तें, जो–उत्तम जीव होय तो वाको कार्य ह्वै जाइ। गदाधरदास ऐसे भगवदीय हे। इनके हृदय को अगाध भाव है, सो कैसे कह्यो जाय।

सो वे गदाधरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपा-पात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥८॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक बेनीदास माधवदास, दोऊ भाई क्षत्री हते, कड़ामें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—बेनीदास वृषभानजी के गाड़ा को बैल है। सो ऋषभ सखा कों सींग मारयो। सो तीन दिन ऋषभ सखा दुख पायो। ताके शाप तें गिरे भूमि पर। और माधवदास रतनप्रभा ललिताजी की सखी है। सो इहां भगवद् इच्छा तें दोउ भाई भये। परन्तु मन मिले नाहीं। सो माधोदास ने वेस्या घर में राखी हती, सो वैष्णव सब निंदा करते। परन्तु उह वैष्णव दैवी हती। चंद्रावली

પછી ગદાધરદાસે દૈવી જીવ જાણી એને મહાપ્રસાદ આપ્યો. ત્યારે વણઝારો અડેલ આવી શ્રીઆચાર્યજી પાસે નામ પામી કૃતાર્થ થયો.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે ભગવદીયના એક ક્ષણના સંગથી ઉત્તમ જીવ હોય તો તેનું કાર્ય થઇ જાય. ગદાધરદાસ એવા ભગવદીય હતા. એમના હૃદયનો અગાધ ભાવ છે તે કેવી રીતે કહી શકાય ?

તે ગદાધરદાસજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નથી. તે ક્યાં સુધી કહીએ. વાર્તા ॥ ૮ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક વેણીદાસ માધવદાસ બે ભાઇ ક્ષત્રી હતા, કડામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—વેણીદાસ વૃષભાનજીના ગાડાનો બળદ છે. તેણે ઋષભ સખાને શિંગડું માર્યું. તે ત્રણ દિવસ (સુધી) ઋષભ સખા દુઃખ પામ્યો. તેના શાપથી પૃથ્વી પર પડ્યા. અને માધવદાસ રત્નપ્રભા લલિતાજીની સખી છે. તે અહીં ભગવદિચ્છાથી બન્ને ભાઇ થયા. પરંતુ, મન મળે નહીં. તે માધવદાસે વેશ્યા ઘરમાં રાખી હતી. તે વૈષ્ણવો બધા નિન્દા કરતા. પરંતુ તે વૈષ્ણવ દૈવી

की सखी चन्द्रलता लीला में इनकौ नाम हतो। सो अलौकिक संबंध बिना दैवी जीव की दृढ़ प्रीति बँधे नाहीं।

वार्ता-प्रसंग १—**पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ा में पधारे। तब सगरे वैष्णव दरसन कों आये। पाछें माधवदास सुने। सोऊ आय श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो। तब सगरे वैष्णव दरशन कों आये। तब सगरे वैष्णवन नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! माधवदास ने वेस्या राखी है। तब श्रीआचार्यजी पूछे, क्यों माधवदास! वेस्या राखी है? तब माधवदास ने कही, महाराज! मेरो मन वाके ऊपर आसक्त है। तातें राखी है। या प्रकार तीन बेर श्रीआचार्यजी पूछे। तीनों बेर माधवदास ने कही, महाराज! मेरो मन वा पर आसक्त है, तातें राखी है। तब श्रीआचार्यजी चुप ह्वै रहे।**

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो-प्रथम वैष्णव निंदा करते, सोउ माधोदास कों वेस्या को संग छुड़ावन कों। जो-निंदा तें लाज पाइ छोड़ेंगे, यातें करते। अपने भाई जानिकें, ईरष्या द्रेष भाव नाहीं हतो। जो-द्रेष होइ तो सगरेन कों बाधक होई। पाछें श्रीआचार्यजी सों वैष्णवन ने कही। सोउ माधोदास

હતી. ચંદ્રાવલીની સખી, ચન્દ્રલતા લીલામાં એમનું નામ હતું. તે અલૌકિક સંબંધ વિના દૈવી જીવની દૃઢ પ્રીતિ બંધાય નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ-૧—**પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કડામાં પધાર્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ દર્શને આવ્યા. પછી માધવદાસે સાંભળ્યું. (તેથી) તેમણે પણ આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે સઘળા વૈષ્ણવ દર્શને આવ્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! માધવદાસે વેશ્યા રાખી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પૂછે, કેમ માધવદાસ! તેં વેશ્યા રાખી છે? ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મહારાજ! મારૂં મન તેના ઉપર આસક્ત છે. તેથી રાખી છે. એ પ્રકારે ત્રણવાર શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું. ત્રણેવાર માધવદાસે કહ્યું, મહારાજ! મારૂં મન એના ઉપર આસક્ત છે. તેથી રાખી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ચુપ થઈ રહ્યા.**

ભાવપ્રકાશ—એનો અભિપ્રાય એ, કે પ્રથમ વૈષ્ણવ નિંદા કરતા. તે પણ માધવદાસને વેશ્યાનો સંગ છોડાવવા માટે, કે નિંદાથી લાજ પામીને છોડી દે, તેથી કરતા. પોતાનો ભાઇ જાણીને. ઇર્ષ્યા, દ્રેષભાવ નહી હતો. જો દ્રેષ હોય તો બધાને બાધક થાય. પછી શ્રીઆચાર્યજીને વૈષ્ણવોએ કહ્યું, તે પણ માધવ-

के लिये, जो–श्रीआचार्यजी के कहे तें छूटै तो आछो। लौकिक में वैष्णव की निंदा होत हैं सो छूटै। सो श्रीआचार्यजी सर्व लीला को प्रकार जानत हैं। तातें कहैं, क्यों रे माधवदास! तू वेस्या राखे है? यह कही। यह कहते, जो–वेस्या को संग छोड़ दे तोकों बाधक है। तो माधवदास छोड़ि देते। आपु बड़ाई करी। क्योंरे माधवदास! वेस्या सरीखी हीन कों अंगीकार करि राखे? संसार में वही जात हती! लौकिक सोंउ न डरप्यो? तब माधवदास कहे, मन वा पर आसक्त ह्वै गयो। जो–याकों कहूँ ठिकानो नाहीं है तातें संसार की लाज सरम वैष्णव की हू का'नि छोड़ि राखी है। सो मैं नाहीं राखी, मनके प्रेरक आपु हो। आपही वा पर आसक्त कियो, सो आपही राखी है। या प्रकार तीन वार कहे। सो यातें जो–साँची प्रीति होइगी (तो) एक दृढ़ वचन साँचे निकसेंगे। सो साँचेही तीन वार माधवदास ने कही। तब आपु प्रसन्न भये। जो ऐसे टेक के वैष्णव दुर्लभ हैं।

तब सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहे, महाराज! अब तांई तो आपुकी का'नि हती। अब आपु सों हू कहि छूट्यो। आपु वासों कछू कहे नाहीं?

भावप्रकाश—यह कहे यातें, जो–वैष्णवन कों बड़ी चिंता भई, जो–

દાસના માટે, કે શ્રીઆચાર્યજીના કહેવાથી છુટે તો સારૂં. લૌકિકમાં વૈષ્ણવોની નિંદા થાય છે, તેથી છૂટે (તો સારૂં), પરંતુ શ્રીઆચાર્યજી સવ લીલાનો પ્રકાર જાણે છે તેથી કહે, કેમ માધવદાસ ! તૂ વેશ્યા રાખે છે ? એમ કહ્યું. એમ કહેતા, કે વેશ્યાનો સંગ છોડી દે તને બાધક છે. તો માધવદાસ છોડી દેતા. (પરંતુ) પોતે વખાણ કર્યા. કેમ માધવદાસ ! વેશ્યા જેવી હીનને અંગીકાર કરી રાખી ? સંસારમાં વહી જતી હતી. લૌકિકથી યે ન ડર્યો ? ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મન એની ઉપર આસક્ત થઇ ગયું. એટલે એનુ કંઇ ઠેકાણું નથી તેથી સસારની લાજ શરમ (તથા), વૈષ્ણવની કા'નિ (પણ) છોડીને રાખી છે. તે મેં નથી રાખી. મનના પ્રેરક આપ છો. આપે જ તેના ઉપર આસક્ત કર્યું. તે આપે જ રાખી છે. આ પ્રકાર ત્રણ વાર કહ્યું. તે એથી, કે જો સાચી પ્રીતિ હશે તો એક દૃઢ વચન સાચાં નિકળશે. તે સાચે જ ત્રણ વાર માધવદાસે કહ્યું. ત્યારે પોતે પ્રસન્ન થયા, કે આવા ટેકના વૈષ્ણવ દુર્લભ છે.

ત્યારે સઘળા વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને કહે, મહારાજ! હજુ સુધી આપની મર્યાદા હતી. હવે આપને પણ કહી છૂટ્યો. આપે એને કંઇ ન કહ્યું ?

ભાવપ્રકાશ—એ કહ્યું એથી, કે વૈષ્ણવોને મોટી ચિંતા હતી, કે આપ

की सखी चन्द्रलता लीला में इनकौ नाम हतो। सो अलौकिक संबंध बिना दैवी जीव की दृढ़ प्रीति बँधे नाहीं।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ा में पधारे। तब सगरे वैष्णव दरसन कों आये। पाछें माधवदास सुने। सोऊ आय श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो। तब सगरे वैष्णव दरशन कों आये। तब सगरे वैष्णवन नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! माधवदास ने वेस्या राखी है। तब श्रीआचार्यजी पूछे, क्यों माधवदास! वेस्या राखी है? तब माधवदास ने कही, महाराज! मेरो मन वाके ऊपर आसक्त है। तातें राखी है। या प्रकार तीन बेर श्रीआचार्यजी पूछे। तीनों बेर माधवदास ने कही, महाराज! मेरो मन वा पर आसक्त है, तातें राखी है। तब श्री-आचार्यजी चुप ह्वै रहे।

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो-प्रथम वैष्णव निंदा करते, सोउ माधोदास कों वेस्या को संग छुड़ावन कों। जो-निंदा तें लाज पाइ छोड़ेंगे, यातें करते। अपने भाई जानिकें, ईर्ष्या द्वेष भाव नाहीं हतो। जो-द्वेष होइ तो सगरेन कों बाधक होई। पाछें श्रीआचार्यजी सों वैष्णवन ने कही। सोउ माधोदास

હતી. ચદ્રાવલીની સખી, ચન્દ્રલતા લીલામાં એમનું નામ હતુ. તે અલૌકિક સબધ વિના દૈવી જીવની દૃઢ પ્રીતિ બધાય નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ-૧—પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કડામાં પધાર્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણુવ દર્શને આવ્યા. પછી માધવદાસે સાંભળ્યું. (તેથી) તેમણે પણ આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે સઘળા વૈષ્ણુવ દર્શને આવ્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણુવોએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! માધવદાસે વેશ્યા રાખી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પૂછે, કેમ માધવદાસ! તેં વેશ્યા રાખી છે? ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મહારાજ! મારૂં મન તેના ઉપર આસક્ત છે. તેથી રાખી છે. એ પ્રકારે ત્રણવાર શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું. ત્રણેવાર માધવદાસે કહ્યું, મહારાજ! મારૂં મન એના ઉપર આસક્ત છે. તેથી રાખી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ચુપ થઈ રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એનો અભિપ્રાય એ, કે પ્રથમ વૈષ્ણુવ નિંદા કરતા. તે પણ માધવદાસને વેશ્યાનો સંગ છોડાવવા માટે, કે નિંદાથી લાજ પામીને છોડી દે, તેથી કરતા. પોતાનો ભાઇ જાણીને. ઇર્ષ્યા, દ્વેષભાવ નહીં હતો. જો દ્વેષ હોય તો બધાને બાધક થાય. પછી શ્રીઆચાર્યજીને વૈષ્ણુવોએ કહ્યું, તે પણ માધવ-

के लिये, जो-श्रीआचार्यजी के कहे तें छूटै तो आछो। लौकिक में वैष्णव की निंदा होत हैं सो छूटै। सो श्रीआचार्यजी सर्व लीला को प्रकार जानत हैं। तातें कहैं, क्यों रे माधवदास! तू वेस्या राखे है? यह कही। यह कहते, जो-वेस्या को संग छोड़ दे तोकों बाधक है। तो माधवदास छोड़ि देते। आपु बड़ाई करी। क्योंरे माधवदास! वेस्या सरीखी हीन कों अंगीकार करि राखे? संसार में वही जात हती! लौकिक सों न डरप्यो? तब माधवदास कहे, मन वा पर आसक्त ह्वै गयो। जो-याकों कहूँ ठिकानो नाहीं है तातें संसार की लाज सरम वैष्णव की हू का'नि छोड़ि राखी है। सो मैं नाहीं राखी, मनके प्रेरक आपु हो। आपही वा पर आसक्त कियो, सो आपही राखी है। या प्रकार तीन वार कहे। सो यातें जो-साँची प्रीति होइगी (तो) एक दृढ़ वचन साँचे निकसेंगे। सो साँचेही तीन वार माधवदास ने कही। तब आपु प्रसन्न भये। जो ऐसे टेक के वैष्णव दुर्लभ हैं।

तब सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहे, महाराज! अब तांई तो आपुकी का'नि हती। अब आपु सों हू कहि छूट्यो। आपु वासों कछू कहे नाहीं?

भावप्रकाश—यह कहे यातें, जो-वैष्णवन कों बड़ी चिंता भई, जो-

दासना माटे, के श्रीआचार्यजीना कहेवाथी छुटे तो सारुं. लौकिकमां वैष्णवोनी निंदा थाय छे, तेथी छूटे (तो सारुं), परंतु श्रीआचार्यजी सर्व लीलानो प्रकार जाणे छे तेथी कहे, केम माधवदास! तू वेश्या राखे छे? एम कह्युं. एम कहेता, के वेश्यानो संग छोडी दे तने बाधक छे. तो माधवदास छोडी देता. (परंतु) पोते वखाण कर्यां. केम माधवदास! वेश्या जेवी हीनने अंगीकार करी राखी? संसारमां वही जती हती. लौकिकथी ये न डर्यो? त्यारे माधवदासे कह्युं, मन एनी उपर आसक्त थइ गयुं. एटले एनुं कंइ ठेकाणुं नथी तेथी संसारनी लाज शरम (तथा), वैष्णवनी का'नि (पण) छोडीने राखी छे. ते में नथी राखी. मनना प्रेरक आप छो. आपे ज तेना उपर आसक्त कर्युं. ते आपे ज राखी छे. आ प्रकार त्रण वार कह्युं. ते एथी, के जो साची प्रीति हशे तो एक दृढ वचन साचां निकळशे. ते साचे ज त्रण वार माधवदासे कह्युं. त्यारे पोते प्रसन्न थया, के आवा टेकना वैष्णव दुर्लभ छे.

त्यारे सघळा वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने कहे, महाराज! हजु सुधी आपनी मर्यादा हती. हवे आपने पण कही छूट्यो. आपे एने कंइ न कह्युं?

भावप्रकाश—ए कह्युं एथी, के वैष्णवोने मोटी चिंता हती, के आप

आपु आगे कहि दियो। अब याको कैसे कल्यान होइगो ? यह चिंता करि फेरि वैष्णव ने कही, आपु यासों कछू कहे नाहीं ? सो कहो, यह जताये।

तब श्रीआचार्यजी वैष्णवन को समाधान कियो। तुम चिंता मति करो। याको मन वा पर आसक्त है, सो श्रीठाकुरजी कों फेरत कितनीक बार लगेगी ? और गदाधरदास ने याकों आसीर्वाद दियो है, जो–हरि–भक्ति दृढ़ होइगी सोई यह माधवदास है।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताये, जो–याकी चिन्ता तुम मति करो। यह संसार में परिवेवारो नाहीं है। वेस्या आदि औरहू कों संसार तें काढ़नवारो है। गदाधरदास ने दृढ़ भक्ति दीनी सो मैंने दीनी। अब, जो–मैं हठ करिके छुड़ाऊँ तो गदाधरदास भगवदीय की कृपा कैसें जानी जाय ? यातें गदाधरदास ने हरि–भक्ति दीनी सो दृढ़ होइगी। तुम याकी चिंता मति करो।

तब सब वैष्णव प्रसन्न होइके चुप ह्वै रहे। ता पाछे माधवदास को मन फिर्‍यो। सो वेस्या दूरि कीनी। वैष्णव की रीति मर्यादा में चलन लागे। भले वैष्णव भये।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–वेस्या कों दूरि कीनी सो यह अर्थ वेस्या कों बताए, जो–तू श्रीगुसांईजी की सखी है। जब श्रीगुसांईजी पधारेंगे

આગળ કહી દીધુ. હવે એનું કલ્યાણ કેમ થશે ? એ ચિંતા કરી ફરી વૈષ્ણવોએ કહ્યુ, આપે એને કંઇ ન કહ્યું ? તે કહો એમ જણાવ્યું.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વૈષ્ણવોનું સમાધાન કર્યું. તમે ચિંતા ન કરો. એનું મન એના ઉપર આસક્ત છે. તે શ્રીઠાકુરજીને ફેરવતાં કેટલીક વાર લાગશે. અને ગદાધરદાસે એને આશીર્વાદ આપ્યો છે, કે હરિભક્તિ દૃઢ થશે. તે જ આ માધવદાસ છે.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એ જણાવ્યું, કે આની ચિંતા તમે ન કરો. આ સંસારમાં પડવાવાળો નથી. વેશ્યા વિગેરે બીજાને પણ તે સસારમાંથી કાઢવાવાળો છે. ગદાધરદાસે દૃઢ ભક્તિ આપી તે મે આપી. હવે જો હું હઠ કરીને છોડાવુ તો ગદાધરદાસ ભગવદીયની કૃપા કેમ જાણી જાય ? તેથી ગદાધરદાસે હરિભક્તિ આપી તે દૃઢ થશે. તમે આની ચિંતા ન કરો.

ત્યારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને ચુપ થઇ રહ્યા. તે પછી માધવદાસનું મન ફર્યું. તે વેશ્યાને દૂર કરી. વૈષ્ણવની રીતિ મર્યાદામાં ચાલવા લાગ્યા. સારા વૈષ્ણવ થયા.

ભાવપ્રકાશ—આમાં આ જતાવ્યું કે, વેશ્યાને દૂર કરી તે એ અર્થ કે, વેશ્યાને બતાવ્યુ, કે તૂ શ્રીગુસાંઇજીની સખી છે. જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી પધારશે

तब तेरो कार्य होइगो। तातें अब हमसों तोसों न बने। यह कहि के काढ़े। तब वह वेस्या विना घी की चुपरी रुखी अँगाखरी खाई के निर्वाह-पन्द्रह वर्ष लों कियो। पाछें श्रीगुसांईजी कड़ा में पधारे, तब वेस्या ने सुनी। तब श्रीगुसांईजी सों आइ विनती करी, महाराज! मेरो अङ्गीकार करिए। तब श्रीगुसांईजी कहे, हम वेस्या कों सेवक नाहीं करत। तब घर आइ कें परि रही। अन्न, जल छोड़ दियो। सो आठ दिन श्रीगुसांईजी कड़ा में रहे। दूरि तें वेस्या दरसन करि जाइ। पाछें नौमें दिन श्रीगुसांईजी पधारन लागे। तब वेस्या दोइ मनुष्यन के हाथ पकरि कें आई। कह्यो, महाराज! आजु नौमो दिन है। विना अन्नजल मेरे अब प्रान छूटेंगे, जो-आप अंगीकार न करोगे। तब श्रीगुसांईजी ने जानी, जो-अब याको दोष दूरि भयो, सुद्ध भई। तब उह वेस्या कों नाम सुनायो। पाछें उह ब्रह्मसंबंध की विनती करी, महाराज! माधवदास कहि गये हैं, जो-तू श्रीगुसांईजी की दासी हैं। सो आपके लिये पन्द्रह बरस लों रुखी अङ्गाकरी खाय देह राखी। अब नौमें दिन तें जल हू त्यागो है। और जो मोकों आज्ञा करो सो मैं करों। मैं तो दुष्ट हों, परन्तु माधवदास के सम्बन्ध तें मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन हू भये, और

त्यारे तारुं कार्य थशे. तेथी हवे मारे तारे न बने. एम कहीने काढी. त्यारे ते वेश्याए विना घीनी चोपडी रुखी अंगाखरी खाइने निर्वाह पंदर वर्ष सुधी कर्यो. पछी श्रीगुसांइजी कडामां पधार्या. त्यारे वेश्याए सांभळ्युं. त्यारे श्रीगुसांइजीने आवीने विनती करी, महाराज! मने अंगीकार करो. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अमे वेश्याने सेवक नथी करता. त्यारे घर आवीने पडी रही. अन्नजल छोडी दीधुं. ते आठ दिवस श्रीगुसांइजी कडामां रह्या. दूरथी वेश्या दर्शन करी जाय. पछी नवमा दिवसे श्रीगुसांइजी पधारवा लाग्या. त्यारे वेश्या बे मनुष्योनो हाथ पकडीने आवी. कह्युं, महाराज! आज नवमो दिवस छे. विना अन्नजल मारा हवे प्राण छूटशे. जो आप अंगीकार नही करो तो. त्यारे श्रीगुसांइजीए जाण्युं, के हवे आनो दोष दूर थयो, शुद्ध थइ. त्यारे ते वेश्याने नाम संभळाव्युं. पछी तेणीए ब्रह्मसंबंधनी विनती करी, महाराज! माधवदास कही गया छे, के तू श्रीगुसांइजीनी दासी छे. ते आपने माटे वरस पंदर सुधी सुकी अगाखरी खाइ देह राखी. हवे नवमा दिवसथी जल पण छोडयुं छे. हवे जे आज्ञा करो ते हुं करुं. हुं तो दुष्ट छुं. परन्तु माधवदासना संबंधथी मने श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनां दर्शन पण थयां (छे), अने आपनां दर्शन पण थयां.

आपके हू भये। तातें मोकों ब्रह्मसंबंध कराइ मेरे माथे भगवत् सेवा पधरावो, तो मेरे प्रान रहेंगे। तब श्रीगुसांईजी शुद्ध भाव देखि के ब्रह्मसंबंध कराए। लालजी पधराय दिये। वैष्णवन सों कहे, याकों रीति भांति सब बताइ दीजो, ता प्रकार यह सेवा करै। ऐसे करत वेस्या कों अटकाव भयो। सो वैष्णव तो बरजे, जो-चारि दिन लों कछू मति जलादि छूवो। परन्तु वाको प्रेम बहोत सो रह्यो न जाइ, अटकाव में सेवा करै। पाछें पांचवें दिन अपरस काढ़े। श्रीठाकुरजी कों पञ्चामृत स्नान करावे। सो वैष्णवन ने उनसों व्यौहार छोड़ि दियो। पाछें कछुक दिन में श्रीगुसांईजी कड़ा पधारे। तब सबन ने श्रीगुसांईजी सों कही, महाराज! वह वेस्या अटकाव में हू बहोत बरजे परन्तु मानत नाहीं, सेवा करत है। पाछें वेस्या सों, ऐसे सुनि श्रीगुसांईजी निकट बुलाइ कहे, अटकाव में लोटी क्यों भरत हो? तब वेस्या ने कही, महाराज! मेरे जितने रोम हैं इतने धनी लौकिक में किये। सब आपकी कृपा तें छूटे। अब एक धनी अलौकिक आपु करि दिये, तिन बिना कैसें चारि दिन रह्यो जाइ? सो आपु तो अन्तर्यामी हो। एक क्षण को अन्तराइ सह्यो नहिं जात है। अरु पाँचवे दिन अपरस हू काढ़ि पञ्चामृत सों

તેથી મને બ્રહ્મસંબંધ કરાવી મારા માથે ભગવત્સેવા પધરાવો તો મારા પ્રાણ રહેશે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ (તેનો) શુદ્ધ ભાવ જોઇને (તેને) બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. લાલજી પધરાવી દીધા. (પછી) વૈષ્ણવોને કહે, આને (સેવાની) રીતિ ભાંતિ બધી બતાવી દેજો. તે પ્રકારે એ સેવા કરે. એમ કરતાં વેશ્યાને અટકાવ થયો. તે વૈષ્ણવ તો રોકે, કે ચાર દિવસ સુધી જલાદિ કોઇ (વસ્તુ) ને ન અડો. પરન્તુ એને પ્રેમ ઘણો તે રહ્યો ન જાય, અટકાવમાં (પણ) સેવા કરે. પછી પાંચમા દિવસે અપરસ કાઢે. શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવે. તેથી વૈષ્ણવોએ તેનાથી વ્યવહાર છોડી દીધો. પછી થોડા દિવસમાં શ્રીગુસાંઇજી કડા પધાર્યા. ત્યારે બધાએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, મહારાજ! એ વેશ્યા અટકાવમાં પણ ઘણું રોકવા છતાં માનતી નથી. સેવા કરે છે એવું સાંભળી શ્રીગુસાંઇજીએ વેશ્યાને પાસે બોલાવી પૂછ્યું, અટકાવમાં લોટી (ઝારી) કેમ ભરો છો? ત્યારે વેશ્યાએ કહ્યું, મહારાજ! મારા જેટલા રોમ છે તેટલા ધણી લૌકિકમાં કર્યા. બધા આપની કૃપાથી છુટયા. હવે એક ધણી અલૌકિક આપે કરી દીધા. તેના વિના ચાર દિવસ કેમ રહી શકાય? આપ તો અંતર્યામી છો. એક ક્ષણનો અંતરાય સહ્યો જતો નથી. વળી પાંચમા દિવસે અપરસ પણ કાઢી પંચામૃતથી શ્રીઠાકુરજીને સ્નાન કરાવું છું. આ મર્યાદા પણ રાખું છું. હવે

श्रीठाकुरजी कों स्नान करावत हों। यह मर्यादा हू राखत हों। अब आप सबके अन्तर की जानत हो। जो आज्ञा देउ सो करों। तब श्रीगुसांईजी याके ऊपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न देखिकै कहे, जैसे करति है तैसेई करियो। या प्रकार वाको समाधान करि घर पठाई। जो-वेगि जा, तेरे लिये श्रीठाकुरजी बैठि रहे हैं। तब वह दंडोत् करिकै गई।

पाछें श्रीगुसांईजी वैष्णवन सों कहें, जो-वह वेस्या करें, सो करन देऊ। वासों मति कछु कहियो। वाकी देखादेखी और कोई मति करियो। वा पर श्रीठाकुरजी वाही भांति प्रसन्न हैं, तुम पर मर्यादा ही सों प्रसन्न होंइगे। या प्रकार उह वेस्या कों माधवदास के संग तें प्रेम भयो।

वार्ता-प्रसंग २—माधवदास, बेनीदास सों मिलि के रहते। सो एक दिन मोती की माला बहोत मोल की भारी बिकान आई। सो देखिकै माधवदास ने बेनीदास सों कही, यह माला श्रीनवनीतप्रियजी लाइक है, सो लेहु। तब बेनीदास ने कही, माला की कहा है? हमारे जो कछू वस्तु है सो सब श्रीठाकुरजी की ही है। यह कहिकैं बात टारि दिये।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-संसार में आसक्त, सो लोगन

આપ બધાના અંતરની જાણો છો, જેમ આજ્ઞા દો તેમ કરૂં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી એના ઉપર શ્રીઠાકુરજીને પ્રસન્ન જોઇને કહે, જેમ કરે છે તેમજ કરજે. એ પ્રકારે એનું સમાધાન કરી ઘર મોકલી. જા, જલ્દી જા, તારા માટે શ્રીઠાકુરજી બેસી રહ્યા છે. ત્યારે તે દંડવત્ કરીને ગઇ.

પછી શ્રીગુસાંઇજી વૈષ્ણવોને કહે, કે એ વેશ્યા કરે તે કરવા દો. એને કંઇ કહેતા નહીં. એની દેખાદેખી બીજા કોઇ ન કરતા. એના ઉપર શ્રીઠાકુરજી એજ પ્રકારે પ્રસન્ન છે. તમારા ઉપર મર્યાદાથી જ પ્રસન્ન થશે. આ પ્રકારે તે વેશ્યાને માધવદાસના સંગથી પ્રેમ થયો.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—માધવદાસ વેણીદાસને મળીને રહેતા. તે એક દિવસ મોતીની માળા બહુ મૂલ્યની ભારી વેચાવા આવી. તે જોઇને માધવદાસે વેણીદાસને કહ્યું, આ માળા શ્રીનવનીતપ્રિયજી લાયક છે, તે લો. ત્યારે વેણીદાસે કહ્યું, માળાની શી (વાત) છે. અમારે જે કંઇ વસ્તુ છે તે બધી શ્રીઠાકુરજીની જ છે. એમ કહી વાતને ટાળી દીધી.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એમ જણાવ્યું, કે સંસારમાં આસક્ત (હોય) તે

के दिखाइवे के लिये सब श्रीठाकुरजी को कहै। परन्तु श्रीठाकुरजी के लिये खर्च न करे।

तब माधवदास नें कही, जो–सब श्रीठाकुरजी को है तो श्रीठाकुरजी के लिये माला क्यों नाहीं लेत? तब भाई बेनीदास ने कही, जो–हमसों कैसे लीनी जाइ? तब माधवदास ने कही, जो–मेरो द्रव्य बांटि देहु। मैं तुमसों न्यारो रहूंगो।

भावप्रकाश—यामें यह कहे, तुम बैल हो, सो केवल गृहस्थाश्रम को व्यौहार लादो। हों तो न्यारो रहि मनोरथ करूंगो।

सो द्रव्य आधो बांटि के न्यारे भये। सो थोरो द्रव्य हतो, सो माला लीनी न गई। परन्तु मन में यह, जो–ऐसी श्रीनवनीतप्रियजी कों अंगीकार होई। सो द्रव्य लै के दक्षिण कमावन गये। और यह माला कों माधवदास ने अलौकिक अंगीकार विचारे। सो लौकिक में जाय नाहीं, सो प्रयाग में बिकन आई। तब प्रयाग के वैष्णव मोल ले श्रीआचार्यजी कों दिये। श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी कों पहराए। उहां माधवदास ने द्रव्य बहोत कमायो, सो पहिली माला तें उत्तम माला लेके चले। सो मारग में एक बड़ी

લોકોને દેખાડવાને માટે બધુ શ્રીઠાકુરજીનું કહે. પરતુ શ્રીઠાકુરજીના માટે ખર્ચ ન કરે.

ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, કે બધું શ્રીઠાકુરજીનું છે તો શ્રીઠાકુરજીને માટે માલા કેમ નથી લેતા? ત્યારે ભાઈ વેણીદાસે કહ્યું, કે અમારાથી કેવી રીતે લીધી જાય (કેમકે અમે ગૃહસ્થ છીએ), ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મારૂં દ્રવ્ય વાટી દો. (હું) તમારાથી અલગ રહીશ.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ કહ્યું, તમે બળદ છો, તેથી કેવળ ગૃહસ્થાશ્રમનો વ્યવહાર (રૂપી બોજ) ઉઠાવો. હુ તો અલગ રહી મનોરથ કરીશ.

તે દ્રવ્ય અડધું વાંટીને અલગ થયા. તે દ્રવ્ય થોડું હતું, તેથી માલા લેવાઇ નહીં. પરંતુ મનમાં એ, કે એવી (માલા) શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અંગીકાર થાય (તો સારૂં). તે દ્રવ્ય લઇને દક્ષિણ કમાવા ગયા. (અહીં) આ માલાનો માધવદાસે અલૌકિક (રીતે) અંગીકાર વિચાર્યો. તે લૌકિકમાં જાય નહીં. (તથી) તે પ્રયાગમાં વેચાવા આવી. ત્યારે પ્રયાગના વૈષ્ણવોએ મોલ લઇ (તે) શ્રીઆચાર્યજીને આપી. શ્રીઆચાર્યજીએ (તે) શ્રીનવનીતપ્રિયજીને પહેરાવી. ત્યાં માધવદાસે દ્રવ્ય બહુ કમાવ્યું. તે પહેલી માલાથી (પણ) ઉત્તમ માલા લઇને ચાલ્યા. તે માર્ગમાં એક

नदी आई। तहां नाव पर बैठे, और हू बहोत लोग बैठे। और नाव मध्य धारा में जब आई तब श्रीनवनीतप्रियजी लाल छरी ले कैं आये। सो एक माधवदास कों दरसन भये तब श्रीमुख तें कहे, नाव डूबाऊं? तब माधवदास कहे, "निछेच्छातः करिष्यति।" तब श्रीनवनीत-प्रियजी कहै, तू कहां गयो हतो? तब माधवदास कहे माला लेन गयो हो। तब श्रीनवनीतप्रियजी कहे, कहा हमारे माला नाहीं हैं? देखि उहि माला श्रीआचार्यजी धराएं हैं। और मेरे बहोतेरी हैं। तब माधवदास कही, महाराज! आपके बहोतेरी हैं, परि सेवक को यह धर्म नाहिं जो बैठे रहे। उद्यम करनो। तब नाव डूबत तें रही।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी नाव पर आइकें कहे सो यातें, जो-तेरे पीछे मोकों दक्षिण जानो पर्यो, सो तू क्यों गयो? मेरे कहा माला नाहीं है? तातें नाव डुबाऊँ तो तू कहा करै? मनोरथ तेरो धर्यो रहै। तब माधवदास कहै, "निजेच्छातः करिष्यति" सो "निजानां सेवकानां तस्य (तेषाम्) इच्छातः करिष्यति"। जो-भक्तन की इच्छा होइ सो ही सदा आपु करत आए हो। "भक्त मनोरथ-पूरकाय नमः" आपको नाम है। सो माला को अङ्गीकारि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन द्वारा होइ। ता पाछे सरीर रूपी नाव डूबे ताकी मोकों कछू चिन्ता नाहीं है।

મોટી નદી આવી, ત્યાં નાવ ઉપર બેઠા. બીજા પણ ઘણા લોકો બેઠા. (પછી) નાવ મધ્યધારામાં જ્યારે આવી ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી લાલ છડી લઇને આવ્યા. તે એક માધવદાસને દર્શન થયાં. ત્યારે શ્રીમુખે કહ્યું, નાવ ડુબાડું? ત્યારે માધવદાસ કહે, 'નિજેચ્છાતઃ કરિષ્યતિ' ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી કહે, તું ક્યાં ગયો હતો? ત્યારે માધવદાસ કહે, માળા લેવા ગયો હતો. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી કહે, શું અમારે માલા નથી? દેખ, એજ માલા શ્રીઆચાર્યજીએ ધરાવી છે. બીજી પણ મારે ઘણી છે. ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપને ઘણી છે પરંતુ સેવકનો એ ધર્મ નથી કે બેસી રહે. ઉદ્યમ કરવો. ત્યારે નાવ ડુબવાથી રહી.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજી નાવ ઉપર આવીને કહે, તે એથી કે તારી પાછળ મારે દક્ષિણ જવું પડયું. તે તું કેમ ગયો? મારે શું માલા નથી? તેથી નાવ ડુબાડું તો તું શુ કરે? મનોરથ તારો ધર્યો રહે. ત્યારે માધવદાસ કહે, 'નિજેચ્છાતઃ કરિષ્યતિ' એટલે 'નિજાનાં સેવકાનાં (તેષામ્) ઇચ્છાતઃ કરિષ્યતિ' જે ભક્તોની ઇચ્છા હોય તે જ આપ સદા કરતા આવ્યા છો. 'ભક્ત મનોરથ-પુરકાય નમઃ' આપનું નામ છે, તેથી માલાનો અંગીકાર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની દ્વારા થશે. તે પછી શરીરરૂપી નાવ ડુબે તેની મને કંઇ ચિંતા નથી. જ્યારે

सो हरिवंस पाठक पहलें गनेश के उपासक हते। सो जब श्रीआचार्यजी 'पत्रावलंबन' कासी में किये। पंडितन कों जीतें तब हरिवंस पाठक के मन में आई, जो–मैं हूँ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन करि आऊं। सो दरसन कों आये। तब विप्ररूप देखिकें मन में आई, जो–ए ऊ ब्राह्मण हैं, हम हूँ ब्राह्मण हैं। ए पंडित हैं। सो मेरे कहा काम है ? मेरे गनेश के दरसन में ढील लगे सो ठीक नाहीं हैं। यह विचारि दूरि तें देखि पाछे फिरे। सो घर में आइ गनेश की पूजा कौ सामान लै चलन लागे। सो द्वार पर ठोकर लगी, गिरि परे, सो मूर्छा आइ गई। तब गनेश ने सपने में हरिवंस पाठक सों कहे, तू श्रीआचार्यजी के दरसन करे बिना मेरे पास आवत हतो, सो मैं तेरो मुंह न देखोंगो, श्रीआचार्यजी को अपराध कियो। श्रीआचार्यजी पूर्णपुरुषोत्तम हैं। तिनसों अपराध क्षमा कराइ मेरे पास आइयो। तब हरिवंस पाठक कों सरीर की सुधि भई। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास दोरयो आयो। दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! आप पूर्णपुरुषोत्तम हो, मैं नहिं जान्यो। अब मेरो अपराध क्षमा करि सरन लेहु। तब श्रीआचार्यजी कहे, हम हूं ब्राह्मण हैं, तुम हूं ब्राह्मण हो। सरन आइबे की क्यों

તે હરિવંશ પાઠક પહેલાં ગણેશના ઉપાસક હતા. તે જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'પત્રાવલંબન' કાશીમાં કર્યો, પંડિતોને જીત્યા ત્યારે હરિવંશ પાઠકના મનમાં આવ્યું, કે હુ પણ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનાં દર્શન કરી આવુ. તે દર્શન માટે આવ્યા. ત્યારે વિપ્રરૂપ જોઇને મનમાં આવ્યુ, કે એ પણ બ્રાહ્મણ છે. અમે પણ બ્રાહ્મણ છીએ. એ પડિત છે તેથી મારે (એમનાથી) શુ કામ છે ? મને ગણેશના દર્શનમાં ઢીલ થાય તે ઠીક નથી. એ વિચારી દૂરથી જોઇને પાછા ફર્યા. તે ઘરમાં આવી ગણેશની પૂજાનો સામાન લઇ ચાલવા લાગ્યા. તે દ્વાર ઉપર ઠોકર વાગી. પડી ગયા. તે મૂર્ચ્છા આવી ગઇ. ત્યારે ગણેશ સ્વપ્નમાં હરિવંશ પાઠકને કહે, તૂ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન કર્યા વિના મારી પાસે આવતો હતો તેથી હું તારૂં મુખ નહી જોઉ. (તેં) શ્રીઆચાર્યજીનો અપરાધ કર્યો. શ્રીઆચાર્યજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે. તેમની પાસે અપરાધ ક્ષમા કરાવી મારી પાસે આવજે. ત્યારે હરિવશ પાઠકને શરીરની સુધ આવી. તે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી પાસે દોડયો આવ્યો. દડવત કરી વિનતી કરી, મહારાજ ! આપ પૂર્ણપુરુષોત્તમ છો, (એ) મેં નહીં જાણ્યું. હવે મારો અપરાધ ક્ષમા કરી (મને) શરણે લો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે પણ બ્રાહ્મણ છીએ, તમે પણ બ્રાહ્મણ છો.

कहत हो ? तब हरिवंस पाठक ने कही, महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं, संसार समुद्र में पड़े हैं। सो आपके स्वरूप कों कहा जानें ? हम तो गनेश के उपासक हैं। सो गनेश हू आप के अपराध सों डरपत हैं। तातें मोकों तिहारे पास पठाये। जो-अपराध क्षमा कराइ आव। सो मैं अब जान्यो, जो-हम सों बड़े आप हो, अब मोकों सरन लेहु। तब श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के इहाँ उतरे हते। तहाँ हरिवंस पाठक कों नाम सुनाये। तब हरिवंस पाठक ने विनती करी, महाराज ! घर में स्त्री है, एक बेटा, एक बेटी है। ताकों अंगीकार करिये। तब श्रीआचार्यजीने कही, तुम भगवत् स्वरूप कहूँ ते लावो। तब तेरे घर पधारि सबकों नाम-निवेदन कराइ, श्रीठाकुरजी पधराय देइंगे। तिनकी तुम सेवा करियो, और की सेवा मति करियो। तब हरिवंस पाठक ने कही, महाराज ! पुरुषोत्तम पाये पाछे ऐसो को अभागो है, जो-और देवता के पाछे द्वार भटकेगो। यह कहि बजार में आइ कछु न्योछावर दे, एक छोटे से लालजी को स्वरूप लियो। सो श्रीआचार्यजी के पास आय विनती करी, महाराज ! अब कृपा करिके वेगि पधारिये। काहेतें ? सरीर को भरोसो नाहीं। और कदाचित कोईको काल आइ जाइ तो जीवको अकाज होइ।

શરણે આવવાનું કેમ કહો છો ? ત્યારે હરિવંશ પાઠકે કહ્યું, મહારાજ ! અમે તો અજ્ઞાની જીવ છીએ. સંસાર સમુદ્રમાં પડયા છીએ. તે આપના સ્વરૂપને શું જાણીએ ? અમે તો ગણેશના ઉપાસક છીએ. તે ગણેશ પણ આપના અપરાધથી ડરે છે. તેથી મને તમારી પાસે મોકલ્યો, કે અપરાધ ક્ષમા કરાવી આવો. તેથી મેં હવે જાણ્યુ, કે અમારાથી મોટા આપ છો. હવે મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ત્યાં ઉતર્યા હતા. ત્યાં હરિવંશ પાઠકને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે વિનતી કરી, મહારાજ ! ઘરમાં સ્ત્રી છે, એક બેટા એક બેટી છે. તેને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તૂ ભગવત્સ્વરૂપ કોઇ જગેથી લાવ. ત્યારે તારા ઘરે પધારી બધાને નામ-નિવેદન કરાવી શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઇશ. તેમની તમે સેવા કરજો. બીજાની સેવા ન કરતા. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે કહ્યું, મહારાજ ! પુરુષોત્તમ મળ્યા પછી એવો કોણ અભાગો છે, કે બીજા દેવતાની પાછળ દ્વારે ભટકશે ? એ કહી બજારમાં આવી કંઇ ન્યોછાવર દઇ એક નાનું સરખું લાલજીનું સ્વરૂપ લીધું. પછી શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી વિનતી કરી, મહારાજ ! હવે કૃપા કરીને જલ્દી પધારો. કેમકે ? શરીરનો ભરોસો નહી. અને (જો) કદાચિત કોઇનો કાળ આવી જાય તો જીવનું અકાજ થાય. આ

यह आरति देखि श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रसन्न होइ हरिवंस पाठक के घर पधारे। सगरी अपरस सिद्धि कराई। सगरे कुटुम्ब कों नाम निवेदन कराइ श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों स्नान कराइ पाट बैठारे। पाछें आप पाक करि भोग धरि भोजन किये। सबन कों जूठनि धरी। पाछे आप सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पॉऊ धारे।

पाछें आप पृथ्वी-परिक्रमा कों पधारे। तब हरिवंस पाठक सों कहे, जो-सन्देह होइ सो सेठ पुरुषोत्तमदास सों पूछि लीजो। सो हरिवंस पाठक सेवा भली भांति सों करते। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय हरिवंस पाठक पटना ब्यौहार कों गये हते। सो पटना के हाकिम सों बहोत मिलाप हतो। सो वह हाकिम मनमें अपने में जाने, जो-ए कछू मांगे तो मैं इनकों देऊं। सो एक दिन उह हाकिम ने कही, मैं तुम ऊपर बहुत प्रसन्न हों, तातें तुम जो-कछु मांगो सो मैं देहुं। तब हरिवंस पाठक ने कही, कोई दिन कछू काम परैगो तो कहूंगो। सो ऐसे करत डोल उत्सब के दिन निकट आये। तब श्रीठाकुरजी ने हरिवंस पाठक सों जताई, जो-तू डोल मोकों न झुलावेगो? तब हरिवंस पाठक मनमें विचारे, अब कहा करिये? दिन थोरे रहे, चले सो तो न पहोंचिये। तब वह हाकिम पास

આરતી જોઇ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પ્રસન્ન થઇ હરિવંશ પાઠકના ઘરે પધાર્યા. બધી અપરસ સિદ્ધ કરાવી. બધા કુટુંબને નામ-નિવેદન કરાવી શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડયા. પછી પોતે પાક કરી ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. બધાને જુઠણ ધર્યું. પછી પોતે શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરે ચરણ ધર્યા (પધાર્યા).

પછી પોતે પૃથ્વીપરિક્રમા માટે પધાર્યા. ત્યારે હરિવંશ પાઠકને કહે, કે સંદેહ હોય તે શેઠ પુરુષોત્તમદાસને પૂછી લેજે. તે હરિવંશ પાઠક સેવા સારી રીતિથી કરતા. (તેથી) શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૧—તે એક સમય હરિવંશ પાઠક પટના વ્યવહાર માટે ગયા હતા. તે પટનાના હાકેમથી બહુ મેળ હતો. તેથી તે હાકેમ પોતાના મનમાં જાણે, કે એ કંઇ માંગે તો હું એમને દઉં. તે એક દિવસ એ હાકેમે કહ્યું, હું તમારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન છુ. તેથી તમે જે કંઇ માંગો તે હું દઉં. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે કહ્યું, કોઇ દિવસ કંઇ કામ પડશે તો કહીશ. તે એમ કરતાં ડોલ ઉત્સવના દિવસ નજીક આવ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ હરિવંશ પાઠકને જણાવ્યું, કે તું ડોલ મને નહીં ઝુલાવે? ત્યારે હરિવંશ પાઠક મનમાં વિચારે, (કે) હવે શું કરીએ! દિવસ થોડા રહ્યા. ચાલીયે તો ન પહોંચાય.

गये और कहें, कछु मांगत है, सो मोकों दियो चाहिए। तब वह हाकिम ने कही, जो–चाहो सो मांगो। तब हरिवंस ने कही, जो–मोकों दिन ३ में कासी पहोंच्यो चाहिए। तब वह हाकिम ने घोड़ा और मनुष्य साथ दिये। सो मजलि–मजलि पर घोड़ा की डाक पर चले जाई, घोड़ा मनुष्य पलटत जाई। सो ऐसे करत दूसरे दिन आइ पहोंचे। रात्रि कों सब डोल की तैयारी सिद्ध करि राखी, दूसरे दिन झुलाए, बड़ो सुख भयो। पाछे दिन दस–पंद्रह रहिके पटना आये। तब वह हाकिम ने हरिबंस पाठक सों पूछी, ऐसो घर में कहा जरूरी काम हतो? जो–यह मांग्यो। कछू द्रव्यादिक मांगते, तो लाख रुपैये की रीझि देतो। तब हरिबंस पाठक ने कही, जो–हम गृहस्थ हैं। अनेक काम घर के हैं। सो गयो हतो। या प्रकार अपनो धर्म गोप्य राखे। ऐसे भगवदीय हे। ता पाछे बड़े उत्सव, छोटे उत्सव, सगरे घर आइ के करते।

भावप्रकाश—यामें यह सिद्धान्त जताए, जो–सनेही होइ सो उत्सव अपने ठाकुर पास करे तो ठाकुर प्रसन्न रहें। और श्रीठाकुरजी की सेवा को प्रकार काहू सों कहनो नाहीं, जैसे हरिवंस पाठक उह हाकिम सों कछु न कहे। घरहू में जदपि वैष्णव हते तऊ श्रीठाकुरजी के अनुभव की बात नाहीं कही।

ત્યારે તે હાકેમ પાસે ગયા. અને કહ્યું, કંઇ માગું છું તે મને આપવું જોઇએ. ત્યારે તે હાકેમે કહ્યું, કે જોઇએ તે માંગો. ત્યારે હરિવંશે કહ્યું, કે મારે દિન ત્રણમાં કાશી પહોંચવું જોઈએ. ત્યારે તે હાકેમે ઘોડા અને મનુષ્ય સાથે આપ્યાં. તે મુકામે મુકામે ઘોડાની ખેપ ઉપર જાય. ઘોડા મનુષ્ય બદલતા જાય. તે એમ કરતાં બીજા દિવસે આવી પહોચ્યા. રાત્રિએ બધી ડોલની તૈયારી સિદ્ધ કરી રાખી. બીજે દિવસે ઝુલાવ્યા. બહુ સુખ થયું. પછી દિવસ દસ–પંદર રહીને પટના આવ્યા. ત્યારે તે હાકેમે હરિવંશ પાઠકને પૂછયું, એવું ઘરમાં શું જરૂરી કામ હતું, કે આ માંગ્યું ? કંઇ દ્રવ્યાદિક માંગતા, તો લાખ રૂપિયાનું ઇનામ દેતો. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે કહ્યું, કે અમે ગૃહસ્થ છીએ. અનેક કામ ઘરનાં છે તે ગયો હતો. એ પ્રકારે પોતાનો ધર્મ ગોપ્ય રાખ્યો. એવા ભગવદીય હતા. તે પછી મોટા નાના ઉત્સવો બધા ઘર આવીને કરતા.

ભાવપ્રકાશ—આમાં આ સિદ્ધાંત જણાવ્યો, કે સ્નેહી હોય તે ઉત્સવ પોતાના ઠાકુર પાસે કરે તો ઠાકુર પ્રસન્ન રહે. અને શ્રીઠાકુરજીની સેવાનો પ્રકાર કોઇને કહેવો નહીં. જેમ હરિવંશ પાઠક તે હાકેમને કંઇ ન કહે. ઘરમાં પણ યદ્યપિ વૈષ્ણવ હતા તોપણ શ્રીઠાકુરજીના અનુભવની વાત ન કરી.

सो हरिवंस पाठक श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥१०॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोविंददास भल्ला क्षत्री, थानेश्वर में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो गोविंददास थानेश्वर में सिपाइगीरी करते, हथियार बांधते। थानेश्वर के हाकिम पास रहते। रुपैया पांच–सात को रोज पावते। सो थानेश्वर में श्रीआचार्यजी पधारे। तब थानेश्वर में वहोत जीव सरन आये। तब गोविंददास भल्लाने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों बिनती करी, जो–महाराज! मेरे द्रव्य वहोत है, कहा करूँ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवद् सेवा करो। तब गोविंददास भल्ला ने कही–महाराज! स्त्री अनुकूल नाहीं है। ताको आसय यह जो–दैवी नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहें, स्त्री को त्याग कर। तब गोविंददास ने स्त्री को त्याग करि सगरो द्रव्य लाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों बिनती करी, महाराज! द्रव्य को कहा करूँ? स्त्री को तो त्याग करयो। तब श्रीआचार्यजी नें कही, यह द्रव्य के चारि भाग कर। एक भाग श्रीनाथजी की भेट कर। एक

તે હરિવંશ પાઠક શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નહીં, તે ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૧૦॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક ગોવિંદદાસ ભલ્લા ક્ષત્રી, થાનેશ્વરમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—તે ગોવિંદદાસ થાનેશ્વરમાં સિપાઇગીરી કરતા. હથિયાર બાંધતા. થાનેશ્વરના હાકેમ પાસે રહેતા. રૂપીઆ પાંચ–સાતનો પગાર મળતો. તે થાનેશ્વરમાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. ત્યારે થાનેશ્વરમાં ઘણા જીવો શરણે આવ્યા. ત્યારે ગોવિંદદાસ ભલ્લાએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનતી કરી, કે મહારાજ! મારે દ્રવ્ય ઘણુ છે. શું કરું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, ભગવત્સેવા કરો. ત્યારે ગોવિંદદાસ ભલ્લાએ કહ્યું, મહારાજ! સ્ત્રી અનુકૂલ નથી. તેનો આશય એ, કે દૈવી નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સ્ત્રીનો ત્યાગ કર. ત્યારે ગોવિંદદાસે સ્ત્રીનો ત્યાગ કરી બધુ દ્રવ્ય લાવી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને વિનતી કરી, મહારાજ! દ્રવ્યનું શું કરું? સ્ત્રીનો તો ત્યાગ કર્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, આ દ્રવ્યના ચાર ભાગ કર. એક ભાગ

भाग स्त्री कों दें। यातें, जो–ब्याह भयो ताकों छोड़े को दोष पूंजी दिये छूट्यो। दो भाग तू लेकें भगवत् सेवा करि। तब गोविंददास भल्ला नें कही, महाराज! कछू आपु अंगीकार करिए। तब श्रीआचार्यजी नें कही, भलो, एक भाग हम कों दे। तब गोविंददास ने द्रव्य के चारि भाग करे। एक भाग श्रीनाथजी कों भेंट किये, एक भाग श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों भेट कियो। एक भाग स्त्री कों दियो। एक भाग को द्रव्य ले महावन में आइ रह्यो। सो यातें, जो–गांव में स्त्री को प्रतिबंध परे। तातें महावन आइ, श्रीमथुरानाथजी की सेवा करन लागे।

वार्ता–प्रसंग १—**सो गोविंददास महावन में नित्य के चौवीस टका की सामग्री करें, भोग धरें। उहांई मर्यादामार्गीय वैष्णव कों लिवाय देई, बचै सो गाइ कों खवाइ देइ। तामें तें आपु कछु न लेई। आपु न्यारि लीटी करि भोग धरि खाँय।**

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो–महावन में नन्दरायजी को देवालय कराइ ब्राह्मन कों पूजा सोंपी हती। सो मर्यादा रीति सों करते। खरच नन्दरायजी देते। सो ठाकुर हते। ब्राह्मन पूजा करते। सो देवालय को आपु कैसे लेइ? तातें न्यारी लीटी करि मन ही सों भोग धरि लेते।

શ્રીનાથજીની ભેટ કર. એક ભાગ સ્ત્રીને દે. તે એથી કે, લગન થયું તેને છોડયાનો દોષ પૂંજી આપ્યાથી મટે. બે ભાગ લઇને તૂ ભગવત્સેવા કર. ત્યારે ગોવિંદદાસ ભલ્લાએ કહ્યું, મહારાજ! કંઇક આપ અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, ભલે, એક ભાગ અમને આપ. ત્યારે ગોવિંદદાસે દ્રવ્યના ચાર ભાગ કર્યા. એક ભાગ શ્રીનાથજીને ભેટ કર્યો. એક ભાગ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને ભેટ કર્યો, એક ભાગ સ્ત્રીને દીધો. એક ભાગનું દ્રવ્ય લઇ મહાવનમાં આવી રહ્યા. તે એ માટે કે ગામમાં સ્ત્રીનો પ્રતિબંધ પડે. તેથી મહાવન આવી શ્રીમથુરાનાથજીની સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ–૧—તે ગોવિંદદાસ મહાવનમાં નિત્યના ચોવીસ ટકાની સામગ્રી કરે (અને) ભોગ ધરે. (પછી) ત્યાંજ મર્યાદામાર્ગીય વૈષ્ણવોને લેવડાવી દે. બચે તે ગાયને ખવડાવી દે. તેમાંથી પોતે કંઇ ન લે. પોતે અલગ લીટી (પીળી રોટી) કરી ભોગ ધરીને ખાય.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે મહાવનમાં નંદરાયજીનું દેવાલય કરાવી બ્રાહ્મણને પૂજા સોંપી હતી. તે મર્યાદા રીતિથી કરતા. ખર્ચ નંદરાયજી દેતા. તે ઠાકુર હતા. બ્રાહ્મણ પૂજા કરતા. તે દેવાલયનું પોતે કેમ લે? તેથી અલગ લીટી કરી મનથીજ ભોગ ધરીને લેતા.

ऐसे करत द्रव्य सब निघट्यो। तब श्रीनाथजीद्वार आइ श्रीगोवर्द्धनधर की परचारगी करन लागे। दोऊ समय के पात्र मांजे। रात्रि पहर डेढ़ रहे पाछली, तब उठि देह कृत्य करि न्हाइ के गागरि ले मथुरा आइ श्रीयमुना-जल की गागर भरि राजभोग पहले आवते। पात्र सब मांजि रसोइ पोति अपनी सब सेवा सों पहोंचि पर्वत तें नीचे आइ, तिलक धोइ माला उतारि गांठि बांधि गोवर्द्धन के आसपास सों कोरी भिक्षा मांगि लावते। सो सेर पांच-सात को आहार हू हतो। सो आहार लाइक आवे तब आइके अपने हाथ सों पीस रोटी करि श्रीगोवर्द्धनधर की ध्वजा कों दिखाइ चरणामृत मिलाइ कें लेते। पाछें सेनभोग के पात्र मांजते। रसोई पोति सेवा सों पहोंचि सेन करते। या प्रकार सेवा करते। परन्तु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों आछो न लागतो।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-भाव प्रीति सों ऐसी सेवा करें, तो श्रीगोवर्धनधर वाके पाछे लगे डोलते। परन्तु गोविंददास भल्ला तामसी हते, सो अहंकार सों करते। स्त्री को त्याग हू अहंकार सों कर्यो। महावन में हू चौवीस टका की सामग्री नित्य करते। सो अहंकार सों करते। इहां हू सगरी सेवा

એમ કરતાં દ્રવ્ય બધું ઘટ્યું. ત્યારે શ્રીનાથજીદ્વાર આવી શ્રીગોવર્દ્ધનધરની પરચારગી કરવા લાગ્યા. બન્ને સમયનાં પાત્ર માંજે. રાત્રિપ્રહર દોઢ રહે પાછલી ત્યારે ઉઠી દેહ કૃત્ય કરી ન્હાઈને ગાગર લઈ મથુરા આવી શ્રીયમુનાજીની ગાગર ભરી રાજભોગ પહેલાં આવતા. (પછી) પાત્ર બધાં માંજી રસોઇ પોતી, પોતાની બધી સેવાથી પહોંચીને પર્વતથી નીચે આવી તિલક ધોઇ માલા ઉતારી, ગાંઠ બાંધી ગોવર્ધનની આસપાસથી કોરી ભિક્ષા માંગી લાવતા. તે શેર પાંચ-સાતનો આહાર પણ હતો. તે આહાર લાયક આવે ત્યારે આવીને પોતાના હાથથી પીસીને રોટી કરી શ્રીગોવર્દ્ધનધરની ધ્વજાને દેખાડી ચરણામૃત મેળવીને લેતા. પછી સેનભોગનાં પાત્ર માંજતા. રસોઇ પોતી સેવાથી પહોંચી સેન કરતા. આ પ્રકારે સેવા કરતા. પરંતુ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સારૂં ન લાગતું.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે ભાવ પ્રીતિથી એવી સેવા કરે તો શ્રીગોવર્દ્ધનધર એની પાછળ લાગ્યા ડોલતા. પરંતુ ગોવિન્દદાસ ભલ્લા તામસી હતા. તે અહંકારથી (સેવા) કરતા. સ્ત્રીનો ત્યાગ પણ અહંકારથી કર્યો, મહાવનમાં પણ ચોવીસ ટકાની સામગ્રી નિત્ય કરતા તે અહંકારથી કરતા. અહીં પણ બધી સેવા

अहंकार तें करते। सरीर को कष्ट पावते। परन्तु सगरे सेवकन कों नीचे करि दिये। जो–मो बराबर कौन करेगो। तातें श्रीगोवर्धनधर कों आछो न लगतो।

तब श्रीगोवर्द्धनधर ने अड़ेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो–तिहारो सेवक मोकों बहुत खिजावत है।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–अहंकार सों बहोत सेवा करत है, मोकों खिजावत है, अप्रसन्न करत है। और तिहारो सेवक यों कहे तामें यह जताए, जो–हों तो वाकों दण्ड देतो परन्तु तिहारो सेवक है सो तुम ही समुझावो।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु अड़ेल तें आगरे पधारिकै सब वैष्णवन सों पूछे, श्रीठाकुरजी किन रुठाए हैं?

भावप्रकाश—सो सब सों पूछिवे को कारन यह, जो–आप तो जानत हैं, जो–गोविंददास भल्ला ने रुठाए। परन्तु सब सों पूछें, जो–अहंकार सहित और हू कोई सेवा करै तो श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होइंगे।

तब सगरे वैष्णवन ने कही, महाराज! हम तो कछु जानत नाहीं। अहंकार कौन बात को करें? हम सों (तो) कछू बनत नाहीं। तब प्रसन्न होइ आगरे तें आपु मथुरा पधारे। तब यहांहू सब कहे,

---

અહંકારથી કરતા. શરીરનું કષ્ટ પામતા, પરન્તુ બધા સેવકોને નીચે કરી દીધા, કે મારા બરાબર (સેવા) કોણ કરશે? તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને સારૂં ન લાગતું.

ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધરે અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને કહ્યું, કે તમારો સેવક મને બહુ ખીજાવે છે.

ભાવપ્રકાશ—એમાં આ જણાવ્યું, કે અહંકારથી બહુ સેવા કરે છે, મને ખીજાવે છે. અપ્રસન્ન કરે છે. અને તમારો સેવક એમ કહ્યુ, તેમાં એ જણાવ્યું, કે હું તો એને દંડ દેતો, પરન્તુ તમારો સેવક છે તેથી તમે જ સમજાવો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ અડેલથી આગ્રે પધારીને બધા વૈષ્ણવોને પૂછ્યું, શ્રીઠાકુરજીને કોણે રિસાવ્યા છે?

ભાવપ્રકાશ—બધાને પૂછવાનું કારણ એ, કે આપ તો જાણે છે, કે ગોવિંદદાસ ભલ્લાએ રિસાવ્યા છે. પરન્તુ બધાને પૂછે (તેનું તાત્પર્ય એ) કે અહંકાર સહિત બીજો પણ કોઇ સેવા કરે તો શ્રીઠાકુરજી અપ્રસન્ન થશે (એમ જણાવ્યું).

ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ કહ્યું, (કે) મહારાજ! અમે તો કંઇ જાણતા નથી. અહંકાર કઇ વાતનો કરે? અમારાથી (તો) કંઇ બનતું નથી. ત્યારે પ્રસન્ન થઇ આગ્રાથી

महाराज! हम तो कछु जानत नाहीं। तब आप यहां ते हू प्रसन्न होइ के श्रीनाथजीद्वार पधारें। तब स्नान करि के मंदिर में पधारे। श्रीगोवर्धनधर के दोउ कपोलन पर हाथ फेरिकें पूछें, बाबा! अनमने क्यों हो? तब श्रीगोवर्धनधर नें कही, तिहारो सेवक मोकों बहोत खिजावत है! तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने सगरे सेवक बुलाइ, सेवा–टहल, महाप्रसाद की पूछे। सो सब कों शिक्षा दिये, जो–अहंकार मति करियो। तब गोविंददास सों पूछे, सो वे सब कहें। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, श्रीनाथजी की रसोई में सगरे सेवक महाप्रसाद लेत हैं। तुमहू लियो करो।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो–सगरे सेवक की रीति चलो। अहंकार छोड़ो। और प्रभु अक्लिष्ट कर्मा है, दुःख पाय अहंकार सों करिये सो प्रभु कों भावे नाहीं।

तब गोविंददास ने कही, महाराज! देव–अंस कैसे लेहुं?

भावप्रकाश—यामें यह भाव सों कहें, जो–सगरे देव–अंस लेत हैं मैं कैसे लेऊँ?

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, जो–हमारी रसोई में महाप्रसाद लेउ।

આપ મથુરા પધાર્યા. ત્યારે અહીં પણ બધા કહે, મહારાજ! અમે તો કંઇ જાણતા નથી. ત્યારે આપ અહીંથી પણ પ્રસન્ન થઇને શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે સ્નાન કરીને મંદિરમાં પધાર્યા. શ્રીગોવર્દ્ધનધરના બન્ને કપોલો ઉપર હાથ ફેરવીને પૂછે, બાવા! અપ્રસન્ન કેમ છો? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધરે કહ્યું, તમારો સેવક મને બહુ ખિજાવે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ બધા સેવકોને બોલાવી (તેમને) સેવા–ટહલ, મહાપ્રસાદનું પુછ્યું. અર્થાત્ બધાને શિક્ષા દીધી, કે અહંકાર ન કરતા. ત્યારે ગોવિંદદાસને પૂછ્યું, ત્યારે તેમણે બધું કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી કહે, શ્રીનાથજીની રસોઇમાં બધા સેવકો મહાપ્રસાદ લે છે (ત્યાં) તમે પણ લીધા કરો.

ભાવપ્રકાશ—આ કહીને એ જણાવ્યુ, કે બધા સેવકોની રીતિએ ચાલો. અહંકાર છોડો. વળી પ્રભુ અક્લિષ્ટકર્મા છે. દુઃખ પામી અહંકારથી કરીએ તે પ્રભુને રૂચે નહીં.

ત્યારે ગોવિંદદાસે કહ્યું, મહારાજ! દેવઅંશ કેવી રીત લઉં?

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ ભાવથી કહ્યુ, કે બધા દેવઅંશ લે છે, હું કેવી રીતે લઉં?

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી કહે, કે અમારી રસોઇમાં મહાપ્રસાદ લો.

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो-आपकी रसोई होइ, यह कहि यह जताये, जो-श्रीगोवर्धनधर की सेवा छोड़ि हमारी करो। इहां रहो। सब सेवकन सों मिलिके चलो तो निर्वाह होय। नाहीं तो हमारे पास रहो महाप्रसाद लेहु।

तब गोविंददास फेरि अहंकार करि कहें, देव-अंस, गुरु-अंस कैसे लेहुं? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें कही, जो-सेवा छोड़ि देउ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-श्रीनाथजी के यहाँ अहंकार किये तब सहज में सेवा छूटि गई। सो सेवा छोड़ि दीनी, परन्तु आज्ञा न मानी। तातें श्रीगोकुलनाथजी कहे क्षत्री अहंकारी ने सेवा छोड़ि दीनी। वाको आसय यह, जो-श्रीगोकुलनाथजी कों अहंकार प्रिय नाहीं है। तामसानां अधोगतिः। काहेतें, अहङ्कार दास-भाव में विरोधी है। तातें क्षत्री अहंकारी कहे। ताको आसय यह, और क्षत्री सेवक बहोत भये परन्तु अहङ्कार क्षत्रीपने को छोड़ि दिये। और इनकों वैष्णव नाहीं कहें, क्षत्री अहङ्कारी कहें। सो क्षत्रीपनो दासहू भये पै नास न भयो, गुरु आगें। तातें उत्तम कुल-मद बाधक दिखाए। जो-एक दिन अहङ्कार सों सेवा छूटे। सेवा ठाकुर न करावें। यह सिद्धांत दिखाये।

ભાવપ્રકાશ—તેનો આશય એ, કે આપની રસોઇ હોય, એ કહી એ જણાવ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનધરની સેવા છોડી અમારી કરો, અહીં રહો. બધા સેવકોને મળીને ચાલો તો નિર્વાહ હોય, નહી તો અમારી પાસે રહો, મહાપ્રસાદ લો.

ત્યારે ગોવિંદદાસ ફરી અહંકાર કરી કહે, દેવઅંશ, ગુરુઅંશ કેમ લઉં? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ કહ્યું, કે સેવા છોડી દો.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે, શ્રીનાથજીને ત્યાં અહંકાર કર્યો ત્યારે સહજમાં સેવા છુટી ગઈ. તે સેવા છોડી દીધી પરન્તુ આજ્ઞા ન માની. તેથી શ્રી-ગોકુલનાથજીએ કહ્યું, ક્ષત્રી અહંકારીએ સેવા છોડી દીધી. એનો આશય એ, કે શ્રીગોકુલનાથજીને અહંકાર પ્રિય નથી. 'તામસાનાં અધોગતિઃ।' કેમ કે, અહંકાર દાસભાવમાં વિરોધી છે. તેથી 'ક્ષત્રી અહંકારી' (એમ) કહ્યું, તેનો આશય એ (કે) બીજા ક્ષત્રી સેવક ઘણા થયા પરંતુ અહંકાર ક્ષત્રીપણાનો છોડી દીધો. અને આમને વૈષ્ણવ ન કહ્યા, ક્ષત્રી અહંકારી કહ્યા. તે ક્ષત્રીપણું દાસ થયા છતાં યે નાશ ન થયું. ગુરુ આગે! તેથી ઉત્તમ કુલ-મદ બાધક દેખાડયો. તેથી એક દિવસ અહંકારવડે સેવા છુટે. સેવા ઠાકુર ન કરાવે. એ સિદ્ધાંત દેખાડયો, તેથી

तातें शिक्षापत्र में लिखे हैं—

असाधनः साधनो वा न साधुः साधुरेव वा ।
शरणादेव निखिलं फलं प्राप्नोत्यसंशयः ॥

या मार्ग में कितने असाधन हैं। जिनसों भगवद्धर्म नाहीं बनत। कितने साधन बहोत करत हैं, सेवा–स्मरण, जप–पाठ। वामें कोई साधु, जो–सात्विक है कोई असाधु राजसी–तामसी है। परन्तु सरन रात्रि दिन दृढ़ है प्रभु की। तिनही कों प्राप्ति निश्चय है, यह जताये।

वार्ता–प्रसंग २—**तब क्षत्री अहंकारी नें सेवा छोड़ि दीनी, पाछे मथुरा आयो। परन्तु बिना सेवा–पूजा रह्यो न जाइ, दैवी है। तब केसोरायजी की सेवा इजारे लीनी। सो विपरीत किये।**

भावप्रकाश—काहे तें, पहले महावन में मथुरानाथजी की सेवा छोड़ि दिये, श्रीगोवर्धनधर की सेवा किये, सो तो ठीक किये। परन्तु श्रीगोवर्धननाथजी की सेवा छोड़ि फेर मर्यादा में गये। तातें विपरीत भये, सो कहत हैं ।

पाछे एक दिन गोविंददास ने केसोरायजी की सैया–निवार भराए। सो बुननवारे कों मेवा खवाइ बुनाये। सो बहोत सुन्दर भई।

શિક્ષાપત્રમાં લખ્યુ છે—

" અસાધનઃ સાધનોવા ન સાધુઃ સાધુરેવ વા।
શરણાદેવ નિખિલં ફલં પ્રાપ્નોત્યસંશયઃ ॥ "

આ માર્ગમાં કેટલાક અસાધન છે. જેમનાથી ભગવદ્ધર્મ નથી બનતો. કેટલાક સાધન બહુ કરે છે. સેવા–સ્મરણ, જપ–પાઠ. તેમાં કોઇ સાધુ જે સાત્વિક છે કોઇ અસાધુ રાજસી–તામસી છે. પરન્તુ શરણ રાત્રિ–દિવસ દૃઢ છે પ્રભુનું, તેમને જ પ્રાપ્તિ નિશ્ચય છે, એ જણાવ્યું.

વાર્તા પ્રસંગ–૨—ત્યારે ક્ષત્રી અહંકારીએ સેવા છોડી દીધી. પછી મથુરા આવ્યો. પરન્તુ વિના સેવા–પૂજા રહ્યો ન જાય, દૈવી છે. ત્યારે કેશવરાયજીની સેવા ઇજારે લીધી. તે પણ વિપરીત કર્યું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે પહેલાં મહાવનમાં મથુરાનાથજીની સેવા છોડી દીધી (અને) શ્રીગોવર્દ્ધનધરની સેવા કરી તે તો ઠીક કર્યું. પરન્તુ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા છોડી ફરી મર્યાદામાં ગયા. તેથી વિપરીત થયું, એમ કહે છે.

પછી એક દિવસ ગોવિંદદાસે કેશોરાયજીની શૈયાની પાટી ભરાવી. તે ભરવાવાળાને મેવો ખવડાવી ભરાવી. તે બહુ જ સુંદર થઇ. અને મથુરાના હાકેમે ખાટલો

और मथुरा के हाकिम ने खाट-निवार, सो बुनाइ। तब काहू ने कही, केसोरायजी की सैया भई तैसी न भई। यह सुनिकें वह हाकिम केसोरायजी के मंदिर में आयो। सो तिवारी में केसोरायजी की सैया धरी हती। तापर चढ़ि बैठ्यो। सो कोई ने गोविंददास भल्ला सों कही, जो-मथुरा को हाकिम आइ श्रीठाकुरजी की सैया पर बैठ्यो है। तब गोविंददास गुपती लेत आये। सो हाकिम कों उहांई मार्‍यो। पाछें हाकिम के मनुष्यन ने गोविंददास को अपराध कियो। यह बात मथुरा के वैष्णवन ने सुनी। सो गोविंददास की देह को अग्नि-संस्कार कियो।

पाछें यह बात एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सों कहे, महाराज! ऐसे वैष्णव की यह गति कैसे भई? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने कही, याके परलोक में तो कछु हानि नाहीं भई (परि) यह मेरी आज्ञा न मान्यो तातें ऐसो भयो। यह पहले जन्म में नन्दरायजी को भैंसा हतो। सो याके ऊपर श्रीठाकुरजी चढ़ते। सो याने एक दिन श्रीठाकुरजी के पूंछ की मारी, ताको दंड भयो। और श्रीनन्दरायजी के इहां श्रीठाकुरजी को मंदिर बन्यो तब याकी पीठ पर पानी-माटी बहोत ढोयो है।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो-तहांहू भार उठायो और यहांहू

પાટી (હતી) તે ભરાવી. ત્યારે કોઇએ કહ્યું, કેશવરાયજીની શૈયા થઇ તેવી ન થઇ. એ સાંભળીને તે હાકેમ કેશોરાયજીના મંદિરમાં આવ્યો. તે, તિબારીમાં કેશવરાયજીની શૈયા ધરી હતી તે પર ચઢિ બેઠા. તે કોઇએ ગોવિંદદાસ ભલ્લાને કહ્યું, કે મથુરાનો હાકેમ આવી શ્રીઠાકુરજીની શૈયા ઉપર બેઠા છે. ત્યારે ગોવિંદદાસ ગુપ્તી લઇને આવ્યા. તે હાકેમને ત્યાં જ માર્યો. પછી હાકેમના મનુષ્યોએ ગોવિંદદાસનો અપરાધ કર્યો. એ વાત મથુરાના વૈષ્ણવોએ સાંભળી. તે ગોવિંદદાસની દેહનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો.

પછી આ વાત એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને કહી, મહારાજ! આવા વૈષ્ણવની આવી ગતિ કેમ થઇ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ કહ્યું, એના પરલોકમાં તો કંઇ હાની નથી થઇ. (પરંતુ) એણે મારી આજ્ઞા ન માની તેથી એવું થયું. એ પહેલા જન્મમાં નંદરાયજીનો પાડો હતો, તે એની ઉપર શ્રીઠાકોરજી ચઢતા. તે એને એક દિવસ શ્રીઠાકુરજીને પૂંછડી મારી, તેનો દંડ થયો. અને શ્રીનંદરાયજીને ત્યાં શ્રીઠાકુરજીનું મંદિર બન્યું ત્યારે એની પીઠ ઉપર પાણી-માટી બહુ જ વહ્યાં છે.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એ જણાવ્યું, કે ત્યાં પણ ભાર ઉઠાવ્યો અને

भार उठायो। परन्तु प्रीति सों सेवा नाहीं करी, जैसो अधिकार पूर्व को होय तैसोई कार्य बने।

और गोविन्ददास सारस्वत कल्प में नन्दरायजी के पास हथियार बाँधि के रहते। सो मथुरा में कंस कों कर देते, सो इनके हाथ देते। लीला में इनको नाम 'मनसुखा' गोप है। सो श्रीठाकुरजी नें जब धोबी के वस्त्र लूटे, मारे, तब मनसुखा, कंस को पैसा टका राखतो, ताकों लूटिके मारग में बहोतन कों मारे। सो सब अधमरे दस–पांच भये। सोऊ बैर भाव इनको चल्यो आयो।

पाछें ये स्वेतवाराह कल्प भयो, यामें श्रीनंदरायजी के घर भैंसा भये। ता वात कों पांच हजार बरस भये। तहाँ श्रीठाकुरजी कों पूंछ की दीनी, यह अपराध परयो। सो मथुरा को हाकिम मलेच्छ हतो। सो कंस को तोषा–खाना करतो। ताकों गोविन्ददास ने मारें, जो–याने नन्दरायजी पास तें पैसा बहोत लियो है। और अब श्रीठाकुरजी की सैया पर बैठ्यो। यह मारन लायक है, तातें मारे। और दस–पांच अधमरे पहले किये, तिन सबन मिलि कें गोविन्ददास कों मारे। सबको बैर छूट्यो। पाछे अब नन्दरायजी पास फेरि गोप भये। या प्रकार कहि

અહીં પણ ભાર ઉઠાવ્યો. પરન્તુ પ્રીતિથી સેવા નથી કરી. જેવો અધિકાર પૂર્વનો હોય તેવુ જ કાર્ય બને.

બીજુ ગોવિંદદાસ સારસ્વત કલ્પમાં નંદરાયજીની પાસે હથિઆર બાંધીને રહેતા. તે મથુરામાં કંસને કર (નંદરાયજી) આપતા, તે આમના હાથથી દેતા. લીલામાં આમનું નામ ' મનસુખા ' ગોપ છે. તે શ્રીઠાકુરજીએ જ્યારે ધોબીનાં વસ્ત્ર લુટ્યાં, (તેમને) માર્યા. ત્યારે મનસુખાએ, (જે) કંસના પૈસા–ટકા રાખતો, તેને લુટીને બહુ જણાને માર્યા (હતા). તે બધા અધમરા દશ–પાંચ થયા. તે પણ વૈર–ભાવ એમનો ચાલ્યો આવ્યો. પછી તે શ્વેત વારાહકલ્પ થયો, તેમાં શ્રીનંદરાયજીને ઘર ભેંસા થયા. તે વાતને પાંચ હજાર વર્ષ થયાં. ત્યાં શ્રીઠાકુરજીને પૂંછ મારી, તે અપરાધ પડ્યો. તે મથુરાનો હાકેમ મ્લેચ્છ હતો. તે કંસનું તોષા–ખાનુ (બહુ–મૂલ્ય વસ્ત્ર–આભરણુના ભંડાર) (ની રખવાલી) કરતો. તેને ગોવિંદદાસે માર્યો. તે એથી કે (તેણે) નંદરાયજી પાસેથી પૈસો બહુ લીધો છે અને હવે શ્રીઠાકુરજીની શૈયા ઉપર બેઠો. એ મારવા લાયક છે. તેથી માર્યો અને દશ–પાંચ અધમુવા પહેલા કર્યા. તે બધાએ મળીને ગોવિંદદાસને માર્યા. બધાનુ વૈર છુટ્યું. પછી, હવે (એ) નંદરાયજી પાસે ફરી ગોપ થયા, આ પ્રકારે કહી એ જતાવ્યુ, કે

यह जताए, जो–पिछले बैर सों बैर होइ, पिछले स्नेह सों स्नेह होइ। सो गोविन्ददास भल्ला ऐसे भगवदीय हते। इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो–अहंकार न करनो। और अपुने हठ करि गुरु की आज्ञा उलङ्घन न करनो। और पुष्टिमार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा छोड़ि के मर्यादामार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा न करनी।

सो वे गोविन्ददास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥११॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, अम्मा क्षत्राणी, कड़ा में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में रोहिनी हती। सो श्रीनंदरायजी के उहां रही। पाछें मथुरा गई। परंतु ब्रज में इनको मन रह्यो। तातें अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को संबंध पाइ ब्रजलीला में अंगीकार भयो। तातें इनको पुत्रभाव ही दृढ़ है। सो अम्मा क्षत्राणी कड़ा में रहती, कुटुंब बहोत हतो। सो अम्मा के दोइ बेटा भये। एक वर्ष दोइ को। एक वर्षचारि को। तब अम्मा को पति, सास, सुसर, मा, बाप, सब मरि गये। अम्मा और दोऊ बेटाई रहे। सो गदाधरदास कड़ा में रहते। तहां

પાછલા વેરથી વેર થાય પાછલા સ્નેહથી સ્નેહ થાય તે ગોવિંદદાસ એવા ભગવદીય હતા. એમની વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત બતાવ્યો, કે અહંકાર ન કરવો. અને પોતે હઠ કરીને ગુરુની આજ્ઞાનુ ઉલ્લંઘન ન કરવું. વળી પુષ્ટિમાર્ગીય શ્રીઠાકુરજીની સેવા છોડીને મર્યાદામાર્ગીય શ્રીઠાકુરજીની સેવા ન કરવી.

તે ગોવિંદદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ. વાર્તા ॥ ૧૧ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની અમ્મા ક્ષત્રાણી, કડામાં રહેતી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં રોહિણી હતી. તે શ્રીનંદરાયજીને ત્યાં રહી. પછી મથુરા ગઇ. પરંતુ વ્રજમાં એમનું મન રહ્યું. તેથી હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સંબંધ પ્રાપ્ત કરીને વ્રજલીલામાં અંગીકાર થયો. તેથી એમને પુત્ર ભાવ જ દૃઢ છે. તે અમ્મા ક્ષત્રાણી કડામાં રહેતી. કુટુંબ બહુ હતું. તે અમ્માને બે બેટા થયા. એક વર્ષ બેનો, એક વર્ષ ચારનો. ત્યારે અમ્માનો પતિ, સાસુ, સસરા, મા-બાપ બધા મરી ગયા, અમ્મા અને બે બેટાજ રહ્યા. તે (એક સમય)

श्रीआचार्यजी पधारे हे। सो अम्मा के एक रात्र, सुपन श्रीठाकुरजी ने दियो, जो–तू श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सवेरे जैयो। मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास हौं। सो मोकों पधराई सेवा करियो। तब अम्मा की नींद खुली। सो विरह वहोत भयो। जो–कब सवेरो होइ? कब मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि जाँउ? सो सवेरो होत ही न्हाइ के श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आई, दंडवत् कियो। महाराज! मोकों सरनि लीजिए, और आपके पास श्रीबालकृष्णजी हैं, सो मोकों कृपा करिकें रात्र कों, या प्रकार आज्ञा करी है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अम्मा को सुद्ध भाव देखि कें आपु नाम–निवेदन कराए। और एक ब्राह्मन दक्षिन सों आयो हतो, सो वाके पास छोटे से लालजी हते। सो श्रीआ-चार्यजी महाप्रभु कों दे, बद्रिकाश्रम में जाई कछू दिन तपस्या करि देह छोड़ी। सो ठाकुर अम्मा के माथे पधराय दिये। और आज्ञा किये, (जो) इनको नाम श्रीबालकृष्णजी है। इनकी बालभाव सों पुत्र की नाँइ स्नेह करि सेवा करियो। या प्रकार कृपा किये। और अम्मा के दोइ बेटा। सो श्रीठाकुरजी के अंतरंग सखा हैं। बड़ो 'अर्जुन'; छोटो 'भोज' तिनहू कों नाम निवेदन कराई, अम्मा कों आज्ञा

ગદાધરદાસ કડામાં રહેતા હતા ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા હતા. તે અમ્માને એક રાત્રિએ શ્રીઠાકુરજીએ સ્વપ્ન આપ્યુ, કે તૂ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની શરણે સવારે જજે અને હુ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની પાસે છું. તે મને પધરાવી સેવા કરજે. ત્યારે અમ્માની નિદ્રા ખુલી ને વિરહ ઘણો થયો, કે કયારે સવાર થાય, કયારે હું શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની શરણે જઉં! તે સવાર થતાં જ ન્હાઇને શ્રીઆચા-ર્યજી મહાપ્રભુજી પાસે આવી દંડવત કરી. (કહ્યું) મહારાજ! મને શરણે લો. અને આપની પાસે શ્રીબાલકૃષ્ણજી છે તે મને કૃપા કરીને રાત્રિએ આ પ્રકારે આજ્ઞા કરી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ અમ્માનો શુદ્ધ ભાવ જોઇને પોતે (તેને) નામ–નિવેદન કરાવ્યું અને એક બ્રાહ્મણ દક્ષિણથી આવ્યો હતો તે એની પાસે નાના સરખા લાલજી હતા. તે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દઇ, બદ્રીકાશ્રમમાં જઇ, થોડા દિવસ તપસ્યા કરી દેહ છોડી. તે ઠાકુર અમ્માને માથે પધરાવી દીધા. અને આજ્ઞા કરી, કે એનું નામ શ્રીબાલકૃષ્ણજી છે. એમની બાલભાવથી પુત્રની માફક સેવા કરજે. એ પ્રકારે કૃપા કરી. બીજું, અમ્માંના બે બેટા, તે શ્રીઠાકુરજીના અંતરંગ સખા છે. મોટો અર્જુન, નાનો ભોજ. તેમને પણ નામ નિવેદન કરાવી અમ્માને આજ્ઞા આપી કે આ બે બેટાને કોઇના હાથનુ

दिये, जो–इन दोऊ बेटान कों काहू के हाथ को खान मति दीजो। ये ठाकुर की महाप्रसादी दीजो। येऊ लीला संबंधी हैं। महाप्रसाद बिना और खाइंगे तो इनकों अंतराय होइगो। या प्रकार अम्मा कों अंगीकार करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु कासी पधारे। सन्यास ग्रहण करि आसुरव्यामोह लीला करी।

वार्ता–प्रसंग १—सो यह अम्मा क्षत्राणी सेवा बालभाव सों प्रीति सों करें। सो वाके दोऊ बेटा अम्मा कहतें। सो श्रीठाकुरजी हू सानुभाव होइ कें अम्मा कहते। सो ऐसे करत श्रीठाकुरजी हू दोऊ बेटा के संग खेलते। ईंट घसि के आपुस में लगावते, उड़ावते। सो देखिके अम्मा मन में बहोत सुख पावती। पुत्रभाव सों बरजती। जो–यह कहा खेल? कहूं नेत्रन हू में परेगो। ऐसे करत कछुक दिन में एक बेटा वाको बड़ो मरि गयो। तब अम्मा श्रीठाकुरजी सों पहोंचि के रोवन बैठती। क्षत्रीन में बहोत रोवत हैं। तब अम्मा कों रोवति देखि श्रीठाकुरजी कहतें, अम्मा मति रोवे। या प्रकार बरजते। खेद करते। सो अम्मा मानती नाहीं। ऐसे करत अम्मा को दूसरो बेटा छोटो हू मरि गयो। तब अम्मा बहोत रोवन लागी। तब श्रीठाकुरजी बरजते, अम्मा रोवे मति। परंतु रोवत तें न रहेती। तब श्रीठाकुरजी अड़ेल में श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–अम्मा रोवति है। सो मैं बहोत दुख पावत हों। तातें तुम आय कें समुझावो।

ખાવા દઇશ નહી. આ ઠાકુરની મહાપ્રસાદી આપજે. એ પણ લીલા સંબધી છે. મહાપ્રસાદ વિના બીજુ ખાશે તો એને અતરાય પડશે. એ પ્રકારે અમ્માને અંગીકાર કરી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી આપ કાશી પધાર્યા. (પછી) સન્યાસ ગ્રહણ કરી આસુરવ્યામોહ લીલા કરી.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧— આ અમ્મા ક્ષત્રાણી (શ્રીઠાકુરજીની) સેવા બાલ ભાવથી પ્રીતિપૂર્વક કરે. તે એના બે બેટા તેને અમ્મા (માતા) કહેતા. તે શ્રીઠાકુરજી પણ સાનુભાવ થઇને અમ્મા કહેતા. તે એમ કરતાં શ્રીઠાકુરજી પણ બન્ને બેટાની સંગે ખેલતા. ઇંટ ઘસીને પરસ્પર લગાડતા, ઉડાવતા, તે જોઇને અમ્મા મનમાં બહુ સુખ પામતી. પુત્રભાવથી રોકતી કે આ શી રમત? કંઈ આંખોમાં પણ પડશે. એમ કરતાં કેટલાક દિવસમાં એને એક પુત્ર મોટા મરી ગયો. ત્યારે અમ્મા શ્રીઠાકુરજી (ની સેવા) થી પરવારીને રોવા બેસતી. ક્ષત્રીઓમાં બહુ રૂવે છે. ત્યારે અમ્માને રોતી જોઇ શ્રીઠાકુરજી કહેતા, અમ્મા! તૂ રોઇશ નહીં. આ પ્રકારે રોકતા, ખેદ કરતા. પરંતુ અમ્મા માનતી નહીં. એમ કરતાં અમ્માને બીજો નાનો પુત્ર પણ મરી ગયો. ત્યારે અમ્મા બહુ રોવા લાગી. ત્યારે (પણ) શ્રીઠાકુરજી રોકતા. અમ્મા રોઇશ નહીં. પરંતુ રોયા વિના ન રહેતી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી અડેલમાં શ્રીગુસાંઇજીને કહે, કે અમ્મા રૂવે છે. તેથી હું બહુ દુઃખ પામું છું. તેથી તમે આવીને સમજાવો.

भावप्रकाश—ये दोऊ बेटा की देह यासों छूटी, जो–बड़े होंइ तो संसार के कार्य में लगें। अम्मा को मन इनके ब्याहादिक में लगे। सो वे अंतरंग सखा हैं। तातें वेगि बुलाइ लिए। परन्तु अम्मा भगवदीय होइकें क्यों रोई? ताको आसय यह है, जो–लोगन में पुत्र–सोक, सो तो अम्मा के नाहीं है। परन्तु श्रीठाकुरजी दोऊ बेटान के संग खेलते, ईंट घसि कें परस्पर देह सों लगावते, उड़ावते। सो खेल अनेक प्रकार को अम्मा दर्सन करती। सो खेल को सुख गयो। दोऊ श्रीठाकुरजी के खिलौना बेटा हते। सो अब किन सों खेलेंगे? या भाव सों अम्मा रोवती। तातें श्रीठाकुरजी अम्मा के ऊपर प्रसन्न ह्वै कें बरजते। अम्मा को दुःख सहि न सकते। और जो–पुत्र को ममत्व करिके रोवती तो श्रीठाकुरजी न बोलते।

तब श्रीगुसांईजी अड़ेल तें कडा पधारिकें, अम्मा के घर जाइ अम्मा सों कहे, तू मति रोवे। श्रीठाकुरजी खेद पावत हैं।

भावप्रकाश—या प्रकार कहि अम्मा के बेटान को स्वरूप दिखाए। जो–अंतरंग सखा हैं। बड़े होइ तो ससार में ठीक न परे। तातें तू रोवे मति।

तब अम्मा रोवत तें रही। सो अम्मा को ऐसो स्नेह हतो।

ભાવપ્રકાશ—એ બન્ને બેટાની દેહ એથી છૂટી કે મોટા થાય તો સંસારના કાર્યમાં લાગે. અમ્માનું મન એમના લગન આદિમાં લાગે. તે (શ્રીઠાકુરજીના) અંતરંગ સખા છે. તેથી જલ્દી બોલાવી લીધા પરંતુ અમ્મા ભગવદીય થઇને કેમ રોઇ? તેનો આશય એ છે કે લોકોમાં પુત્ર-શોક (બહુ હોય છે) તે તો અમ્મામાં નથી. પરંતુ શ્રીઠાકુરજી બન્ને પુત્રોની સંગે રમતા, ઇંટ ઘસીને પરસ્પર દેહથી લગાડતા ઉડાવતા, તે ક્રીડા અનેક પ્રકારની (તે) અમ્મા દર્શન કરતી તે ક્રીડાનું સુખ ગયું. બન્ને પુત્ર શ્રીઠાકુરજીનાં રમકડાં હતાં તે હવે કોની સાથે રમશે? એ ભાવથી અમ્મા રોતી. તેથી શ્રીઠાકુરજી અમ્માના ઉપર પ્રસન્ન થઇને રોકતા. અમ્માનું દુઃખ સહન કરી શકતા નહીં. અને જો પુત્રનું મમત્વ કરીને રોતી તો શ્રીઠાકુરજી ન બોલતા.

ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી અડેલથી કડા પધારીને અમ્માને ઘરે જઇ અમ્માને કહે, તૂ રોઇશ નહીં. શ્રીઠાકુરજી ક્લેશ પામે છે.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે કહી અમ્માનાં પુત્રોનું સ્વરૂપ દેખાડ્યું, કે અંતરંગ સખા છે. મોટા થાય તો સંસારમાં ઠીક ન પડે. તેથી તૂ રોઇશ નહીં

ત્યારે અમ્મા રોતી બંધ થઇ. તે અમ્માનો એવો સ્નેહ હતો, કે જ્યારે શ્રીઠા-

जो-जब श्रीठाकुरजी कों उठावें तब दोऊ हाथ सों सोंधो अतर आदि लगाइ श्रीअंग परस करें। जो-मेरे हाथ कठिन हैं। कोमल बालक को श्रीअंग है। या प्रकार सगरी सेवा प्रीति पूर्वक करती।

भावप्रकाश—यह सोंधो है, सो श्रीस्वामिनीजी के स्नेह रूप सचिक्कन है। यह कहि यह जताये, जो-व्रजभक्तन के जसोदा-रोहिनी के भाव सों सेवा करती। तातें श्रीठाकुरजी अम्मा के ऊपर बहोत प्रसन्न रहतें।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीठाकुरजी के आगें दूध को कटोरा भरिकें धर्यो। टेरा लगाइ के अम्मा बाहर आई। ऐसे में श्रीगुसांईजी अम्मा के घर पधारे। तब अम्मा सों यह पूछे, जो-श्रीठाकुरजी के कहा समय है? तब अम्मा ने कही, बावा, पधारो। आपु कों सदा समय है। तब श्रीगुसांईजी टेरा सरकाय भीतर गये। सो देखें तो श्रीठाकुरजी कटोरा हाथ में लिये दूधपान करत हैं। तब श्रीगुसांईजी टेरा लगाइ पाछें वैसेही फिरि आये। तब अंमा ने कही, जो-बावा, पाछें क्यों फिरि आये? तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी आपु दूध पींवत हैं। तब अम्मा ने कही, यह तो लरिका है। कहा तुम नाहीं जानत-हो? तब श्रीगुसांईजी ने कही, यह दूध

कुरजीने जगावे त्यारे बन्ने हाथथी सोंधो अत्तर आदि लगावीने श्रीअंग (नो) स्पर्श करती. (केम ?) के मारा हाथ कठण छे. बालकनुं श्रीअंग कोमल छे. आ प्रकारे बधी सेवा-प्रीतिपूर्वक करती.

भावप्रकाश—सोंधो छे ते श्रीस्वामिनीजीना स्नेहरूप सचिकण छे. ए कही ए जणाव्युं, के व्रजभक्तोना (अर्थात्) यशोदा-रोहिणीना भावथी सेवा करती. तेथी श्रीठाकुरजी अम्माना उपर बहु प्रसन्न रहेता.

वार्ता-प्रसंग २—वळी एक समय श्रीठाकुरजीनी आगळ दूधनो कटोरो भरीने धर्यो. टेरा लगाडीने अम्मा बहार आवी. एटलामां श्रीगुसांईजी अम्माना घरे पधार्या. त्यारे अम्माने ए पूछयुं, के श्रीठाकुरजीनो शो समय छे ? त्यारे अम्माए कह्युं, बावा! पधारो. आपने सदा समय छे. त्यारे श्रीगुसांईजी टेरो (पडदो) खसेडीने अंदर पधार्या. तो जुवे तो श्रीठाकुरजी कटोरो हाथमां लईने दूधपान करे छे. त्यारे श्रीगुसांईजी टेरो लगाडी पछी एमज पाछा पधार्या. त्यारे अम्माए कह्युं, के बावा ! पाछा केम फरी आव्या ? त्यारे श्रीगुसांईजीए कह्युं, के श्रीठाकुरजी पोते दूध पीवे छे. त्यारे अम्माए कह्युं, ए तो बालक छे. शुं तमे नथी जाणता ? त्यारे श्रीगुसांईजीए

हमारे डेरा पहोंचाय दीजो। तब अम्मा ने कही, तुमही अरोगनहारे हो। भावे यहां अरोगो, भावे ऊहां अरोगो। यह अम्मा के स्नेह के बचन सुनिकें श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये। अपुने डेरा पधारे। पाछें अम्मा हू दूध लेकें आई, श्रीगुसांईजी कों पान करायो।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो–अम्मा रोहिनीजी को स्वरूप है। सो श्रीबालकृष्णजी रोहिनीजी के भाव तें हैं। तातें श्रीबालकृष्णजी दूध आरोगत हते तब श्रीगुसांईजी पाछें फिरे। सो यातें, जो–श्रीनवनीतप्रियजी श्रीगुसांईजी के ठाकुर हैं। वह होते तो आप पान करावतें। परंतु रोहिनीजी सों और श्रीचंद्रावलीजी सों स्नेह बहोत हैं। रोहिनीजी चंद्रावलीजी को भाव जानत हैं। तातें श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइकें कहें, यह प्रसादी दूध हमकों पठाईयो। सो यह पिछली लीला को स्नेह जतायो। तब अम्मा ने कही, चाहे यहां आरोगो चाहे उहां आरोगो। ताको कारन यह, जो–तुमही अरोगनहारे हो। सो ये ठाकुरजी कों तुमही राखनहारे हो। ये ठाकुर तिहारे हैं।

पाछें श्रीगुसांईजी ने अम्मा की देह छूटे पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के पास पधराये।

કહ્યું, એ દૂધ અમારા મૂકામે પહોંચાડી દેજો. ત્યારે અમ્માએ કહ્યું, તમેજ આરોગવાવાળા છો. ચાહે અહીં આરોગો, ચાહે ત્યાં આરોગો. એ અમ્માનાં 'સ્નેહનાં વચન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી ઘણા પ્રસન્ન થયા. (પછી) પોતે મુકામે પધાર્યા. પછી અમ્મા પણ દૂધ લઇને આવી. શ્રીગુસાંઇજીને પાન કરાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે અમ્મા રોહિણીજીનું સ્વરૂપ છે. તે શ્રીબાલકૃષ્ણજી રોહિણીજીના ભાવથી છે. તેથી શ્રીબાલકૃષ્ણજી દૂધ આરોગતા હતા ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પાછા ફર્યા. તે એ માટે કે શ્રીનવનીતપ્રિયજી શ્રીગુસાંઇજીના ઠાકુર છે. તે હોતા તો આપ પાન કરાવતા, પરંતુ રોહિણીજીને અને શ્રીચંદ્રાવલીજીને સ્નેહ ઘણો છે. રોહિણીજી શ્રીચંદ્રાવલીજીનો ભાવ જાણે છે. તેથી શ્રીગુસાંઇજી પ્રસન્ન થઇને કહે, આ પ્રસાદી દૂધ અમને મોકલજો. એ પાછલો લીલાનો સ્નેહ જણાવ્યો. ત્યારે અમ્માએ કહ્યું, ચાહે અહીં આરોગો, ચાહે ત્યાં આરોગો. તેનુ કારણ એ, કે તમે જ આરોગવાવાળા છો. તે એ ઠાકુરજીને તમે જ રાખવાવાળા છો. એ ઠાકુરજી તમારા છે.

પછી શ્રીગુસાંઇજીએ અમ્માની દેહ છૂટ્યા પછી શ્રીનવનીતપ્રિયજી પાસે પધરાવ્યા.

भावप्रकाश—काहेतें ? रोहिनीजी सों श्रीगुसांईजी को भाव मिल्यो है। रोहिनीजी हू लीला की साधक है। यातें अम्मा की का'नि श्रीगुसांईजी वहोत राखते।

सो अम्मा ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥१२॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत जताये, जो–भक्तन को क्लेश श्रीठाकुरजी सों सह्यो न जाइ। तातें लौकिक वैदिक दुःख आनि पड़े तो वैष्णव धीरज राखि क्लेश न करे। जो क्लेश हू करे तो श्रीठाकुरजी संबंधी क्लेश करे।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक गज्जनधावन क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—**इनके माथें श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजी ने पधराये। सो प्रकार एक क्षत्राणी की वार्ता में कहेंगे।**

भावप्रकाश—सो गज्जन श्रीचंद्रावलीजी की सखी, लीला में सुभआनना इनको नाम है। सो श्रीठाकुरजी प्रगटे ताके दूसरे दिन ये प्रगटी है। दसमीं कों। तातें सुभआनना श्रीठाकुरजी के संग बाललीला खेल वहोत खेली हैं।

ભાવપ્રકાશ—કેમકે ? રોહિણીજીનો અને શ્રીગુસાંઇજીનો ભાવ મળે છે. રોહિણીજી પણ લીલાની સાધક છે. તેથી અમ્માની કા'નિ શ્રીગુસાંઇજી ઘણી રાખતા.

તે અમ્મા એવી કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેથી એની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ— વાર્તા ॥ ૧૨ ॥

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત જણાવ્યો, કે ભક્તોનો ક્લેશ શ્રીઠાકુરજીથી સહવાય નહી. તેથી લૌકિક વૈદિક દુઃખ આવી પડે તો વૈષ્ણવ ધીરજ રાખી ક્લેશ ન કરે. જો ક્લેશ પણ કરે તો શ્રીઠાકુરજી સંબંધી ક્લેશ કરે.

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ગજ્જનધાવન ક્ષત્રી, આગરામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા પ્રસંગ-૧—એમના માથે શ્રીનવનીતપ્રિયજી શ્રીઆચાર્યજીએ પધરાવ્યા. એ પ્રકાર એક ક્ષત્રાણીની વાર્તામાં કહીશું.

ભાવપ્રકાશ—એ ગજ્જન શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી, લીલામાં શુભઆનના એમનું નામ છે. તે શ્રીઠાકુરજી પ્રકટ્યા ત્યારે તેના બીજા દિવસે એ પ્રકટી છે, દસમીએ. તેથી શુભઆનના શ્રીઠાકુરજીની સાથે બાલલીલાની રમત

श्रीचंद्रावलीजी कों सगरे खेल के मिलाप को भेद ये बतावती। ताते श्रीचंद्रावलीजी कों अति प्रिय हैं। तातें श्रीआचार्यजी गज्जन के माथे श्रीनवनीतप्रियजी पधराये। जो-ये श्रीगुसांईजी के ठाकुर हैं। गज्जन श्रीगुसांईजी की सखी हैं, सदा संग खेले हैं। सो संबंध अब फेरि खेलेंगे।

सो कछूक दिनमें गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जनावन लागे। गज्जन कों गाय करते, घोड़ा करते। आपु ऊपर चढ़तें। सो गज्जन के घोंटू घसि गये। परन्तु देह की सुधि नाहीं। सो एक दिन गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी कहें, मोकों श्रीआचार्यजी के इहां पधराइ के तुमहू उहां रहो।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-गज्जन को ऐसो स्नेह बढ्यो, जो-सेवा की रीति भूलि गये। खेल में अनोसर आदि। तब श्रीठाकुरजी विचारे, जो-याकों व्यसन अवस्था की सिद्धि होइ चुकी है। अब यह अपने गाम घरमें रहेगो तो बाधक होइगो।

तब गज्जन तत्काल श्रीनवनीतप्रियजी कों गोकुल पधराय कें आये। श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि कहें, जो-महाराज! श्रीनवनीतप्रियजी आपुके घर पधारे हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु

घणी रमी छे. श्रीचंद्रावलीजीने बधी क्रीडाना मिलापनो भेद ए बतावती. तेथी श्रीचंद्रावलीजीने अति प्रिय छे. तेथी श्रीआचार्यजीए गज्जनना माथे श्रीनवनीतप्रियजी पधराव्या. केमके ए श्रीगुसांइजीना ठाकुर छे. गज्जन श्रीगुसांइजीनी सखी छे. सदा साथे खेले छे. ते संबंधथी हवे फरी खेलशे.

ते थोडा दिवसमां गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जणाववा लाग्या. गज्जनने गाय करता, घोडा करता, पोते उपर चढता. तेथी गज्जनना ढींचण घसाइ गया. परंतु देहनुं भान नहीं (रहे). ते एक दिवस गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजी कहे, मने श्रीआचार्यजीने त्यां पधरावीने तमे पण त्यां रहो.

भावप्रकाश—तेनुं कारण ए, के गज्जननो एवो स्नेह वध्यो के सेवानी रीति भूली गया. रमतमां, अनोसर आदि. त्यारे श्रीठाकुरजीए विचार्युं के, आने व्यसन अवस्थानी सिद्धि थई चुकी छे. हवे आ जो पोताना गाम-घरमां रहेशे तो बाधक थशे.

त्यारे गज्जन तत्काल श्रीनवनीतप्रियजीने गोकुल पधरावीने आव्या. श्रीआचार्यजीने दंडवत करीने कहे, के महाराज! श्रीनवनीतप्रियजी आपना घरे पधार्या छे.

कहें, सैया न्यारी नाहीं है। कछू पात्र नये नाहीं। या प्रकार ओंचका कैसे पधारे हैं? तब गज्जन नें कही, अब तो श्रीनवनीतप्रियजी की इच्छा तो ऐसी है। तब श्रीआचार्यजी, जो–कछू सामग्री बनि आई सो सिद्ध करि अरोगाय, अपने श्रीअंग में सोंधो लगाई पास लै पौढ़े।

भावप्रकाश—सोंधो लगायवे को कारन यह, जो–अत्तर आदि सुगंध श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग को गंध स्नेह रूप है, सो प्रगट नाहीं कहे। सो यों कहे, तामें जताए, जो–श्रीस्वामिनी स्वरूप ह्वै संग लै पौढ़े।

पाछें मर्यादा राखिवे के लिये छोटीसी पलंगड़ी बनवाये। ता पर दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियजी कों पौढ़ाए। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने कही, सैया छोटी है। मेरे पाँव नीचे लटकत हैं। तातें मैं तिहारे संग पौढूंगो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो–कहा मैं बालक हों तिहारे भाव सों? तिहारे घर तो तरुण हों। और जसोदाजी के भावसों बालक हों। तातें तुम मेरो छोटो स्वरूप देखिकें सैया छोटी क्यों बनवाई? तातें मैं तिहारे पास पोढूंगो। मोकों भावत हैं।

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, શૈયા અલગ નથી. કંઇ પાત્ર નવાં નથી. આ પ્રકારે અચાનક કેમ પધાર્યા છે? ત્યારે ગજ્જને કહ્યું, હમણાં તો શ્રીનવનીતપ્રિયજીની ઇચ્છા એવી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જે કંઇ સામગ્રી બની આવી તે સિદ્ધ કરીને આરો-ગાવી. (પછી) પોતાના શ્રીઅંગમાં સુગંધી દ્રવ્ય લગાડી પાસે લઇ પોઢયા.

ભાવપ્રકાશ—સુગંધી દ્રવ્ય લગાડવાનું કારણ એ, કે અત્તર આદિ સુગંધ શ્રીસ્વામિનીજીના શ્રીઅંગના ગંધ સ્નેહરૂપ છે. તે પ્રકટ નહી કહ્યું, તેથી એમ કહે. તેમાં જણાવ્યું, કે શ્રીસ્વામિની સ્વરૂપ થઇ સાથે લઇ પોઢ્યા.

પછી મર્યાદા રાખવાને માટે નાની સરખી પલંગડી બનાવડાવી. તે ઉપર બીજા દિવસે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને પોઢાવ્યા. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ કહ્યું, શૈયા નાની છે. મારા પગ નીચે લટકે છે. તેથી હું તમારી સાથે પોઢીશ.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે શું હું બાલક છું તમારા ભાવથી? તમારા ઘરે તો તરૂણ છું. અને યશોદાજીના ભાવથી બાલક છું. તેથી તમે મારૂં નાનું સ્વરૂપ જોઇને શૈયા નાની કેમ બનાવડાવી? તેથી હું તમારી પાસે પોઢીશ. મને રૂચે છે.

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु फेरि सोंधो श्रीअंग में लगाई पास लै पौढें। पाछें सवारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने बड़ी सैया सँवराई, ता पर पौढ़ाये। तब फेरि श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहें, जो-मैं तिहारे पास पौढूंगो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें, जो-महाराज! लोगन में मर्यादा राखी चाहिये। और तिहारे पास मूंढा को साज सब राखि श्रीस्वामिनीजी स्वरूप सों मैं पास ही हों। ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-ऊपर की मर्यादा छोड़े तें जीव को बिगार होइ। देखादेखी कोई करे।

तब श्रीनवनीतप्रियजी सैया में पोढ़न लागे।

वार्ता-प्रसंग २—सो गज्जन मंदिर के द्वार में सन्मुख सेवा समय बैठे रहे। अनोसर में हूं मंदिर में रहे। श्रीनवनीतप्रियजी संग खेलें, न्यारे न रहें। सो एक दिन पान न हते। सो श्रीअक्काजी ने गज्जन सों कहें, यह पैसा ले जाव, पान ले आवो।

भावप्रकाश—सो गज्जन अक्काजी सों कहि न सके, जो-मोसों श्रीनवनीतप्रियजी हिले हैं। यह सिद्धांत बताए। जदपि श्रीठाकुरजी वैष्णव सों

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ફરી સુગંધિત દ્રવ્ય શ્રીઅંગે લગાડી પાસે લઇ પોઢયા. પછી સવારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ મોટી શૈયા સિદ્ધ કરાવી તે ઉપર પોઢાવ્યા. ત્યારે ફરી શ્રીનવનીતપ્રિયજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહે, કે હું તમારી પાસે પોઢીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ કહે, કે મહારાજ! લોકોમાં મર્યાદા રાખવી જોઇએ. અને તમારી પાસે મૂંઢા (સ્વામિનીનાં વસ્ત્ર-આભરણ આદિ) નો સાજ બધો રાખી શ્રીસ્વામિનીજી સ્વરૂપથી હું પાસે જ છું. એમ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ પોતે કહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે ઉપરની મર્યાદા છોડવાથી જીવનો બગાડ થાય દેખાદેખી કોઇ કરે.

ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી શૈયામાં પોઢવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—તે ગજ્જન મંદિરના દ્વારમાં સન્મુખ સેવા સમય બેસી રહે. અનોસરમાં પણ મંદિરમાં રહે. શ્રીનવનીતપ્રિયજી સાથે ખેલે. અલગ ન રહે. તે એક દિવસ પાન ન હતાં તે અક્કાજીએ ગજ્જનને કહ્યું, આ પૈસા લઇ જાવ, પાન લઇ આવો.

ભાવપ્રકાશ—તે ગજ્જન અક્કાજીને કહી ન શક્યા કે મારાથી શ્રીનવનીતપ્રિયજી હળી ગયા છે. (તેમાં) એ સિદ્ધાંત જણાવ્યો (કે) યદ્યપિ શ્રીઠાકુરજી

बोले, पास राखे, तो हू गुरु आज्ञा देय तो आज्ञा माथे पर धरिकें गुरु के कार्य कों जाय तो धरम रहें। ठाकुर हू प्रसन्न रहें। तातें गज्जन गये। परंतु श्रीनवनीतप्रियजी हू वरजे नाहीं। वैष्णव को भाव देखिवे के लिये।

तब गज्जन पान लेन कों गये। सो बाहर निकसत ही विरह ज्वर ऐसो चढ्यो जो एक हाट पर परि रहे।

भावप्रकाश—काहे तें, इनकों व्यसन अवस्था ह्वै चुकी है। सो श्रीआचार्यजी सों और कोई भगवदीय, जो-भाव में मगन है, तिनसों बोलनो मिलनो। और सों सब देह-संबंध छूटि गयो।

इहां श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरे। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने कही, गज्जन आवें तब मैं अरोगों। तब श्रीआचार्यजी ने सब सों पूछी, जो-गज्जन कहां गयो है? तब श्रीअक्काजी ने कही, मैं पान लेन पठायो है। तब श्रीआचार्यजी कहें, गज्जन कों क्यों पठवाए? गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी हिले हैं। आजु पाछें इनसों कछू मति कहियो, कहूं मति पठाईयो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-फलदसा कों पाये। इनकों मानसी सिद्ध होइ चुकी हैं।

वैष्णवथी બોલે, પાસ રાખે, તોપણ ગુરુ આજ્ઞા દે તો આજ્ઞા માથે ચઢાવીને ગુરુના કાર્ય માટે જાય તો ધર્મ રહે. ઠાકુર પણ પ્રસન્ન રહે. તેથી ગજ્જન ગયા. પરંતુ શ્રીનવનીતપ્રિયજી પણ રોકે નહીં. વૈષ્ણવનો ભાવ જોવાને માટે.

ત્યારે ગજ્જન પાન લેવાને ગયા. તે બાહર નિકળતાં જ વિરહજ્વર એવો ચઢયો કે એક દુકાન ઉપર પડી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, એમને વ્યસન અવસ્થા થઇ ચુકી છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીથી અને કોઇ ભગવદીય કે જે ભાવમાં મગ્ન છે તેમનાથી બોલવું મળવું. બીજાથી બધો દેહ-સંબંધ છુટી ગયો (છે).

અહીં શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીને રાજભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ કહ્યું, ગજ્જન આવે ત્યારે હું આરોગું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બધાને પૂછ્યું, કે ગજ્જન ક્યાં ગયો છે? ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ કહ્યું, મેં પાન લેવા મોકલ્યો છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગજ્જનને કેમ મોકલ્યો? ગજ્જનથી શ્રીનવનીતપ્રિયજી હળ્યા છે. આજ પછી એને કંઇ કહેશો નહીં, કંઇ મોકલતા નહીં.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે ફલદશાને પામ્યો છે. એને માનસી સિદ્ધ થઇ ચુકી છે.

तब श्रीअक्काजीने कही, अब इनसों कछू टहल न कहोंगी। तब एक वैष्णव सों श्रीआचार्यजी ने कही, गज्जन कों बेगि पठाइ दीजो। हाट पर पर्‍यो है। तुम पान लाइयो। तब वैष्णव जाइ देखें तो द्वार के पासई एक हाट पर परे हैं। तब कहें बेगि जाव तुमकों श्रीआचार्यजी बुलाये हैं। तब यह सुनत ही गज्जन कों विरह-ज्वर उतरि गयो। दोरि के आये। तब श्रीनवनीतप्रियजी सों कहें, बाबा! भोजन क्यों नाहीं करत? तब श्रीनवनीतप्रियजी कहें, तू आयो! अब मैं भोजन करूंगो। यह प्रकार गज्जन के और श्री-नवनीतप्रियजी के सनेह हतो। सो गज्जन ऐसे भववदीय हते। सो तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥१३॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो-व्यसन अवस्था सर्वोपरि है। जामें श्रीठाकुरजी वस होई। सो कुंभनदासजी गाये हैं "जोपै विरह परस्पर व्यापे तो कछू जीय वनि आवें" सो गज्जन की परस्पर प्रीति दिखाये। ॥ वैष्णव त्रयोदस ॥

※ ※ ※

ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ કહ્યું, હવે એને કંઇ ટહલ નહી કહું. ત્યારે એક વૈષ્ણવને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, ગજ્જનને જલ્દી મોકલી દેજો. દુકાન ઉપર પડ્યો છે. તમે પાન લાવજો. ત્યારે વૈષ્ણવ જઇ દેખે, તો, દ્વારની પાસે જ (તે) એક દુકાન ઉપર પડયા છે. ત્યારે કહે જલ્દી જાવ, તમને શ્રીઆચાર્યજીએ બોલાવ્યા છે. ત્યારે એ સાંભળતાં જ ગજ્જનને વિરહ-જ્વર ઉતરી ગયો. દોડીને આવ્યા. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને કહે, બાવા! ભોજન કેમ નથી કરતા? ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી કહે, તૂ આવ્યો? હવે હું ભોજન કરીશ. આ પ્રકારે ગજ્જનને અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીને સ્નેહ હતો. તે ગજ્જન એવા ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નહીં. તે ક્યાં સુધી કહીએ? - વાર્તા ॥ ૧૩ ॥

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત જણાવ્યો, કે વ્યસન અવસ્થા સર્વોપર છે, જેમાં શ્રીઠાકુરજી વશ થાય. તે કુંભનદાસજીએ ગાયું છે "જો પે વિરહ પરસ્પર વ્યાપે તો કછુ જિય બનિ આવે." તે ગજ્જનની પરસ્પર પ્રીતિ દેખાડી. ॥ વૈષ્ણવ ૧૩ ॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायनदास ब्रह्मचारी, सारस्वत ब्राह्मन, महावन में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—सो नारायनदास ब्रह्मचारी के माथे श्रीगोकुलचंद्रमाजी पधराये। सो प्रकार एक क्षत्राणी की वार्ता में कहेंगे। जहां चारि स्वरूप चारि वैष्णवन के माथे पधराये हैं।

भावप्रकाश—नारायणदास लीला में सोरह हजार अग्निकुमारिका हैं, तिनमें मुख्य राधा सहचरी हैं। तिनकी सखी हैं, मधुरेक्षणा, सो इनको नाम है। मधुर है इक्षण (जो) दृष्टि जिनकी। सो श्रीठाकुरजी के मुख की सुंदरता देखत देह की सुधि भूलि जाती। ऐसी स्वरूपासक्ति। स्वरूप को चिंतवन अष्ट-प्रहर करती।

सो नारायनदास श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सेवा भली भांति सों करते। गाय कों घास धोइकें खवावते। जो-मति कहूं दूध में रज आवें। श्रीठाकुरजी अत्यंत सुकुमार हैं।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताये, जो-दूध में रज को संदेह करते। सो साग-सामग्री, जल सब में भली भांति सों चौकसी राखते। जो-प्रभु कों कोई वस्तु में दुःख न होइ।

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી, સારસ્વત બ્રાહ્મણ, મહાવનમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે નારાયણદાસ બ્રહ્મચારીને માથે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી પધરાવ્યા તે પ્રકાર એક ક્ષત્રાણીની વાર્તામાં કહીશું. જ્યાં ચાર સ્વરૂપ ચાર વૈષ્ણવોના માથે પધરાવ્યાં છે.

ભાવપ્રકાશ—નારાયણદાસ લીલામાં સોળ હજાર અગ્નિકુમારિકા છે. તેમાં મુખ્ય રાધા સહચરી છે, તેમની સખી છે. મધુરેક્ષણા, એમનું નામ છે. મધુર છે ઇક્ષણ (જો) દૃષ્ટિ જેની. તે શ્રીઠાકુરજીના મુખની સુંદરતા જોતાં જ દેહનું ભાન ભૂલી જતી. એવી સ્વરૂપાસક્તિ. સ્વરૂપનું ચિંતન અષ્ટ-પ્રહર કરતી.

તે નારાયણદાસ શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની સેવા સારી રીતીથી કરતા. ગાયને ઘાસ ધોઇને ખવડાવતા. કેમ? જે રખે કંઇ દૂધમાં રજ આવે, શ્રીઠાકુરજી અત્યંત સુકુમાર છે.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એ જણાવ્યું, કે દૂધમાં રજનો સંદેહ કરતા, શાક-સામગ્રી, જલ બધામાં સારી રીતિથી ચૌકસી રાખતા. કે પ્રભુને કોઇ વસ્તુમાં દુઃખ ન થાય.

और नारायनदास त्याग दसा में रहते। उत्तम रीति सों चुकटी लेते। सो कोरो अन्न न्यारो न्यारो तथा बिना मांगे घर आवें तामें निरवाह करते। सो नारायनदास जहां तहां पांव धोइवे कों माटी लेते तहां द्रव्य देखते। सो वा पर माटी डारि उठि चलते। परंतु द्रव्य को परस न करते। सो एक दिन रात्रि कों इनकी खाट के आसपास द्रव्य बहोत फैल्यो। सो सबेरे देखि के भतीजी सों कहें, घरमें बिगार पर्‍यो है। सो बुहारि डारि आव। तब भतीजी ने बुहारि सों बुहारिकें डारि दियो। जगे सब लींपि डारी।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो—नारायणदास नें ब्रह्मचर्य बालपने सों धारन करि द्रव्य मिलिवे को उपाइ बहोत किये। सो द्रव्य प्राप्त कछू न भयो। पाछें चालिस बरस के भये। तब श्रीआचार्यजी के सेवक भये। तब श्रीठाकुरजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। तब द्रव्य को हू ज्ञान भयो। तब द्रव्य कों अग्निकी विष्टा हू कहे हैं। सो या प्रकार जानन लागें। तब रिद्धि सिद्धि इनके छलिवे कों आई। तब जहां तहां द्रव्य दिखें। परंतु बिगार विष्टावत् जानें। तातें वापर माटी डारें। सो यातें, जो—और के हाथ यह माया रूप द्रव्य परेगो तो वाहू को बिगार होइगो। तातें ऊपर माटी डारि देतें। और जब घर में द्रव्य फैल्यो देखे

અને નારાયણદાસ ત્યાગ દશામાં રહેતા. ઉત્તમ પ્રકારથી ચુકટી લેતા. તે કોરૂં અન્ન અલગ અલગ તથા વિના માંગે ઘર આવે તેમાં નિર્વાહ કરતા. તે નારાયણદાસ જ્યાં જ્યાં પગ ધોવાને માટી લેતા ત્યાં (ત્યાં) દ્રવ્ય જોતા. (ત્યારે) તેના ઉપર માટી નાખી ઉઠી ચાલતા. પરંતુ દ્રવ્યનો સ્પર્શ ન કરતા. તે એક દિવસ રાત્રિએ એમની ખાટની આસપાસ દ્રવ્ય ઘણું ફેલ્યું. તે સવારે જોઇને ભત્રીજીને કહે, ઘરમાં બગાડ પડ્યો છે તે ઝાડીને નાખી આવ. ત્યારે ભત્રીજીએ સાવરણીથી ઝાડીને નાખી દીધું. જગ્યા બધી લીંપી નાખી.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ કે, નારાયણદાસે બ્રહ્મચર્ય બાલ્યકાલથી ધારણ કરી દ્રવ્ય મળવાના ઉપાયો ઘણા કર્યા. તે દ્રવ્ય પ્રાપ્ત કઇ ન થયું. પછી ચાલીસ વર્ષના થયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે દ્રવ્યનું પણ જ્ઞાન થયું. દ્રવ્યને અગ્નિની વિષ્ટા (બગાડ) પણ કહે છે. તે આ પ્રકારે જાણવા લાગ્યા.—ત્યારે રિદ્ધિ સિદ્ધિ એમને છળવાને આવી. ત્યારે જ્યાં ત્યાં દ્રવ્ય જોયું. પરંતુ બગાડ વિષ્ટાવત્ જાણ્યું. તેથી તેના ઉપર માટી નાખી. તે એથી કે બીજાનો હાથ આ માયારૂપ દ્રવ્ય (ઉપર) પડશે તો તેનું પણ અનિષ્ટ થશે. તેથી ઉપર માટી નાખી દેતા. અને જ્યારે ઘરમાં દ્રવ્ય

तब भतीजी सों कहें, जो-बिगार पर्यो है । परंतु आपु छ्वे न बुहारे। तब भतीजी हू श्रीआचार्यजी की सेवकनी कृपापात्र हती। नारायणदास के स्वरूपकों जानती।

नारायणदास तो "मधुरेक्षणा" राधा सहचरी की सखी हैं। इनकी सखी "चतुरा" भतीजी को नाम है। सो नारायणदासकों बहोत प्रिय याते हैं, जो-सामग्री करन में बहोत चतुर हैं। बाल विधवा भई। तातें नारायणदास के इहां रहेती। सो लीला को नाम इहां हू चतुरा हतो। सो चतुर भतीजी ने नारायणदास के सब्द सुनत ही द्रव्य बुहारि कें बाहर डारि दियो। नारायणदास ने बुहारिवे की कही परन्तु इननें जान्यो, जो-नारायणदास बिगार कहे सो जगे हू लींपनीं। ऐसी बुद्धि भतीजी की देखि श्रीठाकुरजी इनसों बहोत प्रसन्न रहते। या प्रकार दोऊ श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सेवा करते।

वार्ता-प्रसंग २—और एक दिन नारायनदास न्हाइ के मंदिर में जाइ श्रीठाकुरजी कों मंगल-भोग धरि पाछें सिंगार किये। श्रीठाकुरजी के मुखचंद्र की सोभा देखि थकित ह्वे बड़ी बेरलों निहारि रहे। पाछें पूछी, जो-महाराज! इह घटा कहां बरसेगी? तब

ફેલ્યુ' જુએ ત્યારે ભત્રીજીને કહે, કે બગાડ પડયો છે. પર'તુ પોતે અડે ન ઝાડે. ત્યારે ભત્રીજી પણ શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની કૃપાપાત્ર હતી. નારાયણદાસના સ્વરૂપને જાણતી.

નારાયણદાસ તો 'મધુરેક્ષણા' રાધા સહચરીની સખી છે. એની સખી 'ચતુરા' ભત્રીજીનુ' નામ છે. તે નારાયણદાસને બહુ પ્રિય એથી છે, કે સામગ્રી કરવામાં બહુ ચતુર છે. બાલ વિધવા થઇ. તેથી નારાયણદાસને ત્યાં રહેતી. તે લીલાનુ' નામ અહીં પણ ચતુરા હતુ. તે ચતુર ભત્રીજીએ નારાયણદાસનો શબ્દ સાંભળતાં જ દ્રવ્ય ઝાડીને બહાર નાખી દીધું. નારાયણદાસે ઝાડવાનુ' કહ્યું, પર'તુ એણે જાણ્યું, કે નારાયણદાસે બગાડ કહ્યો, તેથી જગા પણ લીંપવી. એવી બુદ્ધિ ભત્રીજીની જોઇ શ્રીઠાકોરજી એનાથી બહુ પ્રસન્ન રહેતા. આ પ્રકારે બન્ને શ્રીગોકુલચ'દ્રમાજીની સેવા કરતાં.

વાર્તા-પ્રસગ ૨—વળી એક દિવસ નારાયણદાસ ન્હાઇને મ'દિરમાં જઇ શ્રીઠાકુરજીને મ'ગલ-ભોગ ધરી પછી શૃંગાર કર્યા. (તે સમયે) શ્રીઠાકુરજીના મુખચ'દ્રની શોભા જોઈ ચકિત (વિસ્મિત) થઇ ઘણી વાર સુધી જોઇ રહ્યા. પછી પૂછ્યું, કે-

पधरायो। इतने में एक वैष्णव ने नारायनदास कों बधाई दई, जो–श्रीगोकुल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब नारायनदास ताती खीर भर्यो थार श्रीगोकुलचंद्रमाजी कों भोग धरिकें श्रीआचार्यजी के दरसन कों श्रीगोकुल चले। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु महावन पधारत हते। सो मारग में दरसन भयो। तब नारायनदास ने दंडवत् कियो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुख तें कहें, नारायनदास! श्रीठाकुरजी को कहा समय है? तब नारायनदास ने विनती करी, महाराज! शृंगार–भोग धरि आपुके दरसन कों आयो हों। तब श्रीआचार्यजी उतावलि पधारे। सो तत्काल अस्नान करि मंदिर में पधारे। झारी लिये। तब देखे तो श्रीगोकुलचंद्रमाजी हाथ खेंचि रहे हैं। श्रीहस्त खीर सों भरे हैं। सिंघासन पर, वस्त्रन पर खीर के छांटा परे हैं। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोकुलचंद्रमाजी सों पूछ्यो, जो–बाबा! हस्त क्यों खेंचि रहे हो? तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी ने कही, नारायनदास ताती खीर समर्पि के गयो। सो मैं हस्त सों खीर उठाई। सो ताती लागी। तब मैं हस्त झटकि कें आंगुरि चाटी है। सो मेरो ओष्ठ हस्त दाझें है। और मंदिर में जहां तहां छांटा परे हैं। तब श्रीआचार्यजी श्रीहस्त सों ओष्ठ देखे तो अत्यंत आरक्त

નારાયણદાસને વધાઇ આપી, કે શ્રીગોકુલમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા છે. ત્યારે નારાયણદાસ તાતી ખીર ભરેલો થાર શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીને ભોગ ધરીને શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને શ્રીગોકુલ ચાલ્યા. તે (સમયે) શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ મહાવન પધારતા હતા. તે માર્ગમાં દર્શન થયું. ત્યારે નારાયણદાસે દંડવત કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીમુખથી કહે, નારાયણદાસ! શ્રીઠાકુરજીનો શો સમય છે? ત્યારે નારાયણદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! શૃંગાર–ભોગ ધરી આપના દર્શને આવ્યો છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ઉતાવળે પધાર્યા. તે તત્કાલ સ્નાન કરી મંદિરમાં પધાર્યા ઝારી લઇને. ત્યારે જુએ તો, શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી હાથ ખેંચી રહ્યા છે. શ્રીહસ્ત ખીરથી ભર્યા છે. સિંઘાસન ઉપર વસ્ત્રો ઉપર ખીરના છાંટા પડ્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીને પૂછ્યું, કે બાવા! હાથ કેમ ખેંચી રહ્યા છો? ત્યારે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીએ કહ્યું, નારાયણદાસ ગરમ ખીર સમર્પિને ગયો તે મેં હસ્તથી ખીર ઉઠાવી તે ગરમ લાગી, ત્યારે મેં હાથ ઝટકીને આંગળી ચાટી છે. તેથી મારો હોઠ હસ્ત દાઝ્યા છે. અને મંદિરમાં જ્યાં ત્યાં છાંટા પડ્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીહસ્તથી ઓષ્ઠ દેખે તો અત્યંત લાલ છે. ત્યારે ખીર પંખાથી ઠંડી કરીને ભોગ

हैं। तब खीर पंखा सों सीरी करिकें भोग समर्पि आपु बाहिर आये। तब नारायनदास कों खीजि के कहें, क्यों तू श्रीठाकुरजी कों ताती खीर समर्पी? तब नारायनदास ने कही, महाराज! आपुकी वधाई सुनि उतावलि में खीर समर्पी। तब श्रीआचार्यजी कहें, आजु पाछें ऐसो काम कबहू मति करियो।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो–नारायनदास श्रीआचार्यजी की वधाई सुनि परवस है गये। सो जाने, जो–ताती होइगी तो श्रीठाकुरजी सीरी करि लेंइगे। परंतु श्रीआचार्यजी के दरसन कों ढील करनो धरम नाहीं। या भाव सों गये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी, नारायनदास के हाथ को धरयो तातो हू अरोगत हों यह जताइवे के लिये सगरो हस्त खीर में डारि झटकें। तथा उतावलि में, जो–कोई भोग धरे, शृंगार करें, तो कछु अपराध परे यह जताए। और नारायनदास श्रीआचार्यजी के पास जाइवे कों मन् कियो अलौकिक, तउ सेवा में इतनो श्रम श्रीठाकुरजी कों भयो, जो–लौकिक वैदिक कार्य के लिये उतावलि करें, ताको तो वहोत ही अपराध परे। तातें सेवा करत मन ठिकाने राखनो। अथवा खीर की सामग्री को स्वरूप प्रगट कियो, जो–यह श्रीस्वामिनीजी के

સમર્પિ આપ બાહર આવ્યા. ત્યારે નારાયણદાસને ખીજીને કહ્યું, કેમ તેં શ્રીઠાકુરજીને ગરમ ખીર સમર્પી? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપની વધાઇ સાંભળી ઉતાવળમાં ખીર સમર્પી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આજ પછી એવું કામ ક્યારેય ન કરીશ.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે નારાયણદાસ શ્રીઆચાર્યજીની વધાઇ સાંભળી પરવશ થઇ ગયા. તે જાણે કે ગરમ હશે તો શ્રીઠાકુરજી ઠંડી કરી લેશે. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન માટે વિલંબ કરવો ધર્મ નથી. આ ભાવથી ગયા. ત્યારે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી, નારાયણદાસના હાથનું ધર્યું ગરમ પણ (હું) આરોગું છું એ જણાવવાને માટે આખો હાથ ખીરમાં નાખીને ઝાટક્યો. અને ઉતાવળમાં જે કોઇ ભોગ ધરે, શૃંગાર કરે, તો કંઇ અપરાધ પડે, એ જણાવ્યું. વળી નારાયણદાસે શ્રીઆચાર્યજીની પાસે જવાનું મન કર્યું અલૌકિક, તોપણ સેવામાં આટલો શ્રમ શ્રીઠાકુરજીને થયો. (તો) જે લૌકિક વૈદિક કાર્યમાં ઉતાવળ કરે તેને તો બહુ જ અંપરાધ પડે (એમાં કહેવું શું!) તેથી સેવા કરતાં મન ઠેકાણે રાખવું. અથવા ખીરની સામગ્રીનું સ્વરૂપ પ્રકટ કર્યું. કે આ શ્રીસ્વામિ-

भावकी है। और शृंगार-भोग हू उनहि के भाव को है। तातें खीर कों देखत श्रीठाकुरजी प्रेम सों प्रथम हस्त खीर में डारत हैं। तातें खीर सीरी करि अंगुरी डारि देखिये। सुहाय तब भोग धरिये। यह सिद्धांत दिखाये।

पाछें समय भये श्रीआचार्यजी आचमन, मुख-वस्त्र कराइ बीड़ी अरोगाई, भोग सराये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी श्रीआचार्यजी के दोउ श्रीहस्त पकरि के कहें, जो-यह खीर महाप्रसाद आपु लेहु। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-महाराज! ज्ञाति-व्यौहार कठिन हैं, तातें मर्यादा राखी चाहिये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी कहें, मेरी आज्ञा है तातें लेहु। तब श्रीआचार्यजी खीर महाप्रसाद अरोगे। सो तब ताही दिनतें खीर अनसखड़ी में होति है।

भावप्रकाश—यामें, या कारन तें श्रीगोकुलचंद्रमाजी कहें, खीर ऐसी सामग्री में ज्ञाति की मर्यादा अपने भक्तन में मति राखो। तब आरोगे। ता दिन तें खीर अनसखड़ी में करें। ताको कारन यह, जो-अनसखड़ी श्रीठाकुरजी सगरे भोग में अरोगत हैं। और खीर उत्सव के भोग में नाहीं राखे। नित्य में राखे। ताको कारन यह, जो-उत्सव में राखे तो वैष्णव उत्सव में करें। तातें खीर सदा प्रिय है। यामें रीतु के, उत्सव को विचार नाहीं। जब बने तबहि करिये।

નીજીના ભાવની છે. અને શૃંગાર-ભોગ પણ એમના જ ભાવનો છે તેથી ખીરને જોતાં જ શ્રીઠાકુરજી પ્રેમથી પ્રથમ હસ્ત ખીરમાં નાખે છે. તેથી ખીર ઠંડી કરીને આંગળી નાખી જોઇએ. ખમાય ત્યારે ભોગ ધરવો, એ સિદ્ધાંત દેખાડ્યો.

પછી સમય થયે શ્રીઆચાર્યજીએ આચમન, મુખ-વસ્ત્ર કરાવી, બીડી આરોગાવીને ભોગ સરાવ્યા. ત્યારે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી, શ્રીઆચાર્યજીના બન્ને શ્રીહસ્ત પકડીને કહે, કે આ ખીર-મહાપ્રસાદ આપ લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે મહારાજ! જ્ઞાતિ-વ્યવહાર કઠણ-છે, તેથી મર્યાદા રાખવી જોઇએ. ત્યારે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી કહે, મારી આજ્ઞા છે તેથી લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ખીર-મહાપ્રસાદ આરોગ્યા. ત્યારે તે દિવસથી ખીર અનસખડીમાં થાય છે.

ભાવપ્રકાશ—આમાં, આ કારણથી શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીએ કહ્યું, કે ખીર જેવી સામગ્રીમાં જ્ઞાતિની મર્યાદા પોતાના ભક્તોમાં ન રાખો. ત્યારે આરોગ્યા. તે દિવસથી ખીર અનસખડીમાં કરી. તેનું કારણ એ, કે અનસખડી શ્રીઠાકુરજી બધા ભોગમાં આરોગે છે. અને ખીર ઉત્સવના ભોગમાં ન રાખી, નિત્યમાં રાખી. તેનુ કારણ એ, કે ઉત્સવમાં રાખે તો વૈષ્ણવ ઉત્સવમાં (જ) કરે. તેથી ખીર સદા પ્રિય છે. એમાં ઋતુનો, ઉત્સવનો વિચાર નહીં. જ્યારે બને ત્યારે કરીએ.

वार्ता-प्रसंग ५—या प्रकार नारायनदास सेवा बहोत करी। पाछें इनकी देह थकी। तब एक दिन नारायनदास सों श्रीठाकुरजी नें कही, कछू मांगि। तब नारायनदास ने श्रीगोकुलचंद्रमाजी सों कह्यो, मैं यह तुम सों मागत हों श्रीगुसांईजी के घर पधारि के सेवा कराईयो।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-श्रीगुसांईजी के घर विना श्रीठाकुरजी सुख न पावेंगे।

तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी बहोत प्रसन्न भये, जो-तू मेरो सुख मांग्यो। अपुनो सुख कछू न मांग्यो। पाछे नारायनदास की भतीजी की देह छूटी। ताके तीसरे दिन नारायनदास की देह छूटी। ता पाछे कृष्णदास स्वामी महावन में रहते। नारायनदास की ज्ञाति के हते। श्रीगुसांईजी के सेवक। तिन पास कछूक दिन श्रीगोकुल-चंद्रमाजी सेवा कराये।

भावप्रकाश—सो यातें, जो-लीला में येहू नारायनदास की सखी है। मृदुवेनी इनको नाम है। तातें सेवा कराये। पाछें मथुरा में श्रीगुसांईजी के घर पधारें। इनकी वार्ता को यह सिद्धांत भयो, जो-ब्रह्मचारी के धर्म दिखाये।

વાર્તા-પ્રસંગ ૫—આ પ્રકારે નારાયણદાસે સેવા બહુ કરી. પછી એમની દેહ થાકી ત્યારે એક દિવસ નારાયણદાસને શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, કંઇ માંગ! ત્યારે નારા-યણદાસે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીને કહ્યું, હું તમારી પાસે એ માંગું છું (કે) શ્રીગુસાંઇજીને ઘરે પધારીને સેવા કરાવજો.

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ, કે શ્રીગુસાંઇજીના ઘર વિના શ્રીઠાકુરજી સુખ નહીં પામે.

ત્યારે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી ઘણા પ્રસન્ન થયા, કે તેં મારૂં સુખ માંગ્યું. પોતાનું સુખ કંઇ ન માંગ્યું. પછી નારાયણદાસની ભત્રીજીની દેહ છૂટી. તેના ત્રીજા દિવસે નારાયણદાસની દેહ છુટી. તે પછી કૃષ્ણદાસ સ્વામી મહાવનમાં રહેતા. નારાયણ-દાસની જ્ઞાતિના હતા. શ્રીગુસાંઇજીના સેવક તેમની પાસે થોડાક દિવસ શ્રીગોકુલ-ચંદ્રમાજીએ સેવા કરાવી.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી, કે લીલામાં એ પણ નારાયણદાસની સખી છે. 'મૃદુબેની' એમનું નામ છે. તેથી સેવા કરાવી. પછી મથુરામાં શ્રીગુસાંઇજીના ઘરે પધાર્યા. એમની વાર્તાનો આ સિદ્ધાંત થયો, કે બ્રહ્મચારીના ધર્મ દેખાડયા,

जो-अपनी महाप्रसाद की पातरि धरि प्रसन्न होनों। श्रीठाकुरजी सों अपुनो सुख न मांग्यो। प्रभु को सुख विचारे, यह पुष्टिमारग की रीति हैं।

सो नारायनदास की वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ १४॥

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्रानी, महावन में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये क्षत्रानी लीला में श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी, भद्रा इनको नाम है। सो एक क्षत्री के घर जन्मी। सो ग्यारह बरस की भई। तब माता-पिता ब्याह करिवे की कहें। तब ये कहे, जो-मेरो ब्याह मति करो। जा दिन मेरो ब्याह करोगे ता दिन वर मरेगो। और तुमहू मरोगे। तब वे डरपि के चुप ह्वै रहते। सो तेरह बरस की भई तब माय-बाप की ज्ञाति में निंदा होन लगी। सो एक सों सगाई करी। सो उह ब्याहन आयो। सो फेरा परत ही याके मा, बाप, उह वर, तीनों मरि गये। तब यह घर में अकेली रहे। यासों गाम में संबंधी कोऊ न बोले। जो-इन ने ब्याह होत ही मा-बाप और वर सब कों मारे। यामें प्रीति करेगो सो मरेगो। यह लोग कहते। सो नारायनदास

કે પોતાની મહાપ્રસાદની પાતર ધરી પ્રસન્ન થવું. શ્રીઠાકુરજી પાસે પોતાનું સુખ ન માંગ્યું. પ્રભુનું સુખ વિચારે, એ પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ છે.

તે નારાયણદાસની વાર્તાનો પાર નથી, તે ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૧૪॥

⁂ ⁂ ⁂

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની સેવકની, એક ક્ષત્રાણી, મહાવનમાં રહેતી, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ ક્ષત્રાણી લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની અંતરંગિની સખી, 'ભદ્રા' એનુ નામ છે. તે એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મી. તે અગ્યાર વર્ષની થઇ ત્યારે માતા-પિતા લગ્ન કરવાનું કહે. ત્યારે એ કહે, કે મારૂં લગ્ન ન કરો. જે દિવસ મારૂં લગ્ન કરશો તે દિવસે વર મરશે. અને તમે પણ મરશો. ત્યારે એ ડરીને ચુપ થઇ રહેતાં. તે તેર વર્ષની થઇ. ત્યારે મા-બાપની જ્ઞાતિમાં નિંદા થવા લાગી. તેથી એકની સાથે સગાઇ કરી. પછી તે પરણવા આવ્યો. તે ફેરા પડતાં જ એનાં મા-બાપ, એનો વર એ ત્રણે મરી ગયાં. ત્યારે એ ઘરમાં એકલી રહે. તેનાથી ગામમાં સંબધી (વિગેરે) કોઇ ન બોલે. કેમ ? જે, એણે લગ્ન થતાં જ મા-બાપ અને વર બધાંને માર્યા. એમાં પ્રીતિ કરશે તે મરશે, આવું લોકો કહેતા.

के घर श्रीआचार्यजी पधारत हते, तब यह क्षत्रानी कों दरसन भयो। सो सुद्ध जीव हती सो जान्यो। इनकी सरनि जइये। तब श्रीआचार्यजी सों विनती करि दंडवत् कियो, महाराज! मोकों अंगीकार करो। अब मेरे प्रतिबंध लौकिक सब छूटें। तब श्रीआचार्यजी नाम निवेदन कराये। तब यह क्षत्रानी ने कही, महाराज! अब मोकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवत्सेवा करो। तब क्षत्रानी ने कही, महाराज! लीला में सदा आपु की सेवा करी है। अरु आपु भगत्सेवा की कही। सो भगवत्सेवा तो बहोत लोग करत हैं। परंतु आपु के चग्नारविन्द मिलनो बहोत दुर्लभ हैं। सो मोकों साधन में मति डारो। मोकों सदा अपुनी सेवा देउ। सो सदा आपु के संग रहों। आपु के दरसन करों। मोकों एक आपु के चरनारविंद को आश्रय है। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहें, जो-तू सांच कही, परंतु हमकों पृथ्वी-परिक्रमा करनी हैं। तातें स्त्रीजन को संग ठीक नाहीं। पाछें श्रीआचार्यजी कुमकुम मँगाइ एक वस्त्र पर दोऊ चरन में कुम-कुम लगाइ छाप करि वह क्षत्रानी कों दियो। और कहे, इनकी सेवा करियो। मैं तो पर प्रसन्न हों। तेरो सगरो मनोरथ पूरन होइगो। तब उह क्षत्राणी श्रीआ-चार्यजी कों भली भांति सों घर में पधराय श्रीआचार्यजी की श्रीस्वामिनीजी के

પછી નારાયણદાસના ઘરે શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા હતા. ત્યારે આ ક્ષત્રાણીને દર્શન થયાં. તે શુદ્ધ જીવ હતી તેથી જાણ્યું, આમની શરણે જઇએ. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજીને દંડવત કરી વિનંતિ કરી, મહારાજ! મને અંગીકાર કરો. હવે મારે પ્રતિબંધ લૌકિક બધું છુટ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ-નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે આ ક્ષત્રાણીએ કહ્યું, મહારાજ! હવે મને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, ભગવત્સેવા કરો. ત્યારે ક્ષત્રાણીએ કહ્યું, મહારાજ! લીલામાં સદા આપની સેવા કરી છે અને આપે તો ભગવત્સેવાનું કહ્યું! તે ભગવત્સેવા તો ઘણા લોકો કરે છે. પરંતુ આપનાં ચરણારવિંદ મળવાં બહુ દુર્લભ છે. તેથી મને સાધનમાં ન નાખો. મને સદા આપની સેવા દો. તેથી સદા આપની સાથે રહું, આપનાં દર્શન કરૂં, મને એક આપનાં ચરણારવિંદનો આશ્રય છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, કે તેં સાચું કહ્યું. પરંતુ અમારે પૃથ્વી-પરિક્રમા કરવી છે. તેથી સ્ત્રીજનનો સંગ ઠીક નહીં. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ કુંમકુમ મંગાવીને એક વસ્ત્ર ઉપર બન્ને ચરણમાં કુમકુમ લગાવી છાપ કરી તે ક્ષત્રાણીને આપ્યું અને કહ્યું, આની સેવા કરજે. હું તારી ઉપર પ્રસન્ન છું. તારો બધો મનોરથ પૂર્ણ થશે. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી શ્રીઆચાર્યજીને સુંદર રીતિથી ઘરમાં પધરાવી શ્રીઆચાર્યજીની શ્રીસ્વામિનીના

भाव सों सेवा करती। श्रीआचार्यजी दरसन देते। सब रस को अनुभव करावते। पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा करत कासी में पधारे।

इहां एक दिन उह क्षत्रानी श्रीजमुना-जल भरन अपरस में गागरि लेकें ब्रह्मांड घाट गई। सो गागरि लें श्रीयमुनाजी में पैठी। तब किनारे पर थोरे जल में चारि स्वरूप देखे। तब क्षत्रानी ने कही, तुम परम सुंदर जल में क्यों बिराजे हो? तब चारयो स्वरूप ने कही, तू हम कों घर पधराव। अब कछूक दिन में श्रीआचार्यजी पधारेंगे। तब उनकों दीजो। तब उन क्षत्रानी ने कही, मैं घर में श्रीआचार्यजी सों पूछि आउं, तब पधराऊं। तब गागरि भरि के बेगे दोरि आई, मंदिर में जाइ विनती करी, महाराज! चारि स्वरूप श्रीजमुनाजी के किनारे हैं। सो कहे, मोकों पधराव। सो कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जा, बेगि पधराई लाव। तब आई के चारों स्वरूप पधराइ मंदिर में वस्त्र पहराइ भोग धरयो। यामें यह जताये, जो-वह क्षत्राणी को ममत्व श्रीआचार्यजी की सेवा को हतो। भगवद् सेवा पर न हतो। परन्तु श्रीठाकुरजी चारि स्वरूप ह्वै आपु ही पधारे। तातें श्रीआचार्यजी की सेवा है, ता वैष्णव के पास श्रीठाकुरजी बिनु जतन आप सों पधारत हैं।

ભાવથી સેવા કરતી. શ્રીઆચાર્યજી (તેને) દર્શન આપતા. બધા રસનો અનુભવ કરાવતા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં કાશીમાં પધાર્યા,

અહીં એક દિવસ તે ક્ષત્રાણી શ્રીયમુનાજલ ભરવા અપરસમાં ગાગર લઇને બ્રહ્માંડ ઘાટે ગઇ. તે ગાગર લઇ શ્રીયમુનાજીમાં પેઠી. ત્યારે કિનારા ઉપર થોડા જલમાં ચાર સ્વરૂપ જોયાં. ત્યારે ક્ષત્રાણીએ કહ્યુ, તમે પરમસુંદર જલમાં કેમ બિરાજો છો? ત્યારે ચારે સ્વરૂપે કહ્યુ, તૂ અમને ઘર પધરાવ. હવે થોડા દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી પધારશે. ત્યારે એમને આપજે. ત્યારે તે ક્ષત્રાણીએ કહ્યુ, હું ઘરમાં શ્રીઆચાર્યજીને પૂછી આવું ત્યારે પધરાવુ. ત્યારે ગાગર ભરીને જલ્દી દોડી આવી. (પછી) મંદિરમાં જઇ વિનતી કરીને કહ્યું, મહારાજ! ચાર સ્વરૂપ શ્રીયમુનાજીના કિનારે છે, તે કહે (છે) (કે) (અ)મને પધરાવો. તે શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જા, જલ્દી પધરાવી લાવ. ત્યારે આવીને ચારે સ્વરૂપને પધરાવીને મંદિરમાં, વસ્ત્ર પહેરાવીને ભોગ ધર્યો. તેમાં એ જણાવ્યું, કે તે ક્ષત્રાણીનું મમત્વ શ્રીઆચાર્યજીની સેવામાં હતું. ભગવત્સેવા ઉપર ન હતુ પરંતુ શ્રીઠાકુરજી ચાર સ્વરૂપે થઇ આપ જ પધાર્યા. તેથી શ્રીઆચાર્યજીની સેવા છે તે વૈષ્ણવની પાસે શ્રીઠાકુરજી વિના યત્ન પોતાની મેળે પધારે છે.

यह वात कासी में श्रीआचार्यजी ने जानी। तहां तें व्रज कों पधारे। सो प्रथम अड़ेल आये। पाछें कडा में पधारे। सो कडा में देवाकपूर क्षत्री हते। सो गदाधरदास के पास ही इनको घर हतो। सो एक दिन गदाधरदास के इहां वैष्णव महाप्रसाद लेत हते। गदाधरदास परोसत हते। सो देवाकपूर को घर कछूक ऊंचो हतो। सो देवाकपूर ऊपर तें देखत हते। सो एक वैष्णव के पास बैठे श्रीठाकुरजी भोजन करत हते। सो मूरछा खाये। सो घरि एक में सावधान है गदाधरदास पास आइ कहें, सगरे वैष्णव कहां गये? तब गदाधरदास ने कही महाप्रसाद लें अपुने घर गये। तब देवाकपूर ने कही, तिहारे वैष्णव के बीच में श्रीठाकुरजी भोजन करत मैं देखे, सो मोकों मूरछा आई। सो अब दोरयो आयो हों। सो अब मोकों श्रीठाकुरजी के दरसन कैसे होंई? तब गदाधरदास ने कही, तेरे बड़े भाग्य हैं, जो-दरसन भये। अब कहां दरसन? तब देवाकपूर ने कही, कोई उपाव वतावो, मैं तिहारी सरनि हों। जो-मोकों श्रीठाकुरजी मिलें। सगरो जनम योंही गमायो। तब गदाधरदास ने कही, श्रीआचार्यजी की सरनि जाव। श्रीआचार्यजी की कृपा तें वैष्णवन कों श्रीठाकुरजी मिले हैं। उनकी कृपा तें

એ વાત કાશીમાં શ્રીઆચાર્યજીએ જાણી. (ત્યારે આપ) ત્યાંથી વ્રજ માટે પધાર્યા. તે પ્રથમ અડેલ આવ્યા. પછી કડામાં પધાર્યા. તે કડામાં દેવાકપૂર ક્ષત્રી હતા. તે ગદાધરદાસની પાસે જ એમનું ઘર હતું. તે એક દિવસ ગદાધરદાસને ત્યાં વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લેતા હતા. ગદાધરદાસ પરોસતા હતા. તે દેવાકપુરનું ઘર કંઇક ઉચું હતું. તે દેવાકપુર ઉપરથી જોતા હતા. તે એક વૈષ્ણવની પાસે બેસી શ્રીઠાકુરજી ભોજન કરતા હતા. તે (જોઇને) મૂર્છા ખાધી. તે ઘડી એકમાં સાવધાન થઇ ગદાધરદાસ પાસે આવીને કહે, બધા વૈષ્ણવો ક્યાં ગયા? ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, મહાપ્રસાદ લઇ પોતાના ઘરે ગયા. ત્યારે દેવાકપુરે કહ્યું, તમારા વૈષ્ણવો(ની) વચમાં શ્રીઠાકુરજીને ભોજન કરતાં મેં જોયા, તે મને મૂર્છા આવી. તે હવે હું દોડયો આવ્યો છું. તે હવે મને શ્રીઠાકુરજીનાં દર્શન કેવી રીતે થાય? ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, તારા બહુ ભાગ્ય છે, કે દર્શન થયાં. હવે દર્શન ક્યાં? ત્યારે દેવાકપુરે કહ્યું, કોઇ ઉપાય બતાવો, હું તમારી શરણ છું. જે મને શ્રીઠાકુરજી મળે. બધો જન્મ એમ જ ખોયો. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીની શરણે જાવ. શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી વૈષ્ણવોને શ્રીઠાકુરજી મળે છે.

तुमहू कों मिलेंगे। अब कासी तें पधारे हैं। सो दोय चारि दिन में इहां पधारेंगे। सो देवाकपूर नित्य गदाधरदास के इहां आइ पूछे। जो-आरति बढ़ी। सो घर को कार्य भूलि गये। सो दोय चारि दिन पीछें श्रीआचार्यजी कडा में पधारे। तब देवाकपूर आइकें श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो। बिनती करी, महाराज! कृपा करिकें सरनि लीजिये। तब गदाधरदास नें श्रीआचार्यजी सों देवाकपूर के समाचार कहें। या प्रकार याकों वैष्णवन में श्रीठाकुरजी के दरसन करि आरति भई है। दैवी जीव है। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे देवाकपूर कों नाम निवेदन करायो। तब देवाकपूर ने विनती करी, अब हमकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमहू हमारे संग ब्रज चलो। तहां श्रीठाकुरजी तिहारे माथे पधराइ देंइगें। तुम सेवा करियो। तब देवाकपूर की स्त्री घर रही। देवाकपूर संग चले।

पाछें श्रीआचार्यजी आगरें पधारे। सो आगरे में गज्जनधावन क्षत्री हते। सो इनके पिता पास द्रव्य बहोत हतो। चारि बेटा हते। तामें गज्जन छोटो हतो, और घर में गज्जन की माता हती। स्त्रीजन में और कोई न हतो। सो गज्जन के पिता ने नाव के ऊपर भवैया को नाच करायो। सो गज्जन सहित चारयो

એમની કૃપાથી તમને પણ મળશે. હવે કાશીથી પધારે છે. તે બે ચાર દિવસમાં અહીં પધારશે. તેથી દેવાકપુર (ત્યારથી) નિત્ય ગદાધરદાસને ત્યાં આવીને પૂછે. કેમ? જે આર્તિ વધી. તે ઘરનું કામ ભૂલી ગયા. ત્યારે બે ચાર દિવસ પછી શ્રીઆચાર્યજી કડામાં પધાર્યા. ત્યારે દેવાકપુરે આવીને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા. વિનતી કરી. મહારાજ! કૃપા કરીને શરણે લો. ત્યારે ગદાધરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દેવાકપૂરના સમાચાર કહ્યા, (કે) આ પ્રકારે આમને વૈષ્ણવોમાં શ્રીઠાકુરજીના દર્શન કરીને આર્તિ થઇ છે. દૈવી જીવ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇ દેવાકપૂરને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે દેવાકપૂરે વિનતી કરી, હવે અમને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે પણ અમારી સાથે વ્રજ ચાલો. ત્યાં શ્રીઠાકુરજી તમારા માથે પધરાવી દઇશું. તમે સેવા કરજો. ત્યારે દેવાકપૂરની સ્ત્રી ઘર રહી. દેવાકપૂર સાથે ચાલ્યા.

પછી શ્રીઆચાર્યજી આગ્રે પધાર્યા. તે આગ્રામાં ગજ્જનધાવન ક્ષત્રી હતા. એમના પિતા પાસે દ્રવ્ય ઘણું હતુ. ચાર બેટા હતા. તેમાં ગજ્જન નાનો હતો. અને ઘરમાં ગજ્જનની માતા હતી. સ્ત્રીજનમાં બીજું કોઇ ન હતું. તે ગજ્જનના પિતાએ નાવના ઉપર ભવૈયાનો નાચ કરાવ્યો. તે ગજ્જન સહિત ચારે બેટા અને

वेटा पास और गांव के मिलापि सगे संबंधी मिलि पचास–साठि मनुष्य हते। सो रात्रि अर्द्ध गई। इतने नाव अकस्मात् फाटी, सो सगरे डूबे। एक गज्जन के हाथ नाव को टूक परचो, सो गज्जन नें पकरचो, सो वह टूक वहिके आगरे तें कोस चारि पर लग्यो। सवेरो भयो। तव गज्जन घर आये। अपनी मासों समाचार कहें। भाई पिता सव डूबे। तव गज्जन की माता सती भई। गज्जन अकेले रहे। व्यौपार करनो छोड़ि दियो। दोई चार घरी श्रीयमुनाजी पर जाइ बैठे। पाछें अपने घर बैठे रहें। वहोत काहु सों वोलनो नाहीं, मन में वैराग्य आयो। जो–पिता, भाई सव मरें, हम हू मरेंगे। कहा करें? भगवान कृपा करें तो आछो है। या प्रकार सव सों उदास रहें।

और जीयदास सूरी क्षत्री हू आगरे में रहें। सो जीयदास वरस साठि के भये। सो आगरे में कोतवाली लिये। सगरे आगरे को न्याव करते। सो एक दिन एक ब्राह्मणी को, एक सूद्र को झगरो आयो। सो ब्राह्मणी की पास सूद्र ने द्रव्य लीनो सो देय नाहीं। तव ब्राह्मणी पुकारी। तव सूद्र नें कछु रुपैया जीयदास कों दिये। और कह्यो, ब्राह्मणी कों झूठी करियो। तव जीयदास नें ब्राह्मणी कों लोभ के वस झूठी किये। जोरावरि फारगती लिखाइ दिये। सो वह ब्राह्मणी

ગામનાં મેળાપી સગાં સંબંધી મળી પચાસ–સાઠ મનુષ્ય પાસે હતાં. તે રાત્રિ અડધી ગઇ. એટલામાં નાવ અકસ્માત્ ફાટી. તે બધા ડુબ્યા. એક ગજ્જનના હાથે નાવનો ટૂકડો પડયો; તે ગજ્જને પકડયો. તે ટૂક વહીને આગરાથી કોસ ચાર ઉપર લાગ્યો. સવાર થયું. ત્યારે ગજ્જન ઘર આવ્યા પોતાની માને સમાચાર કહ્યા. ભાઇ–પિતા બધા ડૂબ્યા. ત્યારે ગજ્જનની માતા સતી થઇ. ગજ્જન એકલા રહ્યા. વેપાર કરવો છોડી દીધો. બે ચાર ઘડી શ્રીયમુનાજી ઉપર જઇને બેસે. પછી પોતાના ઘરમાં બેસી રહે. બહુ કોઇથી બોલવું નહીં. મનમાં વૈરાગ્ય આવ્યો, કે પિતા–ભાઇ બધા મર્યા. અમે પણ મરીશું. શું કરે? ભગવાન કૃપા કરે તો સારૂં છે. આ પ્રકારે બધાથી ઉદાસ રહે.

અને જીયદાસ સૂરી ક્ષત્રી પણ આગ્રામાં રહેતા. તે જીયદાસ વર્ષ સાઠના થયા (ત્યારે) તેમણે આગ્રામાં કોતવાલી લીધી. બધા આગ્રાનો ન્યાય કરતા. તે એક દિવસ એક બ્રાહ્મણીનો એક શુદ્રનો ઝઘડો આવ્યો. તે બ્રાહ્મણીની પાસેથી શૂદ્રે દ્રવ્ય લીધું (હતું) તે દે નહીં. ત્યારે બ્રાહ્મણી પુકારી. ત્યારે શૂદ્રે થોડા રૂપીઆ જીયદાસને આપ્યા. અને કહ્યું, બ્રાહ્મણીને ઝૂઠી કરજો. જીયદાસે બ્રાહ્મણીને લોભના વશે ઝૂઠી કરી. બળ જબરીથી ફારગતી લખાવી દીધી. તેથી તે બ્રાહ્મણી કલ્પે. પછી જીયદાસના

कलपें। सो जीयदास के सगरे सरीर में कोढ़ भयो। तब जीयदास दैवी है, तातें ज्ञान भयो। जो–मैं ब्राह्मणी कों लोभ के बस झूंठी कीनी। तातें यह कोतवाली को काम महा बुरो है। तब कोतवाली छोड़ि वह ब्राह्मणी कों बुलाय कहें, माता! मैं लोभ के बस झूंठी तुमकों या रीति सों कीनी। सो ब्याज सहित रुपैया मोसों ले जाव। तिहारे अपराध तें मेरी यह गति भई हैं। सो ब्याज सहित वाकों रुपैया दिये। और दस रुपैया और अपनी ओर तें दीनें। तब वह बहोत आसिरवाद देंन लगी। तब (तें) जीयदास हू वैराग्य करि श्रीयमुनाजी के किनारें जाई बैठें। सो तीसरे पहर घर आइ खान पान करतें। सो कछूक दिन में जीयदास की देह आछी भई। कोढ़ सब जात रह्यो।

पाछें एक दिन गज्जन श्रीयमुनाजी के तीर बैठे हते। तहां जीयदास हू आइ बेठे, पास। तब परस्पर बतराये। तब गज्जन ने अपनी बात सब कही। जो–हमारे पिता भाई सब डूब मरे। माता सती भई। तब तें वैराग्य भयो है। तब जीयदास नें अपनी बात कही। जो–मैं ब्राह्मणी को द्रव्य अन्याय करिके लियो। तातें मेरी देह बिगरी। तब ज्ञान भयो। अब कोई प्रकार भगवान की प्राप्ति होइ तो आछो। तब गज्जन ने कही, चाह मेरे हू है। परंतु कैसे मिले? भगवान तो

સઘળા શરીરમાં કોઢ થયો. ત્યારે જીયદાસ દૈવી છે. તેથી જ્ઞાન થયું કે, મેં બ્રાહ્મણીને લોભના વશે ઝૂઠી કરી. તેથી આ કોતવાલીનું કામ બહુ ખોટું છે. ત્યારે કોતવાલી છોડી. પછી બ્રાહ્મણીને બોલવીને કહે, માતા! મેં લોભના વશે તમને આ પ્રકારે ઝૂઠી કરી. તેથી વ્યાજ સહિત રૂપીઆ મારી પાસેથી લઇ જાવ. તમારા અપરાધથી મારી આ ગતિ થઇ છે. પછી વ્યાજ સહિત એને રૂપીઆ આપ્યા. અને દશ રૂપીઆ બીજા પોતાની તરફથી આપ્યા. ત્યારે તે બહુ આશીર્વાદ દેવા લાગી ત્યારથી જીયદાસ પણ વૈરાગ્ય કરી શ્રીયમુનાજીના કિનારે જઇને બેસે. તે ત્રીજા પ્રહરે ઘર આવી ખાનપાન કરતા. પછી થોડાક દિવસમાં જીયદાસની દેહ સારી થઇ. કોઢ બધો જતો રહ્યો.

પછી એક દિવસ ગજ્જન શ્રીયમુનાજીના તીરે બેઠા હતા. ત્યારે જીયદાસ પણ આવી પાસે બેઠા. ત્યારે પરસ્પર વાતો કરી ત્યારે ગજ્જને પોતાની વાત બધી કહી, કે અમારે પિતા–ભાઇ બધા ડૂબી મર્યા. માતા સતી થઇ. ત્યારથી વૈરાગ્ય થયો છે. ત્યારે જીયદાસે પોતાની વાત કહી, કે મેં બ્રાહ્મણીનું દ્રવ્ય અન્યાય કરીને લીધું. તેથી મારી દેહ બગડી, ત્યારે જ્ઞાન થયું. હવે કોઇ પ્રકારથી ભગવાનની પ્રાપ્તિ થાય

कोई बड़े महापुरुष की कृपा होइ तो मिलें। तब जीयदास ने कही, जो–सो तो सांच, परन्तु हम महा पापी! हमकों महापुरुष कहां मिलें? सो अब भगवान को आश्रय करि श्रीयमुनाजी को आश्रय किये हैं। जो–बने सो सही। या प्रकार दोऊ जनें नित्य मिलै, वातें करे।

सो ऐसे करत कडासों श्रीआचार्यजी आगरे पधारे। सो श्रीयमुनाजी के तीर संध्यावंदन करत हते। इतने में गज्जन और जीयदास आये। सो श्रीआचार्यजी को दरसन भयो। तब दोउ बतराये, ये महापुरुष हैं। इनकी सरनि जॉय। पाछें गज्जन ने कृष्णदास मेघन सों पूछ्यो, ये कौन है? तब कृष्णदास मेघन ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी हैं। दक्षिण में, कासी में, मायावाद खंडन करि भक्तिमारग प्रगट किये हैं। तब गज्जन नें और जीयदास नें दंडौत् किये। और विनती करी, जो–महाराज! हम संसार–समुद्र में बूडत हैं। हमकों सरनि ले उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीयमुनाजी में न्हवाय के नाम निवेदन कराये। पाछें जीयदास नें कही, महाराज! हमारे घर पधारो। तब जीयदास के घर पधारि जीयदास के बेटा दोइ हते, पुरुषोत्तमदास, छबीलदास, तिनकों नाम–निवेदन कराये। पाछें

તો સારૂં. ત્યારે ગજ્જને કહ્યું, ચાહુના તો મારેય છે પરંતુ કેવી રીતે મળે? ભગવાન તો કોઇ મોટા મહાપુરુષની કૃપા થાય તો મળે. ત્યારે જીયદાસે કહ્યું, કે તે તો સાચું. પરંતુ અમે મહાપાપી! અમને મહાપુરુષ ક્યાં મળે? તેથી હવે ભગવાનનો આશ્રય કરી શ્રીયમુનાજીનો આશ્રય કર્યો છે. જે બને તે ખરૂં. એ પ્રકારે બન્ને જણા નિત્ય મળે, વાતો કરે.

તે એમ કરતાં કડાથી શ્રીઆચાર્યજી આગ્રા પધાર્યા. તે શ્રીયમુનાજીના તીરે સંધ્યાવંદન કરતા હુતા. એટલામાં ગજ્જન અને જીયદાસ આવ્યા. તે શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં. ત્યારે બન્નેએ વાતો કરી કહ્યું, કે આ મહાપુરુષ છે. એમની શરણે જઇએ. પછી ગજ્જને કૃષ્ણદાસ મેઘનને પૂછ્યું, એ કોણ છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘને કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી છે, દક્ષિણમાં, કાશીમાં માયાવાદ ખંડન કરી ભક્તિમાર્ગ પ્રકટ કર્યો છે. ત્યારે ગજ્જને અને જીયદાસે દંડવત્ કર્યા. અને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! અમે સંસારસમુદ્રમાં ડુબીએ છીએ. અમને શરણે લઇ ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરાવીને નામ–નિવેદન કરાવ્યું. પછી જીયદાસે કહ્યું, મહારાજ! અમારા ઘરે પધારો. ત્યારે જીયદાસના ઘરે પધારી, જીયદાસના બે બેટા હુતા, પુરુષોત્તમદાસ, છબીલદાસ, તેમને નામ–નિવેદન કરાવ્યું.

गज्जन को घर खाली हतो। तहां पधारिकें सामग्री करि भोग धरि [illegible]।
गज्जन कों जीयदास कों जूठन दिये। तब गज्जन नें, जीयदास नें [illegible]
महाराज! अब हमकों कहा कर्तव्य है? तब श्रीआचार्यजी कहें, [illegible]
गोकुल चलो। दोऊ जनेन कों श्रीठाकुरजी पधराइ देंइगे। सो [illegible]।
तब गज्जन और जीयदास संग चलें। देवाकपूर कड़ा तें संग आये है

और नारायनदास ब्रह्मचारी महावन में रहतें। सो इनके पिता [illegible]
जाइ क्षत्री पास जीविका लावतो। तासों निर्वाह होतो। सो एक दिन [illegible]
कों संग ले मथुरा आयो। सो एक क्षत्री के घर जाइ कछु मांग्यो। [illegible]
रिस करि कह्यो, जो-धिकार हैं ब्राह्मण कों, नित सवेरे होत ही [illegible]
मांग्यो। परंतु कबहू पेट न भर्यो। तातें तोकों कबहू लज्जा न आई [illegible]
नारायनदास कों बुरी लागी, सो महावन चले आये। [illegible]
के महावन आयो। तब नारायनदास ने कही, अब मेंने [illegible]
लायो भीख कछु न खाऊंगो। तब पिताने समुझायो, [illegible]
कर्म है। मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो। सो न मांगिये तो [illegible]

પછી ગજ્જનનું ઘર ખાલી હતું. ત્યાં પધારીને સામગ્રી કરી [illegible]
ગજ્જન ને જીયદાસને જૂઠણ દીધી. ત્યારે ગજ્જને, જીયદાસે [illegible]
હવે અમને શું કર્તવ્ય છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે છે. [illegible]
બન્ને જણાને શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઈશું. [illegible]
દાસ સાથે ચાલ્યા. દેવાકપૂર કડાથી સાથે આવ્યા હતા.

અને નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી મહાવનમાં રહેતા. તે [illegible]
જઈ ક્ષત્રી પાસેથી જીવિકા લાવતો. તેનાથી નિર્વાહ થતો. [illegible]
ણદાસને સંગ લઈ મથુરા આવ્યો. તે એક ક્ષત્રીને ઘરે [illegible]
ક્ષત્રીએ રીસ કરીને કહ્યું, કે ધિક્કાર છે બ્રાહ્મણને, નિત્ય [illegible]
માંગતાં વીત્યો. પરંતુ ક્યારેય પેટ ન ભર્યું. તેથી ત [illegible]
એ સાંભળતાં જ નારાયણદાસને ખોટું લાગ્યું. તે [illegible]
બીજા [illegible]
ભીખ ન ખાઉં. [illegible]
સમજાવ્યા [illegible]

तब नारायनदास ने कही, तिहारो कर्म मांगन को है, सो मांगो। मैं तो तिहारे न रहोंगो। सो श्रीयमुनाजी के तीर ब्रह्मांडघाट जाइ बैठें। जो-आवे तामें निर्वाह करें। गायत्री जपें। काहुसों बोले नाहीं। ऐसे करत नारायनदास के पिता-माता की देह छूटी। ता पाछें घर में आइ रहे। सो द्रव्य को उपाय साधन बहोत किये। परंतु द्रंव्य न पाये। तब एकादश स्कंध में अष्टसिद्धि कहे हैं। ताहू के साधन बहोत किये। परंतु साधन कछू सिद्ध न भयो। तब हार मानि रहें। ऐसे करत चालीस बरस के भये। तब वैराग्य आयो। जो-द्रव्य के पीछें इतने दिन वृथा पचे। अब मथुरा जाइ भगवान के लिये तप करों। जहाँ ध्रुवजी तप कर्यो है। सो आयके सगरो दिन गायत्री जपें। रात्रि कों पावसेर दूध लेइ। या प्रकार दिन छे बीते। तब श्रीआचार्यजी आगरे तें मथुरा पधारे। सो ध्रुवघाट पर मध्याह्न की संध्या करत नारायनदास की ओर देखे। तब नारायनदास के मनमें यह आई, जो-इनके सेवक होंइ तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। तब श्रीआचार्यजी कों दंडौत् करि बिनती किये, महाराज! मोकों कृपा करि सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम ब्रह्मचारी हो। पहले तो द्रव्य के लिये बहोत उपाय कियो। सो सिद्ध न भयो।

માંગવાનું છે તે માંગો. હું તો તમારે ત્યાં નહીં રહું. તે શ્રીયમુનાજીના તીરે બ્રહ્માંડ ઘાટે જઇ બેઠા. જે આવે તેમાં નિર્વાહ કરે. ગાયત્રી જપે. કોઇથી બોલે નહી. એમ કરતાં નારાયણદાસના પિતા માતાની દેહ છૂટી. તે પછી ઘરમાં આવીને રહ્યા. તે દ્રવ્યનો ઉપાય સાધન ઘણાં કર્યા. પરંતુ દ્રવ્ય ન મળ્યું. ત્યારે એકાદશ સ્કંધમાં અષ્ટ સિદ્ધિ કહે છે. તેનાં પણ સાધન ઘણાં કર્યા. પરંતુ સાધન કોઇ સિદ્ધ ન થયું. ત્યારે હાર માની રહ્યા. એમ કરતાં ચાલીસ વર્ષના થયા. ત્યારે વૈરાગ્ય આવ્યો. જે, દ્રવ્યની પાછળ આટલા દિવસ વૃથા પચ્યા. હવે મથુરા જઇ ભગવાનને માટે તપ કરૂં. જ્યાં ધ્રુવજીએ તપ કર્યું છે. પછી ત્યાં આવીને આખો દિવસ ગાયત્રી જપે. રાત્રિએ પાશેર દૂધ લે. એ પ્રકારે દિવસ છ વીત્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આગ્રાથી મથુરા પધાર્યા. તે ધ્રુવઘાટની ઉપર મધ્યાહ્નની સંધ્યા કરતાં નારાયણદાસની તરફ જોયું. ત્યારે નારાયણદાસના મનમાં એ આવ્યું, કે એમના સેવક થઇએ તો શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મને કૃપા કરી સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે બ્રહ્મચારી છો. પહેલાં તો દ્રવ્યને માટે બહુ ઉપાય કર્યો. તે સિદ્ધ ન થયો. હવે તુ શ્રીઠાકુરજીને માટે તપ કરે છે તેથી સેવક થવાનું કેમ કહે છે?

गज्जन को घर खाली हतो। तहां पधारिकें सामग्री करि भोग धरि भोजन किये। गज्जन कों जीयदास कों जूठन दिये। तब गज्जन नें, जीयदास नें बिनती करी, महाराज! अब हमकों कहा कर्तव्य है? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग श्रीगोकुल चलो। दोऊ जनेन कों श्रीठाकुरजी पधराइ देंइगे। सो सेवा करियो। तब गज्जन और जीयदास संग चलें। देवाकपूर कड़ा तें संग आये हे।

और नारायनदास ब्रह्मचारी महावन में रहतें। सो इनको पिता मथुरा में जाइ क्षत्री पास जीविका लावतो। तासों निर्वाह होतो। सो एक दिन नारायनदास कों संग लै मथुरा आयो। सो एक क्षत्री के घर जाइ कछू मांग्यो। तब क्षत्री ने रिस करि कह्यो, जो–धिक्कार है ब्राह्मण कों, नित सवेरे होत ही तेरो जनम मांगते बीत्यो। परंतु कबहू पेट न भरयो। तातें तोकों कबहू लज्जा न आई। यह सुनतही नारायनदास कों बुरी लागी, सो महावन चले आये। पिता और ठोर तें मांगि के महावन आयो। तब नारायनदास ने कही, अब मेरो मुख मति देखो। मैं तेरो लायो भीख कछू न खाऊंगो। तब पिताने समुझायो, अपनो ब्राह्मण को यही कर्म है। मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो। सो न मांगिये तो काम कैसे चले?

પછી ગજ્જનનું ઘર ખાલી હતું. ત્યાં પધારીને સામગ્રી કરી ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. ગજ્જન ને જીયદાસને જૂઠણ દીધી. ત્યારે ગજ્જને, જીયદાસે, વિનંતી કરી, મહારાજ! હવે અમને શું કર્તવ્ય છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારી સાથે શ્રીગોકુલ ચાલો. બન્ને જણાને શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઇશું, તે સેવા કરજો. ત્યારે ગજ્જન અને જીયદાસ સાથે ચાલ્યા. દેવાકપૂર કડાથી સંગ આવ્યા હતા.

અને નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી મહાવનમાં રહેતા. તે એમનો પિતા મથુરામાં જઇ ક્ષત્રી પાસેથી જીવિકા લાવતો. તેનાથી નિર્વાહ થતો. તે એક દિવસ નારાયણદાસને સંગ લઇ મથુરા આવ્યો. તે એક ક્ષત્રીના ઘરે જઇ કંઇ માંગ્યું. ત્યારે ક્ષત્રીએ રીસ કરીને કહ્યું, કે ધિક્કાર છે બ્રાહ્મણને, નિત્ય સવાર થતાં જ તારો જન્મ માંગતાં વીત્યો. પરંતુ ક્યારેય પેટ ન ભર્યું. તેથી તને ક્યારે ય લાજ ન આવી? એ સાંભળતાં જ નારાયણદાસને ખોટું લાગ્યું. તે મહાવન ચાલી આવ્યા. પિતા બીજી જગાએથી માંગીને મહાવન આવ્યો. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, હવે મારું મુખ ન જુઓ. હું તારી લાવી ભીખ આદિ કંઇ નહી ખાઉં, ત્યારે પિતાએ સમજાવ્યા (કે) આપણા બ્રાહ્મણનું એજ કર્મ છે. માંગવા જૈયે ત્યાં તો અનાદર થાય. તે ન માંગીએ તો કામ કેમ ચાલે? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, તમારું કર્મ

तब नारायनदास ने कही, तिहारो कर्म मांगन को है, सो मांगो। मैं तो तिहारे न रहोंगो। सो श्रीयमुनाजी के तीर ब्रह्मांडघाट जाई बैठे। जो–आवे तामें निर्वाह करें। गायत्री जपें। काहुसों बोले नाहीं। ऐसे करत नारायनदास के पिता–माता की देह छूटी। ता पाछें घर में आइ रहे। सो द्रव्य को उपाय साधन बहोत किये। परंतु द्रंव्य न पाये। तब एकादश स्कंध में अष्टसिद्धि कहे हैं। ताहू के साधन बहोत किये। परंतु साधन कछू सिद्ध न भयो। तब हार मानि रहें। ऐसे करत चालीस बरस के भये। तब वैराग्य आयो। जो–द्रव्य के पीछें इतने दिन वृथा पचे। अब मथुरा जाइ भगवान के लिये तप करों। जहाँ ध्रुवजी तप कर्यो है। सो आयके सगरो दिन गायत्री जपें। रात्रि कों पावसेर दूध लेइ। या प्रकार दिन छे बीते। तब श्रीआचार्यजी आगरे तें मथुरा पधारे। सो ध्रुवघाट पर मध्याह्न की संध्या करत नारायनदास की ओर देखे। तब नारायनदास के मनमें यह आई, जो–इनके सेवक होंइ तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। तब श्रीआचार्यजी कों दंडौत् करि विनती किये, महाराज! मोकों कृपा करि सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम ब्रह्मचारी हो। पहले तो द्रव्य के लिये बहोत उपाय कियो। सो सिद्ध न भयो।

માંગવાનું છે તે માંગો. હું તો તમારે ત્યાં નહીં રહું. તે શ્રીયમુનાજીના તીરે બ્રહ્માંડ ઘાટે જઇ બેઠા. જે આવે તેમાં નિર્વાહ કરે. ગાયત્રી જપે. કોઇથી બોલે નહી. એમ કરતાં નારાયણદાસના પિતા માતાની દેહ છૂટી. તે પછી ઘરમાં આવીને રહ્યા. તે દ્રવ્યનો ઉપાય સાધન ઘણાં કર્યાં. પરંતુ દ્રવ્ય ન મળ્યું. ત્યારે એકાદશ સ્કંધમાં અષ્ટ સિદ્ધિ કહે છે. તેનાં પણ સાધન ઘણાં કર્યા. પરંતુ સાધન કોઇ સિદ્ધ ન થયું. ત્યારે હાર માની રહ્યા. એમ કરતાં ચાલીસ વર્ષના થયા. ત્યારે વૈરાગ્ય આવ્યો. જે, દ્રવ્યની પાછળ આટલા દિવસ વૃથા પચ્યા. હવે મથુરા જઇ ભગવાનને માટે તપ કરૂં. જ્યાં ધ્રુવજીએ તપ કર્યું છે. પછી ત્યાં આવીને આખો દિવસ ગાયત્રી જપે. રાત્રિએ પાશેર દૂધ લે. એ પ્રકારે દિવસ છ વીત્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આગ્રાથી મથુરા પધાર્યા. તે ધ્રુવઘાટની ઉપર મધ્યાહ્નની સંધ્યા કરતાં નારાયણદાસની તરફ જોયું. ત્યારે નારાયણદાસના મનમાં એ આવ્યું, કે એમના સેવક થઇએ તો શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મને કૃપા કરી સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે બ્રહ્મચારી છો. પહેલાં તો દ્રવ્યને માટે બહુ ઉપાય કર્યો. તે સિદ્ધ ન થયો. હવે તૂ શ્રીઠાકુરજીને માટે તપ કરે છે તેથી સેવક થવાનું કેમ કહે છે?

अब तू श्रीठाकुरजी के लिये तप करत है, तातें सेवक होइवे की क्यों कहत हो ? तब नारायनदास ने कही, महाराज ! आप पूरणपुरुषोत्तम हो। मेरे जनम की सगरी बात कहि दीनी। सो आपु की कृपा बिना श्रीठाकुरजी दुर्लभ हैं तातें अब मैं बहोत भटक्यो। अब आपु मोपर कृपा की दृष्टि करी, तब मेरो मन सेवक होंन कों भयो। तैसे कृपा करिके सरन लीजे।

तब श्रीआचार्यजी नारायनदास कों नाम निवेदन कराये। तब नारायनदास ने बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? सो आज्ञा दीजें। तब श्रीआचार्यजी कहे, हमारे संग महावन चलो। तिहारे माथे श्रीठाकुरजी पधराइ देंइगे। तिनकी तुम सेवा करियो। तब नारायनदास ने कही, मेरो घर महावन है। सो पधारिये। और मेरे एक भतीजी है ताकों सेवक करिये। सो श्रीआचार्यजी सांझकों श्रीगोकुल पधारे। रात्रिकों रहे। प्रातःकाल नारायनदास के घर महावन पधारिकें नारायनदास की भतीजी कों नाम निवेदन कराये। इतने उह महावन मे क्षत्रानी सों चारों स्वरूप ने कही, श्रीआचार्यजी नारायनदास के घर पधारे हैं, तहां हमकों ले चलो।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी-

ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મહારાજ ! આપ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છો. મારા જન્મની સઘળી વાત કહી દીધી. તે આપની કૃપા વિના શ્રીઠાકુરજી દુર્લભ છે. તેથી હવે હું બહુ ભટક્યો. હવે આપ મારા ઉપર કૃપાની દૃષ્ટિ કરી ત્યારે મારું મન સેવક થવાનું થયું. તેવી કૃપા કરીને શરણે લો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નારાયણદાસને નામ-નિવેદન કરાવ્યુ. ત્યારે નારાયણદાસે વિનતી કરી, મહારાજ ! હવે અમને શું કર્તવ્ય છે ? તે આજ્ઞા આપો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારી સાથે મહાવન ચાલો. તમારા માથે શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઇશું. તેમની તમે સેવા કરજો. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મારું ઘર મહાવન છે. તે પધારો. અને મારે એક ભત્રીજી છે. તેને સેવક કરો. પછી શ્રીઆચાર્યજી સાંજના શ્રીગોકુલ પધાર્યા. રાત્રિએ રહ્યા. પ્રાતઃકાળ નારાયણદાસના ઘર મહાવન પધારીને નારાયણદાસની ભત્રીજીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. એટલામાં મહાવનમાં તે ક્ષત્રાણીને ચારે સ્વરૂપે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી નારાયણદાસના ઘરે પધાર્યા છે ત્યાં અમને લઈ ચાલો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં

परिक्रमा करत महावन पधारे। सो तव वा क्षत्रानी ने ब्रह्मांडघाट पें श्रीयमुनाजी में तें चारों स्वरूप प्राप्त भये हते, सो वे चारों स्वरूप लायकें श्रीआचार्यजी के पास राखे। सो श्रीआचार्यजी ने चारों स्वरूप चारों वैष्णवन के माथे पधराये। श्रीनवनीतप्रियजी, गज्जनधावन के माथें पधराये। श्रीगोकुलचंद्रमाजी, नारायनदास के माथे पधराये। श्रीलाडलेसजी, जीयदास सूरी क्षत्री के माथे पधराये। श्रीललितत्रिभंगीजी, देवाकपूर के माथें पधराये। और चारों वैष्णवन सों श्रीआचार्यजी ने कही, ये मेरे सर्वस्व हैं। सो तिहारे माथें पधराये हैं। सो सेवा प्रीति सों नीकी भांति सों करियो। और तुम सों न बनि आवें तव हमारे घर पधराइयो। सो चारों कों सेवा की रीति बताये। पाछें देवाकपूर और जीयदास सों कहे, तुम घर पधराइ ले जाव, गज्जन पाछें तें आवेगो। तव जीयदास घर आये। सेवा करन लागें, आगरे में। सो इनकी वार्ता में आगें कहेंगे। और देवाकपूर कड़ा में आये। तिनकी सेवा को प्रकार देवाकपूर की वार्ता में कहेंगे। नारायनदास कों सेवा की रीति वताये। सो नारायनदास ने सेवा करी। सो नारायनदास की वार्ता में पहलें कहि आये हैं।

वार्ता-प्रसंग २—अब श्रीआचार्यजी गज्जन कों और श्रीनव-

મહાવન પધાર્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રાણીને બ્રહ્માંડ ઘાટ ઉપર શ્રીયમુનાજીમાંથી ચાર સ્વરૂપ પ્રાપ્ત થયાં હતાં. તે ચારે સ્વરૂપ લાવીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રાખ્યાં. તે શ્રીઆચાર્યજીએ ચારે સ્વરૂપ ચારે વૈષ્ણવોના માથે પધરાવ્યાં. શ્રીનવનીતપ્રિયજી, ગજ્જનધાવનને માથે પધરાવ્યા. શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી, નારાયણદાસના માથે પધરાવ્યા. શ્રીલાડલેશજી, જીયદાસ સૂરી ક્ષત્રીના માથે પધરાવ્યા. શ્રીલલિતત્રિભંગીજી, દેવાકપુરને માથે પધરાવ્યા. અને ચારે વૈષ્ણવોને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, એ મારું સર્વસ્વ છે. તે તમારા માથે પધરાવ્યાં છે. તે સેવા પ્રીતિથી સુંદર રીતિથી કરજો. અને (જ્યારે) તમારાથી ન બની આવે ત્યારે અમારા ઘરે પધરાવજો. તે ચારેયને સેવાની રીતિ બતાવી.

પછી દેવાકપૂર અને જીયદાસને કહે, તમે ઘર પધરાવી લઇ જાવ. ગજ્જન પછીથી આવશે. ત્યારે જીયદાસ ઘર આવ્યા. સેવા કરવા લાગ્યા આગ્રામાં. તે એમની વાર્તામાં આગળ કહીશું. અને દેવાકપૂર કડામાં આવ્યા. તેમની સેવાનો પ્રકાર દેવાકપૂરની વાર્તામાં કહીશું. નારાયણદાસને સેવાની રીતિ બતાવી. તે નારાયણદાસે સેવા કરી. તે નારાયણદાસની વાર્તામા પહેલાં કહી આવ્યા છીએ.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—હવે શ્રીઆચાર્યજી ગજ્જનને અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીને સંગ

नीतप्रियजी कों संग लेके श्रीगोकुल पधारें। संग में दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास हैं। सो श्रीगोकुल आये। प्रातःकाल जन्माष्टमी ही। सो श्रीगोकुल में उत्सव किये। एक दहेंडी दहीं सों दधिकादो किये। एक उपरनामें श्रीनवनीतप्रियजी कों झुलाये। एक ओर दामोदरदास हरसानी। एक ओर कृष्णदास मेघन पकरे। गज्जन ने नृत्य कियो। श्रीआचार्यजी पालने झुलाये। साक्षात् नंदराय, यसोदाजी, ब्रज-भक्त, गोप गोपी सब नंदालय की लीला प्रगट करी। अनुभव सेवक कों कराये। पाछें गज्जन कों श्रीनवनीतप्रियजी पधराई आगरे कों विदा किये। सो गज्जन आगरे आइ सेवा किये। सो प्रकार गज्जन की वार्ता में ऊपर कहि आये हैं।

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा कों पधारे। सो उह क्षत्रानी श्रीआचार्यजी की ऐसी कृपापात्र ही। तिनकों श्रीआचा-जी की सेवा पे दृढ़ भाव हो। चार स्वरूप प्रथम ही पधारें। परि श्रीआचार्यजी की सेवा में ममत्व राखें। सो इनकी वार्ता गूढ़ है। सो वहोत प्रकास नाहीं कियो। वार्ता ॥१५॥

* * *

લઇને શ્રીગોકુલ પધાર્યા. સંગમાં દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ છે. તે શ્રીગોકુલ આવ્યા. પ્રાતઃકાલ જન્માષ્ટમી હતી. તે શ્રીગોકુલમાં ઉત્સવ કર્યો. એક દહેંડી (દહીંનું માટીનું વાસણ. મટકી) દહીથી દધિ-કાદવ કર્યો. એક ઉપરણામાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીને ઝુલાવ્યા. એક તરફ દામોદરદાસ હરસાની, એક તરફ કૃષ્ણદાસ મેઘન (છેડા) પકડે. ગજ્જને નૃત્ય કર્યું. શ્રીઆચાર્યજીએ પાલને ઝુલાવ્યા. સાક્ષાત્ નંદરાય, યશોદાજી, વ્રજભક્તો, ગોપ-ગોપી બધી નંદાલયની લીલાને પ્રકટ કરી અનુભવ સેવકોને કરાવ્યો. પછી ગજ્જનને શ્રીનવનીતપ્રિયજી પધરાવી આગરે વિદાય કર્યા. તે ગજ્જને આગરે આવી સેવા કરી. તે પ્રકાર ગજ્જનની વાર્તામાં ઉપર કહી આવ્યા છીએ.

પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરવા પધાર્યા. તે ક્ષત્રાણી શ્રીઆચાર્યજીની એવી કૃપાપાત્ર હતી. તેને શ્રીઆચાર્યજીની સેવા ઉપર દૃઢભાવ હતો. (તેથી) ચાર સ્વરૂપ પ્રથમંજ પધાર્યા. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીની સેવામાં મમત્વ રાખે. તે એની વાર્તા ગૂઢ છે. તે બહુ પ્રકાશ કર્યો નથી. વાર્તા ॥૧૫॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जीयदास सूरी क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—जीयदास लीला में श्रीयमुनाजी की सखी है। स्यामा इनको नाम है। सो स्यामा की पांच सखी हैं। तिनके नाम कहत हैं। कावेरी सखी, इहां पुरुषोत्तमदास भये। मनोहर सखी, सो इहां छबीलदास भये। हीरा सखी, सो इहां कृष्णदास भये। छविधामा सखी, सो इहां हरजी भये। मंजुकि सखी, सो इहां मथुरामल्ल भये। अब छहो जने जा प्रकार श्रीलाडिलेसजी की सेवा करि लीला में प्राप्त भये, सो प्रकार कहत हैं।

वार्ता-प्रसंग १—अब जीयदास सूरी क्षत्री के माथे श्रीआचार्यजी श्रीलाडलेसजी पधराये। सो आगरे आये। प्रातःकाल तें संध्या लों सेवा मन लगाइ कें तनुजा-वित्तजा मानसी करें। सो अनोसर करत विरह ऐसो भयो, जो-देह छूटि गई। या प्रकार श्रीलाडलेसजी चारि प्रहर जीयदास सों सेवा कराई।

भावप्रकाश—काहेतें, जीयदास उत्तम अधिकारी हैं। लीला में मगन ह्वे गये। पाछें लौकिक-वैदिक न देखें।

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, જીયદાસ સૂરી ક્ષત્રી, આગ્રામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—જીયદાસ લીલામાં શ્રીયમુનાજીની સખી છે. શ્યામા એનું નામ છે. તે શ્યામાની પાંચ સખી છે. તેનાં નામ કહીએ છીએ. કાવેરી સખી, અહીં પુરુષોત્તમદાસ થયા. મનોહર સખી, તે અહીં છબીલદાસ થયા. હીરા સખી, તે અહીં કૃષ્ણદાસ થયા. છબીધામા સખી, તે અહીં હરજી થયા. મંજુકી સખી, તે અહીં મથુરામલ્લ થયા. હવે છએ જણ જે પ્રકારે શ્રીલાડલેશજીની સેવા કરી લીલામાં પ્રાપ્ત થયા તે પ્રકાર કહે છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—હવે જીયદાસ સૂરી ક્ષત્રીના માથે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીલાડલેશજી પધરાવ્યા. તે આગ્રા આવ્યા. પ્રાતઃકાલથી સાયંકાલ સુધી સેવા મન લગાડીને તનુજા-વિત્તજા માનસી કરી. પછી અનોસર કરતાં વિરહ એવો થયો, કે દેહ છૂટી ગઇ. આ પ્રકારે શ્રીલાડલેશજીએ ચાર પ્રહર જીયદાસ પાસે સેવા કરાવી.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, જીયદાસ ઉત્તમ અધિકારી છે. (તેથી) લીલામાં મગન થઇ ગયા. પછી લૌકિક-વૈદિક ન જોયું.

पाछें जीयदास के दोय बेटा हते। पुरुषोत्तमदास, छबीलदास, सो कोइ दिन सेवा करी। सो इन दोऊ भाईन कें संतति न भई।

भावप्रकाश—सो काहेतें, जीयदास की देह छूटे पाछें दोउ भाई लौकिक में व्यौहार छोड़ि कें श्रीठाकुरजी में मन लगाइ सेवा करी।

सो जब जानें अब देह छूटेगी तब ये दोऊ भाई के मामा कृष्णदास चोपड़ा क्षत्री हते, तिनके माथें श्रीलाडिलेसजी पधराये। सो कृष्णदास चोपड़ा नें कछूक दिन भली भांति सों सेवा कीनी। पाछें एक समय महामारी आई। सो तब कृष्णदास के सब कुटुंब की देह छूटी। कृष्णदास आपु अकेले रहे।

भावप्रकाश—सो काहेतें, जो–कुटुंब दैवी न हतो। तातें कोई सेवक न भयो। और द्रव्य जितनो दैवी हतो, तितनो श्रीठाकुरजी अंगीकार किये। पाछें आसुरी रह्यो, सो आगरे में पठान आयकें गाम लूटे, मारे। तामें कृष्णदास श्रीलाडिलेसजी रहें। इनको द्रव्य सब लूटि गयो।

तब कृष्णदास के मित्र हरजी, मथुरामल्ल हे। सो श्रीआचार्यजी के सेवक हे। तिनके घर कृष्णदास जाइकें रहें। सो मथुरामल्ल तो दिन तीन लों सेवा करि देह छोड़ी। भगवत्प्राप्ति भई। पाछें

પછી જીયદાસના બે બેટા હતા. પુરુષોત્તમદાસ, છબીલદાસ. તેમણે કેટલાક દિવસ સેવા કરી. (પરંતુ) આ બે ભાઇને સંતતી ન થઇ.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, જીયદાસની દેહ છુટ્યા પછી બન્ને ભાઇઓએ લૌકિકમાં વ્યવહાર છોડીને શ્રીઠાકુરજીમાં મન લગાડી સેવા કરી.

પછી જ્યારે જાણ્યું, કે હવે દેહ છૂટશે ત્યારે એ બે ભાઇના મામા કૃષ્ણદાસ ચોપડા ક્ષત્રી હતા. તેમના માથે શ્રીલાડલેશજી પધરાવ્યા. તે કૃષ્ણદાસ ચોપડાએ કેટલાક દિવસ સારી રીતે સેવા કરી. પછી એક સમય મહામારી (મહામૃત્યુ, કોલેરા) આવી ત્યારે કૃષ્ણદાસના બધા કુટુંબની દેહ છુટી. કૃષ્ણદાસ પોતે એકલા રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, કુટુંબ દૈવી ન હતુ. તેથી કોઇ સેવક ન થયો. અને દ્રવ્ય જેટલું દૈવી હતું તેટલુ શ્રીઠાકુરજીએ અંગીકાર કર્યું. પછી આસુરી રહ્યુ, તે આગ્રામાં પઠાણ આવીને ગામ લુટયું, માર્યા. તેમાં કૃષ્ણદાસ, શ્રીલાડલેશજી રહ્યા. એમનું દ્રવ્ય બધું લુંટાઇ ગયું.

ત્યારે કૃષ્ણદાસના મિત્ર હરજી, મથુરામલ્લ હતા. તે શ્રીઆચાર્યજી(ના)સેવક હતા. તેમના ઘરે કૃષ્ણદાસ જઇને રહ્યા. તે મથુરામલ્લે ત્રણ દિવસ સુધી સેવા કરી દેહ છોડી.

हरजी और कृष्णदास मिलि के सेवा करी। पाछें कृष्णदास की देह छूटी, लीला में प्राप्त भये। पाछें हरजी ने डेढ़ बरस लों श्रीलाड-लेसजी की सेवा करी। ता पाछें श्रीगुसांईजी के घर श्रीगोकुल पधारे। सो जीयदास श्रीआचार्यजो के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। इनकी वार्ता को पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये। वार्ता ॥१६॥

भावप्रकाश—पाछें हरजी की देह बिगरी सो बड़े श्रीगिरिधरजी के लालजी श्रीदामोदरजी, श्रीमुरलीधरजी, श्रीगोपीनाथजी। इनके घर श्रीगोकुल में श्रीठाकुरजी की सगरी सामग्री वस्त्र-आभूषन सहित पधराइ, बिरह करि देह छोड़ी। सो ये छेहों श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे। लीला संबंधी हते, सो एकही जनम में प्रभुकों पाये।

✳ ✳ ✳

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, देवाकपुर क्षत्री, कड़ा में रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—देवाकपूर और देवाकपूर की स्त्री दोऊ श्रीजसोदाजी की सखी हैं। देवाकपूर को नाम प्रवीना लीला में, देवाकपूर की स्त्री को नाम लीला में रसलीना है।

ભગવત્પ્રાપ્તિ થઇ. પછી હરજી અને કૃષ્ણદાસે મળીને સેવા કરી. પછી કૃષ્ણદાસની દેહ છુટી, લીલામાં પ્રાપ્ત થયા. પછી હરજીએ ડાઢ વર્ષ સુધી શ્રીલાડલેશજીની સેવા કરી. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીના ઘર શ્રીગોકુલ પધાર્યા. તે જીયદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપા-પાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તાનો પાર નહીં, તે ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૧૬॥

ભાવપ્રકાશ—પછી હરજીની દેહ બગડી. તે મોટા શ્રીગિરિધરજીના લાલજી શ્રીદામોદરજી, શ્રીમુરલીધરજી, શ્રીગોપીનાથજી એમના ઘરે શ્રીગોકુલમાં શ્રીઠાકુરજીની બધી સામગ્રી વસ્ત્ર-આભૂષણ સહિત પધરાવી, વિરહ કરી દેહ છોડી. તેથી એ છહે શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. લીલા સંબંધી હતા. તે એક જ જન્મમાં પ્રભુને પામ્યા.

✳ ✳ ✳

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, દેવાકપૂર ક્ષત્રી, કડામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—દેવાકપૂર અને દેવાકપૂરની સ્ત્રી બન્ને શ્રીયશોદાજીની સખી છે. દેવાકપૂરનું નામ પ્રવીણા લીલામાં છે. દેવાકપૂરની સ્ત્રીનું નામ લીલામાં રસલીના છે.

वार्ता-प्रसंग १—सो देवाकपूर के माथे श्रीआचार्यजी ने श्रीललितत्रिभंगीजी की सेवा पधराये। सो देवाकपूर ने अस्त्री सहित बहोत दिन श्रीललितत्रिभंगीजी की सेवा करी। पाछें देवाकपूर की देह छूटी। तब देवाकपूर की स्त्री ने बहोत दिन सेवा करी। कितनेक दिन पाछें देवाकपूर की स्त्री की देह छूटी। सो तब वाके सगे संबंधीन नें याको अग्नि-संस्कार कियो। ता पाछें घर आइ मंदिर के किंवाड खोलकें बेटान ने देख्यो तो सगरी सामग्री ज्यों की त्यों स्थित हैं। और श्रीठाकुरजी नाहीं। सैया खाली परी हैं। श्रीठाकुरजी अंतरधान भये। सो काहू कों जानी न परी। ऐसे अंतरधान भये। देवाकपूर के बेटा चारि हते। परि सेवा श्रीठाकुरजी उनतें न कराये।

भावप्रकाश—काहेतें, जदपि नाम श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसांईजी के बड़े भाई के पास पाये हते। परंतु लौकिक वैदिक कार्य में आसक्त हते। तातें सेवा श्रीठाकुरजी ने न कराई। और श्रीगोपीनाथजी जिनकों नाम दिये, सो मर्यादामार्गीय भये। ये बलदेवजी मर्यादा रूप हैं। और श्रीललितत्रिभंगीजी श्रीआचार्यजी के सेव्य पुष्टि पुरुषोत्तम, सो संबंध कैसे बनें ? और चारि बेटान के आगें वैष्णव कों सेवा कैसे मिले ? तातें श्रीठाकुरजी अंतरधान व्है गये। पाछें सिंहनंद में एक

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે દેવાકપૂરના માથે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીલલિતત્રિભંગજીની સેવા પધરાવી. તે દેવાકપૂરે સ્ત્રી સહિત બહુ દિવસ પર્યંત શ્રીલલિતત્રિભંગજીની સેવા કરી, પછી દેવાકપૂરની દેહ છૂટી. ત્યારે દેવાકપૂરની સ્ત્રીએ બહુ દિવસ સેવા કરી. કેટલાક દિવસ પછી દેવાકપૂરની સ્ત્રીની દેહ છુટી. ત્યારે એનાં સગાંસંબંધીઓએ એનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો. તે પછી ઘર આવી મંદિરનાં કમાડ ખોલીને પુત્રોએ જોયું, તો સઘળી સામગ્રી જેમની તેમ સ્થિત છે અને શ્રીઠાકુરજી નથી. શૈયા ખાલી પડી છે. શ્રીઠાકુરજી અંતર્ધાન થયા. તે કોઇથી જાણ્યું ન ગયું, એ પ્રકારે અંતર્ધાન થયા. દેવાકપૂરના બેટા ચાર હતા. પરંતુ શ્રીઠાકુરજીએ એમની પાસે સેવા ન કરાવી.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે યદ્યપિ (તે સર્વેએ) નામ શ્રીગોપીનાથજી, શ્રીગુસાંઇજીના મોટા ભાઇ પાસે પામ્યું હતું. પરંતુ લૌકિક વૈદિક કાર્યમાં આસક્ત હતા. તેથી સેવા શ્રીઠાકુરજીએ ન કરાવી. વળી શ્રીગોપીનાથજીએ જેમને નામ દીધુ તે મર્યાદામાર્ગીય થયા. એ બલદેવજી મર્યાદા રૂપ છે. અને શ્રીલલિતત્રિભંગીજી શ્રીઆચાર્યજીના સેવ્ય પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ તે સબંધ કેમ બને ? અને ચાર પુત્રોની આગળ વૈષ્ણવોને સેવા કેવી રીતે મળે ? તેથી શ્રીઠાકુરજી અંતર્ધાન થઈ

श्रीगुसांईजी की सेवकनी ब्राह्मणी हती, वाके घर प्रगट व्है सब बात वा ब्राह्मणी सों कही। गोप्यरीति सों बहोत दिन लों सेवा कराये। सो श्रीगुसांईजी की वार्ता के भाव में लिखे हैं। या प्रकार श्रीगुसांईजी के कुल में पधारे, सो।

सो वह देवाकपूर और देवाकपूर की स्त्री बड़े भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥१७॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो-दैवी जीव विनु श्रीठाकुरजी में स्नेह न होइ। श्रीठाकुरजी सेवा हू न करावें।

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दिनकर सेठ क्षत्री, प्रयागमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये दिनकर सेठ लीला में भगवद् संबंधिनी सखी श्रीठाकुरजी की है। सो श्रीस्वामिनीजी सों बहोत प्रीति है। श्रीठाकुरजी की वार्ता सब पूछती। इनसों सगरी अपनी प्रीति की बात कहती। सो लीला में इनको नाम "मनआतुरी" है। सदा श्रीस्वामिनीजी की वार्ता सुनि श्रीठाकुरजी सों कहती। दोऊन की वार्ता सुनन में मन आतुर, जो मन रहि न सकतो। सुनिवे

ગયા. પછી સિંહનંદમાં એક શ્રીગુસાંઇજીની સેવકની બ્રાહ્મણી-હતી તેને ઘરે પ્રકટ થઇ બધી વાત તે બ્રાહ્મણીને કહી. ગોપ્ય રીતિથી ઘણા દિવસ સુધી સેવા કરાવી. તે શ્રીગુસાંઇજીની વાર્તાના ભાવમાં લખ્યું છે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજીના કુલમાં પધાર્યા તે.

તે દેવાકપૂર અને દેવાકપૂરની સ્ત્રી, મહાન ભગવદીય હતાં. તેથી તેમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥ ૧૭ ॥

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત જતાવ્યો, કે દૈવી જીવ વિના શ્રીઠાકુરજીમાં સ્નેહ ન હોય. શ્રીઠાકુરજી સેવા પણ ન કરાવે. વૈષ્ણવ ॥ ૧૭ ॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, દિનકર શેઠ ક્ષત્રી, પ્રયાગમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ દિનકર શેઠ લીલામાં ભગવદ્ સંબંધિની સખી શ્રીઠાકુરજીની છે. એને શ્રીસ્વામિનીજીથી બહુ પ્રીતિ છે. શ્રીઠાકુરજીની વાર્તા બધી પૂછતી. (શ્રીસ્વામિની) એને બધી પોતાની પ્રીતિની વાત કહેતી. લીલામાં એનું નામ 'મનઆતુરી' છે. સદા શ્રીસ્વામિનીજીની વાર્તા સાંભળી શ્રીઠાકુરજીને કહેતી. બન્નેની વાર્તા સાંભળવામાં મન આતુર, જે મન રહી ન શકે. સાંભળવાનું વ્યસન

को व्यसन हतो। तातें श्रीठाकुरजी कों, श्रीस्वामिनीजी कों परम प्रिय हैं। सो दिनकर सेठ प्रयाग में एक बड़ो द्रव्यमान क्षत्री हतो, वाके घर जन्में। सो पांच बरस के भये ता दिन तें श्रीठाकुरजी की कथा-वारता होई, सो सुनन में इनको मन लाग्यो। पाछे बरस दस-बारह के भये। तब गहना-कपड़ा अपुने तथा घर में जो हाथ लगे सो कथा कहेनवारे कों दे आवें। तातें इनके मा-बाप, तीन भाई हते सो सब दिनकर सेठ कों चोर कहते। घर में इनको विश्वास न करतें। सो एक समय दिनकर सेठ के बड़े भाई को ब्याह हतो। तातें इनहू कों सुंदर जरी को वागा, चीरा पहराये। आभूषन पहराये। घोरा पर चढ़ाये। बरात में ले चलें। तब दिनकर सेठ के मन में यह आई, जो-आजु भाजिवे को दाब परें तो यह सब कथा कहनवारे कों दे आऊं। सो जब वरात वेटीवारे के द्वारे गई तब सगरे कुटुंबी ब्याह के कार्य में लगें। दिनकर सेठ भाजिके दस-पांच कथा कहनवारे के घर जाइ सगरे आभूषन-वस्त्र बांटि दिये। और कहें, जो-हमारे भाई, पिता, कुटुंबी, काहू सों कहियो मति। पाछें दिनकर सेठ एक धोती पहरे घर में आई बेठे। तब माता ने पूछी, आभूषन वस्त्र कहां है? पाछें पिता ढूंढत ढूंढत आइ के दिनकर सेठ कों

હતું. તેથી શ્રીઠાકુરજીને શ્રીસ્વામિનીજીને પરમપ્રિય છે. તે દિનકર શેઠ પ્રયાગમાં એક મોટો દ્રવ્યપાત્ર ક્ષત્રી હતો, તેના ઘરે જન્મ્યા. તે પાંચ વર્ષના થયા તે દિવસથી શ્રીઠાકુરજીની કથા વાર્તા (જ્યાં) થાય તે સાંભળવામાં એમનું મન લાગ્યુ. પછી વર્ષ દશ-બારના થયા, ત્યારે ઘરેણાં, કપડાં પોતાનાં તથા ઘરમાં જે હાથ લાગે તે કથા કહેવાવાળાને દઈ આવે. તેથી એમનાં મા-બાપ (તથા) ત્રણ ભાઈ હતા તે બધા દિનકર શેઠને ચોર કહેતા. ઘરમાં એનો વિશ્વાસ ન કરતા. તે એક સમય દિનકર શેઠના મોટા ભાઈનું લગ્ન હતું. તેથી એને પણ સુંદર જરીનો વાઘો, (વસ્ત્ર) ચીરો (લહેરીયાદાર પાઘ) પહેરાવ્યાં. આભૂષણ પહેરાવ્યાં. ઘોડા ઉપર ચઢાવ્યા. જાનમાં લઈ ચાલ્યા. ત્યારે દિનકર શેઠના મનમાં એ આવ્યુ, કે આજ ભાગવાનો દાવ પડે તો આ બધું કથા કહેવાવાળાને આપી આવું. પછી જ્યારે જાન બેટીવાળાના દ્વારે ગઇ ત્યારે બધા કુટુંબી લગ્નના કાર્યમાં લાગ્યા. દિનકર શેઠ ભાગીને દશ-પાંચ કથા કહેવાવાળાના ઘરે જઇ (તેમને) બધાં આભૂ-ષણ-વસ્ત્ર વાંટી આપ્યાં. અને કહ્યુ, કે અમારા ભાઈ-પિતા, કુટુંબી કોઇને કહેશો નહીં. પછી દિનકર શેઠ એક ધોતી પહેરી ઘરમાં આવી બેઠા. ત્યારે માતાએ પૂછ્યું, આભૂષણ વસ્ત્ર ક્યાં છે? પછી પિતા ખોળતા ખોળતા આવીને દિનકર

वहोत मारयो। तीन दिन लों कोठा में मूंदि राखें। परंतु दिनकर सेठ वोले नाहीं। कछू न वताये। तव पिता, भाई हार मानि कें वैठि रहें। दिनकर सेठ सगरे दिन कथा वार्ता सुनें। जहां जाइ तहां श्रोता वक्ता इनकों सेठ कहें। इनकी सराहना करें। और लोगन में ज्ञाति में कुटुंवीन में याकों चोर कहें। सो दिनकर सेठ कहाये। सो सांझ कों घर आवें। तव मा वाप खाइवे कों देइ सो खाँइ। जेसो पहिरवे को देइ सो पहरें। एक वार सांझ कों खाय। कथा कहनवारे के घर कहूँ जागरन होई, भगवद् वार्ता होइ, तहांई सोई रहते। घर में रहन न देते। जो कछू नजर परेगो सो नजर चुकाइ कें ले जाइगो। ज्ञाति में चोर कहाये। तातें इनको व्याह न भयो। ऐसे करत माता-पिता रहें तवलों खानपान चल्यो गयो। पाछे माता-पिता मरे। तव भाई सों न वने। तव दिनकर सेठ ने विचार्यो। अव यह गॉव छोड़िये तो आछो। सो प्रातःकाल त्रिवेनी न्हाइवे कों घाट पर दिनकर सेठ आये। और श्रीआचार्यजी नें अड़ेल तें कृष्णदास मेघन सों कह्यो, जो-सहर में जाई खांड दोइ-चारि रुपैया की ले आउ। सो कृष्णदास मेघन त्रिवेनी में आये। दोऊ अस्नान करत हे। तव दिनकर सेठ नें कही, तुम

શેઠને બહુ મારયો. ત્રણ દિવસ સુધી કોઠામાં મૂદી રાખ્યો. પરંતુ દિનકર શેઠ બોલ્યા નહીં. કંઈ ન બતાવ્યું. ત્યારે પિતા-ભાઇ હાર માનીને બેસી રહ્યા. દિનકર શેઠ આખો દિવસ કથા-વાર્તા સાંભળે. જ્યાં જાય ત્યાં શ્રોતા, વક્તા એમને શેઠ કહે. એમની વડાઇ કરે. અને લોકોમાં, જ્ઞાતિમાં, કુટુંબીઓમાં એને ચોર કહે. તે દિનકર શેઠ કહેવાયા. તે સાંજે ઘર આવે. ત્યારે મા-બાપ ખાવાનું દે તે ખાય. જેવું પહેરવાનું દે તે(વું) પહેરે. એકવાર સાંજે ખાય. કથા કહેવા-વાળાના ઘરે (કે) કોઈ જગે જાગરણ હોય, ભગવદ્‌વાર્તા હોય, (તો) ત્યાંજ સૂઈ રહેતા. (માતા પિતા) ઘરમાં રહેવા ન દે, (કેમ ?) જે (જાણે) જો નજરે પડશે તો નજર ચુકાવીને લઇ જશે. જ્ઞાતિમાં ચોર કહેવાયા. તેથી એમનું લગન ન થયું. એમ કરતાં માતાપિતા રહ્યાં ત્યાં સુધી ખાનપાન ચાલ્યું ગયું. પછી માતાપિતા મર્યાં. ત્યારે ભાઇથી ન બને। ત્યારે દિનકર શેઠે વિચાર્યું, હવે આ ગામ છોડિએ તો સારૂં. તેથી પ્રાતઃકાલ ત્રિવેણી ન્હાવાને ઘાટ ઉપર દિનકર શેઠ આવ્યા. અને (અહીં) શ્રીઆચાર્યજીએ અડેલથી કૃષ્ણદાસ મેઘનને કહ્યું, કે શહરમાં જઇ ખાંડ બે ચાર રૂપીઆની લઇ આવો. તે કૃષ્ણદાસ મેઘન ત્રિવેણીમાં આવ્યા. બન્ને સ્નાન કરતા હતા. ત્યારે દિનકર શેઠે કહ્યું, તમે કોણ છો ? ત્યારે કૃષ્ણદાસ પૂછે, તમે

कौन हो ? तब कृष्णदास पूछे, तुम कौन हो ? हम सों पूछो सो तुमकों कछू काम है ? तब दिनकर सेठ ने कही, मोकों यह गाँव छोड़नो है। सो तुमकों परदेसी जानि पूछ्यो। जो–काहू कों भगवद् वार्ता–कथा आवत होइ तो मैं उनके संग जाऊं। मेरे घर में द्रव्य बहोत है। सो माता–पिता हते तबलों निर्वाह भयो। अब तीन भाई हैं, सो मोकों चोर कहि बुरे बचन बोलत हैं। मेरो ब्याह भयो नाहीं। सो ठाकुरने आछी करी। तब कृष्णदास दैवी जानि कहें, तुमकों (कथा) सुनिवे को व्यसन है तो अड़ेल में श्रीआचार्यजी के श्रीमुख की कथा तो एक दिन सुनो। पाछें जहाँ मन होई तहां जैये। तब दिनकर सेठ इतनो सुनत ही उहां ते नाव पर चढ़ि अड़ेल आये। ता समय श्रीआचार्यजी पोढ़ि कें उठे हे। पहर सवा दिन पिछलो हतो। तब दिनकर सेठ नें दंडौत् कियो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, आवो दिनकर सेठ! बेठो कथा सुनो। पाछें आपु दसमस्कंध में भ्रमरगीत को व्याख्यान किये। सो दिनकरदास के नैनन सों आंसु के प्रवाह बहें। मन में कहें, हाइ हाइ! इतने दिन मेरे योंई बृथा गये। अब तो इनकी सरनि व्हें सदा इनके पास रहि कथा श्रुति कों पान करों। पाछें कथा व्हे चुकी। तब दिनकर सेठ ने बिनती

કોણ છો ? અમને પૂછો છો તે તમારે કંઈ કામ છે ? ત્યારે દિનકર શેઠે કહ્યું, મારે આ ગામ છોડવું છે. તે તમને પરદેશી જાણીને પૂછ્યુ. કે કોઇને ભગવદ્-વાર્તા-કથા આવડતી હોય તો હું એમની સાથે જઉ. મારા ઘરમાં દ્રવ્ય ઘણુ છે. તે માતાપિતા હતાં ત્યાં સુધી નિર્વાહ થયો. હવે ત્રણ ભાઇ છે તે મને ચોર કહી ખોટાં વચન કહે છે. મારૂં લગ્ન થયું નથી. તે ઠાકુરે સારૂં કર્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસ (તેમને) દૈવી જાણીને કહે, તમારે કથા સાંભળવાનુ વ્યસન છે તો અડેલમાં શ્રી-આચાર્યજીના શ્રીમુખની કથા તો એક દિવસ સાંભળો. પછી જ્યાં મન હોય ત્યાં જજો. ત્યારે દિનકર શેઠ એટલું સાંભળીને ત્યાંથી નાવ ઉપર ચઢી અડેલ આવ્યા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી પોઢીને ઉઠ્યા હતા. પ્રહર સવા દિવસ પાછલો હતો. ત્યારે દિનકર શેઠે દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ, આવો દિનકર શેઠ! બેસો, કથા સાંભળો. પછી પોતે દશમસ્કંધમાં 'ભ્રમરગીત' (છે તે)નુ વ્યાખ્યાન કર્યું. તે દિનકરદાસની આંખોમાંથી આંસુનો પ્રવાહ વહ્યો. મનમાં કહે; હાય, હાય, આટલા દિવસ મારા એમ જ વૃથા ગયા. હવે તો એમની શરણે થઇ સદા એમની પાસે રહી કથા–શ્રુતિનું પાન કરૂં. પછી કથા થઇ ચુકી. ત્યારે દિનકર શેઠે વિનતી કરી, મહારાજ! મને કૃપા કરીને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચા-

करी, महाराज! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी ने कही, तू कथा तो बहोत सुनी। परंतु अबलों सेवक नाहीं भयो? तुमकों बड़े बड़े पंडित स्वामी मिलें तिनके सेवक क्यों नहिं भये? तब दिनकर सेठ ने कही, महाराज! जितने स्वामी पंडित मिले तितने द्रव्य के संगी मिले। जहांलों भेट करी तहांलों प्रीति बहुत करते। अब कोई मोसों बोलत नाहीं। परंतु श्रीठाकुरजी ने कृपा करी, जो–आपु के दरसन भये। आपु साक्षात् भगवान हो। मैं कहुं देस में जातो तो जनम बिगरतो। अब मेरो उद्धार करो। मेरे कोई लौकिक प्रतिबंध नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीयमुनाजी में सगरे कपरा सहित न्हाई आव। तब दिनकर सेठ न्हाई आये। तब श्रीआचार्यजी ने नाम निवेदन कराये। पाछे कहें, भगवद् सेवा करो। तब दिनकर सेठ ने कही, महाराज! आपु तो अंतःकरन की जानत हो। मैं तो आपु के मुख की कथा सुनोंगो। यामें सगरी सेवा है। तब श्रीआचार्यजी कहे, आछो, हमारे संग रहो। सो दिनकर सेठ पास सौ रुपैया हते। तामें पचास श्रीआचार्यजी की भेट धरें। पचास रहें तामें नित अंगाकरि–दारि करतें।

वार्ता–प्रसंग १—सो दिनकरदास कों कथा उपर बहोत आसक्ति

र्यजीએ કહ્યું, તેં કથા તો ઘણી સાંભળી. પરંતુ હજુ સુધી સેવક નથી થયો? તમને મોટા મોટા પંડિત–સ્વામી મળ્યા, તેમના સેવક કેમ નહીં થયા? ત્યારે દિનકર શેઠે કહ્યું, મહારાજ! જેટલા સ્વામી-પંડિત મળ્યા તેટલા દ્રવ્યના સંગી મળ્યા. જ્યાં સુધી ભેટ કરી ત્યાં સુધી પ્રીતિ બહુ જ કરતા. હવે કોઇ મારાથી બોલતું નથી. પરંતુ શ્રીઠાકુરજીએ કૃપા કરી, કે આપનાં દર્શન થયાં. આપ સાક્ષાત્ ભગવાન છો. હું કોઇ (બીજા) દેશમાં જતો તો જનમ બગડતો. હવે મારો ઉદ્ધાર કરો. મારે કોઇ લૌકિક પ્રતિબંધ નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શ્રીયમુનાજીમાં બધાં કપડા સહિત ન્હાઇ આવ. ત્યારે દિનકર શેઠ ન્હાઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ–નિવેદન કરાવ્યું. પછી કહે, ભગવત્સેવા કરો. ત્યારે દિનકર શેઠે કહ્યું, મહારાજ! આપ તો અંતઃકરણની જાણો છો. હું તો આપના મુખની કથા સાંભળીશ. એમાં બધી સેવા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ભલે. અમારી સાથે રહો. તે દિનકર શેઠ પાસે સો રૂપીઆ હતા તેમાંથી પચાસ શ્રીઆચાર્યજીની ભેટ ધર્યા પચાસ રહ્યા તેમાં નિત્ય અંગાખરી–દાળ કરતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—તે દિનકરદાસની કથા ઉપર બહુ જ આસક્તિ હતી. તે શ્રીઆ-

हती। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अड़ेल में कथा कहते। सो तब एक दिन दिनकर सेठ श्रीयमुनाजी के तीर रसोई करन कों गये। तहां न्हाइ के चून सानि अंगाकरि गढि, पातरि पर धरि उपरा बराइ दियो। ताही समय श्रीआचार्यजी को एक जलघरिया जल भरन आयो। तब तासों दिनकरदास ने पूछी, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु कहा करत हैं? तब वह जलघरियाने कही, श्रीआचार्यजी पोथी खोले हैं, अब कथा कहेंगे। तब दिनकर सेठ उन जलघरिया के वचन सुनत ही कच्ची लीटी ले जलपान किये। सेके नाहीं। वेगि ही आय कथा सुने। पाछें कथा श्रीआचार्यजी कहि चुके तब जलघरिया ने श्रीआचार्यजी सों कह्यो, महाराज! दिनकर सेठ कच्ची अंगाकरि बिना सेकी खायकें आयो है। तब श्रीआचार्यजी दिनकर सेठ तें पूछे, तू बिना सेकी अंगाकरि क्यों खायो? तब दिनकर सेठ बोल्यो, महाराज! अंगाकरि तो नित्य सेकि कें लेऊंगो परंतु यह आपुके मुख सों कथामृत कब सुनोगों? जो-अंगाकरि सेकतो तो यह अमृत कैसे मिलतो? तब श्रीआचार्यजी व्होत प्रसन्न होइ कें कहें, आजु पाछें रसोई सँवारिकें भोग धरिकें महाप्रसाद लेकें आइयो। जब तू आवेगो तब कथा कहुंगो।

ચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ અડેલમાં કથા કહેતા. ત્યારે એક દિવસ દિનકર શેઠ શ્રીયમુનાજીના તીરે રસોઇ કરવાને ગયા. ત્યાં ન્હાઇને ચુન બાંધી અંગાખરી ગઢી પાતર ઉપર ધરી છાણાં બળાવી દીધાં. તે જ સમયે શ્રીઆચાર્યજીનો એક જલઘરીઆ જલ ભરવા આવ્યો. ત્યારે તેને દિનકરદાસે પૂછ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી પોતે શું કરે છે? ત્યારે એ જલઘરીયાએ કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીએ પોથી ખોલી છે, હવે કથા કહેશે. ત્યારે દિનકર શેઠ એ જલઘરીઆનાં વચન સાંભળતાં જ કાચી લીટી લઇને જલપાન કર્યું. સેકી નહી. તરત જ આવીને કથા સાંભળી. પછી કથા શ્રીઆચાર્યજી કહી ચુકયા ત્યારે જલઘરીયાએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! દિનકર શેઠ કાચી અંગાખરી વિના સેકેલી ખાઇને આવ્યો છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દિનકર શેઠને પૂછ્યું, તેં વિના સેકી અંગાખરી કેમ ખાધી? ત્યારે દિનકર શેઠ બોલ્યા, મહારાજ! અંગાખરી તો નિત્ય સેકીને લઇશ પરંતુ આ આપના મુખથી કથામૃત ક્યારે સાંભળીશ? જો અંગાખરી સેકતો તો આ અમૃત કેવી રીતે મળતું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થઇને કહે, આજ પછી રસોઇ સિદ્ધ કરી ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લઇને આવજે. જ્યારે તૂ આવીશ ત્યારે કથા કહીશ તારા આવ્યા વિના કથા નહીં કહું. આજથી તૂ મુખ્ય

तेरे आये बिना कथा न कहुंगो । आजु तें तू मुख्य कथा को श्रोता है । ता पाछें दिनकर सेठ हू वेगी रसोई करते । जो-श्रीआचार्यजी मेरे लिये बैठि रहें सो आछो नाहीं । और कोई दिन रंच ढील हू लगे तो जब दिनकर सेठ आवें तब आपु कथा कहतें ।

भावप्रकाश—यामें यह सिद्धांत भयो, जो-काची अंगाकरि असमर्पित को महादोष है । परंतु श्रीआचार्यजी की कथा में दृढ़ स्नेह है । ताके अर्थ लीनी । तातें बाधक नहीं भयो । और प्रसन्न भये । तातें श्रीआचार्यजी में दृढ़ स्नेह होई ताकों कोई दोष बाधक न होई । यह जताये ।

पाछे जहां लों जीये तहां लों श्रीआचार्यजी के मुख की कथा सुनी । रात्रि दिन लीला की भावना में मगन रहतें । लीला में हू श्रीस्वामिनीजी इनसों सगरी वार्ता करते । सो श्रीआचार्यजी कथा सुनाय अपने स्वरूप को अनुभव जतायो ।

सो दिनकर सेठ ऐसे भगवदीय हे । वार्ता ॥१८॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत वैष्णव कों जताये, जो-कथा सुनिंवे को मन होइ (तो) पहलेंही वेगि रसोई करि श्रीठाकुरजी सों पहोंचि के जैये । तातें श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' में कहे हैं, 'सेवायां वा कथायां वा यस्या-

---

કથાનો શ્રોતા છે. તે પછી દિનકર શેઠ પણ જલ્દી રસોઇ કરતા. કેમ જે મારા માટે શ્રીઆચાર્યજી બેસી રહે તે ઠીક નહીં. અને કોઇ દિવસ રંચક વાર પણ થાય તો દિનકર શેઠ આવે ત્યારે પોતે કથા કહેતા.

ભાવપ્રકાશ—આમાં એ સિદ્ધાંત થયો, કે કાચી અંગાખરી અસમર્પિતનો મહાદોષ છે પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીની કથામાં દૃઢ સ્નેહ છે તેને માટે લીધી. તેથી બાધક નહીં થયો. અને (શ્રીમહાપ્રભુજી) પ્રસન્ન થયા. તેથી શ્રીઆચાર્યજીમાં દૃઢ સ્નેહ હોય તેને કોઇ દોષ બાધક ન થાય, એ જણાવ્યું.

પછી જ્યાં સુધી જીવ્યા ત્યાં સુધી શ્રીઆચાર્યજીના મુખની કથા સાંભળી રાત્રિદિવસ લીલાની ભાવનામાં મગન રહેતા. લીલામાં પણ શ્રીસ્વામિનીજી એમનાથી બધી વાર્તા કરતાં. તે શ્રીઆચાર્યજીએ કથા સંભળાવી પોતાના સ્વરૂપનો અનુભવ જણાવ્યો.

તે દિનકરશેઠ એવા ભગવદીય હતા. વાર્તા ॥ ૧૮ ॥

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત વૈષ્ણવોને જણાવ્યો, કે કથા સાંભળવાનું મન હોય, તો પહેલાંજ જલ્દી રસોઇ કરી શ્રીઠાકુરજીને પહોંચીને જઇએ. તેથી શ્રીઆચાર્યજી ' ભક્તિવર્દ્ધિની ' માં કહે છે, ' સેવાયાં વા કથાયાં

सक्तिर्दृढा भवेत्' प्रथम सेवा है, पाछे कथा है। दोऊ करिके प्रभु में आसक्ति भई चाहिये। कोई प्रकार सों होउ, सर्वोपरि आसक्ति है। सो दिनकर सेठ की भई। ता करि लीला की प्राप्ति भई।

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दिनकरदास, मुकुन्ददास सहनिया कायस्थ, मालवा देस में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नंदरायजी के भाई हतें। दिनकरदास तो धरानन्द हैं और मुकुन्ददास ध्रुवनंद हैं। सो ये मालवे में एक कायस्थ के जन्में। सो उनके पिता उज्जैन में हाकिम के पास रहते। सो एक दिन हाकिम सों बोलाचालि ह्वे गई। तब दिनकरदास मुकुन्ददास को पिता चाकरि छोड़ि घर उठि आयो। सो दिन दस-पांच में देह छोड़ी। तब दोऊ भाई बरस दस-बारह के भये। सो घर में द्रव्य को संकोच भयो। तब घरतें निकसि के कासी गये। तब द्रव्य बहोत कमाये। तब दोऊ जने घर चलन लागे। सो कासी तें कोस एक बाहर निकसे। तब एक सर्प निकस्यो। सो मुकुंददास कों काटिकें बिल में धसि गयो। सो जहर चढ्यो। तब दिनकरदास कासी में उठाय ल्याये। सो बहोत

वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत्' प्रथम सेवा छे, पछी कथा छे. बन्ने वडे प्रभुमां आसक्ति थवी जोइए. कोइ प्रकारथी थाव. सर्वोपर आसक्ति छे. ते दिनकर शेठनी थइ. ते वडे लीलामां प्राप्त थइ.

※ ※ ※

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, दिनकरदास मुकुन्ददास, सहनिया कायस्थ, माळवा देशमां रहेता, तेमनी वार्तानो भाव कहीए छीए—

भावप्रकाश—ए लीलामां नंदरायजीना भाइ हता. दिनकरदास तो 'धरानन्द' छे अने मुकुन्ददास 'ध्रुवनंद' छे. ते माळवामां एक कायस्थने त्यां जन्म्या. एमना पिता उज्जैनमां हाकेम पास रहेता. ते एक दिवस हाकेमथी बोलाचाली थइ गइ. त्यारे दिनकरदास मुकुन्ददासनो पिता चाकरी छोडी घर चाल्यो आव्यो. ते दिवस दश-पांचमां देह छोडी. त्यारे बन्ने भाइ वरस दश-बारना थया. ते घरमां द्रव्यनो संकोच थयो. त्यारे घरथी निकळीने काशी गया. त्यां द्रव्य बहु कमाया. त्यारे बन्ने जणु घर आववा लाग्या. ते काशीथी गाउ एक बाहर निकळ्या. त्यारे एक सर्प निकळ्यो. ते मुकुंददासने काटीने दरमां धसी गयो ते विष चढ्युं. त्यारे दिनकरदास काशीमां उठावी लाव्या. ते बहु

झारनवारे जतन किये। परंतु विष उतरे नाहीं। तब दिनकरकदास ने पुकारिके रुदन कियो। सो श्रीआचार्यजी कासी में पुरुषोत्तमदास के घर विराजत हते। कृष्णदास बाजार कछु कार्यार्थ आये हते। सो कृष्णदास ने दिनकर-दास को विलाप सुनि, भगवदीय को हृदय कोमल सो, पूछ्यो। ऐसो दुःख तुम क्यों करत हो? तब दिनकरदास ने कही, पहले द्रव्य के दुःख सों घर तें निकसि इहां आये, द्रव्य कमाये। सो घर जात हते सो हमारे भाई कों सर्प काट्यो। सो बहोत जतन कियो। परन्तु जहर उतर्यो नाहीं। अब हमहूं कासी में गंगाजी में डूबि मरेंगे। घर जाय कहा करें? तब कृष्णदास कों दया आई। और दैवी जाने। सो श्रीआचार्यजी को चरणामृत पास हतो। सो मुकुंददास कों पानी में घोरि के पिवाये। सो तत्काल जहर उतरि गयो। मुकुंददास उठि बैठे। चरणामृत सों बुद्धि निर्मल ह्वै गई। सो मुकुंददास ने कृष्णदास कों भगवद्स्मरन करि दंडौत् किये। और पूछे, श्रीआचार्यजी कहां बिराजे हैं। तब कृष्णदास ने कही, तुम हम कों दंडवत् क्यो करी? तब मुकुन्ददास ने कही, तुम्हारे हृदय में श्रीआचार्यजी बैठिके मोपर कृपा करी। नाहीं तो संसारसमुद्र में हम परे हैं सो श्रीआचार्यजी हू कों नाहीं जाने। और तुमकों हू न जाने। परन्तु तुम कृपा

ઝાડવાવાળાએ યત્ન કર્યા. પરંતુ વિષ ઉતરે નહીં. ત્યારે દિનકરદાસે પોકારીને રૂદન કર્યું. તે શ્રીઆચાર્યજી કાશીમાં શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ઘરે બિરાજતા હતા. કૃષ્ણદાસ બજારમાં કંઇ કામ માટે આવ્યા હતા. તે કૃષ્ણદાસે દિનકરદાસનું રૂદન સાંભળી, ભગવદીયનું હૃદય કોમળ તેથી પૂછ્યું, આવું દુઃખ તમે કેમ કરો છો? ત્યારે દિનકરદાસે કહ્યું, પહેલાં દ્રવ્યના દુઃખથી ઘરથી નિકળી અહીં આવ્યા, દ્રવ્ય કમાયા. હવે ઘર જતા હતા તે અમારા ભાઇને સર્પ કાટ્યો. તે બહુ યત્ન કર્યો પરંતુ વિષ ઉતર્યું નહીં. હવે અમે પણ કાશીમાં ગંગાજીમાં ડૂબી મરીશું. ઘર જઈ શું કરે! ત્યારે કૃષ્ણદાસને દયા આવી. વળી દૈવી જીવ જાણ્યા. તેથી શ્રીઆચાર્યજીનું ચરણામૃત પાસે હતું તે મુકુંદદાસને પાણીમાં ઘોળીને પીવડાવ્યું. તે તત્કાલ વિષ ઉતરી ગયું. મુકુંદદાસ ઉઠીને બેઠા. ચરણામૃતથી બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઈ. પછી મુકુંદદાસે કૃષ્ણદાસને ભગવદ્સ્મરણ કરી દંડવત્ કર્યા. અને પૂછ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી ક્યાં બિરાજે છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, તમે અમને દંડવત્ કેમ કર્યા? ત્યારે મુકુંદદાસે કહ્યું, તમારા હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજીએ બેસીને મારા ઉપર કૃપા કરી. નહીં તો સંસારસમુદ્રમાં અમે પડ્યા હતા. તે શ્રીઆચાર્યજીને પણ

करिके जताये। तातें भगवदीय कों दंडौत् किये बाधक नाहीं हैं। तब कृष्णदास ने कही, यह चरणामृत की बात श्रीआचार्यजी सों मति कहियो। नाहीं तो मोपर खीझेंगे। और गांव में काहू सों मति कहियो। हमकों सब आयकें दुःख देंयगे। तब यहां रहनों कठिन परेगो। पाछे मुकुंददास ने कृष्णदास सों पूछी, जो–श्री-आचार्यजी कहां बिराजे हैं? तब कृष्णदास ने कही, जो–श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषो-त्तमदास के यहाँ बिराजे हैं। यह कहि के कृष्णदास तो कारजकों गये। तब मुकुंददास ने कही, भाई श्रीआचार्यजी की सरनि चलो। तब दिनकरदास ने कही, श्रीआचार्यजी कौन हैं? तब मुकुंददास ने कही, साक्षात् भगवान् हैं। मोकों उनके चरणामृत के पाये ज्ञान भयो। तुमहु जब दरसन करि चरणामृत लेहुगे तब श्रीआ-चार्यजी के स्वरूप कों जानोगे। तातें बेगे चलो, ढील मति करो। तब दोउ भाई आई श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि विनती किये, महाराज! हम महा अपराधी हैं। संसार के दुःख सुख में परे हैं। सो हमारो उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम कायस्थ हो, सो यह पुष्टिमार्ग कैसे सधेगो? तब मुकुन्ददास ने कही, महाराज! आपकी कृपातें सब सधेगो? आपकी कृपा सूद्र–चाण्डाल पर

નહીં જાણ્યા. અને તમને પણ ન જાણ્યા. પરંતુ તમે કૃપા કરીને બતાવ્યા. તેથી ભગવદીયને દંડવત્ કરવામાં બાધક નથી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, આ ચરણામૃતની વાત શ્રીઆચાર્યજીને ન કહેતા. નહીં તો મારા ઉપર ખીજશે. અને ગામમાં (પે) કોઇને નહીં કહેતા. અમને બધા આવીને દુઃખ દેશે. ત્યારે અહીં રહેવું કઠિણ પડશે. પછી મુકુંદદાસે કૃષ્ણદાસને પૂછ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી ક્યાં બિરાજે છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, કે શ્રીઆચાર્યજી શેઠ પુરુષોત્તમદાસને ત્યાં બિરાજે છે. એમ કહી કૃષ્ણદાસ તો કાર્ય માટે ગયા. ત્યારે મુકુંદદાસે કહ્યું, ભાઇ! શ્રીઆચાર્યજીની શરણે ચાલો. ત્યારે દિનકરદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી કોણ છે? ત્યારે મુકુન્દદાસે કહ્યુ, સાક્ષાત્ ભગવાન છે. મને એમના ચરણામૃતના બળે જ્ઞાન થયું. તમે પણ જ્યારે દર્શન કરી ચરણામૃત લેશો ત્યારે શ્રીઆચાર્યના સ્વરૂપને જાણશો. તેથી જલ્દી ચાલો, ઢીલ ન કરો. ત્યારે બન્ને ભાઇ આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિનતી કરી, મહારાજ! અમે મહા અપરાધી છીએ. સંસારના દુઃખ સુખમાં પડ્યા છીએ. તે અમારો ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે કાયસ્થ છો, તે આ પુષ્ટિમાર્ગ કેવી રીતે સધાશે? ત્યારે મુકુન્દદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપની કૃપાથી બધુ સધાશે. આપની કૃપા શૂદ્ર ચાંડાલ ઉપર હોય તો તેનાથી પણ બધું

होइ तो वासों हू सब सधे। आपकी कृपा बड़े पंडित ब्राह्मन पर न होय तो वासों न सधे। तातें आप हमकों कृपा करिके सरनि लेहु। सो सरनके प्रताप तें हमारो कल्यान होइगो। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे कें कहें, हम जाने, यह कृष्णदास मेघन को काम है। पाछें दिनकरदास मुकुन्ददास कों न्हवाय के नाम निवेदन कराये। सो कछुक दिन उहां श्रीआचार्यजी के पास रहिकें मारग की रीति सब सीखें। पाछे विनती किये, महाराज! आज्ञा होइ तो घर जैये। हमकों अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी ब्रह्मसंबंध की पत्री लिखि हस्ताक्षर दिये। कहे, इनकी सेवा करियो। जो कछू खानपान करो सो इनकों भोग धरिकें लीजो। तब दोऊ भाई विदा होयकें मालवा में अपने घर आये। स्त्रीजन कों रसोई करि भोग धरि न्यारे धरि देय। काहेतें, दैवी नाहीं। श्रीआचार्यजी के सेवक होनको मन नाहीं। सो मुकुंददास कों श्रीआचार्यजी को चरणामृत मिल्यो। तातें सगरे शास्त्र वेद-पुरान कंठाग्र भये।

वार्ता-प्रसंग १—**सो मुकुंददास कवित्त बहोत सुंदर करते। श्रीआचार्यजी के, श्रीगुसांईजी के, श्रीठाकुरजी के, एकसे करते। और मुकुंददासनें एक 'मुकुंदसागर' ग्रन्थ भाषा में कियो है। तामें**

સધાય. (અને) આપની કૃપા મોટા પંડિત બ્રાહ્મણ ઉપર ન હોય તો એનાથી પણ ન સધે. તેથી આપ અમારા ઉપર કૃપા કરી શરણે લો. શરણના પ્રતાપથી અમારૂં કલ્યાણ થશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, અમે જાણ્યું, આ કૃષ્ણદાસ મેઘનનું કામ છે. પછી દિનકરદાસ, મુકુંદદાસને ન્હવડાવીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. પછી કેટલાક દિવસ ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહીને માર્ગની બધી રીતિ શિખ્યા. પછી વિનંતી કરી, મહારાજ! આજ્ઞા હોય તો ઘર જૈયે. અમને હવે શું કર્તવ્ય છે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બ્રહ્મસંબંધની પત્રી લખીને હસ્તાક્ષર દીધા. (અને) કહ્યુ, આની સેવા કરજો. જે કંઈ ખાનપાન કરો, તે આને ભોગ ધરીને લેજો. ત્યારે બન્ને ભાઇ વિદાય થઇને માળવામાં પોતાના ઘરે આવ્યા. સ્ત્રીજનને રસોઇ કરી ભોગ ધરી અલગ ધરી દે; કેમકે દૈવી નથી. શ્રીઆચાર્યજીનાં સેવક થવાનું મન નથી. પછી મુકુંદદાસને શ્રીઆચાર્યજીનું ચરણામૃત મળ્યુ. તેથી બધાં શાસ્ત્ર વેદ-પુરાણ કંઠાગ્ર થયાં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે મુકુંદદાસ કવિત્ત બહુ સુંદર કરતા. શ્રીઆચાર્યજીનાં, શ્રી-ગુસાંઇજીનાં, શ્રીઠાકુરજીનાં, એક સરખાં કરતાં. વળી મુકુંદદાસે એક 'મુકુંદસાગર' ગ્રન્થ

श्रीभागवत द्वादसस्कंध (पर्यंत) को अर्थ धरि दिये हैं। और मुकुंददास एक समय उज्जैन के कारकून ह्वै कें गये। सो उज्जैन के ब्राह्मन पंडित सब आइ के मिलें। और कहें, कहो तो हम तुमकों श्रीभागवत सुनावें। तब मुकुंददास ने कही, अवकास नाहीं है। अवकास होयगो तब सुनेंगे।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो श्रीआचार्यजी के सुबोधिनी आदि ग्रन्थ तिनके आगे तुमारी कथा सुनिवे को अवकास कहां? और ब्राह्मण को मन उदास न होय तातें कहें अवकास होयगो तब सुनेंगे।

सो वह ब्राह्मन दूसरे चौथे मुकुंददास कों पूछें, जो–जब कहोगे तब श्रीभागवत सुनावेंगे। ऐसे करत बहोत दिन बीते। सो एक दिन मुकुंददास चोपड खेलत हुते सो वह पंडित ने देख्यो। तब मन में विचार्यो, जो–आजु बात कहन को दाव पायो। इतने चोपड खेलि चुके। तब पंडित ने कही, तुम कहो तो श्रीभागवत तुम कों सुनाउं। तब मुकुंददास ने कही अवकास होयगो तब सुनेंगे। तब पंडित नें कही, चोपड खेलिवे को अवकास है। (और) श्रीभागवत सुनन कों कहे अवकास होयगो तब सुनेंगे। याको कारन कहा? तब मुकुंददास ने विचार्यो, इनने तो प्रतिउत्तर भारी

ભાષામાં કર્યો છે. તેમાં શ્રીભાગવત દ્વાદશ સ્કંધ (પર્યંત) નો અર્થ ધરી દીધો છે. બીજું, મુકુંદદાસ એક સમય ઉજ્જૈનના કારકૂન થઇને ગયા. તે ઉજ્જૈનના બ્રાહ્મણ પંડિત બધા આવીને મળ્યા. અને કહે, કહો તો અમે તમને શ્રીભાગવત સંભળાવીએ ત્યારે મુકુંદદાસે કહ્યું, નવરાશ નથી. નવરાશ હશે ત્યારે સાંભળીશું.

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ એ, કે શ્રીઆચાર્યજીનાં સુબોધિની આદિ ગ્રંથ તેની આગળ તમ્હારી કથા સાંભળવાની નવરાશ કયાં ! અને બ્રાહ્મણનું મન ઉદાસ ન થાય તેથી કહે નવરાશ હશે ત્યારે સાંભળીશું.

પછી તે બ્રાહ્મણ બીજે ચોથે દિવસે મુકુંદદાસને પૂછે, કે જ્યારે કહેશો ત્યારે શ્રીભાગવત સંભળાવીશ. એમ કરતાં ઘણા દિવસ વીત્યા. તે એક દિવસ મુકુંદદાસ ચોપડ રમતા હતા તે. તે પંડિતે જોયું. ત્યારે મનમાં વિચાર્યું, કે આજ વાત કહેવાનો દાવ મળ્યો છે. એટલામાં ચોપડ રમી ચુકયા. ત્યારે પંડિતે કહ્યું, તમે કહો તો શ્રી-ભાગવત તમને સંભળાવું. ત્યારે મુકુંદદાસે કહી નવરાશ હશે ત્યારે સાંભળીશું. ત્યારે પંડિતે કહ્યું, ચોપડ રમવાની નવરાશ છે અને શ્રીભાગવત સાંભળવાને માટે કહે, કે નવરાશ હશે ત્યારે સાંભળીશું. એનું કારણ શું ? ત્યારે મુકુંદદાસે વિચાર્યું

दियो। अब अपनहू याकों देनो। तब कहें, हमारो श्रीभागवत जानें है ? तब पंडित नें कही, तुम्हारो श्रीभागवत न्यारो है ? तब उन नें कही, हमारो श्रीभागवत न्यारो है। तब पंडित ने कही, तुमहि अपनो श्रीभागवत सुनावो। तब मुकुंददास ने कही, कोई समय पाय के तुमकों सुनाय देंइगे। या प्रकार कहिकें टारे। परन्तु उह मार्गीय ब्राह्मन न हतो, तातें वाके मुख की कथा न सुने।

भावप्रकाश—तातें छासठ अपराध में लिख्यो है, 'अवैष्णवानां श्रीभागवत श्रवणं वृक्षजन्मत्रयं' इत्यादिक। पुष्टिमार्गीय वैष्णवन कों दोष लगे। इह, जीव कों बहोत संदेह हैं। काहेते ? भगवन्नाम में सबन को अधिकार है। सूद्रादि चांडाल पर्यंत जो कहे सुने सो सब को कल्यान होय। श्रीभागवत में हू अजामिल आदि पवित्र भये हैं। सो यह सब महात्म्य जगत में प्रसिद्ध है। और पुष्टिमार्ग में भगवद्नाम कीर्तन श्रीभागवत सुनन कों अन्यमार्गीय सों क्यों नाही ? जो–भगवद्नाम सुने तें दोष कैसे ? यह सन्देह बड़ो गूढ़ है। तहां कहत हैं, जो–मर्यादामार्ग में तो मुक्तिफल है। और पुष्टिमार्ग में तो एकांगी पुष्टिभक्ति सो फल है। सो भक्ति श्रीआचार्यजी के आश्रय तें होय। सो आश्रय

એણે તો પ્રતિ ઉત્તર જબરો આપ્યો. હવે આપણે પણ તેને દેવો. ત્યારે કહે, અમારૂં શ્રીભાગવત જાણે છે ? ત્યારે પંડિતે કહ્યું, તમારૂં શ્રીભાગવત શું જુદું છે ? ત્યારે, એમણે કહ્યું, અમારૂં શ્રીભાગવત જુદું છે. ત્યારે પંડિતે કહ્યું, તમેજ તમારૂં શ્રીભાગવત સંભળાવો. ત્યારે મુકુંદદાસે કહ્યું, કોઇ સમય મેળવીને તમને સંભળાવી દઇશું. એ પ્રકારે કહીને ટાળ્યા. પરંતુ તે માર્ગીય બ્રાહ્મણ ન હતો, તેથી તેના મુખની કથા ન સાંભળી.

ભાવપ્રકાશ—તેથી 'છાસઠ અપરાધ' માં લખ્યું છે 'અવૈષ્ણવાનાં શ્રીભાગવત શ્રવણં વૃક્ષ જન્મ ત્રયં' ઇત્યાદિક પુષ્ટિમાર્ગીય. વૈષ્ણવોને દોષ લાગે. આ, જીવને બહુ સંદેહ છે; કેમકે ભગવન્નામમાં બધાનો અધિકાર છે. શૂદ્રાદિ ચાંડાલ પર્યંત, જે કહે સાંભળે તે બધાનું કલ્યાણ થાય. શ્રીભાગવતમાં પણ અજામિલ આદિ પવિત્ર થયા છે. એ બધું મહાત્મ્ય જગતમાં પ્રસિદ્ધ છે. અને પુષ્ટિમાર્ગમાં ભગવદ્નામ કીર્તન શ્રીભાગવત સાંભળવાનું અન્યમાર્ગીયથી કેમ નહીં ? ભગવદ્નામ સાંભળવાથી દોષ કેમ ? આ સંદેહ બહુ ગૂઢ છે. ત્યાં કહે છે, કે મર્યાદામાર્ગમાં તો મુક્તિફલ છે, અને પુષ્ટિમાર્ગમાં તો એકાંગી પુષ્ટિભક્તિ તે ફળ છે. તે ભક્તિ શ્રીઆચાર્યજીના આશ્રયથી થાય. તે આશ્રય અને અન્યાશ્રયનો ભેદ

तें काहू को बुरो न मनावनो परतो । लोग जानते, चोपड में आसक्ति है। या प्रकार सों अपने हृदय में पुष्टिमार्गीय धर्म छिपाये हते।

सो एक समें सूर्यग्रहण पर्यो । तब मुकुंददास नदी में न्हाय कें भगवद्नाम नदी में ठाड़े लेत हते। ता समे वह पंडित ने आय के कही, भलो, या समें अपनो श्रीभागवत कछू सुनावो। तब मुकुंददास ने एक श्लोक श्रीभागवत को कहि कें वाको अर्थ करन लागे। सो सगरो दिन, सगरी राति वीति गई, सवेरो भयो। गांव के लोग नदी न्हानकों आये। तब वह पंडित नें कही, दूसरो दिन भयो। अब या श्लोक को अर्थ पूरो करोगे? तब मुकुंददास ने कही, यह श्लोक को भाव छै महिना लों होइगो। तब वह पंडित थकित ह्वै रह्यो। कह्यो, तुमकों ईश्वर की दीनी सामर्थ्य है। जीव कहा जाने? तब मुकुंददास ने कही, हमारो श्रीभागवत ऐसो है। कछू जानत होय तो हमकों सुनाव। तब उह पंडित हारि मानि के घर गयो। और पंडित आय कछू पूछते तो वाके प्रश्न कों बहोत दूषन लगाय प्रतिउत्तर देते, जो-फिरि वह पंडित न आवें। ऐसो श्रीआचार्यजी को कृपावल हतो। श्रीसुबोधिनी आदि सब सास्त्र में प्रवेस हो। सो वे मुकुंददास कछूक दिन पाछें मानसी सेवा की भावना करिकें देह

ચોપડમાં આસક્તિ છે. આ પ્રકારથી પોતાના હૃદયમાં પુષ્ટિમાર્ગીય ધર્મ છપાવી રાખ્યો હતો.

પછી એક સમય સૂર્યગ્રહણ પડયું. ત્યારે મુકુન્દદાસ નદીમાં સ્નાન કરીને ભગવન્નામ નદીમાં ઉભા-ઉભા લેતા હતા. તે સમયે તે પંડિતે આવીને કહ્યું, ભલે, આ સમયે તમારૂં શ્રીભાગવત કંઇક સંભળાવો. ત્યારે મુકુન્દદાસે એક શ્લોક શ્રીભાગવતનો કહીને એનો અર્થ કરવા લાગ્યા. તે આખો દિવસ (ને) આખી રાત્રિ વીતી ગઇ. સવાર થયું. ગામના લોકો નદી ન્હાવાને આવ્યા. ત્યારે તે પંડિતે કહ્યું, બીજો દિવસ થયો છે. હવે આ શ્લોકનો અર્થ પૂરો કરશો? ત્યારે મુકુન્દદાસે કહ્યું, આ શ્લોકનો ભાવ છ મહિના સુધી થશે. ત્યારે તે પંડિત ચકિત થઇ ગયો. કહ્યું, તમને ઇશ્વરની આપેલી સામર્થ્ય છે. જીવ શું જાણે? ત્યારે મુકુંદદાસે કહ્યું, અમારૂં શ્રીભાગવત આવું છે. કંઇ જાણતા હો તો સંભળાવો. ત્યારે તે પંડિત હાર માનીને ઘરે ગયો. (અને) બીજા પંડિતો આવી કંઇ પૂછતા તો એમના પ્રશ્નને બહુ દૂષણ લગાડીને પ્રતિઉત્તર આપતા તે ફરી તે પંડિત ન આવે. એવું શ્રીઆચાર્યજીનું કૃપાબલ હતું. શ્રીસુબોધિની-આદિ બધા શાસ્ત્રોમા પ્રવેશ હતો.

પછી તે મુકુંદદાસે કેટલાક દિવસ પછી માનસી-સેવાની ભાવના કરીને દેહ

छोड़ि लीला में प्राप्त भये। तब काहू वैष्णव आयकें श्रीआचार्यजी सों कह्यो, मुकुंददास अवंतिका पाई। तब श्रीआचार्यजी वैष्णव कों बरजे, जो-ऐसे मति कहो। ऐसे कहो, जो-अवंतिका ने मुकुंददास पाये। सो मुकुंददास ऐसे टेक के भगवदीय भये। वार्ता ॥१९॥

भावप्रकाश—काहेतें, जो-संसारी लोग हैं तिनकों तीर्थकी चाह है। और तीर्थ है, सो भगवदीयकों चाहत हैं। जो-भगवदीय तीर्थ को परस करें। जो-तीर्थ के पास जाइ सो (सब पापन तें मुक्त होंय) और दिनकरदास बड़े भाई की वार्ता को विस्तार यातें नाहीं किये, जो-जा दिन तें उह श्रीआचार्यजी के सेवक व्है मालवा में आये ता दिन तें श्रीमहाप्रभुजी के हस्ताक्षर ब्रह्मसंबंध को प्रकार बांचि नित्य माथो पीटि के रोवे। जो-हम लीला में नंदरायजी के भाई व्है के अब इतने दिन तें संसार में भटकत हैं। हमकों धिक्कार। या प्रकार विरह करत तीन महीना में लीला की प्राप्ति भई। तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय विरह दसा की है। सो लोक में विरुद्ध चलेंगे तातें बहोत प्रकास नाहीं किये। तातें दोऊ भाई दिनकरदास मुकुंददास बड़े भगवदीय कृपापात्र हे। वैष्णव ॥१९॥

※ ※ ※

છોડીને લીલામાં પ્રાપ્ત થયા. ત્યારે કોઇ વૈષ્ણવે આવીને શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, જે મુકુંદદાસ અવંતિકા (ઉજ્જૈન) પામ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી (તે) વૈષ્ણવને રોકે, જે એમ ન કહો. એમ કહો, કે અવંતિકાએ મુકુંદદાસને પ્રાપ્ત કર્યા. તે મુકુંદદાસ એવા ટેકના ભગવદીય થયા. વાર્તા ॥૧૯॥

ભાવપ્રકાશ—તે શાથી, કે સંસારી લોકો છે તેમને તીર્થની ચાહના છે અને તીર્થ છે, તે ભગવદીયોને ચાહે છે. કેમ જે, ભગવદીય તીર્થનો સ્પર્શ કરે, જે તીર્થની પાસે જાય તે (તીર્થ) (બધા પાપોથી મુક્ત થાય) અને દિનકરદાસ મોટા ભાઇની વાર્તાનો વિસ્તાર એથી ન કર્યો, કે જે દિવસે તે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ માલવામાં આવ્યા, તે દિવસથી શ્રીમહાપ્રભુજીના હસ્તાક્ષર બ્રહ્મસંબંધનો પ્રકાર વાંચી (વાંચીને) નિત્ય માથું પીટીને રોતા, કે અમે લીલામાં નંદરાયજીના ભાઇ થઇને હવે આટલા દિવસથી સંસારમાં ભટકીએ છીએ. અમને ધિઃક્કાર છે. આ પ્રકારે વિરહ કરી ત્રણ મહિનામાં લીલાની પ્રાપ્તિ થઇ. તેથી એમની વાર્તા અનિર્વચનીય વિરહ દશાની છે. તે લોકમાં વિરૂદ્ધ ચાલશે, તેથી ઘણો પ્રકાશ નથી કર્યો. તેથી બન્ને ભાઇ દિનકરદાસ મુકુન્દદાસ મોટા ભગવદીય કૃપાપાત્ર હતા.

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, प्रभुदास जलोटा क्षत्री, सिंहनंद के वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये प्रभुदास जलोटा क्षत्री, लीला में ललिताजी की सखी हैं। 'मन्मथमोदा' इनको नाम है। कामलीला की सामग्री सब सिद्ध करत हैं। और विहारलीला की वार्ता में ललिताजी सों वार्ता करि मग्न रहत हैं। तातें इनको नाम 'मन्मथमोदा' है। सो सिंहनंद में एक क्षत्री के घर जन्मे। सो बरस तेरह के भये। तब इनको ब्याह भयो। सो स्त्री महाकुपात्र आई। सो सवन कों गारी देय। जो-वस्तु पावे सो चुराय कें मा-बाप कों दे आवे। ऐसे करत प्रभुदास के माय-बाप ने देह छोड़ी। और सगरे संबंधी उह स्त्री के दुःख सों कोई घर में आवे नाहीं। सो एक दिन वह स्त्री ने प्रभुदास सों कही, कहूं तें द्रव्य ल्याव। तब प्रभुदास ने कही, द्रव्य कहां है? मिलेगो तो लाऊंगो। तब स्त्री ने प्रभुदास कों मारयो। प्रभुदास कों रीस चढ़ी। सो स्त्री कों मारयो। तब स्त्री ने चूरी फोरि मूंड़ मुड़ाय गाँव के हाकिम सों कहि आई, मैं यह प्रभुदास की अब स्त्री नाहीं। जो-यह घर में आवेगो तो याके ऊपर मैं मरूंगी। तब प्रभुदास हू आये। सो कहे, मै घर छोड़ि के जात हों। मेरे तेरे वेदावो। या प्रकार वेदावो करिकें गाँव तें

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી, સિંહનંદના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. 'મન્મથમોદા' એનુ નામ છે. કામલીલાની સામગ્રી બધી સિદ્ધ કરે છે અને વિહાર લીલાની વાર્તામાં લલિતાજીથી વાર્તા કરી મગ્ન રહે છે. તેથી એમનું નામ મન્મથમોદા છે. તે સિંહનંદમાં એક ક્ષત્રીના ઘર જન્મ્યા. પછી વર્ષ તેરના થયા ત્યારે એમનું લગ્ન થયું. તે સ્ત્રી મહા કુપાત્ર આવી. બધાને ગાળો દે. જે વસ્તુ મળે તે ચોરીને માબાપને દઇ આવે. એમ કરતાં પ્રભુદાસના મા-બાપે દેહ છોડી. અને બધાં સંબંધી તે સ્ત્રીના દુઃખથી કોઇ ઘરમાં આવે નહીં. પછી એક દિવસ તે સ્ત્રીએ પ્રભુદાસને કહ્યું, કયાંયથી દ્રવ્ય લાવ. ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, દ્રવ્ય કયાં છે? મળશે તો લાવીશ. ત્યારે સ્ત્રીએ પ્રભુદાસને માર્યો. પ્રભુદાસને રીસ ચઢી, તે સ્ત્રીને મારી. ત્યારે સ્ત્રી ચુડી ફોડી માથું મુડાવી ગામના હાકેમને કહી આવી, હું આ પ્રભુદાસની હવે સ્ત્રી નથી. જો આ ઘરમાં આવશે તો એના ઉપર હું મરીશ. ત્યારે પ્રભુદાસ પણ આવ્યા. અને કહ્યું, હું ઘર છોડીને જઉં છું. મારે તારે કોઇ

निकसि गये। सो राजनगर सिकंदरपुर में आये। तहाँ रामदास क्षत्री इनकी ज्ञाति को हुतो, तहाँ उतरे। सो उह रामदास कों मर्यादामार्गीय वैष्णव को संग भयो हतो। सो वहाँ प्रभुदास कछू दिन रहे।

सो श्रीआचार्यजी राजनगर सिकंदरपुर के पास बगीची हती तहां उतरे हे। सो वह बगीची में प्रभुदास आये। सो श्रीआचार्यजी को दरसन करिकें मन में यह आई, जो–इनके सेवक होंई। तब श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज! मोकों सेवक करिये, कृपा करि कें। तब श्रीआचार्यजी ने कही, तेरे रामदास मरजादा मारगीय को संग है। तातें हमारो सेवक मति होउ। तब प्रभुदास ने कही, महाराज! आप कहो तो उह रामदास कों हू आपको सेवक कराउं। तब मोकों सेवक करोगे? मेरो कह्यो रामदास नटेगो नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहे, कहा भयो सेवक कराये? वाको अंगीकार मर्यादा में ही है। परंतु जा, रामदास कों ले आउ। दोउन कों संग ही सेवक करेंगे। तब प्रभुदास रामदास के पास आइ कें कह्यो, श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं। सो पधारे हैं। गांव बाहर बगीची में। सो हम तुम दोऊ जनें सेवक होय तो मिलि के सेवा करें। तब रामदास ने कही, मेरे तो एक वैरागी गुरु है। वाकी कंठी बांधी

દાવો નહી. આ પ્રકારે છૂટાછેડા કરીને ગામથી નિકળી ગયા. તે રાજનગર સિકંદરપુરમાં આવ્યા. ત્યાં રામદાસ ક્ષત્રી એમની જ્ઞાતિનો હતો. ત્યાં ઉતર્યા. તે રામદાસને મર્યાદામાર્ગીય વૈષ્ણવનો સંગ થયો હતો. ત્યાં પ્રભુદાસ થોડાક દિવસ રહ્યા.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રાજનગર સિકંદરપુરની પાસે બગીચી હતી ત્યાં ઉતર્યા હતા. તે બગીચીમાં પ્રભુદાસ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરીને મનમાં એ આવ્યુ, કે એમના સેવક થઇએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી, મહારાજ! મને સેવક કરો, કૃપા કરીને. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તારે રામદાસ મર્યાદામાર્ગીયનો સંગ છે. તેથી અમારો સેવક ન થા. ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપ કહો તો તે રામદાસને પણ આપનો સેવક કરાઉં. ત્યારે મને સેવક કરશો? મારૂં કહ્યું રામદાસ ના નહીં કહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શું થયું સેવક કરાવે? તેનો અંગીકાર મર્યાદામાં જ છે. પરંતુ જા, રામદાસને લઇ આવ. બન્નેને સંગ સેવક કરીશું. ત્યારે પ્રભુદાસે રામદાસની પાસે આવીને કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ છે. તે પધાર્યા છે, ગામ બહાર બગીચીમાં. તો અમે–તમે બન્ને સેવક થઇએ તો મળીને સેવા કરીએ. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, મારે તો

हैं। सो अब दूसरो गुरु कैसे करूं? तब प्रभुदास कहें, अब हमारे तेरे न बनेगी। मेरे वस्त्र–पात्र देहु। तब रामदास ने कही, तुम्हारे लिये सेवक होउंगो। परंतु मैं अपुनी टेव न छोडोंगो। तब प्रभुदास कहे, सेवक तो होऊ। रीति मति करियो। तब रामदास प्रभुदास दोऊ आये। श्रीआचार्यजी न्हवाई के दोऊन कों नाम सुनायें। तब प्रभुदास कों तो श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। रामदास कों न भयो। तब प्रभुदास ने बिनती करी, महाराज! दोउन कों कृपा करिकें निवेदन करावें। तब श्रीआचार्यजी कहें, रामदास कों नाहीं। तब प्रभुदास समझि गये। तब कहें, मोही कों कृपा करिकें करावो। तब श्रीआचार्यजी ने प्रभुदास कों ब्रह्मसंबंध करायो। पाछें भगवद् सेवा की प्रभुदास रामदास हू मिलि कें कही। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही नाहीं। कछू दिन पीछें। यह कहि कें आप तो श्रीगोकुल पधारे। प्रभुदास पुष्टिमार्गी रीति बतावे। रामदास मर्यादामार्ग की रीति करें। ऐसे करत कछू दिन में श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी राजनगर सिकंदरपुर में पधारें। तब रामदासजी ने बिनती करी, महाराज! सेवा पधराय दीजे। तब श्रीगोपीनाथजी ने एक ब्राह्मन के घर श्रीमदनमोहनजी हते सो कछू

એક વૈરાગી ગુરુ છે. તેની કંઠી બાંધી છે. હવે બીજો ગુરુ કેવી રીતે કરૂં? ત્યારે પ્રભુદાસ કહે, હવે અમારે તારે નહીં બને. મારાં વસ્ત્રપાત્ર દે. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, તમારે લીધે સેવક થઇશ. પરંતુ હું મારી ટેવ નહી છોડું. ત્યારે પ્રભુદાસ કહે, સેવક તો થા, રીતિ ન કરીશ. ત્યારે રામદાસ–પ્રભુદાસ બન્ને આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીએ ન્હવડાવીને બન્નેને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે પ્રભુદાસને તો શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. રામદાસને ન થયું. ત્યારે પ્રભુદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! બન્નેને કૃપા કરીને નિવેદન કરાવીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, રામદાસને નહી. ત્યારે પ્રભુદાસ સમજી ગયા. ત્યારે કહે, મને જ કૃપા કરીને કરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રભુદાસને બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી ભગવદ્સેવાનું પ્રભુદાસ, રામદાસે પણ મળીને કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં નાહીં, થોડા દિવસ પછી. એ કહીને આપ તો ગોકુલ પધાર્યા. (પછી) પ્રભુદાસ તો પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ બતાવે. રામદાસ મર્યાદામાર્ગની રીતિ કરે. એમ કરતાં થોડા દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજીના મોટા પુત્ર શ્રીગોપીનાથજી રાજનગર સિકંદરપુરમાં પધાર્યા. ત્યારે રામદાસજીએ વિનતી કરી, મહારાજ! સેવા પધરાવી આપો. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજી એ એક બ્રાહ્મણના ઘરે શ્રીમદનમોહનજી હતા. તે બ્રાહ્મણને કંઇ

ब्राह्मन कों देके दोऊनके माथे पधराये। पाछें श्रीगोपीनाथजी अड़ेल पधारे। सो रामदास मर्यादा मार्ग की रीति आह्वाहन विसर्जन पूजा की रीति करें। पाछें एक दिन प्रभुदास अर्धरात्रि कों अपनी वस्तु ले भाजि चल्यो (क्यों), जो–रामदास के संग कहां तांई माथो पचाऊँ ? याकों तो ज्ञान नाहीं। जेसो यह जेसे हि मर्यादामार्गीय ठाकुर श्रीगोपीनाथजीने पधराइ दिये। तातें तहां तें चले श्रीगोकुल में श्रीआचार्यजी कों दंडौत् किये। तब श्रीआचार्यजी ने कही, प्रभुदास आयो ? तब प्रभुदास ने विनती करी, महाराज! नीठ नीठ दुःसंग तें छूट्यो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, हम तोसों पहले ही कह्यो, उह मर्यादा मार्ग को अधिकारी है। तू पुष्टिमार्गीय है। भली करी संग छोडि के आयो। तब प्रभुदास ने विनती करी, महाराज! अब मोकों चरणारविंद के पास राखो, मैं बहुत संसार में भ्रम्यों। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब हमारे पास रहे सुखेन। तब ता दिन तें प्रभुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के संग ही रहें।

वार्ता–प्रसंग १—**सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधारे। सो विश्रांत घाट पास आय बेठक है तहां संध्यावंदन करत हते। पास चार वैष्णव ठाडे हते। दामोदरदास हरमानी, कृष्णदास**

આપીને બન્નેના માથે પધરાવ્યાં. પછી શ્રીગોપીનાથજી અડેલ પધાર્યા. તે રામદાસ મર્યાદામાર્ગની રીતિ આહ્વાન–વિસર્જન પૂજાની રીતિ કરે. પછી એક દિવસ પ્રભુદાસ અડધી રાત્રિએ પોતાની વસ્તુ લઇને ભાગી ચાલ્યા. (કેમ ?) જે રામદાસના સંગે ક્યાં સુધી માથું પચાવું ? એને તો જ્ઞાન નથી. જેવો આ તેવા જ મર્યાદામાર્ગીય ઠાકુર શ્રીગોપીનાથજીએ પધરાવી આપ્યા. તેથી ત્યાંથી ચાલી શ્રીગોકુલમાં (આવીને) શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, પ્રભુદાસ આવ્યો ? ત્યારે પ્રભુદાસે વિનતી કરી, મહારાજ ! નીઠ નીઠ દુઃસંગથી છૂટ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, અમે તને પહેલાં જ કહ્યું હતુ, કે તે મર્યાદામાર્ગનો અધિકારી છે. તૂ પુષ્ટિમાર્ગીય છે. સારૂં કર્યું, સંગ છોડીને આવ્યો. ત્યારે પ્રભુદાસે વિનતી કરી, મહારાજ ! હવે મને ચરણારવિંદની પાસે રાખો. હું બહુ જ સંસારમાં ભ્રમ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે અમારી પાસે સુખેથી રહે. ત્યારે તે દિવસથી પ્રભુદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સાથે જ રહ્યા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—તે એક દિવસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ મથુરા પધાર્યા. તે વિશ્રાંતઘાટ પાસે આવી બેઠક છે ત્યાં સંધ્યાવંદન કરતા હતા. પાસે ચાર વૈષ્ણવ

मेघन, प्रभुदास और एक वैष्णव मथुरा को हतो। सो तब तहां रूप-सनातन कृष्णचैतन्य के सेवक, श्रीआचार्यजी के पास दरसन करि दंडौत् कियो। पाछें रूप-सनातन नें श्रीआचार्यजी सों पूछ्यो, जो-महाराज! ये वैष्णव कौन हैं? तब श्रीआचार्यजी ने कही, ये हमारे सेवक हैं। तब रूप-सनातन ने कही, महाराज! आपको मारग तो पुष्टि है और ये दुबरावल क्यों है? तब श्रीआचार्यजी ने कही, हम तो इनकों बरजे, जो-यह मारग में मति परो। परंतु ये मेरो कह्यो न मान्यो। ताको फल भोगत हैं। या प्रकार गूढ रीति सों श्रीआचार्यजी कहें, परंतु रूप-सनातन कछू समुझे नाहीं। पाछें रूप-सनातन आज्ञा मांगि श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों गये। तब कृष्णचैतन्य ने पूछी, तुम कहां तें आये? तब रूप-सनातन ने कही, हम व्रज के दरसन करिकें आये हैं। तब कृष्णचैतन्य ने पूछी, वहां श्रीवल्लभाचार्यजी के दरसन भये तुमकों? तब रूप-सनातन ने कही, मथुरा में विश्रांत घाट पर दरसन भये। तब कृष्णचैतन्य नें पूछी, वार्ता को प्रसंग कियो? तब रूप-सनातन ने कही, हम पूछें, आपको मारग पुष्टि, आपुके वैष्णव दुर्बल बहोत? तब आपु कहें, हम तो इनकों बरजें, जो-या मारग में मति परो। सो ये मानें नाहीं

ઉભા હતા. દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ મેઘન, પ્રભુદાસ અને એક વૈષ્ણવ મથુરાનો હતો. ત્યારે ત્યાં રૂપ-સનાતન ચૈતન્યના સેવક શ્રીઆચાર્યજી પાસે (આવી) દર્શન કરીને દંડવત કર્યા. પછી રૂપ-સનાતને શ્રીઆચાર્યજીને પૂછયું, કે મહારાજ! એ વૈષ્ણવ કોણ છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે એ અમારા સેવક છે. ત્યારે રૂપ-સનાતને કહ્યું, મહારાજ! આપનો માર્ગ તો પુષ્ટિ છે અને એ દુબળા કેમ છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, અમે તો એમને રોકયા, કે આ માર્ગમાં ન પડો. પરંતુ એમણે મારૂં કહ્યું ન માન્યું, તેનું ફલ ભોગવે છે. આ પ્રકારે ગૂઢ રીતિથી શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું. પરંતુ રૂપ-સનાતન કંઇ સમજ્યા નહીં. પછી રૂપ-સનાતન આજ્ઞા માંગી શ્રી-જગન્નાથરાયજીના દર્શને ગયા. ત્યારે કૃષ્ણચૈતન્યે પૂછયું, તમે કયાંથી આવ્યા? ત્યારે રૂપ-સનાતને કહ્યું, અમે વ્રજનાં દર્શન કરીને આવ્યા છીએ. ત્યારે કૃષ્ણચૈતન્યે પૂછયું, ત્યાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીનાં દર્શન તમને થયાં? ત્યારે રૂપ-સનાતને કહ્યું, મથુરામાં વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર દર્શન થયાં. ત્યારે કૃષ્ણચૈતન્યે પૂછયું, વાર્તાનો પ્રસંગ કર્યો? ત્યારે રૂપ-સનાતને કહ્યું, અમે પૂછયું, કે આપનો માર્ગ પુષ્ટિ, (અને) આપના વૈષ્ણવ દુર્બલ બહુ જ? ત્યારે આપે કહ્યું, અમે તો એમને રોકયા, કે આ માર્ગમાં ન પડો. તે એમણે

कह्यो, ताको फल भोगत हैं। यह सुनत ही श्रीआचार्यजी को भाव, कृष्णचैतन्य कों एक महूरत लौं मूर्छा आई। ऐसे तीनवार कही, सो तीनों वेर मूर्च्छा आई। पाछें चोथी वार पूछी, तब रूप-सनातन ने कही, अब हमसों कही न जाई। सो कृष्णचैतन्य कछू समुझे।

भावप्रकाश—काहेतें? कछुक श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान हतो। तातें कछुक समुझे। जो-सगरो समुझते तो उनकी देह छूटि जाती। और श्रीआचार्यजी कहें, यह मारग में मति परो। सो कह्यो न मान्यो तब फलदसा कों भोगें। जैसे पंचाध्याई में व्रजभक्तन सों, श्रीठाकुरजी कहें, घर जाउ, परंतु व्रजभक्त यह बात न माने। तब रासलीला के फल कों पाये। सो अब तो मर्यादा रीति सों कहे। काहेते? वेद की मर्यादा यह, जो-सेवक होन आवे तो एक वार ना कहनो। उह सेवक को भाव दृढ़ता देखन कों। पाछें वाके पूरन प्रीति सेवक होन की होय तो सेवक किये वाको फल मिलें। तातें वैष्णव कों ना कहनो। और "यह मारग में मति परो," सो यह मारग व्रजभक्तन को है। जैसे व्रजभक्त सर्व समर्पन करि सरन भये तब खानपान देह-सुख सब छूट्यो। विप्रयोग की फलदसा को भोगत हैं। तातें देह कृष होय विरह के उसास उठें। नेत्रन में जल भराय, कंठ रुकि

કહ્યું નહીં માન્યું. તેનું ફલ ભોગવે છે. એ સાભળતાંજ શ્રીઆચાર્યજીનો ભાવ (હાર્દ), કૃષ્ણચૈતન્યને એક મુહૂર્ત સુધી મૂર્ચ્છા આવી. એમ ત્રણ વાર કહ્યું. તે ત્રણે વાર મૂર્ચ્છા આવી. પછી ચોથી વાર પૂછ્યું. ત્યારે રૂપ-સનાતને કહ્યું, હવે અમારાથી કહ્યું ન જાય. તે કૃષ્ણચૈતન્ય કંઇક સમજ્યા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે કંઈક શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન હતું. તેથી કંઇક સમજ્યા જો બધુ સમજતા તો એમની દેહ છુટી જતી. અને શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ માર્ગમાં ન પડો તે કહ્યું ન માન્યું ત્યારે ફલદશાને ભોગવે (જ) જેમ પંચાધ્યાઈમાં વ્રજભક્તોને શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું ઘર જાવ, પરંતુ વ્રજભક્તોએ એ વાત ન માની ત્યારે રાસલીલાના ફલને પામ્યાં. તે હવે તો મર્યાદા રીતિથી કહે, કેમકે વેદની મર્યાદા એ, કે સેવક થવા આવે તો એકવાર ના કહેવી. તે સેવકના ભાવની દૃઢતા જોવા માટે. પછી તેની પૂર્ણ પ્રીતિ સેવક થવાની હોય તો સેવક કરવાથી તેને ફલ મળે. તેથી વૈષ્ણવને ના કહેવી, અને 'આ માર્ગમાં ન પડો' તે આ માર્ગ વ્રજભક્તોનો છે. જેમ વ્રજભક્તો સર્વ સમર્પણ કરી શરણે થયાં ત્યારે ખાનપાન દેહ સુખ બધું છુટયું. વિપ્રયોગની ફલદશાને ભોગવે છે. તેથી દેહ કૃષ

जाय, सगरि देह में पसीना होय, मूर्छित होई, हसि परे, रुदन करे, निर्त करे इत्यादि भक्ति के लक्षन हैं ।

वार्ता-प्रसंग २—**और प्रभुदास रसोई हाथ सों सदा करते। सो एक दिन रसोई बिगरि गई। दारि काची रही और लीटी जरि गई। तब प्रभुदास के मनमें यह आई, जो-ऐसी बिगरी रसोई श्रीठाकुरजी कों कहा समर्पे ? तातें चरणामृत मिलाइ के लिये ।**

भावप्रकाश—काहेतें ? पुष्टिमार्गीय वैष्णव है। तिनको मन कोमल है। जेसे श्रीठाकुर अत्यंत कोमल है, तेसे भक्तनको मन हू है। तातें यह विचारे, जो-कहा ऐसी सामग्री समर्पों ? अरु दग्ध अन्न को दोष हू है। 'वृन्ताकं च कलिंगं च दग्धान्नं च मसूरिकाः।' इत्यादि विचारि कें श्रीठाकुरजी कों समर्पे नाहीं। और अनप्रसादी को महादोष है। तातें चरणामृत मिलाइ के लिये।

तब श्रीठाकुरजी ने श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-मैं प्रभुदास की वाटि देखी, सो आजु मोकों भोग न धर्‍यो। आपु लिये।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-श्रीठाकुरजी जदपि एक हैं, नंदराजकुमार। परंतु भक्तन के भाव करि कें जितने भक्त हैं तिनके तितने

થાય. વિરહના શ્વાસ ઉઠે. નેત્રોમાં જલ ભરાય. કંઠ રોકાઈ જાય. બધા શરીરમાં પરસેવો થાય. મૂર્ચ્છિત થાય, હસી પડે, રૂદન કરે, નૃત્ય કરે ઇત્યાદિ ભક્તિનાં લક્ષણ છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—અને પ્રભુદાસ રસોઇ સદા હાથથી કરતા. તે એક દિવસ રસોઈ બગડી ગઇ દાળ કાચી રહી, અને લીટી બળી ગઇ. ત્યારે પ્રભુદાસના મનમાં એ આવ્યું, કે એવી બગડી રસોઇ શ્રીઠાકુરજીને શું સમર્પવી ? તેથી ચરણામૃત મેળવીને લીધી.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ છે તેમનુ મન કોમલ છે. જેમ શ્રીઠાકુરજી અત્યંત કોમલ છે તેમ ભક્તોનું મન પણ છે. તેથીએ વિચારે કે હું એવી સામગ્રી સમર્પું ? અને દાઝયા અન્નનો દોષ પણ છે. "વૃન્તાકં ચ કલિંગં ચ દગ્ધાન્નં ચ મસૂરિકાઃ"। ઇત્યાદિ વિચારીને શ્રીઠાકુરજીને સમર્પી નહીં. વળી અનપ્રસાદીનો (પણ) મહાદોષ છે તેથી ચરણામૃત મેળવીને લીધી.

ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે મેં પ્રભુદાસની રાહ જોઇ. તે આજ મને ભોગ ન ધર્યો. પોતે લીધું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ બતાવ્યું, કે યદ્યપિ શ્રીઠાકુરજી એક છે. નંદ-

ठाकुर हैं। सो प्रभुदास के भाव के ठाकुरजी नें कही, जो-प्रभुदास ने भोग नाहीं धर्यो।

तब श्रीआचार्यजी नें प्रभुदास सों कह्यो, तू आजु श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पे बिना क्यों लियो? तब प्रभुदास ने विनती करी, महाराज! दारि काची रही अंगाकरि जरि गई। तातें चरणामृत मेलि कें लियो। तब श्रीआचार्यजी कहे, ऐसी रसोई क्यों करी? श्रीठाकुरजी बड़ी बेरलों बाट देखी। तातें सावधानी सों आछी रसोई करि भोग धरिके लीजो। ता दिन तें प्रभुदास सावधानी सों रसोई करते।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जदपि चरणामृत मिलाय कें लियो सो अन्न दोष मिट्यो। परंतु भगवद् भोग पदारथ न भयो। तातें वैष्णव कों जेसे श्रीठाकुरजी कों भोग धर्यो होय तेसे लेनो। दहीं न्यारो धर्यो होइ तो दही में भात मिलाइ के अपने न लीजें। काहेतें? दूधभात, दहींभात, न्यारे न्यारे भक्तन के भाव की सामग्री हैं। तातें चरणामृत यथा प्रसादी वस्तु पधराय ले, काहू सामग्री में तें अपने भोग अर्थ न लेनो। दासधर्म प्रभु को उच्छिष्ट जैसो अरोगे होई वाही प्रकार को लेनो। पतिव्रता को यह लक्षन है। इत्यादि भाव जताये।

રાજકુમાર, પરંતુ ભક્તોના ભાવથી જેટલા ભક્ત છે તેમના તેટલા ઠાકુર છે. તે પ્રભુદાસના ભાવના ઠાકુરે કહ્યું, કે પ્રભુદાસે ભોગ નહી ધર્યો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રભુદાસને કહ્યું, તેં આજ શ્રીઠાકુરજીને ભોગ સમર્પ્યા વિના કેમ લીધું? ત્યારે પ્રભુદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! દાળ કાચી રહી, અંગાખરી બળી ગઇ. તેથી ચરણામૃત પધરાવીને લીધું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એવી રસોઇ કેમ કરી? શ્રીઠાકુરજીએ બહુ વાર સુધી રાહ જોઈ. તેથી સાવધાનીથી સુંદર રસોઇ કરી ભોગ ધરીને લેજે. તે દિવસથી પ્રભુ સાવધાનીથી રસોઈ કરતા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે યદ્યપિ ચરણામૃત મેળવીને લીધું તે અન્ન-દોષ મટ્યો. પરંતુ ભગવદ્‌ભોગ પદાર્થ ન થયો. તેથી વૈષ્ણવે જેવું શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યું હોય તેવું લેવું. દહીં જુદું ધર્યું હોય તો દહીંમાં ભાત મેળવીને પોતે ન લેવું. કેમકે દૂધભાત, દહીંભાત, અલગ અલગ ભક્તોના ભાવની સામગ્રી છે. તેથી ચરણામૃત જેમ પ્રસાદી વસ્તુ પધરાવી લે. કોઇ સામગ્રીમાંથી પોતાના ભોગ અર્થે ન લેવું. દાસધર્મ પ્રભુનું ઉચ્છિષ્ટ જેવું આરોગ્યું હોય તેજ પ્રકારનું લેવું. પતિવ્રતાનું એ લક્ષણ છે. ઇત્યાદિ ભાવ જણાવ્યા.

वार्ता-प्रसंग ३—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रज में पधारे। सो गोवर्द्धन के पास राधाकुंड स्थल है। तहां सीतकाल के दिन हते। सो बेगहि श्रीआचार्यजी ने रसोई करि भोग धरें, आपु भोजन कर्यो। पाछें प्रभुदास सों कहें, जो-महाप्रसाद ले। तब प्रभुदास नें कही, महाराज ! मैं स्नान नाहीं कियों।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो-श्रीआचार्यजी के सेवक सगरे अपनी न्यारी न्यारी रसोई करते, सो लेते। परन्तु श्रीआचार्यजी श्रीकुंड में स्नान करि, रसोई करि, भोग धरे। सो वह स्थल श्रीस्वामिनीजी को हैं। सो आपुकों बहोत प्रिय है। तातें प्रभुदास ऊपर कृपा करनार्थ श्रीआचार्यजी कहे, महाप्रसाद ले। तब प्रभुदास मर्यादा के वचन कहें, मैं न्हायो नाहीं। ता समें श्रीआचार्यजी पुष्टिलीला में मग्न हे। सो प्रभुदास कों व्रज को स्वरूप दिखाये।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु दोय श्लोक कहिकें व्रजको स्वरूप दिखाये। सो श्लोक—

" वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः।
यत्र वृंदावने तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ १ ॥
जलादपि रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम्।
यत्र वृंदावनं तत्र स्नात्वास्नात्वाकथा कुतः ॥ २ ॥

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—વળી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ વ્રજમાં પધાર્યા તે શ્રીગોવર્દ્ધન પાસ રાધાકુંડ સ્થલ છે, ત્યાં શીતકાલના દિવસ હતા. તે તરત જ શ્રીઆચાર્યજીએ રસોઇ કરી ભોગ ધર્યો. પોતે ભોજન કર્યું. પછી પ્રભુદાસને કહે, કે મહાપ્રસાદ લે. ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મેં સ્નાન નથી કર્યું.

ભાવપ્રકાશ—તેનો આશય એ, કે શ્રીઆચાર્યજીના બધા સેવકો પોતાની અલગ-અલગ રસોઇ કરતા, તે લેતા. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજી-શ્રીકુંડમાં સ્નાન કરી રસોઇ કરી ભોગ ધરે. તે સ્થલ શ્રીસ્વામિનીજીનું છે. તે પોતાને બહુ પ્રિય છે. તેથી પ્રભુદાસ ઉપર કૃપા કરવાને માટે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ. મહાપ્રસાદ લે. ત્યારે પ્રભુદાસે મર્યાદાનાં વચન કહ્યાં. હું ન્હાયો નથી. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી પુષ્ટિલીલામાં મગ્ન છે તે પ્રભુદાસને વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડયું.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોતે બે શ્લોક કહીને વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડે-તે શ્લોક—

' વૃક્ષે વૃક્ષે વેણુધારી પત્રે પત્રે ચતુર્ભુજઃ ' (ઉપર જુઓ)

यह कहें कृपा करिकें। सो प्रभुदास व्रज को स्वरूप अलौकिक देखें।

भावप्रकाश—वृक्ष वृक्ष के नीचे वेणुधारी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर भक्तन के संग लीला करत हैं। ऐसे वृक्ष भगवदीय हैं। तिनके पत्र कैसे हैं? चत्रभुज रूप हैं। तथा वृंदावन के वृक्ष वृक्ष वेणुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप हैं। तिन को आसय, चत्रभुज रूप नारायण पत्र रूप होई आश्रय वृक्षन को कियो है। ऐसो वृंदावन है। सो लक्ष्यालक्ष्य कथा हैं। लौकिक लोगन कों अलक्ष्य है। और भगवदीयन कों स्वरूपात्मक हैं। सो कथा कही न जाई। या वातकों भक्तजन जाने, कृष्ण रूप जाने। कृष्णरूप वृक्ष है सो लोगन कों न दीसें। तैसेहि श्रीवृंदावन की रजसों जल श्रेष्ठ है। और जलतें रज श्रेष्ठ है। तहाँ न्हायवे की कथा कहा कहिये? भावे जलमों न्हाय, भावे रज लगाये। सो रज उड़िकें लागी तब न्हाइवे की अपेक्षा रहि नाहीं। परंतु मर्यादा के लिये न्हानो।

यह सुनिकें प्रभुदास कों अलौकिक श्रीवृंदावन के दरसन भये। तब विना न्हाये महाप्रसाद लिये, श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें। या प्रकार प्रभुदास कों श्रीवृंदावन को अलौकिक स्वरूप वर्णन कियो। जहां वेद-मर्यादा की गम्य नाहीं।

આ કહ્યું કૃપા કરીને. તે પ્રભુદાસે વ્રજનું અલૌકિક સ્વરૂપ જોયું.

ભાવપ્રકાશ—વૃક્ષ વૃક્ષની નીચે વેણુધારી સાક્ષાત્ શ્રીગોવર્દ્ધનધર ભક્તોની સાથે લીલા કરે છે. એવાં વૃક્ષ. ભગવદીય છે. તેમનાં પત્તાં કેવાં છે? ચતુર્ભુજ રૂપ છે. તથા વૃંદાવનનાં વૃક્ષ–વૃક્ષ વેણુધારી શ્રીગોવર્દ્ધનધર રૂપ છે. તેનો આશય, ચતુર્ભુજ રૂપ નારાયણે પત્તાં રૂપ થઈ વૃક્ષોનો આશ્રય કર્યો છે. એવું વૃંદાવન છે. તે લક્ષ્યાલક્ષ્ય કથા છે. લૌકિક લોકોમાં અલક્ષ્ય (ન દેખાય તેવી) છે. અને ભગવદીયોને સ્વરૂપાત્મક છે તે કથા કહી ન જાય. આ વાતને ભક્તજનો (જ) કૃષ્ણરૂપ જાણે. કૃષ્ણરૂપ વૃક્ષ છે તે લોકોને ન દેખાય. તેવીજ રીતે શ્રીવૃંદાવનની રજથી જલ શ્રેષ્ઠ છે. અને જલથી રજ શ્રેષ્ઠ છે. ત્યાં ન્હાવાની કથા શુ કહિએ? ચાહે જલથી ન્હાય, ચાહે રજ લગાવે. તે રજ ઉડીને લાગે ત્યારે ન્હાવાની અપેક્ષા રહે નહીં. પરંતુ મર્યાદાને માટે ન્હાવું.

એ સાંભળીને પ્રભુદાસને શ્રીવૃંદાવનનાં અલૌકિક દર્શન થયાં. ત્યારે વિના ન્હાયે મહાપ્રસાદ લીધો. શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞાથી. આ પ્રકારે પ્રભુદાસ પ્રતિ (શ્રીઆચાર્યજીએ) શ્રીવૃંદાવનનું અલૌકિક સ્વરૂપ વર્ણન કર્યું. જ્યાં વેદ–મર્યાદાની ગમ્ય નથી.

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधर के मंदिर में श्रीगोवर्द्धनधर को शृंगार करत हते। तब यह मनमें आई, जो-आज दहीं होय तो समर्पिये। तब प्रभुदास सों कहे, जा, कहुँ दहीं मिले तो ले आव। तब प्रभुदास चले। सो एक अहीरनी मिली। तब वासों पूछे, तेरे पास दहीं है? तब उन कह्यो, दहीं मीठो सुंदर है। परंतु तू मोकों कहा देयगो? तब प्रभुदास ने कही, दहीं मोकों दे। जो-तू मांगे सो मैं तोकों देऊ। तब अहिरनी ने कही, एक टका दे और कहा तू मोकों मुक्ति देइगो? तब प्रभुदास ने कही, जा, तोकों टका और मुक्ति दोउ दीने। तब अहिरनी ने कही, मैं केसे मानों? तब प्रभुदास ने एक कागद पर लिखि दीनो, जो-दहीं के पलटें मुक्ति दीनी। तब अहिरनी अपने अंचल सों बांधि के अपने घर आई। तब वाने परोसनि सों कही, आजु मैं दहीं के पलटे मुक्ति ले आई हों। तब परोसनि नें कही, अरी जा, तोकों बेरागिया ने ठगि लियो। मुक्ति कहा देयगो? जब वा अहिरनी ने कही, ऐसे मति कहे, उह बड़े महापुरुष हैं। मोकों सांचेही मुक्ति दीनी हैं। मोकों कागद लिखि दियो है। सो मेरे छेडे बांध्यो है। उह झूंठ न बोले। तब उह कह्यो, अब जानि परेगी। पाछें घरि दोय में वाकी देह छूटी।

વાર્તા-પ્રસંગ ૪—વળી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીગોવર્દ્ધનધરના મંદિરમાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો શૃંગાર કરતા હતા. ત્યારે એ મનમાં આવ્યું, કે આજ દહીં હોય તો સમર્પિએ. ત્યારે પ્રભુદાસને કહે, જા, કંઈથી દહીં મળે તો લઇ આવ. ત્યારે પ્રભુદાસ ચાલ્યા. તે એક ભરવાડણી મળી. ત્યારે તેને પૂછયું, તારી પાસે દહીં છે? ત્યારે એણે કહ્યું, દહીં મીઠાં સુંદર છે. પરંતુ તૂ મને શું આપીશ? ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, દહીં મને દે, જે તૂ માગે તે હું તને આપું. ત્યારે ભરવાડણીએ કહ્યું, એક ટકા દે, બીજું શું તૂં મને મુક્તિ આપીશ? ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, જા, તને ટકા અને મુક્તિ બન્ને આપ્યાં. ત્યારે ભરવાડણીએ કહ્યું, હું કેમ માનું? ત્યારે પ્રભુદાસે એક કાગળ ઉપર લખી દીધું, કે દહીના બદલે મુક્તિ આપી. ત્યારે ભરવાડણી પોતાના છેડે બાંધીને પોતાના ઘરે આવી. ત્યારે તેણીએ પાડોશણથી કહ્યું, આજ હું દહીંનાં બદલે મુક્તિ લઇ આવી છું. ત્યારે પાડોશણે કહ્યું, અરી જા, તને વેરાગીઆએ ઠગી લીધી. મુક્તિ શું દેશે? જ્યારે તે ભરવાડણીએ કહ્યું, એમ ન કહે એ મોટા મહાપુરુષ છે. મને સાચે જ મુક્તિ આપી છે. મને કાગળ લખી દીધો છે. તે મારા છેડે બાંધ્યો છે. તે જુઠ ન બોલે. ત્યારે તેણીએ કહ્યું, હવે જાણવું પડશે. પછી ઘડી બેમાં તેની દેહ છુટી. ત્યારે યમદૂતો

तब जमदूत आये। इतने में ही विष्णुदूत आयकें जमदूतन सों कहे, छोड़ि देऊ याकों, मुक्ति करेंगे। जब जमदूतन ने कही, यह मुक्ति को कछु साधन तो कियो नाहीं। मुक्ति कैसे होयगी? तब विष्णुदूत ने कही, याकों श्रीआचार्यजी के सेवक प्रभुदास ने दहीं के पलटे मुक्ति दीनी है। सो ले जायंगे। तब जमदूत फिरि गये। विष्णुदूत याकों विमान पर बैठाय के ले चले। तब इनने कह्यो, मेरी परोसनि कों विश्वास नाहीं है। तातें वासों कहि चलो। तब वासों कहें, श्रीआचार्यजी के सेवक ने दहीं के पलटे याकों मुक्ति दीनी हती, सो याकों ले जात हैं। तब वह अपने घर तें दोरि कें आय देखें तो उह अहिरनी मरी परी हैं। तब उह परोसनि ब्रजवासीन सों कहै, छेड़े एक चिट्ठी बँधि है सो देखो तो। तब वाको अंचल देखे तो दहीं के पलटें मुक्ति लिखी है। तब वाकों विश्वास आयो। तब वे हू चली। मैं हू वा महापुरुष पास जाय मुक्ति लेहु। सो वे श्रीआचार्यजी की सेवकनी होय कृतार्थ भई।

और यहां श्रीआचार्यजी दहीं भोग धरें। तब श्रीनाथजी कहे, दहीं वहोत मीठो है। पाछें मंदिर तें पधारे तब श्रीआचार्यजी कहें, प्रभुदास दहीं वहोत मीठो सुंदर लायो। कहा दियो? तब प्रभु-

---

આવ્યા. એટલામાં જ વિષ્ણુદૂતોએ આવીને યમદૂતોને કહ્યું, છોડી દો એને, (એની) મુક્તિ કરીશું.-જ્યારે યમદૂતોએ કહ્યું, આને મુક્તિનું સાધન તો કંઇ કર્યું નથી. મુક્તિ કેવી રીતે થશે? ત્યારે વિષ્ણુદૂતે કહ્યું, આને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક પ્રભુદાસે દહીંને બદલે મુક્તિ આપી છે. તેથી લઇ જઇશું. ત્યારે યમદૂતો પાછા ગયા. વિષ્ણુદૂત એને વિમાન ઉપર બેસાડીને લઇ ચાલ્યા. ત્યારે એણે કહ્યું, મારી પાડોશણને વિશ્વાસ નથી તેથી તેને કહી ચાલો. ત્યારે તેને કહે, શ્રીઆચાર્યજીના સેવકે દહીંના બદલે આને મુક્તિ આપી હતી તે આને લઇ જઇએ છીએ. ત્યારે તે પોતાના ઘરથી દોડીને આવી જુએ તો તે ભરવાડણી મરી પડી છે. ત્યારે તે પડોશણ વ્રજવાસીઓને કહે, છેડે એક ચિઠ્ઠી બાંધી છે તે જુઓ તો. ત્યારે તેના છેડે દેખે તો દહીંના બદલે મુક્તિ લખી છે. ત્યારે તેને વિશ્વાસ આવ્યો. ત્યારે તે પણ ચાલી. (જે) હું પણ તે મહાપુરુષ પાસે જઇ મુક્તિ લઉં. પછી તે શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની થઇ કૃતાર્થ થઇ.

અહીં શ્રીઆચાર્યજીએ દહીં ભોગ ધર્યું. ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, દહીં બહુ મીઠું છે. પછી મંદિરથી પધાર્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, પ્રભુદાસ! દહીં બહુ જ મીઠું સુંદર લાવ્યો. શું આપ્યું? ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, મહારાજ! બહુ મોઘું

दास ने कही, महाराज ! महा मोंघो आयो है । दहीं के पलटें मुक्ति दीनी है । तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्ति क्यों न दीनी ? श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगे, मुक्ति तुच्छ कहा दीनी ? तब प्रभुदास कहें, महाराज ! मुक्ति उनने मांगी । जो भक्ति मांगती तो भक्ति देतो । वार्ता ॥ २० ॥

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो–ता दिन दान एकादसी हती । सो वा दिना दहीं अवश्य चहिये । तातें श्रीआचार्यजी कहें, आजु दहीं आवश्यक चाहिये । और श्रीआचार्यजी के सेवक को माहात्म्य दिखायो, जो–भक्ति मुक्ति देवे को सामर्थ्य हैं ।

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, प्रभुदास भाट, सिंहनंद में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये लीला में ललिताजी की सखी है । कलहंसी इनको नाम है । सो ये सिंहनंद में एक भाट हतो ताके घर प्रगटे । सो प्रभुदास को पिता देसाधिपति के आगे चलतो । देसाधिपति के कवित करतो । द्रव्य बहुत हतो । सो प्रभुदास बरस दस के भये । सो महा मूरख भये । पिता ने बहुत

આવ્યું છે. દહીંના બદલે મુક્તિ આપી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે. ભક્તિ કેમ ન આપી ? શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી આરોગ્યા. મુક્તિ તુચ્છ શું દીધી ? ત્યારે પ્રભુદાસ કહે, મહારાજ ! મુક્તિ એણે માંગી. જો ભક્તિ માંગતી તો ભક્તિ આપતે. વાર્તા ॥૨૦॥

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ એ, કે તે દિવસ દાન એકાદશી હતી. તેથી તે દિવસે દહીં અવશ્ય જોઇએ. તેથી શ્રીઆચાર્યજી કહે, આજ દહી અવશ્ય જ જોઇએ. વળી શ્રીઆચાર્યજીના સેવકનું માહાત્મ્ય દેખાડયું, કે ભક્તિ મુક્તિ દેવાનું તેમનામાં સામર્થ્ય છે.

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પ્રભુદાસ ભાટ, સિંહનંદમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—તે લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. કલહંસી એનું નામ છે. તે સિંહનંદમાં એક ભાટ હતો તેના ઘરે પ્રકટયા. તે પ્રભુદાસનો પિતા દેશાધિપતિની આગળ ચાલતો. દેશાધિપતિનાં કવિત્ત કરતો. દ્રવ્ય બહુ જ હતું. તે પ્રભુદાસ વર્ષ દશના થયા. તે મહા મૂર્ખ થયા. પિતાએ બહુ ભણાવ્યા.

पढ़ायो। परंतु कछु पढ़े नाहीं। पाछें पिता की देह छूटी। पाछे जब प्रभुदास बरस पंद्रह के भये तब दिल्ली में आये। सो देसाधिपति पास गये। तब देसाधिपति ने कह्यो, कछु कवित्त कहो। तब प्रभुदास ने कही, कवित्त किन कों कहत है? मैं तो जानत नाहीं। और मैं कछू तुम तें चाहत नाहीं। ठाकुर खायवे कों देत है। कहा तू पालेगो? तब देसाधिपति ने कही, याकों गाम बाहिर काढ देउ। तब ये दिल्ली तें उदास ह्वै कें चले। सो मथुरा आय विश्रांत घाट पर रोवन लागे। जो–भगवान मोकों मूरख क्यों किये? अब मैं कहां जाऊं? जहां जाऊं तहां आदर सनमान तो कोइ करत है नाहीं। या प्रकार चिंता में हते। ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधारे, विश्रांत घाट पर। तब आपु दैवी जानि कें कहें, प्रभुदास! तू रोवत क्यों है, न्हाय ले। तब प्रभुदास न्हाये। तब श्रीआचार्यजी नाम निवेदन करायें। तब प्रभुदास कों अपुने स्वरूप को और श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। ताही समय दंडौत् करि यह एक दोहा किये—

"जब तें बिछुरयो नाथ सों परयो जगत भव कूप।
ता हित वल्लभ प्रगट ह्वै दरसायो निज रूप।"

પરતુ કંઈ ભણ્યા નહી. પછી પિતાની દેહ છુટી. પછી જ્યારે પ્રભુદાસ વર્ષ પંદરના થયા ત્યારે દિલ્હીમાં આવ્યા. તે દેશાધિપતિ પાસે ગયા. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યુ, કંઇ કવિત્ત કહો, ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યુ, કવિત્ત કોને કહે છે તે હુ તો જાણતો નથી. અને હુ કંઇ તમારાથી ચાહતો નથી. ઠાકુર ખાવાને દે છે. શું તૂ પાલીશ? ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, એને ગામ બહાર કાઢી દો. ત્યારે એ દિલ્હીથી ઉદાસ થઇને ચાલ્યા. તે મથુરા આવી વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર રોવા લાગ્યા, કે ભગવાને મને મૂર્ખ કેમ કર્યો? હવે હુ કયાં જાઉં? જ્યાં જાઉં ત્યાં આદર સન્માન તો કોઇ કરતું નથી. આ પ્રકારે ચિંતામાં હતા. તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી મથુરા પધાર્યા વિશ્રામ ઘાટ ઉપર. ત્યારે પોતે દૈવી જાણીને કહે, પ્રભુદાસ! તૂ રૂવે કેમ છે? ન્હાઇ લે. ત્યારે પ્રભુદાસ ન્હાયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ–નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે પ્રભુદાસને પોતાના સ્વરૂપનું અને શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. તેજ સમયે દંડવત્ કરી આ એક દોહો કર્યો—

"જબ તેં બિછુરયો નાથસોં, પર્યો જગત ભવ કૂપ।
તા હિત વલ્લભ પ્રગટ વ્હૈ, દરસાયો નિજ રૂપ॥"

यह सुनिकें श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भये। तब कहें, प्रभुदास! तोकों यह मारग स्फुरयो। अब तुम भगवत् सेवा करो। तब प्रभुदास ने कही, महाराज! यह सब आपु की कृपा, केवल प्रमेय बल तें आप मोकों अंगीकार किये। मो बरोबर दुःखी कोऊ न हतो। और छिन में मोकों सुख के समुद्र को अनुभव करायो। अब यह बिनती है, जो–मोकों कबहू दुःसंग न रहे। एक दृढ़ विश्वास आपु के चरन को रहे। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहें, जा, ऐसोइ होइगो। पाछें मथुरा में एक स्वरूप न्योछावरि देकें लालजी कों ले आये। सो श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय प्रभुदास के माथे पधराय दिये। और प्रसन्न ह्वे के कहे, तोकों सगरी रीति आपुहि फूरेगी। तातें बेगे अपुने गाँव जाय सेवा करो। तब प्रभुदास दंडौत् करि श्रीठाकुरजी कों पधराय कें सिंहनंद आये। सो घर में कुटुंब को संग छोडि कें न्यारो घर एक ले भगवद् सेवा करन लागे। ब्याह तो इनको भयो नाहीं।

वार्ता–प्रसंग १—सो प्रभुदास सदा एकरस प्रीतिसों सेवा करते। रात्र कों वैष्णव को संग करे। द्रव्य घर में बहुत हतो। सो भगवद् सेवा, गुरु सेवा, वैष्णव सेवा, में लगाये। और लौकिक वैदिक सब

એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે કહે, પ્રભુદાસ તને આ માર્ગ સ્ફૂર્યો. હવે તમે ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, મહારાજ! આ બધી આપની કૃપા, કેવલ પ્રમેય બલથી આપે મને અંગીકાર કર્યો. મારા બરાબર દુઃખી કોઇ ન હતો. અને ક્ષણમાં મને સુખના સમુદ્રનો અનુભવ કરાવ્યો. હવે એ વિનતી છે, કે મને ક્યારેય દુઃસંગ ન રહે. એક દૃઢ વિશ્વાસ આપના ચરણનો રહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, જા એમજ થશે પછી મથુરામાં એક સ્વરૂપ લાલજીનું ન્યોછાવર દઇને લઇ આવ્યા. તેને શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવીને પ્રભુદાસના માથે પધરાવી દીધું. અને પ્રસન્ન થઇને કહે, તને બધી રીતિ આપ મેળે સ્ફૂરશે. તેથી જલ્દી તારા ગામ જઇ સેવા કર. ત્યારે પ્રભુદાસ દંડવત કરી, શ્રીઠાકુરજીને પધરાવી સિંહનંદ આવ્યા. તે ઘરમાં કુટુંબનો સંગ છોડીને અલગ ઘર એક લઇ ભગવદ્સેવા કરવા લાગ્યા. લગ્ન તો એમનું થયું ન હતું.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—તે પ્રભુદાસ સદા એક રસ પ્રીતિથી સેવા કરતા. રાત્રિએ વૈષ્ણવોનો સંગ કરે. દ્રવ્ય ઘરમાં ઘણું હતું. તે ભગવદ્સેવા, ગુરુસેવા, વૈષ્ણવસેવામાં લગાડ્યું. અને લૌકિક વૈદિક બધું છોડી દીધું. એમ કરે એટલે વૈષ્ણવ વખાણે

छोडि दिये। ऐसे करे, सो वैष्णव सराहें और ज्ञाति के निंदा करें। परंतु वे काहु की न सुने। ऐसे करत वृद्ध भये। पाछें सरीर में असावधानता भई। सावधानता छूटे। तब सगरे ज्ञाति के मिलि कें पृथोदक तीरथ ले आये। तब तहां सावधानता भई। आंख खोलि देखें तो पृथोदक तीर्थ है। तब सब सों कहे, इहां क्यों मोकों ल्याये? तब सगरे ज्ञाति के कहें, यह पृथोदक तीर्थ है। तुम विकल भये तब ल्याये। तब प्रभुदास कहे, यह पृथोदक कहा मोंकों कृतार्थ करेगो? हों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को सेवक हों। तुम मोकों बरस लों इहां राखोगे तोहू मेरी देह इहां न छूटेगी। तातें तुम मोकों सिंहनंद ले चलो। मैं श्रीठाकुरजी के चरणारविंद के दरसन करोंगो। तब वहां मेरी देह छूटेगी। यह प्रभुदास नें कही। परंतु ज्ञाति के सगरे संबंधी माने नाहीं। प्रभुदास कों दिन पांच-सात पृथोदक में राखे। तब प्रभुदास आछे भये, चलन फिरन लागे। संबंधी हारिके प्रभुदास कों घर लाये। तब प्रभुदास न्हाय कें विनती किये, महाराज! श्रीआचार्यजी ने तुमकों मेरे माथे पधराये हैं। सो ये बावरे लोग तुम्हारे चरणारविंद को आश्रय छुडाई के पृथोदक को आश्रय करायो। सो आपु ऐसो क्यों करो, जो-मेरी देह उहां छूटे? या

અને જ્ઞાતિના નિંદા કરે. પરંતુ એ કોઇની ન સાંભળે. એમ કરતાં વૃદ્ધ થયા. પછી શરીરમાં અસાવધાનતા થઈ. સાવધાનતા છુટી. ત્યારે બધા જ્ઞાતિના મળીને 'પૃથોદક તીર્થ' લઈ આવ્યા. ત્યારે ત્યાં સાવધાનતા થઈ. આંખ ખોલી જુએ તો પૃથોદક તીર્થ છે. ત્યારે બધાને કહ્યું, મને અહીં કેમ લાવ્યા? ત્યારે બધા જ્ઞાતિના કહે, આ પૃથોદક તીર્થ છે. તમે વિકલ થયા ત્યારે લાવ્યા. ત્યારે પ્રભુદાસ કહે, આ પૃથોદક શું મને કૃતાર્થ કરશે? હું તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સેવક છું. તમે મને વર્ષ (એક) પર્યંત અહીં રાખશો તો પણ મારો દેહ અહીં નહીં છૂટે. તેથી તમે મને સિંહનંદ લઈ ચાલો. હું શ્રીઠાકુરજીનાં ચરણારવિંદનાં દર્શન કરીશ. ત્યારે ત્યાં મારો દેહ છુટશે. એમ પ્રભુદાસે કહ્યું. પરંતુ જ્ઞાતિના બધા સંબંધી માને નહીં. પ્રભુદાસને દિવસ પાંચ-સાત પૃથોદકમાં રાખ્યા. ત્યારે પ્રભુદાસ સારા થયા. ચાલવા ફરવા લાગ્યા. સંબંધી હારીને પ્રભુદાસને ઘર લાવ્યા. ત્યારે પ્રભુદાસે ન્હાઇને વિનંતી કરી, મહારાજ! શ્રીઆચાર્યજીએ તમને મારા માથે પધરાવ્યા છે. તે આ બાવરા લોકો તમારા ચરણારવિંદનો આશ્રય છોડાવીને પૃથોદકનો આશ્રય કરાવ્યો. પરંતુ આપ એવું કેમ કરો કે મારો દેહ ત્યાં છૂટે? એ પ્રકારે શ્રીઠાકુરજીને વિનંતી

प्रकार श्रीठाकुरजी सों बिनती करि सिंहनंद में एक वैष्णव के माथे पधराइ, दंडौत करि मंदिर के बाहर आइ, सगरे वैष्णवन सों भगवद् स्मरन करि देह छोड़ि दिये। तब सिंहनंद के सगरे वैष्णव जहां मिलि कें भगवद् वार्ता करे तहां प्रभुदास की बड़ाई करें, जो-प्रभुदास धन्य हैं। बड़े भगवदीय, जो-तीर्थ को आश्रय न किये। श्रीठाकुरजी को आश्रय किये।

सो सिंहनंद में एक कीरत चोधरी हतो।

भावप्रकाश—सो कंस को धोबी हतो। श्रीठाकुरजी ने वाके वस्त्र मथुरा में लूटे हते। ताको औतार हतो।

सो उह वैष्णव के पास आय कें निंदा करन लाग्यो, जो-प्रभुदास पृथोदक तीर्थ तें फिरि आयकें हिडंब देश में देह छोड़ी। तिनकी बड़ाई क्यों करत हो? तब गांव के चोधरी जानि वैष्णव चुप ह्वै रहे। या प्रकार दोइ चार दिन निंदा करी। सो एक दिन रात्रि कों सोयो हतो सो चारि जने आयकें मुगदर ले, कीरत चोधरी कों खाट तें ओंधो पटकि दियो। मारन लगे। तब कीरत चोधरी ने कही, तुम मोकों क्यों मारत हो? तुम्हारो कहा बिगार्‍यो है? तब वे चारों विष्णुदूत हतें सो कहें, तू प्रभुदास की निंदा क्यों करत है?

કરી, સિંહનંદમાં એક વૈષ્ણવને માથે પધરાવી, દંડવત્ કરી, મંદિરની બહાર આવી સઘળા વૈષ્ણવોને ભગવદ્સ્મરણ કરી દેહ છોડી દીધી. ત્યારે સિંહનંદના સઘળા વૈષ્ણવ જ્યાં મળીને ભગવદ્વાર્તા કરે ત્યાં પ્રભુદાસની વડાઈ કરે. કે પ્રભુદાસ ધન્ય છે. મોટા ભગવદીય, કે તીર્થનો આશ્રય ન કર્યો, શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય કર્યો.

તે સિંહનંદમાં એક કીરત ચોધરી હતો.

ભાવપ્રકાશ—તે કંસનો ધોબી હતો. શ્રીઠાકુરજીએ એનાં વસ્ત્ર મથુરામાં લૂટયાં હતાં. તેનો અવતાર હતો.

તે એ વૈષ્ણવોની પાસે આવીને નિંદા કરવા લાગ્યા. કે પ્રભુદાસ પૃથોદક-તીર્થથી ફરી આવીને હિડંબ દેશમાં દેહ છોડ્યો. તેમની વડાઇ કેમ કરો છો? ત્યારે ગામનો ચોધરી જાણી વૈષ્ણવ ચુપ થઈ રહ્યા. એ પ્રકારે બે ચાર દિવસ નિંદા કરી. તે એક દિવસ રાત્રિએ સૂતો હતો ત્યારે ચાર જણા આવીને મુગદર લઈ કીરત ચોધ-રીને ખાટથી ઉંધો પછાડી દીધો. (પછી) મારવા લાગ્યા. ત્યારે કીરત ચોધરીએ કહ્યું, તમે મને કેમ મારો છો? તમારૂં શું બગાડયું છે? ત્યારે તે ચારે વિષ્ણુદૂત હતા તે કહે, તૂ પ્રભુદાસની નિંદા કેમ કરે છે? તેથી આજ તને મારીને તારૂં હાડ

तातें आजु तेरो हाड चूर-चूर करेंगे, मारिके। तब कीरत चोधरी हाहा खाय नाक घसिकैं कही, अब मैं प्रभुदास की निंदा न करूंगो, बड़ाई करूंगो। तुम मोकों मति मारो। तब विष्णुदूत कहे, आजु छोड़त है, परंतु अब कबहू निंदा करेगो तो तोकों न छोड़ेंगे। यह कहि विष्णुदूत गये। तब दूसरे दिन वैष्णव मिलिकें प्रभुदास की बडाई करत हते तहां कीरत चोधरी आयो। तब सगरे वैष्णव चुप ह्वै रहे। तब कीरत चोधरी ने कही, वैष्णव! तुम कहे सो सांच, प्रभुदास बड़े भगवदीय हे। उनकों तीर्थ सों कहा काम? उनकों श्रीठाकुरजी को आश्रय है। या प्रकार बडाई बहोत करी। तब वैष्णव चकित होय रहे। और पूछी, जो-तुम तो पहले निंदा करत हते और आजु बहोत बडाई करत हो ताको कारन कहा? तब कीरत चोधरी ने अपनी पीठि दिखाई। और कहे, जो-चारि जने मोकों रात्रिकों बहुत मारें और कहे, जो-तू प्रभुदास की निंदा क्यों करत है? तातें वे बडे भगवदीय हते। तुम सुखेन उनकी बड़ाई करो। तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होइ बड़ाई करन लागे। सो प्रभुदास ऐसे भगवदी हते।

वार्ता ॥ २१ ॥

भावप्रकाश—यह प्रभुदास की वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-पुष्टि-

---

ભાંગીને ભૂકા કરીશું. ત્યારે કીરત ચોધરીએ આજીજી કરી નાક ઘસીને કહ્યું, હવે હું પ્રભુદાસની નિંદા નહીં કરૂં. વખાણ કરીશ. તમે મને ન મારો. ત્યારે વિષ્ણુદૂત કહે, આજ છોડીએ છીએ. પરંતુ હવે ક્યારેય નિંદા કરીશ તો તને નહી છોડીએ. એમ કહી વિષ્ણુદૂત ગયા. ત્યારે બીજા દિવસે વૈષ્ણવો મળીને પ્રભુદાસની વડાઇ કરતા હતા ત્યાં કીરત ચોધરી આવ્યો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો ચુપ થઇ રહ્યા. ત્યારે કીરત ચોધરીએ કહ્યું, વૈષ્ણવ! તમે કહ્યું તે સાચું છે. પ્રભુદાસ મોટા ભગવદીય છે. એમને તીર્થથી શું કામ? એમને શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય છે (હતો), એ પ્રકારે વડાઇ ઘણી કરી. ત્યારે વૈષ્ણવ ચકિત થઇ રહ્યા. અને પૂછ્યું, કે તમે તો પહેલાં નિંદા કરતા હતા અને આજે બહુ વડાઇ કરો છો તેનું કારણ શું? ત્યારે કીરત ચોધરીએ પોતાની પીઠ દેખાડી. અને કહ્યું, કે ચાર જણે મને રાત્રિએ બહુ માર્યો અને કહ્યું, કે તૂ પ્રભુદાસની નિંદા કેમ કરે છે? તેથી તે મોટા ભગવદીય હતા. તમે સુખેથી એમની વડાઇ કરો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થઇ વડાઇ કરવા લાગ્યા. તે પ્રભુદાસ એવા ભગવદીય હતા.

વાર્તા ॥૨૧॥

ભાવપ્રકાશ—એ પ્રભુદાસની વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત થયો, કે પુષ્ટિમાર્ગીય

मार्गीय वैष्णव कों कोई तीर्थ को आश्रय न करनो। श्रीआचार्यजी को आश्रय राखनो। और भगवदीय की निंदा करे, जो-याहू लोक में दुःख पावें। मरें तब नरक में जाइ। काहेतें? भगवान कों भगवदीय प्रिय हैं। अपुनो अपराध सहे परंतु भगवदीय को अपराध नहीं सहि सकें।

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पुरुषोत्तमदास स्त्री-पुरुष क्षत्री हते, आगरे में राजघाट पर रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये पुरुषोत्तमदास लीला में श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं। पुरुषोत्तमदास को नाम माधवी, इनकी स्त्री को नाम मालती है। सो ये आगरे में राजघाट पर दोय क्षत्री के घर पास हते। तहां जन्म दोउ लिये। सो उन दोय क्षत्री के परस्पर बहोत मित्रता हती। सो दोऊ जने कही, अपनें बेटा, बेटी को विवाह करें तो आछो। सो दोऊ के दोऊ भये। तब विवाह किये। पाछें वरस दिन के भीतर दोऊ के पिता की देह छूटी। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आगरे पधारे। सो ता समय पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री बारी पर बेठें हते। सो श्रीआचार्यजी को दरसन होत ही दोऊ आपस में बतराये। जो-इनकी सरनि

વૈષ્ણવે કોઇ તીર્થનો આશ્રય કરવો નહી. શ્રીઆચાર્યજીનો આશ્રય રાખવો અને ભગવદીયની નિંદા કરે તો આ લોકમાં પણ દુઃખ પામે (ને) મરે ત્યારે નર્કમાં જાય; કેમકે ભગવાનને ભગવદીય પ્રિય છે. પોતાનો અપરાધ સહે પરંતુ ભગવદીયનો અપરાધ નથી સહી શકતા.

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પુરુષોત્તમદાસ, સ્ત્રી-પુરુષ ક્ષત્રી હતા, આગરામાં રાજઘાટ ઉપર રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ પુરુષોત્તમદાસ લીલામાં શ્રીચદ્રાવલીજીની અંતરંગ સખી છે પુરુષોત્તમદાસનું નામ માધવી, એમની સ્ત્રીનું નામ માલતી છે. તે આગરામાં રાજઘાટ ઉપર બન્ને ક્ષત્રીના ઘર પાસ હતાં. ત્યાં બન્નેએ જન્મ લીધો. તે બન્ને ક્ષત્રીને પરસ્પર બહુ જ મિત્રતા હતી. તે બન્ને જણાએ કહ્યું, આપણાં બેટા બેટીનો વિવાહ કરીએ તો સારૂં. તે બન્નેને બન્ને થયાં. ત્યારે વિવાહ કર્યો. પછી વર્ષ દિવસની અંદર બન્નેના પિતાની દેહ છુટી. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી આગ્રા પધાર્યા. તે સમયે પુરુષોત્તમદાસ અને એમની સ્ત્રી બારી ઉપર બેઠાં હતાં. તે શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થતાંજ બન્નેએ આપસમાં વાતો કરી, કે

जैये। सो पुरुषोत्तमदास दौरिकें उछंडे माथें श्रीआचार्यजी कों दंडौत् किये। और विनती किये, महाराज! हमकों कृपा करिकें सरनि लीजिये। मेरे घर पधारिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम अड़ेल में आइयो। श्रीगुसांईजी पास नाम पाइयो। तब पुरुषोत्तमदास नें कही, महाराज! श्रीगुसांईजी में और आप में कहा भेद है? तातें आपु सेवक करिये। सरीर को कहा भरोसो है। पाछें आपुके दरसन दुर्लभ हैं। या प्रकार दैवी जीव है सो स्वरूप को ज्ञान भयो। तब श्रीआ-चार्यजी पुरुषोत्तमदास के घर पधारें। पुरुषोत्तमदास कों और इनकी स्त्री कों नाम निवेदन करायें। तब पुरुषोत्तमदास ने और इनकी स्त्री ने विनती करी, महाराज! अब हमकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवद् सेवा करो। तब पुरुषोत्तमदास नें कही, महाराज! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिये। सेवा करें। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम्हारें माथे कलंक आवेगो। सो तुम गंगा न्हान कों जैयो। तब अड़ेल आवोगे तब तुम्हारे माथे श्रीठाकुरजी पधराइ देइंगे। अबहि तुम्हारे दोऊ जने की माता हैं। सो आसुरी जीव हैं। सो क्लेश करेंगी। तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित कहें, माता तो हम पर दोउ की बहोत हित करत है। सो क्लेश कैसे होइगो? तब श्रीआचार्यजी कहें, अबलौं तुम वैष्णव न हतें। तातें

એમની શરણે જૈયે. પછી પુરુષોત્તમદાસ દોડીને વિખરેલા વાળે ઉઘાડે માથે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કર્યાં. અને વિનંતી કરી, મહારાજ! અમને કૃપા કરીને શરણે લો. મારા ઘરે પધારો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે અડેલમાં આવજો, શ્રીગુસાંઇજી પાસે નામ પામજો. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસે કહ્યું, મહારાજ! શ્રીગુસાંઇજીમાં અને આપમાં શો ભેદ છે? તેથી આપ સેવક કરો. શરીરનો શો ભરોસો છે? પછી આપનાં દર્શન દુર્લભ છે. આ પ્રકારે દૈવી જીવ છે તેથી સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પુરુષોત્તમદાસના ઘરે પધાર્યા. પુરુષોત્તમદાસને તથા એમની સ્ત્રીને નામ નિવેદન કરાવ્યાં, ત્યારે પુરુષોત્તમદાસે અને એમની સ્ત્રીએ વિનંતી કરી, મહારાજ! હવે અમને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે પુરુષોત્ત-મદાસે કહ્યું, મહારાજ! શ્રીઠાકુરજી પધરાવી આપો, સેવા કરીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમારા માથે કલંક આવશે. તે તમે ગંગા ન્હાવાને જજો. તે સમયે અડેલ આવશો ત્યારે તમારા માથે શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઇશું. હજુ તમારે બન્ને જણાની માતાઓ છે તે આસુરી જીવ છે. તે કલેશ કરશે. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસ સ્ત્રી સહિત કહે, માતા તો અમારી બન્નેની અમારા ઉપર ઘણો જ સ્નેહ કરે છે.

प्रीति करत हैं। वैष्णव भये सुनेंगी तब देखोगे। तातें हमं इहां ते बेगे पधारेंगे। क्लेश मोकों भावत नाहीं। तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित डरपिके बेग ही भेट जो बनि आई सो करी। श्रीआचार्यजी कों बिदा किये। श्रीआचार्यजी क्लेश जानि ततकाल अड़ेल पधारे। सो पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री डरपि कें तीन दिनलों अपनी माता कों वैष्णव भये न बतायें। कोरो दूध ल्याय के पीके रहें। तब पुरुषोत्तमदास की माता नें गरे में माला देखी, तब कह्यो, बेटा! गरे में माला कैसी? आपुने क्षत्री जनेऊ सर्वोपरि हैं। माला कैसी? तब पुरुषोत्तमदास बोले नाहीं। तब वह पुरुषोत्तमदास की स्त्री को माथो गरो उघारिकें देख्यो। सो माला देखिके बहोत रोई। कह्यो, ये स्त्री–पुरुष दोउ वैरागी भये। पाछें जाय के पुरुषोत्तमदास की माता नें पुरुषोत्तमदास की स्त्री की माता सों कह्यो, जो–तेरी बेटी और मेरो बेटा दोऊ माला पहिरी हैं। दोऊ वैरागी भये, अब कहा करनो? तब उननें कही, चलो इनकी माला उतराउ, नाहीं तो दोऊ मरेंगे। सो दोऊ आयके स्त्री पुरुष सों कहें, जो–याहि छिन माला दोऊ उतारो। नाहीं तो दोऊन की हत्या लेऊगे। तब पुरुषोत्तमदास ने दस–बीस क्षत्री सगे संबंधी बुलाय कें

તે ક્લેશ કેમ થશે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હજુ સુધી તમે વૈષ્ણવ ન હતાં તેથી પ્રીતિ કરે છે. વૈષ્ણવ થયાં સાંભળશે ત્યારે જોશો. તેથી અમે અહીંથી જલ્દી પધારીશું. ક્લેશ મને ગમતો નથી. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસ સ્ત્રી સહિત ડરીને (તેમણે) જ્હેલા જ ભેટ જે બની આવી તે કરી. (પછી) શ્રીઆચાર્યજીને વિદાય કર્યા. શ્રીઆ-ચાર્યજી ક્લેશ જાણી તત્કાલ અડેલ પધાર્યા. તે પુરુષોત્તમદાસ અને એમની સ્ત્રી ડરીને ત્રણ દિવસ સુધી પોતાની માતાને (પોતે) વૈષ્ણવ થયા (તે) જણાવ્યું નહીં. કોરૂં દૂધ લાવીને પીને રહ્યાં. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસની માતાએ ગળામાં માલા દેખી. ત્યારે કહ્યું, બેટા! ગળામાં માળા કેવી? આપણે ક્ષત્રી (છીએ) (તેને તો) જનોઇ સર્વોપર છે. માલા કેવી? ત્યારે પુરુષોત્તમદાસ બોલ્યા નહીં. ત્યારે તેણે પુરુષોત્તમ-દાસની સ્ત્રીનું માથું ગળું ઉઘાડીને જોયું. તે માળા જોઇને બહુ જ રોઇ. કહ્યું, એ સ્ત્રી–પુરુષ બન્ને વૈરાગી થયાં. પછી જઇને પુરુષોત્તમદાસની માતાએ પુરુષોત્તમ-દાસની સ્ત્રીની માતાને કહ્યું, કે તારી બેટી અને મારો બેટા બન્નેએ માલા પહેરી છે. બન્ને વૈરાગી થયાં હવે શું કરવું? ત્યારે તેણે કહ્યું, ચાલો એમની માલા ઉતરાવો. નહીં તો બન્ને મરીશું. પછી બન્નેએ આવીને સ્ત્રી–પુરુષને કહ્યું, કે આજ ક્ષણે બન્ને માલા ઉતારો. નહી તો બન્નેની હત્યા (તમને) લાગશે. ત્યારે

सबके आगें माता सों कही, जो–यह माला हमारे सिर के साटे हैं। माथो जाय तो चिंता नाहीं परंतु माला तो न छोड़ेंगे। तातें तुम्हारो माला सों कहा काम है? तुम्हारो मन होय तो हमारे भेले रहो, चहिये सो लेहु और कहो तो तुमकों न्यारो घर करिकें देय, मनुष्य चाकर रहेगो। जो तुमकों चहिये सो लेहु। हम सों बनेगी सो तुम्हारी टहल करेंगे। चाहो तुम याहि घर में रहो। हम न्यारो घर करिकें रहें। तुम कहो तेसे करें। क्लेश मति करो। परंतु हम माला सर्वथा न छोड़ेंगे। और तुम्हारे हाथ को छुयो खानपान न करेंगे। तुम माला पहिरो, वैष्णव होउ, तब तुम्हारे हाथको पानी काम आवें। यह सुनिके दोउ की माता क्रोध करि कें कह्यो, जो–तुम दोउ वेरागी भये (अब) हमहू कों वेरागी करत हों? हम पाले हैं, अब हम चमार–भंगी ठेहरे तुमारे लेखे, जो–हमारो छुयो जल न लोगे! हम दोउ तुमारे ऊपर मरेंगी। या प्रकार पांच दिनलों जल कोइ न लियो। सगरे सगे संबंधी गांव को हाकिम हू आयकें सबकों समुझायो। परंतु दोउ न माने। सो रात्रि कों पुरुषोत्तमदास स्त्री–पुरुष सोय गये, तब दोऊ की माता घर में कूप हतो तामें गिरि परी, सो देह छूटी गई। सवेरे दोऊन को संस्कार पुरुषोत्तमदास ने

પુરુષોત્તમદાસે દશ–વીસ ક્ષત્રી સગાં–સંબંધી બોલાવીને બધાની આગળ માતાને કહે, કે આ માલા અમારા શિરના સાટે છે, માથુ જાય તો ચિંતા નહી પરંતુ માલા તો નહી છોડીએ. તેથી તમારે માળાથી શુ કામ છે? તમારૂ મન હોય તો અમારા ભેગાં રહો, જોઇએ તે લો, અને કહો તો તમને અલગ ઘર કરી દે. મનુષ્ય–ચાકર રહેશે. જે તમને જોઇએ તે લો. અમારાથી બનશે તે તમારી ટહેલ કરીશું. ભાવે તમે આજ ઘરમાં રહો. અમે અલગ ઘર કરીને રહીએ. તમે કહો તેમ કરે. કલેશ ન કરો. પરંતુ અમે માળા સર્વથા નહીં છોડીએ. અને તમારા હાથનું અડેલું ખાનપાન નહી કરીએ. તમે માલા પહેરો. વૈષ્ણવ થાવ. ત્યારે તમારા હાથનું કામ આવે. એ સાંભળીને બન્નેની માતાએ ક્રોધ કરીને કહ્યું, કે તમે બન્ને વૈરાગી થયાં. (હવે) અમને પણ વૈરાગી કરો છો? અમે પાળ્યાં, હવે અમે ચમાર ભંગી ઠર્યાં તમારા મનથી, કે અમારૂં અડેલું જલ નહીં લો! અમે બન્ને તમારા ઉપર મરીશું. આ પ્રકારે પાંચ દિવસ સુધી જલ કોઇએ ન લીધું. બધાં સગાં-સંબંધી ગામનો હાકેમ પણ આવીને બધાને સમઝાવ્યાં પરંતુ બન્ને ન માને. પછી રાત્રિએ પુરુષોત્તમદાસ સ્ત્રી-પુરૂષ સૂઈ ગયાં, ત્યારે બન્નેની માતા ઘરમાં કૂઓ હતો તેમાં પડી, તે દેહ છૂટી ગયો. સવારે પુરુષોત્તમદાસે બન્નેનો

पात्र में कैसे करिये ? हम पातरि में करि भोजन करेंगे। तब पुरुषोत्तमदास कहे, महाराज ! द्रव्य तो निघट नाहीं गयो। और कसेरे सब मूए नाहीं। और नये पात्र आवेंगे। या प्रकार उह कहिकें श्रीगुसांईजी कों वाही श्रीठाकुरजी के पात्र में भोजन कराये।

भावप्रकाश—सो यातें जो इनकों श्रीगुसांईजी में भाव हैं। और लीला में श्रीचंद्रावली श्रीठाकुरजी संग वही पात्र में भोजन करतीं। सो ये श्रीचंद्रावलीजी की सखी हैं। सब लीला की स्फूर्ति हैं। तातें श्रीठाकुरजी के पात्र में भोजन कराये। और स्त्री–पुरुष को श्रीगुसांईजी में स्नेह बहोत हैं। सो यह विचारे, दूसरे पात्र में फेर ठलाये तें सामग्री को सवाद फिरि जायगो। सगरी सीतल ह्वै जायगी। तातें और में ठलायवे तें ढील भोजन करिवे में होयगी, सोउ आछी नाहीं। तातें स्नेह सों उही पात्र में भोजन कराये।

पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवे बैठें। तब पुरुषोत्तमदास की स्त्री पास आय बैठी। कह्यो, महाराज ! यह सामग्री आरोगो। तब श्रीगुसांईजी कहें, मोकों चहिये सो मैं लेउंगो। तब पुरुषोत्तमदास की स्त्री ने कही, महाराज ! नंदरायजी के घर जैसे आरोगत हो, तैसेही सगरे वैष्णवन के घर आरोगो।

त्तमदास कहे, महाराज ! द्रव्य तो घटी गयुं नथी अने कंसारा बधा मर्या नथी. बीजां नवां पात्र आवशे. आ प्रकारे तेमणे कहीने श्रीगुसांइजीने श्रीठाकुरजीना पात्रमांज भोजन करावराव्युं.

भावप्रकाश—ते एथी, के एमने श्रीगुसांइजीमां भाव छे. अने लीलामां श्रीचंद्रावलीजी श्रीठाकुरजीनी साथे तेज पात्रमां भोजन करती. तेथी ए श्रीचंद्रावलीजीनी सखी छे. बधी लीलानी स्फूर्ति छे. तेथी श्रीठाकुरजीना पात्रमां भोजन कराव्युं. अने स्त्री–पुरुषने श्रीगुसांइजीमां स्नेह बहु छे. तेथी ए विचारे (के) बीजा पात्रमां फरी ठलाववाथी सामग्रीनो स्वाद फरी जशे. बधी शीतल थइ जशे. तेथी बीजा (पात्र) मां ठलाववाथी भोजन करवामां ढील थशे ते पण ठीक नहीं. तेथी स्नेहथी तेज पात्रमां भोजन कराव्युं.

पछी श्रीगुसांइजी भोजन करवा बिराज्या. त्यारे पुरुषोत्तमदासनी स्त्री पासे आवी बेठी. कह्युं, महाराज ! आ सामग्री आरोगो. त्यारे श्रीगुसांइजी कहे, मने जोइशे ते हुं लइश. त्यारे पुरुषोत्तमदासनी स्त्रीए कह्युं, महाराज ! नंदरायजीना घरे जेम आरोगो छो तेज प्रकारे बधा वैष्णवना घरे आरोगो.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, नंदरायजी के घर तो भक्तन को जैसो मनोरथ है तैसे अरोगत हो। इहां कहें, मोकों रुचे तैसे लेउंगो। सो कैसे बनेगी?

या प्रकार श्रीगुसांईजी सों प्रेम संयुक्त वार्ता करे। बार बार सगरी सामग्री भोजन कराये, श्रीगुसांईजी कों प्रसन्न किये। पाछें श्रीठाकुरजी की सैया श्रीठाकुरजी के बिछोना तकिया तापर श्रीगुसांईजी कों पौढाय कें स्त्री-पुरुष चरनसेवा करन लागें। तब श्रीगुसांईजी कहें, उठो, अब दोउ जने जाय महाप्रसाद लेउ। तब पुरुषोत्तमदास स्त्री-पुरुष कहें महाराज! महाप्रसाद तो नित्य लेइंगे। या प्रकार श्रीगुसांईजी कों नित्य नौतन प्रीति सों हठ करिकें पांच-सात दिन राखे। नित्य नये पात्र, सैया, वस्त्र होय। ऐसे स्त्री-पुरुष कृपापात्र भगवदीय हे। वार्ता ॥ २२ ॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-गुरु में श्रीठाकुरजी सों अधिक प्रीति इनकी है। तैसें वैष्णव करें तब फल कों पावे। वै०॥२२॥

✳ ✳ ✳

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, त्रिपुरदास कायस्थ, सेरगढ़ के वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीठाकुरजी की अंतरंग सखी है, जा

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે નંદરાયજીના ઘરે તો ભક્તોનો જેવો મનોરથ છે તેમજ આરોગો છો. અહીં કહે, મને રૂચે તેમ લઈશ. તે કેમ બનશે?

આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઈજીથી પ્રેમસંયુક્ત વાર્તા કરે. વારંવાર બધી સામગ્રી ભોજન કરાવી શ્રીગુસાંઈજીને પ્રસન્ન કર્યા. પછી શ્રીઠાકુરજીની શૈયા શ્રીઠાકુરજીનાં બિછાનાં-તકિયા ઉપર શ્રીગુસાંઈજીને પોઢાવીને સ્ત્રી-પુરુષ ચરણ સેવા કરવા લાગ્યાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, કે ઉઠો, હવે બન્ને જણ જઈને મહાપ્રસાદ લો. ત્યારે પુરુષોત્તમદાસ સ્ત્રી-પુરુષ કહે, મહારાજ! મહાપ્રસાદ તો નિત્ય લઈશું (પરંતુ આ સેવા ક્યાં?). આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઈજીને નિત્ય નૌતમ પ્રીતિથી હઠ કરીને પાંચ-સાત દિવસ રાખ્યા. નિત્ય નવાં પાત્ર, શૈયા, વસ્ત્ર થાય. એવાં સ્ત્રી-પુરુષ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતાં.

ભાવપ્રકાશ—આમની વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત થયો, કે ગુરુમાં શ્રીઠાકુરજીથી અધિક પ્રીતિ એમની છે. તેમ વૈષ્ણવ કરે ત્યારે ફલને પામે. વાર્તા ॥૨૨॥

✳ ✳ ✳

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ત્રિપુરદાસ કાયસ્થ, શેરગઢના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીઠાકુરજીની અંતરંગ સખી છે. જે

भक्तन कों व्योरा कछु संदेसो कहेनो होई, देनो होई, सो हरनी के हाथ देते। इनके नेत्र विसाल वड़े हैं। तातें इनको नाम हरनी लीला में हैं। सो सेरगढ़ में एक कायस्थ के यहाँ जन्मे। सो एक राजा के सगरो काम (करे) दिवान कहावतो, इनको पिता। सो जब त्रिपुरदास वरस वारह के भये तब उनकों संगहि राखतो। सगरो काम त्रिपुरादास कों सिखायो। सो राजा एक समय आगरे कों देसाधिपति के पास चल्यो। तब त्रिपुरदास कों संग ले राजा के संग आगरे आयो। कछुक दिन आगरे में, रहिकें राजा देसाधिपति सों विदा होइकें देस कों चल्यो। सो श्रीगोवर्द्धन, श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन कों आयो। तामें त्रिपुरदास पिता सहित आये। सो दिन तीन गोवर्द्धन में रहे। तब त्रिपुरदास को मन श्रीनाथजी के स्वरूप में आसक्त होय गयो। सो चोथे दिन राजा विदा होई कें चलिवे की तैयारी करी। सो सुनि कें त्रिपुरदास कों विरह ज्वर चढ़ि आयो। सो व्याकुल भये। तब पिता ने पूछी, त्रिपुरदास कैसे हैं? तब त्रिपुरदास ने कही, मेरी देह छूटेगी, जो मोकों ले चलोगे। तातें केतो तुमहू महिना दोय रहो, के राजा के संग जाउ, मैं पाछे तें आछे दरसन करिकें आऊंगो। तब मेरे प्रान रहें। तब

ભક્તોને વિગતવાર કંઈ સંદેશો કહેવો હોય, દેવો હોય, તે હરણીના હાથે દેતા. એનાં નેત્ર મોટાં ને વિશાલ છે. તેથી તેનું નામ હરણી લીલામાં છે. એ શેરગઢમાં એક કાયસ્થને ત્યાં જન્મ્યા. તે એક રાજાને આં બધું એમનો પિતા કામ કરતો, દિવાન કહેવડાવતો. જ્યારે ત્રિપુરદાસ વર્ષ બારના થયા ત્યારે એને સાથે જ રાખતો. બધુ કામ ત્રિપુરદાસને શિખાડયું. તે રાજા એક સમય આગરાથી દેશાધિપતિને પાસે ગયો. ત્યારે ત્રિપુરદાસને સાથે લઈ રાજાની સગે (તે) આગરા આવ્યો. (પછી) થોડા દિવસ આગ્રામાં રહીને રાજા દેશાધિપતિથી વિદાય થઇને દેશમાં ચાલ્યો. તે ગોવર્દ્ધન, શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શને આવ્યો. તેમાં ત્રિપુરદાસ પિતા સહિત આવ્યા. તે દિવસ ત્રણ ગોવર્દ્ધનમાં રહ્યા. ત્યારે ત્રિપુરદાસનુ મન શ્રીનાથજીના સ્વરૂપમાં આસક્ત થઈ ગયુ. તે ચોથા દિવસે રાજા વિદાય થઇને ચાલવાની તૈયારી કરી તે સાંભળીને ત્રિપુરદાસને વિરહ-જ્વર ચઢી આવ્યો. તે વ્યાકુલ થયા. ત્યારે પિતાએ પૂછ્યું, ત્રિપુરદાસ કેમ છે? ત્યારે ત્રિપુરદાસે કહ્યું, મારી દેહ છૂટશે જો મને લઈ ચાલશો તો. તેથી કાં તો તમે પણ મહિના બે રહો કે રાજાના સંગે જાવ. હું પછીથી સારી રીતે દર્શન કરીને આવીશ. ત્યારે મારા પ્રાણ રહે. ત્યારે ત્રિપુરદાસના પિતાએ રાજાને બધા સમાચાર કહ્યા. આ પ્રકાર

त्रिपुरदास के पिता नें राजा सों सब समाचार कहें। या प्रकार मेरो बेटा कहत हैं। तब राजा ने कही, कहा चिंता है ? असवारी और मनुष्य राखि चलो। पाछे तें बेटा आय रहेगो। तब पितानें आय कही, बेटा ! तुम रहो इहां। चिंता मति करो। यह सुनत ही त्रिपुरदास कों आनंद भयो। ज्वर उतरि गयो। तब पिता प्रसन्न होइ पालकी मनुष्य दिये। जो–बेटा ! वेग अइयो। मैं वृद्ध भयो हों। राजा को काम काज करनो है। तब त्रिपुरदास कहें, तुम चलो मैं वेगो आउंगो। तब पिता राजा के संग गयो। सो मारग में एक जमींदार सों लराई भई। तहां त्रिपुरदास के पिता कों गोली लगी। सो मरि गयो। राजा उह जमींदार कों मारिकें आगे चल्यो। पाछें उह राजा (ने) त्रिपुरदास पास मनुष्य पठायो। सो सब समाचार त्रिपुरदास सों उन (ने) कह्यो। सो सुनिकें त्रिपुरदास प्रसन्न भये। जो भली भई। अब मेरे कोई बंधन तो है नाहीं। अब श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन सदा करोंगो। पाछे पिता को कर्म मानसी गंगा पर सब किये। सुद्ध भये। सो नित्य सगरे दरसन करते। तब श्रीआचार्यजी एक दिन त्रिपुरदास सों कहें, जो–तू कोन है ? दोय महिना भये दरसन करते, अब अपने घर जाउ। तब त्रिपुरदास ने कही, महाराज ! अब मैं कहाँ जाउं ? माता मरी जन्म तें, पिता अब मरचो,

---

મારો પુત્ર કહે છે. ત્યારે રાજાએ કહ્યું, શી ચિંતા છે ? અસવારી અને મનુષ્ય રાખી ચાલો. પછીથી બેટા આવી રહેશે. ત્યારે પિતાએ આવી કહ્યું, બેટા તમે રહો અહીં, ચિંતા ન કરો. એ સાંભળતાં જ ત્રિપુરદાસને આનંદ થયો. જ્વર ઉતરી ગયો. ત્યારે પિતા પ્રસન્ન થઇ પાલખી–મનુષ્ય દીધાં. (કહ્યું) કે બેટા જલ્દી આવજે. હું વૃદ્ધ થયો છું. રાજાનું કામ–કાજ કરવું છે. ત્યારે ત્રિપુરદાસ કહે, તમે ચાલો હું જલ્દી આવીશ. ત્યારે પિતા રાજાની સાથે ગયો. તે માર્ગમાં એક જમીનદારથી લડાઇ થઇ ત્યાં ત્રિપુરદાસના પિતાને ગોળી વાગી. તે મરી ગયો. રાજા તે જમીનદારને મારીને આગળ ચાલ્યો. પછી તે રાજાએ ત્રિપુરદાસ પાસે માણસ મોકલ્યો. તે બધા સમાચાર ત્રિપુરદાસને એણે કહ્યા. તે સાંભળીને ત્રિપુરદાસ પ્રસન્ન થયા. કે ભલું થયું. હવે મારે (બીજું) કોઇ બંધન તો છે નહીં. હવે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન સદા કરીશ. પછી પિતાનું કર્મ માનસીગંગા ઉપર બધું કર્યું. શુદ્ધ થયા. પછી નિત્ય બધાં દર્શન કરતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી એક દિવસ ત્રિપુરદાસને કહે, કે તૂ કોણ છે ? બે મહિના થયાં દર્શન કરતાં. હવે તારે ઘરે જા. ત્યારે ત્રિપુરદાસે કહ્યું, મહારાજ ! હવે હું ક્યાં જાઉં ? માતા મરી

मेरो ब्याह भयो नाहीं। सो अब मेरो मन श्रीनाथजी के स्वरूप में अटक्यो है। सो मैं कहां जाउं ? तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदास की प्रीति देखिकें कहें, हम ऐसो करि देई तोका, जहां रहें तहां श्रीनाथजी के दरसन करें। एक छिनको वियोग न होई। तब त्रिपुरदास ने दंडौत करिकें बिनती कियो, जो–महाराज ! मोकों यही चहिये। काहेतें, मोसों मांग्यो जाय नाहीं। नित्य खरच हू चहिये। और श्रीनाथजी के दरसन बिना मोसों रह्यो हू नाहीं जाय। सो यह चिंता हती। जो आपु कृपा करिकें जो आज्ञा करो सो मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदास कों न्हवाइ के नाम निवेदन कराये। और श्रीनाथजी को चरणामृत महाप्रसाद दिये। सो नेत्रन के आगें श्रीनाथजी के स्वरूप को दरसन होन लाग्यो। तब श्रीआचार्यजी कहे, अब तुम इहां तें जाउ। जहां रहोगे तहां प्रभु तुमकों दरसन देइंगे। तू श्रीठाकुरजी कों कबहू पीठ न देइगो। तब त्रिपुरदास श्रीआचार्यजी कों दंडौत् करि, बिदा होई चले। तब यह मन कियो जो श्रीनाथजी के चरणामृत महाप्रसाद लिये बिना जल न लेनो। यह मन में निश्चय करि घर में आये।

वार्ता–प्रसंग १—सो त्रिपुरदास कों श्रीनाथजी के विषे बहोत ममत्व हतो। जो–श्रीनाथजी कों पीठि कबहू न देते। श्रीनाथजी के

જન્મથી. પિતા હવે મરયો. મારૂં લગ્ન થયું નથી. હવે મારૂં મન શ્રીનાથજીના સ્વરૂપમાં અટકયુ છે. તે હું કયાં જાઉં ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ત્રિપુરદાસની પ્રીતિ જોઇને કહે, અમે એવું કરી દઈએ તને કે જ્યાં રહે ત્યાં શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરે. એક ક્ષણનો વિયોગ ન હોય. ત્યારે ત્રિપુરદાસે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! મને એજ જોઇએ. કેમકે મારાથી માંગ્યું જાય નહીં. નિત્ય ખર્ચ પણ જોઇએ અને શ્રીનાથજીનાં દર્શન વિના મારાથી રહી પણ શકાય નહીં. તે ચિંતા હતી. આપ કૃપા કરીને જેમ આજ્ઞા કરો તેમ હું કરૂ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ત્રિપુરદાસને નહવડાવીને નામ–નિવેદન કરાવ્યું. અને શ્રીનાથજીનાં ચરણામૃત, મહાપ્રસાદ આપ્યાં. તે નેત્રોની આગળ શ્રીનાથજીના સ્વરૂપનાં દર્શન થવા લાગ્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તમે અહીંથી જાવ. જ્યાં રહેશો ત્યાં પ્રભુ તમને દર્શન આપશે. તૂ શ્રીઠાકુરજીને કદી પણ પીઠ નહી દે. ત્યારે ત્રિપુરદાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિદા થઇ ચાલ્યા. ત્યારે એ પ્રણ કર્યું, કે શ્રીનાથજીના ચરણામૃત મહાપ્રસાદ લીધા વિના જલ ન લેવુ. આ મનમાં નિશ્ચય કરી ઘરમાં આવ્યા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—તે ત્રિપુરદાસને શ્રીનાથજીના વિષે બહુંજ મમત્વ હતું. જે,

चरणामृत महाप्रसाद बिना जल हू न लेते। सो त्रिपुरदास एक तुरक की चाकरी करते। सो तुरक की ओर तें एक परगना पर गये। सो बहोत कमाये। सो, जो–वस्तु नौतन आवें अन्न, साक, फल–फूल, वस्त्र सो पहिले श्रीनाथजी कों अंगीकार होइ। ता पाछें आपु कछु लेय। और त्रिपुरदास बेठे, ठाढ़े, चलते, श्रीनाथजी कों पीठ न देते।

भावप्रकाश—सो कहा, जो–श्रीनाथजी के स्वरूप को भूलनो सोई पीठि हैं। सो सदा दरसन करतहि सब काम करते।

और बरस के बरस आछो दगला श्रीनाथजी कों पठावते। सो श्रीगुसांईजी पहिले त्रिपुरदास कों दगला आछो देखिकें अंगीकार करावते। सो एक समय उह म्लेच्छ ने त्रिपुरदास सों लेखो लीनो। सो कछुक दाम त्रिपुरदास के ऊपर निकसे। सो उनसों मांग्यो। तब त्रिपुरदास ने कही मेरे पास अब तो नाहीं है। कमायकें भर देउंगो। तब उह तुरक ने सगरो घर लूटि लियो। त्रिपुरदास कों बंदीखाने दिये। सो अर्ध रात्रि गई। तब चार जने आयकें उह तुरक कों खाट तें औंधो डारि दियो। और मुगदर सों मारन लागे। तब उह तुरकने कही, मोकों क्यों मारत हो? मैं तुम्हारो कहा बिगार्यो है? तब विष्णुदूत ने कही त्रिपुरदास कों बंदीखाने में क्यों दिये?

શ્રીનાથજીને પીઠ કદી પણ ન દેતા. શ્રીનાથજીના ચરણામૃત, મહાપ્રસાદ વિના જલ પણ ન લેતા. તે ત્રિપુરદાસ એક તુરકની ચાકરી કરતા. તે તુરકની તરફથી તે એક પરગના ઉપર ગયા. ત્યાં બહુ કમાયા. તે જે વસ્તુ નવીન આવે, અન્ન, શાક, ફલ-ફૂલ વસ્ત્ર તે પહેલાં શ્રીનાથજીને અંગીકાર થાય. તે પછી પોતે કંઇક લે. અને ત્રિપુરદાસ બેઠતાં, ઉઠતાં, ચાલતાં, શ્રીનાથજીને પીઠ ન દેતા.

ભાવપ્રકાશ—તે શું? કે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપને ભૂલવું તેજ પીઠ છે. તે સદા દર્શન કરતાં જ બધું કામ કરતા.

અને વર્ષોવર્ષ સુંદર ડગલો શ્રીનાથજીને મોકલતા. તે શ્રીગુસાંઇજી પહેલાં ત્રિપુરદાસનો ડગલો સુંદર જોઇને અંગીકાર કરાવતા. તે એક સમય તે મ્લેચ્છે ત્રિપુરદાસ પાસેથી હિસાબ લીધો. તે થોડાક પૈસા ત્રિપુરદાસ ઉપર નિકળ્યા. તે એમનાથી માંગ્યા. ત્યારે ત્રિપુરદાસે કહ્યું, મારી પાસે હમણાં તો નથી. કમાવીને ભરી દઇશ. ત્યારે તે તુરકે બધું ઘર લુંટી લીધું. ત્રિપુરદાસને બંદીખાનામાં નાખ્યા. તે અર્દ્ધરાત્રિ થઇ ગઇ. ત્યારે ચાર જણાએ આવીને તે તુરકને ખાટ ઉપરથી ઉંધો નાખી દીધો અને મુગદળથી મારવા લાગ્યા. ત્યારે તે તુરકે કહ્યું, મને કેમ મારો છો? મેં તમારૂં શું બગાડ્યું છે?

तोंकों मारि हाड तोरि डारेंगे। तब वह तुरक हाहा खाय नाक भूमि में घसिकें कह्यो, मैं अब ही तुरत जाय त्रिपुरदास कों छोड़ि देउंगो। तुम मोकों मति मारो। तब विष्णुदूत गये। तब उह तुरक त्रिपुरदास पास जाइके कह्यो, अपने घर जाउ। तब त्रिपुरदास नें कही अब रात्रि बहुत गई है, सकारे जाउंगो। तब उह तुरक ने कही काहू को जीव लेइगो? याही समय जाउ। तब त्रिपुरदास घर आये।

सो इतने में भेटिया श्रीनाथजी के आये। सो त्रिपुरदास कों चरणामृत महाप्रसाद दिये तब त्रिपुरदास ने बिचारयो, जो–बरस के बरस श्रीनाथजी कों जड़ावर पठावतो हो। परि अब तो कछू पास है नाहीं। सो एक लिखिवे की द्वाति रही। वाको मुहरो ऊपर को रूपे को हतो। सो वेचि एक रंगी खारका को थान ले आय भंडारी कों दियो। और कहें श्रीगुसांईजी सों मति कहियो। श्रीनाथजी के भंडार में दीजो। कहा करिये, अब तो मैं कछू लायक नाहीं हों। सो भेटीआ ने उह रंगी श्रीनाथजी के भंडार में दीनी। पाछें प्रबोधिनी के दिन श्रीगुसांईजी मंडप करि देवोत्थापन करि श्रीनाथजीकों दगला उढ़ाये। तब श्रीनाथजी कहे, जो मोकों सीत बहोत लागत है। तब दूसरो दगला उढ़ाये। तब फेरि श्रीनाथजी नें कही मेरो

ત્યારે વિષ્ણુદૂતે કહ્યું, ત્રિપુરદાસને બંદીખાનામાં કેમ નાખ્યા? તને મારી તારાં હાડકાં તોડી નાખીશું. ત્યારે તે તુરકે આજીજી કરી નાક ભૂમિમાં ઘસીને કહ્યું, હું હમણાં જ તરત જઇને ત્રિપુરદાસને છોડી દઇશ. તમે મને ન મારો. ત્યારે વિષ્ણુદૂત ગયા. ત્યારે તે તુરકે ત્રિપુરદાસ પાસે જઇને કહ્યું, તમારા ઘર જાવ. ત્યારે ત્રિપુરદાસે કહ્યું, હવે રાત્રિ ઘણી ગઇ છે, સવારે જઇશ. ત્યારે તે તુરકે કહ્યું. કોઇનો જીવ લઇશ? આ જ સમયે જાવ. ત્યારે ત્રિપુરદાસ ઘર આવ્યા.

એટલામાં ભેટીઆ શ્રીનાથજીના આવ્યા. તે ત્રિપુરદાસને ચરણામૃત, મહાપ્રસાદ આપ્યો. ત્યારે ત્રિપુરદાસે વિચાર્યું, કે વર્ષોવર્ષ શ્રીનાથજીની જડાવર (શિયાળામાં પહેરવાનાં વસ્ત્ર) મોકલતો હતો, પરંતુ હવે તો કંઇ પાસે નથી. પછી એક લખવાનો ખડીઓ રહ્યો હતો. એનું મ્હોડું ઉપરનું રૂપાનું હતું. તે વેચી એક રંગીન ખાદીનું થાન લઈ આવી ભંડારી (ભેટીઆ) ને આપ્યું. અને કહ્યું, શ્રીગુસાંઇજીને કહેશો નહીં. શ્રીનાથજીના ભંડારમાં આપજો. શું કરીએ? હવે તો હું કંઇ લાયક નથી. પછી ભેટીઆએ તે રંગીન થાન શ્રીનાથજીના ભંડારમાં આપ્યું. પછી પ્રબોધિનીના દિવસે શ્રીગુસાંઇજીએ મંડપ કરી દેવ–ઉત્થાપન કરી શ્રીનાથજીને ડગલા

सीत गयो नाहीं। वहोत लागत है। तब श्रीगुसांईजी दूसरी अंगीठी धरि, एक अंगी करि, रजाई ऊपर उढ़ायें। तउ श्रीनाथजी ने कही मोकों सीत वहोत लागत है। तब श्रीगुसांईजी विचारे, जो-यह वैष्णव की जडावर आई है सो अंगीकार नाहीं भई, ताके लिये सीत है। तब श्रीगुसांईजी भंडारी कों बुलाय कें कहे, जो-जडावर किन किन की आई हैं। सो वैष्णवन के नाम सुनावो। सो भंडारी ने सुनाये। तब श्रीगुसांईजी कहे, त्रिपुरदास की बरस के बरस आवती सो तो सुनाये नाहीं। (तब) भंडारी ने कही, महाराज! त्रिपुरदास के द्रव्य को संकोच है। सो जडावर नाहीं आई। एक रंगी को थान आयो है। सो भंडार में मेली मरगजी परी है। (तब) श्रीगुसांईजी कहे, उह रंगी त्रिपुरदास की वेगि ल्यावो। सो भंडारी ले आयो। तब श्रीगुसांईजी दरजी सों कहे, वेगे डोरा डारि दुलाई सी करि देउ। सो दरजी ने डोरा डारि दुलाई करि दियो। तब श्रीगुसांईजी उह दुलाई श्रीनाथजी कों उढ़ाये। तब श्रीनाथजी ने कही, अब मेरो जाड़ो गयो, गरमी भई। सो सीतकाल में दस-पांच वेर उह दुलाई अंगीकार करि भक्तवश्यता दिखाई। यह बात त्रिपुरदास ने जानी। तब गद्गद् होइ यह पद गायो, सो पद—

ઓઢાડ્યા. ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, કે મને ઠંડ ઘણી લાગે છે. ત્યારે બીજો ડગલો ઓઢાડ્યો. ત્યારે ફરી શ્રીનાથજીએ કહ્યું, મારી ઠંડ ગઇ નહીં. ઘણી લાગે છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ બીજી અંગીઠી ધરી. એક અંગી કરીને (રૂનું વસ્ત્ર પહેરાવીને) રજાઇ ઉપરથી ઓઢાવી. તોપણ શ્રીનાથજીએ કહ્યું, મને ઠંડ ઘણી લાગે છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ વિચાર્યું, કે આ વૈષ્ણવની જડાવર આવી છે તે અંગીકાર નથી થઇ તેને માટે ઠંડ છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી ભંડારીને બોલાવીને કહે, કે જડાવર કોની કોની આવી છે? તે વૈષ્ણવોનાં નામ સંભળાવો. પછી ભંડારીએ (નામ) સંભળાવ્યાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, ત્રિપુરદાસની વર્ષે ન વર્ષે આવતી તે તો સંભળાવી નહીં. ત્યારે ભંડારીએ કહ્યું, મહારાજ! ત્રિપુરદાસને દ્રવ્યનો સંકોચ છે. તેથી જડાવર નથી આવી. એક ખાદીનું રંગીન થાન આવ્યું છે. તે ભંડારમાં મેલું ગૂંથાયેલું પડ્યું છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તે રંગી ત્રિપુરદાસની જલ્દી લાવો. તે ભંડારી લઇ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી દરજીને કહે જલ્દી દોરા નાખીને દુલાઇ (રજાઇ)ના જેવું કરી દે. તે દરજીએ દોરા નાખીને દુલાઇ કરી દીધી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ તે દુલાઇ શ્રીનાથજીને ઓઢાવી. ત્યારે શ્રીનાથજીએ કહ્યું, હવે મારી ઠંડ ગઇ. ગરમી

राग आसावरी।

नवरंग ललन विहारी मेरो कहे, जाड़ो मोहि अधिक सुहाय।
पहेरि कँवाइ औढ़ि लई फरगुल, तोहू सीत सतावत आय ॥ १ ॥
अचरज भये सुनि वल्लभ-नंदन कनक अँगीठी धरी मँगाय।
पुनि जिय सोचि मँगाई उढ़ाई, भजि गई सीत हंसे जदुराय ॥ २ ॥
ऐसे परम कृपाल दयानिधि, बिसरत नहीं सुधि करत सहाय।
"त्रिपुरारी" गिरिधारी की बातें, कहा जानें कोउ देहु बताय ॥ ३ ॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-मेरो भक्त तिनकी प्रीति की वस्तु होय, सो या प्रकार मैं अंगीकार करत हों। सो भक्तिभाव को अंगीकार, वस्तुको विचार कछु नाहीं।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय त्रिपुरदास वाहि तुरक के साथ अटक कों गये हते। सो एक दिन सवेरे रसोइया ने कही, जो-आजु श्रीनाथजी को चरणामृत महाप्रसाद नाहीं है। तब त्रिपुरदास ने कही, पहले सों क्यों न कह्यो? बढ़ाय लेते। पाछें रसोइया सों कही, रसोई करि भोग धरि कै तुम पहुँचियो। मोकों मति बुलाइयो। यह कहिकें त्रिपुरदास अपने मनमें यह निश्चय कियो, जो-जहांलौं देह चलेगी तहां लौं कामकाज करूंगो। परंतु चरणामृत महाप्रसाद बिना जल न लेउंगो। यह निर्धार करि दरबार गये। तब श्रीगोवर्द्धनधर एक बरस दस को लरिका को रूप धरि तीन थेली लेकें आये।

थइ. पछी शीयाळामां दस-पांच वार ते दुलाई अंगीकार करी भक्तवश्यता देखाडी. ते वात त्रिपुरदासे जाणी, त्यारे गद्‌गद्‌ थइने आ पद गायुं ते पद—

'नवरंग बिहारी मेरो कहे जाडो मोहि अधिक सुहाय' (उपर जुओ)

भावप्रकाश—एमां ए जणाव्युं, के मारो भक्त, तेनी प्रीतिनी वस्तु होय ते आ प्रकारे हुं अंगीकार करूं छु. ते भक्ति भावनो अंगीकार, वस्तुनो विचार कंई नहीं.

वार्ता-प्रसंग २—वळी एक समय त्रिपुरदास तेज तुरकनी साथे 'अटक' गया हता. त्यारे एक दिवस सवारे रसोइयाए कह्युं, के आज श्रीनाथजीनो चरणामृत महाप्रसाद नथी. त्यारे त्रिपुरदासे कह्युं, पहेलाथी केम न कह्युं? वधारी लेता. पछी रसोइयाने कह्युं, रसोइ करी, भोग धरीने तमे पहोंचजो. मने न बोलावता. एम कहीने त्रिपुरदासे पोताना मनमां ए निश्चय कर्यो, के ज्यां सुधी देह चालशे त्यां सुधी काम-काज करीश. परंतु चरणामृत, महाप्रसाद विना जल नहीं लउं. ए निर्धार

एक थेली में तो श्रीनाथजी को महाप्रसाद, एक थेली में श्रीनाथजी को चरणामृत। एक थेली में श्रीआचार्यजी को चरणामृत। यह ले उह रसोइया सों कही, यह चरणामृत महाप्रसाद की थेली त्रिपुरदास ने पठाई हैं। और कहे हैं, जब तू श्रीठाकुरजी सों पहुँचे, तब मोकों बुलाइ लीजो। तब रसोइया ने उह थेली राखी। तब लरिका अंतर्धान ह्वै गयो। पाछें रसोइयाने रसोई सों पहुँचि श्रीठाकुरजी कों भोग धर्यो। तब त्रिपुरदास कों बुलावन मनुष्य दरबार पठायो। सो त्रिपुरदास सों जाई कही। तब त्रिपुरदास ने कही, मैं तो कहि आयो हतो, जो-मैं न आउंगो। तुम पहुँचियो। सो जाय कहियो, जो-तुम पहुँचि मेरी बाट मति देखियो। तब उह मनुष्य फेरि आइकें त्रिपुरदास के समाचार कहे, जो-वे न आवेंगे, तुम पहुँचियो। तब उह रसोइया ने कही, तू एक बार फिरि जा। त्रिपुरदास कों कहियो, जो-तुमने लरिका हाथ चरणामृत महाप्रसाद की थेली पठाये। और कहे, मोकों बुलाइयो। अब नाहीं क्यों करत हो? तब फेरि मनुष्य जाई यह बात कही। तब त्रिपुरदास दरबार सों घर आयकें रसोइया सों कहे मोकों क्यों बुलायो? मैं चरणामृत महाप्रसाद विना जलहू न लेउंगो। तब रसोइया ने कही, तुम लरिका

કરી રાજદ્વાર ગયા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર એક વરસ દસના બાલકનું રૂપ ધરી ત્રણ થેલીઓ લઇને આવ્યા. એક થેલીમાં તો શ્રીનાથજીનો મહાપ્રસાદ, એક થેલીમાં શ્રીનાથજીનું ચરણામૃત, એક થેલીમાં શ્રીઆચાર્યજીનું ચરણામૃત. એ લઇ તે રસોઇઆને કહે, આ ચરણામૃત મહાપ્રસાદની થેલી ત્રિપુરદાસે મોકલી છે. અને કહ્યું છે, કે જ્યારે તૂ શ્રીઠાકુરજીથી પહોંચી લે ત્યારે મને બોલાવી લેજે. ત્યારે રસોઇયાએ તે થેલી રાખી. પછી બાલક અંતર્ધાન થઇ ગયો. પછી રસોઇયોએ રસોઇથી પહોંચી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. ત્યારે ત્રિપુરદાસને બોલાવવા મનુષ્ય રાજદ્વાર મોકલ્યો. તે ત્રિપુરદાસને જઇ કહ્યું, ત્યારે ત્રિપુરદાસે કહ્યું, હું તો કહી આવ્યો હતો, કે હું નહી આવું. તમે પહોંચજો. તેથી જઇ કહેજે, કે તમે પહોંચો, મારી રાહ ન જોતા. ત્યારે એ મનુષ્યે પાછા આવીને ત્રિપુરદાસના સમાચાર કહ્યા, કે એ નહીં આવે. તમે પહોંચજો. ત્યારે તે રસોઇયાએ કહ્યું, કે તૂ એકવાર ફરી જા. ત્રિપુરદાસને કહેજે, કે તમે બાલકના હાથે ચરણામૃત, મહાપ્રસાદની થેલીઓ મોકલી અને કહ્યું, મને બોલાવજો. હવે ના કેમ કરો છો? ત્યારે ફરી મનુષ્યે જઇને એ વાત કહી. ત્યારે ત્રિપુરદાસે રાજદ્વારથી ઘર આવીને રસોઇઆને કહ્યું, મને કેમ બોલાવ્યો? હું ચરણામૃત, મહાપ્રસાદ વિના

हाथ चरणामृत महाप्रसाद की थेली पठाये और कहे, मोकों बुलाइयो। अब ऐसे क्यों कहत हो? यह थेली तीनों धरी हैं। तब त्रिपुरदास देखि कें कहें, उह लरिका कहां है? तब रसोइया ने कही, लरिका थेली दे चलो गयो। मैं कहा जानों कहाँ है? तब त्रिपुरदास बिचारे; मैं श्रीठाकुरजी कों बहोत श्रम करवायो। अब तें काहू बात को हठ न करनो। बहोत मनमें खेद कियो। सो त्रिपुरदास ऐसे भगवदीय हे।

भावप्रकाश—सो श्रीठाकुरजी रसोईया कों थेली दे गये, परंतु त्रिपुरदास कों यातें नाहीं जताये, जो मोकों लरिका भेखमें देखेंगे तो बहोत क्लेश इनकों होयगो। और त्रिपुरदास कों तो अष्टप्रहर स्वरूप को अनुभव है। तातें नाहीं जताये। और रसोईया साधारन वैष्णव हतो, तातें लरिका भेख करि अपुने स्वरूप को अनुभव कराये। इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो—इनकों स्वरूपासक्ति हैं। सदा श्रीठाकुरजी के सन्मुख है। और चरणामृत को स्वरूप जताये, जो—चरणामृत को हू नेम निश्चय वैष्णव राखे तो श्रीठाकुरजी वापर प्रसन्न होइ। और प्रभुको श्रम जानि दुःख न होय तो मर्यादामार्गीय होइ जाय। यों जीवन के कार्य अर्थ प्रभु श्रम करें तातें पुष्टिमार्गीय प्रसन्न नाहीं। काहेतें? पुष्टिमार्गीय

જલ પણ નહીં લઉં? ત્યારે રસોઇઆએ કહ્યું, તમે બાલકના હાથે ચરણામૃત મહાપ્રસાદની થેલી મોકલી અને કહ્યું, મને બોલાવજો. હવે એમ કેમ કહો છો? આ થેલી ત્રણે ધરી છે. ત્યારે ત્રિપુરદાસ જોઇને કહે, એ બાલક ક્યાં છે? ત્યારે રસોઇઆએ કહ્યું, બાલક થેલી દઇને ચાલ્યો ગયો. હું શું જાણું ક્યાં છે? ત્યારે ત્રિપુરદાસે વિચાર્યું, મેં શ્રીઠાકુરજીને બહુ શ્રમ કરાવ્યો. હવેથી કોઈ વાતનો હઠ ન કરવો. મનમાં બહુ જ ખેદ કર્યો. તે ત્રિપુરદાસ એવા ભગવદીય હતા.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજી રસોઇઆને થેલી દઇ ગયા પરંતુ ત્રિપુરદાસને એથી નહીં જણાવ્યું, કે મને બાલક-ભેખમાં જોશે તો બહુ જ કલેશ એને થશે. અને ત્રિપુરદાસને તો અષ્ટપ્રહર સ્વરૂપનો અનુભવ છે. તેથી જણાવ્યું નહીં અને રસોઇઓ સાધારણ વૈષ્ણવ હતો. તેથી બાલકનો ભેખ કરી પોતાના સ્વરૂપનો અનુભવ કરાવ્યો. આમની વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત થયો, કે આમને સ્વરૂપાસક્તિ છે. સદા શ્રીઠાકુરજીના સન્મુખ છે. અને ચરણામૃતનું સ્વરૂપ જણાવ્યું, કે ચરણામૃતનો પણ નેમ-નિશ્ચય વૈષ્ણવ રાખે તો શ્રીઠાકુરજી એના ઉપર પ્રસન્ન થાય. અને પ્રભુને શ્રમ જાણી દુઃખ ન થાય તો મર્યાદામાર્ગીય થઇ જાય. એમ તો જીવોના કાર્ય અર્થે

अपने सुख अर्थ कछु चाहना प्रभु तें राखत नाहीं । दुःख हू आवे तो सरीरको भोग विचारके भोगे । तातें बंदीखाने परे तब मनमें सोच न किये । सो विष्णु-दूत उह तुरक कों दंड दे छोड़ाये । तामें भक्तवत्सलता प्रभु प्रगट करी । और बरस के बरस आछो दगला त्रिपुरदास पठावते सो माँगि के अंगीकार किये नाहीं । और विरह प्रीति सों रंगी पठाये सो प्रीति के बस होई अंगीकार किये । तब सीत गयो । यामें यह जताये, द्रव्य को संकोच वैष्णव कों होइ सोउ प्रभु अनुग्रह करन के लिये । और द्रव्य बहोत होई सो वैष्णव के संबंध करि अंगीकार करन के लिये । काहेतें ? बरस के बरस सुंदर दगला पठावते तो संकोच में ताप भयो । जो द्रव्य भये सेवा न करेगो तो ताप कहां ते होयगो ? तातें सेवा करिवे वारो दैवी जीव होई तो द्रव्य में हू बने । और संकोच हू में बने, यह जतायो । तातें त्रिपुरदास की वार्ता को पार नाहीं है । इनने भाव हृदय में राख्यो, काहू के आगें प्रकास नाहीं कियो । तातें स्वरूप-सेवा नाहीं पधराई । मनहि करि मानसी में अष्ट प्रहर मगन रहते । संयोग रस ही को अनुभव किये । लीला हू में इनकों संयोग रस है । श्रीठाकुरजी संबंधिनी सखी है । वैष्णव ॥ २३ ॥

પ્રભુ શ્રમ કરે, તેથી પુષ્ટિમાર્ગીય પ્રસન્ન નથી. કેમકે પુષ્ટિમાર્ગીય પોતાના સુખ અર્થે કંઇ ચાહના પ્રભુથી રાખતા નથી. દુઃખ પણ આવે તો શરીરનો ભોગ વિચારીને ભોગવે. તેથી બંદીખાને પડ્યા ત્યારે મનમાં શોક ન કર્યો. ત્યારે વિષ્ણુ-દૂતે તે તુરકને દંડ દઇ છોડાવ્યા. તેમાં પ્રભુએ ભક્તવત્સલતા પ્રકટ કરી. અને વર્ષે વર્ષે ત્રિપુરદાસ સુંદર ડગલો મોકલતા તે માંગીને અંગીકાર કર્યો નહીં. અને વિરહ-પ્રીતિની રંગી મોકલી તે પ્રીતિના વશ થઇ અંગીકાર કરી. ત્યારે ઠંડ ગઇ. એમાં એ જણાવ્યું, કે દ્રવ્યનો સંકોચ વૈષ્ણવને થાય તે પણ પ્રભુ અનુગ્રહ કરવાને માટે જ (છે એમ જાણવું) અને દ્રવ્ય ઘણું હોય તે વૈષ્ણવના સંબંધથી અંગીકાર કરવાને માટે, કેમકે વર્ષે વર્ષે સુંદર ડગલો મોકલતા તેથી સંકોચમાં તાપ થયો. જો દ્રવ્ય થયે સેવા ન કરે તો તાપ ક્યાંથી થશે? તેથી સેવા કરવાવાળો દૈવી જીવ હોય તો દ્રવ્યમાં પણ બને અને સંકોચમાં પણ બને, એ જણાવ્યું. તેથી ત્રિપુર-દાસની વાર્તાનો પાર નથી. એમણે ભાવ હૃદયમાં રાખ્યો, કોઇની આગળ પ્રકાશ નહીં કર્યો. તેથી સ્વરૂપ-સેવા નહીં પધરાવી. મનથી જ માનસી કરી અષ્ટપ્રહર મગન રહેતા. સંયોગ રસનો જ અનુભવ કર્યો. લીલામાં પણ એમને સંયોગ રસ છે. શ્રીઠાકુરજીનાં સંબંધી સખી છે. વૈષ્ણવ ॥ ૨૩ ॥

सो त्रिपुरदास की वार्ता को पार नाहीं। कहां तांई कहिये ?

*　　*　　*

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पूरनमल, जेंवल क्षत्री, अंबालय में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में ललिताजी की सखी है। इनको नाम 'चित्रलेखा' है। श्रीस्वामिनीजी की कुंज रचना, तामें नाना प्रकार के चित्र करत हैं। सो अंबालय में एक क्षत्री के घर जन्में। सो पूरनमल को पिता हथियार बांधिके चाकरी करतो। और पूरनमल कों एक जोहरि को संग भयो। सो जवाहर को कसब सीखें। सो बरस बीस के पूरनमल भये। तब माता पिता की देह छूटी। पूरनमल को ब्याह भयो सो स्त्री साधारन मिली। और पूरनमल को मन भगवान में बालपने सों। सो जहाँ तहाँ कथा वार्ता सुने। मर्यादा की रीति चलें। स्त्री को मन ठाकुरजी में न देख्यो। तब अपने घर में न्यारी जगा करि दीनी। चार रुपैया को महिना करि दियो। द्रव्य बहोत हतो, सो मनुष्य के हाथ स्त्री कों खरच पठाय देते। आपु वासों बोलते नाहीं। वैराग्य हू दृढ़ हतो।

वार्ता-प्रसंग १—सो इन पूरनमल की गांठि में द्रव्य बहोत हतो।

તે ત્રિપુરદાસની વાર્તાનો પાર નહીં તે ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૨૩॥

*　　*　　*

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પૂરણમલ, જેમલ ક્ષત્રી, અંબાલયમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'ચિત્રલેખા' છે શ્રીસ્વામિનીજીની કુંજ-રચનામાં નાના પ્રકારનાં ચિત્ર કરે છે. તે અંબાલયમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. તે પૂરણમલનો પિતા હથિયાર બાંધીને ચાકરી કરતો. અને પૂરણમલને એક ઝવેરીનો સંગ થયો. તે જવેરાતનો ધંધો શિખ્યા. પછી વર્ષ વીસના પૂરણમલ થયા ત્યારે માતા-પિતાનો દેહ છુટયો. પૂરણમલનું લગ્ન થયું, તે સ્ત્રી સાધારણ મળી. અને પૂરણમલનું મન ભગવાનમાં બાલપણથી, તે જ્યાં ત્યાં કથા-વાર્તા સાંભળે. મર્યાદાની રીતે ચાલે સ્ત્રીનુ મન શ્રીઠાકુરજીમાં ન જોયુ. ત્યારે પોતાના ઘરમાં અલગ જગા કરી દીધી. ચાર રૂપીઆનો મહિનો કરી દીધો. દ્રવ્ય ઘણું હતુ તેથી મનુષ્યના હાથે સ્ત્રીને ખર્ચ મોકલી આપતા. પોતે તેની સાથે બોલતા નહીં. વૈરાગ્ય પણ દૃઢ હતો.

વાર્તા-પ્રસગ ૧—એ પૂરણમલની ગાંઠમાં દ્રવ્ય ઘણું હતું. તે એક સમય

सो एक समय रात्रि कों पूरनमल कों दैवी जीव जानि श्रीगोवर्धनधर स्वप्न में कहे, जो–व्रज में गोवर्धन पर्वत है। तहां हम प्रगट भये हैं। सो तू आय कें हमारो मंदिर समराव। और श्रीआचार्यजी को सेवक होउ। तब पूरनमल जागिकें सवेरे भये सगरो द्रव्य भेलो करि व्रज में गोवर्धनधर के आइ दरसन किये। पाछें रामदास भीतरिया सों पूछे, जो–मोकों श्रीनाथजी नें मंदिर सँवराइवे की आज्ञा दीनी है, सों मैं आयो हूं। तब रामदास सदू पांडे सब कहें, जो–श्रीनाथजी तो श्रीआचार्यजी के ठाकुर हैं। सो अब दोय–चारि दिनमें श्रीआचार्यजी पधारिवे वारे हैं। तब उनसों पूछि के उनकी आज्ञा होइ तो मंदिर सँवराऊ। पाछें श्रीआचार्यजी पधारे। तब पूरनमल ने दंडौत करि बिनती करी, जो–महाराज! मोकों सेवक करिये। और श्रीनाथजी मंदिर सँवरायवे की आज्ञा करी है। सो आपु आज्ञा देउ तो मैं सँवराउ। तब श्रीआचार्यजी पूरनमल कों नाम निवेदन कराय कहे, आगरे तें कारीगर बुलावो। सो पूरनमल ने कारीगर बुलाये। तब श्रीआचार्यजी वासों कहे, मंदिर को नकसा करि ल्यावो। तब कारीगर ने मंदिर को नकसा सिखरबंद कियो। धुजा कलस सहित। तब श्रीआचार्यजी कारीगर सों कहे, हमारे ठाकुर को

રાત્રિએ પૂરણમલને દૈવી જીવ જાણી શ્રીગોવર્દ્ધનધરે સ્વપ્નમાં કહ્યું, કે વ્રજમાં ગોવર્દ્ધન પર્વત છે. ત્યાં અમે પ્રકટ થયા છીએ. તે તૂં (ત્યાં) આવીને અમારૂં મંદિર સિદ્ધ કર. અને શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થા. ત્યારે પૂરણમલે જાગીને સવાર થયું ત્યારે બધું દ્રવ્ય ભેગું કરી વ્રજમાં ગોવર્દ્ધનધરનાં આવીને દર્શન કર્યાં. પછી રામદાસ ભીતરિયાને પૂછ્યું, કે મને શ્રીનાથજીએ મંદિર સિદ્ધ કરાવવાની આજ્ઞા આપી છે. તેથી હું આવ્યો છું. ત્યારે રામદાસ, સદૂપાંડે બધા કહે, કે શ્રીનાથજી તો શ્રીઆચાર્યજીના ઠાકુર છે. હમણાં બે ચાર દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી પધારવાવાળા છે. ત્યારે એમને પૂછીને એમની આજ્ઞા હોય તો મંદિર સિદ્ધ કરાવો. પછી શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. ત્યારે પૂરણમલે દંડવત કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને સેવક કરો. અને શ્રીનાથજીએ મંદિર સિદ્ધ કરાવવાની આજ્ઞા કરી છે તેથી આપ આજ્ઞા દો, તો હું સિદ્ધ કરાવું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પૂરણમલને નામ-નિવેદન કરાવીને કહ્યું, આગરાથી કારીગરને બોલાવો. ત્યારે પૂરણમલે કારીગર બોલાવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી એમને કહે, મંદિરનો નકશો કરી લાવો. ત્યારે કારીગરે મંદિરનો નકશો શિખરબંધ કર્યો. ધ્વજા-કલશ સહિત. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કારીગરને કહે, કે અમારા ઠાકુરજીનું મંદિર

मंदिर सिखर बंद धुजा, कलस को नाहीं। नंदराइजी के घर की नांई करो। तब कारीगर ने दूसरी वेर घर की नांई कियो। तब श्रीआचार्यजी के हस्त में नकसा को कागद आयो। तब उही सिखरबंद धुजा कलस सहित। तब श्रीआचार्यजी कहें, सिखरबंद क्यों किये ? तब कारीगर ने कही, महाराज ! हम तो घर की नांई किये हते। सो अब सिखरबंद धुजा कलस भयो ताको कारन तो हम जानत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम बैठे हैं, हमारे आगे नकसा तैयार करो। तब कारीगर ने घरकी नांई जैसे श्रीआचार्यजी कहे ता रीति सों कियो। जब नकसा तैयार भयो तब उही सिखरबंद धुजा कलस चक्र ह्वै गयो। तब श्रीआचार्यजी जाने, जो-श्रीठाकुरजी की इच्छा यह है, जो-जगत में पूजाय बहोत जीव उद्धार करेंगे। सो देवालय की रीति यहां राखनो उचित हैं। तब श्रीआचार्यजी गिरिराजजी सों पूछे, जो-प्रभु-इच्छा तुम्हारे ऊपर मंदिर बनाइवे की है। सो मंदिर बनेगो तब लौकिक रीति सों तुमकों श्रम बहोत होयगो। तब गोवर्धनजी कहें, हमकों परम सुख है। हमारे ऊपर हमारे प्रभु के लिये, जो-करें ता पर मैं प्रसन्न हों। तातें सुख तें मंदिर के लिये लौकिक रीति सब करो। मोकों कछू दुःख नाहीं।

શિખરબંધ ધ્વજા કલશનું નહીં. નંદરાયજીના ઘરની રીતે કરો. ત્યારે કારીગરે બીજી વાર ઘરની માફક (નકશો) કર્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીના હસ્તમાં નકશાનો કાગળ આવ્યો. ત્યારે તેજ શિખરબંધ ધ્વજા-કલશ સહિત. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શિખરબંધ કેમ કર્યો ? ત્યારે કારીગરે કહ્યું, મહારાજ ! અમે તો ઘરની માફક કર્યો હતો. તે હવે શિખરબંધ ધ્વજા કલશ (વાળો) થયો. તેનું કારણ તો અમે જાણતા નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે બેઠા છીએ, અમારી આગળ નકશો તૈયાર કરો. ત્યારે કારીગરે ઘરની માફક જેમ શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તે રીતિથી કર્યો. જ્યારે નકશો તૈયાર થયો ત્યારે તેજ શિખરબંધ ધ્વજા-કલશ ચક્રવાળો થઇ ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જાણ્યું, કે શ્રીઠાકુરજીની ઇચ્છા એ છે, જે જગતમાં પૂજાઇ ઘણા જીવોનો ઉદ્ધાર કરશે. તેથી દેવાલયની રીતિ અહીં રાખવી ઉચિત છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગિરિરાજજીને પૂછે, કે પ્રભુ-ઇચ્છા તમારા ઉપર મંદિર બંધાવવાની છે. તે મંદિર બનશે ત્યારે લૌકિક રીતિથી તમને શ્રમ ઘણો થશે. ત્યારે ગોવર્દ્ધનજી કહે, અમને પરમ સુખ છે. અમારા ઉપર અમારા પ્રભુને માટે જે કરે તે ઉપર હું પ્રસન્ન છું. તેથી સુખથી મંદિરના માટે લૌકિક રીતિ બધી કરો. મને કંઇ દુઃખ નથી.

भावप्रकाश—ताहीतें, पाछें श्रीगुसांईजी (हू) वैष्णव कों सेवा दरसनार्थ गोवर्द्धन पर चढ़न देते। और जहां तहां विना सामग्री, सेवा विना, चढ़न की आज्ञा नाहीं।

तब श्रीआचार्यजी पूरनमल कों आज्ञा दीनी, वेगे मंदिर सँवरावो। सो मंदिर की नींव खोदी। सो नींव भरि गई, इतने में पूरनमल को द्रव्य सब निघट गयो। तब पूरनमल कमायवे कों गये।

भावप्रकाश—सो द्रव्य घट्यो ताको अभिप्राय यह है, जो-पूरनमल के पिता को कमायो द्रव्य हतो। सो पिता के मरे पुत्रकी सत्ता होइ। तातें पूरनमल की सत्ता जानिकें श्रीनाथजी अंगीकार किये। परंतु लौकिक मनोरथ करि पिता द्रव्य कमायो हतो। तातें कार्य सिद्ध न भयो। और जो यही द्रव्य सों मंदिर बनें तो वित्तजा सेवा पूरनमल की सिद्ध न होई। तातें द्रव्य घट्यो। तब पूरनमल मंदिर की सेवा निमित्त कमायवे कों गये। यामें यह जताये, वैष्णव कों व्यौपार करनो तो भगवद्सेवा, गुरुसेवा और वैष्णव सेवा को मनोर्थ करि करनो। तब ही द्रव्य ते सेवा सिद्ध होई। तब वित्तजा सेवा कहिये।

पाछें पूरनमल गयो तब और वैष्णव राजसी कितनेन कही,

ભાવપ્રકાશ—તેથી જ પછી શ્રીગુસાંઇજી (પણ) વૈષ્ણવોને સેવા-દર્શનાર્થ ગોવર્દ્ધન ઉપર ચઢવા દેતા. અને જ્યાં ત્યાં વિના સામગ્રી સેવા વિના ચઢવાની આજ્ઞા નથી.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પૂરણમલને આજ્ઞા આપી, જલ્દી મંદિર સિદ્ધ કરાવ. પછી મંદિરની નીમ ખોદી. તે નીમ ભરાઇ ગઇ એટલામાં પૂરણમલનું દ્રવ્ય બધું ઘટી ગયું. ત્યારે પૂરણમલ કમાવવાને ગયા.

ભાવપ્રકાશ—દ્રવ્ય ઘટયું તેનો અભિપ્રાય એ છે, કે પૂરણમલના પિતાનું કમાવેલું દ્રવ્ય હતું. તે પિતાના મરે પુત્રની સત્તા થાય. તેથી પૂરણમલની સત્તા જાણીને શ્રીનાથજીએ અંગીકાર કર્યું. પરંતુ લૌકિક મનોરથ કરી પિતા દ્રવ્ય કમાયો હતો તેથી કાર્ય સિદ્ધ ન થયું. અને જો આ જ દ્રવ્યથી મંદિર બને તો પૂરણમલની વિત્તજા સેવા સિદ્ધ ન થાય. તેથી દ્રવ્ય ઘટયુ. ત્યારે પૂરણમલ મંદિરની સેવા નિમિત્ત કમાવવા ગયા. એમાં એ જણાવ્યું, વૈષ્ણવને વેપાર કરવો તે ભગવદ્સેવા, ગુરૂસેવા અને વૈષ્ણવસેવાનો મનોરથ કરીને કરવો. ત્યારે જ દ્રવ્યથી સેવા સિદ્ધ થાય. ત્યારે વિત્તજા સેવા (થઇ) કહેવાય.

પછી પૂરણમલ ગયા ત્યારે બીજા વૈષ્ણવ રાજસી કેટલાક હતા (તેમણે) કહ્યું,

जो–आज्ञा होय तो हम मंदिर सँवरावें। तब श्रीआचार्यजी कहें, पूरनमल आय के सँवरावेगो।

भावप्रकाश—सो याहीतें, जो–प्रभुने पूरनमल कों मंदिर संवराइवे की आज्ञा दई हैं। सो पूरनमल को मनोरथ सिद्ध करावनो है।

ता पाछें पूरनमल जवाहर को कसब करि थोड़े दिनमें बहोत कमाय कें आयें।

भावप्रकाश—यामें वैष्णव कों यह जताये, जो–कछू सेवा संबंधी मनोरथ करि ब्योपार करिये। और कार्य सिद्ध होनहार न होई तो ब्योपार हू सिद्ध न होई। तब वैष्णव सब भगवद् इच्छा माने। हरख सोक न करें। प्रभुकों जितनो करनो होइ तितनो सहज ही में सिद्ध होइ।

सो द्रव्य लेके पूरनमल आये। मंदिर सिद्ध कराये। तब श्रीआचार्यजी आछो मुहूरत देखि कें श्रीगोवर्धनधर कों मंदिर में पधराये। अक्षयतृतीया के दिन। तब पूरनमल ने बहोत द्रव्य खरच कियो। आभूषन वस्त्र सामग्री भेट आदि। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइकें पूरनमल सों कहें, जो–तेरो मनोरथ होइ सो राखे मति। सब करियो। तब पूरनमल नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी,

---

કે આજ્ઞા હોય તો અમે મંદિર સિદ્ધ કરાવીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, પૂરણમલ આવીને સિદ્ધ કરાવશે.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી, કે પ્રભુએ પૂરણમલને મંદિર સિદ્ધ કરાવવાની આજ્ઞા દીધી છે. તે પૂરણમલનો મનોરથ સિદ્ધ કરાવવો છે.

તે પછી પૂરણમલ જવેરાતનો ધંધો કરી થોડા દિવસમાં ઘણું કમાવીને આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં વૈષ્ણવોને એ જણાવ્યું, કે કંઇ સેવા સંબંધી મનોરથ કરી વેપાર કરીએ અને કાર્ય સિદ્ધ હોવાવાળું ન હોય તો વેપાર પણ સિદ્ધ ન થાય. ત્યારે વૈષ્ણવ બધું ભગવદિચ્છા માને. હરખ–શોક ન કરે. પ્રભુને જેટલું કરવું હોય તેટલું સહજમાં જ સિદ્ધ થાય.

તે દ્રવ્ય લઇને પૂરણમલ આવ્યા. મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ સુંદર મુહૂર્ત જોઇને શ્રીગોવર્દ્ધનધરને મંદિરમાં પધરાવ્યા. અક્ષયતૃતીયાનો દિવસ (હતો). ત્યારે પૂરણમલે બહુ દ્રવ્ય ખર્ચ કર્યું. આભૂષણ વસ્ત્ર સામગ્રી ભેટ આદિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને પૂરણમલને કહે, કે તારો મનોરથ હોય તે બાકી રાખીશ નહીં. બધું કરજે. ત્યારે પૂરણમલે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજાધિરાજ!

महाराजाधिराज ! मेरो यह मनोरथ है, जो-अपने हाथ सों अति सुगंध को अरगजा श्रीअंग में समपौं। तब श्रीआचार्यजी कहें, सुखेन मनोरथ करो। तब पूरनमल ने अत्यंत सुगंध को अरगजा सिद्ध करिकें सर्वांग में लगाये। बहोत आनंद पाये। तब श्रीआचार्यजी श्रीअंग को प्रसादी उपरना पूरनमल कों उढाये। पाछें द्रव्य बहोत बच्यो। सो पूरनमल ने श्रीआचार्यजी की भेट कियो।

भावप्रकाश—सो पूरनमल को मनोरथ यातें भयो, जो-पूरनमल कों लीला में 'चित्रलेखा' सखी अपने स्वरूप को ज्ञान भयो। तब श्रीआचार्यजी कों प्रसन्न जानि मनमें विचार कियो, जो-मैं मंदिर संवरायो सो सेवा तो लीला हू में मिलत हैं। कुंज संवारिवे की। परंतु श्रीआचार्यजी मुख्य श्रीस्वामिनीजी रूप हैं। तिनकी कृपा तें कछु श्रीअंग की सेवा करि लेउ, यह विचारी। अरगजा लेपन की सेवा श्रीस्वामिनीजी अपने हाथ सों प्रभु कों समर्पत हैं, संयोग समय। और विप्रयोग समय ललिताजी श्रीठाकुरजी कों समर्पत हैं। काहेतें? अरगजा श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग के भाव सों है। सो श्रीस्वामिनीजी की कृपा विना यह सेवा कहां मिले? सो श्रीआचार्यजी की प्रसन्नता सों पूरनमल को मनोरथ सिद्ध भयो। और श्रीआचार्यजी प्रसादी उपरेना अपनो उढ़ाये। तामें सगरो सरीर पूरन-

---

મારો આ મનોરથ છે, કે પોતાના હાથથી બહુ સુગંધીવાળો અરગજા શ્રીઅંગમાં સમર્પું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સુખેથી મનોરથ કરો. ત્યારે પૂરણમલે અત્યંત સુગંધીનો અરગજા સિદ્ધ કરીને સર્વાંગમાં લગાડ્યો. બહુજ આનંદ પામ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઅંગનો પ્રસાદી ઉપરણો પૂરણમલને ઓઢાડ્યો. પછી દ્રવ્ય ઘણું બચ્યું. તે પૂરણમલે શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કર્યું.

ભાવપ્રકાશ—તે પૂરણમલનો મનોરથ એથી થયો, કે પૂરણમલને (પોતે) લીલામાં ચિત્રલેખા સખી (છે એમ) પોતાના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને પ્રસન્ન જાણીને મનમાં વિચાર કર્યો, કે મેં મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યુ તે સેવા તો લીલામાં યે મળે છે. કુંજ સમ્હારવાની. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજી મુખ્ય શ્રીસ્વામિનીજી રૂપ છે. તેમની કૃપાથી કંઈ શ્રીઅંગની સેવા કરી લઉં એમ વિચાર્યું. અગ્ગજા લેપનની સેવા, શ્રીસ્વામિનીજી પોતાના શ્રીહસ્તથી પ્રભુને સમર્પે છે, સંયોગ સમય. અને વિપ્રયોગ સમયે લલિતાજી શ્રીઠાકુરજીને સમર્પે છે. કેમકે? અરગજા શ્રીસ્વામિનીજીના શ્રીઅંગના ભાવથી છે. તે શ્રીસ્વામિનીજીની કૃપા વિના એ સેવા ક્યાં મળે? તેથી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી પૂરણમલનો મનોરથ સિદ્ધ

मल को अलौकिक मानसी सेवा योग्य ह्वै गयो। तातें पूरनमल भगवद्सेवा नाहीं पधराई। मानसी में मगन भये। मंदिर सँवराये तामें वित्तजा सेवा सिद्ध भई। यामें यह जताये, जो–भाव करिकें एकहि सेवा में फल भयो। एक दिन अरगजा लगाये तन करि। धन करि मंदिर संवराये। तातें भाव विना जन्म भरि तनुजा वित्तजा सेवा करत हैं परंतु मानसी फल रूप पावत नाहीं। सो प्रीति सों एकही वार में फल पाये। तातें प्रीति सर्वोपरि फलकों सिद्ध करत है। यह जताये।

पाछें वरस के वरस श्रीगुसांईजी पूरनमल कों प्रसादी दगला पठावते। वार्ता ॥ २४ ॥

भावप्रकाश—सो दगला श्रीगोवर्धनधर को स्वरूप है। सो पूरनमल पास आपुही पधारते। सो पूरनमल के हृदय में अगाध भाव है। अष्टप्रहर लीला में मगन रहत हैं। तातें इनकी वार्ता को भाव कहां तांई कहिये ? ऐसे भगवदीय पूरनमल है। जो–श्रीनाथजी आप ही प्रमेय वल तें घर में दरसन दे मंदिर सँवरायवे की आज्ञा दिये।

* * *

થયો અને શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનો પ્રસાદી ઉપરણો ઓઢાડ્યો. તેમાં પૂરણમલનું બધું શરીર માનસી સેવા યોગ્ય અલૌકિક થઇ ગયું. તેથી પૂરણમલે ભગવદ્સેવા ન પધરાવી. માનસીમાં મગન થયા. મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યું તેમાં વિત્તજા સેવા સિદ્ધ થઇ. એમાં એ જણાવ્યું, કે ભાવ કરીને એક પણ સેવા (કરી તે)માં ફલ થયું. એક દિવસ અરગજા લગાવ્યું શરીરથી. ધન કરી મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યુ. તેથી ભાવ વિના જન્મ ભર તનુજા વિત્તજા સેવા કરે છે પરંતુ ફલ રૂપ માનસી મળતી નથી. તે પ્રીતિથી એક જ વારમાં ફળ મળ્યું. તેથી પ્રીતિ સર્વોપર ફળને સિદ્ધ કરે છે. એ જણાવ્યું.

પછી વર્ષના વર્ષ શ્રીગુસાંઇજી પૂરણમલને પ્રસાદી ડગલો મોકલતા.

ભાવપ્રકાશ—તે ડગલો શ્રીગોવર્દ્ધનધરનું સ્વરૂપ છે. તે પૂરણમલ પાસે આપજ પધારતા. તે પૂરણમલના હૃદયમાં અગાધ ભાવ છે. અષ્ટ પ્રહર લીલામાં મગન રહે છે. તેથી એમની વાર્તાનો ભાવ ક્યાં સુધી કહીએ ? એવા ભગવદીય પૂરણમલ છે, (કેમ) જે શ્રીનાથજીએ પોતે જ પ્રમેય બલથી ઘરમાં દર્શન દઇને મંદિર સિદ્ધ કરવાની આજ્ઞા આપી. વાર્તા ॥૨૪॥

* *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जादवेंद्रदास कुम्हार, महावन में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नंदरायजी की गाय हुती। तिनमें विजार हे। इनको नाम 'मदोन्मत्ता' सब कोऊ कहते। कोऊ विजार इनके संग आय न सकतो। श्रीठाकुरजी बहोत इनकों खवायो हैं। जमुनाजी में न्हवायो हैं। सो महावन में एक कुम्हार के प्रगटे। सो नारायनदास ब्रह्मचारी के घर मृत्तिका के पात्र ल्यावते। सो नारायनदास दैवी जानि जादवद्रदास कों एक दिन महाप्रसाद लिवायो। तब जादवेंद्रदास की बुद्धि निर्मल ह्वै गई। सो नारायनदास सों कहें, मोकों श्रीआचार्यजी को सेवक करावो। तब नारायनदास ने कही, तुम्हारी ज्ञाति कुम्हार हैं। सो कुम्हार को संग तुम तें छूटे तो सेवक करावें। तब जादवेंद्रदास नें कही, यह मैं पहिले ही मन में धारन करि लियो है। जो—आजु पाछें मा–बाप के हाथ सों न खानो, न जल लेनो। श्रीआचार्यजी के वैष्णव के हाथ को लेउंगो। परंतु अब अपुने घर को मुंह न देखोंगो। यह सुनिकें नारायनदास प्रसन्न होयके कहें, तू हमारे घर में रहियो। श्रीआचार्यजी पधारेंगे तब सेवक हुजियो। सो नारायनदास के घर ही में रहते। लकड़ी छाना ले आवते। पाछें श्रीआचार्यजी

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, યાદવેંદ્રદાસ કુંભાર, મહાવનમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં નંદરાયજીની ગાયો હતી, તેમાં આખલા છે. એનું નામ મદોન્મત્તા બધા કહેતા. કોઇ આખલો એની સાથે આવી ન શકતો. શ્રીઠાકુરજીએ એને બહુ જ ખવડાવ્યું છે. શ્રીજમનાજીમાં ન્હવાયો છે. તે મહાવનમાં એક કુંભારને ત્યાં જન્મ્યા. તે નારાયણદાસ બ્રહ્મચારીના ઘરે માટીનાં પાત્ર લાવતા. તેથી નારાયણદાસે દૈવી જાણી યાદવેંદ્રદાસને એક દિવસ મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. ત્યારે યાદવેદ્રદાસની બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઇ. તે નારાયણદાસને કહે, મને શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક કરાવો. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, તમારી જ્ઞાતિ કુંભારની છે. તે કુભારનો સંગ તમને છૂટે તો સેવક કરાવીએ. ત્યારે યાદવેદ્રદાસે કહ્યું, કે એ મેં પહેલાં જ મનમાં ધારણ કરી લીધું છે, જે આજ પછી મા–બાપના હાથનું ન ખાવું, ન જલ લેવુ. શ્રીઆચાર્યજીના વૈષ્ણવના હાથનું લઇશ. પરંતુ હવે મારા ઘરનું મ્હોડુ નહી જોઉ. એ સાંભળીને નારાયણદાસ પ્રસન્ન થઇને કહે, તુ અમારા ઘરમાં રહેજે, શ્રીઆચાર્યજી પધારે ત્યારે સેવક થજે. ત્યારથી તે નારાયણદાસના ઘરમાં જ રહેતા. લાકડાં છાણા વીણીને લઇ આવતા. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાવન પધાર્યા,

महावन पधारें। तब नारायनदास के घर उतरे। तब नारायनदास नें बिचार करिकें जादवेंद्रदास कों सेवक कराये। पाछें, आछें श्रीआचार्यजी के सेवक भये।

वार्ता-प्रसंग १—सो ये जादवेंद्रदास श्रीआचार्यजी के परम कृपापात्र भगवदीय हते। सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी आपु परदेस कों पधारते तब ये परदेस संग रहते। तब जादवेंद्रदास इतनी वस्तु ले चलते। एक कनात, एक हडवाई, दोई चारि दिन को सीधो। एक छोटी रावटी। और मारग में वैष्णव हार चलते सो मंजिल पर जाय सगरी परचारगी करते। रात्रि कों चौकी पहरा देते। ऐसी सेवा करते।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हते। सो एक दिन पहर डेढ़ रात्रि गई हती। फागुन वदि ७ को दिन हतो। ता समय श्रीगुसांईजी नें श्रीमुख सों कही, जो-या समय मंदिर की नीम खोदी जाय तो भलो दृढ़ होय। ऐसो मुहूर्त है। यह कहिकें आपु तो पोढ़े।

और जादवेंद्रदास तत्काल नीम खोदी। सो दोय प्रहर में सब खोदि कें माटी को ढेर कर्यो। पाछें श्रीगुसांईजी जागे तब देखें। तब कहें, यह माटी कैसी है? तब वैष्णव नें कही, जादवेंद्रदास ने

त्यारे नारायणदासना घरे ઉતર્યા. त्यारे नारायणदासे विचार करीने यादवेंद्रदासने सेवक कराव्या. पछी सारा श्रीआचार्यजीना सेवक थया.

वार्ता-प्रसंग १—એ યાદવેંદ્રદાસ શ્રીઆચાર્યજીના પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ તથા શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરદેશ પધારતા ત્યારે તે પરદેશ સાથે રહેતા. ત્યારે યાદવેંદ્રદાસ આટલી વસ્તુ લઇ ચાલતા. એક કનાત, એક હડવાઇ, બે ચાર દિવસનું સીધું, એક નાની રાવટી. અને માર્ગમાં વૈષ્ણવ થાકીને ચાલતા ત્યારે મુકામ ઉપર જઇ બધી પરચારગી કરતા, રાત્રિના ચોકી પહેરો દેતા. એવી સેવા કરતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—વળી એક સમય શ્રીગુસાંઇજી શ્રીગોકુલ હતા. તે એક દિવસ પ્રહર ડોઢ રાત્રિ ગઇ હતી. ફાગણ વદી ૭ નો દિવસ હતો. તે સમયે શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીમુખથી કહ્યું, કે આ સમય મંદિરનો પાયો ખોદ્યો જાય તો સારો દૃઢ થાય. એવું મુહૂર્ત છે. એમ કહીને પોતે તો પોઢ્યા.

અને યાદવેંદ્રદાસે તત્કાલ પાયો ખોદ્યો. તે બે પ્રહરમાં બધું ખોદીને માટીનો ઢગલો કર્યો. પછી શ્રીગુસાંઇજી જાગ્યા ત્યારે જોયું. ત્યારે કહ્યું, આ માટી કેવી છે?

सब खोदी है। तब श्रीगुसांईजी जादवेंद्रदास सों पूछें यह तुमने खोदी है? तब जादवेंद्रदास ने कही, जो–आप श्रीमुख सों कही, वाही समय मंदिर की नीम खोदी है। पाछें राजमजूर कारीगर ने एक महिना में नीम भरी। इतनी खोदी। ऐसे सामर्थ्यवान हते। पाछें मंदिर बन्यो, श्रीनवनीतप्रियजी आदि विराजें। श्रीगुसांईजी जादवेंद्रदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

वार्ता–प्रसंग ३—और श्रीनाथजीद्वार जलको कलालौ जानि रुद्रकुंड के पास एक कूंआ अपने हाथ सों खोद्यो। ताकी माटी पकाय पक्को बांधे। परंतु जल खारी निकस्यो। तब जादवेंद्रदास गंगाजी गये। तहां जाय हाथ सों गंगाजीमें जाय तर्पन करन लागे। और विनती कीनी, जो–ऐसो जल मिष्ट करो। सो जब जल मिष्ट भयो जाने तब निकसि आये। वार्ता ॥२५॥

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो–सगरे जगत में उत्तम गंगाजल निर्दोष हैं। तातें श्रीनाथजी की सेवा में निर्दोष पदार्थ विनियोग होय। तातें गंगाजी गये। सो जादवेंद्रदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वैष्णव ॥२५॥

* * *

त्यारे वैष्णुवे कह्युं, यादवेंद्रदासे बधी खोदी छे. त्यारे श्रीगुसांईजी यादवेंद्रदासने पूछे, आ तमे खोदी छे? त्यारे यादवेंद्रदासे कह्युं, के आपे श्रीमुखथी कह्युं, ते ज समये मंदिरनो पायो खोद्यो छे. पछी राज, मजूर, कारीगरे ओ ओक महिनामां पायो भर्यो. ओटली खोदी. ओवा सामर्थ्यवाळा हता. पछी मंदिर बन्युं, श्रीनवनीतप्रियजी आदि बिराज्या. श्रीगुसांईजी यादवेंद्रदासना उपर बहु ज प्रसन्न थया.

वार्ता–प्रसंग ३—बीजुं श्रीनाथजीद्वारमां जलनी खेंच जाणी रुद्रकुंडनी पासे ओक कुवो पोताना हाथथी खोद्यो. तेनी माटी पकवी पाको बांध्यो. परंतु जल खारुं निकळ्युं. त्यारे यादवेंद्रदास गंगाजी गया. त्यां जइ हाथथी गंगाजीमां उभा रही तर्पण करवा लाग्या. अने विनंती करी, के आवुं जल मीठुं करो. पछी ज्यारे जल मीठुं थयुं जाण्युं त्यारे निकळी आव्या. वार्ता ॥२५॥

भावप्रकाश—ओनुं कारण ओ, के बधा जगतमां उत्तम गंगाजल निर्दोष छे. तेथी श्रीनाथजीनी सेवामां निर्दोष पदार्थ विनियोग थाय तेथी गंगाजी गया. ते यादवेंद्रदास श्रीआचार्यजीना ओवा कृपापात्र भगवदीय हता. तेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीओ. वैष्णव ॥२५॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गुसांईदास सारस्वत, मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में गिरिराज पास गोविंदकुंड पर कदंब को वृक्ष है तहां के सूवा है। सो वेणुनाद श्रीठाकुरजी करते तब नादरस अधरामृत पान करते। सो ये गुसांईदास पूरब में सारस्वत ब्राह्मन के घर जन्मे। सो बरस चौदह के भये। तब एक ब्राह्मन के मुख तें श्रीभागवत की पारायन और भगवद्-गीता सुने। सो विरक्त होय तीरथ करन लागें। सो तीरथ करत चोवीस बरस के भये। सो मथुरा में आय निकसे। तब विश्रांत घाट पर श्रीआचार्यजी संध्यावंदन करत हते। सो दरसन करि गुसांईदास के मन में आई, जो—मैं अकेलो तीरथ वहोत कियो। परंतु अब इनकी सरन होंउ। तब श्रीआचार्यजी सों बिनती किये, महाराज! मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहे, तेरो मन तीरथ करन में है सो सेवक होइ कें कहा करेगो? तब गुसांईदास ने कही, महाराज! आप, जो—आज्ञा करोगे सो करूंगो। अब तीरथ करत करत हार्यो। अब मथुरा में एक ठोर करिकें रहोंगो। तब श्रीआचार्यजी गुसांईदास कों नाम निवेदन कराये। पाछें कहे, भगवद् सेवा करो। तब कहें, महाराज! आप श्रीठाकुरजी पधराय देउ

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ગુસાંઇદાસ સારસ્વત (બ્રાહ્મણ) મથુરામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં ગિરિરાજ પાસ ગોવિંદકુંડ (છે) ત્યાં કદંબનું વૃક્ષ છે ત્યાંના પોપટ છે. તે જ્યારે શ્રીઠાકુરજી વેણુનાદ કરતા ત્યારે નાદરસ-અધરામૃતનું પાન કરતા. તે ગુસાંઇદાસ પૂર્વમાં સારસ્વત બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે વર્ષ ચૌદના થયા. ત્યારે એક બ્રાહ્મણના મુખથી શ્રીભાગવતનું પારાયણ અને ભગવદ્ગીતા સાંભળી. પછી વિરક્ત થઇ તીર્થ કરવા લાગ્યા. તે તીર્થ કરતાં ચોવીસ વર્ષ થયાં. પછી મથુરામાં આવી નિકળ્યા. ત્યારે વિશ્રાંતઘાટ ઉપર શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવંદન કરતા હતા. તે દર્શન કરી ગુસાંઈદાસના મનમાં આવ્યુ, કે મેં એકલે તીર્થ ઘણાં કર્યા. પરતુ હવે એમની શરણે થઉં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી, મહારાજ! મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારૂં મન તીર્થ કરવામાં છે. તે સેવક થઇને શુ કરીશ? ત્યારે ગુસાંઇદાસે કહ્યુ, મહારાજ! આપ જે આજ્ઞા કરશો તે કરીશ. હવે તીર્થ કરતાં કરતાં હાર્યો. હવે મથુરામાં એક જગ્યા કરીને રહીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ગુસાંઇદાસને નામ-નિવેદન કરાવ્યુ. પછી કહે, ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે કહે, મહારાજ! આપ શ્રીઠાકુરજી

तिनकी सेवा करूँ। सो एक वैरागी पास चतुर्भुज स्याम स्वरूप श्रीठाकुरजी को हतो। सो उह वैरागी श्रीआचार्यजी कों स्वरूप दें द्वारिका कों गयो। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय गुसांईदास के माथे पधराये।

वार्ता-प्रसंग १—सो गुसांईदास मथुरा में एक घर ले तहां सेवा करन लागे। सो श्रीठाकुरजी गुसांईदास कों सानुभावता जतावन लागे। सो एक वैष्णव गुसांईदास के घर श्रीठाकुरजी को नित्य दरसन करिवे कों आवें। सो मनमें श्रीठाकुरजी सों प्रार्थना करें, जो-महाराज! मेरे माथे पधारो तो मैं सेवा करूं। या प्रकार मनमें नित्य बिनती करें। तब गुसांईदास उह वैष्णव सों कहें, जो-तुम मेरे पास रहो तो सेवा करो। तब उह वैष्णव ना कही। वाके मन में यह जो अकेलो स्वतंत्र सेवा की कहे। तातें उह वैष्णव मान्यो नाहीं। पाछें कछुक दिन में श्रीठाकुरजी गुसांईदास कों प्रेर्यो। तब गुसांईदास उह वैष्णव सों कहे, अब तुम श्रीठाकुरजी कों पधरावो, सेवा करो। तब उह वैष्णव नें कही, तुम कहा करोगे? तब गुसांईदास ने कही, मैं बद्रीकाश्रम जाउंगो। तहां मेरी देह छूटेगी। तब उह वैष्णव ने कही, कदाचित् देह भगवद् इच्छा तें न छूटें, फेर आवो तब? प्रभु की गति जानि न जाय। तब गुसांईदास नें

પધરાવી દો. તેમની સેવા કરૂ. તે એક વૈરાગી પાસે ચતુર્ભુજ શ્યામ સ્વરૂપ શ્રીઠાકુરજીનું હતું. તે વૈરાગી શ્રીઆચાર્યજીને સ્વરૂપ આપી દ્વારકા ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પંચામૃત સ્નાન કરાવી ગુસાંઇદાસને માથે પધરાવ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે ગુસાંઇદાસ મથુરામાં એક ઘર લઇ ત્યાં સેવા કરવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી ગુસાંઇદાસને સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. ત્યારે એક વૈષ્ણવ ગુસાંઇદાસના ઘરે શ્રીઠાકુરજીનાં નિત્ય દર્શન કરવાને આવે. તે મનમાં શ્રીઠાકુરજીને પ્રાર્થના કરે, કે મહારાજ! મારા માથે પધારો તો હું સેવા કરૂં. આ પ્રકારે મનમાં નિત્ય વિનંતી કરે. ત્યારે ગુસાંઇદાસ તે વૈષ્ણવને કહે, કે તમે મારી પાસે રહો તો સેવા કરો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે ના કહી. તેના મનમાં એ, કે એકલો સ્વતંત્ર સેવાનું કહે. તેથી તે વૈષ્ણવે માન્યું નહીં. પછી કેટલા દિવસમાં શ્રીઠાકુરજીએ ગુસાંઇદાસને પ્રેરણા કરી. ત્યારે ગુસાંઇદાસ તે વૈષ્ણવને કહે, હવે તમે શ્રીઠાકુરજીને પધરાવો, સેવા કરો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, તમે શું કરશો? ત્યારે ગુસાંઇદાસે કહ્યું, હું બદરીકાશ્રમ જઇશ. ત્યાં મારો દેહ છૂટશે. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, કદાચિત દેહ ભગવદ્દઇચ્છાથી ન છૂટ્યો અને પાછા આવો

कही, प्रभु ऐसी न करेंगे। और कदाचित् मैं आऊंगो तो तुम्हारे द्वारें रहूंगो। श्रीठाकुरजी तो तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं। मैं न पधराऊंगो। एक दरसन करि लेऊंगो। तब उह वैष्णव ने श्रीठाकुरजी कों पधराय भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। और गुसांईदास बद्रीकाश्रम गये। सो विरह करि देह छोड़ी। सो गुसांईदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे।

भावप्रकाश—सो देह छोड़ि लीला में सुवा भये।

पाछें कछुक दिन में गुसांईदास की देह छूटन के समाचार उह वैष्णव कों आये। तब कह्यो, श्रीआचार्यजी के वैष्णव झूंठ न बोलें, देह छोडी। पाछें मन लगाय कें सेवा करन लाग्यो। वार्ता ॥२६॥

भावप्रकाश—सो गुसांईदास कछु दिन भगवद् सेवा करी। तब अपने स्वरूप को ज्ञान भयो। तब श्रीठाकुरजी जताये, जो–अब तु या वैष्णव के माथे पधराय बद्रिकाश्रम जा। तहां विरह करि देह छोड़ि लीला में पंछी होइगो। तेरो साधन सिद्ध है चुक्यो। तब गुसांईदास गये। और उह वैष्णव श्रीचंद्रावलिजी की सखी लीला में हती। "चतुरा" इनको नाम हतो। सो मथुरा में एक सनोढ़िया के घर जन्म पायो। सो माता पिता स्त्री सब मरि गये। अकेलो रह्यो।

त्यारे? प्रभुनी गति जाणी न जाय. त्यारे गुसांइदासे कह्युं, प्रभु एवुं नहीं करे. अने कदाचित हुं आवीश तो तमारा द्वारे (पत्रो) रहीश. श्रीठाकुरजी तो तमारा उपर प्रसन्न छे. हुं पधरावीश नहीं, एक दर्शन करी लइश. त्यारे ते वैष्णव श्रीठाकुरजीने पधरावी सारी रीतिथी सेवा करवा लाग्यो. अने गुसांइदास बदरीकाश्रम गया. ते विरह करी देह छोड्यो. ते गुसांइदास श्रीआचार्यजीना एवा कृपापात्र भगवदीय हता.

ભાવપ્રકાશ—તે દેહ છોડી લીલામાં પોપટ થયા.

પછી કેટલાક દિવસમાં ગુસાંઇદાસની દેહ છુટવાના સમાચાર તે વૈષ્ણવ પાસે આવ્યા. ત્યારે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીના વૈષ્ણવ જુઠું ન બોલે. દેહ છોડી. પછી મન લગાડીને સેવા કરવા લાગ્યો. વાર્તા ॥૨૬॥

ભાવપ્રકાશ—તે ગુસાંઇદાસે કેટલાક દિવસ ભગવદ્સેવા કરી. ત્યારે પોતાના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ જણાવ્યું, કે હવે તૂ આ વૈષ્ણવના માથે પધરાવી બદરીકાશ્રમ જા. ત્યાં વિરહ કરીને દેહ છોડી લીલામાં પક્ષી થઈશ. તારૂં સાધન સિધ્ધ થઈ ચૂકયુ. ત્યારે ગુસાંઇદાસ ગયા. અને તે વૈષ્ણવ શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી લીલામાં હતી. ચતુરા એનું નામ હતું. તે મથુરામાં એક

सो श्रीआचार्यजी को सेवक हतो। सो भगवद् सेवा को ताप बहोत। सो एक दिन श्रीठाकुरजी स्वप्न में कहें, गुसांईदास के ठाकुरजी को नित्य दरसन करियो। सो श्रीठाकुरजी तेरे माथे पधारेंगे। उह वैष्णव आय गुसांईदास के घर नित्य दरसन करतो। सो श्रीठाकुरजी कृपा करिकें पधारे। तातें मूल में जेसो जीव होय ताही प्रकार सों साधन बनेतें फल होई। वैष्णव ॥२६॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, माधवभट्ट कास्मीरी, कास्मीर में रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये माधवभट्ट लीला में जसोदाजी की दासी है। सो परम चतुर है। श्रीठाकुरजी की सैया बिछावनो, जल ले आवनो। कुमारि राधा सहचरी के संग में है। 'रत्ना' इनको नाम है।

वार्ता-प्रसंग १—**सो माधवभट्ट कास्मीर में एक ब्राह्मन के घर प्रगटे। सो प्रथम माधवभट्ट केसवभट्ट के सेवक भये। सो केसवभट्ट कास्मीर में कथा कहते। सो केसवभट्ट श्रीआचार्यजी के पास मिलन कों आये। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीसुबोधिनीजी कहते।**

સનોડિયાના ઘરે જન્મ પામ્યો. પછી માતા-પિતા સ્ત્રી બધાં મરી ગયાં. એકલો રહ્યો, તે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હતો. તે ભગવદ્‌સેવાનો તાપ ઘણો. તે એક દિવસ શ્રીઠાકુરજી સ્વપ્નમાં કહે, ગુસાંઇદાસના ઠાકુરજીનાં નિત્ય દર્શન કરજે. તે શ્રીઠાકુરજી તારે માથે પધારશે. તે વૈષ્ણવ આવી ગુસાંઇદાસના ઘરે નિત્ય દર્શન કરતો. પછી શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરીને પધાર્યા. તેથી મૂળમાં જેવો જીવ હોય તેજ પ્રકારનું સાધન બન્યાથી ફલ થાય. વૈષ્ણવ ॥૨૬॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, માધવભટ્ટ કાશ્મીરી, કાશ્મીરમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ માધવભટ્ટ લીલામાં જશોદાજીની દાસી છે તે પરમ ચતુર છે. શ્રીઠાકુરજીની શૈયા બિછાવવી, જલ લઇ આવવું. કુમારી રાધા સહચરીના સંગમાં છે. રત્ના એનું નામ છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એ માધવભટ્ટ કાશ્મીરમાં એક બ્રાહ્મણના ઘરે પ્રકટ્યા. પ્રથમ તે માધવભટ્ટ કેશવભટ્ટના સેવક થયા. તે કેશવભટ્ટ કાશ્મીરમાં કથા કહેતા. તે કેશવભટ્ટ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે મળવાને આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીસુબોધિનીજી કહેતા. તે કેશવભટ્ટ સાંભળવાને આવતા. તેઓ વિદ્યામદથી ઉંચા આસન

सो केसवभट्ट सुनन कों आवते। सो विद्यामद तें उंचे आसन पर बेठ कै कथा सुनते। और माधवभट्ट मन लगाय दास भावसों सुनते। पाछें जब श्रीआचार्यजी कथा कहि चुकते तब माधवभट्ट श्रीआचार्यजी के वैष्णवन के पास जाय बेठते। सो वैष्णवन के मुख तें वार्ता सुनते। सो एक दिन केसवभट्ट ने माधवभट्ट सों कह्यो, जो–मैं कथा कहत हों, सो तू सुनन नाहीं आवत है। और हांसी मसखरी वार्ता क्यों सुनत है? तब माधवभट्ट नें कही, तुम्हारी कथा तें श्रीआचार्यजी के सेवकन की हांसी मसखरी वार्ता आछी लागत है। तातें उहां जात हों। यह माधवभट्ट की बात सुनि कें केसवभट्ट मनमें विचार कियो, अब यह हमारे काम को नाहीं। तातें श्रीआचार्यजी कों भेंट करूंगो। पाछें कछुक दिन में केसवभट्ट घर चलन लागे। तब श्रीआचार्यजी सों कहें, मैं आपु की कथा सुनी है। तातें यह माधवभट्ट कों आपकी भेट करत हों। यह मेरे काम को नाहीं है। सो तब माधवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास रहें। पाछें केसवभट्ट बिदा होय चले गये। तब एक वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों प्रश्न कियो, जो–महाराज! आपके श्रीमुख सों कथा माधवभट्ट ने हू सुनी और केसवभट्ट ने हू सुनी। सो माधवभट्ट कों बोध भयो और केसवभट्ट कों क्यों नाहीं भयो? ताको कारन

ઉપર બેસીને કથા સાંભળતા. અને માધવભટ્ટ મન લગાડીને દાસભાવથી સાંભળતા. પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી કથા કહી ચૂકતા ત્યારે માધવભટ્ટ શ્રીઆચાર્યજીના વૈષ્ણવોની પાસે જઇ બેસતા. તે વૈષ્ણવોના મુખથી વાર્તા સાંભળતા. પછી એક દિવસે કેશવભટ્ટે માધવભટ્ટને કહ્યું, કે હું કથા કહું છું તે તૂ સાંભળવા નથી આવતો અને હાંસી મશ્કરીની વાર્તા કેમ સાંભળે છે ? ત્યારે માધવભટ્ટે કહ્યું, તમ્હારી કથા કરતાં શ્રીઆચાર્યજીના સેવકોની હાંસી મશ્કરી વાર્તા સારી લાગે છે. તેથી ત્યાં જઉં છું. એ માધવભટ્ટની વાત સાંભળીને કેશવભટ્ટે મનમાં વિચાર કર્યો, હવે આ મારા કામનો નથી. તેથી શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કરીશ. પછી કેટલાક દિવસમાં કેશવભટ્ટ ઘર જવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને કહે, મેં આપની કથા સાંભળી છે તેથી આ માધવભટ્ટને આપની ભેટ કરૂં છું. આ મારા કામનો નથી. ત્યારે માધવભટ્ટ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની પાસે રહ્યા. પછી કેશવભટ્ટ વિદાય થઇ ચાલ્યા ગયા. ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને પ્રશ્ન કર્યો, કે મહારાજ ! આપના શ્રીમુખથી કથા માધવભટ્ટે પણ સાંભળી અને કેશવભટ્ટે પણ સાંભળી. તે માધવભટ્ટને જ્ઞાન થયું અને કેશવ-

कहा ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–केसवभट्ट ने बराबरि बैठिकें कथा सुनी तासों बोध न भयो। और माधवभट्ट दासभाव सों मन लगाय के सुन्यो। तातें याकों बोध भयो।

भावप्रकाश—यामें यह जतायो, कथा श्रवन में दासभाव होय तो फल रूप होई। अहंकारी कों कहें, तोहू सुने को फल न होई। यह जताये। मूल में माधवभट्ट लीला संबंधी हैं। तातें श्रीआचार्यजी की बानी फलित भई। और केसवभट्ट लीला संबंधी नाहीं है। मर्यादामार्गीय हैं। स्वर्ग तथा मुक्ति के अधिकारी हैं। तातें श्रीआचार्यजी की बानी फलित न भई। पाछें केसवभट्ट विदा होइकें देस कों गये।

और माधवभट्ट कों श्रीआचार्यजी ने नाम निवेदन करायो। तब माधवभट्ट ने बिनती कीनी, महाराज! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, तुम भगवद् सेवा करो। तब माधवभट्ट ने कही, महाराज! लालाजी को स्वरूप मेरे बाप दादा सों सदा रहे है। सो स्वरूप सदा मेरे पास राखत हों। तुलसी, चंदन चढाई धूप दीप करि नैवेद्य धरि या प्रकार आह्वाहन विसर्जन पूजा मार्ग रीत सदा करी है। अब आज्ञा देहु ता प्रकार करूं। तब

ભટ્ટને કેમ નહીં થયું ? તેનું કારણ શું ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે કેશવભટ્ટે બરાબરી બેસીને કથા સાંભળી તેથી બોધ ન થયો. અને માધવભટ્ટે દાસભાવથી મન લગાડીને સાંભળ્યું. તેથી તેને જ્ઞાન થયું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે કથા શ્રવણમાં દાસભાવ હોય તો ફલ રૂપ થાય. અહંકારીને કહે તો પણ સાંભળ્યાનું ફલ ન થાય એ જણાવ્યું. મૂળમાં માધવભટ્ટ લીલા સંબંધી છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીની વાણી ફલિત થઈ. અને કેશવભટ્ટ લીલા સંબંધી નથી. મર્યાદામાર્ગીય છે. સ્વર્ગ તથા મુક્તિના અધિકારી છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીની વાણી ફલિત ન થઇ. પછી કેશવભટ્ટ વિદાય થઇને દેશમાં ગયા.

અને માધવભટ્ટને શ્રીઆચાર્યજીએ નામ-નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે માધવભટ્ટે વિનંતી કરી, મહારાજ ! હવે અમને શું કર્તવ્ય છે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તમે ભગવદ્‌સેવા કરો. ત્યારે માધવભટ્ટે કહ્યું, મહારાજ ! લાલજીનું સ્વરૂપ મારા બાપ-દાદાથી સદા રહે છે તે સ્વરૂપને સદા મારી પાસે રાખું છું. તુલસી, ચંદન ચઢાવી ધૂપ-દીપ કરી નૈવેદ્ય ધરી, આ પ્રકારે આહ્‌વાહન-વિસર્જન પૂજામાર્ગની રીતિ સદા કરી છે. હવે આજ્ઞા દો તે પ્રકારે કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા,

श्रीआचार्यजी कहे, जा स्वरूप ले आउ। तब माधवभट्ट जाइकें ले आये। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय माधवभट्ट के माथे पधराये। सो माधवभट्ट कछुक दिन पुष्टिमार्ग की रीति सिखि कें आज्ञा मांगि कास्मीर अपने घर प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे। सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे।

वार्ता-प्रसंग २—और जा गाम में माधवभट्ट रहते, ता गाम में एक बड़ो गृहस्थ रहतो। सो वाको एक बेटा हतो सो मरि गयो। तब उह बहुत दुःख सों विलाप करन लाग्यो। और कह्यो, जो-याकों कोऊ जिवावे तो मैं जीउं। नाहीं तो याके संग मैं हूं मरूंगो। या प्रकार कहे, गिरि गिरि परें, धरती पर लोटे। सो एक वैष्णव और आय निकस्यो। उह गृहस्थ की दसा देखिकें कह्यो, जा गाम में माधवभट्ट सारिखे भगवदीय हैं तहां ऐसो दुःख क्यों होई? सो यह बात उह गृहस्थ सुनि के माधवभट्ट पास दोर्‍यो आयो। दंडौत करिकें बहोत विलाप करन लाग्यो। और कह्यो, तुम बड़े महापुरुष हो। मेरो बेटा मरि गयो। सो ताकों जिवाय देउ। नाहीं तो मैं हू वाके संग मरूंगो। या प्रकार बहोत दुःखी देखि के माधवभट्ट कों दया आई। सो माधवभट्ट एक श्लोक करि कें श्रीठाकुर के आगें धर्‍यो। सो श्लोक–

સ્વરૂપ લઇ આવ. ત્યારે માધવભટ્ટ જઇને લઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી માધવભટ્ટના માથે પધરાવ્યું. પછી માધવભટ્ટ કેટલાક દિવસમાં પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ શીખીને આજ્ઞા માંગી કાશ્મીર પોતાના ઘરે પ્રીતિપૂર્વક સેવા કરવા લાગ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—બીજું, જે ગામમાં માધવભટ્ટ રહેતા. તે ગામમાં એક મોટો ગૃહસ્થ રહેતો. તેને એક પુત્ર હતો તે મરી ગયો. ત્યારે તે બહુ જ દુઃખથી વિલાપ કરવા લાગ્યો. અને કહ્યું, કે આને કોઈ જીવાડે તો હું જીવું. નહીં તો આની સાથે હું પણ મરીશ. એ પ્રકારે કહે. પડી પડી જાય. ધરતી ઉપર આળોટે. ત્યાં એક વૈષ્ણવ બીજો આવી નિકળ્યો. તેણે તે ગૃહસ્થની દશા જોઇને કહ્યું, જે ગામમાં માધવભટ્ટ સરખા ભગવદીય છે ત્યાં આવું દુઃખ કેમ હોય? તે આ વાર્તા સાંભળીને તે ગૃહસ્થ માધવભટ્ટ પાસે દોડી આવ્યો. દંડવત્ કરીને બહુ વિલાપ કરવા લાગ્યો અને કહ્યું, તમે મોટા મહાપુરુષ છો. મારો પુત્ર મરી ગયો તેને જીવાડી દો. નહીં તો હું પણ એની સાથે મરીશ. એ પ્રકારે બહુ જ દુઃખી જોઇને માધવભટ્ટને દયા આવી. તે માધવભટ્ટે એક શ્લોક કરીને શ્રીઠાકુરજીના આગળ ધર્યો. તે શ્લોક—

दयालोरसमर्थस्य दुःखायैव दयालुता । विश्वोद्धारणदक्षश्च शास्त्रेष्वेकस्य शोभना ॥

भावप्रकाश—याको अर्थ यह है, जो–तुम दयाल हो । सो कैसे दयाल हो ? असमर्थ पर दयालता तुमहि करत हो । काहेतें ? दयालता को लक्षन यह है, जो–दुःखी पर दयालता प्रगट होइ सोई दयालता है । सो ऐसे एक तुम हो । और विश्वोद्धारन में चतुर एक तुमही हो । सगरे शास्त्र में तुमही कों गाये हैं । यह दयालता तुमहि कों सोहत हैं, तातें दुःख को नास करो ।

यह श्लोक सुनिकें श्रीठाकुरजी कहें, यह कितनीक बात है ? तुमकों दया आई है तो जाय वासों कहो, तेरो बेटा जीयो । तब माधवभट्ट बाहर आयकें कहें, जो–तेरो बेटा जीयो । तब उह गृहस्थ के मनमें आइ नाहीं, (क्यों) जो–कछू औषध दिये नाहीं । मुखसों कहे दिये हैं । इतने में वा गृहस्थ के घर के मनुष्य नें आय के कह्यो, तुमारो बेटा जीयो, बधाई देऊ ! तब वह दौरिकें घर में जाइ देखें तो बेटा जीयो बधाई करी । (पाछें) कह्यो, माधवभट्ट बड़े भगवदीय हैं । जिनके वचन ऐसे हैं, जो–जीयो कहत मात्र बेटा जीयो । पाछें रात्रिकों माधवभट्ट अपने मनमें बिचार कियो, जो–यह कार्य मैं बहोत अनुचित कियो । संसार में अनेक दुःखी सुखी लोग

દયાલોરસમર્થસ્ય............... (ઉપર જુઓ)

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ છે, કે તમે દયાલુ છો. તે કેવા દયાલુ છો ? અસમર્થ ઉપર દયાલુતા તમે જ કરો છો. કેમકે દયાલુતાનું લક્ષણ એ છે કે દુઃખી ઉપર દયાલતા પ્રકટ થાય તેજ દયાલુતા છે. એવા એક તમે જ છો અને વિશ્વોધ્ધરણમાં એવા તમે જ ચતુર છો. બધા શાસ્ત્રોમાં તમને જ ગાયા છે. આ દયાલુતા તમને જ શોભે છે. તેથી દુઃખનો નાશ કરો.

આ શ્લોક સાંભળીને શ્રીઠાકુરજી કહે, આ કેટલીક વાત છે ? તમને દયા આવી છે તો એને જઇને કહો, તારો પુત્ર જીવ્યો. ત્યારે માધવભટ્ટ બહાર આવીને કહે, કે જા, તારો પુત્ર જીવ્યો. ત્યારે એ ગૃહસ્થના મનમાં આવ્યું નહીં. (કેમ ?) જે કંઇ ઔષધિ આપી નહીં (માત્ર) મુખથી કહી દીધું છે. એટલામાં તે ગૃહસ્થના ઘરના મનુષ્યે આવીને કહ્યું, તમારો બેટા જીવ્યો. વધામણી આપો. ત્યારે તે દોડીને ઘરમાં જઇ જુએ તો પુત્ર જીવ્યો છે. વધામણી કરી. (પછી) કહ્યું, માધવભટ્ટ મોટા ભગવદીય છે. જેનાં વચન આવાં છે, કે જીવ્યો કહેતાં માત્ર પુત્ર જીવ્યો. પછી રાત્રિએ માધવભટ્ટે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો, કે આ કામ મેં બહુ જ અનુચિત કર્યું. સંસારમાં અનેક

हैं। तातें अब या गाम में रहिवे को धर्म नाहीं है। सो अर्द्धरात्रि समय श्रीठाकुरजी कों संपुट में पधराय कें चले। सो अडे़ल में श्री-आचार्यजी के पास आय रहे। तातें वैष्णव कों दयाहू विचारि कें करनो। लौकिक में माहात्म्य प्रगट करे तें गाम छोड़े तो धर्म रह्यो। नाहीं तो पाछें बहोत दुःख होतो। तातें लौकिक में लौकिक की नांई रहे तो धर्म रहे। श्रीठाकुरजी कों दुःख न होई। वैष्णव कों हू दुःख न होई। माधवभट्ट सर्व सामर्थवान हते। परन्तु तोऊ भाजनो पर्‍यो। तातें वैष्णव कों विचारि के काम करनो।

वार्ता-प्रसंग ३—और माधवभट्ट कों लिखिवे को बड़ो अभ्यास हतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीभागवत की टीका श्रीसुबो-धिनीजी करी। सो माधवभट्ट लिखत जाय। जहां माधवभट्ट न समझते तहां लेखन छोड़ि बैठि रहतें। तब श्रीआचार्यजी माधव-भट्ट कों समुझावते। तब लिखते। और माधवभट्ट श्रीआचार्यजी के आगें ऐसे बैठते, जो-पांव न दीसे।

भावप्रकाश—काहेतें? शास्त्र में कहे हैं बड़ेन के आगे सिद्ध आसन हू न बैठनो। और पॉंव न दीसे ऐसे बैठनो। सो दासभावसों बैठते।

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु पर-

દુ:ખી સુખી લોકો છે. તેથી હવે આ ગામમાં રહેવાનો ધર્મ નથી. પછી અડધી રાત્રિના સમયે શ્રીઠાકુરજીને ઝાંપીમાં પધરાવીને ચાલ્યા. તે અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી રહ્યા. તેથી વૈષ્ણવે દયા પણ વિચારીને કરવી. લૌકિકમાં માહાત્મ્ય પ્રકટ કર્યાથી ગામ છોડયું ત્યારે ધર્મ રહ્યો. નહી તો પછી ઘણું જ દુ:ખ થતું. તેથી લૌકિકમાં લૌકિકની માફક રહે તો ધર્મ રહે. શ્રીઠાકુરજીને દુ:ખ ન થાય. વૈષ્ણવને પણ દુ:ખ ન થાય. માધવભટ્ટ સર્વ સામર્થ્યવાન હતા. પરંતુ તો યે ભાગવું પડયું. તેથી વૈષ્ણવે વિચારીને કામ કરવું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—બીજું, માધવભટ્ટને લખવાનો બહુ અભ્યાસ હતો. તે શ્રીઆ-ચાર્યજી મહાપ્રભુએ શ્રીભાગવતની ટીકા શ્રીસુબોધિનીજી કરી તે માધવભટ્ટ લખતા જાય. જ્યાં માધવભટ્ટ ન સમજતા ત્યાં કલમ છોડી બેસી રહેતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી માધવભટ્ટને સમજાવતા ત્યારે લખતા. વળી માધવભટ્ટ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ એવી રીતે બેસતા કે પગ ન દેખાય.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે ? શાસ્ત્રમાં કહે છે કે મોટાની આગળ સિધ્ધ આસન પણ ન બેસવું. અને પગ ન દેખાય એમ બેસવું. તે દાસભાવથી બેસતા.

देस हते। तब माधवभट्ट संग हे। श्रीसुबोधिनी लिखते। सो एक दिन पिछली रात्रि कों माधवभट्ट लघुबाधा कों उठे। तब चोरन ने तीर मारयो। सो माधवभट्ट कों लाग्यो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को नाम लियो। और नाम लेतहि माधवभट्ट की देह छूटी। तब वैष्णवन नें इनकी देह को संस्कार कियो। पाछें एक वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! माधवभट्ट सारिखे भगवदीय कों या प्रकार मृत्यु क्यों भई? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों कहे, माधवभट्ट के परलोक में तो कछू हानी है नाहीं। परंतु इनको एक भगवद् अपराध परयो हतो। ताको दंड पायो। तब वैष्णवन ने पूछ्यो, जो–महाराज! ऐसो कहा अपराध परयो हतो? सो तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो–ये पहले अपने सेव्य श्रीठाकुरजी की सैया फूलन की बिछावते। सो तब एक दिन फूलन में अनजाने सुई रहि गई। सो माधवभट्ट ने जानी नाहीं। सो तब वह सुई श्रीठाकुरजी के श्रीअंग में स्पर्स भई। सो ता अपराध तें यह ऐसो भयो है। परि याकी देह सावधानता सों भगवद्नाम लेत छूटी है, तातें याकों कछू बाधक नाहीं है। ये श्रीनाथजी के चरणारविंद पाये। अब कछू कर्तव्यता रही नाहीं।

વાર્તા-પ્રસંગ ૪—વળી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પરદેશ હતા, ત્યારે માધવભટ્ટ સાથે હતા. શ્રીસુબોધિની લખતા. તે એક દિવસ પાછલી રાત્રિના માધવભટ્ટ લઘુશંકા માટે ઉઠ્યા. ત્યારે ચોરોએ તીર માર્યું. તે માધવભટ્ટને લાગ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનું નામ લીધું. અને નામ લેતાંજ માધવભટ્ટનો દેહ છુટ્યો. ત્યારે વૈષ્ણવોએ એમના દેહનો સંસ્કાર કર્યો. પછી એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! માધવભટ્ટ સરખા ભગવદીયની આ પ્રકારે મૃત્યુ કેમ થઇ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીમુખથી કહે, માધવભટ્ટને પરલોકમાં તો કંઇ હાની નથી. પરંતુ એને એક ભગવદ્ અપરાધ પડ્યો હતો. તેની શિક્ષા મળી. ત્યારે વૈષ્ણવોએ પૂછ્યું, કે મહારાજ! એવો શો અપરાધ પડ્યો હતો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આજ્ઞા કરે, કે એ પહેલાં પોતાના સેવ્ય શ્રીઠાકુરજીની શૈયા ફૂલોની બિછાવતા. ત્યારે એક દિવસ ફૂલોમાં અજાણે સુઇ રહી ગઇ. તે માધવભટ્ટે જાણ્યું નહીં. ત્યારે તે સુઇ શ્રીઠાકુરજીના શ્રીઅંગમાં સ્પર્શ થઇ. તે અપરાધથી આમ થયું છે. પરંતુ એની દેહ સાવધાનીથી ભગવદ્નામ લેતાં છુટી છે. તેથી એને કંઇ બાધક નથી. એણે શ્રીનાથજીના ચરણારવિંદને પ્રાપ્ત કર્યા. હવે કંઇ કર્તવ્યતા રહી નથી.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–पुष्टिमार्ग में सैया पर फूल बिछाइवे की रीति श्रीआचार्यजी नाहीं प्रगट किये। (क्यों) जो–ये लौकिक फूल हैं। सो इनकी दांडी कठिन हैं। और एक क्षन में कुम्हलाइ जाय, वस्त्रन में फूलन के दाग परें। तातें न्यारो फूल धरयो रहे। प्रभुकों सुगंध मात्र आवे। और लीला में तो फूल स्वरूपात्मक हैं। सो परम कोमल हैं। तातें फूलन की सैया बनावत हैं। सो माधवभट्ट श्रीआचार्यजी की रीति छोड़ि लीला में फूलन की सैया को वर्णन जानि माधवभट्ट सैया भरें। सो प्रभुकों आछी न लागी। तातें सुई रहि गई। माधवभट्ट कों दंड दे सगरे वैष्णव कों सिक्षा दिये। जो–श्रीआचार्यजी (ने) यह पुष्टिमारग में रीति प्रगट करी हैं, और ग्रंथन में जा प्रकार आज्ञा करी हैं, ताही प्रकार सेवा करनी। और चलनो। और अपने मनतें कल्पित प्रकार करें तो श्री-गोवर्द्धनधर कों भावे नाहीं। जदपि लीलामें वर्णन हू होई, तऊ अपने मारग में जितनी आज्ञा श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी की होय तितनो ही कार्य करे। तो प्रभु वेगे प्रसन्न होंई। अथवा माधवभट्ट प्रथम मर्यादा रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करते। सो मर्यादा में फूलन की सैया करत हे। सो तबको अपराध है। ताको दंड भयो। पाछें लीला में अंगीकार भये, यह जताये। श्रीआचार्यजी की

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે પુષ્ટિમાર્ગમાં શૈયા ઉપર ફૂલ બિછાવવાની રીતિ શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રકટ કરી નથી. (કેમ?) જે એ લૌકિક ફૂલ છે. તેથી એની દાંડી કઠણ છે. અને એક ક્ષણમાં કરમાઇ જાય, વસ્ત્રોમાં ફૂલોના ડાઘા પડે, તેથી અલગ ફૂલ ધર્યું રહે. પ્રભુને સુગંધી માત્ર આવે, અને લીલામાં તો ફૂલ સ્વરૂપાત્મક છે. તે પરમ કોમલ છે. તેથી ફૂલોની શૈયા બનાવે છે. તે માધવભટ્ટે શ્રીઆચાર્યજીની રીતિ છોડી લીલામાં ફૂલોની શયાનું વર્ણન જાણી માધવભટ્ટે શયા કરી. તે પ્રભુને ઠીક ન લાગી. તેથી સૂઇ રહી ગઈ. માધવભટ્ટને દંડ દઇને બધા વૈષ્ણવોને શિક્ષા આપી કે શ્રીઆચાર્યજીએ આ પુષ્ટિમાર્ગમાં રીતિ પ્રકટ કરી છે અને ગ્રંથોમાં જે પ્રકારે આજ્ઞા કરી છે. તેજ પ્રકારે સેવા કરવી અને ચાલવું. અને જો મનથી કલ્પિત પ્રકાર કરે તો શ્રીગોવર્દ્ધનધરને રૂચે નહીં. યદ્યપિ લીલામાં વર્ણન પણ હોય તોપણ પોતાના માર્ગમાં જેટલી આજ્ઞા શ્રીઆચાર્યજી, શ્રીગુસાંઇજીની હોય તેટલું જ કાર્ય કરે. તો પ્રભુ વ્હેલા પ્રસન્ન થાય. અથવા માધવભટ્ટ પ્રથમ મર્યાદા રીતિથી શ્રીઠાકુરજીની પૂજા કરતા તે મર્યાદામાં ફૂલોની શૈયા કરતા હતા ત્યારનો અપરાધ છે. તેનો દંડ થયો. પછી

सरनि तें जनम जनम को अपराध होई सो याही जनम में भोग लेई। पाछें बाधक न रहे। ऐसो श्रीआचार्यजी की सरनि को प्रताप है। जो-सर्व अपराध भोगि, लीला में प्राप्त होई। इहांई भोग छूटे यह सरन को प्रताप दिखाये। यह भाव है।

सो माधवभट्ट की देह छूटी। तब श्रीआचार्यजी कहे, अब श्रीसुबोधिनीजी रही। भगवद् इच्छा इतनी प्रगट करन की हती। सो माधवभट्ट की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥२७॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, श्रीठाकुरजी कों पास बुलावने हते। सो दोय आज्ञा आगे भई, सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु न माने। तब माधवभट्ट कों यह अपराध के मिष लीला में बुलाई तीसरी आज्ञा दीनी। तब श्रीआचार्यजी "अंतःकरणप्रबोध" ग्रन्थ करि अंतर्धान लीला किये। यह कारन है।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास, वांसवाडे के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास श्रीयमुनाजी की सखी हैं। 'रसप्रकासिका' इनको नाम हैं। ये लीला में ऐसी वार्ता भक्तन सों करे, जो-सबन के मनमें

લીલામાં અંગીકાર થયા, એમ જણાવ્યું. શ્રીઆચાર્યજીની શરણથી જન્મ જન્મનો અપરાધ હોય તે આ જ જન્મમાં ભોગવી લે. પછી બાધક ન રહે. એવો શ્રીઆચાર્યજીના શરણનો પ્રતાપ છે. તે સર્વ અપરાધ ભોગવી લીલામાં પ્રાપ્ત થાય. અહીં જ ભોગ છુટે એ શરણનો પ્રતાપ દેખાડ્યો. એ ભાવ છે.

પછી માધવભટ્ટની દેહ છુટી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે શ્રીસુબોધિનીજી રહ્યાં. ભગવદ્દઇચ્છા એટલી જ પ્રકટ કરવાની હતી. તે માધવભટ્ટની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૨૭॥

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, શ્રીઠાકુરજીને પાસે બોલાવવા હતા તે બે આજ્ઞા આગળ થઈ તે શ્રીઆચાર્ય મહાપ્રભુએ ન માની ત્યારે માધવભટ્ટને આ અપરાધના મિષથી લીલામાં બોલાવી ત્રીજી આજ્ઞા આપી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'અંતઃકરણપ્રબોધ' ગ્રન્થ કરી અંતર્ધાન લીલા કરી. એ પણ કારણ છે.

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ગોપાલદાસ વાંસવાડાના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ ગોપાલદાસ શ્રીયમુનાજીની સખી છે. 'રસપ્રકાશિકા' એમનું નામ છે. એ લીલામાં એવી વાર્તા ભક્તોથી કરે કે બધાના મનમાં રસનો

रसको प्रकास होय जाय। सो गोपालदास बांसवाडे में एक क्षत्री हतो वाके घर प्रगट भये। सो उह क्षत्री वैश्य वृत्ति करतो। और सराफि की दुकान हू करतो। सो दासजनन में। सो उह क्षत्री के बेटा चारि आगें भये सो मरि जाते। पांचमे गोपालदास भये। तब क्षत्री ने मानता करी, जो–यह बेटा जीवे तो तीर्थराज प्रयाग में याको मुंडन करोंगों। सो गोपालदास वरस पांच के भये। परंतु वह क्षत्री को ब्योपार में मन बहोत। सो प्रयाग जाय न सके। सो ऐसे करत गोपालदास बरस ग्यारह के भये। तब क्षत्री ने एक गाड़ी करि अपुनो गुमास्ता चाकर संग करि दिये। और कहे, गोपालदास को प्रयाग में मुंडन करि वेगि ले आवोगे तो गोपालदास को विवाह करिये। सो या प्रकार गोपालदास बांसबाडा तें चलें। तब प्रयाग में आय श्रीगंगाजी श्रीयमुनाजी को दरसन किये। सो दैवी हते। इनकों अलौकिक दरसन भयो। तब गोपालदास उह गुमास्ता सों कहे, मैं तो इहां वार न मुंडाऊंगो। यह तीरथ क्षेत्र तें कोस पांच बाहर जाय मुंडाउंगो। कहा मोकों नरक में डारोगे? यह रसरूप जल तिनके मध्य बार डारूं? जो–गुमास्ता नें बहुतेरो समुझायो, जो–तुम्हारे पिता की मानता है। और यह प्रयाग तीर्थ में मूंड मुंडाये को बहुत फल है। तब गोपालदास ने कही पिता मूर्ख है। जो–ऐसी

પ્રકાશ થઇ જાય. તે ગોપાલદાસ વાંસવાડામાં એક ક્ષત્રી હતો તેના ઘરે પ્રકટ થયા. તે ક્ષત્રી વૈશ્યવૃત્તિ કરતો હતો. અને સરાફીની દુકાન પણ કરતો. દાસજનોમાં. તે ક્ષત્રીને ચાર બેટા આગળ થયા તે મરી જતા. પાંચમા ગોપાલદાસ થયા ત્યારે ક્ષત્રીએ માનતા કરી, કે આ પુત્ર જીવે તો તીર્થરાજ પ્રયાગમાં એનું મુંડન (વાળ ઉતારવા) કરીશ. પછી ગોપાલદાસ વર્ષ પાંચના થયા. પરંતુ તે ક્ષત્રીનું મન વેપારમાં ઘણું. તેથી પ્રયાગ જઇ ન શકે. એમ કરતાં ગોપાલદાસ વર્ષ અગ્યારના થયા ત્યારે ક્ષત્રીએ એક ગાડી કરી પોતાના ગુમાસ્તા ચાકર સંગ કરી દીધા. અને કહે, ગોપાલદાસને પ્રયાગમાં મુંડન કરાવી જલ્દી લઇ આવો તો ગોપાલદાસનો વિવાહ કરીએ. એ પ્રકારે ગોપાલદાસ વાંસવાડાથી ચાલ્યા. ત્યારે પ્રયાગમાં આવી શ્રીગંગાજી શ્રીયમુનાજીનાં દર્શન કર્યાં. તે દૈવી હતા. એમને અલૌકિક દર્શન થયાં. ત્યારે ગોપાલદાસ તે ગુમાસ્તાને કહે, હું તો અહીં વાળ નહીં મૂડાવું. આ તીર્થ ક્ષેત્રથી કોસ પાંચ બહાર જઇ મુડાવીશ. શું મને નર્કમાં નાખવો છે? આ રસરૂપ જલ તેની મહીં વાળ નાખું? પછી ગુમાસ્તાએ બહુ બહુ સમજાવ્યો, કે તમારા પિતાની માનતા છે. અને આ પ્રયાગ તીર્થમાં માથું મૂડાવવાનુ બહુ ફલ છે. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું,

मानता करी। और मोकों तो फल ऐसो नाहीं चहिये। ब्राह्मन ने तीरथ में दान लेवे के लिये ऐसे फल कहे हैं। मैं तो इहां कबहू न मुडाउंगो। सो गोपालदास प्रयाग सों पांच कोस गंगापार जाय मुंडन कराये। पाछें न्हायकें फेरि प्रयाग में आपु न्हाये। दान पुन्य किये। श्रीजमुनाजी श्रीगंगाजी की पूजा दूध अरगजा माला चंदन सों किये। पांच रात्रि रहे। सो श्रीआचार्यजी हू प्रयाग पधारे हते। सो गोपालदास नित्य पूजन त्रिवेनी को करते। सो पांचमें दिन श्रीआचार्यजी गोपालदास के पास आपहि स्नान कों पधारे। दैवी जीव जानि, कृपा करन कों। सो गोपालदास न्हात हते। तब श्रीआचार्यजी त्रिवेनी में तें एक अंजलि जल भरिकें गोपालदास के ऊपर डारि दिये। सो गोपालदास कों अपुने स्वरूप को ज्ञान भयो, और श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। तब गोपालदास जलहि में माथो न्हवाये। दोऊ हाथ जोरिकें श्रीआचार्यजी सों विनती किये, महाराज! मैं बड़ो पापी हों, बहोत जन्म संसार में भटक्यो। अब मो पर कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि गोपालदास कों जलहि में नाम निवेदन कराये। मारग को सिद्धांत हृदय में स्थापन करि दिये। और गोपालदास सों कहे, तुम

के पिता मुर्ख छे. जे एवी मानता करी. अने मने तो फल एवुं जोइए नहीं. ब्राह्मणोए तीर्थमां दान लेवाने माटे एवां फल कह्यां छे. हुं तो अहीं कदीये नहीं मूंडावुं. पछी गोपालदासे प्रयागथी पांच कोस गंगा पार जइ मूंडन कराव्युं. पछी न्हाइने फरी प्रयागमां पोते न्हाया. दान पूण्य कर्युं. श्रीजमनाजी श्रीगंगाजीनी पूजा दूध अरगजा, माला, चंदनथी करी. पांच रात्रि रह्या. त्यारे श्रीआचार्यजी पण प्रयाग पधार्या हता. ते गोपालदास नित्य पूजन त्रिवेणीनुं करता. ते पांचमा दिवसे श्री-आचार्यजी गोपालदासनी पासे पोते ज स्नान माटे पधार्या. दैवीजीव जाणी कृपा करवा माटे. ते गोपालदास न्हाता हता. त्यारे श्रीआचार्यजीए त्रिवेणीमांथी एक अंजली (खोबो) जल भरीने गोपालदासना उपर नाख्युं. त्यारे गोपालदासने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान थयुं. अने श्रीआचार्यजीना स्वरूपनुं ज्ञान थयुं. त्यारे गोपालदासे जलमां ज माथुं नमाव्युं. बन्ने हाथ जोडीने श्रीआचार्यजीने विनंती करी, महाराज! हुं महान पापी छुं. बहु जन्म संसारमां भटक्यो. हवे मारा उपर कृपा करो. त्यारे श्रीआचार्यजीए दैन्यता जोइ गोपालदासने जलमां ज नाम-निवेदन कराव्युं. मार्गनो सिद्धांत हृदयमां स्थापन करी दीधो. अने गोपालदासने कहे, तमे भगवत्सेवा करो. त्यारे गोपालदासे बहार आवीने वस्त्र पहेर्यां. अने

भगवद् सेवा करो। तब गोपालदास बाहिर आय वस्त्र पहरें। और श्रीआचार्यजी न्हाय वस्त्र अपरस के पहिरि, मध्याह्न की संध्या करि, गोपालदास सों कहें, तू कहूँते भगवद् स्वरूप ले अड़ेल आईयो, यह कहि आपु तो अड़ेल पधारे। पाछें गोपालदास प्रयाग में न्योछावरि दे लालजी ले, अड़ेल में आये। तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय गोपालदास के माथे पधराये। पाछें पांच दिन गोपालदास अड़ेल में रहि पुष्टिमारग की रीति सब सीखे। पाछें श्रीआचार्यजी सों बिदा होयकें बांसवाड़े में अपने घर आये। तब गुमास्ता ने गोपालदास के पिता सों सब समाचार कहे। जो—यह तुम्हारो लरिका प्रयाग सों पांच कोस गंगापार जाय मुंडन करायो। हम बहोत कहे, मान्यो नाहीं। और वैष्णव होइ आयो है। तब गोपालदास के पिताने कही भई सो सही, बोले मति। काहेतें, गोपालदास के ऊपर माता पिता को स्नेह बहोत हतो। जो—यह कहूं घर छोड़िकें निकस जायगो। तातें गोपालदास सों कहे नाहीं। पाछें मा बाप ने कही, भूखे होउगे कछू खाव। तब गोपालदास ने कही, मैं तो तुम्हारो जल न पीउंगो। तुम जाय श्रीआचार्यजी के सेवक ह्वै आवो तो मेरे तुम्हारें बनें। नाहीं तो मोकों थोरी सी जगह न्यारी करि देउ। तामें मैं रहुंगो। तब पिता ने कही, तेरो ब्याह

શ્રીઆચાર્યજી ન્હાઇ વસ્ત્ર અપરસનાં પહેરી મધ્યાહ્નની સંધ્યા કરી ગોપાલદાસને કહે, તૂ કંઇથી ભગવત્સ્વરૂપ લઈ અડેલ આવજે, એમ કહી આપ તો અડેલ પધાર્યા. પછી ગોપાલદાસ પ્રયાગમાં ન્યોછાવર દઈ લાલજી લઈ અડેલમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવીને ગોપાલદાસને માથે પધરાવ્યા. પછી પાંચ દિવસ ગોપાલદાસ અડેલમાં રહી પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ બધી શીખ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય થઇને વાંસવાડામાં પોતાના ઘરે આવ્યા. ત્યારે ગુમાસ્તાએ ગોપાલદાસના પિતાને બધા સમાચાર કહ્યા, કે આ તમારા બાલકે પ્રયાગથી પાંચ કોસ (દશ માઇલ) ગંગા પાર જઇ મૂંડન કરાવ્યું (છે). અમે બહુ કહ્યું, (પણ) માન્યું નહી. અને વૈષ્ણવ થઈ આવ્યો છે. ત્યારે ગોપાલદાસના પિતાએ કહ્યું, થયુ તે ખરૂં. બોલીશ નહી. કેમકે ગોપાલદાસના ઉપર માતા–પિતાનો બહુ સ્નેહ હતો. (તેથી વિચાર્યું, કે) આ કદાચ ઘર છોડીને નિકળી જશે. તેથી ગોપાલદાસને કહ્યું નહીં. પછી મા બાપે કહ્યું, ભૂખ્યા હશો માટે કંઇ ખાવ. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, હું તો તમારૂં જલ નહીં પીઉં. તમે જઇ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ આવો તો મારે તમારે બને, નહીં તો મને થોડીક જગા અલગ કરી

करनो है, सो कैसे होइगो? तब गोपालदास ने कही, अब या समय जगह तो करि देउ। पाछें, जो–होइगी सो सही। अबही तो ब्याह नाहीं होत है। तब पिताने घरमें जगह कर दीनी। तहां गोपालदास जगह खासा करि, श्रीठाकुरजी की रसोई करि, भोग धरि, महाप्रसाद लिये। पाछें श्रीठाकुरजी को मंदिर संवराये। प्रीतिसों सेवा करन लागे। पाछें पिताने गोपालदास की सगाई करी। सो ब्याह हू भयो। परंतु सुसरारि में, घरमें, काहू के हाथ को जल न लिये। पाछें गोपालदास ने पिता सों कही, जो–तुम श्रीआचार्यजी के सेवक होउ तो आछो है। नाहीं तो मैं स्त्री कों सेवक कराय ल्याउं। तब माता पिता ने कही, द्रव्य चहिये सो लेहु, स्त्री कों सेवक करावो। और हमतो सेवक न होइंगे। तब गोपालदास ने स्त्री सों कही, जो–तू सेवक होउ। माता पिता को ज्ञाति को खानपान छोड़े तो मेरे तेरें बनें। तब स्त्री ने कही, मैं सेवक तो होउंगी, परंतु माता पिता को खानपान तो न छोडोंगी। तब गोपालदास मनमें विचारें, जो–श्रीआचार्यजी की सेवकनी तो कराउं। जो–उत्तम जीव होइगो तो आपुहि सब धर्म सिद्धि होइगो। तब गाड़ी पर स्त्री कों चढ़ाय बांसवाडा सों चले सो कछुक दिन में प्रयाग आये। पाछें अड़ेल में आय श्रीआचार्यजी सों दंडौत करि विनती

દો તેમાં હું રહીશ. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, તારૂં લગન કરવું છે. તે કેમ થશે? ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, હમણાં આ સમયે જગા તો કરી દો પછી જે થશે તે ખરૂં. હમણાં તો લગ્ન નથી થતું? ત્યારે પિતાએ ઘરમાં જગા કરી દીધી. ત્યાં ગોપાલદાસ જગા ખાસા કરીને શ્રીઠાકુરજીની રસોઇ કરીને ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લીધો પછી શ્રીઠાકુરજીનું મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યું. પ્રીતિથી સેવા કરવા લાગ્યા. પછી પિતાએ ગોપાલદાસની સગાઇ કરી. લગન પણ થયું. પરંતુ સાસરામાં, ઘરમાં, કોઇના હાથનું જલ ન લીધું. પછી ગોપાલદાસે પિતાને કહ્યુ, કે તમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થાવ તો સારૂ છે. નહીં તો હું સ્રીને સેવક કરાવી લાઉ. ત્યારે માતા પિતાએ કહ્યું, દ્રવ્ય જોઇએ તે લો. સ્રીને સેવક કરાવો. અને અમે તો સેવક નહીં થઇએ. ત્યારે ગોપાલદાસે સ્રીને કહ્યું, કે તૂ સેવક થા. માતા પિતાનું જ્ઞાતિનું ખાનપાન છોડે તો મારે તારે બને. ત્યારે સ્રીએ કહ્યું, હું સેવક તો થઇશ પરંતુ માતા પિતાનું ખાનપાન તો નહીં છોડું. ત્યારે ગોપાલદાસ મનમાં વિચારે, કે શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની તો કરાવું. જો ઉત્તમ જીવ હશે તો આપથીજ બધો ધર્મ સિદ્ધ થશે. ત્યારે ગાડી ઉપર સ્રીને ચઢાવી વાંસવાડાથી ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં પ્રયાગ આવ્યા. પછી અડેલમાં આવી શ્રી-

किये, महाराज! मेरे माता-पिता तो सेवक न भये, मैं बहोत कही। ये स्त्री कों संग ल्यायो हूँ। सो नाम निवेदन कराय कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तेरी स्त्री पुष्टि जीव नाहीं है। तातें निवेदन मति करावें। यासों न बनेगो। यह जहां तहां खायगी। और नाम सुनाइ देहिंगें। तेरे संबंध सां तेरे माता, पिता, स्त्री को उद्धार होयगो। लीला संबंध न होइगो। तब गोपालदास ने कही, कृपा करि नाम हि सुनाइये। तब श्रीआचार्यजी ने गोपालदास की स्त्री कों नाम सुनाये। पाछें गोपालदास कछूक दिन श्रीआचार्यजी के पास रहि कै पाछें विदा होई वांसबाड़ा अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—**सो गोपालदास ने अपने घर के दरवाजे पास मारग में मिलिवेवारे के लिये एक विश्रामस्थल करि राखे। जो आवे सो वहां उतरे। सो गोपालदास बिचारे, जो-गाममें तो ऐसो कोउ वैष्णव है नाहीं, जासों भगवद् सेवा वार्ता करिये। तातें विश्रामस्थल होइगो तो कोई वैष्णव सों मिलाप होयगो। यह मनोरथ बिचारि विश्रामस्थल किये।**

भावप्रकाश—विश्रामस्थल कों धर्मसाला नाहीं कह्यो, सो यातें, जो-

---

આચાર્યજીને દંડવત કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મારા માતા પિતા તો સેવક ન થયા. મે બહુ કહ્યું. આ સ્ત્રીને સાથે લાવ્યો છું. તે નામ નિવેદન કરાવી કૃપા કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ તારી સ્ત્રી પુષ્ટિજીવ નથી. તેથી નિવેદન ન કરાવ. એનાથી (ધર્મ) નહીં બને. એ જ્યાં ત્યાં ખાશે. એને નામ સંભળાવી દઇશુ. તારા સંબધથી તારા માતા-પિતા, સ્ત્રીનો ઉદ્ધાર થશે. લીલા-સંબંધ નહીં થાય. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, કૃપા કરી નામ જ સભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ગોપાલદાસની સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. પછી ગોપાલદાસ કેટલાક દિવસ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહીને પછી વિદાય થઇ વાંસવાડા પોતાના ઘરે આવ્યા. ભગવદ્સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસગ ૧—તે ગોપાલદાસે પોતાના ઘરના દરવાજા પાસે માર્ગમાં મળવા વાળાને માટે એક વિશ્રામ-સ્થલ કરી રાખ્યો. જે આવે તે ત્યાં ઉતરે. તે ગોપાલદાસ વિચારે, કે ગામમાં તો એવો કોઇ વૈષ્ણવ નથી જેનાથી ભગવદ્સેવા વાર્તા કરીયે. તેથી વિશ્રામ-સ્થલ થશે તો કોઇ વૈષ્ણવનો મિલાપ થશે. એ મનોરથ વિચારી વિશ્રામ-સ્થલ કર્યું.

ભાવપ્રકાશ—વિશ્રામ-સ્થલને ધર્મશાલા નહી કહી, તે એથી કે

धर्मसाला बनाये को पुन्य बहोत कहे हैं। और पुन्य फल को मनोरथ होय तो पुष्टिमार्गीय कों यहू बाधक है।

सो मारग चलिबे वारे उहां आई उतरतें। सो सांझ के उह स्थल में गोपालदास जातें। जो उतरे होंइ तिनसों पूछते। तामें कोई भूखो होई, तिनकों खाइवे कों देते। और कोई वैष्णव होइ तो उनकों अपुने घर ल्याई प्रीति सों महाप्रसाद लिवावते। दोय चारि दिन राखते। खरची न होइ ताकों खरची देते। ऐसे करत एक दिन पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन आय निकसे। सो गोपालदास ने उन सों पूछ्यो, तुम कौन हो, कहां तें आवत हो, कहां जाउगे? तब पद्मारावल ने कही, हम सांचोरा ब्राह्मन हैं। हमकों श्रीरनछोडजी के दरसन पर प्रीति हैं। सो हमारो जजमान मावजी पटेल उज्जैन में हैं। सो उनसों खरची ले द्वारिका जाय श्रीरनछोडजी के दरसन करत हों। जब खरची खूटत है तब फेर उज्जैन जाइ मावजी पटेल सों खरची ले द्वारिका जायकें दरसन करत हैं। तब गोपालदास यह वचन पद्मारावल के सुनिकें दैवी जीव जानि बात चलाये। जो जैसी लगन श्रीरनछोडजी में है ऐसी श्रीआचार्यजी में होइ तो यह ब्राह्मन को काज होय जाय। यह विचारि कें गोपालदास नें पद्मारावल

धर्मशाला बनाववानु पुण्य घणुं कह्युं छे. अने पुण्य फलनो मनोरथ होय तो पुष्टिमार्गीयोने ते पण बाधक छे.

ते मार्गे चालवावाळा त्यां आवी उतरता. पछी सांजना ते स्थलमां गोपालदास जता. जे उतर्या होय तेमने पूछता. तेमां कोई भूख्यो होय, तेमने खावानुं आपता. अने कोई वैष्णव होय तो एमने पोताना घरे लावी प्रीतिथी महाप्रसाद लेवडावता. बे-चार दिवस राखता. खर्ची न होय तेमने खर्ची देता. एम करतां एक दिवस पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मण आवी निकळ्या. त्यारे गोपालदासे तेमने पूछ्युं, तमे कोण छो? क्यांथी आवो छो? क्यां जशो? त्यारे पद्मारावले कह्युं, अमे सांचोरा ब्राह्मण छीए. अमने श्रीरणछोडजीनां दर्शन उपर प्रीति छे. अमारो यजमान मावजी पटेल उज्जैनमां छे. एनाथी खर्ची लई द्वारका जई श्रीरणछोडजीनां दर्शन करुं छुं. ज्यारे खर्ची खूटे छे त्यारे फरी उज्जैनमां जई मावजी पटेलथी खर्ची लई द्वारका जईने दर्शन करीए छीए. त्यारे गोपालदासे पद्मारावलनां ए वचन सांभळीने दैवी जीव जाणी वात चलावी, के जेवी प्रीति श्रीरणछोडजीमां छे एवी श्रीआचार्यजीमां थाय तो आ ब्राह्मणनुं कार्य थई जाय. ए विचारीने गोपालदासे पद्मारावलने कह्युं, के

सों कह्यो, जो–तुम सों श्रीरनछोडजी कबहू बोलत हैं? बात करत हैं? तब पद्मारावल नें गोपालदास सों कही, श्रीरनछोडजी काहू सों बोलत हैं? बात करत हैं? सो हम कों बतावो? तब गोपालदास ने कह्यो, प्रयाग के पास अड़ेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हैं। सो श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं। सो बोलत बतरात हैं। तब पद्मारावल नें गोपालदास सों कही, मैं जाउं, मोकों श्रीरनछोडजी जैसे दरसन देइगें? तब गोपालदास ने कही, जैसें श्रीरनछोडजी दरसन देत हैं तैसे ही दरसन श्रीआचार्यजी देइगें। और तुमसों बोलेंगे। तब पद्मारावल कों बड़ी आतुरता भई, जो–कब अड़ेल जाउं? कब श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूप सों मोसों बोलें? पाछें गोपालदास अपने घर आये। रात्रि कों पद्मारावल कों नींद न आई। जो कहे, अड़ेल कों कब चलों। सो प्रातःकाल उठि चले। सो कछुक दिनन में उज्जैन आये। तब मावजी पटेल ने पद्मारावल सों पूछ्यो, जो–रावलजी! अब के तुम बहोत बेगि उज्जैन आये। और तुम्हारो मन उचाट दीमत है। ताको कारन कहा? तब पद्मारावल ने कही, अड़ेल में श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं। सो सब सों बोलत बतरात हैं। सो प्रातःकाल मैं अड़ेल जाउंगो। तब मावजी पटेल ने

તમારાથી શ્રીરણછોડજી ક્યારેય બોલે છે? વાત કરે છે? ત્યારે પદ્મારાવલે ગોપાલદાસને કહ્યું, શ્રીરણછોડજી કોઇથી બોલે છે? વાત કરે છે? તે અમને બતાવો. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, પ્રયાગની પાસે અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી બિરાજે છે. તે શ્રીરણછોડજી પ્રકટ થયા છે. તે બોલે છે. વાતચિત કરે છે, ત્યારે પદ્મારાવલે ગોપાલદાસને કહ્યું, હું જાઉં? મને શ્રીરણછોડજી જેવાં દર્શન થશે? ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, જેવાં શ્રીરણછોડજી દર્શન દે છે તેવાંજ દર્શન શ્રીઆચાર્યજી આપશે. અને તમારાથી બોલશે. ત્યારે પદ્મારાવલને બહુ આતુરતા થઈ, કે ક્યારે અડેલ જાઉં? ક્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીરણછોડજી રૂપથી મારી સાથે બોલે? પછી ગોપાલદાસ પોતાના ઘરે આવ્યા. રાત્રિએ પદ્મારાવલને નિદ્રા ન આવી. જે કહે, અડેલ ક્યારે જઉં? પછી પ્રાતઃકાલે ઉઠી ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસોમાં ઉજ્જૈન આવ્યા. ત્યારે માવજી પટેલે પદ્મારાવલને પૂછ્યું, કે રાવલજી! આ વખતે તમે બહુ જલ્દી ઉજ્જૈન આવ્યા? અને તમારૂં મન ઉચાટમાં દેખાય છે તેનું કારણ શું? ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, અડેલમાં શ્રીરણછોડજી પ્રકટ થયા છે. તે બધાથી બોલે છે, વાતચિત કરે છે. તેથી પ્રાતઃકાલ હું અડેલ જઈશ. ત્યારે માવજી પટેલે કહ્યું, રાવલજી! હું પણ તમારી સાથે છું. શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન

कही, रावलजी! मैं हूँ तुम्हारे संग हों। श्रीरनछोडजी के दरसन कों चलूंगो। तव प रावल ने कही, तुम राजसी लोग हो। हम तो पाइन चलेंगे। तुम्हारे संग भीर जाप्ता-असवारी, सो कैसे वनेगी? तब मावजी पटेल ने कही, मैं अकेलो तुम्हारे संग पाइन चलूंगो। तव पद्मारावल कहें, तैयारी करो, प्रातः चलेंगे।

तव मावजी पटेल अपने घर आइकें विरजो स्त्री सों कहें, हम सवेरे पद्मारावल के संग अड़ेल जाइंगे। वहां श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूप सों दरसन देत हैं, सवसों वोलत हैं। तव विरजो ने कही, मैं तुम्हारे संग चलोगी। तव मावजी पटेल ने कही, तुम स्त्रीजन कैसे चलोगी? मैं तो पाइन चलोंगो। जाप्ता-असवारी नाहीं। तव विरजो ने कही, मैं तुम्हारे संग पाइन चलोंगी। तव मावजी पटेल ने पद्मारावल सों कह्यो, मेरी स्त्री संग चलन कहति है? तब पद्मारावल ने कही, अकेले पाइन कैसे चलेगी? तव मावजी ने कही, अकेले पाइन चलन कही है। तव पद्मारावल ने कही, तो चलो, वेगें आवो, तीनों जनें चलेंगे। तव मावजी पटेल आय घरमें तैयारी करी। रखवारो घरमें राखि विरजो कों संग ले आये। सो तीनों जने अड़ेल कों चले।

માટે ચાલીશ. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, તમે રાજસી લોકો છો. અમે તો પગે ચાલીશું. તમારી સાથે ભીડ, જાપ્તા, અસ્વારી (રહેશે) તે કેમ બને? ત્યારે માવજી પટેલે કહ્યું, હું એકલો તમારી સાથે પગે ચાલીશ. ત્યારે પદ્મારાવલ કહે, તૈયારી કરો, પ્રાતઃકાલ ચાલીશું.

ત્યારે માવજી પટેલ પોતાના ઘરે આવીને વિરજો સ્ત્રી ને કહે, અમે સવારે પદ્મારાવલની સાથે અડેલ જઈશું. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી શ્રીરણછોડજીના રૂપથી દર્શન દે છે. બધાથી બોલે છે. ત્યારે વિરજોએ કહ્યું, હું તમારી સાથે ચાલીશ. ત્યારે માવજી પટેલે કહ્યું, તમે સ્ત્રી-જન કેવી રીતે ચાલશો? હું તો પગે ચાલીશ. જાપ્તા, અસ્વારી નહીં (રહે). ત્યારે વિરજોએ કહ્યું, હું તમારી સંગે પગે ચાલીશ. ત્યારે માવજી પટેલે પદ્મારાવલને કહ્યું, મારી સ્ત્રી સાથે ચાલવાનું કહે છે. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, એકલી પગે કેમ ચાલશે? ત્યારે માવજીએ કહ્યું, એકલી પગે ચાલવાનું કહ્યું છે. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, તો ચાલો જલ્દી આવો, ત્રણે જણાં ચાલીશું. ત્યારે માવજી પટેલે ઘરમાં આવી તૈયારી કરી. રખવાળો ઘરમાં રાખી વિરજોને સાથે લઈ આવ્યા. પછી ત્રણે જણા અડેલ ચાલ્યાં.

तब श्रीआचार्यजी ने जानी, इनको भाव श्रीरनछोड़जी में है। (यासों) जो–श्रीरनछोड़जी रूप सों दरसन देइंगे तो इनको भाव बढ़ेगो। सो आपु श्रीरनछोड़जी रूप सों दरसन दिये। तब तीनों जने दंडवत् किये। तब पद्मारावल ने बिनती करी, महाराज! गोपालदास की कृपातें हमकों दरसन भयो। तातें गोपालदास ने हमसों कही है, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक हूजो। सो अब कृपा करिकें हम तीनों जने कों अंगीकार करिये। हम आपकी सरन हैं। तब श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी में तीनों जने कों न्हवाय नाम निवेदन कराये। पाछे मावजी पटेल के संग मनुष्य हते तिनकों नाम सुनाये। पाछें पद्मारावल कों अपुने मंदिर में संग ले आये। पाछें आपु भोजन कों पधारे। तब पद्मारावल के मन में यह आई, जो–श्रीरनछोड़जी कों भोग धरत हैं तैसेहि श्रीआचार्यजी कों भोजन करत दरसन होइ तो जूठन ले। तब यह पद्मारावल के मनकी श्रीआचार्यजी जानि पद्मारावल कों भीतर बुलाये। तब पद्मारावल देखें तो श्रीरनछोड़जी रूप सों भोजन करत हैं। सो बहोत मनमें प्रसन्न भये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब संदेह गयो? तब पद्मारावल नें बिनती करी, महाराज! हम जीव तुच्छ बुद्धि हैं। तातें बार-बार मनमें ऐसी आई।

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જાણ્યું, એમનો ભાવ શ્રીરણછોડજીમાં છે (તેથી) જો શ્રીરણછોડજી રૂપથી દર્શન દઇશ તો એમનો ભાવ વધશે. તેથી આપે શ્રીરણછોડજી રૂપે દર્શન દીધાં. ત્યારે ત્રણે જને દંડવત કર્યા. ત્યારે પદ્મારાવલે વિનંતી કરી, મહારાજ! ગોપાલદાસની કૃપાથી અમને દર્શન થયાં. તેથી ગોપાલદાસે અમને કહ્યું છે, કે તમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થજો. તેથી હવે કૃપા કરીને અમને ત્રણે જણાંને અંગીકાર કરો. અમે આપની શરણે છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીયમુનાજીમાં ત્રણે જણાંને ન્હવડાવી નામ-નિવેદન કરાવ્યું. પછી માવજી પટેલના સંગ મનુષ્ય હતા તેમને નામ સંભળાવ્યું. પછી પદ્મારાવલને પોતાના મંદિરમાં સાથે લઈ આવ્યા. પછી પોતે ભોજને પધાર્યા. ત્યારે પદ્મારાવલના મનમાં એ આવ્યું, કે શ્રીરણછોડજીને ભોગ ધરે છે તેજ રીતે શ્રીઆચાર્યજીનાં ભોજન કરતાં દર્શન થાય તો જૂઠણ લઇએ. ત્યારે એ પદ્મારાવલના મનની શ્રીઆચાર્યજીએ જાણી પદ્મારાવલને અંદર બોલાવ્યા. ત્યારે પદ્મારાવલ જુએ તો શ્રીરણછોડજી રૂપથી (આપ) ભોજન કરે છે. તેથી મનમાં બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે સંદેહ ગયો? ત્યારે પદ્મારાવલે વિનંતી કરી, મહારાજ! અમે જીવ તુચ્છ બુદ્ધિ છીએ. તેથી વારંવાર મનમાં એમ આવ્યું.

वट वृक्ष–श्रीमहाप्रभुजी की पर्णकुटी, अड़ेल.

प्रथम के सात स्वरूप :—
बाईं ओर से १ श्रीगोकुलनाथजी २ श्रीद्वारिकानाथजी ३ श्रीविट्ठलनाथजी ४ श्रीमदनमोहनजी
गोद के :–बीच में श्रीनवनीतप्रियजी । दायें श्रीबालकृष्णजी । बायें श्रीमुकुन्दरायजी ।
वैष्णवों के चित्र —
१ आगरे के पुरुषोत्तमदास । २ इनकी स्त्री । ३ मावजी पटेल । ४ एक ब्राह्मणी अड़ेल की ।
५ विरजो । ६ पद्मारावल । ७ रजो । ८ श्यामदास सुनार ।

आप तो साक्षात् श्रीरनछोड़जी हो। पाछें आपु भोजन करिकें पद्मारावल कों जूठनि की पातरि धरी। मावजी पटेल, बिरजो कों जूठनि धरी। तीनों जने महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आये। तब पद्मारावल ने बिनती करी, महाराज! अब हमकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी कहे, सेवा करो। तब पद्मारावल ने बिनती करी, महाराज! जैसो मन मेरो आपके दरसन में आसक्त है, जो–यही मन अष्टप्रहर रहत है, जो–श्रीरनछोड़जी कों निरख्यो करूँ, ऐसो मन सेवा में लगें तो सेवा मैं करूं। नाहीं तो न करूं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूरन करेंगे।

भावप्रकाश—सो यह, जो–श्रीरनछोड़जी पास तेरी प्राप्ति होइगी द्वारका लीला में। सो श्रीठाकुरजी मनोरथ पूरन करेंगे।

और तीनों जनेन कों आज्ञा करी, हम उज्जैन पधारेंगे कछुक दिन में। तब तुम्हारे घर में श्रीठाकुरजी पधराय देइंगे। और मावजी पटेल, बिरजो के माथे सेवा पधरावेंगे। सो तुम सेवा करियो। अब तुम तीनों जने घर जाव। हमहू पाछे तें उज्जैन पधारेंगे। तब तुम्हारो मनोरथ सिद्ध होइगो। तब पद्मारावल और मावजी पटेल और बिरजो तीनों जने दंडौत करि बिदा होइ चले। कछुक दिन में उज्जैन

આપ તો સાક્ષાત્ શ્રીરણછોડજી છો. પછી આપે ભોજન કરીને પદ્મારાવલને જુઠણની પાતર ધરી. માવજી પટેલ વિરજોને જુઠણ ધરી. ત્રણે જણાં મહાપ્રસાદ લઇને શ્રીઆ-ચાર્યજી મહાપ્રભુજીની પાસે આવ્યાં. ત્યારે પદ્મારાવલે વિનંતી કરી, મહારાજ! હવે અમને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સેવા કરો. ત્યારે પદ્મારાવલે વિનંતી કરી, મહારાજ! જેવું મન મારું આપના દર્શનમાં આસક્ત છે, જે અષ્ટપ્રહર એજ મન રહે છે, કે શ્રીરણછોડજીને જોયા કરું, એવું મન સેવામાં લાગે તો સેવા હું કરું. નહીં તો ન કરું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારો મનોરથ શ્રીઠાકુરજી પૂરો કરશે.

ભાવપ્રકાશ—તે એ કે શ્રીરણછોડજી પાસે તારી પ્રાપ્તિ થશે, દ્વારિકા લીલામાં. તે મનોરથ શ્રીઠાકુરજી પૂર્ણ કરશે.

બીજું, ત્રણે જણાંને આજ્ઞા કરી, કે અમે ઉજ્જૈન પધારીશું થોડા દિવસમાં. ત્યારે તમારા ઘરમાં શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દઇશું. અને માવજી પટેલ વિરજોના માથે (પણ) સેવા પધરાવીશું. તે તમે સેવા કરજો. હવે તમે ત્રણે જણાં ઘર જાવ. અમે પણ પાછળથી ઉજ્જૈન પધારીશું. ત્યારે તમારો મનોરથ સિદ્ધ થશે. ત્યારે પદ્મારાવલ અને માવજી પટેલ અને વિરજો એ ત્રણે જણાં દંડવત કરી વિદાય થઈ ચાલ્યાં. તે કેટલાક

आये। सो गोपालदास ऐसे भगवदीय हे। जिनके रंचक संग तें पद्मारावल, मावजी, पटेल विरजो तीनों श्रीआचार्यजी की सरनि पाये। तातें गोपालदास की वार्ता कहां तांई कहिये। एक श्रीआचार्यजी को दृढ़ विश्वास जिनकों है। वार्ता ॥२८॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन उज्जैन के, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—ए सेवक भये। सो प्रकार तो ऊपर कहि आये, गोपालदास की वार्ता में। पाछें श्रीआचार्यजी उज्जैन पधारे। तब पद्मारावल के घर उतरे। पद्मारावल की स्त्री कों नाम निवेदन कराये। पाछें पद्मारावल सों कहे, कहूँतें भगवद् स्वरूप ले आव। सो पद्मारावल की ज्ञाति में एक सांचोरा के घर भगवद् स्वरूप हतो। अष्टभुजाजी। सो पद्मारावल कहें, ये ठाकुर हमकों देउ। तब उन कह्यो, ले जाव। हम सों बनत नाहीं। दोय बेर न्हायो नाहीं जात। तब पद्मारावल श्रीठाकुरजी कों ले आये। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय पाट बेठारि पद्मारावल के माथे पधराये। तब मावजी पटेल और बिरजो ने बिनती करी, महाराज! हमारे माथे

દિવસે ઉજ્જૈન આવ્યાં. તે ગોપાલદાસ એવા ભગવદીય હતા. જેમના રંચક સંગથી પદ્મારાવલ, માવજી પટેલ, વિરજો ત્રણેને શ્રીઆચાર્યજીનું શરણું મળ્યું. તેથી ગોપાલદાસની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? એક શ્રીઆચાર્યજીનો દૃઢ વિશ્વાસ જેમને છે.

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પદ્મારાવલ સાંચોરા બ્રાહ્મણ ઉજ્જૈનના, તેમની વાર્તા નો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એ સેવક થયા તે પ્રકાર તો ઉપર કહી આવ્યા, ગોપાલદાસની વાર્તામાં. પછી શ્રીઆચાર્યજી ઉજ્જૈન પધાર્યા. ત્યારે પદ્મારાવલના ઘરે ઉતર્યા. પદ્મારાવલની સ્ત્રીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. પછી પદ્મારાવલને કહે, ક્યાંયથી ભગવદ્ સ્વરૂપ લઇ આવો. પછી પદ્મારાવલની જ્ઞાતિમાં એક સાંચોરાના ઘર ભગવદ્ સ્વરૂપ હતો, અષ્ટભુજાજી. તે પદ્મારાવલ કહે, એ ઠાકુરજી અમને આપો. ત્યારે તેણે કહ્યું, લઇ જાવ. અમારાથી સેવા બનતી નથી. બે વાર ન્હવાતું નથી. ત્યારે પદ્મારાવલ શ્રીઠાકુરજીને લઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડી પદ્મારાવલના માથે પધરાવ્યા. ત્યારે માવજી પટેલ અને વિરજોએ વિનંતી કરી,

पधरावो तो हम सेवा करें। तब श्रीआचार्यजी ने कही, तुम्हारे माथे श्रीगुसांइजी सेवा पधरावेंगे।

भावप्रकाश—काहेतें? हम सरन तुमकों ले अपुने किये, परंतु सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी द्वारा सिद्ध होइगो।

तब मावजी पटेल और विरजो दंडवत् करि भेंट भरि घर गये। तब पद्मारावल ने बिनती करी, महाराजाधिराज! मैं तो मूर्ख हों। कछु पढ्यो नाहीं। कछु समुझत नाहीं। और इहां हमारे ज्ञाति के ब्राह्मन कर्म-जड़ स्मार्त हैं। सो मोकों दुःख देत हैं, जो-तू कहा समुझि के सेवक भयो? तब श्रीआचार्यजी अपुने चरणारविंद को प्रसादी चंदन और चरणामृत पद्मारावल कों दिये। सो मुख में मेलत ही सगरे वेद पुरान सास्त्र को ज्ञान ह्वै गयो। सो बड़े बड़े पंडित सबन कों प्रति उत्तर देहि। माथो नीचो करि सगरे हारि के उठि जाते।

भावप्रकाश—और श्रीआचार्यजी ने प्रसादी चंदन और चरणामृत दिये सो दोऊ देवे को अभिप्राय यह है, जो—चंदन के लिये तें सगरो ज्ञान होई, उच्छलित रस ह्वै जाय तो कहूँ सरीर छूटि जाय, अथवा सबकें आगें लीला की

મહારાજ! અમારા માથે પધરાવો તો અમે સેવા કરીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તમારે માથે શ્રીગુસાંઇજી સેવા પધરાવશે.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે? અમે તમને શરણ લઈ પોતાના કર્યાં. પરંતુ બધો મનોરથ શ્રીગુસાંઇજી દ્વારા સિદ્ધ થશે.

ત્યારે માવજી પટેલ અને વિરજો દંડવત કરી ભેટ ધરી ઘર ગયાં. ત્યારે પદ્મારાવલે વિનંતી કરી, મહારાજાધિરાજ! હું તો મૂર્ખ છું. કંઈ ભણ્યો નથી. કંઈ સમજતો નથી. અને અહીં અમારી જ્ઞાતિના બ્રાહ્મણ કર્મજડ સ્માર્ત છે. તે મને દુઃખ દે છે, કે તૂ શું સમજીને સેવક થયો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાના ચરણારવિંદનું, પ્રસાદી ચંદન અને ચરણામૃત પદ્મારાવલને આપ્યું. તે મુખમાં મેલતાં જ બધા વેદ પુરાણ શાસ્ત્રનું જ્ઞાન થઈ ગયું. તે મોટા મોટા પંડિતો બધાને પ્રતિ ઉત્તર આપે. માથું નીચું કરી બધા હારીને ઉઠી જતા.

ભાવપ્રકાશ—અને શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસાદી ચંદન અને ચરણામૃત આપ્યાં. તે બન્ને દેવાનો અભિપ્રાય એ છે, કે ચંદનના લેવાથી બધું જ્ઞાન થાય. ઉચ્છલિત રસ થઇ જાય તો કંઈ શરીર છુટી જાય. અથવા બધાની આગળ લીલાની

वार्ता करें, बिना कहें रह्यो न जाइ। तब चरणामृत तें सरीर दृढ़ है जाई, भक्ति दृढ रस उच्छलित होई बाहर न जाय, हृदय में स्थिर होय रहें। तातें प्रसादी चंदन और चरणामृत दिये।

वार्ता-प्रसंग २—सो एक समय पद्मारावल ने सैया नई बनवाई। तब श्रीठाकुरजी पद्मारावल सों कहें, सैया छोटी है। मोसों पौढ्यो नाहीं जात। तब पद्मारावल प्रसन्न होई बड़ी सैया बनवाये। तब श्रीठाकुरजी सुखसों पौढ़न लागे। या प्रकार सानुभावता जनावन लागे। और एक दिन पद्मारावल की स्त्री नें खीर ताती समर्पी। पाछें भोग सराय आरती करी। ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारें। तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजी कों अपने हस्त और ओष्ट दिखाये, जो-पद्मारावल की स्त्री नें ताती खीर समर्पी। सो मेरे हस्त और ओष्ठ आरक्त भये हैं। या प्रकार श्रीआचार्यजी सों कहे। पद्मारावल की स्त्री सों न कहें।

भावप्रकाश—काहेतें? स्त्री साधारन वैष्णव है। सो उद्धार होयगो सरन के प्रताप तें। परंतु लीला संबंधी नाहीं है।

तब श्रीआचार्यजी पद्मारावल और पद्मारावल की स्त्री सों

વાર્તા કરે. વિના કહે રહ્યો ન જાય. ત્યારે ચરણામૃતથી શરીર સ્થિર થઇ રહે, ભક્તિ દૃઢ રસ ઉચ્છિલિત થઇ બાહર ન જાય, હૃદયમાં સ્થિર થઇ રહે. તેથી પ્રસાદી ચંદન અને ચરણામૃત આપ્યાં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—તે એક સમય પદ્મારાવલે શૈયા નવી બનાવી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પદ્મારાવલને કહે, શૈયા નાની છે. મારાથી પોઢાતું નથી. ત્યારે પદ્મારાવલે પ્રસન્ન થઇને મોટી શૈયા બનાવરાવી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી સુખથી પોઢવા લાગ્યા. એ પ્રકારે સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. અને એક દિવસ પદ્મારાવલની સ્ત્રીએ ખીર ગરમ સમર્પી. પછી ભોગ સરાવી આર્તિ કરી. તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીઆચાર્યજીને પોતાના હાથ અને હોઠ દેખાડ્યા, કે પદ્મારાવલની સ્ત્રીએ ગરમ ખીર સમર્પી. તેથી મારા હાથ અને હોઠ લાલ થયા છે. આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, પદ્માવલની સ્ત્રીને ન કહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે? સ્ત્રી સાધારણ વૈષ્ણવ છે. તેથી ઉદ્ધાર થશે. શરણના પ્રતાપથી. પરંતુ લીલા સંબંધી નથી.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પદ્મારાવલ અને પદ્મારાવલની સ્ત્રીને કહ્યું, તમે

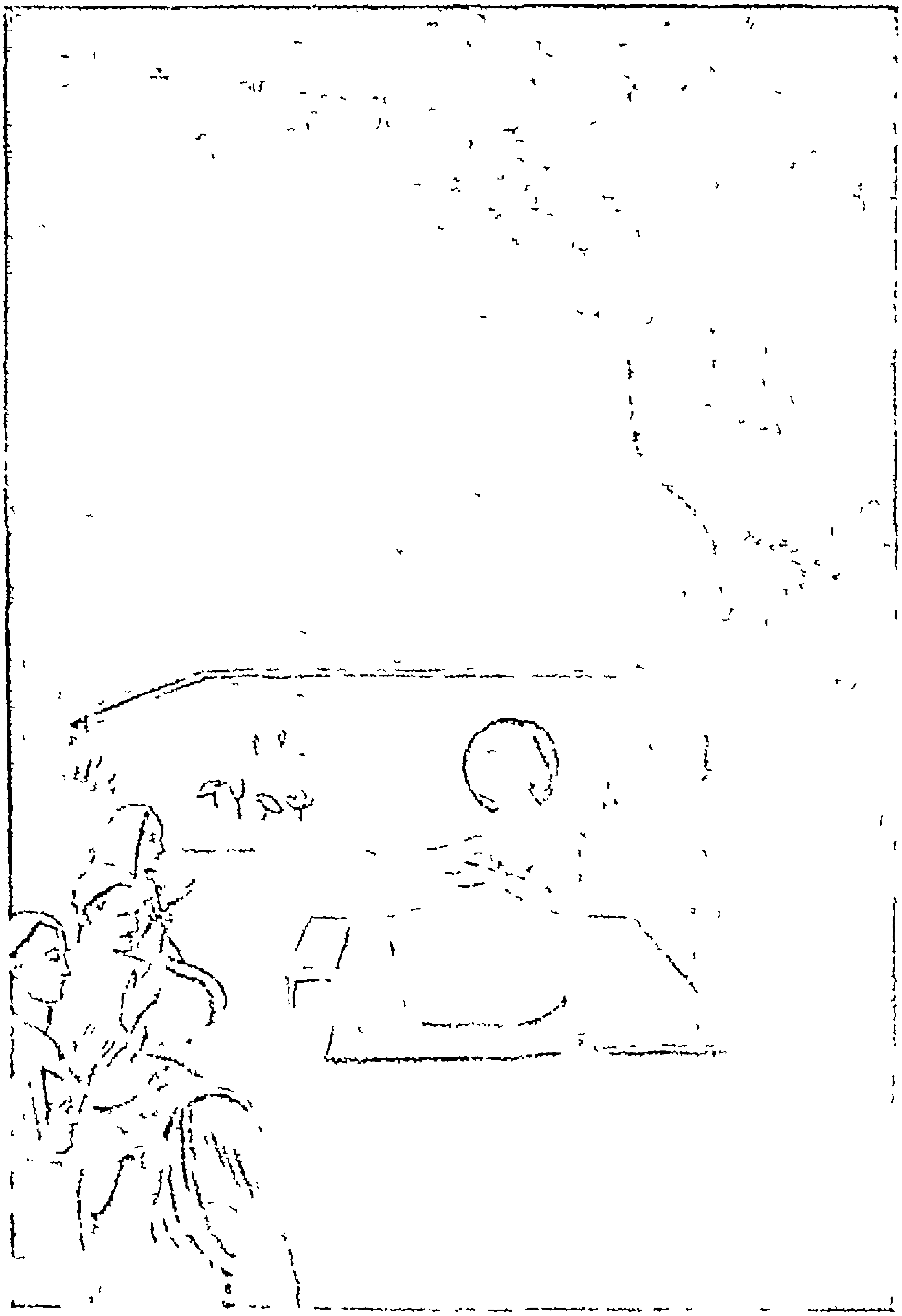

श्रीमहाप्रभुजी की बैठक, उज्जैन.

बाये ओर ऊपर से —

१. पद्मारावल की स्त्री। २. दिनकरदास। ३. मुकुन्ददास।

४. मुकुन्ददास की स्त्री। ५. दिनकरदास की स्त्री।

कहें, तुम श्रीठाकुरजी कों ताती खीर क्यों समर्पे ? श्रीठाकुरजी के हस्त और ओष्ठ लाल भये हैं। खीर ताती लागी तातें। तब पद्मारावल ने कही, महाराज ! हम कहा जाने ? जो-ताती सामग्री आछी तातें समर्पे। तब श्रीआचार्यजी ने कही, और सामग्री ताती धरिये ताकी चिंता नाहीं परंतु खीर ताती न धरिये। अंगुरी डारिये। सुहाय तब भोग धरिये। तब पद्मारावल ने कही, महाराज ! खीर ताती हती तो श्रीठाकुरजी सीतल क्यों न होंन दीनी ? ताती क्यों अरोगे ? तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीठाकुरजी बालक हैं। सो बालक कों खीर बहुत प्रिय हैं, ताते पहिले खीर में हाथ डारे हैं। और सामग्री ताती होई तो पीछे अरोगें। खीर पहलें आरोगे, तातें खीर ताती न धरिये।

भावप्रकाश—या प्रकार श्रीआचार्यजी पद्मारावल कों और उनकी स्त्री कों समुझाये। बालक को नाम लें। परंतु भीतर को खीर को स्वरूप नाहीं कहे। काहेतें ? स्त्री लीला संबंधी नाहीं है। और पद्मारावल द्वारका की राज लीला संबंधी है। तातें पद्मारावल कों श्रीठाकुरजी अनुभव जताये। परंतु व्रजभक्तन की लीला को अनुभव नाहीं है। तातें खीर स्वामिनीजी के भाव की सामग्री है। तातें श्रीठाकुरजी कों वहोत प्रिय हैं। सो खीर को भाव नारायनदास ब्रह्मचारी की वार्ता

શ્રીઠાકુરજીને ગરમ ખીર કેમ સમર્પી? શ્રીઠાકુરજીના હાથ અને હોઠ લાલ થયા છે. ખીર ગરમ લાગી તેથી. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, મહારાજ! અમે શું જાણીએ? જે ગરમ સામગ્રી સારી તેથી સમર્પી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, બીજી સામગ્રી ગરમ ધરીયે તેની ચિંતા નહીં પરંતુ ખીર ગરમ ન ધરીયે. આંગળી નાખિયે. સહન થાય ત્યારે ભોગ ધરીએ. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, મહારાજ! ખીર ગરમ હતી તો શ્રીઠાકુરજીએ ઠંડી કેમ ન થવા દીધી? ગરમ કેમ આરોગ્યા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે. શ્રીઠાકુરજી બાલક છે. તે બાલકને ખીર બહુ જ પ્રિય છે. તેથી પહેલાં ખીરમાં હાથ નાખે છે. બીજી સામગ્રી ગરમ હોય તો પછી આરોગે, ખીર પહેલાં આરોગે તેથી ગરમ ન ધરીએ.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી પદ્મારાવલને અને તેમની સ્રીને સમજાવ્યાં, બાલકનું નામ લઇને. પરંતુ અંદરનું ખીરનું સ્વરૂપ નહીં કહ્યું, કેમકે? સ્રી લીલા-સંબંધ નથી અને પદ્મારાવલ દ્વારકાની રાજલીલા સબંધી છે. તેથી પદ્મારાવલને શ્રીઠાકુરજીએ અનુભવ જણાવ્યો. પરંતુ વ્રજભક્તોની લીલાનો અનુભવ નથી. તેથી ખીર સ્વામિનીજીના ભાવની સામગ્રી છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીને બહુ જ પ્રિય છે. ખીરનો ભાવ નારાયણદાસ બ્રહ્મચારીની વાર્તામાં કહ્યો છે. તેથી

में कहे हैं ऊपर। तातें खीर देखके श्रीठाकुरजी कों धीरज छूटि जात है। तातें खीरि सीरी करिकें धरिये। और जहां तहां खीर कों सीरी करनी लिखी है। और सामग्री कों सीरी करनो कहूं कहे नाहीं। जैसे श्रीआचार्यजी कों खीर बहोत प्रिय हैं। ऐसे श्रीगुसांईजी कों लाडु बहोत प्रिय हैं। और श्रीआचार्यजी कों सखड़ी और खीर सीरी कोमल भाव प्रिय। तैसेई श्रीगुसांईजी कों नाना प्रकार की अनसखड़ी प्रिय। सो प्रभु प्रौढ भावसों आरोगत हैं। परंतु पुष्टिमारग में वैष्णव को जैसो अधिकार तेसोई अनुभव हैं।

वार्ता–प्रसंग ३—**और एक समय पद्मारावल श्रीरनछोडजी के दरसन कों द्वारकाजी कों चले। तब श्रीरनछोडजी नें स्वप्न में कह्यो, जो–राजनगर में एक हमारो सेवक है। सो ताके घर तुम जैयो। सो तहां पाक करियो। तब पद्मारावल कह्यो, जो–महाराज! मैं तो वाकों जानत नाहीं और बिनु बुलाये कौन के घर जाऊं? तब श्रीरनछोड़जी ने कह्यो, जो–वह आपुहि बुलावन आवेगो। पाछें पद्मारावल राजनगर में आये।**

भावप्रकाश—सो यातें, जो–पद्मारावल श्रीरनछोड़जी की लीला संबंधी है। तातें विचारे, जो–कहूं व्रजलीला में मग्न होय तो मेरे हाथ सों जाय। तातें

ખીર જોઇને શ્રીઠાકુરજીની ધીરજ છુટી જાય છે. તેથી ખીર ઠંડી કરીને ધરીયે. અને જ્યાં ત્યાં ખીરને ઠંડી કરવી એમ લખ્યું છે. બીજી સામગ્રીને ઠંડી કરવી એમ કંઇ કહ્યું નથી. જેમ શ્રીઆચાર્યજીને ખીર બહુ પ્રિય છે. એમ શ્રીગુસાંઇજીને લાડુ બહુ પ્રિય છે. વળી શ્રીઆચાર્યજીને સખડી અને ઠંડી ખીર કોમલ ભાવ પ્રિય છે. તેજ રીતે શ્રીગુસાંઇજીને નાના પ્રકારની અનસખડી પ્રિય (છે), તે પ્રભુ પ્રૌઢ ભાવથી આરોગે છે. પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમાં વૈષ્ણવનો જેવો અધિકાર તેવો જ અનુભવ છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૩—વળી એક સમય પદ્મારાવલ શ્રીરણછોડજીના દર્શને દ્વારકાજી ચાલ્યા. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ સ્વપ્નમાં કહ્યું, કે રાજનગર (અમદાવાદ)માં એક અમારો સેવક છે. તેના ઘરે તમે જજો. ત્યાં સામગ્રી કરજો. ત્યારે પદ્મારાવલ કહે, કે મહારાજ! હું તો એને જાણતો નથી. અને વિના બોલાવ્યો કોના ઘર જાઉં? ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, કે તે આપજ બોલાવવા આવશે. પછી પદ્મારાવલ રાજનગરમાં આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી કે પદ્મારાવલ શ્રીરણછોડજીની લીલા–સંબંધી છે. તેથી વિચારે કે કંઈ વ્રજલીલામાં મગ્ન થાય તો મારા હાથથી જાય. તેથી કહે,

कहें, हमारो सेवक है ताके घर जैयो। सो पद्मारावल के मनकों भाई, जो–व्रजलीला में मग्न होते तो यह कहते, तुम्हारो सेवक है, परंतु श्रीआचार्यजी को सेवक होइ तो मेरी ठीक परे। सो इनकों तो श्रीरनछोड़जी पर भर भाव व्होत है। श्रीआचार्यजी को स्वरूप श्रीरनछोड़जी को जान्यो। व्रजलीला संबंधी नाहीं जान्यो। तातें इनके घर श्रीठाकुरजी हू श्रीरनछोड़जी रूप तें सानुभावता जनावत हैं। और पद्मारावल के वेटा कृष्णभट्ट होइंगे। सो श्रीगुसांईजी के लीला संबंधी होइंगे। तब कृष्णभट्ट कों श्रीठाकुरजी अनुभव करावेंगे। यामें यह जताये, जो–जेसो जीव होइ तितनो श्रीआचार्यजी कों जानें। तितनों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें। जो–श्रीआचार्यजी कों साक्षात् पुरुषोत्तम जानते तो श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जतावते। जो–श्रीआचार्यजी कों पूर्णपुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर तें अधिक जानते। तब व्रजलीला को अनुभव होतो। यह सिद्धांत दिखाये।

और श्रीरनछोड़जी रात्रि कों अपने सेवक सों कह्यों, कालिह पद्मारावल राजनगर तें तेरे गाम में आवेंगे। सो उनकों घर लाइ कें नीकी भांति सों रसोई–पाक करवइयो। तब उह सेवक ने कह्यो, मैं पद्मारावल कों कैसे जानूंगों? तब श्रीरनछोड़जी ने कही पद्मारावल प्रसिद्ध है, तू जानेंगो।

અમારો સેવક છે તેના ઘર જજે. તે પદ્મારાવલના મનમાં ગમ્યું. જો વ્રજલીલામાં મગ્ન હોતા તો એ કહેતા, કે તમ્હારો સેવક છે પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હોય તો મારે ઠીક પડે. પરંતુ એમને તો શ્રીરણછોડજી ઉપર ભરભાવ ઘણો છે. શ્રીઆચાર્યજીનું સ્વરૂપ શ્રીરણછોડજીનું જાણ્યું. વ્રજલીલા સંબંધી નહીં જાણ્યું. તેથી એમના ઘર શ્રીઠાકુરજી પણ શ્રીરણછોડજીના રૂપથી અનુભવ જણાવે છે. અને પદ્મારાવલના બેટા કૃષ્ણભટ્ટ થશે તે શ્રીગુસાંઇજીની લીલા-સંબંધી થશે. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટને શ્રીઠાકુરજી અનુભવ કરાવશે. એમાં એ જણાવ્યું, કે જેવો જીવ હોય તેટલું શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપને જાણે. તેટલો શ્રીઠાકુરજી અનુભવ જણાવે. જો શ્રીઆચાર્યજીને સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ જાણતા તો શ્રીગોવર્દ્ધનધર અનુભવ જણાવતા. જો શ્રીઆચાર્યજીને પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીગોવર્દ્ધનધરથી અધિક જાણતા તો વ્રજલીલાનો અનુભવ થતો. એ સિદ્ધાંત દેખાડ્યો.

અને શ્રીરણછોડજી રાત્રિએ પોતાના સેવકને કહે, કાલ પદ્મારાવલ રાજનગરથી તારા ગામમાં આવશે. તે એમને ઘર લાવીને સારી રીતિથી રસોઇ સામગ્રી કરાવજે.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–तुम दोऊ मेरे संबंधी हो। सो मैं तुम्हारे दोऊ को मिलाप कराइ देऊंगो ।

पाछें पद्मारावल राजनगर में बिचारे, जो–मैं श्रीरनछोड़जी के सेवक कों जानत नाहीं। तातें एक उपाइ करूं। तब संग में विद्यार्थी हतो, तासों कहें, जो–तू गाम में जाइ कोरे अन्न की न्यारी न्यारी भिक्षा पांच–सात ठिकाने सों मांगि लाउ। मो·सब की न्यारी न्यारी राखियो। तब वह विद्यार्थी 'गाम में जाइ कोरी भिक्षा पांच–सात ठिकाने सों मांगि ले आयो। तब पद्मारावल ने उह विद्यार्थी सों कही, जो–जाकी भिक्षा मांगि लायो है ता–ताकों अन्न फेरि आउ। तब वह विद्यार्थी अन्न फेरन गयो। तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने कही, जो–भिक्षा ले गये सो फेरन क्यों आये? तब विद्यार्थी ने कही, जो–हमारे स्वामी की जैसी आज्ञा। उन कही, ले आउ, सो ले गयो अब उन कही, भिक्षा है ताको फेरि आव। सो फेरन आयो। तब उन कही, जो–तुम्हारे स्वामी को नाम कहा? तब विद्यारथी ने कही, जो–पद्मारावल। तब उह भिक्षा फेरि लीनी। पाछें उह विद्या-रथी के संग पद्मारावल के पास गयो। कह्यो, रावलजी! हमारे घर

ત્યારે તે સેવકે કહ્યું, હું પદ્મારાવલને કેવી રીતે જાણીશ? ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, પદ્મારાવલ પ્રસિદ્ધ છે, તૂ જાણીશ.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યુ, કે તમે બન્ને મારા સબંધી છો. તેથી હું તમારા બન્નેનો મેળાપ કરાવી દઇશ.

પછી પદ્મારાવલે રાજનગરમાં વિચાર્યું, કે હું શ્રીરણછોડજીના સેવકને જાણતો નથી. તેથી એક ઉપાય કરૂં. ત્યારે સાથમાં વિદ્યાર્થી હતો, તેને કહ્યું, કે તૂ ગામમાં જઇ કોરા અન્નની અલગ અલગ ભિક્ષા પાંચ–સાત ઠેકાણેથી માંગી લાવ. તે બધાની અલગ-અલગ રાખજે. ત્યારે તે વિદ્યાર્થી ગામમાં જઇ કોરી ભિક્ષા પાંચ-સાત ઠેકાણેથી માગીને લઇ આવ્યો. ત્યારે પદ્મારાવલે તે વિદ્યાર્થીને કહ્યું, કે જે–જેની ભિક્ષા માંગીને લાવ્યો છે તે-તેને અન્ન પાછું-આપી આવ. ત્યારે તે વિદ્યાર્થી અન્ન પાછું આપવા ગયો. ત્યારે તે શ્રીરણછોડજીના સેવકે કહ્યું, કે ભિક્ષા લઇ ગયા તે પાછી આપવા કેમ આવ્યા? ત્યારે વિદ્યાર્થીએ કહ્યું, કે અમારા સ્વામીની જેવી આજ્ઞા. એમણે કહ્યું, લઇ આવો. ત્યારે લઇ ગયો. હવે એમણે કહ્યું, ભિક્ષા જેની છે તેને પાછી આપી આવો. તે પાછી આપવા આવ્યો છું. ત્યારે તેણે કહ્યું, કે તમારા સ્વામીનું નામ શું? ત્યારે વિદ્યાર્થીએ કહ્યું, કે, પદ્મારાવલ. ત્યારે તેણે ભિક્ષા પાછી લીધી. પછી તે વિદ્યાર્થીના

चलो। रसोई करो। तब पद्मारावल ने कही, मैं तो काहू के घर जात नाहीं। तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने कही, जो-मोकों श्रीरनछोड़जी की आज्ञा है, जो-पद्मारावल कों अपने घर रसोई पाक कराइयो। तातें मैं बुलावन आयो हूं। सो मोकों आज्ञा करी है, सो तुमहू कों आज्ञा करी होइगी। तुमहू तो श्रीरनछोड़जी के कृपापात्र हो। तातें मोसों कहें। तब पद्मारावल बहुत प्रसन्न होई कें कहें, जो-मोहू कों आज्ञा है श्रीरनछोड़जी की। तातें चलो। तब वाके घर आई रसोई पाक करि भोग धरि महाप्रसाद उह सेवक कों हू धरे।

भावप्रकाश—वाके हाथ सों यातें नाहीं लिये, जो-वह बनिया हतो। तातें दोउ जन महाप्रसाद लिये। उह विद्यारथी कों महाप्रसाद लिवाये। पाछें रात्रि कों वाई के घर रहे। श्रीरनछोड़जी की दोऊ जनें वार्ता करि प्रसन्न भये। एक भाव तें दोउ मिलें। तहां सुख उपजे।

पाछें प्रातःकाल पद्मारावल चलन लागें। तब वह सेवक नें कही, कछू दिन रहो। तब पद्मारावल कहे, मोसों रह्यो न जाई। श्रीरनछोड़जी के दरसन की बहोत आतुरता है। ऐसे कहें तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने बिदा किये। सो पद्मारावल द्वारका कों चले।

સાથે પદ્મારાવલની પાસે આવ્યો. કહ્યું, રાવલજી! અમારા ઘરે ચાલો, રસોઇ કરો. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, હું તો કોઇના ઘરે જતા નથી. ત્યારે શ્રીરણછોડજીના સેવકે કહ્યું, કે મને શ્રીરણછોડજીની આજ્ઞા છે, કે પદ્મારાવલને તારા ઘરે રસોઇ-સામગ્રી કરાવજે. તેથી હું બોલાવવા આવ્યો છું. તેથી મને આજ્ઞા કરી છે. તે તમને પણ આજ્ઞા કરી હશે. તમે પણ શ્રીરણછોડજીના કૃપાપાત્ર છો, તેથી મને કહ્યું. ત્યારે પદ્મારાવલ બહુ પ્રસન્ન થઇને કહે, કે મને પણ આજ્ઞા છે તેથી ચાલો. ત્યારે તેના ઘર આવી રસોઇ-સામગ્રી શ્રીરણછોડજીની કરી ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ તે સેવકને પણ ધર્યો.

ભાવપ્રકાશ—એના હાથનું એથી ન લીધું, કે તે વાણિઓ હતો. તેથી બન્ને જણે મહાપ્રસાદ લીધો. તે વિદ્યાર્થીને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. પછી રાત્રિએ તેના જ ઘરે રહ્યા. શ્રીરણછોડજીની બન્ને જણ વાર્તા કરી પ્રસન્ન થયા. એક ભાવથી બન્ને મળે ત્યાં સુખ ઉપજે.

પછી પ્રાતઃકાલ પદ્મારાવલ ચાલવા લાગ્યા. ત્યારે તે સેવકે કહ્યું, થોડા દિવસ રહો. ત્યારે પદ્મારાવલે કહ્યું, મારાથી રહી શકાય નહીં. શ્રીરણછોડજીના દર્શનની બહુ જ આતુરતા છે. એમ કહે, ત્યારે તે શ્રીરણછોડજીના સેવકે વિદાય કર્યા. પછી પદ્મારાવલ દ્વારકા ચાલ્યા.

सो दोउ गुजरात में न्यारे न्यारे सांचोरा के घर जन्मे। सो पुरुषोत्तम जोसी को विवाह भयो। बरस सत्रह के पुरुषोत्तम जोसी भये। तब एक समय श्रीआचार्यजी गुजरात पधारे। सो पुरुषोत्तम जोसी मध्याह्न समय एक तालाब पर संध्या करत हते। तब श्रीआचार्यजी तालाब पर पधारि के संध्यावंदन करन लागें। सो पुरुषोत्तम जोसी की ओर कृपा करिकें दैवी जानि देखें। तब पुरुषोत्तम जोसी श्रीआचार्यजी पास आई नमस्कार करि यह पूछ्यो, महाराज! कर्ममार्ग बड़ो के ज्ञानमार्ग बड़ो? तब श्रीआचार्यजी कहें, जाके मन में दृढ़ जो-मार्ग आवें, जामें जाको विश्वास होय वाके भाये तो वह मार्ग बड़ो। और बड़ो तो भक्तिमारग हैं। जामें जीव कृतार्थ होई। और ज्ञानमारग कर्ममारग सों कृतार्थ कठिनता सों होई। सो काहूसों निर्वाह होय नाहीं। काहेतें? कष्ट साध्य हैं, सो या काल में सरीर को कष्ट कर्यो न जाइ, जो-कोऊ सरीर को कष्ट सहे तो मन ठिकाने न रहें। तातें भक्तिमारगी जीव कृतार्थ होई। और आश्रय नाहीं। तब पुरुषोत्तम जोसी ने कही, जो-महाराज! भक्ति को स्वरूप कहा? कृपा करिकें कहिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्ति को स्वरूप वर्णन करिये तो पार आवें नाहीं। परंतु कछुक

'ગુનચુડા' એમનું નામ છે. અને પુરુષોત્તમ જોશીની સ્ત્રી 'ગુનચુડા'ની સખી છે. 'દુર્વાસા' એમનું નામ છે.

તે બન્ને ગુજરાતમાં અલગ અલગ સાંચોરાના ઘરે જન્મ્યાં. પછી પુરુષોત્તમ જોશીનું લગન થયુ. વર્ષ સત્તરના પુરુષોત્તમ જોશી થયા. ત્યારે એક સમય શ્રી-આચાર્યજી ગુજરાત પધાર્યા. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશી મધ્યાહ્ન સમયે એક તલાવ ઉપર સંધ્યા કરતા હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તલાવ ઉપર પધારીને સંધ્યાવંદન કરવા લાગ્યા. તે પુરુષોત્તમ જોશીની તરફ કૃપા કરીને દૈવી જાણીને જોયું. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીએ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી નમસ્કાર કરીને એ પૂછયું, મહારાજ! કર્મમાર્ગ મોટો કે જ્ઞાનમાર્ગ મોટો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જેના મનમાં દૃઢ જે માર્ગ આવે, જેમાં જેનો વિશ્વાસ હોય તેના મનથી તો તે માર્ગ મોટો. અને મોટો તો ભક્તિમાર્ગ છે. જેમાં જીવ કૃતાર્થ થાય. અને જ્ઞાનમાર્ગ, કર્મમાર્ગથી કૃતાર્થ કઠિણતાથી થાય. તે કોઇથી નિર્વાહ થાય નહીં. કેમકે કષ્ટસાધ્ય છે. તેથી આ કાલમાં શરીરને કષ્ટ આપ્યું ન જાય. જો કોઈ શરીરનું કષ્ટ સહે તો મન ઠેકાણે ન રહે. તેથી ભક્તિમાર્ગીય જીવ કૃતાર્થ થાય. બીજો આશ્રય નથી. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીએ કહ્યું, કે મહારાજ! ભક્તિનું સ્વરૂપ શું? તે કૃપા કરીને કહીએ!

तोकों कहत हां। तब "भक्तिवर्द्धनी" ग्रन्थ करि ग्यारह श्लोक पुरुषोत्तम जोसी कों सुनाये, सो यह उत्तम अधिकारी है। तातें सगरो बोध है गयो। तब श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती किये, महाराज! इतने दिन हम कर्ममार्ग में पचि मरे। परंतु कछू हाथ आयो नाहीं। वृथा जन्म गमाये। अब आपु हमकों सरनि लीजिये। आज्ञा करो सो हम करें। तब श्रीआचार्यजी दृढ़ प्रीति देखि कें नाम सुनाइ ब्रह्मसंबंध कराये। और माथे पर चरन धरे। हृदय पर चरन धरे। और कहे, जो–तोकों भक्तिमारग स्फुरेगो। दृढ़ एकांगी भक्ति को तू अधिकारी है। तब पुरुषोत्तम जोसी नें विनती करी, जो–महाराज! मेरे घर पधारो, स्त्री कों अंगीकार करो। तब श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तम जोसी के घर पधारि स्त्री कों नाम निवेदन कराये। पाछें आज्ञा दिये, जो–तुम भगवद् सेवा करो। तब पुरुषोत्तम जोसी ने कही, महाराज! मेरे घर में श्रीठाकुरजी हैं। सो मर्यादा की रीति पूजा करत हतो। अब आपु जैसे आज्ञा करो तैसे सेवा करों। तब श्रीआचार्यजी लालजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठाये। पुरुषोत्तम जोसी के माथे पधराये। मा–बाप तो पहेले ही देह छोड़ी हती। सो दोऊ जनें प्रीतिसों सेवा करन लागें। पाछें श्रीआचार्यजी

त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, भक्तिनुं स्वरूप वर्णन करीए तो पार न आवे. परंतु कंईक तने कहुं छुं. त्यारे 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रंथ करी अग्यार श्लोक पुरुषोत्तम जोशीने संभळाव्या. केम, के ए उत्तम अधिकारी छे. तेथी बधुं ज्ञान थइ गयुं. त्यारे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनंती करी, महाराज! आटला दिवस अमे कर्ममार्गमां पच्या रह्या परंतु कंई हाथ आव्युं नही. वृथा जन्म खोयो. हवे आप अमने शरणे लो. आज्ञा करो ते अमे करीए. त्यारे श्रीआचार्यजीए दृढ प्रीति जोइने नाम संभळावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं. अने माथा उपर चरण धर्या. हृदय उपर चरण धर्या. अने कहे, के तने भक्तिमार्ग स्फुरशे. दृढ एकांगी भक्तिनो तू अधिकारी छे. त्यारे पुरुषोत्तम जोशीए विनंती करी, के महाराज! मारा घरे पधारो, स्त्रीने अंगीकार करो. त्यारे श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तम जोशीने घरे पधारी स्त्रीने नाम–निवेदन कराव्युं. पछी आज्ञा आपी के तमे भगवद्सेवा करो. त्यारे पुरुषोत्तम जोशीए कह्युं, महाराज! मारा घरमां श्रीठाकुरजी छे ते मर्यादानी रीतिए पूजा करतो हतो. हवे आप जेवी आज्ञा करो तेवी रीते सेवा करुं. त्यारे श्रीआचार्यजीए लालजीने पंचामृत स्नान करावी पाट बेसाड्या. पुरुषोत्तम जोशीने माथे पधराव्या. माबापे तो पहेलांथी ज देह छोडी हती. तेथी

श्रीद्वारिका पधारे। सो पुरुषोत्तम जोसी नें बहोत दिन सेवा करी। भगवद्भाव में मगन रहते, अव्यावृत होइ रहें। काहू के आगें अपने हृदय को भाव प्रगट न करते।

वार्ता-प्रसंग १—एक समय पुरुषोत्तम जोसी के मन में यह आई, जो-श्रीगोकुल जाई, श्रीगुसांई को दरसन करिये। सो लोगन के आगे ज्ञाति में कहें, हम कासी है आवें। सो बनारस को नाम ले स्त्री संग एक घोरा पर श्रीठाकुरजी कों पधराय के चलें। सो कछुक दिन में उज्जैन आये। तब उज्जैन में पूछे, पद्मारावल के बेटा कहां रहत हैं? श्रीगुसांईजी के सेवक हैं, इनसों मिलिये। तब लोगन ने कही, पद्मारावल के चारि बेटा हैं। तामें तीन बेटा भेले रहत हैं। और एक कृष्णभट्ट न्यारे रहत हैं। तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारि किये, पहेलें तीनों बेटा के घर चलिये। सो तीनों बेटा पास आये। तब तीनों बेटा मिलि के कछुक अन्न दियो। तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारि किये, जो-पद्मारावल के बेटा ऐसे क्यों बूझिये? ये तो कोरे ब्राह्मन जान परें। जिनमें प्रीति को एक हू लक्षन नाहीं। परंतु अन्न फेरि दीजे तो कहेंगे, थोरो जानि के फेरे। तातें इनसों बोलनो नाहीं। पाछें यह बात कृष्णभट्ट ने सुनी, जो-पुरुषोत्तम जोसी आये हैं।

બન્ને જણાં પ્રીતિથી સેવા કરવા લાગ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીદ્વારિકા પધાર્યા. પછી પુરુષોત્તમ જોશીએ બહુ દિવસ સેવા કરી, ભગવદ્ભાવમાં મગન રહેતા. અવ્યાવૃત્ત થઇને રહે. કોઇની આગળ પોતાના હૃદયનો ભાવ પ્રકટ કરતા નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એક સમય પુરુષોત્તમ જોશીના મનમાં એ આવ્યું, કે શ્રીગોકુલ જઇ શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન કરીએ. તેથી લોકોની આગળ જ્ઞાતિમાં કહે, કે અમે કાશી જઇ આવીએ. પછી બનારસનું નામ લઇ સ્ત્રી સાથે એક ઘોડા ઉપર શ્રીઠાકુરજીને પધરાવીને ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં ઉજ્જૈન આવ્યા. ત્યારે ઉજ્જૈનમાં પૂછ્યું, પદ્મારાવલના બેટા ક્યાં રહે છે? શ્રીગુસાંઇજીના સેવક છે તેમને મળીએ. ત્યારે લોકોએ કહ્યું, પદ્મારાવલના ચાર બેટા છે. તેમાં ત્રણ ભેગા રહે છે અને એક કૃષ્ણભટ્ટ અલગ રહે છે. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીએ વિચાર કર્યો, પહેલાં ત્રણ બેટાના ઘરે ચાલીએ. પછી ત્રણે બેટાની પાસે આવ્યા ત્યારે ત્રણે બેટાએ મળીને થોડુંક અન્ન આપ્યું. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીએ વિચાર કર્યો, કે પદ્મારાવલના બેટા આવા કેમ જાણીએ? એ તો કોરા બ્રાહ્મણ જણાઇ આવે છે. જેમનામાં પ્રીતિનું એક પણ લક્ષણ નથી. પરંતુ અન્ન પાછું ફેરીએ તો કહેશે થોડું જાણીને ફેર્યું. તેથી એમનાથી બોલવું નહીં. પછી આ વાત કૃષ્ણભટ્ટે સાંભળી, કે પુરુષોત્તમ જોશી

ऐसी भगवद् वार्ता करी, जो–पुरुषोत्तम जोसी कों देहानुसंधान रह्यौ नाहीं। रस में मगन ह्वै गये। तब घोरा परतें उतरन लागें। तब दोऊ ओर तें इनकों थांभि लिये। पाछें ऐसे करत जब मजलि पे आय पहोंचे, तब घोड़ा ऊपर तें उतारन लागें। तब पुरुषोत्तम जोसी ने कही, अबही मोकों घोरा ऊपर तें क्यों उतारत हो? अबही तो बैठ्यो हूं। तब स्त्री ने कही, जो–मजलि आई। सवेरे सों चलत पीछलो पहर भयो है। तब पुरुषोत्तम जोसी सावधान होइ उतरे। परंतु भगवद्वार्ता को आवेस उतर्‍यो नाहीं। पाछें कृष्णभट्ट सों वार्ता करन लागे। रात्रि दिन भगवल्लीला रस में मगन रहे। ऐसे नित्य करत श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांईजी कों दंडोत् करि पुरुषोत्तम जोसी ने कही, महाराज! कृष्णभट्ट पर ऐसी कृपा कहांते भई? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो–कृष्णभट्ट कों चाचा हरिवंस को संग है। तातें ऐसी कृपा है। तब पुरुषोत्तम जोसी को संदेह निवृत्त भयो। तबतें मन खोलि कें भगवद् वार्ता करन लागें। पाछें कछुक दिन श्रीगोकुल रहिकें श्रीगुसांईजी सों विदा होइ कृष्णभट्ट के संग पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित चले। सो भगवद वार्ता करत कछुक दिन में उज्जैन आये। सो कृष्णभट्ट ने प्रीति सों चारि दिन घरमें

ભગવદ્‌વાર્તા કરી, કે પુરુષોત્તમ જોશીને દેહાનુસંધાન ન રહ્યું. રસમાં મગન થઇ ગયા. ત્યારે ઘોડા ઉપરથી ઉતરવા લાગ્યા. ત્યારે બન્ને તરફથી એમને રોકી લીધા. પછી એમ કરતાં જ્યારે મજલ ઉપર આવી પહોચ્યા ત્યારે ઘોડા ઉપરથી ઉતારવા લાગ્યા. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીએ કહ્યું, હમણાં જ મને ઘોડા ઉપરથી કેમ ઉતારો છો? હમણાં જ તો બેઠો છું? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, મજલ આવી. સવારના ચાલતા ર પાછલો પહોર થયો છે. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશી સાવધાન થઇ ઉતર્યા. પરંતુ ભગવવદ્વાર્તાનો આવેશ ઉતર્યો નહીં. પછી કૃષ્ણભટ્ટથી વાર્તા કરવા લાગ્યા. રાત્રિ–દિવસ ભગવલ્લીલા રસમાં મગન રહે. એમ નિત્ય કરતાં શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરી પુરુષોત્તમ જોશીએ કહ્યું, મહારાજ! કૃષ્ણભટ્ટ ઉપર આવી કૃપા ક્યાંથી થઈ? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે, કે કૃષ્ણભટ્ટને ચાચા હરિવંશનો સંગ છે તેથી એવી કૃપા છે. ત્યારે પુરુષોત્તમ જોશીનો સંદેહ નિવૃત્ત થયો. ત્યારથી મન ખોલીને ભગવદ્‌વાર્તા કરવા લાગ્યા. પછી કેટલાક દિવસ શ્રીગોકુલ રહીને શ્રીગુસાંઇજીથી વિદાય થઈ કૃષ્ણભટ્ટની સાથે પુરુષોત્તમ જોશી સ્ત્રી સહિત ચાલ્યા. તે ભગવદ્‌વાર્તા કરતાં કેટલાક દિવસમાં ઉજ્જૈન આવ્યા. પછી કૃષ્ણભટ્ટે પ્રીતિથી ચાર દિવસ ઘરમાં રાખ્યા. ભગવદ્-

राखे। भगवद् वार्ता करि बहोत प्रसन्न भये। पाछें पुरुषोत्तम जोसी कृष्णभट्ट सों विदा होई गुजरात अपने घर आये। भगवद् सेवा करते। और भगवद् वार्ता करते। लौकिक जानते नाहीं। ऐसे भगवदीय पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित है। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये।

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो–पात्र विना भगवद् वार्ता करनी नाहीं। वैष्णव ॥ ३० ॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जगन्नाथ जोसी, खेराळू के तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जा प्रकार सरन भये सो आगें इनकी माता की वार्ता में कहेंगे।

वार्ता-प्रसंग १—एक दिन जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों श्रृंगार करि वागो पहराय कें राजभोग को थार साजिके, श्रीठाकुरजी की आगें भोग धर्‍यो। पाछें वाहिर आये। तव जगन्नाथ जोसी के मनमें यह आई, जो–ठाकुरजी वागो पहरे आरोगत हैं। सो थार छुई जायगी। यह वात श्रीठाकुरजी ने जगन्नाथ जोसी के मनकी जानी।

વાર્તા કહી બહુ પ્રસન્ન થયા. પછી પુરુષોત્તમ જોશી કૃષ્ણભટ્ટથી વિદાય થઈ ગુજરાતમાં પોતાના ઘરે આવ્યા. ભગવદ્‌સેવા કરતા. અને ભગવદ્‌વાર્તા કરતા. લૌકિક જાણતા નહીં. એવા ભગવદીય પુરુષોત્તમ જોશી સ્ત્રી સહિત છે. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥ ૩૦ ॥

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત થયો કે પાત્ર વિના ભગવદ્‌-વાર્તા કરવી નહી. વૈષ્ણવ ૩૦

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, જગન્નાથ જોશી ખેરાળુના, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ જે પ્રકારે શરણે થયા તે આગળ એમની માતાની વાર્તામાં કહીશું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એક દિવસ જગન્નાથ જોશીએ શ્રીઠાકુરજીને શૃંગાર કરી વાગો પહેરાવીને રાજભોગનો થાર સાજીને શ્રીઠાકુરજીના આગળ ભોગ ધર્યો. પછી બહાર આવ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશીના મનમાં એ આવ્યું, કે શ્રીઠાકુરજી વાગો પહેરીને આરોગે છે તે થાર છોવાઇ જશે. એ વાત શ્રીઠાકુરજીએ જગન્નાથ જોશીના મનની

सो थार लात मारिकें चौकी सों नीचे डारि दिये। तब जगन्नाथ जोसी फेरि सामग्री करि, थार धोई, चौकी धोई, धरें। तब श्रीठाकुरजी लात मारिकें चौकी सों नीचे डारि दिये। तब जगन्नाथ जोसी फेरि सामग्री करि थार धोई चौकी धोई धरें। तब श्रीठाकुरजी लात मारि नीचे डारि दिये। तब फेरि सामग्री करि वैसेई धरे। तब फेरि श्रीठाकुरजी लात मारिकें डारि दिये। तब चौथी बार जगन्नाथ जोसी बहोत श्रमित भये। माथो नीचो करन लागें, जो-कहा अपराध पर्‌यो है, जो-श्रीठाकुरजी जितनी बार थार धरी तितनी बार डारि दिये। सामग्री अरोगत नाहीं। यह अपने मनमें बिचार करत बहोत आतुरता दैन्यता आई। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-तू थार छूये तें डरपतु है तो मेरे आगें काहे कों धरतु है? यह सुनत ही जगन्नाथ जोसी नाक घिसिकें बहोत बिनती करी, महाराज! मैं चूक्यो। अब मेरो अपराध क्षमा करो। मैं तो कछू जानत नाहीं। या प्रकार बहोत मनुहार करी।

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो-श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनी में कहे हैं श्रीठाकुरजी की लीला में श्रीठाकुरजी के स्वरूप में दोई भावना करें तब श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई। एक असंभावना, एक विपरीत भावना। असंभावना

જાણી. તે થાર લાત મારીને ચોકીથી નીચે નાખી દીધી. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ ફરીથી સામગ્રી કરીને થાર ધોઈ ચોકી ધોઈ (ભોગ) ધર્યો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ લાત મારીને ચોકીથી નીચે નાખી દીધો. ત્યારે જગન્નાથ જોશી ફરી સામગ્રી કરી થાર ધોઈ ચોકી ધોઇ ધર્યો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ લાત મારી નીચે નાખી દીધો. ત્યારે ફરીથી સામગ્રી કરી તેમજ ધર્યો. ત્યારે ફરી શ્રીઠાકુરજીએ લાત મારીને નાખી દીધો. ત્યારે ચોથી વાર જગન્નાથ જોશી બહુ શ્રમિત થયા. માથું નીચું કરવા લાગ્યા કે શો અપરાધ પડ્યો છે? કે શ્રીઠાકુરજી જેટલી વાર થાર ધર્યો તેટલી વાર નાખી દીધો. સામગ્રી આરોગ્યા નહીં. એ પોતાના મનમાં વિચાર કરતાં બહુ જ આતુરતા દીનતા આવી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, કે તૂ થાર છોવાયાથી ડરે છે તો મારી આગળ શા માટે ધરે છે? એ સાંભળતાં જ જગન્નાથ જોશી નાક ઘસીને બહુ જ વિનતી કરી, મહારાજ! હું ચૂક્યો. હવે મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. હું તો કંઈ જાણતો નથી. એ પ્રકારે ઘણી જ કાલાવાલા કર્યાં.

ભાવપ્રકાશ—એનો અભિપ્રાય એ છે, શ્રીઆચાર્યજી શ્રીસુબોધિનીજીમાં કહે છે, શ્રીઠાકુરજીની લીલામાં શ્રીઠાકુરજીના સ્વરૂપમાં બે ભાવના કરે તો

यह, जो–श्रीठाकुरजी पराये सों विहार किये। ठाकुरजी हीन जाति के घर कैसे अरोगत होइंगे? श्रीठाकुरजी के छुये तें यह वस्तु छूइ जायगी। अहिर ज्ञाति के विना न्हाये क्यों भोजन किये। श्रीठाकुरजी कों फलानो रोग भयो। श्रीठाकुरजी नित्य तो प्रमान अरोगत हैं, अन्नकूट में इतनो सब कैसे अरोगेंगे? श्रीठाकुरजी अब वृद्ध भये। श्रीठाकुरजी यह लीला क्यों किये? यह नाना प्रकार के कुतर्क प्रभु में करनो नाहीं। काहे तें 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' में कहे हैं–'तर्कागोचर कार्यकृत्'। ऐसो कार्य है। प्रभुको कार्य तर्क तें अगोचर है। कोई की बुद्धि में तर्क में आवे नाहीं। कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्य युक्त हैं। यह असंभावना, और विपरीत भावना यह, जो–श्रीठाकुरजी के श्रीमुख में बास आवेगी। ताते वासन दातन, करावनो। एक ठिकाने खरचू की भावना करनी। चौरासी कोस व्रज हैं एक दिन में सगरे कैसे फिरे? इतनी गाई हैं सब कैसे दुहत होइंगे? आगें व्रज में प्रगटे अब व्रज में कहाँ हैं? कहूँ व्रज में दीसत नाहीं। हीन वस्तु गाजर मूरि कलिंगड़ा आदि सब ठाकुर ने प्रगट कियो है, याको भोग धरिवेमें कहा बाधक है? श्रीठाकुरजी एक सगरी गोपिकान सों कैसे विहार करत होइंगे? इत्यादिक

શ્રીઠાકુરજી અપ્રસન્ન થાય. એક અસંભાવના, એક વિપરીતભાવના અસંભાવના એ જે શ્રીઠાકુરજીએ અન્ય સાથે વિહાર કર્યો. શ્રીઠાકુરજી હીન જાતિના ઘરે કેમ આરોગતા હશે? શ્રીઠાકુરજીના અડયાથી આ વસ્તુ અભડાઇ જશે. અહીર જાતિને ત્યાં વિના ન્હાયે કેમ ભોજન કર્યું? શ્રીઠાકુરજીને ફલાણો રોગ થયો. શ્રીઠાકુરજી નિત્ય તો પ્રમાણસર આરોગે છે. અન્નકુટમાં આટલું બધુ કેવી રીતે આરોગતા હશે? શ્રીઠાકુરજી હવે વૃદ્ધ થયા. શ્રીઠાકુરજીએ આ લીલા કેમ કરી? આવા નાના પ્રકારના કુતર્ક પ્રભુમાં નહી કરવા. કેમકે 'પુરુષોત્તમ સહસ્રનામ'માં કહે છે 'તર્કાગોચરકાર્યકૃત્' એવું કાર્ય છે. પ્રભુનું કાર્ય તર્કથી અગોચર છે. કોઇની બુદ્ધિમાં–તર્કમાં આવે નહી. કર્તું અકર્તું, અન્યથા કર્તું, સર્વ સામર્થ્ય યુક્ત છે. આ અસંભાવના અને વિપરીત ભાવના એ, કે શ્રીઠાકુરજીના શ્રીમુખમાં વાસ આવશે તેથી વાસન–દાતણ કરાવવું. એક ઠેકાણે ખરચૂની ભાવના કરવી. ચોરાશી કોસ વ્રજ છે. એક દિવસમાં કેવી રીતે ફરે? આટલી ગાય છે કેવી રીતે દોહતા હશે? આગળ વ્રજમાં પ્રકટયા હવે વ્રજમાં કયાં છે? કંઇ વ્રજમાં દેખાતા નથી. હીન વસ્તુ ગાજર, મૂળા, કલિંગડા આદિ બધું શ્રીઠાકુરજીએ પ્રકટ કર્યું છે તેને ભોગધરવામાં શું બાધક છે? ઇત્યાદિ વિપરીત ભાવના થઇ. પરંતુ જગન્નાથ જોશીને તો એક સરળ

विपरीत भावना भई। परंतु जगन्नाथ जोसी कों तो एक सरल सुभाव सों भई। तातें श्रीठाकुरजी बोलें। कहें, थार छूई जायगी मेरे आगे मति धरे। तब अपराध क्षमा कराये। अपने कों अज्ञानी मानें। या प्रकार असंभावना, विपरीत भावना तें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई। यह जताये। सो न करनो।

वार्ता-प्रसंग २—और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों ताती खीर भोग धरें। तेसे श्रीठाकुरजी ताती खीर अरोगते। सो कितनेक दिनकों श्रीआचार्यजी खेरालु गाम में जगन्नाथ जोसी के घर पधारे। सो श्रीठाकुरजी के ओष्ट और जीभ बहोत राती देखे। तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी सों पूछें, बाबा! जीभ, ओष्ट बहुत राते क्यों हैं? तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-जगन्नाथ जोसी ताती खीर भोग धरतु है। तातें मैं अरोगत हों। तब श्रीआचार्यजी जगन्नाथ जोसी सों कहे, जो-तू ताती खीर श्रीठाकुरजी कों भोग क्यों धरतु है? तब जगन्नाथ जोसी कहें, महाराज! हम यह जाने, जो-ताती सामग्री अरोगत हैं तातें समर्पत हैं। तब श्रीआचार्यजी कहे, खीर बहोत ताती न समर्पिये। अंगुरी डारि देखिये। अंगुरी सहे तब भोग धरीये। और सामग्री ताती धरिये ताकी चिंता नाहीं। तब तें जगन्नाथ जोसी सीरी करिकें खीर धरन लागें।

સ્વભાવથી થઇ તેથી શ્રીઠાકુરજી બોલ્યા. કહે, થાર છોવઇ જશે. મારી આગળ ન ધરીશ. ત્યારે અપરાધ ક્ષમા કરાવ્યો, પોતાને અજ્ઞાની માન્યા, એ પ્રકારે અસંભાવના વિપરીત ભાવનાથી શ્રીઠાકુરજીએ અપ્રસન્ન થઇ એ જણાવ્યું, કે એમ ન કરવુઃ

વાર્તા-પ્રસગ ૨—બીજું, જગન્નાથ જોશી શ્રીઠાકુરજીને ગરમ ખીર ભોગ ધરે તેજ પ્રકારે શ્રીઠાકુરજી ગરમ ખીર આરોગતા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી ખેરાળુ ગામમાં જગન્નાથ જોશીને ઘરે પધાર્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના હોઠ અને જીભ બહુ જ રાતાં જોયાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને પૂછયું, બાવા! જીભ ઓષ્ટ બહુ જ રાતાં કેમ છે? ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, કે જગન્નાથ જોશી ગરમ ખીર ભોગ ધરે છે. તેથી હું ગરમ આરોગું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી જગન્નાથ જોશીને કહે, કે તૂં ગરમ ખીર શ્રીઠાકુરજીને ભોગ કેમ ધરે છે? ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, મહારાજ! અમે એમ જાણ્યું કે ગરમ સામગ્રી આરોગે છે તેથી સમર્પિએ છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ખીર બહુ ગરમ ન સમર્પીએ. આંગળી નાખીને જોઇએ. આંગળી સહે ત્યારે ભોગ ધરીએ. બીજી સામગ્રી ગરમ ધરીએ તેની ચિંતા નહીં. ત્યારથી જગન્નાથ જોશી ઠંડી કરીને ખીર ધરવા લાગ્યા.

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होइ, जो-श्रीठाकुरजी ताती क्यों अरोगे? जगन्नाथ जोसी सों क्यों न कहे? तहां यह जाननो, जो-जा दिन तें जगन्नाथ जोसी के मनमें थार छुइवे की असंभावना भई ता दिन तें बहुत अनुभव न करावते। इनकी प्रीति सों अरोगते।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक समें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के दरसन कों अड़ेल चले। सो मारग में अन्नकूट को दिन आयो। सो एक श्रीआचार्यजी को सेवक माथुर हतो वासों कहें गाम में जाइकें उत्तम सामग्री, जो-मिले सो ले आवो। दारि, चोखा, घी, खांड आदि। सो उह वैष्णव गाम में गयो। सो उह गाम छोटो हतो। एक जुवारि मिलें। और कछू न मिलें। सो आइकें जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो-या गाम में ज्वारि मिलति है। और कछू मिलत नाहीं। गाम छोटो है। तब जगन्नाथ जोसी कहें भगवद् इच्छा। ज्वारि ले आवो। तब वैष्णव ज्वारि ले आये। तब कहें, याकों वीनी, फटकि ले आओ। तब वह वैष्णव ज्वारि कों आछी भांति सों वीनी फटकि के ले आयो। तब जगन्नाथ जोसी ने पानी में चढायो। तब उह वैष्णव ने कही, या ज्वारि की भुसी है ताकों पानी सों बांधिकें ऊपर धरि देउ। तो बाफ सों ढोकला वेगि है आवेगो। तब जगन्नाथ जोसी

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં એ સંદેહ થાય, કે શ્રીઠાકુરજી ગરમ કેમ આરોગ્યા? જગન્નાથ જોશીને કેમ ન કહ્યું. ત્યાં એ જાણવુ, કે જે દિવસથી જગન્નાથ જોશીના મનમાં થાર છોવાઇ જવાની અસંભાવના થઇ ત્યારથી બહુ અનુભવ ન જણાવતા. એમની પ્રીતિથી આરોગતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—વળી એક સમે જગન્નાથ જોશી શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને અડેલ ચાલ્યા, તે માર્ગમાં અન્નકૂટનો દિવસ આવ્યો. ત્યારે એક શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક માથુર (મથુરાનો રહેવાવાળો) હતો તેને કહે, ગામમાં જઇને ઉત્તમ સામગ્રી જે મળે તે લઈ આવો. દાળ, ચોખા, ઘી, ખાંડ આદિ. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ગામમાં ગયો. તે ગામ નાનું હતું. એક જવાર મળે. બીજું કંઇ ન મળે. તેથી આવીને જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, કે આ ગામમાં જવાર મળે છે. બીજું કંઈ મળતું નથી. ગામ નાનું છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, ભગવદીચ્છા. જવાર લઇ આવો. ત્યારે વૈષ્ણવ જવાર લઈ આવ્યા. ત્યારે કહે એને વીણી ઝાટકીને લઇ આવો. ત્યારે તે વૈષ્ણવ જવારને સારી રીતે વીણી ઝાટકીને લઇ આવ્યો. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ પાણીમાં ચડાવી. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, આ જવારની ભૂંસી છે તેને પાણીથી બાંધીને ઉપર ધરી દો. તે બાફથી ઢોકળાં

वाकों बांधिकें ऊपर धरें। सो जब ज्वारि को ठोंमर खदूखदावन लाग्यो। तब उह भुसी को ढोकला ज्वारि में गिरि परयो। सो सब एकठोरो मिलि गयो। सो जगन्नाथ जोसी देखिकें मन में बहोत खेद कियो। पाछें भगवद् इच्छा मानि कें जेसो भयौ तैसो भोग धरि महाप्रसाद लियो, पाछें सोये। तब श्रीठाकुरजी जगन्नाथ जोसी सों कहें, जो-मेरे पेट में ठोमर को ढोकला दुखत है। तब जगन्नाथ जोसी सोंठि, अजवाइन, लोंन समर्पे। तब श्रीठाकुरजी कहें मेरे पेट में चेन भयो। तब मन में जगन्नाथ जोसी बहोत पश्चात्ताप कियो। जो-आजु श्रीठाकुरजी कों बहोत दुःख भयो। अब आछो गाम देखिकें मजल पर उतरेंगे। सो ता दिन तें आछो गाम देखिकें उतरते।

भावप्रकाश—यह वार्ता कौ अभिप्राय यह है, जो-जगन्नाथ जोसी को सरल सुभाव बहोत है। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये। जो-पहलें थार छुइवे की असंभावना अज्ञान में आई हती तातें उदास भये हते। बहोत बोलते नाहीं। सो इनको सरल भाव, कुतर्क पंडिताई करि ज्ञान करिकें, तरक न हती। सहज में मनमें आई, फिरि कछू नाही। तातें श्रीठाकुरजी सरल सुभाव जानिकें प्रसन्न भये।

જલ્દી થઈ આવશે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તેને બાંધીને ઉપર ધર્યાં. પછી જ્યારે જવારનું ઠુમર ખદખદવા લાગ્યું ત્યારે તે ભૂંસીનાં ઢાકળાં જવારમાં પડી ગયાં પછી બધું એકઠું મળી ગયું. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તે જોઇને મનમાં બહુ જ ખેદ કર્યો. પછી ભગવદીચ્છા માનીને જેવું થયું તેવું ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લીધો. પછી સુઇ રહ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી જગન્નાથ જોશીને કહે, કે મારા પેટમાં ઠુમરનું ઢાકળું દુખે છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ સૂંઠ, અજમો, મીઠું સમર્પ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, મારા પેટમાં ચેન થયું. ત્યારે મનમાં જગન્નાથ જોશીએ બહુ જ પશ્ચાતાપ કર્યો, કે આજ શ્રીઠાકુરજીને બહુ દુઃખ થયું. હવે સારૂં ગામ જોઇને મજલ ઉપર ઉતરીશું. તે દિવસથી સારૂં ગામ જોઇને ઉતરતા—

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તાનો અભિપ્રાય એ છે, કે જગન્નાથ જોશીનો સરળ સ્વભાવ ઘણો છે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થયા, કે પહેલાં થાર છોવાવાની અસંભાવના અજ્ઞાનમાં આવી હતી તેથી ઉદાસ થયા હતા. બહુ બોલતા નહીં. એમનો સરળ ભાવ (હતો) કુતર્ક પંડિતાઈ કરી, જ્ઞાન કરીને તર્ક ન હતો. સહજમાં મનમાં આવ્યું પછી કંઈ નહીં. તેથી શ્રીઠાકુરજી સરલ સ્વભાવ જાણીને

सो सनेह देखिवे के लिये जताये, जो–मेरे पेट में दुखत है। तब इनको सनेह बहुत तातें मन में दुःख पायो। सोंठि, अजवाइन, लोंन भोग धरे। तब श्रीठाकुरजी इनकी ऊपर बहोत प्रसन्न भये। कहे अब मेरे पेट में चेन है। तब जगन्नाथ जोसी को दुःख मिट्यो। तातें विद्याई की चतुराई, ज्ञानि होते तो कहेतें, श्रीठाकुरजी के पेट में दुखे हैं! ए तो ईश्वर हैं। परंतु जगन्नाथ जोसी सूधे निष्कपट भगवदीय हैं। तातें श्रीठाकुरजी फेरि प्रसन्न भये। यामें यह जताये, जो–जाके हृदय में स्नेह होई, सरल सुभाव होइ, तो वासों अपराध हू परे तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। वाको विगार न होई।

वार्ता–प्रसंग ४—और एक समें जगन्नाथ जोसी अपने घर उत्थापन पाछें भोग के किंवाड़ खोलें। सो दरसन होत हते ता समें जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों मूंठा करत हते। ता समे एक गरासिया रजपूत दरसन कों आयो हतो। सो दरसन करत हतो। और हू दस–पांच वैष्णव दरसन करत हते। ता समें एक डोकरी ने फूल की माला लेकें दूरि तें श्रीठाकुरजी के ऊपर डारि दीनी। सो श्रीठाकुरजी के सिंघासन ऊपर आइ परी। तब जगन्नाथ जोसी कों बहोत रीस चढ़ी। सो माला लेकें वाहिर फेंकी। सो दूसरो एक रजपूत

પ્રસન્ન થયા. તે સ્નેહ જોવાને માટે જણાવ્યું, કે મારા પેટમાં દુઃખે છે. ત્યારે એમનો સ્નેહ બહુ જ તેથી મનમાં દુઃખ પામ્યા. સૂંઠ, અજમો, મીઠું ભોગ ધરે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી એમની ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન થયા. કહે, હવે મારા પેટમાં ચેન છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીનું દુઃખ મટયું. તેથી વિદ્યાની ચતુરાઈ, (કે) જ્ઞાની હોતા તો કહેતા, શ્રીઠાકુરજીના પેટમાં દુઃખે છે! એ તો ઇશ્વર છે? પરંતુ જગન્નાથ જોશી સીધા નિષ્કપટ ભગવદીય છે. તેથી શ્રીઠાકુરજી ફરી પ્રસન્ન થયા. એમાં એ જણાવ્યું, કે જેના હૃદયમાં સ્નેહ હોય (જેનો) સરળ સ્વભાવ હોય તો તેનાથી અપરાધ પણ પડે તો શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે, એનો બગાડ ન થાય.

વાર્તા–પ્રસંગ ૪—વળી એક સમય જગન્નાથ જોશીએ પોતાના ઘરે ઉત્થાપન પછી ભોગનાં કમાડ ખોલ્યાં. તે દર્શન થતાં હતાં તે સમયે જગન્નાથ જોશી શ્રીઠાકુરજીને 'મૂઠા' (મોરછલ) કરતા હતા. તે સમયે એક ગરાસિયો રજપૂત દર્શને આવ્યો હતો. તે દર્શન કરતો હતો. બીજા પણ દશ–પાંચ વૈષ્ણવો દર્શન કરતા હતા. તે સમયે એક ડોશીએ ફૂલની માળા લઈને દૂરથી શ્રીઠાકુરજીના ઉપર નાંખી તે શ્રીઠાકુરજીના સિંઘાસન ઉપર આવી પડી. ત્યારે જગન્નાથ જોશીને બહુ જ રીસ ચઢી. તે માળા લઈને

हतो ताके गरे में जाइ परी। तब वा गरासिया ने अपने मन में कही, जो-मोकों जोसी नें माला नाहीं दीनी तो मैं सही रजपूत, जो-जगन्नाथ जोसी कों ठोर मारूं। सो तरवार लिये फिरें। परंतु दाव न पावे, जो-घात करें। सो एक दिन जगन्नाथ जोसी बहिरभूमि, दांतिन करिकें गाम बाहिर तें आवत हते। सो गरासिया रजपूत नें पाछें सों आई जगन्नाथ जोसी की उपरि तरवार चलाई। तब श्रीठाकुरजी पाछें तें हाथ वा रजपूत को ऊपर तें पकरि लियो। और कहें, याकों मारे मति। तब वह रजपूत बहोत कियो परि हाथ उपर रहि गयो। चले नाहीं। तब जगन्नाथ जोसी पाछें फिरि कें देखे तो श्रीठाकुरजी अमित ठाढ़े हैं। तब जगन्नाथ जोसी ने कही, फिटरे पापी! यह कहा कियो? तब वह रजपूत तरवारि डारि कें जगन्नाथ जोसी के पाइन परयो।

भावप्रकाश—काहेतें? रजपूत नें जानी, ये महापुरुष हैं। मेरो हाथ चल्यो नाहीं। तब तरवारि भूमिमें डारि पांवन परयो।

पाछें कह्यो, मेरो अपराध क्षमा करो। बहोतेरो जगन्नाथ जोसी कहें, परंतु छोड़े नाहीं। कह्यो, मोकों सेवक करो। तुम भगवदीय

બહાર ફેંકી. ત્યારે બીજો એક રજપૂત હતો તેના ગળામાં જઇ પડી. ત્યારે તે ગરાસિયાએ પોતાના મનમાં કહ્યું, કે મને જગન્નાથ જોશીએ માળા નહી આપી તો હું ખરો રજપૂત (ત્યારે કે જ્યારે) જગન્નાથ જોશીને ઠાર મારૂં. તે તલવાર લઇને ફરે. પરંતુ દાવ ન મળે જે ઘા કરે. તે એક દિવસ જગન્નાથ જોશી ખરચૂ, દાતણ પાણી કરીને ગામ બહારથી આવતા હતા. ત્યારે તે ગરાસિયા રજપૂતે પાછળથી આવી જગન્નાથ જોશીના ઉપર તરવાર ચલાવી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પાછળથી (આવી) તે રજપૂતનો ઉપરથી હાથ પકડી લીધો. અને બોલ્યા, એને ન માર. ત્યારે તે રજપૂતે બહુ જ (જોર) કર્યું. પરંતુ હાથ ઉપર રહી ગયો. ચાલ્યો નહીં. ત્યારે જગન્નાથ જોશી પાછા ફરીને જુએ તો શ્રીઠાકુરજી અમિત ઉભા છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, ફિટરે પાપી! આ શું કર્યું? ત્યારે તે રજપૂત તરવાર નાખીને જગન્નાથ જોશીના પગમાં પડ્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે રજપૂતે જાણ્યું, કે એ મહાપુરુષ છે. મારો હાથ ચાલ્યો નહી. ત્યારે તરવાર ભૂમિમાં નાખીને પગે પડ્યો.

પછી કહ્યું, મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. જગન્નાથ જોશીએ ઘણું કહ્યું, પરંતુ છોડે નહી. કહે, મને સેવક કરો. તમે ભગવદીય છો. હું પાપી છું. તમ્હારી કૃપાથી મારો

हो, मैं पापी हों। सो तुम्हारी कृपातें मेरो उद्धार होइगो। नाहीं तो मेरो ठिकानो नाहीं। तब जगन्नाथ जोसी कों दया आई। कहे, घर चलो। तुमकों नाम सुनावेंगे। पाछें घर आई आपु न्हाये। उह रजपूत कों न्हवाई के नाम सुनाये। पाछें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारें तव रजपूत कों श्रीगुसांईजी के पास नाम सुनवाये। सो आछो वैष्णव भयो।

भावप्रकाश—सो भगवदीय के पीछें वैर भाव सों मारन कों फिरयो सो उद्धार भयो। तो जो-प्रीति करि भगवदीय को संग करे तो वाको उद्धार होई यामें कहा कहनो? और जगन्नाथ जोसी कों मंदिर में श्रीठाकुरजी की आगें क्रोध चढयो तातें माला बाहिर फेंकी। सो क्रोध चांडाल को रूप है। सो अपराध परयो। ताको दोष निवृत्त करन के लिये उह रजपूत द्वारा जगन्नाथ जोसी के ऊपर तरवार चलवाई। तामें अपराध दूरि भयो। उह रजपूत को उद्धार करनो। तातें वाकी बुद्धि फिरि गई। जगन्नाथ जोसी के पाइन परयो। उह रजपूत लीला संबंधी तो हतो नाहीं। मुक्ति को अधिकारी हतो। काहेतें? यह वचन रासपंचाध्याई में हैं "कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेवच"। सो क्रोध करि उह रजपूत कों मुक्ति भई। तातें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे।

* * *

ઉદ્ધાર થશે. નહીં તો મારૂં ઠેકાણું નથી. ત્યારે જગન્નાથ જોશીને દયા આવી. કહે, ઘર ચાલો. તમને નામ સંભળાવીશું. પછી ઘર આવી પોતે ન્હાયા. તે રજપૂતને ન્હવડાવીને નામ સંભળાવ્યું. પછી શ્રીગુસાંઇજી ગુજરાત પધાર્યા ત્યારે રજપૂતને શ્રીગુસાંઇજી પાસે નામ સંભળાવ્યું. પછી સારો વૈષ્ણવ થયો.

ભાવપ્રકાશ—ભગવદીયની પાછળ વેરભાવથી મારવાને દોડયો. તો ઉદ્ધાર થયો. તો જે પ્રીતિ કરી ભગવદીયનો સંગ કરે તો તેનો ઉદ્ધાર થાય, તેમાં શું કહેવું? બીજુ, જગન્નાથ જોશીને મંદિરમાં શ્રીઠાકુરજીની આગળ ક્રોધ ચઢ્યો તેથી માલા બહાર ફેંકી. તે ક્રોધ ચાંડાલનું રૂપ છે. તેથી અપરાધ પડયો. તેનો દોષ નિવૃત્ત કરવાને માટે તે રજપૂત દ્વારા જગન્નાથ જોશીના ઉપર તરવાર ચલાવરાવી. તેમાં અપરાધ દૂર થયો. તે રજપૂતનો ઉદ્ધાર કરવો તેથી તેની બુદ્ધિ ફરી ગઇ. જગન્નાથ જોશીના પગે પડયો. તે રજપૂત લીલા સંબંધી તો હતો નહીં. મુક્તિનો અધિકારી હતો. કેમ કે એ વચન 'રાસપંચાધ્યાઇ'માં છે. 'કામં ક્રોધં ભયં સ્નેહમૈક્યં સૌહૃદમેવચ' એ ક્રોધ કરીને રજપૂતની મુક્તિ થઇ. તેથી જગન્નાથ જોશી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, जगन्नाथ जोसी की माता, खेराळु में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—ताकों दोई बेटा हते। तामें बड़ो बेटा नरहरि जोसी, छोटो जगन्नाथ जोसी।

भावप्रकाश—सो लीला में माता तो श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं। "छबिसिंघि" इनको नाम हैं। और छबिसिंघि की दोई सखी हैं। सो उनको नाम एक को "गंधरेखा"। एक को नाम "सौरभी" है। सो माता छबिसिंघि को स्वरूप और नरहरि जोसी गंधरेखा को प्रागट्य। और जगन्नाथ जोसी सौरभी को प्रागट्य। सो नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी को पिता महादुष्ट हतो। कोई साधु संत पंडित ब्राह्मन वैष्णव कों मानतो नाहीं। गाम में कोई आवे तो दुख देई। रात्रि कों चोरी करावें। लूटि लेई। तातें भगवद्धर्म को द्वेषी हतो। सो श्रीआचार्यजी अड़ेल तें द्वारिका पधारे। सो कछुक दिनमें गुजरात में खेराळू गाम में आये। एक बगीचा में गाम बाहिर उतरे। तहां जगन्नाथ जोसी की माता जल भरन कों आई। सो श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजी की कथा जज्ञपत्नि को प्रसंग कहें। सो वह बाई सुनिकें बहोत प्रसन्न भई। तब श्रीआचार्यजी सों विनती

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, જગન્નાથ જોશીની માતા, ખેરાળુમાં રહેતી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તેને બે બેટા હતા. તેમાં મોટા બેટા નરહર જોશી. નાના જગન્નાથ જોશી.

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં માતા તો શ્રીસ્વામિનીજીની સખી છે. 'છબિસિંધી' એમનુ નામ છે. છબિસિંધીની બે સખી છે. એમનું એકનું નામ 'ગંધરેખા' એકનું નામ 'સૌરભી' છે. માતા છબિસિંધીનુ સ્વરૂપ અને નરહર જોશી ગંધરેખાનું પ્રાકટ્ય. અને જગન્નાથ જોશી 'સૌરભી'નુ પ્રાકટ્ય. તે નરહર જોશી જગન્નાથ જોશીનો પિતા મહાદુષ્ટ હતો. કોઈ સાધુંસંત પંડિત બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવને માનતો નહીં. ગામમાં કોઇ આવે તો દુઃખ દે. રાત્રિએ ચોરી કરાવે. લૂટી લે. તેથી ભગવદ્ધર્મનો દ્વેષી હતો. એક સમયે શ્રીઆચાર્યજી અડેલથી દ્વારિકા પધાર્યા. તે કેટલાક દિવસમાં ગુજરાતમાં ખેરાળુ ગામમાં આવ્યા. ગામ બહાર એક બગીચામાં ઉતર્યા. ત્યાં જગન્નાથ જોશીની માતા જલ ભરવાને આવી. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીસુબોધિનીજીની કથા, યજ્ઞપત્નિનો પ્રસંગ કહે. તે તે બાઈ સાંભળીને બહુ પ્રસન્ન થઈ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરીને કહ્યું, કે મહારાજ!

करि कही, जो–महाराज! मोकों सेवक करिये। और इहाँ रहो मति। मेरो पति महादुष्ट है। जानेगो तो रात्रिकों चोरी करावेगो। और लूटेगो। तब श्रीआचार्यजी कहें, उह कहा लूटेगो? वासों तू जाई कहियो, श्रीआचार्यजी बाग में आये हैं। और तू दैवी जीव है। परंतु अबहि तोकों सरन कैसे लेई? धर्म को विरोधी पति है। सो बरस पांच में मरेगो। और तेरे दोई बेटा होइंगे। सो पति के मरे पाछें अड़ेल में आइयो। तोकों सेवक करेंगे। अबहि सेवक करनो उचित नाहीं। तब वह बाई दंडोत करि जल भरिकें घर गई। पाछें श्रीआचार्यजी तीन रात्रि खेराळू में रहे, परंतु उह बाई को पति सुन्यो तऊ नाहीं आयो। ता पाछें आपुतो श्रीद्वारका श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारें। पाछें उह बाई को गर्भ रह्यो सो बरस दिन के भीतर नरहरि जोसी भये। ताके तीसरे बरस जगन्नाथ जोसी भये। पाछें जब पांच बरस भये तब एक सन्यासी पंडित खेराळू में आयो। सगरे ब्राह्मन सों चरचा करी। पाछें रात्रिकों जगन्नाथ जोसी को पिता उह सन्यासी कों लूटन गयो। तब उह सन्यासी पास गड़सा हतो, तासों मारयो। सो सन्यासी डरपिकें भाजि गयो। पाछें सवेरो भये लोगन नें जान्यो। सो ज्ञाति के ब्राह्मन नें मिलिकें वाको संस्कार कियो। तब उह बाई कों श्रीआचार्यजी के वचन सुधि

મને સેવક કરો. અને અહીં રહેશો નહીં. મારો પતિ મહાદુષ્ટ છે. જાણશે તો રાત્રિએ ચોરી કરાવશે. અને લૂંટશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એ શું લૂંટશે. તૂ એને જઇને કહેજે, શ્રીઆચાર્યજી બાગમાં આવ્યા છે. અને તૂ દૈવી જીવ છે. પરંતુ હમણાં તને શરણે કેવી રીતે લે? ધર્મનો વિરોધી પતિ છે. તે વર્ષ પાંચમાં મરશે. અને તને બે બેટા થશે. તે પતિના મર્યા પછી અડેલમાં આવજે. તને સેવક કરીશું. હમણાં સેવક કરવી ઉચિત નથી. ત્યારે તે બાઈ દંડવત્ કરી જલ ભરીને ઘર ગઈ. પછી શ્રીઆચાર્યજી ત્રણ રાત્રિ ખેરાળુમાં રહ્યા. પરંતુ તે બાઇના પતિએ સાંભળ્યું તોપણ આવ્યો નહીં. તે પછી આપ તો શ્રીદ્વારકા શ્રીરણછોડજીના દર્શને પધાર્યા. પછી તે બાઇને ગર્ભ રહ્યો. તે વર્ષ દિવસની અંદર નરહરિ જોશી થયા. તેના ત્રીજા વર્ષે જગન્નાથ જોશી થયા. પછી જ્યારે પાંચ વર્ષ થયાં ત્યારે એક સન્યાસી પંડિત ખેરાળુમાં આવ્યો. બધા બ્રાહ્મણોથી ચર્ચા કરી પછી રાત્રિએ જગન્નાથ જોશીનો પિતા એ સન્યાસીને લૂંટવા ગયો. ત્યારે તે સન્યાસી પાસે ગડસા (ઘાસના ટૂકડા કરવાનું શસ્ત્ર) હતો તેનાથી માર્યો. પછી સન્યાસી ડરીને ભાગી ગયો. પછી સવાર થયે લોકોએ જાણ્યું. તેથી જ્ઞાતિના બ્રાહ્મણોએ

आये, जो–आपु श्रीमुख सों कहे हते तेरे दोई बेटा होइंगे सो भये। पति पांच वरस पाछें मरयो। अब में तीरथ को मिस करि अड़ेल जाइकें श्रीआचार्यजी की सेवकनी होई कृतारथ होउँ। अब मेरे प्रतिबंध तो कोई है नाहीं। तब अपने मनके प्रमानिक कों घर सोंपि, दोऊ बेटान कों घर में राखे। सो द्रव्य बहोत हतो कछुक घर में राख्यो कछुक संग ले तीरथराज प्रयाग न्हाईवे को मिस करि गाड़ी भारें करि गुजरात सों चली। सो कछुक दिन में प्रयाग आई न्हाये। तहां दान पुन्य कछुक करि अड़ेल में आई, श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती कियो। महाराज! आपु कहे सो सब भयो। दोऊ बेटा हू भये, पति हू मरयो। अब मेरे प्रतिबंध कछू नाहिं है। तातें आपु साक्षात पुरुषोत्तम हो। मोकों सरनि लेउ। जन्म सगरो वृथा गयो। तब श्रीआचार्यजी उह बाई कों श्रीजमुनाजीमें न्हवाय नाम निवेदन करायो। और कहे तू भगवद् सेवा करि। तब श्रीआचार्यजी सों उह बाई कहें आपु सेवा पधराई देउ। मैं सेवा करों। तब श्रीआचार्यजी कहें प्रयाग में जाई भगवद् स्वरूप ले आवो। तब वह बाई प्रयाग में गई। एक कसेरे के पास श्रीठाकुरजी हते। सो न्योछावरि देकें लाई। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत न्हवाई

મળીને તેનો સંસ્કાર કર્યો. ત્યારે તે બાઇને શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન યાદ આવ્યાં, કે પોતે શ્રીમુખથી કહ્યું હતું, તારે બે પુત્ર થશે, તે થયા. પતિ પાંચ વર્ષ પછી મરચો. હવે હું તીર્થનું બહાનુ કરી અડેલ જઇને શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની થઇ કૃતાર્થ થાઉં. હવે મારે પ્રતિબંધ તો કોઈ છે નહીં. ત્યારે પોતાના મનના પ્રમાણિક વ્યક્તિને ઘર સોંપી બન્ને બેટાને ઘરમાં રાખ્યા. તે દ્રવ્ય ઘણુ હતું. થોડુંક ઘરમાં રાખ્યુ, થોડુંક સાથે લઈ તીર્થરાજ પ્રયાગ ન્હાવાનુ બહાનું કરી ગાડી ભાડે કરી ગુજરાતથી ચાલી. પછી કેટલાક દિવસમાં પ્રયાગ આવીને ન્હાઇ. ત્યાં દાન–પુણ્ય કંઇક કરી અડેલમાં આવી. શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ! આપે કહ્યુ તે બધું થયું. બન્ને બેટા પણ થયા. પતિ પણ મર્યો. હવે મારે પ્રતિબંધ કોઇ નથી. તેથી આપ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ છો, મને શરણે લો. જન્મ બધો વૃથા ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તે બાઇને શ્રીજમનાજીમાં ન્હવડાવી નામ–નિવેદન કરાવ્યુ. અને કહ્યું તૂ ભગવદ્સેવા કર. ત્યારે તે બાઇ શ્રીઆચાર્યજીને કહે, આપ સેવા પધરાવી દો. હું સેવા કરૂ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે પ્રયાગમાં જઈ ભગવત્સ્વરૂપ લઇ આવો. ત્યારે તે બાઇ પ્રયાગમાં ગઇ. એક કસારાની પાસે શ્રીઠાકુરજી હતા. તે ન્યોછાવર દઇને લઇ આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પચા-

उह बाई के माथें पधराई दिये। पाछें कछुक दिन श्रीआचार्यजी पास रहि पुष्टि-मार्ग की रीति सब सीखिकें पाछें बिदा होइ गुजरात आई। राजसेवा मंडान सों प्रीति पूर्वक (सेवा) करन लागी। कछुक दिन में सानुभावता श्रीठाकुरजी जनावन लागें।

पाछें वाके दोऊ बेटा बड़े भये। नरहरि जोसी और जगन्नाथ जोसी। तब इनसों माता ने कही तुम श्रीआचार्यजी के सेवक अड़ेल जाइकें होई आवो। पाछें भगवद् सेवा करो। और एक यह मोहोर मेरी ओर की भेट करि मेरी दंडौत् करियो। श्रीआचार्यजी कों साक्षात् पुरुषोत्तम जानियो। तब दोउ नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी गुजरात सों चलें। सो लाठी पोली हती बांस की, तामें मोहौर धरि लीनी। सो कछुक दिनमें अड़ेल आइकें पूछे, जो-श्रीवल्लभाचार्यजी कहां है? तब आपु तो पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथजी के दरसन कों पधारे हते। तब दोई भाई मिलि कें विचार किये, जो-घर जाइंगे तो माता खीजेगी, जो-तुम सेवक भये बिना क्यों आये? तातें आपुन तो पुरुषोत्तमपुरी चलिये। सो दोऊ जने चलें सो पुरुषोत्तमपुरी आये। तब पूछें, जो-श्रीआचार्यजी इहां कौन ठौर बिराजत हैं? तब एक

મૃતથી ન્હવડાવી તે બાઇને માથે પધરાવી દીધા. પછી કેટલાક દિવસ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહી પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ બધી શીખીને પાછી વિદાય થઈ ગુજરાત આવી. રાજસેવા બધારણથી પ્રીતિપૂર્વક સેવા કરવા લાગી. કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

પછી એના બે બેટા મોટા થયા. નરહરિ જોશી અને જગન્નાથ જોશી. ત્યારે તેમને માતાએ કહ્યું, તમે અડેલમાં જઇને-શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ આવો. પછી ભગવદ્‌સેવા કરો. અને એક આ મોહોર મારી તરફથી ભેટ કરી મારી દંડવત્ કરજો. શ્રીઆચાર્યજીને સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ જાણજો. ત્યારે બન્ને નરહરિ જોશી જગન્નાથ જોશી ગુજરાતથી ચાલ્યા. પછી લાઠી પોલી હતી વાંસની તેમાં મોહોર ધરી લીધી. તે કેટલાક દિવસમાં અડેલ આવીને પૂછ્યું, કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ક્યાં છે? ત્યારે આપ તો પુરુષોત્તમપુરી શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શને પધાર્યા હતા. ત્યારે બન્ને ભાઇએ મળીને વિચાર કર્યો, કે ઘર જઇશું તો માતા લડશે કે તમે સેવક થયા વિના કેમ આવ્યા? તેથી આપણે તો પુરુષોત્તમપુરી ચાલીએ. તે બન્ને જણા ચાલ્યા. તે પુરુષોત્તમપુરી આવ્યા. ત્યારે પૂછ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી અહીં કઇ જગાએ બિરાજે છે? ત્યારે એક

वैष्णव मिलि गयो। सो बताई दियो। तब दोउ जने आयकें श्रीआचार्यजी के दरसन किये। तब श्रीआचार्यजी दोऊन सों पूछें, जो-तुम्हारी माता आछे हैं। तब दोउ जनें आश्चर्य पायकें चक्रत होइ रहें। जो-हम सों कबहू श्रीआचार्यजी को मिलाप भयो नाहीं। सो माता नें कही, साक्षात् भगवान श्रीआचार्यजी हैं सो ठीक है। पाछे दोऊ भाई कहे, महाराज! आपकी कृपा तें आछे हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीजगन्नाथजी के दरसन करि आये? तब दोऊ भाई नें कही, महाराज! अबहि तो हम दरसन नाहीं किये। सूधे आइकें आपुके पास चले आये हैं। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जाउ दरसन करि आवो। तब दोउ भाई आइ श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। सो तहां श्रीआचार्यजी के श्रीजगन्नाथराइजी के पास ठाड़े दरसन भये। तब दोऊ भाई कहें, हम तो घर दरसन करें, कदाचित दूसरो मारग होइगो ता मारग पधारे होंइगे। तब उहां ते दोउ भाई दौरे, श्रीआचार्यजी के पास आई देखें, तो श्रीआचार्यजी बिराजे हैं। तब चक्रत होइ के देखन लगे। तब श्रीआचार्यजी पूछे, जो-श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करि आये? तब दोउजनें कहें, हां महाराज! दोऊ जने दरसन करि आये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम्हारे मन को संदेह

વૈષ્ણવ મળી ગયો. તેણે બતાવી દીધું. ત્યારે બન્ને જણાએ આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બન્નેને પૂછ્યું, કે તમારી માતા સારી છે? ત્યારે બન્ને જણા આશ્ચર્ય પામીને ચકિત થઈ રહ્યા, કે અમારાથી કદીય શ્રીઆચાર્યજીનો મેળાપ થયો નથી. તેથી માતાએ કહ્યું સાક્ષાત્ ભગવાન શ્રીઆચાર્યજી છે તે ઠીક છે. પછી બન્ને ભાઇ કહે, મહારાજ! આપની કૃપાથી સારી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે શ્રીજગન્નાથજીનાં દર્શન કરી આવ્યા? ત્યારે બન્ને ભાઇએ કહ્યુ, મહારાજ! હજુ તો અમે દર્શન નથી કર્યાં. સીધા આવીને આપની પાસે ચાલ્યા આવ્યા છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જાવ, દર્શન કરી આવો. ત્યારે બન્ને ભાઇએ આવી શ્રીજગન્નાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીનાં શ્રીજગન્નાથરાયજીની પાસે ઉભેલા એવાં દર્શન થયાં. ત્યારે બન્ને ભાઇ કહે, અમે તો ઘર દર્શન કર્યાં. કદાચિત્ બીજો માર્ગ હશે તે માર્ગથી પધાર્યા હશે. ત્યારે ત્યાંથી બન્ને ભાઇ દોડીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને જુએ તો શ્રીઆચાર્યજી બિરાજ્યા છે. ત્યારે ચકિત થઇને જોવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પૂછ્યું, કે શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરી આવ્યા? ત્યારે બન્ને જણે કહ્યું, હાં મહારાજ! બન્ને જણ દર્શન

निवृत्त भयो ? तब दोऊन विनती करी, महाराज ! हम अज्ञानी हैं, जो-संदेह किये। आपु साक्षात् पुरुषोत्तम हो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, हमारी भेंट तिहारी माता नें एक मोहोर पठाई है सो करो।

भावप्रकाश—दोऊ भाई याके लिये मोहोर भेंट न करी हती, जो-ईश्वर होइंगे तो मांगि लेइंगे। तब दोउ भाई कों (और हू) विश्वास भयो।

तब मोहोर भेंट धरिकें विनती किये, महाराज ! हमकों कृपा करिकें सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी दोऊ जनेन सों कहे, जो-जाउ न्हाइ आवो। सो न्हाई आये। पाछें श्रीआचार्यजी ने दोऊ जनेन कों नाम निवेदन कराये। पाछें कितनेक दिन श्रीआचार्यजी के दरसन किये। पाछें बिदा होईकें दोऊ भाई चलें। सो खेराळू गाम में अपने घर आई माता सों सब प्रकार कहे। जो-हम अज्ञानी हैं। परि अपुनो माहात्म्य श्रीआचार्यजी हमकों दिखाइ हमारो संदेह निवृत्त किये। तब माताने कही मैं तुमसों पहले ही कही हती, जो-श्रीआचार्यजी पूरन पुरुषोत्तम हैं। यामें संदेह क्यों किये ?

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी दोऊ भाई कों माहात्म्य यातें दिखाये, जो-सरल सुभाई के मुग्ध वैष्णव हैं। सो कोई और मारग को माहात्म्य देखें तथा

करी आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमारा मननो संदेह निवृत्त थयो ? त्यारे बन्नेये विनती करी, महाराज ! अमे अज्ञानी छीए के संदेह कर्यो. आप साक्षात पुरुषोत्तम छो. त्यारे श्रीआचार्यजीए कह्युं, अमारी भेट तमारी माताए एक मोहोर मोकली छे ते करो.

भावप्रकाश—बन्ने भाईए महोर ए माटे भेट न करी हती के ईश्वर हशे तो मांगी लेशे. त्यारे बन्ने भाइने (वधारे) विश्वास थयो.

त्यारे मोहोर भेट धरीने विनंती करी, महाराज ! अमने कृपा करीने सेवक करीए. त्यारे श्रीआचार्यजी बन्ने जणाने कहे, के जाव, न्हाय आवो. त्यारे न्हाई आव्या. पछी श्रीआचार्यजीए बन्ने जणाने नाम-निवेदन कराव्युं. पछी केटलाक दिवस पर्यंत श्रीआचार्यजीनां दर्शन कर्यां. पछी विदाय थइने बन्ने भाइ चाल्या, ते खेराळु गाममा पोताना घरे आवी माताने बधो प्रकार कह्यो, के अमे अज्ञानी छीए. परंतु पोतानुं माहात्म्य श्रीआचार्यजीए अमने देखाडी अमारो संदेह निवृत्त कर्यो. त्यारे माताए कह्युं, में तमने पहेलां ज कह्युं हतुं के श्रीआचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम छे. एमां संदेह केम कर्यो ?

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजीए बन्ने भाइने माहात्म्य एथी देखाड्युं.

कछु चेतक काहू को देखें तो भटकें नाहीं। काहेतें, श्रीआचार्यजी को माहात्म्य हृदै में दृढ़ भयो। अब इनकों लौकिक वैदिक सब तुच्छ लागन लाग्यो। यह दृढ़ता के लिये इतनो माहात्म्य दिखाये।

पाछें माता की आज्ञा प्रमान सेवा करन लागें। सो माता ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नरहरि जोसी, जगन्नाथ जोसी के भाई बड़े, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—इनको लीला को अलौकिक स्वरूप उपर इनकी माता की वार्ता में कहि आये हैं।

वार्ता-प्रसंग १—**सो नरहरि जोसी एक समें श्रीजगन्नाथराय-जी के दरसन के मिस पुरुषोत्तमपुरी श्रीआचार्यजी के दरसन अर्थ चले। सो जब पटना तें आगें कों चले, सो मजलि जाइ उतरे। सो न्हाय कें सामग्री रोटी दारि किये। श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। ता समें एक रूख परतें एक बरस दसको बालक परम सुंदर नरहरि जोसी**

કે સરલ સ્વભાવના મુગ્ધ વૈષ્ણવો છે. તે કોઇ બીજા માર્ગનું માહાત્મ્ય જુએ તથા કંઇ ચેટક કોઇનું દેખે તો ભટકે નહી. કેમકે શ્રીઆચાર્યજીનું માહાત્મ્ય હૃદયમાં દૃઢ થયું. હવે એમને લૌકિક વૈદિક બધું તુચ્છ લાગ્યુ. આ દૃઢતાને માટે આટલું માહાત્મ્ય દેખાડયું.

પછી માતાની આજ્ઞા પ્રમાણે સેવા કરવા લાગ્યા. તેથી માતા એવી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેથી એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ ?

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, નરહરિ જોશી, જગન્નાથ જોશીના મોટા ભાઇ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એમનું લીલાનું અલૌકિક સ્વરૂપ ઉપર એમની મા ની વાર્તામાં કહી આવ્યા છીએ.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે નરહરિ જોશી એક સમયે શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શનના બહાને પુરુષોત્તમપુરી શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન માટે ચાલ્યા. પછી જ્યારે પટનાથી આગળ ચાલ્યા. ત્યારે મજલ જઇ ઉતર્યા. પછી ન્હાઇને સામગ્રી રોટલી દાળ કરી. શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. તે સમયે એક ઝાડ ઉપરથી એક વર્ષ દશનો બાળક પરમ-

के आगें आइ हाथ पसारि कें मांग्यो। तब नरहरि जोसी आश्चर्य पाये, जो–यह कौन हैं? पाछें भोग सराय कें चुपरी दोई रोटी ऊपर दारि धरि कें उह बालक के हाथ पर दिये। तब उह बालक उहि रूख पर चढ़ि गयो। सो अंतर्धान है गयो। सो फेरि नरहरि जोसी देखे तो रूख पर बालक नाहीं है। पाछें दूसरे दिन फेरि मजलि पर जाई उतरे। न्हाई कें रसोई किये भोग धरें। तब फेरि रूख पर तें उह बालक उतर कें नरहरि जोसी के पास आगें आइ हाथ पसारि कें मांग्यो। तब नरहरि जोसी मनमें बिचारि कियो, जो–कोऊ छलावा होइ तो देनो नाहीं। यह बिचारि कें नरहरि जोसी कछू न दियो। भोग सराई कें गाई को भाग काढ़ि आपु महाप्रसाद लेन बैठें। तब श्रीठाकुरजी बालक भेखसों वैसेही उह रूख पर चढ़ि अंतर्धान होई घरमें जगन्नाथ जोसी सों कहें, मैं नरहरि जोसी पास जाई हाथ पसारि कें काल्हि, आजु मांग्यो। सो काल्हि तो दोई रोटी और दारि दिये। आजु कछू नाहीं दिये। सो फिरि आयो। तब जगन्नाथ जोसी वह महिना वह तिथि लिखि राख्यो, जो–नरहरि जोसी जब आवेंगे तब पूछूंगो। सो नरहरि जोसी पुरुषोत्तमपुरी जाई तहां श्रीआचार्यजी के दरसन करे। पाछें श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन

सुंदर नरहरि जोशीना आगळ आवी हाथ लांबो करीने मागे. त्यारे नरहरि जोशी आश्चर्य पाम्या, के आ कोण छे? पछी (तेमणे) भोग सरावीने चोपडेली बे रोटली उपर दाळ धरीने ते बाळकना हाथमां दीधी. त्यारे ते बाळक तेज झाड उपर चढी गयो. ते अंतर्धान थई गयो. पछी फरी नरहरि जोशी जुए तो झाड उपर बाळक नथी. पछी बीजा दिवसे फरी मजल उपर जई उतर्या. न्हाईने रसोई करी भोग धर्या. त्यारे फरी झाड उपरथी ते बाळक उतरीने नरहरि जोशीनी पासे आगळ आवी हाथ लांबो करीने मांगे. त्यारे नरहरि जोशीए मनमां विचार कर्यो के कोइ छळीओ होय तो देवुं नहीं. एम विचारीने नरहरि जोशीए कंइ न आप्युं. भोग सरावीने गायनो भाग काढी पोते प्रसाद लेवा बेठा. त्यारे श्रीठाकुरजी बाळक वेषथी तेमज ते झाड उपर चढी अंतर्धान थइ घरमां जगन्नाथ जोशीने कहे, में नरहरि जोशी पासे जइ हाथ लांबो करीने काले, आजे मांग्युं. ते काल तो बे रोटली अने दाळ आपी. आज कंइ न आप्युं. ते पाछो आव्यो. त्यारे जगन्नाथ जोशीए ते महिनो ते तिथि लखी राखी, के नरहरि जोशी ज्यारे आवशे त्यारे पूछीश. पछी नरहरि जोशीए पुरु-षोत्तमपुरी जइ त्यां श्रीआचार्यजीनां दर्शन कर्यां. पछी जगन्नाथरायजीनां दर्शन

करि कछुक दिन वहां रहि उहां तें चले। सो कछुक दिनमें खेराळू अपने घर आये । तब जगन्नाथ जोसी नें श्रीआचार्यजी के सकल समाचार पूछे। सो नरहरि जोसी नें सब कहे, जो–मायावाद खंडन किये। और भली भांति सों बिराजत हैं। तब जगन्नाथ जोसी ने नरहरि जोसी सों पूछी, जो–फलाने दिन तुम्हारे पास कौन मांगन आयो सो तुम नाहीं दिये? तब नरहरि जोसी कहें, पटना के आगें चल्यो तब पहले दिन एक बरस दस को बालक आई मेरे आगें हाथ पसारि मांग्यो सो दोई रोटी दारि ऊपर धरिकें उह बालक के हाथ दियो। सो उह रूख पर चढ़ि गयो। सो फेरि न दीस्यो। पाछें दूसरी मजलि फेरि रूख पर तें उह बालक आयो। तब मैंने बिचार कियो, जो–उह छलावा होइ तो देनो उचित नाहीं। और जो भगवद् स्वरूप होई तो महाप्रसाद कैसे देउं? यह विचार कें मैं कछू न दियो। तब वह बालक रूख पर चढ़ि अंतर्धान ह्वै गयो। सो या प्रकार मनमें संदेह भयो तब दूसरे दिन नाहीं दियो। तब जगन्नाथ जोसी ने कही, तुम बुरी करी। वे तो श्रीठाकुरजी आपु आई हाथ पसार के मांगे। तुमने नाहीं दियो सो आछी नाहीं करी। और हम तुम प्रथम श्रीआचार्यजी के दरसन कों श्रीजगन्नाथजी गये तब माता

કરી થોડાક દિવસ ત્યાં રહી ત્યાંથી ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં ખેરાલુ પોતાના ઘરે આવ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ શ્રીઆચાર્યજીના સકલ સમાચાર પૂછયા. ત્યારે નરહરિ જોશીએ બધું કહ્યું, કે માયાવાદનું ખંડન કર્યું. અને સારી રીતે આપ બિરાજે છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ નરહરિ જોશીને પૂછયું, કે ફલાણા દિવસે તમારા પાસે કોણ માંગવા આવ્યું હતું? તે તમે ન આપ્યું? ત્યારે નરહરિ જોશી કહે, પટનાની આગળ ચાલ્યો ત્યારે પહેલા દિવસે એક વર્ષ દશના બાલકે આવી મારી આગળ હાથ લાંબો કરીને માગ્યું તે બે રોટલી દાળ ઉપર ધરીને તે બાલકના હાથમાં આપી. પછી તે ઝાડ ઉપર ચઢી ગયો. તે ફરી ન દેખાયો. પછી બીજી મજલે ફરી ઝાડ ઉપરથી તે બાલક આવ્યો. ત્યારે મેં વિચાર કર્યો, કે તે છળીઓ હોય તો દેવું ઉચિત નથી. અને જો ભગવદ સ્વરૂપ હોય તો મહાપ્રસાદ કેમ દઉં? એ વિચારીને મેં કંઇ ન દીધું. ત્યારે તે બાલક ઝાડ ઉપર ચઢી અંતર્ધાન થઇ ગયો. તે આ પ્રકારે મનમાં સંદેહ થયો. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, તમે ખરાબ કર્યું. તે તો શ્રીઠાકુરજીએ પોતે આવી હાથ લાંબો કરીને માગ્યું (હતું). તમોએ ન આપ્યું તે ઠીક ન કર્યું. અને અમે તમે પ્રથમ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને જગન્નાથરાયજી ગયા ત્યારે માતાએ

नें एक मोहोर भेंट दीनी सो हम छिपाइ राखें। यही संदेह भयो, जो-ईश्वर होइंगे तो श्रीआचार्यजी मांगि लेइंगे। सो मोहोर मांगि लीनी। और श्रीजगन्नाथरायजी के मंदिर में हू दरसन दीनो। और घरहू एक कालावच्छिन्न दरसन दे संदेह मिटाये। सो अपुने ऐसे पुरुषोत्तम श्रीआचार्यजी के सेवक हैं सो छलावा निकट आवे नाहीं। तुम छलावा को संदेह किये सो आछो न किये। श्रीआचार्यजी की कानि तें हमारे तुम्हारे पास श्रीठाकुरजी कृपा करिकें मांगि लेत हैं। तब नरहरि जोसो को संदेह गयो।

भावप्रकाश—यह वार्ता को अभिप्राय यह है, जो-जगन्नाथ जोसी पर सेवक होत ही कृपा भई। सो श्रीठाकुरजी में चित्त लागि गयो। और नरहरि जोसी के मनमें इतनी जोग्यता हती, जो-मैं बड़ो भाई हों, जगन्नाथ जोसी छोटो भाई है। यातें मैं बहोत समुझत हों। तातें नरहरि जोसी कों जदपि श्रीठाकुरजी ने अपनो स्वरूप जतायो, बालक होई रूख पर तें आई मांगे, तउ नरहरि जोसी श्रीठाकुरजी कों जाने नाहीं। तब श्रीठाकुरजी जगन्नाथ जोसी सों कहे। नरहरि जोसी सों न बोले। पाछें जब घर आये तब जगन्नाथ जोसी ने कही, तुम संदेह क्यों कियो ? बुरी करी, जो-श्रीठाकुरजी कों न दिये। यह सुनिकें नरहरि जोसी को मान मर्दन

એક મોહોર ભેટ આપી તે આપણે છુપાવી રાખી. એ જ સંદેહ થયો કે ઈશ્વર હશે તો માંગી લેશે. અને શ્રીજગન્નાથરાયજીના મંદિરમાં પણ દર્શન આપ્યાં. અને ઘરે પણ એકી સમયે દર્શન દઈ સંદેહ મટાડ્યો. તે આપણે એવા પુરુષોત્તમ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છીએ તે કોઇ છળીઓ નિકટ ન આવે. શ્રીઆચાર્યજીની કાનથી અમારી તમારી પાસેથી ઠાકુરજી કૃપા કરીને માંગી લે છે. ત્યારે નરહરિ જોશીનો સંદેહ ગયો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તાનો અભિપ્રાય એ છે, કે જગન્નાથ જોશી ઉપર સેવક થતાં જ કૃપા થઇ. તે શ્રીઠાકુરજીમાં ચિત્ત લાગી ગયું. અને નરહરિ જોશીના મનમાં એટલી યોગ્યતા હતી કે હું મોટો ભાઇ છું. જગન્નાથ જોશી નાનો ભાઈ છે. તેથી હું બહુ સમજું છું. તેથી નરહરિ જોશીને યદ્યપિ શ્રીઠાકુરજીએ પોતાનું સ્વરૂપ જણાવ્યું. બાલક થઇ ઝાડ ઉપરથી આવી માંગ્યા તોપણ નરહરિ જોશીએ શ્રીઠાકુરજીને જાણ્યા નહીં. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ જગન્નાથ જોશીને કહ્યું. નરહરિ જોશીથી ન બોલ્યા. પછી જ્યારે ઘર આવ્યા ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, તમે સંદેહ કેમ કર્યો ? ખોટું કર્યું, કે શ્રીઠાકુરજીને ન આપ્યું. એ સાંભળીને નરહરિ જોશીનું માન-મર્દન થઇ ગયું, કે મેં શ્રીઠાકુરજીને ન જાણ્યા. જગન્નાથ જોશી

ह्वै गयो, जो–मैं श्रीठाकुरजी कों न जान्यो। जगन्नाथ जोसी बड़े कृपापात्र हैं। या प्रकार अपन कों हीन मानि सेवा किये। ता दिन तें जैसे जगन्नाथ जोसी सों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते तैसे नरहरि जोसी कों हू सानुभावता जनावन लागे। तातें वैष्णव कों छोटो जानि अपनी योग्यता जाननी नाहीं। अपने तें सगरे वैष्णव कों बड़े जानने। तब श्रीठाकुरजी कृपा करें। यह सिद्धांत प्रगट किये।

वार्ता-प्रसंग २—**और एक समय नरहरि जोसी गुजरात में अलियाना गाम गये। तहां नरहरि जोसी के जजमान हते। उनको नाम महीधर हतो। और महीधर के एक बहनि फूलबाई हती। तिनसों नरहरि जोसी ने कह्यो, तुम श्रीगुसांईजी के सेवक होउ। वैष्णव होऊ तो हमारो तुम्हारो मिलाप रहे। तब महीधर और फूलबाई नें कही, जो–बहोत आछो, श्रीगुसांईजी कों पधरावो। हम सेवक होइंगे। तुम्हारी कृपा तें वैष्णव होइ तो जन्म सुफल होई। या प्रकार प्रसन्न भये।**

भावप्रकाश—काहेतें? दोउ दैवी जीव हैं, लीला में श्रीचंद्रावलीजी की सखी हैं। महीधर को नाम लीला में 'कुरंगाक्षी' है। और फूलबाई को नाम 'चपलानैनी' है। सो ये सुंदर बहोत। नेत्र इनके परम सुंदर हैं। सो इनके मनमें सुंद-

---

મોટા કૃપાપાત્ર છે. આ પ્રકારે પોતાને હીન માની સેવા કરી. તે દિવસથી જેમ જગન્નાથ જોશીને શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવતા તેમ નરહરિ જોશીને પણ સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તેથી વૈષ્ણવને નાનો જાણી પોતાની યોગ્યતા જાણવી નહીં. પોતાનાથી બધા વૈષ્ણવોને મોટા જાણવા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે. એ સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—વળી એક સમય નરહરિ જોશી ગુજરાતમાં 'અલિયાણા' ગામ ગયા. ત્યાં નરહરિ જોશીના યજમાન હતા. તેમનું નામ મહીધર હતું. અને મહીધરનાં એક બહેન ફૂલબાઇ હતાં. તેમને નરહરિ જોશીએ કહ્યું, તમે શ્રીગુસાંઇજીનાં સેવક થાવ. વૈષ્ણવ થાવ તો અમારો તમારો મેળાપ રહે. ત્યારે મહીધર અને ફૂલબાઇએ કહ્યું, કે બહુ સારું. શ્રીગુસાંઇજીને પધરાવો. અમે સેવક થઈશું. તમારી કૃપાથી વૈષ્ણવ થાય તો જન્મ સફળ થાય. આ પ્રકારે પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, બન્ને દૈવી જીવ છે. લીલામાં શ્રીચદ્રાવલીજીની સખી છે. મહીધરનું નામ લીલામાં 'કુરંગાક્ષી' છે અને ફૂલબાઇનું નામ 'ચપલાનૈની' છે. તે એ સુંદર બહુજ છે. નેત્ર એનાં પરમ સુંદર છે. તે એમના મનમાં

रता को गर्व भयो। तातें श्रीचंद्रावलीजी के शाप तें भूमि में प्रगटे। सो पूर्व लीला को संबंध है। तातें महीधर को ब्याह होत ही स्त्री मरि गई। माता-पिता हू मरि गये। एक महीधर और फूलबाई ये दोउ भेले रहते। पिता के द्रव्य बहोत हतो। सो वैष्णव होन की कही, तब दोउ भाई-बहनि बहोत प्रसन्न भये।

पाछें कहें, श्रीगुसांईजी कों वेगि पधरावो, तब नरहरि जोसी खेरालू में आई श्रीगुसांईजी कों विनती पत्र लिखे। तामें लिखें, जो-तुम कृपा करिकें गुजरात पधारो तो कितनेक जीवन को कल्यान होई। तब श्रीगुसांईजी पधारे। खेरालू में जगन्नाथ जोसी के घर उतरे। तब नरहरि जोसी अलियाना गाम में जाई महीधर और फूलबाई सों कहें, बधाई है। श्रीगुसांईजी खेरालू गाम में जगन्नाथ जोसी के घर पधारे हैं। तब फूलबाई ने महीधर सों कही, जो-अब कहा करिये? तब फूलबाई तें महीधर ने कही, जो-बहनि! तू चिंता मति करै। रुपैया मोहोर की खिचरी करि श्रीगुसांईजी कों न्यौछावरि करत अपने घर पधराऊंगो।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-इतनी न्योछावरि करूंगो तो भेंट की कहा संदेह करति हैं?

સુદરતાનો ગર્વ થયો. તેથી શ્રીચંદ્રાવલીજીના શાપથી ભૂમિમાં પ્રકટયાં. તે પૂર્વ-લીલાનો સંબંધ છે. તેથી મહીધરનું લગ્ન થતાં જ સ્ત્રી મરી ગઇ. માતાપિતા પણ મરી ગયાં. એક મહીધર અને ફૂલબાઇ એ બન્ને ભેગાં રહેતાં. પિતાને દ્રવ્ય ઘણું હતું. તે વૈષ્ણવ થવાનું કહ્યું, ત્યારે બન્ને ભાઇ-બ્હેન બહુ પ્રસન્ન થયાં.

પછી કહે, શ્રીગુસાંઇજીને જલ્દી પધરાવો. ત્યારે નરહરિ જોશીએ ખેરાળુમાં આવી શ્રીગુસાંઇજીને વિનતીપત્ર લખ્યો. તેમાં લખ્યું કે, આપ કૃપા કરીને ગુજરાત પધારો તો કેટલાક જીવોનું કલ્યાણ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પધાર્યા. ખેરાળુમાં જગન્નાથ જોશીના ઘરે ઉતર્યા. ત્યારે નરહરિ જોશી અલીયાણા ગામમાં જઇ મહીધર અને ફૂલબાઇને કહે, વધાઇ છે. શ્રીગુસાંઇજી ખેરાળુ ગામમાં જગન્નાથ જોશીના ઘરે પધાર્યા છે. ત્યારે ફૂલબાઇએ મહીધરને કહ્યું, કે હવે શું કરિએ? ત્યારે ફૂલબાઇને મહીધરે કહ્યું, કે બ્હેન! તું ચિંતા ન કર. રૂપૈયા-મહોરની ખીચડી કરી શ્રીગુસાંઇજીને ન્યોછાવર કરતાં આપણા ઘરે પધરાવીશ.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે એટલી ન્યોછાવર કરીશ તો ભેટનો શો સંદેહ કરે છે?

यह सुनिकें फूलबाई नरहरि जोसी मन में बहोत प्रसन्न भये, जो–महीधर की प्रीति तो आछी है। पाछें खेरालु में आई नरहरि जोसी, महीधर, फूलबाई दंडौत करि बिनती करिकें अलियाना गाम में पधराये। तब श्रीगुसांईजी पधारे। सो महीधर और फूलबाई रुपैया मोहौर की खिचरी करि श्रीगुसांईजी के ऊपर न्यौछावर करत लूटावत अनेक बाजिंत्र गानादिक करत घर में पधराये। पाछें महीधर और फूलबाई कों न्हवाई कें नाम निवेदन करवाये। इनके घर में प्रथम श्रीठाकुरजी हते, सो मर्यादा रीति सों श्रीलालजी की पूजा करतें। सा श्रीठाकुरजी कों श्रीगुसांईजी पंचामृत स्नान कराई पाट बैठारे। महीधर और फूलबाई के माथे पधराये। महीधर और फूलबाई श्रीगुसांईजी कों बहोत भेट करिकें प्रीति सों पांच दिन घर में राखे। पुष्टिमारग की रीति सब सीखें। पाछें श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे। तब महीधर फूलबाई नें नरहरि जोसी सों बहोत बिनती किये, जो–तुम्हारी कृपातें हम वैष्णव भये। अब हमारो नयो जन्म भयो। श्रीगुसांईजी कृपा किये।

भावप्रकाश—सों वैष्णव को संग ऐसो है। "आर्द्रार्द्रीं करणत्वं" भींज्यो वस्त्र सूके वस्त्र कों लगें, तो सूको हू भींज्यो होई। तेसे वैष्णव के संग तें

એ સાંભળીને ફૂલબાઇ નરહરિ જોશી મનમા બહુ પ્રસન્ન થયાં, કે મહીધરની પ્રીતિ તો સારી છે. પછી ખેરાળુમાં આવી નરહરિ જોશી, મહીધર–ફૂલબાઇ દંડવત્ કરી વિનંતી કરીને અલીયાણા ગામમાં પધરાવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પધાર્યા. ત્યારે મહીધર અને ફૂલબાઇ રૂપૈયા મહોરની ખીચડી કરી શ્રીગુસાંઇજીના ઉપર ન્યોછાવર કરતાં કરતાં લૂટાવતા અનેક વાજીંત્ર ગાનાદિક કરતાં ઘરમાં પધરાવ્યા. પછી મહીધર અને ફૂલબાઇને ન્હવડાવીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. એમના ઘરમાં પ્રથમ શ્રીઠાકુરજી હતા તે મર્યાદા રીતિથી શ્રીલાલજીની પૂજા કરતા. તે શ્રીઠાકુરજીને શ્રીગુસાંઇજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડ્યા. મહીધર અને ફૂલબાઇને માથે પધરાવ્યા. મહીધર અને ફૂલબાઇએ શ્રીગુસાંઇજીને બહુ ભેટ કરીને પ્રીતિથી પાંચ દિન ઘરમાં રાખ્યા. પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ બધી શિખ્યાં. પછી શ્રીગુસાંઇજી દ્વારિકા પધાર્યા. ત્યારે મહીધર ફૂલબાઇએ નરહરિ જોશીને બહુ વિનંતી કરી, કે તમારી કૃપાથી અમે વૈષ્ણવ થયાં. હવે અમારો નવો જન્મ થયો. શ્રીગુસાંઇજીએ કૃપા કરી.

ભાવપ્રકાશ—તે વૈષ્ણવનો સંગ એવો છે, 'આર્દ્રાર્દ્રીં કરણત્વં' ભીંજ્યો વસ્ત્ર સૂકા વસ્ત્રને લાગે તો સૂકો પણ ભીંજ્યો થાય. તેવી રીતે વૈષ્ણવના સંગથી

वैष्णव होई। जैसें गिरिराज के संग तें पुलिंदी कों भगवद्भाव उत्पन्न भयो। तातें सर्वोपरि तादृशी वैष्णव को संग है।

पाछें नरहरि जोसी, भाई-बहनि सों विदा होइ अपने गाम खेरालु में आये। तब जगन्नाथ जोसी सों नरहरि जोसी ने कही, जो-महीधर और फूलबाई की प्रीति न कही जाई, जो-भले वैष्णव भये। तब जगन्नाथ जोसी कहे, श्रीगुसांईजी जापर कृपा करें सो भगवदीय होंइ यामें कहा कहनो? पाछें सेवा करन लागें।

वार्ता-प्रसंग ३—ता पाछें केतेक दिन में अलियाना गाम में आगि लागी। प्रातःकाल समें नरहरि जोसी खेरालु गाम में बाहिर जाई देह-कृत्य तलाव पर करि, नित्य-कर्म करि, फूल की डलिया में फूल-तुलसी धरि हाथ में लिये घर आवत हते। सो ता समें नरहरि जोसी नें जानी, जो-अलियाना गाम में आगि बहोत लगी है। सो मन में विचारे, जो-अबहिं महीधर, फूलबाई नये वैष्णव भये हैं। सो इनको घर जरेगो तो कहेंगे, जो-हम वैष्णव भये तातें उपद्रव भयो। ऐसो मनमें आवेगो तो इनको धर्म जात रहेगो। बिगार होइगो। यह विचारि आछी धरती देखि तुलसी की डलियां भूमि में धरि

વૈષ્ણવ થાય. જેમ શ્રીગિરિરાજના સંગથી પુલંદીઓને ભગવદ્ભાવ ઉત્પન્ન થયો. તેથી તાદૃશી વૈષ્ણવનો સંગ સર્વોપરિ છે.

પછી નરહરિ જોશી ભાઇ-બહેનથી વિદાય થઈ પોતાના ગામ ખેરાળુમાં આવ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશી આગળ નરહરિ જોશીએ કહ્યું, કે મહીધર અને ફૂલબાઇની પ્રીતિ કહી ન જાય. (એવી) છે, એ સારા વૈષ્ણવ થયા. ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, શ્રીગુસાંઇજી જેના ઉપર કૃપા કરે એ ભગવદીય હોય એમાં શું કહેવું? પછી સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—તે પછી કેટલાક દિવસમાં અલિયાણા ગામમાં આગ લાગી. પ્રાતઃકાલ સમયે નરહરિ જોશી ખેરાળુ ગામમાં બહાર જઈ દેહ-કૃત્ય તલાવ ઉપર કરી નિત્ય-કર્મ કરી ફૂલના કંડિયામાં ફૂલ-તુલસી ધરી, હાથમાં લઈ ઘર આવતા હતા. તે સમયે નરહરિ જોશીએ જાણ્યું, કે અલીયાણા ગામમાં આગ બહુ લાગી છે. તે મનમાં વિચારે, કે મહીધર-ફૂલબાઈ હમણાં જ નવાં વૈષ્ણવ થયાં છે. તેથી એમનું ઘર બળશે તો કહેશે કે અમે વૈષ્ણવ થયાં તેથી ઉપદ્રવ થયો. એવું મનમાં આવશે તો એમનો ધર્મ જતો રહેશે. બગાડ થશે. એમ વિચારી સારી જમીન જોઈ તુલસીની કંડીયા ભૂમિમાં મૂકી ઝારીથી જલ લઈ આસપાસ કુંડાળી કરી પાણી નાખ્યા કર્યું.

झारी सों जल ले आसपास कुंडाली करि पानि डार्‍यो किये। जब अलियाना गाम में आगि बूझि जानें, तब महीधर को घर या प्रकार बचाई, पाछें नरहरि जोसी फूल लें, तुलसी लें अपने घर आये। पाछें कितनेक दिन पाछें अलियाना गाम में महीधर के घर नरहरि जोसी गये। तब महीधर और फूलबाई ने नरहरि जोसी सों कह्यो, जो-इहां अग्नि को उपद्रव बहोत भयो हतो। सो श्रीगुसांईजी की कृपा तें हमारो घर बच्यो। वैष्णव भये तातें बचे, नाहीं तो कहा जानिये कहा होतो? तब नरहरि जोसी कहें, श्रीगुसांईजी परम दयाल हैं। वैष्णव की सदा रक्षा छाया करत ही आये हैं। तातें वैष्णव को सदा कल्यान ही हैं। या प्रकार भाई–बहनि को समाधान करिकें पाछें विदा होई खेरालु अपने घर आये। तब दोऊ भाई घर में सेवा सों पहोंचिके बैठें। तब नरहरि जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो–एक दिन अलियाना गाम में आगि लागी। तब मैं प्रातःकाल तलाब पर तें नित्य–कर्म करि आवत हुतो। सो फूल तुलसी की डलियां मेरे हाथ में हती। सो मैं अलियाना गाममें आगि लागी जानि तुलसी की डलिया भूमि में धरि, झारी सों जल लें तुलसी के आसपास पानि को कुंडाला करि तासों महीधर फूलबाई को घर बचायो। तब नरहरि

જ્યારે અલિયાણા ગામમાં આગ બુઝી એમ જાણ્યું, ત્યારે મહીધરનું ઘર એ પ્રકારે બચાવી પછી નરહરિ જોશી ફૂલ લઇ, તુલસી લઇ, પોતાના ઘરે આવ્યા. પછી કેટલાક દિવસ પછી અલીયાણા ગામમાં મહીધરના ઘરે નરહરિ જોશી ગયા. ત્યારે મહીધર અને ફૂલબાઇએ નરહરિ જોશીને કહ્યું, કે અહીં અગ્નિનો ઉપદ્રવ ઘણો થયો હતો. તે શ્રીગુસાંઇજીની કૃપાથી અમારૂં ઘર બચ્યું. નહીં તો શું જાણીએ શું થતું? ત્યારે નરહરિ જોશી કહે, શ્રીગુસાંઇજી પરમદયાલ છે. વૈષ્ણવની સદા રક્ષા છાયા કરતા જ આવ્યા છે. તેથી વૈષ્ણવનું સદા કલ્યાણ જ છે. આ પ્રકારે ભાઇ–બ્હેનનું સમાધાન કરીને પછી વિદાય થઇ ખેરાળુ પોતાના ઘરે આવ્યા. ત્યારે બન્ને ભાઇ ઘરમાં સેવાથી પહોંચીને બેઠા. ત્યારે નરહરિ જોશીએ જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, કે એક દિવસ અલિયાણા ગામમાં આગ લાગી. ત્યારે હું પ્રાતઃકાલ તલાવ ઉપરથી નિત્યકર્મ કરીને આવતો હતો, તે ફૂલ તુલસીની કરંડી મારા હાથમાં હતી. તે મેં અલિયાણા ગામમાં આગ લાગી જાણી ત્યારે તુલસીની કરંડી ભૂમિમાં ધરી ઝારીથી જલ લઇ તુલસીની આસપાસ પાણીનું કુંડાળું કરી તેનાથી મહીધર–ફૂલબાઇનું ઘર બચાવ્યું. ત્યારે નરહરિ જોશીને જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, આટલો હઠ કરીને શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરાવ્યો

जोसी सों जगन्नाथ जोसी ने कही, इतनो हठ करिकें श्रीठाकुरजी कों श्रम करायो सो उचित नाहीं। यह अपुने मारग की रीति नाहीं है। और आपुन कोन हैं, जो-बचावें ? श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्य युक्त हैं। सो सब लीला करत हैं। तब नरहरि जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कही, मैं श्रीठाकुरजी सों हठ नाहीं कियो। मेरे मन में यह आई, जो-महीधर फुलबाई अबहि नये वैष्णव भये हैं, जो-इनके घर में अग्नि को उपद्रव होइ तो कहूं इनके मन में यह आवे, जो-हम अबहि वैष्णव भये हैं। अबहि आगि लागी। सो एतन्मार्ग में तें प्रीति घटें। सो इनकों भगवद् प्राप्ति में अंतराइ होई। अब इनकों दृढ़ विश्वास श्रीगुसांईजी में और पुष्टिमारग में भयो, जो-वैष्णव भये तो बचे। यह दृढ़ता के लिये मैं इतनो कियो। और मोकों कछू प्रयोजन नाहीं। तब दोऊ भाई हसि कें चुप ह्वै रहे। सो प्रभु बड़े कौतुकी हैं। इनकी इच्छा तें सब होत हैं। सो ये नरहरि जोसी, जगन्नाथ जोसी और इनकी माता ये तीन्यो बड़े भगवदीय हैं। चाहे सो करें। इनके संग तें महीधर और फुलबाई कों श्रीठाकुरजी में दृढ़ विश्वास भयो। प्रीति सों सेवा करन लागे। पाछें कछुक दिन में श्रीठाकुरजी महीधर फुलबाई सों सानुभावता जनावन लागे। तातें इनकी वार्ता कहां

તે ઉચિત નહીં. એ આપણા માર્ગની રીતિ નથી. અને આપણે કોણ જે બચાવીએ ? શ્રીઠાકુરજી સર્વ સામર્થ્યયુક્ત છે. તે બધી લીલા કરે છે. ત્યારે નરહરિ જોશીએ જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, મેં શ્રીઠાકુરજીથી હઠ નથી કર્યો. મારા મનમાં એ આવ્યું કે મહીધર ફૂલબાઇ હમણાં જ વૈષ્ણવ થયાં છે. તે હમણાં જ આગ લાગી તેથી આ માર્ગમાંથી પ્રીતિ ઘટે તો એમને ભગવદ્ પ્રાપ્તિમાં અંતરાય થાય. હવે એમનો દૃઢ વિશ્વાસ શ્રીગુસાંઇજીમાં અને પુષ્ટિમાર્ગમાં થયો. કેમ જે વૈષ્ણવ થયા તો બચ્યાં. આ દૃઢતાને માટે મેં આટલું કર્યું. અને મને કંઇ પ્રયોજન નથી. ત્યારે બન્ને ભાઇ હસીને ચૂપ થઇ રહ્યા. કેમ જે પ્રભુ મહા કૌતુકી છે. એમની ઇચ્છાથી બધું થાય છે. એ નરહરિ જોશી, જગન્નાથ જોશી એમની માતા એ ત્રણે ભગવદીય હતાં. ચાહે તે કરે. એમના સંગથી મહીધર અને ફૂલબાઇને શ્રીઠાકુરજીમાં દૃઢ વિશ્વાસ થયો. પ્રીતિથી સેવા કરવા લાગ્યા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી મહીધર-ફૂલબાઇને સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? નરહરિ જોશી, જગન્નાથ જોશી અને એમની માતા મળીને વાર્તા એક જાણવી. ॥ વાર્તા ૩૧ ॥

* * *

लों कहिये। नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी और इनकी माता मिलि के वार्ता एक जाननी। ॥ वार्ता ३१ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, राना व्यास सांचोरा ब्राह्मन गोधरा के बासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये राना व्यास लीला में इंदुलेखा श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं। सो वाकी सखी "नागवेलिका" इनको नाम हैं। सो बरस बारह के ये राना व्यास भये। तब एक बैरागी को इनकों संग भयो। सो बैरागी चारों धाम फिरि आयो हतो। सो बद्रीकाश्रम की बात, श्रीजगन्नाथरायजी की बात, रंगनाथजी की बात, श्रीरनछोड़जी की बात, माहात्म्य कह्यो। सो राना व्यास अर्द्ध-रात्रि कों उठि चले। सो पहले बद्रीकाश्रम गये। तहां बहोत मारग में दुःख पाये। सो बद्रीनाथजी के दरसन किये। परंतु मन में प्रसन्न न भये, जो–इहां सीत बहोत हैं। और मारग ऐसो है, जो–प्रान जाई। पाछें श्रीजगन्नाथरायजी कों गये। तब दरसन करिकें कछुक प्रसन्न भये। पाछे रोग सों मांदे बहोत परे। सो एक महिना में आछे भये। तब मन में कहें, फेरि मांदो परूंगो तो मरूंगो। तातें उहां तें चलें। सो दक्षिण में आई श्रीरंगनाथजी के दरसन किये। तब मन में कहें, इनको दरसन कैसे करों? चरन के करों तो मुख के न होंइ। मुख के करों तो चरन के न होंइ?

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રાણા વ્યાસ સાંચોરા બ્રાહ્મણ ગોધરાના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ રાણા વ્યાસ લીલામાં ઇન્દુલેખા શ્રીસ્વામિનીજીની સખી છે. તેની સખી 'નાગવેલીકા' એમનું નામ છે વર્ષ બારના એ રાણા વ્યાસ થયા. ત્યારે એક વૈરાગીનો એમને સગ થયો. તે વૈરાગી ચારે ધામ ફરી આવ્યો હતો. તે બદ્રીકાશ્રમની વાત, શ્રીજગન્નાથરાયજીની વાત, શ્રીરંગનાથજીની વાત, શ્રીરણછોડજીની વાત–મહાત્મ્ય કહ્યું. પછી રાણા વ્યાસ અડધી રાત્રે ઉઠીને ચાલ્યા. તે પહેલાં બદ્રીકાશ્રમ ગયા. ત્યાં માર્ગમાં બહુ દુઃખ પામ્યા. ત્યાં બદ્રીકાનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. પરંતુ મનમાં પ્રસન્ન ન થયા. કેમ જે અહી ઠંડ ઘણી છે. અને માર્ગ એવો છે, કે પ્રાણ જાય. પછી શ્રીજગન્નાથરાયજી ગયા. ત્યાં દર્શન કરીને કઇક પ્રસન્ન થયા. પછી રોગથી માંદા ઘણા પડયા. તે એક મહિનામાં સારા થયા. ત્યારે મનમાં કહે, ફરી માંદો પડીશ તો મરીશ. તેથી ત્યાંથી ચાલ્યા. તે દક્ષિણમાં આવી રંગનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે મનમાં કહે, એમનું દર્શન કેવી રીતે કરૂં ? ચરણનાં કરૂં તો

ए वड़े वहोत हैं। तातें अब द्वारिका चलूं। सो द्वारिका आये। सो श्रीरनछोड़जी के दरसन किये। सो चरन छुइवे कों कहें। तब उहां पंड्या नें कही, इतनो द्रव्य खरचो तब चरन छूवों। तब राना व्यास मन में विचारे, जो-इहां ब्रह्मचारी द्रव्य के लिये चरन छूवन देत हैं। और ठाकुर को द्रव्य ले जाई। तातें इहां हू रहनो उचित नाहीं। काहेतें? जहां चित्त में दोष उपजे उहाँ के रहें कल्यान न होई। बिगार होई। यह विचारि द्वारिका सों चले। सो गुजरात में गोधरा अपने घर आये।

सो माता-पिता वहोत वृद्ध भये हते। सो आठ वरस में राना व्यास आये। तव माता-पिता नें कही, बेटा! तू कहां निकसि गयो? घर में रहेतो तो तेरो व्याह करते। अजहू घर में रहो। अपनी ज्ञाति की रीति चलो तो व्याह होई। तव राना व्यास ने कही, मैं तो सदा ब्रह्मचारी रहुंगो। व्याह करिकें कहा नर्क में परों? मैं तो इन्द्रीजीत हों। तब माता-पिता चुप होइ रहे। पाछें माता-पिता की देह छूटी। सो संस्कार करि मन में प्रसन्न भये, जो-बंधन कट्यो। अब मैं चाहुंगो सो करूंगो दस पाँच हजार रुपैया हू हैं। या प्रकार इन्द्रीजीत को अहंकार हतो। द्रव्य को अहंकार भयो। सो मारे गर्व के काहू सों बोले नाहीं, वड़े गाम में सिद्ध कहावतें।

મુખનાં ન થાય. મુખનાં કરૂં તો ચરણનાં ન થાય! એ મોટા બહુ છે. તેથી હવે દ્વારકા ચાલુ. તે દ્વારકા આવ્યા. ત્યાં શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કર્યાં. તે ચરણ સ્પર્શનું કહ્યું. ત્યારે ત્યાંના પંડ્યાએ કહ્યું, આટલું દ્રવ્ય ખર્ચો ત્યારે ચરણ સ્પર્શ કરો. ત્યારે રાણા વ્યાસે મનમાં વિચાર્યું, કે અહીં બ્રહ્મચારી દ્રવ્યને માટે ચરણ સ્પર્શ કરવા દે છે. અને ઠાકુરજીનું દ્રવ્ય લઇ જાય છે તેથી અહી પણ રહેવુ ઉચિત નહીં. કેમકે જ્યાં ચિત્તમાં દોષ ઉપજે ત્યાંના રહેવાથી કલ્યાણ ન થાય, બગાડ થાય. એમ વિચારી દ્વારિકાથી ચાલ્યા. તે ગુજરાતમાં ગોધરા પોતાના ઘરે આવ્યા.

ત્યારે માતા-પિતા બહુ વૃદ્ધ થયા હતા. તે આઠ વર્ષે રાણા વ્યાસ આવ્યા. ત્યારે માતા-પિતાએ કહ્યુ, બેટા! તૂ ક્યાં નિકળી ગયો હતો? ઘરમાં રહેતો તો તારૂં લગ્ન કરતાં. હજુ પણ ઘરમાં રહો. આપણી જ્ઞાતિની રીતિએ ચાલો તો લગ્ન થાય. ત્યારે રાણા વ્યાસે કહ્યું, હુ તો સદા બ્રહ્મચારી રહીશ. લગ્ન કરી શુ નર્કમાં પડું? હું તો ઇન્દ્રિયજીત છું. ત્યારે માતા-પિતા ચુપ થઇ રહ્યા. પછી માતા-પિતાની દેહ છુટી ત્યારે સંસ્કાર કરી મનમાં પ્રસન્ન થયા, કે બંધન છુટયું. હવે હું ચાહીશ તે કરીશ. દશ-પાંચ હજાર રૂપીઆ પણ છે. આ પ્રકારે ઇન્દ્રીજીતનો અહંકાર હતો. દ્રવ્યનો અહંકાર થયો, તે ગર્વના મારે કોઇથી બોલે નહીં.

और जगन्नाथ जोसी हू राना व्यास पास नाम पायो हतो। पाछें माता के कहें सों जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के सेवक भये। पाछें राना व्यास पढ़े हू कछुक हते। सो मन में आई, जो–या गाम में तो सगरे मूरख हैं। कासी में चलि काहू सों वाद करों। यह अहंकार करि राना व्यास घरतें कछुक द्रव्य लें कासी में बड़े–बड़े पंडित जहां बाद करते तहां गये। तहां हारे सो लाज लागी। तब मन में विचारयो, जो–अर्द्ध रात्रि समें गंगाजी में डूबि मरूंगो। सो संझा समें भूखे ही गंगाजी के तीर हनुमान घाट है तहां जाइ बैठें, कहे, जो–रात्रि होई कोई जाने नाहीं तब गंगाजी में डूबों। तहां श्रीआचार्यजी पधारे। सो एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सों पूछी, जो–महाराज! गंगाजी में डूब मरें ताकों कछू फल गंगाजी देई? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–अहंकार करिकें काहूसों लरिकें डूबे को फल नाहीं। सर्प की जोनि पावें। आत्महत्या लागें। महादुष्ट होंइ, जो–ऐसे मरें। रोग सों ग्रसित होई। दैन्यता पूर्वक संन्यास लेई डूबे तो कछू फल मिलें, जो–मरति बेर ठाकुर में मन रहे तो। नाहीं तो दुर्गति होई। यह बात सुनतहि राना व्यास ने जानी, जो–ये महापुरुष हैं। यों जानि आइकें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो–महाराज! भली भई,

---

ગામમાં મોટા સિદ્ધ કહેવડાવતા. જગન્નાથ જોશીએ પણ રાણા વ્યાસ પાસે નામ પામ્યુ હતું. પછી માતાના કહેવાથી જગન્નાથ જોશી શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયા. પછી રાણા વ્યાસ થોડું ભણ્યા પણ હતા. તે મનમાં આવ્યુ કે આ ગામમાં તો બધા મૂરખ છે. કાશીમાં જઇ કોઇથી વાદ કરૂં. તે અહંકાર કરી રાણા વ્યાસ ઘરથી થોડું દ્રવ્ય લઇ કાશીમાં મોટા મોટા પંડિતો જ્યાં વાદ કરતા ત્યાં ગયા. ત્યાં હાર્યા. ત્યારે લાજ લાગી. ત્યારે મનમાં વિચાર્યું કે અડધી રાત્રિએ ગંગાજીમાં ડુબી મરીશ. તે સંઝાસમે ભૂખ્યા જ ગંગાજીના કિનારે હનુમાનઘાટ છે ત્યાં જઇ બેઠા. કહે, જે રાત્રિ થાય, કોઇ જાણે નહી ત્યારે ગંગાજીમાં બૂડું. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને પૂછ્યું, કે મહારાજ! ગંગાજીમાં ડૂબી મરે તેનુ કંઈ ફલ ગંગાજી આપે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે અહંકાર કરીને, કોઇનાથી લડીને ડુબે તો ફલ નહીં. સર્પ યોની પામે. આત્મહત્યા લાગે. મહાદુષ્ટ થાય. જો એમ મરે. રોગથી ગ્રસિત થાય, દીનતાપૂર્વક સન્યાસ લઈ ડૂબે તો કંઇ ફલ મળે. જો મરતી સમયે ઠાકુરમાં મન રહે તો. નહી તો દુર્ગતી થાય. એ વાત સાંભળતાં જ રાણા વ્યાસે જાણ્યું, કે એ મહાપુરુષ છે. એમ જાણીને શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! ભલી થઇ જે આ વૈષ્ણવે વાત પૂછી.

जो–यह वैष्णव नें बात पूछी । मैं गंगाजी में डूबन अर्थ भूखौ सवेरेसे बैठो हूं । सो अर्द्ध रात्रि जाई तब डूबूं । परंतु अब मेरो उद्धार होइ सो प्रकार बतावो । आपुकी सरनि हौं । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमहू तो नाम देत हो ? स्वामि कहावत हो, अपने कों बहोत योग्य मानत हो । सो सेवक होन की बात क्यों कहत हो ? तब राना व्यास बिनती करी, महाराज ! अहंकार तो बहोत हतो परंतु कासी में जहां जहां पंडितन सों वाद कियो तहां तहां हारयो । तातें गंगाजी में डूबन कों ठाड़ो हों । सो मेरे भागि में कछू आछो होनहार है, जो–या समय आपुको दरसन भयो । सो मैं बहोत दीन हौं, अनाथ हों । सो आपु मो पर कृपा करो । तब श्री-आचार्यजी राना व्यास सों कहें, जो, जा, गंगाजी में न्हाइ आव । तब राना व्यास गंगाजी में न्हाइ आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाइ ब्रह्मसंबंध कराये । और आज्ञा दिये, अब जहां पंडितन सों हारे हो तहां तहां जाईकें सगरे वाद करिकें जीति आवोगे । पाछें रात्रि कों राना व्यास रसोइ करि भोग धरिकें महाप्रसाद लिये । मन में आनंद भयो । पाछें प्रातःकाल न्हाइ के श्रीआचार्यजी कों दंडोत कियो । तब श्रीआचार्यजी चतुःश्लोकी सिखाय कहें, जो–जा, पंडितन सों वाद करि आव । सो सगरे पंडितन कों एक ही वचन में जीते । श्रीआचार्यजी के प्रमेय बल प्रताप

હું ગંગાજીમાં ડૂબવા માટે ભૂખ્યો સવારથી બેઠો છું. જે અર્ધરાત્રિ જાય ત્યારે ડુબું. પરંતુ હવે મારો ઉદ્ધાર હોય તે પ્રકાર બતાવો. આપની શરણ છું. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી કહે, તમે પણ નામ આપો છો. સ્વામિ કહેવાવ છો–પોતાને બહુ યોગ્ય માનો છો. પછી સેવક થવાની વાત કેમ કરો છો ? ત્યારે રાણા વ્યાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! અહંકાર તો ઘણો હતો પરંતુ કાશીમાં જ્યાં જ્યાં પંડિતોથી વાદ કર્યો ત્યાં ત્યાં હાર્યો. ત્યારે ગંગાજીમાં ડૂબવાને ઉભો છુ. મારા ભાગ્યમાં કઇ સારૂં થવાનું છે તે આ સમયે આપનું દર્શન થયું. હું બહુ દીન છું, અનાથ છું તેથી આપ મારા ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રાણા વ્યાસને કહ્યું, કે જા, તૂ ગગાજીમાં ન્હાઇ આવ. ત્યારે રાણા વ્યાસ ગંગાજીમાં ન્હાઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. અને આજ્ઞા આપી કે હવે જ્યાં–જ્યાં પંડિતોથી હાર્યો છે ત્યાં–ત્યાં જઇને બધે વાદ કરીને જીતી આવીશ. પછી રાત્રિએ રાણાવ્યાસે રસોઇ કરી ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લીધો. મનમાં આનંદ થયો. પછી પ્રાતઃકાલ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'ચતુશ્લોકી' શિખાવી. પછી કહ્યું, કે જા, પડિતોથી વાદ કરી આવ. ત્યારે

तें। पाछें तीसरे पहर आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती कियो। तब श्रीआचार्यजी कहें, पंडित तो जीते परंतु अहंकार मति करियो। अहंकार जा वस्तु को करघो सोई वस्तु को नास होइगो। तब राना व्यास ने बिनती करी, महाराज! अब अहंकार न करूंगो, अहंकार करि बहोत दुःख पायो। अब ऐसी कृपा करो, जो–कछू भगवद् अनुग्रह होई। मेरो जनम ऐसोई बीत्यो भटकतें। तब श्रीआचार्यजी कहें, कहूँ तें भगवद् स्वरूप ले आवो। तब राना व्यास बजार में जाई एक लालजी को स्वरूप न्यौछावर दे कें ले आये। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराइ राना व्यास के माथें पधराई कहें, अब तू बहोत भटक्यो। परंतु अब घर में जाई मन लगाई कें भगवद् सेवा करो। तब राना व्यास श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विदा होई अपने घर आये। पाछें सेवा करन लागें।

वार्ता–प्रसंग १—**सो प्रथम जगन्नाथ जोसी राना व्यास के पास नाम पाये हते। सो जब जगन्नाथ जोसी सुनें, जो–राना व्यास श्रीआचार्यजी के सेवक ह्वै आये, तब जगन्नाथ जोसी गोधरा आये। राना व्यास सों मिले। सो दोऊ जनें बहोत प्रसन्न भये। पाछें राना व्यास के पास जगन्नाथ जोसी बहोत रहते।**

સઘળા પંડિતોને એક જ વચનમાં જીત્યા. શ્રીઆચાર્યજીના પ્રમેય–બલ પ્રતાપથી પછી ત્રીજા પ્રહરે આવીને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, પંડિત તો જીત્યા પરંતુ અહંકાર ન કરીશ. અહંકાર જે વસ્તુનો કર્યો તેજ વસ્તુનો નાશ થશે. ત્યારે રાણા વ્યાસે વિનંતી કરી, જે મહારાજ! હવે અહંકાર નહી કરૂં. અહંકાર કરી બહુ દુઃખ પામ્યો. હવે એવી કૃપા કરો કે કંઇ ભગવદ્ અનુગ્રહ થાય. મારો જન્મ એમ જ ભટકતાં વીત્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કંઈથી ભગવત્સ્વરૂપ લઇ આવો. ત્યારે રાણાવ્યાસે બજારમાં આવી એક લાલજીનું સ્વરૂપ ન્યોછાવર દઇને લઈ આવ્યા, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી રાણા વ્યાસને માથે પધરાવી કહ્યું, હવે તૂ ઘણું ભટક્યો. પરંતુ હવે ઘરમાં જઇ મન લગાવીને ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે રાણા વ્યાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિદાય થઈ પોતાના ઘરે આવ્યા. પછી સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—પહેલાં જગન્નાથ જોશી રાણા વ્યાસ પાસે નામ પામ્યા હતા. પછી જ્યારે જગન્નાથ જોશીએ સાંભળ્યું, કે રાણા વ્યાસ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઈ આવ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશી ગોધરા આવ્યા, રાણા વ્યાસને મળ્યા. પછી બન્ને જણા બહુ પ્રસન્ન થયા. પછી રાણા વ્યાસની પાસે જગન્નાથ જોશી ઘણું રહેતા.

भावप्रकाश—सो राना व्यास के मनमें पंडिताई को अहंकार तो दूरि भयो । परंतु इंद्रीजीत को अहंकार हतो । सो श्रीठाकुरजी ने यह अहंकार दूरि करिवे के लिये एक कौतुक रच्यो ।

सो भगवद् इच्छा तें गोधरा की देसायनि सों राना व्यास को संग भयो। सो वात काहूने राना व्यास की दरवार में कही। सो वह हाकिम के प्यादे राना व्यास कों लैन आये । तव जगन्नाथ जोसी नें राना व्यास कों और देसायनि कों और गाम भजाई दिये। और राना व्यास के घरमें जगन्नाथ जोसी रहे । भगवद् सेवा करि राजभोग सों पहोंचे। इतने में हाकिम के प्यादे आये। सो कहे, राना व्यास कहां हैं ? तव जगन्नाथ जोसी नें कही, कहा काम है ? तव प्यादे कहें, राना व्यास ने अन्याव कियो है सो हाकिम पास ले जाइंगे। तव जगन्नाथ जोसी ने कही, राना व्यास तो कहूं गये हैं। चलो मैं हाकिम कों उत्तर दे आऊं। तब प्यादे जगन्नाथ जोसी कों लिवाइ जाय हाकिम आगें ठाढ़े किये । तव हाकिम ने कही, जो-राना व्यास कहां है, उनकों लावो ? राना व्यास ने पराई स्त्री सों अन्याव कियो है। इनकों क्यों न लाये ? ये तो जगन्नाथ जोसी हैं । इनकों तो नीके जानत हों।

ભાવપ્રકાશ—રાણા વ્યાસના મનમાં પંડિતાઇનો અહંકાર (હતો) તે તો દૂર થયો. પરંતુ ઇંદ્રિયજીતનો અહંકાર (બાકી) હતો. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ એ અહંકાર દૂર કરવાને માટે એક કૌતુક રચ્યું

તે ભગવદ ઇચ્છાથી ગોધરાની દેસાઇયણથી રાણા વ્યાસનો સંગ થયો. તે વાત કોઇએ રાણા વ્યાસની રાજદ્વારમાં કહી. તેથી તે હાકેમના સિપાઇઓ રાણા વ્યાસને લેવાને આવ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ રાણા વ્યાસને તથા દેસાઇયણને બીજા ગામ ભગાડી દીધાં. અને રાણા વ્યાસના ઘરમાં જગન્નાથ જોશી રહ્યા. ભગવદ્સેવા કરી રાજભોગથી પહોંચ્યા. એટલામાં હાકેમના સિપાઇઓ આવ્યા. તે કહે, રાણા વ્યાસ ક્યાં છે ? ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, શું કામ છે ? ત્યારે સિપાઇઓ કહે, રાણા વ્યાસે અન્યાય કર્યો છે. તેથી હાકેમ પાસે લઇ જઇશું. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, કે રાણા વ્યાસ તો કંઇ બહાર ગયા છે. ચાલો, હું હાકેમને ઉત્તર દઈ આવું. ત્યારે સિપાઇઓએ જગન્નાથ જોશીને લઈ જઈ હાકેમ આગળ ઉભા રાખ્યા. ત્યારે હાકેમે કહ્યુ, કે રાણા વ્યાસ ક્યાં છે ? એમને લાવો. રાણા વ્યાસે બીજાની સ્ત્રી સાથે અન્યાય કર્યો છે. એમને કેમ ન લાવ્યા ? આ તો જગન્નાથ જોશી છે ? એમને તો સારી રીતે જાણું છું. જેનું નામ જગન્નનાથ જોશી તે કદીયે અન્યાય ન કરે. તેથી

जो-जाको नाम जगन्नाथ जोसी सो कबहू अन्याव न करें। तातें राना व्यास ने अन्याव कियो है सो राना व्यास कों ले आवो। तब जगन्नाथ जोसी नें कही, जो-तुम मेरी बात सुनो। राना व्यास ने अन्याव नाहीं कियो है। काहू नें झूंठे ही चुगली करी है। जाको नाम राना व्यास सो कबहू अन्याव न करें। तब हाकिम ने कही, कैसे जानिये, राना व्यास अन्याव नाहीं कियो है? तब जगन्नाथ जोसी कहें, जो-कहो तैसेई करूं। तब हाकिम ने गाडी के पैया को एक पहलू मँगायो। ताकों अग्नि में डारि कें तातो कियो। जब लाल भयो तब हाकिम ने कही याकों उठाई कें डारो। न जरो तो राना व्याम सांचे। तब जगन्नाथ जोसी उह पहलू के पास आई ठाड़े होइकें कह्यो, जो-राना व्यास अन्याव कियो होई तो मेरो हाथ जरियो। सो यह कहत ही अग्निमय पहलू सीतल ह्वै गयो। सो जगन्नाथ जोसी हाथ में उठाइ उह पहलू गरे में पहरि लिये। घरी एक ठाढ़े रहे। तब हाकिम ने और सगरे लोगन नें कही, जगन्नाथ जोसी काढ़ि, काढ़ि। तुम सांचे हो। तब जगन्नाथ जोसी कहें, यह कौनके गरे में डारूँ? तब हाकिम नें बहोत मनुहारि करि बिनति करी। पाछें भूमि पर डारें। सो भूमि जरि उठी। तब सगरे आश्चर्य पाय कें कहें, जो-जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो। तुम सांचे हो। पाछें हाकिम ने जगन्नाथ जोसी सों

રાણા વ્યાસે અન્યાય કર્યો છે. તે રાણા વ્યાસને લઈ આવો. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, કે તમે મારી વાત સાંભળો. રાણા વ્યાસે અન્યાય નથી કર્યો. કોઇએ જૂઠી જ ચાડી કરી છે. જેનું નામ રાણા વ્યાસ તે કદીય અન્યાય ન કરે. ત્યારે હાકેમે કહ્યું, કેમ જાણિએ ? રાણા વ્યાસે અન્યાય નથી કર્યો ? ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, જેમ કહો તેમજ કરૂ. ત્યારે હાકેમે ગાડીના પૈયાની લોઢાની વાટ મંગાવી. તેને અગ્નિમાં મૂકીને ગરમ કરી. જ્યારે લાલ થઈ ત્યારે હાકેમે કહ્યુ, આને ઉઠાવીને નાખો. ન બળો તો રાણા વ્યાસ સાચા. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તે વાટની પાસે આવી ઉભા રહીને કહ્યું, કે રાણા વ્યાસે અન્યાય કર્યો હોય તો મારો હાથ બળજો. એમ કહીને જગન્નાથ જોશીએ હાથમાં ઉઠાવી તે વાટને ગળામાં પહેરી લીધી. ઘડી એક ઉભા રહ્યા. ત્યારે હાકેમે અને બીજા બધા લોકોએ કહ્યું, જગન્નાથ જોશી કાઢો, કાઢો, તમે સાચા છો. ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, આ કોના ગળામાં નાખું ? ત્યારે હાકેમે બહુ કાલાવાલા કરી વિનતી કરી. પછી ભૂમિ ઉપર નાખી. તે ભૂમિ બળી ઉઠી. ત્યારે બધા આશ્ચર્ય પામીને કહે, કે જગન્નાથ જોશી તમે ધન્ય છો. તમે સાચા છો. પછી હાકેમે

कही, मैं तिहारे ऊपर वहोत प्रसन्न हों तातें तुम कछू मांगो । तब जगन्नाथ जोसी ने उह हाकिम सों कही, तिहारे पास जानें राना व्यास की चुगली करी है तासों कछू मति कहियो । यह मैं मांगि लेत हों । तब जगन्नाथ जोसी के ये वचन सुनिकें हाकिम और सब प्रसन्न भये। कहे तुम धन्य हो। चुगल कों हू बचाये। नाहीं तो मैं वाकों मरवाई डारतो । ऐसे मनुष्य धरती पर कोई एक हैं । तब जगन्नाथ जोसी अपने घर आये। पाछें राना व्यास घर आये। जगन्नाथ जोसी सों कहें तुम मेरे लिये वहोत दुःख पाये। तब जगन्नाथ जोसी कहें, जो-वैष्णव कबहू हीन कार्य न करें।

भावप्रकाश—तब राना व्यास के मनमें इंद्रीजीत को अहंकार हतो सो छूटि गयो।

पाछें राना व्यास भगवद् सेवा में मन लगाये। तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-अहंकार, गर्व होई तहां तांई श्रीठाकुरजी अनुभव न जतावें। और अपने भक्तन को अहंकार आपुही कृपा करिके दंड देइ छुडावत हैं। और वैष्णव सों कबहू हीन कार्य होई नाहीं।

જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, હું તમારા ઉપર બહુ પ્રસન્ન છું તેથી તમે કંઇ માંગો. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તે હાકેમને કહ્યું, તમારી પાસે જેણે રાણા વ્યાસની ચાડી કરી હોય તેને કંઇ કહેશો નહીં. એ હું માંગી લઉ છું. ત્યારે જગન્નાથ જોશીનાં એ વચન સાંભળીને હાકેમ અને બધા પ્રસન્ન થયા. કહે, તમે ધન્ય છો. ચુગલખોરને પણ બચાવ્યો, નહીં તો હું એને મરાવી નાખતો. આવા મનુષ્ય ધરતી ઉપર કોઇ એક છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશી પોતાના ઘરે આવ્યા. પછી રાણા વ્યાસ ઘર આવ્યા. જગન્નાથ જોશીને કહે, તમે મારા માટે બહુ દુઃખ પામ્યા. ત્યારે જગન્નાથ જોશી કહે, કે વૈષ્ણવ ક્યારેય હીન કાર્ય ન કરે.

ભાવપ્રકાશ—ત્યારે રાણા વ્યાસના મનમાં ઇંદ્રિજીતનો અહંકાર હતો તે છુટી ગયો.

પછી રાણા વ્યાસે ભગવદ્‌સેવામાં મન લગાડ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સિદ્ધાંત થયો, કે અહંકાર ગર્વ હોય ત્યાં સુધી શ્રીઠાકુરજી અનુભવ ન જણાવે. વળી પોતાના ભક્તોનો અહંકાર પોતે જ કૃપા કરીને દંડ દઇ છોડાવે છે. અને વૈષ્ણવથી ક્યારેય હીન કાર્ય બને નહી.

और कदाचित भगवदीय सों खोटो काम कछु भयो होई तो मनमें दोष बुद्धि न करनो। (क्यों जो) भगवदीय ऐसो करे नाहीं। वामें भगवत्कृति जाननी। और जीवमात्र ऊपर दया राखनी। चोर होई चुगल होई ताहू कों अपने बसतें बचावनो। रक्षा करनी। यह वैष्णव को धर्म है। इत्यादि सिद्धांत प्रकट किये। और राना व्यास पहलें जब घरतें निकसे तब बद्रीनाथ, जगन्नाथ होई पाछें द्वारका में आये। तहां 'माधव सरस्वती' एक पंडित ब्राह्मण हतो ताके सेवक भये, नाम पाये हे। पाछें कासी में श्रीआचार्यजी के सेवक भये। सो तो ऊपर कहि आये हैं।

वार्ता-प्रसंग २—**सो राना व्यास गोधरा तें सिद्धपुर जाइ रहें। सो एक दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती में न्हाइ कें बैठे संध्या वंदन करत हते। ता समें एक रजपूतानी को धनी मरि गयो। सो वह सती होन कों आई। तब जगन्नाथ जोसी ने राना व्यास सों पूछ्यो, जो–यह सती होत है तिन को कहा प्रकार है? तब राना व्यास नें मूंड हलाय कें जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो–प्रेत के संग वृथा यह मनुष्य देह जरावति है। ऐसी सुंदर देह भगवद् सेवा में लगें तो उद्धार होई जाई। प्रेत के संग जरति है। सो वृथा जन्म खोवति है। सो प्रकार मूंड हलाय कें राना व्यास कहे। ता समे उह**

અને કદાચિત ભગવદીયથી ખોટું કામ કંઈ થાય તો મનમાં દોષબુદ્ધિ ન કરવી. કેમ? જે ભગવદીય એવું કરે નહીં. તેમાં ભગવત્કૃતિ જાણવી. અને જીવ માત્ર ઉપર દયા રાખવી. ચોર હોય ચુગલ હોય તેને પણ પોતાનું ચાલે ત્યાં સુધી બચાવવો, રક્ષા કરવી. એ વૈષ્ણવનો ધર્મ છે. ઇત્યાદિક સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો. અને રાણા વ્યાસ પહેલાં જ્યારે ઘરથી નિકળ્યા ત્યારે બદ્રીનાથ, જગન્નાથ થઇ પછી દ્વારકામાં આવ્યા. ત્યાં માધવ સરસ્વતી એક પંડિત બ્રાહ્મણ હતો. તેના સેવક થયા નામ પામ્યા હતા. પછી કાશીમાં શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયા તે તો ઉપર કહી આવ્યા છીએ.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—પછી રાણા વ્યાસ ગોધરાથી સિદ્ધપુર જઈ રહ્યા. તે એક દિવસ રાણા વ્યાસ અને જગન્નાથ જોશી સરસ્વતીમાં ન્હાઇને બેઠા. સંધ્યાવંદન કરતા હતા. તે સમયે એક રજપૂતાણીનો ધણી મરી ગયો. તે સતી થવા આવી. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ રાણા વ્યાસને પૂછયું, કે આ સતી થાય છે તેનો શો પ્રકાર છે? ત્યારે રાણા વ્યાસે માથું હલાવીને જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, કે પ્રેતની સાથે વૃથા આ મનુષ્ય દેહ બાળે છે. આવી સુંદર દેહ ભગવદ્સેવામાં લાગે તો ઉદ્ધાર થઈ જાય. પ્રેતના સંગે બળે છે. તે વૃથા જન્મ ખોવે છે. તે પ્રકાર માથું હલાવીને રાણા વ્યાસે કહ્યો. તે

रजपूतानी की दृष्टि राना व्यास पर हती । सो मूंड हलावत देखत ही उह रजपूतानी को सत उतरि गयो । तव रजपूतानी नें साथ के लोगन सों कह्यो, जो–मैं सती न होउंगी । मेरो सत उतरि गयो । तव लोगन नें उह रजपूतानी सों कही, जो–तोकों घर में तो जान न देंगे । तोकों इहांई जरावेंगे । तव रजपूतानी ने कही, जो–मैं घर में नहिं आऊंगी । मोकों इहां नदी के तीर झोंपरी करि दीजो, इहां रहोंगी । और मोकों जोरावरि जरावोगे तो तुम सवन कों हत्या लगेगी । यह कहि सवन कों सोंह दिवाई । जो–मोकों मति जरावो । तव उह मृतक कों जराय सरस्वती नदी पर एक झोंपरी वनाय कें सगे संवंधि अपने अपने घर गये । पाछें दूसरे दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती न्हान कों गये । तव उह रजपूतानी नें राना व्यास सों पूछी, जो–काल्हि तुम मेरी ओर देखिकें मूंड कैसें हिलायो ? तव राना व्यास उह रजपूतानी सों कहे, हम तो आपुस में ऐसे ही अनेक वात करत हसत हते । या वात में तू कहा लेइगी ? तव उह रजपूतानी नें कही, अव मोसों दुराव क्यों करत हो ? तुमने मूंड हलाइ कें वात कही सो मेरो सत उतरि गयो मैं जरी नाहीं । तातें मोसों यथार्थ वात होई, अव, जो–मोकों कर्तव्य होई, सो कहो ।

સમયે તે રજપૂતાણીની દૃષ્ટિ રાણા વ્યાસ ઉપર હતી. તે માથું હલાવતાં જોઇને તે રજપૂતાણીનું સત ઉતરી ગયું. ત્યારે રજપૂતાણીએ સાથેના લોકોને કહ્યું, કે હું સતી નહીં થઉં. મારું સત ઉતરી ગયું. ત્યારે લોકોએ તે રજપૂતાણીને કહ્યું, કે તને ઘરમાં જવા નહીં દઇએ. તને અહીં જ બાળીશું. ત્યારે રજપૂતાણીએ કહ્યું. કે હું ઘરમાં નહીં આવું. મને અહીં નદીના કિનારે ઝુંપડી કરી દેજો, હું અહીં રહીશ. અને મને જોરાવરીથી બાળશો તો તમને બધાને હત્યા લાગશે. એમ કહી બધાને સોગંદ દીધા, કે મને ન બાળો. ત્યારે તે મૃતકને બાળી સરસ્વતી નદી ઉપર એક ઝુંપડી બનાવીને સગાં સંબંધી પોતપોતાના ઘરે ગયાં. પછી બીજા દિવસે રાણા વ્યાસ અને જગન્નાથ જોશી સરસ્વતી ન્હાવાને ગયા. ત્યારે તે રજપૂતાણીએ રાણા વ્યાસને પૂછ્યું, કે કાલે તમે મારી તરફ જોઇને માથું કેમ હલાવ્યું ? ત્યારે રાણા વ્યાસ તે રજપૂતાણીને કહે, અમે તો આપસમાં એવી જ અનેક વાતો કરતા હસતા હતા. એ વાતમાં તું શું લઇશ ? ત્યારે તે રજપૂતાણીએ કહ્યું, હવે મારાથી છુપાવો છો કેમ ? તમે માથું હલાવીને વાત કહી, તેથી મારું સત ઉતરી ગયું. હું બળી નહીં. તેથી મને યથાર્થ વાત હોય. હવે જે મને કર્તવ્ય હોય તે કહો. તેજ હું કરું. તમે અગ્નિમાં બળતાં

सोई मैं करूं। तुमने अग्नि में जरत बचाई तो कृपा करि बात हू कहि चाहिये। या प्रकार रजपूतानी ने बहोत आग्रह कीनो। तब राना व्यास नें कही, हम आपुस में यह कहत हते, जो–मनुष्य देह परम उत्तम पाइकें वृथा प्रेत के संग जरत है। यह देह सों श्रीठाकुरजी को भजन स्मरन न कियो ताकों धिक्कार है। उह महादुष्ट है।

भावप्रकाश—जो श्रीठाकुरजी के अर्थ यह देह आवें तो कृतार्थ होई। वा बराबरि कोई नाहीं। यह बात कहत हते।

तब उह रजपूतानी नें कही अब मैं तिहारी सरनि हों। जा प्रकार मोसों कहो ताहि प्रकार मैं भजन सुमिरन करों। मेरो परलोक सुधरे। सो मोपर कृपा करो। तब राना व्यास ने कही, अबहि तो तोकों सूतक हैं। सूतक उतरे पाछें आइयो। तब तोसों हम कहेंगे। तब वह रजपूतानी दंडौत करि अपनी झोंपरी में गई। सो आर्ति बहोत बढी। अरु एक एक घरी जुग सम बीते। जो–कब सूतक मिटें, कब राना व्यास मोकों बतावें। तेसेई मैं श्रीठाकुरजी को सुमिरन, भक्ति करों।

भावप्रकाश—या प्रकार की आरति देवीजीव है तातें भई। लीला में राना व्यास इंदुलेखा की सखी मधुरा और मधुरा की सखी "नागवेलिका" को

બચાવી તો કૃપા કરીને વાત પણ કહેવી જોઇએ. આ પ્રકારે રજપૂતાણીએ બહુ આગ્રહ કર્યો. ત્યારે રાણા વ્યાસે કહ્યું, અમે આપસમાં એ કહેતા હતા, કે મનુષ્ય દેહ પરમ ઉત્તમ પામીને વૃથા પ્રેતની સાથે બળે છે. આ દેહથી શ્રીઠાકુરજીનું ભજન-સ્મરણ ન કરે તેને ધિઃક્કાર છે, એ મહા દુષ્ટ છે.

ભાવપ્રકાશ—જો આ દેહ શ્રીઠાકુરજીના અર્થ આવે તો કૃતાર્થ થાય. એના બરોબર કોઇ નહીં. એ વાત કહેતા હતા.

ત્યારે એ રજપૂતાણીએ કહ્યું, હવે હું તમારે શરણ છું. જે પ્રકાર મને કહો તેજ પ્રકારે હું ભજન-સ્મરણ કરૂં. મારો પરલોક સુધરે એવી મારા ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે રાણા વ્યાસે કહ્યું, હમણાં તો તને સૂતક છે. સૂતક ઉતર્યા પછી આવજે. ત્યારે તને અમે કહીશું. ત્યારે તે રજપૂતાણી દંડવત્ કરી પોતાની ઝૂંપડીમાં ગઈ. પછી આર્તિ બહુ વધી. તે એક ઘડી યુગ સમાન વીતે, કે ક્યારે સૂતક મટે ? ક્યારે રાણા વ્યાસ મને બતાવે તેજ પ્રકારે હું શ્રીઠાકુરજીનું સ્મરણ-ભક્તિ કરૂં.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારની આર્તિ દૈવીજીવ છે તેથી થઇ. લીલામાં રાણા વ્યાસ ઈંદુલેખાની સખી મધુરા અને મધુરાની સખી નાગવેલિકાનું પ્રાકટ્ય રાણા

प्रागट्य राना व्यास को है। और नागवेलिका की सखी "रसएनी" हैं आज्ञाकारी। सो रसएनी को प्रागट्य यह रजपूतानी है। तातें लीला में हू पूर्व राना व्यास की आज्ञाकारी सखी हैं। तातें राना व्यास के उपर यह रजपूतानी को दृढ़ विश्वास भयो, जो–इन द्वारा मेरो उद्धार होयगो।

पाछें जहां लों सूतक रह्यो तहां लों राना व्यास सरस्वती ऊपर न्हाइवे कों आवें। तब दरसन नित्य करि, विनती दैन्यता करि जाय। जो–मेरो अंगीकार कब होइगो। ऐसे करत सूतक उतर्‍यो। तब न्हाइ के सुद्ध होयकें नदी पर बैठि रही। तब रानाव्यास सरस्वती ऊपर न्हाइवे कों आये। तब वह रजपूतानी रानाव्यास के सन्मुख आई। दंडोत करि विनती करी, अब मोपर कृपा करो। तब राना व्यास ने कही कालिह सवारे आइयो। तब तोसों कहेंगे। तब उह दंडोत करि झोंपरी में गई। सो मारे दुःख के विरह तें कछू खानपान नाहीं कियो। पाछें प्रातःकाल भयो तब न्हाइ के नदी पर बैठि रहि। इतने राना व्यास आइ सरस्वती में स्नान करिकें वा रजपूतानी सों कही, फेरि न्हाइ लें। तब रानाव्यास ने रेसमी वस्त्र दिये। जो–याकों पहरि ले। तब उह रजपूतानी ने पहर्‍यो। तब रानाव्यास बैठाइ कें श्रीआ-

---

વ્યાસનુ છે. અને નાગવેલિકાની સખી 'રસએની' છે, આજ્ઞાકારી. તે રસએનીતું પ્રાકટ્ય આ રજપૂતાણી છે. તેથી લીલામાં પણ પૂર્વે રાણા વ્યાસની આજ્ઞાકારી સખી છે. તેથી રાણા વ્યાસના ઉપર આ રજપૂતાણીનો દૃઢ વિશ્વાસ થયો, કે એમની દ્વારા મારો ઉદ્ધાર થશે.

પછી જ્યાં સુધી સૂતક રહ્યું ત્યાં સુધી રાણા વ્યાસ સરસ્વતી ઉપર ન્હાવાને આવે. ત્યારે દર્શન નિત્ય કરી વિનંતી દૈન્યતા કરી જાય. કે મારો અંગીકાર ક્યારે થશે? એમ કરતાં સૂતક ઉતર્યું. ત્યારે ન્હાઇને શુદ્ધ થઇને નદી ઉપર બેસી રહી. ત્યારે રાણા વ્યાસ સરસ્વતી ઉપર ન્હાવાને આવ્યા. ત્યારે તે રજપૂતાણી રાણા વ્યાસના સન્મુખ આવી. દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, હવે મારા ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે રાણા વ્યાસે કહ્યું, કાલ સવારે આવજે. ત્યારે તને કહીશું, ત્યારે તે દંડવત્ કરી ઝૂંપડીમાં ગઈ. તે દુઃખના મારે વિરહથી કંઇ ખાનપાન કરી શકી નહી પછી પ્રાતઃકાળ થયો. ત્યારે ન્હાઇને નદી ઉપર બેસી રહી. એટલામાં રાણા વ્યાસ આવી સરસ્વતીમાં ન્હાઇને તે રજપૂતાણીને કહે, ફરી ન્હાઇ લે. ત્યારે યે ન્હાઇ. ત્યારે રાણા વ્યાસે રેશમી વસ્ત્ર આપ્યું. કે આને પહેરી લે. ત્યારે તે રજપૂતાણીએ પહેર્યું. ત્યારે રાણા વ્યાસે

चार्यजी को ध्यान स्मरन करिकें नाम सुनाये। सो नाम सुनत ही रजपूतानी कों भगवद्भाव उत्पन्न भयो। तब स्त्री नें रानाव्यास सों विनती करी, जो–अब मोकों टहल बताओ सो करूं। तब राना व्यास अपनी धोती बताये, जो–आछें धोई कें घरमें आइयो। और अष्टाक्षर मंत्र यह जप अष्टप्रहर मुखसों कर्‍यो करियो। पाछें औरहू सेवा देइंगे सो धोवती आछी तरह छांटि लाई। राना व्यास श्रीठाकुरजी की सेवा करि राजभोगार्ति के दरसन उह रजपूतानी कों कराये। पाछें महाप्रसाद की पातरि धरी। या प्रकार कछुक दिन धोती उपरेना परदनी आदि वस्त्र धोवन की सेवा दिये। सो प्रीति पूर्वक सगरे वस्त्र भाग्य मानिकें धोवें। महाप्रसाद राना व्यास के घर लेई।

भावप्रकाश—सो वस्त्र धोवन को कारन यह, जो–ज्यों ज्यों भगवदीय के वस्त्र धोवे त्यों त्यों हृदय सुद्ध होइ। ज्यों ज्यों वस्त्र को मेल छूट्यो त्यों त्यों हृदय में ते काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदि मोहमेल सब दूरि भये। तव सुद्ध भई।

पाछें राना व्यास के घर में सगरो काम काज सीधो सामग्री समारनो आदि या प्रकार ऊपर की सब सेवा करन लागी। ऐसे

બેસાડીને શ્રીઆચાર્યજીનું ધ્યાન-સ્મરણ કરીને નામ સંભળાવ્યું. તે નામ સાંભળતાં જ રજપૂતાણીને ભગવદ્ભાવ ઉત્પન્ન થયો. ત્યારે સ્ત્રીએ રાણા વ્યાસને વિનંતી કરી, કે હવે મને ટહલ બતાવો તે કરૂં. ત્યારે રાણા વ્યાસે પોતાની ધોતી બતાવી કે ઠીક ધોઇને ઘરમાં આવજો અને અષ્ટાક્ષર મંત્ર એ જપ આઠો પ્રહર મુખથી કર્યા કરજે. પછી બીજી પણ સેવા દઇશું. તે ધોતી સારી રીતે ધોઈ લાવી. રાણા વ્યાસે શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરી રાજભોગ આર્તિનાં દર્શન તે રજપૂતાણીને કરાવ્યાં. પછી મહાપ્રસાદની પાતર ધરી. એ પ્રકારે કેટલાક દિવસ ધોતી, ઉપરેના, પરદની આદિ વસ્ત્ર ધોવાની સેવા આપી. પછી પ્રીતિપૂર્વક બધાં વસ્ત્ર ભાગ્ય માનીને ધુવે. મહાપ્રસાદ રાણા વ્યાસના ઘરે લે.

ભાવપ્રકાશ—તે વસ્ત્ર ધોવાનું કારણ એ કે, જેમ જેમ ભગવદીયનાં વસ્ત્ર ધુવે તેમ તેમ હૃદય શુદ્ધ થાય. જેમ જેમ વસ્ત્રનો મેલ છુટયો તેમ તેમ હૃદયમાંથી કામ, ક્રોધ, મદ, મત્સર, લોભ આદિક મોહ–મેલ બધા દૂર થયા. ત્યારે શુદ્ધ થઇ.

પછી રાણા વ્યાસના ઘરમાં બધું કામકાજ સીધું સામગ્રી સિદ્ધ કરવું આદિ આ પ્રકારે ઉપરની બધી સેવા કરવા લાગી. એમ કરતાં કેટલાક દિવસ પછી શ્રીઆ-

करत कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी पधारे। तब राना व्यास ने श्रीआचार्यजी कों अपुने घर पधराये। और विनती करि रजपूतानी की सब वात कही। और कहे, आपु अब कृपा करिके सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानिकें उह रजपूतानी कों नाम निवेदन कराये। पाछें कछुक दिन सिद्धपुर में रहिकें आपु द्वारिका पधारें। तब उह रजपूतानी रसोइ की सब परचारगी करें। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें। या प्रकार राना व्यास के संग तें उह रजपूतानी कों भगवत्प्राप्ति भई।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय को संग परम उत्तम है। भगवद् भजन स्मरन करत हू बहुत काल में कृपा होइ। परंतु भगवदीय सर्व सामर्थ्य युक्त हैं। इनके छिनक संग तें भगवान कृपा करें। यह जताये।

सो राना व्यास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। जिनकें संग तें रजपूतानी भगवदीय भई। तातें की वार्ता कहां तांई कहिये। ॥३२॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास साँचोरा, राजनगर के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में, श्रीस्वामिनीजी की सखी इन्दुलेखा, इन्दु-

---

ચાર્યજી પધાર્યા. ત્યારે રાણા વ્યાસે શ્રીઆચાર્યજીને પોતાના ઘરે પધરાવ્યા અને વિનંતી કરી રજપૂતાણીની બધી વાત કહી. અને કહે આપ હવે કૃપા કરીને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દૈવી જીવ જાણીને તે રજપૂતાણીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. પછી થોડાક દિવસ સિદ્ધપુર રહીને પોતે દ્વારિકા પધાર્યા. ત્યારે તે રજપૂતાણી રસોઇની બધી પરચારગી કરે. પછી શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. આ પ્રકારે રાણા વ્યાસના સંગથી તે રજપૂતાણીને ભગવત્પ્રાપ્તિ થઈ.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે ભગવદીયનો સંગ પરમ ઉત્તમ છે. ભગવદ્‌ભજન-સ્મરણ કરતાં પણ બહુકાલમાં કૃપા થાય, પરંતુ ભગવદીય સર્વ સામર્થ્ય યુક્ત છે. એના ક્ષણેક સંગથી ભગવાન કૃપા કરે, એ જણાવ્યું.

તે રાણા વ્યાસ એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા, જેમના સંગથી રજપૂતાણી ભગવદીય થઇ. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૩૨॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રામદાસ સાંચોરા, રાજનગરના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની સખી ઇન્દુલેખા, ઇન્દુલે-

लेखा की सखी सुभगा, सो 'सुभगा' रामदास को प्रागट्य। और सुभगा की सखी 'सुभद्रा', सो रामदास की स्त्री को प्रागट्य। सो दोऊ राजनगर में साँचोरा ब्राह्मण के घर प्रगटे। सो बरस नौ के रामदास भये, और बरस आठ की यह स्त्री भई। सो मा बाप ने दोउन को ब्याह किये। परन्तु रामदास कों वैराग्य दसा बालपने तें हती। काहू सों मोह न करे, काहू को कह्यो न करे। सो माता पिता ने पढ़ाए बहोत, सो कछू पढ़े नाहीं। सो एक समें रामदास राजनगर के तलाव पर बैठे हते, तहां तेली दस–पाँच पोहे लेके आये। सो बैलन कों पानी पिवायो, तामें एक बैल पानी पीके तलाव के उपर गिरि पर्यो, मरि गयो। सो वह तेली रोवन लाग्यो। तब रामदास उह तेली सों पूछे, तू क्यों रोवत है? तब वह तेली ने कही, मेरो बैल पानी पीके अब ही मरि गयो। तब रामदास तो बरस दस के बालक, सो जाने नाहीं। सो उह तेली सों कहें, याको कहा मर्यो? यह पर्यो है, याकों उठावो। तब तेली ने कही, अब यह कहा उठे? याको प्राण निकरि गयो। तब रामदास ने कही, याही प्रकार सब मरि जाँइगे? तब तेली ने कही, यही दसा हैं, दोय दिन आगे पाछें। यह सुनत ही रामदास वहां तें भाजे, सो कछुक दिन में द्वारिका आये, श्रीरनछोड़जी के दरसन किये। तहाँ श्रीआचार्यजी सुबोधिनी की कथा कहत हते।

ખાની સખી સુભગા. તે 'સુભગા' રામદાસનુ પ્રાકટ્ય અને સુભગાની સખી 'સુભદ્રા' તે રામદાસની સ્ત્રીનુ પ્રાકટ્ય. એ બન્ને રાજનગરમાં સાંચોરા બ્રાહ્મણને ત્યાં પ્રકટયાં. તે વર્ષ નવના રામદાસ થયા અને વર્ષ આઠની આ સ્ત્રી થઇ. પછી મા–બાપે બન્નેનું લગ્ન કર્યું. પરંતુ રામદાસને વૈરાગ્ય દશા બાલપણાથી હતી. કોઇનાથી મોહ ન કરે. કોઇનું કહ્યું ન કરે. માતા–પિતાએ ભણાવ્યા ઘણા પરંતુ કંઇ ભણ્યા નહી. પછી એક સમે રામદાસ રાજનગરના તલાવ ઉપર બેઠા હતા. ત્યાં તેલી દશ–પાંચ ઢોર લઇને આવ્યા. તે બળદોને પાણી પીવડાવ્યુ. તેમાં એક બળદ પાણી પીને તલાવના ઉપર ઢળી પડયો, મરી ગયો. તેથી તે તેલી રોવા લાગ્યો. ત્યારે રામદાસ તે તેલીને પૂછે, તૂ કેમ રૂવે છે? ત્યારે તે તેલીએ કહ્યું, મારો બળદ પાણી પીને હમણાં જ મરી ગયો. ત્યારે રામદાસ તો દશ વર્ષના બાલક તે જાણે નહીં. તે તેલીને કહે, આનું શુ મર્યુ? આ પડયો છે તેને ઉઠાડો. ત્યારે તેલીએ કહ્યુ, હવે એ શુ ઉઠે? એનો પ્રાણ નિકળી ગયો. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, આજ પ્રકારે બધા મરી જશે? ત્યારે તેલીએ કહ્યુ, આજ દશા છે. બે દિવસ આગળ પાછળ. એ સાંભળતાં જ રામદાસ ત્યાંથી ભાગ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં દ્વારકા આવ્યા. શ્રીરણ-

सो रामदास तहां आये, कथा सुनिकें बहोत प्रसन्न भये । सो मन में यह आई, श्रीआचार्यजी के संग रहिके कछुक दिन इनकी कथा सुनियें । इनके सेवक होऊँ तो आछौ । पाछे आप कथा कहि चुके तब रामदास दंडवत् करि विनती करी, महाराज! मोकों सरन लेउ । पास राखो तो कछुक दिन में आपुके श्रीमुख की कथा सुनों । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू कौन है? कहां तें आयो? तब रामदास ने सगरी बात कही । मैं राजनगर में रहत हों, साँचोरा को बेटा हूँ । तहां तलाव पर एक बैल तेली को मरचो, सो देखिके वैराग्य आयो है । सो उठि भाग्यो, इहां आपको दरसन भयौ । तब श्रीआचार्यजी विचारे, जो–जीव तो दैवी है, परन्तु अवस्था छोटी है । जो–याकों पास न राखेंगे, तो संसार में दुःसंग हैं, कहूं खराब होई जायगो । तातें कछुक दिन संग राखि, याकों दृढ़ वैराग्य होइ तब छोड़नो । यह विचारिकैं रामदास सों कहें, जा, न्हाइ आउ । सो रामदास न्हाइ आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाए, निवेदन कराए, महाप्रसाद लिवाए, पास राख्यो । सो कछुक दिन रहिके श्रीआचार्यजी द्वारिका तें पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । सो रामदास संग चले । सगरी रसोई की परचारगी करें । और टहेल छोटी मोटी सब करें ।

છોડજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી સુબોધિનીજીની કથા કહેતા હતા. તે રામદાસ ત્યાં આવ્યા. કથા સાંભળીને બહુ પ્રસન્ન થયા. મનમાં એ આવ્યુ શ્રીઆચાર્યજીના સંગ રહીને કેટલાક દિવસ એમની કથા સાંભળીએ. એમના સેવક થઇએ તો સારૂં. પછી પોતે કથા કહી ચૂકયા ત્યારે રામદાસે દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મને શરણે લો. પાસે રાખો તો થોડાક દિવસમાં આપના શ્રીમુખની કથા સાંભળું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ કોણ છે? કયાંથી આવ્યો? ત્યારે રામદાસે બધી વાત કહી. હું રાજનગરમાં રહુ છું. સાંચોરાનો બેટા છું. ત્યાં તલાવ ઉપર એક બળદ તેલીનો મર્યો તે જોઇને વૈરાગ્ય આવ્યો છે. તે ઉઠી ભાગ્યો. અહીં આપનાં દર્શન થયાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી વિચારે, કે જીવ તો દૈવી છે પરન્તુ અવસ્થા નાની છે. જો આને પાસ નહીં રાખીએ તો સંસારમાં દુ:સંગ છે. કંઇ ખરાબ થઇ જશે. તેથી થોડા દિવસ સાથે રાખી એને દૃઢ વૈરાગ્ય થાય ત્યારે છોડવો. એ વિચારીને રામદાસને કહ્યું, જા, ન્હાઇ આવ. ત્યારે રામદાસ ન્હાઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. મહાપ્રસાદ લેવડાવી પાસે રાખ્યો. પછી કેટલાક દિવસ રહીને શ્રીઆચાર્યજી દ્વારકાથી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. તે રામદાસ સંગ ચાલ્યા. બધી રસોઇની પરચારગી કરે અને નાની મોટી

जो–श्रीआचार्यजी रामदास की परीक्षा लेन अर्थ कबहूँ थोरो धरें, कबहूँ अकेली रोटी धरें। परन्तु ए भागि मानि महाप्रसाद लेईं। मनमें यह कबहूँ नाहीं लाये, जो–आज हमकों यह नाही धरें। तब श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये, सो सगरी सामग्री धरते। और मारग में जहां कांटो आवतो तहां रामदास मारग में बेगे बेगे सँभारत जाइ। सो एक दिन रामदास के पाँव में कांटो बड़ो लग्यो। सो रामदास मनमें बिचारयो, मैं अपने पाँव में कांटो काढ़न के लिये बैठि रहूँगो तो श्रीआचार्यजी मेरे लिये ठाड़े होइ रहें। सो आछो नाहीं, मेरो धर्म जाई। और यह बिचारे, जो–और आगे आगे पधारेंगे तो (हू) मारग में कांटा बहुत हैं, कहूँ श्रीआचार्यजी के चरणारविंद में लागें तोऊ मेरो धर्म जाई। यह बिचारिके अपने पग को कांटो न काढ़े। मारग सँभारत चले। तब थोरी सी दूरि जाय श्रीआचार्यजी ठाड़े रहे, कहैं, रामदास तू अपने पग को कांटो काढ़ि ले। और तेरे उपर मैं बहुत प्रसन्न हों, जो–चाहे सो मांगि। तब रामदास कहें, महाराज! आपु की सरनि मोकों मिली, अब यासों अधिक कहा है? तातें यह मोकों कृपा करि कें दीजिये, जो–आपको आश्रय सदा दृढ़ रहै, औरको न होई। तब श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न होइकें कहें,

---

ટહેલ બધી કરે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રામદાસની પરીક્ષા લેવાને માટે કોઇ વાર થોડુ ધરે, કોઇ વાર એકલી રોટી ધરે. પરંતુ એ ભાગ્ય માની મહાપ્રસાદ લે. મનમાં એમ કયારેય ન લાવ્યા કે આજ અમને આ નથી ધર્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. તે બધી સામગ્રી ધરતા અને માર્ગમાં જ્યાં કાંટો આવતો ત્યાં રામદાસ માર્ગમાં જલ્દી જલ્દી ઠીક કરતા જાય. તે એક દિવસ રામદાસના પગમાં મોટો કાંટો વાગ્યો. ત્યારે રામદાસ મનમાં વિચારે, કે હુ મારા પગમાંથી કાંટો કાઢવાને માટે બેસી રહીશ તો શ્રીઆચાર્યજી મારા માટે ઉભા થઇ રહેશે. તો ઠીક નહી. મારો ધર્મ જાય. અને એમ વિચાર્યું, કે વળી આગળ આગળ પધારશે તો (પણ) માર્ગમાં કાંટા ઘણા છે. કંઇ શ્રીઆચાર્યજીના ચરણારવિંદમાં લાગે તોપણ મારો ધર્મ જાય. એમ વિચારીને પોતાના પગનો કાંટો ન કાઢયો. માર્ગ ઠીક કરતા ચાલ્યા. ત્યારે થોડીક દૂર જઇ શ્રીઆચાર્યજી ઉભા રહીને કહે, રામદાસ! તૂ તારા પગનો કાંટો કાઢી લે. અને તારા ઉપર હું બહુ પ્રસન્ન છું, જે જોઇએ તે માંગ. ત્યારે રામદાસ કહે, મહારાજ! આપનુ શરણુ મને મળ્યુ. હવે એનાથી અધિક શું છે? તેથી મને એ કૃપા કરીને આપો કે આપનો આશ્રય સદા દૃઢ રહે. બીજાનો ન થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી બહુ જ પ્રસન્ન થઇને કહે, એમ જ થશે. તેં બધું

ऐसे ही होयगो । तू सगरो मांगे । परन्तु मैं प्रसन्न हों, तू कांटा काढ़ि ले, मैं ठाड़ो हूँ । तोकों अपराध कबहू न लागेगो । तब रामदास ने कांटा काढ़्यो । या प्रकार बरस दस श्रीआचार्यजी के संग सेवा किये । परन्तु प्रीति सदा एक रस रही । ऐसे भगवदीय कृपापात्र हे । पाछें दक्षिण में श्रीआचार्यजी दूसरी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । तहां एक ब्राह्मण ने एक श्रीठाकुरजी का स्वरूप भेट कियो, और कह्यो, मोंसों पूजा नाहीं होत । तब श्रीआचार्यजी उह स्वरूप पास राखे । कछुक दिन सेवा किये । पाछे दक्षिण में एक गाम के बाहिर आइ उतरे । तब कृष्णदास सों कहे, जो–जाउ, गाम में तें सीधो सामग्री ले आवो । और एक सुथार सों बिना खुंटी की पादुका बनवाय ले आवो । सो कृष्णदास सीधो सामग्री ले आये । तब श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरि आपु अरोगि के रामदास सों कहें, महाप्रसाद ले । तब रामदास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आये ।

वार्ता–प्रसंग १—**सो श्रीआचार्यजी नें, उह ब्राह्मण ने ठाकुर भेट कियो हो, सो स्वरूप आप पंचामृत स्नान कराई रामदास के माथे पधराये। श्रीठाकुरजी को नाम 'नटुवा गोपालजी' धर्‍यो। और उह पादुका के उपर चरणारविन्द धरि रामदास के माथे पधराये।**

માગ્યું. પરંતુ હું પ્રસન્ન છું. તૂ કાંટો કાઢી લે. હું ઉભો છું. તને અપરાધ ક્યારેય નહીં લાગે. ત્યારે રામદાસે કાંટો કાઢ્યો. એ પ્રકારે વર્ષ દશ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે રહી સેવા કરી. પરંતુ પ્રીતિ સદા એકરસ રહી. એવા ભગવદીય કૃપાપાત્ર હતા. પછી દક્ષિણમાં શ્રીઆચાર્યજી બીજી પૃથ્વી પરિક્રમા માટે પધાર્યા. ત્યાં એક બ્રાહ્મણે એક શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ ભેટ કર્યું અને કહ્યુ, મારાથી પૂજા થતી નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તે સ્વરૂપ પાસે રાખ્યું. કેટલાક દિવસ સેવા કરી. પછી દક્ષિણમાં એક ગામની બહાર આવીને ઉતર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસને કહે, કે જા, ગામમાંથી સીધું સામગ્રી લઇ આવ. અને એક સુથાર પાસેથી વિના ખુંટીની પાદુકા બનાવરાવીને લઇ આવે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ સીધું સામગ્રી લઇ આવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રસોઇ કરી ભોગ ધરી પોતે આરોગીને રામદાસને કહે, મહાપ્રસાદ લે ત્યારે રામદાસ મહાપ્રસાદ લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તે બ્રાહ્મણે ઠાકુર ભેટ કર્યા હતા તે સ્વરૂપને પોતે પંચામૃત સ્નાન કરાવી રામદાસના માથે પધરાવ્યું. શ્રીઠાકુરજીનું નામ 'નટુવાગોપાળજી' રાખ્યું. અને તે પાદુકા (ચરણપાખડી)ના ઉપર ચરણારવિન્દ ધરી રામદાસના માથે પધરાવી આપી.

भावप्रकाश—काहेतें, श्रीआचार्यजी तो पादुका पहिरतें नहीं, नांगे पॉइन चलते । पृथ्वी पावन करिवे के लिये । पृथ्वी को मनोर्थ पूरण करणार्थ । पादुकाजी, सेवा करणार्थ कृपा करिकें देते । तातें श्रीआचार्यजी की पादुका में खूंटी नाहीं हैं ।

सो रामदास के माथे श्रीठाकुरजी पधराय के कहें, रामदास! अब तुम भगवद् सेवा करो। जहां रहो तहां अब तुमकों डर नाहीं। भक्ति तुमकों भई। तब रामदास के मनमें तो यही, जो-सदा श्री-आचार्यजी के पास रहों। परन्तु आज्ञा कैसे टारूं? और जानें, जो-आप कहे सो करनो, याही में मेरो कल्याण है। यह विचारि कें दंड-वत करि चले। सो विरह बहोत, बार-बार फिरिकें दरसन करि स्वरूप हृदय में धरि चले। और श्रीआचार्यजी को हृदय भरि आयो। जो-ऐसे वैष्णव सों वियोग होत है। परन्तु रामदास की स्त्री दैवी जीव, पतिव्रता है, सो घरमें दुखी है, कुटुम्ब में मा-बाप के इहां। ताके उद्धार के लिये, श्रीआचार्यजी रामदास कों बिदा किये। सो रामदासजी तीन दिन लों श्रीठाकुरजी की सेवा, श्रीपादुकाजी की सेवा करे। भोग धरे सो गाय कों लिवाय दिये। श्रीआचार्यजी के वियोग को दुःख बहोत, सो प्रसाद लियो न गयो। सो चौथे दिन

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે, શ્રીઆચાર્યજી તો પાદુકા પહેરતા ન હતા. ખુલ્લા ચરણથી ચાલતા, પૃથ્વી પાવન કરવાને માટે, પૃથ્વીનો મનોરથ પૂર્ણ કરવા માટે. પાદુકાજી સેવા કરવા અર્થે કૃપા કરીને આપતા. તેથી શ્રીઆચાર્યજીની પાદુકામાં ખુટી નથી.

તે રામદાસના માથે શ્રીઠાકુરજી પધરાવીને કહે, રામદાસ હવે તમે ભગવદ્‌સેવા કરો. જ્યાં રહો ત્યાં હવે તમને ડર નથી. ભક્તિ તમને થઇ. ત્યારે રામદાસના મનમાં તો એ જ કે સદા શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહું. પરંતુ આજ્ઞા કેમ ટાળું ? અને જાણે કે આપ કહે તે કરવું. એમાં જ મારૂં કલ્યાણ છે એમ વિચારીને દંડવત્ કરીને ચાલ્યા તે વિરહ બહુ જ. વાર-વાર પાછા ફરીને દર્શન કરી સ્વરૂપ હૃદયમાં ધરી ચાલ્યા અને શ્રીઆચાર્યજીનું હૃદય ભરી આવ્યું, કે આવા વૈષ્ણવથી વિયોગ થાય છે. પરંતુ રામદાસની સ્ત્રી દૈવી જીવ, પતિવ્રતા છે. તે ઘરમાં દુ:ખી છે. કુટુંબમાં માબાપને ત્યા. તેના ઉદ્ધારને માટે શ્રીઆચાર્યજીએ રામદાસને વિદાય કર્યા. અને રામદાસજી ત્રણ દિવસ સુધી શ્રીઠાકુરજીની સેવા, શ્રીપાદુકાજીની સેવા કરે. ભોગ ધરે તે ગાયને લેવડાવી દેતા. શ્રીઆચાર્યજીના વિયોગનું દુ:ખ બહુ જ. તે પ્રસાદ લઇ ન શકાયો.

भोग धरि के पाछें सरावन लागे, तब श्रीआचार्यजी दरसन दैकें कहे, तू महाप्रसाद क्यों नाहीं लेत ? मैं तो तेरें पास ही हों, तातें महाप्रसाद लीजो। तब रामदास गाय को भाग काढ़ि महाप्रसाद लियो। सो या प्रकार विरक्त दसासों कवहूं कहूं रहे, कवहूं कहूं रहे एक ठिकाने न रहे। सो पृथ्वी परिक्रमा करत करत अपने गाम में राजनगर में आइ निकसे। सो रामदास के माई-बाप तो मरि गए हते। इनकी स्त्री मा-बाप के घर हती। सो रामदास अपने घरमें आई रहै। सो रामदास के ससुर नें जानी, जो-रामदास आये। तब बेटी सों कह्यो, जो-तेरो धनी आयो है, सो फेरि कहूं जायगो, तो तू वाको न पावेगी। तातें तेरो मन होय तो धनी के साथ जा। तेरो मन होय तो हमारे घर रहि। तब बेटी ने कही, जो-मोकों मेरे धनी पास पहोंचाय आवो। और मोकों कछू नाहीं चाहिये। तब ससुर बेटी कों ले रामदास के घर करि चल्यो गयो। यह रामदास के पास आइ, सो रामदास स्त्री कों अंगीकार न करे, बोले नाहीं। सो रामदास दिन दोय-चारि घरमें रहे। पाछें द्वारिका कों उठि चले। तब रामदास की स्त्री रामदास के संग चली। सो रामदास संग आवन न देहि, ईंटन सों मारे। परन्तु स्त्री पतिव्रता, दूरि दूरि संग चलि

ત્યારે ચોથા દિવસે ભોગ ધરીને પછી સરાવવા લાગ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દર્શન દઇને કહ્યું, તૂ મહાપ્રસાદ કેમ નથી લેતો ? હું તારી પાસે જ છું તેથી મહાપ્રસાદ લેજે. ત્યારે રામદાસે ગાયનો ભાગ કાઢી મહાપ્રસાદ લીધો. તે એ પ્રકારે વિરક્ત દશાથી ક્યારે કંઇ રહે, ક્યારે કંઇ રહે. એક ઠેકાણે ન રહે. તે પૃથ્વી-પરિક્રમા કરતાં કરતાં પોતાના ગામમાં રાજનગરમાં આવી નિકળ્યા. તે રામદાસનાં મા-બાપ તો મરી ગયા હતાં. એમની સ્ત્રી મા-બાપના ઘર હતી. તે રામદાસ પોતાના ઘરમાં આવી રહ્યા. રામદાસના સાસરાએ જાણ્યું, કે રામદાસ આવ્યા ત્યારે બેટીને કહ્યું, કે તારો ધણી આવ્યો છે. તે ફરી કંઈ જશે. તો તૂ એને નહીં મેળવી શકીશ. તેથી તારૂં મન હોય તો ધણીની સાથે જા. તારૂં મન હોય તો અમારા ઘરે રહે. ત્યારે બેટીએ કહ્યું, કે મને મારા ધણી પાસે પહોંચાડી આવો. બીજું મને કંઈ જોઇતું નથી. ત્યારે સાસરો બેટીને લઈ રામદાસના ઘરે કરીને ચાલ્યો ગયો. આ રામદાસની પાસે આવી, તે રામદાસ સ્ત્રીને અંગીકાર ન કરે. બોલે નહીં. પછી રામદાસ બે ચાર દિવસ ઘરમાં રહ્યા. પછી દ્વારકા ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે રામદાસની સ્ત્રી રામદાસના સાથે ચાલી. તે રામદાસ સાથે આવવા ન દે. ઇંટોથી મારે. પરંતુ સ્ત્રી પતિવ્રતા દૂર દૂર સંગે ચાલી

आवे। रामदास की पातरि में जूठन बचे सो स्त्री खाई, न बचे तो भूखी रहि जाई। ऐसे करत मजलि चारि भई, तब श्रीरनछोड़जी ने रामदास सों कही, तू स्त्री कों अंगीकार क्यों नहीं करत? त्याग क्यों कियो? तब रामदास श्रीरनछोड़जी सों कहे, जो–मैं तो विरक्त वैरागी हूं। मेरे स्त्री को कहा काम है? तब श्रीरनछोड़जी ने कही, विवाह काहे कों कियो? और तू श्रीआचार्यजी को कृपापात्र सेवक होइ के ऐसी निठुरता तोकों न चहिये। और तू श्रीआचार्यजी को कृपापात्र सेवक है, तातें तोसों बहोत मैं कहि सकत नाहीं। तातें स्त्री कों अंगीकार करि, या प्रकार श्रीरनछोड़जी रामदास सों कहै।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो–स्त्री दैवी है। अङ्गीकार के लिये तो अपने पासतें श्रीआचार्यजी विदा तुमकों किये, सो तू क्यों नाही करत? और रामदास कों द्वारिका में श्रीआचार्यजी अङ्गीकार किये हैं। तातें द्वारिका चले हैं। श्रीरनछोड़जी के केवल दरसन निमित्त नाहीं चले। श्रीआचार्यजी को संबंध विचारि रामदास सगरे देस फिरत हैं। तातें श्रीरनछोड़जी की आज्ञा नाहीं, दंड नाहीं। तातें श्रीरनछोड़जी कहें, तू श्रीआचार्यजी को सेवक है। मैं तोसों कहि नाहीं सकत। श्रीआचार्यजी कहिवाए। तव मैं इतनो कह्यो तुमसों, सो स्त्री कों अङ्गीकार करि।

આવે. રામદાસની પાતરમાં જૂઠન બચે તે સ્ત્રી ખાય. ન બચે તો ભૂખી રહી જાય. એમ કરતાં મજલ ચાર થઈ. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ રામદાસને કહ્યું, તૂં સ્ત્રીને કેમ અંગીકાર નથી કરતો? ત્યાગ કેમ કર્યો? ત્યારે રામદાસ શ્રીરણછોડજીને કહે, જે હું તો વિરક્ત વૈરાગી છું, મારે સ્ત્રીથી શું કામ છે? ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, વિવાહ શા માટે કર્યો? અને તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો કૃપાપાત્ર સેવક થઇને આવી નિઠુરતા તને ન જોઇએ? અને તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો કૃપાપાત્ર સેવક છે. તેથી તને બહુ હું કહી શકતો નથી. તેથી સ્ત્રીને અંગીકાર કર. એ પ્રકારે શ્રીરણછોડજી રામદાસને કહે.

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ એ કે સ્ત્રી દૈવી છે. અંગીકારને માટે તો પોતાની પાસેથી શ્રીઆચાર્યજીએ તમને વિદાય કર્યા. માટે તૂં કેમ નથી કરતો? અને રામદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ દ્વારકામાં અંગીકાર કર્યા છે. તેથી દ્વારકા ચાલ્યા છે. શ્રીરણછોડજીનાં કેવલ દર્શન નિમિત્ત નથી આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીનો સંબંધ વિચારી રામદાસ બધા દેશ ફરે છે. તેથી શ્રીરણછોડજીની આજ્ઞા નહીં, દંડ નહીં. તેથી શ્રીરણછોડજી કહે, તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક છે, હું તને કહી શકતો નથી. શ્રીઆચાર્યજીએ કહેવડાવ્યું ત્યારે મે તને આટલું કહ્યું કે, સ્ત્રીનો અંગીકાર કર.

तब मजलि जाइ उतरे। सो स्त्री कों पास बुलाय कहैं, तू गांठि देखत रहि, मैं उपरा बीनि लाऊं। तब स्त्री प्रसन्न भई, जो–आजु मोपर कृपा है। तब स्त्री ने कही, मैं ही उपरा बीनि लाऊं। तब रामदास ने कही यह स्त्री को काम नाहीं, मैं बीनि लाऊंगो। तब उपरा लाइ रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, पाछे भोग सराई गाय को भाग काढ़ि एक पातर स्त्री कों धरे। एक अपनी धरे। महाप्रसाद दोऊ जने लिये। ऐसे करत द्वारिका आये, श्रीरनछोड़जी के दरसन किये। तब श्रीरनछोड़जी ने कही, तू स्त्री कों नाम देई तो जल सामग्री सिद्ध करें। रसोई की परचारगी करे। तब रामदास कहै, मैं नाम कैसे देऊं? नाम श्रीआचार्यजी देई सो ठीक है। तब श्रीरनछोड़जी ने कही, मेरी आज्ञा है तू नाम दे। पाछें श्रीआचार्यजी पधारे, तब श्रीआचार्यजी पास नाम सुनैयो। और मैं तोसों कहत हों, सो श्री-आचार्यजी की आज्ञा तें, इच्छा बिना नाहीं कहत। तब रामदास स्त्री कों नाम सुनाये। पाछें स्त्री सों जल भरावन लागे, परचारगी रसोई की करावन लागे। पाछे द्वारिका तें चले तब रामदासजी मनमें विचारे, जो–अब स्त्री कों लिये लिये फिरनो उचित नाहीं। अब एक जगे बैठिकें भगवद् भजन करनो। यह विचारि रामदास कछुक दिन में राज-नगर अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे।

ત્યારે મજલ ઉપર જઈ ઉતર્યા. પછી સ્ત્રીને પાસે બોલાવીને કહે, તૂ ગાંઠ જોતી રહેજે હું છાણાં વીણી લાઉં. ત્યારે સ્ત્રી પ્રસન્ન થઈ કે આજ મારા ઉપર કૃપા છે. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, હું જ છાણાં વીણી લાઉં ? ત્યારે રામદાસે કહ્યું, એ સ્ત્રીનું કામ નથી. હું વીણી લાવીશ. ત્યારે છાણાં લાવી રસોઈ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી પછી ભોગ સરાવી ગાયનો ભાગ કાઢી એક પાતર સ્ત્રીને ધરી. એક પોતાની ધરી. મહાપ્રસાદ બન્ને જણાંએ લીધો. એમ કરતાં દ્વારકા આવ્યાં. શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, તૂ સ્ત્રીને નામ દે તો જલ-સામગ્રી સિદ્ધ કરે. રસોઈની પરચારગી કરે. ત્યારે રામદાસ કહે, હું નામ કેમ દઉં ? નામ શ્રીઆચાર્યજી દે તે ઠીક છે. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, મારી આજ્ઞા છે તૂ નામ દે. પછી શ્રીઆચાર્યજી પધારે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પાસે નામ સંભળાવજે. અને હું તને કહું છું તે શ્રીઆચાર્ય-જીની આજ્ઞાથી, ઇચ્છા વિના નથી કહેતો. ત્યારે રામદાસે સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. પછી સ્ત્રી પાસે જલ ભરાવવા લાગ્યા. પરચારગી રસોઈની કરાવવા લાગ્યા. પછી દ્વારકાથી ચાલ્યા ત્યારે રામદાસજીએ મનમાં વિચાર્યું, કે હવે સ્ત્રીને લઇ લઇને ફરવું

पाछे कितनेक दिन में श्रीआचार्यजी राजनगर पधारे । तब रामदास आगे जाई दंडवत् करि, अपने घर पधराय लाये और बिनती करी, महाराज ! स्त्री कों नाम निवेदन कराइए । तब श्रीआचार्यजी कहें, तू स्त्रीकों दियो है, फेरि अब काहे कों नाम देईवेकी कहे हैं ? तब रामदास ने कही, महाराज ! मैं तो श्रीरनछोड़जी के कहेतें नाम दियो । और श्रीरनछोड़जी हू यह कहैं, पाछे श्रीआचार्यजी पास नाम दिवाईयो । सो आपकी इच्छा हती तातें श्रीरनछोड़जी द्वारा आप आज्ञा किये, तातें मैं नाम दियो । आपकी इच्छा न होई सो कार्य मैं कबहूं न करूं । और स्त्री के अंगीकार करन के लिये तो आपु मोकों अपने पासतें बिदा किये । तातें यह स्त्री कों अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी रामदास के ऊपर प्रसन्न होइके नाम दें ब्रह्मसम्बन्ध करायो । पाछे रामदास के घर पाक सामग्री करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरे । पाछे आपु भोजन करि रामदास कों, रामदास की स्त्री कों जूठन धरी । पाछे रामदास कों आज्ञा किये, अब तू एक ठौर घर में बैठिकें दोऊ जने भगवद् सेवा करो । तब रामदास ने कही, महाराज ! यही मेरे मनमें हती, सो आपु आज्ञा दिये । पाछें श्रीआचा-

---

ઉચિત નથી. હવે એક જગાએ બેસીને ભગવદ્‌ભજન કરવું. એમ વિચારી રામદાસ કેટલાક દિવસમાં રાજનગર પોતાના ઘરે આવ્યા. ભગવદ્‌સેવા કરવા લાગ્યા.

પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી રાજનગર પધાર્યા. ત્યારે રામદાસ આગળ જઈ દંડવત્ કરી પોતાના ઘરે પધરાવી લાવ્યા, અને વિનંતી કરી, મહારાજ ! સ્ત્રીને નામ-નિવેદન કરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તેં સ્ત્રીને આપ્યું છે ફરી હવે કેમ નામ દેવાનું કહે છે ? ત્યારે રામદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મેં તો શ્રીરણછોડજીના કહે-વાથી નામ આપ્યું. અને શ્રીરણછોડજી પણ એમ કહે, પછી શ્રીઆચાર્યજી પાસે નામ અપાવજે. તે આપની ઇચ્છા હતી તેથી શ્રીરણછોડજી દ્વારા આપે આજ્ઞા કરી. તેથી મેં નામ આપ્યું. આપની ઇચ્છા ન હોય તે કાર્ય હું ક્યારેય ન કરું. અને સ્ત્રીને અંગીકાર કરવાને માટે તો આપે મને પોતાની પાસેથી વિદાય કર્યો. તેથી આ સ્ત્રીને અંગીકાર કરીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રામદાસના ઉપર પ્રસન્ન થઇને નામ દઇ બ્રહ્મ-સંબંધ કરાવ્યું. પછી રામદાસના ઘરે પાક-સામગ્રી કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યા. પછી ભોજન કરી રામદાસને, રામદાસની સ્ત્રીને જુઠણ ધરી. પછી રામદાસને આજ્ઞા કરી, હવે તૂ એક જગાએ ઘરમાં બેસીને બન્ને જણાં ભગવદ્‌સેવા કરો. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, મહારાજ ! એજ મારા મનમાં હતું. તે આપે આજ્ઞા કરી. પછી શ્રીઆચાર્યજી દ્વારકાં

यैजी द्वारिका पधारे। रामदास स्त्री सहित भगवद् सेवा करि, अनोसर समें भगवद् वार्ता ग्रंथ को भाव स्त्री सों कहते। सो दोऊ जने भगवद सेवा में मगन रहते। सो ये रामदास स्त्री सहित ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥३३॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोविंद दूबे, सांचोरा, खेरालू गाम में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए गोविंद दूबे द्वारिका लीला संबंधी हैं। सत्यभामा की सखी है। इनको नाम लीला में 'तनमध्या' है। सो इनको स्वरूप सुन्दर बहोत है, कटि सिंहकीसी इनकी। सो श्रीठाकुरजी सत्यभामा के महल पधारे। तब यह सखी तन्मध्या श्रीठाकुरजी सों कहैं, मैं तुम्हारी दासी हों, कोई दिन मोसों मिलो। तब श्रीठाकुरजी मुसिकाइकें कहैं, सत्यभामा के आगें कैसे बने? सो दूरितें सत्यभामा ने यह बात सुनी। सो क्रोध करिकें शाप दिये, जो–तू हमारी बराबरि करी, तातें भूमि पर गिरो। सो ए लीलातें गिरी, अनेक जन्म पाये। सो अब सांचोरा के घर जन्में। सो बरस पंद्रह के भये। तब माता पिता सों कहै, कोई तीर्थ करो तो आछो है। तब गोविंद दूबे के मा बाप नें कही, जो–बेटा! तू अबही तें तीरथ को

પધાર્યા. રામદાસ સ્ત્રી સહિત ભગવદ્‌સેવા કરે. અનોસર સમયે ભગવદ્‌વાર્તા-ગ્રંથનો ભાવ સ્ત્રીને કહે. તે રીતે બન્ને જણાં ભગવદ્‌સેવામાં મગન રહેતાં. તે રામદાસ સ્ત્રી-સહિત એવાં કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતાં. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ વાર્તા ॥૩૩॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ગોવિંદ દુવે, સાંચોરા, ખેરાળુ ગામમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ ગોવિંદ દુવે દ્વારકા લીલા સબંધી છે. 'સત્યભામા' ની સખી છે. એમનું નામ લીલામાં 'તન્મધ્યા' છે. એમનું સ્વરૂપ સુંદર બહુ છે. એમની કટી સિંહના જેવી છે. તે શ્રીઠાકુરજી સત્યભામાના મહેલમાં પધાર્યા ત્યારે એ સખી તન્મધ્યા શ્રીઠાકુરજીને કહે, હું તમારી દાસી છું કોઇ દિવસ મને મળો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી હસિને કહે, સત્યભામાની આગળ કેમ બને? એ વાત દૂરથી સત્યભામાએ સાંભળી. ત્યારે ક્રોધ કરીને શાપ આપ્યો, કે તેં અમારી બરાબરી કરી તેથી ભૂમિ ઉપર પડ. ત્યારે એ લીલામાંથી પડી અનેક જન્મ પામી. તે હવે સાંચોરાના ઘરે જન્મ્યા. તે વર્ષ પંદરના થયા. ત્યારે માતા-પિતાને કહે, કોઇ તીર્થ કરો તો સારૂં? ત્યારે ગોવિંદ દુવેના મા-બાપે કહ્યું, કે બેટા! તૂ

मन करत है। जो–तू वैरागी होइगो ? हमारो तो मन घर छोड़िके कहूँ जाईवे को होत नाहीं। घरमें खानपान को सुख है। तब गोविंद दूवे कहै, जो–मैं तो वैरागी होउंगो। तातें मेरो ब्याह भूलिके मति करियो। और तुम सदा घरको काम करत मरोगे, यह मोकों जानि परी। सो मैंतो तीरथ जाऊंगो। तब माता पिता ने कही हम वृद्ध हैं, हमारे पीछे तुम्हारो मन होई तहाँ जैयो अब या समय तो हमारी टहल करो, रक्षा करो तो आछो। तब गोविंद दूवे ने कही, तुम यह बात कही सोतो साँच, परन्तु काल की कछु खबरि परत नाहीं। कदाचित मैं मरि जाऊं, तब मेरो जन्म तो बिगरयो। तब तुम्हारी टहल कौन करेगो ? तातें श्रीठाकुरजी सबकी रक्षा करत हैं। जीवकी कहा सामर्थ्य है ? तातें मैं तो द्वारिका श्रीरनछोड़जी के दरसन तो करि आऊं। तब माता पिता ने कही, हम तोसों बातन में जीते नाहीं, तुम्हारो मन होइ सो करो। तब गोविन्द दूवे द्वारिका आये। श्रीरनछोड़जी के दरसन करि बहोत सुख मनमें पायो। सो वर्ष तीन द्वारिका में रहे। और माता पिता घरमें देह छोड़ी। सो खबर गोविन्द दूवे सुनकें मनकों खेद कियो। जो–माता–पिता कोई तीरथ न किये। पाछें गोविन्द दूवे के मनमें यह आई, जो–माता पिता-को

હમણાંથી તીર્થનુ મન કરે છે તે શું તૂ વૈરાગી થઈશ ? અમારૂ મન ઘર છોડીને કઇ જવાનું થતુ નથી. ઘરમાં ખાવા–પીવાનું સુખ છે. ત્યારે ગોવિંદ દુવે કહે, કે હું તો વૈરાગી થઈશ. તેથી મારૂં લગ્ન ભૂલીને ન કરતા. અને તમે સદા ઘરનું કામ કરતાં મરશો, એમ મને જણાય છે. તેથી હું તો તીર્થ કરવા જઇશ. ત્યારે માતા–પિતાએ કહ્યું, અમે વૃદ્ધ છીએ. અમારી પાછળ તમારૂ મન હોય ત્યાં જજો. હવે આ સમય તો અમારી ટહલ કરો. રક્ષા કરો તો સારૂ. ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ કહ્યું, તમે એ વાત કહી તે તો સાચી પરંતુ કાલની કંઈ ખબર પડે નહી. કદાચિત્ હું મરી જાઉં ત્યારે મારો જન્મ તો બગડ્યો ત્યારે તમારી ટહલ કોણ કરશે ? તેથી શ્રીઠાકુરજી બધાની રક્ષા કરે છે. જીવનુ શુ સામર્થ્ય છે ? તેથી હું તો દ્વારકા શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન તો કરી આવું. ત્યારે માતાપિતાએ કહ્યુ, અમે તને વાતોમાં જીતીએ નહીં. તમારૂં મન હોય તે કરો. ત્યારે ગોવિંદ દુવે દ્વારકા આવ્યા. શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરી મનમાં બહુ સુખ થયું. તે ત્રણ વર્ષ દ્વારકામાં રહ્યા. અને માતા–પિતાએ ઘરમાં દેહ છોડી. તે ખબર ગોવિંદ દુવેએ સાંભળી મનમાં ખેદ કર્યો. કેમ જે માતા–પિતાએ કોઈ તીર્થ ન કર્યુ. પછી ગોવિંદ દુવેના મનમાં એ આવ્યું કે માતા–પિતાનું ગયા શ્રાદ્ધ તો કરી આવું. પછી

गया-श्राद्ध तो करि आऊं। सो श्रीरनछोड़जी के दरसन करिके चले, सो गया में आइ श्राद्ध किये। पाछें घरकों चले। सो गयातें काशी आये, तब मनिकर्णिका पर स्नान करि संध्यावंदन करत हते, ता समें श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के घर सों मनिकर्णिका स्नान कों पधारे। तब गोविन्द दूवे श्रीआचार्यजी को दरसन कियो। तब यह जान्यो, जो-ये वड़े पंडित हैं। तब गोविन्द दुवे के मनमें यह आई, जो-मैं इनके पास कछु पढ़ूँ। सो श्रीआचार्यजी स्नान करि संध्या वंदन किये। तब गोविन्द दूवे आई श्रीआचार्यजी कों विनती करी, महाराज! आपु वड़े पंडित हो। सो मोकों कछू पढ़ावोगे? तब श्रीआचार्यजी ने कही, बहोत विद्या तो तुम्हारे भाग्य में नाहीं। मन लगाई के पढ़ो तो अक्षर ज्ञान होइगो, पाछे पोथी पाठ बांचि लेऊगे। तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज! पोथी पाठई सही, जितनो आवे तितनोई सही। गीता भागवत तो बांचू। तब श्रीआचार्यजी कहें, तीसरे पहर डेरा पर आईयो। पाछें गोविन्द दूवे ने घर जाई एक व्याकरण की पोथी एक ब्राह्मण सों मांगी। जो-मैं पढ़िके तुमकों देऊंगो। तब उह ब्राह्मण ने कही, तुम ही राखो, पढ़ो। पाछे श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे। सामग्री

શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરીને ચાલ્યા. તે ગયામાં આવીને શ્રાદ્ધ કર્યું. પછી ઘરે ચાલ્યા. તે ગયાથી કાશી આવ્યા. ત્યારે 'મણિકર્ણિકા' ઉપર સ્નાન કરી સંધ્યા-વંદન કરતા હતા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરેથી મણિ-કર્ણિકા સ્નાન માટે પધાર્યા હતા. ત્યારે ગોવિન્દ દુવેએ શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે એ જાણ્યું કે મોટા પંડિત છે. ત્યારે ગોવિંદ દુવેના મનમાં એ આવ્યું, કે હું એમની પાસે કંઇ ભણું. પછી શ્રીઆચાર્યએ સ્નાન કરી સંધ્યા-વંદન કર્યું. ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ આવીને શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! આપ મોટા પંડિત છો. તે મને કંઇ ભણાવશો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ, બહુ વિદ્યા તો તમારા ભાગ્યમાં નથી. મન લગાડીને ભણો તો અક્ષરજ્ઞાન થશે. પછી પોથી-પાઠ વાંચી લેશો. ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ કહ્યું, મહારાજ! પોથી-પાઠ જ ભલે. જેટલું આવડે તેટલું જ ખરૂં. ગીતા-ભાગવત તો વાંચું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ત્રીજા પહોરે મુકામ ઉપર આવજો. પછી ગોવિંદ દુવેએ ઘર જઇ એક વ્યાકરણની પોથી એક બ્રાહ્મણ પાસે માગી.- કે હું ભણીને તમને આપીશ ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યુ, તમે જ રાખો. ભણો. પછી શ્રીઆચાર્યજી શેઠ પુરુષોત્તમદાસના ઘરે પધાર્યા. સામગ્રી કરી ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. અહીં ગોવિંદ દુવે રોટલી

करि भोग धरि भोजन किये। इहाँ गोविंद दूवे रोटी खाई तीसरे पहर श्रीआचार्यजी पास व्याकरण की पोथी लैके आये। नमस्कार करि बैठे। तब गोविन्द दूवे ने व्याकरण की पुस्तक निकासें। तब श्रीआचार्यजी ने कही, व्याकरण कहाँ तांई पढ़ेगो? तोकों गीता पढ़ाऊंगो। सो गीता के पढ़े व्याकरण आपही आइ जायगो। तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज! व्याकरण पढ़े बिना गीता कैसे खुलेगी? जगत में तो रीति है, व्याकरण पढ़े तब कछु अक्षर को ज्ञान होय, तब शास्त्र देखें। तब श्रीआचार्यजी कहैं, हम कहैं तैसे तू करतो सही। तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज! मेरे पास तो गीता की पुस्तक नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी पुस्तक निकारि एक श्लोक गीता को पढ़ाये। पाछे कहैं, हमारी आज्ञा है, सगरी गीता पाठ करि। तब गोविन्द दूवे सगरी गीता अष्टादश अध्याय पाठ करि गये। तब श्रीआचार्यजी एक श्लोक गीता के अर्थ करि कहैं, तू हू अर्थ करि। तब दूवे एक श्लोक कौ अर्थ कियो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, मेरी आज्ञा है, सगरी गीता को अर्थ करि जा। तब सगरी गीता को श्लोकार्थ करि गये। इतने में प्रहर रात्रि गई। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू जा, व्याकरण साधि लीजो। गीता, भाग-

---

ખાઇ પીને ત્રીજા પ્રહરે શ્રીઆચાર્યજી પાસે વ્યાકરણની પોથી લઇને આવ્યા. નમસ્કાર કરી બેઠા. ત્યારે ગોવિન્દ દુવે એ વ્યાકરણની પોથી કાઢી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, વ્યાકરણ ક્યાં સુધી ભણીશ? તને ગીતા ભણાવીશ. ગીતા ના ભણવાથી વ્યાકરણ એની મેળે આવડી જશે. ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ કહ્યું, મહારાજ! વ્યાકરણ ભણ્યા વિના ગીતા કેમ સમજાશે? જગતમાં તો રીત છે વ્યાકરણ ભણે ત્યારે કઇ અક્ષરનું જ્ઞાન થાય. ત્યારે શાસ્ત્ર જુએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે કહીએ તેમ તૂ કરતો ખરો. ત્યારે ગોવિન્દ દુવેએ કહ્યું, મહારાજ! મારી પાસે તો ગીતાનું પુસ્તક નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પુસ્તક કાઢીને એક શ્લોક ગીતાનો ભણાવ્યો. પછી કહ્યું, અમારી આજ્ઞા છે, આખી ગીતા પાઠ કરી જા. ત્યારે ગોવિંદ દુવે આખી ગીતા અઢારે અધ્યાયનો પાઠ કરી ગયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ગીતાના એક શ્લોકનો અર્થ કરીને કહે, તૂ પણ અર્થ કર. ત્યારે દુવેએ એક શ્લોકનો અર્થ કર્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, મારી આજ્ઞા છે, આખી ગીતાનો અર્થ કરી જા. ત્યારે આખી ગીતાનો શ્લોકાર્થ કરી ગયા એટલામાં પ્રહર રાત્રી ગઈ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તૂ જા, વ્યાકરણ સાધી લેજે. ગીતા–ભાગવત શ્લોકાર્થ તને આવડી ગયો આગળ તારા ભાગ્યમાં નથી. ત્યારે ગોવિંદ દુવે તે બ્રાહ્મણના ઘરે

वत श्लोकार्थ तोकों आय चुक्यो, आगें तेरे भाग्य में नाहीं। तब गोविन्द दूवे उह ब्राह्मन के घर आये, जासों व्याकरण लाये हते। सो व्याकरण सब लगाय लिये। पाछे अर्द्ध रात्रि कों सोये। तब गोविन्द दूवे मन में विचारी, जो–श्रीआचार्यजी ईश्वर हैं। जो–एक बार एक श्लोक गीता को पढ़ायो तामें व्याकरण हू आयो, गीता हू। श्लोकार्थ को ज्ञान भयो। सो यह जीवकी सामर्थ्य नाहीं। तातें इनको सेवक होऊँ तो आछौ।

तब प्रातःकाल न्हाइकै, श्रीआचार्यजी कों आइ दंडौत् कियो, तब विनती कीनी, जो–महाराज! मोकों सरन लीजिये, नाम सुनाइये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम हूँ तो ब्राह्मन हो, हम हूँ ब्राह्मन हैं। सो सेवक क्यों होत हो? तब गोविन्द दूवे ने विनती कीनी, जो–महाराज! हम तो जीव हैं। सो आपके स्वरूप कों कहा जाने? आपु कृपा करिके जनावें तब जाने। पहेलें तो पंडित ब्राह्मन आपकूँ जानत हते। परन्तु अब तो हम यह जानें, जो–आपु ईश्वर हो। जो–एक बार एक श्लोक गीता के पढ़ाये, तामें मोकों सगरी गीता को श्लोकार्थ ज्ञान भयो। तातें कृपा करिके सेवक करिये। हम तो अज्ञानी जीव हैं। आपु हमारे अपराध क्षमा करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, गंगाजी स्नान कों चलेंगे तहां तुम कों नाम सुनावेंगे। पाछें

આવ્યા જેનાથી વ્યાકરણ લાવ્યા હતા (તેને ત્યાં) પછી વ્યાકરણ બધુ લગાડી દીધું. પછી અડધી રાત્રે સૂઇ રહ્યા. ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ મનમાં વિચાર્યું કે શ્રીઆચાર્યજી ઇશ્વર છે. જે એકવાર એક શ્લોક ગીતાનો ભણાવ્યો તેમાં વ્યાકરણ પણ આવડયું, ગીતાના પણ શ્લોકાર્થનું જ્ઞાન થયું. આ જીવની સામર્થ્ય નહી. તેથી એમનો સેવક થઉ તો ઠીક.

ત્યારે પ્રાતઃકાલ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીને આવીને દંડવત કર્યા. ત્યારે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને શરણે લો. નામ સંભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે પણ બ્રાહ્મણ છો, અમે પણ બ્રાહ્મણ છીએ. તે સેવક કેમ થાવ છો? ત્યારે ગોવિંદ દુવેએ વિનંતી કરી, જે મહારાજ! અમે તો જીવ છીએ. આપના સ્વરૂપને શું જાણીએ? પહેલાં તો આપને પંડિત બ્રાહ્મણ જાણતા હતા. પરંતુ હવે તો એમ જાણ્યા, કે આપ ઇશ્વર છો. જે એક વાર એક શ્લોક ગીતાનો ભણાવ્યો તેમાં મને બધી ગીતાના શ્લોકાર્થનું જ્ઞાન થયું. તેથી કૃપા કરીને સેવક કરો. અમે તો અજ્ઞાની જીવ છીએ. આપ અમારા અપરાધ ક્ષમા કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગંગાજી સ્નાન કરવા ચાલીશું ત્યાં તમને નામ સંભળાવીશું. પછી પોતે ગંગાજી પધાર્યા.

आप गंगाजी पधारे, गोविन्द दूवे कों गंगाजी स्नान कराई नाम निवेदन कराए। तब गोविन्द दूवे कहें, अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवद् सेवा करो। तब गोविन्द दूवे ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज! मेरे पिता के श्रीठाकुरजी हैं, सो हमारी ज्ञाति के ब्राह्मन के घर हैं। सो उनकी सेवा कैसे करों ? तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा दीनी, जो–अपने घर में ठाकुर कों लाई पंचामृत स्नान कराई भगवत् सेवा करियो। तब गोविन्द दूवे श्रीआचार्यजी सों बिदा होय के कछुक दिन में घर आये। सो वह ब्राह्मन सों ठाकुरजी ले अपने घर पंचामृत स्नान कराई सेवा करन लागे। परन्तु भगवद् सेवा में मन लागे नाहीं, चित्त में उद्वेग रहे। और श्रीआचार्यजी ने यह आज्ञा दीनी, जो–श्रीठाकुरजी कों तू पञ्चामृत न्हवाई लीजो, सो यातें, जो–गोविन्द दूवे ब्रजलीला संबंधी नाहीं है। द्वारिका की राजलीला संबंधी सत्यभामा की सखी है। तहां इनकी प्राप्ति है। तातें आप पञ्चामृत स्नान नाहीं कराये। पाछें श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारे। सो एक वैष्णव अड़ेल तें गुजरात गयो। गोविन्द दूवे के घर उतर्यो। तब गोविन्द दूवे नें श्रीआचार्यजी के कुसल समाचारि पूछे। तब उह वैष्णव ने कही, कासी तें अड़ेल पधारे हैं। तहां कछुक दिन बिराजेंगे। पाछें

त्यां गोविंद दुवेने गंगा–स्नान करावी नाम–निवेदन कराव्युं. त्यारे गोविंद दुवे कहे, हुवे मने शी आज्ञा छे ? त्यारे श्रीआचार्यजीए कह्युं, भगवद् सेवा करो. त्यारे गोविंद दुवेए श्रीआचार्यजीने विनंती करी, महाराज ! मारा पिताना श्रीठाकुरजी छे ते अमारी ज्ञातिना ब्राह्मणना घरे छे. एमनी सेवा केम करुं ? त्यारे श्रीआचार्यजीए आज्ञा आपी, के तारा घरमां ठाकुरने लावीने पंचामृत स्नान करावी भगवत्सेवा करजे. त्यारे गोविन्द दुवे श्रीआचार्यजीथी विदाय थइ केटलाक दिवसमां घर आव्या. पछी ते ब्राह्मण पासेथी ठाकुरजी लइने पोताना घरे पंचामृत स्नान करावी सेवा करवा लाग्या. परंतु भगवद्सेवामां मन लागे नहीं. चित्तमां उद्वेग रहे. अने श्रीआचार्यजीए आज्ञा आपी, के श्रीठाकुरजीने तू पंचामृत करावी लेजे ते एथी, के गोविंद दुवे व्रजलीला संबंधी नथी. द्वारिकानी राजलीला संबधी सत्यभामानी सखी छे. त्यां एमनी प्राप्ति छे. तेथी आपे पंचामृत स्नान न कराव्युं. पछी श्रीआचार्यजी अडेल पधार्या. पछी एक वैष्णव अडेलथी गुजरात गयो. गोविंद दुवेना घर उतर्यो. त्यारे गोविन्द दुवेए श्रीआचार्यजीना कुशल समाचार पूछ्या. त्यारे ते वैष्णवे कह्युं, काशीथी अडेल पधार्या छे. त्यां थोडा दिवस बिराजशे. पछी पृथ्वी

पृथ्वी परिक्रमा कों पधारेंगे, ऐसे मैं सुनी है। सो तुम सों कह्यो। पाछें आपकी इच्छा। यह कहि उह वैष्णव दूसरे दिन द्वारिका गयो।

वार्ता-प्रसंग १—सो गोविन्द दूवे घर में सेवा करें, परन्तु मन में बहोत विग्रह रहै। सो सेवा में चित्त लागे नाहीं। तब गोविन्द दूवे एक पत्र श्रीआचार्यजी कों लिखे, महाराज! मेरे मन में बहोत विग्रह रहत है। भगवत्सेवा में चित्त लागत नाहीं, सो मैं कहा करूं? सो पत्र श्रीआचार्यजी पास आयो, सो आपु बांचि के 'नवरत्न' ग्रंथ करि लिखि पठाये। और लिखें, यह 'नवरत्न' ग्रंथ के पाठ किये तें तेरे मनकी विग्रहता मिटि जायगी। सो पत्र श्रीआचार्यजी को गोविन्द दूवे के पास आयो। तब गोविन्द दूवे प्रसन्न होइकें 'नवरत्न' ग्रंथ को पाठ करन लागे। सो पाठ करत श्रीआचार्यजी की कृपा तें मनकी व्यग्रता चिंता सब मिटि गई। मन भगवद् सेवा करन में लागे।

भावप्रकाश—सो गोविन्द दूवे के मनमें विग्रहता भई, ताको अभिप्राय यह, जो–गोविन्द दूवे जीव तो द्वारिका लीला संबंधी, और सेवा भावना व्रज की करे। सो मन लागे नाहीं। न राजलीला में दृढ़ता होई, न व्रजलीला में। सो अनेक साधन में मन दौरे, जो–तीर्थ करूं, के व्रत कोई करूं, कोई जप करूं?

પરિક્રમાએ પધારશે. એમ મેં સાંભળ્યું છે તે તમને કહ્યું. પછી આપની ઇચ્છા. એમ કહી તે વૈષ્ણવ બીજા દિવસે દ્વારકા ગયો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—ગોવિંદ દુવે ઘરમાં સેવા કરે પરન્તુ મનમાં બહુ જ વિગ્રહ રહે. સેવામાં ચિત્ત લાગે નહીં. ત્યારે ગોવિન્દ દુવેએ એક પત્ર શ્રીઆચાર્યજીને લખ્યો, મહારાજ! મારા મનમાં બહુ જ વિગ્રહ રહે છે. ભગવદ્‌સેવામાં ચિત્ત લાગતું નથી. તે હું શું કરૂં? તે પત્ર શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યો. તે પોતે વાંચીને 'નવરત્ન' ગ્રંથ કરી લખી મોકલ્યો. અને લખ્યું, આ નવરત્ન ગ્રંથનો પાઠ કરવાથી તારા મનની વિગ્રહતા મટશે. તે પત્ર શ્રીઆચાર્યજીનો ગોવિંદ દુવેની પાસે આવ્યો. ત્યારે ગોવિન્દ દુવે પ્રસન્ન થઇને નવરત્નનો પાઠ કરવા લાગ્યા. તે પાઠ કરતાં શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી મનની વ્યગ્રતા ચિંતા બધી મટી ગઇ. મન ભગવદ્‌સેવા કરવામાં લાગ્યું.

ભાવપ્રકાશ—ગોવિન્દ દુવેના મનમાં વિગ્રહતા થઇ તેનો અભિપ્રાય એ, કે ગોવિંદ દુવે જીવ તો દ્વારકા લીલા સંબંધી અને સેવા ભાવના વ્રજની કરે. તેથી મન લાગે નહીં. ન રાજલીલામાં દ્રઢતા થાય ન વ્રજલીલામાં. તેથી અનેક સાધનોમાં મન દોડે, કે તીર્થ કરૂં, કે વ્રત કોઇ કરૂં, કોઇ જપ કરૂં, ઇત્યાદિમાં મન ભટકે.

इत्यादि मन भटके। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'नवरत्न' ग्रन्थ लिखि पठाये, तू चिंता मति करे। चित्त की उद्वेगता है, यह प्रभु की लीला जानि, श्रीठाकुर में ते मन और ठौर जाय सोउ भगवद् इच्छा मानि, चिन्ता मति करियो। जितनी बने तितनी सेवा करियो। तब गोविन्द दूबे को मन स्थिर ह्वै गयो। जहाँ मन लौकिक वैदिक में जाइ तो भगवद् इच्छा माने। श्रीरनछोड़जी में मन बहोत जाई सो भगवद् इच्छा मानें। उहाँ की लीला में मग्न रहै। काहेतें ? शास्त्रपुराण अनेक उपाई प्रभु मिलन के कहे हैं। जीवकों मिस मात्र मार्ग दिखाये, जो–जहां को अधिकारी है वामें वाको मन स्वतः सिद्ध लागत है। तातें जैसे मनुष्य, गेल चलिवे वारे कों दस गाम के मार्ग बतावे, परन्तु जाकों जा गाम जानों होई सोई गाम जात है। तैसे ही कोई भगवदीय द्वारा, कोई गुरु द्वारा, कोई ईश्वर द्वारा, जैसो अधिकारी तैसो संग पाये, उही मार्ग में भाव वाको दृढ़ होत है। सो गोविन्द दूबे को श्रीरनछोड़जी में दृढ़ भाव भयो, जो–आगे बरनन करत हैं।

वार्ता–प्रसंग २—एक समें श्रीआचार्यजी द्वारिका अड़ेल तें पधारें। तब गुजरात होइ कें पधारें। सो गोविंद दूबे, जगन्नाथ जोसी आदि पांच–सात वैष्णव संग चले। सो द्वारिका में श्रीआचार्यजी

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ નવરત્ન ગ્રંથ લખી મોકલ્યો. કે તૂ ચિંતા ન કર. ચિત્તની ઉદ્વેગતા છે તે પ્રભુની લીલા જાણ. શ્રીઠાકુરજીમાંથી મન બીજી જગાએ જાય તે પણ ભગવદ્ ઇચ્છા માની ચિંતા ન કરીશ જેટલી બને તેટલી સેવા કરજે. ત્યારે ગોવિંદ દુવેનુ મન સ્થિર થઇ ગયુ. જ્યાં મન લૌકિક વૈદિકમાં જાય તો ભગવદ્ ઇચ્છા માને. શ્રીરણછોડજીમાં મન બહુ જાય તેને ભગવદીચ્છા માને. ત્યાંની લીલામાં મગન રહે. કેમકે શાસ્ત્ર પુરાણમાં પ્રભુને મળવાના અનેક ઉપાય કહ્યા છે. જીવને કારણ માત્ર માર્ગ દેખાડ્યા છે. જે જ્યાંનો અધિકારી છે તેમાં તેનું મન સ્વતઃ સિદ્ધ લાગે છે. તેથી જેમ મનુષ્ય રસ્તા ચાલવાવાળાને દશ ગામના માર્ગ બતાવે પરંતુ જેને જે ગામ જવુ હોય તેજ ગામ જાય છે તેવી જ રીતે કોઇ ભગવદીય દ્વારા કોઇ ગુરુ દ્વારા કોઇ ઇશ્વર દ્વારા જેવો અધિકારી તેવો સંગ મળે તે માર્ગમાં તેનો ભાવ દૃઢ થાય છે. તે ગોવિન્દ દુવેનો શ્રીરણછોડજીમાં ભાવ દૃઢ થયો તે આગે વર્ણન કરે છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨—એક સમે શ્રીઆચાર્યજી અડેલથી દ્વારિકા પધાર્યા. ત્યારે ગુજરાત થઇને પધાર્યા. ત્યારે ગોવિંદ દુવે, જગન્નાથ જોશી વિગેરે પાંચ–સાત વૈષ્ણવો સાથે

आई पहोंचे। तब गोविंद दूवे ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो-महाराज! कछू कथा को प्रसंग चलाइये, तो बहोत आछो। तब श्री-आचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-बहोत आछो। परन्तु अब ही तो मोकों अवकास नाहीं है। अवकास होइगो तब कहूंगो।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, जो-तू व्रजलीला संबंधी नाहीं है। तातें कोई व्रजलीला सम्बन्धी विनती करे तो कहूं। तेरे आगे सुख न होइगो। यह अभिप्राय तें आपु कहैं, मोकों अवकास नाहीं है।

तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज! थोरी कहिये। तब श्री-आचार्यजी महाप्रभु पुस्तक खोलि कथा को आरंभ किये। इतने में श्रीरनछोड़जी आइ गोविन्द दूवे सों वार्ता करन लागें। सो गोविन्द दूवे श्रीरनछोड़जी सों वार्ता करत मगन ह्वै गये। यह न ज्ञान रह्यो, जो-श्रीआचार्यजी कथा कहत हैं। मैं वार्ता कैसे करूं? तब श्रीआ-चार्यजी गोविन्द दूवे सों कहें, पुस्तक खुलाइ कें वार्ता कोनसों करत हो? पाछें श्रीआचार्यजी पुस्तक परतें दृष्टी फेर कें देखें तो श्रीरन-छोड़जी सों गोविन्द दूवे वार्ता करत हैं। तब श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधिकें आपु गोविन्द दूवे उपर अप्रसन्न होइ कें पौढ़े। सो प्रातःकाल

ચાલ્યા. પછી દ્વારકામાં શ્રીઆચાર્યજી આવી પહોંચ્યા. ત્યારે ગોવિન્દ દુવેએ શ્રીઆ-ચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે, મહારાજ! કંઇ કથાનો પ્રસંગ ચલાવો તો બહુ સારૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, બહુ સારૂં. પરંતુ હમણાં તો મને અવકાશ નથી. અવકાશ હશે ત્યારે કહીશ.

ભાવપ્રકાશ—તેનો અર્થ એ, કે તૂ વ્રજલીલા સંબંધી નથી. તેથી કોઇ વ્રજલીલા સંબધી વિનતી કરે તો કહું. તારા આગળ સુખ નહી થાય. એ અભિ-પ્રાયથી પોતે કહ્યું, મને અવકાશ નથી.

ત્યારે ગોવિન્દ દુવેએ કહ્યું, મહારાજ! થોડી કહો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહા-પ્રભુએ પુસ્તક ખોલી કથાનો આરંભ કર્યો. એટલામાં શ્રીરણછોડજી આવી ગોવિંદ દુવેથી વાતો કરવા લાગ્યા. ત્યારે ગોવિંદ દુવે વાર્તા કરતાં શ્રીરણછોડજીથી મગન થઇ ગયા. એ જ્ઞાન ન રહ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી કથા કહે છે. હું વાર્તા કેમ કરૂં? ત્યારે શ્રી-આચાર્યજી ગોવિન્દ દુવેને કહે, પુસ્તક ખોલાવીને વાર્તા કોનાથી કરે છે? પછી શ્રીઆચાર્યજી પુસ્તક ઉપરથી દૃષ્ટિ ફેરવીને જુએ તો ગોવિંદ દુવે શ્રીરણછોડજીથી વાર્તા કરે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પુસ્તક બાંધીને પોતે ગોવિંદ દુવે ઉપર અપ્રસન્ન થઇને પોઢયા. પછી પ્રાતઃકાલ ઉઠીને પોતે જ્યારે રસોઇ કરી, ભોગ ધરી ભોજન કર્યું પછી

उठि कें आपु जब रसोई करि, भोग धरि भोजन किये। पाछे अपने खवास कृष्णदास मेघन सों कही, जो–आजु पाछें हमारी थार को महाप्रसाद काहू वैष्णव कों मति दीजो। दामोदरदास हरसानी और तुम लीजो। सो पहले नित्यनेम सों श्रीआचार्यजी की थार को महाप्रसाद वैष्णव ले, पाछें अपने हाथको लेते। सो खवास ने ऐसे ही कियो। दामोदरदास, जिनसों दमला कहते, सो और कृष्णदास लिये। और काहू कों न दिये। सो वा दिन सगरे वैष्णव उपवास किये, भूखे रहे। पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे। तब श्रीरनछोड़जी ने कही, काल्हि आपु सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद नाहीं दिये, सो सगरे वैष्णव भूखे रहे। तातें जैसे कृपा करिकें आपु सब वैष्णवनकों थार को महाप्रसाद देत हते तैसेइ दियो करो।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो–श्रीमुख की कथा सुनेगो तो व्रजलीला में मगन होइ जाइगो। पाछे मेरे हाथ आयवे को नाहीं। तातें गोविन्द दूबे कों वार्ता में लगाई कथा सुनन न दिये। और जो कोई कथा वार्ता करे ता समें, जो–कोइ वात करे तो जाको मन कथा में होई वाके मन में वड़ो दुःख होई। जैसे सुन्दर, मधुर भोजन करत कंकर दांत नीचे आवें दुःख होई। तेसेई कथा में कोई

પોતાના ખવાસ કૃષ્ણદાસ મેઘનને કહ્યું, કે આજ પછી અમારી થાળનો મહાપ્રસાદ કોઇ વૈષ્ણવને ન આપીશ. દામોદરદાસ હરસાની અને તમે લેજો. પહેલાં નિત્ય નિયમથી શ્રીઆચાર્યજીના થાળનો મહાપ્રસાદ વૈષ્ણવ લે પછી પોતાના હાથનો લેતા. તે ખવાસે એમજ કર્યું. દામોદરદાસ જેમને દમલા કહેતા તે અને કૃષ્ણદાસે લીધો. અને બીજાને ન આપ્યો. તેથી તે દિવસે સઘળા વૈષ્ણવોએ ઉપવાસ કર્યો. ભૂખ્યા રહ્યા. પછી બીજા દિવસે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીરણછોડજીના દર્શને પધાર્યા. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, કાલે આપે બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ નહીં આપ્યો તે બધા વૈષ્ણવો ભૂખ્યા રહ્યા. તેથી જેમ કૃપા કરીને આપ બધા વૈષ્ણવોને થાળનો મહાપ્રસાદ દેતા હતા તેમજ આપ્યા કરો.

ભાવપ્રકાશ—એનુ કારણ એ, કે શ્રીમુખની કથા સાંભળશે તો (ગોવિંદ દુવે) વ્રજલીલામાં મગન થઇ જશે. પછી મારા હાથ આવશે નહીં. તેથી ગોવિંદ દુવેને વાર્તામાં લગાડી કથા સાંભળવા ન દીધી. અને જો કોઇ કથા–વાર્તા કરે તે સમયે કોઇ વાત કરે તો જેનું મન કથામાં હોય તેના મનમાં બહુ દુઃખ થાય જેમ સુન્દર, મધુર ભોજન કરતાં કાંકરો દાંત નીચે આવે ત્યારે દુઃખ થાય તેમજ કથામાં

औरके बोले दुःख होई। तब श्रीआचार्यजी अप्रसन्न भये। रसाभास भयो। आपुकों रस उमड्यो हतो सो अंतर्धान ह्वै गयो। तातें आप पुस्तक बांधि पोढ़ि रहे। अथवा दूसरो अभिप्राय यह है, जो–श्रीआचार्यजी की कथा में श्रीरनछोड़जी विघन कैसें करि सकें? सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो–आप रस में मग्न भये हैं, सो मेरी अनेक प्रकार सों भक्तन संग लीला हैं, सो आवेस में कहेंगे। और आगे, श्रोता राजलीला को अधिकारी है। सो यह ठीक नाहीं। तातें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीरनछोड़जी कों प्रेरणा करि गोविन्द दूवे सों बात कराई। रस गोप्य करि दियो। तातें दूसरे दिन श्रीरनछोड़जी ने श्रीआचार्यजी सों कही, आपु वैष्णव पर अप्रसन्न काहे कों भये? जो–थार को महाप्रसाद न दिये। यह सगरो काम श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तें भयो है। मैंहूं नाहीं कियो। तातें आपु जैसे नित्य वैष्णव कों थार को महाप्रसाद देते तेसे दियो करो।

तब श्रीआचार्यजी डेरा पर आई, सब वैष्णव सों पूछे, जो–तुम काल्हि महाप्रसाद क्यों नाहीं लियो? तब सगरे वैष्णवन ने बिनती करी, महाराज! काल्हि थार को महाप्रसाद नाहीं पायो, तातें नाहीं प्रसाद लियो। तब श्रीआचार्यजी कहें, थार को प्रसाद तो देतो

કોઇ બીજાના બોલ્યાથી દુઃખ થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી અપ્રસન્ન થયા. રસાભાસ થયો. આપમાં રસ ઉમડયો હતો તે અંતર્ધાન થઇ ગયો. તેથી આપ પુસ્તક બાંધી પોઢી રહ્યા. અથવા બીજો અભિપ્રાય એ છે, કે શ્રીઆચાર્યજીની કથામાં શ્રીરણછોડજી વિઘ્ન કેવી રીતે કરી શકે? તેથી સાક્ષાત્ પુરૂષોત્તમ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે વિચાર્યું, કે આપ રસમાં મગ્ન થયા છે, તેથી મારી અનેક પ્રકારથી ભકતો સાથેની લીલા છે તે આવેશમાં કહેશે અને આગળ શ્રોતા રાજલીલાનો અધિકારી છે. તે ઠીક નહી. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધરે શ્રીરણછોડજીને પ્રેરણા કરી ગોવિન્દ દુવેથી વાત કરાવી, રસ ગોપ્ય કરી દીધો. તેથી બીજા દિવસે શ્રીરણછોડજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, આપ વૈષ્ણવ પર અપ્રસન્ન કેમ થયા! કે થાળનો મહાપ્રસાદ ન આપ્યો? આ બધું કામ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ઇચ્છાથી થયુ છે. મે પણ નથી કર્યું. તેથી આપ જેમ નિત્ય વૈષ્ણવોને થાળનો–પ્રસાદ દેતા તેમ દીધા કરો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મુકામ ઉપર આવી બધા વૈષ્ણવોને પૂછે, કે તમે કાલે મહાપ્રસાદ કેમ નહીં લીધો? ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ વિનંતી કરી, મહારાજ! કાલે થાળનો મહાપ્રસાદ ન મળ્યો તેથી પ્રસાદ ન લીધો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, થાળનો

उठि कें आपु जब रसोई करि, भोग धरि भोजन किये। पाछे अपने खवास कृष्णदास मेघन सों कही, जो–आजु पाछें हमारी थार को महाप्रसाद काहू वैष्णव कों मति दीजो। दामोदरदास हरसानी और तुम लीजो। सो पहले नित्यनेम सों श्रीआचार्यजी की थार को महाप्रसाद वैष्णव ले, पाछें अपने हाथको लेते। सो खवास ने ऐसे ही कियो। दामोदरदास, जिनसों दमला कहते, सो और कृष्णदास लिये। और काहू कों न दिये। सो वा दिन सगरे वैष्णव उपवास किये, भूखे रहे। पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे। तब श्रीरनछोड़जी ने कही, कालिह आपु सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद नाहीं दिये, सो सगरे वैष्णव भूखे रहे। तातें जैसे कृपा करिकें आपु सब वैष्णवनकों थार को महाप्रसाद देत हते तैसेइ दियो करो।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो–श्रीमुख की कथा सुनेगो तो व्रजलीला में मगन होइ जाइगो। पाछे मेरे हाथ आयबे को नाहीं। तातें गोविन्द दूबे कों वार्ता में लगाई कथा सुनन न दिये। और जो कोई कथा वार्ता करे ता समें, जो–कोइ बात करे तो जाको मन कथा में होई वाके मन में बड़ो दुःख होई। जैसे सुन्दर, मधुर भोजन करत कंकर दांत नीचे आवें दुःख होई। तेसेई कथा में कोई

પોતાના ખવાસ કૃષ્ણદાસ મેઘનને કહ્યું, કે આજ પછી અમારી થાળનો મહાપ્રસાદ કોઇ વૈષ્ણવને ન આપીશ. દામોદરદાસ હરસાની અને તમે લેજો. પહેલાં નિત્ય નિયમથી શ્રીઆચાર્યજીના થાળનો મહાપ્રસાદ વૈષ્ણવ લે પછી પોતાના હાથનો લેતા. તે ખવાસે એમજ કર્યું. દામોદરદાસ જેમને દમલા કહેતા તે અને કૃષ્ણદાસે લીધો. અને બીજાને ન આપ્યો. તેથી તે દિવસે સઘળા વૈષ્ણવોએ ઉપવાસ કર્યો. ભૂખ્યા રહ્યા. પછી બીજા દિવસે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીરણછોડજીના દર્શને પધાર્યા. ત્યારે શ્રીરણછોડજીએ કહ્યું, કાલે આપે બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ નહો આપ્યો તે બધા વૈષ્ણવો ભૂખ્યા રહ્યા તેથી જેમ કૃપા કરીને આપ બધા વૈષ્ણવોને થાળનો મહાપ્રસાદ દેતા હતા તેમજ આપ્યા કરો.

ભાવપ્રકાશ—એનુ કારણુ એ, કે શ્રીમુખની કથા સાંભળશે તો (ગોવિંદ દુબે) વ્રજલીલામાં મગન થઇ જશે. પછી મારા હાથ આવશે નહીં. તેથી ગોવિંદ દુબેને વાર્તામાં લગાડી કથા સાંભળવા ન દીધી. અને જો કોઇ કથા–વાર્તા કરે તે સમયે કોઇ વાત કરે તો જેનું મન કથામાં હોય તેના મનમાં બહુ દુઃખ થાય જેમ સુન્દર, મધુર ભોજન કરતાં કાંકરો દાંત નીચે આવે ત્યારે દુઃખ થાય તેમજ કથામાં

औरके बोले दुःख होई। तब श्रीआचार्यजी अप्रसन्न भये। रसाभास भयो। आपुकों रस उमड्यो हतो सो अंतर्धान ह्वै गयो। तातें आप पुस्तक बांधि पोढ़ि रहे। अथवा दूसरो अभिप्राय यह है, जो–श्रीआचार्यजी की कथा में श्रीरनछोड़जी विघन कैसें करि सकें? सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो–आप रस में मग्न भये हैं, सो मेरी अनेक प्रकार सों भक्तन संग लीला हैं, सो आवेस में कहेंगे। और आगे, श्रोता राजलीला को अधिकारी है। सो यह ठीक नाहीं। तातें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीरनछोड़जी कों प्रेरणा करि गोविन्द दूबे सों वात कराई। रस गोप्य करि दियो। तातें दूसरे दिन श्रीरनछोड़जी ने श्रीआचार्यजी सों कही, आपु वैष्णव पर अप्रसन्न काहे कों भये? जो–थार को महाप्रसाद न दिये। यह सगरो काम श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तें भयो है। मैंहूं नाहीं कियो। तातें आपु जैसे नित्य वैष्णव कों थार को महाप्रसाद देते तेसे दियो करो।

तब श्रीआचार्यजी डेरा पर आई, सब वैष्णव सों पूछे, जो–तुम कालिह महाप्रसाद क्यों नाहीं लियो? तब सगरे वैष्णवन ने बिनती करी, महाराज! कालिह थार को महाप्रसाद नाहीं पायो, तातें नाहीं प्रसाद लियो। तब श्रीआचार्यजी कहें, थार को प्रसाद तो देतो

કોઇ બીજાના બોલ્યાથી દુઃખ થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી અપ્રસન્ન થયા. રસાભાસ થયો. આપમાં રસ ઉભડયો હતો તે અંતર્ધાન થઇ ગયો. તેથી આપ પુસ્તક બાંધી પોઢી રહ્યા. અથવા બીજો અભિપ્રાય એ છે, કે શ્રીઆચાર્યજીની કથામાં શ્રીરણછોડજી વિઘ્ન કેવી રીતે કરી શકે? તેથી સાક્ષાત્ પુરૂષોત્તમ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે વિચાર્યું, કે આપ રસમાં મગ્ન થયા છે, તેથી મારી અનેક પ્રકારથી ભક્તો સાથેની લીલા છે તે આવેશમાં કહેશે અને આગળ શ્રોતા રાજલીલાનો અધિકારી છે. તે ઠીક નહી. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધરે શ્રીરણછોડજીને પ્રેરણા કરી ગોવિન્દ દુવેથી વાત કરાવી, રસ ગોપ્ય કરી દીધો. તેથી બીજા દિવસે શ્રીરણછોડજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, આપ વૈષ્ણવ પર અપ્રસન્ન કેમ થયા? કે થાળનો મહાપ્રસાદ ન આપ્યો? આ બધું કામ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ઇચ્છાથી થયું છે. મે પણ નથી કર્યું. તેથી આપ જેમ નિત્ય વૈષ્ણવોને થાળનો–પ્રસાદ દેતા તેમ દીધા કરો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મુકામ ઉપર આવી બધા વૈષ્ણવોને પૂછે, કે તમે કાલે મહાપ્રસાદ કેમ નહીં લીધો? ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ વિનંતી કરી, મહારાજ! કાલે થાળનો મહાપ્રસાદ ન મળ્યો તેથી પ્રસાદ ન લીધો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, થાળનો

नाहीं, परन्तु तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर तें भइ, तातें देऊँगो।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो–तुम्हारो दोष नाहीं है। यह काम सब प्रभु की ओरतें भयो, तातें महाप्रसाद देऊँगो।

तब सगरे वैष्णवन ने बिनती करी, महाराज! हम आपुके चरणारविंद सों लागे हैं। हमारो भलो होइगो, सो आपु करोगे। तब श्रीआचार्यजी अपने खवास कों आज्ञा दिये जैसे नित्य थार को महाप्रसाद सबकों देते तेसे दियो करियो। तब खवास ने महाप्रसाद दियो। तब सगरे वैष्णव महाप्रसाद लियो। पाछें कछुक दिन द्वारिका में रहि, पाछें श्रीरनछोड़जी सों बिदा होई अड़ेल पधारे। तब सगरे वैष्णव अड़ेल ताँई संग आये। पाछें सगरे वैष्णव बिदा होई अड़ेलतें श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि अपने अपने घर आये। तब गोविन्द दूवे अपने घर खेरालू में आये।

भावप्रकाश—सो श्रीरनछोड़जी के कहेतें महाप्रसाद दिये, परन्तु गोविन्द दूवे संग रहै। तहां तांई कोई कथा न कहै। सो अधिकारी बिना वार्ता को रस न होई। यह जताये।

वार्ता–प्रसंग ३—और एक समें गोविन्द दूवे मीराबाई के

પ્રસાદ તો દેતો નહીં પરંતુ તમારી શિફારસ મોટી જગાએથી થઇ તેથી દઇશ.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ, કે તમારો દોષ નથી એ કામ બધું પ્રભુની તરફથી થયુ. તેથી મહાપ્રસાદ દઇશ.

ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ વિનંતી કરી, મહારાજ! અમે આપના ચરણારવિંદથી લાગ્યા છીએ. અમારૂં ભલું થાય તેમ આપ કરશો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાના ખવાસને આજ્ઞા આપી, કે જેમ નિત્ય થાળનો મહાપ્રસાદ બધાને આપતા તેમ આપ્યા કરો. ત્યારે ખવાસે મહાપ્રસાદ આપ્યો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. પછી કેટલાક દિવસ દ્વારકામાં રહી પછી શ્રીરણછોડજીથી વિદાય થઇ અડેલ પધાર્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો અડેલ સુધી સાથે આવ્યા પછી બધા વૈષ્ણવો વિદાય થઇ અડેલથી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી પોતપોતાના ઘરે આવ્યા. ત્યારે ગોવિન્દ દુવે પોતાના ઘર ખેરાળુમાં આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીરણછોડજીના કહેવાથી મહાપ્રસાદ દીધો પરંતુ ગોવિન્દ દુવે સંગ રહ્યા ત્યાં સુધી કોઇ કથા ન કહી. કેમ જે અધિકારી વિના વાર્તાનો રસ ન થાય એમ જણાવ્યું.

વાર્તા-પ્રસગ ૩—વળી એક સમય ગોવિન્દ દુવે મીરાંબાઇના ઘરે ગયા તે મીરાં-

घर गये। सो मीराबाई सों भगवद् वार्ता करत कछुक दिन उहां अटके। सो यह बात श्रीगुसांईजी नें सुनी, जो–श्रीआचार्यजी के सेवक गोविन्द दूवे मीराबाई के पास हैं, वार्ता चरचा करत हैं। तब श्रीगुसांईजी नें एक श्लोक लिखकें व्रजवासी कों दिये। और कहें, मीराबाई के घर गोविन्द दूवे हैं, तिनकों यह कागद दे आऊ। तामें एक यह श्लोक लिखें—

भगवत्पदपद्मपरागयुतो न हि शुक्ततरं मरणेऽपि तराम्
इतराश्रयणं गजराजगतो न हि रासभमप्युररीकुरुते ॥ १ ॥

यामें यह लिखें, जो–हाथी की असवारी करी, सो फेरि गदहा पर असवारी न करें, प्राण जाई तहां तांई। तेसे, जो–कोई भगवान के पद्कमल के पराग को आस्वादन करिकें इतराश्रय, और को आश्रय, अन्य रसकों कबहूं न चाखें। मरन पर्यंत दुःख सहें। परन्तु और रस ग्रहन न करें।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–श्रीआचार्यजी को सेवक तू होइ, और अन्यमार्गीय मीराबाई के इहां तू भगवद् वार्ता में अटक्यो? सो या प्रकार हाथी की असवारी छोड़ि गदहा की असवारी है।

सो यह कागद व्रजवासी नें गोविन्द दूवे के हाथ में दियो। ता समें गोविन्द दूवे तलाव के उपर गाम बाहिर संध्यावंदन करत

બાઇથી ભગવદ્વાર્તા કરતાં થોડાક દિવસ ત્યાં રોકાયા. એ વાત શ્રીગુસાંઇજીએ સાંભળી, કે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ગોવિન્દ દુવે મીરાંબાઇની પાસે છે. વાર્તા–ચર્ચા કરે છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ એક શ્લોક લખીને વ્રજવાસીને આપ્યો. અને કહ્યું, મીરાંબાઇના ઘરે ગોવિંદ દુવે છે તેમને આ કાગળ આપી આવ. તેમાં એક આ શ્લોક લખ્યો—

ભગતત્પદપદ્મપરાગયુતો....... ....(ઉપર જુઓ)

એમાં એ લખ્યું, કે હાથીની સ્વારી કરી તે ફરી ગધેડા ઉપર સ્વારી ન કરે પ્રાણ જાય ત્યાં સુધી. તેથી જે કોઇ ભગવાનના પદકમલના પરાગનું આસ્વાદન કરીને બીજાનો ઇતરાશ્રય, જે બીજાનો આશ્રય અન્ય રસને કદીય ન ચાખે. મરણ પર્યંત દુઃખ સહે. પરંતુ બીજો રસ ગ્રહણ ન કરે

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજીનો તૂ સેવક થઇ અને અન્યમાર્ગીય મીરાંબાઇને ત્યાં તૂ ભગવદ્વાર્તામાં અટક્યો ? તે આ પ્રકારે હાથીની સ્વારી છોડી ગધેડાની સ્વારી છે.

આ કાગળ વ્રજવાસીએ ગોવિન્દ દુવેના હાથમાં આપ્યો. તે સમયે ગોવિન્દ દુવે

तो तहां जैये। सूतक के दिन कटत नाहीं। तब एक ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा करि इहां पधारे हैं, सो कथा बहोत सुन्दर कहत हैं। तहां तुम तीसरे प्रहर जैयो। तब राजा दूबे, माधो दूबे वासों कहैं, हमकों आज तुम ले चलियो, फिरि हम नित्य जायंगे। तब उनने कही, आछो। सो (वह) तीसरे प्रहर आई, राजा दूबे, माधो दूबे कों ले गयो। सो दोऊ भाई दूरितें दंडौत करि दूरि बैठें। तब श्रीआचार्यजी कहैं, आगें आवो। तब दोऊ भाई कहैं, महाराज! हमकों सूतक हैं, तातें दूरि बैठे हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम दोऊ भाई सदा सुद्ध हो। सो हमारे आगे आइ बैठो। और संदेह होइ सो पूछियो।

तब दोऊ भाई प्रसन्न होई आगें आइ बैठे। तब श्रीआचार्यजी नंदमहोत्सव को वर्णन, श्रीभागवत दशमस्कंध के पांचमें अध्याय को वर्णन किये। सो नंदालय की लीला को प्रगट अनुभव दोऊ भाईनकों कराय दिये। पाछें सब कथा होय चुकी तब दोऊ दण्डौत करिकें कहें, महाराज! कहा करिये? सूतक है, नाहीं तो विनती करते। अब हमारो जन्म सुफल भयो। जो-आपके दरसन पाये। तब श्रीआचार्यजी कहैं, हम तिहारे मनकी बात जाने हैं। जो-तुम दोऊ हमारे हो, सूतक पाछें अङ्गीकार करेंगे। तहां तांई हम इहां हैं। तुमकों अङ्गीकार करि, तुम्हारे

ત્યારે એકે કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પૃથ્વી-પરિક્રમા કરી અહીં પધાર્યા છે. તે કથા બહુ સુંદર કહે છે. ત્યાં તમે ત્રીજા પ્રહરે જજો. ત્યારે રાજા દુવે માધો દુવેએ એને કહ્યું, અમને આજ તમે લઇ ચાલજો. પછી અમે નિત્ય જઇશું. ત્યારે તેણે કહ્યું, સારૂ. પછી ત્રીજા પ્રહરે આવી રાજા દુવે માધો દુવેને લઇ ગયો. પછી બન્ને ભાઇઓ દૂરથી દંડવત્ કરીને બેઠા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આગળ આવો. ત્યારે બન્ને ભાઈ કહે, મહારાજ! અમને સૂતક છે તેથી દૂર બેઠા છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે બન્ને ભાઇ સદા શુદ્ધ છો. અમારી આગળ આવી બેસો અને સંદેહ હોય તે પૂછો.

ત્યારે બન્ને ભાઇ પ્રસન્ન થઇ આગળ આવી બેઠા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નંદમહોત્સવનું વર્ણન શ્રીભાગવત દશમસ્કંધના પાંચમા અધ્યાયનું વર્ણન કર્યું. બન્ને ભાઇને નંદાલયની લીલાનો અનુભવ કરાવી દીધો. પછી બધી કથા થઇ ચૂકી ત્યારે બન્ને ભાઇ દંડવત કરીને કહે, મહારાજ! શું કરિયે? સૂતક છે નહી તો વિનતી કરતા. હવે અમારો જન્મ સફલ થયો, કે આપનાં દર્શન મળ્યાં. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજી કહે, અમે તમારા મનની વાત જાણીએ છીએ. તમે બન્ને અમારા છો. સૂતક પછી અંગીકાર કરીશું. ત્યાં સુધી અમે અહીં છીએ. તમને અંગીકાર કરી

सगरे मनोरथ पूर्ण करि, और ठौर जायगें। तुम चिन्ता फिकर मति करियो। अब अपने डेरा पर जाय काल्हि याही समें यहां अइयो। तब दोऊ भाई दण्डौत करि प्रसन्न होइ डेरा पे गये। सो सगरी राति नंदालय की लीला को अनुभव आवेस रह्यो। पाछें सवेरे उठिकें दोऊ भाई आपुस में बतराये, जो–अब आपुन कृतार्थ भये। श्रीआचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, जो–एक दिन की कथा में लीलारस को अनुभव कराये। पाछें याही भांति सूतक के दिन नीठि नीठि विताये। ग्यारमे दिन न्हाइ के सुद्ध होई, श्रीआचार्यजी के पास बड़े सवेरे आई विनती किये, महाराज़! हमकों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाईन कों फेरि न्हवाईके नाम सुनाए, ब्रह्मसंबंध कराए। पाछें श्रीआचार्यजी कहें, अब तुम भगवद् सेवा करो। तब राजा दूबे, माधो दूबे कहें महाराज! हमारे पिता के ठाकुर हमारे पास हैं। पिता–माता पूजा मार्ग की रीति सों करते, सो इहां आय देह छोड़ी। हम पर आपकी कृपा भई, जा प्रकार आज्ञा करो, ता प्रकार सेवा करें। तब श्रीआचार्यजी कहें, जाऊ डेरातें श्रीठाकुरजी ले आवो। तब माधो दूबे जाइके ठाकुर की झांपी ले आए। सो श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कों पञ्चामृत स्नान कराई राजा

તમારા સઘળા મનોરથ પૂર્ણ કરી બીજી જગાએ જઇશું. તમે ચિંતા ફિકર ન કરો. હવે તમારે મુકામે જઇ કાલે આ જ સમયે અહીં આવજો. ત્યારે બન્ને ભાઇ દંડવત કરી પ્રસન્ન થઇ મુકામ ઉપર ગયા. પછી બધી રાત્રી નંદાલયની લીલાનો અનુભવનો આવેશ રહ્યો. પછી સવારે ઉઠીને બન્ને ભાઇએ પરસ્પર વાતચિત કરી, કે હવે આપણે કૃતાર્થ થયા. શ્રીઆચાર્યજી સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ છે, કે એક દિવસની કથામાં લીલારસનો અનુભવ કરાવ્યો. પછી એજ પ્રકારે સૂતકના દિવસ નીઠ નીઠ વિતાવ્યા. અગ્યારમા દિવસે ન્હાઇને શુદ્ધ થઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે વ્હેલી સવારે આવી વિનંતી કરી, મહારાજ! અમને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બન્ને ભાઇને ફરી નવડાવીને નામ સંભળાવ્યું. બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તમે ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે રાજા દુબે માધો દુબે કહે, મહારાજ! અમારા પિતાના ઠાકુર અમારી પાસે છે. પિતા-માતા પૂજામાર્ગની રીતિથી કરતાં તે અહીં આવી દેહ છોડી. અમારા ઉપર આપની કૃપા થઇ. હવે જે પ્રકારે આજ્ઞા કરો તે પ્રકારે સેવા કરીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જાવ, મુકામેથી શ્રીઠાકુરજી લઇ આવો. ત્યારે માધો દુબે જઇને ઠાકુરની ઝાંપી લઇ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી રાજા દુબે માધો દુબેના માથે પધરાવ્યા.

दूवे माधो दूवे के माथे पधराए। और आज्ञा किये, सब ठोरतें मन छुटाई निरोध करि भगवद् सेवा करियो। तब राजा दूवे माधो दूवे बिनती करी, जो–महाराज! निरोध को स्वरूप कहा है? तब श्रीआचार्यजी कहें, निरोध दोई प्रकार को। एक साधन दसा को, एक सिद्ध दसा को। साधन दसा के निरोध के लक्षन यह, जो–संसार लौकिक वैदिक मन में सुहाय नहीं। यही मनमें रहे, जो–कब भगवद् सेवा करूं? कब कथा वार्ता करूं? यामें रुचि उपजे। मन कछू लौकिक में जाय तो, फेरि खेंचि सेवा में लगावे। यह जानें, जो–एक भगवान ही के आश्रय तें सब कार्य सिद्ध होत हैं। यह साधन दसा को निरोध। और फल दसा को निरोध यह, जो–मन को स्वतः ही सिद्ध यही सुभाव परे, जो–श्रीठाकुरजी के स्वरूप के ध्यान बिना और ठोर जाय नाहीं। लौकिक वैदिक कार्य हू करे। परंतु मन श्रीठाकुरजी बिना और ठोर जाय नाहीं। यह फल दसा को निरोध। तिनकों यह संसार को दुःख, सुख अनेक ताप हैं सो, लगे नाहीं। मन श्रीठाकुरजी और उनके लीला रस में मग्न रहै। यह निरोध को प्रकार है। तब राजा दूवे माधोदूवे बिनती किये, महाराजाधिराज! हमकों तो दोई प्रकार को निरोध दुर्लभ हैं। तातें जैसे आपु हमकों संसार समुद्र में ते डूबते बांहि पकरि

અને આજ્ઞા કરી, બધી જગાએથી મન છોડીને નિરોધ કરી ભગવદ્સેવા કરજો. ત્યારે રાજા દુવે માધો દુવેએ વિનંતી કરી, જે મહારાજ! નિરોધનું સ્વરૂપ શું છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, નિરોધ બે પ્રકારના. એક સાધન દશાનો. બીજો, સિદ્ધ દશાનો. સાધન દશાના નિરોધનું લક્ષણ એ જે સંસાર લૌકિક વૈદિક મનમાં ગમે નહીં. એજ મનમાં રહે, કે ક્યારે ભગવદ્સેવા કરૂં? ક્યારે કથા–વાર્તા કરૂં? એમાં રૂચી થાય, મન કંઇ લૌકિકમાં જાય તો ફરી સેવામાં ખેંચીને લગાડે. એ જાણે, કે ભગવાનના જ આશ્રયથી બધું કાર્ય સિદ્ધ થાય છે. આ સાધન દશાનો નિરોધ. બીજો ફલ દશાનો નિરોધ એ, કે મનનો આપ મેળે જ એવો સ્વભાવ પડે, કે તે શ્રીઠાકુરજીના સ્વરૂપના ધ્યાન વિના બીજી જગાએ જાય નહી. લૌકિક વૈદિક કાર્ય પણ કરે પરંતુ મન શ્રી-ઠાકુરજીના વિના બીજી જગાએ જાય નહી. એ ફલ દશાનો નિરોધ. તેને આ સંસારનું દુઃખ સુખ અનેક તાપ છે તે લાગે નહીં. મન શ્રીઠાકુરજી અને તેમની લીલા રસમાં મગ્ન રહે. આ નિરોધનો પ્રકાર છે. ત્યારે રાજા દુવે માધો દુવેએ વિનંતી કરી, મહા-રાજાધિરાજ! અમને તો બન્નેય પ્રકારનો નિરોધ દુર્લભ છે. તેથી આપે જેમ અમને સંસાર સમુદ્રમાંથી ડુબતા હાથ પકડીને શરણે લીધા છે. તેજ પ્રકારે નિરોધનું દાન

के सरनि लिये हैं, याही प्रकार निरोध को दान आपु करोगे तो हमकों कछु सिद्ध होइगो। और प्रकार हमारो तो सामर्थ नाहीं हैं। या प्रकार दोऊ भाई की दैन्यता, सरल स्वभाव, देखि के, दशमस्कंद (जाकों) निरोध स्कंध कहें हैं, ताको आपु "निरोध लक्षन" ग्रंथ करि, दोऊ भाईन कों पाठ कराय के कहें, तुम दोऊ भाईन कों निरोध सिद्ध होईगो। यह कहि अपनो चरणामृत दोऊ भाईन कों दिये। सो तत्काल दोऊ भाई को मन अलौकिक ह्वै गयो। लीला रस को अनुभव होंन लग्यो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब अपने घर जाय सेवा करो। जाकों निरोध भयो वाकों, बहुत बोलनो, देस फिरनो नाहीं। तातें घर, जाऊं, दैवी जीव आवें तिनकों नाम दीजो। तुमकों तो निरोध सिद्ध भयो। और, जो–तुम्हारो संग मन लगाय के करेगो, ताहू कों निरोध सिद्ध होयगो। तब राजा दूवे, माधोदूवे पास द्रव्य हतो सो श्रीआचार्यजी की भेट करि बिदा होई, द्वारिका तें चले। सो अपने गाम मणुंद में आए। घर में आइ दोई भाई भगवद् सेवा करन लागे। कछुक द्रव्य घर में हतो तामें निर्वाह करें। काहू सों बहोत बोले नांही। जो–आवे ता-पर दया करि के खानपान को समाधान करें। भगवद् वार्ता करि दोऊ भाई श्रीठाकुरजी की लीला रस में मग्न रहते।

આપ કરશો તો તે અમને કંઇક સિદ્ધ થશે. બીજી પ્રકારે અમારૂં તો કોઇ સામર્થ્ય નથી. એ પ્રકારે બન્ને ભાઇની દીનતા, સરલ સ્વભાવ જોઇને દશમસ્કંધ (જેને) નિરોધસ્કંધ કહે છે તેનો આપે 'નિરોધલક્ષણ' ગ્રંથ કરી તેનો બન્ને ભાઇને પાઠ કરાવીને કહે, તમને બન્ને ભાઇઓને નિરોધ સિદ્ધ થશે. એમ કહી પોતાનું ચરણામૃત બન્ને ભાઇને આપ્યું. ત્યારે તત્કાલ બન્ને ભાઇનું મન અલૌકિક થઇ ગયું. લીલારસનો અનુભવ થવા લાગ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તમારા ઘરે જઇ સેવા કરો. જેને નિરોધ થયો તેને બહુ બોલવું, દેશોમાં ફરવું નહીં. તેથી ઘર જાવ. દૈવી જીવ આવે તેમને નામ આપજો. તમને નિરોધ સિદ્ધ થયો. અને જે તમારો સંગ મન લગાવીને કરશે તેને પણ નિરોધ સિદ્ધ થશે. ત્યારે રાજા દુવે માધો દુવેની પાસે દ્રવ્ય હતું. તે શ્રીઆચાર્યજીની ભેટ કરી, વિદાય થઇ દ્વારકાથી ચાલ્યા. તે પોતાના ગામ મણુંદમાં આવ્યા. ઘરમાં આવી બન્ને ભાઇ ભગવદ્‌સેવા કરવા લાગ્યા. કંઇક દ્રવ્ય ઘરમાં હતું તેમાં નિર્વાહ કરે. કોઇનાથી વધારે બોલે નહી. જે આવે તેના ઉપર દયા કરીને ખાનપાનનું સમાધાન કરે. ભગવદ્‌વાર્તા કરીને બન્ને ભાઇ શ્રીઠાકુરજીની લીલા–રસમાં મગન રહેતા.

वार्ता-प्रसंग १—सो जा गाम में राजा दुवे, माधो दुवे रहते। ता गाम में दोई भाई सांचोरा ब्राह्मण और रहते। सो बड़े भाई को नाम रामजी और छोटे भाई को नाम हरिकृष्ण। तामें बड़ो भाई रामजी पढ्यो हतो। सो गाम में पटेल के आगे चोतरा पर बैठिके कथा कहेतो। और छोटो भाई मूरख हतो, सो बड़े भाई के खेत की रखवारी करतो। सो बड़ो भाई रामजी और गाम कार्यार्थ गयो, तब कथा रही। तब एक दिन बरसा बहोत भई। सीतकाल के दिन हते। सो छोटो भाई सांझ कों खेत पर तें आयो। तब भावज ने कह्यो, रोटी खायगो ? तब उह देवर ने कही, मोकों सीत बहोत लागत है, तू मोकों रोटी ताती करि देई तो मैं जेंऊँ। तब भावज ने कह्यो, खानो होइ तो खा, नातर मैं सोइ रहोंगी। तू कहा गाम के पटेल के चोंतरा पर कथा बांचेगो, के दादे को ग्रास बहोत दिन को अटक्यो है, सो फेरेगो ? जो-हों तोकों ताती रोटी करि देऊं? खानो होइ तो खा, नांतरु सोइ रहि, मेरे आगे तें उठि जाऊ। ये बचन भावज के सुनि कें मनमें बहोत दुःख भयो। जैसे मन, हृदय में, बान लागें। सो तत्काल घर में सों बाहर निकस्यो। तब मन में बिचार कियो, जो-अब देह को त्याग करनो। के कहूं यह गाम छोड़ के कोई और देस कों जानो।

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—જે ગામમાં રાજા દુવે માધો દુવે રહેતા તે ગામમાં બન્ને ભાઇ સાંચોરા બ્રાહ્મણ બીજા રહેતા. તેમાંના મોટાભાઇનુ નામ રામજી અને નાના ભાઇનું નામ હરિકૃષ્ણ. તેમા મોટો ભાઇ રામજી ભણ્યો હતો. તે ગામમાં પટેલના આગળ ચોતરા ઉપર બેસીને કથા કહેતો. બીજો નાનો ભાઇ મૂરખ હતો. તે મોટા ભાઇના ખેતરની રખવાલી કરતો. એક સમયે મોટો ભાઇ રામજી બીજા ગામ કાર્ય માટે ગયો ત્યારે કથા રહી. ત્યારે એક દિવસ વર્ષા ઘણી થઇ. શીતકાલના દિવસ હતા. તે નાનો ભાઇ સાંજના ખેતર ઉપરથી આવ્યો. ત્યારે ભાભીએ કહ્યું, રોટી ખાઇશ ? ત્યારે તે દીયરે કહ્યું, મને ઠંડ ઘણી લાગે છે. તૂ મને રોટલી ગરમ કરી દે તો હું જમું. ત્યારે ભાભીએ કહ્યું, ખાવું હોય તો ખા નહીં તો હું સૂઇ રહીશ. તુ શું ગામના પટેલના ચોતરા ઉપર કથા વાંચીશ કે દાદાનો કોળ બહુ દિવસનો અટકયો છે તે ફેરીશ ? જે હું તને ગરમ રોટલી કરી દઉં ? ખાવું હોય તો ખા, નહીતો સૂઇ રહે; મારી આગળથી ઉઠી જા. આવાં ભાભીનાં વચન સાંભળીને મનમાં ઘણું દુઃખ થયું. જેમ મન, હૃદયમાં બાણ લાગે. તે તત્કાલ ઘરમાંથી બહાર નિકળ્યો ત્યારે મનમાં વિચાર કર્યો, કે હવે દેહનો ત્યાગ કરવો કે કંઇ આ ગામ છોડીને કોઇ બીજા દેશમાં જવું. ફરી મનમાં એ આવ્યું, કે

फेरि मन में यह आई, जो–गाम में राजा दुवे, माधो दुवे महापुरुष हैं, उनकों नमस्कार करिके कहूं जाऊं। सो राजा दुवे, माधो दुवे के घर आइ, दोऊ भाईन कों नमस्कार कियो, और रोवन लाग्यो। तब दोऊ भाई कहें, तू कौन है? पाछें पास आइ पहचानि कें कहें, तू तो फलाने को बेटा है, हमारी ज्ञाति हैं। तब उनने कही, मेरे दुःख को पार नाहीं है, अब मैं देह त्याग करूंगो। सो तुमकों नमस्कार करन आयो हूँ। तब माधो दूवे ने कही, श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ युक्त हैं, वे दुःख दूरि करेंगे, तातें तू अपनो दुःख तो कहि। तब इन सगरे समाचार कहें। जो–मोकों भावज ने ऐसे वचन कहें, सो हृदय (में) खूंचत हैं। सो मैं तिहारी सरनि हों। मेरो दुःख दूरि करिये। सो तब दोऊ भाई वाको समाधान कियो, जो–श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे। पाछें वाकों महाप्रसाद लिवाये, कह्यो, अब सोइ रहे। पाछें प्रातःकाल भयो। तब माधो दूवे वाकों उठाइ के कहें, अब तू स्नान संध्या वंदन करिके यहां अइयो। तब उह देह कृत्य करि स्नान संध्या करिकें आयो। तब माधो दूवे ने राजा दूवे सों कह्यो, अब यासों कहेनो होई सो कहो। तब राजा दूवे ने कही, तुम्हारी जीभ चली है, सो कछू कहोगे। ये झार लगाए हो। अपने ऐसें काहे कों करनों? अनेक संसार में दुःखी सुखी हैं। तब माधो दूवे ने राजा दूवे सों

ગામમાં રાજા દુવે માધો દુવે મહાપુરૂષ છે. એમને નમસ્કાર કરીને કંઈ જઉં. પછી રાજા દુવે માધો દુવેના ઘરે આવી બન્ને ભાઇને નમસ્કાર કર્યા. અને રોવા લાગ્યો. ત્યારે બન્ને ભાઇ કહે, તૂ કોણ છે? પછી પાસે આવી ઓળખીને કહે, તૂ તો ફલાણાનો બેટો છે. અમારી જ્ઞાતિનો છે. ત્યારે તેણે કહ્યું, મારા દુઃખનો પાર નથી. હવે હું દેહ ત્યાગ કરીશ. તેથી તમને નમસ્કાર કરવા આવ્યો છું. ત્યારે માધો દુવેએ કહ્યું, શ્રી-ઠાકુરજી સર્વ સામર્થ્યયુક્ત છે. તે દુઃખ દૂર કરશે. તેથી તૂં તારૂં દુઃખ તો કહે. ત્યારે એણે બધા સમાચાર કહ્યા. જે મને ભાભીએ આવાં વચન કહ્યાં. તે હૃદયમાં ખૂંચે છે. તેથી હું તમારા શરણે છું. મારૂં દુઃખ દૂર કરો. ત્યારે બન્ને ભાઇએ એનું સમાધાન કર્યું, કે શ્રીઠાકુરજી બધું ભલું કરશે. પછી એને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. કહ્યું, હવે સૂઇ રહે. પછી સવાર થયું ત્યારે માધો દુવે એને જગાડીને કહે, હવે તૂં સ્નાન સંધ્યા વંદન કરીને અહીં આવજે. ત્યારે તે દેહ કૃત્ય કરી સ્નાન સંધ્યા કરીને આવ્યો. ત્યારે માધો દુવેએ રાજા દુવેને કહ્યું, હવે એને કહેવું હોય તે કહો. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, તમારી જીભ ચાલી છે તે કંઇ કહેશો. એ ઝાડ લગાડયું છે. આપણે એવું શા માટે કરવું?

कह्यो, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक हो, सो यह बहोत दुःखी है, या पर कृपा करो। तब राजा दूवे कहे, तुम कहो तब माधो दुवे कहे, यह काम तुम्हारे आगे मोकों कहनो उचित नाहीं है। तब राजा दूवे कहे, हमारी आज्ञा है कहो ?

भावप्रकाश–सो राजा दूवे कहें, झार लगायो है, ताको कारन यह, लीला संबंधी दैवी नाहीं है, कृपा करि उद्धार होइगो।

तब माधो दूवे श्रीठाकुरजी के मन्दिर के द्वार आगे बेठाइकें, श्रीआचार्यजी को स्मरन करि अष्टाक्षर मंत्र को उपदेश किये। नाम दे पाछें अष्टाक्षर की माला जप कराये। सो उह संस्कृत बोलन लाग्यो। तब माधो दूवे ने राजा दूवे सों कह्यो, आज्ञा होई तो याकों एक माला को जप और कराऊं। तब राजा दुवे ने कही, अवस्य जप और करावो। तब माधो दुवे ने एक माला अष्टाक्षर को और जाप कराये। तब वह श्रीभागवत पुराण शास्त्र सबके अर्थ कों जानन लाग्यो। तब माधो दुवे ने राजा दुवे सों कही, आज्ञा होइ तो एक जप और कराऊं। तब राजा दुवे ने कही, यह इतनो ही पात्र है। आगे रस उछरेगो।

અનેક સંસારમાં દુઃખી સુખી છે. ત્યારે માધો દુવેએ રાજા દુવેને કહ્યું, તમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છો. માટે આ બહુદુઃખી છે એના ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, તમે કહો, ત્યારે માધો દુવેએ કહ્યું, આ કામ તમારા આગળ મને કહેવું ઉચિત નથી. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, અમારી આજ્ઞા છે, કહો.

ભાવપ્રકાશ—રાજા દુવે કહે, ઝાડ લગાડયુ છે, તેનું કારણ એ, લીલા સંબંધી દૈવી નથી. કૃપા કરી ઉદ્ધાર થશે.

ત્યારે માધો દુવે શ્રીઠાકુરજીના મંદિરના દ્વાર આગળ બેસાડીને શ્રીઆચાર્યજીનું સ્મરણ કરાવી અષ્ટાક્ષર મંત્રનો ઉપદેશ કર્યો. નામ દઇ પછી અષ્ટાક્ષરની માળા જપ કરાવી ત્યારે તે સંસ્કૃત બોલવા લાગ્યો. ત્યારે માધો દુવેએ રાજા દુવેને કહ્યું, આજ્ઞા હોય તો આને એક માળાનો જપ બીજો કરાવું. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, અવશ્ય જપ બીજો કરાવો. ત્યારે માધો દુવેએ એક માળા અષ્ટાક્ષરનો બીજો જપ કરાવ્યો. ત્યારે તે શ્રીભાગવત પુરાણશાસ્ત્ર બધાના અર્થને જાણવા લાગ્યો. ત્યારે માધો દુવેએ રાજા દુવેને કહ્યું, આજ્ઞા હોય તો એક જપ બીજો કરાવું. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, આ એટલુંજ પાત્ર છે. આગળ રસ ઉછળશે.

भावप्रकास—नाहीं करी ताको अर्थ यह, जो–तीसरी माला जपावे तो लीलारस को अनुभव होई। परन्तु लीला संबंधी नाहीं है। इतनो ही याकों वहोत है।

पाछें राजा दुवे ने माधो दुवे सों कही, जो–तुम अपने मन में यह मति लाइयो, जो–हमने याकों (ऐसो) कियो, तासों यह ऐसो भयो है। यह सब श्रीआचार्यजी की कृपा तें भयो है। हमारो तिहारो स्वरूप तो तुम जानत हों। तब माधो दुवे ने कही, मेरे कहा है? कर्ता तो श्रीआचार्यजी हैं। पाछें वाकों राज–भोग आरती पाछें महाप्रसाद लिवाये। पाछें तीसरो प्रहर भयो तब माधो दुवे ने वासों कही, जाउ, पटेल के चोंतरा पर कथा कहो, पोथी हमसों ले जाऊ। तब वह पोथी ले दोऊ भाइन कों नमस्कार करि, पटेल के चोंतरा ऊपर बैठि कथा कहन लाग्यो। सो दोय–चारि पटेल देखिकें सगरे पटेल सों जाइ कहे, जो–भट्टजी कथा कहे हैं सो वेगे चलो। तब सगरे पटेल आये। सो इनको कहनो कृपा वलको, सो वहोत सुन्दर कथा कही। तब सगरे पटेलन कही, तुम कथा तो वहोत सुन्दर कहत हो, आगें क्यों न कहै? तब इन कही, मेरो बड़ो भाई कहतो, तातें मैं नाहीं कहतो। तब सबन नें कही, अब तुमही कथा कह्यो करो। हमारे बड़े भागि हैं, सो ऐसो ब्राह्मन मिल्यो। पाछें सगरे पटेलन मिलिकें

ભાવપ્રકાશ—ના કરી તેનો અર્થ એ, કે ત્રીજી માળા જપાવે તો લીલા-રસનો અનુભવ થાય. પરંતુ એ લીલાસંબંધી નથી. (એથી) આટલું જ એને ઘણું છે.

પછી રાજા દુવેએ માધો દુવેને કહ્યું, કે તમે તમારા મનમાં એમ ન લાવતા, કે અમે આને આવો કર્યો તેથી આ આવો થયો છે. આ બધું શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી થયું છે. અમારૂં તમારૂં સ્વરૂપ તો તમે જાણો છો. ત્યારે માધો દુવેએ કહ્યું, મારે શું છે? કર્તા તો શ્રીઆચાર્યજી છે. પછી એને રાજભોગ આર્તિ પછી મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. પછી ત્રીજો પહોર થયો ત્યારે માધવ દુવેએ એને કહ્યું, જાવ, પટેલના ચોતરા ઉપર કથા કહો. પોથી અમારી પાસેથી લઇ જાવ. ત્યારે તે પોથી લઇ બન્ને ભાઇને નમસ્કાર કરી પટેલના ચોતરા ઉપર બેસી કથા કહેવા લાગ્યો. ત્યારે બેચાર પટેલે જોઇને બધા પટેલોને જઈ કહ્યું, કે ભટ્ટજી કથા કહે છે તે જલ્દી ચાલો. ત્યારે બધા પટેલો આવ્યા. તે આનું કહેવાનું કૃપાબલનું? તેથી બહુ સુંદર કથા કહી. ત્યારે બધા પટેલોએ કહ્યું, તમે કથા તો બહુજ સુંદર કહો છો? પહેલાં કેમ કહેતા ન હતા? ત્યારે એણે કહ્યું, મારો મોટા ભાઇ કહેતો તેથી હું નહોતો કહેતો. ત્યારે બધાએ કહ્યું, હવે તમેજ કથા કહો કરો. અમારાં મહાન ભાગ્ય છે, કે આવો બ્રાહ્મણ મળ્યો. પછી બધા પટેલોએ

पाछें वस्त्र नये दिये। एक गाय एक भैंस आछो दूध की संग दें मनुष्य संग करि दिये। सो लेकैं सब अपने घर आए। सो अपने घरके द्वार पर आए। भावज कों पुकार्‍यो, जो-पटेल के चोंतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादे को ग्रास हू फेरि ले आयो हूं, अब द्वार खोलो। तब भावज ने किंवाड खोल्यो, इनकों तेज देखि कैं चक्रित ह्वै रही। पाछें बड़े भाई देखे तो इनके मुख पर भगवत तेज विराजत हैं। तब डरपि के कह्यो, भाई! भीतर आवो। तब ये भावज कों नमस्कार करि कें कहे, जो-तुमनें मोकों सिक्षा दीनी। सो श्रीठाकुरजी मेरो मनोर्थ पूर्ण कियो। पटेल के चोंतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादे को ग्रास हू फेरि ले आयो। तब भाई, भोजाई दोऊ डरपे। जो-या पर कृपा भगवान की भई है, जो-शाप देइ तो भस्म होइ जायंगे। तब भाई भोजाई ने कही, स्नान करो, कछु खाउ! तब इन कही, राजादूवे माधो दूवे कों नमस्कार करि आऊँ तब कछु करों। तब बड़े भाई ने कही, उनके पास पहले जाइवे को कहा कारन है? तब इन कही, तुम तो मेरे स्वरूप कों जानत हो, यह सब कृपा तो उनही की भई है। मेरे में कहा है? तब बड़ो भाई संग चल्यो, जो-मोपर कृपा करें तो आछो। सो

ભાવપ્રકાશ—કેમકે બ્રાહ્મણનું ઋણ બહુ માથે ચઢે ત્યારે આપી ન શકાય.

પછી વસ્ત્ર નવાં આપ્યાં. એક ગાય, એક ભેંસ સુંદર દૂધની સંગ આપી મનુષ્ય સાથે કરી દીધાં. તે બધું લઇને પોતાને ઘરે આવ્યો. પછી પોતાના ઘરના દ્વાર ઉપર આવી ભાભીને બોલાવી કે, પટેલના ચોતરા ઉપર કથા પણ કહી આવ્યો અને બાપ-દાદાનો ગ્રાસ (કોળ) પણ પાછો લઇ આવ્યો છું; હવે બારણું ખોલો. ત્યારે ભાભીએ કમાડ ખોલ્યું. એનું તેજ જોઇને ચકિત થઇ રહી. પછી મોટા ભાઇ જુએ તો એના મુખ ઉપર ભગવત્ તેજ બિરાજે છે. ત્યારે ડરીને કહ્યું, ભાઇ! અંદર આવો. ત્યારે એ ભાભીને નમસ્કાર કરીને કહે, કે તમે મને શિક્ષા આપી. તેથી શ્રી-ઠાકુરજીએ મારો મનોરથ પૂરણ કર્યો. પટેલના ચોતરા ઉપર કથા પણ કહી આવ્યો અને દાદાનો ગ્રાસ પણ ફેરી આવ્યો. ત્યારે ભાઇ-ભોજાઇ બન્ને ડર્યાં, કે આના ઉપર ભગવાનની કૃપા થઇ છે. તેથી શાપ દેશે તો ભસ્મ થઇ જઇશું. ત્યારે ભાઇ-ભોજાઇએ કહ્યું, સ્નાન કરો, કંઇ ખાવ. ત્યારે એણે કહ્યું, રાજા દુવે માધો દુવેને નમસ્કાર કરી આવું ત્યારે કંઇ કરું. ત્યારે મોટા ભાઇએ કહ્યું, એમની પાસે પહેલા જવાનું શું કારણ છે? ત્યારે તેણે કહ્યું, તમે તો મારા સ્વરૂપને જાણો છો. આ બધી કૃપા તો એમની જ થઇ

दोऊ भाई आइ राजा दुवे, माधो दुवे कों नमस्कार किये। तब छोटो भाई सब प्रकार कह्यो, सौ रुपया कपड़ा आगें धरें और कह्यो, सौ-मन अन्न है सो राखो। तब माधोदुवे ने कही, अन्न कों वेचि के दाम करो, यह सब श्रीआचार्यजी को है। यामें हमारो तुम्हारो कहा है? तब राजादुवे ने माधोदुवे सों कही, जो-दुसरे भाई सों यह प्रकार मति कहियो। पाछें बड़े भाई ने विनती करी, जो-जैसे मेरे छोटे भाई पर कृपा कीनी, तैसे मोहू पर करो। मैं तुम्हारी सरनि हों, तब माधोदुवे ने राजादुवे सों कही, जो-यह बिनती करत है। तब राजादुवे ने कही, जो-हम तो तुमसों पहले ही कही हती, जो-झार मति उरझावो। तातें अब तुमकों करनो होइ सो याहू कों नाम मात्र सुनाइ देउ। तब बड़े भाई कों न्हवाइ के नाम सुनाये। पाछें अन्न वेचि के दाम किए। पाछें कछुक दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका पधारे। सो सिद्धपुर में रानाव्यास के घर उतरे। सो खबरि राजादुवे माधोदुवे पाई। सो दोऊ भाई कों संग ले, द्रव्य सगरो ले, सिद्धपुर आये। श्री-आचार्यजी कों दण्डोत करि द्रव्य सगरो भेट करि दोऊ भाई की सगरी बात कही। पाछें बिनती करी, जो-महाराज! ये दोऊ भाईन कों आपु नाम सुनाइये। तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाई कों नाम सु-

---

છે. મારામાં શું છે? ત્યારે મોટો ભાઇ સાથે ચાલ્યો. કે મારા ઉપર કૃપા કરે તો ઠીક. પછી બન્ને ભાઇએ આવી રાજા દુવે-માધો દુવેને નમસ્કાર કર્યા. ત્યારે નાના ભાઇએ બધો પ્રકાર કહ્યો. સો રૂપીયા કપડાં આગળ ધર્યાં. અને કહ્યું, સો મણ અનાજ છે તે રાખો. ત્યારે માધો દુવેએ કહ્યું, અન્નને વેચીને પૈસા કરો. એ બધું શ્રીઆચાર્યજીનું છે. એમાં અમારૂં તમારૂં શું છે? ત્યારે રાજા દુવેએ માધો દુવેને કહ્યું, કે બીજા ભાઇને આ પ્રકાર ન કહીશ. પછી મોટાભાઇએ વિનંતી કરી, કે જેમ મારા નાના ભાઇ ઉપર કૃપા કરી તેમ મારા ઉપર કરો. હું તમારી શરણે છું. ત્યારે માધો દુવેએ રાજા દુવેને કહ્યું, કે આ વિનંતી કરે છે. ત્યારે રાજા દુવેએ કહ્યું, કે અમે તો તમને પહેલાં જ કહ્યું હતું, કે ઝાડ ન ઉલઝાવતા તેથી હવે તમારે કરવું હોય તો આને પણ નામ માત્ર સંભળાવી દો. ત્યારે મોટાભાઇને ન્હવડાવીને નામ સંભળાવ્યું. પછી અન્ન વેચીને પૈસા કર્યા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી દ્વારિકા પધાર્યા. ત્યારે સિદ્ધપુરમાં રાણા વ્યાસના ઘરે ઉતર્યા. તે ખબર રાજા દુવે માધો દુવેને મળી, ત્યારે બન્ને ભાઇને સાથે લઇને દ્રવ્ય બધું લઇ સિદ્ધપુર આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી દ્રવ્ય બધું ભેટ કરી બન્ને ભાઇની બધી વાત કહી. પછી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આ બન્ને

नाचे। पाछें आपु द्वारिका पधारे। (पाछें) राजादुवे माधोदुवे, दोऊ भाईन कों अपने संग लै घर आये। सो राजादुवे माधोदुवे के संग करि दोऊ भाई सांचोरा कृतार्थ भए। सो राजादुवे माधोदुवे ऐसे भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥२५॥

भावप्रकाश—और राजादूवे माधोदूवे के निरोध भयो। सो इनके हृदय को अलौकिक भाव है, लीला सम्बन्धी सो कह्यो न जाई।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, उत्तमश्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते। सो सबन कों आपु ही परोसते प्रीति सों। सो सगरे वैष्णव महतारि कहि बोलते। ये उत्तमश्लोकदास कों सेवकन के ऊपर ममत्व बहोत हतो। तातें श्रीगुसांईजी इन पर प्रसन्न बहुत रहते।

भावप्रकाश—सो उत्तमश्लोकदास, ईश्वरदूवे लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। सो सात्विक भाव इनमें बहुत। श्रीचन्द्रावलीजी कों और सब सखीन कों प्रीति सों सामग्री अरोगावती। सो एक समें श्रीचन्द्रावली श्रीठाकुरजी और श्री-

---

ભાઇને આપ નામ સંભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બન્ને ભાઇને નામ સંભળાવ્યું. પછી પોતે દ્વારકા પધાર્યા. પછી રાજા દુવે માધો દુવે બન્ને ભાઇને સાથે લઇ ઘર આવ્યા. તે રાજા દુવે માધો દુવેના સંગથી બન્ને ભાઇ સાંચોરા કૃતાર્થ થયા.

તે રાજા દુવે માધો દુવે એવા ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

ભાવપ્રકાશ—આ રાજા દુવે માધો દુવેને નિરોધ થયો. તે એમના હૃદયનો અલૌકિક ભાવ છે. લીલા સંબધી તે કહ્યો ન જાય.

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ઉત્તમશ્લોકદાસ સાંચોરા બ્રાહ્મણ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એ ઉત્તમશ્લોકદાસ શ્રીનાથજીના સેવકોની રસોઇ કરતા અને બધાંને પ્રીતિથી પીરસતા (પણ) પોતેજ. તેથી બધા વૈષ્ણવો તેમને મહતારી (માતા) કહીને બોલાવતા. તે ઉત્તમશ્લોકદાસનું સેવકોના ઉપર મમત્વ બહુ જ હતું. તેથી શ્રી-ગુસાંઇજી એના ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન રહેતા.

ભાવપ્રકાશ—તે ઉત્તમશ્લોકદાસ, ઇશ્વર દુવે લીલામાં શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી છે. એમનામાં સાત્વિક ભાવ ઘણો છે. શ્રીચંદ્રાવલીજી અને બધી સખીઓને

स्वामिनीजी कों अपनी कुंज में पधराए। सो श्रीचन्द्रावलीजी अपने हाथ सों दोऊ स्वरूपन कों परोसत हती। सो ये दोऊ सखीन के मनमें यह गर्व भयो, जो-सगरी सखीन कों नित्य परोसत हैं, सो आजु दोऊ स्वरूप पधारे हैं। तिनहू कों (हम) परोसे तो आछो। सो श्रीचन्द्रावलीजी सों पूछे नाहीं। और दूसरो थार उठाई के चली। इतने में श्रीचन्द्रावलीजी आई। कहे, कहां जात हो? तब गर्व सों कहे, कहा हम न परोसें? श्रीठाकुरजी कों। तब श्रीचन्द्रावलीजी कहे, इहां गर्व करे ताको काम नाहीं। भूमि पर गिरो। सो ये दोऊ भूमि पर अनेक जन्म पाए। लीला में इनको नाम सुशीला, एक को नाम मेंना। सो उत्तमश्लोकदास सुशीला को प्रागट्य और ईश्वर दूबे मेंना सखी को प्रागट्य। सो अब गुजरात में गोधरा में दोऊ सांचोरा के जन्मे। सो एक कायस्थ की रसोई दोऊ जने करते। सो वह कायस्थ आगरे आयो, देसाधिपति पास। तब ये दोऊ जने आये। सो श्रीआचार्यजी आगरे पधारे हैं। सो राजघाट पर श्रीयमुनाजी के तीर सन्ध्या-वंदन करत हते। ता समें उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दूबे श्रीयमुनाजी स्नान कों आये, सो न्हात हते। श्रीआचार्यजी संध्यावंदन करि के यह वचन कृष्णदास सों कहे, जो-

---

પ્રીતિથી સામગ્રી આરોગાવતાં. તે એક સમે શ્રીચંદ્રાવલીએ શ્રીઠાકુરજી તથા શ્રીસ્વામિનીજીને પોતાની કુંજમાં પધરાવ્યાં. ત્યારે શ્રીચંદ્રાવલીજી પોતાના હાથથી બન્ને સ્વરૂપોને પીરસતાં હતાં. ત્યારે આ બન્ને સખીઓના મનમાં એ ગર્વ થયો, કે બધી સખીઓને નિત્ય પીરસીએ છીએ તો આ જ બન્ને સ્વરૂપ પધાર્યાં છે તેમને પણ અમે પીરસીએ તો સારૂં. તેથી શ્રીચંદ્રાવલીજીને પૂછ્યું નહીં. અને બીજો થાળ ઉઠાવીને ચાલી. એટલામાં શ્રીચંદ્રાવલીજી આવી. કહે, કયાં જાવ છો? ત્યારે ગર્વથી કહે, શું અમે ન પીરસીએ શ્રીઠાકુરજીને? ત્યારે શ્રીચંદ્રાવલીજી કહે, અહીં ગર્વ કરે તેનુ કામ નથી ભૂમિ ઉપર પડો. તે બન્ને ભૂમિ ઉપર અનેક જન્મ પામ્યા. લીલામાં એમનુ નામ 'સુશીલા' એકનું નામ 'મેના' તે ઉત્તમશ્લોકદાસ 'સુશીલા' નુ પ્રાકટ્ય અને ઇશ્વર દુબે 'મેના' સખીનુ પ્રાકટ્ય. તે હવે ગુજરાતમાં ગોધરામાં બન્ને સાંચોરાને ત્યાં જન્મ્યા. તે એક કાયસ્થની રસોઇ બન્ને જણ કરતા. તે કાયસ્થ આગ્રા આવ્યો, દેશાધિપતિ પાસે. ત્યારે એ બન્ને જણ આવ્યા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી આગ્રા પધાર્યા હતા. ત્યાં રાજઘાટ શ્રીજમનાજીના તીરે સંધ્યાવંદન કરતા હતા. તે સમયે ઉત્તમશ્લોકદાસ અને ઇશ્વર દુબે શ્રીયમુનાજી સ્નાન માટે આવ્યા તે ન્હાતા હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવંદન કરીને આ વચન કૃષ્ણદાસને કહે, કે

ब्राह्मन होइ के शूद्र की टहेल करनो उचित नाहीं है। शूद्र ब्राह्मन की टहेल करे तो ठीक है। ऐसे श्रीभागवत में कह्यो है। सो यह बात उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दूवे सुनि कहैं, महाराज! आप कहें सो साँच, परन्तु यह पेट के लिये हम शूद्र की चाकरी करत हैं, कहा करें और गुन तो हमारे में है नाहीं, पढ़े नाहीं हैं। तातें शूद्र की रसोई करि निर्वाह करत हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम तुम्हारे ऊपर नाही कहैं। हम तो अपने सेवकन सों बतरावत हैं। और ईश्वर सबको भरन पोषन करत हैं। विश्वास ईश्वर पर चाहिये। तब दोऊ जने बिनती किये, महाराज! आप तो शास्त्र की बात कही, परन्तु इहां तो ऐसे हम हैं। सो आप हमकों सेवक करो। हमकों बतावो सो हम करें, जा प्रकार शूद्र की टहेल छूटे। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमहू ब्राह्मन हो, योग्य हो। सेवक कैसे होऊगे? तब दोऊ जने कहें महाराज! हम ब्राह्मन काहे के हैं? ब्राह्मन को कर्म तो हम जानत नाहीं, तातें हमपे कृपा करो, सरनि लेऊ। जो–हमारी कछु बुद्धि उत्तम होइ। तब श्रीवल्लभाचार्यजी कहें, आगे आवो। या प्रकार दोऊ जनें कों बुलाई नाम निवेदन कराये। तब दोऊ भाई ने बिनती करी, अब हमकों आज्ञा करो, सो हम करें। तब

બ્રાહ્મણ થઇને શૂદ્રની ટહેલ કરવી ઉચિત નથી. શૂદ્ર બ્રાહ્મણની ટહેલ કરે તે ઠીક છે. એમ શ્રીભાગવતમાં કહ્યું છે. તે વાત ઉત્તમશ્લોકદાસ અને ઇશ્વર દુવે સાંભળીને કહે, મહારાજ! આપ કહો તે સાચું. પરંતુ આ પેટને માટે અમે શૂદ્રની ચાકરી કરીએ છીએ, શું કરે? બીજો ગુણ તો અમારામાં છે નહીં. ભણ્યા નથી. તેથી શૂદ્રની રસોઇ કરી નિર્વાહ કરીએ છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે તમારા ઉપર નથી કહ્યું. અમે તો અમારા સેવકોથી વાતચિત કરીએ છીએ. અને ઇશ્વર બધાનું ભરણપોષણ કરે છે. વિશ્વાસ ઇશ્વર ઉપર જોઇએ. ત્યારે બન્ને જણાએ વિનંતી કરી, મહારાજ! આપે તો શાસ્ત્રની વાત કહી. પરંતુ અહીં તો અમે આવા છીએ. તેથી આપ અમને સેવક કરો. અમને બતાવો તે અમે કરીએ. જે પ્રકારે શૂદ્રની ટહેલ છૂટે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે પણ બ્રાહ્મણ છો. યોગ્ય છો. સેવક કેમ થશો? ત્યારે બન્ને જણ કહે, મહારાજ! અમે બ્રાહ્મણ શેના છીએ? બ્રાહ્મણનું કર્મ તો અમે જાણતા નથી. તેથી અમારા ઉપર કૃપા કરો. શરણે લો. તો અમારી કંઇ બુદ્ધિ ઉત્તમ થાય. ત્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી કહે, આગળ આવો. આ પ્રકારે બન્ને જણાને બોલાવી નામ–નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે બન્ને ભાઇએ વિનતી કરી, હવે અમને આજ્ઞા કરો તે અમે કરીએ ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે તમારા ગામ જઇ,

श्रीआचार्यजी कहें, तुम अपने गाम जाइ माता-पिता सों विदा होइ, गोवर्द्धन परवत पर आइयो, तहां श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा करियो। तब दोऊ मिलिकें उह कायस्थ सों लेखो करि, अपनो द्रव्य ले चले। तब उह कायस्थ ने बहोत राखन की कही, महिना हू बढ़ाय देवे की कही, परन्तु रहे नाहीं। तहांते चले, सो गोधरा अपने-अपने घर आये। सो माता-पिता सों कहें, हमकों आज्ञा देऊ तो व्रज जाई। तव दोऊन के माता-पिता ने कही, कछु दिन रहो, हम हूं संग चलेंगे। सो माता-पिता के मन में यह, जो-ऐसे कहिकें पुत्र कों राखे। सो ऐसे बारह महिना बीते। तब दोऊन ने कही, माता-पिता सों, जो-तुम चलोगे? वर्ष दिन तो भयो। तब वे कहें, अब चलेंगे। ऐसे करत पाँच वर्ष बीतें। तब उत्तमश्लोकदास तो माता-पिता कों, और कों जताए विना गोवर्द्धन उठि आये। श्रीनाथजी को दरसन करि श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि सगरी वात अपनी कही। तव श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधर की रसोई की सेवा दिये। सो सगरे सेवकन कों बहुत प्रीति सों परोसते। सो उत्तमश्लोकदास कों सगरे सेवक महतारी कहिकें बुलावते। वैष्णव ॥३६॥

सो ये श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। वार्ता ॥३६॥

* * *

માતા-પિતાથી વિદાય થઇ ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર આવજો. ત્યાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરની સેવા કરજો. ત્યારે બન્નેએ મળીને તે કાયસ્થથી હિસાબ કરી પોતાનું દ્રવ્ય લઇ ને ચાલ્યા. ત્યારે તે કાયસ્થે રાખવાને બહુ કહ્યું, મહીના પણ વધારી આપવાનું કહ્યું, પરંતુ રહ્યા નહીં. ત્યાંથી ચાલ્યા. તે ગોધરા પોત-પોતાને ઘરે આવ્યા. પછી માતા-પિતાને કહે, અમને આજ્ઞા આપો તો વ્રજમાં જઇએ. ત્યારે બન્નેના માતા-પિતાએ કહ્યું, થોડા દિવસ રહો. અમે પણ સાથે ચાલીશું. તે માતા-પિતાના મનમાં એ, કે એમ કહી પુત્રને રાખીએ. એમ બાર મહિના વીત્યા. ત્યારે બન્નેએ માતા-પિતાને કહ્યું, કે તમે ચાલશો ? વર્ષ-દિવસ તો થયો ? ત્યારે તે કહે, હવે ચાલીશું. એમ કરતાં પાંચ વર્ષ વીત્યાં ત્યારે ઉત્તમશ્લોકદાસ તો માતા-પિતાને અને બીજાને જણાવ્યા વિના ગોવર્દ્ધન ચાલ્યા આવ્યા. શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરી પોતાની બધી વાત કહી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરની રસોઇની સેવા આપી. તે બધા સેવકોને બહુ પ્રીતિથી પીરસતા. તેથી ઉત્તમશ્લોકદાસને બધા સેવકો મહતારી કહીને બોલાવતા. વૈષ્ણવ ॥૩૬॥

તે શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા વાર્તા ॥૩૬॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, ईश्वर दुवे साँचोरा ब्राह्मन, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—इनको लीला को स्वरूप तो उपर कहे हैं। और आगरे में सेवक जा प्रकार भए हैं, सोउ उपर कहें हैं। उत्तमश्लोकदास आये, ताके छ महिना पीछे ईश्वर दुवे के माता-पिता ने देह छोड़ी। तब ईश्वर दूवे गिरिराज आइ, श्रीनाथजी को दरसन करि, श्रीगुसांईजी कों दंडवत् करि, सगरो प्रकार कहें। जो-हम और उत्तमश्लोकदास संग सेवक भये हैं। और यही आज्ञा श्रीआचार्यजी की हैं, जो-श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा करियो। सो अब आज्ञा करौ सो करें। तब श्रीगुसांईजी कहें, उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजी की रसोइ और सेवकन को परोसना करत हैं, सो तुम दोऊ बेगि मिलके सेवा करो। सो दोऊ सेवा करन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें कछुक दिन में उत्तमश्लोकदास की देह छूटी, तब श्रीगुसांईजी ईश्वर दूवे को नाम उत्तमश्लोकदास राखे। सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीगोवर्द्धनधर की रसोई करते, और सगरे सेवकन को परोसना करते। और अपनी गांठि ते घृत अधिक परोसते।

भावप्रकाश—सो यातें, जो-सेवक अपनो नेग पावें तामें मेरी कहा

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ઇશ્વર દુવે સાંચોરા બ્રાહ્મણ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એમનું લીલાનું સ્વરૂપ તો ઉપર કહ્યું છે. અને આગ્રામાં જે પ્રકારે સેવક થયા છે તે પણ ઉપર કહ્યું છે. ઉત્તમશ્લોકદાસ આવ્યા તેના છ મહિના પછી ઇશ્વર દુવેની માતા-પિતાએ દેહ છોડી. ત્યારે ઇશ્વર દુવેએ ગિરિરાજ આવી શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી, શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત કરી બધો પ્રકાર કહ્યો. કે, અમે અને ઉત્તમશ્લોકદાસ સંગ સેવક થયા છીએ. અને એજ આજ્ઞા શ્રીઆચાર્યજીની છે, કે શ્રીગોવર્દ્ધનધરની સેવા કરજો. તેથી હવે જેમ આજ્ઞા કરો તેમ કરીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, ઉત્તમશ્લોકદાસ શ્રીનાથજીની રસોઇ અને સેવકોને પીરસવાની સેવા કરે છે. તેથી તમે બન્ને જલ્દી મળીને સેવા કરો. તેથી બન્ને સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—પછી કેટલાક દિવસમાં ઉત્તમશ્લોકદાસની દેહ છુટી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ ઇશ્વર દુવેનું નામ ઉત્તમશ્લોકદાસ રાખ્યું. તે ઉત્તમશ્લોકદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની રસોઇ કરતા અને બધા સેવકોને પીરસતા. અને પોતાની ગાંઠથી ઘી મંગાવી વધારે પીરસતા.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી, કે સેવક પોતાનો નેક પામે તેમાં મારી શી સેવા

सेवा है ? कछू अपनी गांठि तें अपनी सत्ता को परोसों तो सेवा है, या भाव सों परोसते। और सामग्री में घृत परोसते ताको कारन यह, जो-घृत तें सगरे सरीर में बल होइ तो प्रभु की सेवा भली भाँति सों करें, हारे नांही। तातें अधकी में घृत परोसते।

तातें सगरे सेवक महतारी कहिकें बोलते। सो यह बात श्रीगुसांईजी सों वैष्णवन ने कही। सो सुनि के श्रीगुसांईजी उत्तमश्लोकदास के उपर प्रसन्न होइ कें पास बुलाइ कें पूछे, तुम अपनी गांठि ते घृत मँगाइ सेवकन कों घृत (क्यों) परोसत हो? सगरे सेवक अपने नेग तो पावत हैं? तब उत्तमश्लोकदास ने कही, महाराज! सेवक कों सेवा में वहोत श्रम होत हैं, परवत पर चढत हैं, उतरत हैं। तातें श्रीठाकुरजी कौ मन खेद पावे। तातें अधिक घृत लिये तें सरीर में बल होय तो सेवक भली भांति सेवा करे। यह बात सुनि के श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये। जो-इनकों सेवकन में ऐसी वात्सल्यता है। तब श्रीगुसांईजी कहें, उत्तमश्लोकदास! तुम कछू मेरे पास मांगो। मैं तुम्हारे ऊपर बहोत प्रसन्न भयो हों। तब उत्तमश्लोकदास कहें, महाराज! मैं तिहारे ऊपर कबहूं अप्रसन्न न होऊँ, यह मैं माँगत हों। तब श्रीगुसांईजी कहें, ऐसेई होइगो। तब सगरे यह सुनि के कहे, यह इननें कहा मांग्यौ? जीव प्रसन्न

છે? કંઇ પોતાની ગાંઠથી પોતાની સત્તાનું પીરસું તે સેવા છે. એ ભાવથી પીરસતા. અને સામગ્રીમાં ઘી પીરસતા તેનું કારણ એ, કે ઘીથી બધા શરીરમાં બળ થાય. તે પ્રભુની સેવા ભલીભાંતિથી કરે, થાકે નહીં. તેથી વિશેષમાં ઘી પીરસતા.

તેથી બધા સેવકો માતા કહીને બોલાવતા. એ વાત વૈષ્ણવોએ શ્રીગુસાંઇજીને કહી. તે સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીએ ઉત્તમશ્લોકદાસ ઉપર પ્રસન્ન થઇને પાસે બોલાવીને પૂછયું, તમે તમારી ગાંઠથી ઘી મંગાવી સેવકોને ઘી (કેમ) પીરસો છો? બધા સેવકોને પોતાનો નેક તો મળે છે. ત્યારે ઉત્તમશ્લોકદાસે કહ્યું, મહારાજ! સેવકને સેવામાં બહુ જ શ્રમ થાય છે પર્વત પર ચઢે છે ઉતરે છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીનું મન ખેદ પામે. તેથી અધિક ઘી લેવાથી શરીરમાં બલ થાય તો સેવક સારી રીતિથી સેવા કરે. એ વાત સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી બહુ પ્રસન્ન થયા, કે આને સેવકોમાં આવી વાત્સલ્યતા છે? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, ઉત્તમશ્લોકદાસ! તમે કંઇ મારી પાસે માંગો. હું તમારા ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયો છું. ત્યારે ઉત્તમશ્લોકદાસ કહે, મહારાજ! હું તમારા ઉપર ક્યારેય અપ્રસન્ન ન થાઉં એ હું માગું છું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, એમજ થશે. ત્યારે સઘળા

भयो तो कहा, अप्रसन्न भयो तो कहा? प्रभु प्रसन्न भये चहिये। तब एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, महाराज! यह उत्तमश्लोकदास ने कहा मांग्यो? जो–मैं सदा (तिहारे ऊपर) प्रसन्न रहूँ। तब श्रीगुसांईजी कहैं, यह बात तुम उत्तमश्लोकदास सों पूछो, जो–यह कहा मांग्यो? तब सगरे वैष्णव मिलि के उत्तमश्लोकदास सों पूछ्यो, जो–यह तुम कहा मांग्यो? मैं प्रसन्न भयो रहूँ। तब उत्तमश्लोकदास ने कही, मैं याते मांग्यो, जो–अब या समें श्रीगुसांईजी प्रसन्न हैं, और कोई समें सेवामें अपराध परे अप्रसन्न होई, तब मेरो मन बिगरे तो ठिकानो मेरो न रहे। यातें मांग्यो, जो–आप अप्रसन्न होई तोऊ मेरो मन न बिगरेगो। यह बात सुनि के सगरे वैष्णव प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांईजी सगरे वैष्णवन सों कहैं, जो–उत्तमश्लोकदास बहोत पोंहोच के मांग्यो। अब याको बिगार कबहू न होइगो। सो उत्तमश्लोकदास ऐसे भगवदीय हे। सदा एक रस प्रीति श्रीठाकुरजीमें, श्रीगुसांईजी में, सेवकनिमें, वैष्णवन में, निबाही। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥३७॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, वासुदेव छकड़ा, सारस्वत ब्राह्मन, सिंहनंद के बासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—वासुदेवदास श्रीनंदरायजी के मुख्य खवास है। नंद-

એ સાંભળીને કહે, એણે આ શું માગ્યું? જીવ પ્રસન્ન થયો તો શું (અને) અપ્રસન્ન થયો તો શું? પ્રભુ પ્રસન્ન થવા જોઇએ. ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! ઉત્તમશ્લોકદાસે આ શું માગ્યું? કે હું સદા (તમારા ઉપર) પ્રસન્ન રહું? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, આ વાત તમે ઉત્તમશ્લોકદાસને પૂછો, કે આ શું માગ્યું? ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ મળીને ઉત્તમશ્લોકદાસને પૂછયું, કે તમે આ શું માંગ્યું? કે હું પ્રસન્ન થયો રહું. ત્યારે ઉત્તમશ્લોકદાસે કહ્યું, મેં એથી માંગ્યું, કે હવે આ સમયે શ્રીગુસાંઇજી પ્રસન્ન છે. અને કોઇ સમયે સેવામાં અપરાધ પડે, અપ્રસન્ન થાય ત્યારે મારૂં મન બગડે તો મારૂં ઠેકાણું ન રહે. એથી માંગ્યું, કે આપ અપ્રસન્ન થાય તોપણ મારૂં મન ન બગડે. એ વાત સાંભળીને બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થયા ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી બધા વૈષ્ણવોને કહે, કે ઉત્તમશ્લોકદાસે બહુ પહોંચીને (ઉત્તમોત્તમ) માગ્યું. હવે એનો બગાડ કદીય નહી થાય. તે ઉત્તમશ્લોકદાસ એવા ભગવદીય હતા. સદા એકરસ પ્રીતિ શ્રીઠાકુરજીમાં શ્રીગુસાંઇજીમાં સેવકોમાં વૈષ્ણવોમાં નભાવી. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૩૭॥

* * *

रायजी जहाँ जाते तहाँ नन्दरायजी के वस्त्र–पात्र सब संग ले चलते। लीला में इनको नाम 'मनसुखा' है। सो वासुदेवदास सिंहनंद में एक सारस्वत ब्राह्मन के घर जनमें। सो सारस्वत के द्रव्य बहुत हतो, सो वासुदेवदास बरस तेरह के भये। सो हाकिम ने दण्ड सिंहनंद में तें सब पें तें लियो। सो वासुदेवदास के पिता पर दोई हजार को दंड कियो। तब वासुदेवदासनें पिता सों कह्यो, जो-हाकिम कों दंड काहेकों देउ? हाकिम सों लरेंगे। तब वासुदेवदास के पिता ने कही, जो-हाकिम सों कैसे बरि आवेंगे? तब वासुदेवदास ने कही, या बात की मैं जानी, मोकों बताइ दीजो। सो हाकिम के प्यादे चार आये। तब वासुदेवदास ने उनसों कह्यो, हम दंड कौन बात को देई? जो-हाकिम सों कहो, जो-लरनो होइ तो लरें। दंड तो हम न देंइगे। तब वे चारों प्यादे गारीगरा देन लागें, जो-हम तो तोकों पकरि कें ले चलेंगे। तब वासुदेवदास चारों के हथियार छीन के ऐसो धक्का दिये जो–वे चारों दूरि गिरि पड़े। (पाछें) उह हाकिम पास जाइ पुकारे, वासुदेवदास ब्राह्मण हमकों मार्यो, और हथियार छीन लीने। और कह्यो, हाकिम सों लरेंगे।

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, વાસુદેવદાસ છકડા, સારસ્વત બ્રાહ્મણ સિંહનંદના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—વાસુદેવદાસ શ્રીનંદરાયજીના મુખ્ય ખવાસ છે. નંદરાયજી જ્યાં જતા ત્યાં શ્રીનંદરાયજીનાં વસ્ત્ર–પાત્ર બધું સંગ લઇને ચાલતા. લીલામાં એમનું નામ 'મનસુખા' છે. તે વાસુદેવદાસ સિંહનંદમાં એક સારસ્વત બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે સારસ્વતને દ્રવ્ય ઘણું હતુ. તે વાસુદેવદાસ વર્ષ તેરના થયા. ત્યારે હાકેમે સિંહનંદમાંથી બધાની પાસે દંડ લીધો. વાસુદેવના પિતાના ઉપર બે હજારનો દંડ કર્યો. ત્યારે વાસુદેવદાસે પિતાને કહ્યું, કે હાકેમને દંડ શા માટે દો? હાકેમથી લડીશુ. ત્યારે વાસુદેવદાસના પિતાએ કહ્યું, કે હાકેમથી કેમ બળ આવીશુ? ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, એ વાતને હુ સમજીશ. મને બતાવી દેજો. પછી હાકેમના સિપાઇ ચાર આવ્યા. ત્યારે વાસુદેવદાસે એમને કહ્યું, અમે દંડ કઇ વાતનો આપીએ? તેથી હાકેમને કહો, જે લડવુ હોય તો લડે. દંડ તો અમે નહીં આપીએ. ત્યારે તે ચારે સિપાઈ ગાળો આપવા લાગ્યા. કે અમે તને પકડીને લઇ જઇશું. ત્યારે વાસુદેવદાસે ચારેનાં હથિયાર ઝૂંટવીને તેમને એવો ધક્કો દીધો, કે તે ચારે દૂર જઇ પડયા. પછી તે હાકેમ પાસે જઇ પોકાર્યા. વાસુદેવદાસ બ્રાહ્મણે અમને માર્યા. અને હથિયાર ઝૂંટવી લીધાં. અને કહ્યુ, હાકેમથી લડીશું. ત્યારે હાકેમ ક્રોધમાં ભરી ગયો.

तब हाकिम क्रोध में भरि गयो चालीस प्यादे पठाये। और कह्यो, याहि समें वा ब्राह्मन कों बांधि लावो। सो चालीस प्यादे कों आवत देख, वासुदेवदास दौरि कें चालीसन के भीतर पैठे। काहू की पाग, काहू के हथियार ले, काहूकों मुक्की, काहू कों लात सों मारि सबन कों धरती में गिराये। (और) हथियार छीन एक एक पाग में पांच पांच दस दसकों बांधि के हथियार सबके ले घर आये। सो सगरे हाकिम पास जाई पूकारें, जो- एक बरस तेरह चौदह को बालक है, सो हमारे सबके हथियार छीन के सबकी मुस्क बांध्यो। तातें वह बालक कछू मनुष्य नाहीं है, कोऊ देवता है। तातें तुम सम्हारे रहियो। तब हाकिम ने पांचसे मनुष्य आछे अपने संग के पठाये। और मनमें हाकिम हू डरप्यो। सो द्वार के आगे गली में एक छकड़ा आड़े कराय मारग बंद करयो। और वह छकड़ा पर हजार मन पत्थर की सिला आड़ी दे आपु हथियार लेकें बीस मनुष्यन सों बैठ्यो। सो पांचसे प्यादे देखि वासुदेवदास फेंट बांधि एक बड़ो लट्ठ लियो। ताकों सगरे लोह सों मढ्यो, मन दोइ को भारि। सो लै, दौरि कें प्यादेन के बीच आइ लट्ठ फिरायो। सो एक बार फिराये में पचास साठ एक के उपर एक गिरे। या प्रकार जैसे कुंभार को चाक

ચાલીસ સિપાહી મોકલ્યા. અને કહ્યું, આ જ સમે તે બ્રાહ્મણને બાંધી લાવો. પછી ચાલીસ સિપાઇઓને આવતા જોઇ વાસુદેવદાસ દોડીને તે ચાલીસના અંદર પેઠા કોઇની પાગ, કોઇનું હથિયાર લઇ કોઇને મુઠી કોઇને લાતથી મારી બધાને ધરતીમાં પાડી નાખ્યા. અને હથિયાર છીણવી એક એક પાગમાં પાંચ-પાંચ દસ-દસને બાંધીને હથિયાર બધાંના લઇ ઘર આવ્યા. એટલે બધાય હાકેમ પાસે જઇને પોકાર્યા. કે એક વર્ષ તેર-ચૌદનો બાલક છે તેણે અમારા બધાંનાં હથિયાર છીણવીને બધાને મુશ્કેટાટ બાંધ્યા. તેથી તે બાલક કોઇ મનુષ્ય નથી, કોઇ દેવતા છે. તેથી તમે સાવધાન રહેજો. ત્યારે હાકેમે પોતાની સાથેનાં પાંચસો મનુષ્ય સારાં જોઇને મોકલ્યાં. અને મનમાં હાકેમ પણ ડર્યો. તેથી તેણે દરવાજા આગળ ગલીમાં એક છકડો આડો કરાવીને માર્ગ બંધ કર્યો. અને તે છકડા ઉપર હજાર મણ પત્થરની શિલા આડી દઇ પોતે હથિયાર લઇને વીસ મનુષ્યોની સાથે બેઠો. ત્યાં પાંચસો સિપાહીઓને જોઇ વાસુદેવદાસે ફેંટ બાંધી એક મોટો લઠ લીધો. તેને બધેથી લોઢાથી મઢયો. મણ બેનો ભારે થયો. તે લઇ દોડીને સિપાઇઓના વચમાં આવી લઠ ફેરવ્યો તે એકવાર ફેરવવામાં પચાસ-સાઠ એકના ઉપર એક પડયા, તે એ પ્રકારે જેમ કુભારનો ચાક ફરે તે પ્રકારે દશ-પંદ્રહ ફેરા ફરી બધા સિપાઇઓને પાડયા. પછી ક્રોધના

फिरे ता प्रकार दस पंद्रह फेरा करि सगरे गिराये, प्यादे। पाछें क्रोध के आवेश में वासुदेवदास भरि गये। सो हाकिम जहां रहत हतो तहां दौरे। सो आड़े छकड़ा हजार मन को देखि ताकों एक हाथ को धक्का दे उठाए। सो छकड़ा और पत्थर दूरि जहां तहां जाय परे। छकड़ा टूक टूक भयो। और छकडा पत्थरन को सोर भयो। सो बीस प्यादेन सों हाकिम भाजि जाइ सरस्वती नदी में पेरि दूरि भाजि गयो। सो वासुदेवदास हाकिम के चोतरा तोरि गिराय पाछें अपने घर आये। पाछें रात्रिकों हाकिम अपने घर आई सिंहनंद के भले मनुष्य दोई चारि सराफ बजाज बुलाइ कें कह्यो, तुम वासुदेवदास के घर जाय समाधान करि आवो। जो-हम चूकें, तुमसों दंड लिये। अब तुम कहो तो हाकिमी करों, कहो तो और गाम जाऊं। अब जन्म भरि तुमकों कछू न कहूंगो। तब वे हाकिम की सगरी बात कहे। तब वासुदेवदास कहें, हमारे कहा हाकिम सों वैर है? आवो रहो। तब हाकिम रह्यो। दूसरे दिन वासुदेवदास सों मिलिकें कह्यो, तुम मनुष्य नाहीं हो, कोई देवता हो? सो मो पर दया राखियो। काम काज होइ सो कहियो। और उह छकड़ा उठाय के डारि दियो, ता दिनतें सगरे गाम के लोग इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहेते। सो वासुदेवदास को गर्व बहोत बढ्यो, काहू कों गाम में मन

આવેશમાં વાસુદેવદાસ ભરાઇ ગયા. તે હાકેમ જ્યાં રહેતો હતો ત્યાં દોડયા. તે હજારમણનો છકડો આડો જોઇને તેને એક હાથથી ધકકો દઇ ઉઠાવ્યો. તે છકડો અને પત્થર દુર જ્યાં ત્યાં જઇ પડયા. છકડો ટુક ટુક થઇ ગયો. અને છકડા પત્થરનો અવાજ થયો તે વીસ સિપાઇઓ સાથે હાકેમ ભાગી જઇ સરસ્વતી નદીમાં તરી દુર ભાગી ગયો. પછી વાસુદેવદાસ હાકેમનો ચોંતરો તોડીપાડી પછી પોતાના ઘરે આવ્યા. પછી રાત્રિએ હાકેમે પોતાના ઘરે આવી સિંહનંદના બે ચાર સારા સરાફ કાપડીઆને બોલાવીને કહ્યું, તમે વાસુદેવદાસના ઘરે જઇ સમાધાન કરી આવો, કે અમે ચૂકયા, તમારાથી દંડ લીધો. હવે તમે કહો તો હાકીમી કરૂં, કહો તો બીજા ગામ જાઉં. હવે જન્મભર તમને કંઇ નહી કહું. તે માટે તેમણે હાકેમની બધી વાત કહી. ત્યારે વાસુદેવદાસ કહે, અમારે શું હાકેમથી વેર છે? આવો રહો. ત્યારે હાકેમ રહ્યો. બીજા દિવસે વાસુદેવદાસને મળીને કહ્યું, તમે મનુષ્ય નથી કોઇ દેવતા છો. તે મારા ઉપર દયા રાખજો. કામ–કાજ હોય તે કહેજો. અને તે છકડા ઉઠાવીને નાખી દીધો. તે દિવસથી બધા ગામનાં લોકો તેમને વાસુદેવદાસ છકડા કહેતા. પછી વાસુદેવદાસનો ગર્વ બહુ વધ્યો. કોઇને ગામમાં મનમાં લાવે

में लावे नाही। गारी दे, तो सब चुपके रहतें। सो एक समें श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे। सो कृष्णदास सरस्वती में न्हात हते, ता समें भागजोगतें वासुदेवदास न्हाइवे सिंहनंद सों आये। सो वासुदेवदास जल उछालतें कृष्णदास मेघन पास आऐ। तब कृष्णदास मेघन ने कही, तू कौन हैं ? छींटा देत आयो? तातें रंच दूरि स्रधी रीतिसों न्हा। सबकों छींटा तेरे परत हैं। यह कृष्णदास के वचन सुनिके वासुदेवदास कृष्णदास के मारन कों हाथ उठायो। सो कृष्णदासकों श्रीआचार्यजी की कृपा को बल, सो वासुदेवदास के दोऊ हाथ पकरि लिये। सो ये वासुदेवदास बहुतेरो बल किये, परन्तु हाथ छूट्यो नाहीं। तब हार मन में माने। पाछे पूछे, तुम कोन हो ? तब कृष्णदास मेघन ने कही, मैं तो श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम प्रगटे हैं तिनको सेवक हों। पाछे कृष्णदास मेघन ने पूछे तुम कौन हो ? तब वासुदेवदास कहै, मैं सारस्वत ब्राह्मन हों। सो मेरे मनमें बड़ो गर्व हो, जो-मो बराबरि बल काहू में नाहीं। मैं पांचसो प्यादे सहित हाकिम कों हरायो, छकड़ा हजार मन को डारि दियो। सो मेरे हाथ तुम सहजमें पकरे मैं बहोतेरो बल कियो छूट्यो नाहीं। तातें तुम्हारो ऐसो प्रभाव है, सो तुम्हारे स्वामी कैसे होइंगे ? सो मैं तुम्हारे संग चलिके श्रीआचार्यजी के दरसन

નહીં. ગાળ દે તો બધા ચુપ થઇ રહેતા. પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વર પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ સરસ્વતીમાં ન્હાતા હતા. તે સમયે ભાગજોગથી વાસુદેવદાસ સિંહનંદ ન્હાવા આવ્યા. તે વાસુદેવદાસ જલ ઉછાળતાં કૃષ્ણદાસ મેધન પાસે આવ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેધને કહ્યું, તું કોણ છે? છાંટા દેતો આવ્યો? તેથી રંચક દુર સીધી રીતથી ન્હા. તારા છાંટા બધાંને ઉડે છે. એ કૃષ્ણદાસનાં વચન સાંભળીને વાસુદેવદાસે કૃષ્ણદાસને મારવાને હાથ ઉઠાવ્યો. તે કૃષ્ણદાસને તો શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાનું બલ હતુ. તેથી વાસુદેવદાસના બન્ને હાથ પકડી લીધા. ત્યારે વાસુદેવદાસે ઘણુય બલ કર્યું પરંતુ હાથ છુટયો નહીં. ત્યારે મનમાં હાર માની. પછી પૂછ્યું, તમે કોણ છો ? ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેધને કહ્યું, હું તો શ્રીવલ્લભાચાર્યજી સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ પ્રકટયા છે તેમનો સેવક છુ. પછી કૃષ્ણદાસ મેધને પૂછ્યું, તમે કોણ છો ? ત્યારે વાસુદેવદાસ કહે, હું સારસ્વત બ્રાહ્મણ છુ, મારા મનમાં બહુ ગર્વ હતો કે મારી બરાબરી બલ કોઇમાં નથી. મ્હે પાંચસો સિપાઇ સહિત હાકેમને હરાવ્યો. છકડો હજાર મણનો નાખી દીધો, તે મારા હાથ તમે સહજમાં પકડયા. મે ઘણુંય બલ કર્યું, છુટયો નહીં. તેથી તમારો આવો પ્રભાવ છે તો તમારા

करूंगो। तब कृष्णदास हाथ छोड़ि दियो। दोऊ जने न्हाइ के श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों कहे, देख, दमला! भगवदीय जाको हाथ पकरे ताकों संसार तें पार उतारे। सो कृष्णदास सहज में वासुदेवदास कों हाथ पकरे, ताके भाग की कहा है? सो वासुदेवदास आय श्रीआचार्यजी कों दण्डोत करि, पाछें विनती करी, जो–महाराज! सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमकों गर्व बहोत मन में रहत है, सो सरनि हमारी आइके कहा करोगे? हमारी सरन तें दैन्यता होत हैं। तब वासुदेवदास कहें, महाराज! अब मोकों गर्व नाहीं चहिये। गर्व किये बिगार है। अहंकारी कों भगवदीय सूझे नाहीं। कृष्णदास को अपराध कियो हतो। परन्तु भगवदीय मेरे हाथ पकरे, तातें गर्व गयो। अब आपु कृपा करो, जातें मेरो जन्म सुफल होई। और आपको प्रागट्य हम सारिखे अधमन के उद्धार अर्थ है। तब श्रीआचार्यजी वासुदेवदास कों नामनिवेदन कराये, और कहें, तेरो नाम वासुदेवदास छकड़ा। आगे गर्व में छके रहतें, अब भगवद् रस में छके रहोगे, तातें छकड़ा। और पांचों इंद्रिय विषयकी छटो मन वस करेगो, तातें तेरो नाम छकड़ा और ऐश्वर्य (१) वीर्य (२) यश (३) श्री (४) ज्ञान

સ્વામી કેવા હશે? તેથી હું તમારી સાથે ચાલીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરીશ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે હાથ છોડી દીધા. બન્ને જણ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસને કહે, દેખ દમલા! ભગવદીય જેનો હાથ પકડે તેને સંસારથી પાર ઉતારે. તે કૃષ્ણદાસે સહજમાં વાસુદેવદાસનો હાથ પકડયો તેના ભાગ્યનું શું કહીએ? ત્યારે વાસુદેવદાસે આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી પછી વિનંતી કરી કે, મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમને મનમાં ગર્વ ઘણો રહે છે તેથી અમારે શરણે આવીને શું કરશો? અમારા શરણથી દીનતા થાય છે. ત્યારે વાસુદેવદાસ કહે, મહારાજ! હવે મને ગર્વ નથી જોઇતો. ગર્વ કર્યાથી બગાડ છે. અહંકારીને ભગવદીય સૂઝતા નથી. કૃષ્ણદાસનો અપરાધ કર્યો હતો પરંતુ ભગવદીયે મારા હાથ પકડયા તેથી ગર્વ ગયો. હવે આપ કૃપા કરો. જેથી મારો જન્મ સફલ થાય અને આપનું પ્રાકટય અમારા જેવા અધમોના ઉદ્ધાર અર્થે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વાસુદેવદાસને નામ–નિવેદન કરાવ્યું. અને કહે, તારૂં નામ વાસુદેવદાસ છકડા. આગળ ગર્વમાં છકયો રહેતો હવે ભગવદ્રસમાં છકયા રહેશો. તેથી છકડા. અને પાંચે ઇન્દ્રિય વિષયની છઠો મન તેને વશ કરીશ. તેથી તારૂ નામ છકડા અને ઐશ્વર્ય (૧) વીર્ય (૨) યશ (૩) શ્રી

(५) वैराग्य (६) छट्ठो धर्म श्रीठाकुरजी में रहत हैं, सो तेरे में रहेंगे। तातें नाम छकड़ा। या प्रकार कृपा करि आसीर्वाद दे सगरे धर्म हृदय में श्रीआचार्यजी धरि दिये। सो मानसी सेवा फल रूप में मन लगि गयो। तातें भगवद् सेवा इनके उपर नाहीं पधराये। तब वासुदेवदास ने कही, महाराज! सिंहनन्द पधारिये, तो मेरे माता–पिता कों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, हमकों सरस्वती नदी उलंघनी नाहीं। तातें सिंहनन्द न जाइंगे। तातें जा, जाकी श्रद्धा सेवक होन की होय तिनकों लाइयो, और सों मति कहियो। तब वासुदेवदास श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि, सिंहनंद आई माता–पिता सों कहे, श्रीवल्लभाचार्यजी थानेस्वर पधारे हैं। सो साक्षात् भगवान को स्वरूप हैं। तातें तुम सेवक होउ। मैं उनको सेवक ह्वै के आयो। तब मातापिता ने कही, हम काल्हि सबेरे चलेंगे। आजु तो खानपान करि चुके। यह बात कहे सो इनके परोस में सास बहू रहति हती, क्षत्रानी हती। सो सास को नाम 'गोरजा' बहू को नाम 'समराई'। सो इन यह बात सुनी, (तब) वासुदेवदास सों पूछें, तुम माता–पिता कों सबेरे कहां ले जाऊगे? तब वासुदेवदास जा प्रकार सेवक भये हते, सो सब प्रकार कहै, जो–मैं ऐसे अहंकारी दुष्ट हतो, सो मोकों अंङ्गीकार किये। तब सास–बहू

---

(४) ज्ञान (५) वैराग्य (६) छओ धर्म श्रीठाकुरजीमां रहे छे ते तारामां रहेशे. तेथी नाम छकडा. आ प्रकारे कृपा करी आशीर्वाद दइ श्रीआचार्यजीए बधा धर्मो हृदयमां धरी दीधा, तेथी मानसी सेवा फलरूपमां मन लागी गयुं. तेथी भगवद्-सेवा एमना उपर नही पधरावी. त्यारे वासुदेवदासे कह्युं, महाराज! सिंहनंद पधारो तो मारा मातापिताने शरण लो त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमने सरस्वती नदी उल्लंघवी नथी. तेथी सिंहनंद नही जइए. तेथी जा, जेनी श्रद्धा सेवक थवानी होय तेने लावजे, बीजाने न कहीश त्यारे वासुदेवदास श्रीआचार्यजीने दंडवत करी सिंहनंद आवी माता–पिताने कहे, श्रीवल्लभाचार्यजी थानेश्वर पधार्या छे ते साक्षात् भगवाननुं स्वरूप छे. तेथी तमे सेवक थाव. हुं एमनो सेवक थइ आव्यो छुं. त्यारे मातापिताए कह्युं, अमे काले सवारे चालीशुं. आज तो खान-पान करी चूक्या. ए वात कही. ते एमना पडोशमां सासु–वहु रहतां हतां, क्षत्राणी हतां. ते सासुनुं नाम गोरजा, वहुनुं नाम समराइ. ते एमणे आ वात सांभळी त्यारे वासुदेवदासने पूछ्युं, तमे माता-पिताने सवारे क्यां लइ जशो? त्यारे वासुदेवदासे जे प्रकारे सेवक थया हता ते बधो प्रकार कह्यो के हुं आवो अहंकारी

ने कही, सवेरे हमहू कों ले चलियो। पाछें यह वात सब सिंहनंद में लोगन ने सुनी, जो–थानेस्वर में श्रीवल्लभाचार्यजी बड़े महापुरुष पधारे हैं। जिन को सेवक वासुदेवदास छकड़ा ऐसो अहंकारी भयो। सो सगरो गाम दरसन करन कों थानेस्वर आयो। तामें कितनेक नाम पाये, कितनेक समर्पन किये। थानेस्वर गाम में हूं वहोत जने सेवक भये। सो सवेरे वासुदेवदास माता–पिता कों और सास–वहू कों सरस्वती में न्हवाई श्रीआचार्यजी के पास आय दरसन करि, दंडौत किये। पाछें वासुदेवदास ने विनती करी, महाराज! ये माता–पिता हैं, इनकों सरनि लीजिये। और ये सिंहनंद में सास वहू रहति हैं, या वहू को धनि मरि गयो। सो ये दोऊ आपकी सरनि हैं। तब श्रीआचार्यजी सास वहू कों नाम सुनाइ निवेदन कराये। और वासुदेवदास के माता–पिता कों नाम सुनाए। तब वासुदेवदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों विनती करी, महाराज! माता–पिता कों ब्रह्मसंबंध कराइये। तब श्रीआचार्यजी कहें, इनको इतनो ही अधिकार है। इनसों निवेदन न सधेगो। तेरे संबंधसूं इनको उद्धार करि दियो। तब सासने विनती करी, महाराज! अब हमकों कहा कर्तव्य है? सो आप कृपा करिके कहिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम भगवद् सेवा करो। तब सास ने विनती करी, महाराज! अब हमकों सेवा

દુષ્ટ હતો તે મને અંગીકાર કર્યો. ત્યારે સાસુ–વહુએ કહ્યું, સવારે અમને પણ લઇ ચાલજો. પછી એ વાત સિંહનંદના બધાં માણસોએ સાંભળી. કે થાનેશ્વરમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મોટા મહાપુરૂષ પધાર્યા છે. જેમનો સેવક વાસુદેવદાસ છકડા આવો અહંકારી હતો તે થયો તેથી બધુ ગામ દર્શન કરવાને થાનેશ્વર આવ્યું. તેમાં કેટલાંક નામ પામ્યાં, કેટલાકે સમર્પણ કર્યું. થાનેશ્વર ગામમાં પણ ઘણા જણા સેવક થયા. પછી સવારે વાસુદેવદાસ માતાપિતાને અને સાસુ–વહુને સરસ્વતીમાં ન્હવડાવી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી દર્શન કર્યાં, દંડવત કર્યા. પછી વાસુદેવદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! આ માતા-પિતા છે. એમને શરણે લો. અને આ સિંહનંદમાં સાસુ–વહુ રહે છે. તે આ વહુનો ધણી મરી ગયો, તે બન્ને આપની શરણે છે. ત્યારે સાસુ–વહુને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. અને વાસુદેવદાસના માતા પિતાને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનતી કરી, મહારાજ! માતા-પિતાને બ્રહ્મસંબંધ કરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એમનો એટલોજ અધિકાર છે. એમનાથી નિવેદન નહીં સધાય. તારા સંબંધથી એમનો ઉદ્ધાર કરી દીધો. ત્યારે સાસુએ વિનંતી કરી, મહારાજ! હવે અમને શું કર્તવ્ય

पधराई दीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम सरस्वती नदी में जाऊ, तहां तुमकों भगवद् स्वरूप प्राप्ति होइगो, सो लै आवो। तब सास सरस्वती पर आई, देखें तो जल के किनारे एक ठाकुर विराजे हैं। सो देखिके वहोत प्रसन्न भई, लाय कें श्री-आचार्यजी कों दियो। तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत कराई कैं सास बहू के माथे पधराए। श्रीठाकुरजी को नाम 'श्रीदामोदरजी' धरे। पाछें कहे, घर जाई कें सेवा करो। तब सास बहू घर आई। सास चतुर हती, सो सेवा करें। बहू भोरी हती सो ऊपर की परचारगी करती। सो सास बहू की वार्ता आगे कहेंगे। तहां इनको लीला को स्वरूप भाव कहेंगे। पाछें वासुदेवदास सों श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम माता-पिता कों लेके घर जावो। तब वासुदेवदास ने कही, मेरो मन आपके संग रहिवे को है। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तो तुम माता-पिता को घर ले जाइकें गाम में रहो। पाछें माता-पिता की देह कछुक दिन में छूटेगी, तब तू हमारे घर में आई रहियो। तब वासुदेवदास दंडवत् करि माता-पिता कों सिहनंद में ले गये। श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे।

वार्ता-प्रसंग १—और एक समें श्रीआचार्यजी अड़ेल में बिरा-

છે ? તે આપ કૃપા કરીને કહો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે સાસુએ વિનતી કરી, મહારાજ! હવે અમને સેવા પધરાવી આપો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે સરસ્વતી નદીમાં જાવ ત્યાં તમને ભગવદ્સ્વરૂપ પ્રાપ્ત થશે તે લઇ આવો. ત્યારે સાસુ સરસ્વતી ઉપર આવી, જુએ તો જલના કિનારે એક ઠાકુર બિરાજે છે. તે જોઇને બહુ પ્રસન્ન થઇ. લાવીને (તે સ્વરૂપ) શ્રીઆચાર્યજીને આપ્યુ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઈ તેને પચામૃત સ્નાન કરાવીને સાસુ-વહુના માથે પધરાવ્યા. શ્રીઠાકુરજીનુ નામ 'શ્રીદામોદરજી' ધર્યુ. પછી કહે, ઘર જઇને સેવા કરો. ત્યારે સાસુ-વહુ ઘર આવી. સાસુ ચતુર હતી તે સેવા કરે. વહુ ભોળી હતી તે ઉપરની પરચારગી કરતી. તે સાસુ વહુની વાર્તા આગળ કહીશુ. ત્યાં એમનાં લીલાનાં સ્વરૂપ ભાવ કહીશુ પછી વાસુદેવદાસને શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તમે માતા પિતાને લઇને ઘર જાવ. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, મારૂ મન આપની સાથે રહેવાનુ છે ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તમે માતા-પિતાને ઘર લઇ જઇને ગામમાં રહો પછી માતા-પિતાની દેહ થોડા દિવસમાં છૂટશે ત્યારે તૂ અમારા ઘરમાં આવી રહેજે. ત્યારે વાસુદેવદાસ દડવત્ કરી માતા પિતાને સિહુનદ લઇ ગયા અને શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા માટે પધાર્યા.

વાર્તા-પ્રસગ ૧—એક સમય શ્રીઆચાર્યજી અડેલમાં બિરાજતા હતા. ત્યારે

जात हते। सो एक दिन भंडारी नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! आज भंडार में सीधो सामान कछू नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी एक सोने की कटोरी श्रीठाकुरजी के मन्दिर में तें लाइ दिये। और कहें, आजु के लायक राजभोग पर्यन्त की सामग्री ले आवो, अधिकी मति लाइयो। यह बनिया के यहां कटोरी गहनें धरि आइयो। तब भंडारी सोने की कटोरी ले बनिया के इहां धरि, राजभोग की सामग्री सब लायो। पाछें सामग्री करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि समयानुसार भोग सराय आरती करि अनोसर कराये। महाप्रसाद श्रीयमुनाजी में पधराई दियो। और बाकी गायन कों खवाइ दियो। आप परिकर सगरे सेवक सहित भूखे ही बैठे रहे।

भावप्रकाश—सो यह वैष्णव को शिक्षा दिये, जो–श्रीठाकुरजी की वस्तु होई सो वैष्णव कों लेनो नाहीं, ठाकुर अरोगें। यह रीति सबकों सिखाये।

और यहां सिंहनंद के सगरे वैष्णव मिलि कें श्रीआचार्यजी की भेट की मोहोर तीस हती सो वासुदेवदास छकड़ा कों दीनी। जो–ये श्रीआचार्यजी कों पहोंचती होइ, तो आछो। तब वासुदेवदास वैरागी को भेष धरि, सगरी मोहोर कों लाख के गोला सालिग्राम जैसे करि, चंदन चढ़ावत चले। सो सिंहनंद के चले थानेस्वर रहै, वैष्णव

એક દિવસે ભંડારીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! આજ ભંડારમાં સીધું-સામાન કંઇ નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એક સોનાની કટોરી શ્રીઠાકુરજીના મંદિરમાંથી લાવી દીધી. અને કહ્યું, આજના લાયક રાજભોગ પર્યંતની સામગ્રી લઇ આવો. વિશેષ ન લાવતો વાણિયાને ત્યાં આ કટોરી ઘરેણે ધરી આવજે. ત્યારે ભંડારી સોનાની કટોરી લઇ વાણિયાને ત્યાં ધરી રાજભોગની સામગ્રી બધી લઇ આવ્યો. પછી સામગ્રી કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી સમયાનુસાર ભોગ સરાવી આર્તિ કરી અનોસર કરાવ્યા. મહાપ્રસાદ શ્રીયમુનાજીમાં પધરાવી દીધો અને બાકી ગાયને ખવડાવી દીધો. પોતે, પરિકર બધા સેવકો સહિત ભૂખ્યા જ બેસી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આમ વૈષ્ણવને શિક્ષા આપી, કે શ્રીઠાકુરજીની વસ્તુ હોય તે વૈષ્ણવે નહી લેવી ઠાકુર આરોગે એ રીતિ બધાને શિખવી.

અને અહી સિંહનંદના સઘળા વૈષ્ણવ મળીને શ્રીઆચાર્યજીની ભેટની મહોર ત્રીસ હતી તે વાસુદેવદાસ છકડાને આપી. (કહ્યું) જે આ શ્રીઆચાર્યજીને પહોંચતી થાય તો ઠીક. ત્યારે વાસુદેવદાસ વૈરાગીનો વેષ ધરી બધી મહોરને લાખનો ગોળો શાલીગ્રામ જેમ કરી ચંદન ચડાવતા ચાલ્યા. તે સિંહનંદના ચાલ્યા થાનેશ્વર રહ્યા.

पधराई दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम सरस्वती नदी में जाऊ, तहां तुमकों भगवद् स्वरूप प्राप्ति होइगो, सो लै आवो । तब सास सरस्वती पर आई, देखें तो जल के किनारे एक ठाकुर विराजे हैं । सो देखिके बहोत प्रसन्न भई, लाय कें श्रीआचार्यजी कों दियो । तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत कराई कैं सास बहू के माथे पधराए । श्रीठाकुरजी को नाम 'श्रीदामोदरजी' धरे । पाछें कहे, घर जाई कें सेवा करो । तब सास बहू घर आई। सास चतुर हती, सो सेवा करें । बहू भोरी हती सो ऊपर की परचारगी करती । सो सास बहू की वार्ता आगे कहेंगे । तहां इनको लीला को स्वरूप भाव कहेंगे । पाछें वासुदेवदास सों श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम माता-पिता कों लेके घर जावो । तब वासुदेवदास ने कही, मेरो मन आपके संग रहिवे को है । तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तो तुम माता-पिता को घर ले जाइकें गाम में रहो । पाछें माता-पिता की देह कछुक दिन में छूटेगी, तब तू हमारे घर में आई रहियो । तब वासुदेवदास दंडवत् करि माता-पिता कों सिहनंद में ले गये । श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे ।

वार्ता-प्रसंग १—और एक समें श्रीआचार्यजी अड़ेल में बिरा-

છે ? તે આપ કૃપા કરીને કહો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે સાસુએ વિનતી કરી, મહારાજ ! હવે અમને સેવા પધરાવી આપો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે સરસ્વતી નદીમાં જાવ ત્યાં તમને ભગવદ્સ્વરૂપ પ્રાપ્ત થશે તે લઇ આવો. ત્યારે સાસુ સરસ્વતી ઉપર આવી, જુએ તો જલના કિનારે એક ઠાકુર બિરાજે છે. તે જોઇને બહુ પ્રસન્ન થઇ. લાવીને (તે સ્વરૂપ) શ્રીઆચાર્યજીને આપ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઈ તેને પચામૃત સ્નાન કરાવીને સાસુ-વહુના માથે પધરાવ્યા. શ્રીઠાકુરજીનુ નામ 'શ્રીદામોદરજી' ધર્યું. પછી કહે, ઘર જઇને સેવા કરો. ત્યારે સાસુ-વહુ ઘર આવી. સાસુ ચતુર હતી તે સેવા કરે. વહુ ભોળી હતી તે ઉપરની પરચારગી કરતી. તે સાસુ વહુની વાર્તા આગળ કહીશુ. ત્યાં એમનાં લીલાનાં સ્વરૂપ ભાવ કહીશુ પછી વાસુદેવદાસને શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તમે માતા પિતાને લઇને ઘર જાવ. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યુ, મારૂ મન આપની સાથે રહેવાનુ છે ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તમે માતા-પિતાને ઘર લઇ જઇને ગામમાં રહો પછી માતા-પિતાની દેહ થોડા દિવસમાં છૂટશે ત્યારે તૂ અમારા ઘરમાં આવી રહેજે. ત્યારે વાસુદેવદાસ દંડવત્ કરી માતા પિતાને સિહનંદ લઇ ગયા અને શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા માટે પધાર્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એક સમય શ્રીઆચાર્યજી અડેલમાં બિરાજતા હતા. ત્યારે

जत हते। सो एक दिन भंडारी नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! आज भंडार में सीधो सामान कछू नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी एक सोने की कटोरी श्रीठाकुरजी के मन्दिर में तें लाइ दिये। और कहें, आजु के लायक राजभोग पर्यन्त की सामग्री ले आवो, अधिकी मति लाइयो। यह बनिया के यहां कटोरी गहनें धरि आइयो। तब भंडारी सोने की कटोरी ले बनिया के इहां धरि, राजभोग की सामग्री सब लायो। पाछें सामग्री करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि समयानुसार भोग सराय आरती करि अनोसर कराये। महाप्रसाद श्रीयमुनाजी में पधराई दियो। और बाकी गायन कों खवाइ दियो। आप परिकर सगरे सेवक सहित भूखे ही बैठे रहे।

भावप्रकाश—सो यह वैष्णव को शिक्षा दिये, जो–श्रीठाकुरजी की वस्तु होई सो वैष्णव कों लेनो नाही, ठाकुर अरोगें। यह रीति सबकों सिखाये।

और यहां सिंहनंद के सगरे वैष्णव मिलि कें श्रीआचार्यजी की भेट की मोहौर तीस हती सो वासुदेवदास छकड़ा कों दीनी। जो–ये श्रीआचार्यजी कों पहोंचती होइ, तो आछो। तब वासुदेवदास वैरागी को भेष धरि, सगरी मोहौर कों लाख के गोला सालिग्राम जैसे करि, चंदन चढ़ावत चले। सो सिंहनंद के चले थानेस्वर रहै, वैष्णव

એક દિવસે ભંડારીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! આજ ભંડારમાં સીધુ–સામાન કંઇ નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એક સોનાની કટોરી શ્રીઠાકુરજીના મંદિરમાંથી લાવી દીધી. અને કહ્યું, આજના લાયક રાજભોગ પર્યંતની સામગ્રી લઇ આવો. વિશેષ ન લાવતો. વાણિયાને ત્યાં આ કટોરી ઘરેણે ધરી આવજે. ત્યારે ભંડારી સોનાની કટોરી લઇ વાણિયાને ત્યાં ધરી રાજભોગની સામગ્રી બધી લઇ આવ્યો. પછી સામગ્રી કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી સમયાનુસાર ભોગ સરાવી આર્તિ કરી અનોસર કરાવ્યા મહાપ્રસાદ શ્રીયમુનાજીમાં પધરાવી દીધો અને બાકી ગાયને ખવડાવી દીધો. પોતે પરિકર બધા સેવકો સહિત ભૂખ્યા જ બેસી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આમ વૈષ્ણવને શિક્ષા આપી, કે શ્રીઠાકુરજીની વસ્તુ હોય તે વૈષ્ણવે નહી લેવી ઠાકુર આરોગે એ રીતિ બધાને શિખવી.

અને અહીં સિંહનંદના સઘળા વૈષ્ણવ મળીને શ્રીઆચાર્યજીની ભેટની મહોર ત્રીસ હતી તે વાસુદેવદાસ છકડાને આપી. (કહ્યું) જે આ શ્રીઆચાર્યજીને પહોચતી થાય તો ઠીક. ત્યારે વાસુદેવદાસ વૈરાગીનો વેષ ધરી બધી મહોરને લાખનો ગોળો શાલીગ્રામ જેમ કરી ચંદન ચઢાવતા ચાલ્યા. તે સિંહનંદના ચાલ્યા થાનેશ્વર રહ્યા

के घर महाप्रसाद लिये। थानेस्वर के चले दिल्ली रात्रि रहै। वैष्णव के घर महाप्रसाद लिये। दिल्ली के चले मथुरा रहै, वैष्णव के घर महाप्रसाद लिये। मथुरा के चले आगरे रात्रि रहै, वैष्णवन के घर महाप्रसाद लिये। मार्ग में चोर ठग मिले, सो जाने, जो-बैरागी है, सालिग्राम पूजत जात है।

भावप्रकाश—वासुदेवदास के सरीर में बल बहोत हतो, ऐसो क्यों किये? सो यातें, जाने जो–यह श्रीआचार्यजी को द्रव्य है, कहू मार्ग में सोई जाइ, तब कोऊ चोरी करें। सन्मुख तो काहू को सामर्थ नाहीं, जो–ले सके। और गुरु की सेवार्थ, सालिग्राम की रीति करि ले गयो हो, सो भगवद् अपराध हू मन में नाहीं लाये। सो यातें, जो गुरु को कार्य करनो, कोई प्रकार सों होइ, गुरु सेवा बने। तासों भगवद् अपराध बाधक नाहीं। भगवद् सेवा में गुरु अपराध सों डरपत रहेनो, यह जताये।

पाछें आगरे सों चले सो दोई दिन चबेना सों काम चलाये। तीसरे दिन, तीसरे प्रहर, जा दिन श्रीआचार्यजी भूखे बैठे रहैं, ता दिन अड़ेल आये। सो गाम बाहिर आई लाख को गोला फोरि, मोहौर काढ़ि आये, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दियो, मोहौर तीस आगे धरी। महाप्रभुन सों बिनती किये, महाराज! सिंहनंद

વૈષ્ણવોના ઘરે મહાપ્રસાદ લીધો. થાનેશ્વરના ચાલ્યા દિલ્હી રાત્રિ રહ્યા. વૈષ્ણવોને ઘરે મહાપ્રસાદ લીધો. દીલ્હીના ચાલ્યા મથુરા રહ્યા. વૈષ્ણવોના ઘરે મહાપ્રસાદ લીધો. મથુરાના ચાલ્યા આગરા રાત્રિ રહ્યા. વૈષ્ણવોને ઘરે મહાપ્રસાદ લીધો. માર્ગમાં ચોર-ઠગ મળ્યા તે જાણે, કે વૈરાગી છે. શાલીગ્રામ પૂજતા જાય છે.

ભાવપ્રકાશ—વાસુદેવદાસના શરીરમાં બળ ઘણું હતું. પછી એમ કેમ કર્યું? તે એથી, જાણે કે આ શ્રીઆચાર્યજીનું દ્રવ્ય છે. કંઇ રસ્તામાં સૂઇ જાય ત્યારે કોઇ ચોરી કરે. સન્મુખ તો કોઇની સામર્થ્ય નથી કે લઇ શકે. અને ગુરુની સેવા માટે શાલીગ્રામની રીતિ કરીને લઇ ગયા હતા તે ભગવદ્-અપરાધ પણ મનમાં ન લાવ્યા. તે એથી કે ગુરુનું કાર્ય કરવું. કોઇ પ્રકારથી થાય ગુરુસેવા બને. તેથી ભગવદ્ અપરાધ બાધક નહીં. ભગવદ્સેવામાં ગુરુ–અપરાધથી ડરતું રહેવું. એ જણાવ્યુ.

પછી આગરાથી ચાલ્યા તે બે દિવસ ચણા-ચવેણાથી કામ ચલાવ્યું. ત્રીજા દિવસના ત્રીજા પ્રહરે જે દિવસે શ્રીઆચાર્યજી ભૂખ્યા બિરાજી રહ્યા હતા તે દિવસે અડેલ આવ્યા. તે ગામ બહાર આવી લાખનો ગોળો ફોડી મહોર કાઢી આવ્યા. તે

के वैष्णव की भेट हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, वासुदेवदास! इतनी मोहौर तू कैसे लायो? मार्ग में चोर ठग बहोत हैं? तब वासुदेवदास ने कही, महाराज! यह बात तो मैं न कहूंगो, आपु खीजोगे सुनिके। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहै, हम तेरे उपर प्रसन्न होंगे, न खीजेंगे। जैसे लायो सो कहि दे। तब वासुदेवदास ने सब प्रकार कह्यो, जो-लाख को गोला करि, चंदन चढ़ावत आयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहै, ऐसे न करिये। भगवद् स्वरूप को आकार करि पाछें अन्यथा करनो पड़े। तब वासुदेवदास ने कही, महाराज! कछू प्रतिष्ठा करी न हती। लाग्व को गोला बांध्यो हतो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, तऊ ऐसे न करिये। पाछें भंडारी कों बुलाय तीस मोहौर श्रीआचार्यजी महाप्रभु दिये। और कहें, मंगलातें ले सेन पर्यंत की सामग्री ले कटोरी छुड़ाइ ले आवो। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेन पर्यंत पहोंचि श्रीठाकुरजी कों अनोसर कराय आप भोजन किये। ता पाछें श्रीअक्काजी आदि सगरे परिकर भोजन किये। वासुदेवदास कों महाप्रसाद की पातर धरी, सगरे सेवक वैष्णव महाप्रसाद लिये। पाछें तीस मोहौर की पोहोंच लिखि, श्री-

---

શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને આપી. ત્રીસ મહોર આગળ ધરી. મહાપ્રભુને વિનંતી કરી, મહારાજ! સિંહનંદના વૈષ્ણવોની ભેટ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, વાસુદેવદાસ! આટલી મહોર તૂ કેવી રીતે લાવ્યો? માર્ગમાં ચોર-ઠગ ઘણા છે. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, મહારાજ! એ વાત તો હું નહીં કહું. આપ સાંભળીને ખીજો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, અમે તારા ઉપર પ્રસન્ન થઇશું. નહીં ખીજીએ. જેવી રીતે લાવ્યો તે કહી દે. ત્યારે વાસુદેવદાસે બધો પ્રકાર કહ્યો, કે લાખનો ગોળો કરી ચંદન ચડાવતો (ર) લાવ્યો છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, એમ ન કરીએ. ભગવત્સ્વરૂપનો આકાર કરી પછી બીજો પ્રકાર કરવો પડે. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, મહારાજ! કંઇ પ્રતિષ્ઠા કરી ન હતી. લાખનો ગોળો બાંધ્યો હતો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, તો પણ એમ ન કરીએ. પછી ભંડારીને બોલાવીને ત્રીસ મહોર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ આપી અને કહે, મંગલાથી લઇ સેન પર્યંતની સામગ્રી લઇ વાડકી છોડાવીને લઇ આવો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ સેનપર્યંત પહોંચી શ્રીઠાકુરજીને અનોસર કરાવી પોતે ભોજન કર્યું. તે પછી અક્કાજી આદિ બધા પરિકરે ભોજન કર્યું. વાસુદેવદાસને મહાપ્રસાદની પાતર ધરી. બધા સેવક વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો. પછી ત્રીસ મહોરની પહોંચ લખી આપી. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ બીજા દિવસે વાસુદેવદાસને વિદાય

आचार्यजी महाप्रभु वासुदेवदास कों दूसरे दिन बिदा किये। सो वासुदेवदास कछुक दिन में सिंहनन्द आय पहोंचे, पत्र वैष्णवन कों दिये। तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होय, वासुदेवदास सों पूछ्यो, जो–तुम इतनी दूरि मोहोर कैसे ले गये? राह तो निबहत ऐसी नाहीं। ठग चोरन को डर है बहोत ही? तब वासुदेवदास उन वैष्णवन आगे सब प्रकार कहे। तब सगरे वैष्णव वासुदेवदास की सराहना करन लागे।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी आगरे पधारे। सो श्रीगुसांईजी की भेट सौ मोहोर हती सो वैष्णव श्रीगोपीनाथजी कों दीनी। इतने ही में सिंहनंद सों वासुदेवदास छकड़ा आगरे आये। ता समय श्रीगोपीनाथजी ने कही, जो–ऐसो कोई वैष्णव है? जो–ये सौ मोहोर अड़ेल पहोंचावे। तब वासुदेवदास ने कही, जो–महाराज! मोकों देउ, मैं पहोंचाऊँगो। तब श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजी कों पत्र लिखि दियो। और सौ मोहोर वासुदेवदास छकडा कों दीनो। तब वासुदेवदास वैसे ही लाख को गोला करि चंदन चढ़ावत वैरागी भेष सों चले। मारग में चवेनी कों लेइ। सो तीसरे दिन अड़ेल आई लाख में ते मोहोर निकासी। श्रीगुसांईजी कों आई दंडवत करि श्रीगोपीनाथजी

કર્યા. તે વાસુદેવદાસ કેટલાક દિવસમાં સિંહનંદ આવી પહોંચ્યા. પત્ર વૈષ્ણવોને આપ્યો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ પ્રસન્ન થઇ વાસુદેવદાસને પૂછ્યું, કે તમે એટલી દૂર મહોર કેવી રીતે લઇ ગયા? રસ્તો તો ઘટે એવો નથી. ઠગ ચોરનો ડર છે ઘણો જ. ત્યારે વાસુદેવદાસે તે વૈષ્ણવો આગળ બધો પ્રકાર કહ્યો, ત્યારે બધા વૈષ્ણવો વાસુદેવદાસના વખાણ કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—વળી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના મોટા પુત્ર શ્રીગોપીનાથજી આગરા પધાર્યા. તે શ્રીગુસાંઇજીની ભેટની સો મહોર હતી તે વૈષ્ણવોએ શ્રીગોપીનાથજીને આપી. એટલામા સિંહનંદથી વાસુદેવદાસ છકડા આગરે આવ્યા તે સમયે શ્રીગોપીનાથજીએ કહ્યું, કે એવો કોઇ વૈષ્ણવ છે, કે આ સો મહોર અડેલ પહોંચાવે. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, કે મહારાજ! મને દો હું પહોંચાડીશ. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજીએ શ્રીગુસાંઇજીને પત્ર લખી દીધો. અને સો મહોર વાસુદેવદાસ છકડાને આપી ત્યારે વાસુદેવદાસે તેવી જ રીતે લાખનો ગોળો કરી ચંદન ચઢાવતાં વૈરાગી વેષથી ચાલ્યા. માર્ગમાં ચના ચવેણાને લે. પછી ત્રીજા દિવસે અડેલ આવી લાખમાંથી મહોર કાઢી. શ્રીગુસાંઇજી આગળ આવી દંડવત કરી શ્રીગોપીનાથજીનો પત્ર દઇને સો

कों पत्र देके, सौ मोहौर आगे धरी। तब श्रीगुसांईजी पत्र कों बांचि मोहौर संभारि भंडारी कों दिये। पाछें वासुदेवदास कों महाप्रसाद लिवाये। ता पाछें दूसरे दिन मोहौरन की पहोंच आप श्रीगुसांईजी लिखि वासुदेवदास कों दिये। तब वासुदेवदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि अडेल तें चले। सो तीसरे दिन आगरे आय श्रीगुसांईजी को पत्र श्रीगोपीनाथजी कों वासुदेवदास दिये। तब श्रीगोपीनाथजी वह पत्र बांचि के वासुदेवदास ऊपर बहोत प्रसन्न भये। पाछें पूछे, जो–इतनी मोहौर मार्ग में अकेले कैसे तुम ले गये वासुदेवदास! सो प्रकार तो हमसों कहो? तब वासुदेवदास सब प्रकार श्रीगोपीनाथजी सों कहें। तब श्रीगोपीनाथजी वासुदेवदास सों कहे, जो–ऐसे कबहू न करिये। तब वासुदेवदास छकड़ा चुप है रहे।

भावप्रकास—सो यातें, जो–यह मर्यादा की आज्ञा है, जो–दोष लगे। गुरु के कार्यार्थ यामें कहा दोष है। या प्रकार वासुदेवदास एक पुष्टि कार्य सर्वोपरि जानते। तातें या प्रकार सों सेवा करी।

वार्ता–प्रसंग ३—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीमथुरा में विराजते हते। सो श्रीठाकुरजी सों राजभोग सों पहोंचि आप भोजन करि वैठक में पधारे। तब आगरे में रूपचन्दनन्दा श्रीगुसां-

---

મ્હોર આગળ ધરી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પત્રને વાંચીને મ્હોર ગણીને ભંડારીને આપી. પછી વાસુદેવદાસને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. તે પછી બીજા દિવસે મ્હોરોની પહોચ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે લખી વાસુદેવદાસને આપી. ત્યારે વાસુદેવદાસ શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરી અડેલથી ચાલ્યા. તે ત્રીજા દિવસે આગ્રા આવી શ્રીગુસાંઇજીનો પત્ર વાસુદેવદાસે શ્રીગોપીનાથજીને આપ્યો. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજી તે પત્રને વાંચીને વાસુદેવદાસ ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા. પછી પૂછ્યું, આટલી મ્હોર માર્ગમાં એકલા કેવી રીતે તમે લઇ ગયા, વાસુદેવદાસ! તે પ્રકાર તો અમને કહો? ત્યારે વાસુદેવદાસે બધો પ્રકાર શ્રીગોપીનાથજીને કહ્યો. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજી વાસુદેવદાસને કહે, કે એમ ક્યારેય ન કરવું. ત્યારે વાસુદેવદાસ છકડા ચુપ થઇ રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી, કે એ મર્યાદાની આજ્ઞા છે કે દોષ લાગે. ગુરૂના કાર્યાર્થ એમાં શો દોષ છે? એ પ્રકારે વાસુદેવદાસ એક પુષ્ટિ કાર્ય સર્વોપરિ જાણતા. તેથી આ પ્રકારે સેવા કરી.

વાર્તા–પ્રસંગ ૩—વળી એક સમય શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમથુરામાં બિરાજતા હતા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને રાજભોગથી પહોંચી પોતે ભોજન કરી બેઠકમાં પધાર્યા. ત્યારે આગ-

ईजी के सेवक हैं, तिनकों श्रीगुसांईजी पत्र लिखें। तामें बसंतपंचमी की सामग्री मँगाए। पाछें वासुदेवदास कों बुलाइ कें, पत्र देके श्री-गुसांईजी कहे, जो–इतनी सामग्री आगरे तें रूपचन्दनन्दा सों लेके सांझ तांइ आइ रहियो। और एक टोकरा महाप्रसाद मँगाइ, एक चादर की झोली बनाई, बासुदेवदास के गरे में डारि महाप्रसाद तामें भराये। तब बासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! जोड़ा पहेरे महाप्रसाद कैसे लेतो जाऊं? तब श्रीगुसांईजी कहैं, तुमकों दोष नहीं, श्रीठाकुरजी की सेवार्थ जात हौ, सो जोड़ा कों पहेरे ही आनन्द सों प्रसाद लेत चले जइयो। तब बासुदेव-दास प्रसाद लेते ही मथुरा तें चले। सो आगरे में जाइ के रूपचन्द-नन्दा के घर गए। ता समय रूपचन्दनन्दा महाप्रसाद ले हाथ धोवत हते। सो वासुदेवदास छकड़ा कों देखि भगवत–स्मरन करि, घरमें कहै, बड़ो हांडा धरि रसोई चढ़ावो। तब बासुदेवदास ने कही, रसोई होयगी तहां तांई मैं न रहूंगो। पत्र बांचि मोकों सामग्री लिवाय देऊ, अवही मथुरा जाऊंगो। तब रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजी को पत्र माथे चढ़ाई, बांचि के अपने भाई सों कहै, जो–घर में जितनो अन-सखड़ी महाप्रसाद होय सो सब एक टोकरा में ले 'छारछू' दरवाजे

રામાં રૂપચંદનંદા શ્રીગુસાંઇજીના સેવક હતા. તેમને શ્રીગુસાંઇજીએ પત્ર લખ્યો. તેમાં વસંત પંચમીની સામગ્રી મંગાવી. પછી વાસુદેવદાસને બોલાવીને પત્ર આપીને શ્રી-ગુસાંઇજી કહે, કે આટલી સામગ્રી આગરાથી રૂપચંદનંદા પાસેથી લઇને સાંજ સુધી આવી રહેજો. અને એક છાબડું મહાપ્રસાદનું મંગાવી એક ચાદરની ઝોલી બનાવી વાસુદેવદાસના ગળામાં નાખી મહાપ્રસાદ તેમાં ભર્યો. ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીગુસાંઇજી-ને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! જોડા પહેરીને મહાપ્રસાદ કેમ લેતો જઉં? ત્યારે શ્રી-ગુસાંઇજી કહે, તમને દોષ નથી. શ્રીઠાકુરજીની સેવા માટે જાવ છો તેથી જોડાને પહેરીને જ આનન્દથી પ્રસાદ લેતા ચાલ્યા જજો. ત્યારે વાસુદેવદાસ પ્રસાદ લેતાં લેતાંજ મથુરાથી ચાલ્યા. તે આગરામાં જઇને રૂપચંદનંદાના ઘરે ગયા. તે સમયે રૂપચંદનંદા મહાપ્રસાદ લઇ હાથ ધોતા હતા. તે વાસુદેવદાસ છકડાને જોઇને ભગવત્સ્મરણ કરી ઘરમાં કહે, મોટો હાંડો ધરી રસોઇ ચઢાવો. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, રસોઇ થશે ત્યાં સુધી હું નહીં રહું. પત્ર વાંચી મને સામગ્રી અપાવી દો. હમણાં જ મથુરા જઇશ. ત્યારે રૂપચંદનં-દાએ શ્રીગુસાંઇજીનો પત્ર માથે ચઢાવી વાંચીને પોતાના ભાઇને કહે, કે ઘરમાં જેટલો અનસખડી મહાપ્રસાદ હોય તે બધો એક ટોકરામાં લઇ 'છારછુ' દરવાજે જઇ બેસજો. હું

जाई बैठियो, मैं बजार में होइ आवत हों। तब रूपचन्दनन्दा वासुदेवदास कों बजार में आई वसंत लायक सुन्दर वस्त्र आदि सामग्री लेके देन लागे। तब वासुदेवदास ने कही, मेरो हाथ प्रसादी है, तातें तुम मेरी पीठि सों बांधि देऊ। तब रूपचन्दनन्दा बासुदेवदास की पीठि सों सब सामग्री बांधि, पत्र लिख के दिये। वासुदेवदास के संग छारछू दरवाजे आय, भाई सों महाप्रसाद को टोकरा ले वासुदेवदास की झोली भरि दीनी, पाछें विदा करिके दोऊ भाई घर आये। और वासुदेवदास महाप्रसाद लेत आगरे सों चले, सो तीसरे पहर भये श्रीगुसांईजी पोढ़ि उठि के मुख धोइके गादी पर विराजे हते, ताही समय वासुदेवदास आय ठाड़े भये। पाछें श्रीगुसांईजी सों विनती किये, जो-महाराज! मेरो हाथ प्रसादी है, और सामग्री मेरी पीठि पर बांधि हैं। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइ आपु उठि के वासुदेवदास की पीठि सों सामग्री खोलि लिये। पाछे रूपचन्दनन्दा को पत्र ले बांचि के श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये। पाछे श्रीगुसांइजी वासुदेवदास सों श्रीमुखतें कहें, जो-वासुदेवदास! तेरे लिये महाप्रसाद की पातर ढांकि राखी है। सो भीतर जाई महाप्रसाद ले। तब वासुदेवदास न्हाइ के महाप्रसाद लिये। पाछें सगरी सामग्री श्रीगुसांईजी सिद्ध करि राखे। सवेरे वसन्तपंचमी हती, सो उत्सव

બજારમાં થઇને આવું છું. ત્યારે રૂપચંદનંદા વાસુદેવદાસને બજારમાં આવી વસંત લાયક સુંદર વસ્ત્ર આદિ સામગ્રી લઇને દેવા લાગ્યા. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, મારો હાથ પ્રસાદી છે તેથી તમે મારી પીઠથી બાંધી દો. ત્યારે રૂપચંદનંદાએ વાસુદેવદાસની પીઠથી બધી સામગ્રી બાંધી, પત્ર લખીને આપ્યો. વાસુદેવદાસની સાથે છારછુ દરવાજે આવી ભાઇથી મહાપ્રસાદનો ટોકરો લઇ વાસુદેવદાસની ઝોલી ભરી દીધી. પછી વિદાય કરીને બન્ને ભાઇ ઘર આવ્યા અને વાસુદેવદાસ મહાપ્રસાદ લેતા આગરાથી ચાલ્યા. તે ત્રીજો પ્રહર થયો ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોઢી ઉઠીને મુખ ધોઇને ગાદી ઉપર બિરાજ્યા હતા તેજ સમયે વાસુદેવદાસ આવીને ઉભા રહ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મારો હાથ પ્રસાદી છે અને સામગ્રી મારી પીઠ ઉપર બાંધી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પ્રસન્ન થઇ આપ ઉઠીને વાસુદેવદાસની પીઠથી સામગ્રી ખોલી લીધી. પછી રૂપચંદનંદાનો પત્ર લઈ વાંચીને શ્રીગુસાંઇજી પ્રસન્ન થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજી વાસુદેવદાસને શ્રીમુખથી કહે, કે વાસુદેવદાસ! તારા માટે મહાપ્રસાદની પાતર ઢાંકી રાખી છે. તે અંદર જઇ મહાપ્રસાદ લે. ત્યારે વાસુદેવદાસે ન્હાઇને મહાપ્રસાદ લીધો. પછી બધી સામગ્રી શ્રીગુસાંઇ-

ईजी के सेवक हैं, तिनकों श्रीगुसांईजी पत्र लिखें। तामें बसंतपंचमी की सामग्री मँगाए। पाछें वासुदेवदास कों बुलाइ कें, पत्र देके श्रीगुसांईजी कहे, जो–इतनी सामग्री आगरे तें रूपचन्दनन्दा सों लेके सांझ तांइ आइ रहियो। और एक टोकरा महाप्रसाद मँगाइ, एक चादर की झोली बनाई, वासुदेवदास के गरे में डारि महाप्रसाद तामें भराये। तब बासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो–महाराज! जोड़ा पहेरे महाप्रसाद कैसे लेतो जाऊं? तब श्रीगुसांईजी कहैं, तुमकों दोष नहीं, श्रीठाकुरजी की सेवार्थ जात हौ, सो जोड़ा कों पहेरे ही आनन्द सों प्रसाद लेत चले जइयो। तब वासुदेवदास प्रसाद लेते ही मथुरा तें चले। सो आगरे में जाइ के रूपचन्दनन्दा के घर गए। ता समय रूपचन्दनन्दा महाप्रसाद ले हाथ धोवत हते। सो वासुदेवदास छकड़ा कों देखि भगवत-स्मरन करि, घरमें कहै, बड़ो हांडा धरि रसोई चढ़ावो। तब बासुदेवदास ने कही, रसोई होयगी तहां तांई मैं न रहूंगो। पत्र बांचि मोकों सामग्री लिवाय देऊ, अवही मथुरा जाऊंगो। तब रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजी को पत्र माथे चढ़ाई, बांचि के अपने भाई सों कहै, जो–घर में जितनो अनसखड़ी महाप्रसाद होय सो सब एक टोकरा में ले 'छारछू' दरवाजे

રામાં રૂપચંદનંદા શ્રીગુસાંઇજીના સેવક હતા. તેમને શ્રીગુસાંઇજીએ પત્ર લખ્યો. તેમાં વસંત પંચમીની સામગ્રી મંગાવી. પછી વાસુદેવદાસને બોલાવીને પત્ર આપીને શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે આટલી સામગ્રી આગરાથી રૂપચંદનંદા પાસેથી લઇને સાંજ સુધી આવી રહેજો. અને એક છાબડું મહાપ્રસાદનું મંગાવી એક ચાદરની ઝોલી બનાવી વાસુદેવદાસના ગળામાં નાખી મહાપ્રસાદ તેમાં ભર્યો. ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! જોડા પહેરીને મહાપ્રસાદ કેમ લેતો જઉં? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તમને દોષ નથી. શ્રીઠાકુરજીની સેવા માટે જાવ છો તેથી જોડાને પહેરીને જ આનન્દથી પ્રસાદ લેતા ચાલ્યા જજો. ત્યારે વાસુદેવદાસ પ્રસાદ લેતાં લેતાંજ મથુરાથી ચાલ્યા. તે આગરામાં જઇને રૂપચંદનંદાના ઘરે ગયા. તે સમયે રૂપચંદનંદા મહાપ્રસાદ લઇ હાથ ધોતા હતા. તે વાસુદેવદાસ છકડાને જોઇને ભગવત્સ્મરણ કરી ઘરમાં કહે, મોટો હાંડો ધરી રસોઇ ચઢાવો. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, રસોઇ થશે ત્યાં સુધી હું નહીં રહું. પત્ર વાંચી મને સામગ્રી અપાવી દો. હમણાં જ મથુરા જઇશ. ત્યારે રૂપચંદનંદાએ શ્રીગુસાંઇજીનો પત્ર માથે ચઢાવી વાંચીને પોતાના ભાઇને કહે, કે ઘરમાં જેટલો અનસખડી મહાપ્રસાદ હોય તે બધો એક ટોકરામાં લઇ 'છારછુ' દરવાજે જઇ બેસજો. હું

जो–अब कहाँ जाउगे ? तव वासुदेवदास ने फिरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज ! ये बूरी नजरि सों आये हैं। तब श्रीगुसांईजी कहें, तोसों होइ सो तू करि। तब वासुदेवदास चार पेंड़ आगे चलि, एक के पास ढाल, और गुरज हती ताकों एक थाप की मारी। सो वह थाप के लागत ही गिरि पड्यो। तब वासुदेवदास वाकी ढाल और गुरज लेकें मनुष्य बीस–पचीस गिराय दिये। तब सगरे भाजि कें एक बड़ी हवेली के भीतर काजी सहित जाय, किंवाड़ लगाय लिये। सो वासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–भले इकठोरे एक घर में सब धसे हैं। आपु कहो तो चारों ओर तें हवेली की भींति गिराय देऊ, सगरे दबि मरेंगे। तब श्रीगुसांईजी कहें, ऐसे मति करो, तेरो यह कहा बिगारे हैं? अपने विश्रान्त चलो। तब श्रीगुसांईजी विश्रान्त पधारि के सन्ध्यावंदन करि घर पधारे। पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी जन्मस्थान दरसन कों पधारे। तब काजी दोय चार मनुष्य संग ले, गले में पटुका डारि श्रीगुसांईजी सों विनती कियो, जो–महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो। मोसों लोगन ने आपकी चुगली करी हती, सो अब उन सों समझोंगो, जो–मोसों कन्हैया और भीम सों लरावत हैं। सो आप साक्षात् कन्हैया हो, जो–इन सबनि कों बचाये। नाहीं तो, यह भीम

કહે, હવે ક્યાં જશો ? ત્યારે વાસુદેવદાસે ફરીથી શ્રીગુસાંઇજીને વિનતી કરી કહ્યું, મહારાજ ! એ ખરાબ દૃષ્ટિથી આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તારાથી થાય તે તૂ કર. ત્યારે વાસુદેવદાસ ચાર પગલાં આગળ ચાલી એકની પાસે ઢાલ અને ગદા હતી તેને એક થપ્પડ મારી એટલે તે થપ્પડને લાગતાં જ પડી ગયો. ત્યારે વાસુદેવદાસ એની ઢાલ અને ગદા લઇને વીસ–પચીસ મનુષ્યોને પાડી દીધા ત્યારે બધા ભાગીને એક મોટી હવેલીની અંદર કાજી સહિત જઇ કમાડ લગાડી લીધાં ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે ભલે એકઠા એક ઘરમાં બધા ધસ્યા છે. આપ કહો તો ચારે તરફથી હવેલીની ભીંત પાડી નાખું. બધા દબી મરશે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે. એમ ન કર. તારૂં એ શું બગાડે છે ? આપણે વિશ્રાંત ચાલો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વિશ્રાંત પધારીને સંધ્યાવંદન કરી ઘર પધાર્યા પછી બીજા દિવસે શ્રીગુસાંઇજી જન્મસ્થાન દર્શને પધાર્યા. ત્યારે કાજીએ બે ચાર મનુષ્યને સાથે લઇ ગળામાં પટકો નાંખી શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કે, મહારાજ ! મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. મને લોકોએ આપની ચુગલી કરી હતી. તે હવે હું એમનાથી સમજીશ કે, મને કન્હૈયા અને ભીમથી લડાવે છે. આપ સાક્ષાત

किये। वासुदेवदास कों दरसन कराये। सो वासुदेवदास सेवा में या प्रकार तत्पर रहते।

वार्ता प्रसंग ४—और श्रीगुसांईजी सेवा तें पहोंचि खवास सों कहे, जो–आसन, झारी, संध्यावंदन को साज लेकें विश्रान्त घाट पर चलियो। सो आपु दस–पांच वैष्णव वासुदेवदास छकड़ा कों संग ले विश्रांत घाट नित्य पधारते। तहां श्रीगुसांईजी संध्यावंदन करिके पाछें श्रीकेसोराईजी के दरसन कों जन्म स्थान, नित्य दरसन कों जाते। सो एक दिन मथुरिया चौबे मिलिकें काजी पास जाई काजी सों कहें, श्रीगुसांईजी की चुगली करी, जो–तुम इनको लागाबांधि द्वै एक दिन करो तो इनके सेवक ऐसे हैं, जो–तुमकों हजारन रुपैया देंयगे। तब काजी द्वैयसे मनुष्य हथियारबंध लेके संग, जन्मस्थान के आसपास ठाढ़ो ह्वै रह्यो। सो जब श्रीगुसांईजी केसोरायजी के दरसन करिके बाहिर पधारे, तब काजी के लोग सावधान होन लागे। तब श्रीगुसांईजी सों वासुदेवदास ने विनती करी, जो–महाराज! इनकी नजर बूरी दीसत है। तब श्रीगुसांईजी कहें, तेरो ए कहा करेंगे? अपने इन सों कछू बैर नाहीं है, तातें चल्यो चलि। तब वासुदेवदास आगे चले। तब काजी के मनुष्य पास आइके कहें,

---

જીએ સિદ્ધ કરી રાખી. સવારે વસંત પંચમી હતી. તે ઉત્સવ કર્યો. વાસુદેવદાસને દર્શન કરાવ્યાં. એ વાસુદેવદાસ સેવામાં આ પ્રકારે તત્પર રહેતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૪—વળી શ્રીગુસાંઇજી સેવાથી પહોંચી ખવાસને કહે, કે આસન ઝારી, સંધ્યાવંદનનો સાજ લઇને વિશ્રાંતઘાટ ઉપર ચાલજે. પછી આપ પાંચ-દશ વૈષ્ણવ તથા વાસુદેવદાસ છકડાને સાથે લઇ વિશ્રાંતઘાટ નિત્ય પધારતા. ત્યાં શ્રીગુસાંઇજી સંધ્યાવંદન કરીને પછી શ્રીકેશવરાયજીના દર્શને જન્મસ્થાન નિત્ય દર્શને જતા. તે એક દિવસ મથુરિયા ચોબેએ મળીને કાજી પાસે જઇ કાજીને કહ્યું, શ્રીગુસાંઇજીની ચુગલી કરી, કે તમે આમની લાગાબાંધી બે એક દિવસ કરો તો એમના સેવકો એવા છે, કે તમને હજારો રૂપીઆ આપશે ત્યારે કાજી બસો મનુષ્ય હથિયાર બંધ સંગે લઇને જન્મસ્થાનની આસપાસ આવી ઉભો થઇ રહ્યો. પછી જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી કેશવરાયજીનાં દર્શન કરી બહાર પધાર્યા ત્યારે કાજીના મનુષ્યો સાવધાન થવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીને વાસુદેવદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આમની દૃષ્ટિ ખરાબ દેખાય છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તારૂં એ શું કરશે? આપણે એમનાથી કંઈ વેર નથી તેથી ચાલ્યો ચાલ. ત્યારે વાસુદેવદાસ આગળ ચાલ્યા. ત્યારે કાજીના મનુષ્ય પાસે આવીને

नाहीं बुलावत। तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो–दोसौ वैष्णव बुलायवे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास। और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास। जो–पचास को मनोरथ होय पच्चीस और पच्चीस में वासुदेवदास। और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदाम। दस तांई तो इनकों बुलावो। और पांच बुलावो तो इनकों नाहीं। तब वैष्णव ने कही, महाराज! ये भूखे रहे तो अपराध होई। तब श्रीगुसांईजी कहें यामें तुमकों अपराध नाहीं, या प्रकार करियो। सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासकों उत्सव में बुलावन लागें।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये। भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते। सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते। सबन के घर महाप्रसाद लेते। धोती उपरना तथा कपरा को थान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड़ ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते। और कपरा सब ठौर छन्ना,

---

લે તો પણ ભૂખ્યા રહે ત્યારે અપરાધ પડે તેથી નથી બોલાવતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, બંધારણ બાંધો. કે બસો વૈષ્ણવોને બોલાવવાનો મનોરથ હોય તો સો ને બોલાવો. સોમાં વાસુદેવદાસ અને સોનો મનોરથ હોય તો પચાસ અને પચાસમાં વાસુદેવદાસ. ને પચાસનો મનોરથ હોય તો પચ્ચીસ અને પચ્ચીસમાં વાસુદેવદાસ. અને દશનો મનોરથ હોય તો પાંચ અને પાંચમાં વાસુદેવદાસ. દશ સુધી તો એમને બોલાવો. અને પાંચ બોલાવો તો એમને નહીં. ત્યારે વૈષ્ણવોએ કહ્યું, મહારાજ એ ભૂખ્યા રહે તો અપરાધ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, એમાં તમને અપરાધ નહીં. એ પ્રકારે કરજો. ત્યારથી સિંહનંદના વૈષ્ણવો વાસુદેવદાસને ઉત્સવમાં બોલાવવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યુ, કે ભગવદીય એક જ બોલાવીએ તેમાં બધા આવ્યા. ભગવદીયના આવ્યાથી શ્રીઠાકુરજી જલ્દી પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૬—વળી વાસુદેવદાસના યજમાન આગરામાં બહુજ રહેતા હતા. તે પિતૃપક્ષમાં વાસુદેવદાસ આગ્રા જતા તે દરેક ક્ષત્રીઓનું નોતરૂં માનતા. બધાના ઘરે મહાપ્રસાદ લેતા. ધોતી ઉપરણા તથા કપડાનું થાન દક્ષિણા બધું લઇને પંદર દિવસનું ભેગું કરી પછી જ્યારે શ્રાદ્ધ પક્ષ થઇ ચુકે ત્યારે દક્ષિણાના પૈસાના ચોખા અને

सबन कों मारतो। परन्तु अब मोसों कछू टहेल आज्ञा करो। तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो–तुम सों जानैं चुगली करी होइ, तासों तुम कछू मति कहियो। तब काजी बिनती करि गयो। और मन में कह्यो, जो–देखो, दुष्टन ने इनकी चुगली करी, और ये कन्हैया ऐसे दयाल, जो वैरी पर हू दया करी। सो वासुदेवदास ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता–प्रसंग ५—और सिंहनन्द में वैष्णवन के घर उत्सव में जब बड़ो उत्सव होतो, तब तो वासुदेवदास कों महाप्रसाद कों बुलावते। और छोटे उत्सव में दस–बीस वैष्णव बुलावते। तामें वासुदेवदास कों न बुलावते। सो कछुक दिन में सिंहनन्द के सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आये। तब वासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज! ये वैष्णव उत्सव कीर्तन में मोकों बुलावत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो–तुम वासुदेवदास कों उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावत हो? श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हैं, इनकों बुलाये बिना कैसे चले? तब वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, महाराज! बड़े उत्सव में तो बुलावत हैं और छोटे उत्सव में दस–बीस वैष्णव की सामग्री एक अकेले लेई तोऊ भूखे रहै तब अपराध परे, तातें

કન્હેયા છો. આપે આ બધાને બચાવ્યા. નહીં તે આ ભીમ બધાંને મારતો. પરંતુ હવે મને કંઇ ટહલ આજ્ઞા કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, કે તમને જેણે ચુગલી કરી હોય તેને તમે કંઇ કહેતા નહીં. ત્યારે કાજી વિનંતી કરીને ગયો, અને મનમાં કહ્યું, કે જુઓ દુષ્ટોએ એમની ચુગલી કરી અને આ કન્હૈયા એવા દયાળ કે વેરી ઉપર પણ દયા કરી. એ વાસુદેવદાસ એવા કૃપાપાત્ર હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૫—વળી સિંહનંદમાં વૈષ્ણવોના ઘર ઉત્સવમાં જ્યારે મોટો ઉત્સવ થતો ત્યારે તો વાસુદેવદાસને મહાપ્રસાદ માટે બોલાવતા અને નાના ઉત્સવમાં દશ-વીસ વૈષ્ણવો બોલાવતા. તેમાં વાસુદેવદાસને ન બોલાવતા. તે કેટલાક દિવસમાં સિંહનંદના બધા વૈષ્ણવો શ્રીગુસાંઇજીના દર્શને શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કહ્યું, કે મહારાજ! આ વૈષ્ણવો ઉત્સવ કીર્તનમા મને બોલાવતા નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી એ વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે તમે વાસુદેવદાસને ઉત્સવ કીર્તનમાં કેમ નથી બોલાવતા? શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય છે. એમને બોલાવ્યા વિના કેમ ચાલે? ત્યારે વૈષ્ણવોએ શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી. મહારાજ! મોટા ઉત્સવમા તો બોલાવીએ છીએ અને નાના ઉત્સવમાં દસ-વીસ વૈષ્ણવોની સામગ્રી એક એકલા

नाहीं बुलावत। तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो–दोसौ वैष्णव बुलायवे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास। और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास। जो–पचास को मनोरथ होय पचीस और पचीस में वासुदेवदास। और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदास। दस तांई तो इनकों बुलावो। और पांच बुलावो तो इनकों नाहीं। तब वैष्णव ने कही, महाराज! ये भूखे रहे तो अपराध होई। तब श्री-गुसांईजी कहें यामें तुमकों अपराध नाहीं, या प्रकार करियो। सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासकों उत्सव में बुलावन लागें।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये। भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते। सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते। सबन के घर महाप्रसाद लेते। धोती उपरना तथा कपरा को थान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड़ ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते। और कपरा सब ठौर छन्ना,

---

લે તો પણ ભૂખ્યા રહે ત્યારે અપરાધ પડે તેથી નથી બોલાવતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, બંધારણ બાંધો. કે બસો વૈષ્ણવોને બોલાવવાનો મનોરથ હોય તો સો ને બોલાવો. સોમાં વાસુદેવદાસ અને સોનો મનોરથ હોય તો પચાસ અને પચાસમાં વાસુદેવદાસ. ને પચાસનો મનોરથ હોય તો પચ્ચીસ અને પચ્ચીસમાં વાસુદેવદાસ. અને દશનો મનોરથ હોય તો પાંચ અને પાચમાં વાસુદેવદાસ. દશ સુધી તો એમને બોલાવો. અને પાંચ બોલાવો તો એમને નહીં. ત્યારે વૈષ્ણવોએ કહ્યું, મહારાજ એ ભૂખ્યા રહે તો અપરાધ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, એમાં તમને અપરાધ નહીં. એ પ્રકારે કરજો. ત્યારથી સિંહનંદના વૈષ્ણવો વાસુદેવદાસને ઉત્સવમાં બોલાવવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યુ, કે ભગવદીય એક જ બોલાવીએ તેમાં બધા આવ્યા. ભગવદીયના આવ્યાથી શ્રીઠાકુરજી જલ્દી પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૬—વળી વાસુદેવદાસના યજમાન આગરામાં બહુજ રહેતા હતા. તે પિતૃપક્ષમાં વાસુદેવદાસ આગ્રા જતા તે દરેક ક્ષત્રીઓનું નોતરૂં માનતા. બધાના ઘરે મહાપ્રસાદ લેતા. ધોતી ઉપરણા તથા કપડાનું થાન દક્ષિણા બધું લઇને પંદર દિવસનું ભેગું કરી પછી જ્યારે શ્રાદ્ધ પક્ષ થઇ ચુકે ત્યારે દક્ષિણાના પૈસાના ચોખા અને

सबन कों मारतो। परन्तु अब मोसों कछू टहेल आज्ञा करो। तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो–तुम सों जानैं चुगली करी होइ, तासों तुम कछू मति कहियो। तब काजी बिनती करि गयो। और मन में कह्यो, जो–देखो, दुष्टन ने इनकी चुगली करी, और ये कन्हैया ऐसे दयाल, जो बैरी पर हू दया करी। सो वासुदेवदास ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता–प्रसंग ५—और सिंहनन्द में वैष्णवन के घर उत्सव में जब बड़ो उत्सव होतो, तब तो वासुदेवदास कों महाप्रसाद कों बुलावते। और छोटे उत्सव में दस–बीस वैष्णव बुलावते। तामें वासुदेवदास कों न बुलावते। सो कछुक दिन में सिंहनन्द के सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आये। तब वासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करि कह्यो, जो–महाराज! ये वैष्णव उत्सव कीर्तन में मोकों बुलावत नाहीं। तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो–तुम वासुदेवदास कों उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावत हो? श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हैं, इनकों बुलाये बिना कैसे चले? तब वैष्णवन ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, महाराज! बड़े उत्सव में तो बुलावत हैं और छोटे उत्सव में दस–बीस वैष्णव की सामग्री एक अकेले लेई तोऊ भूखे रहै तब अपराध परे, तातें

કન્હૈયા છે. આપે આ બધાને બચાવ્યા. નહીં તો આ ભીમ બધાંને મારતો. પરંતુ હવે મને કંઇ ટહલ આજ્ઞા કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, કે તમને જેણે ચુગલી કરી હોય તેને તમે કંઇ કહેતા નહીં. ત્યારે કાજી વિનંતી કરીને ગયો, અને મનમાં કહ્યું, કે જુઓ દુષ્ટોએ એમની ચુગલી કરી અને આ કન્હૈયા એવા દયાળ કે વેરી ઉપર પણ દયા કરી. એ વાસુદેવદાસ એવા કૃપાપાત્ર હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૫—વળી સિંહનંદમાં વૈષ્ણવોના ઘર ઉત્સવમાં જ્યારે મોટો ઉત્સવ થતો ત્યારે તો વાસુદેવદાસને મહાપ્રસાદ માટે બોલાવતા અને નાના ઉત્સવમાં દશ-વીસ વૈષ્ણવો બોલાવતા. તેમાં વાસુદેવદાસને ન બોલાવતા. તે કેટલાક દિવસમાં સિંહનંદના બધા વૈષ્ણવો શ્રીગુસાંઇજીના દર્શને શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યારે વાસુદેવદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કહ્યું, કે મહારાજ! આ વૈષ્ણવો ઉત્સવ કીર્તનમા મને બોલાવતા નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે તમે વાસુદેવદાસને ઉત્સવ કીર્તનમા કેમ નથી બોલાવતા? શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય છે. એમને બોલાવ્યા વિના કેમ ચાલે? ત્યારે વૈષ્ણવોએ શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી. મહારાજ! મોટા ઉત્સવમા તો બોલાવીએ છીએ અને નાના ઉત્સવમાં દસ-વીસ વૈષ્ણવોની સામગ્રી એક એકલા

नाहीं बुलावत। तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो-दोसौ वैष्णव बुलायवे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास। और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास। जो-पचास को मनोरथ होय पचीस और पचीस में वासुदेवदास। और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदास। दस तांई तो इनकों बुलावो। और पांच बुलावो तो इनकों नाहीं। तब वैष्णव ने कही, महाराज! ये भूखे रहे तो अपराध होई। तब श्री-गुसांईजी कहें यामें तुमकों अपराध नाहीं, या प्रकार करियो। सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासकों उत्सव में बुलावन लागें।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये। भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते। सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते। सबन के घर महाप्रसाद लेते। धोती उपरना तथा कपरा को थान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड़ ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते। और कपरा सब ठौर छन्ना,

---

લે તો પણ ભૂખ્યા રહે ત્યારે અપરાધ પડે તેથી નથી બોલાવતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, બંધારણ બાંધો. કે બસો વૈષ્ણવોને બોલાવવાનો મનોરથ હોય તો સો ને બોલાવો. સોમાં વાસુદેવદાસ અને સોનો મનોરથ હોય તો પચાસ અને પચાસમાં વાસુદેવદાસ. ને પચાસનો મનોરથ હોય તો પચ્ચીસ અને પચ્ચીસમાં વાસુદેવદાસ. અને દશનો મનોરથ હોય તો પાંચ અને પાંચમાં વાસુદેવદાસ. દશ સુધી તો એમને બોલાવો. અને પાંચ બોલાવો તો એમને નહીં. ત્યારે વૈષ્ણવોએ કહ્યું, મહારાજ એ ભૂખ્યા રહે તો અપરાધ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, એમાં તમને અપરાધ નહીં. એ પ્રકારે કરજો. ત્યારથી સિંહનંદના વૈષ્ણવો વાસુદેવદાસને ઉત્સવમાં બોલાવવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે ભગવદીય એક જ બોલાવીએ તેમાં બધા આવ્યા. ભગવદીયના આવ્યાથી શ્રીઠાકુરજી જલ્દી પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૬—વળી વાસુદેવદાસના યજમાન આગરામાં બહુજ રહેતા હતા. તે પિતૃપક્ષમાં વાસુદેવદાસ આગ્રા જતા તે દરેક ક્ષત્રીઓનું નોતરું માનતા. બધાના ઘરે મહાપ્રસાદ લેતા. ધોતી ઉપરણા તથા કપડાનું થાન દક્ષિણા બધું લઇને પંદર દિવસનું ભેગું કરી પછી જ્યારે શ્રાદ્ધ પક્ષ થઇ ચુકે ત્યારે દક્ષિણાના પૈસાના ચોખા અને

मन्दिर वस्त्र, पोंछिवे को सागघर, भंडार, पानघर, फूलघर आदि में नये वस्त्र करते। सो श्रीगुसांईजी सब ठौर नये वस्त्र देखिके पूछे, जो–सब ठौर एकही बेर नये वस्त्र कहाँते आये ? तब सगरे सेवक कह्यो, जो–महाराज ! वासुदेवदास लाये हैं, उनने किये हैं। तब श्रीगुसांईजी वासुदेवदास सों पूछे, जो–इतने नये वस्त्र तुम कहाँते लाये ? तब वासुदेवदास कहें, महाराज ! आगरे में क्षत्री मेरे यजमान रहत हैं। सो पितृपक्ष में मैं उहां जाइ पंद्रह दिन रहि उनके घर महाप्रसाद लेत हों। वे दक्षिना, और कपरा देत हैं। सो दक्षिना के चामर खाँड लाई भंडार में देत हूं, वस्त्र के छन्ना आदि करत हूँ। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होई कहें, जो–देखो भगवदीय को कार्य, अलौकिक में लगाइ दिये हैं। पाछे वर्ष के वर्ष जब श्रीगुसांईजी सब ठौर नये छन्ना, पोतना, मंदिर वस्त्र देखते तब पूछते, जो–वासुदेवदास ने करे होंगे ? तब सब सेवक कहते, आगरे तें वासुदेवदास लाये हैं। सो श्रीगुसांईजी वासुदेवदास के उपर बहोत प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–लौकिक वैदिक कार्यार्थ भगवदीय वैष्णव कों कछू दीजिये तो भगवदीय अलौकिक करि देय। आगरे के (यजमान)

ખાંડ લઇ શ્રીગોકુલ આવી ભંડારમાં આપતા. અને કપડા બધી જગાએ છન્ના મંદિર વસ્ત્ર, હાથ પોંછવાને શાકઘર, ભંડાર, પાનઘર, ફુલઘર આદિમાં નવાં વસ્ત્ર કરતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી બધી જગાએ નવા વસ્ત્ર જોઇને પૂછે, કે બધી જગાએ એકજ વાર નવાં વસ્ત્ર કયાંથી આવ્યાં ! ત્યારે બધા સેવકો કહે, કે મહારાજ ! વાસુદેવદાસ લાવ્યા છે. એમણે કર્યાં છે, ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વાસુદેવદાસને પૂછે, આટલાં નવા વસ્ત્રો તમે કયાંથી લાવ્યા ? ત્યારે વાસુદેવદાસ કહે, મહારાજ ! આગ્રામાં ક્ષત્રી મારા યજમાન રહે છે. તે શ્રાદ્ધપક્ષમાં હું ત્યાં જઇ પંદર દિવસ રહીને એમને ત્યા મહાપ્રસાદ લઉં છું. તે દક્ષિણા અને કપડા આપે છે. તે દક્ષિણાના ચોખા ખાંડ લઇ ભંડારમાં દે છે વસ્ત્રનાં છન્નાં આદિ કરૂં છું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પ્રસન્ન થઇને કહે, કે જુઓ ભગવદીયનું કાર્ય, અલૌકિકમાં લગાડી દીધું છે. પછી વર્ષના વર્ષ જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી બધી જગાએ નવા છન્નાં, પોતના, મંદિર વસ્ત્ર જુએ ત્યારે પૂછે કે વાસુદેવદાસને કર્યાં હશે ? ત્યારે બધા સેવક કહેતા આગરાથી વાસુદેવદાસ લાવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વાસુદેવદાસના ઉપર બહુજ પ્રસન્ન રહેતા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે લૌકિક વૈદિક કાર્યાર્થ ભગવદીય વૈષ્ણવને કંઇ આપીએ તો ભગવદીય અલૌકિક કરી દે. આગરાના (યજમાન) શ્રાદ્ધ

श्राद्ध करिके श्राद्ध के नाम सों देते । और वासुदेवदास ले श्रीगुसांईजी के घर अंगीकार करावते । तामें वे क्षत्री लोग हू कृतार्थ भये । और इनके पितरहू कृतार्थ होई गये । सो वासुदेवदास के हृदय में ऐसों दृढ़ भगवद् आश्रय हतो, जो–लौकिक कों कछु मनमें लावते नाही । श्राद्ध के नाम सों महाप्रसाद हू लेते । श्राद्ध संबंधी ले अलौकिक करते । परन्तु इनकों बाधक कछु न होतो । ऐसो भगवद् बल, सदा नंदालय की लीला को काम काज किये । इहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की टहल करे, फेरि लीला रस को अनुभव किये । परन्तु निकुंजलीला को अनुभव नाहीं, नन्दालय की लीला को हैं, तातें नन्दालय की लीला को अनुभव भयो । सो वासुदेवदास छकड़ा ऐसे भगवदीय हे, तातें इनके माथे श्रीठाकुरजी नाहीं पधराये, लीला में हूँ वस्तु सामग्री लाइकें श्रीयसोदाजी कों देते वैष्णव ॥३८॥

वार्ता–प्रसंग ७—और जब श्रीगुसांईजी परदेस कों पधारते, तब वासुदेवदास संग जाते । सो एक छकड़ा को भार उठाइ ले चलते । तातें सब कोऊ इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहते । ऐसे टेक के वैष्णव हे । तातें वासुदेवदास की वार्ता कहां तांई कहिये । वार्ता ३८

* * *

કરીને શ્રાદ્ધના નામથી આપતા. અને વાસુદેવદાસ લઇ શ્રીગુસાંઇજીના ઘરે અંગીકાર કરાવતા. તેમાં તે ક્ષત્રી લોકો પણ કૃતાર્થ થતા. અને એમના પિતૃઓ પણ કૃતાર્થ થઇ જતા. એ વાસુદેવદાસના હૃદયમાં એવો દૃઢ ભગવદાશ્રય હતો. કે લૌકિકને કંઇ મનમાં લાવતા નહીં. શ્રાદ્ધના નામથી મહાપ્રસાદ પણ લેતા. શ્રાદ્ધ સંબંધી લઇ અલૌકિક કરતા. પરંતુ એમને કંઇ બાધક ન થતું. એવુ ભગવદ્બળ, સદાનંદાલયની લીલાનું કામકાજ કરે. અહીં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની ટહેલ કરે. ફરી લીલારસનો અનુભવ કર્યો. પરંતુ નિકુંજલીલાનો અનુભવ નહીં. નંદાલયની લીલાનો છે. તેથી નંદાલયની લીલાનો અનુભવ થયો. તે વાસુદેવદાસ છકડા એવા ભગવદીય હતા. તેથી એમના માથે શ્રીઠાકુરજી પધરાવ્યા નહીં. લીલામાં પણ વસ્તુ સામગ્રી લાવીને શ્રીયશોદાજીને આપતા. વૈષ્ણવ ॥૩૮॥

વાર્તા–પ્રસંગ ૭—અને જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી પરદેશ પધારતા. ત્યારે વાસુદેવદાસ સાથે જતા તે એક છકડાનો ભાર ઉઠાવી લઇ ચાલતા. તેથી બધા એમને વાસુદેવદાસ છકડા કહેતા. એવા ટેકના વૈષ્ણવ હતા. તેથી વાસુદેવદાસની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ?

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बाबावेनु सारस्वत ब्राह्मन, कृष्णदास घघरी क्षत्री, और यादवेंद्रास बनिया, बाबावेनु को खवास, ए तीनों की वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये पूरब में कासी प्रयाग के बीच में एक गाम हतो, तहां रहते। सो बाबावेनु और कृष्णदास ये दोऊ लीला में विशाखाजी की सखी हैं। लीला में बाबावेनु तो 'सोरसेनी' और कृष्णदास को नाम, "कामलता"। और "सोरसेनी" की सखी एक "तिलकनी" सो यादवदास, बाबावेनु के खवास भये। सो ये तीनों अनेक जन्म यातें पाये, जो-एक दिन विसाखाजी ने कही, इनसों श्रीनंदरायजी के घर देखि आव, श्रीठाकुरजी जागे होइ तो वस्त्र मांगि ले चलें। सो ए तीनों श्रीनन्दरायजी के द्वार पर आई। ता समय श्रीठाकुरजी तीनोंन सों पूछे, जो–विसाखाजी कहां हैं ? तब ए तीनोंन ने कही, हमकों खबरि नाहीं। हम तो तिहारे दरसन कों आये हैं। सो जो–कछु विसाखाजी सों कहनो होई, सो हमहीं सों आज्ञा करो। या प्रकार विसाखाजी की बराबरि को सौभाग्य अपने में जान्यो। तब श्रीठाकुरजी हँसिकें चुप होई रहे। भीतर जसोदाजी के पास पधारे। ये तीनों सखी द्वार पर बैठि रहीं, जो–श्रीठाकुरजी हँसिकें भीतर पधारे

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, બાબાવેણુ સારસ્વત બ્રાહ્મણ, કૃષ્ણદાસ ઘઘરી ક્ષત્રી અને યાદવેંદ્રદાસ વાણિયા, બાબાવેણુના ખવાસ, આ ત્રણેયની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ પૂર્વમાં કાશી–પ્રયાગના વચ્ચે એક ગામ હતું ત્યાં રહેતા. તે બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ એ બન્ને લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે. લીલામાં બાબાવેણુ તો 'સોરસેની' અને કૃષ્ણદાસનું નામ-'કામલતા' અને સોરસેનીની એક સખી 'તિલકની' તે યાદવદાસ, બાબાવેણુના ખવાસ થયા. એ ત્રણે અનેક જન્મ એથી પામ્યા કે એક દિવસે વિશાખાજીએ એમને કહ્યું, કે શ્રીનંદરાયજીના ઘરે જોઇ આવ. શ્રીઠાકુરજી જાગ્યા હોય તો વસ્ત્ર માંગીને લઇ ચાલીએ. ત્યારે ત્રણે શ્રીનંદરાયજીના દ્વાર ઉપર આવી. તે સમયે શ્રીઠાકુરજીએ ત્રણેયને પૂછ્યું, કે વિશાખાજી ક્યાં છે ? ત્યારે એ ત્રણેએ કહ્યું, અમને ખબર નથી. અમે તો તમારાં દર્શન માટે આવ્યાં છીએ. માટે જે કંઇ વિશાખાજીને કહેવું હોય તે અમને જ આજ્ઞા કરો આ પ્રકારે વિશાખાજીના બરાબરીનું સૌભાગ્ય પોતાનામાં જાણ્યુ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી હસિને ચુપ થઇ રહ્યા. અંદર જશોદાજીની પાસે પધાર્યા. એ ત્રણે સખી દ્વાર ઉપર બેઠી રહી; કેમકે શ્રીઠાકુરજી હસિને અંદર પધાર્યા છે તે ફરી હમણાં જ બહાર પધા-

हैं सो फेरि अबही बाहिर आवेंगे। यह जानि द्वार पर बैठी। यह बात एक सखी ने विसाखाजी सों जाय कही, सो विसाखाजी दौरे आई। आइके देखें तो, तीनों आपुस में हँसत हैं। तब विसाखाजी ने शाप दियो, जो–भूमि में जन्म लेऊ। यह अभिमान को फल। सो तीनों गिरी। बाबावेनु एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे, सो बरस तेवीस–चोवीस के भये। सो बाबावेनु और कृष्णदास दोऊ आपुस में परम मित्र हते, संग ही रहतें। और जादवदास के घर खानपान को संकोच हतो। सो यादवदास बाबावेनु की खवासी टहल करते। सो बाबावेनु देवी के उपासक हते, देवीकों सर्वोपरि जानते। सो एक दिन श्रीकल्याणरायजी ठाकुरजी बाबावेनु कों स्वप्न में कहे, मैं कल्याणी देवी हों, या गाम के तलाव में हों। सो तू मोकों बाहर निकास, मेरी पूजा कर। तब प्रातःकाल बाबावेनु यह बात कृष्णदास अपने मित्र सों कहे, तब दोऊ जने तलाव में पेंठे। सो छाती बराबरि पानी सगरे तलाव में हतो। सो सगरे ढूंढ़त बाबावेनु के हाथ में श्रीकल्याणरायजी आये। तब बाबावेनु तलाव तें बाहिर आई, वह तलाव के ऊपर ही घर में जो द्रव्य हतो, ताको एक छोटो सो मन्दिर बनवाय देवी के भाव सों देवी की थापना करी। कल्याणीदेवी नाम धर्यो। सो गाम के लोग देवी जानि मानता बहुत करें, तामें बाबावेनु

રશે. એમ જાણી દ્વાર ઉપર બેઠી. એ વાત એક સખીએ વિશાખાજીને જઇને કહી તેથી વિશાખાજી દોડી આવી. આવીને જુએ તો ત્રણે આપસમાં હસે છે. ત્યારે વિશાખાજીએ શાપ આપ્યો, કે ભૂમિમાં જન્મ લો. આ અભિમાનનું ફલ. તે ત્રણે પડ્યાં. બાબાવેણુ એક સારસ્વત બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે વર્ષ તેવીસ–ચોવીસના થયા. એ બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ બન્ને આપસમાં પરમ મિત્ર હતા. સંગજ રહેતા અને યાદવેંદ્રદાસના ઘરે ખાનપાનનો સંકોચ હતો. તે યાદવેંદ્રદાસ બાબાવેણુની ખવાસી–ટહલ કરતા. તે બાબાવેણુ દેવીના ઉપાસક હતા. દેવીને સર્વોપર જાણતા. તે એક દિવસ શ્રીકલ્યાણરાયજી ઠાકુરજીએ બાબાવેણુને સ્વપ્નમાં કહ્યું, હું કલ્યાણી દેવી છું. આ ગામના તલાવમાં છું. તૂ મને બહાર નિકાળ. મારી પૂજા કર. ત્યારે પ્રાતઃકાલ બાબાવેણુએ એ વાત પોતાના મિત્ર કૃષ્ણદાસને કહી. ત્યારે બન્ને જણા તલાવમાં પેઠા. તે છાતી બરાબર પાણી તલાવમાં બધે હતું. તે બધે ખોળતાં બાબાવેણુના હાથમાં શ્રીકલ્યાણરાયજી આવ્યા. ત્યારે બાબાવેણુએ તલાવથી બાહર આવી તે તલાવના ઉપર જ ઘરમાં જે દ્રવ્ય હતું તેનું એક નાનું સરખું મંદિર બનાવી દેવીના ભાવથી દેવીની સ્થાપના કરી. કલ્યાણી દેવી નામ ધર્યું. પછી ગામના લોકો દેવી

और कृष्णदास और जांदवदास को निर्वाह होइ । ऐसे करत वर्ष पांच बीते त
श्रीआचार्यजी कासी तें अड़ेल पधारत हते । सो इह गाम में आई कल्याणरायज
के मन्दिर पास एक आम के वृक्ष के नीचे बिराजे । ता समें बाबावेनु और कृष्ण
दास, पास गाम हतो तहां गये हते। तब मन्दिरमें ते श्रीकल्याणरायजी श्रीआचार्य
जी कों पुकारयो, जो–आपु भीतर पधारो । तब श्रीआचार्यजी मन्दिर के भीत
जायके देखें, लेहँगा, लुगरा, पहरे हैं। तब श्रीआचार्यजी पूछे, देवी की नांई क्य
बैठे हो ? तब श्रीठाकुरजी ने कही, कहा करूं ? या गाम में, ठाकुरजी कूं को
जानत नाहीं। और बाबावेनु, कृष्णदास, यादवदास दैवी जीव हैं । तिनके उद्धा
करनार्थ में देवी होई बाबावेनु सों पूजा कराई हैं। काहेतें, बाबावेनु देवी क
उपासक है । सो अब आपु मोकों श्रीठाकुरजी को स्वरूप करो । इहां चार घड़
आपु बिराजो । बाबावेनु, कृष्णदास, यादवदास खवास कों अङ्गीकार करि पाछे
पधारो । तब श्रीआचार्यजी लेहँगा, लुगरा, उतारि, लेहँगा एक खूंटी पर धर
दिये । और लुगरा कों फारि एक परदनी पहराई, पाग बांधि दिये । पाछें आप
आम के वृक्ष के नीचे जाई बिराजे । इतने ही में बाबावेनु और कृष्णदास औ

જાણી બહુ માનતા કરે. તેમાં બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ અને યાદવેંદ્રદાસનો નિર્વાહ
થાય. એમ કરતાં પાંચ વર્ષ વીત્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કાશીથી અડેલ પધારત
હતા. ત્યારે તે ગામમાં આવી કલ્યાણરાયજીના મંદિર પાસે એક આંબાના વૃક્ષને
નીચે બિરાજ્યા. તે સમયે બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ પાસે ગામ હતુ ત્યાં ગયા હતા
ત્યારે મંદિરમાંથી શ્રીકલ્યાણરાયજીએ શ્રીઆચાર્યજીને જોરથી બોલાવ્યા. કે આપ
અંદર પધારો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મંદિરની અંદર જઇને જુએ તો ઘાઘરો, લુગડ
પહેર્યા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પૂછે, દેવીની તરહ કેમ બેઠા છો ? ત્યારે શ્રીઠાકુર
જીએ કહ્યું, શું કરૂં ? આ ગામમાં શ્રીઠાકુરજીને કોઇ જાણતુ નથી. અને બાબાવેણુ
કૃષ્ણદાસ, યાદવદાસ દૈવી જીવ છે. તેમનો ઉદ્ધાર કરવા માટે મ્હે દેવી થઇ બાબા
વેણુથી પૂજા કરાવી છે. કેમકે બાબાવેણુ દેવીનો ઉપાસક છે હવે આપ મને
શ્રીઠાકુરજીનુ સ્વરૂપ કરો. અહીં ચાર ઘડી આપ બિરાજો. બાબાવેણુ, કૃષ્ણદાસ,
યાદવદાસ ખવાસને અંગીકાર કરી પછી પધારો. ત્યારે શ્રીઆચાચાર્યજીએ ઘાઘરા,
લુગડાં ઉતારીને ઘાઘરાને એક ખુટી ઉપર ધરી દીધો. બીજા લુગડાંને ફાડી એક
પરદની પહરાવીને પાગ બાંધી દીધી પછી પોતે આંબાના વૃક્ષની નીચે જઇ બિરાજ્યા.
એટલામાંજ બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ અને યાદવદાસ ખવાસ ત્રણે આવ્યા તે

यादवदास खवास तीनों आये। सो श्रीकल्याणरायजी के मन्दिर में जाय देखे तो पाग धोती पहरे बैठे हैं। तब बाबावेनु कही, इहां कौन आयो ? जो–मेरी देवी के कपरा उतारयो ? तब कल्याणरायजी ने कही, मोकों छूवो मति। मैं तो कल्याणरायजी ठाकुर हूँ। तब बाबावेनु ने कही, ठाकुर कों तो या गाम में कोऊ मानत नाहीं। और मेरो अपराध कहा, जो–छुइवे की नाहीं करत हों ? तब श्रीकल्याणरायजी ने कही, आम के वृक्ष नीचे श्रीआचार्यजी विराजे हैं। तिनको तू सेवक व्हे आव। और गाम के लोग ठाकुर कों नाहीं मानत तो तेरे हमारे गाम के लोगन सूँ कहा काम है ? तेरे घर में सातसें रुपैया नीचे कोठा में गड़े हैं, सो निकासि के मेरी सेवा पूजा करियो। परन्तु अब तुम जाइ श्रीआचार्यजी के सेवक ह्वे आवो। तब तीनों जने श्रीआचार्यजी पास आयके कहें, महाराज ! हमकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तीनों जने तलाब में न्हाई आवो। तब तीनों जने तलाब में न्हाइके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी तीनोंन कों नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछें श्रीआचार्यजी कहै, बाबावेनु सो, अब तुम एक काम करो। श्रीकल्याणरायजी कों अपने घर ले जाई गोप्य रीति सों सेवा करो। जो कोई गाम के जाने नाहीं। और यह श्रीकल्याणरायजी के मन्दिर में कोई

શ્રીકલ્યાણરાયજીના મંદિરમાં જઇ જુએ તો પાગ ધોતી પહેરીને બેઠા છે. ત્યારે બાબાવેણુ કહે, અહીં કોણ આવ્યું ? જે મારી દેવીનાં કપડાં ઉતાર્યાં ? ત્યારે શ્રીકલ્યાણરાયજીએ કહ્યું. મને અડશો નહી. હુ તો શ્રીકલ્યાણરાયજી ઠાકુર છું. ત્યારે બાબાવેણુએ કહ્યુ, ઠાકુરને તો આ ગામમાં કોઇ માનતું નથી. અને મારો અપરાધ શો ? કે અડવાની ના કહો છો ? ત્યારે શ્રીકલ્યાણરાયજીએ કહ્યું, આંબાના વૃક્ષ નીચે શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે. તેમનો તૂ સેવક થઇ આવ. અને ગામના લોકો ઠાકુરને ન માને તો તારે અમારે ગામના લોકોથી શુ કામ છે ? તારા ઘરમાં સાતસો રૂપીઆ નીચે કોઠામાં દાટ્યા છે તે કાઢીને મારી સેવા પૂજા કરજે. પરતુ હમણાં તમે જઇને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ આવો. ત્યારે ત્રણે જણા શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવીને કહે, મહારાજ ! અમને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ત્રણે જણ તલાવમાં ન્હાઇ આવો ત્યારે ત્રણે જણ તલાવમાં ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ત્રણેયને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજી બાબાવેણુને કહે, હવે તમે એક કામ કરો. શ્રીકલ્યાણરાયજીને પોતાના ઘરે લઇ જઇ ગુપ્ત રીતિથી સેવા કરો. કોઇ ગામમાં જાણે નહીં. અને આ

देवीकों बैठारि काहू कों राखि देऊ, सो पूजा चलावेगो। तुम कछु देवी की पूजा को मति लीजो। जो-श्रीठाकुरजी कों भोग धरियो सो तीनों जने लीजो। तब बाबावेनु ने कही, महाराज! आपु मेरे घर पधारिके दोई दिन रहि, जैसे सेवा की रीति होय तैसे आप कृपा करि बताय देउ, या गाम में कोई जानत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कल्याणरायजी कों पधराय बाबावेनु के घर पधारे। तहां बाबावेनु के घर में नीचे के कोठा में सातसैं रुपैया निकसे। सो लायकें श्रीआचार्यजी के आगे धरे। तब श्रीआचार्यजी कहें, यह हमारे काम के नाहीं, यह तुमकों दिये हैं। और तेरो दृढ़ विश्वास ठाकुरजी में होई, तातें दिये, तुम राखो। पाछें श्रीआचार्यजी चार दिन तांई रहि, श्रीकल्याणरायजी कों पंचामृत स्नान कराई, बाबावेनु और कृष्णदास के माथे पधराय, सगरी पुष्टिमार्ग की सेवा रीति बताये। और आज्ञा दिये, श्रीठाकुरजी तुमकों आज्ञा दें सो करियो। या प्रकार समुझाय आपु अड़ेल पधारे। सो बाबावेनु और कृष्णदास मिलिकें सेवा करन लागे। जादव खवास सगरी उपर की टहेल करत हते। तब बाबावेनु ने एक ब्राह्मनकों दस-पांच रुपैया दे, देवी कों बैठारि तहां पूजा सौंपि दिये। सो वह ब्राह्मण प्रसन्न होई सेवा करतो, गांव की जीविका हती सो वह खातो। और

શ્રીકલ્યાણરાયજીના મંદિરમાં કોઇ દેવીને બેસાડી કોઇને રાખી દો તે પૂજા ચલાવશે. તમે કંઇ દેવીની પૂજાનું ન લેતા. શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરજો તે ત્રણે જણ લેજો ત્યારે બાબાવેણુએ કહ્યું, મહારાજ! આપ મારા ઘર પધારીને બે દિવસ રહી જેમ સેવાની રીતિ હોય તેમ કૃપા કરીને બતાવી દો. આ ગામમાં કોઇ જાણતું નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીકલ્યાણરાયજીને પધરાવી બાબાવેણુના ઘરે પધાર્યા. ત્યાં બાબાવેણુના ઘરમાં નીચેના કોઠામાં સાતસો રૂપીઆ નિકળ્યા. તે લાવીને શ્રીઆચાર્યજીની આગળ ધર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ અમારા કામના નથી. આ તમને આપ્યા છે. અને તારો દૃઢ વિશ્વાસ શ્રીઠાકુરજીમાં થાય તેથી દીધા. તમે રાખો પછી શ્રીઆચાર્યજીએ ચાર દિવસ ત્યાં રહી શ્રીકલ્યાણરાયજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસના માથે પધરાવી પુષ્ટિમાર્ગની બધી રીતિ બતાવી અને આજ્ઞા આપી, શ્રીઠાકુરજી તમને આજ્ઞા દે તેમ કરજો. એ પ્રકારે સમજાવી પોતે અડેલ પધાર્યા. પછી બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ મળીને સેવા કરવા લાગ્યા. યાદવ ખવાસ બધી ઉપરની ટહલ કરતા હતા. ત્યારે બાબાવેણુએ એક બ્રાહ્મણને દશ-પાંચ રૂપીઆ દઇ દેવીને બેસાડી ત્યાં પૂજા સોંપી દીધી. તે બ્રાહ્મણ પ્રસન્ન થઇ સેવા

बाबावेनु और जादव खवास के तो कोई सगो रह्यो नाहीं, सब मरे। और कृष्णदास के दोय भाई हते, सो अड़ेल आय श्रीआचार्यजी पास नाम पाये। साधारण वैष्णव भये। या प्रकार बहुत दिन बीते। श्रीगोवर्द्धनधर प्रगट होइ गोवर्द्धन पर विराजे, पाछें श्रीगुसांईजी सेवा करते, सो सुनिके बाबावेनु और कृष्णदास, जादव खवास को मन भयो, जो–श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन करें। सो बाबावेनु हृदय के नेत्रन सूँ देखते। श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप को दरसन करते। और कृष्णदास कों विरह अष्टप्रहर रहतो। जो–कब लीला में प्राप्ति होयगी? सो कीरतन गाय के निर्वाह करते। और जादव खवास भगवद् इच्छा सब बात की मानि प्रसन्नता सों सेवा करते। सो एक दिन श्रीकल्याणरायजी ने तीनो जनेन कों आज्ञा दीनी जो–तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जाव। अब तिहारी तीनोन की वहां प्राप्ति होयगी। तब बाबावेनु ने कही, आप अब कौन के माथे पधारोगे? तब श्रीकल्याणरायजी ने कही, कृष्णदास के दोई भाई हैं, तिनके माथे मोकों पधराय के तुम जाव। तब बाबावेनु, कृष्णदास के दोऊ भाई कों बुलाय के कहै, तिहारे बड़े भागि हैं। मन लगाय के श्रीठाकुरजी की सेवा करियो। यह घर वस्तू सब तिहारे हवाले हैं। हम तीनो जने ब्रज में जाइंगे। तहां तीनो जनेन की देह छूटेगी,

---

કરતો. ગામની જીવિકા હતી તે ખાતો અને બાબાવેણુ અને જાદવ ખવાસને તો કોઇ સગો રહ્યો ન હતો. બધાં મર્યાં. અને કૃષ્ણદાસને બે ભાઇ હતા. તે અડેલ આવી શ્રી-આચાર્યજી પાસે નામ પામ્યા સાધારણ વૈષ્ણવ થયા. આ પ્રકારે બહુ દિવસ વીત્યા. શ્રીગોવર્દ્ધનધર પ્રકટ થઇ ગોવર્દ્ધન ઉપર બિરાજ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી સેવા કરતા. તે સાંભળીને બાબાવેણુ અને કૃષ્ણદાસ જાદવ ખવાસનુ મન થયું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન કરીએ. તે બાબાવેણુ હૃદયના નેત્રોથી જોતા. શ્રીગોવર્દ્ધનધરના સ્વરૂપનાં દર્શન કરતા અને કૃષ્ણદાસને વિરહ અષ્ટપ્રહર રહેતો કે ક્યારે લીલામાં પ્રાપ્તિ થશે. તે કીર્તન ગાઇને નિર્વાહ કરતા. પછી એક દિવસ શ્રીકલ્યાણરાયજીએ ત્રણે જણાને આજ્ઞા આપી, કે તમે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના દર્શને જાવ. હવે તમારી ત્રણેની ત્યાં પ્રાપ્તિ થશે. ત્યારે બાબાવેણુએ કહ્યું, આપ હવે કોના માથે પધારશો? ત્યારે શ્રીકલ્યાણરાયજીએ કહ્યું, કૃષ્ણદાસના બે ભાઇઓ છે. તેમના માથે મને પધરાવીને તમે જાવ. ત્યારે બાબાવેણુ કૃષ્ણદાસના બન્ને ભાઇઓને બોલાવીને કહે, તમારાં મહાન ભાગ્ય છે. મન લગાડીને શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરજો. આ ઘર વસ્તુ બધી તમારે સુપ્રત છે. અમે ત્રણે જણ વ્રજમાં જઇશું. ત્યાં ત્રણે જણાની દેહ

भगवद् इच्छा ऐसी जानि परत हैं। तब दोऊ सेवा करन लागे। तब प्रसन्न होई ये तीनो जने चले। सो कछुक दिन में मथुरा आये।

वार्ता-प्रसंग १—सो बाबावेनु हृदय के नेत्रन सों देखते। सो ये तीनों जने केसोरायजी के दरसन कों चले। सो मथुरा में आय दरसन करे। सो दरसन करत ही में कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप सूं दरसन भये। सो कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप कें दरसन को अत्यन्त विरह भयो, सो यह कीर्तन कृष्णदास ने गायो।

* राग बिलावल *

आली! तू देखरी नयनन गिरवरधर।
सहचरी कहति दुतिय सहचरी सों परम मुदित प्यारी राधावर ॥ १ ॥
भूषन भूषित अग, मोहन-बसन मोहत कनक कान्ति हरि।
चितै चित हरत विश्व जुवतिनके सबैसु देत कर कमल करि ॥ २ ॥
उपमा कहा देऊ को लायक, वरनों कहा किसोर वैस वरु।
सुरति अत लटकत व्रज आवत 'कृष्णदास' बड़भाग कलप तरु ॥ ३ ॥

यह पद गावत ही कृष्णदास की देह श्रीकेसोरायजी के मन्दिर में छूटि गई। तब बाबावेनु और जादव खवास ने कृष्णदास की देह को अग्नि संस्कार करि, बाबावेनु ने जादव खवास सों कही, जो कृष्णदास कों गोह मारि गई। और हम तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिकें देह छोडेंगे।

છુટશે. ભગવદીચ્છા એવી જણાય છે. ત્યારે તે બન્ને સેવા કરવા લાગ્યા. ત્યારે પ્રસન્ન થઇ તે ત્રણે ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં મથુરા આવ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે બાબાવેણુ હૃદયનાં નેત્રોથી જોતા હતા. એ ત્રણે જણ કેશોરાયજીનાં દર્શને ચાલ્યા તે મથુરામાં આવી દર્શન કર્યાં. તે દર્શન કરતાં જ કૃષ્ણદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનધરના રૂપથી દર્શન થયાં. ત્યારે કૃષ્ણદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનધરના સ્વરૂપનાં દર્શનનો અત્યંત વિરહ થયો. ત્યારે આ કીર્તન કૃષ્ણદાસે ગાયું—

રાગ બિલાવલ

આલી તૂ દેખરી નયનન ગિરિવરધર.............. . ....(ઉપરજુઓ)

તે પદ ગાતાં જ કૃષ્ણદાસની દેહ શ્રીકેશવરાયજીના મંદિરમાં છુટી ગઇ. ત્યારે બાબાવેણુ અને યાદવ ખવાસે કૃષ્ણદાસની દેહનો અગ્નિ-સંસ્કાર કરીને બાબાવેણુએ યાદવ ખવાસને કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસને ગોહ મારી ગઇ. અને અમે તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરીને દેહ છોડીશું.

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो–गोह काल रूप है। सो हमारे संगतें इनकों पहले ही लई। यह कहे। तामें काल दोई प्रकार को है, तहां काल मुख्य अधिकारी श्रीठाकुरजी को है। जब कृष्णदास कों विरह भयो, सो विरहतें इनकी देह दसा भूलि गई। लीला में मग्न होई गये। सो बाबावेनु कों सुनायकें कीर्तन किये, जो–"हे आली!" दोऊ लीला में विसाखाजी की सखी है, तातें बाबावेनु सों कहे। तू देखि, नयनन गिरवरधर। तू जहां तहां क्यों भटकत है? (मैं) नेननसों गिरवरधर कों देखत हों। और ठोर नेन जात नाहीं। सो आगें खोलि दियो। सहचरी कहत दुतिय सहचरी सों, कृष्णदास सहचरी है, और बाबावेनु सहचरी है। सो कृष्णदास तिनसों कहे, परम मुदित, जो–आनंद मय प्यारी राधा तिनके वर हैं। तिनही सों अपने नेन लगे हैं। या प्रकार कीर्तन करि अपने हृदय को भाव बाबावेनु कों जताये। सो इनको विरह श्रीगोवर्द्धनधर सहि न सके। जो–काल है, सो भगवान की विभूति है, मुख्य अधिकारी है। इच्छा शक्ति रूपवान है। यातें शिक्षापत्र में कहे हैं। श्लोक—

यतः कालस्तद्विभूतिः कालः कलयतामहम्।
मुख्याधिकार्यपि हरेरिच्छाशक्तिस्वरूपवान्॥ १॥

सो काल प्रभु की इच्छा जानि तत्काल कृष्णदास कों प्रभु के पास पहों-

---

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે ગોહ–કાલ રૂપ છે. અમારા પાસેથી એને પહેલાં જ લઇ ગઇ. એમ કહ્યું. તેમાં કાલ બે પ્રકારનો છે. ત્યાં કાલ શ્રીઠાકુરજીનો મુખ્ય અધિકારી છે. જ્યારે કૃષ્ણદાસને વિરહ થયો તે વિરહથી એમની દેહદશા ભૂલી જવાઇ. લીલામાં મગન થઈ ગયા. ત્યારે બાબાવેણુને સંભળાવીને કીર્તન કર્યું કે હે અલી! બન્ને લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે. તેથી બાબાવેણુને કહે, તૂ નેત્રોથી ગિરિવરધરને જો તૂ જ્યાં ત્યાં કેમ ભટકે છે? હું નેત્રોથી ગિરિવરધરને જોઉં છું, બીજી જગાએ નેત્રો જતાં નથી. તે વાત આગળ ખોલી દીધી. "સહચરી કહતિ દુતીય સહચરી સોં" કૃષ્ણદાસ સહચરી છે અને બાબાવેણુ સહચરી છે તે કૃષ્ણદાસ એમને કહે, પરમ મુદિત જે આનંદમય પ્યારી રાધા છે તેમના વર (શ્રીકૃષ્ણ) તેમનાથી મારાં નેત્ર લાગ્યાં છે. આ પ્રકારે કીર્તન કરી પોતાના હૃદયનો ભાવ બાબાવેણુને જણાવ્યો. એટલે એમનો વિરહ શ્રીગોવર્દ્ધનધર સહી ન શકયા. એ કાલ છે તે ભગવાનની વિભૂતિ છે. મુખ્ય અધિકારી છે, ઇચ્છાશક્તિનું સાક્ષાત્ સ્વરૂપ. તેથી શિક્ષાપત્રમાં કહ્યું છે. શ્લોક–'યતઃ કાલસ્તદ્વિભૂતિઃ' એ કાલ પ્રભુની ઇચ્છા

चते करि दिये। तब बाबावेनु ने कही, कृष्णदास कों गोह मारि ले गई। ताको अर्थ यह, कृष्णदास की अहंता ममतात्मक वासना रूप देह कों गोह मारि ले गई। काहेते, जहां तांई लिंग सरीर देह न गिरे। तहां तांई भगवद् प्राप्ति न होई। सो लिंग देहकों गोह मारि इनकों ले गई, यह कहें। पाछें अपनी बात कहैं, जो–यह श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन करि लिंग देह कों छोड़ेंगे। तामें यह जताये, हमकों कृष्णदास को सो विरह नाहीं अब ही भयो। सो श्रीगोवर्द्धनधर को दरसन करेंगे तब विरह होइगो, तब देह छोड़ेंगे। या प्रकार बाबावेनु नें दैन्यता जताई, जो-हमारो कार्य श्रीगोवर्द्धनधर करेंगे।

पाछें बाबावेनु और जादव खवास दोऊ मथुरा तें चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये। सो श्रीनाथजी के दरसन किये। तहां बाबावेनु ने श्रीनाथजी के आगे कीर्तन किये। तब श्रीनाथजी के कंठ तें फूल की माला गिरी। तब रामदास एक बीड़ा प्रसादी और माला ले बाबावेनु कों दीनी।

भावप्रकाश—जाको अर्थ यह, जो–श्रीनाथजी ने तुमकों विरह दियो। और या देह सों बिदा दीनी। अब लीला में प्राप्त होइंगे। और माला श्रीनाथजी

જાણી તત્કાલ કૃષ્ણદાસને પ્રભુની પાસે પહોંચતા કરી દીધા. ત્યારે બાબાવેણુએ કહ્યું, કૃષ્ણદાસને ગોહ મારી લઇ ગઇ. તેનો અર્થ એ, કૃષ્ણદાસની અહંતા મમતાત્મક વાસના રૂપ દેહને ગોહ મારી લઇ ગઇ. કેમકે જ્યાં સુધી લિંગ દેહ ન પડે ત્યાં સુધી ભગવત્પ્રાપ્તિ ન થાય. તે લિંગ દેહને ગોહ મારી એને લઇ ગઇ એમ કહ્યુ. પછી પોતાની વાત કહી, કે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન કરી આ લિંગ-દેહને છોડીશું. તેમાં એ જણાવ્યુ અમને કૃષ્ણદાસના જેવો હજુ વિરહ થયો નથી. જ્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન કરીશું ત્યારે વિરહ થશે ત્યારે દેહ છોડીશું. આ પ્રકારે બાબાવેણુએ દીનતા જણાવી, કે અમારૂ કાર્ય શ્રીગોવર્દ્ધનધર કરશે.

પછી બાબાવેણુ અને યાદવ ખવાસ બન્ને મથુરાથી ચાલ્યા. તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યાં બાબાવેણુએ શ્રીનાથજીની આગળ કીર્તન કર્યાં. ત્યારે શ્રીનાથજીના કંઠથી ફૂલની માળા પડી. ત્યારે રામદાસે એક બીડું પ્રસાદી તથા માલા લઇ બાબાવેણુને આપી.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ કે શ્રીનાથજીએ તમને વિરહ આપ્યો. અને આ દેહથી વિદાય આપી. હવે લીલામાં પ્રાપ્ત થશો. અને માલા શ્રીનાથજીનાં

के कंठ सों वड़ी भई । सो यह, जो–माला भक्त रूप है। सो भक्तन के हाथ विरह है । जब व्रजभक्त विरह देय, तब आवे। सो माला के लेत ही विरह भयो। और वीड़ा मंगल रूप देय । सो रामदासजी वीड़ा देय यह जताये, जो–तुम पर प्रभु प्रसन्न हैं ।

पाछें बाबावेनु दंडवत् करि माला बीड़ा ले, परवत तें नीचे उतरि, देहि छोड़ि दिये। तब बाबावेनु की देह को संस्कार जादव खवास ने कियो। पाछें शुद्ध होय श्रीगुसांईजी के दरसन कों आयो। तब श्रीगुसांईजी ने इनकूं भगवदीय जानि सेवा दीनी, सो यादवदास करन लागे, परि मनमें खेद रहतो। पाछें जादव खवास नें विचार्यो, जो–अब इहां रहि के कहा करनो ? जहां बाबावेनु है तहां जाइये। तो आछो।

भावप्रकाश—काहे तें, लीला में हू जादव खवास बाबावेनु की सखी है, तातें बाबावेनु कों टहेल करि प्रसन्न किये हैं। सो अब बाबावेनु के संग विना इनसों रह्यो न जाई। सो विरह भयो ।

तब जादव खवास ने विचार्यो, जो–कृष्णदास की देह को संस्कार मैं कियो। अब मेरी देह को संस्कार कोई वैष्णव सेवक करेगो। तो सेवा में उन कों अंतराय परे, सो अपने न करनो। यह विचारि,

કંઠથી વડી થઇ તે એ, કે માલા ભક્તરૂપ છે તે ભક્તોના હાથ વિરહ છે. જ્યારે વ્રજભક્ત વિરહ દે ત્યારે આવે. તે માળાના લેતાંજ વિરહ થયો. અને બીડું દીધું તે જેના ઉપર પ્રસન્ન થાય તેને બીડું મંગલરૂપ દે. તે રામદાસજીએ બીડું દઇ એ જણાવ્યુ, કે તમારા ઉપર પ્રભુ પ્રસન્ન છે.

પછી બાબાવેણુ દંડવત કરી માલા બીડા લઇ પર્વતથી નીચે ઉતરી દેહ છોડી દીધી. ત્યારે બાબાવેણુની દેહનો સંસ્કાર જાદવ ખવાસે કર્યો. પછી શુદ્ધ થઇ શ્રીગુસાંઇજીના દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ એમને ભગવદીય જાણી સેવા આપી. તે યાદવદાસ કરવા લાગ્યા. પરંતુ મનમાં ખેદ રહેતો. પછી જાદવ ખવાસે વિચાર્યું, કે હવે અહીં રહીને શું કરવું ? જ્યાં બાબાવેણુ છે ત્યાં જઇએ તો સારૂં.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે લીલામાં પણ જાદવ ખવાસ બાબાવેણુની સખી છે. તેથી બાબાવેણુની ટહલ કરી પ્રસન્ન કરે છે. એટલે હવે બાબાવેણુના સંગ વિના એનાથી રહેવાતુ નથી તેથી વિરહ થયો.

ત્યારે યાદવ ખવાસે વિચાર્યું, કે કૃષ્ણદાસની દેહનો સંસ્કાર મેં કર્યો. હવે મારી દેહનો સંસ્કાર કોઇ વૈષ્ણવ સેવક કરશે તો સેવામાં એમને અંતરાય પડે. તેવું આપણે

दरसन श्रीनाथजी के करि, अनोसर पाछें बन में जाय तहां सूखी भूमि में गिरी लकड़ी भेली नित्य करि आवे। ऐसे करत जानी, जो–अब देह के संस्कार लायक लकड़ी भई। तब श्रीनाथजी के दरसन करे। पाछे सवेरे सेवकन सों भगवद् स्मरण करि श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करी। ता पाछें अग्नि ले के बन में आये, सो जा ओर की ब्यार हती ता ओर चिता में अग्नि धरि, फेरि श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडवत करि, उह चिता पर बैठि पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के चरणारविन्द को स्मरन करि देह छोड़ि, लीला में प्राप्त भये। अग्नि में बरि के अपने हाथ सों सरीर को संस्कार किये। और पहले बाबावेनु ने यादवेन्द्रदास सों कह्यो हतो, जो–विलंब मति करियो, तू वेग अइयो। सो तो श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी की सेवा सोंपी तातें इतने दिन विलंब कियो। सो जादवदास ऐसे भगवदीय हे, जो–काल इन के वस में। पाछें एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो–महाराज! जादवदास दिन दोई तीन तें दीसे नाहीं। तब श्री-गुसांईजी कहैं, जादवदास देह छोड़ि प्रभू कों पाये। तब वैष्णवने कही, सरीर को संस्कार कहां भयो? तब श्रीगुसांईजी कही, बन में लकड़ी भेली करि आपु ही आप ने संस्कार को उपाय किये।

न करवुं. એમ વિચારી શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી અનોસર પછી વનમાં જઇ ત્યાં સુકી ભૂમીમાં પડેલી લાકડીઓને નિત્ય એકઠી કરી આવે. એમ કરતાં જાણ્યું, કે હવે દેહના સંસ્કાર લાયક લાકડીઓ થઇ ત્યારે શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી બધા સેવકોને ભગવદ્ સ્મરણ કરી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત કરી તે પછી અગ્નિ લઇને વનમાં આવ્યા. તે જે તરફની હવા હતી તે તરફ ચિતામાં અગ્નિ ધરી ફરી શ્રીનાથજીની ધ્વજાને દંડ-વત કરી તે ચિતા ઉપર બેસી પછી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગુસાંઇજીના ચરણારવિંદનું સ્મરણ કરી દેહ છોડી લીલામાં પ્રાપ્ત થયા. અગ્નિમાં બળીને પોતાના હાથથી શરીરનો સંસ્કાર કર્યો અને પહેલાં બાબાવેણુએ યાદવેંદ્રદાસને કહ્યું હતું, કે વિલંબ ન કરજે. તૂ જલ્દી આવજે. તે તો શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીનાથજીની સેવા સોંપી હતી તેથી એટલા દિવસ વિલંબ થયો. એ યાદવેંદ્રદાસ એવા ભગવદીય હતા કે કાલ એમના વશમાં હતો. પછી એક વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીને પૂછ્યુ, કે મહારાજ! યાદવદાસ દિવસ બે-ત્રણથી દે-ખાતા નથી? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, યાદવદાસ દેહ છોડી પ્રભુને પામ્યા. ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યુ, શરીરનો સંસ્કાર ક્યાં થયો? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, વનમાં લાકડી એકઠી કરી પોતેજ પોતાના સંસ્કારનો ઉપાય કર્યો.

भावप्रकाश—सो यातें, जो–काहू वैष्णव कों भगवद् सेवा में अन्तराय कैसे करों ? वैष्णव ॥३९॥

सो बाबावेनु, कृष्णदास, जादव खवास अलौकिक दैवी जीव हे। इनकों अलौकिक सामर्थ ही, ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥३९॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जगतानंद, सारस्वत ब्राह्मन, थानेश्वर में रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जगतानंद भामा सखी श्रीस्वामिनीजी की, तिनकी सखी है। लीला में इनको नाम 'माधुरी' है। सो ए थानेश्वर में एक ब्राह्मण के घर जनमें। सो वर्ष बारह के भये, तब कासी में जाय विद्या पढ़े। वर्ष बारह कासी में रहि विद्या श्रीभागवत पढ़ी। पाछे थानेश्वर में आई सरस्वती नदी के ऊपर श्रीभागवत की कथा कहते, तामें इनकी जीविका निर्वाह लायक चली जाती।

वार्ता–प्रसंग १—**सो एक समय थानेश्वर श्रीआचार्यजी पधारे सो प्रातःकाल की सन्ध्या किये। इतने में जगतानन्द आई सरस्वती में न्हाई श्रीभागवत की कथा कहन लागे। तब श्रीआचार्यजी मन**

ભાવપ્રકાશ—તે એથી કે કોઇ વૈષ્ણવને ભગવત્સેવામાં અન્તરાય કેમ કરૂં ? વૈષ્ણવ ૩૯

તે બાબાવેણુ, કૃષ્ણદાસ, જાદવ ખવાસ અલૌકિક દૈવી જીવ હતા. એમને અલૌકિક સામર્થ્ય હતી. એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, જગતાનંદ, સારસ્વત બ્રાહ્મણ થાનેશ્વરના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ જગતાનંદ ભામા સખી શ્રીસ્વામિનીજી તેમની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ 'માધુરી' છે. એ થાનેશ્વરમાં એક બ્રાહ્મણને ઘરે જન્મ્યા. તે વર્ષ બારના થયા ત્યારે કાશીમાં જઇ વિદ્યા ભણ્યા. વર્ષ બાર કાશીમાં રહી વિદ્યા શ્રીભાગવત ભણ્યા. પછી થાનેશ્વરમાં આવી સરસ્વતી નદીના ઉપર શ્રીભાગવતની કથા કહેતા. તેમાં એમની જીવિકા નિર્વાહ લાયક ચાલી જતી.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—એક સમય થાનેશ્વર શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. ત્યારે પ્રાતઃકાલની સન્ધ્યા કરી. એટલામાં જગતાનંદ આવી સરસ્વતીમાં ન્હાઇ શ્રીભાગવતની કથા કહેવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ મનમાં વિચાર્યું, આ જગતાનંદ દૈવી જીવ અ-

में विचारे, यह जगतानन्द दैवी जीव हमारो है, याकों अंगीकार करनो। यह विचार करि, जगतानन्द के सन्मुख जाइ बिराजे। तब जगतानन्द ने जान्यो, जो–कोई पंडित ब्राह्मण है। तब जगतानन्द ने एक श्लोक श्रीभागवतको यह कह्यो, वेनुगीत को। 'प्रायो बताम्ब विहगा।' यह श्लोक कहि पाछें याकों अर्थ करि, श्रीआचार्यजी सों पूछे, जो–याही भांति अर्थ है के कछू और है? तब श्रीआचार्यजी कहें, या श्लोक में अनेक भाव है, बहोत अर्थ हैं। और आवत होय तो कहो। तब जगतानन्द ने कह्यो, महाराज! श्लोकार्थ मोकों आवत हतो, सो मैं कहो। अब आपु और कहो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, व्यास आसन तुम बैठे हो, सो व्यास आसन को अतिक्रम हम कैसे करें? तब जगतानन्द आसन सों उतर के कह्यो, आपु विराजि के कहो, मोकों सुनिवे की इच्छा है। तब श्रीआचार्यजी सुबोधिनी को अर्थ उहि श्लोक को करन लागे। सो कहत कहत सवारे तें तीसरो पहर भयो। तब श्रीआचार्यजी कहे, यह श्लोक की व्याख्या दोई तीन महिना तांई चलेगी, तातें अब तुम भूखे हो, तातें उठो। तब जगतानन्द ने जान्यो, जों–ये साक्षात् ईश्वर हैं। तब जगतानन्द दंडवत् करि बिनती करि कह्यो, महाराज! आपु साक्षात पुरुषोत्तम हो। जो चाहो तितने दिन

મારો છે. એને અંગીકાર કરવો. એમ વિચાર કરીને જગતાનંદની સન્મુખ જઇ બિરાજ્યા. ત્યારે જગતાનંદે જાણ્યું, કે કોઇ પંડિત બ્રાહ્મણ છે. ત્યારે જગતાનંદે એક શ્લોક શ્રીભાગવતનો આ કહ્યો, વેણુગીતનો–'પ્રાયોબતામ્બવિહગા' એ શ્લોક કહી પછી એનો અર્થ કરી શ્રીઆચાર્યજીને પૂછ્યું, કે આજ પ્રમાણે અર્થ છે કે કંઇ બીજો છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ શ્લોકમાં અનેક ભાવો છે. બહુજ અર્થો છે. અને આવડતો હોય તો કહો. ત્યારે જગતાનંદે કહ્યું, મહારાજ! શ્લોકાર્થ મને આવડતો હતો તે મેં કહ્યો. હવે આપ બીજું કહો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, વ્યાસ આસને તમે બેઠા છો. તે વ્યાસ આસનનો અતિક્રમ કરી અમે કેમ કહીએ? ત્યારે જગતાનંદે આસનેથી ઉતરીને કહ્યું, આપ બિરાજીને કહો. મને સાંભળવાની ઇચ્છા છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સુબોધિનીનો અર્થ તે શ્લોકનો કરવા લાગ્યા. તે કહેતાં કહેતાં સવારથી ત્રીજો પ્રહર થયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે. આ શ્લોકની વ્યાખ્યા બે ત્રણ મહીના સુધી ચાલશે તેથી હવે તમે ભૂખ્યા છો તેથી ઉઠો. ત્યારે જગતાનંદે જાણ્યું, કે એ સાક્ષાત ઇશ્વર છે. ત્યારે જગતાનંદે દંડવત કરી વિનંતી કરીને કહ્યું, મહારાજ! આપ સાક્ષાત પુરુષોત્તમ છો. ચાહો તેટલા દિવસ અર્થ કરી શકો. હવે કૃપા કરીને મારા ઘરે પધારો. ત્યારે

अर्थ करो। अब कृपा करि मेरे घर पधारो। तब श्रीआचार्यजी कहे, हम अपुने सेवक बिना काहूके घर पधारत नाहीं। तब जगतानन्द ने बिनती करी, महाराज! हमकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो–जाऊ न्हाई आउ। तब जगतानन्द सरस्वती में न्हाइ अपरस में आयो। तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करायो। पाछें जगतानन्द के घर पधारे। तब जगतानन्द सों कहें, तुम भगवद् सेवा करो। तब जगतानन्द ने कही, महाराज! मेरे एक ठाकुर लालजी हैं, सो सदा तुलसी में बैठे रहत हैं। तिन पर एक लोटी पानी नित्य चढ़ावत हों। तब श्रीआचार्यजी कहें, वेगे श्रीठाकुरजी कों लाव, ऐसे न करिये। तब जगतानन्द श्रीठाकुरजी कों ले आयो। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराई पाट बैठाये, जगतानन्द के माथे पधराए। आपु जगतानन्द के घर पाक सामग्री करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। पाछें आप भोजन करि, जगतानन्द कों जूठन की पातर धरी। पाछें रात्रकों श्रीआचार्यजी यह श्लोक कहे–

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम्। वृत्त्यर्थं नैव युंजीन प्राणैः कंठगतैरपि ॥

सो जगतानन्द ने सुनत ही जल तें संकल्प कियो, जो–आजु पाछें वृत्यर्थ श्रीभागवत न कहूंगो, और शास्त्र कहूंगो। तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीभागवत कों कहि जीविका कबहू न करनो,

---

શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે અમારા સેવક સિવાય કોઇના ઘરે પધારતા નથી. ત્યારે જગતાનંદે વિનંતી કરી, મહારાજ! અમને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આજ્ઞા કરે, કે જાવ ન્હાઇ આવો. ત્યારે જગતાનંદ સરસ્વતીમાં ન્હાઇ અપરસમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી જગતાનંદના ઘરે પધાર્યા. ત્યારે જગતાનંદને કહે, તમે ભગવદ્ સેવા કરો. ત્યારે જગતાનંદે કહ્યું, મહારાજ! મારા એક ઠાકુર લાલજી છે તે સદા તુલસીમાં બેસી રહે છે. તેમની ઉપર એક લોટી પાણી નિત્ય ચઢાવું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જલ્દી ઠાકુરજીને લાવ, એમ ન કરીએ. ત્યારે જગતાનંદ શ્રીઠાકુરજીને લઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડયા. જગતાનંદના માથે પધરાવ્યા. પોતે જગતાનંદના ઘરે પાક સામગ્રી કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યા. પછી પોતે ભોજન કરી જગતાનન્દને જુઠનની પાતર ધરી. પછી રાત્રિએ શ્રીઆચાર્યજી આ શ્લોક કહે–'પઠનીયં પ્રયત્નેન' (ઉપર જુઓ).

તે જગતાનન્દે સાંભળતાંજ જલથી સંકલ્પ કર્યો કે આજ પછી વૃત્તિ અર્થે શ્રીભાગવત નહીં કહું. બીજાં શાસ્ત્રો કહીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શ્રીભાગવતને

प्रान जाई तो सुखेन जाऊ। या प्रकार जगतानन्द के घर रहि, पुष्टिमारग की रीति सेवा की सिखाई, आप पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे। तब जगतानन्द मन लगाई के भगवद् सेवा करन लागे। और पुरान की कथा आदि महाभारत कहेते। तासों जीविका करते। सो भगवद् सेवा करत कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावन लागे। सो जगतानन्द बड़े भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥४०॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, आनंददास विश्वंभरदास क्षत्री, प्रयाग में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में कुमारिका की दोऊ सखी है, लीला में आनन्ददास को नाम 'नागरी', और विश्वंभरदास को नाम 'मल्लिका'। सो ये प्रयाग में एक क्षत्री के घर जनमें। सा इनको मन बालपने सों वैराग्य दसा में रहे। खानपान वस्त्रादिक देह सुख कछु न करे। जैसो माता पिता देय सो खाय, पहरें। जो–आछो माता पिता पहराय देई तो प्रयाग में त्रिवेनी की कीच में मेलो करिके पहरे। माता–पिता खीजें, गारी देय, मारे, परन्तु बोले नाहीं। जो गहना

કહીને જીવિકા કદીયે ન કરવી. પ્રાણ જાય તો ભલે જાવ. આ પ્રકારે જગતાનંદના ઘરે રહી પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ સેવાની શિખાવી પોતે પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. ત્યારે જગતાનંદ મન લગાડીને ભગવદ્સેવા કરવા લાગ્યા. બીજા પુરાણની કથા આદિ મહાભારત કહેતા. તેનાથી જીવિકા કરતા. પછી ભગવત્સેવા કરતાં કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તે જગતાનંદ મહાન ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ૪૦

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, આનંદદાસ વિશ્વંભરદાસ ક્ષત્રી, પ્રયાગમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં કુમારિકાની બન્ને સખી છે. લીલામાં આનંદદાસનું નામ 'નાગરી' અને વિશ્વંભરદાસનું નામ 'મલ્લિકા' છે. એ પ્રયાગમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. તે એમનું મન બાલપણેથી વૈરાગ્ય દશામાં રહે. ખાનપાન વસ્ત્રાદિક દેહ સુખ કંઇ ન કરે. જેવું માતા પિતા દે તેવું ખાય પહેરે. જો સુંદર માતાપિતા પહેરાવી દે તો પ્રયાગમાં ત્રિવેણીના કીચડમાં મેલું કરીને પહેરે. માતા-પિતા ખીજે, ગાળો દે પરંતુ બોલે નહી. જો ઘરેણાં પહેરાવે તો કોઈ બ્રાહ્મણને,

पहरावे तो काहू ब्राह्मण कों, वैरागी कूँ दे आवे। और पिता माता सों कछु बोले नाहीं। जब तब यह कहे, जो–अपने खाये, पहरे तें कहा है ? कछु परमारथ करो तो आछो है। सो यह बात माता–पिता कों सुहाई नाही। पाछें माता–पिता ने आनन्ददास की सगाई करी। तब आनन्ददास ने कही, मेरो विवाह मति करो, मैं तो वैरागी हों। सो माता–पिता माने नाहीं, ब्याह की तैयारी किये। तब दिन एक ब्याह को रह्यो। तब आनंददास ने छोटे भाई विश्वंभरदास सों कही, जो–माता–पिता तो मानत नाहीं। हमारो ब्याह करि पाछे तेरो ब्याह करेंगे, तब अपने वंदीखाने परेंगे। सो अब कहा उपाय है ? तब छोटे भाई विश्वंभरदास ने कही, यह गाम छोड़ि कहूँ निकसि चलो। तब आपुन बचेंगे। तब दोऊ भाई संध्या समें नाव पर वैठि श्रीयमुनाजी की पार होइ चित्रकोट में जाय रहें। तहां पर्वतन की सोभा देखें, वनफल खाई, दिन आठ रहे। इहां माता–पिता सगरो गाम ढूंढ़ि के हार रहें। पाछे पिताने कोई सों सुन्यो, जो–दोई बालक चित्रकोट में जाय रहे हैं। तब पिता नोमें दिन चित्रकोट आयो, सो वेटान की दसा देखिकें कह्यो, जो–अब तुम घर चलो, तिहारो ब्याह न करेंगे। हम वृद्ध हैं, हमारी देह छूटे तब तिहारो मन आवे सो करियो। अब ही तुमकों बाल अवस्था में वनवास

वैरागीने दइ आवे अने माता-पिताथी कइ बोले नहीं. ज्यारे त्यारे एम कहे, के आपणा खावापहेरवाथी शुं छे ? कइ परमार्थ करो तो सारु छे. आ वात मातापिताने गमे नही. पछी मातापिताए आनंददासनी सगाइ करी. त्यारे आनंददासे कह्युं, मारो विवाह न करता हुं तो वैरागी छुं. ते वात मातापिता माने नही. लगननी तैयारी करी त्यारे दिवस एक लगननो बाकी रह्यो, त्यारे आनंददासे नानाभाइ विश्वंभरदासने कह्युं, के मातापिता तो मानता नथी, अमारुं लग्न करशे. त्यारे आपणे बंदीखानामां पडीशुं. माटे हवे शो उपाय छे ? त्यारे नानाभाइ विश्वंभरदासे कह्युं, आ गाम छोडी कंइ निकळी चालो त्यारे आपणे बचीशुं. त्यारे बने भाइ संध्या समे नाव उपर बेसी श्रीयमुनाजीनी पार जइने चित्रकुटमां जइ रह्या. त्यां पर्वतोनी शोभा जुवे, वनफल खाइ दिवस आठ रह्या. अहीं माता-पिता बधुं गाम खोळीने हारी गया. पछी पिताए कोइनाथी सांभळ्युं के बे भाइ चित्रकुटमां जइ रह्या छे. त्यारे पिता नवमा दिवसे चित्रकुट आव्यो. ते पुत्रोनी दशा जोइने कहे के हवे तमे घर चालो. तमारुं लग्न नहीं करीए. अमे वृद्ध छीए. अमारी देह छुटे त्यारे तमारा मनमां आवे तेम करजो. हमणां तमने

उचित नाहीं है। तब दोऊ भाई कहें, बनवास तो बालपने ही में ठीक है, परन्तु तुम आये ताते तिहारे संग चलेगें। परन्तु हमारे ब्याह की दोनों के ब्याह की चर्चा मति करो। और हमारे पीछे मति परो। चाहेंगे सो करेंगे। कछु चोरी अन्याव करें तो बरजियो। हमकों तो वैरागी अतीत प्रिय हैं, तिनके पास बैठेंगे। सो तुमकों भावत नाहीं। तातें घर छोड़े। तब पिताने कही, अब तुम घर चलो। तिहारे मन आवे सो करियो। हम तिहारे पीछे न परेंगे। तब दोऊ भाई पिता के संग आये। सो एक बार दोऊ भाई घर में आइ, खान पान करि जाइ। पाछें कथा वार्ता जहां तहां सुने। तहांई धरती पर परि रहे। देह को दुःख सुख मनमें गिने नाहीं।

सो एक समय दोऊ भाई श्रीयमुनाजी के तीर बैठे ज्ञान की वार्ता करत हे। जो–भाई! जन्म सगरो बीत्यो। प्रभुसों पहचान न भई। मन श्रीठाकुरजी में न लाग्यौ। कथा वार्ता बहोत सुनी, परन्तु मन बस न भयो। सो अपनो मनुष्य जन्म सगरो वृथा गयो। अब फेरि चौरासी भोगेंगे, सो कहा करें? कछू उपाय दीसत नाहीं। या प्रकार परस्पर बतराये, पाछें धीरज छूटि गयो, सो श्रीयमुनाजी

બાલ્યાવસ્થામાં વનવાસ ઉચિત નથી. ત્યારે બન્ને ભાઇ બોલ્યાઃ વનવાસ તો બાલપણામાં જ ઠીક છે. પરંતુ તમે આવ્યા તેથી તમારી સાથે ચાલીશું. પરંતુ અમારા લગ્નની-બન્નેના લગ્નની ચર્ચા ન કરો અને અમારી પાછળ ન પડો. અમે ચાહે તેમ કરીશું. કંઇ ચોરી અન્યાય કરીએ તો રોકજો અમને તો વૈરાગી અતીત પ્રિય છે તેમની પાસે બેસીશુ. તે તમને ગમતુ નથી તેથી ઘર છોડયું. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, હવે તમે ઘર ચાલો. તમારા મનમાં આવે તેમ કરજો. અમે તમારી પાછળ નહી પડીએ. ત્યારે બન્ને ભાઇ પિતાની સાથે આવ્યા. પછી એક વાર બન્ને ભાઇ ઘર આવી ખાનપાન કરી જાય. પછી કથા વાર્તા જ્યાં ત્યાં સાંભળે. ત્યાંજ ધરતી ઉપર પડી રહે. દેહનું દુઃખ સુખ મનમાં ગણે નહીં.

પછી એક સમય બન્ને ભાઇ શ્રીયમુનાજીના તટે બેસીને જ્ઞાનની વાર્તા કરતા હતા. કે ભાઇ! જન્મ બધો વીત્યો, પ્રભુથી ઓળખાણ ન થઇ. મન શ્રીઠાકુરજીમાં ન લાગ્યુ. કથા વાર્તા ઘણી સાંભળી પરંતુ મન વશ ન થયું તે આપણો મનુષ્ય જન્મ બધો વૃથા ગયો. હવે ફરી ચોરાશી ભોગવીશું શુ કરીએ? કંઇ ઉપાય દેખાતો નથી. આ પ્રકારે પરસ્પર વાતચિત કરી. પછી ધીરજ છુટી ગઇ ત્યારે શ્રીયમુનાના કિનારે પોતાનું માથું પીટીને રૂદન કર્યું. પછી શરીરની સુધ ન રહીં.

के किनारे अपनो मूंड पीट के रुदन किये। सो सरीर की सुधि न रही। रात्रिकों वहांइ दोऊ परि रहे। तब अर्द्ध रात्रि समय श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो दोई क्षत्री के बालक श्रीयमुनाजी के वा पार रेति में परे हैं। तिनकों मेरे लिये बड़ो ताप है सो आपु पधारि के उनकों अङ्गीकार करो। नाहीं तो उनको कछु दिन में सरीर छूटि जायगो। तव श्रीआचार्यजी कृष्णदास मेघन आदि वैष्णवन कों जगाइ, वाही समय श्रीयमुनाजी के तीर पधारे। सो घाट पर कोई नाहीं। नाव बँधी है। तव आप वैष्णव सहित नाव पर बैठे। और वैष्णव सों कहें, तुम नाव खेवत तो नाहीं जानत, परन्तु जैसे आवे तैसे खेवो। नाव पार जायगी मेरी इच्छा है। तव वैष्णव खेवे। सो नाव, दोऊ भाई रेति में परे हते, तहां आई लागी। तव श्रीआचार्यजी श्रीहस्त में जमुना जल ले वेद मंत्र पढ़ि दोऊ भाई के ऊपर छिड़के। सो दोऊ उठि के श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि बिनती किये। महाराज! हमकों अङ्गीकार करो। तव श्रीआचार्यजी कहें, सवेरो होय तव नाम सुनावेंगे। तव दोऊ भाई ने कही, महाराज! सवेरे लों देह रहै, न रहै, या देह को कहा प्रमान है? और आज दोऊ जने कछू खान पान तो कियो नाहीं, तातें आप ढील मति करो। श्रीठाकुरजी की कृपा तें आपको दरसन भयो। सवेरे तांई

રાત્રિએ ત્યાંજ બન્ને પડયા રહ્યા. ત્યારે અર્ધ રાત્રિ સમયે શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે બન્ને ક્ષત્રીના બાલક શ્રીયમુનાજીની પેલી પાર રેતીમાં પડયા છે. તેમને મારા માટે બહુ તાપ છે. તે આપ પધારીને તેમને અંગીકાર કરો. નહી તો એમનું થોડા દિવસમાં શરીર છુટી જશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસ મેઘન આદિ વૈષ્ણવોને જગાડીને તેજ સમયે શ્રીયમુનાજીના તીરે પધાર્યા. તે ઘાટ ઉપર કોઇ ન હતું. નાવ બાંધી છે. ત્યારે આપ વૈષ્ણવોને કહે, તમે નાવ ચલાવતાં તો જાણતા નથી. પરંતુ જેમ આવે તેમ ચલાવો. નાવ પાર જશે મારી ઇચ્છા છે. ત્યારે વૈષ્ણવે ચલાવી. તે નાવ બન્ને ભાઇ રેતીમાં પડયા હતા ત્યાં આવી લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીહસ્તમાં જમના જલ લઇ વેદમંત્ર ભણી બન્ને ભાઇના ઉપર છાંટયું. ત્યારે બન્ને ભાઇએ ઉઠીને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! અમને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સવાર થશે ત્યારે નામ સંભળાવીશું. ત્યારે બન્ને ભાઇએ કહ્યું, મહારાજ! સવાર સુધી દેહ રહે, ન રહે. આ દેહનું શું પ્રમાણ છે? અને આજે બન્ને જણાએ કંઇ ખાનપાન તો કર્યું નથી. તેથી આપ ઢીલ ન કરો. શ્રીઠાકુરજીની કૃપાથી આપનાં દર્શન થયાં. સવાર સુધી

कहा जानिये कैसी बुद्धि ह्वै जाई ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तिहारी बुद्धि कबहू बिगरे नाहीं, तुम उत्तम जीव हो। और तुम खान पान किये होऊ तोऊ तुम सुद्ध हो। पाछें दोऊन कों नाम सुनाइ ब्रह्मसंबन्ध पाछे करायो। नाव पर बैठाय पार आइ अपने घर ले गये। ता पाछें सवेरो भयो तब श्रीआचार्यजी स्नान करि श्री-ठाकुरजी की सेवा सों पोहोंचि, दोऊ भाई सों कहें, तुम भगवद् सेवा करो। तब दोऊ भाई बिनती किये, महाराज! हमारो मन तो सन्यास लेन को है। परन्तु और ठौर मन जात नाहीं। सो हमारो मन ठिकानें रहे, त्याग दसा छूटे, घरमें रह्यो जाई, तब भगवद् सेवा बने। तब श्रीआचार्यजी चरणामृत दिये, और 'सन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि दोऊ भाईन कों सुनाये। तब रस उछलित हतो, सो हृदय में भगवद् रस स्थिर भयो। मन को उद्वेग मिटि गयो। तब श्रीआचार्यजी वस्त्र प्रसादी श्रीनवनीतप्रियजी के दिये। और कहें, तुम इनकों पधराई सेवा करियो। घरमें जाई। तिहारो मन सदा श्रीठाकुरजी की लीला में रहेगो। लौकिक वैदिक तुमकों बाधक कछू न होइगो। तब दोऊ भाई श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि बिदा होई घर में आये। तब माता-पिता रोवन लागे, बेटा! दोइ दिनतें तुम आये नाहीं। कहां खान पान कियो होयगो? हम जहां ताईं

શું જાણીએ કેવી બુદ્ધિ થઇ જાય? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમારી બુદ્ધિ કદીય બગડશે નહીં. તમે ઉત્તમ જીવ છો. અને તમે ખાનપાન કર્યું હોય તોયે શુદ્ધ છો. પછી બન્નેને નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ પછી કરાવ્યું. નાવ ઉપર બેસાડી પાર આવી પોતાના ઘરે લઇ ગયા. તે પછી સવાર થયું ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સ્નાન કરી શ્રીઠા-કુરજીની સેવાથી પહોંચી બન્ને ભાઇને કહે, તમે ભગવદ્સેવા કરો. ત્યારે બન્ને ભાઇએ વિનતી કરી, મહારાજ! અમારૂં મન તો સન્યાસ લેવાનું છે પરંતુ બીજી જગાએ મન જતું નથી. તો અમારૂં મન ઠેકાણે રહે ત્યાગ દશા છુટે ઘરમાં રહી શકાય ત્યારે ભગવદ્સેવા બને. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ચરણામૃત આપ્યું. અને 'સન્યાસ નિર્ણય' ગ્રંથ કરીને બન્ને ભાઇને સંભળાવ્યો. ત્યારે રસ ઉછલિત હતો તે હૃદયમાં ભગવદ્રસ સ્થિર થયો. મનનો ઉદ્વેગ મટી ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં પ્રસાદી વસ્ત્ર આપ્યાં અને કહ્યું, તમે એમને પધરાવી સેવા કરજો, ઘરમાં જઇને. તમારૂં મન સદા શ્રીઠાકુરજીની લીલામાં રહેશે લૌકિક વૈદિક તમને કંઇ બાધા નહીં થાય. ત્યારે બન્ને ભાઇ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિદાય થઇ ઘર આવ્યા. ત્યારે માતાપિતા રોવા લાગ્યા બેટા બે દિવસથી તમે આવ્યા નહીં.

जीवे तहां तांई एक बार हमकों दिखाई दे जायो करो। तब दोऊ भाई.ने कही, हमकों एक ठौर करि देऊ, तो हम घर ही में रहि जाई। तब माता-पिता ने कही, जो-यह सगरी जगह तिहारी है, जहां चाहो तहां रहो। तब दोऊ भाई ने कही, जो-नाहीं, न्यारी करि देऊ। तिहारी जगे में हम न आवें। हम रहें तहां तुम मति आवो, तो हम घरमें रहें। तब एक अलग जगह बताये। सो दोउ भाई खासा करि श्रीठाकुरजी कों पधराये, मिलके रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लेंही। पाछें भगवद् वार्ता करें। मगन होई गये। सन्यास निर्णय को भाव लीला को भी विचार करि रात्रि दिन भगवद् रस में मगन रहें। और माता-पिता बहोत सुख पाये, जो-पुत्र घरमें है, न मिले तो कहा भयो ?

वार्ता-प्रसंग १—**सो दोई भाई भगवद् वार्ता करे, तामें कबहू छोटे भाई कों निंद्रा आइ जाइ और बड़ो भाई रस में मग्न होइ कहें जाई, तब श्रीठाकुरजी हूंकारी भरत जाय। जो-छोटे भाई कों निद्रा आई है, जो-हूंकारी न भरोंगो तो यह बड़ो भाई न कहेगो। तातें श्रीठाकुरजी हूंकारी भरें। पाछें जब छोटो भाई जागे तब दोऊ भाई कहें, जो मैं यहां तांई सुन्यो, आगे तो मोकों निंद्रा आई। तब बड़े भाई ने कही, तुमकों निंद्रा आई तब हूंकारी कौन भर्यो ?**

ખાનપાન ક્યાં કર્યું હશે ? અમે જ્યાં સુધી જીવીએ ત્યાં સુધી એક વાર અમને દેખાઇ જાયા કરો. ત્યારે બન્ને ભાઇએ કહ્યું, અમને એક જગા કરી દો. તો અમે ઘરમાં રહીએ ત્યારે માતાપિતાએ કહ્યું, કે આ બધી જગા તમારી છે. જ્યાં ચાહો ત્યાં રહો ત્યારે બન્ને ભાઇએ કહ્યું, કે નહીં, અલગ કરી દો. તમારી જગામાં અમે નહીં આવીએ. અમે રહીએ ત્યાં તમે ન આવો, તો અમે ઘરમાં રહીએ. ત્યારે એક અલગ જગા બતાવી. પછી બન્ને ભાઇએ જગા ખાસા કરી શ્રીઠાકુરજીને પધરાવ્યા મળીને રસોઇ કરી ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લીધો પછી ભગવદ્વાર્તા કરે. મગન થઇ ગયા. સન્યાસ નિર્ણયનો ભાવ લીલાનો પણ ભાવ વિચાર કરી રાત્ર-દિવસ રસમાં મગન રહે. અને માતા-પિતા બહુ સુખ પામ્યા, કે પુત્ર ઘરમાં છે ન મળે તો શું થયું ?

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે બન્ને ભાઇ ભગવદ્વાર્તા કરે તેમાં ક્યારેય નાના ભાઇને નિંદ્રા આવી જાય અને મોટો ભાઇ રસમાં મગન થઇ કહે જાય ત્યારે શ્રીઠાકુરજી હુંકારો ભરે જાય. તે એથી. કે નાના ભાઇને નિંદ્રા આવી છે. જો હુંકારો નહીં ભરૂં તો આ મોટો ભાઇ નહીં કહે. તેથી શ્રીઠાકુરજી હુંકારો ભરે. પછી જ્યારે નાનો ભાઇ જાગે ત્યારે બન્ને ભાઇ કહે, જે મેં અહીં સુધી સાંભળ્યું. આગળ તો મને નિંદ્રા આવી.

तब छोटे भाई ने कही, मैं तो सोय गयो, मोकों खबरि नाहीं। तब बड़े भाई ने कही श्रीठाकुरजी ने हूंकारी भरी होयगी। तब दोऊ भाई प्रसन्न भये, जो-श्रीआचार्यजी की कानि तें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें। सो दोऊ भाई या प्रकार बालपने सों लौकिक वैदिक जाने नाहीं। संसार को ताप रंचक व्याप्यो नाहीं। ऐसे भगवदीय आनंददास विश्वंभरदास श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥४१॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो-श्रीठाकुरजी को विरह जाकों होई, ताकों वेगेहि प्रभु कृपा करें।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक ब्राह्मनी अड़ेल में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ब्राह्मनी लीला में ललिताजी की सखी है, इनको नाम 'शशीकला' है। सो अड़ेल में एक ब्राह्मन के घर प्रगटी। सो वर्ष नौ की भई, तब ब्याह अड़ेल में एक ब्राह्मन के घर भयो। सो रोगी रह्यो। तब यह ब्राह्मनी वर्ष पेंतालीस की भई, तब रोग को मारयो याको धनी मरयो। सो

ત્યારે મોટા ભાઇએ કહ્યું, તમને નિંદ્રા આવી તો હુંકારો કોણે ભર્યો ? ત્યારે નાનો ભાઇ કહે, હું તો સુઇ ગયો. મને ખબર નથી. ત્યારે મોટાભાઇએ કહ્યું, શ્રીઠાકુરજીએ હુંકારો ભર્યો હશે. ત્યારે બન્ને ભાઇ પ્રસન્ન થયા. જે શ્રીઆચાર્યજીની કાનિથી શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તે બન્ને ભાઇ આ પ્રકારે બાલપણથી લૌકિક-વૈદિક જાણતા નહીં. સંસારનો તાપ રંચકે વ્યાપ્યો નહીં. એવા ભગવદીય આનંદદાસ વિશ્વંભરદાસ શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ?

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં આ સિદ્ધાંત થયો કે શ્રીઠાકુરજીનો વિરહ જેને હોય તેને તરત જ પ્રભુ કૃપા કરે. વાર્તા ॥૪૧॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, એક બ્રાહ્મણી, અડેલમાં રહેતી તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ બ્રાહ્મણી લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'શશીકલા' છે. તે અડેલમાં એક બ્રાહ્મણના ઘરે પ્રકટી. તે વર્ષ નવની થઇ તેનું લગન અડેલમાં એક બ્રાહ્મણના ઘરે થયું. તે રોગી રહ્યો. જ્યારે એ બ્રાહ્મણી વર્ષ પીસતાલીસની થઇ ત્યારે રોગનો માર્યો એનો ધણી મર્યો. તે લૌકિક વિષય

लौकिक विषय आदि घर को सुख यह ब्राह्मनी जाने नाहीं। पाछें अकेली भई तब भगवद् इच्छा तें मन में आई, जो-अब श्रीआचार्यजी की सेवक होंऊ। सो जाइ के श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती करी, जो-महाराज! मोकों सरनि लीजिये। जन्म सगरो लौकिक पति की टहेल में बीत्यो, सोऊ मरि गयो। अब मैं आप की सरनि आई हों। यह कहि रोवन लागी। तब श्रीआचार्यजी कों दया आई। कहे, जा, यमुनाजी में न्हाई आव। तब वह ब्राह्मनी श्रीयमुनाजी में न्हाई आई। तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी के आगे बैठारि नाम निवेदन कराई कहें, अब तू भगवद् सेवा करि, जासों कृतार्थ होई। तब ब्राह्मनी ने कही, मोकों सेवा पधराय दीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि तोकों सेवा देयगें, आजु यहां रहि। पाछे आपु जूठनकी पातर धरी। सो वह प्रसाद ले, तहां रही। रात्र रही, पाछे प्रातःकाल भयो। तब वह ब्राह्मनी देह कृत्य करि श्रीयमुनाजी न्हाइ कें आई। इतने में एक ब्राह्मन दक्षिन सों आयो। सो वाने श्रीआचार्यजी कों एक श्रीभागवत की पुस्तक और एक लालजी को स्वरूप देके कह्यो, मैं कासी जाय सन्यास ग्रहन करूंगो, सो यह आपु राखो।

वार्ता-प्रसंग १—सो श्रीआचार्यजी उह श्रीलालजी के स्वरूप

આદિ ઘરનું સુખ આ બ્રાહ્મણીએ જાણ્યું નહીં. પછી એકલી થઇ ત્યારે ભગવદીચ્છાથી મનમાં એ આવ્યું, કે હવે શ્રીઆચાર્યજીની સેવક થાઉ. તે જઇને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનતી કરી કે મહારાજ! મને શરણે લો. જન્મ બધો લૌકિક પતિની ટહલમાં વીત્યો તે પણ મરી ગયો. હવે હુ આપની શરણે આવી છું એમ કહી રોવા લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દયા આવી. કહે જા, શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઇ આવ. ત્યારે તે બ્રાહ્મણી શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઇ આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તેને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની આગળ બેસાડી નામ-નિવેદન કરાવીને કહ્યુ, હવે તૂં ભગવદ્ સેવા કર, જેનાથી કૃતાર્થ થાય. ત્યારે બ્રાહ્મણીએ કહ્યું, મને સેવા પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કાલ તને સેવા દઇશુ, આજ અહીં રહે. પછી પોતે જુઠણની પાંતર ધરી. એ પ્રસાદ લઇ ત્યાં રહી. રાત્રે રહી પછી પ્રાતઃકાલ થયો. ત્યારે તે બ્રાહ્મણી દેહકૃત્ય કરી શ્રીયમુનાજી ન્હાઇને આવી. એટલામાં એક બ્રાહ્મણ દક્ષિણથી આવ્યો. તેણે શ્રીઆચાર્યજીને એક શ્રીભાગવતનું પુસ્તક અને એક લાલજીનું સ્વરૂપ દઇને કહ્યું, હું કાશી જઇ સંન્યાસ ગ્રહણ કરીશ તેથી આ આપ રાખો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—શ્રીઆચાર્યજીએ તે શ્રીલાલજીના સ્વરૂપને પંચામૃત સ્નાન

कों पंचामृत स्नान कराय, वह ब्राह्मनी के माथे सेवा पधराई, श्री-बालकृष्णजी नाम धरें। तब वह ब्राह्मनी श्रीआचार्यजी कों दण्डवत् करि विदा होई श्रीबालकृष्णजी कों पधराई प्रीति सों सेवा करन लागी। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें। सो वह ब्राह्मनी निष्कपट भोली बहोत हती और निष्कंचन, द्रव्य नाहीं। सो माटी के कुंजा श्रीठाकुरजी आगे भरिके राखे। रसोई में हू माटी के पात्र, और घरहू निपट छोटो। वही घर में रसोई, मन्दिर, श्रीठाकुरजी कों सामग्री। आचार क्रिया हू बहोत समझे नाहीं और नेत्रन सों हू थोरो दीसे। सो प्रीति पूर्वक सेवा करे। तातें श्रीआचार्यजी, श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहैं। यजमान के यहां ते कछू आवे, तामें निर्वाह करे। सो वैष्णव सब आपुस में चर्चा करन लागें। जो—यह ब्राह्मनी के माथें श्रीआचार्यजी ने भगवद् सेवा क्यों पधराई है? यह कछू आचार समुझत नाहीं, कछू द्रव्य नाहीं। सो हमारे माथे पधरावें तो हम भली भांति सेवा करें। या प्रकार आपुस में चर्चा करें। परन्तु श्रीआचार्यजी सों कहि न सके। पाछे एक दिन एक वैष्णव नें श्री-आचार्यजी सों बिनती करी, महाराज! वह ब्राह्मनी के द्रव्य को संकोच बहोत है, और आचार क्रिया में समुझत नाहीं, नेत्रन सों बहोत सूझत नाहीं। श्रीठाकुरजी काहू और वैष्णव के माथे पधराई

કરાવી એ બ્રાહ્મણીના માથે સેવા પધરાવી. શ્રીબાલકૃષ્ણજી નામ ધર્યું ત્યારે તે બ્રાહ્મણી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિદાય થઇ શ્રીબાલકૃષ્ણજીને પધરાવી પ્રીતિથી સેવા કરવા લાગી. શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તે બ્રાહ્મણી નિષ્કપટ ભોળી બહુ જ હતી. અને નિષ્કંચન, દ્રવ્ય નહીં. તે માટીના કુંજો શ્રીઠાકુરજી આગળ ભરીને રાખે. રસોઇમાં પણ માટીનાં પાત્ર, અને ઘર પણ એકદમ નાનું. તેજ ઘરમાં રસોઇ, મન્દિર, શ્રીઠાકુરજીની સામગ્રી. આચાર-ક્રિયા પણ ઘણી સમજે નહી અને નેત્રથી પણ થોડું દેખાય. તે પ્રીતિપૂર્વક સેવા કરે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન રહે. યજમાનને ત્યાંથી કંઇ મળે તેમા નિર્વાહ કરે. તે વૈષ્ણવ બધા આપસમાં ચર્ચા કરવા લાગ્યા, કે આ બ્રાહ્મણીના માથે શ્રીઆચાર્યજીએ ભગવદ્સેવા કેમ પધરાવી છે? આ કંઇ આચાર તો સમજતી નથી. કંઇ દ્રવ્ય નથી. તેથી અમારા માથે પધરાવે તો અમે સારી રીતે સેવા કરીએ. આ પ્રકારે આપસમાં ચર્ચા કરે પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીને કહી શકે નહીં. પછી એક દિવસ એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! તે બ્રાહ્મણીને દ્રવ્યનો સંકોચ ઘણો છે અને આચાર-ક્રિયામાં સમજતી નથી. આંખોથી ઘણું

देउ तो सेवा भली भांति सों होइ। तब श्रीआचार्यजी ने कही, आचार, क्रिया, द्रव्यसों, श्रीठाकुरजी प्रसन्न नाहीं, श्रीठाकुरजी में प्रीति चहिये। सो उह ब्राह्मनी की परम प्रीति है। जैसे उह ब्राह्मनी करत है तेसेही श्रीठाकुरजी मानि लेत हैं। तब वह वैष्णव चुप होइ रह्यो। पाछे श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी सों संध्यावन्दन करिकें पधारत हते। सो वह ब्राह्मनी के द्वार ह्वे जाइ निकसे। तब वैष्णव नें कही, महाराज! उह ब्राह्मनी को घर यही है। आपु पधारिके सेवा की रीति देखिये, वाकों दरसन दीजिये। तब श्रीआचार्यजी वह ब्राह्मनी के घर पधारे, ता समें वह ब्राह्मनी रोटी करत हती। सो श्रीआचार्यजी कों पधारे जाने नाहीं। सो रोटी करिके एक धरे, सो चुपरे, सो श्रीठाकुरजी रोटी उठाइ के आरोगें। सो वह ब्राह्मनी कों नेत्र सों दीसे नाहीं। तब रोटी हाथ सों टटोरे, सो पावे नाहीं। तब मुखसों कहै, रोटी मूसा विलाई ले जात हैं। हाथ धरती में ठोकि फेरि रोटी करे। तब श्रीआचार्यजी उह ब्राह्मनी सों कहैं, जो–तेरी रोटी श्रीठाकुरजी आरोगति हैं। मूसा बिलाई नाहीं है। तेरे बड़े भाग्य हैं। तब वह ब्राह्मनी कही, महाराज! आपु पधारे? मोकों दीसे नाहीं, तातें मैं जानी नाहीं। मेरो अपराध क्षमा करिये। और मेरे द्रव्य नाहीं।

સૂઝતું નથી. શ્રીઠાકુરજી કોઇ બીજા વૈષ્ણવના માથે પધરાવી દો તો સેવા સારી રીતથી થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આચાર–ક્રિયા-દ્રવ્યથી શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન નથી. શ્રીઠાકુરજીમાં પ્રીત જોઇએ. તે બ્રાહ્મણીની પરમ પ્રીતિ છે. જેમ તે બ્રાહ્મણી કરે છે તેમ શ્રીઠાકુરજી માની લે છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ચુપ થઇ ગયો. પછી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીયમુનાજી ઉપરથી સંધ્યાવંદન કરીને પધારતા હતા ત્યારે તે બ્રાહ્મણીના દ્વાર આગળ જઇ નિકળ્યા. ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યું, મહારાજ! તે બ્રાહ્મણીનું ઘર આજ છે. આપ પધારીને સેવાની રીત જુઓ. એને દર્શન આપો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તે બ્રાહ્મણીના ઘરે પધાર્યા. તે સમયે તે બ્રાહ્મણી રોટી કરતી હતી. તેથી શ્રીઆચાર્યજીને પધાર્યા જાણ્યા નહીં ને રોટી કરીને એક ધરે ને ચોપડે. તે શ્રીઠાકુરજી રોટલી ઉઠાવીને આરોગે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણીને નેત્રથી દેખાય નહીં. ત્યારે રોટી હાથથી ખોળે તે મળે નહીં. ત્યારે મુખથી કહે, રોટી ઉંદરા–બિલાડી લઇ જાય છે. હાથ ધરતીમાં ઠોકે ફરી રોટલી કરે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તે બ્રાહ્મણીને કહે, કે તારી રોટલી શ્રીઠાકુરજી આરોગે છે. ઉંદરા–બિલાડી નથી. તારાં મહાન ભાગ્ય છે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણીએ કહ્યું, મહારાજ! આપ પધારે? મને દેખાતું નથી તેથી મેં જાણ્યું નહીં. મારો અપરાધ ક્ષમા કરો અને મારે દ્રવ્ય નથી.

आपुकी कानि तें श्रीठाकुरजी आरोगे हैं। तब श्रीआचार्यजी कहे, तू जैसे करत है तेसेही श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइ मानत हैं। याही प्रकार सदा करियो। या प्रकार वह ब्राह्मनी पर प्रसन्न होई, समाधान करि श्रीआचार्यजी अपने घर पधारे। पाछें सगरे वैष्णव सों कहें श्रीठाकुरजी स्नेह के भूखे हैं। उह ब्राह्मनी के ऊपर प्रसन्न हैं। तब सब वैष्णव जाने, जो-यह ब्राह्मनी पर बड़ी कृपा है। सो श्रीठाकुरजी या प्रकार सगरी रोटी नित्य हाथ में उठाई लेते। तब वह ब्राह्मनी कहती मैं सगरी रोटी करी। परन्तु जानी न परी मूसा बिलाई लिये। तब श्रीठाकुरजी अरोगि के वह ब्राह्मनी कों सब रोटी देते। सो वह ब्राह्मनी सों नित्य श्रीठाकुरजी ऐसे ख्याल करते। परन्तु उह ब्राह्मनी को सरल स्वभाव बहोत, नित्य याही प्रकार कहैं। और श्रीठाकुरजी ऐसे प्रीति के बस भये, जो-बिना भोग धरे उह करत जाहीं आपु आरोगें, पाछे देइ। सो वह ब्राह्मनी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपा-पात्र हती। वार्ता ॥४२॥

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, निष्कपट भाव श्रीठाकुरजी कों बहोत प्रिय है। चतुराइ तें प्रसन्न नाहीं, ऐसे प्रीति के बस हैं।

* * *

આપની કાનિથી શ્રીઠાકુરજી આરોગે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ જેમ કરે છે તેમજ શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થઇ માને છે. તેજ પ્રકારે સદા કરજે. આ પ્રકારે તે બ્રાહ્મણી ઉપર પ્રસન્ન થઇ સમાધાન કરી શ્રીઆચાર્યજી પોતાને ઘરે પધાર્યા. પછી બધા વૈષ્ણવોને કહે, શ્રીઠાકુરજી સ્નેહના ભૂખ્યા છે. તે બ્રાહ્મણીના ઉપર પ્રસન્ન છે ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ જાણ્યું, કે આ બ્રાહ્મણી ઉપર મહાન કૃપા છે. તેથી શ્રીઠાકુરજી આ પ્રકારે બધી રોટલીઓ નિત્ય હાથમાં ઉઠાવી લે છે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણી કહેતી, મેં બધી રોટલી કરી પરંતુ જાણ્યું ન પડ્યું. ઉંદરાં-બિલાડાએ લીધી? ત્યારે શ્રીઠાકુરજી આરોગીને તે બ્રાહ્મણીને બધી રોટલી આપતા. તે બ્રાહ્મણી સાથે નિત્ય શ્રીઠાકુરજી એવી ગમ્મત કરતા. પરંતુ તે બ્રાહ્મણીનો સરળ સ્વભાવ ઘણો. નિત્ય એ પ્રકારે કહે અને શ્રીઠાકુરજી એવી પ્રીતિને વશ થયા, કે વિના ભોગ ધરે તે કરતી જાય અને આપ આરોગે પછી દે તેથી તે બ્રાહ્મણી એવી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર હતી. વાર્તા ॥૪૨॥

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સિદ્ધાન્ત થયો કે નિષ્કપટ ભાવ શ્રીઠાકુરજીને ઘણો પ્રિય છે. ચતુરાઇથી પ્રસન્ન નહી. એવી પ્રીતિના વશ છે. વૈ૦ ॥૪૨॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्रानी, सो प्रयाग में रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—अब जहां तहां नाम श्रीगोकुलनाथजी नाहीं कहें। सो माता पिता हीन नाम राखें, काहू को फकीरा, घसीटा। सो वैष्णव सों हीन नाम श्रीगोकुलनाथजी कहते नाहीं। तातें कोई वैष्णव को नाम प्रगट नाहीं किये।

यह क्षत्राणी लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी है। 'नीला' इनको नाम है। सो प्रयाग में एक क्षत्री के घर प्रगटी। सो क्षत्री वहोत द्रव्यवान हतो। सो काहू कों गिनतो नाहीं। सो प्रयाग में एक क्षत्री के घर वेटी दिये। सो गरीब घर हतो, तहां दिये। सो एक दिन जमाई कों बुलायो, सो वाको दोय घरी की ढील भई। सो सास सुसर सबन ने अहंकार करि जेंय लियो। वेटी सों वोले, तू जेंय ले। तब वेटी ने कही, जमाई कों बुलाये हो वे आवें तब मैं जेऊं। तब पिता ने कही, वह न आवेगो तो हम बैठे रहेंगे ? तू जेंवे तो जेंय, नाहीं तो और कों दे घालें। तब वेटी ने कही, मैं तो मेरे धनी के जेयें विना न जेऊँगी। तब मा-बाप क्रोध करि सब उठाई डारयो। पाछे जमाई आयो। सो सास ससुर कोई वासों

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, એક ક્ષત્રાણી તે પ્રયાગમાં રહેતી, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—હવે જ્યાં ત્યાં નામ શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યાં નથી. તે માતા-પિતા હીન નામ રાખે. કોઇનુ ફકીરા, ઘસીટા. તેથી વૈષ્ણવોને હીન નામથી શ્રીગોકુલનાથજી કહેતા નહીં. તેથી કોઇ વૈષ્ણવનું નામ પ્રકટ નથી કર્યું.

આ ક્ષત્રાણી લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની સખી છે. 'નીલા' એનું નામ છે. તે પ્રયાગમાં એક ક્ષત્રીને ત્યાં પ્રકટી. તે ક્ષત્રી બહુ જ દ્રવ્યપાત્ર હતો. ને કોઇને ગણતો નહી. તેણે પ્રયાગમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે બેટી આપી. તે ગરીબ ઘર હતું ત્યાં આપી. પછી એક દિવસ જમાઇને બોલાવ્યો. તેને બે ઘડીની ઢીલ થઇ. એટલે સાસુ-સસરા બધાએ અહંકાર કરીને જમી લીધું. બેટીને કહ્યું, તૂ જમી લે. ત્યારે બેટીએ કહ્યું, જમાઇને નોતર્યા છે એટલે તે આવશે ત્યારે હું તો જમીશ. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, તે નહીં આવે તો શું અમે બેસી રહીશું. તારે જમવું હોય તો જમ નહી તો બીજાને આપી દઇએ. ત્યારે બેટીએ કહ્યું, હું તો મારા ધણીના જમ્યા વિના નહીં જમું. ત્યારે મા-બાપે ક્રોધ કરીને બધું વાપરી નાખ્યું. પછી જમાઇ આવ્યો. ત્યારે સાસુ-સસરા કોઇ એનાથી બોલ્યું નહીં. ત્યારે સ્ત્રીએ પતિને કહ્યું, ટે

बोले नाहीं। तब स्त्री ने वह पति सों कही, जो–अब इनके घर जल पीनो धरम नाहीं है। सब बात पति सों कही। तब पति ने कही, तू मा–बाप के घर फेर कबहू आइवे को नाम न लेय, तो मैं तोकों घर ले चलों। तब इन कही, मोकों ले चलो, या जन्म में तो कबहू मा–बाप को नाम न लेउँगी। तब दोऊ अपने घर आय रसोई करि भोजन कियो। पाछे ससुर के मन में यह आई, जो–बेटी रांड होऊ तो सुखेन होऊ, परन्तु जमाई कों मारनो। सो कछू द्रव्य दे मनुष्य लगाइ राखे। सो एक दिन याके माता–पिता और बेटा, बहू मकर न्हाइवे प्रातही चले, सो मनुष्यन नें तीनों मारे। एक उह क्षत्री की बेटी कों छोड़े। पाछे यह बात हाकिम ने जानी, सो वाहू को घर लूटि लियो। पाछें वाके घर में आग लागी। तामें ये क्षत्राणी के माता–पिता कुटुम्ब सब जरे। इकली रहि गई। सो चरखा कांति के निर्वाह करे। सो एक दिन श्रीजमुनाजी न्हान गई, कार्तिक के दिन हते। सो दोय घड़ी पिछली रात्रि सों गई। तब न्हाइवे कों पेंठी, न्हाइ के कपरा पहरयो। कपरा पहरि के लोटा जल सों भरे। तब एक श्रीठाकुर लालजी को स्वरूप लोटा में आयो। सो याकों खबरि नाहीं। सो न्हाय के घर आई तुलसी के लोटा को जल चढ़ायो। तब तुलसी के पास श्रीठाकुरजी जाय बैठे, सो देखिके

હવે આમના ઘરમાં જલ પીવાનો ધર્મ નથી. બધી વાત પતિને કહી ત્યારે પતિએ કહ્યું, તૂ માબાપના ઘરે ફરી કદીય આવવાનું નામ ન લે તો હું તને ઘર લઇ ચાલું. ત્યારે એણે કહ્યું, મને લઇ ચાલો. આ જન્મમાં તો કયારેય મા-બાપનુ નામ નહી લઉં. ત્યારે બન્નેયે પોતાના ઘરે આવી રસોઇ કરી ભોજન કર્યું. પછી સાસરાના મનમાં એ આવ્યુ કે બેટી રાંડ થાય તો ભલે થાવ પરંતુ જમાઇને મારવો. એટલે કંઇ દ્રવ્ય આપી મારવાવાળા મનુષ્યોને પાછળ કર્યા. તે એક દિવસ એના માતા-પિતા અને બેટા-વહુ મકરસ્નાન માટે સવારે ચાલ્યા. તે મનુષ્યોએ ત્રણેને માર્યા. એક તે ક્ષત્રીની બેટીને છોડી. પછી એ વાત હાકેમે જાણી તેથી તેનુ પણ ઘર લૂટી લીધુ. પછી તેના ઘરમાં આગ લાગી. ત્યારે એ ક્ષત્રાણીનાં માતા-પિતા કુટુંબ બધાં બળ્યાં. એકલી આ રહી. તે ચરખા કાંતીને નિર્વાહ કરે. તે એક દિવસ જમનાજી ન્હાવાને ગઇ. કાર્તિકના દિવસ હતા. તે પાછલી બે ઘડી રાત્રિ ગઇ ત્યારે ન્હાવાને પેઠી. ન્હાઇને કપડા પહેરીને લોટાથી જલ ભર્યું. ત્યારે એક શ્રીઠાકુરજી લાલજીનું સ્વરૂપ લોટામાં આવ્યું તે એને ખબર પડી નહી. પછી ન્હાઇને ઘર આવી તુલસીને લોટાનું જલ ચઢાવ્યુ. ત્યારે તુલસીની પાસે શ્રીઠાકુરજી જઇ બેઠા

चक्रत भई। जो–ए स्वरूप! कहा इनकी इच्छा है? यह विचार करत तुलसी के पास बैठी। सो ऊह बेर देहकी सुधि न रही। ऐसी चिन्ता भई, जो–अब मैं कोन सों पूछों। कोई घर में है नाहीं। सो रसोई की सुधि भूलि गई। कबहू श्रीठाकुरजी कों हाथ में लेई, कबहू फेरि तुलसी में धरि देई। ऐसे विचार करत अर्द्ध रात्रि गई तब श्रीठाकुरजी कहें, तू–विचार कहा करत है? प्रातःकाल मोकों पधराइ श्रीआचार्यजी के पास जाई सेवकनी होइ, मेरी सेवा करि। मैं तो परि कृपा करन के लिये, तेरे माथे श्रीयमुनाजी सों तेरे लोटा में आयो हूँ। तब प्रसन्न होई सगरी रात्रि भूखी तुलसी पास बैठि रही। पाछे प्रातःकाल भयो तब, श्रीठाकुरजी कों ले श्रीआचार्यजी के पास अड़ेल जाइ दण्डवत करि, सगरी बात कहि विनती करी, जो–मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, तेरे बड़े भाग्य हैं, तेरे कुटुम्ब में तू देवी है सो श्रीठाकुरजी तेरे ऊपर कृपा किये। जो बिना सेवा किये पहले ही तोसों बोलें। पाछे यह क्षत्राणी कों नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराई, पाट बैठारि उह क्षत्राणी के माथे पधराये। और कहे, अब तू घर जा, मन लगाई के इनकी सेवा करियो। इनको नाम श्रीबालकृष्णजी हैं। सो बालक की नांई सनेह राखियो। तब उह क्षत्राणी

તે જોઇને ચકત થઇ. જો-આ સ્વરૂપ! શું એની ઇચ્છા છે! એમ વિચાર કરતાં તુલસીની પાસે બેઠી. તે સમયે દેહની સુધી ન રહી. એવી ચિંતા થઈ, કે હવે હું કોને પૂછું? કોઇ ઘરમાં છે નહીં. તે રસોઇનું સ્મરણ પણ ભૂલી ગઈ. કોઇ વાર શ્રીઠાકુરજીને હાથમાં લે કોઈ વાર ફરી તુલસીમાં ધરી દે. એમ વિચાર કરતાં અડધી રાત્રિ ગઈ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, તૂ વિચાર શુ કરે છે! પ્રાતઃકાલ મને પધરાવી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે જઈ સેવકની થઇ મારી સેવા કર. હું તારા ઉપર કૃપા કરવાને માટે તારા માથે શ્રીયમુનાજીમાંથી તારા લોટામાં આવ્યો છું. ત્યારે પ્રસન્ન થઈ બધી રાત્રિ ભૂખી તુલસી પાસે બેસી રહી. પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને લઈ શ્રીઆચાર્યજી પાસે અડેલ જઇ દંડવત કરી બધી વાત કહી વિનંતી કરી, કે મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારાં મોટા ભાગ્ય છે. તારા કુટુંબમાં તૂ દેવી છે તેથી શ્રીઠાકુરજીએ તારા ઉપર કૃપા કરી. જેથી સેવા કર્યા વિના પહેલાંજ તારાથી બોલ્યા. પછી તે ક્ષત્રાણીને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડી તે ક્ષત્રાણીને માથે પધરાવ્યા. અને કહે, હવે તૂ ઘર જા. મન લગાડીને એની સેવા કરજે. એનું નામ શ્રીબાલ-

श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि, श्रीठाकुरजी कों पधराई के प्रयाग में अपने घर आई। सो सेवा करन लागी।

वार्ता प्रसंग १—सो चरखा कांते, सूत बेचे, तामें तें दोई पैसा न्यारे धरें। यों करत जब कछू पैसा भेले भये, तब दिन दस बारह की बालभोग की सामग्री करि राखी। तब घी, खांड लाई मैंदा छानि के, लाडू करे। पाछे एक हांडी भरि मुंह बांधि के मन्दिर में छीका पर धर्‍यो। मन में बिचार्‍यो, जो–दिन दस–बारह कों तो बालभोग करन सों निश्चिन्त भई। सो राजभोग सों पहोंचि अनोसरि कराइ, महाप्रसाद ले चरखा कांतन बैठी। तब श्रीआचार्यजी की कानि तें, श्रीठाकुरजी सिंघासन पर सों उठि छीका पर ते लाडू की हांड़ी उतारे। पाछे सिंघासन पर लेके बैठे। हांड़ी में ते निकासिके लाडू आरोगन लागे। सो मन्दिर में हांड़ी को आहट होन लाग्यो। तब वह क्षत्रानी ने मन में विचार कियो, जो–मंदिर में हांड़ी को सब्द होत हैं, सो सामग्री की हांड़ी में मूसा बिलाई तो न लागी होई? यह विचारि के हरुवें सों मन्दिर कें किंवाड़ खोलि, भीतर जाई देखे तो श्रीठाकुरजी हांड़ी सिंघासन पर लिये बैठे हैं। वामें ते लाडू अरोगत हैं। यह देखिके वह क्षत्रानी छाती कूटन लागी। कहें, यह सामग्री

કૃષ્ણજી છે. એટલે બાલકની માફક સ્નેહ રાખજે. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી શ્રીઠાકુરજીને પધરાવીને પ્રયાગમાં પોતાના ઘરે આવીને સેવા કરવા લાગી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે ચરખા કાંતે. સૂત વેચે. તેમાંથી બે પૈસા અલગ ધરે. એમ કરતાં જ્યારે થોડા પૈસા ભેગા થયા ત્યારે દિવસ દશ-બારની બાલભોગની સામગ્રી કરી રાખી. ત્યારે ઘી ખાંડ લાવી મેંદા છાણીને લાડુ કરે. પછી એક હાંડી ભરી મોઢું બાંધીને મંદિરમાં છીંકા ઉપર ધર્યું. મનમાં વિચાર્યું, કે દિવસ દશ-બારની તો બાલભોગ કરવાથી નિશ્ચિન્ત થઇ. પછી રાજભોગથી પહોંચીને અનોસર કરાવી મહાપ્રસાદ લઇ ચરખા કાંતવા બેઠી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીની કાનિથી શ્રીઠાકુરજીએ સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી છીંકા ઉપરથી લાડુની હાંડી ઉતારી. પછી સિંહાસન ઉપર લઇને બેઠા. હાંડીમાંથી કાઢીને લાડુ આરોગવા લાગ્યા. ત્યારે મંદિરમાં હાંડીનો અવાજ થવા લાગ્યો. ત્યારે તે ક્ષત્રાણીએ મનમાં વિચાર કર્યો, કે મંદિરમાં હાંડીનો શબ્દ થાય છે, તે સામગ્રીની હાંડીમાં ઉંદરા-બિલાડી તો લાગી નહીં હોય? એમ વિચારીને ધીરેથી કમાડ ખોલી જુએ તો શ્રીઠાકુરજી હાંડીને સિંહાસન ઉપર લઇને બેઠા છે. તેમાંથી લાડુ આરોગે છે. એ જોઇને એ ક્ષત્રાણી છાતી કૂટવા લાગી. કહે, આ સામગ્રી તો આપના જ માટે કરી હતી.

तो आपुही के लिए करी हती, दिन दस-बारह की, सो आजु ही अरोगें सब? तब श्रीठाकुरजी कहें, तू इकठोरी करिके सामग्री निश्चिन्त है के बैठी, दस-बारह दिन कों। सो मोकों तो नित्य नई ताजी होई सो भावत है। बासी सामग्री कौन काम की? तब वह क्षत्रानी दंडवत् करि विनती किये, महाराज! मैं चूकी जो ऐसी करी, अब नित्य ताजी करूँगी, आलस्य न करूंगी। तब तें वह क्षत्रानी नित्य नई सामग्री करिकें धरन लागी। वार्ता ॥४३॥

भावप्रकाश—और श्रीठाकुरजी सगरी सामग्री यातें अरोगे, जो-नित्य सामग्री नइ करिवे की आरति रहै। जो-निश्चिन्त रहैंगी तो मनको निरोध न होइगो। मन जहां तहां भटकेगो, तातें अरोगे सब। और यह वैष्णव कों जताए, जो-बासी सामग्री काम की नांहीं। ताजी नित्य नौतन अति प्रिय है। और यह क्षत्रानी ने छाती यातें कूटी, जो-यह पुष्टिमार्ग की मर्यादा है, जो-वैष्णव भोग धरे सो श्रीठाकुरजी अरोगे। सो ठाकुरजी नें मर्यादा छोड़ी, सामग्री आपही अपने हाथ सों अरोगें। तो कहूं मोकों न छोड़े। मर्यादा जैसे छोड़े तेसे मोकों छोड़े, तो अनर्थ होइ। और यह भाव है, जो-श्रीठाकुरजी आपु लेके आरोगे तामें सेवा सिद्ध न भई। मोसों आज्ञा करते, मैं अपुने हाथ सों धरती, तो मेरे हाथ सों फल

દિવસ દશ-બારની તે આજે જ બધી આરોગ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, તૂ એકઠી કરીને સામગ્રી નિશ્ચિંત થઇને બેઠી દશ-બાર દિવસ માટે. તે મને તો નિત્ય નવી તાજી હોય તે રૂચે છે. વાસી સામગ્રી કોણ કામની? ત્યારે તે ક્ષત્રાણીએ દંડવત કરીને વિનંતી કરી, મહારાજ! હું ચૂકી કે એમ કર્યું. હવે નિત્ય તાજી કરીશ. આળસ નહીં કરૂં. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી નિત્ય નવી સામગ્રી કરીને ધરવાં લાગી. વાર્તા ॥૪૩॥

ભાવપ્રકાશ—અને શ્રીઠાકુરજી બધી સામગ્રી એથી આરોગ્યા કે નિત્ય સામગ્રી નવી કરવાની આરત રહે. જો (તે) નિશ્ચિંત રહેશે તો મનનો નિરોધ નહીં થાય. મન જ્યાં ત્યાં ભટકશે.. તેથી બધી આરોગ્યા અને વૈષ્ણવને એ જણાવ્યું, કે વાસી સામગ્રી કામની નહીં, તાજી નિત્ય નવીન અતિ પ્રિય છે. અને તે ક્ષત્રાણીએ છાતી એથી કૂટી, કે આ પુષ્ટિમાર્ગની મર્યાદા છે. જે વૈષ્ણવ ભોગ ધરે તે શ્રીઠાકુરજી આરોગે. તે શ્રીઠાકુરજીએ મર્યાદા છોડી. સામગ્રી પોતેજ પોતાના હાથથી આરોગ્યા. તેથી કદાચ મને ન છોડે. મર્યાદા જેમ છોડી તેમ મને છોડે તો અનર્થ થાય. અને આ ભાવ (પણ) છે કે શ્રીઠાકુરજી પોતે લઇને આરોગ્યા તેમાં સેવા સિદ્ધ ન થઇ. મને આજ્ઞા કરતા તો હું મારા હાથથી ધરતી તો મારા હાથથી ફલ

होतो। मेरी सेवा गई, सो सेवा के लिये छाती कूटी। काहे तें, जो सामग्री श्रीठाकुरजी के लिये करी हती, सो श्रीठाकुरजी आरोगे। तामें तो प्रसन्न होइ। सो छाती कूटी, सेवा गई ताके लिये। और यह वार्ता में यह जताये, जो–सामग्री श्रीठाकुरजी के लिये विचार के करिये, तो श्रीठाकुरजी प्रीति सों अरोगें, जो–और मनोरथ किये, जो–लोगन को समाधान करनो है, हमकों यह वस्तु बहोत भावत हैं, इत्यादिक भाव होइ, तो दृष्टि सों अङ्गीकार करें। परन्तु प्रसन्न होई के न अरोगें। तातें श्रीठाकुरजी के भाव सों सामग्री करनी। सो वह क्षत्रानी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय ही। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वैष्णव ॥४३॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, सास–बहू, सास को नाम गोरजा, और बहू को नाम समराई, क्षत्रानी सिंहनंदमें रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए दोऊ लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी चन्द्रभागा तिन की सखी हैं। इनको नाम लीला में ‘ नन्दा ’ सखी सो सास भई गोरजा। और ‘ वृन्दा ’ सखी बहू, याको नाम समराइ, सो ये सिंहनन्द में रहेती। इनकों सेवक श्रीआचार्यजी जा प्रकार किये सो वासुदेवदास छकड़ा की वार्ता में उपर कहि आये हैं।

થતું. મારી સેવા ગઇ. તે સેવાને માટે છાતી કૂટી, કેમકે જે સામગ્રી શ્રીઠાકુરજીને માટે કરી હતી તે શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા તેમાં તો પ્રસન્ન થઇ. તેથી છાતી કૂટી સેવા ગઇ તે માટે. વળી આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું, કે સામગ્રી શ્રીઠાકુરજીને માટે વિચારીને કરીએ તો શ્રીઠાકુરજી પ્રીતિથી આરોગે અને જો બીજો મનોરથ કરે, જો લોકોનું સમાધાન કરવું છે અમને આ વસ્તુ બહુ ભાવે છે ઇત્યાદિક ભાવ હોય તો દષ્ટિથી અંગીકાર કરે. પરંતુ પ્રસન્ન થઇને ન આરોગે. તેથી શ્રીઠાકુરજીના ભાવથી સામગ્રી કરવી. તે ક્ષત્રાણી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ ! વૈષ્ણવ ॥૪૩॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, સાસુ–વહુ, સાસુનું નામ ગોરજા, અને વહુનું નામ સમરાઇ, ક્ષત્રાણી સિંહનંદમાં રહેતાં, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ બન્ને લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની સખી ચન્દ્રભાગા તેમની સખી છે. તેમનું નામ લીલામાં ‘નંદા’ સખી, તે સાસુ થઇ ગોરજા, અને ‘વૃન્દા’ સખી વહુ એનું નામ સમરાઇ. તે સિંહનંદમાં રહેતી. એમને શ્રીઆચાર્યજીએ જે પ્રકારે સેવક કર્યાં તે વાસુદેવદાસની વાર્તામાં ઉપર કહી આવ્યા છીએ.

वार्ता प्रसंग १—सो श्रीठाकुरजी की सेवा करती। सो एक समय श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे। सो थानेस्वर के और सिंहनन्द के बीच सरस्वती नदी है। सो श्रीआचार्यजी सरस्वती को उल्लंघन न करते।

भावप्रकाश—काहे तें, सरस्वती के पति हैं, स्त्रीको उल्लंघन कैसे करें? तातें सिंहनन्द में आपु न जाते।

सो सिंहनन्द के वैष्णव थानेस्वर आइ, श्रीआचार्यजी को दरसन करते। सो श्रीआचार्यजी जब थानेस्वर पधारे, तब वधैया जाइकें सिंहनन्द में सगरे वैष्णवन कों बधाई दीनी, जो-श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे हैं। तब सास बहू सों कहे, जो-मैं श्रीआचार्यजी के दरसन कों थानेस्वर जात हों। तू श्रीठाकुरजी कों जगाइ पहले मंगला करि, पाछे शृंगार करियो। ता पाछे राजभोग धरिके श्रीठाकुरजी सों पहोंचियो। मैं श्रीआचार्यजी के दरसन करि आऊं, पाछे तू जइयो। तब बहू प्रसन्न भई, जो-आजु मैं श्रीठाकुरजी कों शृंगार करूंगी, भोग धरोंगी। सो सास सों कह्यो, तुम दरसन करि आवो, पाछे मैं जाऊंगी। तब सास श्रीआचार्यजी के दरसन करिवे थानेस्वर गई। (इहां) बहू वेगे न्हाइके श्रीठाकुरजी कों मंगलभोग धरि पाछें

વાર્તા પ્રસંગ ૧–તે શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરતી. પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વર પધાર્યા. થાનેશ્વર અને સિંહનંદની વચ્ચે સરસ્વતી નદી છે. શ્રીઆચાર્યજી તે સરસ્વતી નદીનું ઉલ્લંઘન કરતા ન હતા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સરસ્વતીના (આપ) પતિ છે (તેથી) સ્ત્રીનું ઉલ્લંઘન કેમ કરે? તેથી સિંહનંદમાં પોતે ન પધારતા.

તેથી સિંહનંદના વૈષ્ણવો થાનેશ્વર આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરતા. તેથી શ્રીઆચાર્યજી જ્યારે થાનેશ્વર પધાર્યા ત્યારે વધૈયાએ જઇને સિંહનંદમાં બધા વૈષ્ણવોને વધામણી દીધી, કે શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વર પધાર્યા છે. ત્યારે સાસુએ વહુને કહ્યું, કે હું શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને થાનેશ્વર જઉં છું. તૂ શ્રીઠાકુરજીને જગાડીને પહેલાં મંગલા કરી પછી શૃંગાર કરજે. તે પછી રાજભોગ ધરીને શ્રીઠાકુરજીથી પહોંચજે. હું શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરીને આવું પછી તૂ જજે. ત્યારે વહુ પ્રસન્ન થઇ કે આજ હું શ્રીઠાકુરજીને શૃંગાર કરીશ, ભોગ ધરીશ. પછી સાસુને કહ્યું, તમે દર્શન કરી આવો. પછી હું જઇશ. ત્યારે સાસુ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન કરવા થાનેશ્વર ગઇ. અહિં વહુએ જલ્દી ન્હાઇને શ્રીઠાકુરજીને મંગલ ભોગ ધરી પછી શૃંગાર કર્યો. પછી બધી રસોઇ કરી

श्रृंगार कियो। पाछे रसोई सगरी करि थार कटोरा साजिकें, श्रीठाकुरजी कें आगे भोग धर्‍यो। टेरा लगाइ बैठी। सगरे पात्र मांजि रसोई पोती, इतने समय भयो। सो भोग सराइवेकों जाइ देखे तो थार कटोरा, सगरी सामग्री सों ज्यों के त्यों भरे हैं। तब श्रीठाकुरजी सों कह्यो, महाराज! मेरी सास तो सिंहनन्द श्रीआचार्यजी के दरसन कों गई है, मैं तो कछू जानत नाहीं। मोसों सास ने कह्यो ता प्रकार कियौ। और तुम आरोगे नाहीं, अब मैं कहा करूं?

पाछे फेर बहूने जान्यो, जो-मैं कछू चूकी होऊंगी, तथा रसोई कछू छूई गई होइगी। तब फेरि पात्र सगरे मांजि, रसोई पोति, आछी भांति न्हाइ फेरि रसोई करी। फेरि थार कटोरा में सामग्री धरि श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‍यो। टेरा लगाई बाहर आई। रसोई के पात्र मांजि रसोई पोती सामग्री फेरि ज्यों की त्यों स्थापित देखि बहोत बिलबिलान लागी। कह्यो, महाराज मैंतो कछू जानत नाहीं, आपु क्यों नाहीं आरोगत? सो रुदन करत जाय और मनमें कह्यो, कछू भारी अपराध पर्‍यो मोसों, सो श्रीठाकुरजी नाहीं आरोगे। पाछे फेरि तीसरी बेर अपरस काढ़ि सावधान होइ, सगरी रसोई करी। थार कटोरा में धरि श्रीठाकुरजी कों भोग धर्‍यो। पाछे टेरा लगाई रसोई के पात्र साजि रसोई पोति के टेरा सरकाई भोग सरा-

---

થાર કટોરા સાજીને શ્રીઠાકુરજીની આગળ ભોગ ધર્યો. ટેરો લગાડીને બેઠી. બધાં પાત્ર માંજીને રસોઇ પોતી. એટલામાં સમય થયો ત્યારે ભોગ સરાવવાને જઇને જુએ તો થાર કટોરા, બધી સામગ્રીથી જેમ ને તેમ ભર્યા છે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને કહ્યું, મહારાજ! મારી સાસુતો સિંહનંદ શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શને ગઇ છે. હું તો કંઇ જાણતી નથી. મને સાસુએ કહ્યું તે પ્રકારે કર્યું અને તમે આરોગ્યા નહીં. હવે હું શું કરૂં? પછી ફરી વહુએ જાણ્યું કે હું કંઇ ચૂકી હઇશ તથા રસોઇ કંઇ છુઇ ગઇ હશે. ત્યારે ફરી પાત્ર બધાં માંજી રસોઇ પોતી સારી રીતે ન્હાઇ ફરી.રસોઇ કરી. ફરી થાર કટોરામાં સામગ્રી ધરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. ટેરો લગાડી બ્હાર આવી રસોઇનાં પાત્ર માંજી રસોઇ પોતી સામગ્રી ફરી જેમ ને તેમ સ્થાપિત જોઇ બહુજ દુઃખ પામવા લાગી. કહ્યું, મહારાજ! હું તો કંઇ જાણતી નથી."આપ કેમ નથી આરોગતા? પછી રૂદન કરતી જાય અને મનમાં કહ્યું, મારાથી કંઇ મોટો અપરાધ પડ્યો તેથી શ્રીઠાકુરજી નથી આરોગ્યા. પછી ફરી ત્રીજી વાર અપરસ કાઢી સાવધાન થઈ રસોઇ કરી થાર-કટોરામાં (સામગ્રી) ધરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. પછી ટેરો લગાડી રસોઇનાં પાત્ર સાજી રસોઇ પોતી ને

वन कों गई । सो सामग्री सब ज्यों की त्यों देखि महा दुःख भयो । जो-तीन वार मैं रसोई करी, सो तीनों बार श्रीठाकुरजी अरोगे नाहीं। यह दुःखी और श्रमित हू वहोत भई। सो मूर्छा आई, पछार खाइ कै भूमी में गिर परी । कंठ सूखि गयो, श्रम के मारे । तब श्रीठाकुरजी सिंघासन सों उठि अपनी झारी सों जल वाकों पिवायो । तब सावधान भई नेत्र खोले। सो वह वहू को दुःख श्रीठाकुरजी सों सह्यो न गयो ।

भावप्रकाश—सो वह सूधी हती, छल कपट कछु जानत नाहीं ।

तातें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइ के वहू सों कहें, तू खेद काहे कों करत है? तू तीन वार रसोई करी, सो मैं तीनों वार अरोग्यो हूं। तू सन्देह क्यों करत है ? तब वहू ने कही, मैं कैसे मानूं ? सामग्री तो सब ज्यों की त्यों धरी ही देखती । तब श्रीठाकुरजी कहें, जामें मेरो हस्त परे सो वस्तू घटे नाहीं । और तू नाहीं मानति तो काल्हि सवारे तेरे देखत अरोगूंगो। तातें अब तू महाप्रसाद ले, मैं तीनों वार अरोग्यो । तें कछु लियो नाहीं, तातें तू सिथिल है । तब बहू उठिके सखड़ी प्रसाद सब गायन कों खवाय दियो । आपु कछू न लियो। उही श्रीठाकुरजी ने झारी सों जल पान कराये, सोई लैकें रही।

ટેરા સરકાવી ભોગ સરાવવા ગઇ. ત્યારે બધી સામગ્રી જેમની તેમ જોઇ મહા દુ:ખ થયું. જે ત્રણ વાર મેં રસોઇ કરી તે ત્રણે વાર શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા નહીં. એ દુઃખી અને શ્રમિત પણ ઘણી થઈ. તે મૂર્છા આવી પછાડ ખાઇને ભૂમિમાં પડી ગઇ. શ્રમને લીધે કંઠ સુકાઇ ગયો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ સિંઘાસનથી ઉઠી પોતાની ઝારી વડે જલ એને પીવડાવ્યું. ત્યારે સાવધાન થઇ નેત્ર ખોલ્યાં. તે એ વહુનું દુઃખ શ્રીઠાકુરજીથી સહન ન થયું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે તે સરળ હતી, છળકપટ કંઈ જાણતી નહીં.

તેથી શ્રીઠાકુરજીએ પ્રસન્ન થઇને વહુને કહ્યું, તું ખેદ કેમ કરે છે? તેં ત્રણ વાર રસોઇ કરી તે હું ત્રણે વાર આરોગ્યો છું. તું સંદેહ કેમ કરે છે? ત્યારે વહુએ કહ્યું, હું કેમ માનું? સામગ્રી તો બધી જેમની તેમ ધરી જ જોતી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, જેમાં મારો હાથ પડે તે વસ્તુ ઘટે નહીં. અને તું ન માને તો કાલે સવારે તારા જોતાં આરોગીશ. તેથી હવે તુ મહાપ્રસાદ લે. હું ત્રણે વાર આરોગ્યો છું. તેં કંઇ લીધું નથી તેથી તું શિથિલ છે. ત્યારે વહુએ ઉઠીને સખડી બધી ગાયને ખવડાવી દીધી. પોતે કંઇ ન લીધું. એજ શ્રીઠાકુરજીએ ઝારીનું જલપાન કરાવ્યું તેજ લઇને રહી.

भावप्रकाश—सो यातें, जो–श्रीठाकुरजी साँच कहत हैं, के मोक योंही समाधान करत हैं ? सबेरे भोजन करते देखोंगी, तो महाप्रसाद लेऊंगी।

पाछे सवेरे की सामग्री बिनकै सिद्ध करि रात्रि कों सोइ रही। प्रातःकाल होत ही, देह कृत्य करि न्हाई कें मंगला शृंगार करि वेग ही रसोई सगरी सिद्ध करी। थार कटोरा में पधराइ, श्रीठाकुरजी के आगे भोग धरि, पाछे टेरा लगावन लागी। तब श्रीठाकुरजी कहें, अब तू टेरा काहे कों लगावत है ? पाछे तोकों विस्वास न होइगो। तातें तेरे आगे अरोगत हों। तब वह पास बैठी, श्रीठाकुरजी भली भांति सो सगरी सामग्री अरोगे। तब बहू सों हास्य विनोद करि सब रस को अनुभव करायो। पाछे श्रीदामोदरजी यह बात सगरी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो–मोकों समराई बहोत सुख देत है। सो बात श्रीआचार्यजी ने मन में राखी, जो–समराई आवेगी दरसन कों, तब पूछेंगे। पाछे श्रीठाकुरजी जा प्रकार समराई कह्यो, ताही प्रकार अरोगे। सगरी सामग्री ज्यों की त्यों भरी देखी। तब बहू के मनमें विस्वास आयो, जो–श्रीदामोदरजी काल्हि तीनों बार अरोगे, यामें संदेह नाहीं। पाछे अनोसर कराय बहू ने महाप्रसाद लियो। या प्रकार पांच दिन लों नित्य श्रीठाकुरजी कों आपुने आगे

ભાવપ્રકાશ—તે એ માટે કે શ્રીઠાકુરજી સાચુ કહે છે કે મારૂ એમ જ સમાધાન કરે છે? સવારે ભોજન કરતાં જોઈશ ત્યારે મહાપ્રસાદ લઈશ

પછી સવારે સામગ્રી વીણીને સિદ્ધ કરી રાત્રિએ સુઇ રહી. પ્રાત કાલ થતાં જ દેહકૃત્ય કરી ન્હાઇને મંગલા શૃંગાર કરી જલ્દી જ રસોઇ બધી સિદ્ધ કરી થાર-કટોરામાં પધરાવી શ્રીઠાકુરજીની આગળ ભોગ ધરી પછી ટેરો કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, હવે તું ટેરો શા માટે લગાડે છે? પછી તને વિશ્વાસ નહીં થાય. માટે તારા આગળ આરોગું છું. ત્યારે તે પાસે બેઠી. શ્રીઠાકુરજી સારી રીતિથી બધી સામગ્રી આરોગ્યા ત્યારે વહુથી હાસ્ય-વિનોદ કરી બધા રસનો અનુભવ કરાવ્યો પછી શ્રીદામોદરજીએ બધી વાત શ્રીઆચાર્યજીને કહી કે મને સમરાઇ બહુ સુખ આપે છે. તે વાત શ્રીઆચાર્યજીએ મનમા રાખી કે સમરાઇ દર્શને આવશે ત્યારે પૂછીશું. પછી શ્રીઠાકુરજી સમરાઇએ જે પ્રમાણે કહ્યું તેજ પ્રકારે આરોગ્યા. બધી સામગ્રી જેમની તેમ ભરી જોઇ. ત્યારે વહુના મનમાં વિશ્વાસ આવ્યો. કે શ્રીદામોદરજી કાલે ત્રણે વાર આરોગ્યા એમાં સંદેહ નહીં. પછી અનોસર કરાવી વહુએ મહાપ્રસાદ લીધો. એ પ્રકારે પાંચ દિવસ સુધી નિત્ય શ્રીઠાકુરજીને પોતાની આગળ આરોગાવ્યું. પછી સાસુએ

अरोगायो । पाछे सास श्रीआचार्यजी सों विदा मांग्यो । तब श्रीआचार्यजी कहें, बहू कों वेगि दरसन कों पठाइ दीजो । सो सास आइ बहू सों कह्यो, जो–अब तू श्रीआचार्यजी के दरसन करि आव। तब बहू श्रीआचार्यजी के पास आइ दण्डवत् कियो । ता समय श्रीआचार्यजी रसोई करत हते। तब बहू सों कह्यो, जा न्हाइ आव, रोटी वेलि दे। तब समराई न्हाइ के आई, रोटी वेलन लागी । तब श्रीआचार्यजी समराई सों कहें, तेरी बात श्रीठाकुरजी श्रीदामोदरजी ने सगरी हमारे आगे कही। तोकों सब रस को अनुभव जतायो। तेरे बड़े भाग्य है। तब समराई ने कही, जो–श्रीठाकुरजी के पेट में इतनी बात हू न ठहरी, तो उनसों कहा कहिए? आखरि बालक हैं। यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। और कहे, ऐसे वैष्णव कों तो घर जाई के दरसन देनो उचित है, परन्तु कहा करिये, सरस्वती उल्लंघनि नाहीं। पाछें दिन दोय समराई रहि श्रीठाकुरजी की सगरी बात श्रीआचार्यजी सों कहै। पाछें तीसरे दिन आज्ञा मांगी। तब श्रीआचार्यजी कहें ऐसे वैष्णव कों आज्ञा क्यों दीजिये? सदा इनकी वार्ता सुनिये। परन्तु श्रीठाकुरजी इनसों प्रसन्न हैं, इन बिना रहि नाहीं सकत, तातें विदा दिये। तब समराई दण्डवत् करि

શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, વહુને જલ્દી દર્શને મોકલી દેજે. પછી સાસુએ આવીને કહ્યું, કે હવે તૂ શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી આવ. ત્યારે વહુએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી દંડવત્ કર્યા. તે સમય શ્રીઆચાર્યજી રસોઇ કરતા હતા. ત્યારે વહુને કહ્યું, જા ન્હાઇ આવ. રોટી વેલી દે. ત્યારે સમરાઇ ન્હાઇને આવી રોટી વેલવા લાગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સમરાઇને કહે, તારી વાત શ્રીઠાકુરજી શ્રીદામોદરજીએ બધી અમારી આગળ કહી. તને બધા રસનો અનુભવ જણાવ્યો. તારાં મહાન ભાગ્ય છે. ત્યારે સમરાઇએ કહ્યું, કે શ્રીઠાકુરજીના પેટમાં એટલી વાત પણ ન ટકી? તો એમને શું કહીએ? આખર બાલક છે. એ વાત સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા અને કહે આવા વૈષ્ણવને તો ઘર જઇને દર્શન દેવાં ઉચિત છે પરંતુ શું કરીએ સરસ્વતી ઉલંઘવી નહીં. પછી દિવસ બે રહી સમરાઇએ શ્રીઠાકુરજીની બધી વાત શ્રીઆચાર્યજીને કહી. પછી ત્રીજા દિવસે આજ્ઞા માંગી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે આવા વૈષ્ણવને આજ્ઞા કેમ આપીએ? સદા એની વાર્તા સાંભળીએ. પરંતુ શ્રીઠાકુરજી એનાથી પ્રસન્ન છે. એના વિના રહી શકતા નથી તેથી વિદાય દીધી. ત્યારે સમરાઇએ દંડવત કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! આ

भावप्रकाश—सो यातें, जो–श्रीठाकुरजी साँच
योंही समाधान करत हैं ? सवेरे भोजन करते देखोंगी, तो
पाछे सवेरे की सामग्री बिनकें सिद्ध करि
प्रातःकाल होत ही, देह कृत्य करि न्हाई कें मंगर
ही रसोई सगरी सिद्ध करी । थार कटोरा में प
के आगे भोग धरि, पाछे टेरा लगावन लागी
कहें, अब तू टेरा काहे कों लगावत है ? पा
होइगो । तातें तेरे आगे अरोगत हों । तब ठा
कुरजी भली भांति सो सगरी सामग्री अरोगे
विनोद करि सब रस को अनुभव करायो ।
बात सगरी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो–मे
देत है । सो बात श्रीआचार्यजी ने मन में रा
दरसन कों, तब पूछेंगे । पाछे श्रीठाकुरजी
ताही प्रकार अरोगे । सगरी सामग्री ज्यों
बहू के मनमें विस्वास आयो, जो–श्रीदार
अरोगे, यामें संदेह नाहीं । पाछे अनोस
लियो । या प्रकार पांच दिन लों नित्य

ભાવપ્રકાશ—તે એ માટે કે શ્રીઠાકુ
સમાધાન કરે છે? સવારે ભોજન કરતાં જોઈશ
પછી સવારે સામગ્રી વીણીને સિદ્ધ કરી
દેહકૃત્ય કરી ન્હાઇને મંગલા શૃંગાર કરી જલ્દી
રામાં પધરાવી શ્રીઠાકુરજીની આગળ ભોગ ધ
કુરજી કહે, હવે તું ટેરો શા માટે લગાડે છે ?
આગળ આરોગું છું. ત્યારે તે પાસે બેઠી. શ્રી
આરોગ્યા ત્યારે વહુથી હાસ્ય-વિનોદ કરી
દામોદરજીએ બધી વાત શ્રીઆચાર્યજીને કહ
વાત શ્રીઆચાર્યજીએ મનમાં રાખી કે સમ
ઠાકુરજી સમરાઇએ જે પ્રમાણે કહ્યું તેજ પ્ર
ભરી જોઇ. ત્યારે વહુના મનમાં વિશ્વ
આરોગ્યા એમાં સંદેહ નહીં. પછી અ
પ્રકારે પાંચ દિવસ સુધી નિત્ય શ્રીઠાકુરજીને

सास बहू ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के सेवक कृपापात्र हे। इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये ? वार्ता ॥४४॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो–निष्कपट प्रीति श्रीठाकुरजी कों प्रिय है। वैष्णव ॥४४॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमिनीजी की खवासी करती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह कृष्णादासी श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी है। 'व्रजमंगला' लीला में इनको नाम है। सो ए पूर्व में पटना तें दोइ कोस पर एक गाम है। तहाँ गौड़ ब्राह्मन के घर जनमी। सो वर्ष पांच की भई, सो एक दिन माता के संग गंगा–स्नान कों गई। तहां एक नाव पारतें आवत हती। सो नाव काष्ठ को भरयो हतो, और मल्लाह हते। सो वर्षा ऋतु हती, सो नाव फाटी, मल्लाह तरि कें पार आये। काष्ठ सगरो बहि चल्यो। सो कृष्णो तीर ठाड़ी रही। सो कराड़ो टूटि के गिरयो गंगाजी में। सो कृष्णो और कृष्णो की माता दोऊ गिरी। सो माता की देह छूटि गई। और कृष्णो बालक, सो काष्ठ हाथ में आई

નિત્ય શ્રીદામોદરજીને આરોગાવતી. શ્રીઠાકુરજી સદા પ્રસન્ન રહેતા. તે સાસુ વહુ એવાં ભગવદીય શ્રીઆચાર્યજીનાં સેવક કૃપાપાત્ર હતાં. એમની વાર્તા ક્યા સુધી કહીએ.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું, કે નિષ્કપટ પ્રીતિ શ્રીઠાકુરજીને પ્રિય છે. વૈષ્ણવ ॥૪૪॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, કૃષ્ણાદાસી શ્રીરુકમણીજીની ખવાસી કરતી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—આ કૃષ્ણાદાસી શ્રીસ્વામિનીજીની અંતરંગિની સખી છે. 'વ્રજમંગલા' લીલામાં એમનું નામ છે. એ પૂર્વમાં પટણાથી બે કોસ ઉપર એક ગામ છે ત્યાં ગૌડ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મી. તે વર્ષ પાંચની થઈ. પછી એક દિવસ માતાની સગે ગંગા–સ્નાને ગઈ. ત્યાં એક નાવ પારથી આવતી હતી. તે નાવ કાષ્ઠની ભરી હતી અને નાવિક હતા. વર્ષા ઋતુ હતી તે નાવ ફાટી. નાવિક તરીને પાર આવ્યા. કાષ્ઠ બધું વહી ચાલ્યું. કૃષ્ણા તીરે ઉભી હતી તે ભેખડ તુટીને પડી, ગંગાજીમાં. તે કૃષ્ણો અને કૃષ્ણાની માતા બન્ને પડી. ત્યારે માતાની દેહ છુટી ગઈ અને કૃષ્ણો બાલક તેના હાથમાં કાષ્ઠ આવી ગયું. તે કાષ્ઠ પાંચ

बिनती किये, महाराज ! यह सब आपु की कृपातें है । नाहीं तो कहां श्रीठाकुरजी कहां हम संसारी जीव ? आपु की का'नि तें श्रीठाकुरजी हम सरीखी पर कृपा करत हैं। यह कहिकें चली। सो बहू की दैन्यता सुनि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। जो-ऐसे वैष्णव दुर्लभ हैं। श्रीठाकुरजी जिनसों बोलें, तिनही कों ऐसी दैन्यता होइ। पाछे बहू घर आई। सास तें सब श्रीआचार्यजी के समाचार कहे। जो-बड़ी कृपा अपने ऊपर है। इतने बहू की रंच आंख लागी, नींद आई। श्रमित आइ हती। सो इतने में सास भोग धरि बासन मांजन लागी। तब बहू चोंकि परी। श्रीठाकुरजी कैसे अरोगते होंयगे ? सो नहाई के मन्दिर में गई। श्रीठाकुरजी कों फेरि अपने आगे अरोगायो। तब सास सों श्रीठाकुरजी ने जताई, जो-रसोई उपर की टहेल तू करियो, और शृंगार बहू करेगी। भोगहू बहू धरेगी, बहू के हाथसों मैं भली भांति सों अरोगत हों। तब तें सास ने बहू सों कह्यो, श्रीठाकुरजी तेरे उपर बहोत प्रसन्न हैं, तातें शृंगार तू करियो, भोग हू सगरो तू धरियो। मैं रसोई करोंगी। और उपर की टहेल करोंगी ।

सो बहू नित्य नौतन शृङ्गार करती, सामग्री बैठिकें नित्य श्रीदामोदरजी कों अरोगावती । श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न रहते । सो

બધું આપની કૃપાથી છે. નહીં તો ક્યાં શ્રીઠાકુરજી? ક્યાં અમે સંસારી જીવ? આપની કા'નિથી શ્રીઠાકુરજી અમારા જેવા ઉપર કૃપા કરે છે. એમ કહીને ચાલી. તે વહુની દીનતા સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા કે, આવા વૈષ્ણવ દુર્લભ છે શ્રીઠાકુરજી જેનાથી બોલે તેને જ આવી દીનતા હોય.

પછી વહુ ઘર આવી. શ્રીઆચાર્યજીના બધા સમાચાર સાસુને કહ્યા કે આપણા ઉપર બહુ કૃપા છે. એટલામાં વહુની રંચક આંખ લાગી. નિંદ્રા આવી. શ્રમિત આવી હતી. એટલામાં સાસુ ભોગ ધરી વાસણ માંજવા લાગી. ત્યારે વહુ ચોંકી પડી. શ્રીઠાકુરજી કેવી રીતે આરોગતા હશે? પછી ન્હાઇને મંદિરમાં ગઇ. શ્રીઠાકુરજીને ફરી પોતાની આગળ આરોગાવ્યા. ત્યારે સાસુને શ્રીઠાકુરજીએ જણાવ્યું, કે રસોઇ ઉપરની ટહલ તું કર અને શૃંગાર વહુ કરશે. ભોગ પણ વહુ ધરશે વહુના હાથથી હું સારી રીતથી આરોગું છું. ત્યારે સાસુએ વહુને કહ્યું, શ્રીઠાકુરજી તારા ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન છે. માટે શૃંગાર તું કરજે. ભોગ પણ બધો તું ધરજે. હું રસોઇ કરીશ અને ઉપરની ટહલ કરીશ. પછી વહુ નિત્ય નૌતન શૃંગાર કરતી. સામગ્રી (પાસે) બેસીને

सास बहू ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के सेवक कृपापात्र हे। इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये ? वार्ता ॥४४॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो–निष्कपट प्रीति श्रीठाकुरजी कों प्रिय है। वैष्णव ॥४४॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमिनीजी की खवासी करती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह कृष्णादासी श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी है। 'व्रजमंगला' लीला में इनको नाम है। सो ए पूर्व में पटना तें दोइ कोस पर एक गाम है। तहाँ गौड़ ब्राह्मन के घर जनमी। सो वर्ष पांच की भई, सो एक दिन माता के संग गंगा–स्नान कों गई। तहां एक नाव पारतें आवत हती। सो नाव काष्ठ को भरयो हतो, और मल्लाह हते। सो बर्षा ऋतु हती, सो नाव फाटी, मल्लाह तरि कें पार आये। काष्ठ सगरो बहि चल्यो। सो कृष्णो तीर ठाड़ी रही। सो कराड़ो टूटि के गिरयो गंगाजी में। सो कृष्णो और कृष्णो की माता दोऊ गिरी। सो माता की देह छूटि गई। और कृष्णो बालक, सो काष्ठ हाथ में आई

નિત્ય શ્રીદામોદરજીને આરોગાવતી. શ્રીઠાકુરજી સદા પ્રસન્ન રહેતા. તે સાસુ વહુ એવાં ભગવદીય શ્રીઆચાર્યજીનાં સેવક કૃપાપાત્ર હતાં. એમની વાર્તા ક્યા સુધી કહીએ.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યુ, કે નિષ્કપટ પ્રીતિ શ્રીઠાકુરજીને પ્રિય છે. વૈષ્ણવ ॥૪૪॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, કૃષ્ણાદાસી શ્રીરુકમણીજીની ખવાસી કરતી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—આ કૃષ્ણાદાસી શ્રીસ્વામિનીજીની અંતરગિની સખી છે. 'વ્રજમગલા' લીલામાં એમનુ નામ છે. એ પૂર્વમાં પટણાથી બે કોસ ઉપર એક ગામ છે ત્યાં ગોડ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મી. તે વર્ષ પાંચની થઈ. પછી એક દિવસ માતાની સગે ગંગા–સ્નાને ગઈ. ત્યાં એક નાવ પારથી આવતી હતી તે નાવ કાષ્ઠની ભરી હતી અને નાવિક હતા. વર્ષા ઋતુ હતી તે નાવ ફાટી નાવિક તરીને પાર આવ્યા. કાષ્ઠ બધું વહી ચાલ્યું. કૃષ્ણા તીરે ઉભી હતી તે ભેખડ તુટીને પડી, ગગાજીમાં. તે કૃષ્ણો અને કૃષ્ણાની માતા બન્ને પડી. ત્યારે માતાની દેહ છુટી ગઈ અને કૃષ્ણો બાલક તેના હાથમાં કાષ્ઠ આવી ગયુ. તે કાષ્ઠ પાંચ

बिनती किये, महाराज! यह सब आपु की कृपातें है। नाहीं तो कहां श्रीठाकुरजी कहां हम संसारी जीव? आपु की का'नि तें श्रीठाकुरजी हम सरीखी पर कृपा करत हैं। यह कहिकें चली। सो बहू की दैन्यता सुनि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। जो-ऐसे वैष्णव दुर्लभ हैं। श्रीठाकुरजी जिनसों बोलें, तिनही कों ऐसी दैन्यता होइ। पाछे बहू घर आई। सास तें सब श्रीआचार्यजी के समाचार कहे। जो-बड़ी कृपा अपने ऊपर है। इतने बहू की रंच आंख लागी, नींद आई। श्रमित आइ हती। सो इतने में सास भोग धरि बासन मांजन लागी। तब बहू चोंकि परी। श्रीठाकुरजी कैसे अरोगते होंयगे? सो नहाई के मन्दिर में गई। श्रीठाकुरजी कों फेरि अपने आगे अरोगायो। तब सास सों श्रीठाकुरजी ने जताई, जो-रसोई उपर की टहेल तू करियो, और श्रृंगार बहू करेगी। भोगहू बहू धरेगी, बहू के हाथसों मैं भली भांति सों अरोगत हों। तब तें सास ने बहू सों कह्यो, श्रीठाकुरजी तेरे उपर बहोत प्रसन्न हैं, तातें श्रृंगार तू करियो, भोग हू सगरो तू धरियो। मैं रसोई करोंगी। और उपर की टहेल करोंगी।

सो बहू नित्य नौतन श्रृङ्गार करती, सामग्री बैठिकें नित्य श्रीदामोदरजी कों अरोगावती। श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न रहते। सो

બધું આપની કૃપાથી છે. નહીં તો ક્યાં શ્રીઠાકુરજી? ક્યાં અમે સંસારી જીવ? આપની કા'નિથી શ્રીઠાકુરજી અમારા જેવા ઉપર કૃપા કરે છે. એમ કહીને ચાલી. તે વહુની દીનતા સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. કે, આવા વૈષ્ણવ દુર્લભ છે શ્રીઠાકુરજી જેનાથી બોલે તેને જ આવી દીનતા હોય.

પછી વહુ ઘર આવી. શ્રીઆચાર્યજીના બધા સમાચાર સાસુને કહ્યા કે આપણા ઉપર બહુ કૃપા છે. એટલામાં વહુની રંચક આંખ લાગી. નિંદ્રા આવી. શ્રમિત આવી હતી. એટલામાં સાસુ ભોગ ધરી વાસણ માંજવા લાગી. ત્યારે વહુ ચોંકી પડી. શ્રીઠાકુરજી કેવી રીતે આરોગતા હશે? પછી ન્હાઇને મંદિરમાં ગઇ. શ્રીઠાકુરજીને ફરી પોતાની આગળ આરોગાવ્યા. ત્યારે સાસુને શ્રીઠાકુરજીએ જણાવ્યું, કે રસોઇ ઉપરની ટહલ તુ કર અને શૃંગાર વહુ કરશે. ભોગ પણ વહુ ધરશે વહુના હાથથી હું સારી રીતથી આરોગું છું. ત્યારે સાસુએ વહુને કહ્યું, શ્રીઠાકુરજી તારા ઉપર બહુ જ પ્રસન્ન છે. માટે શૃંગાર તૂ કરજે. ભોગ પણ બધો તૂ ધરજે. હું રસોઇ કરીશ અને ઉપરની ટહલ કરીશ. પછી વહુ નિત્ય નૌતન શૃંગાર કરતી. સામગ્રી (પાસે) બેસીને

गयो । सो काष्ठ कोस पांच जाय लग्यो । तहां श्रीआचार्यजी संध्या-वंदन करत हते । तब छोरी यह रोई । तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो यह कौन बालक है ? देखो तो, यह बहि आई है। सो याकों गाम में पहोंचती करो। पटना इहां ते पांच कोस है । तब कृष्णदास वह छोरी की बांह पकरि श्रीआचार्यजी पास ले आये । तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानि नाम सुनाय निवेदन करायो । पाछे कहें, कोई वैष्णव पास महाप्रसाद होय तो याकों खवावो । तब कृष्णदास नें प्रसाद खवायो । पाछे श्रीआचार्यजी कहें, अपने पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारनो है, तातें कोई मनुष्य करि लावो, याकों पटना पहोंचावो । तब कृष्णदास एक मनुष्य करि लाये। वाकों एक रुपैया दिये, सो उह छोरी कों गोद में लियो। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास सों कहें, या छोरी कों पटना में ठिकानो पार तू अइयो । तहां तांई हम इहां बैठे हैं । सो कृष्णदास संग चले, सो पटना आये। सो हरिवंस पाठक मिले, कासी रहते । पटना में व्यौहार कों आवते । तब हरिवंस पाठक सों कहे, यह छोरी कों ठिकाने तुम पारि दीजो, श्रीआचार्यजी मेरे लिये बैठि रहे हैं, ताते मैं जात हों । तब हरिवंस पाठक वह छोरी कों महाप्रसाद लिवाये । कृष्ण-

---

કોસ દૂર જઈને લાગ્યુ. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવંદન કરતા હતા. ત્યારે આ છોકરી રોઈ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ આ કોણ બાલક છે ? જુઓ તો આ વહીને આવી છે. તેથી આને ગામમાં પહોંચતી કરો. પટણા અહીંથી પાંચ કોસ (દસ માઇલ) છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ તે છોકરીની બાંહ પકડીને શ્રીઆચાર્યજી પાસે લઈ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દૈવી જાણીને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી કહે, કોઈ વૈષ્ણવ પાસે મહાપ્રસાદ હોય તો આને ખવડાવો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે મહાપ્રસાદ ખવડાવ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી કહે આપણે પુરૂષોત્તમપુરી શ્રીજગન્નાથરાયજીના દર્શને પધારવુ છે તેથી કોઈ મનુષ્ય કરી લાવો આને પટણા પહોંચાડો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ એક મનુષ્ય કરી લાવ્યા તેને એક રૂપૈયો આપ્યો. ત્યારે તેણે તે છોકરીને ગોદીમાં લીધી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને કહે, આ છોકરીનુ પટણામાં ઠેકાણુ પાડીને આવજે. ત્યાં સુધી અમે અહીં બેઠા છીએ. પછી કૃષ્ણદાસ સાથે ગયા તે પટણા આવ્યા. ત્યાં હરિવંશ પાઠક મળ્યા તે કાશી રહેતા. પટણામાં વહેવારને માટે આવતા. ત્યારે હરિવંશ પાઠકને કહ્યું, આ છોકરીનુ ઠેકાણુ તમે પાડી દેજો. શ્રીઆચાર્યજી મારા માટે બિરાજી રહ્યા છે. તેથી હુ જાઉ છું. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે તે છોકરીને પ્રસાદ લેવડાવ્યો. કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવ્યા.

दास श्रीआचार्यजी महाप्रभु पास आये। पाछे आप पुरुषोत्तमपुरी कों पधारे, पाछे हरिवंस पाठक ने दिन सातलों सगरे गाम में ठिकानो पारे। तब एकने बतायो, फलाने गाम के ब्राह्मण की बेटी हैं, गौड़ ब्राह्मण है। तब वाके घर कहेवाये, सो पिता आयो। कह्यो, बेटी चलि, माता तेरी मरी तू कैसे बची? तब बेटी कों नाम समर्पन भयो, दैवी जीव, सो बुद्धि निर्मल ह्वे गई। सो कह्यो, तिहारे लेखे तो मेरी मा मरी और मैं मरी। काहेतें, मैं श्रीआचार्यजी की सेवकनी भई हों, सो वैष्णव विना और के हाथ को पानी न पिऊंगी। तव पिताने हरिवंस पाठक सों कह्यो, तुम वैष्णव हो, जैसे हमारी बेटी तैसे यह तिहारी बेटी। तुम घर में राखो दोई चारि वर्ष पीछे याको व्याह करि दीजो। हमारे हाथ को यह जल पीवन नाहीं कहत है, और हमारे पास कछु पैसा हू नाहीं हैं, सो याको व्याह कहां तें करेंगे? तब हरिवंस पाठक कहैं, आछो, भगवद् इच्छा। श्रीआचार्यजी के सेवक कों कैसे काढ़ि दीजे? परन्तु कासी में हमारो घर है, तहां स्त्रीन में रहेगी। तब वाके पिताने कही, आछो। यह कहिकें वह छोरी को पिता घर गयो। पाछे हरिवंस पाठक कासी आये। सो वह छोरी कूं ले आये। पीछे वर्ष दस की भई। तब सगाई ढूंढे। सो कोई ब्राह्मण करे नाहीं, जो-हम याकों क्यों व्याहैं? याकी जात

પછી પોતે પુરૂષોત્તમપુરી પધાર્યા. પછી હરિવંશ પાઠકે દિવસ સાત સુધી આખા ગામમાં ઠેકાણું પાડયુ ત્યારે એકે બતાવ્યું કે, ફલાણા ગામના બ્રાહ્મણની બેટી છે ગૌડ બ્રાહ્મણ છે. ત્યારે એના ઘરે કહેવડાવ્યુ. તેથી પિતા આવ્યો. કહ્યું, બેટી ચાલ. માતા તારી મરી તૂ કેવી રીતે બચી? ત્યારે બેટીને નામ–સમર્પણ થયું (હતું) દૈવી જીવ તેથી બુદ્ધિ નિર્મલ થઈ ગઈ એટલે કહ્યુ, તમારા મનથી તો મારી મા મરી અને હું એ મરી, કેમકે હું શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની થઈ છું. તેથી વૈષ્ણવ વિના બીજાના હાથનુ પાણી નહીં પીઉં. ત્યારે પિતાએ હરિવંશ પાઠકને કહ્યુ, તમે વૈષ્ણવ છો. જેવી અમારી બેટી તેવી આ તમારી બેટી. તમે ઘરમાં રાખો.-બે ચાર વર્ષ પછી એનું લગ્ન કરી દેજો. અમારા હાથનુ આ જલ પીવાનું ના કહે છે અને અમારી પાસે કંઇ પૈસા પણ નથી. તેથી એનું લગ્ન ક્યાંથી કરીશું? ત્યારે હરિવંશ પાઠક કહે, ભલે, ભગવદ્ ઈચ્છા. શ્રીઆચાર્યજીના સેવકને કેવી રીતે કાઢી મૂકાય? પરંતુ કાશીમાં અમારૂં ઘર છે ત્યાં સ્ત્રીઓમાં રહેશે. ત્યારે એના પિતાએ કહ્યુ, ભલે. એમ કહી તે છોકરીનો પિતા ઘર ગયો. પછી હરિવંશ પાઠક કાશી આવ્યા. તે છોકરીને લઈ આવ્યા. પછી તે વર્ષ દશની થઈ ત્યારે સગાઈ

को, खान पान को, ठिकानो नाहीं। और यह छोरी सबकों पुकारि के कहति है, जो-श्रीआचार्यजी को सेवक होई ताके हाथ सों खान पान करोंगी। सो याकों कौन विवाहै ? तब हरिवंस पाठक वह छोरी सों पूछे, जो-अब हमारे घर में तेरो निर्वाह नाहीं। वर्ष दोय पाछे तेरी अवस्था तरुन होयगी, तब लोग निन्दा करेंगे। जो-कुंवारी कन्या घरमें राखी है। सो तोकों अब कहा कर्तव्य है ? तब कृष्णो ने कही, मोकों अडेल में श्रीआचार्यजी के घर पठाय देउ, तहाँ मैं रहूँगी। तब हरिवंस पाठक कृष्णो कों संग ले अड़ेल आय श्रीगुसांईजी कों दण्डवत करि, सगरी बात कृष्णो की कही। तब श्रीगुसांईजी कही, कृष्णो हमारी है, सो वहूजी पास रहैगी। तब कृष्णो ने श्रीगुसांईजी कों दण्डवत करि विनती कियो, महाराज ! मैं तो आप की दासी हों। श्रीआचार्यजी मेरो हाथ पकरे हैं। सो आपुके चरणारविंद बिना मेरो कहूँ ठिकानो नाहीं। तब श्रीगुसांईजी कृष्णो की दैन्यता देखि वहोत प्रसन्न होय के कहें, हमारे प्रागट्य तो तुम सरीखे वैष्णव के लिये है। ताते यह घर तिहारो है सुखेन रहो। तब कृष्णो श्रीरुकिमिनी बहूजी की खवासी में रही। हरिवंस पाठक श्रीगुसांईजी सों विदा होई के कासी आये। कृष्णो सगरे

ખોળે. તે કોઈ બ્રાહ્મણ કરે નહીં, કેમ જે અમે એને કેમ વિવાહીએ ? એની જાતનું, ખાન–પાનનુ ઠેકાણું નહી. વળી આ છોકરી બધાને પુકારીને કહે છે, કે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હોય તેના હાથથી ખાનપાન કરીશ. તેથી એને કોણ વિવાહે ? ત્યારે હરિવંશ પાઠક તે છોકરીને પૂછે, કે હવે અમારા ઘરમાં તારો નિર્વાહ થશે નહી. બે વર્ષ પછી તારી અવસ્થા તરૂણ થશે ત્યારે લોક નિંદા કરશે કે, કુંવારી કન્યાને ઘરમાં રાખી છે. તેથી તને હવે શુ કર્તવ્ય છે ? ત્યારે કૃષ્ણાએ કહ્યુ, મને અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજીના ઘરે મોકલી દો. ત્યાં હુ રહીશ. ત્યારે હરિવંશ પાઠક કૃષ્ણાને સંગ લઈ અડેલ આવી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરી બધી વાત કૃષ્ણાની કહી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યુ, કૃષ્ણા અમારી છે તે વહુજી પાસે રહેશે. ત્યારે કૃષ્ણાએ શ્રીગુસાંઈજીને દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ! હું તો જન્મથી આપની દાસી છુ. શ્રીઆચાર્યજીએ મારો હાથ પકડયો છે. માટે આપનાં ચરણારવિંદ વિના મારૂં કઈ ઠેકાણુ નથી ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ કૃષ્ણાની દીનતા જોઈ બહુ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, આ મારૂ પ્રાકટ્ય તો તમારા સરખા વૈષ્ણવને માટે છે. તેથી આ ઘર તમારૂ છે. સુખેથી રહો. ત્યારે કૃષ્ણા શ્રીરૂકમણી વહુજીની ખવાસીમાં રહી. હરિવંશ પાઠક શ્રીગુસાંઈજીથી વિદાય થઇને કાશી આવ્યા. કૃષ્ણા આખા ઘરનુ કામ–ટહલ કરે.

घर को काम टहल करे। सो सगरो परिवार प्रीतिसों बस करि लियो। कृष्णो कहे सो होइ। श्रीगुसांईजी हूं श्रीआचार्यजी की कृपापात्र सेवकनी जानि, कृष्णो की का'नि वहोत राखते।

वार्ता-प्रसंग १—सो कृष्णो रुकिमिनी बहूजीकी खवासी करे। सो एक समय श्रीरुकिमिनीजी बहूजी कों गर्भाधान रह्यो। तब कृष्णो ने कही, अबके बहूजी के वेटा होइगो, तीनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरोंगी। सो गर्भ के दिन पूरे भये तब श्रीरुकिमिनी बहूजी के पेट में पीर उठी। तब कृष्णो जाइके एक पंडित जोतिसी सों पूछे, अब मुहूर्त कैसो है? तब जोतिसी ने कही, अवही दोइ चारि दिन नीके नाहीं हैं। तब कृष्णादासी आई श्रीरुकिमिनी बहूजी के पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज! अवही मति पधारो, दोय चारि दिन आछे नाहीं हैं। तब तत्काल पीड़ा रहि गई। पाछे पांच सात दिन वीते, तब कृष्णादासी फिरि वह पंडित जोतिसी के पास जाइ पूछे, जो-अब मुहूर्त कैसो है? तब वह जोतिसी ने कही, आज बहोत सुन्दर दिन है, भलो मुहूर्त आज है। तब कृष्णो आई, श्रीरुकिमिनी बहूजी के पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज! आज वहोत सुन्दर मुहूर्त है, भलो मुहूर्त आज है। अब पधारो। तब ततकाल बालक प्रगट भये। पाछे श्रीगुसांईजी ने

તે રીતે બધો પરિવાર પ્રીતિથી વશ કરી લીધો. કૃષ્ણો કહે તેજ થાય. શ્રીગુસાંઈજી પણ શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર સેવકની જાણી કૃષ્ણાની કા'નિ બહુ રાખતા.

વાર્તા પ્રસગ ૧-કૃષ્ણો રુકમણી વહુજીની ખવાસી કરે. તે એક સમયે શ્રીરુકમણીજી વહુજીને ગર્ભાધાન રહ્યું. ત્યારે કૃષ્ણોએ કહ્યું, હવે વહુજીને બેટા થશે તેમનું નામ શ્રીગોકુલનાથજી ધરીશ. પછી ગર્ભના દિવસ પૂરા થયા ત્યારે શ્રીરુકમણી વહુજીના પેટમાં પીડા ઉઠી. ત્યારે કૃષ્ણો જઇને એક પંડિત જોષીને પૂછી આવી કે અત્યારે મુહૂર્ત કેવું છે? ત્યારે જોશીએ કહ્યું, હમણાં બે ચાર દિવસ સારા નથી. ત્યારે કૃષ્ણાદાસીએ આવી શ્રીરુકમણી વહુજીના પેટ ઉપર હાથ ફેરવી ને કહ્યું, મહારાજ! હમણાં ન પધારતા. બે ચાર દિવસ સારા નથી. ત્યારે તત્કાળ પીડા રહી ગઇ. પછી પાંચ સાત દિવસ વીત્યા. ત્યારે કૃષ્ણાદાસીએ ફરી તે પંડિત જોશીની પાસે જઇ પૂછ્યું, કે હવે મુહૂર્ત કેવું છે. ત્યારે તે જોશીએ કહ્યું, આજ બહુ સુંદર દિવસ છે. સુંદર મુહૂર્ત આજ છે. ત્યારે કૃષ્ણોએ આવી શ્રીરુકમણી વહુજીના પેટ ઉપર હાથ ફેરવી કહ્યું, મહારાજ! આજ બહુ સુંદર મહૂર્ત છે. મુહૂર્ત આજ સારૂં છે. હવે પધારો. ત્યારે તત્કાલ બાલક પ્રકટ થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ નામકરણ કર્યું. તે વલ્લભ નામ ધર્યું. પરંતુ કૃષ્ણોએ

नामकरण कियो, सो वल्लभ नाम धर्‍यो। परन्तु कृष्णो ने पहले ही श्रीगोकुलनाथजी नाम धर्‍यो है। तातें जगत में प्रसिद्ध श्रीगोकुलनाथजी नाम पर्‍यो। घरमें श्रीवल्लभ कहेतें। और जन्मपत्रिका में श्रीकृष्ण नाम हैं। सो श्रीगुसांईजी गोप्य राखे। सो कृष्णो की ऐसी का'नि राखते और जब श्रीघनश्यामजी को जन्म भयो, तब नामकर्ण समें श्रीवल्लभजीने कही, इनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरो। तब श्रीगुसांईजी कही, यह नाम तो तिहारोई है। घरमें वल्लभ कहेत हैं। और सगरे जगत में तो तिहारो नाम श्रीगोकुलनाथजी है। कृष्णो भगवदीय तिहारो नाम धर्‍यो है, सो फेर्‍यो न जाई।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय शरद् ऋतु आई। तब रुक्मिनी बहूजी ने कृष्णो सों कही, कोई शरद निसा को वरनन करो। तब कृष्णो 'शरद निसा' करिकें गायो। सो श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न होइकें कहें, मानों रास में ठाड़े ह्वैके गान कियो। सो कृष्णा कों नन्दालय की लीला, रासादिक लीला को अनुभव है। सो बहुत कीर्तन किये हैं। अष्टप्रहर भगवद् रसमें मगन रहतीं। सो कृष्णा दासी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय ही। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये।

वार्ता ॥४५॥

* * *

પહેલાથી શ્રીગોકુલનાથજી નામ ધર્યું છે. તેથી જગતમાં પ્રસિદ્ધ શ્રીગોકુલનાથજી નામ પડ્યું. ઘરમાં શ્રીવલ્લભ કહેતા અને જન્મપત્રિકામાં શ્રીકૃષ્ણ નામ છે. તે શ્રીગુસાંઇજીએ ગોપ્ય રાખ્યું. તે કૃષ્ણોની એવી કા'નિ રાખતા. વળી જ્યારે શ્રીઘનશ્યામજીનો જન્મ થયો ત્યારે નામકરણ સમયે શ્રીવલ્લભજીએ કહ્યું, એમનું નામ શ્રીગોકુલનાથજી ધરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, એ નામ તો તમારું જ છે. ઘરમાં વલ્લભ કહે છે અને આખા જગતમાં તો તમારું નામ શ્રીગોકુલનાથજી છે. કૃષ્ણો ભગવદીયે તમારું નામ ધર્યું છે તે ફેરવ્યું ન જાય.

વાર્તા પ્રસંગ ૨–વળી એક સમય શરદ ઋતુ આવી. ત્યારે રુકમણી વહુજીએ કૃષ્ણોને કહ્યું, કોઇ શરદ નિશાનું વર્ણન કરો. ત્યારે કૃષ્ણોએ 'शरद निशा' કરીને ગાયું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ બહુજ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, જાણે રાસમાં ઉભા રહીને ગાન કર્યું. તે કૃષ્ણાને નંદાલયની લીલા રાસાદિક લીલાનો અનુભવ છે. તે બહુ જ કીર્તનો કર્યાં છે. અષ્ટ પ્રહર ભગવદ્‌રસમાં મગ્ન રહેતી. તે કૃષ્ણાદાસી એવી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. એની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

વાર્તા ॥ ૪૫ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बूला मिश्र पश्चिम में रहते, सो सारस्वत ब्राह्मण हते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी विसाखाजी, तिनकी सखी हैं। लीला में इनको नाम 'सुमन्दिरा' है। सो ए लाहौर में पश्चिम दिसा में सरस्वत ब्राह्मण के घर प्रगटे। सो वर्ष दस के भये, तब पिता ने बूला मिश्र सों कह्यो, कछू शास्त्र पढ़ो तो आछो है। नाहिं तो मेरी नांई मूर्ख रहोगे। तब बूला मिश्र ने कही, कहूँ पंडित ठीक करि मोकों बताओ, तहाँ मैं पढ़ूँ। सो लाहोर में एक पण्डित पास बैठाये पढ़न कों। तब वह पंडित ने कही, मेरी दस पांच रुपैया सों पूजा करो तो पढ़ाऊँ। तब बूला मिश्र उठि के घर आय बैठे। तब पिता ने कही, घर में फेरि क्यों आये? घर में बैठ्यो पढेगो? तू जन्म ते घर ही में रह्यो, सो लुगाई को काम सिखेगो। बाहर निकसतें लाज लागी होयगी? तब बूला मिश्र ने कही, इहां तो जाके पास पढ़न जइयें, सो द्रव्य माँगत है। ताते अब मैं कासी पढ़न जात हूं मोकों बोली ठोली क्यों मारत हो? तब पिता ने कही तू घर में ते बाहिर निकसवे को मन नाहीं करत है, सो कासी कैसे जायगो? तब बूला मिश्र उठिकें पिता कों नमस्कार कियो, जो-मैं कासी चल्यों। तब पिता के मन

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, બુલામિશ્ર પશ્ચિમમાં રહેતા તે સારસ્વત બ્રાહ્મણ હતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીની સખી વિશાખાજી તેમની સખી છે. લીલામાં એમનુ નામ 'સુમન્દિરા' છે એ લાહોરમાં પશ્ચિમ દિશામાં સારસ્વત બ્રાહ્મણને ઘરે પ્રકટયા. તે વર્ષ દશના થયા ત્યારે પિતાએ બુલામિશ્રને કહ્યું, કંઈ શાસ્ત્ર ભણો તો સારૂં છે નહી તો મારી માફક મૂર્ખ રહેશો. ત્યારે બુલા-મિશ્રે કહ્યું, કોઈ પંડિત ઠીક કરી મને બતાવો ત્યાં હુ ભણું. પછી લાહોરમાં એક પંડિત પાસે ભણવાને બેસાડયા. ત્યારે તે પંડિતે કહ્યું, મારી દશ–પાંચ રૂપીઆથી પૂજા કરો તો ભણાઉં. ત્યારે બુલામિશ્ર ઉઠીને ઘેર આવી બેઠા. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, ઘરમાં ફરી કેમ આવ્યા? ઘરમાં બેઠ્યો ભણીશ? તૂ જન્મથી ઘરમાંજ રહ્યો. તે સ્રીનું કામ શીખીશ. બહાર નિકળતાં લાજ લાગી હશે? ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યુ, અહીં તો જેની પાસે ભણવા જૈયે તે દ્રવ્ય માંગે છે. તેથી હવે હું કાશી ભણવા જઈશ. તમે મને મ્હેણાં કેમ મારો છો? ત્યારે પિતાએ કહ્યું, તૂ ઘરમાંથી બહાર નિકળવાનું તો મન નથી કરતો. તે કાશી કેવી રીતે જઈશ? ત્યારે બુલામિશ્રે ઉઠીને પિતાને નમસ્કાર કર્યા (અને કહ્યુ કે) હુ આ કાશી ચાલ્યો. ત્યારે પિતાના મનમાં આવ્યું

में नाहीं आई । जान्यो, जो-यह कहां अकेलो जायगो ? काहू गाम में बैठि रहेगो। सो पिता बोल्यो नाहीं । और बूला मिश्र तो चले सो गाम में चून माँगि के अंगाकरि खाय । या प्रकार कछुक दिन में कासी आये । सो भिक्षा वृत्ति सों निर्वाह करें । और पढ़वे कों पण्डित पास जाई । सो तीन बरस लों जतन पढ़वे को बहुत किये, परन्तु रञ्च हू विद्या न आई । तब पण्डित ने कही, हम अनेक विद्यार्थी कों पढ़ाये, परन्तु तेरे सरीखो मूढ़ न देख्यो । तीन बरस लों तु हू पढ़ये कों पच्यो, मैं पढ़ावत पच्यो । परन्तु अक्षर हू को ज्ञान तोकों न भयो। अब तू काहे कों पचत है ? विद्या तेरे भाग्य में नाहीं है । तब बूला मिश्र के मनमें बहोत दुःख भयो, जो-विद्या पढ़न के लिये घर छोड्यो, इतनो दुःख सह्यो, परन्तु विद्या न आई । तातें मैं अब सरस्वती के ऊपर मरूँगो । सो गंगाजी के तीर कासी सों दूरि जाइ, जहां कोई मनुष्य नाहीं, तहां जल छोड़ि के बैठे । सो तीन रात तीन दिन बीते, जलहू न लिये । तब सरस्वती गंगा के भीतर होई, बूला मिश्र सों कह्यो, जो-तू मेरे उपर क्यों बैठ्यो, मरिबे ? मैं तो भगवान की दासी हूँ, सो भगवान जहां मोकों पठावे तहाँ जाँऊ । और जगत में सर्व कार्य के करता तो भगवान हैं । सो भगवान को भजन तू करि । भगवान प्रसन्न होंयगे तों विद्या कहा, जो चाहेगो सो मिलेगो।

નહીં. જાણ્યુ કે, એ કયાં એકલો જશે ? કોઈ ગામમાં બેસી રહેશે. તેથી પિતા બોલ્યો નહી અને બુલામિશ્ર તો ચાલ્યા. તે ગામમાં ચુન માંગીને અંગાકરી કરીને ખાય. એ પ્રકારે કેટલાક દિવસમાં કાશી આવ્યા. ભિક્ષાવૃત્તિથી નિર્વાહ કરે અને ભણવાને પંડિત પાસે જાય. તે ત્રણ વર્ષ સુધી ભણવાનો યત્ન બહુ કર્યો, પરંતુ રંચક પણ વિદ્યા ન આવી. ત્યારે પંડિતે કહ્યું, અમે અનેક વિદ્યાર્થીને ભણાવ્યા પરંતુ તારા જેવો મૂઢ ન જોયો. ત્રણ વર્ષ સુધી તૂ પણ ભણવાને પચ્યો; હું ભણાવતાં પચ્યો પરંતુ અક્ષરનુ પણ જ્ઞાન થયુ નહી. હવે તુ શા માટે પચે છે? વિદ્યા તારા ભાગ્યમાં નથી. ત્યારે બુલામિશ્રના મનમાં બહુ જ દુઃખ થયુ કે, વિદ્યા ભણવાને માટે ઘર છોડયુ. આટલુ દુઃખ સહ્યુ; પરંતુ વિદ્યા ન આવી. તેથી હું હવે સરસ્વતી ઉપર મરીશ. પછી ગંગાજીના તીર કાશીથી દૂર જઈ જ્યાં કોઈ મનુષ્ય નહી ત્યાં જલ છોડીને બેઠા. તે ત્રણ રાત અને ત્રણ દિવસ વીત્યા જલ પણ ન લીધુ. ત્યારે સરસ્વતીએ ગંગાના અંદર થઈ બુલામિશ્રને કહ્યું, કે તૂ મારા ઉપર કેમ મરવાને બેઠો ? હુ તો ભગવાનની દાસી છું. તે ભગવાન જ્યાં મને મોકલે ત્યાં જઉં અને જગતમાં સર્વ કાર્યના કર્તા તો ભગવાન છે. તે ભગવાનનું ભજન તૂ કર.

सो मेरे ऊपर मरिवे बैठ्यो सो तू सुखेन मरि। भगवान की इच्छा के विना काहू के पास जाऊँ नाहीं। और जो भगवान की इच्छा होई तो शूद्र, चाण्डाल के पास हू जाऊँ। और वह पंडित ह्वे जाई। भगवान की इच्छा न होई तो पढ्यो होई सोई मूर्ख ह्वे जाई। कैसोऊ ब्राह्मण होऊ परन्तु मैं न जाऊँ। यह मैं तोकूं बतायो। अब तेरो मन आवे तो मरि, भावे जीऊ। परन्तु भगवान की इच्छा तोकूं विद्या देवे की नहीं है। तब बूला मिश्र ने कही, मोसों भगवद् स्मरण भजन तो बनेगो नाहीं। परन्तु अब तांई तेरे ऊपर मरत हतो सो अब भगवान के ऊपर मरूंगो। परन्तु विद्या आवे तब ही जल पान करूंगो। तब सरस्वती गई। पाछे वह भगवान को नाम विष्णु, विष्णु कहन लाग्यो, सो रात दिन कहे। तब भगवान ने सरस्वती सों कही, तू मेरे माथे मरिवे कों ब्राह्मण बैठायौ, अब जा मेरी इच्छा है। विद्या दे, वाकों खान पान कराय आऊ। तब सरस्वती, स्त्री को स्वरूप करि, बूला मिश्र पास आय कह्यो, ब्राह्मण नेत्र खोलि तब वह पूछ्यो, तू कौन है, तब वाने कही, मैं सरस्वती हूँ, मोकों भगवान पठाये हैं सो अब मैं तेरे पास आई हूँ। सो विद्या चाहिये तितनी ले। तब बूला मिश्र ने कही, अबही काल्हि ही तो तू कहि गई,

---

ભગવાન પ્રસન્ન થશે તો વિદ્યા તો શું ? જે ઈચ્છીશ તે મળશે., પછી મારા ઉપર મરવા બેસે તો તૂ ભલે મર. હું ભગવાનની ઈચ્છા વિના કોઇની પાસે જઉં નહી. અને જો ભગવાનની ઈચ્છા હોય તો શૂદ્ર ચાંડાલની પાસે પણ જઉ અને તે પંડિત થઈ જાય. ભગવાનની ઈચ્છા ન હોય તો ભણ્યો હોય તે પણ મૂર્ખ થઈ જાય. કેવો પણ બ્રાહ્મણ હોય પરંતુ હુ ન જાઉં. આ મે તને બતાવ્યું. હવે તારૂં મન આવે તો મર ચાહે જીવ પરંતુ ભગવાનની ઈચ્છા તને વિદ્યા આપવાની નથી. ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યુ, મારાથી ભગવદ્દસ્મરણ ભજન તો બનશે નહી પરંતુ હમણાં સુધી તારા ઉપર મરતો હતો તે હવે ભગવાનના ઉપર મરીશ. પરંતુ વિદ્યા આવે ત્યારેજ જલપાન કરીશ. ત્યારે સરસ્વતી ગઇ. પરંતુ તે ભગવાનનુ નામ વિષ્ણુ વિષ્ણુ કહેવા લાગ્યો. રાત દિવસ કહે. ત્યારે ભગવાને સરસ્વતીને કહ્યું, તે મારા માથે મરવાને બ્રાહ્મણ બેસાડયો. હવે જા, મારી ઈચ્છા છે વિદ્યા દે એને ખાનપાન કરાવી આવ. ત્યારે સરસ્વતી સ્રીનુ સ્વરૂપ કરી બુલામિશ્ર પાસે આવી કહે, બ્રાહ્મણ નેત્ર ખોલ. ત્યારે બુલામિશ્ર નેત્ર ખોલીને પૂછે, તૂ કોણ છે ? ત્યારે તેણે કહ્યું હું સરસ્વતી છુ. મને ભગવાને મોકલી છે. તેથી હવે હું તારી પાસે આવી છું. તે વિદ્યા જોઇએ તેટલી લે. ત્યારે બુલા મિશ્રે કહ્યું, હમણાં કાલે જ તો તૂ કહી ગઈ કે વિદ્યા તારા

जो-विद्या तेरे भाग्य में नाहीं। आज अब विद्या देन क्यों आई है ? तब सरस्वती ने कही, भगवान की इच्छा यह भई जो तू विद्या दे, तब हौं आई। तब बूला मिश्र ने कही, भगवान की इच्छा अब विद्या देने की क्यों भई ? पहले तो न हती। जो-पहले होती तो तीन बरस पढ्यो, सों कछू ना आयो। सो भगवान तुमकों अब मेरे पास क्यों पठाये ? तब सरस्वती ने कही, तुम रात्रि दिन भगवद् नाम लियो सो भगवान तुम पर प्रसन्न भये। तुम्हारे पाप दूरि हो गये। तातें भगवान ने पठाई मोकों, तुम मन लगाई भगवद् नाम लियो, ताको प्रताप है। तब बूला मिश्र ने कही, जो-भगवान तें भगवान को नाम श्रेष्ठ है, जाके लिये भगवान् प्रसन्न भये। तो अब मैं विद्या नाहीं चाहत। विद्या तें भगवत् नाम बड़ो देख्यो, सो अब तू जा, विद्या मोकों नाही चहिये। अब भगवान ही आवेंगे तो दरसन करूँगो। और तब ही कछू लेऊँगो ?

तब सरस्वती भगवान कों जाई कह्यो, जो–महाराज ! वह तो विद्या नाहीं लेत है, आपको दरसन चाहत है। तब भगवान प्रसन्न भये, जो ऐसो या काल में कौन है, जो–मोकों चाहेगो ? ताकों मैं हूँ चाहूँगो। तब भगवान गंगाजी के भीतर ते वानि द्वारा कहै, ब्राह्मण अब तू खानपान करि। पाँच दिन भये जल नाहीं लियो,

---

ભાગ્યમાં નથી. આજ હવે વિદ્યા દેવા કેમ આવી છે? ત્યારે સરસ્વતીએ કહ્યું, ભગવાનની ઈચ્છા એમ થઈ કે તૂ વિદ્યા દે. ત્યારે હું આવી ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યુ, ભગવાનની ઈચ્છા હવે વિદ્યા દેવાની કેમ થઈ? પહેલાં તો ન હતી. જો પહેલાં હોતી તો હું ત્રણ વર્ષ ભણ્યો તે કઈ ન આવ્યુ. તેથી ભગવાને હવે તમને મારી પાસે કેમ મોકલી? ત્યારે સરસ્વતીએ કહ્યું, તમે રાત્ર–દિવસ ભગવન્નામ લીધું તેથી ભગવાન તમારી ઉપર પ્રસન્ન થયા. તમારાં પાપ દૂર થઈ ગયાં તેથી ભગવાને મને મોકલી. તમે મન લગાડીને ભગવન્નામ લીધુ તેનો પ્રતાપ છે. ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યુ, કે ભગવાનથી ભગવાનનુ નામ શ્રેષ્ઠ છે જેને લીધે ભગવાન પ્રસન્ન થયા. તો હવે હું વિદ્યા નથી ચાહતો. વિદ્યાથી ભગવન્નામ મોટુ જોયુ. તેથી હવે તૂ જા. વિદ્યા મારે ન જોઇએ. હવે ભગવાનજ આવશે તો દર્શન કરીશ અને ત્યારેજ કઇ લઈશ. ત્યારે સરસ્વતીએ ભગવાનને જઈ કહ્યુ, કે મહારાજ ! એ તો વિદ્યા નથી લેતો. આપનાં દર્શન ચાહે છે. ત્યારે ભગવાન પ્રસન્ન થયા, કે એવો આ કાળમાં કોણ છે જે મને ચાહે? તેને હું પણ ચાહીશ. ત્યારે ભગવાન ગગાજીના ભીતરથી વાણી દ્વારા કહે, બ્રાહ્મણ હવે તૂં ખાનપાન કર. પાંચ દિવસ થયા જલ નથી લીધું

सो मैं प्रसन्न हूँ तिहारे ऊपर। विद्या आदि वर चहिये सो लेऊ। तब बूलामिश्र ने कही, महाराज! अब मेरे कछू नाहीं चहिये, आप कृपा करिकें मोकों एक बार दरसन देऊ। तब भगवान ने कही, जो–तुम अड़ेल में श्रीवल्लभाचार्यजी विराजे हैं, तहाँ जाईके उनकी सरनि होउ। तब तुम कूँ मेरो दरसन तहाँ होयगो। तब बूलामिश्र कहें, महाराज! एक बार मोकों दरसन देऊ। जो–आपके दरसन किये मोकों माया न लागेगी। नाहीं तो मैं खानपान कियो, अनेक लोगन को संग भयो, और माया लागी। पाछे मनको और बुद्धि को ठिकानो नाहीं। अड़ेल में जावे, बीच ही में मोकों मारि डारे तो मैं कहा करूं? तब भगवान प्रसन्न होई, बूलामिश्र कों चतुर्भुज रूप सूं दरसन दे कहें, अब तुम अड़ेल जाऊ। श्रीआचार्यजी तिहारो मनोरथ पूर्ण करेंगे। और तुमकों माया न लागेगी। तब बूलामिश्र दण्डवत् करि विनती करी, महाराज! मेरो अपराध क्षमा करो, जो–मैं आपसों हठ कियो। कहाँ मैं तुच्छ जीव, कहाँ आप पुरुषोत्तम? सो मेरो कह्यो आप साँचो कियो। परन्तु आप की माया मोकों जगत में अनेक प्रकार सों भटकाये, बहोत कलेश दियो। ताते मैं आपकों दरसन की विनती करी। तब भगवान बूलामिश्र को समाधान करि आप अन्तर्धान भये। बूलामिश्र खानपान् कियो। भगवद् महात्म्य नाम

તેથી હું પ્રસન્ન છું તારા ઉપર. વિદ્યા આદિ વર જોઇએ તે લે. ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યું, મહારાજ! હવે મારે કંઈ ન જોઇએ. આપ કૃપા કરી મને એકવાર દર્શન દો. ત્યારે ભગવાને કહ્યું, કે તમે અડેલમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી બિરાજે છે ત્યાં જઇને એમની શરણે થાવ. ત્યારે તમને મારાં દર્શન ત્યાં થશે. ત્યારે બુલામિશ્ર કહે, મહારાજ! એકવાર મને દર્શન દો. આપનાં દર્શન કરવાથી મને માયા નહી લાગે. નહીં તો મેં ખાનપાન કર્યું અનેક લોકોનો સંગ થયો અને માયા લાગી પછી મનનું અને બુદ્ધિનું ઠેકાણુ નહી. અડેલમાં જાઉ અને વચમાંજ મને મારી નાખે તો હું શુ કરૂં? ત્યારે ભગવાને પ્રસન્ન થઈ બુલામિશ્રને ચતુર્ભુજ રૂપથી દર્શન દઇને કહ્યું, હવે તમે અડેલ જાવ. શ્રીઆચાર્યજી તમારો મનોરથ પૂર્ણ કરશે અને તમને માયા નહીં લાગે. ત્યારે બુલામિશ્રે દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ! મારો અપરાધ ક્ષમા કરો, કે મે આપથી હઠ કર્યો. ક્યાં હું તુચ્છ જીવ ક્યાં આપ પુરૂષોત્તમ! મારૂ કહ્યું આપે સાચું કર્યું. પરંતુ આપની માયાએ મને જગતમાં અનેક પ્રકારથી ભટકાવ્યો બહુ કલેશ દીધો. તેથી મેં આપનાં દર્શનની વિનતી કરી. ત્યારે ભગવાન બુલામિશ્રનું સમાધાન કરી પોતે અંતરધ્યાન થયા. બુલામિશ્રે

को देखे, सो दृढ़ विश्वास भयो। सो अष्टप्रहर भगवद् नाम लेत अड़ेल चले। सो कछु दिन में अड़ेल में आय, श्रीआचार्यजी को दरसन करि दण्डवत् कियो। तब श्रीआचार्यजी बूलामिश्र सों कहे, जो–तू धन्य है, जो–ऐसी धीरज धरि दृढ़ता करी। जो–यही देह सों भगवान को दरसन पायो। तब बूलामिश्र ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! दरसन भये सोऊ आपकी कृपा, परन्तु भगवान के स्वरूप को आनन्द है, ताको अनुभव नाहीं है। सो आप कृपा करिके सरनि लेऊ, तब होई। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब सरन होइके कहा करोगे? भगवद् प्राप्ति तो तुमकों होय गई। भगवान को वर हैं। तोसों बचन कहे हैं, जो–माया न लगेगी। अब तुमकों कहा कर्तव्य है? तब बूलामिश्र ने कही, भगवद् प्राप्ति जो मुक्ति है, सो तो मैं चाहत नाहीं, मोकों भक्ति होउ। सो आपकी कृपा ते होइ तातें सरनि लेऊ, तब भक्ति की प्राप्ति होई। सो भगवान् नें हू आपकों बताये हैं। ताते मैं आपकी सरन आयो हूँ। तब श्रीआचार्यजी ने बूलामिश्र सों कही, जो–श्रीयमुनाजी में तू न्हाइ के आव, तब बूलामिश्र यमुनाजी स्नान करि अपरस में आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। कृष्णाश्रय ग्रंथ करि ताको

ખાનપાન કર્યું. ભગવન્નામનું મહાત્મ્ય જોયું તેથી દૃઢ વિશ્વાસ થયો. અષ્ટ પ્રહર ભગવન્નામ લેતાં અડેલ ચાલ્યા. પછી કેટલાક દિવસમાં અડેલમાં આવી શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બુનામિશ્રને કહ્યુ, કે તૂ ધન્ય છે કે આવી ધીરજ ધરી દઢતા કરી. આ દેહથી ભગવાનનાં દર્શન પામ્યો. ત્યારે બુલામિશ્રે શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી, મહારાજ! દર્શન થયાં તે પણ આપની કૃપા પરંતુ ભગવાનના સ્વરૂપનો આનંદ છે તેનો અનુભવ નથી તે આપ કૃપા કરીને શરણે લો ત્યારે થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે હવે શરણે થઇને શું કરીશ? ભગવત્પ્રાપ્તિ તો તમને થઈ ગઈ. ભગવાનનું વરદાન છે. તને વચન કહ્યું છે કે માયા નહીં લાગે. હવે તને શું કર્તવ્ય છે? ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યુ, ભગવદ્-પ્રાપ્તિ જે મુક્તિ છે તે તો હું ઈચ્છતો નથી. મને ભક્તિ થાવ. તે આપની કૃપાથી થાય માટે શરણે લો. ત્યારે ભક્તિની પ્રાપ્તિ થાય. તેથી ભગવાને પણ આપને બતાવ્યા છે. તેથી હું આપની શરણે આવ્યો છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ બુલામિશ્રને કહ્યું, કે શ્રીયમુનાજીમાં તૂ ન્હાઈ આવ. ત્યારે બુલામિશ્ર શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી અપરસમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યુ, 'કૃષ્ણાશ્રય' ગ્રંથ કરી તેનો પાઠ કરાવ્યો. તેથી બુલામિશ્રને શ્રીઠાકુરજીની લીલાનો અનુ-

पाठ कराये। सो बूलामिश्र कों श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव होन लाग्यो। और सगरे शास्त्र पुरान वेद के आश्रय को ज्ञान ह्वे गयो। मानसी फल रूप सेवा को इनकों दान श्रीआचार्यजी दिये। सो मन अलौकिक होइ श्रीठाकुरजी में लाग्यो। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तुम घर जाऊ। तब बूलामिश्र ने विनती करी, महाराज! अब मोकों घर काहे कों पठावत हो? मेरे घर सों कहा काम है? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमकों घर यातें पठावत हैं, जो-तिहारे संगतें कितनेक जीव कृतार्थ होइंगे। और भक्ति को विस्तार होईगो। अब तुमकों संसार दुःख तो लगेगो नाहीं। जहां रहोगे तहां हमारे पास ही हो। और जैसे भगवान सर्व सामर्थ युक्त हैं, तैसें भगवदीय हू सर्व सामर्थ युक्त हैं। तातें घर जाऊ, माता पिता वृद्ध हैं। तिहारे संगते उनकी गती होइगी। और वे जानत हैं, जो-पुत्र कहूं मरयो, के जीवत है? तब बूलामिश्र दण्डवत् करि श्रीआचार्यजी सों विदा होयके चले। सो कछुक दिन में लाहोर आये। माता पिता कों बहोत सुख भयो। पाछें बूलामिश्र घर खासा करि रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों मानसी रीति सों भोग धरे। एक पातर माता पिता कों धर दिये एक गाय की काढ़े। एक पातर आए गए वैष्णव की। कोई भूखेकों देके महाप्रसाद ले। श्रीभागवत सुबोधिनी तथा श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ के पाठ के

भव थवा लाग्यो अने बधां शास्त्र, पुराण, वेदना आश्रयनु ज्ञान थई गयुं. श्रीआचार्यजीए एमने मानसी फलरूप सेवानुं दान कर्युं. तेथी मन अलौकिक थई श्रीठाकुरजीमां लाग्युं. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हवे तमे घर जाव. त्यारे बुलामिश्रे विनती करी, महाराज! हवे मने घर शा माटे मोकलो छो? मारे घरथी शुं काम छे? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमने घर ए माटे मोकलीए छीए के तमारा संगथी केटलाक जीवो कृतार्थ थशे अने भक्तिनो विस्तार थशे. हवे तमने संसार दुःख तो लागशे नही. ज्यां रहेशो त्यां अमारी पासेज छो. अने जेम भगवान सर्व सामर्थ्ययुक्त छे तेम भगवदीय पण सर्व सामर्थ्ययुक्त छे. तेथी घर जाव. मातापिता वृद्ध छे. तमारा संगथी एमनी गति थशे. अने ए जाणे छे के पुत्र कई मर्यो के जीवे छे? त्यारे बुलामिश्र दंडवत् करी श्रीआचार्यजीथी विदाय थईने चाल्या. ते केटलाक दिवसमां लाहोर आव्या. मातापिताने बहु सुख थयुं. पछी बुलामिश्रे घर खासा करी रसोई करी श्रीठाकुरजीने मानसी रीतिथी भोग धर्यो. एक पातर माता-पिताने धरी दीधी, एक गायनी काढी. एक पातर आव्या गया वैष्णवनी. कोई भूख्याने आपीने महाप्रसाद ले.

भाव में मग्न रहतें। यजमान क्षत्री बहोत हते, सो जो आवे तामें निर्वाह करें।

वार्ता प्रसंग १—सो लाहौर में एक क्षत्री बूलामिश्र के यजमान हतो। ताकी दो स्त्री हती, परन्तु सन्तति न हती। सो काहू ने उह क्षत्री सों कह्यो, तुम हरिवंस पुराण सुनो तो तिहारे संतति पुत्र होई। तब वह क्षत्री बूलामिश्र पास आय बहोत विनती कियो, जो-तुम मोकों हरिवंस पुराण सुनावो तो तिहारी कृपा तें मेरे संतति होई। तब बूलामिश्र ने कही, अब ही मोकों अवकास नाहीं। अवकास होइगो तब सुनाऊंगो।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-ये पुत्र अर्थ हरिवंस पुराण सुनत है। सो पुत्र होनहार होइ, भगवद् इच्छातें, तो मैं इनकों सुनाऊँ। जो-न होनहार होइ तो श्रीठाकुरजी कों श्रम काहे कों कराऊँ? काहेतें, मेरे सुनाये श्रीठाकुरजी मेरो जस प्रगट करनार्थ पुत्र देइ, सो मेरे न करनो। तातें कहैं, अवकास होइगो तब सुनाऊँगो। या प्रकार कहि बिदा किये। तब श्रीठाकुरजी विचारें, जो-भगवदीय पास कोइ मनोर्थ करे सो खाली कैसें जाई। तातें बूलामिश्र सों श्रीठाकुरजी ने कही वह क्षत्री कों पुत्र होइगो, तू सुनाईयो।

શ્રીભાગવત, સુબોધિની, શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થના પાઠના ભાવમાં મગ્ન રહેતા. યજમાન ક્ષત્રી ઘણા હતા તેથી જે આવે તેમાં નિર્વાહ કરે

વાર્તા પ્રસંગ ૧-લાહોરમાં એક ક્ષત્રી બુલામિશ્રને યજમાન હતો. તેને બે સ્ત્રી હતી, પરંતુ સંતતિ ન હતી. તેથી કોઇએ તે ક્ષત્રીને કહ્યું, તમે હરિવંશ પુરાણ સાભળો તો તમારે સંતતિ પુત્ર થાય. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ બુલામિશ્ર પાસે આવીને ઘણી વિનંતી કરી, કે તમે મને હરિવંશ પુરાણ સંભળાવો તો તમારી કૃપાથી મારે સંતતિ થાય. ત્યારે બુલામિશ્રે કહ્યું, હમણાં તો મને અવકાશ નથી. અવકાશ હશે ત્યારે સંભળાવીશ.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ, કે એ પુત્ર અર્થે હરિવંશ પુરાણ સાંભળે છે. તેથી પુત્ર હોનહાર હશે. ભગવદ્ઇચ્છાથી તો હું એમને સંભળાવું જો ન હોનહાર હોય તો શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ શા માટે કરાવું? કેમકે? મારા સંભળાવ્યાથી શ્રીઠાકુરજી મારો યશ પ્રગટ કરવા માટે પુત્ર દે તે મારે ન કરવું. તેથી કહ્યું, અવકાશ હશે ત્યારે સંભળાવીશ. એ પ્રકારે કહી વિદાય કર્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ વિચાર્યું, કે ભગવદીય પાસે કોઈ મનોરથ કરે તે ખાલી કેમ જાય? તેથી બુલામિશ્રને શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, એ ક્ષત્રીને પુત્ર થશે. તું સંભળાવજે.

ता पाछे एक दिन अचानक बूलामिश्र यजमान क्षत्री के घर आये। तब वह क्षत्री बहोत आदर सनमान करि अपने हाथसों बूलामिश्र के चरण छुई माथे धरि, सुन्दर आसन पर बैठाये। तब बूलामिश्र नें उह क्षत्री सों कही, तुम स्त्री सहित न्हाय के नये वस्त्र पहरि बैठो। तब दोऊ स्त्री पुरुष न्हाय के नये वस्त्र पहरि के आय बैठें। तब बूलामिश्र हरिवंश पुराण को एक श्लोक पढ़े, सो श्लोक "इदं मया ते हरिकीर्तनं महत् श्रीकृष्णमाहात्म्यं परमद्भुतम्।" या श्लोक कहि याको अर्थ कहें, जो-यह श्रीकृष्ण कीर्ति, उपर कहे सो कृष्णकीर्ति, को महात्म्य परम अद्भुत है। जो-सुने ताके भागि को पार नाहीं, परम दुर्लभ। यह श्लोक में सब फल कों पावे। पाछे मंत्राक्षत पढ़ि कें वह बड़ी स्त्री कों गोद में दिये। तब उह क्षत्री बूलामिश्र सों कहे, यह तुम कहा कियो? यह बड़ी स्त्री कों तो स्त्री धर्म होत नाहीं। सो छोटी स्त्री कों क्यों नाहीं दिये? तब बूलामिश्र कहें, श्रीठाकुरजी पुत्र देनहार होइगे तो याही कों पुत्र देहींगे, श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्यवान हैं। यह कहि बूला मिश्र उठे, घर चलन लागें। तब यह क्षत्री ने कही मोकों कृपा करिके संपूर्ण हरिवंस पुरान सुनावो। तब बूला मिश्र कहे तिहारो मनोर्थ तो पुत्र हेतु सगरो

તે પછી એક દિવસ અચાનક બુલામિશ્ર યજમાન ક્ષત્રીને ઘરે આવ્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રી ઘણું આદર-સન્માન કરી પોતાના હાથથી બુલામિશ્રનાં ચરણને અડી માથે ધરી તેમને સુંદર આસન ઉપર બેસાડ્યા. ત્યારે બુલામિશ્રે તે ક્ષત્રીને કહ્યું, તમે સ્ત્રી સહિત ન્હાઇને નવાં વસ્ત્ર પહેરી બેસો. ત્યારે બન્ને સ્ત્રી-પુરુષ ન્હાઇને નવાં વસ્ત્ર પહેરીને આવી બેઠાં. ત્યારે બુલામિશ્ર હરિવંશ પુરાણનો એક શ્લોક ભણ્યા. તે શ્લોક-(ઉપર જુઓ) એ શ્લોક કહી એનો અર્થ કહ્યો, કે આ શ્રીકૃષ્ણ કીર્તિ ઉપર કહી તે કૃષ્ણ કીર્તિનું માહાત્મ્ય પરમ અદ્‌ભુત છે. જે સાંભળે તેના ભાગ્યનો પાર નહીં. પરમ દુર્લભ. એ શ્લોકમાં બધા ફલને પામે. પછી મંત્રાક્ષત ભણીને તે મોટી સ્ત્રીની ગોદમાં આપ્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રી બુલામિશ્રને કહે, આ તમે શું કર્યું? આ મોટી સ્ત્રીને તો સ્ત્રી ધર્મ થતો નથી. નાની સ્ત્રીને કેમ નહીં આપ્યા? ત્યારે બુલામિશ્ર કહે, શ્રીઠાકુરજી પુત્ર દેવાવાળા હશે તો આને જ પુત્ર થશે. શ્રીઠાકુરજી સર્વ સામર્થ્યવાન છે. એ કહી બુલામિશ્ર ઉઠ્યા. ઘર ચાલવા લાગ્યા. ત્યારે એ ક્ષત્રીએ કહ્યું, મને કૃપા કરીને સંપૂર્ણ હરિવંશ પુરાણ સંભળાવો. ત્યારે બુલામિશ્ર કહે, તમારો મનોરથ તો પુત્ર હેતુ આખું પુરાણ સાંભળવાનો છે તેથી પુત્ર તમને થશે. બધું પુરાણ સાંભળવાનું

पुराण सुनन कौ है, तासौं पुत्र तुमकों होइगो। सगरे पुराण सुने को फल तुम विचारे सो भयो। अब सगरे पुराण सुनिवे को प्रयोजन कहा?

भावप्रकाश—यह बूला मिश्र ने यातें कह्यो, जो-इनकों अवकास कहां? जो-सगरो पुराण सुनावें। यह तो भगवद् इच्छा तें कहिवे को संयोग बनि गयो।

यह कहि बूला मिश्र घर आये, सो वह बडी स्त्री कों गर्भ रह्यो। (पाछे) पुत्र भयो।

भावप्रकाश—सो यह वार्ता में भगवदीय कों बड़ी बड़ाई दी है। काहे तें, भगवदीय भक्ति मुक्ति के दाता है। चाहे तो ततकाल श्रीठाकुरजी सों मिलाय दें। यह तो पुत्र, तुच्छ फल कहा? तहां अर्थ यह है, जो-पुत्र लौकिक नाहीं दिये। परम भगवदीय पुत्र दिये। सो पुत्र श्रीगुसांईजी को सेवक होइ, सगरे कुल को आगे कल्याण करेगो। तातें भगवदीय जो देय सो अलौकिक देई, लौकिक देइ तो नाहीं दिये बराबर है। काहे तें पुत्र किन कों कहिये? जो-माता पिता को उद्धार करे, तिनकों पुत्र कहिये। नाहीं तो जैसे पसु, कुत्ता, गदहा के पुत्र होत है। तेसे संसारी होय तो पसु समान है। तातें बुलामिश्र ने जेसो पुत्र शास्त्र में सराहे हैं, तेसो पुत्र दियो। वैष्णव ॥४६॥

सो बूला मिश्र श्रीआचार्यजी के बड़े कृपापात्र भगवदीय हे।

ફલ તમે વિચાર્યું છે તે થયું. હવે બધું પુરાણ સાંભળવાનું પ્રયોજન શું?

ભાવપ્રકાશ—આ બુલામિશ્રે એથી કહ્યું કે, એમને અવકાશ ક્યાં? કે બધું પુરાણ સંભળાવે? આ તો ભગવદીચ્છાથી કહેવાનો સંયોગ બની આવ્યો.

આ કહી બુલામિશ્ર ઘર આવ્યા. પછી મોટી સ્ત્રીને ગર્ભ રહ્યો. પછી પુત્ર થયો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં ભગવદ્ભક્તોને મોટી વડાઈ આપી છે. કેમકે ભગવદીય ભક્તિ–મુક્તિના દાતા છે. ચાહે તો તત્કાલ શ્રીઠાકુરજીને મેળવી આપે. આ તો પુત્ર તુચ્છ ફલ છે. ત્યાં અર્થ એ છે કે, પુત્ર લૌકિક નથી આપ્યો. તે પરમ ભગવદીય પુત્ર આપ્યો. તે પુત્ર શ્રીગુસાંઇજીનો સેવક થઈ બધા કુળનું આગળ કલ્યાણ કરશે. તેથી ભગવદીય જે દે તે અલૌકિક દે. લૌકિક દે તો નહી દીધા બરાબર છે. કેમકે પુત્ર તેને કહીએ, જે માતા–પિતાનો ઉદ્ધાર કરે. તેને પુત્ર કહીએ. નહીં તો જેમ પશુ, કુત્તા, ગધાને પણ પુત્ર થાય છે. તેથી સંસારી હોય તો પશુ સમાન છે. જેથી બુલામિશ્રે જેવો પુત્ર શાસ્ત્રમાં વખાણ્યો છે તેવો પુત્ર આપ્યો.

તે બુલામિશ્ર શ્રીઆચાર્યજીના બહુ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. સદા માનસી

सदा मानसीफलरूप सेवा में भगवद् रस में मगन रहते। तातें वूलामिश्र की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥४६॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास, मेवाड़ा ब्राह्मण, मीराबाई के प्रोहित हते, मेवाड़ में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये श्रीस्वामिनीजी की सखी विसाखा तिनकी सखी है। लीला में इनको नाम 'कन्दर्पा' है। जो सदा श्रीस्वामिनीजी के नाम को कीरतन ये करती। रूप इनको वहोत सुन्दर हतो। सो एक दिन कन्दर्पा अपनो शृङ्गार करती, सो श्रीस्वामिनीजी पधारी। तब कन्दर्पा शृङ्गार करत हती, सो उठी नाहीं। तब विशाखा ने शाप दियो, जो–इतनो गर्व, हमारी स्वामिनीजी कों उठिके सन्मान न कियो? जाऊ भूमि में परो। सो इहां अनेक जन्म भये। पाछे मेवाड में एक ब्राह्मण के घर जन्में, सो वरस बाईस के भये। तब रामदास के पिता रामदास कों संग ले के श्रीरणछोड़जी के दरसन कों गये। तहां श्रीआचार्यजी पधारे हते। सो रामदास कों दरसन भये। तब रामदास ने पिता सों कही, श्रीआचार्यजी के सेवक तुम, हम होई तो आछो। तब रामदास के पिता

ફલરૂપ સેવામાં ભગવદ્રસમાં મગ્ન રહેતા તથી બુલામિશ્રની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? ॥ વાર્તા ૪૬ ॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રામદાસ મેવાડા બ્રાહ્મણ, મીરાંબાઇના પ્રોહિત હતા, મેવાડમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ શ્રીસ્વામિનીજીની સખી વિશાખા તેમની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ 'કંદર્પા' છે. એ સદા શ્રીસ્વામિનીજીના નામનું કીર્તન કરતી. એનું રૂપ બહુ સુંદર હતું. એક દિવસ કંદર્પા પોતાનો શૃંગાર કરતી. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી પધારી. ત્યારે કંદર્પા શૃંગાર કરતી હતી તે ઉઠી નહીં. ત્યારે વિશાખાએ શ્રાપ આપ્યો કે, આટલો ગર્વ! અમારી સ્વામિનીજીને ઉઠીને સન્માન ન કર્યું? જા, ભૂમિ ઉપર પડ? તે અહીં અનેક જન્મ થયા પછી મેવાડમાં એક બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે વરસ બાવીસના થયા ત્યારે રામદાસના પિતા રામદાસને સંગ લઇને શ્રીરણછોડજીના દર્શને ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા હતા. તે રામદાસને દર્શન થયાં ત્યારે રામદાસે પિતાને કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીના સેવક તમે અમે થઇએ તો સારૂં. ત્યારે રામદાસના પિતાએ કહ્યું, જે એ બ્રાહ્મણ છે અમે પણ બ્રાહ્મણ છીએ. અમે

ने कही, जो–ये ब्राह्मण हैं, हमहू ब्राह्मण हैं, हम सेवक कौन के होइ ? अब कही सो कही, अब कहोगे तो तुम जानोगे । तब रामदास चुप होई रहे । पाछे पिता सों छिपकें श्रीआचार्यजी पास जाइ, रामदास दण्डवत करि बिनती किये । महाराज ! मेरो मन आपुके सेवक होंन को बहोत है । सो मेरे पिता हू सेवक होइ तो भगवद्धर्म घर में बने, क्लेश न होइ । सो मेरे पिता कों कछू आप अपनो महात्म दिखावो तो वह सेवक होई । काहेतें, अज्ञानी जीव है अहंकार में भरयो है । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू दैवी है, तेरो पिता साधारण है । सो तेरे पीछे कृतार्थ होइगो । तू, जो बात पिता सों कहेगो सो साँची होइगी, तू ही पिता कों महात्म दिखाईयो । तब रामदास दण्डवत करि पिता पास आये । सो पिता रसोई करत हतो । सो रसोई करत सगरो हाथ जरि गयो । तब पिता बहोत दुःखी भयो । तब रामदास ने कही एक बात हों कहों, जो–तुम मानो । तब पिता ने कही, कहो । तब रामदास ने कही, मैं हाथ में जल ले तिहारे आगे सोंह करत हों, जो–श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान होइ तो यह जलतें तिहारो हाथ आछो होइ जइयो । जो–और भांति होई तो तिहारो हाथ आछो न होइयो । सो मैं जल या प्रकार कहि तिहारे हाथ पर डारूंगो । जो–हाथ तिहारो आछो होई तो श्रीआचार्यजी के सेवक होऊ ।

સેવક કોના થઇએ ? આ કહ્યું તે કહ્યુ. હવે કહીશ તો તૂ જાણે. ત્યારે રામદાસ ચૂપ થઈ રહ્યા. પછી પિતાથી છાના શ્રીઆચાર્યજી પાસે જઈ રામદાસે દંડવત કરી વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારૂં મન આપના સેવક થવાનું ઘણું છે. તેથી મારો પિતા પણ સેવક થાય તો ભગવદ્ધર્મ ઘરમાં બને, ક્લેશ ન થાય. તેથી મારા પિતાને કંઈ આપ આપનુ માહાત્મ્ય દેખાડો તો તે સેવક થાય. કેમકે અજ્ઞાની જીવ છે અહંકારથી ભર્યો છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ દૈવી છે. તારો પિતા સાધારણ છે તે તારી પાછળ કૃતાર્થ થશે. તૂ જે વાત પિતાને કહીશ તે સાચી થશે. તૂ જ પિતાને મહાત્મ્ય દેખાડજે. ત્યારે રામદાસ દંડવત કરી પિતા પાસે આવ્યા. ત્યારે પિતા રસોઈ કરતો હતો. તે રસોઇ કરતાં બધો હાથ બળી ગયો. ત્યારે પિતા બહુ દુઃખી થયો. ત્યારે રામદાસે કહ્યુ, એક વાત હું કહું, જો તમે માનો તો. ત્યારે પિતાએ કહ્યુ, કહો. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, હું હાથમાં જળ લઈ તમારી આગળ સોગંદ ખાઉ છુ કે શ્રીઆચાર્યજી ભગવાન હોય તો આ જલથી તમારો હાથ સારો થઈ જજો. જે બીજા પ્રકારે હોય તો તમારો હાથ સારો ન થજો. તેથી હું જલ આ પ્રકારે કહી, તમારા હાથ ઉપર નાખીશ. જો હાથ તમારો સારો થાય તો શ્રીઆચાર્યજીના સેવક

ने कही, हां, हां, या प्रकार होयगो तो सेवक होऊंगो। तब रामदास
ल ले कहै, श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान होइ तो यह जल सों पिता
आछो होइ जैयो। यह कहि रामदास अपने हाथ को जल पिता के हाथ
ो। सो आछो ह्वै गयो। तब रामदास ने कही, चलो, अब श्रीआचार्यजी
होऊ। तब पिताने कही, बेटा तू बावरो भयो है? यह ऐसो ही लिख्यो
में, सो मेरे पुन्यतें मैं आछो भयो। रसोइ तो करूं। तब रामदास अति
होई के कह्यो, जो–अब तुम इतने पर नटि गये तो दोनों आंखिन सूं अंधे
। सोऊ ततकाल दोऊ आंखिन में फूली परि गई, आंधरो होई गयो। तब
रामदास सों कही, यह कहा कियो? अब मैं सेवक होऊँगो, जो तू कहे
, मेरी आंख आछी होई। तब रामदास ने कही, अब तो सेवक श्रीआ-
के होऊगे तब आंख आछी होइगी, नहीं तो बहोत दुःख पावोगे। तब
कही, चलो वेगे, पाछे दूसरो कार्य होइगो। तब रामदास पिता को हाथ
ीआचार्यजी के पास आई दंडवत करी। (तब) पिता ने विनती कियो,
! आपको प्रताप प्रसिद्ध देख्यो। तऊ मेरे मन में न आयो ताते मैं आंधरो
अब मैं आपकी सरन आयो हूँ, मेरो दुःख दूरि करो। तब श्रीआचार्यजी

ारे पिताએ કહ્યુ, હાં, હાં, આ પ્રકારે થશે તો સેવક થઇશ ત્યારે રામદાસ
જલ લઈ કહે, શ્રીઆચાર્યજી સાક્ષાત્ ભગવાન હોય આ જલથી પિતાનો
ારો થઇ જશે. એમ કહી રામદાસે પોતાના હાથનું જલ પિતાના હાથ ઉપર
તે સારો થઇ ગયો. ત્યારે રામદાસે કહ્યુ, ચાલો હવે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક
યારે પિતાએ કહ્યુ બેટા! તૂ બ્હાવરો થયો છે? આ એમજ લખ્યું હતું
, તેથી મારા પુણ્યથી હું સારો થયો. રસોઈ તો કરૂં! ત્યારે રામદાસે ક્રોધવત
કહ્યુ હવે તમે આટલા ઉપર ના કહી (ફરી ગયા) તો બન્ને આંખોથી
ા થઇ જાવ. ત્યારે તત્કાલ બન્ને આંખોમાં ફૂલાં પડી ગયાં. આંધળો થઇ ગયો.
પેતાએ રામદાસને કહ્યું, આ શું કર્યું? હવે હું સેવક થઇશ. તૂ જે કહે
કરૂ. મારી આંખો સારી થાય તો. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, હવે તો શ્રીઆચાર્ય-
સેવક થશો ત્યારે આંખ સારી થશે. નહીં તો બહુ દુઃખ પામશો. ત્યારે પિતાએ
ચાલો જલ્દી. પછી બીજું કાર્ય થશે. ત્યારે રામદાસે પિતાનો હાથ પકડી
ચાર્યજીની પાસે આવીને દંડવત કર્યા. ત્યારે પિતાએ વિનતી કરી, જે મહા-
આપનો પ્રતાપ પ્રસિદ્ધ જોયો તોયે મારા મનમાં ન આવ્યું તેથી હું આંધળો

ने रामदास सों कही, तू श्रीयमुनाजी में नहाइ आऊ, पिता कों इहां बैठ्यो रहन दे। तब रामदास श्रीयमुनाजी न्हाइ के श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी रामदास कों नाम सुनाय के, ब्रह्मसंबंध करायो। पाछे रामदास के पिता कों नाम सुनाये। तब रामदास श्रीआचार्यजी को चरणामृत आपु लेइ ताके नेत्रन सों लगाइ के कहै, अब नेत्र पहले जैसे खुल जाइ। सो आंख आछी होइ गई। तब पिता ने श्रीआचार्यजी सों दंडवत् करि कह्यो, महाराज, अब मोकों कहा कर्तव्य है ? जामें मैं सुख पाऊँ, सो बात बतावो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम रामदास पुत्र के कहे में रहोगे तो सदा सुखी रहौगे, कृतार्थ होइ मुक्ति पावोगे। तब रामदास ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराइ दीजिये। तब श्रीआचार्यजी ने प्रसादी वस्त्र दिये (और) कहें, इनकी सेवा मन लगाइ के करियो। तब रामदास दंडवत करि पिता कों ले डेरा पर आये। पाछे पिता सों कही, अब रसोई मैं करूंगो, तुम परचारगी करि दीजियो। तब पिता ने कही, जो तुम कहो सो करूंगो। तब रामदास रसोई करि वस्त्र सेवा कों भोग धरे। पाछे पिता की पातर, गाय को भाग काढि, महाप्रसाद लिये। पाछे श्रीआचार्यजी अड़ेल कों पधारे।

થયો. હવે હુ આપની શરણે આવ્યો છું. મારૂ દુઃખ દૂર કરો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રામદાસને કહ્યું, તૂ શ્રીજમુનાજીમાં ન્હાઇ આવ. પિતાને અહીં બેસી રહેવા દે. ત્યારે રામદાસ શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસબધ કરાવ્યું. પછી રામદાસના પિતાને નામ સભળાવ્યું. ત્યારે રામદાસે શ્રીઆચાર્યજીનુ ચરણામૃત પોતે લઇ તેના (પિતાના) નેત્રોથી લગાડીને કહ્યુ, હવે નેત્ર પહેલાં જેવાં ખુલી જાવ. પછી આંખ સારી થઇ ગઇ. ત્યારે પિતાએ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરીને કહ્યુ, મહારાજ ! હવે મને શું કર્તવ્ય છે? જેમાં હુ સુખ પામુ તે વાત બતાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે તમે રામદાસ પુત્રના કહેવામાં રહેશો તો સદા સુખી રહેશો કૃતાર્થ થઈ મુક્તિ પામશો. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મને ભગવત્સેવા પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસાદી વસ્ત્ર દીધાં અને કહ્યુ, આની સેવા મન લગાવીને કરજો. ત્યારે રામદાસ દંડવત્ કરી પિતાને લઈ ડેરા ઉપર આવ્યા. પછી પિતાને કહ્યુ, હવે હું રસોઇ કરીશ. તમે ઉપરની પરચારગી કરી દેજો. ત્યારે પિતાએ કહ્યુ, કે તમે કહેશો તેમ કરીશ. પછી રામદાસ રસોઈ કરી વસ્ત્ર-સેવાને ભોગ ધર્યા. પછી પિતાની પાતર, ગાયને ભાગ કાઢી મહાપ્રસાદ લીધો. પછી શ્રીઆચાર્યજી તો અડેલ પધાર્યા. પછી રામદાસ

और रामदास पिता कों ले मेवाड़ में आये, घर में रहे। सो सारे घर के रामदास की आज्ञा में रहै।

वार्ताप्रसंग १—**पाछे रामदासजी एक दिन मीराबाई के यहां गये। सो मीराबाई के ठाकुर आगे श्रीआचार्यजी के कीर्तन गावत हे। तब मीराबाई ने कही, कोई विष्णु पद श्रीठाकुरजी के गावो। तब रामदास कों रीस छूटी, कहें, दारी रांड़! यह कहा तेरे खसम के हैं? जा, आज पाछे तेरो मुख न देखोंगो। सो वह गाम में ते कुटुम्ब लेके उठि चले। तब मीराबाई ने बहोत कही। इनकों दक्षिणा देन लागी, सो कछू न लिये। कुटुम्ब ले और गाम में जाइ रहै। सो रामदासजी ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हते। अपने प्रभु में ऐसे अनुरक्त हते, जो फिर मीराबाई को मुख न देख्यो।** वार्ता ॥४७॥

भावप्रकाश—यह वार्ता म यह जताये, जो-पहले तो अन्य मार्गीय के पास जैये नाहीं। और जैये तो अपने मारग की वार्ता न करिये। अपने मार्ग के कीर्तन न करिये, जो करिये तो क्लेश होई। तातें श्रीगुसांईजी 'चतुःश्लोकी' में कहै हैं-

विजातीयजनाक्रान्ते निजधर्मस्य गोपनम्। देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव भावये ॥१॥

या प्रकार अपने धर्म कों गोप्य करि देशान्तर में रहनों। सो रामदास

પિતાને લઇને મેવાડમાં આવ્યા, ઘરમાં રહ્યા. તે પછી આખા ઘરના રામદાસની આજ્ઞામાં રહે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧-પછી એક દિવસ રામદાસજી મીરાબાઇને ત્યાં ગયા. ત્યાં મીરાબાઇના ઠાકુર આગળ શ્રીઆચાર્યજીનાં કીર્તન ગાતા હતા. ત્યારે મીરાબાઇએ કહ્યુ કોઇ વિષ્ણુ-પદ શ્રીઠાકુરજીનું ગાવો. ત્યારે રામદાસને રીસ આવી, કહે, દારી રાંડ આ શું તારા ધણીનાં છે? જા, આજ પછી તારૂં મુખ નહીં જોઉં. પછી તે ગામમાંથી કુટુંબ લઇને ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે મીરાબાઇએ ઘણું કહ્યું, એમને દક્ષિણા દેવા લાગી; કંઈ ન લીધું. કુટુંબ લઇ બીજા ગામમાં જઇ રહ્યા. તે રામદાસજી એવા ટેકના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. પોતાના પ્રભુમાં એવા અનુરક્ત હતા, જો ફરી મીરાબાઇનું મુખ ન જોયું. ॥ વાર્તા ૪૭ ॥

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જતાવ્યું કે પહેલાં તો અન્યમાર્ગીયની પાસે જૈયે નહીં અને જૈયે તો પોતાના માર્ગની વાર્તા ન કરીએ. પોતાના માર્ગના કીર્તન ન કરીએ. જો કરીએ તો ક્લેશ થાય. તેથી શ્રીગુસાંઈજી 'ચતુઃશ્લોકી' માં કહે છે- (શ્લોક ઉપર જુઓ)

આ પ્રકારે પોતાના ધર્મને ગોપ્ય કરી દેશાન્તરમાં રહેવું. તે રામદાસે જે

जा समय श्रीआचार्यजी के कीर्तन गाये, ता समय श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो-रामदास ने श्रीआचार्यजी के कीर्तन गाये हैं, तो मार्ग की वार्ता हू कहेंगे। तातें मीराबाई द्वारा कहवाए, जो-श्रीठाकुरजी के गावो। तब रामदास कों ज्ञान भयो, जो-यह मैं कहा कियो? श्रीगोवर्द्धनधर कों श्रम कराये। तब यह मनमें विचारे, जो-अब या समय गाम में जल पीवनो उचित नाहीं है। काहेतें, कदाचित गाम में रहैं, मीराबाई को मुख देखनो परे। हम हैं ब्राह्मण, फिर मीराबाई के प्रोहित। सो द्रव्य की लालच या जग में ऐसी बुरी है। जो-लोभ तें धर्म जाइगो, तातें या गाम में जल न लेनो सो सब कुटुम्ब सहित और गाम जाई रहे। तातें इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये? • वैष्णव ॥४७॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास चौहान, रजपूत, बुंदेलखंड के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में ये ललिताजी की सखी हैं। सो इनको नाम 'मधुएनी' है। सो इनके मनमें यह रहै, जो-मैं ललिताजी की नांई दोऊ स्वरूपन कों बीड़ी आरोगाऊं। तब श्रीठाकुरजी ने कही, अब यह तिहारो मनोरथ कोई काल में पूर्ण होइगो। सो यह बात, ललिताजी सुनिके मधुएनी कों शाप दिये।

સમય શ્રીઆચાર્યજીનાં કીર્તન ગાયાં તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનધરે વિચાર્યું, કે રામદાસે શ્રીઆચાર્યજીનાં કીર્તન ગાયાં છે તો માર્ગની વાર્તા પણ કહેશે. તેથી મીરાબાઈ દ્વારા કહેવડાવ્યું કે શ્રીઠાકુરજીનાં ગાવ. ત્યારે રામદાસને જ્ઞાન થયુ, કે મે આ શુ કર્યું! શ્રી ગોવર્દ્ધનધરને શ્રમ કરાવ્યો. ત્યારે એ મનમાં વિચારે, કે હવે આ ગામમાં જલ પીવું ઉચિત નથી. કેમકે, કદાચિત ગામમાં રહીએ તો મીરાબાઈનુ મુખ જેવુ પડે. અમે છીએ બ્રાહ્મણ, વળી મીરાબાઈના પ્રોહિત. દ્રવ્યની લાલચ આ જગતમાં આવી બુરી છે. માટે લોભથી ધર્મ જશે તેથી આ ગામમાં જલ ન લેવુ. તેથી બધા કુટુમ્બ સહિત બીજા ગામમાં જઈ રહ્યા તેથી એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ?

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રામદાસ ચોહાણ રજપૂત, બુંદેલખંડના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'મધુએની' છે. એમના મનમાં એ રહે છે કે, હુ લલિતાજીની માફક બેઉ સ્વરૂપોને બીડી આરોગાવું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, આ તારો મનોરથ કોઈ કાલમાં પૂર્ણ થશે.

जो–तू वीड़ी आरोगावेगी छिपिके, ता मैं कहा करोंगी? जाऊ भूमि में रहो, ऐसो गर्व कियो? सो संसार में अनेक जन्म भये। सो अबके बुदेलखंड में एक रजपूत के घर जन्में। तहां वर्ष बारह के भये। सो रामदास को पिता बुदेलखण्ड में राजा को चाकर हतो। सो पिताने कही, एक दिन चलो, राजा सों मिलाऊँ। काहेतें, राजा तें नित्य मिलत रहों, तो तिहारी चाकरी होइ जायगी। तब रामदास ने कही, मैं राजा के पास न जाऊंगो। काहेतें, मैं राजा कों सलाम न करोंगो, और राजा की चाकरी हूँ न करोंगो। मैं तो श्रीठाकुरजी की चाकरी करूंगो, जामें जन्म सुधरे। राजा की चाकरी सों कहा काम है? यह बात सुनि के पिता ने कही, जो–तोकों वैरागी मिल्यो है, भरमायो है। राजा की चाकरी न करेगो तो खायगो कहांते? तब रामदास ने कही, कहा सगरे जगत को पालन राजा करत है? पालन तो श्रीठाकुरजी करत हैं। तुम मूर्ख हो, तातें जानत हों, जो–हमारो पालन राजा करत है। यह सुनिके पिता मन में बहोत कुढ्यो। परन्तु एक बेटा प्यारो बहुत, तातें कछु बोल्यो नाहीं। घर में एक मनुष्य राख्यो, जो यहां कोई वैरागी आवन न पावें। कोई वैरागी की संगती या रामदास कों भई है, तातें यह ऐसो भयो है। सो मनुष्य

તે વાત લલિતાજીએ સાંભળીને મધુએનીને શાપ આપ્યો. જે તૂ છાની બીડી આરોગાવીશ તો હું શું કરીશ? જાવ, ભૂમિમાં રહો. એવો ગર્વ કર્યો? પછી સંસારમાં અનેક જન્મ થયા તે હમણાં બુંદેલખંડમાં એક રજપૂતના ઘરે જન્મ્યા. ત્યાં વર્ષ બારના થયા. તે રામદાસનો પિતા બુંદેલખંડના રાજાનો ચાકર હતો. તે પિતાએ કહ્યું, એક દિવસ ચાલો રાજાથી મેળાવું, કેમકે રાજાથી નિત્ય મળતા રહો તો તારી ચાકરી થઇ જશે. ત્યારે રામદાસે કહ્યું, હું રાજાની પાસે જઈશ નહી કેમકે હું રાજાને સલામ નહીં કરૂં અને રાજાની ચાકરી હું નહી કરૂં. હું શ્રીઠાકુરજીની ચાકરી કરીશ. જેમાં જન્મ સુધરે. રાજાની ચાકરીથી શુ કામ છે? એ વાત સાંભળીને પિતાએ કહ્યું, કે તને વૈરાગી મળ્યો છે, ભરમાવ્યો છે. રાજાની ચાકરી નહી કરે તો ખાઈશ ક્યાંથી? ત્યારે રામદાસે કહ્યું, શું આખા જગતનું પાલન રાજા કરે છે? પાલન તો શ્રીઠાકુરજી કરે છે. તમે મૂર્ખ છો. તેથી એમ જાણો છો, કે અમારૂં પાલન રાજા કરે છે. એ સાંભળીને પિતા મનમાં બહુ બળ્યો. પરંતુ એક બેટા વ્હાલો ઘણો, તેથી કંઈ બોલ્યો નહી. ઘરમાં એક મનુષ્ય રાખ્યો. કે અહીં કોઈ વૈરાગી આવવા ન પામે. કોઇ વૈરાગીની સંગતિ આ રામદાસને થઈ છે તેથી આ એવો થયો છે. તેથી મનુષ્ય ઠીક રાખ્યો. અને રામદાસ તો રામકૃષ્ણ એ જપ

ठीक राखे। और रामदास तो 'रामकृष्ण' यह जप करे। और न काहू सों बोले, न बात करे। सो यह बात एक रजपूत ने सुनी, सो रामदास की वार्ता सब राजा के आगे कही। तब राजाने रामदास के पिता सों कही, जो–जा, अपने बेटा कों इहां ले आऊ। इतनो बड़ो भयो। मेरे पास नहीं लायो ? तब रामदास के पिता ने उह राजा के आगे हाथ जोरि कें डरपि के कह्यो, जो–मेरे बेटा की कोई वैरागी के संग तें बुद्धि बिगरी है। सो मोहू कों नाहीं गिनत है। सो मैं मनुष्य रखवारी बैठारयो है, जो–कोई वैरागी सों मिलवे न पावे। सो कछु दिन में समुझे तो मैं लाऊं, अबही अज्ञान है। तब राजा ने कही समुझाय के काल्हि मेरे पास लाऊ, नहीं तो मैं वाकों बुलाय के बंदीखाने राखोंगो। तब कैसे भाजेगो ? और हमनें सुनि है, जो–मोकों सलाम न करेगो। सो देखों, कैसे न करेगो ? तब रामदास को पिता डरपि, घर आई रामदास सों कहें, जो–अजहू कछू नाहीं बिगरयो, राजा पास चलि, मिलि आऊ, नाहीं तो राजा बंदीखाने देइगो। तब रामदास ने कही, तुम मोकों कहा डरपावत हौ ? भाग्य में बंदीखानो और जो दुःख लिख्यो होइगो, सो काहू पे टरेगो नाहीं। मैं राजा पास आपु ते चलाई के न जाऊंगो। तब पिता समुझाय हारयो, परि रामदास ने मानी नाहीं। सो दूसरो दिन भयो तब राजा ने रामदास के पिता

કરે અને ન કોઇથી બોલે ન વાત કરે. તે એ વાત એક રજપૂતે સાંભળી. તે રામદાસની વાર્તા બધી રાજાની આગળ કહી. ત્યારે રાજાએ રામદાસના પિતાની આગળ કહ્યું, કે જા, તારા બેટાને અહી લઈ આવ. આટલો મોટો થયો તોએ મારી પાસે નહી લાવ્યો ? ત્યારે રામદાસના પિતાએ તે રાજાની આગળ હાથ જોડીને ડરીને કહ્યું, કે, મારા બેટાની કોઈ વૈરાગીના સંગથી બુદ્ધિ બગડી છે. તે મને પણ ગણકારતો નથી. તેથી મે મનુષ્ય રખવાળી માટે બેસાડયો છે કે કોઇ વૈરાગીથી મળવા ન પામે. પછી થોડા દિવસમાં સમજે તો હુ લાવુ. હજુ અજ્ઞાન છે. ત્યારે રાજાએ કહ્યુ, સમજાવીને કાલે મારી પાસે લાવ. નહીં તો હુ એને બોલાવીને કેદખાનામાં રાખીશ ત્યારે કેવી રીતે ભાગશે ? વળી અમે સાંભળ્યુ છે કે મને સલામ નહી કરે! તે જોઉ, કેમ નહીં કરે ? ત્યારે રામદાસનો પિતા ડરી, ઘર આવી, રામદાસને કહે, જે હજુયે કઈ બગડયુ નથી. રાજા પાસે ચાલ, મળી આવ, નહીં તો રાજા કેદખાનામા રાખશે. ત્યારે રામદાસે કહ્યુ, તમે મને શુ ડરાવો છો ? ભાગ્યમાં કેદખાનુ અને જે દુઃખ લખ્યુ હશે તો કોઇથી ટળશે નહીં. હું રાજા પાસે આપમેળે ચલાવીને નહીં જઉ. ત્યારે પિતા સમજાવીને હારયો. પણ રામદાસે માન્યુ નહીં. પછી

सों कही, तू बेटा कों लायो नाहीं, तातें यह तेरो दोष है। अब तू खबरदार रहियो तोसों समुझोंगो। तब रामदास को पिता डरपि के राजा सों कह्यो, मेरे ऊपर रीस मति करो, घर में पुत्र है, वाकों बुलाय के समुझि लेऊ। मैं बहुत समुझायो, उह न मान्यो। तब राजा नें दस मनुष्य बुलाय के कह्यो, रामदास कों ले आवो। तब मनुष्य आइके रामदास सों कहैं तुमकों राजा बुलायो है।-तब रामदास ने कही, मेरो राजा सों कहा काम है? मैं नाहीं आऊँगो। तब मनुष्य रामदास कों हाथ पकरि बांधि राजा पास ले गये। जायके सब बात कही। जो-या प्रकार बोल्यो, जो-मेरे राजा सों कहा काम हैं? तब हम बाँधि के लाये। तब राजाने रामदास सों कही, तू मोकों सलाम न करेगो तो मैं तोकूँ मारूंगो, बंदीखाने राखूँगो। तब रामदास ने कही, तू अपने कूँ बचाव, मोकों कहा मारेगो? तब राजा ने मनुष्यन सों कह्यो, याकों बन्दीखाने राखि, कछुक मारियो, डरपाईयो। खाइबे कों मति दीजियो। जा प्रकार सूधो होई मोकों सलाम करे सो करियो। सो रामदास कों बंदीखाने डारि अनेक दुःख दियो। रामदास कछु बोले नाहीं। यह बात राजा की रानी सुनि के राजा सों कह्यो, यह तुम कहा काम कियो? दस बारह बरस

બીજે દિવસ થયો ત્યારે રાજાએ રામદાસના પિતાને કહ્યું, તૂ બેટાને લાવ્યો નહીં? તેથી આ તારો દોષ છે. હવે તૂ ખબરદાર રહેજે તને સમજીશ. ત્યારે રામદાસના પિતાએ ડરીને રાજાને કહ્યું, મારા ઉપર રીસ ન કરો, ઘરમાં પુત્ર છે તેને બોલાવીને સમજાવી લો. મેં બહુ સમજાવ્યો પણ એ માન્યો નહીં. ત્યારે રાજાએ દશ મનુ-ષ્યને બોલાવીને કહ્યુ, રામદાસને લઈ આવો. ત્યારે મનુષ્યોએ આવીને રામદાસને કહ્યું, તમને રાજા બોલાવે છે. ત્યારે રામદાસે કહ્યુ, મારૂ રાજાથી શુ કામ છે? હું આવીશ નહીં. ત્યારે મનુષ્યો રામદાસનો હાથ પકડી બાંધી રાજા પાસે લઈ ગયા. જઇને બધી વાત કહી, કે આ પ્રકારે બોલ્યો કે મારે રાજાથી શું કામ છે? ત્યારે અમે બાંધીને લાવ્યા. ત્યારે રાજાએ રામદાસને કહ્યુ, તૂં મને સલામ નહીં કરે તો હું તને મારીશ. કેદખાને રાખીશ. ત્યારે રામદાસે કહ્યુ, તૂ તને પોતાને તો બચાવ મને શું મારીશ? ત્યારે રાજાએ મનુષ્યોને કહ્યુ આને કેદખાનામાં રાખો. કંઈક મારજો, ડરાવજો. ખાવાને ન આપતા. જે પ્રકારે સીધો થાય, મને સલામ કરે, તેમ કરજો. પછી રામદાસને કેદખાને નાખી અનેક દુઃખ દીધાં. રામદાસ કંઈ બોલ્યા નહીં. (પછી) આ વાત રાજાની રાણીએ સાંભળીને રાજાને કહ્યું, આ તમે શું કામ કર્યું? દશ-બાર વર્ષનો છોકરો તમને સલામ ન કરે તો શું થયું? અને

को लरिका तुमकों न सलाम कियो तो कहा भयो ? वाकों इतनो दुःख दीनो, सो आछो नाहीं। कहा जानिये, अब वाको फल कछू बुरो होनहारो है। तातें अबहू वह बालक कों छोड़ि देऊ। या प्रकार रानी ने समुझायो। परन्तु राजा माने नाहीं। सो तीसरे दिन अर्द्ध रात्रि समय दक्षिण सों दूसरे राजा की फोज आई। सो लराई भई। उह राजा ने यह राजा कों मारयो, गाम लूट्यो। रामदास को पिता कहूँ भागि गयो। सगरे बंदीखाने तें छूटे। सो रामदास बुंदेलखण्ड तें चले, सो मथुरा आये, पाछे व्रज सगरो देखि प्रसन्न भये। तब विचारे, जो–कहूँ मेरो पिता आई निकसे, तो मोकों ले जायगो। तातें गोवर्द्धन की कंदरा 'अपछरा कुंड' पर रहै। ताके भीतर सगरे दिन बैठते। भगवद् नाम लेते। रात्रि होय तब व्रज-वासीन के घर सों मांगि के जो मिले तामें निर्वाह करते।

वार्ता–प्रसंग १—**सो जब श्रीआचार्यजी प्रथम ही श्रीनाथजी कों प्रगट किये तब कच्चो छोटो सो मंदिर करि, तापर छानि छाइकें श्रीनाथजी कों पाट बैठारे। तब रामदास कों श्रीठाकुरजी नें जताई, जो–श्रीआचार्यजी को सेवक तू होऊ, मेरी सेवा करियो।**

भावप्रकाश—काहेतें, जो–लीला में तू मेरे पास मांग्यो हतो, ललि-

એટલું દુઃખ દીધું તે સારું નહીં. શું જાણીએ, હવે આનું ફલ કંઇ ખોટું થવાનું છે. તેથી હજુયે તે બાલકને છોડી દો. એ પ્રકારે રાણીએ સમજાવ્યું. પરંતુ રાજાએ માન્યું નહીં. પછી ત્રીજા દિવસે અર્દ્ધરાત્રિ સમય દક્ષિણથી બીજા રાજાની ફોજ આવી. તે લડાઈ થઈ તે રાજાએ આ રાજાને માર્યો. ગામ લૂંટ્યું. રામદાસનો પિતા કંઈ ભાગી ગયો. બધા કેદખાનામાંથી છુટ્યા. પછી રામદાસ બુંદેલખંડથી ચાલ્યા તે મથુરા આવ્યા. પછી વ્રજ બધું જોઈ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે વિચાર્યું કે, કંઈ મારો પિતા આવી નિકળે તો મને લઇ જશે. તેથી ગોવર્દ્ધનની કંદરા અપ્સરા કુંડ ઉપર રહ્યા. તેના અંદર આખો દિવસ બેસતા. ભગવન્નામ લેતા. રાત્રિ થાય ત્યારે વ્રજવાસીઓના ઘરથી માગીને જે મળે તેમાં નિર્વાહ કરતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રથમ જ શ્રીનાથજીને પ્રકટ કર્યા ત્યારે કાચું નાનું મંદિર કરી તેના ઉપર ઘાસનું છાપરું છવાઇ ને શ્રીનાથજીને પાટ બેસાડ્યા. ત્યારે રામદાસને શ્રીઠાકુરજીએ જતાવ્યું કે, તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થઇ મારી સેવા કરજે.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, તેં લીલામાં મારી પાસે માંગ્યુ હતું (કે) લલિ-

ताजी की सेवा मोकों मिले। सो मैं कही हती, जो–कोई कालमें सिद्ध होयगी, सो समय अब सिद्ध है, सो समय अब तेरो सेवा को आयो है।

तब रामदास आइकें श्रीआचार्यजी कों दण्डवत किये। तब श्रीआचार्यजी रामदास कों निकट बुलाइ नाम–निवेदन करवाई के कहें, तुम श्रीनाथजी की सेवा करो। व्रजवासीन के घरतें जो–कछु दूध दहीं अन्न सामग्री आवे सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग धरि तुम निर्वाह करियो। पाछे श्रीआचार्यजी सदू पांडे, कुंभनदास आदि व्रजबासी सों कहें, तुम श्रीनाथजी कों ठीक राखियो। पाछें दूध, दहीं, माखन, अन्न, सीधा, सामग्री की सोंज सब व्रजवासी दे जाते। रामदास भोग धरि के निर्वाह करते। पाछे पूरनमलकों श्रीनाथजी नें मन्दिर समरायवे की जब आज्ञा दीनी, तब पूरनमल आये। मन्दिर समरावन लागे। तब द्रव्य निघटि गयो। फेरि कमाईके आइ मन्दिर समरायो, तब रामदास की देह छूटी। लीला में प्राप्त भये।

भावप्रकाश—काहेतें, इनकों मनोर्थ एकान्त सेवा को हतो। सो अकेले सेवा करि लीला में गये।

वार्ता–प्रसंग २—अब श्रीनाथजी को मन वैभव बढ़ावन को भयो, सो नये मंदिर में विराजे। तब श्रीआचार्यजी ने सदू पांडे सों कह्यो,

---

તાજીની સેવા મને મળે. ત્યારે મે કહ્યુ હતું કે કોઈ કાળમાં સિદ્ધ થશે. તે સમય હવે સિદ્ધ છે. તે સમય હવે તારી સેવાનો આવ્યો છે.

ત્યારે રામદાસે આવીને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રામદાસને પાસે બોલાવી નામ–નિવેદન કરાવીને કહે, તમે શ્રીનાથજીની સેવા કરો. વ્રજવાસીઓના ઘરથી જે કંઇ દૂધ–દહીં અન્ન સામગ્રી આવે તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભોગ ધરી તમે નિર્વાહ કરજો. પછી શ્રીઆચાર્યજી, સદૂ પાંડે, કુંભનદાસ આદિ વ્રજવાસીઓને કહે, તમે શ્રીનાથજીની (બધી રીતે) સંભાળ રાખજો. પછી દૂધ–દહીં, માખણ, અન્ન, સીધા સામગ્રીની વસ્તુ બધા વ્રજવાસી દઇ જતા. રામદાસ ભોગ ધરીને નિર્વાહ કરતા. પછી જ્યારે પુરણમલને શ્રીનાથજીએ મંદિર સિદ્ધ કરવાની આજ્ઞા આપી ત્યારે પૂરણમલ આવ્યા. મંદિર સિદ્ધ કરાવવા લાગ્યા ત્યારે દ્રવ્ય ઘટી ગયું. ફરી કમાઇને આવી મંદિર સિદ્ધ કરાવ્યું. ત્યારે રામદાસની દેહ છુટી. લીલામાં પ્રાપ્ત થયા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે, એમનો મનોરથ એકાંત સેવાનો હતો. તે એકલા સેવા કરી લીલામાં ગયા.

વાર્તા પ્રસંગ ૨–હવે શ્રીનાથજીનું મન વૈભવ વધારવાનું થયું. તે નવા મંદિરમાં બિરાજ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ સદૂપાંડેને કહ્યું, દશ–પાંચ વ્રજવાસી સેવા

दस–पांच व्रजवासी सेवा लायक होई तो सेवा करें। तब सदू पांडे ने कही, महाराज! व्रजवासी सों सेवा न होई सकेगी, घरको काम है। तब श्रीआचार्यजी राधाकुंड सों बंगाली बुलाय रुद्र कुण्ड पर एक कुटी उनकों कराय दीनी, और श्रीनाथजी की सेवा दीनी। पाछे कृष्णदास अधिकारी ने बंगाली निकासि, रामदास सांचोरा ब्राह्मन कों मुखिया भीतरिया कीये। सो सब कृष्णदास की वार्ता में कहे हैं। सो व्रजवासी सगरे पहले, देवदमन कहेते। पाछें गोपाल नाम गाय भई तब कहन लागे। पाछे श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथ नाम धरे। या प्रकार सों रामदास भावपूर्वक सेवा किये हैं। और मानसी सेवा में मग्न रहते। सो रामदास ऐसे टेक के कृपापात्र वैष्णव हे। तातें इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये। वार्ता ॥४८॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामानंद पंडित, सारस्वत ब्राह्मण थानेस्वर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये निकुंज में के तमचर हैं। सो एक समय रात्रि घरी छे पाछली रही, तब यह तमचर बोलि उठ्यो। सो श्रीठाकुरजी ने जानी, सबेरो भयो, सो उठे। तब ललितादिक सखी ने कही, जो–अबही रात्रि बहोत है।

લાયક હોય તો સેવા કરે. ત્યારે સદૂપાંડેએ કહ્યું, મહારાજ! વ્રજવાસીથી સેવા નહીં થઈ શકે, ઘરનું કામ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રાધાકુંડથી બંગાલીને બોલાવી રૂદ્રકુંડ ઉપર એક મઢી એમને કરાવી દીધી અને શ્રીનાથજીની સેવા આપી. પછી કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ બંગાલીને કાઢયા. રામદાસ સાંચોરા બ્રાહ્મણને મુખિયા–ભીતરીયા કર્યા. તે બધું કૃષ્ણદાસની વાર્તામાં કહ્યું છે. તે વ્રજવાસી બધા પહેલાં (શ્રીનાથજીને) દેવદમન કહેતા. પછી ગાયો થઈ ત્યારે ગોપાલ નામ કહેવા લાગ્યા પછી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથ નામ ધર્યું. એ પ્રકારે રામદાસે ભાવપૂર્વક સેવા કરી છે અને એ માનસી સેવામાં મગ્ન રહેતા. તે રામદાસ એવા ટેકના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવ હતા. તેથી એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ? ॥ વાર્તા ૪૮ ॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રામાનંદ પંડિત સારસ્વત બ્રાહ્મણ, થાનેશ્વરના તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ નિકુંજમાંના 'તમચર' (કૂકડા) છે. તે એક સમય રાત્રિ ઘડી છ પાછલી રહી ત્યારે એ તમચર બોલી ઉઠયો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ જાણ્યું, સવાર થયુ. તે ઉઠયા. ત્યારે લલિતાદિક સખીએ કહ્યું, કે હજી રાત્રિ ઘણી

तब श्रीस्वामिनीजी क्रोध करि के कहें, जो–ऐसे पक्षी को इहाँ कहा काम ? जो–समें विना मनकों खेद करायो । तातें याको संसार में जन्म होऊ । तब वह तमचर संसार में अनेक जन्म पाये । सो अबके थानेस्वर में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे । सो थानेस्वर में ब्याह भयो, वर्ष तीस के भये । तब माता पिता ने देह छोड़ी । सो स्त्री पुरुष रहत हते । श्रीभागवत आदि पुरान बाँचते, कथा कहतें । तातें इनकों सब कोई पंडित कहते । लोगन सों चर्चा करते । सो एक समें श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे, तब रामानन्द चर्चा करिवे कों आयो । तब श्रीआचार्यजी के आगे वाचा बंद ह्वै गई । कहे कछु, निकसे कछु । तब श्रीआचार्यजी रामानन्द सों कहें, तुम वाद करिवे आये हो, सो ऐसे क्यों बोलत हो ? तब रामानन्द कों लाज लागी, सो घर में जाइ सरस्वती को पूजन और जप करन बैठ्यो । और कह्यो, जो–सरस्वती प्रसन्न होय तब ही जल पान करूं । रात्रि दिन ऐसे बैठे, तीन दिन बीते । तब सरस्वती प्रसन्न होई कह्यों, मैं प्रसन्न हों, तेरे मन आवे सो मांग । तब रामानन्द पंडित ने कही, मोसों कोई पंडित जीते नांहीं, मैं सबकों जीतों । यही माँगत हों । तब सरस्वती ने कही, जो–जा, ऐसेई होयगो । तब अहंकार करि फेरि श्रीआचार्यजी के पास वाद करन कों आयो ।

છે. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી ક્રોધ કરીને કહે કે આવા પક્ષીનું અહીં શું કામ ? જે સમય વિના મનમાં ખેદ કરાવ્યો. તેથી એનો સંસારમાં જન્મ થાવ. ત્યારે એ તમચર સંસારમાં અનેક જન્મ પામ્યા. હવે એ થાનેશ્વરમાં એક સારસ્વત બ્રાહ્મણને ઘેરે જન્મ્યા. પછી થાનેશ્વરમાં લગ્ન થયું. વર્ષ તીસના થયા ત્યારે માતા–પિતાએ દેહ છોડી. પછી સ્ત્રી–પુરૂષ રહેતાં હતાં. શ્રીભાગવત આદિ પુરાણ વાંચતા, કથા કહેતા. તેથી એમને બધા પંડિત કહેતા. લોકોથી ચર્ચા કરતા. પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વર પધાર્યા. ત્યારે રામાનંદ ચર્ચા કરવાને આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આગળ વાણી બંધ થઇ ગઈ. કહે કંઈ, નિકળે કંઇ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી રામાનંદને કહે, તમે વાદ કરવા આવ્યા છો તે આમ કેમ બોલો છો ? ત્યારે રામાનંદને લાજ લાગી. તે ઘરમાં જઈ સરસ્વતીનું પૂજન અને જપ કરવા બેઠો. અને કહ્યું, કે સરસ્વતી પ્રસન્ન હોય ત્યારે જ જલપાન કરૂં. રાત્રિ દિવસ એમ બેઠા ત્રણ દિવસ વીત્યા. ત્યારે સરસ્વતીએ પ્રસન્ન થઈ કહ્યું, હું પ્રસન્ન છું. તારા મનમાં આવે તે માંગ. ત્યારે રામાનંદ પંડિતે કહ્યું, મને કોઇ પંડિત જીતે નહીં. હું બધાને જીતું. એ માંગું છું. ત્યારે સરસ્વતીએ કહ્યું, કે જા, એમજ થશે. ત્યારે અહંકાર

सो फेरि वैसे ही वाचा बंद भई, बोले कछु, वचन कछु कहै। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तू सरस्वती कों प्रसन्न करि वाद करन कों आयो, सो फेरि ऐसे क्यों बोलत हैं ? तब रामानन्द कों बहुत लाज आई। घर में जाई, वैसे ही फेरि सरस्वती आराधन कियो। तब सरस्वती फेरि प्रसन्न होई के रामानन्द सों कही, अब कहा मांगत हो ? विद्या तो तोकों दीनी है। तब रामानन्द ने कही, मोकों कहा विद्या दीनी ? मैं श्रीआचार्यजी सों वाद करिवे गयो, तहां तो कछु जुवाब नहिं निकसत। तब सरस्वती नें कही, जो–मैं तोकों पंडित जीतिवे को वरदान दियो है, कछु ईश्वर जीतिवे कों नहीं कही। श्रीआचार्यजी तो साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचन्द्र हैं। तिनसूं तू वाद करन गयो, तो कैसे जीतेगो ? तातें अपनो भलो चाहे तो श्रीआचार्यजी की सरन जा, संसार तें छूटि कृतार्थ होउ। और उनसों तू कबहू न जीतेगो। तब रामानन्द जाई के श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि विनती किये, महाराज ! मै आपको स्वरूप नहिं जान्यो। आप साक्षात् ईश्वर हो। और कही, मैं जीव हों। मो पर कृपा करि के सरनि लीजिये। मेरो अपराध क्षमा करो, जो–मैं आपसों जीव बुद्धि करि वाद करन आयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम पंडित हो, हमारे सेवक

કરી ફરી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે વાદ કરવાને આવ્યો. તે ફરી એમજ વાણી બંધ થઈ. બોલે કંઈ વચન કંઈ કહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તૂ સરસ્વતીને પ્રસન્ન કરી વાદ કરવાને આવ્યો તે ફરી એમ કેમ બોલે છે ? ત્યારે રામાનંદને બહુ લાજ આવી. ઘરમાં જઈ તેજ પ્રમાણે ફરી સરસ્વતીનુ આરાધન કર્યું. ત્યારે સરસ્વતીએ ફરી પ્રસન્ન થઇને રામાનદને કહ્યુ, હવે શુ માંગે છે ? વિદ્યા તો તને આપી છે. ત્યારે રામાનદે કહ્યુ, મને શી વિદ્યા આપી ? હુ શ્રીઆચાર્યજીથી વાદ કરવા ગયો ત્યાં તો કંઈ ઉત્તર નિકળતો નથી ! ત્યારે સરસ્વતીએ કહ્યુ, કે મે તને પંડિત જીતવાનુ વરદાન આપ્યું છે કંઈ ઈશ્વર જીતવાનુ નથી કહ્યું. શ્રીઆચાર્યજી તો સાક્ષાત્ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચદ્ર છે. તેમનાથી તૂ વાદ કરવાને ગયો તે કેવી રીતે જીતીશ ? તેથી તૂ તારૂં ભલું ચાહે તો શ્રીઆચાર્યજીની શરણે જા, સંસારથી છુટી કૃતાર્થ થા. અને એમનાથી તૂ કદીય નહી જીતીશ. ત્યારે રામાનદે જઇને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ ! મેં આપનાં સ્વરૂપને જાણ્યુ નહી આપ સાક્ષાત્ ઇશ્વર છો. અને કહ્યુ, હુ જીવ છું. મારા ઉપર કૃપા કરીને (મને) શરણે લો. મારો અપરાધ ક્ષમા કરો, કે હું આપનાથી જીવ-બુદ્ધિ કરીને વિવાદ કરવા આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે પડિત છો અમારા સેવક

होई कहा करोगे ? तब रामानन्द ने कही, महाराज ! अब मोकों मति भूलवो, मैं आपकी सरनी आयो हूं, मोकों अङ्गीकार करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–जा, न्हाई आऊ। तब रामानन्द पंडित सरस्वती में न्हाई के श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी नें नाम निवेदन करायो। तब रामानन्द विनती करी, जो–महाराज ! मेरे घर पधारिये। मेरी स्त्री कों अङ्गीकार करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो पृथ्वी परिक्रमा जाइवे की तैयारी हैं, तातें वेगि स्त्री कों यहाँ लाउ, नाम सुनाइ देइ। पाछे फेरि थानेस्वर पधारेंगे। तब तेरे घर उतरेंगे। तब रामानन्द घर जाई अपनी स्त्री कों लिवाय लायो। तब श्रीआचार्यजी ने रामानन्द की स्त्री कों नाम सुनायो। तब रामानन्द ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराई दीजे। तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे श्रीमद् भागवत की पुस्तक हैं, तिनकों तू भोग धरियो। और सेवा तुम सों होनी कठिन है। तब रामानन्द दण्डवत करि स्त्री सहित अपने घर आये। श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें।

वार्ता–प्रसंग १—**पाछे एक समें श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे। सो रात्रि कों रामानन्द के घर रहे।**

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो–रसोई पाक और वैष्णव के घर करयो।

થઇ શું કરશો ? ત્યારે રામાનંદે કહ્યું મહારાજ ! હવે મને ભૂલાવો નહીં, હું આપની શરણ આવ્યો છું. મને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે, જા ન્હાઇ આવ. ત્યારે રામાનંદ પંડિત સરસ્વતીમાં ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે રામાનંદે વિનતિ કરી કે, મહારાજ ! મારા ઘર પધારો, મારી સ્ત્રીને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તો પૃથ્વી પરિક્રમા જવાની તૈયારી છે. તેથી જલ્દી સ્ત્રીને અહીં લાવ. નામ સંભળાવી દઉં. પછી ફરી થાનેશ્વર પધારીશું ત્યારે તારા ઘરે ઉતરીશું. ત્યારે રામાનંદ ઘર જઇને પોતાની સ્ત્રીને લાવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રામાનંદની સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે રામાનંદે કહ્યું, મહારાજ ! મને ભગવત્સેવા પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારે શ્રીમદ્ભાગવતનું પુસ્તક છે તેને તૂ ભોગ ધરજે. બીજી સેવા તમારાથી થવી કઠિણ છે. ત્યારે રામાનંદે દંડવત્ કરી સ્ત્રી સહિત પોતાના ઘરે આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧—પછી એક સમયે શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વર પધાર્યા. ત્યારે રાત્રિએ રામાનંદના ઘરે રહ્યા.

सो पिछली रात्रि कों रामानन्द नें उठिकें स्त्री सों कही, वेगिके, गोवर सँकेलि, नांतर वैष्णव उठि के सब गोबर लें जाइगें। सो यह बात रामानन्द की श्रीआचार्यजी ने सुनी। सो आप उठिके मन में बहोत क्रोध किये। जो–या प्रकार गोवर कों कहेत है, उठाई ले जाइंगे! तो वैष्णव को और समाधान कहा करेगो? वैष्णव मेरे प्रानप्रिय, तिनकों यह ऐसी बात कही। तब श्रीआचार्यजी क्रोध करि हाथ में जल लेंके, वेद मन्त्र पढ़ि रामानन्द के उपर छिरकि के कहे, मैंने तेरो त्याग कियो। यह कहि वाही समें संग के वैष्णवन कों साथ ले उहां ते उठि चले। सो थानेस्वर तें तीन कोस पर एक गाम 'अमीतीर्थ' है, तहां जाई के स्नान सन्ध्या किये। और जा समें रामानन्द के घरतें श्रीआचार्यजी उठिके चलन लागें ता समें थानेस्वर के वैष्णवन ने बहोत विनती करी, महाराज! हमारे घर पधारियें। तब श्रीआचार्यजी कहें, अव तो या समें ये गाम में जलपान न करूंगो। यह कहि पधारे, रहें नाहीं।

भावप्रकाश—सो यातें, जो–श्रीआचार्यजी को अपराध करतो तो आप थोरो दण्ड दे क्षमा करते। वैष्णव को अपराध है, सो वेगो छूटे नाहीं, तातें या

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે રસોઇ પાક બીજા વૈષ્ણવના ઘરે કર્યો.

તે પાછલી રાત્રિએ રામાનંદે ઉઠીને સ્ત્રીને કહ્યું, જલ્દીથી છાણ ઉઠાવ, નહીં તો વૈષ્ણવ ઉઠીને બધું છાણ લઇ જશે. એ વાત રામાનંદની શ્રીઆચાર્યજીએ સાંભળી. ત્યારે આપે ઉઠીને મનમાં બહુ ક્રોધ કર્યો. કે, આ પ્રકારે છાણનું કહે છે, ઉઠાવીને લઇ જશે તો વૈષ્ણવનું બીજું સમાધાન શું કરશે? વૈષ્ણવ મારા પ્રાણપ્રિય તેમને આને આવી વાત કહી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ક્રોધ કરી હાથમાં જલ લઇને વેદમંત્ર ભણીને રામાનંદના ઉપર છાટીને કહે, મેં તારો ત્યાગ કર્યો. એમ કહી તે જ સમયે સાથેના વૈષ્ણવોને સંગે લઈ ત્યાંથી ઉઠી ચાલ્યા. તે થાનેશ્વરથી ત્રણ કોસ ઉપર એક ગામ 'અમીતીર્થ' છે ત્યાં જઇને સ્નાન સંધ્યા કર્યાં. અને જે સમયે રામાનંદના ઘરથી શ્રીઆચાર્યજી ઉઠીને ચાલવા લાગ્યા તે સમયે થાનેશ્વરના વૈષ્ણવોએ ઘણી વિનતી કરી, મહારાજ! અમારા ઘરે પધારીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તો આ સમયે આ ગામમાં જલપાન નહીં કરૂં એમ કહી પધાર્યા; રહ્યા નહી.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી કે શ્રીઆચાર્યજીનો અપરાધ કરતો તો આપ થોડો દંડ દઈ ક્ષમા કરતા. વૈષ્ણવનો અપરાધ છે તે જલ્દી છુટે નહી. તેથી આ

गाम में रहे नाहीं। और जब ब्रह्मसंबंध की आज्ञा श्रीगोकुल में श्रीठाकुरजी नें श्रीआचार्यजी कों दीनी। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जाकों तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे ताकों मैं न छोडूंगो। सो परीक्षा देखन अर्थ श्रीआचार्यजी अपराध को मिस पाई त्याग करें। जो यह ठीक परेगी। और श्रीआचार्यजी क्रोध बहोत यातें किये, जो–रामानन्द ने स्त्री सों यह कही, वेगि गोबर उठाई नाँतर वैष्णव ले जाइंगे। सो वैष्णव नाम लिये तातें क्रोध उपज्यो। जो–काहू वैष्णव को नाम ले कहते। (तो) एक दोई वैष्णव को अपराध होतो। इनने तो वैष्णव कह्यो। सो वैष्णव में तो मुख्य, व्रजभक्त आदि सगरे पर बात जाइ लगी। तातें श्रीआचार्यजी कों बहोत क्रोध उपज्यो। काहे तें, आप नवरत्न में कहे हैं–'निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा-तादृशैरपि।' यह निवेदन को स्मरण तादृशी वैष्णव सों मिलिके करे तो निवेदन को फल, भाव जाने। सो वैष्णव कों गोबर के लिये ऐसें बोलत हैं? और धोल में यह कहे हैं, 'तन मन धन समर्पन करिने वैष्णव ने अनुसरियेजी।' और यह कीर्तन—

* राग केदारो *

हों वारी इन वल्लभीयन पर।
मेरे तन को करों बिछोना सीस धरों इनके चरनन तर ॥ १ ॥

ગામમાં રહ્યા નહીં. વળી જ્યારે બ્રહ્મસંબંધની આજ્ઞા શ્રીગોકુલમાં શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કરી, ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું (હતું) કે જેને તમે બ્રહ્મસંબંધ કરાવશો તેને હું નહીં છોડું. તે પરીક્ષા દેખવાને માટે શ્રીઆચાર્યજી આપે અપ-રાધનું બ્હાનું ઓઈને (તેમનો) ત્યાગ કર્યો. કેમ, જે આ (સમયે) ઠીક પડશે. વળી શ્રીઆચાર્યજીએ ઘણો ક્રોધ એથી કર્યો, કે રામાનંદે સ્ત્રીને એ કહ્યું, કે છાણ જલ્દી ઉઠાવ નહીં તો વૈષ્ણવો લઈ જશે. તે વૈષ્ણવનામ લીધું તેથી ક્રોધ ઉપજ્યો. કેમ જે, કોઈ વૈષ્ણવનુ નામ લઈ કહેતા તો એક–બે વૈષ્ણવનો અપરાધ થતો (પણ) એમણે તો વૈષ્ણવ કહ્યા. તે વૈષ્ણવમાં તો મુખ્ય વ્રજભક્ત આદિ બધા ઉપર વાત લાગુ પડી તેથી શ્રીઆચાર્યજીને બહુ ક્રોધ ઉપજ્યો. કેમકે આપ 'નવરત્ન' માં કહે છે 'નિવેદનં તુ સ્મર્તવ્યં....' આ નિવેદનનું સ્મરણ તાદૃશી વૈષ્ણવોથી મળીને કરે તો નિવેદનનું ફલ, ભાવ જાણે. તેથી વૈષ્ણવને છાણ માટે આવું બોલે છે? અને ધોળમાં એમ કહે છે, તન, મન, ધન સમર્પણ કરીને વૈષ્ણવને અનુસરીએજી. વળી આ કીર્તન–હોં વારી ઈન વલ્લભીયન પર (ઉપર જુઓ) આવે। ભાવ વૈષ્ણવમાં હોવો

भाव भरि देखो मेरी अँखियन मण्डल मध्य विराजत गिरिधर ।
ये तो मेरे प्रान जीवन धन दान दिये हैं श्रीवल्लभ वर ॥ २ ॥
माया वाद खंड खंडन कों प्रगट भये श्रीविट्ठल द्विजवर ।
'रसिक' कहैं आस इनकी करि वल्लभीयन की चरनरज अनुसर ॥ ३ ॥

यह भाव वैष्णव में होई । सो वैष्णव कों कहें, जो–गोबर उठाई ले जाइगें । सो वैष्णव गोवर के चोर ठहराये । तातें श्रीआचार्यजी क्रोधवंत होइ सगरे वैष्णव कों सिक्षा दिये, जो–सँभारि के वालिवो । वैष्णव पर प्रीति राखनी, यह जताये ।

वार्ता–प्रसंग २—पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें। इहां श्रीआचार्यजी के तिरस्कार सों रामानन्द विकल होइ गये । जहां तहां बजार में खानपान करे । मर्यादा सब छूटि गई । परन्तु इतनी मर्यादा रही, जो–कछु खानपान करे सो पहलें यह कहै, श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगियो । या प्रकार समर्पन करिके खाई । सो एक दिन रामानन्द बजार में चल्यो जात हतो, सो एक हलवाई जलेबी करत हतो । सो ताजी देख के रामानन्द ने मोल ले उही बाजार में कह्यो, श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगियों । या प्रकार समर्पण करि जलेबी खाई । सो जा समें रामानन्द नें जलेबी श्रीनाथजी कों अरोगाई, ता समें श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीद्वार हते । श्रीनाथजी कों राजभोग आयो हतो । सो समें भये श्रीआचार्यजी भोग सराइवे कों मन्दिर में पधारे । तब आचमन मुख वस्त्र कराये । तब श्रीनाथजी के मुखारविन्द में

જોઇએ. તે વૈષ્ણવને કહે કે છાણ ઉઠાવી લઈ જશે ! એમ વૈષ્ણવને છાણના ચોર ઠરાવ્યા ! તેથી શ્રીઆચાર્યજી ક્રોધવંત થઈ બધા વૈષ્ણવોને શિક્ષા આપી કે વિચારીને બોલવું. વૈષ્ણવ પર પ્રીતિ રાખવી એમ જતાવ્યું.

વાર્તા પ્રસંગ ૨–પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. અહીં શ્રીઆચાર્યજીના તિરસ્કારથી રામાનંદ વિકલ થઇ ગયા. જ્યાં ત્યાં બજારમાં ખાન–પાન કરે. મર્યાદા બધી છુટી ગઈ; પરંતુ એટલી મર્યાદા રહી કે જે કંઇ ખાનપાન કરે તે પહેલાં એ કહે, જે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગજો. આ પ્રકારે સમર્પણ કરીને ખાય. તે એક દિવસ રામાનંદ બજારમાં ચાલ્યા જતા હતા. તે એક કંદોઇ જલેબી કરતો હતો. તે તાજી જોઇને રામાનંદે મોલ લઇ તેજ બજારમાં કહ્યું, શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગજો. આ પ્રમાણે સમર્પણ કરી જલેબી ખાધી. તે જે સમયે રામાનંદે શ્રીનાથજીને જલેબી આરોગાવી તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીનાથજીદ્વાર હતા. શ્રીનાથજીને રાજભોગ આવ્યો હતો. તે સમય થયે શ્રીઆચાર્યજી ભોગ સરાવવાને મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે

जलेबी को टूक देखि श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी सों कहें, जो–आज कछू उत्सव तो नाहीं है। जलेबी कैसे अरोगे? तब श्रीनाथजी ने कही, जो–तिहारे सेवक नें मोकों जलेबी अरोगाई हैं। सो मैं अरोग्यो हूँ। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो–कौन से वैष्णव ने जलेबी अरोगाई है? तब श्रीनाथजी ने कही, रामानन्द पंडित थानेस्वर गाम के ने अरोगाई है, सो मैं अरोग्यो हूं। तब श्रीआचार्यजीने कही, जो–मैं तो वाको त्याग कर्यो है, तुम वाकी समर्पी कैसे अरोगे? तब श्रीनाथजी ने कही, मैं तुमकों वचन दियो है, जाकों तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे ताको मैं कबहू न छोडूंगो। तातें तुम त्याग करो परन्तु तुमने पहले मोकों समर्प्यों हो सो कैसे छोडूं? तब श्रीआचार्यजी चुप ह्वै रहे। पाछे अनोसर करिके श्रीआचार्यजी मन्दिर तें बाहिर पधारे। तब दामोदरदास हरसानी सों कहै, जो–रामानन्द पंडित के हाथ सों श्रीनाथजी जलेवी आरोगे, और कहै, मैं कैसे वाकों छोड़ों? तब दामोदरदास ने पूछी, जो–महाराज! आप याको त्याग कियो है, और श्रीनाथजी पक्ष करी है। सो वा जीव कों अंगीकार कब करोगे? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो–अब वैष्णव को अपराध न करेगो। तो वाकों लक्ष जन्म में अङ्गीकार करोंगों। कहा भयो, जो–श्रीनाथजी

આચમન મુખવસ્ત્ર કરાવ્યું. ત્યારે શ્રીનાથજીના મુખારવિન્દમાં જલેબીનો ટૂક જોઇ શ્રીઆચાર્યજી શ્રીનાથજીને કહે, કે આજ કોઇ ઉત્સવ તો નથી. જલેબી કેવી રીતે આરોગ્યા? ત્યારે શ્રીનાથજીએ કહ્યું, કે તમારા સેવકે મને જલેબી આરોગાવી છે. તે હું આરોગ્યું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે ક્યા વૈષ્ણવે જલેબી આરોગાવી છે? ત્યારે શ્રીનાથજીએ કહ્યું, રામાનંદ પંડિત થાનેશ્વર ગામનાએ આરોગાવી છે તે હું આરોગ્યું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે મેં તો તેનો ત્યાગ કર્યો છે. તમે એની સમર્પી કેમ આરોગ્યા? ત્યારે શ્રીનાથજીએ કહ્યું, મેં તમને વચન આપ્યું છે કે જેને તમે બ્રહ્મસંબંધ કરાવશો તેને હું કદીયે નહીં છોડું. તેથી તમે ત્યાગ કર્યો પરંતુ તમે પહેલાં મને સમર્પ્યો છે તેથી હું કેમ છોડું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ચુપ થઇ રહ્યા. પછી અનોસર કરીને શ્રીઆચાર્યજી મંદિરથી બાહર પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાનીને કહ્યું, કે રામાનંદ પંડિતના હાથથી શ્રીનાથજી જલેબી આરોગ્યા અને કહ્યું કે હું એને કેમ છોડું? ત્યારે દામોદરદાસે પૂછ્યું કે, મહારાજ! આપે એનો ત્યાગ કર્યો છે અને શ્રીનાથજીએ પક્ષ કર્યો તો તે જીવનો અંગીકાર ક્યારે કરશો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે હવે વૈષ્ણવનો અપરાધ નહીં કરે તો એને લાખ જન્મમાં અંગીકાર કરીશ. શું થયું? જે

जलेवी अरोगे तो ? पाछें एक वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन करिके थानेस्वर गयो । तब रामानन्दनें उह वैष्णव सों पूछी, जो–कबहू मेरी वात श्रीआचार्यजी के आगे चली हती ? तब उह वैष्णव ने कही, जो–तेरे हाथकी जलेवी श्रीनाथजी अरोगे । तब श्रीआचार्यजी सों दामोदरदास हरसानीनें पूछी, जो–आप रामानन्द कों कब अंगीकार करोगे ? तव श्रीआचार्यजी ने कही, जो–आज पाछे जो वैष्णव को अपराध न करेगो तो लक्ष जन्म में अंगीकार करूँगो । इतनी बात चली हती । तब रामानन्द प्रसन्न होइके कह्यो, जो–भलो, लक्ष जन्म में मेरो अंगीकार करनो तो कह्यो । ता पाछे रामानन्द की बुद्धि सुन्दर भई । वैष्णव के अपराध तें डरपन लाग्यो । पंडिताई को अहंकार हतो तातें अपराध पर्‌यो, सो दैन्यता भई । पाछे स्वप्न द्वारा लक्ष जन्म भुगताई कृपा करि श्रीआचार्यजी अंगीकार किये । सो रामानन्द श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये । वार्ता ॥४९॥

भावप्रकाश—अंगीकार किये सो काहेतें, श्रीआचार्यजी वैष्णव कों दंड देत हैं । सो सिक्षा कों । निज त्याग नाहीं हैं । जैसे माता पिता पुत्र कों दंड देत है सो सिक्षार्थ ही । पुत्रको बुरो न करेंगे । तैसेही जाननो । जो–श्रीआ-

---

શ્રીનાથજી જલેબી આરોગ્યા તો ? પછી એક વૈષ્ણવ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરીને થાનેશ્વર ગયો. ત્યારે રામાનંદે તે વૈષ્ણવને પૂછ્યું, કે ક્યારેય મારી વાત શ્રીઆચાર્યજી આગળ ચાલી હતી ? ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે તારા હાથની જલેબી શ્રીનાથજી આરોગ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દામોદરદાસ હરસાનીએ પૂછ્યું, કે આપ રામાનંદને ક્યારે અંગીકાર કરશો ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, આજ પછી વૈષ્ણવનો અપરાધ નહીં કરે તો લાખજન્મમાં અંગીકાર કરીશ. એટલી વાત ચાલી હતી. ત્યારે રામાનંદે પ્રસન્ન થઈને કહ્યું, કે ભલે, લાખજન્મમાં મારો અંગીકાર કરવાનું તો કહ્યું. તે પછી રામાનંદની બુદ્ધિ સુંદર થઈ. વૈષ્ણવના અપરાધથી ડરવા લાગ્યા. પંડિતાઈનો અહંકાર હતો તેથી અપરાધ પડ્યો. તે દૈન્યતા થઈ. પછી સ્વપ્ન દ્વારા લાખ જન્મ ભોગવાવી કૃપા કરી શ્રીઆચાર્યજીએ અંગીકાર કર્યો. તે રામાનંદ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? ॥ વાર્તા ૪૯ ॥

ભાવપ્રકાશ—અંગીકાર કર્યો તે શાથી ? શ્રીઆચાર્યજી વૈષ્ણવને દંડ દે છે તે શિક્ષા માટે. સ્વરૂપતઃ ત્યાગ નથી. જેમ માતાપિતા પુત્રને દંડ દે છે તે શિક્ષાર્થે જ. પુત્રનું અહિત નહી કરે. તેમજ જાણવું. જો શ્રીઆચાર્યજીના અંતઃકરણથી

चार्यजी को अन्तःकरण सों त्याग होइ तो श्रीनाथजी वाके हाथ की सामग्री कबहू न अरोगें। काहेतें, श्रीआचार्यजी के सेवक हैं। तातें जैसी इच्छा श्रीआचार्यजी की होई ताही भांति श्रीनाथजी करे। काहेतें, श्रीआचार्यजी रञ्च अप्रसन्न होई तो, श्रीठाकुरजी वाकों कबहू अङ्गीकार न करें। तो श्रीआचार्यजी त्याग करें ताके हाथकी सामग्री श्रीगोवर्द्धनधर कैसे अरोगें? तातें श्रीआचार्यजी के अन्तःकरण को त्याग नाहीं। तातें श्रीआचार्यजी वेद मन्त्र सों जल छिरकिकें त्याग याहीतें किये, जो-मर्यादा रीति सों त्याग है। सो लोगन कों दिखायवे कों, सब जाने, जो-त्याग है। परन्तु लीला सृष्टि के जाने, जो-दैवी है सो तो श्रीआचार्यजी के अंग रूप हैं। जैसे अंग को त्याग नाहीं। तैसे जीव दैवी को त्याग नाहीं। तातें श्रीनाथजी अरोगें। तातें श्रीआचार्यजी 'अन्तःकरणप्रबोध' में कहे हैं—

"चांडाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता।
कदाचिदपमानेऽपि मूलतः का क्षतिर्भवेत्" ॥ १ ॥

चांडाली राजपत्नी मानवती जब भई तब अपमान हू होई। परन्तु रानीपनो न जाई। मान अपमान तो होत ही है, और नवरत्न ग्रंथ में कहैं—

"अज्ञानादथवा ज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनम्।
यैः कृष्णसात् कृतप्राणैस्तेषां का परिवेदना॥"

ज्ञान अज्ञान करिके जाको निवेदन भगवान में भयो, वह श्रीकृष्ण को

ત્યાગ હોય તો શ્રીનાથજી એમના હાથની સામગ્રી કદીય ન આરોગે, કેમકે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છે. તેથી જેવી ઈચ્છા શ્રીઆચાર્યજીની હોય તે પ્રમાણે શ્રીનાથજી કરે. કેમકે શ્રીઆચાર્યજી રંચક અપ્રસન્ન હોય તો શ્રીઠાકુરજી એને કદીય અંગીકાર ન કરે. તો શ્રીઆચાર્યજી ત્યાગ કરે તેના હાથની સામગ્રી શ્રીગોવર્દ્ધનધર કેમ આરોગે? તેથી (અહીં) શ્રીઆચાર્યજીના અંતઃકરણનો ત્યાગ નથી. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ વેદમંત્રથી જલ છાંટીને ત્યાગ એ માટે કર્યો કે મર્યાદા રીતિથી ત્યાગ છે. તે લોકોને દેખાડવા માટે બધા જાણે કે ત્યાગ છે; પરંતુ લીલા-સૃષ્ટિના જાણે કે દૈવી છે તે તો શ્રીઆચાર્યજીના અંગરૂપ છે. જેમ અંગનો ત્યાગ નહીં તેમ દૈવી જીવનો ત્યાગ નહીં. તેથી શ્રીનાથજી આરોગ્યા. તેથી શ્રીઆચાર્યજી 'અંતઃકરણ પ્રબોધ'માં કહે છે:—(શ્લોક ઉપર જુઓ) ચાંડાલી રાજપત્નિ માનવતી જ્યારે થઈ ત્યારે અપમાન પણ થાય પરંતુ રાણીપણું ન જાય, માન અપમાન તો થાયજ છે. અને 'નવરત્ન' ગ્રંથમાં કહે (શ્લોક ઉપર જુઓ) જ્ઞાન અજ્ઞાન કરીને જેનું નિવેદન ભગવાનમાં

प्रानप्रिय भयो, वाकों परिवेदना दुःख चिन्ता काहेकी ? तातें रामानन्द द्वारा इतनो सिद्धान्त प्रगट करन अर्थ आपु मर्यादा रीति सों त्याग किये। जैसे रास-पञ्चाध्याई में भक्तन को मान देखि अन्तरधान भये, सो कहा छोड़ि गये ? भक्तन कों प्रभु छोड़े ही नहीं। बाहरतें उनके हृदय में जाई बैठे। तैसेही सबके देखत त्याग कियो। सो वैष्णव को अपराध ऐसो भारी बताये। और वैष्णव कों बोलनो सँभारि के। काहेतें, आश्रय अन्याश्रय सब बचन में है। उह बाई ने संसारी मनुष्य सों प्रसन्न होई के कह्यो, तुमने मोकों जिवाई तब श्रीठाकुरजी उठि गये। और रजो क्षत्रानी तें श्रीआचार्यजी ने घृत मांग्यो सो न दियो। और रात्रि कों विनती करि सामग्री अरोगाई। तातें एक बचन अहंकार के सगरे धर्म को नास करे। एक वचन प्रसन्नता के प्रभु ततकाल प्रसन्न होई। सो वैष्णव कों सँभारि के बोलनो, यह जताये। और महात्मी जीव हैं, तिनकों दृढ़ता जताये। पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार कियो। श्रीठाकुरजी इतने पर न छोड़े, जलेबी अरोगे। समर्पनी को त्याग नाहीं। श्रीठाकुरजी के वचन दृढ़ किये। जो-ब्रह्मसंबन्ध की आज्ञा दिये। तब कहे, जिनकों तुम ब्रह्मसंबन्ध करावोगे ताकों मैं न छोडूँगो। सोऊ कहत हैं,

---

થયુ તે શ્રીકૃષ્ણને પ્રાણ પ્રિય થયો. તેની પરિવેદના, દુઃખ–ચિંતા શા માટે? તેથી રામાનદ દ્વારા આટલો સિદ્ધાન્ત પ્રકટ કરવા માટે આપે મર્યાદા રીતિથી ત્યાગ કર્યો. જેમ રાસપચાધ્યાયીમાં ભક્તોનું માન જોઈ અંતર્ધાન થયા તે શુ છોડી ગયા? ભક્તોને પ્રભુ છોડેજ નહી. બહારથી એમના હૃદયમાં જઈ બેસે. તેજ રીતે બધાના જોતાં ત્યાગ કર્યો. એમાં વૈષ્ણવોનો અપરાધ આવો મોટો છે એમ બતાવ્યું. વળી વૈષ્ણવોને સંભાળીને બોલવું. કેમકે આશ્રય, અન્યાશ્રય બધું વચનમાં છે. તે બાઇએ સસારી મનુષ્યથી પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, તમે મને જીવાડી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પધારી ગયા અને રજો ક્ષત્રાણી પાસે શ્રીઆચાર્યજીએ ઘી માંગ્યું તે ન આપ્યુ અને રાત્રિએ વિનંતી કરી સામગ્રી આરોગાવી. તેથી એક વચન અહંકારનું બધા ધર્મોનો નાશ કરે. એક વચન પ્રસન્નતાનું (તેથી) પ્રભુ પ્રસન્ન થાય. તેથી વૈષ્ણવને સભાળીને બોલવું એ જણાવ્યું. વળી માહાત્મ્યવાળા જીવો છે તેમને દૃઢતા જણાવી. પુષ્ટિ-માર્ગમાં અગીકાર કર્યો. શ્રીઠાકુરજીએ આટલુ થયા છતાં ન છોડયો. જલેબી આ-રોગી. સમર્પણીનો ત્યાગ નહીં. શ્રીઠાકુરજીનાં વચન દૃઢ કર્યા. જે બ્રહ્મસંબંધની આજ્ઞા આપી ત્યારે કહ્યું છે, જેને તમે બ્રહ્મસંબંધ કરાવશો તેને હું નહીં છોડું, તે પણ કહે છે. અહીં વચન સાચાં કરી દેખાડયાં. વળી વૈષ્ણવોને.શ્રીગોવર્દ્ધનધરે એ જણા-

ता आछा भात सा सामग्री धर, तिनका बहोत प्रीत सा
जताये, यद्यपि रामानंद भ्रष्ट विकल भयो सोऊ श्रीनाथजी
करतो, इतनी मर्यादा नाहीं छोड़ी। और जो वैष्णव असं-
ानन्द सों हू गये बीते। त्याग उनही को जाननो। तातें
ानों। और श्रीआचार्यजी रामानन्द को त्याग करि उहां
जो-अन्तःकरण को त्याग नाहीं। तातें आप उहाँ रहते तो
न करतो। तो इतनो सिद्धान्त कहांते प्रगट होई ? और
ीद्वार होई तबही जलेबी रामानन्द अरोगावें। ताको कारन
। रामानन्द को त्याग भयो जाने हैं, सो दिखाये त्याग
ीनाथजी के पास बैठे हैं। यह जताये, जो-लौकिक वैदिक
, जाको त्याग किये। अलौकिक आधिदैविक देह श्रीगोव-
सेवा करत है। इत्यादिक भाव प्रगट भये दिखाये ॥४९॥

* *

લ (થઇને) મને બજારની જલેબી ધરી તે હું શ્રીઆચાર્યજીની
આરોગ્યો. તો સુંદર રીતિથી સામગ્રી ધરે તેની ઘણી પ્રીતિથી
જણાવ્યું, યદ્યપિ રામાનંદ ભ્રષ્ટ વિકલ થયો તે પણ શ્રીનાથ-
ાન કરતો. એટલી મર્યાદા ન છોડી અને જે વૈષ્ણવ અસ-
માનંદથી પણ ગયા વિત્યા. ત્યાગ તેમનો જ જાણવો. તેથી
લેવું. વળી શ્રીઆચાર્યજી રામાનંદનો ત્યાગ કરી ત્યાં રહ્યા નહી.
નો ત્યાગ નહી. તેથી જો આપ ત્યાં રહેતા તો વિનંતી કરી ફરી
ટલો સિદ્ધાન્ત ક્યાંથી પ્રકટ થાત? અને શ્રીઆચાર્યજી શ્રી-
જ જલેબી રામાનંદ આરોગાવે તેનું કારણ એ, કે બધા
ાગ થયો જાણે છે તેથી દેખાડયું કે ત્યાગ નથી. રામાનંદ તો
। છે. એ જણાવ્યું, કે લૌકિક-વૈદિક દેહ ત્યાં વિકલ થઇ છે
ૌકિક આધિદૈવિક દેહ શ્રીગોવર્દ્ધનધરની પાસે જ છે. તે સેવા
પ્રકટ દેખાડયા. વૈષ્ણવ ॥ ૪૯ ॥

* *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, विष्णुदास छीपा, ये आगरे के पास गाम है तहां रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। 'कमला' इनको नाम है। सो आगरे के पास के गाम में एक छीपा के घरमें प्रगटे। सो बड़े भये वर्ष बीस के तब ब्याह भयो। सो पिता वस्त्र छाप देय विष्णुदास आगरे में जाइ बेच लावें। सो ऐसे करत एक समय श्रीआचार्यजी आगरे पधारे। सो विष्णुदास सुन्दर छींट के थान ले आगरे गये। तब श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों कही, यह छीपा के पास छींट आछी है, सो तू ले, जो–मांगे सो दे। तब कृष्णदास ने विष्णुदास सों कही, यह छींट के थान सगरे हमकों दे। याके दाम हैं सो तू ले। सो विष्णुदास ने चौगुनो मोल कह्यो। सो कृष्णदास ने सगरे रुपैया गिन दिये। और कहे, और आछे थान होंई सो ले आऊ।

तब विष्णुदास चक्रत होई रहे। जो–एतो बडे महापुरुष अलौकिक जीव हैं। जो–मोल न कियो। सगरे थान लिये, ताके दाम दिये। सो इनकों छींट देनो उचित नाहीं है। इनको पैसा मेरे घर आवेगो तो सगरो घर वैरागी होई जायगो। तब विष्णुदास ने कही, ये सगरे अपने रुपैया लेऊ, मेरे छींट के थान फेरि देऊ।

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, વિષ્ણુદાસ છીપા, એ આગ્રાની પાસે ગામ છે ત્યાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી છે. 'કમળા' એમનું નામ છે. તે આગ્રાની પાસેના ગામમાં એક છીપાને ત્યાં પ્રકટ્યા. પછી મોટા થયા વર્ષ વીશના ત્યારે લગ્ન થયું. પછી પિતા વસ્ત્ર છાપી દે તે વિષ્ણુદાસ આગ્રામાં જઇને વેચી લાવે. એમ કરતાં એક સમય શ્રીઆચાર્યજી આગરે પધાર્યા તે વિષ્ણુદાસ સુંદર છીંટનાં થાન લઈ આગ્રે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કૃષ્ણદાસને કહ્યું, આ છીપાની પાસે છીંટ સારી છે તે તૂ લે. જે માંગે તે આપ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે વિષ્ણુદાસને કહ્યુ, આ છીંટનાં થાન અમને દે. એના પૈસા છે તે તૂ લે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે ચારગણુ મૂલ્ય કહ્યુ, ત્યારે કૃષ્ણદાસે બધા રૂપીઆ ગણી દીધા. અને કહ્યું, બીજા સારાં થાન હોય તો લઈ આવ. ત્યારે વિષ્ણુદાસ ચકીત થઇ રહ્યા. જાણે, એ તો કોઇ મહાપુરૂષ અલૌકિક જીવ છે, કેમ જે મૂલ્ય ન કર્યું. આખું થાન લીધુ. તેના પૈસા આપ્યા. માટે એમને છીંટ આપવી ઉચિત નથી. એમનો પૈસો મારા ઘરમાં આવશે તો બધું ઘર વૈરાગી થઇ જશે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, આ બધા પૈસા તમારા (પાછા) લો. મારી

तब कृष्णदास ने कही, तू बड़ो मूर्ख दीसत है ? तें मोल कह्यो, सो दाम दिये। अब यह थान कबहूँ फिरे नाहीं। तेरे टोटा होई तो और हू रुपैया ले। चोगुने तो दाम लिये। तब विष्णुदास ने कही तुम महापुरुष हो, तातें तिहारो द्रव्य घर में आये सगरो घर वैरागी होइगो। याते मैं नाहीं तुमकों वेचत। जो थान देऊ नाहीं तो यह रुपैया हू राखो, और थान हू राखो। परन्तु रुपैया तिहारो मोकों पचे नाहीं। तब कृष्णदास ने कही यह थान श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख सों सराहना करि के कहे, लेऊ, सो तू कोटीन उपाइ करे तो (हू) यह थान फिरे नाहीं। और श्रीआचार्यजी बिना सेवक और को कछू लेत नाहीं। तातें रुपैया तेरे मन आवे सो ले जा, और थान तेरे मन आवे तो लैयो। तेरे मन आवे तो मति लैयो। तब विष्णुदास ने कही, श्रीआचार्यजी कहां हैं ? तब कृष्णदास ने कही, यह पीपर के रूख के नीचे बिराजे हैं। तब विष्णुदास आई श्रीआचार्यजी को दरसन करि दण्डवत करि कहें, महाराज ! आपुके सेवक में इतनो धर्म है, तो आप तो भगवान हैं। अब मोकों सरनि लेऊ। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कों सरनि कैसे लेय ? तुम छीपन में रहत हो। आचार, क्रिया पुष्टिमार्गीय धर्म कैसे निबहेगो ? तब विष्णु-

---

છીંટનાં થાન મને પાછાં આપો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, તૂ બહુ મુર્ખ દેખાય છે ! તેં મૂલ્ય કહ્યુ તેટલા પૈસા આપ્યા. હવે આ થાન ક્યારેય ફરે નહીં. તારે ટોટા હોય તો બીજા પણ રૂપીયા લે. ચારગણા તો પૈસા લીધા. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, તમે મહાપુરૂષ છો. તેથી તમારૂં દ્રવ્ય ઘરમાં આવે બધું ઘર વૈરાગી થશે. તેથી હુ તમને વેચતો નથી. માટે થાન આપો; નહીં તો આ રૂપીયા પણ રાખો. બીજાં થાન પણ રાખો. પરંતુ તમારા રૂપૈયા મને પચે નહીં. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, આ થાન શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી વખાણ કરીને કહ્યું, લે, તે તૂ કોટી ઉપાય કરે તો પણ આ થાન ફરે નહી અને શ્રીઆચાર્યજી સેવક વિના બીજા કોઇનું લેતા નથી. તેથી રૂપીયા તારા મનમાં આવે તે લઈ જા અને બીજાં થાન તારા મનમાં આવે તો લાવજે તારા મનમાં આવે તો ન લાવજે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી ક્યાં છે ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, આ પીપળના ઝાડ નીચે બિરાજે છે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કરીને કહ્યું, મહારાજ ! આપના સેવકમાં આટલો ધર્મ છે તો આપ તો ભગવાન છો. હવે મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમને શરણે કેવી રીતે લઇએ ? તમે છીપાઓમાં રહો છો. આચાર–ક્રિયા પુષ્ટિમાર્ગીય ધર્મ કેવી રીતે નભશે ? ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! હવે આપનો સેવક થયો ત્યારે જ્ઞાતિ–વ્યવ-

दास ने बिनती करी, महाराज ! अब आपको सेवक भयो। तब ज्ञाति व्यौहार को डर कहा है ? मा बाप मानेंगे, आपुके सेवक होंइगे, तो भेले उनके रहूँगो, नाहीं तो न्यारो घर करि रहूँगो। तातें कृपा करि के सरन लीजिये। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जा, श्रीयमुनाजी में स्नान करि आऊ। तब विष्णुदास श्रीयमुनाजी में न्हाई अपरस ही में आवत हते, सो छूय गये। कोऊ को जूठो पत्ता उडिके देह सों लाग्यो। तब फेरि के न्हान कों चले। तब श्रीआचार्यजी ने कही, विष्णुदास फेरी क्यों चले ? तब विष्णुदास ने कही, महाराज ! पत्ता उडिकें देह सों लग्यो सो छुई गयो। सो फेरि न्हान जात हों। तब श्रीआचार्यजी कहे अबही तें तू छूवाछाई में समुझत है ? तब विष्णुदास ने बिनती करी, महाराज ! मैं कहा जानो, किन सों छूवो कहैत है ? यह आपकी कृपा तें जानि परी है। तब श्रीआचार्यजी कहे ठाड़ो रहि, हमहू कों श्रीयमुनाजी के तीर मध्याह्न की सन्ध्या करनी है, तातें तहां तोकों नाम सुनावेंगे। तब विष्णुदास नें बिनती करी, महाराज ! मेरे लिये यह श्रम मति करो, न्हाई के आऊँगो। आप अपनी इच्छातें पधारो तो सुखेन पधारो, मेरे लिये पधारो तो मोकों अपराध परेगो। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहैं, तुम सरीखे वैष्णव के लिये तो लीला

હારનો ડર શો છે ? મા-બાપ માનશે, આપના સેવક થશે તો એમના ભેગો રહીશ. નહીં તો અલગ ઘર કરીને રહીશ. તેથી કૃપા કરીને મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જા, શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી આવ. ત્યારે વિષ્ણુદાસ શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઈ અપરસમાં આવતા હતા તે અડકી ગયા. કોઇનું જુઠું પત્તું ઉડીને દેહથી લાગ્યું. ત્યારે ફરી ન્હાવાને ચાલ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, વિષ્ણુદાસ ! ફરી કેમ ચાલ્યા ? ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, મહારાજ ! પત્તું ઉડીને દેહથી લાગ્યું તેથી છોવાઇ (અભડાઇ) ગયો. તેથી ફરી ન્હાવા જાઉં છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહે, હમણાંથી તું છુવા-છૂતમાં સમજે છે ? ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! હું શુ જાણુ કોને છુવા-છુત કહે છે ? આ આપની કૃપાથી જાણી પડયુ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ઉભો રહે. અમારે પણ શ્રીયમુનાજીના તીરે મધ્યાહ્નની સંધ્યા કરવી છે તેથી ત્યાં તને નામ સંભળાવીશું. ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારા માટે આપ શ્રમ ન કરો. ન્હાઇને આવીશ. આપ આપની ઇચ્છાથી પધારો તો સુખેથી પધારો. મારા માટે પધારો તો મને અપરાધ પડશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, તમારા સરખા વૈષ્ણવોને માટ તો લીલામાંથી પધાર્યા છીએ. અને પરિક્રમા કરીએ છીએ.

में तें पधारे हैं। और परिक्रमा करत हैं। मायावाद खण्डन करि, भक्तिमार्ग को स्थापन करें हैं। अनेक ग्रंथ सब वैष्णवन के लिये किये हैं। तातें यह तू काहे कों कहत है, भ्रम मति करो। तब विष्णुदास ने कही महाराज मोकूँ तो कही चहिये। सेवक को यह धर्म है। तब श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी के तीर पधारि विष्णुदास कों न्हवाइ नाम सुनाये, ब्रह्म संबंध कराये। तब विष्णुदास ने बिनती करी, महाराज मैं मूर्ख हों, सो ऐसी कृपा करो, जो-श्रीभागवत आदि आपके ग्रंथ में कछू ज्ञान होई। आपु के मार्ग को सिद्धान्त जान्यो जाई। तब श्रीआचार्यजी 'सेवाफल' ग्रन्थ करि विष्णुदास कों सुनाये। सो सुनिके विष्णुदास ने बिनती करी, महाराज! सेवाफल ग्रन्थ के सुनेतें सगरे शास्त्र पुराण को ज्ञान भयो। परन्तु सेवाफल ग्रन्थ को अभिप्राय समुझिवे में नाहीं आयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, ग्रंथ सेवाफल ऐसो ही कठिन हैं। भली करी तू पूछ्यो। पाछे आप 'सेवाफल की टीका' करि के सुनाये। तब सगरे मार्ग को सिद्धान्त विष्णुदास के हृदयारूढ़ भयो। सो मगन होइ गए। तब कृष्णदास ने कही, यह तेरो छींट को थान है चहिये तो ले जाऊ। चाहे दाम लेहू, चाहे भेट करो। तब विष्णुदास ने कृष्णदास सों विनती करी, जो-मैं तिहारे संगतें श्रीआचार्यजी की सरनि पायौ। सो तुम भगवदीय होई ऐसे

માયાવાદ ખણ્ડન કરી ભક્તિમાર્ગનું સ્થાપન કરીએ છીએ. અનેક ગ્રંથો બધા વૈષ્ણવોને માટે કર્યાં છે. તેથી આ તું કેમ કહે છે? શ્રમ ન કરો. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, મહારાજ! મારે તો કહેવું જોઇએ. સેવકનો આ ધર્મ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીયમુનાજીના તીરે પધારી વિષ્ણુદાસને ન્હવડાવી નામ સંભળાવ્યું. બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યુ. ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિનંતી કરી મહારાજ! હું મૂર્ખ છું. તેથી એવી કૃપા કરો કે શ્રીભાગવત આદિ આપના ગ્રંથનું કંઇક જ્ઞાન થાય. આપના માર્ગનો સિદ્ધાંત જાણ્યો જાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી 'સેવા-ફલ' ગ્રંથ કરી વિષ્ણુદાસને સંભળાવ્યો. તે સાંભળીને વિષ્ણુદાસે વિનંતી કરી મહારાજ! 'સેવા-ફલ' ગ્રંથના સાંભળવાથી બધા શાસ્ત્ર-પુરાણનું જ્ઞાન થયું. પરંતુ 'સેવા-ફલ' ગ્રંથનો અભિપ્રાય સમજમાં ન આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગ્રંથ 'સેવા-ફલ' એવોજ કઠણ છે. સારૂં કર્યું તેં પૂછ્યું? પછી આપે 'સેવાફલ' ની ટીકા કરીને સંભળાવી. ત્યારે માર્ગનો સમગ્ર સિદ્ધાન્ત વિષ્ણુદાસના હૃદયારૂઢ થયો. તે મગન થઈ ગયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, આ તારૂં છીંટનું થાન છે; જોઇએ તો લઈ જા. ચાહે પૈસા લે. ચાહે ભેટ કરો. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કૃષ્ણદાસને વિનંતી કરી, કે મેં તમારા સંગથી શ્રીઆચાર્યજીનું શરણ મેળવ્યું. તમે ભગવદીય

मोसों मति कहो। किनकी छींट कौन मेट करे? यह सगरो प्रान सरीर जब जहां श्रीआचार्यजी कहें तहां बिनियोग कराइयो। तब कृष्णदास प्रसन्न होइ चुप करि रहे। पाछे श्रीआचार्यजी विष्णुदास सों कहें, अब तुम अपने घर जाऊ। तब विष्णुदास ने कही, जो–महाराज! अब मेरो घर तो आपुकी चरन कमल की रज में है। सो छोड के कहां जाऊँ? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होई कें कहे, जो–सो तो साँच, परन्तु हम तो अड़ेल पधारत हैं। तुमहु उह गाम में रहो। पाछे श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वास करें तब तुम गोकुल जाइ, श्रीगुसांईजी पास रहियो। अब तुम कों संसार बाधा करि सकेगो नाहीं। जातें मन आवे तहां रहो। और तुम श्रीगुसांईजी की लीला संबंधी हो। तातें तिहारो सगरो मनोरथ पूर्ण श्रीगुसांईजी करेंगे। हम तुमकों अङ्गीकार करि अपने किये हैं। तुम सदा भगवद् सेवा में मगन रहोगे। तब विष्णुदास दंडवत् करि अपने गाम आये। श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारिके विष्णुदास की छींट श्रीनवनीतप्रियाजी कों अंगीकार कराये। इहां विष्णुदास घर में आई मा बाप सों कह्यो मैं न्यारो रहूंगो। तब मा बाप कहें, न्यारो रहिवे को कारन कहा? तब विष्णुदास ने कह्यो, मेरो मन यही करत है। सो न्यारों रहौं। पाछे स्त्री आई, तब स्त्री सों कहै, तू श्रीठाकुरजी की सेवा करे तो

થઈ એમ મને ન કહો. કોની છીટ કોણ ભેટ કરે? આ બધું પ્રાણ–શરીર જ્યારે જ્યાં શ્રીઆચાર્યજી કહે ત્યાં વિનિયોગ કરાવજો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ પ્રસન્ન થઈ ચૂપ થઇ રહ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી વિષ્ણુદાસ ને કહે. હવે તમે તમારા ઘર જાવ. ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યુ, કે મહારાજ! હવે મારૂં ઘર તો આપના ચરણકમલની રજમાં છે. તે છોડીને ક્યાં જાઉ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને કહે, કે તે તો સાચું. પરંતુ અમે તો અડેલ પધારીએ છીએ તમે પણ તે ગામમાં રહો. પછી શ્રીગુસાંઇજી શ્રીગોકુલવાસ કરે ત્યારે તમે શ્રીગોકુલ જઈ શ્રીગુસાંઇજી પાસે રહેજો. હવે તમને સંસાર બાધા કરી શકશે નહી. જેથી મન આવે ત્યાં રહો. વળી તમે શ્રીગુસાંઇજીની લીલા–સંબંધી છો. તેથી તમારો બધો મનોરથ પૂર્ણ શ્રીગુસાંઇજી કરશે. અમે તમને અંગીકાર કરી પોતાના કર્યા છે. તમે સદા ભગવત્સેવામાં મગન રહેશો. ત્યારે વિષ્ણુદાસ દંડવત કરી પોતાના ગામ આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીએ અડેલ પધારીને શ્રીનવનીતપ્રિયજીને વિષ્ણુદાસની છીટ અંગીકાર કરાવી. અહી વિષ્ણુદાસે ઘરમાં આવી મા–બાપને કહ્યુ, હું અલગ રહીશ ત્યારે મા–બાપ કહે, અલગ રહેવાનું કારણ શું છે? ત્યારે વિષ્ણુદાસે કહ્યુ, મારૂં મન એમજ કહે છે કે હું અલગ રહું. પછી સ્ત્રી

अड़ेल चलि के तोकों सेवक कराऊँ। तेरे हाथ को जल तब लेऊँगो, नहीं तो तू मेरे पास मति आवे। तब स्त्री दस बीस गारी देकें उठि गई। कह्यो, तैं श्रीठाकुरजी की पूजा करन को नाम लियो सो मैं तेरो मुख न देखूंगी। वैरागिनी फकीरनी होय सो ठाकुरजी पूजे। मेरे मा बाप भाई, मैं कैसे पूजोंगी। तब विष्णुदास मन में प्रसन्न भये, जो-श्रीठाकुरजी नें बलाय काटी। भली भई, यह आपुतें छोड़ि गई। सो विष्णुदास थोरो सो कपड़ा छापें। सो आगरे बेचि आवें, जामें देह निर्वाह होई। और सगरे दिन-रात मानसी सेवा श्रीआचार्यजी के ग्रंथ श्रीसुबोधनीजी के भाव में मगन रहैं।

वार्ता प्रसंग १—**सो कितनेक दिन में श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वास किये। तब विष्णुदास छीपा वृद्ध भये। सो श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजी कों दण्डवत करि विनती किये, सगरो प्रकार कहैं। जो-या प्रकार श्रीआचार्यजी ने कृपा करि सरन लिये। पाछे आपकों सोंपे, आपकी सरन आयो हूं। कहूं टहल में राखिये। तब श्रीगुसांईजी विष्णुदास के उपर प्रसन्न होइ कहैं, जो-तुम श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक हो, सो कहो तहां राखें। तब विष्णुदास विचारे, जो-अब मैं वृद्ध भयो, और सेवा जन्मपर्यन्त निवहेगी नाहीं। तातें श्रीगुसांईजी की पौरी पर रहूं।**

આવી ત્યારે સ્ત્રીને કહે, તૂ શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરે તો અડેલ જઇને તને સેવક કરાવું. તારા હાથનું જલ ત્યારે લઇશ. નહીં તો તૂ મારી પાસે આવીશ નહી. ત્યારે સ્ત્રી દશ-વીસ ગાળો દઇને ચાલી ગઇ. કહ્યું કે તેં શ્રીઠાકુરજીની પૂજા કરવાનું નામ લીધું તે હું તારૂ મુખ નહીં જોઉં. વૈરાગની, ફકીરની હોય તે શ્રીઠાકુરજી પૂજે. મારે મા-બાપ, ભાઈ હું કેવી રીતે પૂજું ? ત્યારે વિષ્ણુદાસ મનમાં પ્રસન્ન થયા કે શ્રીઠાકુરજીએ બલા કાઢી. ભલું થયું. એ એની મેળે છોડી ગઇ. પછી વિષ્ણુદાસ થોડુંક કપડું છાપે. તે આગરા વેચી આવે. તેમાં દેહ નિર્વાહ થાય. અને બધો દિવસ-રાત માનસી સેવા (માં), શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રંથ શ્રીસુબોધિનીજીના ભાવમાં મગન રહે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧-પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીગોકુલ વાસ કર્યો. ત્યારે વિષ્ણુદાસ છીપા વૃદ્ધ થયા એટલે શ્રીગોકુલ આવી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત કરી વિનંતી કરી બધો પ્રકાર કહ્યો, કે આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીએ કૃપા કરીને શરણે લીધો. પછી આપને સોંપ્યો. આપની શરણે આવ્યો છું. કોઇ ટહલમાં રાખો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વિષ્ણુદાસના ઉપર પ્રસન્ન થઇને કહે, કે તમે શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર સેવક છો તેથી

भावप्रकाश—काहेतें सूरदासजी गाये हैं। "मारग रोकि परचो हठि द्वारे पतित-सिरोमनि सूर" सो मैं पतित हों, श्रीगुसांईजी के द्वार पर मोकों पावन श्रीगुसांईजी आवते जाते दरसन देकें करेंगे। यह विचारि, विष्णुदास ने कही, महाराज! आपकी पौरी पर रहन कों मेरो मन है।

तब श्रीगुसांईजी कहें, आछो, पौरी पर रहो, तब विष्णुदास पौरी पर रहे। सो श्रीगुसांईजी जब पधारें, तब विष्णुदास कों पुकारें, (जो)-विष्णुदास प्रसन्न हो? तब विष्णुदास कहें, यह चरन कमल के आश्रय तें प्रसन्न हों, या प्रकार श्रीगुसांईजी विष्णुदास पर कृपा करते, या प्रकार पौरी पर रहते।

वार्ता प्रसंग २—सो जहां तहां तें ब्राह्मण पंडित श्रीगुसांईजी तें वाद करन कों आवते। सो विष्णुदास ने कही, ये पंडित श्रीगुसांईजी सों वाद करन कों आवत हैं, सो इनकों मैं ही प्रतिउत्तर करि बिदा करि देऊँ तो श्रीगुसांईजी कों इतनो श्रम न करनो पड़े। यह विचारि, जो-पंडित आवते, तिनसों वाद करि निरुत्तर करि देई। तब पंडित जाने, जो-जिनके पौरिया में यह सामर्थ है, जो-हमकों जुबाब न आयो, तो श्रीगुसांईजी सों हम कहा वाद करेंगे? यह विचारि

કહો ત્યાં રાખે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિચાર્યું, કે હવે હું વૃદ્ધ થયો છું. બીજી સેવા જન્મ-ભર નભશે નહીં. તેથી શ્રીગુસાંઇજીની પોળ ઉપર રહું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂરદાસજીએ ગાયું છે 'મારગ રોકિ પર્યો હઠ દ્વારે પતિત શિરોમની સૂર' તે હું પતિત છું. શ્રીગુસાંઇજીના દ્વાર ઉપર મને પાવન શ્રીગુસાંઇજી આવતાં જતાં દર્શન દઇને કરશે. એ વિચારી વિષ્ણુદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપની પોળ ઉપર રહેવાનું મારૂ મન છે.

ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, સારૂં, પોળ ઉપર રહો. ત્યારે વિષ્ણુદાસ પોળી ઉપર રહ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી જ્યારે પધારે ત્યારે વિષ્ણુદાસને પોકારે (કે) વિષ્ણુદાસ પ્રસન્ન છો? ત્યારે વિષ્ણુદાસ કહે, આ ચરણકમલના આશ્રયથી પ્રસન્ન છું. એ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી વિષ્ણુદાસ ઉપર કૃપા કરતા. એ પ્રકારે પોળી ઉપર રહેતા.

વાર્તા પ્રસંગ ૨–તે જ્યાં ત્યાંથી બ્રાહ્મણ પંડિત શ્રીગુસાંઇજીથી વાદ કરવાને આવતા. તે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, એ પંડિત શ્રીગુસાંઇજીથી વાદ કરવાને આવે છે તો એમને હું જ પ્રતિઉત્તર કરી વિદાય કરી દઉં. તો શ્રીગુસાંઇજીને આટલો શ્રમ ન કરવો પડે. એ વિચારી જે પંડિત આવતા તેમનાથી વાદ કરી નિરુત્તર કરી દેતા. ત્યારે પંડિત જાણે જેના પોળીઆમાં આવું સામર્થ્ય છે કે અમારાથી જવાબ ન આવ્યો તો શ્રીગુસાંઇ-

सगरे ब्राह्मण पौरि परतें नित्य फिरि जाते। तब एक दिन श्रीगुसांईजी नें वैष्णव सों कह्यो, जो–आजकल पंडित ब्राह्मण वाद करन नाहीं आवत हैं ताको कारन कहा? तब वैष्णव नें कही, महाराज! पंडित तो बहोत आवत हैं, परि पौरि पर विष्णुदास उनसों वाद करि निरुत्तर करि देत हैं, सो चले जात हैं। तब श्रीगुसांईजी ने विष्णुदास कों बुलाई कैं कह्यो, तुमकों तो श्रीआचार्यजी की कृपा बल ऐसोई है। तातें तुमकों सगरे शास्त्र में अभिनिवेस है। सो पंडित कों निरुत्तर करत हो। परन्तु हमारे द्वारे ब्राह्मण खाली हाथ जात हैं, सो आछो नाहीं। तातें हमारे पास पंडितन कों आवन दीजो। उनसों चर्चा करि उनकों कछू देके विदा करेंगें। तब विष्णुदास दण्डवत करि कहें, महाराज! अब आवन देऊँगो। मैं आपके श्रम होइवे के लिए पंडितन कों विदा करि देतो। अब आवन देऊँगो। सो विष्णुदास पें ऐसी कृपा हती।

भावप्रकाश—और 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी-श्रीगुसांईजी के लालजी-किये हैं तामें कहे हैं, 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि।' ब्राह्मण को दरिद्र रूप जो काष्ट, ताके दावाग्नि (सो) बुझावन हारे। तातें यह नाम प्रगट करन (अर्थ) ब्राह्मण कों बहोत समाधान करि द्रव्यादिक दे विदा करते।

જીથી અમે શું વાદ કરીશું? આ વિચારી બધા બ્રાહ્મણ પોળી ઉપરથી નિત્ય પાછા જતા. ત્યારે એક દિવસે શ્રીગુસાંઇજીએ વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે આજ કાલ પંડિત બ્રાહ્મણ વાદ કરવા નથી આવતા તેનું કારણ શું? ત્યારે વૈષ્ણવો એ કહ્યું, મહારાજ! પંડિત તો બહુ આવે છે પરંતુ પોળી ઉપર વિષ્ણુદાસ એમનાથી વાદ કરીને નિરુત્તર કરી દે છે તે ચાલ્યા જાય છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ વિષ્ણુદાસને બોલાવીને કહ્યું, તમને તો શ્રી-આચાર્યજીનું કૃપાબલ એવું જ છે. તેથી તમને બધા શાસ્ત્રોમાં અભિનિવેશ છે. તેથી પંડિતોને નિરુત્તર કરો છો. પરંતુ અમારા દરવાજેથી બ્રાહ્મણ ખાલી હાથ જાય છે. તે ઠીક નહીં. તેથી અમારી પાસે એમને આવવા દેજો. એમનાથી ચર્ચા કરી એમને કંઇ દઇને વિદાય કરીશું. ત્યારે વિષ્ણુદાસ દંડવત કરીને કહે, મહારાજ! હવે આવવા દઇશ. હું આપને શ્રમ થાય એમ સમજીને પંડિતોને વિદાય કરી દેતો. હવે આવવા દઇશ. તે વિષ્ણુદાસ ઉપર એવી કૃપા હતી.

ભાવપ્રકાશ—અને 'નામરત્ન' ગ્રન્થ શ્રીરઘુનાથજી શ્રીગુસાંઇજીના લાલજી-એ કર્યો છે તેમાં કહ્યુ છે 'વિપ્રદારિદ્રયદાવાગ્નિ' બ્રાહ્મણનું દરિદ્રરૂપ જે કાષ્ટ તેના

भावप्रकाश—काहेतें सूरदासजी गाये हैं। "मारग रोकि परयो हठि द्वारे पतित-सिरोमनि सूर" सो मैं पतित हों, श्रीगुसांईजी के द्वार पर मोकों पावन श्रीगुसांईजी आवते जाते दरसन देकें करेंगे। यह विचारि, विष्णुदास ने कही, महाराज! आपकी पौरी पर रहन कों मेरो मन है।

तब श्रीगुसांईजी कहें, आछो, पौरी पर रहो, तब विष्णुदास पौरी पर रहे। सो श्रीगुसांईजी जब पधारें, तब विष्णुदास कों पुकारें, (जो)-विष्णुदास प्रसन्न हो? तब विष्णुदास कहें, यह चरन कमल के आश्रय तें प्रसन्न हों, या प्रकार श्रीगुसांईजी विष्णुदास पर कृपा करते, या प्रकार पौरी पर रहते।

वार्ता प्रसंग २—सो जहां तहां तें ब्राह्मण पंडित श्रीगुसांईजी तें वाद करन कों आवते। सो विष्णुदास ने कही, ये पंडित श्रीगुसांईजी सों वाद करन कों आवत हैं, सो इनकों मैं ही प्रतिउत्तर करि बिदा करि देऊँ तो श्रीगुसांईजी कों इतनो श्रम न करनो पड़े। यह विचारि, जो-पंडित आवते, तिनसों वाद करि निरुत्तर करि देई। तब पंडित जाने, जो-जिनके पौरिया में यह सामर्थ है, जो-हमकों जुवाब न आयो, तो श्रीगुसांईजी सों हम कहा वाद करेंगे? यह विचारि

કહો ત્યાં રાખે. ત્યારે વિષ્ણુદાસે વિચાર્યું, કે હવે હું વૃદ્ધ થયો છું. બીજી સેવા જન્મભર નભશે નહીં. તેથી શ્રીગુસાંઇજીની પોળ ઉપર રહું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂરદાસજીએ ગાયું છે 'મારગ રોકિ પર્યો હઠ દ્વારે પતિત શિરોમની સૂર' તે હું પતિત છુ. શ્રીગુસાંઇજીના દ્વાર ઉપર મને પાવન શ્રીગુસાંઇજી આવતાં જતાં દર્શન દઇને કરશે. એ વિચારી વિષ્ણુદાસે કહ્યું, મહારાજ! આપની પોળ ઉપર રહેવાનું મારૂં મન છે.

ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, સારૂં, પોળ ઉપર રહો. ત્યારે વિષ્ણુદાસ પોળી ઉપર રહ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી જ્યારે પધારે ત્યારે વિષ્ણુદાસને પોકારે (કે) વિષ્ણુદાસ પ્રસન્ન છો? ત્યારે વિષ્ણુદાસ કહે, આ ચરણકમલના આશ્રયથી પ્રસન્ન છું. એ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી વિષ્ણુદાસ ઉપર કૃપા કરતા. એ પ્રકારે પોળી ઉપર રહેતા.

વાર્તા પ્રસંગ ૨–તે જ્યાં ત્યાંથી બ્રાહ્મણ પંડિત શ્રીગુસાંઇજીથી વાદ કરવાને આવતા. તે વિષ્ણુદાસે કહ્યું, એ પંડિત શ્રીગુસાંઇજીથી વાદ કરવાને આવે છે તો એમને હું જ પ્રતિઉત્તર કરી વિદાય કરી દઉં. તો શ્રીગુસાંઇજીને આટલો શ્રમ ન કરવો પડે. એ વિચારી જે પંડિત આવતા તેમનાથી વાદ કરી નિરુત્તર કરી દેતા. ત્યારે પંડિત જાણે જેના પોળીઆમાં આવું સામર્થ્ય છે કે અમારાથી જવાબ ન આવ્યો તો શ્રીગુસાંઇ-

सगरे ब्राह्मण पौरि परतें नित्य फिरि जाते। तब एक दिन श्रीगुसांईजी नें वैष्णव सों कह्यो, जो–आजकल पंडित ब्राह्मण वाद करन नाहीं आवत हैं ताको कारन कहा? तब वैष्णव नें कही, महाराज! पंडित तो वहोत आवत हैं, परि पौरि पर विष्णुदास उनसों वाद करि निरुत्तर करि देत हैं, सो चले जात हैं। तब श्रीगुसांईजी ने विष्णुदास कों बुलाई कैं कह्यो, तुमकों तो श्रीआचार्यजी को कृपा बल ऐसोई है। तातें तुमकों सगरे शास्त्र में अभिनिवेस है। सो पंडित कों निरुत्तर करत हो। परन्तु हमारे द्वारे ब्राह्मण खाली हाथ जात हैं, सो आछो नाहीं। तातें हमारे पास पंडितन कों आवन दीजो। उनसों चर्चा करि उनकों कछू देके विदा करेंगें। तब विष्णुदास दण्डवत करि कहें, महाराज! अब आवन देऊँगो। मैं आपके श्रम होइवे के लिए पंडितन कों विदा करि देतो। अब आवन देऊँगो। सो विष्णुदास पें ऐसी कृपा हती।

भावप्रकाश—और 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी-श्रीगुसांईजी के लालजी-किये हैं तामें कहे हैं, 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि।' ब्राह्मण को दरिद्र रूप जो काष्ट, ताके दावाग्नि (सो) बुझावन हारे। तातें यह नाम प्रगट करन (अर्थ) ब्राह्मण कों वहोत समाधान करि द्रव्यादिक दे विदा करते।

જીથી અમે શું વાદ કરીશું? આ વિચારી બધા બ્રાહ્મણ પોળી ઉપરથી નિત્ય પાછા જતા. ત્યારે એક દિવસે શ્રીગુસાંઇજીએ વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે આજ કાલ પંડિત બ્રાહ્મણ વાદ કરવા નથી આવતા તેનું કારણ શું? ત્યારે વૈષ્ણવો એ કહ્યું, મહારાજ! પંડિત તો બહુ આવે છે પરંતુ પોળી ઉપર વિષ્ણુદાસ એમનાથી વાદ કરીને નિરુત્તર કરી દે છે તે ચાલ્યા જાય છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ વિષ્ણુદાસને બોલાવીને કહ્યું, તમને તો શ્રીઆચાર્યજીનું કૃપાબલ એવું જ છે. તેથી તમને બધા શાસ્ત્રોમાં અભિનિવેશ છે. તેથી પંડિતોને નિરુત્તર કરો છો. પરંતુ અમારા દરવાજેથી બ્રાહ્મણ ખાલી હાથ જાય છે. તે ઠીક નહીં. તેથી અમારી પાસે એમને આવવા દેજો. એમનાથી ચર્ચા કરી એમને કંઇ દઇને વિદાય કરીશું. ત્યારે વિષ્ણુદાસ દંડવત કરીને કહે, મહારાજ! હવે આવવા દઇશ. હું આપને શ્રમ થાય એમ સમજીને પંડિતોને વિદાય કરી દેતો. હવે આવવા દઇશ. તે વિષ્ણુદાસ ઉપર એવી કૃપા હતી.

ભાવપ્રકાશ—અને 'નામરત્ન' ગ્રન્થ શ્રીરઘુનાથજી શ્રીગુસાંઇજીના લાલજીએ કર્યો છે તેમાં કહ્યું છે 'વિપ્રદારિદ્રયદાવાગ્નિ' બ્રાહ્મણનું દરિદ્રરૂપ જે કાષ્ટ તેના

वार्ता-प्रसंग ३—और एक मथुरा को भट्ट हतो। सो श्रीगुसांईजी सों नित्य कहतो, जो-तिहारे सगरे वैष्णवन कों मैं एक दिन जिमाऊं। तब श्रीगुसांईजी कहते, जो-तुम या बात में मति परो, यामें कहा लेऊँगे? सो वह मानतो नाहीं। नित्य कहतो। सो आपु सुनि के चुप रहते। सो वह भट्ट श्रीगुसांईजी को स्वसुर हतो। सो श्रीगुसांईजी कूँ न्योतो कियो। तब श्रीगुसांईजी वाके घर मथुरा भोजन कों पधारे। तब श्रीगुसांईजी विष्णुदास सों कहैं, जो-जल की झारी ले हमारे संग चलो। तब विष्णुदास जल की झारी ले श्रीगुसांईजी के संग चले। सो श्रीगुसांईजी उह भट्ट के उहां भोजन करि कें उठे। तब विष्णुदास ने श्रीगुसांईजी के हाथ धुवाई, सुद्ध आचमन करायो। तब श्रीगुसांईजी कहैं, हम श्रीगोकुल पधारत हैं, तू थाल को महाप्रसाद ले, थाल मांझि के अइयो। सो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पधारें। विष्णुदास अपने जल सों पोतना करि पातरि धरि थाल को सगरो महाप्रसाद पातरि में करे। पाछे थाल मांझि धोईकें न्यारो धरि महाप्रसाद लेन लागे। तब वह भट्ट और सामग्री ले विष्णुदास पास आई कें कह्यो, यह जूठन क्यों खात हो? मैं सुन्दर

દાવાગ્નિ, બુઝાવવાવાળા. તેથી આ નામ પ્રકટ કરણાર્થે બ્રાહ્મણનું બહુ સમાધાન કરી દ્રવ્યાદિક દઈ વિદાય કરતા.

વાર્તા પ્રસંગ ૩-વળી એક મથુરાનો ભટ્ટ હતો. તે શ્રીગુસાંઈજીને નિત્ય કહેતો, કે તમારા બધા વૈષ્ણવોને હું એક દિવસ જમાડું. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહેતા, કે તમે આ વાતમાં ન પડો. એમાં શું લેશો? પરંતુ તે માનતો નહીં. નિત્ય કહેતો. તેથી આપ સાંભળીને ચૂપ રહેતા. તે ભટ્ટ શ્રીગુસાંઈજીનો સાસરો હતો. પછી તેણે શ્રીગુસાંઈજીને નોતર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી એને ઘરે મથુરામાં ભોજન માટે પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી વિષ્ણુદાસને કહે, કે જલની ઝારી લઇ અમારી સાથે ચાલો. ત્યારે વિષ્ણુદાસ-જલની ઝારી લઇ શ્રીગુસાંઈજીની સાથે ચાલ્યા. પછી શ્રીગુસાંઈજી તે ભટ્ટને ત્યાં ભોજન કરીને ઉઠ્યા. ત્યારે વિષ્ણુદાસે શ્રીગુસાંઈજીને હાથ ધોવડાવી શુદ્ધ આચમન કરાવ્યું. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, અમે શ્રીગોકુલ પધારીએ છીએ. તું થાળનો મહાપ્રસાદ લઇ થાળ માંજીને આવજે. પછી શ્રીગુસાંઈજી તો શ્રીગોકુલ પધાર્યા. વિષ્ણુદાસ પોતાના જલથી પોતનું કરી થાળનો સઘળો મહાપ્રસાદ પાતળમાં ધર્યો. પછી થાળ માંજી ધોઇને અલગ ધરી મહાપ્રસાદ લેવા લાગ્યા. ત્યારે તે ભટ્ટે બીજી સામગ્રી લઇ વિષ્ણુદાસ પાસે આવીને કહ્યું, આ જુઠણ કેમ ખાવ છો? હું સુંદર સામગ્રી ધરૂં તે લો. ત્યારે વિષ્ણુદાસે

सामग्री धरों सो लेऊ। तब विष्णुदास ने कही, मोकों तिहारो नाहिं चहिये। जो-मेरी पातर में डारोगे तो मेरी पातर छूइ जायगी। तब भट्ट क्रोध करिकें चल्यो गयो। विष्णुदास महाप्रसाद ले श्रीगोकुल आये। अपनी पौरी पें बैठि रहें। पाछें वह भट्ट श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-तुम्हारो सेवक शूद्र ने मोसों ऐसो कह्यो, जो-मेरी पातर में सामग्री धरोगे तो मेरी पातर छूइ जायगी। तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम तो कहेत हते हम सब सेवकन कों भोजन करावेंगे। सो एक सेवक शूद्र कों जिमाई न सके तो सगरे सेवकन कों कैसे जिमावते ? तब वह भट्ट सरमाई के चुप होई रह्यौ। सो विष्णुदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये। वार्ता ॥५०॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो-भट्ट के हाथ को कछु न लेनो। काहेतें, भट्ट के यहां श्रीगुसांईजी को संकल्प्यो द्रव्य है, जातें न लेनो। ताहीतें श्रीगुसांईजी उह भट्ट के इहां विष्णुदास भगवदीय कों ले गये। जो-ए सगरे धर्म में निपुण हैं, न चूकेंगे। जो-साधारण वैष्णव कों ले जाई, और वह भट्ट के हाथ को खाई तो ताको धर्म जाई। और आगे वैष्णव की बुद्धि ओछी है, सो सगरे खान लगें तो वैष्णव धर्म कैसे बढ़े ? तातें विष्णुदास कों ले गये। सो वि-

---

મને તમારું નહીં જોઇએ. જો મારી પાતરમાં ધરશો તો મારી પાતર અભડાઇ જશે. ત્યારે તે ભટ્ટ ક્રોધ કરીને ચાલ્યો ગયો. વિષ્ણુદાસ મહાપ્રસાદ લઇ શ્રીગોકુલ આવ્યા. પોતાની પોળી ઉપર બેસી રહ્યા. પછી તે ભટ્ટે શ્રીગોકુલ આવીને શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે તમારા સેવક શુદ્રે મને આવું કહ્યું, કે મારી પાતળમાં સામગ્રી ધરશો તો મારી પાતળ અભડાઇ જશે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તમે તો કહેતા હતા કે બધા સેવકોને ભોજન કરાવીશું. પણ એક સેવક શુદ્રને જમાડી ન શકયા ? તો બધા સેવકોને કેમ જમાડશો ? ત્યારે ભટ્ટ શરમાઇને ચુપ થઇ રહ્યો. તે વિષ્ણુદાસ એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥ ૫૦ ॥

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું કે ભટ્ટના હાથનું કંઈ ન લેવું. કેમકે ભટ્ટને ત્યાં શ્રીગુસાંઈજીનું સંકલ્પેલું દ્રવ્ય છે તેથી ન લેવુ. તેથી જ શ્રીગુસાંઈજી તે ભટ્ટને ત્યાં વિષ્ણુદાસ ભગવદીયને લઈ ગયા, કે એ બધા ધર્મમાં નિપૂણ છે. ચુકશે નહી. જો સાધારણ વૈષ્ણવને લઈ જાત અને તે ભટ્ટના હાથનુ ખાત તો તેનો ધર્મ જાત. વળી આગળ વૈષ્ણવની બુદ્ધિ ઓછી છે તે બધા ખાવા લાગે તો વૈષ્ણવ-

ष्णुदास कहैं, मेरी पातर छूई जाईगी। यामें भट्ट को स्वरूप जताये। जा सामग्री कों स्पर्श भट्ट करें ताकों छूई गई वस्तु जाननो। तहां यह सन्देह बड़ो है, जो–उत्तम ब्राह्मण हैं, श्रीगुसांईजो के सगे सम्बन्धी, श्रीगुसांईजी इनके हाथ को लेत हैं। तब वैष्णव को कहा दोष है? यह सन्देह है तहाँ कहत हैं, जो–शास्त्र में देह सम्बन्धी कहे हैं, और भाव सम्बन्धी कहे हैं। सो देह सम्बन्धी यादव और कंसादिक और भाव सम्बन्धी ब्रजभक्त। सो जादवन कों हू श्रीठाकुरजी पृथ्वी पर भार रूप जानें, तातें नास किये। और ब्रजभक्तन कों भाव सम्बन्ध हतो, तातें ब्रजभक्तन के प्रेम सों बस भये। यद्यपि श्रीठाकुरजी जादवन के संग रहे, परन्तु भगवद् स्वरूप को ज्ञान न भयो। और ब्रजभक्तन कों जन्म होत ही भयो। नंदरायजी के घर आय सब पांय परी। तैंसे श्रीगुसांईजी कों भट्ट सगे सम्बन्धी जानत हैं, कोऊ निन्दक हू है। द्रव्यादिक लेवे की चाह राखत है। तातें और कहाँ तांई कहिये। आसुरावेसी जाननें। और भक्तन कों दास भाव है। सो दास धर्म यह, जो–स्वामी की जूठन लेनो। तातें भट्ट के हाथ को लेय तो वाकी बुद्धि सर्वथा नासही होई। और श्रीगुसांईजी लेत हैं। सो ईश्वर है। जैसे श्रीठाकुरजी दावानल पान करि गये, और सों न होई।

धर्म કેવી રીતે વધે ? તેથી વિષ્ણુદાસને લઈ ગયા. વળી વિષ્ણુદાસ કહે, મારી પાતળ અભડાશે એમાં ભટ્ટનું સ્વરૂપ બતાવ્યું. જે સામગ્રીને સ્પર્શ ભટ્ટ કરે તેને અભડાઈ ગયેલી વસ્તુ જાણવી. ત્યાં એ સંદેહ મોટો છે કે ઉત્તમ બ્રાહ્મણ છે શ્રીગુસાંઈજીનાં સગાં સબધી છે શ્રીગુસાંઈજી એમના હાથનુ લે છે ત્યારે વૈષ્ણવને શો દોષ ? એ સદેહ છે ત્યાં કહે છે, કે શાસ્ત્રમાં દેહ સબધી કહ્યા છે અને ભાવ સંબધી પણ (કહ્યા) છે. તે દેહ સંબધી યાદવ અને કંસાદિક અને ભાવ સબધી વ્રજભક્ત. તે યાદવોને પણ શ્રીઠાકુરજીએ પૃથ્વી ઉપર ભારરૂપ જાણ્યા. તેથી નાશ કર્યો. અને વ્રજભકતોનો ભાવસબંધ હતો તેથી વ્રજભકતોના પ્રેમથી વશ થયા. યદ્યપિ શ્રીઠાકુરજી યાદવોની સાથે રહ્યા. પરંતુ (તેમને) ભગવદ્સ્વરૂપનુ જ્ઞાન ન થયુ અને વ્રજભકતોને જન્મ થતાંજ જ્ઞાન થયું. નંદરાયજીના ઘરે આવી બધી પગે પડી. તે પ્રકારે શ્રીગુસાંઈજીને ભટ્ટ સગાસંબધી જાણે છે કોઈ નિદક પણ છે. દ્રવ્યાદિક લેવાની ચાહના રાખે છે. તેથી વધુ કયાં સુધી કહીએ ? આસુરાવેશી જાણવા અને ભકતોને દાસ ભાવ છે. તે દાસ ધર્મ એ, કે સ્વામીનું જૂઠું લેવું. તેથી ભટ્ટના હાથનું લે તો એની બુદ્ધિ સર્વથા નાશજ થાય. અને શ્રીગુસાંઈજી લે છે તે ઈશ્વર છે. જેમ શ્રીઠાકુરજી દાવાનળ પાન કરી ગયા. બીજાથી ન થાય. તેમજ શ્રીગુસાંઈજી

तैसे ही श्रीगुसांईजी ज्ञाति-व्यवहार के लिये ले। परन्तु वैष्णव कों न लेनो। और जैसे गंगाजल यमुनाजल कोई हीन जाती अपने पात्र में भरि लावे सो वैष्णव न लेई तैसे ही। महाप्रसाद तो उत्तम गंगाजल है, जैसे जल आकास तें निर्मल स्वांती की बूंद बरसत है। परन्तु पात्र भेद तें सीप में मोती होइ। बाँस में परे बंस लोचन होई। सर्प के मुख में विष होई। या प्रकार के भेद होत हैं। तातें भट्ट भये तथा अन्य मार्गीय के हाथ को सर्वथा न लेनो। तहाँ कोई कहे, जो-भट्ट नाम समर्पण करि सेवा करत हैं तिनके हाथ को कैसो? तहाँ कहत हैं, इनकों भगवद् धर्म स्पर्श करे ही नाहीं। काहे तें, नाम समर्पण श्रीगुसांईजी के बालक सों ले, फेरि ज्ञाति बुद्धि करत हैं। तब सगरे धर्म नास होत हैं। उनकी कहा सेवा और कहा समर्पण? गुरु में ज्ञाति बुद्धि करे जूठन चरणामृत न लेई। तब हीन धर्म होई। और कोई ऐसो होई जूठन चरणामृत ले ज्ञाति बुद्धि न करें, वैष्णव की रीति चले। सोऊ जब दूसरे भट्ट के हाथ को ले तब वैसे ही होई। तातें भक्ति वैष्णव कों श्रीगुसांईजी ने दीनी है। तहाँई है। याके लिये विष्णुदास द्वारा सगरे वैष्णवन कूं सिक्षा दिये। वैष्णव ॥५०॥

* * *

જ્ઞાતિ વ્યવહાર માટે લે પરંતુ વૈષ્ણવે ન લેવું. વળી જેમ ગંગાજલ, જમનાજલ કોઈ હીન જાતિ પોતાના પાત્રમાં ભરી લાવે તો વૈષ્ણવ ન લે તેમજ મહાપ્રસાદ તો ઉત્તમ ગંગાજલ છે. જેમ આકાશથી નિર્મલ સ્વાતિનું બુંદ વર્ષે છે પરંતુ પાત્ર ભેદથી સીપમાં મોતી થાય વાંસમાં વંશલોચન થાય. સર્પના મુખમાં વિષ થાય એ પ્રકારે ભેદ થાય છે. તેથી ભટ્ટ થયા તથા અન્યમાર્ગીયના હાથનું સર્વથા ન લેવું. ત્યાં કોઈ કહે, કે ભટ્ટ નામ-સમર્પણ કરી સેવા કરે છે તેમના હાથનુ કેમ? ત્યાં કહે છે એમને ભગવદ્ધર્મ સ્પર્શ કરેજ નહી. કેમકે નામ-સમર્પણ શ્રીગુસાંજીના બાલકથી લે પાછી જ્ઞાતિબુદ્ધિ કરે છે ત્યારે બધો ધર્મ નાશ થાય છે. એમની શી સેવા? અને શું સમર્પણ? ગુરુમાં જ્ઞાતિ બુદ્ધિ કરે, જૂઠણ ચરણામૃત ન લે ત્યારે હીન ધર્મ હોય. વળી કોઈ એવો હોય જૂઠણ ચરણામૃત લે, જ્ઞાતિ બુદ્ધિ ન કરે, વૈષ્ણવની રીતિએ ચાલે. તે પણ જ્યારે બીજા ભટ્ટના હાથનુ લે ત્યારે તેવોજ થાય. તેથી ભક્તિ વૈષ્ણવને શ્રીગુસાંઈજીએ આપી છે ત્યાં જ છે. એને માટે વિષ્ણુદાસ દ્વારા બધા વૈષ્ણવોને શિક્ષા આપી. વૈષ્ણવ ॥૫૦॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जीवनदास क्षत्री सिंहनन्द में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए जीवनदास लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं। तहाँ 'ईश्वरी' इनको नाम है। सो सिंहनन्द में एक क्षत्री के घर जन्मे। बड़े भये बरस बीस अठारा के। तब जीवनदास को पिता सिंहनन्द तें दिल्ली कों आयो। सो दिल्ली में दलाली करन लाग्यो। सो जीवनदास कों राग रंग को इस्क बहोत, सो जो-कछु कमाय सो वेश्या भवैया कों दे नाच देखे। पिता कमाइ जामें खाई। सो यह बात पिता ने सुनी तब जीवनदास के ऊपर बहोत खीज्यो। जो-तू आज पाछे नाच तमासे में मत जईयो। तब जीवनदास ने कही, जो-अब न जाऊँगो। पाछे इनसों तो राग रंग सुने बिना रह्यो न जाई। सो पिता सों छिपाई के जाई। तब पिताने फेरि सुनी। तब जीवनदास पर बहोत खीज के कह्यो, तू दिल्ली ते सिंहनन्द जा। सहर में तेरो काम नहीं है। तब दोई रुपैया जीवनदास कों पिताने दिये। और कहे, कछुक दिन सिंहनन्द में रहि अपने घरमें। पाछे मेरे पास अईयो। तब जीवनदास दोई रुपैया ले सिंहनन्द चले। सो मार्ग में विचार किये, मोकों राग रंग बिना तो रह्यो न जाइगो। और सिंहनन्द में सगरे लोग पहिचानि के,

---

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, જીવણદાસ ક્ષત્રી, સિંહનંદમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ જીવણદાસ લીલામાં શ્રીયમુનાજીની સખી છે. ત્યાં 'ઈશ્વરી' એનું નામ છે. તે સિંહનંદમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. મોટા થયા વર્ષ ૨૦-૧૮ ના. ત્યારે જીવણદાસનો પિતા સિંહનંદથી દિલ્હી આવ્યો. તે દિલ્હીમાં દલાલી કરવા લાગ્યો. તે જીવણદાસને રાગ રંગનો ઈશ્ક ઘણો. તે જે કંઈ કમાય તે વેશ્યા ભવૈયાને દઈ નાચ જુએ. પિતા કમાય તેમાં ખાય. એ વાત પિતાએ સાંભળી ત્યારે જીવણદાસના ઉપર ઘણું ખીજ્યો, કે તૂ આજ પછી નાચ તમાશામાં જઈશ નહીં. ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, કે હવે નહીં જઉ. પછી એનાથી તો રાગ રંગ સાંભળ્યા વિના રહ્યો જાય નહી. તેથી પિતાથી છાના જતા. ત્યારે પિતાએ ફરી સાંભળ્યુ. ત્યારે જીવણદાસ ઉપર બહુ ખીજીને કહ્યુ, તૂ દિલ્હીથી સિંહનંદ જા. શહેરમાં તારૂ કામ નથી. પછી પિતાએ જીવણદાસને બે રૂપીઆ આપ્યા અને કહ્યુ, થોડા દિવસ સિંહનંદમાં આપણા ઘરમાં રહી પછી મારી પાસે આવજે. ત્યારે જીવણદાસ બે રૂપીઆ લઈ સિંહનંદ ચાલ્યા. પછી માર્ગમાં વિચાર કર્યો મને રાગ-રંગ વિના તો રહ્યો નહી જાય. વળી સિંહનંદમાં બધા મનુષ્યો ઓળખાણના. તેથી ત્યાં સાંભળ્યું

ताते वहाँ सुन्यो देख्यो न जाई। और पिता घर पठायो। यह विचार करत मार्ग में ठाड़े है रह्यो। मो दोई घरी वीति गई ठाड़े ही। इतने एक भवैया को संघ आयो। सो आगरे जात हतो। सो वह संघ देखिके जीवनदास ने पूछी तुम कौन हो, कहाँ ते आये हो, कहाँ जाओगे? तब उनने कही, हम भवैया हैं, पश्चिम तें आये हैं, आगरे में जांयगे। तब जीवनदास ने विचारी, आगरा बड़ो सहर बतावत हैं, सो देखों, घर जाय कहा करूँगो? सो जीवनदास उन भवैया के संग आगरे आये। आगरे में कपरा की दलाली करें, तामें खानपान करें। जो अधकी कमाई तामें राग रंग सुनि आवें। या प्रकार बरस तीन रहे। सो पिता ने जानी, जो-पुत्र कहूँ मार्ग में मारयो गयो। के कोई और देस निकरि गयो। राग रंग को इस्क बूरो होत है सो गयो। यह विचारि, रोय के बैठि रह्यो।

यहाँ आगरे में एक समय ठग आछे कपरा पहिर कें आये। सो जीवनदास सों कही, जो-हमकों आछे आछे कपरा लेने हैं। सो जीवनदास एक बजाज की हाट तें रुपैया सौ को माल लायो। तब वा ठग बातन में लगाई, सांझ पारी। जीवनदास सों कह्यो, जो-सबेरे तुमकों जो राखेंगे ताके दाम देइंगे। सो तुम भोर ही आई जैयो। सो जीवनदास वा ठग को ऊपर को वैभव गेहना कपरा देखि

જોયું ન જાય અને પિતાએ ઘર મોકલ્યો. એમ વિચાર કરતાં માર્ગમાં ઉભા થઈ રહ્યા. એમ ઉભા ઉભા બે ઘડી વીતી ગઈ. એટલામાં એક ભવૈયાનો સંઘ આવ્યો. તે આગરા જતો હતો. તે સંઘ જોઇને જીવણદાસે પૂછયું તમે કોણ છો? ક્યાંથી આવ્યા છો? કયાં જશો? ત્યારે એમણે કહ્યું, અમે ભવૈયા છીએ. પશ્ચિમથી આવ્યા છીએ આગ્રામાં જઇશું. ત્યારે જીવણદાસે વિચાર્યું, આગ્રા મોટું શહેર કહે છે. તે જોઇએ. ઘર જઈ શુ કરીશ? પછી જીવણદાસ એ ભવૈયાની સાથે આગ્રા આવ્યા. આગ્રામાં કપડાની દલાલી કરે તેમાં ખાન-પાન કરે. જે અધિકમાં કમાય તેમાં રાગ-રંગ સાંભળી આવે. એ પ્રકારે વર્ષ ત્રણ રહ્યા. પિતાએ જાણ્યું, કે પુત્ર કંઈ માર્ગમાં મરી ગયો કે કોઈ બીજા દેશ નિકળી ગયો. રાગરંગનો ઈશ્ક ખોટો હોય છે તે ગયો. એ વિચારી રોઇને બેસી રહ્યો. અહીં આગ્રામાં એક સમય ઠગ સારાં કપડાં પહેરીને આવ્યા. તે જીવણદાસને કહ્યું, કે અમને સારાં સારાં કપડાં લેવાં છે. ત્યારે જીવણદાસ એક કપડાવાળાની દુકાનથી રૂપીઆ સોનો માલ લાવ્યા. ત્યારે તે ઠગોએ વાતમાં લગાડી સાંજ પાડી. જીવણદાસને કહ્યું, કે સવારે તમને જે રાખીશું તેના પૈસા આપીશું. તેથી તમે વ્હેલી સવારે આવી જજો. તે જીવણદાસ ઠગોનો

जाने, जो–ये भले मनुष्य हैं। सो जीवनदास रात्रि कों राग रंग सुनवे गये। यहाँ ठग सगरे कपरा ले चले गये। सो भोर भये आयके देखें तो कोई नाहीं। लोगन सूँ पूछे। तब लोगन ने कहीं, ऊह तो ठग हते। दस पाँच को सीधो सामग्री हू ले गये। तब जीवनदास वह बजाज पास जाई कह्यो, तिहारो माल या प्रकार सगरो गयो। तब वह बजाज ने जीवनदास कों बन्दीखाने दिये। सो तीन दिन बीते, अन्न जल बिना। तब जीवनदास ने उह बजाज सूँ कह्यो, अब मेरे प्रान तो निश्चय जायेंगे। तातें एक काम तुम करो। मेरे पिता दिल्ली में दलाली करत हैं, वाकों मैं लिखूँगो। और सिंहनन्द में मेरो घर है, तहाँ लिखूँगो। सो तिहारे सौ रुपैया उपाय करि भरि देऊँगो। तातें तुम मोकों यमुना-स्नान करावो। काहे तें, हमारे गाम में श्रीवल्लभाचार्यजी के सेवक सब वैष्णव आपुस में बात करत हते, जो–श्रीयमुनाजी में नाहेतें, पान कियेतें, सगरो दुःख जात हैं। नौतम देह होत हैं। तातें वैष्णव झूंठ न बोले। सो तुम मोकों जमुनाजी नाह्नवे देऊ, तो तिहारे रुपैया को विचार कछु करूं। तब वह बजाज के मन में दया आई, सो कह्यो, हम घर में न्हवाई दे जमुना जल सों। तातें खान पान करो। तब जीवनदास ने कही, जो–

ઉપરનો વૈભવ ધરેણાં કપડાં જોઈ, જાણ્યુ કે એ ભલા મનુષ્ય છે. પછી જીવણદાસ રાત્રિએ રાગ–રંગ સાંભળવા ગયા. અહીં ઠગ બધાં કપડાં લઈ ચાલ્યા ગયા. પછી સવાર થયે આવીને જુએ તો કોઇ નહીં. લોકોને પૂછ્યુ ત્યારે લોકોએ કહ્યુ, તે તો ઠગ હતા. દશ–પાંચનુ સીધુ–સામગ્રી પણ લઈ ગયા. ત્યારે જીવણદાસે તે કપડાંના વેપારીની પાસે જઇને કહ્યુ, તમારો માલ આ પ્રકારે બધો ગયો. ત્યારે તે વેપારીએ જીવણદાસને કેદખાનામાં મૂક્યા. ત્રણ દિવસ વીત્યા અન્ન જલ વિના ત્યારે જીવણદાસે તે વેપારીને કહ્યું, હવે મારા પ્રાણ નિશ્ચય જશે. તેથી એક કામ તમે કરો. મારા પિતા દિલ્લીમાં દલાલી કરે છે એમને હુ લખીશ. અને સિંહનંદમાં મારે ઘર છે ત્યાં લખીશ. તે તમારા સો રૂપીઆ ઉપાય કરી ભરી દઇશ. તેથી તમે મને યમુના–સ્નાન કરાવો. કેમકે અમારા ગામમાં શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના સેવક બધા વૈષ્ણવો આપસમાં વાત કરતા હતા કે શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાવાથી પાન કરવાથી બધુ દુઃખ જાય છે. નવીન દેહ થાય છે. તેથી વૈષ્ણવો જુઠું બોલે નહીં. તમે મને શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાવા દો. તો તમારા રૂપીઆનો વિચાર કંઈ કરૂ. ત્યારે તે વેપારીના મનમાં દયા આવી. તે કહ્યું, અમે ઘરમાં જમનાજલથી ન્હવડાવી દઇએ. તેથી ખાનપાન કરો. ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, કે મોટું પુણ્ય તો ધારામાં ન્હાવાનું છે. તેથી મને શ્રી-

बडो पुन्य धारा न्हाये को है। सो जो-मोकों जमनाजी न्हान देऊगे तो आछो है। नाहिं तो मैं जल हूँ न लेऊँगो। मेरो कण्ठ सूखत है, सो आजकल में प्राण जाँईगे। तब हत्या तिहारे ऊपर लगेगी। तब वह बजाज चार मनुष्य संग दिये, जो-इनकों हाथि बांधिके जमना न्हवाई लाओ। कहूँ यह डूबि न मरे। तातें गाढ़ो पकरे रहीयो। तब चारों मनुष्य दो हाथि बाँधि के श्रीयमुनाजी के तीर ले गये, जीवनदास कों न्हवाये। तहाँ श्रीआचार्यजी संध्यावन्दन करत हते। वैष्णव दस बीस गावत हते। ता समय श्रीआचार्यजी की दृष्टि जीवनदास पर परी। तब श्रीआचार्यजी जीवनदास कों देखि कहें, यह कौन है? याको हाथ बाँधे चार मनुष्य पकरे हैं, यहाँ लावो। तब सगरे वैष्णव जाय उन चारों मनुष्यन कों समुझाये। सो जीवनदास कों पकरे मनुष्य, श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी कहे, जीवनदास राग रंग और देखे, सुनेगो? तब जीवनदास ने कही, महाराज! यह राग रंग को फल भोगत हों, पिता को कह्यो न मान्यो सो भोगनो (पर्‍यो)। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास कों कहे यह जीवनदास कों सौ रुपैया कहूँ सों दिवाय, हमारे नाम लिखके याकों छुड़ाय लाऊ। यह सुनत ही गॉव के दस बीस वैष्णव विनती करी, महाराज! इतने के लिये कृष्णदास कों आप काहे कों पठावत हों?

યમુનાજી ન્હાવા દો તો સારૂ. નહીં તો હું જલ પણ નહીં લઉં. મારો કંઠ સૂકાય છે. તેથી આજકાલમાં પ્રાણ જશે. ત્યારે હત્યા તમારા ઉપર લાગશે. ત્યારે તે વેપારીએ ચાર મનુષ્ય સાથે આપ્યાં, કે એને હાથ બાંધીને જમનામાં ન્હવડાવી લાવો. કંઇ એ ડુબી ન મરે. તેથી મજબૂત પકડી રહેજો. ત્યારે ચારે મનુષ્ય બે હાથ બાંધીને શ્રીયમુનાજીના તીરે લઈ ગયા. જીવણદાસને ન્હવડાવ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવંદન કરતા હતા. વૈષ્ણવ દશ-વીસ ગાતા હતા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજીની દૃષ્ટિ જીવણદાસ ઉપર પડી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી જીવણદાસને જોઇને કહે, આ કોણ છે? આનો હાથ બાંધી ચાર મનુષ્યોએ પકડયોછે. અહીં લાવો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ જઈ તે ચારે મનુષ્યોને સમજાવ્યા. પછી જીવણદાસને પકડીને મનુષ્ય શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જીવણદાસ રાગ રંગ બીજો જોઇશ, સાંભળીશ? ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, મહારાજ! આ રાગ-રંગનું ફલ ભોગવુ છું. પિતાનું કહ્યુ ન સાંભળ્યું તે ભોગવવુ પડયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને કહે, આ જીવણદાસને સો રૂપીઆ કંઇથી અપાવી અમારા ખાતે લખાવી એને છોડાવી દો. એ સાંભળતાંજ ગામના દશ-વીસ વૈષ્ણવોએ વિનતી કરી, મહારાજ! એટ-

हम छुड़ाय लावेंगे । तब श्रीआचार्यजी कहे, बेगे याकों छुड़ाय के लाओ । तब वैष्णव जीवनदास कों संग लाई वह बजाज कों कहे, जीवनदास कों छोड़ि देऊ, रुपैया सौ हम सों लेऊ । (पाछे) सो रुपैया दे जीवनदास कूँ श्रीआचार्यजी पास लाये । तब श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि, जीवनदास ने विनती करी, महाराज ! यह लौकिक बंदीखाने तें आप छुड़ाये । तो आप यह संसार रुपी बंदीखाने में ते मोकों छुड़ाओ । और धन्य श्रीयमुनाजी हैं, और धन्य तिहारे वैष्णव हैं । सो सिंहनंद में एक दिन अपने घर के कार्य हों वैष्णवन के पास गयो हतो । सो वैष्णव आपस में कहत हते । जो यमुनाजी के न्हाये सब दुःख जाय, नौतन सरीर होय । सो सत्य कहे । मैं अब ही न्हायो, यह लौकिक दुःख गयो । और संसार को दुःख हू आपकी कृपा तें जायगो । आप सेवक करोगे तब नौतन सरीर हू होई जायगो । तातें तिहारे वैष्णव धन्य हैं । एक क्षण में संग कियो ताकें फल को पार नाहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहे, श्रीयमुनाजी न्हाय आव । तब जीवनदास श्रीयमुनाजी न्हाय के श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी जीवनदास कों नाम सुनाय, ब्रह्मसंबंध कराये । पाछे आप कहे, तू

લાને માટે કૃષ્ણદાસને આપ શા માટે મોકલો છો? અમે છોડાવી લાવીશું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે જલ્દી એને છોડાવી લાવો. ત્યારે વૈષ્ણવ જીવણદાસને સંગે લઈ તે વેપારીને કહે, જીવણદાસને છોડી દો. રૂપીઆ સો અમારી પાસેથી લો. પછી સો રૂપીઆ દઈ જીવણદાસને શ્રીઆચાર્યજી પાસે લાવ્યા. ત્યારે જીવણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી, વિનતી કરી, મહારાજ આ લૌકિક બંદીખાનેથી આપે છોડાવ્યો તો હવે આ સંસાર રૂપી બંદીખાનામાંથી (પણ) મને છોડાવો. અને ધન્ય શ્રીયમુનાજી અને ધન્ય તમારા વૈષ્ણવ છે. કેમકે એક દિવસે સિંહનંદમાં પોતાના ઘરના કાર્ય માટે હું વૈષ્ણવોની પાસે ગયો હતો તે વૈષ્ણવો આપસમાં કહેતા હતા, કે શ્રીયમુનાજીના ન્હાવાથી બધું દુખ જાય. નૂતન શરીર થાય તે સત્ય કહ્યું. હું હમણાં જ ન્હાયો. આ લૌકિક દુઃખ ગયું. અને સંસારનું દુઃખ પણ આપની કૃપાથી જશે. આપ સેવક કરશો ત્યારે નૂતન શરીર પણ થઈ જશે. તેથી તમારા વૈષ્ણવો ધન્ય છે એક ક્ષણમાં સંગ કર્યો તેના ફલનો પાર નથી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે શ્રીયમુનાજી ન્હાઈ આવ. ત્યારે જીવણદાસ શ્રીયમુનાજી ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જીવણદાસને નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી આપ કહે તૂ અમારા સંગ ચાલ. અમે સિંહનંદ તને પહોંચાડીશું. અહીં

हमारे संग चलि, हम सिंहनन्द तोकों पहोंचावेंगे। यहां रहेगो तो कछू दुःसंग लगो तो फिर बिगरेगो। पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णवन के घर पधारे, रसोई करि भोगि धरे। पाछे भोजन करि जूठन की पातर जीवनदास कों धरे। जीवनदास चोथे दिन महाप्रसाद लिये, सो देह उत्तम होय गई। पाछे श्रीआचार्यजी आगरे सूं जीवनदास कों संग ले पधारे, सो थानेस्वर आये। तब एक वैष्णव कों सिंहनन्द पठाये, और कहे, जीवनदास के घर कहियो, जो-जीवनदास आयो है। तब वह वैष्णव सिंहनन्द जाई जीवनदास के पिता सूं कह्यो। तिहारो पुत्र श्रीआचार्यजी के संग थानेस्वर आयो है। तब जीवनदास को पिता प्रसन्न होई के सिंहनन्द तें दोरयो आयो, सो जीवनदास कों थानेस्वर में मिल्यो। सो रोइ के छाती सों लगायो, और कह्यो-पुत्र तू कहां गयो हतो, हम तो जान्यो कहूँ मरि गयो। तब जीवनदास ने सगरी बात कही। या प्रकार श्रीआचार्यजी मोकों बन्दीखाने सों छुड़ाइ संग लियो, कृपा करी। परन्तु अब तुम घर में जाई मेरी स्त्री, माता सबकों इहां ले आवो। तुम सगरे श्रीआचार्यजी के सेवक होऊ, तो मैं घर में आऊँ। नाहीं तो मैं घर में न रहूंगो। तब पिताने कही, मैं सबकों लिवाइ लाऊँगो, तू कहेगो सो करूंगो। तब जीवनदास को पिता सिंहनंद में जाई सबकों थानेश्वर ले

રહીશ તો પાછો દુઃસંગ લાગશે તો ફરી બગડીશ. પછી શ્રીઆચાર્યજી વૈષ્ણવોના ઘરે પધાર્યા. રસોઈ કરી ભોગ ધરે પછી ભોજન કરી જુઠનની પાતર જીવણદાસને ધરે. જીવણદાસે ચોથા દિવસે મહાપ્રસાદ લીધો. તે દેહ ઉત્તમ થઈ ગઇ. પછી શ્રીઆચાર્યજી આગ્રાથી જીવણદાસને સાથે લઇ પધાર્યા તે થાનેશ્વર આવ્યા. ત્યારે એક વૈષ્ણવને સિંહનંદ મોકલ્યો અને કહ્યું, જીવણદાસના ઘરે કહેજે કે જીવણદાસ આવ્યો છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવે સિંહનદ જઈ જીવણદાસના પિતાને કહ્યું, તમારો પુત્ર શ્રીઆચાર્યજીની સાથે થાનેશ્વર આવ્યો છે. ત્યારે જીવણદાસનો પિતા પ્રસન્ન થઇને સિંહનંદથી દોડી આવ્યો. તે જીવણદાસને થાનેશ્વરમાં મળ્યો. પછી રોઇને છાતીથી લગાડ્યો અને કહ્યું, પુત્ર તૂં ક્યાં ગયો હતો? અમે તો જાણ્યું કંઇ મરી ગયો. ત્યારે જીવણદાસે બધી વાત કહી, કે આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીએ મને બંદીખાનેથી છોડાવીને સાથે લીધો, કૃપા કરી. પરંતુ હવે તમે ઘરમાં જઈ મારી સ્ત્રી, માતા બધાંને અહીં લઈ આવો. તમે બધા શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થાવ. તો હું ઘરમાં આવુ; નહીં તો હું ઘરમાં નહી રહું. ત્યારે પિતાએ કહ્યુ, હુ બધાને બોલાવી લાવીશ. તૂ કહીશ એ કરીશ. પછી જીવણદાસનો પિતા સિંહનંદમાં જઇ બધાને થાનેશ્વર

आयो। श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज! जीवनदास के प्राण राखे। यह हम पर बड़ो उपकार किये। अब हम सगरे आपकी सरन हैं। नाम सुनाईये। तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनायो। तब जीवनदास ने श्रीआचार्यजी सूँ बिनती करी, महाराज! सबनकों ब्रह्मसंबंध होई तो आछो। तब श्रीआचार्यजी कहें, ये ब्रह्मसंबंध के अधिकारी नाहीं। इनकों नाम ही ते उद्धार होईगो। पाछे जीवनदास ने कही, महाराज! अब मोकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र जीवनदास के माथे सेवार्थ पधराई कहें, अब तुम घर में रहि भगवद् सेवा करो। तब जीवनदास पिता माता स्त्री सहित श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि, विदा होई सिंहनंद में आये। तब जीवनदास ने माता पिता के आगे कही, जो-रुपैया आपु दे बंदीखाने तें मोकों छुड़ाये ऐसे दयाल श्रीआचार्यजी है। तब माता पिता ने कही, गुरुको ऋण माथे नहीं राखनो। सो सगरे गहने कपड़ा बेचे, सो एक सौ दस रुपैया आये। तब पिता ने जीवनदास सों कह्यो, यह रुपैया सगरे जीवनदास श्रीआचार्यजी कों दे आऊ। गुरु को ऋण माथे आछो नाहीं। तब जीवनदास एक सौ दस रुपैया ले श्रीआचार्यजी के आगे जाई धरे। तब श्री-

---

લઇ આવ્યો. શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી, મહારાજ! જીવણદાસના પ્રાણ રાખ્યા. એ અમારા ઉપર મોટો ઉપકાર કર્યો. હવે અમે બધા આપની શરણે છીએ. નામ સંભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવ્યુ. ત્યારે જીવણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! બધાંને બ્રહ્મસંબંધ હોય તો સારૂ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ બ્રહ્મસંબંધનાં અધિકારી નથી. એમનો નામથીજ ઉદ્ધાર થશે. પછી જીવણદાસે કહ્યું મહારાજ! હવે મને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં પ્રસાદી વસ્ત્ર જીવણદાસના માથે સેવા માટે પધરાવીને કહ્યું, હવે તમે ઘરમાં રહી સેવા કરો. ત્યારે જીવણદાસ માતા-પિતા સ્ત્રી સહિત શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિદાય થઇ સિંહનદમાં આવ્યા. ત્યારે જીવણદાસે માતા-પિતાની આગળ કહ્યુ, કે સો રૂપીઆ આપી આપે મને કેદખાનામાંથી છોડાવ્યો એવા દયાલુ શ્રીઆચાર્યજી છે. ત્યારે માતા-પિતાએ કહ્યું, ગુરુનુ ઋણ માથે ન રાખવું. તેથી બધાં ઘરેણાં કપડાં વેચ્યાં તેના એકસો દશ રૂપીઆ આવ્યા. ત્યારે પિતાએ જીવણદાસને કહ્યું, જીવણદાસ! આ બધા રૂપૈયા શ્રીઆચાર્યજીને આપી આવ. માથે ગુરૂનુ ઋણ સારૂ નહીં. ત્યારે જીવણદાસે એકસો દશ રૂપૈયા લઈ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ જઇને ધર્યા, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ તમે એટલો સં-

आचार्यजी कहें, यह तुम इतनो संकोच काहेकों कियो ? तुम तो हमारे हो। हम प्रसन्न हैं ताते तुमकों कछू बाधक न हतो। तब जीवनदास ने कही, महाराज ! हम कहा लायक हैं। आप जो उपकार कियो है, सो रोम रोम सब आपके देन हार हैं। आप जहाँ बेचोगे तहाँ बिकेंगे। विना मोल के गुलाम हैं। संसार रूप नर्क भोगत हैं। सो आप छुड़ाये। ये बिनती दैन्यता सुनि बहोत प्रसन्न होइ श्रीआचार्यजी कहें, जीवनदास ! अब तुमकों संसार के दुःख सुख कछू बाधा न करेंगे। और जो तुम मनमें धारोगे सो मनोरथ तिहारे सगरे पूरण होंइगे। अब घर जाई भगवत् सेवा करो। तब जीवनदास दण्डवत करि घर आये। पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे। सो जीवनदास प्रीति सों सेवा करते। वैष्णव को स्नेह पूर्वक नित्य सत्संग करते। सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—**सो एक समें सिंहनन्द के वैष्णव सब मिलकें अड़ेल श्रीआचार्यजी के दरसन कों आवत हे। तामें जीवनदास हू हते। सो एक दिन मार्ग में मजल उतरि अपनो अपनो चौका दे सगरे वैष्णव रसोई करत हते, ता समें मेह चढ़ि आयो। चारों ओर तें घटा आई। सो बूंद बरसन लागी। तब सगरे वैष्णव कहें, मेह**

કોચ શા માટે કર્યો ? તમે તો અમારા છો. અમે પ્રસન્ન છીએ તેથી તમને કંઈ બાધક ન હતુ. ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, મહારાજ ! અમે શું લાયક છીએ ? આપે જે ઉપકાર કર્યો છે તેનાં આ બધાં રોમરોમ આપનાં દેવાદાર છે. આપ જ્યાં વેચશો ત્યાં વેચાઈશું. વિના મોલનાં ગુલામ છીએ. સંસાર રૂપી નર્ક ભોગવતા હતા તે આપે છોડાવ્યા. આવી વિનતી દૈન્યતા સાંભળી બહુ પ્રસન્ન થઈ શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ, જીવણદાસ ! હવે તમને સંસારનુ સુખદુઃખ બાધા નહીં કરે. વળી જે તમે મનમાં ધારશો તે બધો મનોરથ તમારો પૂર્ણ થશે. હવે ઘર જઇ ભગવત્સેવા કરો. ત્યારે જીવણદાસ દંડવત્ કરી ઘર આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. જીવણદાસ પ્રીતિથી સેવા કરતા. વૈષ્ણવનો સ્નેહપૂર્વક નિત્ય સત્સંગ કરતા. શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવ જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ ૧–એક સમય સિંહનંદના વૈષ્ણવ બધા મળીને અડેલ શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શને આવતા હતા તેમાં જીવણદાસ પણ હતા. તે એક દિવસ માર્ગમાં મુકામે ઉતરી પોતપોતાનો ચોકો દઈ બધા વૈષ્ણવો રસોઈ કરતા હતા. તે સમયે મેહ ચઢી આવ્યો. ચારે તરફથી ઘટા આવી. બુંદ વરસવા લાગી. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો કહે,

आयो । श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! जीवनदास के प्राण राखे । यह हम पर बड़ो उपकार किये । अब हम सगरे आपकी सरन हैं । नाम सुनाईये । तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनायो । तब जीवनदास ने श्रीआचार्यजी सूँ बिनती करी, महाराज ! सबनकों ब्रह्मसंबंध होई तो आछो । तब श्रीआचार्यजी कहें, ये ब्रह्मसंबंध के अधिकारी नाहीं । इनकों नाम ही ते उद्धार होईगो । पाछे जीवनदास ने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र जीवनदास के माथे सेवार्थ पधराई कहें, अब तुम घर में रहि भगवद् सेवा करो । तब जीवनदास पिता माता स्त्री सहित श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि, विदा होई सिंहनंद में आये । तब जीवनदास ने माता पिता के आगे कही, जो-रुपैया आपु दे बंदीखाने तें मोकों छुड़ाये ऐसे दयाल श्रीआचार्यजी हैं । तब माता पिता ने कही, गुरुको ऋण माथे नहीं राखनो । सो सगरे गहने कपड़ा बेचे, सो एक सौ दस रुपैया आये । तब पिता ने जीवनदास सों कह्यो, यह रुपैया सगरे जीवनदास श्रीआचार्यजी कों दे आऊ । गुरु को ऋण माथे आछो नाहीं । तब जीवनदास एक सौ दस रुपैया ले श्रीआचार्यजी के आगे जाई धरे । तब श्री-

---

લઇ આવ્યો. શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી, મહારાજ ! જીવણદાસના પ્રાણ રાખ્યા. એ અમારા ઉપર મોટો ઉપકાર કર્યો, હવે અમે બધા આપની શરણે છીએ. નામ સભળાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવ્યુ. ત્યારે જીવણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ ! બધાંને બ્રહ્મસંબધ હોય તો સારૂ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ બ્રહ્મસંબધનાં અધિકારી નથી. એમનો નામથીજ ઉદ્ધાર થશે. પછી જીવણદાસે કહ્યું મહારાજ ! હવે મને શી આજ્ઞા છે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં પ્રસાદી વસ્ત્ર જીવણદાસના માથે સેવા માટે પધરાવીને કહ્યુ, હવે તમે ઘરમાં રહી સેવા કરો. ત્યારે જીવણદાસ માતા-પિતા સ્ત્રી સહિત શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત કરી વિદાય થઇ સિંહનદમાં આવ્યા. ત્યારે જીવણદાસે માતા-પિતાની આગળ કહ્યું, કે સો રૂપીઆ આપી આપે મને કેદખાનામાંથી છોડાવ્યો એવા દયાલુ શ્રીઆચાર્યજી છે. ત્યારે માતા-પિતાએ કહ્યુ, ગુરુનુ ઋણ માથે ન રાખવું. તેથી બધાં ઘરેણાં કપડાં વેચ્યાં તેના એકસો દશ રૂપીઆ આવ્યા. ત્યારે પિતાએ જીવણદાસને કહ્યું, જીવણદાસ ! આ બધા રૂપૈયા શ્રીઆચાર્યજીને આપી આવ. માથે ગુરૂનુ ઋણ સારૂ નહીં. ત્યારે જીવણદાસે એકસો દશ રૂપૈયા લઈ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ જઇને ધર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ તમે એટલો સં-

कृपापात्र हे। अपनी आन क्यों न दिवाई? श्रीआचार्यजी की क्यों दिवाई? तहाँ कहत हैं, जो–जीवनदास अपनी आन देते तोऊ ना बरसतो। परन्तु जीवनदास कों अपनो महात्म्य प्रकट करनो भावत नाहीं। सो यातें, जो–बहोत महात्म्य बढ़े, सो कबहूं अहंकार आवे। सो बिगार ही होई। तातें श्रीआचार्यजी अप्रसन्न होई। जो–तुच्छ कार्य में श्रीठाकुरजी कूँ श्रम कराये। तातें जीवनदास हृदय में पुष्टिमारग की रीति जानत हैं। तातें श्रीआचार्यजी को महात्म्य वैष्णव कों दिखाये। वै. ॥५१॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, भगवानदास सारस्वत ब्राह्मण हाजीपुर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में विसाखाजी की सखी हैं। लीला में इनको नाम 'सुगंधिनी' है। सो हाजीपुर में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे। सो पटना में एक यजमान के घर गये। तहां कछुक दिन रहे। ता समय भगवानदास वर्ष सतरह के हते। सो उह यजमान की बहोत टहल करि पाछे चलन लागे तब यह यजमान पावली के टका देन लाग्यो। तब भगवानदास क्रोध करके कहें, मोकों नाहीं चहिये। तू लखपति होय के मोकों इतने दिन राखि के यह दक्षणा दियो? मेरे

પાત્ર હતા. પોતાની આણ કેમ ન દીધી? શ્રીઆચાર્યજીની કેમ દીધી? ત્યાં કહે છે, કે જીવણદાસ પોતાની આણ દેતા તો પણ ન વરસતો. પરંતુ જીવણદાસને પોતાનું માહાત્મ્ય પ્રકટ કરવું રૂચતું નથી, તે એથી, કે ઘણું માહાત્મ્ય વધે તો કયારેય અહંકાર આવે. તેથી અનિષ્ટજ થાય. તેથી શ્રીઆચાર્યજી અપ્રસન્ન થાય, કે તુચ્છ કાર્યમાં શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરાવ્યો. તેથી જીવણદાસ હૃદયમાં પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ જાણે છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીનું માહાત્મ્ય વૈષ્ણવોને દેખાડયું. વૈ. ॥૫૧॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક ભગવાનદાસ, સારસ્વત બ્રાહ્મણ, હાજીપુરના, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ 'સુગંધિની' છે. તે હાજીપુરમાં એક સારસ્વત બ્રાહ્મણના ઘરમાં જન્મ્યા. પછી પટનામાં એક યજમાનના ઘરે ગયા ત્યાં કેટલાક દિવસ રહ્યા. તે સમય ભગવાનદાસ વર્ષ સત્તરના હતા. તે યજમાનની બહુ ટહલ કરી પછી જવા લાગ્યા. ત્યારે એ યજમાન પાવલીના પૈસા દેવા લાગ્યો. ત્યારે ભગવાનદાસ ક્રોધ કરીને કહે, મને ન જોઇએ. તૂ લખપતિ થઇને મને આટલા દિવસ રાખીને આ દક્ષણા આપી?

आयो, आजु रसोई होनी कठिन है। तब जीवनदास सगरे वैष्णव सों कहे, तुम चिन्ता मति करो। तब जीवनदास मेघ की ओर देखिके कहें, तोकूं श्रीआचार्यजी की आन है, जो अबही मति बरसे। सो मेहू रहि गयो। पाछे सगरे वैष्णव रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद ले, अपने ठिकाने जाइ सोये। तब जीवनदास ने कही अब आन छूटी। तेरे मन आवे तितनो बरसियो, तब बरस्यो। तब सगरे वैष्णव चक्रत होइ रहे, जो-जीवनदास में भगवद् सामर्थ्य है। पाछे सगरे वैष्णव अड़ेल में आइके श्रीआचार्यजी के दरसन करि दण्डवत किये। श्रीआचार्यजी सबको समाधान किये। तब एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! मार्ग में एक दिन रसोई करत मेह आयो, सो जीवनदास ने आपुकी आन दिवाई। सो तत्काल मेह रहि गयो। तब श्रीआचार्यजी जीवनदास सों कहे, तू मेरी आन दिवायो हतो और मेह बरसतो तो तू कहा करतो? तब जीवनदास ने कही, महाराज! ऐसो ऊह कौन है, जो-आपकी आन दिवाए पाछे बरसे? इन्द्र सहित धरती पर डारि देऊ। आपके प्रताप तें। तब श्रीआचार्यजी चुप होइ रहे। सो जीवनदास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये। वार्ता ॥५१॥

भावप्रकाश—तहाँ यह सन्देह होई, जो-जीवनदास तो भगवदीय

મેહ આવ્યો. આજ રસોઇ થવી કઠિણ છે. ત્યારે જીવણદાસ બધા વૈષ્ણવોને કહે, તમે ચિંતા ન કરો. ત્યારે જીવણદાસ મેઘની તરફ જોઇને કહે, તને શ્રીઆચાર્યજીની આણ છે, જો હમણાં ન વર્ષીશ. તે મેહ રહી ગયો. પછી બધા વૈષ્ણવો રસોઇ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી, મહાપ્રસાદ લઇ, પોતાને ઠેકાણે જઇ સોયા. ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, હવે આણ છુટી. તારા મનમાં આવે તેટલો વરસજે ત્યારે વર્ષ્યો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો ચકત થઇ રહ્યા. પછી બધા વૈષ્ણવોએ અડેલમાં આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કર્યા. શ્રીઆચાર્યજીએ બધાંનું સમાધાન કર્યું. ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! માર્ગમાં એક દિવસ રસોઇ કરતાં મેહ ચઢી આવ્યો તે જીવણદાસે આપની આણ દીધી તે તત્કાલ મેહ રહી ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી જીવણદાસને કહે, તેં મારી આણ દીધી હતી અને મેહ વરસતો તો તું શું કરતો? ત્યારે જીવણદાસે કહ્યું, મહારાજ! એવો તે કોણ છે કે આપની આણ દીધા પછી વરસે? ઇંદ્ર સહિત ધરતી ઉપર નાખી દઉં, આપના પ્રતાપથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ચુપ થઇ રહ્યા. તે જીવણદાસ એવા ટેકના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તા કયા સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૫૧॥

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં એ સંદેહ થાય કે જીવણદાસ તો ભગવદીય કૃપા-

पानी लाऊँ, वासन मांजों। तव कृष्णदास कहें, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक नाहीं हो तातें तिहारे हाथ को पानी काम न आवे। और पात्रहू छुवायो न जाय। तब भगवानदास श्रीआचार्यजी सों पूछे, महाराज! आपको जल शूद्र लावत है, वासन मांझत है, सो मैं ब्राह्मण हूँ मोसों क्यों न करावत? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मत में भगवान कों जो कोई न जाने सो शूद्र तें हू गयो बीत्यो। और भगवान कों जो जाने, सोई सर्वोपरि ब्राह्मण, इतनो भेद है। तातें और सूँ नाहीं करावत। तब भगवानदास ने कही, महाराज! यह कैसे जानिये, वैष्णव भगवान् कों जानत हैं? तव श्रीआचार्यजी कहैं, श्रीठाकुरजी कृपा करें तब जान्यो जाय। तब भगवानदास ने कही कृपा कौन प्रकार करें? तब श्रीआचार्यजी कहैं, गुरु प्रसन्न होय तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये जानिये। तब भगवानदास ने कही, मेरे तो गुरु कोई नाहीं है। आपही मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, सेवक होनो वहोत कठिन है। तुम ब्राह्मण अपनो महात्म मानो। और सेवक भये तो दास होनो पड़े, ताते सेवक मति होऊ। तब भगवानदास कहें, अव तो हों दास होऊंगो। स्वामी पद वहोत दिन कियो, तामें दुःख ही पायो। सो अब मोकों सेवक करो। तब

આપ્યું. ત્યારે ચોથા દિવસે કૃષ્ણદાસને કહે, મને કંઈ કામ–ટહલ બતાવો. પાણી લાઉં, વાસણ માંજું. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, તમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક નથી તેથી તમારા હાથનું પાણી કામ ન આવે. વળી પાત્ર પણ અડાડયું ન જાય. ત્યારે ભગવાનદાસે શ્રીઆચાર્યજીને પૂછયું, મહારાજ! આપનું જલ શૂદ્ર લાવે છે, વાસણ માંજે છે; તો હું બ્રાહ્મણ છું. મારાથી કેમ (સેવા) નથી કરાવતા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારા મતમાં ભગવાનને જે કોઇ ન જાણે તે શૂદ્રથી પણ ગયો વીત્યો. અને ભગવાનને જે જાણે તેજ સર્વોપરી બ્રાહ્મણ એટલો ભેદ છે. તેથી બીજાથી (સેવા) નથી કરાવતા. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મહારાજ એ કેમ જાણીએ? વૈષ્ણવ ભગવાનને જાણે છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે ત્યારે જાણી શકાય. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યુ, કૃપા કયા પ્રકારે કરે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગુરુ પ્રસન્ન થાય ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થયા જાણિએ. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મારે તો ગુરુ કોઇ નથી. આપજ મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સેવક થવું બહુ કઠણ છે. તમે બ્રાહ્મણ પોતાનું માહાત્મ્ય માનો અને સેવક થયે તો દાસ થવું પડે. તેથી સેવક ન થાવ. ત્યારે ભગવાનદાસ કહે, હવે તો હું દાસ થઇશ. સ્વામી પદ ઘણા દિવસ કર્યું. તેમાં દુઃખ જ મળ્યું. હવે મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ

कछू न चहिये। सो पावली छोड़ि घर कों चले आये। पिता के आगे रुदन कियो, जो–हम ऐसे ब्राह्मण ठाकुर ने क्यों किये ? दो पैसा के लिये राजसी लोगन की चाकरी करें, मुख देखें। यह बड़े पाप को फल है। तब पिता ने कही, मैं परदेस जात हूँ। सो पूरब तें कमाय के आऊँगो। सो भगवानदास ने कही, तुम वृद्ध हो मति जाओ, मैं जाऊँगो। सो भगवानदास पटना के आगे चले। सो श्रीआचार्यजी कासी तें पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारत हते। सो मारग में भगवानदास कों दरसन भयो। तब भगवानदास ने कही, भलो, मोकों पंडित ब्राह्मण को मार्ग में संग तो आछो भयो। सो आचार्यजी श्रीमुख की वार्ता वैष्णवन सों कहैं, सो पाछे सुनत जाय। पाछे मजलि पर उतरे तब श्रीआचार्यजी भगवानदास सों कहें, जाउ, कृष्णदास सों चहिये सो सीधो लेउ। और कृष्णदास सों कहैं, जो–अपनो नित्य को सीधो लहें, पाछे ब्राह्मण जो मांगे सो दीजो। सो कृष्णदास भगवानदास कों संग ले गये। अपनो सीधा सामग्री ले कहैं, तुमकों चहिये सो लेऊ। तब भगवानदास कहें, सेर खांड सेर घी और दो सेर चून। सो लोभ के मारे दिन दोय तीन को सीधो ले आये। थोरो सो किये और पास राखे। या प्रकार तीन दिन लों मांगे, सो कृष्ण-दास ने दियो। तब चौथे दिन कृष्णदास सों कहे, मोकों कछु काम टहल बताओ।

મારે કંઈ ન જોઇએ. તે પાવલી છોડીને ઘરે ચાલી આવ્યા. પિતાની આગળ રૂદન કર્યું, કે અમને ઠાકુરે એવા બ્રાહ્મણ કેમ કર્યા? બે પૈસાને માટે રાજસી લોકોની ચાકરી કરે, મુખ જુએ ? આ મોટા પાપનું ફલ છે. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, હું પરદેશ જઉં છું ને પૂર્વથી કમાઈને આવીશ. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, તમે વૃદ્ધ છો ન જાવ. હું જઈશ. પછી ભગવાનદાસ પટનાની આગળ ચાલ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કાશીથી પુરૂષોત્તમક્ષેત્ર પધારતા હતા. તે માર્ગમાં ભગવાનદાસને દર્શન થયાં. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, ભલો, મને પંડિત બ્રાહ્મણનો માર્ગમાં સંગ તો સારો થયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીમુખની વાર્તા વૈષ્ણવોને કહે, તે પાછળથી સાંભળતા જાય. પછી મુકામ ઉપર ઉતરે ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ભગવાનદાસને કહે, જા, કૃષ્ણદાસથી જોઈએ તે સીધું લે અને કૃષ્ણદાસને કહ્યું, કે આપણુ નિત્યનું સીધું લીધા પછી બ્રાહ્મણ જે માંગે તે આપજે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ભગવાનદાસને સંગ લઈ ગયા પોતાનું સીધુ સામગ્રી લઈ કહે, તમારે જોઇએ તે લો. ત્યારે ભગવાનદાસ કહે, શેર ખાંડ, શેર ઘી, અને બશેર લોટ. તે લોભના મારે દિવસ બે ત્રણનુ સીધુ લઈ આવ્યા. થોડુ (ખર્ચ) કર્યું, બીજુ પાસે રાખ્યુ. એ પ્રકારે દિવસ ત્રણ સુધી માંગ્યું. તે કૃષ્ણદાસે

पानी लाऊँ, वासन मांजों। तब कृष्णदास कहें, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक नाहीं हो तातें तिहारे हाथ को पानी काम न आवे। और पात्रहू छुवायो न जाय। तब भगवानदास श्रीआचार्यजी सों पूछे, महाराज! आपको जल शूद्र लावत है, वासन मांझत है, सो मैं ब्राह्मण हूँ मोसों क्यों न करावत? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मत में भगवान कों जो कोई न जाने सो शूद्र तें हू गयो बीत्यो। और भगवान कों जो जाने, सोई सर्वोपरि ब्राह्मण, इतनो भेद है। तातें और सूँ नाहीं करावत। तब भगवानदास ने कही, महाराज! यह कैसे जानिये, वैष्णव भगवान् कों जानत हैं? तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीठाकुरजी कृपा करें तब जान्यो जाय। तब भगवानदास ने कही कृपा कौन प्रकार करें? तब श्रीआचार्यजी कहें, गुरु प्रसन्न होय तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये जानिये। तब भगवानदास ने कही, मेरे तो गुरु कोई नाहीं है। आपही मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, सेवक होनो बहोत कठिन है। तुम ब्राह्मण अपनो महात्म मानो। और सेवक भये तो दास होनो पड़े, ताते सेवक मति होऊ। तब भगवानदास कहें, अब तो हों दास होऊंगो। स्वामी पद बहोत दिन कियो, तामें दुःख ही पायो। सो अब मोकों सेवक करो। तब

આપ્યું. ત્યારે ચોથા દિવસે કૃષ્ણદાસને કહે, મને કંઈ કામ–ટહલ બતાવો. પાણી લાઉં, વાસણ માંજું. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, તમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક નથી તેથી તમારા હાથનું પાણી કામ ન આવે. વળી પાત્ર પણ અડાડયું ન જાય. ત્યારે ભગવાનદાસે શ્રીઆચાર્યજીને પૂછ્યું, મહારાજ! આપનું જલ શૂદ્ર લાવે છે, વાસણ માંજે છે; તો હુ બ્રાહ્મણ છું. મારાથી કેમ (સેવા) નથી કરાવતા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારા મતમાં ભગવાનને જે કોઇ ન જાણે તે શૂદ્રથી પણ ગયો વીત્યો. અને ભગવાનને જે જાણે તેજ સર્વોપરી બ્રાહ્મણ એટલો ભેદ છે. તેથી બીજાથી (સેવા) નથી કરાવતા. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મહારાજ એ કેમ જાણીએ? વૈષ્ણવ ભગવાનને જાણે છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે ત્યારે જાણી શકાય. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, કૃપા કયા પ્રકારે કરે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગુરુ પ્રસન્ન થાય ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થયા જાણિએ. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મારે તો ગુરુ કોઇ નથી. આપજ મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સેવક થવું બહુ કઠણ છે. તમે બ્રાહ્મણ પોતાનું માહાત્મ્ય માનો અને સેવક થયે તો દાસ થવું પડે. તેથી સેવક ન થાવ. ત્યારે ભગવાનદાસ કહે, હવે તો હું દાસ થઇશ. સ્વામી પદ ઘણા દિવસ કર્યું. તેમાં દુઃખ જ મળ્યું. હવે મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ

श्रीआचार्यजी नाम सुनाय, पानी भराये, पात्र मँजाये, चौका दिवाये। पाछे जूठन की पातर धरे। सो महाप्रसाद भगवानदास लिये। तब बुद्धि फिरी। जो-मैं इनको सीधा तीन दिन लोभ करि के खायो, सो बहोत बुरी करी। पाछे गाँठि में पाँच रुपैया हते, सो श्रीआचार्यजी की भेट धरि बिनती किये, महाराज! हम आपको सीधो सामग्री खायो लोभ करिके, सो आछी न करी। परन्तु हम अज्ञानी हैं। आपको स्वरूप नाहीं जान्यो, सो अपराध क्षमा करिये। आप साक्षात् ईश्वर हैं। अब मोकों ब्रह्मसंबंध करावो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें, काल्हि तुम कों समरपण करावेंगे। और ये रुपैया पांच तू अपने पास राखि, खरच के, तेरे काम आवेंगे। तब भगवानदास ने विनती करी, जो—महाराज! यह आपकी भेट करि चुक्यो। अब मैं कैसे राखूँ? तब श्रीआचार्यजी राखें। पाछे दूसरे दिन ब्रह्मसंबंध करायो।

पाछे भगवानदास एक वर्ष श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग रहि टहल करी। उष्णकाल में पंखा बड़ो बनाय मारग में छाया करते। जहां आप पोढ़ते तहां सुन्दर बिछौना धरती सूधी करि बिछावते, रसोई की परचारगी करतें। सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय के अपनी पादुका की सेवा दीनी। और कहें, तुम इनकी

નામ સંભળાવી પાણી ભરાવ્યું, પાત્ર મંજાવ્યાં, ચોકો દેવડાવ્યો. પછી જૂઠણની પાતર ધરી. તે મહાપ્રસાદ ભગવાનદાસે લીધો. ત્યારે બુદ્ધિ ફરી, કે મે એમનુ સીધુ ત્રણ દિવસ લોભ કરીને ખાધું તે બહુ ખોટું કર્યું. પછી ગાંઠમાં પાંચ રૂપીઆ હતા તે શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! અમે આપનું સીધું-સામગ્રી લોભ કરીને ખાધું તે ઠીક ન કર્યું. પરંતુ અમે અજ્ઞાની છીએ. આપના સ્વરૂપને નહીં જાણ્યુ. તેથી અપરાધ ક્ષમા કરો. આપ સાક્ષાત્ ઈશ્વર છો. હવે બ્રહ્મ-સંબંધ કરાવો. ત્યારે શ્રીમહાપ્રભુજી આપ કહે, કાલે તમને સમર્પણ કરાવીશું. વળી એ રૂપીઆ પાંચ તૂ તારી પાસે રાખ. ખર્ચના, તારે કામ આવશે. ત્યારે ભગવા-નદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આ આપની ભેટ કરી ચૂકયો. હવે હુ કેમ રાખું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રાખ્યા. પછી બીજા દિવસે બ્રહ્મસબંધ કરાવ્યું. પછી ભગ-વાનદાસે એક વર્ષ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની સંગે રહી ટહલ કરી. ઉષ્ણકાલમાં મોટો પંખો બનાવી માર્ગમાં છાયા કરતા. જ્યાં આપ પોઢતા ત્યાં ધરતી સીધી કરી સુંદર બિછાનુ બીછાવતા. રસોઈની પરચારગી કરતા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઇને પોતાની પાદુકાની સેવા દીધી. અને કહ્યું, તમે એની સેવા સુંદર

सेवा नीकी भांति सूँ करियो। अब तुम घर जाऊ। तब भगवानदासने कही, मेरे घर पधारो तो आप कुटुम्ब कों सरन लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे कुटुम्बी दैवी जीव नाहीं है, सो सरनि न होंयगे। और सेवा तू ही करेगो। तब भगवानदास दण्डवत करि बिनती करि बिदा होई, हाजीपुर अपने गाम में आये। सो न्यारी ठौर घर में करि सेवा मन लगाय करन लागे। सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—पाछे कछू दिन में श्रीआचार्यजी महाप्रभु भगवानदास के घर पधारे, पाक सामग्री करि भोजन किये। भगवानदास कों जूठनि की पातर धरी। भगवानदास के मा-बाप कों, स्त्री कों नाम सुनायो। पाछे आप अड़ेल कों पधारे। सो जा ठिकानें श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हते, तहां भगवानदास चौंतरी करि नित्य पोतना करते। नित्य सवेरे न्हाय के दंडवत करते। यह भाव जानते (जो)—यहां साक्षात श्रीआचार्यजी बिराजे हैं। सो भगवानदास कों दरसन देते, वार्ता करते। सो भगवानदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। तिनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥५२॥

* * *

રીતિથી કરજો. હવે તમે ઘર જાવ. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મારા ઘરે પધારો તો આપ કુટુંબને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારા કુટુંબી દૈવીજીવ નથી. તેથી શરણ નહીં થાય. અને તૂ જ સેવા કરજે. ત્યારે ભગવાનદાસ વિનંતી કરી વિદાય થઇ હાજીપુર પોતાના ગામમાં આવ્યા. તે અલગ જગા ઘરમાં કરી સેવા મન લગાડી કરવા લાગ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ ૧–પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ભગવાનદાસના ઘરે પધાર્યા. પાક-સામગ્રી કરી ભોજન કર્યું. ભગવાનદાસને જૂઠણની પાતર ધરી. ભગવાનદાસના મા-બાપને સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. પછી પોતે અડેલ પધાર્યા. તે જે ઠેકાણે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ બિરાજતા હતા ત્યાં ભગવાનદાસ ચોતરી કરી નિત્ય પોતનું કરતા. નિત્ય સવારે ન્હાઇને દંડવત્ કરતા. એ જાણતા કે સાક્ષાત્ શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે. પછી ભગવાનદાસને દર્શન દેતા, વાર્તા કરતા. તે ભગવાનદાસ એવા શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૫૨॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, भगवानदास सॉंचोरा ब्राह्मण, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में भगवानदास ललिताजी की सखी है। इनको नाम लीला में 'सुन्दरी' है। सो गुजरात में राजनगर के पास एक गांव है। तहां एक सांचोरा के घर जन्में। सो वर्ष आठ के भये। तब राजनगर में एक पंडित पास पढ़न जाते। सो वर्ष १० में विद्या पढ़े। तब वह पंडित श्रीरणछोड़जी के दरसन कों आयो। ताके संग भगवानदास आप श्रीरणछोड़जी के दरसन कों आये। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पधारें। तब वह पंडित श्रीआचार्यजी सूं वाद करन आयो, सो वाद करन में वह पंडित हारयो। सो आपुनें डेरा गयो। पाछे भगवानदास सों वह पंडित नें कही, मैं कासी जाय फेरि और पढ़ि के वाद श्री-आचार्यजी सों करूंगो। तू मेरे संग चलि। तब भगवानदास नें वह पंडित सों कह्यो, मोकों तो श्रीरणछोड़जी के दरसन करने हैं। अबहि काल्हि आयो, आजु कैसे चलूं? एक महिना तो दरसन करूं। तब पंडित ने कही, मैं तो जात हौं फेरि कबहूँ मिलेंगे। सो पंडित तो कासी कों आयो। भगवानदास श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत् करि बिनती किये। जो—महाराज! वह पंडित वाद करत में

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ભગવાનદાસ સાંચોરા બ્રાહ્મણ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ ભગવાનદાસ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ લીલામાં 'સુંદરી' છે. એ ગુજરાતમાં રાજનગરના પાસે એક ગામ છે ત્યાં એક સાંચોરાના ઘરે જન્મ્યા. એ વર્ષ આઠના થયા ત્યારે રાજનગરમાં એક પંડિત પાસે ભણવા જતા. તે વર્ષ દશમાં વિદ્યા ભણ્યા ત્યારે તે પંડિત શ્રીરણછોડજીના દર્શને આવ્યો. તેની સાથે ભગવાનદાસ પોતે શ્રીરણછોડજીના દર્શને આવ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ પધાર્યા. ત્યારે તે પંડિત શ્રીઆચાર્યજી સાથે વાદ કરવા આવ્યો. તે વાદ કરવામાં તે પંડિત હાર્યો. તે પોતાના મુકામે ગયો. પછી ભગવાનદાસને એ પંડિતે કહ્યુ, હું કાશી જઈ ફરી વધારે ભણીને શ્રીઆચાર્યજીથી વાદ કરીશ. તૂ મારી સાથે ચાલ. ત્યારે ભગવાનદાસે તે પંડિતને કહ્યુ, મારે તો શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરવાં છે. હજુ કાલેજ આવ્યો. આજે કેમ ચાલુ ? એક મહીનો તો દર્શન કરૂં ? ત્યારે પંડિતે કહ્યુ, હુ તો જઉ છુ ફરી કયારેક મળીશું પછી પંડિત કાશીએ આવ્યો. ભગવાનદાસે શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી દંડવત્ કરીને વિનતી કરી, કે મહારાજ!

निरुत्तर भयो। सो लाज पाय के कासी उठि गयो। मैं वाके पास पढ़त हो। सो अब आप मोकों पढ़ावोगे? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें, तुम बहोत पढ़िकें कहा करोगे? तब भगवानदास नें कही, महाराज! बहोत पढ्यो होऊं तों बहोत कमाऊं द्रव्य। जहां तहां पंडितन की सभा में आदर होय। जो कोई चर्चा शास्त्र की करें तासों वाद करूं, संसार में पूजा होय। तब श्रीआचार्यजी कहें, विद्या पढ़िके दोय फल होत हैं। विद्या पढ़े शास्त्र वांचे। तब शास्त्र हैं सो सीतल जल रूप दोऊ सुन्दर भीतर के नेत्र हैं, सो खुले सब वस्तू को ज्ञान होई। परन्तु सत पुरुष कों ज्ञान होई। सीतल जलवत्, शान्त चित्त होय जाय। दुःख सुख कों भगवद् इच्छा जानें। जगत में जीव मात्र में भगवद् बुद्धि होय। सो दैन्यता संतोष निर्मलता क्रोधादिक रहित होय। भगवान के आश्रित होय तो वाको पढ़नो सुफल है, याहू लोक में और परलोक में सुख पावे। और ओछो पात्र विद्या पढ़े, तब वह विद्या वाकों अग्नि रूप होय। एक तो काम, क्रोध, मद, मात्सर्य में लपट्यो हतो ता पर विद्या पढे को मद और बढ़े। सो काहू कों जगत में गिने नाहीं। रात्र दिन अहंकार रूपी अग्नि में जरयो करे। सो यह लोक में जीव दुःखी रहे, परलोक में नर्क कों पावे। यातें तुम बहोत शास्त्र पढ़ो मति।

એ પંડિત વાદ કરવામાં નિરુત્તર થયો. તે લાજ પામીને કાશી ચાલી નિકળ્યો. હું એની પાસે ભણ્યો છું. હવે આપ મને ભણાવશો ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજી આપ કહે, તમે ઘણું ભણીને શું કરશો ? ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યુ, મહારાજ ! ઘણું ભણ્યો હોઉં તો ઘણું દ્રવ્ય કમાઉં. જ્યાં ત્યાં પંડિતોની સભામાં આદર હોય. જે કોઇ શાસ્ત્રની ચર્ચા કરે તેનાથી વાદ કરૂં. સંસારમાં પૂજા થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, વિદ્યા ભણીને બે ફ્ળ થાય છે. વિદ્યા ભણી શાસ્ત્ર વાંચે. ત્યારે શાસ્ત્ર છે તે શીતલ જલરૂપ બન્ને સુંદર અંદરના નેત્ર છે તે ખૂલે. બધી વસ્તુનુ જ્ઞાન થાય. પરંતુ સત્પુરુષને જ્ઞાન થાય. શીતલ જલવત્ શાંત ચિત્ત હોઈ જાય. દુઃખ સુખને ભગવદીચ્છા જાણે. જગતમાં જીવમાત્રમાં ભગવદ્‌બુદ્ધિ થાય. દીનતા, સંતોષ, નિર્મલતા ક્રોધાદિક રહિત થાય. ભગવાનનો આશ્રિત થાય તો તેનું ભણવું સફ્ળ છે. આ લોકમાં અને પરલોકમાં સુખ પામે. અને ઓછું પાત્ર વિદ્યા ભણે ત્યારે તે વિદ્યા તેને અગ્નિરૂપ થાય. એક તો કામ, ક્રોધ, મદ, માત્સર્યમાં લપટ્યો હતો તે ઉપર વિદ્યા ભણ્યાનો મદ ફરી ચઢે તેથી કોઇને જગતમાં ગણે નહી. રાત્ર-દિવસ અહંકાર રૂપી અગ્નિમાં બળ્યો કરે. આ લોકમાં જીવ દુઃખી રહે; પરલોકમાં નર્કને પામે. એથી તમે બહુ શાસ્ત્ર

जो पढ़े सोई बहोत है। और द्रव्यादिक है सो भाग्य तें मिलत है। पंडित बड़े बड़े राजसी मूर्खन की चाकरी करत हैं। तातें संतोष दया राखें। काम, क्रोध, लोभादिक मोह कों छोड़ि, श्रीठाकुरजी को भजन करो। जीविका भगवान विचारे है, सो भगवद् इच्छातें भागि प्रमाण मिली रहेगी। या प्रकार सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजी के बचन सुनिके भगवानदास के हृदय में भगवतधर्म प्रवेस भयो। सो श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि बिनती किये, महाराज ! अब मेरे मन को संदेह सगरो दूरि ह्वै गयो। सब में भगवद् भजन श्रेष्ठ हैं। तातें अब मोकों कृपा करिके सरन लेहू। जा प्रकार आप बतावो ता प्रकार भगवद् भजन करूं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा न्हाय आव। तब भगवानदास न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करवायो। तब भगवानदास ने कही, महाराज ! मेरो मन आपके पास रहि के आपकी सेवा करन को है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, हमारे पास तुमसों रह्यो न जायगो। अनेक अपराध जीव सों होत है। सो कबहू अप्रसन्नता होय तो तोकों भगवद् प्राप्ति में अंतराय होय। और ये वैष्णव हैं, सो हमारे स्वभाव कों जानि रहे हैं। ये हमारे पास रहिवे लायक है। तातें तुम घर जाव। वैष्णवको संग कछुक दिन करो। पाछें गोवर्द्धन परवत पर

ભણ્યા નહીં. જે ભણ્યા તે જ ઘણું છે. અને દ્રવ્યાદિક છે તે ભાગ્યથી મળે છે મોટા મોટા પંડિત રાજસી મૂર્ખોની ચાકરી કરે છે. તેથી સંતોષ દયા રાખો. કામ, ક્રોધ, લોભાદિક મોહને છોડી શ્રીઠાકુરજીનુ ભજન કરો. જીવિકા ભગવાને વિચારી હશે તે ભગવદીચ્છાથી ભાગ્ય પ્રમાણે મળી રહેશે. એ પ્રકારે સિદ્ધાન્ત રૂપ શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન સાંભળીને ભગવાનદાસના હૃદયમાં ભગવત્ધર્મ પ્રવેશ થયો. પછી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ !' હવે મારા મનનો સંદેહ બધો દૂર થઈ ગયો. બધામાં ભગવદ્ભજન શ્રેષ્ઠ છે. તેથી હવે મને કૃપા કરીને શરણ લો. જે પ્રકારે આપ બતાવો તે પ્રકારે ભગવદ્ભજન કરૂ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા ન્હાઈ આવ. ત્યારે ભગવાનદાસ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવીને નિવેદન કરાવ્યુ. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યુ, મહારાજ ! મારૂ મન આપની પાસે રહીને આપની સેવા કરવાનું છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, અમારી પાસે તમારાથી રહી નહીં શકાય. જીવથી અનેક અપરાધ થાય છે તો ક્યારેક અપ્રસન્નતા થાય તો તને ભગવદ્પ્રાપ્તિમાં અંતરાય થાય. અને આ વૈષ્ણવો છે તે અમારા સ્વભાવને જાણી રહ્યા છે. એ અમારી પાસે રહેવા લાયક છે. તેથી તમે ઘર જાવ. થોડા

श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयंगे। सो तुम तहां जाय श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सेवा करियो। तिहारो सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे। पाछे आप ब्रह्म-सम्बन्ध को श्लोक, अष्टाक्षर लिखिके दिये, और कहे रसोई करि, इनकों भोग धरि निर्वाह करियो। तब भगवानदास ने विनती करी, महाराज! आप जहां तांई विराजो यहां, तहां तांई तो आपकी सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी कहे सुखेन करो। सो भगवानदास जल लावते, रसोई की सगरी परचारगी करते। श्रीआचार्यजी कथा कहते, तब पाछे ठाड़े होय चँवर करते। सो श्रीआचार्यजी भगवानदास के उपर वहोत प्रसन्न होयके "चतुःश्लोकी" आप किये हे सो भगवानदास कों पढ़ाये। और कहें, पहले तेरो मन पढ़िवे में रह्यो सो अब तोकों वेद पुरान भागवत सबको अर्थ फुरेगो। मैं प्रसन्न भयो, अब तुम घर कों जाऊ। तब भगवानदास दंडवत करि घरकों चले। श्रीआचार्यजी परिक्रमा कों पधारें। सो भगवानदास वहोत दिनलों घर में रहे। पाछे कछुक दिन पाछे भगवानदास की स्त्री की देह छूटी। तब भगवानदास मन में प्रसन्न भये। जो—अब घर को बंधन छूट्यो, अब व्रज जाऊँगो। सो कछुक दिन में वैष्णव के मुखसों सुनी, जो—गिरिराज पर श्रीगोवर्द्धनधर विराजे हैं। श्रीगुसांईजी सेवा शृंगार करत है। तब भगवानदास घर की वस्तू सब वेचि घर

દિવસ વૈષ્ણવોનો સંગ કરો. પછી ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પ્રકટ થશે ત્યારે ત્યાં જઈ શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા પ્રમાણે સેવા કરજો. તમારો બધો મનોરથ શ્રી-ગુસાંઇજી પૂર્ણ કરશે. પછી આપે બ્રહ્મસંબંધનો શ્લોક અષ્ટાક્ષર લખી દીધો અને કહ્યુ, રસોઈ કરી આને ભોગ ધરી નિર્વાહ કરજો. ત્યારે ભગવાનદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ! આપ અહીં જ્યાં સુધી બિરાજો ત્યાં સુધી તો આપની સેવા કરૂં? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સુખેથી કરો. પછી ભગવાનદાસ જલ લાવતા, રસોઇની બધી પરચારગી કરતા. શ્રીઆચાર્યજી કથા કહેતા ત્યારે પાછળ ઉભા રહીને ચમર કરતા. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજીએ બહુ પ્રસન્ન થઇને પોતે 'ચતુઃશ્લોકી' કરી હતી તે ભગવાનદાસને ભણાવી. અને કહ્યુ, પહેલાં તારૂં મન ભણવામાં રહ્યુ તે હવે તને વેદ, પુરાણ, ભાગવત બધાનો અર્થ સ્ફુરશે. હું પ્રસન્ન થયો હવે તમે ઘરે જાવ. ત્યારે ભગવાનદાસ દંડવત્ કરીને ઘરે ચાલ્યા. શ્રીઆચાર્યજી પરિક્રમાએ પધાર્યા. પછી ભગવાનદાસ ઘણા દિવસ સુધી ઘરમાં રહ્યા. કેટલાક દિવસ પછી ભગવાનદાસની સ્ત્રીની દેહ છુટી. ત્યારે ભગવાનદાસ મનમાં પ્રસન્ન થયા, કે હવે ઘરતું બંધન છુટયું. હવે વ્રજ જઇશ. પછી થોડાક દિવસમાં વૈષ્ણવોના મુખથી સાંભળ્યુ, કે ગિરિરાજ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનધર બિરાજે છે.

जो पढ़े सोई बहोत है। और द्रव्यादिक है सो भाग्य तें मिलत है। पंडित बड़े बड़े राजसी मूर्खन की चाकरी करत हैं। तातें संतोष दया राखें। काम, क्रोध, लोभादिक मोह कों छोड़ि, श्रीठाकुरजी को भजन करो। जीविका भगवान विचारे है, सो भगवद् इच्छातें भागि प्रमाण मिली रहेगी। या प्रकार सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजी के वचन सुनिके भगवानदास के हृदय में भगवतधर्म प्रवेस भयो। सो श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती किये, महाराज ? अब मेरे मन को संदेह सगरो दूरि ह्वै गयो। सब में भगवद् भजन श्रेष्ठ हैं। तातें अब मोकों कृपा करिके सरन लेहू। जा प्रकार आप बतावो ता प्रकार भगवद् भजन करूं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा न्हाय आव। तब भगवानदास न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करवायो। तब भगवानदास ने कही, महाराज! मेरो मन आपके पास रहि के आपकी सेवा करन को है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, हमारे पास तुमसों रह्यो न जायगो। अनेक अपराध जीव सों होत है। सो कबहू अप्रसन्नता होय तो तोकों भगवद् प्राप्ति में अंतराय होय। और ये वैष्णव हैं, सो हमारे स्वभाव कों जानि रहे हैं। ये हमारे पास रहिवे लायक है। तातें तुम घर जाव। वैष्णवको संग कछुक दिन करो। पाछें गोवर्द्धन परवत पर

ભણ્યા નહીં. જે ભણ્યા તે જ ઘણું છે. અને દ્રવ્યાદિક છે તે ભાગ્યથી મળે છે. મોટા મોટા પંડિત રાજસી મૂર્ખોની ચાકરી કરે છે. તેથી સંતોષ દયા રાખો. કામ, ક્રોધ, લોભાદિક મોહને છોડી શ્રીઠાકુરજીનું ભજન કરો. જીવિકા ભગવાને વિચારી હશે તે ભગવદીચ્છાથી ભાગ્ય પ્રમાણે મળી રહેશે એ પ્રકારે સિદ્ધાન્ત રૂપ શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન સાંભળીને ભગવાનદાસના હૃદયમાં ભગવત્ધર્મ પ્રવેશ થયો. પછી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ !' હવે મારા મનનો સંદેહ બધો દૂર થઈ ગયો. બધામાં ભગવદ્ભજન શ્રેષ્ઠ છે. તેથી હવે મને કૃપા કરીને શરણ લો. જે પ્રકારે આપ બતાવો તે પ્રકારે ભગવદ્ભજન કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા ન્હાઈ આવ. ત્યારે ભગવાનદાસ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવીને નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે ભગવાનદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મારૂં મન આપની પાસે રહીને આપની સેવા કરવાનું છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, અમારી પાસે તમારાથી રહી નહીં શકાય. જીવથી અનેક અપરાધ થાય છે તો ક્યારેક અપ્રસન્નતા થાય તો તને ભગવદ્પ્રાપ્તિમાં અંતરાય થાય. અને આ વૈષ્ણવો છે તે અમારા સ્વભાવને જાણી રહ્યા છે. એ અમારી પાસે રહેવા લાયક છે. તેથી તમે ઘર જાવ. થોડા

श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयंगे। सो तुम तहां जाय श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सेवा करियो। तिहारो सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे। पाछे आप ब्रह्म-सम्बन्ध को श्लोक, अष्टाक्षर लिखिके दिये, और कहे रसोई करि, इनकों भोग धरि निर्वाह करियो। तब भगवानदास ने बिनती करी, महाराज! आप जहां तांई बिराजो यहां, तहां तांई तो आपकी सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी कहे सुखेन करो। सो भगवानदास जल लावते, रसोई की सगरी परचारगी करते। श्रीआचार्यजी कथा कहते, तब पाछे ठाड़े होय चँवर करते। सो श्रीआचार्यजी भगवानदास के उपर बहोत प्रसन्न होयके "चतुःश्लोकी" आप किये हे सो भगवानदास कों पढ़ाये। और कहैं, पहले तेरो मन पढ़िवे में रह्यो सो अब तोकों वेद पुरान भागवत सबको अर्थ फुरेगो। मैं प्रसन्न भयो, अब तुम घर कों जाऊ। तब भगवानदास दंडवत करि घरकों चले। श्रीआचार्यजी परिक्रमा कों पधारें। सो भगवानदास बहोत दिनलों घर में रहै। पाछे कछुक दिन पाछे भगवानदास की स्त्री की देह छूटी। तब भगवान-दास मन में प्रसन्न भये। जो-अब घर को बंधन छूट्यो, अब ब्रज जाऊँगो। सो कछुक दिन में वैष्णव के मुखसों सुनी, जो-गिरिराज पर श्रीगोवर्द्धनधर बिराजे हैं। श्रीगुसांईजी सेवा शृंगार करत है। तब भगवानदास घर की वस्तू सब वेचि घर

દિવસ વૈષ્ણવોનો સંગ કરો. પછી ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પ્રકટ થશે ત્યારે ત્યાં જઈ શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા પ્રમાણે સેવા કરજો. તમારો બધો મનોરથ શ્રી-ગુસાંઇજી પૂર્ણ કરશે. પછી આપે બ્રહ્મસંબંધનો શ્લોક અષ્ટાક્ષર લખી દીધો અને કહ્યું, રસોઈ કરી આને ભોગ ધરી નિર્વાહ કરજો. ત્યારે ભગવાનદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ! આપ અહીં જ્યાં સુધી બિરાજો ત્યાં સુધી તો આપની સેવા કરૂં? ત્યારે શ્રીઆચા-ર્યજી કહે, સુખેથી કરો. પછી ભગવાનદાસ જલ લાવતા, રસોઇની બધી પરચારગી કરતા. શ્રીઆચાર્યજી કથા કહેતા ત્યારે પાછળ ઉભા રહીને ચમર કરતા. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજીએ બહુ પ્રસન્ન થઇને પોતે 'ચતુઃશ્લોકી' કરી હતી તે ભગવાનદાસને ભણાવી. અને કહ્યું, પહેલાં તારૂં મન ભણવામાં રહ્યુ તે હવે તને વેદ, પુરાણ, ભાગવત બધાનો અર્થ સ્ફુરશે. હું પ્રસન્ન થયો હવે તમે ઘરે જાવ. ત્યારે ભગવાનદાસ દંડવત્ કરીને ઘરે ચાલ્યા. શ્રીઆચાર્યજી પરિક્રમાએ પધાર્યા. પછી ભગવાનદાસ ઘણા દિવસ સુધી ઘરમાં રહ્યા. કેટલાક દિવસ પછી ભગવાનદાસની સ્ત્રીની દેહ છુટી. ત્યારે ભગવા-નદાસ મનમાં પ્રસન્ન થયા, કે હવે ઘરનું બંધન છુટયુ. હવે વ્રજ જઇશ. પછી થોડાક દિવસમાં વૈષ્ણવોના મુખથી સાંભળ્યુ, કે ગિરિરાજ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનધર બિરાજે છે.

एक ज्ञाति को ब्राह्मण हतो ताकों दिये। मा बाप संग तो कोई हतो नाहीं। पाछे चले सो कछुक दिन में गिरिराज पर आई, श्रीनाथजी को दरसन कियो। पाछे श्रीगुसांईजी के दरसन करि, दण्डवत करि, विनती किये, महाराज! या प्रकार मोकों श्रीआचार्यजी सरन लिये। यह आज्ञा हती, सो आप पास जैयो। सो मैं तिहारे पास आयो हूँ। घर को कछु बन्धन मोकों है नाहीं। सो मोकों सेवा कृपा करिके बताईयो। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होयके कहें, तुम श्रीनाथजी के भीतरिया होऊ, रसोई बालभोग की सेवा करो। तब भगवानदास सुन्दर सामग्री करते।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन भगवानदास ने सामग्री करी सो दाझी, सो बिगरी भोग धरे। सो जब श्रीगुसांईजी भोग सरायवे पधारे तब बिगरी सामग्री देखि भगवानदास के उपर बहोत खीजे। सो सेवा तें बाहिर किये। तब भगवानदास एक कौने में बैठि रुदन करन लागे। जो-मैं अब कहा करूं?

भावप्रकाश—सो श्रीगुसांईजी यातें खीजे, जो-सामग्री बिगरि गई तो दूसरी करते। बिगरी वस्तू प्रभु कों क्यों भोग धरे? करिवे को आलस्य कियो। हमसों कहतो तो हम करते। और भीतरियातें कराय लेते। यह विचारि के भगवानदास पर खीजे।

શ્રીગુસાંઇજી સેવા-શૃંગાર કરે છે. ત્યારે ભગવાનદાસે ઘરની વસ્તુ બધી વેચીને ઘર એક જ્ઞાતિનો બ્રાહ્મણ હતો તેને આપ્યું. મા-બાપ સંગ તો કોઈ હતું નહીં. પછી ચાલ્યા તે કેટલાક દિવસમાં ગિરિરાજ ઉપર આવી શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. પછી શ્રીગુસાંઇજીનાં દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! આ પ્રકારે મને શ્રીઆચાર્યજીએ શરણ લીધો. એ આજ્ઞા કરી હતી, કે આપની પાસે જજે. તેથી હું તમારી પાસે આવ્યો છુ. ઘરનુ કઈ બંધન મને છે નહી. તેથી મને સેવા કૃપા કરીને બતાવો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, તમે શ્રીનાથજીના ભીતરિયા થાવ રસોઇ બાલભોગની સેવા કરો. ત્યારે ભગવાનદાસ સુંદર સામગ્રી કરતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—એક દિવસ ભગવાનદાસે સામગ્રી કરી તે દાઝી. તે બગડી ભોગ ધરી. પછી જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી ભોગ સરાવવા પધાર્યા ત્યારે બગડેલી સામગ્રી જોઇ ભગવાનદાસ ઉપર બહુ ખીજ્યા. તે સેવાથી બહાર કર્યા. ત્યારે ભગવાનદાસ એક ખુણામાં બેસી રૂદન કરવા લાગ્યા, કે હું હવે શું કરૂં?

ભાવપ્રકાશ—શ્રીગુસાંઈજી એથી ખીજ્યા, કે સામગ્રી બગડી ગઈ તો બીજી કરતા. બગડી વસ્તુ પ્રભુને કેમ ભોગ ધરે? કરવાનું આળસ કર્યું. અમને

पाछें भगवानदास गोविंदकुण्ड ऊपर अच्युतदास पास आये। सब समाचार कहे, जो–अब मैं कहा करूं? मोकों सेवा तें बाहिर किये। तब अच्युतदास ने कही, सामग्री सावधानी सों करिये। अब तुम चिंता मति करो, श्रीगुसांईजी परम दयाल हैं। फेरि तुमकों सेवा देइंगे। सो गोविंदकुण्ड पै जाय बैठो। पाछे श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड पर मध्यान्ह की सन्ध्या करन नित्य पधारते। और अच्युतदास वृद्ध हते। मानसी सेवा में मग्न रहत हते, तिनकों नित्य दरसन देवेकूं पधारते। सो गोविन्द कुण्डपे सन्ध्या करि अच्युतदास के पास श्रीगुसांईजी पधारे सो अच्युतदास के नेत्रन सों जल बहोत बहत है। सो देखिके श्रीगुसांईजी अच्युतदास सों कहें, तुमकूं ऐसो बड़ो दुःख कहा है? तब अच्युतदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, महाराज! श्रीआचार्यजी नें जीवन कों तुमकों सोंपे हैं। सो आपकों बहोत जीव अङ्गीकार करनो है। जीव तो दोप सों भरे हैं। सो आप अभी तें जीवको दोष देखन लागे, सो जीवको उद्धार अब कैसे होयगो? और जब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों ब्रह्मसम्बन्ध की आज्ञा दीने, तब कहें, जाकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताके सकल दोष दूरि होंइगे। आप दोष देखन लागे, सो मोकों बड़ो दुःख

કહેતા તો કરતા. બીજા ભીતરિયાથી કરાવી લેતા એમ વિચારીને ભગવાનદાસ ઉપર ખીજ્યા.

પછી ભગવાનદાસ ગોવિંદકુંડ ઉપર અચ્યુતદાસ પાસે આવ્યા–બધા સમાચાર કહ્યા, કે હવે હું શું કરૂં? મને સેવાથી બાહર કર્યો. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, સામગ્રી સાવધાનીથી કરીયે. હવે તમે ચિંતા ન કરો. શ્રીગુસાંઈજી પરમ દયાલ છે. ફરી તમને સેવા દેશે. તેથી ગોવિન્દકુંડ ઉપર જઈ બેસો. પછી શ્રીગુસાંઈજી ગોવિન્દકુંડ ઉપર મધ્યાહ્નની સંધ્યા કરવા નિત્ય પધારતા. વળી અચ્યુતદાસ વૃદ્ધ હતા. માનસી સેવામાં મગ્ન રહેતા હતા. તેમને નિત્ય દર્શન દેવાને પધારતા. તે ગોવિંદકુંડ સંધ્યા કરી અચ્યુતદાસની પાસે શ્રીગુસાંઈજી પધાર્યા. ત્યારે અચ્યુતદાસના નેત્રમાંથી જલ બહુ જ વહે છે. તે જોઇને શ્રીગુસાંઈજી અચ્યુતદાસને કહે, તમને એવું મોટું શું દુઃખ છે? ત્યારે અચ્યુતદાસે શ્રીગુસાંઈજીને કહ્યું, મહારાજ! શ્રીઆચાર્યજીએ જીવોને તમને સોંપ્યા છે. તેથી આપને ઘણા જીવો અંગીકાર કરવા છે. તો આપ હમણાંથી જીવનો દોષ જોવા લાગ્યા તે જીવનો ઉદ્ધાર હવે કેમ થશે? વળી જ્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ બ્રહ્મસંબંધની આજ્ઞા આપી ત્યારે કહ્યું છે જેને તમે બ્રહ્મસંબંધ કરાવશો તેના સકલ દોષ દૂર થશે.

है। जो अब जीवको कौन प्रकार उद्धार होइगो ? तब श्रीगुसांईजी अच्युतदास सों कहें, तुम चिन्ता मति करो। मैं भगवानदास कों सिक्षा दीनी है। और यह बात तुम द्वारा श्रीआचार्यजी ने मोसों कही है। तातें आज पाछें कोई वैष्णव पर न खीजोंगो। तब अच्युतदास प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड तें भगवानदास की बांह पकरि के श्रीनाथजी के मन्दिर में ले गये। कहे सेवा सामग्री सावधानी तें करियो। तब भगवानदास प्रसन्न होयके यह कीर्तन गायो—

"श्रीविट्ठलेश चरन कमल पावन त्रैलोक्य करन दरस परस सुन्दर वर वार वार वंदे। समरथ गिरिराज धरन लीला निज प्रगट करन संतन हित मानुष तन वृन्दावन चन्दे ॥ १ ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततछन तें मुक्त भये करुणामय नाथ सदा आनंद निधि कन्दे। वारने 'भगवानदास' विहरत सदा रसिक रास जै जै जसु बोलि बोलि गावत श्रुति छन्दे ॥ २ ॥

यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये। ता पाछे भगवानदास सेवा में मन लगाय के भयसंयुक्त सेवा करन लागे। सो कछुक दिन में श्रीनाथजी सानुभावता जनावन लागे। सो भगवानदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥५३॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास सनोढ़िया ब्राह्मण, मथुरा के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

આપ દોષ દેખવા લાગ્યા. તે મને મોટું દુઃખ છે, કે હવે જીવનો કયા પ્રકારથી ઉદ્ધાર થશે? ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી અચ્યુતદાસને કહે, તમે ચિંતા ન કરો. મેં ભગવાનદાસને શિક્ષા દીધી છે. વળી આ વાત તમારા દ્વારા શ્રીઆચાર્યજીએ મને કહી છે. તેથી આજ પછી કોઇ વૈષ્ણવ ઉપર નહીં ખીજું. ત્યારે અચ્યુતદાસ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી ગોવિંદકુંડથી ભગવાનદાસનો હાથ પકડીને શ્રીનાથજીના મંદિરમાં લઈગયા. કહે સેવા સામગ્રી સાવધાનીથી કરજે. ત્યારે ભગવાનદાસે પ્રસન્ન થઇને આ કીર્તન ગાયું–(કીર્તન ઉપર જુઓ) એ કીર્તન સાંભળીને શ્રીગુસાંઈજી પ્રસન્ન થયા. તે પછી ભગવાનદાસ સેવામાં મન લગાડીને ભયસયુક્ત સેવા કરવા લાગ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીનાથજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. તે ભગવાનદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૫૩॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, અચ્યુતદાસ સનોઢિયા બ્રાહ્મણ, મથુરાના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

भावप्रकाश—ये अच्युतदास लीला में ललिताजी की सखी हैं। 'मधुरा' इनको नाम लीला में है । ए ऐसो वचन बोलत हैं, मानो अमृत श्रयो । सबकों प्रिय है । सो अच्युदास मथुरा में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्में । सो वर्ष नौके भये तब पिता माता के सङ्ग दिवारी में गोवर्द्धन की परिक्रमा करन आये । सो अच्युतदास को गिरिराज की सोभा देखि मन लागि गयो। तब मा बाप सों कहे। मैंतो गोवर्द्धन में रहोंगो। तब पिताने कह्यो, क्यों बेटा वैरागी होन को मन है ? तब अच्युतदास ने कही, मैं तो वैरागी हूँ। मेरो ब्याह तो भयो ही नाहीं । परन्तु मेरे सगे सम्बन्धी आन्योर में हैं, तहाँ कछुक दिन रहूँगो । गोवर्द्धन की दसबीस परिक्रमा दे मन होयगो तब आऊँगो । तब मा बाप सगे सम्बन्धी कों सोंपी के मथुराजी में आये ।

वार्ता-प्रसंग १—**सो अच्युतदास आन्योर में रहते । कबहूं परासोली, कबहूं श्रीकुण्ड, कबहूं श्रीगोवर्द्धन, या प्रकार सों रहते। पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धन की तरहटी पधारे। तब आन्योर में सदू पांडे कों घर सहित सेवक किये, श्रीगोवर्द्धनधर कों परवत के भीतर तें बाहिर पधराये। तब अच्युतदास कों दैवी जीव जानि नाम निवेदन कराय कहें, तुम श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा करो। तब अच्युत-**

ભાવપ્રકાશ—એ અચ્યુતદાસ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. 'મધુરા' એમનું નામ છે. એ એવુ વચન બોલે છે, માનો અમૃત શ્રવ્યું. બધાને પ્રિય છે. તે અચ્યુતદાસ મથુરામાં એક સનાઢ્ય બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે વર્ષ નવના થયા ત્યારે માતા-પિતાના સગે દીવાળીએ ગોવર્દ્ધનની પરિક્રમા કરવા આવ્યા. તે અચ્યુતદાસનું મન ગોવર્દ્ધનની શોભા જોઈ લાગી ગયું. ત્યારે મા-બાપને કહે, હુ તો ગોવર્દ્ધનમાં રહીશ. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, કેમ બેટા! વૈરાગી થવાનુ મન છે? ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, હું તો વૈરાગી છુ. મારૂં લગ્ન તો થયું જ નથી. પરંતુ મારાં સગાં-સબંધી આન્યોરમાં છે ત્યાં થોડાક દિવસ રહીશ. ગોવર્દ્ધનની દશ-વીશ પરિક્રમા દઈ મન હશે ત્યારે આવીશ. ત્યારે મા-બાપ સગાંસંબધીને સોંપીને મથુરાજીમાં આવ્યા.

વાર્તા પ્રસંગ ૧—એ અચ્યુતદાસ આન્યોરમાં રહેતા. ક્યારેક પરાસોલી, ક્યારેક શ્રીકુંડ, ક્યારેક શ્રીગોવર્દ્ધન એ પ્રકારે રહેતા. પછી શ્રીઆચાર્યજી ગોવર્દ્ધનની તરહટીમાં પધાર્યા. ત્યારે આન્યોરમાં સદૂપાંડેને ઘર સહિત સેવક કર્યા. શ્રીનાથજીને પર્વતના અંદરથી બહાર પધરાવ્યા. ત્યારે અચ્યુતદાસને દૈવી જીવ જાણી નામ-નિવેદન કરાવી કહ્યું, તમે શ્રીનાથજીની સેવા કરો. ત્યારે અચ્યુતદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત

दास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि विनती कियो, महाराज! मोपर ऐसी कृपा करो, जो–एकान्त बैठिके मानसी सेवा में मन लागे। तब श्रीआचार्यजी अपनो चरणामृत दिये। सो अच्युतदास पान करि, हाथ नेत्रन सों लगाय, मस्तक पर लगाय, हृदय सों लगायो। तब अच्युतदास के नेत्र अलौकिक ह्वै गये। लीला को दरसन करन लागे। मस्तक पर धरे।

भावप्रकाश—सो जैसे मर्यादा मार्ग में गंगाजी मस्तक पर महादेवजी धरि भक्तराज भये। तैसे अच्युतदास माथे पर श्रीआचार्यजी को चरणोदक धरि, ताकी छायामें सदा रहे। हृदय के लगाये सगरी लीला, मार्ग को सिद्धान्त, हृदयारूढ़ भयो। तब श्रीआचार्यजी ने 'सिद्धान्तमुक्तावली' करि पढ़ाये। ताकरि मानसी सेवा में मग्न भये। सो सदा गोविन्दकुण्ड के पास गुफा में रहते। नेत्र प्रेम रस सों भरे रहते। सो श्रीगुसांईजी नित्य दरसन देवे पधारते, ऊपर यह भाव मर्यादा राखन अर्थ। परन्तु श्रीगुसांईजी दरसन करवे आवते। सो यातें, श्रीगुसांईजी कों श्रीआचार्यजी को अनुभव होतो, अच्युतदास के नेत्रन में महाप्रभुजी झलकते। तातें श्रीगुसांईजी मार्ग की रीति भांति श्रीगोवर्द्धनधर की लीला को भाव पूछिके बहोत प्रसन्न होते। सो अच्युतदास परमार्थी हू ऐसे जो भगवानदास कों श्रीगुसां-

---

કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મારા ઉપર એવી કૃપા કરો કે એકાન્ત બેસીને માનસી સેવામાં મન લાગે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનું ચરણામૃત આપ્યું. તેનું અચ્યુતદાસે પાન કરી હાથ નેત્રોથી લગાડી, મસ્તક ઉપર લગાડી, હૃદયથી લગાડ્યા. ત્યારે અચ્યુતદાસનાં નેત્ર અલૌકિક થઈગયાં. લીલાનાં દર્શન કરવા લાગ્યા. મસ્તક ઉપર ધર્યા.

ભાવપ્રકાશ—જેમ મર્યાદા માર્ગમાં મહાદેવજી ગંગાજીને મસ્તક ઉપર ધરી ભક્તરાજ થયા, તેમ અચ્યુતદાસ શ્રીઆચાર્યજીનાં ચરણોદક માથે ધરીને તેની છાયામાં સદા રહ્યા. હૃદયે લગાડયું એટલે બધી લીલા, માર્ગનો સિદ્ધાન્ત, હૃદયારૂઢ થયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'સિદ્ધાન્ત મુક્તાવલી' ગ્રન્થ કરીને ભણાવ્યો. તેથી માનસી સેવામાં મગ્ન થયા. તે સદા ગોવિન્દકુંડની પાસે ગુફામાં રહેતા. નેત્ર પ્રેમ રસથી ભર્યાં રહેતા. શ્રીગુસાંઈજી નિત્ય દર્શન દેવા પધારતા. ઉપર આ ભાવ મર્યાદા રાખવા માટે. પરંતુ શ્રીગુસાંઈજી દર્શન કરવા પધારતા. તે કેમ? શ્રીગુસાંઈજીને શ્રીઆચાર્યજીનો અનુભવ થતો. અચ્યુતદાસના નેત્રમાં શ્રીમહાપ્રભુજી ઝલકતા. તેથી શ્રીગુસાંઈજી માર્ગની રીતિ ભાંતિ શ્રીનાથજીની લીલાનો ભાવ પૂછીને બહુ પ્રસન્ન થતા.

ईजी ने सेवा तें काढ़े, सो फेरि बिनती करि भगवानदास कों सेवा में अङ्गीकार कराये। जो सामग्री श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधर कों धरते, सो अच्युतदास गोविन्द-कुण्ड पर बैठे ही सब अनुभव करते। सो श्रीगुसांईजी सों सब कहते, आज़ु यह सामग्री सुन्दर भई। या प्रकार अङ्गीकार किये। यातें श्रीगुसांईजी अच्युतदास पास राजभोग धरिके नित्य पधारते। सो अच्युतदास की वार्ता को बहोत प्रकास नाहीं किये, सो याते, जो–इनकों विप्रयोग है। रस सम्बन्धी वार्ता लोगन में प्रकास करनो नाहीं। तातें इनको वरनन किये नाहीं।

सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे, इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥५४॥

✳ ✳ ✳

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण, महावन के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में विसाखाजी की सखी अंतर्गृहगता में है, तहां इनकी प्राप्ति। लीला में इनको नाम 'मोहनी' है। जब श्रीठाकुरजी कों देखे तब मोहि जाय, सरीर की सुधि न रहै। सो महावन में एक गौड़ ब्राह्मण के घर जन्में। सो जब नारायणदास ब्रह्मचारी के घर श्रीआचार्यजी पधारे तब अच्यु-

---

તે અચ્યુતદાસ પરમાર્થી પણ એવા, કે ભગવાનદાસને શ્રીગુસાંઈજીએ સેવામાંથી કાઢ્યા, તે ફરી વિનંતી કરી ભગવાનદાસને સેવામાં અંગીકાર કરાવ્યા. જે સામગ્રી શ્રીગુસાંઈજી શ્રીનાથજીને ધરતા, તેનો અચ્યુતદાસ ગોવિન્દકુંડ ઉપર બેઠેજ બધો અનુભવ કરતા. તે શ્રીગુસાંઈજીને બધું કહેતા. આજ આ સામગ્રી સુંદર થઈ, આ પ્રકારે અંગીકાર કરી. એથી શ્રીગુસાંઈજી અચ્યુતદાસ પાસે રાજભોગ ધરીને નિત્ય પધારતા. તે અચ્યુતદાસની વાર્તાનો બહુ પ્રકાશ નથી કર્યો, કેમકે એમને વિપ્રયોગ છે. રસ સબંધી વાર્તા લોકમાં પ્રકાશ કરવી નહી. તેથી એનું વર્ણન કર્યું નથી.

તે અચ્યુતદાસ એવા ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા કયાં સુધી કહીએ? વા. ॥૫૪॥

✳ ✳ ✳

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક અચ્યુતદાસ ગૌડ બ્રાહ્મણ, મહાવનના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં વિશાખાજીની સખી અંતર્ગૃહગતામાં છે. ત્યાં એમની પ્રાપ્તિ, લીલામાં એમનું નામ 'મોહની' છે. જ્યારે શ્રીઠાકુરજીને જુએ ત્યારે મોહી જાય. શરીરની સુધ ન રહે. તે મહાવનમાં એક ગૌડ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. પછી જ્યારે નારાયણદાસ બ્રહ્મચારીના ઘરે શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા ત્યારે

तदास कों नाम दिये। सो वर्ष सात आठ के हते। सो नारायणदास ब्रह्मचारी पास आवते जावते। सो जब वर्ष बीस के भये तब नारायणदास सों पूछे। हमकों नाम सुनाये, सेवक किये, सो कहां हैं? कहा उनको नाम हैं? तब तो मैं बालक हतो, कछु समुझत न हतो। अब दरसन करूं तो समर्पण करूं। तब नारायणदास ने कही, श्रीआचार्यजी उनको नाम है, और तीर्थराज प्रयाग के पास अड़ेल गाम में विराजत हैं। तब अच्युतदास ने कही, गिरिराज की परिक्रमा दे अड़ेल जाऊँगो। सो अच्युतदास कों गिरिराज की परिक्रमा में बड़ो प्रेम हतो। महीना में दोइ चारि देते जाय। सो अच्युतदास गिरिराज की परिक्रमा दे अड़ेल कों चले, सो कछुक दिन में जाय पहोंचे। श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि ठाड़े रहे। तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तुम कहां तें आये? तब अच्युतदास ने कही, जो-महाराज! ब्रज सों आयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, ब्रज में तुम कहा करते? तब अच्युतदास ने कही, दोय चारि परिक्रमा महिना में गिरिराज की करतो। और नारायणदास ब्रह्मचारि आपके वैष्णव है महाबन में, तिनको संग करतो। सो मोकों आप बालपनें में नाम सुनाये हते। सो मैं आपको नाम जानत न हतो। सो नारायणदास नें सगरो प्रकार बतायो। अब मोकों समर्पन कराईये। तब श्रीआचार्यजी

અચ્યુતદાસને નામ આપ્યું. તે વર્ષ સાત આઠના હતા. નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી પાસે આવતા જતા. જ્યારે વર્ષ વીસના થયા ત્યારે નારાયણદાસને પૂછે, અમને નામ સંભળાવ્યુ, સેવક કર્યા તે ક્યાં છે? એમનું નામ શુ છે? ત્યારે તો હું બાલક હતો કંઇ સમજતો ન હતો. હવે દર્શન કરૂ તો સમર્પણ કરૂં. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી એમનું નામ છે. અને તીર્થરાજ પ્રયાગની પાસે અડેલ ગામમાં બિરાજે છે. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, ગિરિરાજની પરિક્રમા દઈ અડેલ જઈશ અચ્યુતદાસને ગિરિરાજજીની પરિક્રમામાં બહુ પ્રેમ હતો. મહીનામાં બે ચાર દઈ આવે. પછી અચ્યુતદાસ ગિરિરાજજીની પરિક્રમા દઈ અડેલ ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં જઈ પહોંચ્યા. શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી ઉભા રહ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અચ્યુતદાસ! તમે ક્યાંથી આવ્યા? ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, મહારાજ! વ્રજથી આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે વ્રજમાં તમે શું કરતા? ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, બે ચાર પરિક્રમા મહિનામાં શ્રીગિરિરાજજીની કરતો. અને નારાયણદાસ બ્રહ્મચારી આપના વૈષ્ણવ છે મહાવનમાં, તેમનો સંગ કરતો. મને આપે બાલપણમાં નામ સંભળાવ્યુ હતુ. તેથી હું આપનુ નામ જાણતો ન હતો. નારાયણદાસે બધો પ્રકાર

कहें, जो-जाऊ, श्रीयमुनाजी में स्नान करि आऊ। तब अच्युतदास श्रीयमुनाजी में न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराए। पाछे अच्युतदास सों कहे, तू गिरिराज की परिक्रमा बहोत दियो, परन्तु कछु चमत्कार देखे? तब अच्युतदास ने कही, महाराज! मैं तो कछु चमत्कार देख्यो नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, गिरिराज की तीनि परिक्रमा लगती करेगो तो कछू देखेगो। तब अच्युतदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि विदा मांगि चले। जो-कब गोवर्द्धन जाय कब तीन परिक्रमा लगती करों? या प्रकार सूं अति आतुर भये। सो कछुक दिन में आय नारायणदास सों सगरो प्रकार कहें, जो-श्रीआचार्यजी ने ब्रह्मसम्बन्ध कृपा करिकें कराये। अब तीन लगती गोवर्द्धन की परिक्रमा की आज्ञा करी है, सो गोवर्द्धन जात हों। सो गोवर्द्धन आय रात्र सोय रहे। तब रात्रि प्रहर एक पाछली रही तब उठि, देह कृत्य करि, मानसी गंगा न्हाय परिक्रमा उठाई। सो प्रहर ड़ेढ़ दिन चढ़े एक पूरी करी। दूसरी उठाई, सो घड़ी छे दिन पाछलो रह्यो तब पूरी करी। तीसरी उठाई, सो जब अपछराकुण्ड के पास आये सो हारि गये। भूखे, रात्र घरी एक गई। तब ग्वारिया अच्युतदास

બતાવ્યો. હવે મને સમર્પણુ કરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જાવ, શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી આવો. ત્યારે અચ્યુતદાસ શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી અચ્યુતદાસને કહે, તે ગિરિરાજની પરિક્રમા ઘણી કરી. પરંતુ કંઇ ચમત્કાર જોયો? ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, મહારાજ! મેં તો કંઈ ચમત્કાર જોયો નહીં. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજી કહે, ગિરિરાજજીની ત્રણ પરિક્રમા એક સાથે કરીશ તો કંઈ જોઈશ. ત્યારે અચ્યુતદાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિદાય માંગી ચાલ્યા. કે ક્યારે ગો-વર્દ્ધન જઈ ક્યારે ત્રણુ પરિક્રમા એક સામટી કરૂં. એ પ્રકારથી અતિ આતુર થયા. તે થોડા દિવસમાં આવ્યા. નારાયણદાસને બધો પ્રકાર કહ્યો, કે શ્રીઆચાર્યજીએ કૃપા કરીને બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યુ. હવે ત્રણુ સામટી ગોવર્દ્ધનની પરિક્રમાની આજ્ઞા કરી છે તે હું ગોવર્દ્ધન જઉં છું. પછી ગોવર્દ્ધન આવીને રાત્રે સૂઇ રહ્યા. ત્યારે રાત્રિપ્રહર એક પાછલી રહી ત્યારે ઉઠી દેહ કૃત્ય કરી માનસી ગંગામાં ન્હાઈ પરિ-ક્રમા ઉઠાવી. તે દોઢપ્રહર દિવસ ચઢે એક પુરી કરી. બીજી ઉઠાઇ તે ઘડી છ દિવસ પાછલો રહ્યો ત્યારે પુરી કરી. ત્રીજી ઉઠાવી તે જ્યારે અપ્સરાકુંડની પાસે આવ્યા ત્યારે હારી ગયા ભૂખથી, રાત્રિ ઘડી એક ગઈ. ત્યારે ગોવાલીયાએ અચ્યુતદાસ પાસે

पास आय कह्यो, वैरागी तू कहां आगे जात है, सिंह बैठ्यो है। सो पाछे फिर। तब अच्युतदास ने कही, पाछे कैसे फिरूं? श्रीआचार्यजी के वचन हैं, जो—लगती तीनि परिक्रमा करियो। सो पाछे न फिरोंगो। तब ग्वारिया अन्तरधान ह्वे गयो। तब अच्युतदास आगे चले। सो देखें तो मार्ग के बीचों बीच नाहर ठाड़ो है। तब विचार किये, जो—परिक्रमा तो छोड़नी नाहीं। नाहर खाय तो खाउ। सो धीरज धरि सिंह के पास जात ही देखे तो सुन्दर गाय ठाड़ी हैं। तब गाय की परिक्रमा पूंछ माथे चढ़ाय पाछे आगे चलें। प्रहर एक रात्र गये परिक्रमा पूरी करी। पाछे महावन में आयके नारायणदास सों कहे, जो—ग्वारिया, सिंह, गाय देख्यो, याको कारण कहा? तब नारायणदास ने कही, जो—यह अभिप्राय तो श्रीआचार्यजी जाने। तब अच्युदास अड़ेल फेरि चले। सो कछुक दिन पाछे श्रीआचार्यजी के दरसन आय किये। तब श्रीआचार्यजी पूछे, तीन लगती परिक्रमा गिरिराज की करी, सो कछू देख्यो? तब अच्युतदास ने कह्यो ग्वारिया देख्यो, पाछें सिंह देख्यो, सो सिंह सों गाय के दरसन भये। सो मैं समुझो नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, ग्वारिया तो श्रीठाकुरजी आप हते। सो तेरो धीरज देखन अर्थ डरपाये। पाछे सिंह गिरिराजजी हते। सो तू पास गयो तब गाय रूप ह्वे दरसन दिये।

આવીને કહ્યું, વેરાગી તૂં આગળ કયાં જાય છે? સિંહ બેઠો છે. પાછો ફર. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, પાછો કેમ ફરૂ? શ્રીઆચાર્યજીનું વચન છે, કે સામટી ત્રણ પરિક્રમા કરજો. તેથી પાછો નહી ફરૂં. ત્યારે ગોવાલિયો અંતર્ધાન થઈ ગયો. ત્યારે અચ્યુતદાસ આગળ ચાલ્યા. જુએ તો માર્ગની વચ્ચોવચ વાઘ બેઠો છે. ત્યારે વિચાર કર્યો, કે પરિક્રમા તો છોડવી નહીં. વાઘ ખાય તો ખાવ. પછી ધીરજ ધરી સિંહની પાસે જતાં જ જુએ તો સુંદર ગાય ઉભી છે. ત્યારે ગાયની પરિક્રમા (કરી) પૂંછ માથે ચઢાવી પછી આગળ ચાલ્યા પ્રહર એક રાત્રિ ગયે પરિક્રમા પુરી કરી. પછી મહાવનમાં આવીને નારાયણદાસને કહે, કે ગોવાલિયો, સિંહ, ગાય જોયાં એનું કારણ શુ? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, કે એ અભિપ્રાય તો શ્રીઆચાર્યજી જાણે. ત્યારે અચ્યુતદાસ અડેલ ફરી ચાલ્યા. થોડાક દિવસ પછી શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન આવીને કર્યાં ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પુછ્યું, ત્રણ સામટી પરિક્રમા ગિરિરાજની કરી, તે કંઈ જોયુ. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યુ, ગોવાળીઆને જોયો પછી સિંહ જોયો તે સિંહનાં ગાયથી દર્શન થયાં, હું કંઈ સમજ્યો નહીં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગોવાળીઆ તો શ્રીઠાકુરજી પોતે હતા. તારી ધીરજ જોવા માટે ડરાવ્યો. સિંહ

तेरे बड़े भाग्य हैं। परन्तु कच्ची दसा है, अब ही तोकों प्रेम नाहीं है। तातें लीला सहित दरसन नाहीं दिये। तब अच्युतदास दरसन करि, दंडवत करि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज! प्रेम को दान आप कृपा करिके करो। आप बतावो सो मैं करूं। जा प्रकार मोकों लीला को अनुभव होय। तब श्रीआचार्यजी कहै, तुम भगवद् सेवा करो तो प्रेम होय। तब अच्युतदास ने कही, महाराज! सेवा पधराय देउ। जा प्रकार बतावो ता प्रकार मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब हम व्रज चले हैं, हमारे संग तू चलि। तहां सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो। तब श्रीआचार्यजी के संग अच्युतदास चले। सो अड़ेल ते पांच मजलि पर एक गाम आयो, छोटो सो। ताके उपर एक तलाव। बगीची सघन, तलाव सुन्दर ठिकानो देखि श्रीआचार्यजी कहैं, आज यहां पाक सामग्री करेंगे। तब अच्युतदास सों कही, तू न्हाय के आव, जल भरि ल्याव। सो अच्युतदास तलाव में न्हायके निकसे। सो निकसिके देखें तो तलाव के किनारे एक छोटोसो पीपरि को वृक्ष हैं। ताके नीचे हरी घास पर एक श्रीठाकुरजी विराजत हैं। तब अच्युतदास दोरिके श्रीआचार्यजी सों कहै, महाराज! तलाव के किनारे पीपरि नीचे हरी घास पर

ગિરિરાજજી હતા. તૂ પાસે ગયો ત્યારે ગાય રૂપ થઈ દર્શન દીધાં. તારાં મોટાં ભાગ્ય છે. પરંતુ દશા કાચી છે. હજુ તને પ્રેમ નથી. તેથી લીલા સહિત દર્શન ન દીધાં. ત્યારે અચ્યુતદાસ દર્શન કરી, દંડવત્ કરી, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનતી કરી, મહારાજ! પ્રેમનું દાન આપ કૃપા કરીને કરો. આપ બતાવો તે હુ કરૂં. જે પ્રકારે મને લીલાનો અનુભવ થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે તમે ભગવદ્સેવા કરો તો પ્રેમ થાય. ત્યારે અચ્યુતદાસ કહે, મહારાજ! સેવા પધરાવી દો. જે પ્રકારે બતાવો તે પ્રકારે કરૂં. જે પ્રકારે મને લીલાનો અનુભવ થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે અમે વ્રજ ચાલીએ છીએ અમારી સાથે તૂ ચાલ. ત્યાં બધો મનોરથ પૂર્ણ થશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીની સાથે અચ્યુતદાસ ચાલ્યા. પછી અડેલથી પાંચ મજલ ઉપર એક નાનું ગામ આવ્યું. તેના ઉપર એક તલાવ, બગીચીસઘન તલાવ સુંદર જગા જોઇ શ્રીઆચાર્યજી કહે, આજ અહીં પાક–સામગ્રી કરીશું. ત્યારે અચ્યુતદાસને કહ્યું, તૂ ન્હાઇને આવ. જલ ભરી લાવ. પછી અચ્યુતદાસ તલાવમાં ન્હાઇને નીકળ્યા. તે નિકળીને જુએ તો તલાવના કિનારે એક નાનું સરખું પીપરીનું વૃક્ષ છે. તેની નીચે લીલી ઘાસ ઉપર એક શ્રીઠાકુરજી બિરાજે છે. ત્યારે અચ્યુતદાસે દોડીને શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! તલાવના કિનારે પીપળી નીચે લીલી ઘાસ ઉપર

एक श्रीठाकुरजी को स्वरूप है। तब श्रीआचार्यजी पधारि हाथ में पधराय अपने उपरना तें रज पोंछि, अच्युतदास कों दिये। कहें, तू रसोई करि भोग इनकों धरि। पाछे ब्रज में चलियो। तेरे घर में पधरावेंगे। सो अच्युतदास सुन्दर स्वरूप देखि बहोत प्रसन्न भये। श्रीआचार्यजी के श्रीहस्त को स्पर्स तो ह्वे चुक्यो है। सो रसोई करि भोग धरयो। पाछे अच्युतदास नित्य ऐसे करत श्रीआचार्यजी के संग महाबन आये तब अच्युतदास अपने घर में श्रीआचार्यजी कों पधराये तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठारे। श्रीमदनमोहनजी नाम धरे। अच्युतदास के माथे पधराये। आप तीन दिन अच्युतदास के घर रहि पुष्टिमार्ग की सगरी रीति बताई। पाछे आप नारायणदास ब्रह्मचारी के घर एक रात्र रहि पाछे गिरिराज व्हे आप द्वारिका पधारे।

वार्ता-प्रसंग १—**सो अच्युतदास श्रीमदनमोहनजी की सेवा भली भांति सों करते। सो श्रीमदनमोहनजी कछुक दिन में अच्युतदास कों सानुभावता जनावन लागे। लीला रस को अनुभव कराए। बातें करते, जो चहिये सो मांगि लेते। पाछे जब श्रीगुसांईजी के पास अच्युतदास आवते। तब श्रीगुसांईजी अच्युतदास कों दंडवत न करन देते। और कहते, तिहारे हृदय में श्रीआचार्यजी बिराजत हैं।**

એક શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પધારી હાથમાં પધરાવી પોતાના ઉપરણાથી રજ પોંછી અચ્યુતદાસજીને આપ્યુ. કહ્યું, તુ રસોઈ કરી એમને ભોગ ધરજે. પછી વ્રજમાં ચાલજે. તારા ઘરમાં પધરાવીશું. અચ્યુતદાસ સુદર સ્વરૂપ જોઇને બહુ પ્રસન્ન થયા. શ્રીઆચાર્યજીના શ્રીહસ્તનો સ્પર્શ તો થઈ ચુકયો છે. રસોઇ કરી ભોગ ધર્યો. પછી અચ્યુતદાસ નિત્ય એમ કરતાં શ્રીઆચાર્યજીની સાથે મહાવન આવ્યા. ત્યારે અચ્યુતદાસે પોતાના ઘરમાં શ્રીઆચાર્યજીને પધરાવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને પચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડ્યા. શ્રીમદનમોહનજી નામ ધર્યું. અચ્યુતદાસના માથે પધરાવ્યા. આપે ત્રણ દિવસ અચ્યુતદાસના ઘરમાં રહી પુષ્ટિમાર્ગની બધી રીતિ બતાવી. પછી પોતે નારાયણદાસ બ્રહ્મચારીના ઘર એક રાત્ર રહી પછી ગિરિરાજજી થઈ પોતે દ્વારકા પધાર્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-તે અચ્યુતદાસ શ્રીમદનમોહનજીની સેવા ભલીભાતિથી કરતા. પછી થોડાક દિવસમાં શ્રીમદનમોહનજી અચ્યુતદાસને સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. લીલારસનો અનુભવ કરાવે. વાતો કરતા જે જોઇએ તે માંગી લેતા. પછી જ્યારે શ્રીગુસાંઈજીની પાસે આવતા ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી અચ્યુતદાસને દંડવત કરવા ન દેતા.

सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे। बहोत दिन लों श्रीमदनमोहनजी की सेवा मन लगाय के करी। पाछे जब श्रीआचार्यजी आसुर व्यामोह लीला करी तब अच्युतदास ने श्रीमदनमोहनजी पधराये। पाछे विरह बहोत, सो रह्यो न जाय। तब बद्रीकाश्रम जाय अन्न जल छोड़ि देह त्याग करे। सो अन्तरगृहगता की प्राप्ति भई। श्री-ठाकुरजी के श्रीमुख में प्रवेस किये। पाछे श्रीमदनमोहनजी कों श्रीगोपीनाथजी के पास पधराए। सो ये अच्युतदास ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभु के कृपापात्र भगवदीय हे। जो-श्रीआचार्यजी को विरह सहि न सके तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥५५॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास सारस्वत ब्राह्मण, सो कड़ामें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं। लीला में इनको नाम 'रसात्मिका' है। सदा संयोग में मगन रहती। सो अच्युतदास कड़ा में एक ब्राह्मण सारस्वत के घर प्रगटे। सो वर्ष ग्यारह के भये। तब व्याह भयो। तब वर्ष चारि पाछे वह स्त्रीं मरि गई। सो अच्युतदास कों बहोत दुःख भयो। सो दिन चारि लों खाये नाहीं। बहोत दुःख भयो, सो एक दिन माता पिता ने

અને કહેતા તમારા હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે. અચ્યુતદાસ એવા ભગવદીય હતા. ઘણા દિવસ સુધી શ્રીમદનમોહનજીની સેવા મન લગાવીને કરી. પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ આસુર વ્યામોહ લીલા કરી ત્યારે અચ્યુતદાસે શ્રીમદનમોહનજી પધરાવ્યા. પછી વિરહ ઘણો તે રહ્યો ન જાય. ત્યારે બદ્રીકાશ્રમ જઈ અન્ન-જલ છોડી દેહ ત્યાગ કર્યો. અંતર્ગૃહગતાની પ્રાપ્તિ થઈ. શ્રીઠાકુરજીના શ્રીમુખમાં પ્રવેશ કર્યો. પછી શ્રીમદનમોહનજીને શ્રીગોપીનાથજીની પાસે પધરાવ્યા. એ અચ્યુતદાસ શ્રીઆ-ચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. શ્રીઆચાર્યજીનો વિરહ સહન ન કરી શક્યા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૫૫॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, અચ્યુતદાસ સારસ્વત બ્રાહ્મણ, કડામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીયમુનાજીની સખી છે એનુ નામ 'રસા-ત્મિકા' છે. સદા સંયોગમાં મગન રહેતી. તે અચ્યુતદાસ કડામાં એક બ્રાહ્મણ સારસ્વતને ઘરે પ્રકટ્યા. તે વર્ષ અગિયારના થયા. ત્યારે લગ્ન થયું. પછી ચાર વર્ષે સ્ત્રી મરી ગઇ. ત્યારે અચ્યુતદાસને ઘણું દુઃખ થયું. ચાર દિવસ સુધી ખાધું નહીં.

बहोत कही, परि माने नाहीं। कहे मैं वैराग्य लेऊँगो। तब पिताने कही, जो–तू कहे तो तेरे दोय विवाह करि देऊं। यह कहि के समुझायो, खवायो। पाछे दिन दस पीछे पिता मरि गयो। तब अच्युतदास और हू दुःख किये। पाछे चारि दिन में माता मरि गई। तब अच्युतदास घरतें निकसे। सो बद्रीनाथ होय, जगन्नाथरायजी गये। तहाँ श्रीआचार्यजी पधारे। सो कथा कहत हैं। सो अच्युतदास बैठें, सो कथा सुने। परन्तु दुःख के मारे कछू समुझे नांही। पाछे कथा करि चुके। तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तू ऐसो उदास क्यों है? तब अच्युतदास रोवन लागे, कहें, महाराज! मेरे दुःख को पार नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, तू अपनो दुःख कहे तो वाको उपाय होय। तब अच्युतदास ने कही, महाराज! स्त्री मा बाप सब मरि गये। मैं कबहूँ दुःख देख्यो नाहीं, सो मैं कहा करूँ? कछू उपाय समुझत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें जा न्हाय आउ, तेरो दुःख सब दूरि श्रीठाकुरजी करेंगे। तब अच्युतदास स्नान करि आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे वेदमंत्र सों पढ़ि एक अंजुलि जल छिड़क्यो। तब अच्युतदास के हृदय में विवेक, धैर्य, भगवान को आश्रय दृढ़ होय

બહુ દુઃખી થયા. ત્યારે એક દિવસે માતા–પિતાએ ઘણું કહ્યુ, પરંતુ માન્યું નહીં. કહ્યું હું વૈરાગ્ય લઈશ ? ત્યારે પિતાએ કહ્યું, કે તૂ કહે તો તારા બે લગન કરી દઉં એમ કહીને સમજાવ્યો, ખવાયો. પછી દસ દિવસ પછી પિતા મરી ગયો. ત્યારે અચ્યુતદાસને વિશેષ દુઃખ થયું. પછી ચાર દિવસમાં માતા મરી ગઇ ત્યારે અચ્યુતદાસ ઘરથી નીકળ્યા. તે બદ્રીનાથ થઇ જગન્નાથજી ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. કથા કહે છે ત્યાં અચ્યુતદાસ બેઠા. કથા સાંભળી. પરંતુ દુઃખના માર્યા કઇ સમજે નહીં. પછી કથા કરી ચુકયા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અચ્યુતદાસ તૂ આવો ઉદાસ કેમ છે ? ત્યારે અચ્યુતદાસ રોવા લાગ્યા, કહે, મહારાજ ! મારા દુઃખનો પાર નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, તૂ તારૂં દુઃખ કહે તો તેનો ઉપાય થાય. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યુ, મહારાજ ! સ્રી, મા–બાપ બધાં મરી ગયાં. મેં કયારેય દુઃખ જેયુ નથી. તેથી હુ શું કરૂ ? કંઈ ઉપાય સમજતો નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા ન્હાય આવ. તારૂં બધું દુઃખ શ્રીઠાકુરજી દૂર કરશે. ત્યારે અચ્યુતદાસ સ્નાન કરીને આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી વેદમંત્રથી ભણી એક અંજલી જલ છાંટયું. ત્યારે અચ્યુતદાસના હૃદયમાં વિવેક, ધૈર્ય, ભગવાનનો આશ્રય દૃઢ થઈ ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરીને અ-

गयो। तब श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि अच्युतदास ने कही, महाराज! मैं इतनो दुःख योंही पायो। कौन की स्त्री कौन माता पिता, यह सरीर मेरो नाहीं, तो सरीर के सम्बन्धी को योंही दुःख कियो। मैं भगवान को दास होय के भगवान कों भूल्यो। तातें दुःख पायो। अब मैं आपकी सरनि होय परम सुख पायो। अब मोकों आप टहल बतावो, सो मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी कहे, तू हमारे संग रहि। जो टहल होय, तोसों बने सो करियो। तब अच्युतदास श्रीआचार्यजी के संग रहे। सो एक पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की भली टहल तन.मन लगाय के कियो। सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अड़ेल पधारे, तब अच्युतदास सों कहे, अब तुम घर जायके सेवा करो। तब अच्युतदास के नेत्रन में जल भरि आयो। कहे, महाराज! आपके वचनामृत सुने विना, दरसन विना, मोकों एक दिन रह्यो न जायगो। लौकिक दुःख सब आप दूरि किये। आप विदा करो तो यह दुःख दूरि करिवे को कौन सामर्थवान है? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय अपनी पादुकाजी की सेवा दीनी। और कहे, मैं तोपर बहोत प्रसन्न हों। सो जहाँ तू रहेगो तहाँ मैं तुमकों दरसन देऊँगो। तुमकों जो संदेह होय सो पूछियो। तिहारो संदेह दूरि करोंगो। तातें अब घर जाय भगवद् सेवा करो। तब अच्युतदास

ચ્યુતદાસે કહ્યું, મહારાજ! મેં આટલું દુઃખ વૃથાજ કર્યું. કોની સ્ત્રી, કોના માતા-પિતા. આ શરીર મારૂં નહીં, તો શરીરના સંબધીનું વૃથાજ દુઃખ કર્યું. હું ભગવાનના દાસ થઇને ભગવાનને ભૂલ્યો. તેથી દુઃખ પામ્યો. હવે હું આપના શરણે થઈ પરમ સુખ પામ્યો. હવે મને આપ ટહલ બતાવો, તે હુ કરૂં. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી કહે, તૂ અમારી સંગ રહે. જે ટહલ હોય, તારાથી બને તે કરજે. ત્યારે અચ્યુતદાસ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે રહ્યા. પછી એક પૃથ્વિ-પરિક્રમામાં શ્રીઆચા-ર્યજી મહાપ્રભુજીની સુંદર ટહલ તનમન લગાડીને કરી. પછી શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને અડેલ પધાર્યા ત્યારે અચ્યુતદાસને કહે, હવે તમે ઘર જઇને સેવા કરો. ત્યારે અચ્યુતદાસના નેત્રમાં જલ ભરી આવ્યુ. કહે, મહારાજ! આપના વચનામૃત સાંભળ્યા વિના દર્શન વિના મારાથી એક દિવસ (પણ) નહી રહેવાય. લૌકિક દુઃખ આપે દૂર કર્યું. (હવે) આપ વિદાય કરો તો એ દુઃખ દૂર કરવાને કોણ સામર્થ્યવાન છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઈ પાદુકાજીની સેવા દીધી. અને કહ્યું, હું તારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન છુ. જ્યાં તું રહીશ ત્યાં હું તને દર્શન દઇશ. તને જે સ-દેહ હોય તે પૂછજે. તારો સંદેહ દૂર કરીશ. તેથી હવે ઘર જઇ ભગવદ્સેવા કરો.

वहोत कही, परि माने नाहीं। कहे मैं वैराग्य लेउँगो। तब पिताने कही, जो—तू कहे तो तेरे दोय विवाह करि देऊं। यह कहि के समुझायो, खवायो। पाछे दिन दस पीछे पिता मरि गयो। तब अच्युतदास और हू दुःख किये। पाछे चारि दिन में माता मरि गई। तव अच्युतदास घरतें निकसे। सो बद्रीनाथ होय, जगन्नाथरायजी गये। तहाँ श्रीआचार्यजी पधारे। सो कथा कहत हैं। सो अच्युतदास बैठें, सो कथा सुने। परन्तु दुःख के मारे कछू समुझे नांहो। पाछे कथा करि चुकें। तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तू ऐसो उदास क्यों है? तब अच्युतदास रोवन लागे, कहें, महाराज! मेरे दुःख को पार नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, तू अपनो दुःख कहे तो वाको उपाय होय। तब अच्युतदास ने कही, महाराज! स्त्री मा बाप सब मरि गये। मैं कबहूँ दुःख देख्यो नाहीं, सो मैं कहा करूँ? कछू उपाय समुझत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें जा न्हाय आउ, तेरो दुःख सब दूरि श्रीठाकुरजी करेंगे। तब अच्युतदास स्नान करि आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे वेदमंत्र सों पढ़ि एक अंजुलि जल छिड़क्यो। तव अच्युतदास के हृदय में विवेक, धैर्य, भगवान को आश्रय दृढ़ होय

બહુ દુઃખી થયા. ત્યારે એક દિવસે માતા–પિતાએ ઘણું કહ્યુ, પરંતુ માન્યું નહીં. કહ્યું હું વૈરાગ્ય લઈશ? ત્યારે પિતાએ કહ્યું, કે તૂ કહે તો તારા બે લગન કરી દઉં એમ કહીને સમજાવ્યો, ખવાયો. પછી દસ દિવસ પછી પિતા મરી ગયો. ત્યારે અચ્યુતદાસને વિશેષ દુઃખ થયું. પછી ચાર દિવસમાં માતા મરી ગઇ ત્યારે અચ્યુતદાસ ઘરથી નીકળ્યા. તે બદ્રીનાથ થઇ જગન્નાથજી ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા. કથા કહે છે ત્યાં અચ્યુતદાસ બેઠા. કથા સાંભળી. પરંતુ દુઃખના માર્યા કંઇ સમજે નહીં. પછી કથા કરી ચુકયા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અચ્યુતદાસ તૂ આવો ઉદાસ કેમ છે? ત્યારે અચ્યુતદાસ રોવા લાગ્યા, કહે, મહારાજ! મારા દુઃખનો પાર નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, તૂ તારૂં દુઃખ કહે તો તેનો ઉપાય થાય. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યુ, મહારાજ! સ્ત્રી, મા–બાપ બધાં મરી ગયાં. મેં કયારેય દુઃખ જેયુ નથી. તેથી હું શું કરૂં? કંઈ ઉપાય સમજતો નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા ન્હાય આવ. તારૂં બધું દુઃખ શ્રીઠાકુરજી દૂર કરશે. ત્યારે અચ્યુતદાસ સ્નાન કરીને આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી વેદમંત્રથી ભણી એક અંજલી જલ છાંટયું. ત્યારે અચ્યુતદાસના હૃદયમાં વિવેક, ધૈર્ય, ભગવાનનો આશ્રય દૃઢ થઈ ગયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરીને અ-

गयो। तब श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि अच्युतदास ने कही, महाराज! मैं इतनो दुःख योंही पायो। कौन की स्त्री कौन माता पिता, यह सरीर मेरो नाहीं, तो सरीर के सम्बन्धी को योंही दुःख कियो। मैं भगवान को दास होय के भगवान कों भूल्यो। तातें दुःख पायो। अब मैं आपकी सरनि होय परम सुख पायो। अब मोकों आप टहल बतावो, सो मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी कहे, तू हमारे संग रहि। जो टहल होय, तोसों बने सो करियो। तब अच्युतदास श्रीआचार्यजी के संग रहे। सो एक पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की भली टहल तन मन लगाय के कियो। सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अड़ेल पधारे, तब अच्युतदास सों कहे, अब तुम घर जायके सेवा करो। तब अच्युतदास के नेत्रन में जल भरि आयो। कहे, महाराज! आपके वचनामृत सुने विना, दरसन विना, मोकों एक दिन रह्यो न जायगो। लौकिक दुःख सब आप दूरि किये। आप विदा करो तो यह दुःख दूरि करिवे को कौन सामर्थवान है? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय अपनी पादुकाजी की सेवा दीनी। और कहे, मैं तोपर वहोत प्रसन्न हों। सो जहाँ तू रहेगो तहाँ मैं तुमकों दरसन देऊँगो। तुमकों जो संदेह होय सो पूछियो। तिहारो संदेह दूरि करोंगो। तातें अब घर जाय भगवद् सेवा करो। तब अच्युतदास

અચ્યુતદાસે કહ્યું, મહારાજ! મેં આટલું દુઃખ વૃથાજ કર્યું. કોની સ્ત્રી, કોના માતા–પિતા. આ શરીર મારૂં નહી, તો શરીરના સબંધીનું વૃથાજ દુઃખ કર્યું. હું ભગવાનનો દાસ થઇને ભગવાનને ભૂલ્યો. તેથી દુઃખ પામ્યો. હવે હું આપના શરણે થઈ પરમ સુખ પામ્યો. હવે મને આપ ટહલ બતાવો, તે હું કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ અમારી સંગ રહે. જે ટહલ હોય, તારાથી બને તે કરજે. ત્યારે અચ્યુતદાસ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે રહ્યા. પછી એક પૃથ્વિ-પરિક્રમામાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સુંદર ટહલ તનમન લગાડીને કરી. પછી શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઇને અડેલ પધાર્યા ત્યારે અચ્યુતદાસને કહે, હવે તમે ઘર જઇને સેવા કરો. ત્યારે અચ્યુતદાસના નેત્રમાં જલ ભરી આવ્યુ. કહે, મહારાજ! આપના વચનામૃત સાંભળ્યા વિના દર્શન વિના મારાથી એક દિવસ (પણ) નહી રહેવાય. લૌકિક દુઃખ આપે દૂર કર્યું. (હવે) આપ વિદાય કરો તો એ દુઃખ દૂર કરવાને કોણ સામર્થ્યવાન છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પ્રસન્ન થઈ પાદુકાજીની સેવા દીધી. અને કહ્યું, હું તારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન છુ. જ્યાં તું રહીશ ત્યાં હું તને દર્શન દઇશ. તને જે સન્દેહ હોય તે પૂછજે. તારો સંદેહ દૂર કરીશ. તેથી હવે ઘર જઇ ભગવદ્સેવા કરો.

श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि श्रीआचार्यजी की पादुकाजी माथे पधराय बिदा होय कड़ामें घर आये ।

वार्ता-प्रसंग १—**सो अच्युतदास भली भांति सों श्रीआचार्यजी की पादुकाजी की सेवा करते। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अच्युतदास कूँ नित्य दरसन देते, वार्ता करते। पुष्टिमारग की रीति, लीला को भाव कहते। सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे, कृपापात्र हते। पाछे कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सन्यास ग्रहण करि कासी पधारे। सो डेढ़ महीना सन्यास राखे पाछे आसुर व्यामोह लीला करी। सो संग एक वैष्णव हतो। सो वाकों बहोत विरह दुःख भयो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पहले उह वैष्णव कों कहे, जो-तू कड़ा में अच्युतदास पास जैयो। वे तेरो संदेह दुःख सब दूरि करेंगे। सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी लौकिक आसुर व्यामोह लीला करी तब वह वैष्णव विरह सों दुःखी होय, कड़ा में अच्युतदास पास आयके, श्रीआचार्यजी के सन्यास ग्रहण की आसुर व्यामोह लीला की बात कही। तब अच्युतदास ने कही श्रीआचार्यजी ऐसी कबहू न करें। तोकों मोह भयो होयगो। महाप्रभुजी कबहू ऐसी करेंही नाहीं। तोकों भ्रम भयो है। तब वह वैष्णव ने कही, मैं कासी में श्रीआचार्यजी के संग हतो, सो देखिके आयो हों। तब अच्युतदास कहें,**

ત્યારે અચ્યુતદાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી શ્રીઆચાર્યજીની પાદુકાજી માથે પધરાવી વિદાય થઈ કડામાં ઘર આવ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-તે અચ્યુતદાસ ભલી પ્રકારથી શ્રીઆચાર્યજીની પાદુકાજીની સેવા કરતા. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ અચ્યુતદાસને નિત્ય દર્શન દેતા. વાર્તા કરતા પુષ્ટિમાર્ગની રીતી (તથા) લીલાનો ભાવ કહેતા. તે અચ્યુતદાસ એવા ભગવદીય કૃપાપાત્ર હતા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ સન્યાસ ગ્રહણ કરી પછી આસુર વ્યામોહ લીલા કરી. ત્યારે સંગ એક વૈષ્ણવ હતો. તેને બહુ વિરહ દુ:ખ થયું. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીએ પહેલાં તે વૈષ્ણવને કહ્યું (હતું) કે તૂ કડામાં અચ્યુતદાસ પાસે જજે. એ તારો સંદેહ બધો દૂર કરશે. પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ લૌકિક આસુર વ્યામોહ લીલા કરી ત્યારે તે વૈષ્ણવ વિરહથી દુ:ખી થઈ કડામાં અચ્યુતદાસ પાસે આવીને શ્રીઆચાર્યજીના સન્યાસ ગ્રહણની આસુર વ્યામોહ લીલાની વાત કહી. ત્યારે અચ્યુતદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી એવું કદીય ન કરે. તને મોહ થયો હશે. મહાપ્રભુજી ક્યારેય એવું કરે જ નહી. તને ભ્રમ થયો છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, હું

उत्थापन को समय अब दोय घड़ी में होयगो, तब तेरो संदेह दूरि होय जायगो। तब वह वैष्णव बैठि रह्यो। पाछे उत्थापन को समय भयो। तब अच्युतदास न्हाय के मन्दिर के किंवाड खोलि उह वैष्णव कों बुलाय, श्रीआचार्यजी के दरसन कराये। उह वैष्णव देखे तो श्रीआचार्यजी बिराजे पोथी देखत हैं। तब वह वैष्णव दण्डवत करि, चक्रत होय रह्यौ। तब श्रीआचार्यजी उह वैष्णव सों कहें, जो-तू संदेह मति करे, कासी में लौकिक लीला देखि कें। मैं अपने भक्तन के घर सदा विराजत हों। अब लौकिक लोगन कों दरसन नाहीं, भगवदीयन कों नित्य दरसन है। तब वह वैष्णव को संदेह गयो। सो अच्युतदास सदा संयोग रस में मगन रहते। ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे, तातें इनकी वार्ता कहाँ तांई कहिये। वार्ता ॥ ५६ ॥

भावप्रकाश—सो ये श्रीयमुनाजी की सखी हैं। तातें इनकी संयोगी लीला सम्बन्धी वार्ता अनेक हैं, सो प्रगट करी न जाय।

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास कायस्थ, अम्बालय के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में कुमारिका की सखी हैं। लीला में इनको

કાશીમાં શ્રીઆચાર્યજીની સાથે હતા તે જોઇને આવ્યો છું. ત્યારે અચ્યુતદાસ કહે, ઉત્થાપનનો સમય હવે બે ઘડીમાં થશે ત્યારે તારો સંદેહ દૂર થશે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ બેસી રહ્યો. પછી ઉત્થાપનનો સમય થયો. ત્યારે અચ્યુતદાસે ન્હાઇને મંદિરનાં કમાડ ખોલી એ વૈષ્ણવને બોલાવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરાવ્યાં. તે વૈષ્ણવ જુએ તો શ્રીઆ-ચાર્યજી બિરાજી પોથી જુએ છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ દંડવત્ કરી ચકત થઇ રહ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તે વૈષ્ણવને કહે, કે કાશીમાં લૌકિક લીલા જોઇને સંદેહ ન કરીશ. હું મારા ભક્તોને ઘરે સદા બિરાજું છું. હવે લૌકિક લોકોને દર્શન નહી. ભગવદીયોને નિત્ય દર્શન છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવનો સંદેહ ગયો. તે અચ્યુતદાસ સદા સંયોગરસમાં મગ્ન રહેતા. તે એવા શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૫૬॥

ભાવપ્રકાશ—એ શ્રીયમુનાજીની સખી છે. તેથી એમની સંયોગી લીલા સંબંધી વાર્તા અનેક છે તે પ્રકટ કરી ન જાય.

※ ※ ※

नाम 'व्रज विलासिनी' हैं। सो अम्बालय में एक कायस्थ के घर जनमे। सो नारायणदास बड़े भये वर्ष बीस के। तब नारायणदास हू पिता के संग जाते। उह देसाधिपति को काम करतो। सो नारायणदास कों जूवा खेलवे को व्यसन वहुत हतो। पिता बहुतेरो मारे, समुझावे। परन्तु जूवा खेले विना न रहे। सो नारायणदास एक दिन जूवा खेलत में हजार रुपैया हारे। सो नारायणदास के पिता पास मनुष्य मांगन आये। कहें, नारायणदास जूआ में हारयो है, सो वाकों घेरे हैं, तुम देऊ। तब नारायणदास के पिता ने कही, वही नारायणदास देईगो। सो बड़ो रगड़ो भयो। पाछे नारायणदास के पिता ने हजार रुपैया दिये। और वह देसाधिपति सों कहि के नारायणदास कों देस तें बाहिर निकारि दियो। सो नारायणदास दक्षिण देस गये। तहां एक ब्राह्मण पास रहिके कछुक विद्या पढ़े। सो पोथी बांचन लागे, जूआ को व्यसन छूटि गयो। पाछे दस पांच लरिका पढ़ावें, तामें जीविका करें सो एक दिन बजार में एक हाट पर लरिकान कों पढ़ावत हते। सो एक लरिका सों कछू भूल परी तब मारत हते। सो कृष्णदास बजार में श्रीआचार्यजी के लिये

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, નારાયણદાસ કાયસ્થ અંબાલયના, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં કુમારિકાની સખી છે. લીલામાં એમનુ નામ 'વ્રજવિલાસિની' છે. તે અંબાલયમાં એક કાયસ્થના ઘરે જન્મ્યા. પછી નારાયણદાસ મોટા થયા વર્ષ વીસના ત્યારે નારાયણદાસ પણ પિતાની સાથે જતા. તે (પિતા) દેશાધિપતિનુ કામ કરતો. નારાયણદાસને જુગાર રમવાનુ બહુ વ્યસન હતું પિતા બહુજ મારે સમજાવે. પરંતુ જુગાર રમ્યા વિના ન રહે. પછી નારાયણદાસ એક દિવસ જુગાર રમતાંમાં એક હજાર રૂપીયા હાર્યા. ત્યારે નારાયણદાસના પિતા પાસે મનુષ્યો માંગવા આવ્યા કહે, નારાયણદાસ જુગારમાં હાર્યો છે તે એને ઘેર્યો છે તમે દો. ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ કહ્યું, એજ નારાયણદાસ દેશે તે બહુ ખેંચતાણ થઈ. પછી નારાયણદાસના પિતાએ હજાર રૂપીઆ આપ્યા અને તે દેશાધિપતિને કહીને નારાયણદાસને દેશથી બહાર કઢાવી દીધો ત્યારે નારાયણદાસ દક્ષિણ દેશ ગયા ત્યાં એક બ્રાહ્મણ પાસે રહીને કંઇક વિદ્યા ભણ્યા. પછી પોથી વાંચવા લાગ્યા. જુગારનુ વ્યસન છુટી ગયુ. પછી દશ–પાંચ છોકરાને ભણાવે તેમાં જીવિકા કરે. ત્યારે એક દિવસ બજારમાં એક દુકાન ઉપર છોકરાઓને ભણાવતા હતા. તે એક છોકરાથી કંઈ ભૂલ પડી ત્યારે મારતા હતા ત્યારે કૃષ્ણદાસ બજારમાં શ્રીઆચાર્યજીને માટે સીધુ સામાન લેવા આવ્યા હતા.

सीधो सामान लेन आये हते, सो कृष्णदास नारायणदास कों दैवी जीव देखिके कहें। नारायणदास! ऐसे लरिकन कों न मारिये, दया राखिये। तब नारायणदास कहे, तुम अपने काम जाव, तिहारे कहा काम है? हमारो तो यही काम है। तब कृष्णदास ने कही, या भांति मारत है, सो जूवा के पाछे अम्वालय तें भाज्यो, ऐसे अब जो कोई वालक मरि जायगो तो हत्या लगेगी, और अब भाजिके कहां जायगो? तब नारायणदास ने कही, तुम अम्वालय की बात कहा जानो, तुमकों कबहू देख्यो नाहीं। तब कृष्णदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी की कृपातें तेरी बात सर्व जानत हों। मैं हूँ तोकों नाहीं देख्यो, परन्तु तू उत्तम दैवी जीव है, तातें तोसों कह्यो। यह लरिका पढ़ायवे की जीविका छोड़ि दे। तब नारायणदास ने कही, मैं खाऊँ कहां ते? तब कृष्णदास ने कही, तू कायस्थ है, काहू की चाकरी करि खा। तब नारायणदास ने कही, अब तेरो कह्यो करूं तो खराब होऊं, मेरे यही ठीक है। तब कृष्णदास कहैं, तू जाने, दुःख पावेगो। यह कहि कृष्णदास सीधो सामग्री ले श्रीआचार्यजी के पास आये, श्रीआचार्यजी सों सब बात कहे। महाराज! नारायणदास कायस्थ एक अम्वालय को यहां है। दैवी जीव है। वाकों मैं समुझायो सो मान्यो नाहीं। वालकन कों पढ़ावत है। तब श्रीआचार्यजी कहैं, न मान्यो तो कहा भयो? तुमने वाकों समुझायो। तुमकों ढूंढत अब ही

ત્યારે કૃષ્ણદાસે નારાયણદાસને દૈવીજીવ જોઇને કહ્યુ, નારાયણદાસ! આમ છોકરાઓને ન મારિએ, દયા રાખિએ. ત્યારે નારાયણદાસ કહે, તમે તમારે કામે જાવ. તમારે શું કામ છે? અમારૂ તો આજ કામ છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, આ રીતે મારે છે તો જુગારની પાછળ અંબાલયથી ભાગ્યો એમ હવે જો કોઇ બાળક મરી જશે તો હત્યા લાગશે અને હવે ભાગીને કયાં જઇશ! ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, તમે અંબાલયની વાત શું જાણો? તમને કયારેય જોયા નથી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, હું શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી તારી બધી વાત જાણું છું. મે પણ તને નથી જોયો પરંતુ તુ ઉત્તમ દૈવીજીવ છે. તેથી તને કહ્યું, આ બાલક ભણાવવાની જીવિકા છોડી દે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, હું ખાઉ કયાંથી? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યુ, તૂ કાયસ્થ છે કોઇની ચાકરી કરી ખા. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, હવે તારૂં કહ્યુ કરૂં તો ખરાબ થાઉ. મારે આજ ઠીક છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, તૂ જાણે, દુઃખ પામીશ. એમ કહી કૃષ્ણદાસ સીધું સામગ્રી લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજીને બધી વાત કહી. મહારાજ! નારાયણદાસ કાયસ્થ એક અંબાલયનો અહીં છે દૈવીજીવ છે. એને મેં સમજાવ્યો તે માન્યો નહી. બાલકોને

आवेगो। पाछे श्रीआचार्यजी रसोई करि, भोग धरि भोजन करे, गाम बाहिर बगीची हती तहां पोढ़े। सो तीसरे प्रहर नारायणदास वाकों पाटी खेंचिके मारी। सो वह लरिका मूर्छा खायके गिरयो। तब नारायणदास डरपि के वह लरिका कों कोठा में ले जाय, नाक मुख बहुतेरो मूंद्यो, परन्तु जाग्यो नाहीं। तब नारायणदास कों सुधि आई, जो–दोय प्रहरके उह महापुरुषके वचन साँचे भये। ताते उन कही, जो–मैं तो श्रीआचार्यजी की कृपा तें जानत हों। सो कोई श्रीआचार्यजी के संग होइगो। तब कोठाकों तारो मारि, गांव में सबसों पूछत चले। जो–प्रदेशतें कोई श्रीआचार्यजी आये हैं? तब एक पंडित ब्राह्मण ने कही, जो–श्रीआचार्यजी पधारे हैं, सो मायावाद खंडन किये हैं। भक्तिमार्ग स्थापन किये हैं। सो गाम के बाहिर बगीची में उतरे हैं। सो सुनिके नारायणदास दोरे। वह बगीची के द्वारे आये। सो कृष्णदास कों देखिके नारायणदास ने कही, तुम बात कही, जो–सब साँच भई। उह लरिका कों मैं फेरि मारयो सो मूर्छित भयो। ऐसे कहि कृष्णदासके पाइन परि रोवन लाग्यो। और कह्यो, जो–तुम मेरो अपराध क्षमा करो मैं तिहारो कह्यो न मान्यो। तब कृष्णदास ने कही, तू रोवे मति अब श्रीआचार्यजी को

ભણાવે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે ન માન્યો તો શું થયુ. તમે એને સમજાવ્યો તમને એ ખોળતો હમણાંજ આવશે. પછી શ્રીઆચાર્યજી રસોઇ કરી ભોગ ધરી ભોજન કરી ગામ બહાર બગીચી હતી ત્યાં પોઢ્યા પછી ત્રીજે પ્રહર નારાયણદાસે તે છોક-રાને જોરથી પાટી ખેંચીને મારી ત્યારે તે છોકરો મૂર્છા ખાઇને પડ્યો. ત્યારે નારાય-ણદાસ ડરીને તે છોકરાને ઓરડામાં લઈ જઈ નાક મ્હોંડુ ઘણુંય મૂક્યું પરંતુ જાગ્યો નહીં. ત્યારે નારાયણદાસને યાદ આવ્યું, કે બે પ્રહર પહેલાંના તે મહાપુરૂષનાં વચન સાચાં થયાં. તેથી એણે કહ્યુ, કે હું શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાથી જાણું છુ માટે એ શ્રી-આચાર્યજીની સંગ હશે. ત્યારે ઓરડાને તાળું મારી ગામમાં બધાને પૂછતો ચાલ્યો કે પરદેશથી કોઈ શ્રીઆચાર્યજી આવ્યા છે? ત્યારે એક પંડિત બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે. માયાવાદ ખંડન કર્યો છે. ભક્તિમાર્ગ સ્થાપન કર્યો છે. એ ગામની બહાર બગીચામાં ઉતર્યા છે. એ સાંભળીને નારાયણદાસ દોડ્યા. તે બગી-ચાના દરવાજે આવ્યા. પછી કૃષ્ણદાસને જોઇને નારાયણદાસે કહ્યું, તમે વાત કહી તે બધી સાચી થઈ. તે છોકરાને મે ફરી માર્યો તે મૂર્છિત થયો એમ કહી કૃષ્ણદાસના પગે પડી રોવા લાગ્યો. અને કહ્યુ, કે તમે મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. મેં તમારૂ કહ્યુ ન માન્યુ. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, તૂ રોઇશ નહી. શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કર. એમની

दरसन करि, उनकी कृपातें सब आछो होयगो। तब नारायणदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी कों जानत नाहीं। तुम कृपा करिके ले चलो। तब कृष्णदास नारायणदास कों ले आये। श्रीआचार्यजी पोढ़ि उठे हते। तब नारायणदास ने दण्डवत विनती कीनी, महाराज! मैं इनको कह्यो न मान्यो, सो दुःख पायो। अब मैं आपकी सरनि आयो हूँ। मेरे माथेको कलंक छुड़ावो। वह गृहस्थ को लरिका मूर्छित भयो। सो मैं कोठरी में डारि तारो लगाय के आयो हूँ। तब श्री-आचार्यजी कहैं, वह लरिका तो आछो होहि जायगो. परन्तु पाछे तू फेरि उही काम करेगो? तब नारायणदास ने कही, महाराज! मैं आपको दास, गुलाम होय आपके पास रहूँगो। आप आज्ञा देऊगे, सो मैं करूंगो। तब श्रीआचार्यजी झारी तें जल ले वेद-मंत्र सों पढ़ि एक दोना में दिये। और कहे, यह जल लरिका ऊपर छिरकियो, लरिका उठेगो। तब नारायणदास जल लेके आये। कोठरी को तारो खोलि, वह लरिका मूर्छित पर्‍यो हतो तापर छिरके। सो वह लरिका उठ्यो। पाछे उह लरिका कों विदा करि घर, श्रीआचार्यजी के पास आय दण्डवत करि विनती किये। महाराज! मैं आपकी सरनि हों, मोकों सेवक करिये। मेरे माथे तें आप हत्या टारी हैं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा, स्नान करि आऊ। तब नारायणदास

કૃપાથી બધુ સારૂ થશે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, હું શ્રીઆચાર્યજીને નથી જાણતો. તમે કૃપા કરીને લઈ ચાલો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ નારાયણદાસને લઈ આવ્યા. શ્રીઆચાર્યજી પોઢીને ઉઠ્યા હતા. ત્યારે નારાયણદાસે દંડવત્ વિનતી કરી, મહારાજ! મે એમનું કહ્યું ન માન્યું તે દુઃખ પામ્યો. હવે હું આપની શરણે આવ્યો છું. મારા માથાનું કલંક છોડાવો. તે ગૃહસ્થનો છોકરો મૂર્છિત થયો. હું તેને ઓરડીમાં નાખી તાળું લગાવીને આવ્યો છુ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તે છોકરો તો સારો થઈ જશે પરંતુ તૂં ફરી એજ કામ કરીશ? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, મહારાજ! હું આપનો દાસ છું. ગુલામ થઈ આપની પાસે રહીશ. આપ આજ્ઞા કરશો તે હું કરીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ઝારીથી જલ લઈ વેદમંત્રથી ભણી (તેને) એક પડીયામાં આપ્યું અને કહ્યુ, આ જલ છોકરા ઉપર છાંટજે, છોકરો ઉઠશે ત્યારે નારાયણદાસ જલ લઇને આવ્યા. ઓરડીનું તાળું ખોલી તે છોકરો મૂર્છિત થયો હતો તેના ઉપર છાંટયું કે તે છોકરો ઉઠ્યો. પછી તે છોકરાને ઘર વિદાય કરી શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી વિનતી કરી, મહારાજ! હું આપની શરણે આવ્યો છુ. મને સેવક કરો. મારા માથેથી આપે હત્યા ટાળી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા સ્નાન કરી આવ. ત્યારે નારાયણદાસ

न्हाय के अपरस में श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये। पाछे कहै, अब तू अपनी वस्तू होय सो लेके हमारे पास आय रहो। कहूँ और ठोर जाय रहेगो तो फेर दुःसंग में परेगो। तब नारायणदास गाम जाय सगरे लरिकान कों उनके मा बाप कों सोंपे। अपनी वस्तू लेके श्रीआचार्यजी के पास आय रहै। सो श्रीमुख की वार्ता सुने महाप्रसाद लिये, चित्त में आनन्द पायें। पाछे आप द्वारिका कों पधारें तहां तांई नारायणदास श्रीआचार्यजी के संग रहै। पाछे श्रीआचार्यजी ने कही, नारायणदास! तू अपने घर जा। तब नारायणदास ने विनती करी, महाराज! मोकों पिता जुवारी जानि देस तें निकासि दीनो। सो अब घर में कैसे राखेगो? तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब राखेगो, चिन्ता मति करे। तब नारायणदास ने कही, महाराज! माता पिता सेवक नाहीं है, सो मेरो धर्म कैसे निबहेगो? उह प्रतिबंध करे तो मोकूँ कठिनता परे। तब श्रीआचार्यजी कहें, तोसों स्वरूप-सेवा निबहेगी नाहीं। पराई चाकरी करनी, घर में कोऊ सेवक नाही, तातें हस्ताक्षर लिख देत हौं, सामग्री जो बने सो भोग धरिके महाप्रसाद लीजियो। तब ब्रह्मसम्बन्ध को गद्य को श्लोक अष्टाक्षर लिखिके नारायणदास कूँ दिये। तब नारायणदास दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज! इतने दिन

ન્હાઇને અપરસમાં શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી કહે, હવે તૂ તારી વસ્તુ હોય તે લઇને અમારી પાસે રહે કંઈ બીજી જગાએ રહીશ તો ફરી દુઃસંગમાં પડીશ. ત્યારે નારાયણદાસ ગામમાં જઈ બધા છોકરાઓને એમના મા–બાપને સોંપ્યા. પોતાની વસ્તુ લઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી રહ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીના મુખથી વાર્તા સાંભળે મહાપ્રસાદ લે. ચિત્તમાં આનન્દ પામ્યા. પછી આપ દ્વારકા પધાર્યા. ત્યાં સુધી નારાયણદાસ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે રહ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, નારાયણદાસ! તૂ તારા ઘર જા. ત્યારે નારાયણદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! મને પિતાએ જુગારી જાણીને દેશથી કાઢી મૂકયો છે. હવે ઘરમાં કેવી રીતે રાખશે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે રાખશે. ચિંતા ન કરીશ. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મહારાજ! માતા–પિતા સેવક નથી. તેથી મારો ધર્મ કેમ નભશે? તે પ્રતિબંધ કરે તો મને કઠિણતા પડે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારાથી સ્વરૂપસેવા તો નભશે નહી. બીજાની ચાકરી કરવી, ઘરમાં કોઇ સેવક નથી. તેથી હસ્તાક્ષર લખી દઉ છું. તેને સામગ્રી જે બને તે ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લેજે. ત્યારે બ્રહ્મસંબંધનો ગદ્યનો શ્લોક અષ્ટાક્ષર લખીને નારાયણદાસને આપ્યો. ત્યારે નારાયણ-

आपके पास रह्यो, परंतु मेरे अन्तःकरन में वोध न भयो । सो ऐसी कृपा करो जो संसार को दुःख सुख कछु मोकों वाधा न करे, चित्त श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में लग्यो रहै । तब श्रीआचार्यजी ने अपनो चरणामृत दीनो । और 'बालवोध' ग्रन्थ पढ़ाये । तब नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि द्वारिका तें चले । सो चारि वर्ष पाछे घर में आये । तब माता पिता प्रसन्न होय के कहैं, वहोत दिन में पुत्र आयो । कछू भोजन करो, जल पीवो । तब नारायणदास ने कही, मैं श्री-आचार्यजी को सेवक भयो, सो अपने हाथ कों लेत हों । यह श्रीआचार्यजी की कृपा है । तुम तो मोकों जानत हों, मैं जुवारी हतो । सो सगरो व्यसन श्रीआचा-र्यजी छुड़ाये । अब थोरी सी मोकों न्यारी ठौर देऊ तहां वैठों, भगवद् नाम लेहूं । तुम काम काज कहो सो करूं । तब पिता वहोत प्रसन्न भयो, जो जुवा को व्यसन तो छूट्यो । पाछे घर में न्यारो कोठा दिये तहां खासा करि नारायणदास रहै । सो वहोत काहू सों वोले नाहीं । माता पिता कहें सो काम करें । अपनी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले, नाम लेय । पिता प्रसन्न भयो । जो-मेरे वृद्ध समय नारायणदास आयो, अब याकी वुद्धि (हू) सुन्दर भई । सो पिता नारायणदास कों ले के राजद्वार में गयो । सो वादशाह को काम सव नारायणदास सों करावन

દાસે દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ ! આટલા દિવસ આપની પાસે રહ્યો. પરંતુ મારા અંતઃકરણમાં બોધ ન થયો. માટે એવી કૃપા કરો કે સંસારનું દુઃખસુખ કંઇ મને બાધા ન કરે. ચિત્ત શ્રીઠાકુરજીના ચરણારવિંદમાં લાગ્યું રહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનું ચરણામૃત આપ્યું. અને 'બાલબોધ' ગ્રંથ ભણાવ્યો. ત્યારે નારાયણદાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી દ્વારકાથી ચાલ્યા. તે ચાર વર્ષ પછી ઘરમાં આવ્યા. ત્યારે માતા-પિતા પ્રસન્ન થઇને કહે, ઘણા દિવસે પુત્ર આવ્યો. કંઇ ભોજન કરો. જલ પીઓ. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, હું શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થયો એટલે મારા હાથથી લઉં છું. આ શ્રીઆચાર્યજીની કૃપા છે તમે તો મને જાણો છો હું જુગારી હતો. બધું વ્યસન શ્રીઆચાર્યજીએ છોડાવ્યું. હવે મને થોડી અલગ જગા દો ત્યાં બેસું. ભગ-વન્નામ લઉં. તમે કામકાજ કહો તે કરૂં. ત્યારે પિતા બહુ પ્રસન્ન થયો, કે જુગારનું વ્યસન તો છુટયું. પછી ઘરમાં અલગ ઓરડો આપ્યો ત્યાં ખાસા કરી નારાયણદાસ રહ્યા. બહુ કોઇથી બોલે નહી. માતા-પિતા કહે તે કામ કરે. પોતાની રસોઈ કરી ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લે. નામ લે. પિતા પ્રસન્ન થયો, કે મારા વૃદ્ધ સમયે નારાયણદાસ આવ્યો. હવે એની બુદ્ધિ સુંદર થઈ. પિતા નારાયણદાસને લઇને રાજદ્વારમાં ગયો.

न्हाय के अपरस में श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये। पाछे कहै, अब तू अपनी वस्तू होय सो लेके हमारे पास आय रहो। कहूँ और ठोर जाय रहेगो तो फेर दुःसंग में परेगो। तब नारायणदास गाम जाय सगरे लरिकान कों उनके मा बाप कों सोंपे। अपनी वस्तू लेके श्रीआचार्यजी के पास आय रहै। सो श्रीमुख की वार्ता सुने महाप्रसाद लिये, चित्त में आनन्द पायें। पाछे आप द्वारिका कों पधारें तहां तांई नारायणदास श्रीआचार्यजी के संग रहै। पाछे श्रीआचार्यजी ने कही, नारायणदास! तू अपने घर जा। तब नारायणदास ने विनती करी, महाराज! मोकों पिता जुवारी जानि देस तें निकासि दीनो। सो अब घर में कैसे राखेगो? तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब राखेगो, चिन्ता मति करे। तब नारायणदास ने कही, महाराज! माता पिता सेवक नाहीं है, सो मेरो धर्म कैसे निबहेगो? उह प्रतिबंध करे तो मोकूँ कठिनता परे। तब श्रीआचार्यजी कहैं, तोसों स्वरूप–सेवा निबहेगी नाहीं। पराई चाकरी करनी, घर में कोऊ सेवक नाहीं, तातें हस्ताक्षर लिख देत हों, सामग्री जो बने सो भोग धरिके महाप्रसाद लीजियो। तब ब्रह्मसम्बन्ध को गद्य को श्लोक अष्टाक्षर लिखिके नारायणदास कूँ दिये। तब नारायणदास दण्डवत् करि बिनती किये, महाराज! इतने दिन

न्हाइने अपरसमां श्रीआचार्यजी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीए नाम संभळावी ब्रह्मसंबंध कराव्यु. पछी कहे, हवे तूं तारी वस्तु होय ते लइने अमारी पासे रहे. कई बीजी जगाए रहीश तो फरी दुःसंगमां पडीश. त्यारे नारायणदास गाममां जई बधा छोकराओने एमना मा–बापने सोंप्या. पोतानी वस्तु लइने श्रीआचार्यजी पासे आवी रह्या. पछी श्रीआचार्यजीना मुखथी वार्ता सांभळे महाप्रसाद ले. चित्तमां आनन्द पाम्या. पछी आप द्वारका पधार्या. त्यां सुधी नारायणदास श्रीआचार्यजीनी साथे रह्या. पछी श्रीआचार्यजीए कह्युं, नारायणदास! तू तारा घर जा. त्यारे नारायणदासे विनती करी, महाराज! मने पिताए जुगारी जाणीने देशथी काढी मूकयो छे हवे घरमां केवी रीते राखशे? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हवे राखशे. चिंता न करीश. त्यारे नारायणदासे कह्युं, महाराज! माता–पिता सेवक नथी. तेथी मारो धर्म केम नभशे? ते प्रतिबंध करे तो मने कठिणता पडे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, ताराथी स्वरूपसेवा तो नभशे नही. बीजानी चाकरी करवी, घरमां कोइ सेवक नथी. तेथी हस्ताक्षर लखी दउ छुं. तेने सामग्री जे बने ते भोग धरीने महाप्रसाद लेजे. त्यारे ब्रह्मसंबंधनो गद्यनो श्लोक अष्टाक्षर लखीने नारायणदासने आप्यो. त्यारे नारायण-

आपके पास रह्यो, परंतु मेरे अन्तःकरन में बोध न भयो। सो ऐसी कृपा करो जो संसार को दुःख सुख कछु मोकों बाधा न करे, चित्त श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में लग्यो रहै। तब श्रीआचार्यजी ने अपनो चरणामृत दीनो। और 'बालबोध' ग्रन्थ पढ़ाये। तब नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि द्वारिका तें चले। सो चारि वर्ष पाछे घर में आये। तब माता पिता प्रसन्न होय के कहैं, बहोत दिन में पुत्र आयो। कछू भोजन करो, जल पीवो। तब नारायणदास ने कही, मैं श्री-आचार्यजी को सेवक भयो, सो अपने हाथ कों लेत हों। यह श्रीआचार्यजी की कृपा है। तुम तो मोकों जानत हों, मैं जुवारी हतो। सो सगरो व्यसन श्रीआचार्यजी छुड़ाये। अब थोरी सी मोकों न्यारी ठौर देऊ तहां बैठों, भगवद् नाम लेहूं। तुम काम काज कहो सो करूं। तब पिता बहोत प्रसन्न भयो, जो जुवा को व्यसन तो छूट्यो। पाछे घर में न्यारो कोठा दिये तहां खासा करि नारायणदास रहैं। सो बहोत काहू सों बोले नाहीं। माता पिता कहें सो काम करें। अपनी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले, नाम लेय। पिता प्रसन्न भयो। जो-मेरे वृद्ध समय नारायणदास आयो, अब याकी बुद्धि (हू) सुन्दर भई। सो पिता नारायणदास कों ले के राजद्वार में गयो। सो बादशाह को काम सब नारायणदास सों करावन

દાસે દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ ! આટલા દિવસ આપની પાસે રહ્યો. પરંતુ મારા અંતઃકરણમાં બોધ ન થયો. માટે એવી કૃપા કરો કે સંસારનું દુઃખસુખ કંઇ મને બાધા ન કરે. ચિત્ત શ્રીઠાકુરજીના ચરણારવિંદમાં લાગ્યું રહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનું ચરણામૃત આપ્યું. અને 'બાલબોધ' ગ્રંથ ભણાવ્યો. ત્યારે નારાયણદાસ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી દ્વારકાથી ચાલ્યા. તે ચાર વર્ષ પછી ઘરમાં આવ્યા. ત્યારે માતા–પિતા પ્રસન્ન થઇને કહે, ઘણા દિવસે પુત્ર આવ્યો. કંઇ ભોજન કરો. જલ પીઓ. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, હું શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થયો એટલે મારા હાથથી લઉં છુ. આ શ્રીઆચાર્યજીની કૃપા છે તમે તો મને જાણો છો હું જુગારી હતો. બધું વ્યસન શ્રીઆચાર્યજીએ છોડાવ્યુ. હવે મને થોડી અલગ જગા દો ત્યાં બેસું. ભગવન્નામ લઉ. તમે કામકાજ કહો તે કરૂ. ત્યારે પિતા બહુ પ્રસન્ન થયો, કે જુગારનું વ્યસન તો છુટયું. પછી ઘરમાં અલગ ઓરડો આપ્યો ત્યાં ખાસા કરી નારાયણદાસ રહ્યા. બહુ કોઇથી બોલે નહી. માતા–પિતા કહે તે કામ કરે. પોતાની રસોઈ કરી ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લે. નામ લે. પિતા પ્રસન્ન થયો, કે મારા વૃદ્ધ સમયે નારાયણદાસ આવ્યો. હવે એની બુદ્ધિ સુંદર થઈ. પિતા નારાયણદાસને લઇને રાજદ્વારમાં ગયો.

लाग्यो। पाछे कछुक दिन में पिता ने देह छोड़ी।

वार्ता-प्रसंग १—सो नारायणदास हाकिम होय काम करन लाग्यो। सो काम बहोत, छूटि सके नाहीं। श्रीगोकुल आयवे को मन बहोत, श्रीआचार्यजी के दरसन को मन बहोत। तब नारायणदास ने एक मनुष्य चाकर राख्यो। और वाकों महिना रुपैया चारि को कर दियो। और वासों कहैं, तेरो यही काम, जो-मोकों घरी घरी में यह कहियो। भैयाजी! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजी के दरसन कों कब चलोगे? यही कह्यो करियो। सो वह चाकर नारायणदास के संग रहे। घरी घरी में यह कहे, भैयाजी! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजी के दरसन कों कब चलोगे? तब नारायणदास कहते, हाँ, अब चलूंगो। नेत्रन में जल भरि लीला-रसमें मगन होय जाते। फेरि काम काज करते। फेरि वह चाकर कहतो। फेरि मगन होय जाते। और वर्ष के वर्ष श्रीआचार्यजी कों भेट पठावते। सो जन्म भरि या प्रकार श्रीगोकुल को स्मरण करि श्रीआचार्यजी में मन लगाय मगन रहे। सो नारायणदास ऐसे भगवदीय भये। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता॥५७॥

⁂ ⁂ ⁂

બાદશાહનું કામ બધું નારાયણદાસથી કરાવવા લાગ્યો. પછી કેટલાક દિવસમાં પિતાએ દેહ છોડી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-તે નારાયણદાસ હાકિમ થઇને કામ કરવા લાગ્યો. તે કામ ઘણું છુટી શકે નહી. શ્રીગોકુલ આવવાનું મન ઘણું. ત્યારે નારાયણદાસે એક મનુષ્ય ચાકર રાખ્યો. અને એને ચાર રૂપીઆનો મહિનો કરી દીધો. અને એને કહે, તારૂં એજ કામ કે મને ઘડીઘડીમાં એજ કહેજે, કે ભૈયાજી! શ્રીગોકુલ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને ક્યારે ચાલશો? એજ કહ્યા કરજે. પછી એ ચાકર નારાયણદાસના સંગે રહે. ઘડીઘડીમાં એ કહે, ભૈયાજી! શ્રીગોકુલ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને ક્યારે ચાલશો. ત્યારે નારાયણદાસ કહેતા, હાં! હમણાં ચાલીશું. નેત્રોમાં જલ ભરી લીલા રસમાં મગ્ન થઇ જતા. ફરી કામકાજ કરતા. ફરી એ ચાકર કહે તો ફરી મગ્ન થઇ જતા. અને વર્ષ ને વર્ષ શ્રીઆચાર્યજીની ભેટ મોકલતા. તે જન્મભર આ પ્રમાણે શ્રીગોકુલજીનું સ્મરણ કરી શ્રીઆચાર્યજીમાં મન લગાડીને મગ્ન રહ્યા. તે નારાયણદાસ એવા ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ. વાર્તા ।।૫૭।।

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास भाट,
मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये नारायणदास लीला में श्री गोकुल के वानर हैं। सो मथुरा में एक भाट के घर जन्में। सो बड़े भये। परन्तु कवित्त दोहा कछू आवे नाहीं, विश्रान्ति पर बैठे रहें। जो-कोऊ कछू दे जाय ताही में निर्वाह करें। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे, विश्रान्त घाट पर सन्ध्या वन्दन मध्यान्ह समय करत हे। तब नारायणदास भाट ने श्रीआचार्यजी को दरसन कियो। तब मन में यह आई, जो-ये महापुरुष हैं, इनसों कछू में अपने भाग की पूछों तो सही। जो-मेरे भाग में कहा है ? यह विचारि नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि पूछे, महाराज ! हम ऐसे मूर्ख क्यों भये, भाट होय के। न कवित्त आवे न दोहा आवे। आछे बोलतें हू नाहीं आवें। और जबते जन्म्यों तब ते मांगते खाते बीते दिन। कबहू मोकों द्रव्य मिलेगो ? मेरे भाग्य में है के नाहीं ? सो मेरो हाथ तो आप कृपा करि देखो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-भली भई, जो-कवित्त दोहा नाहीं आवत। जो-आवते तो, राजसी लोगन के आगे पढ़त डोलतो। आछी भई, जो-न पढ्यो। और ओछे पात्र कों प्रभु द्रव्य नाहीं देत। सोऊ कृपा करत हैं। द्रव्य पाये,

---

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, નારાયણદાસ ભાટ, મથુરામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ નારાયણદાસ લીલામાં શ્રીગોકુલના વાંદરા છે. તે મથુરામાં એક ભાટને ત્યાં જન્મ્યા. પછી મોટા થયા. પરંતુ કવિત્ત દોહા કંઇ આવડે નહી. વિશ્રાન્ત ઉપર બેસી રહે. જે કંઈ કોઈ આપી જાય તેમાંજ નિર્વાહ કરે. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા. વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર સંધ્યાવંદન મધ્યાહ્ન સમય કરતા હતા. ત્યારે નારાયણદાસ ભાટે શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે મનમાં એ આવ્યું કે એ મહાપુરુષ છે. એમને હુ કંઇ મારા ભાગ્યનું પૂછું તો ખરો, કે મારા ભાગ્યમાં શુ છે ? એમ વિચારી નારાયણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી પૂછયું, મહારાજ ! અમે એવા મુર્ખ કેમ થયા ભાટ થઇને ? ન કવિત્ત આવડે ન દોહા આવડે. સારૂં બોલવું પણ ન આવડયું ? વળી જ્યારથી જન્મ્યો ત્યારથી માગતાં ખાતાં દિવસો વીત્યા. કયારેય મને દ્રવ્ય મળશે ? મારા ભાગ્યમાં છે કે નહી ? તે મારો હાથ તો કૃપા કરી જુઓ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે ભલું થયું કે કવિત્ત દોહા નથી આવડતા. જો આવડતા તો રાજસી લોકોના આગળ ભણતો ફરતો. સારૂં થયું કે ન ભણ્યો. વળી ઓછા પાત્રને પ્રભુ દ્રવ્ય નથી આપતા. તે પણ કૃપા

द्रव्य-मदसों अनेक जीवन को बुरो करे। विषय आदि पाप करे। और भूखो तो कबहू रह्यो नाहीं। तातें द्रव्य तेरे भाग्य में नाहीं है। परन्तु ओछो पात्र जानि प्रभु द्रव्य नाहीं देत है। तू रात्रिकों ध्रुवघाट जैयो। तहां द्रव्य देखेगो परि लीजो मति। तब नारायणदास उठिके घर आये सो रात्र भई। तब नारायणदास उठि के ध्रुवघाट पर गये। सो देखे तो सोना रूपा के ढेर पडे हैं। सो लोभ करि लेन लागे। तब श्रीयमुनाजी के भीतर तें दोय मनुष्य आय नारायणदास कों मारे। जो–तोकों श्रीआचार्यजी लेन की कही है? जो–लेन आयो? तोकों श्रीआचार्यजी के बचन साँचे मानिवे के लिये द्रव्य दिखायो है। सो श्रीआचार्यजी की आज्ञा लाऊ, तब ले जैयो। तब नारायणदास घर आय सोय रहे। पाछे सवेरे विश्रान्त घाट पर नारायणदास आय बैठि रह्यो। सो श्रीआचार्यजी प्रातःकाल की संध्या–वंदन करन कों विश्रान्त पधारे। तब नारायणदास ने दण्डवत कियो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, आखरि पशु तो सही, विश्वास नाहीं। तब नारायणदास ने बिनती करी, महाराज! आपके बचन सब साँचे हैं। ध्रुव घाट पर द्रव्य देख्यो, सो लोभ करि लेन लाग्यो। तब दोय मनुष्य जलतें निकसि मारन लागे। और कहे, श्रीआचार्यजी की आज्ञा होय तो ले जा। सो महाराज!

કરે છે. દ્રવ્ય મળે દ્રવ્યમદથી અનેક જીવોનું અહિત કરે. વિષય આદિ પાપ કરે. વળી ભૂખ્યો તો ક્યારેય રહ્યો નથી. તેથી દ્રવ્ય તારા ભાગ્યમાં નથી. પરંતુ ઓછો પાત્ર જાણી પ્રભુ દ્રવ્ય નથી આપતા. રાત્રે ધ્રુવઘાટ જજે. ત્યાં દ્રવ્ય જોઈશ પરંતુ લઇશ નહી. ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને ઘર આવ્યા. તે રાત્રિ થઇ ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને ધ્રુવઘાટ ગયા. ત્યાં જુએ તો સોના રૂપાના ઢગલા પડ્યા છે. તે લોભ કરી લેવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીયમુનાજીના અંદરથી બે મનુષ્ય આવી નારાયણદાસને માર્યા, કે તને શ્રીઆચાર્યજીએ લેવાનું કહ્યું છે તે લેવા આવ્યો? તને શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન સાચાં માનવાને માટે દ્રવ્ય દેખાડયુ છે. શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા લાવ ત્યારે લઈ જજે. ત્યારે નારાયણદાસ ઘર આવીને સૂઇ રહ્યા. પછી સવારે વિશ્રાન્ત ઘાટ ઉપર નારાયણદાસ આવી બેસી રહ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી પ્રાતઃકાલની સંધ્યાવંદન કરવાને વિશ્રાંત પધાર્યા. ત્યારે નારાયણદાસે દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આખર પશુ તો ખરો. વિશ્વાસ નહી. ત્યારે નારાયણદાસે વિનતી કરી, મહારાજ! આપનાં વચન બધાં સાચાં છે. ધ્રુવઘાટ ઉપર દ્રવ્ય જોયું. તે લોભ કરીને લેવા લાગ્યો. ત્યારે બે મનુષ્ય જલથી નીકળીને મારવા લાગ્યા. અને કહે, શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા હોય તો લઈ જા. તે મહારાજ! એ બે મનુષ્ય કોણ હતા? અને આપે

वे दोय जने कौन हे ? और आप मोकों पशु कहें, ताको कारन कहा ? सो कृपा करि के कहिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, वे दोऊ वरुण के दूत हे, सो तोकों लेन न दिये । और तू लेतो तो तेरो जनम बिगरि जातो । और तू लीला में वानर श्रीगोकुल को है, सो असमर्पित खाय के संसार में परयो दुःख भोगत हैं । तब नारायणदास दण्डवत करि बिनती किये, महाराज ! मोकों या संसार दुःख सों छुड़ाईये । अब मोकों द्रव्य की चाह नाहीं हैं । तब श्रीआचार्यजी नारायणदास कों श्रीयमुनाजी में स्नान कराय कें नाम निवेदन कराये । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराय दीजिये ! तब श्रीआचार्यजी कहें, पशु सों कहूँ पुष्टिमार्ग की सेवा बनी है ? तातें तू अष्टाक्षर मंत्र कों रात्र दिन कह्यो करियो । तोकों याही तें भगवद् प्राप्ति होयगी । और आजु पाछे श्रीयमुनाजी के तीर काहु सों कछु लीजो मति । तू घर में रहियो, तोकों घर में ही सब कछु आय रहेगो । विश्वास दृढ़ राखियो । यह कहि आप सन्ध्या वन्दन करि महावन पधारे । नारायणदास घर में आय बैठि रहे । अष्टाक्षर मंत्र मुख सों कहन लागे । सो वाही दिन एक जनो रुपैया दस घर में दे गयो । तातें नारायणदास को विश्वास बढ्यो । पाछे घर में रह्यो करते, श्रीआचार्यजी को आश्रय करि अष्टाक्षर जप्यो करते ।

પશુ કહ્યો તેનું કારણ શું ? તે કૃપા કરીને કહીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એ બે વરુણના દૂત હતા. એને તને લેવા ન દીધો અને તૂ લેતો તો તારો જન્મ બગડી જતો. અને તૂ લીલામાં શ્રીગોકુલનો વાંદરો છે. તે અસમર્પિત ખાઇને સંસારમાં પડયો દુઃખ ભોગવે છે. ત્યારે નારાયણદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! મને આ સંસાર દુઃખથી છોડાવો. હવે મને દ્રવ્યની ચાહના નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નારાયણદાસને શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરાવીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મહારાજ ! મને ભગવદ્સેવા પધરાવી આપો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, પશુથી કંઈ પુષ્ટિમાર્ગની સેવા બની છે? તેથી તૂ અષ્ટાક્ષર મંત્રને રાત દિવસ કહ્યો કર. તને એનાથી જ ભગવદ્પ્રાપ્તિ થશે. અને આજ પછી શ્રીયમુનાજીના કિનારે કોઈથી કંઈ લઈશ નહી. તૂ ઘરમાં રહેજે. તને ઘરમાં જ સર્વ કંઈ આવી રહેશે. વિશ્વાસ દ્દઢ રાખજે. એમ કહી આપ સંધ્યાવંદન કરી મહાવન પધાર્યા. નારાયણદાસ ઘરમાં આવીને બેસી રહ્યા. અષ્ટાક્ષર મંત્ર મુખથી કહેવા લાગ્યા. તે તેજ દિવસે એક જણો રૂપીઆ દશ ઘરમાં દઇ ગયો. તેથી નારાયણદાસને વિશ્વાસ વધ્યો. પછી ઘરમાં રહ્યા આવતા. શ્રીઆચાર્યજીનો આશ્રય કરી અષ્ટાક્ષર જપ્યા કરતા.

वार्ता प्रसंग १—सो नारायणदास भाटकों श्रीमद्नमोहनजी ने आज्ञा दीनी । जो–मैं वृन्दावन में राधाबाग में हो । सो तू मोकों धरती खोदि के बाहिर पधराऊ। तब नारायणदास वृन्दावन में जाय राधाबाग में खोदि के श्रीमदनमोहनजी कों पधराय, मथुरा आये । सो कोइक दिन में अड़ेल तें श्रीगोपीनाथजी मथुरा पधारे। तब नारायणदास ने श्रीगोपीनाथजी सों सगरे समाचार कहे। तब श्रीगोपीनाथजी ने मदनमोहनजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठारे। सो कछुक दिनलों नारायणदास ने सेवा कीनी। पाछे नारायणदास ने देह छोडी ता पाछे नारायणदास के सगे संबंधी कुटुंबी कोई न हतो। ताते वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, महाराज! नारायणदास की देह छूटी। अब श्रीमदनमोहनजी कों कहाँ पधरावें। तब बंगाली कछुक दिन श्रीनाथजी की सेवा करी हती, सो बंगाली कों श्रीमदनमोहनजी दिये । वार्ता ॥५८॥

भावप्रकाश—ताको कारन यह है, जो–श्रीगोपीनाथजी के पाट बैठारे हते। सो गोपीनाथजी बलदेवजी को रूप है। तिनके सेव्य मर्यादा मार्गीय ठाकुर हे । ताते श्रीगुसांईजी बंगालीन कों मर्यादा मार्गीय पूजा करन कों दिये । पुष्टिमार्गीय वैष्णव कों नाहीं दिये, न आप राखें । जो–श्रीआचार्यजी के सेव्य होते

વાર્તા-પ્રસંગ ૧–તે નારાયણદાસ ભાટને શ્રીમદનમોહનજીએ આજ્ઞા દીધી કે હું વૃંદાવનમાં રાધાબાગમાં છું. ત્યાંથી તૂ મને ધરતી ખોદીને બહાર પધરાવ. ત્યારે નારાયણદાસ વૃંદાવનમાં જઇ રાધાબાગમાં ખોદીને શ્રીમદનમોહનજીને પધરાવી મથુરા આવ્યા. પછી કેટલા દિવસમાં અડેલથી શ્રીગોપીનાથજી મથુરા પધાર્યા ત્યારે નારાયણદાસે શ્રીગોપીનાથજીને બધા સમાચાર કહ્યા. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજીએ મદનમોહનજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડ્યા. તે કેટલાક દિવસ સુધી નારાયણદાસે સેવા કરી. પછી નારાયણદાસની દેહ છુટી. તેમને સગુ સંબંધી કાઇ ન હતું. તેથી વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, મહારાજ! નારાયણદાસની દેહ છુટી. હવે શ્રીમદનમોહનજીને ક્યાં પધરાવીએ? ત્યારે બગાલીએ કેટલાક દિવસ શ્રીનાથજીની સેવા કરી હતી. તે બંગાલીને શ્રીમદનમોહનજી દીધા. વાર્તા ॥ ૫૮ ॥

ભાવપ્રકાશ—તેનું કારણ એ કે શ્રીગોપીનાથજીના પાટ બેસાડેલા હતા. તે શ્રીગોપીનાથજી બલદેવજીનું સ્વરૂપ છે. તેમના સેવ્ય મર્યાદામાર્ગીય ઠાકુરજી હતા તેથી શ્રીગુસાંઈજીએ બગાલીઓને મર્યાદામાર્ગીય પૂજા કરવાને આપ્યા. પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવને નહી આપ્યા. ન પોતે રાખ્યા. શ્રીઆચાર્યજીના સેવ્ય હોતા તો

तो आप राखते । श्रीगोपीनाथजी पाट बैठारे हते तातें श्रीवल्लभकुल वैष्णव दरसन कूं जात हैं । सो नारायणदास ऐसे भगवदीय हे । वैष्णव ॥५८॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास लुहाणा, ठट्टा के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो नारायणदास लीला में विसाखाजी की सखी हैं । लीला में इनको नाम 'केतकी' है । सो ठट्टा गाम में एक लुहाणा के घर प्रगटे । सो लुहाणा गाम में एक बड़ो सेठ हतो । सो बडी बधाई करी । पाछे नारायणदास पांच वर्ष के भये । सो नारायणदास के सगरे देह पर फोड़ा भये । सो पिताने देस देसतें गुनी बुलाय औषध कियो । परन्तु काहू सों आछे न भये । तब नारायणदास के पिताने सबन सों कही, जो–नारायणदास कों कोऊ आछो करे तो लाख रुपैया उनकों देय । सो पांच वर्ष बीति गये, परन्तु फोरा न गये । सो नारायणदास सूकि गये । पाछे पृथ्वी परिक्रमा करत श्रीआचार्यजी ठट्टे पधारे । सो काहू नें नारायणदास के पिता सों कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं, मायावाद खंडन किये हैं । सो उनकी कृपा होय तो नारायणदास अब आछे होय जाय । तब नारायणदास

પોતે રાખતા. શ્રીગોપીનાથજીએ પાટ બેસાડયા તેથી શ્રીવલ્લભકુલ વૈષ્ણવ દર્શન કરવા જાય છે. તે નારાયણદાસ એવા ભગવદીય હતા. વૈષ્ણવ ॥૫૮॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, નારાયણદાસ લુહાણા, ઠઠ્ઠાના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—તે નારાયણદાસ લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ 'કેતકી' છે. તે ઠઠ્ઠા ગામમાં એક લુવાણાના ઘરે પ્રકટ્યા. તે લુવાણો ગામમાં એક મોટો શેઠ હતો. તેણે મોટી વધાઈ કરી. પછી નારાયણદાસ પાંચ વર્ષના થયા. ત્યારે નારાયણદાસના બધા દેહે ગુમડાં થયાં ત્યારે પિતાએ દેશ દેશથી ગુણી બોલાવી ઔષધ કર્યું. પરતુ કોઇનાથી સારા ન થયા. ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ બધાને કહ્યું, કે નારાયણદાસને સારો કરે તો લાખ રૂપીઆ એને દઉં. તે પાંચ વર્ષ વીતી ગયાં પરંતુ ફોડા ન ગયા. નારાયણદાસ સુકાઇ ગયા. પછી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં શ્રીઆચાર્યજી ઠઠ્ઠે પધાર્યા. તે કોઇએ નારાયણદાસના પિતાને કહ્યું, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પધાર્યા છે. માયાવાદ ખંડન કર્યો છે. એમની કૃપા થાય તો નારાયણદાસ હમણાં સારા થઈ જાય. ત્યારે નારાયણદાસના પિતા નારાયણદાસને ડોલીમાં

को पिता नारायणदास कूं डोली में बैठारि हजार रुपैया भेट ले आयो। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत कियो, हजार रुपैया आगे धरयो। तब श्रीआचार्यजी खीज के कहैं, कहा हम वैद्य हैं, जो–फोरा आछे करें? हमारे तो, जो–कोई हमारो सेवक है तिनको लेत हैं, उनकों भगवद् नाम सुनावत हैं। श्रीठाकुरजी को नाम हमतें सुनि जा, और यह द्रव्य ले जा। हमकों नाहीं चाहिये। तब नारायणदास के पिता ने पाग श्रीआचार्यजी के आगे धरी। ओर चरन पकरि दण्डवत करि परयो रह्यो, कह्यो आप ईश्वर हो। यह पुत्र अपनी ओर तें मोकों देत हों। मैं आपकी सरनि हों। मोपर कृपा करोगे तब मैं घर कों जाऊगो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू अपने बेटा कों ले घर जा। हम तेरे घर पधारि के आछो करि देंयगे, तब जगत जानेगो नाहीं। अब जो–आछो करे तो सगरो जगत अनेक दुःख सों लपटे हैं सो हमारे पीछे पड़े। तब नारायणदास के पिता ने कही, महाराज! मैं घर जाऊँ। (और) आप (अन्यत्र) पधारो तो मैं फिर आपके चरन कहां पाऊँ? तातें मेरे माथे हाथ धरो, जो हम तेरे घर आवेंगे। तथा चरन धरो तो मोकों विश्वास होय। या प्रकार बचन देहो तो मैं जाऊँ। तब श्रीआचार्यजी कहै, तेरे माथे तो चरन हाथ कछू नाहि धरूं, तू दैवी नाहीं। अपने स्वार्थ के लिये

બેસાડી હજાર રૂપીઆ ભેટ લઇને આવ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કર્યા, હજાર રૂપીઆ આગળ ધર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ખીજીને કહ્યું, શું અમે વૈદ્ય છીએ જેથી ફોડા સારા કરીએ? અમારે તો જે કોઈ અમારો સેવક છે તેનું લઈએ છીએ. એમને ભગવન્નામ સંભળાવીએ છીએ. શ્રીઠાકુરજીનું નામ અમારાથી સાંભળી જા અને આ દ્રવ્ય લઇ જા. અમારે નથી જોઈતું. ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ શ્રીઆચાર્યજીના આગળ પાગ ધરી અને ચરણ પકડી દંડવત્ કરીને પડી રહ્યો. કહ્યું, આપ ઈશ્વર છો. આ પુત્ર આપના તરફથી મને દો છો. હુ આપની શરણ છું. મારા ઉપર કૃપા કરશો ત્યારે હું ઘરે જઇશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તૂ તારા બેટાને લઈ ઘર જા. અમે તારા ઘર પધારીને સારો કરી દઇશું. ત્યારે જગત જાણશે નહી. હમણાં જો સારો કરીએ તો બધું જગત જે અનેક દુઃખોથી લપટયું છે તે અમારી પાછળ પડે. ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ કહ્યું, મહારાજ! હું ઘર જાઉં અને આપ અન્યત્ર પધારો તો હું ફરી આપના ચરણારવિંદ કયાં મેળવું? તેથી મારા માથે હાથ ધરો કે અમે તારા ઘર આવીશું. તથા ચરણ ધરો તો મને વિશ્વાસ થાય. આ પ્રકારે વચન દો તો હું જાઉં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે,

दैन्यता करत है। तेरे कछू प्रीति नाहीं है। नारायणदास दैवी जीव है, याकों सरनि लेनो है। सो याके माथे हाथ धरूंगो। तब नारायणदास के पिता ने कही, महाराज! मै इतनी विनती या पुत्र के लिये ही करत हों, और मोय कछू नाहीं चहिये। याही के माथे हाथ धरो। तब श्रीआचार्यजी नारायणदास के पास डोली में जाय देखें तो पर्‌यो है। सो दोऊ चरन माथे पर छाती पर धरि परदा डारि दिये। कहे, अब घर ले जा। तब नारायणदास को पिता घर ले जाय नारायणदास कों देखें तो कहूं फोड़ा को नाम नहीं, सुन्दर देही है। तब पुत्र कों गोद लेन लाग्यो। तब नारायणदास ने कही, मोकों आछो किये सो कहां है? तब नारायणदास के पिता ने कही, गाम बाहिर तलाब पर हैं। तब नारायणदास ने कही, एक मनुष्य मेरे साथ करि देऊ, तहाँ मैं जाऊँगो। तब पिता ने कही असवारी पर बैठि के जाऊ, घोड़ा है पालकी है। तब नारायणदास ने कही, तू मूर्ख है। भगवान के दरसन कों पायन जैये। तब नारायणदास संग मनुष्य ले श्रीआचार्यजी के पास आय दण्डवत करिके बिनती करी, मोकों कृपा करिके सरनि लीजिये। और मोकों आप आछो कियो, मेरे मस्तक पर छाती पर चरन धरे परन्तु मोकों

તારા માથે તો ચરણ-હાથ કઇ નહીં ધરૂં. તૂ દૈવી નથી. તારા સ્વાર્થના માટે દીનતા કરે છે. તારામાં કંઈ પ્રીતિ નથી. નારાયણદાસ દૈવી જીવ છે એને શરણે લેવો છે તેથી એને માથે હાથ ધરીશ. ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ કહ્યું, મહારાજ! હું આટલી વિનંતી આ પુત્રને માટે જ કરૂં છું. બીજું મને કંઈ ન જોઇએ એનાજ માથે હાથ ધરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી નારાયણદાસને પાસે ડોલીમાં જઈ જુએ તો પડયો છે. ત્યારે બન્ને ચરણ માથા ઉપર છાતી ઉપર ધરી પડદો નાખી દીધો. કહે, હવે ઘર લઈ જા. ત્યારે નારાયણદાસનો પિતા ઘરે લઈ જઈ નારાયણદાસને જુએ તો કંઈ ગુમડાનું નામ નહીં. સુંદર દેહ છે. ત્યારે પુત્રને ગોદ લેવા લાગ્યો. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, મને સારો કર્યો તે કયાં છે? ત્યારે નારાયણદાસના પિતાએ કહ્યું, ગામ બહાર તલાવ ઉપર છે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, એક મનુષ્ય મારી સાથે કરી દો ત્યાં હું જઇશ. ત્યારે પિતાએ કહ્યુ, અસવારી ઉપર બેસીને જા. ઘોડા છે પાલખી છે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, તૂ મુર્ખ છે. ભગવાનના દર્શને પગે જઇએ. ત્યારે નારાયણદાસ સાથે મનુષ્ય લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મને કૃપા કરીને શરણે લો. અને મને આપ સારો કર્યો. મારા મસ્તક ઉપર છાતી ઉપર ચરણ ધર્યા પરંતુ મને દર્શન દીધાં નહી તેનું શું કારણ? ત્યારે શ્રી-

दरसन दिये नाहीं ताको कहा कारण ? तब श्रीआचार्यजी तलाब में नारायणदास कों न्हवाय के नाम सुनाये। तब नारायणदास ने कही, महाराज ! मैं महा अनाथ हतो सरीर हू करि, और बड़े घर में जन्म भयो दुःसंग सों घिरयो अष्ट प्रहर। ऐसो मैं महादुष्ट पापी तापर आप इतनी कृपा करी, सो आप ही सों बने। अब मोकों जो आज्ञा आप देऊ सो मैं करूँ, जामें मेरो उद्धार होय। विवेक, धैर्य, कबहू छूटे नाहीं. आपके चरन में मन लग्यो ही रहैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तो तोकूँ जब माथे पर, हृदय पर चरन धरयो तब ही सगरो धर्म धरि दियो। अब तोकों भगवत सेवा देत हों, तिनकी सेवा करियो। सो कुंकुम मँगाय दोऊ चरणारविन्द में लगाय एक वस्त्र पर छाप के चरणारविन्द की सेवा दीनी। और कहैं, अब तुम घर जाऊ। तुमकों दृढ़ भक्ति दीनी है। और यह पिता हजार रुपैया डारि गयो है सो पिता कों दीज्यो। तब नारायणदास ने कही, महाराज ! यह मेरी ओर तें भेट राखो। तब श्रीआचार्यजी कहै, तेरी ओर की बहुतेरी भेट राखेंगे। पिता तो थोरे दिनन में मरेगो। तब राखेंगे। यह दैवी द्रव्य नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहैं, तेरो नाम नारायणदास ! आगे सब कोऊ नरिया कहते। तब नारायणदास दंडवत करि श्रीआचार्यजी सों बिदा होय घर आये। पिता कों

આચાર્યજીએ તલાવમાં નારાયણદાસને ન્હવડાવીને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, મહારાજ ! હુ મહા અનાથ હતો શરીરે કરીને, અને મોટા ઘરમાં જન્મ થયો. તે દુઃસગથી અષ્ટપ્રહર ઘેર્યો. એવો હું મહા દુષ્ટ પાપી તેના ઉપર આપે આટલી કૃપા કરી. તે આપથી જ બને. હવે મને જે આજ્ઞા આપ દો તે હુ કરૂં. જેમાં મારો ઉદ્ધાર થાય. વિવેક ધૈર્ય કદીય છૂટે નહીં. આપના ચરણમાં મન લાગ્યું જ રહે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એ તો તને જ્યારે માથા ઉપર હૃદય ઉપર ચરણ ધર્યા ત્યારે જ બધો ધર્મ ધરી દીધો. હવે તને ભગવત્સેવા દઉં છું તેની સેવા કરજે. પછી કંકુ મંગાવી બન્ને ચરણારવિંદમાં લગાડી એક વસ્ત્ર ઉપર છાપીને આપના ચરણારવિંદની સેવા દીધી અને કહ્યું, હવે તમે ઘર જાવ. તમને દૃઢ ભક્તિ દીધી છે. વળી આ હજાર રૂપૈયા (તારો) પિતા નાખી ગયો છે તે તેને આપજે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યુ, મહારાજ ! આ મારી તરફથી ભેટ રાખો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારી તરફથી ઘણી ભેટ રાખીશું. પિતા તો થોડા દિવસોમાં મરશે ત્યારે રાખીશું. આ દૈવી દ્રવ્ય નથી. પછી શ્રીઆચાર્યજી કહે, તારૂ નામ નારાયણદાસ, પહેલાં બધા નરિયા કહેતા. ત્યારે નારાયણદાસ દંડવત્ કરી શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય થઇ ઘરે

हज़ार रुपैया दिये। तब पिताने कही, यह तो मैं श्रीआचार्यजी के भेट करयो हतो, तू क्यों ले आयो? उह मेरे उपर बड़ो उपकार किये हैं। जो-तोकों आछो कियो। और अधिक लेवे को मन होय तो दस पाँच हज़ार ले जा। तब नारायणदास ने कही, उनकों कछू नाहीं चहिये। वे तो केवल परमार्थ करन के लिये प्रगटे हैं। तब पिता चुप होय रह्यो। तब नारायणदास एक हवेली न्यारी लेके रहे। तहाँ सेवा श्रीआचार्यजी के चरणारविन्दकी करन लागे। पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करन कों पधारे। यहां नारायणदास सबके हाथ को जल छोड़ि दिये। कोई वैष्णव आवे तो भरें, के आप भरें। सो पिता सुनिके नारायणदास पर खीज्यौ। जो तू कहा मजूर है? जो जल भरत हैं। ताते यह किनने तोकों सिखायो है? तब नारायणदास ने कही, तू मोसों मति बोले। मेरे मन में आवेगी सो मैं करूँगो। तू कोंन मैं कोन? यह बात सुनिके पिता क्रोध करिके कह्यो, मेरे द्रव्य सों बैठो खात है, खर्च करत है। और मोसों डेढ़ो बोलत है? तब नारायणदास ने गहना, कपड़ा, बासन जो द्रव्य हतो सो सब पिता के घर पठाय दियो। तब पिता रूठि गयो। सो यह सगरी बात बादशाहने सुनी। सो बादशाह ने नारायणदास कों कुलदीवानगीरी दीनी। सो वह देसाधिपति के यहां नारायण-

---

આવ્યા. પિતાને હજાર રૂપીઆ આપ્યા. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, આ તો મે શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કર્યા હતા. તૂ કેમ લઈ આવ્યો ? એમણે મારા ઉપર મોટો ઉપકાર કર્યો છે, જે તને સારો કર્યો. બીજા વધુ લેવાની ઈચ્છા હોય તો દશ પાંચ હજાર લઈ જા. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, એમને કઈ નથી જોઇતુ. એ તો કેવળ પરમાર્થ કરવાને માટે પ્રકટ્યા છે. ત્યારે પિતા ચૂપ થઇ રહ્યો. ત્યારે નારાયણદાસ એક હવેલી અલગ લઇને રહ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીના ચરણારવિંદની સેવા કરવા લાગ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરવાને પધાર્યા. અહીં નારાયણદાસે બધાના હાથનું જલ છોડી દીધું. કોઈ વૈષ્ણવ આવે તો ભરે કે પોતે ભરે. ત્યારે પિતા સાંભળીને નારાયણદાસ ઉપર ખીજ્યો., કે તૂ શું મજૂર છે? કે પાણી ભરે છે? તેથી તને આ કોણે શિખવાડયું છે? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, તૂં મારાથી ન બોલીશ. મારા મનમાં આવશે તે હું કરીશ. તૂ કોણ હું કોણ? એ વાત સાંભળીને પિતા ક્રોધ કરીને કહે, મારા દ્રવ્યથી બેઠ્યો ખાય છે. ખર્ચ કરે છે.-હવે મારાથી વાંકું બોલે છે? ત્યારે નારાયણદાસે ઘરેણાં કપડાં વાસણ જે દ્રવ્ય હતું તે બધું પિતાના ઘરે મોકલી દીધું. ત્યારે પિતા રિસાયો. આ બધી વાત બાદશાહે સાંભળી. તે બાદશાહે નારાયણદાસને કુલ્લ

दास करें सो होय। तहां बहोत द्रव्य कमायो । श्रीआचार्यजी कों बहोत भेट पठाये। वैष्णव जो आवे तिनकों मन मान्यो द्रव्य दे, प्रसन्न करि विदा करे। ऐसे करत बहोत दिन बीते।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय नारायणदास के उपर वह बादशाह कोप्यो । सो नारायणदास कों बंदीखाने में दीनो । पांच लाख रुपैया को दण्ड कियो। ताको बंधान बांध्यो, जो-पांच हजार रुपैया नित्य भरे। जा दिन रुपैया पांच हजार न भरे ता दिन पांचसे कोरड़ा मारनें। सो अड़ेल में दोय ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक हते। तिनके एक बेटी सयानी भई। सो व्याह करिवे कों कछू द्रव्य हतो नाहीं तब दोऊ विचार किये, जो-ठट्ठा कों चालिये। नारायणदास के पास तें कछू द्रव्य लाय के कन्या को विवाह करिये। यह विचार के दोऊ भाई ब्राह्मण अड़ेल तें चले, सो ठट्ठा में आये। तब यह सुने, जो नारायणदास मिलने नाहीं, सो प्रातःकाल उठि चलेंगे। सो एक मनुष्य ने नारायणदास सों जाय के कही जो-दोय ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक आये हैं, सो तुमकों बंदीखाने सुनिके प्रातःकाल उठि जायगें। तब नारायणदास नें उन दोय वैष्णवन के पास अपनो मनुष्य पठायो, और कह्यो, जो-

---

દિવાનગીરી સોંપી. તે દેશાધિપતિને ત્યાં નારાયણદાસ કરે તે થાય. ત્યાં દ્રવ્ય બહુ કમાયા શ્રીઆચાર્યજીને બહુજ ભેટ મોકલી. વૈષ્ણવ જે આવે તેમને મન માન્યુ દ્રવ્ય દે. પ્રસન્ન કરી વિદાય કરે. એમ કરતાં ઘણા દિવસ વીત્યા

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એક સમય નારાયણદાસના ઉપર તે બાદશાહ કોપ્યો. તેથી નારાયણદાસને બંદીખાનામાં મૂક્યા. પાંચ લાખ રૂપીઆનો દંડ કર્યો. તેનું બંધાણ બાંધ્યું કે પાંચ હજાર નિત્ય ભરે. જે દિવસ રૂપીઆ પાંચ હજાર ન ભરે તે દિવસે પાંચસો કોરડા મારવા. પછી અડેલમાં બે બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હતા તેમની એક બેટી ઉમર લાયક થઇ. ત્યારે લગન કરવાને કંઇ દ્રવ્ય હતું નહીં. તેથી બન્નેએ વિચાર કર્યો, કે ઠઠ્ઠા જઇએ. નારાયણદાસની પાસેથી કઇ દ્રવ્ય લાવીને કન્યાનો વિવાહ કરીએ. એ વિચારીને બન્ને ભાઇ બ્રાહ્મણ અડેલથી ચાલ્યા તે ઠઠ્ઠામાં આવ્યા. ત્યારે એ સાંભળ્યું કે નારાયણદાસ મળશે નહીં. એટલે પ્રાત:કાલ ઉઠીને ચાલીશું. ત્યારે એક મનુષ્યે નારાયણદાસને જઇને કહ્યું, કે બે બ્રાહ્મણ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક આવ્યા છે. તે તમને બંદીખાને સાંભળીને પ્રાત.કાલ ચાલ્યા જશે. ત્યારે નારાયણદાસે તે બન્ને વૈષ્ણવોની પાસે પોતાનો માણસ મોકલ્યો અને કહ્યું,

मोकों तुम प्रातःकाल ही दरसन देकें कहूं को जैया। मेरे बड़े भाग्य हैं, जो-तुम या समय मोकों दरसन दियो। तब वा मनुष्य दोउ ब्राह्मण वैष्णव सों कह्यो, जो-नारायणदास सूँ मिलिके कहूँ कों जैयो। तब प्रातःकाल उठि वे दोऊ देहकृत्य करि स्नान किये। पाछे श्रीआचार्यजी को, श्रीनाथजी को, चरणामृत महाप्रसाद की थेली ले नारायणदास के पास आये। सो नारायणदास उठि कें मिले, प्रीति सों निकट बैठाये। तब दोऊ वैष्णव नें श्रीआचार्यजी को चरणामृत, श्रीनाथजी को चरणामृत, महाप्रसाद की थेली दिये। तब नारायणदास उठिके माथे चढ़ाय लिये। तब नारायणदास श्रीआचार्यजी के कुसल समाचार पूछि के पाछे कहें, मेरो बड़ो भाग्य है, जो-वैष्णव मोकों बंदीखाने में दरसन दिये। तातें आज मेरी बंदी पूरी होयगी। अब मैं जान्यो, जो-मोपर श्रीआचार्यजी की श्रीठाकुरजी की कृपा है। जो-या ठोरहू या समय मोकों वैष्णव दरसन दिये। या प्रकार वार्ता करत हैं। इतने में पांच हजार की पांच थैली नारायणदास के घर तें आई, सो द्वारपाल ने उन पांचों थेलीन पर मोहर छाप करिके नारायणदास के पास पठवाई। सो नारायणदास ने यह थेलीन के लिये वैष्णवन कों बातन में लगाय राखे। सो थेली आई तब उह मनुष्य कों विदा करि वैष्णव सों कहें, यह तुम लेकें वेगे

કે મને તમે પ્રાતઃકાલજ દર્શન દઈને બીજી જગે જજો. મારાં મહાન ભાગ્ય છે કે તમે આ સમયે મને દર્શન દીધાં. ત્યારે તે મનુષ્યે બન્ને બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવને કહ્યું કે નારાયણદાસને મળીને બીજી જગે જજો. ત્યારે પ્રાતઃકાલ ઉઠીને બન્ને દેહકૃત્ય કરી સ્નાન કર્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજીના શ્રીનાથજીના ચરણામૃત મહાપ્રસાદની થેલી લઇ નારાયણદાસની પાસે આવ્યા ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને મળ્યા. પ્રીતિથી પાસે બેસાડ્યા. ત્યારે બન્ને વૈષ્ણવે શ્રીઆચાર્યજીનું ચરણામૃત, શ્રીનાથજીનું ચરણામૃત, મહાપ્રસાદની થેલી આપી. ત્યારે નારાયણદાસે ઉઠીને માથે ચઢાવી લીધી. પછી નારાયણદાસ શ્રીઆચાર્યજીના કુશળ સમાચાર પૂછીને પછી કહે, મારૂં મોટું ભાગ્ય છે. કે વૈષ્ણવે મને બંદીખાનામાં દર્શન દીધાં તેથી આજ મારી કેદ પુરી થઇ જશે. હવે મેં જાણ્યું કે મારા ઉપર શ્રીઆચાર્યજીની શ્રીઠાકુરજીની કૃપા છે, કે આ જગે પણ આ સમય મને વૈષ્ણવે દર્શન દીધાં. આ પ્રકારે વાર્તા કરે છે એટલામાં પાંચ હજારની પાંચ થેલી નારાયણદાસના ઘરથી આવી. તે દ્વાર પાસે પાંચે થેલીઓ ઉપર મોહોર છાપ કરીને નારાયણદાસની પાસે મોકલી. તે નારાયણદાસે એ થેલીઓને માટે વૈષ્ણવોને વાતોમાં

जाउ। के तो और गाम चले जैयो, के यहां कहूं प्रगट मति हूजो, द्वै चार दिन में जैयो। अबतो इतनो ही बने, तुम आये कछू टहल बनी नाहीं। ऐसे कहि वैष्णव कों दण्डवत करि बिदा किये। कहें, श्री-आचार्यजी कों मेरी ओर तें दण्डवत करियो। और इनसों कन्या को विवाह करि दीजियो। सो वैष्णव पांचों हजार ले घरकों आये। इतने ही में उह बादशाह दीवानखाने में आयके बैठ्यो। तब दी-वान सों कह्यो, नारायणदास की पांचों थेली आई? तब दीवान ने कही, थेली आई द्वारपाल सों मोहर कराय नारायणदास पास प-ठाई हैं। तब खजानचीसों पूछ्यो, जो नारायणदासके पांचों हचार रुपैया आये? तब खजानची ने कह्यो, मेरे पास तो नाहीं आये। तब वह क्रोध करि कह्यो, नारायणदास कों बंदीखाने ते लाओ।

सो मनुष्य नारायणदास कों लाय देसाधिपति के आगे ठाड़ो कियो। तब देसाधिपति ने कही, नारायणदास आजु थेली क्यों नाहीं आई? तब नारायणदास नें कही, आजु थेली न आय सकी। तब बादशाह ने कोरड़ा वारेनकों बुलाय कह्यो, डरपैयो, मारियो मति। तब कोरड़ा वारे नारायणदास के दोउ ओर ठाड़े होय डरपावन लागे। तब बादशाह ने कही, अब तेरी खाल देह की उडि जायगी,

---

લગાડી રાખ્યા. પછી થેલી આવી ત્યારે તે મનુષ્યને વિદાય કરી વૈષ્ણવને કહે, આ તમે લઇને જલ્દી જાવ. કે તો બીજા ગામ ચાલ્યા જજો કે અહીં કહીં પ્રકટ ન થતા. બે ચાર દિવસમાં જજો. હમણાં તો આટલું જ બને છે. તમે આવ્યા કંઇ ટહલ બની નહીં એમ કહી વૈષ્ણવને દંડવત્ કરી વિદાય કર્યા. કહે, શ્રીઆચાર્યજીને મારી તરફથી દંડ-વત કરજો અને આ (દ્રવ્ય) થી કન્યાનો વિવાહ કરી દેજો. પછી વૈષ્ણવ પાંચે હજાર લઇ ઘરે આવ્યા. એટલામાંજ તે બાદશાહ દીવાનખાનામાં આવીને બેઠા. ત્યારે દીવાનને કહ્યું, નારાયણદાસની પાંચે થેલી આવી ? ત્યારે દીવાને કહ્યું, થેલી આવી દ્વારપાલથી મહોર કરાવી નારાયણદાસ પાસ મોકલી છે. ત્યારે ખજાનચીને પૂછયું, કે નારાયણદાસના પાંચ હજાર રૂપીઆ આવ્યા ? ત્યારે ખજાનચીએ કહ્યું મારી પાસે તો નથી આવ્યા. ત્યારે તેણે ક્રોધ કરીને કહ્યું, નારાયણદાસને બંદીખાનાથી લાવો. પછી મનુષ્યે નારાયણદાસને લાવી દેશાધિપતિના આગળ ઉભા કર્યા. ત્યારે દેશાધિ-પતિએ કહ્યુ, નારાયણદાસં આજ થેલી કેમ નહીં આવી ? ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, આજ થેલી ન આવી શકી.ત્યારે બાદશાહે કોરડાવાળાને બોલાવી કહયું, ડરાવજે મારીશ નહીં. ત્યારે કોરડાવાળા નારાયણદાસની બન્ને તરફ ઉભા રહી ડરાવવા

नाहीं तो सांच कहियो, घर तें थेली तेरे पास आई। तें कहां छिपाई है। सो सांच कहि दे। तब नारायणदास ने कही, मेरे गुरु भाई ब्राह्मण आये हते, उनके कन्या के विबाह में कछू न हतो। सो दूरितें मेरी आसा करि के आये हते सो पांचो थेली उनकों दीनी। मन में विचार्यो, जो–आज पांचसे कोरड़ा खाय रहूंगो। इनको तो काम होय। सो मैं उनकों दीनी हैं। अब तिहारे मन में आवे सो करो। यह नारायणदास की बात सुनते ही बादशाह घरी एक चुप रह्यो। मन में विचार्यो, जो–या भूमि पर ऐसे परमार्थी लोग हैं। तातें यह धर्म तें भूमि ठाड़ी है। तब देसाधिपति ने कही, नारायणदास तोकों स्यावास है। मैं तेरे उपर बहोत प्रसन्न भयो। तू गुरू के धर्म में ऐसो सांचो है? पाछे घोड़ा, सिरोपाव मंगाय नारायणदास कों कह्यो, आगे जैसे काम काज करते तैसे ही करो। दंड सब माफ कियो। तब नारायणदास कों सिरोपाव पहराय घोड़ा पै चढ़ाय घर पठाये। सो दोऊ ब्राह्मण वैष्णव सुने, जो–नारायणदास बंदीखाने सूं छूटे। सिरोपाव पहरि घोडा चढ़ि घर आये। तब प्रसन्न होय नारायणदास सों मिलन आये। तब नारायणदास उठिके मिले। कहें, तिहारे दरसन तें मैं छूट्यो। पाछे हजार मोहोर की थेली श्रीआचार्यजी के

લાગ્યા. ત્યારે બાદશાહએ કહ્યું, હવે તારી ખાલ દેહથી ઉડી જશે. નહીં તો સાચું કહજે, ઘરથી થેલી તારી પાસે આવી તે ક્યાં સંતાડી છે? તે સાચું કહી દે. ત્યારે નારાયણદાસે કહ્યું, મારા ગુરુભાઇ બ્રાહ્મણ આવ્યા હતા. એમની કન્યાના વિવાહમાં કંઇ હતું નહીં. તે દૂરથી મારી આશા કરીને આવ્યા હતા. તે પાંચે થેલી એમને આપી મનમાં વિચાર્યું કે આજે પાંચસો કોરડા ખાઇ રહીશ એમનું તો કામ થાય! તેથી મેં એમને આપી છે. હવે તમારા મનમાં આવે તે કરો. આ નારાયણદાસની વાત સાંભળતાંજ બાદશાહ ઘડી એક ચુપ રહ્યો. મનમાં વિચાર્યું કે આ ભૂમિ ઉપર આવા પરમાર્થી લોક છે તેથી આ ધર્મથી ભૂમિ ઉભી છે. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, નારાયણદાસ તને શાબાશ છે. હું તારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન થયો છું. તું ગુરુના ધર્મમાં આવો સાચો છે? પછી ઘોડા, સરપાવ મંગાવી નારાયણદાસને કહ્યું, આગળ જેમ કામકાજ કરતા તેમજ કરો, દંડ બધો માફ કર્યો. ત્યારે નારાયણદાસને સરપાવ પહેરાવી, ઘોડા ઉપર ચઢાવી ઘર મોકલ્યા. તે બન્ને બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવે સાંભળ્યું, કે નારાયણદાસ બંદીખાનાથી છુટ્યા. સરપાવ પહેરી ઘોડે ચઢી ઘર આવ્યા. ત્યારે પ્રસન્ન થઇ નારાયણદાસને મળવા આવ્યા. ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને મળ્યા. કહે, તમારા દર્શનથી

भेट उन वैष्णवन के हाथ दीनी। और उन वैष्णवन कों कछू दे, कहें, मेरी दण्डवत श्रीआचार्यजी आगे करियो। तब दोऊ भाई नारायणदास सों बिदा होय के चले सो कछुक दिन में श्रीगोकुल आये। तहां श्रीआचार्यजी पधारे हते। सो नारायणदास की दण्डवत करि हजार मोहौर भेट धरे। सगरे समाचार नारायणदास के कहै। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, वैष्णव पर ऐसी प्रीति चाहिये। ऐसो धर्म जाके हृदय में होय ताको सदा कल्याण ही होय। पाछे दोऊ ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजी सों बिदा होय अडेल में आय भली भांति कन्या को विवाह करि दिये। सो नारायणदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते। इनको नाम पहले नरिया हतो। सो श्रीआचार्यजी के सेवक भये तब श्रीआचार्यजी इनको नाम नारायणदास धरे। वार्ता ॥५९॥

भावप्रकाश—और दोऊ भाई ब्राह्मण वैष्णव साधारण नाम धारी हते। सो पुष्टि लीला सम्बन्धी तो हते नाहीं, तातें इनकी वार्ता नाहीं कहै। श्रीआचार्यजी सरनि लिये। सो सरनि के प्रताप तें संसार दुःख तें छूटि के मुक्ति के अधिकारी होय गये। तातें नारायणदास बड़े भगवदीय हते। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ॥५९॥

⁂ ⁂ ⁂

હું છૂટ્યો. પછી હજાર મહોરની થેલી શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ (કરવા) એ વૈષ્ણવોના હાથમાં આપી. બીજું એ વૈષ્ણવોને કંઇ આપી કહે, મારી દંડવત્ શ્રીઆચાર્યજી આગળ કરજો. ત્યારે બન્ને ભાઇ નારાયણદાસથી વિદાય થઇને ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યાં આચાર્યજી પધાર્યા હતા. તે નારાયણદાસના દંડવત્ કહી હજાર મહોર ભેટ ધરી. બધા સમાચાર નારાયણદાસના કહ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, વૈષ્ણવ પર આવી પ્રીતિ જોઇએ. એવો ધર્મ જેના હૃદયમાં હોય તેનું સદા કલ્યાણજ થાય. પછી બન્ને બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવોએ શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય થઈ અડેલમાં આવી સારી રીતિથી કન્યાનો વિવાહ કરી દીધો. તે નારાયણદાસ એવા શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમનું નામ પહેલાં 'નરિયા' હતું તે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એમનું નામ નારાયણદાસ ધર્યું.

ભાવપ્રકાશ—વળી બન્ને ભાઈ બ્રાહ્મણ વૈષ્ણવ સાધારણ નામધારી હતા. તે પુષ્ટિલીલા સબંધી તો હતા નહી. તેથી એમની વાર્તા નહીં કહી. શ્રીઆચાર્યજીએ શરણે લીધા તે શરણના પ્રતાપથી સંસાર-દુઃખથી છુટીને મુક્તિના અધિકારી થઇ ગયા. તેથી નારાયણદાસ મોટા ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्राणी, सो वह अकेली सिंहनंद में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नवनन्द में बड़े उपनन्द हैं, तिनकी वहू को नाम 'सुनन्दा' है, सो यह क्षत्राणी को प्रागट्य है। तातें इनकों बालभाव है। सो सिंहनन्द में एक क्षत्री के घर जन्म पायो। सो वर्ष ग्यारह की भई तब ब्याह भयो। सो ब्याह के महिना पाछे याको वर हतो ताके सीतला निकसी, सो मरि गयो। यह मा बाप के घर में रहै। सगरो काम काज करें। पाछे वर्ष तीस की भई तब मा बाप हू मरि गये। एक भाई हतो सो वह भाई सों प्रीति बहोत। परन्तु भाई की स्त्री, भोजाई सों बने नाहीं। तब यह क्षत्राणी ने दूसरो घर लियो। तब भाई ने कही, तू न्यारी क्यों भई? तब बहनि ने कही, नित्य को क्लेश आछो नाहीं। न्यारी भई तो कहा भयो, मैं तिहारी आज्ञा में हों, काम काज कहियो। तब भाई सौ रुपैया लेके बहनि सों कह्यो, तू खरच कों राखि। तब बहनि ने कही, मेरे तो अब ही खरची है। न होय तब दीजो। तब भाई ने कही, अब ही मेरो हाथ व्यौहार में चलत है, सो देऊ सो ले लियो करि। पाछे कहा जानिये कहा है? तब वह राखी। सो सास बहू सिंहनन्द में श्रीआचार्यजी की

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની એક ક્ષત્રાણી, તે સિંહનંદમાં એકલી રહેતી, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં નવનંદમાં મોટા ઉપનંદ છે. તેમની વહુનું નામ 'સુનંદા' છે. તે આ ક્ષત્રાણીનું પ્રાકટ્ય છે. તેથી એને બાલભાવ છે. તે સિંહનંદમાં એક ક્ષત્રીને ઘરે જન્મી. પછી વર્ષ અગ્યારની થઇ ત્યારે લગ્ન થયું. પછી લગ્નના એક મહિના પછી એનો વર હતો તેને શીતલા નીકળી તે મરી ગયો. એ મા-બાપના ઘરમાં રહે બધું કામકાજ કરે. પછી વર્ષ તીસની થઈ ત્યારે મા–બાપ પણ મરી ગયાં. એક ભાઈ હતો તેનાથી પ્રીતિ ઘણી. પરંતુ ભાઇની સ્ત્રી, ભોજાઇથી ન બને. ત્યારે આ ક્ષત્રાણીએ બીજું ઘર લીધું. ત્યારે ભાઇએ કહ્યું, તૂ અલગ કેમ થઇ? ત્યારે બહેને કહ્યું કે નિત્યનો કલેશ સારો નહીં. અલગ થઈ તો શું થયું? હું તારી આજ્ઞામાં છું. કામ કાજ કહેજે. ત્યારે ભાઇએ સો રૂપીઆ લઇને બહેનને કહ્યું, તૂ ખર્ચ માટે રાખ. ત્યારે બહેને કહ્યું, મારે તો હમણાં ખરચી છે. ન હોય ત્યારે આપજે. ત્યારે ભાઇએ કહ્યું, હમણાં મારો હાથ વહેવારમાં ચાલે છે. જે આપું તે લીધા કર. પછી શું જાણિયે શું છે? ત્યારે તેણે રાખ્યા. પછી સાસુ–વહુ સિંહનંદમાં શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની

सेवकनी हती, तहां नित्य जान लागी। तब एक दिन कह्यो कछु काम काज श्रीठाकुरजी की सेवा मोसों करावो। तब सास बहू ने कही, तू श्रीआचार्यजी की सेवकनी होती तो कछु सेवा करावती। तब इन कह्यो, अब श्रीआचार्यजी पधारें तब मोकों सेवकनी करैयो। पाछे सास बहू के श्रीठाकुरजी ने कही, जो–यह क्षत्राणी बूटी भली काढ़ि जानें है सो मेरे बागे में बूटी कढ़ाय मोकों पहराव। तब बहू ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो। उह श्रीआचार्यजी की सेवकनी नाहीं हैं। और बूटि काढ़ि, (कछु) लेइगी नाहीं सो मैं कैसे कढाऊँ? तब श्रीठाकुरजी वह बहू सों कहें, उह क्षत्राणी दैवी जीव है, तातें तू बूटि कढ़ाऊ। कछुक दिनन में श्रीआचार्यजी पधारेंगे, तब वह सेवकनी हूँ होयगी। कृपापात्र भगवदीय होयगी। तातें तू बूटि कढ़ाउ, मेरी आज्ञा हैं। तोकों बाधक नाहीं। तब बहू ने एक सुफेद बागा उह क्षत्राणी कों दियो। कह्यो, यामें छोटी छोटी बूटी काढ़ि दे। तब वह प्रसन्न होय भाग मानिकें अपुने घर ले जाय अपरस में बूटि काढ़े प्रीति सों। जदपि कोरे वस्त्र की चिन्ता नाहीं। तोहू श्रीठाकुरजी को जानि अपरस में काढ़ि कें बहू कों दिये। सो बहु ने श्रीठाकुरजी कों अंगीकार करायो। पाछें जब रात्रि भई तबश्रीठाकुरजी नें उह क्षत्राणी कों सपने में कही, मैं तेरी बूटी काढ़ी, प्रीति सों अङ्गीकार

હતાં ત્યાં નિત્ય જવા લાગી. ત્યારે એક દિવસ કહ્યુ, કઇ કામ-કાજ શ્રીઠાકુરજીની સેવા મારાથી કરાવો. ત્યારે સાસુ–વહુએ કહ્યુ, તૂ શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની હોતી તો કંઈ સેવા કરાવતી. ત્યારે એણે કહ્યું, હવે શ્રીઆચાર્યજી પધારે ત્યારે મને સેવકની કરાવજો. પછી સાસુ–વહુના શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યુ કે આ ક્ષત્રાણી વેલ–બુટી સારી કાઢી જાણે છે. તો મારા વાગોમાં બુટી કઢાવી મને પહેરાવ. ત્યારે વહુએ શ્રીઠાકુરજીને કહ્યુ, એ શ્રીઆચાર્યજીની સેવકની નથી અને બુટી કાઢીને કઇ લેશે નહીં. એથી હું કેવી રીતે કઢાવુ ? ત્યારે શ્રીઠાકુરજી તે વહુને કહે, તે ક્ષત્રાણી દૈવીજીવ છે. તેથી તૂ બુટી કઢાવ. થોડાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી પધારશે ત્યારે તે સેવકની પણ થશે. કૃપાપાત્ર ભગવદીય થશે. તેથી તૂ બુટી કઢાવ મારી આજ્ઞા છે. તને બાધક નહી. ત્યારે વહુએ એક સફેદ વાગો તે ક્ષત્રાણીને આપ્યો. કહ્યું, આમાં નાની નાની બુટી કાઢી દે. ત્યારે તે પ્રસન્ન થઈ ભાગ્ય માનીને પોતાના ઘરે લઈ જઈ અપરસમાં બુટી કાઢી પ્રીતિથી, યદ્યપિ કોરા વસ્ત્રની ચિંતા નહીં તો પણ શ્રીઠાકુરજીની જાણી અપરસમાં કાઢી વહુને આપી. તે વહુએ શ્રીઠાકુરજીને અંગીકાર કરાવ્યો. પછી જ્યારે રાત્રિ થઈ ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ તે ક્ષત્રાણીને સ્વપ્નમાં કહ્યું,

कियो। अब श्रीआचार्यजी दिन दोय में पधारेंगे। सो तेरे भाई के घर ठाकुर हैं, सो भाई सों मांगि कें अपने घर ले आव। तिनकी तू सेवा करियो। पाछें वह क्षत्राणी की नींद खुली। सो कहे, जो–कब सवेरो होय, कब मैं उह भाई पास जाऊँ ? सो सवेरो भयो तब क्षत्राणी भाई पास गई। सो उहां भाई भोजाई दोय दिन तें लरे हते। कलेश करि रसोई न किये हते। तब भाई नें कही, बहनि ! आजु तुम कैसे आई ? तब इन कह्यो, मेरो मन अकेलें कहूँ नाहीं लागत, सो तुम अपने श्रीठाकुरजी मोकों देऊ तो मैं पूजा करों। तब भाई प्रसन्न होइकें कह्यो, बहनि ! यह भली बात कही। ठाकुर दोय दिन तें भूखे बैठे हैं, मेरी बहू नित्य क्लेश करति है, सो तू ले जा। तब कह्यो, तुम अपने हाथ तें देऊ, मैं ले जाऊँ तो कदाचित् तिहारी बहू मोसों लरे। तब भाई नहाय कें श्रीठाकुरजी कों दिये। सो प्रसन्न होय घर लाई। रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लिये।

पाछें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे तब बहू ने कही, जो–श्रीआचार्यजी पधारे हैं, मैं दरसन कों जात हों, तू चलेगी ? तब वह क्षत्राणी नें कही, मैं भाई के यहाँ तें श्रीठाकुरजी ले आई हों सो घर तें ले आऊं। तब बहू ने कही, वेगे ले आव। तब वह क्षत्राणी श्रीठाकुरजी कों ले आई। बहू के संग थानेश्वर आई।

में तारी काढेली बुटीने प्रीतिथी अंगीकार करी छे. हवे श्रीआचार्यजी बे दिवसमां पधारशे त्यारे तारा भाइना घरे श्रीठाकुरजी छे. ते भाइथी मांगीने तारा घर लई आव. तेनी तू सेवा करजे. पछी ते क्षत्राणीनी नींद खूली. ते कहे, क्यारे सवार थाय क्यारे हुं ते भाइ पासे जउं ? पछी सवार थयु त्यारे क्षत्राणी भाई पासे गई. त्यां भाइ–भोजाई बे दिवसथी लडयां हतां क्लेश करी रसोइ न करी हती. त्यारे भाइए कहुं, बहेन आज तमे केम आव्यां ? त्यारे एणे कहुं, मारूं मन एकलु कंइ लागतु नथी तो तमे तमारा श्रीठाकुरजी मने दो तो हुं पूजा करूं ? त्यारे भाइए प्रसन्न थइने कहुं, बहेन! आ भली वात कही. ठाकुर बे दिवसथी भूख्या बेठा छे. मारी वहु नित्य क्लेश करे छे तेथी तू लई जा. त्यारे एणे कहुं, तमे तमारा हाथथी दो. हुं लई जाउं तो कदाचित् तमारी वहु मने लडे. त्यारे भाइए न्हाइने श्रीठाकुरजीने आप्या. ते प्रसन्न थई घर लावी. रसोई करी भोग धरी महाप्रसाद लीधो. पछी श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधार्या त्यारे वहुए कहुं, के श्रीआचार्यजी पधार्या छे. हुं दर्शने जउं छुं. तूं चालीश ? त्यारे ते क्षत्राणीए कहुं, हुं भाइने त्यांथी श्रीठाकुरजी लइ आवी छुं ते घरथी लइ आउं. त्यारे वहुए कहुं,

श्रीआचार्यजी कों दंडोत कियो। तब बहूनें वह क्षत्राणी के सब समाचार कहे। पाछे विनती करी, जो—महाराज! अब इनकों कृपा करि सरन लीजिये। तब श्री-आचार्यजी कहें, मैं जानत हों। याकी ऊपर श्रीठाकुरजी पहलें ही कृपा करी हैं। पाछें वह क्षत्राणी सों कहें, जा, तू स्नान करि आऊ। तब वह क्षत्राणी सरस्वती में न्हाय कें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आई। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराये। पाछें श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों न्हवाय 'श्रीनवनीतप्रियजी' नाम धरे, उह क्षत्राणी के माथे पधराये। कहें, मन लगाय के सेवा करियो। तब क्षत्राणी और बहू श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विदा होय सिंहनंद में आय सेवा करन लागी। सो चौथे दिनतें उह क्षत्राणी की प्रीति देखि श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता–प्रसंग १—**सो वह क्षत्राणी को द्रव्य सब निवरि गयो, अकिंचन हती। सो सेवा सों पहोंचि कें सूत कांतती। तामें सेवा करि निर्वाह करती। सो घरके द्वारे काछिनी तरकारी फल मेवा आदि बेचन कों आवे तब श्रीठाकुरजी कहें, अरी मा! तरकारी वारी आई है, तू ले। तब वह क्षत्राणी दमरि दमरि की सब प्रकार की थोरि**

જલ્દી લઈ આવ. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી શ્રીઠાકુરજીને લઇ આવી. વહુના સાથે થાનેશ્વર આવી. શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કર્યા ત્યારે વહુએ તે ક્ષત્રાણીના બધા સમાચાર કહ્યા. પછી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! હવે એને કૃપા કરીને શરણ લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હું જાણું છું આના ઉપર શ્રીઠાકુરજીએ પહેલાંજ કૃપા કરી છે. પછી ક્ષત્રાણીને કહે, જા, તૂ સ્નાન કરી આવ. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી સરસ્વતીમાં ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી 'શ્રીનવનીતપ્રિયજી' નામ ધર્યું. તે ક્ષત્રાણીને માથે પધરાવ્યા. કહે, મન લગાડીને સેવા કરજે. ત્યારે ક્ષત્રાણી અને વહુ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિદાય થઇ સિંહનંદમાં આવી સેવા કરવા લાગ્યાં. પછી ચોથા દિવસે તે ક્ષત્રાણીની પ્રીતિ જોઇ શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧–તે ક્ષત્રાણીનું દ્રવ્ય બધું થઇ રહ્યું. અકિંચન હતી. તે સેવાથી પહોંચીને સૂત કાંતતી. તેમાં સેવા કરી નિર્વાહ કરતી. તે ઘરના દરવાજે કાછણ શાક, ફલ, મેવા આદિ વેચવાને આવે ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પોકારીને કહે, અરી મા! શાકવારી આવી છે તૂ લે. ત્યારે એ ક્ષત્રાણી દમડી દમડીનું બધી પ્રકારનું થોડું થોડું લે. મેવાવાળી

थोरि लेय। मेवा वारी फल वारी जब आवे तब श्रीठाकुरजी पुकारि-कै कहें, अरी मा! मेवा, फल बिकान आये हैं। तब एक पैसा में सब भांति के लेय। सो वह काछिनी यह जाने, जो–याको बेटा घर में प्यारो बहोत है, सो बाहिर नजरि लागन के लिये नाहीं काढ़ति। सो यह क्षत्राणी कों पहलें दे जाय। सो गाम में कमाई बहोत होय, ताके लिये पहलें दोय चारि बेर द्वार पर बोलि, या बाई कों सब भांति की दे जाय। सो यह क्षत्राणी देय सो ले जाय। सो वह क्षत्राणी कितनी ककडि आदि कच्ची समर्पे। कितनी तलिकें समर्पे। कितनी भुजेना करि, साग, या प्रकार रंच रंच सब प्रकार सों प्रीति पूर्वक करि भोग धरे। और कोई दिन तरकारीवारी दूरि निकसि जाती; तब श्रीठाकुरजी द्वार पर जाय दौरिकें उह काछिनी कों पुकारे। वेगी आऊ, मेरी मा लेयगी। तब वह शब्द सुन्दर सुनि दौरि आवती, श्री-ठाकुरजी पुकारि के भीतर भाजि आवतें। तब काछिनी कोऊ देखती नाहीं। तब वह क्षत्राणी कहती, लाला! बाहिर न जैयें, नजरि लागि जाय। तब श्रीठाकुरजी कहेतें, तरकारीवारी चली जाती तो तू कहां ते लेती? कहा भोग धरती? तब वह क्षत्राणी कहती, लाला! और काछिनी बहोतेरी आवेगी, परन्तु तुम मंदिर तें बाहिर मति जाऊ। गाम के बुरे लोगन की दृष्टि लागेगी और कबहू तरकारी वारी पुकारि

ફલવાળી જ્યારે આવે ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પોકારીને કહે, અરી મા! મેવા–ફલ વેચાવાં આવ્યાં છે, ત્યારે એક પૈસામાં બધી તરેહનાં લે. તે કાછણ એ જાણે કે આનો બેટા ઘરમાં બહુ વ્હાલો છે તે બહાર લોકોની નજર લાગે તે માટે કાઢતી નથી તેથી આ ક્ષત્રાણીને પહેલાં આપી જાય. તેથી ગામમાં કમાઈ ઘણી થાય. એને માટે પહેલાં બે ચાર વાર દ્વાર ઉપર બોલી આ બાઇને બધી તરહનું દઈ જાય. આ ક્ષત્રાણી દે તે લઇ જાય. પછી એ ક્ષત્રાણી કેટલીક કાકડી આદિ કાચી સમર્પે કેટલીક તળીને સમર્પે. કેટલાકનાં ભજિયાં કરે, શાક કરે એ પ્રકારે રંચકરંચક બધા પ્રકારથી પ્રીતિપૂર્વક કરી ભોગ ધરે. વળી કોઈ વખત શાકવાળી દૂર નીકળી જતી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી દ્વાર ઉપર જઇ દોડીને એ કાછણને પોકારે. જલદી આવ મારી મા લેશે. ત્યારે એ શબ્દ સુંદર સાંભળી દોડી આવતી. શ્રીઠાકુરજી પોકારીને અંદર ભાગી આવતા ત્યારે કાછણ કોઇને જોતી નહી. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી કહેતી, લાલા! બાહર ન જૈએ. નજર લાગી જાય. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહેતા શાકવાલી ચાલી જતી તો તું ક્યાંથી લેતી? શું ભોગ ધરતી? ત્યારે તે ક્ષત્રાણી કહેતી, લાલા! બીજી કાછણ ઘણીય આવશે. પરંતુ તમે મંદિરથી બહાર ન જાવ. ગામના ખરાબ લોકોની દૃષ્ટિ લાગશે. વળી કોઇવાર શાક-

के चली जाय, वह बाई सेवा टहल में न सुने, तब श्रीठाकुरजी लौकिक बालक की नांई आय झगरा करे। जो–तरकारी वारी चली गई। अब तू कहाँते लावेगी? कहा भोग धरेगी? साग–तरकारी बिना मैं तो नाहीं अरोगूंगो। तब वह क्षत्राणी कहती, लाला! मैं तो और काछिनी आवेगी तासों लेउंगी। और जो न आवेगी तो मैं बजार तें लाय सब प्रकार की करोंगी। तुम आरि मति करो, प्रसन्न रहो। तब श्रीठाकुरजी बालक की नांई कांधे पर चढ़िकें कहते, कब लावेगी। या प्रकार कृपा करते। और जा दिन पैसा बालभोग की सामग्री करन कों न होय, ता दिन रोटी चुपरि कें ढांकि धरे। सो श्रीठाकुरजी कबहू प्रहर रात्रि गये, कबहू आधि रात्रि जागि कें कहते। जो मा! मोकों भूख लागी है। तब वह बाई कहती, लालजी! आजु तो पकवान कछू नाहीं है। रोटी है। तब श्रीठाकुरजी कहतें, मोकों तुनई करि दे। तब वह बाई रोटी में घी सगरे लगाय बूरा रंच रंच बुरकाय, हाथ सों बटिकें श्रीठाकुरजी के हाथ में देती। सो श्रीठाकुरजी दांत सों कुतरि कुतरि कें आरोगते, बालक की नांई। पाछें जल आरोगि, बीरी आरोगि पौढ़ते। तब वह बाई के मन में बहोत खेद होतो। जो आजु लाला कों कछू पकवान न बनि आयो। सो पैसा नाहीं हैं। कहूं तें उधारो लाय पकवान करि राखुं। रात्रि कों सूकी रोटी आरोगें। सो

વાળી પોકારીને ચાલી જાય, તે બાઈ સેવા–ટહલમાં ન સાંભળે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી લૌકિક બાલકની માફક આવી ઝઘડા કર, કે શાકવાળી ચાલી ગઈ. હવે તૂ ક્યાંથી લાવીશ? શું ભોગ ધરીશ? શાકભાજી વિના હું તો નહીં આરોગું. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી કહેતી લાલા! હું તો બીજી કાછણ આવશે તેનાથી લઇશ અને જો નહીં આવે તો હું બજારથી લાવી બધી પ્રકારનું કરીશ. તમે અડ ન કરો પ્રસન્ન રહો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી બાલકની માફક કાંધા ઉપર ચઢીને કહેતા, ક્યારે લાવીશ? આ પ્રકારે કૃપા કરતા. વળી જે દિવસે પૈસા બાલભોગની સામગ્રી કરવાને ન હોય તે દિવસે રોટી ચોપડીને ઢાંકી ધર. પછી શ્રીઠાકુરજી ક્યારેય પ્રહર રાત્રિ ગયે, ક્યારેય, આધીરાત્રિયે, જાગીને કહેતા, કે મા! મને ભુખ લાગી છે. ત્યારે તે બાઇ કહેતી, લાલજી આજ તો પકવાન કંઈ નથી રોટી છે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહેતા, મને 'તોતરી' કરી દે. ત્યારે તે બાઈ રોટીમાં ઘી બધે લગાડી ખાંડ થોડી થોડી ભભરાવી હાથથી વણીને શ્રીઠાકુરજીના હાથમાં દેતી. તે શ્રીઠાકુરજી દાંતથી તોડી તોડીને આરોગતા. બાલકની માફક. પછી જલ આરોગી, બીડી આરોગી પોઢતા. ત્યારે તે બાઇના મનમાં બહુ ખેદ થતો, કે આજ લાલાને માટે કંઈ પકવાન ન બની આવ્યું. પૈસા નથી. માટે

एक दिन प्रातःकाल उठि पावली को घी, खांडउ धारो लाय, घर मेंदा छानि दोय चारि भांति को पकवान करि कें धरि राख्यो। पाछें जब अर्द्धरात्रि भई तब श्रीठाकुरजी जागे, कहे, मा! मोकों भूख लागी है। तब वह क्षत्राणी उठिकें पकवान आगें धर्‍यो। सो श्रीठाकुरजी अरोगि के उह क्षत्राणी सों कहे, जो–आजु रोटी क्यों नाहीं धरी? तेरे पास तो पैसा न हते। पकवान कहां ते कियो? तब वह क्षत्राणी नें कही, कहा करूँ लाला! मेरे कोई कमायवे वारो नाहीं। मेरे पास पैसा नाहीं। सूकी रोटी सवेरे की धरी आरोगो। सो मेरे मनमें दुःख होतो। तातें पावली उधार करि पकवान किये हैं। सो दोय तीन दिन में सूत वेचि के देऊंगी। तब श्रीठाकुरजी कहें, मा! उधारो करज करि पकवान क्यों कियो? मोकों तो चुपरी रोटी बहोत भावत हैं। करज माथे चढ़ि जाय तो दियो न जाय। जब वह मांगें तब क्लेश होय सो न करिये। आजु पाछें उधारो मति करियो। मोकों रोटी रूचत हैं, तातें रोटी घी सों चुपरि कें धरि राखियो। तब वह बाई वैसेही करती। सूत के पैसा बढ़ते तामें पकवान करती। जो पैसा न होय तो रोटी चुपरि के धरती। वार्ता ॥६०॥

भावप्रकाश—जो श्रीठाकुरजी उधार काढिवे कों यातें वरजे, जो–

કંઇથી ઉધાર લાવીને પકવાન કરી રાખું. રાત્રિએ સુકી રોટી આરોગ્યા. પછી એક દિવસ પ્રાતઃકાલ ઉઠી પાવલીનું ઘી, ખાંડ ઉધાર લાવી ઘરમાં મેંદા છાણી બે ચાર તરહનાં પકવાન કરીને ધરી રાખ્યાં. પછી જ્યારે અર્ધરાત્રિ ગઇ ત્યારે શ્રીઠાકુરજી જાગ્યા. કહે, મા! મને ભૂખ લાગી છે. ત્યારે તે ક્ષત્રાણી ઉઠીને પકવાન આગળ ધર્યા. તે શ્રીઠાકુરજી આરોગીને તે ક્ષત્રાણીને કહે, આજ રોટી કેમ નહીં ધરી? તારી પાસે તો પૈસા ન હતા પકવાન ક્યાંથી કર્યાં? ત્યારે તે ક્ષત્રાણીએ કહ્યું, શું કરે લાલા! મારે કોઇ કમાવવાવાળો નથી. મારી પાસે પૈસા નથી. સુકી રોટલી સવારની ધરી આરોગો તે મારા મનમાં દુઃખ થતું. તેથી પાવલી ઉધાર કરી પકવાન કર્યાં છે. તે બે ત્રણ દિવસમાં સુત વેચીને દઇશ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, મા! ઉધાર કરજ કરી પકવાન કેમ કર્યાં? મને તો ચોપડલી રોટી બહુ ભાવે છે. કરજ માથે ચઢી જાય તો દેઇ ન શકાય. જ્યારે તે માંગે ત્યારે કલેશ થાય તેથી ન કરીએ. આજ પછી ઉધાર ન કરજે. મને રોટલી રૂચે છે તેથી રોટી ઘીથી ચોપડીને ધરી રાખજે. ત્યારે તે બાઇ તેમજ કરતી. સૂતરના પૈસા વધતા તેમાં પકવાન કરતી. જો પૈસા ન હોય તો રોટલી ચોપડીને ધરતી. વાર્તા ॥ ૬૦ ॥

ऋण है सो हत्या है । श्रीठाकुरजी के सुमिरन में मन हैं, सो करजवारेन में जाय । और जहां तांई करज न चुकावें तहां तांई वाकी सेवा को फल वाके पास नाहीं । जहां तें करज लियो ताके पास है । तातें श्रीठाकुरजी वह बाई कों करज करिवे की नाहीं करी । तहां यह संदेह होय, जो-वह बाई कों श्रीठाकुरजी या प्रकार बालक की नांई कृपा करि मांगि कें आरोगते । तब लक्ष्मी तो श्रीठाकुरजी की दासी हैं सो वह बाई कों द्रव्य क्यों नाहीं दिए ? जो-रोटी धरती । बालभोग करिवे को ऐसो संकोच क्यों भयो ? काहेतें, व्रज में श्री-ठाकुरजी पधारें तब लक्ष्मीजी व्रजमें आय रहीं ! व्रज को आश्रय किये । सो आपु पंचाध्यायी में कहे हैं, गोपिकागीत के अध्याय में । " जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज श्रयत इन्दिरा शश्वदत्रहि । " सो उह बाई ऐसी निष्कंचन क्यों रही ? यह संदेह होय तहां कहत हैं, लक्ष्मी हैं सो श्रीठाकुरजी की दासी हैं । श्रीठाकुरजी की इच्छा प्रमान कारज करत हैं । सो या बाई कों श्रीठाकुरजी द्रव्य यातें नाहीं दिये जो द्रव्य होय तो या बाई के मनको निरोध न होय । तब भक्तन की आरती कैसे वढे ? द्रव्य विना चरखा कांते, तामें श्रीठाकुरजी के लिये मन लाग्यो रहे । अब इतनो होय तो मैं फलानी सामग्री करूं । मेरो लाला

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજીએ ઉધાર કરવાને એથી રોકી કે ઋણ છે તે હત્યા છે. શ્રીઠાકુરજીના સ્મરણમાં રહેલું મન કરજવાળામાં જાય અને જ્યાં સુધી કરજ ન ચુકાવે ત્યાં સુધી એની સેવાનું ફલ એની પાસે નહીં. જ્યાંથી કરજ લીધું તેની પાસે છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ તે બાઇને કરજ કરવાની ના કહી. ત્યાં એ સંદેહ થાય કે એ બાઈની પાસે શ્રીઠાકુરજી આ પ્રકારે બાલકની માફક કૃપા કરી માંગીને આરોગતા ત્યારે લક્ષ્મી તો શ્રીઠાકુરજીની દાસી છે. તો એ બાઇને દ્રવ્ય કેમ નહીં આપ્યુ ? કે રોટી ધરતી. બાલભોગ (અનસખડી) કરવાનો એવો સંકોચ કેમ થયો ? કેમકે વ્રજમાં શ્રીઠાકુરજી પધાર્યા ત્યારે લક્ષ્મીજી વ્રજમાં આવી રહી વ્રજનો આશ્રય કર્યો. તે આપ 'પંચાધ્યાયી' માં કહે છે, ગોપિકાગીતના અધ્યાયમાં ' જયતિતેધિકં . . ' તેથી એ બાઈ એવી નિષ્કંચન કેમ રહી ? આ સંદેહ થાય ત્યાં કહે છે, લક્ષ્મી છે તે શ્રીઠાકુરજીની દાસી છે. શ્રીઠાકુરજીની ઈચ્છા પ્રમાણે કાર્ય કરે છે. તેથી આ બાઇને શ્રીઠાકુરજીએ એ માટે દ્રવ્ય નહીં આપ્યું કે જો દ્રવ્ય હોય તો આ બાઈના મનનો નિરોધ ન હોય. ત્યારે ભક્તોની આર્તિ કેવી રીતે વધે ? દ્રવ્ય વિના રેંટિયો કાંતે તેમાં શ્રીઠાકુરજીને માટે મન લાગ્યું રહે. હવે આટલું થશે તો હું ફલાણી સામગ્રી કરીશ. મારો લાલા રોટી

रोटी आरोगत हैं। आछो, आछो, कछू जतन करि आरोगाऊँ। या प्रकार मन वह बाई को अपने में लगायवे के लिये बहोत द्रव्य नाहीं दिये। उतनो ही दिये जामें नित्य को निर्वाह होय। धनको मद न होय। तातें लक्ष्मी भगवद् ईच्छा आधीन है। सो कैसे धन होय? या बाई कों याही प्रकार प्रभु निरोध किये। जहां जैसी प्रभु की ईच्छा है तहां तैसी लीला करत हैं। और यह सन्देह होय, जो-अर्द्ध रात्रि कों श्रीठाकुरजी उह बाई तें माँगते। तब न्हायवे की अपरस, ताको नित्य कैसो विचार? और तरकारी वारी पुकारि कें चली जाती तब श्रीठाकुरजी वह बाई के कन्धे पर चढ़ि के झगरा करते, तब अपरसता कहां? सो मंदिर में हू अपरस को विचार कैसे हैं। यह संदेह होय तहां कहत हैं, श्रीआचार्यजी के पुष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी मर्यादापुष्टि रीति सों विराजत हैं। सगरे पुष्टि पुरुषोत्तम के भाव सों सगरी सामग्री आरोगत हैं। सगरी वस्तु वस्त्र आभूषन कूँ अंगीकार करत हैं। और दरसन देवे में मर्यादा रीति सों विराजत हैं, वोलत नाहीं। सो भगवद् स्वरूप में दोय प्रकार को स्वरूप है। एक भक्तोद्धारक, एक सर्वोद्धारक; जामें मर्यादापुष्टि रीति सों सबकों दरसन। भक्तोद्धारक स्वरूप के भीतर वह सबकों दरसन नाहीं। सो जहां तांई वैष्णव कों प्रेम न होय तहां तांई मर्यादापुष्टि रीति सों अङ्गीकार, दरसन हैं। भक्तोद्धारक स्वरूप, सर्वोद्धारक स्वरूप मे तें बाहर प्रगट

આરોગે છે તેથી સારૂં સારૂં કંઇ જતન કરી આરોગાઉં. આ પ્રકારે તે બાઈનું મન પોતામાં લગાડવાને માટે બહુ દ્રવ્ય ન આપ્યું. એટલુંજ આપ્યું. જેમાં નિત્યનો નિર્વાહ થાય. ધનનો મદ ન થાય. તેથી લક્ષ્મી ભગવદ્દઇચ્છા આધીન છે. તેથી કેવી રીતે ધન થાય? આ બાઇને આજ પ્રકારે પ્રભુએ નિરોધ કર્યો. જ્યાં જેવી પ્રભુની ઈચ્છા ત્યાં તેવી લીલા કરે છે. વળી એ સંદેહ થાય કે અર્ધરાત્રિએ શ્રીઠાકુરજી એ બાઇથી માંગતા ત્યારે ન્હાવાની અપરસ તેનો નિત્ય કેવો વિચાર? વળી શાકવાળી પોકારીને ચાલી જતી ત્યારે શ્રીઠાકુરજી તે બાઇના કંધા ઉપર ચઢીને ઝઘડો કરતા ત્યારે અપરસ ક્યાં? મંદિરમાં પણ અપરસનો વિચાર કેમ છે? આ સંદેહ હોય ત્યાં કહે છે, શ્રી-આચાર્યજીના પુષ્ટિમાર્ગમાં શ્રીઠાકુરજી મર્યાદા પુષ્ટિરીતિથી બિરાજે છે. બધે પુષ્ટિ પુરૂ-ષોત્તમના ભાવથી બધી સામગ્રી આરોગે છે. બધી વસ્તુ, વસ્ત્ર આભરણને અંગીકાર કરે છે. અને દર્શન દેવામાં મર્યાદારીતિથી બિરાજે છે. બોલતા નથી. તે ભગવદ્દસ્વરૂપમાં બે પ્રકારનાં સ્વરૂપ છે. એક ભક્તોદ્ધારક, બીજું સર્વોદ્ધારક જેમાં મર્યાદા પુષ્ટિરીતિથી બધાને દર્શન. ભક્તોદ્ધારક સ્વરૂપના વિષે બધાને તે દર્શન નહી. તેથી જ્યાં સુધી વૈષ્ણવને પ્રેમ ન હોય ત્યાં સુધી મર્યાદા—પુષ્ટિરીતિથી અંગીકાર દર્શન છે. ભક્તોદ્ધારક

होय । सो जहां जेसो कार्य होय, बालक होय, तरुन होय, वृद्ध होय, गाय आदि जेसो कार्य करनो होय। ता प्रकार को स्वरूप करि उह भक्त सों बोलें, अनुभव करावें। तथा मर्यादापुष्टिस्वरूप है उनही के मुख द्वारा बोलें, अनुभव जतावें। सो यह क्षत्राणी मन्दिर में सगरी मर्यादा, सेवा, अपरस और काम काज करती। श्रीठाकुरजी पधारें, तथा अर्द्ध रात्रि कों श्रीठाकुरजी पास आय मांगे, तहां भक्तोद्धारक स्वरूप में अपरस नाहीं, उहां केवल प्रेम ही सर्वोपरि धर्म है। पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम आनंद रूप भक्तन के संग लीला करें। हँसे, बोले अनुभव जनावें। तहां अपरस की मर्यादा की संभावना नाहीं। तहां केवल स्नेह, जो–सर्वोपरि प्रेम है। सोई कारन है। या प्रकार सों भक्तन के घर पुष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी बिराजत हैं। तातें वैष्णव कों भक्तोद्धारक स्वरूप कछू अनुभव जतावत हैं, ता करि जानिकें अपरस न राखें तो अपराध परें। मंदिर में श्रीठाकुरजी की सेवा में पुष्टिमार्ग की मर्यादा सहित सेवा करें। और प्रेम में कछू मर्यादा कों अनुसंधान न रहें, तामें जो–कार्य बने सो सब श्रीठाकुरजी कों प्रिय है। तामें कछू छूई न जाय। जानि कें करें, जो–श्रीठाकुरजी प्रेम के भूखे हैं, मर्यादा को कहा काम है? या प्रकार कल्पित ज्ञान करि मर्यादा छोडे तो उनकों अपराधी भ्रष्ट ज्ञाननो। या प्रकार को भेद जानिये।

સ્વરૂપ સર્વોદ્ધારક સ્વરૂપમાંથી બહાર પ્રગટ થાય. તે જ્યાં જેવું કાર્ય હોય, બાલક હોય, તરૂણ હોય, વૃદ્ધ હોય, ગાય આદિ જેવું કાર્ય કરવું હોય તે પ્રકારનું સ્વરૂપ કરી તે ભક્તથી બોલે અનુભવ કરાવે. તથા મર્યાદા પુષ્ટિ સ્વરૂપ છે તેમના જ મુખ દ્વારા બોલે અનુભવ જણાવે. તે આ ક્ષત્રાણી મંદિરમાં બધી મર્યાદા સેવા અપરસ અને કામકાજ કરતી. શ્રીઠાકુરજી પધારે તથા અર્ધરાત્રિએ શ્રીઠાકુરજી પાસે આવીને માંગે ત્યાં ભક્તોદ્ધારક સ્વરૂપમાં અપરસ નહી. ત્યાં કેવળ પ્રેમ જ સર્વોપરી ધર્મ છે. પૂર્ણ બ્રહ્મ પુરુષોત્તમ આનંદરૂપ ભક્તોના સંગે લીલા કરે, હસે, બોલે અનુભવ જણાવે ત્યાં અપરસની મર્યાદાની સંભવના નહી. ત્યાં કેવળ સ્નેહ જે સર્વોપરી પ્રેમ છે તેજ કારણુ છે. આ પ્રકારથી ભક્તોના ઘર પુષ્ટિમાર્ગમાં શ્રીઠાકુરજી બિરાજે છે. તેથી વૈષ્ણવને ભક્તોદ્ધારક સ્વરૂપ કંઈ અનુભવ જણાવે છે તેવું જાણીને અપરસ ન રાખે તો અપરાધ પડે. મંદિરમાં શ્રીઠાકુરજીની સેવામાં પુષ્ટિમાર્ગની મર્યાદા સહિત સેવા કરે અને પ્રેમમાં કંઈ મર્યાદાનુ અનુસંધાન ન રહે તેમાં જે કાર્ય બને તે બધું શ્રીઠાકુરજીને પ્રિય છે. તેમાં કંઈ અભડાઈ ન જાય. જાણીને કરે કે શ્રીઠાકુરજી તો પ્રેમના ભૂખ્યા છે મર્યાદાનું શું કામ છે? એ પ્રકારે કલ્પિત જ્ઞાનથી મર્યાદા છોડે તો એને અપરાધી ભ્રષ્ટ જાણવો. આ પ્રકારનો ભેદ જાણિએ. તે ક્ષત્રાણી એવી શ્રીઆચાર્યજીની

सो उह क्षत्राणी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र, जासों बालक की नांई श्रीठाकुरजी अनुभव करावते। लीला में हू उपनंद गोप की वहू तहां हू पुत्र भाव यहां हु पुत्र भाव दृढ हैं। तातें उह क्षत्राणी बाई की वार्ता कहां तांई कहिये।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, दामोदरदास कायस्थ की माता, वाको नाम वीरबाई सो सेरगढ़ में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में यह पुलिंदी हैं। तहाँ ये 'वनदेवी' इनको नाम। सो गिरिराज के संग तें इनकों दृढ़ भक्ति भई हैं। सो श्रीआचार्यजी प्रगटे, श्री-गोवर्द्धनधर प्रगटे, ताते भूमि पर सगरो भगवदीय परिकर प्रगट्यो है।

सो सेरगढ़ में एक कायस्थ द्रव्यपात्र बहोत, सो कासी गयो। तहां कासी में एक कायस्थ के घर वीरबाई प्रगटी हती। सो सेरगढ़ वारे कायस्थ सों सगाई भई। पाछे ब्याह भयो। सो वीरबाई के एक बेटा सेरगढ़ में भयो। ताको नाम दामोदरदास धरयो। सो दामोदरदास वर्ष नौ के भये। तब सेरगढ़ में एक नयो हाकिम आयो सो बहोत खोटो आयो। जाके पास द्रव्य देखे ताकों कछू कलंक लगाय द्रव्य सब ले लेय। चोरन सों चोरी करावें। तब वीरबाई के पति

કૃપાપાત્ર જેને બાલકની તરફ શ્રીઠાકુરજી અનુભવ કરાવે લીલામાં પણ ઉપનંદગોપની વહુ ત્યાં પણ પુત્ર ભાવ અહીં પણ પુત્ર ભાવ દૃઢ છે. તેથી તે ક્ષત્રાણી બાઇની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વૈષ્ણવ ॥૯૦॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સેવકની, દામોદરદાસ કાયસ્થની માતા એમનું નામ વીરબાઇ, તે શેરગઢમાં રહેતી, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ પુલિંદી છે. ત્યાં એ 'વનદેવી' એમનું નામ. શ્રી ગિરિરાજના સંગથી એને દૃઢ ભક્તિ થઇ છે. શ્રીઆચાર્યજી પ્રકટ્યા, શ્રીગોવર્દ્ધનધર પ્રકટ્યા. તેથી ભૂમિ પર બધો ભગવદીય પરિકર પ્રકટ્યો છે. શેરગઢમાં એક કાયસ્થ દ્રવ્યપાત્ર ઘણો તે કાશી ગયો. ત્યાં કાશીમાં એક કાયસ્થના ઘરે વીરબાઈ પ્રકટી હતી. તેની શેરગઢવાળા કાયસ્થથી સગાઈ થઈ. પછી લગ્ન થયું. તે વીરબાઇને એક પુત્ર શેરગઢમાં થયો. તેનું નામ દામોદરદાસ ધર્યું. તે દામોદરદાસ વર્ષ ૯ના થયા. ત્યારે શેરગઢમાં એક નવો હાકિમ આવ્યો તે બહુ ખરાબ આવ્યો. જેની પાસે દ્રવ્ય જુએ તેને કંઈ કલંક લગાડી દ્રવ્ય બધું લઈ લે. ચોરોથી ચોરી કરાવે. ત્યારે વીરબાઇના પતિએ કહ્યું, હવે શું કરીએ ? હાકિમ બધું દ્રવ્ય લેશે.

ने कही अब कैसे करें ? हाकिम सगरो द्रव्य लेयगो । तब वा स्त्री ने कही, सगरो द्रव्य भेलो करि मोकों सोंपि देहू । मैं कासी अपने मा-बाप के घर जाय रहूँ । जब दूसरो आछो हाकिम आवे तब आऊंगी । जो-यही हाकीम रहे तो पाछे तुम हूं कासी चले आइयो । तब बीरबाई के पति ने कही, भली कही । तब कायस्थ सगरो द्रव्य भेलो करि दस पांच दिन में मोहोर कराय बीरबाई स्त्री कों सोंपी । दामोदरदास बेटा दोय बेटी सबकों कासी पठाई दियो । सो बीरबाई कासी आय रही । तब महिना चारि पाछें उह हाकिम नें एक ब्राह्मण कों कलंक लगाय सगरो द्रव्य घर लूटि लियो । वाके घर गौर स्वरूप के ठाकुर बड़े और एक लालजी तिनहूँ को गहना, कपरा, बासन हाकिम नें लूटि लियो । तब वह ब्राह्मण की स्त्री रोवन लागी । तब वह ब्राह्मण नें कही तू रोवे मति । देखि, अब कहा काम होत हैं । सो हाकिम बजार में घोरा पर चढ्यो चल्यो जात हतो, तब यह ब्राह्मण ने तरवारि लें वह हाकिम कें मारी, सो घोरा तें गिरयो तब छाति पर चढि कटारी पेट पर मारी, सो मरि गयो । वह हाकिम के मनुष्य ने उह ब्राह्मण कों मारयो । या प्रकार दोऊ मरे । यह बात राजा सुनि कें दूसरो हाकिम सेरगढ़ पठायो । सो वह भलो मनुष्य आयो, सबकों सुख दियो । वह ब्राह्मण मरयो वाकी

ત્યારે તે સ્ત્રીએ કહ્યુ, બધું દ્રવ્ય ભેગું કરી મને સોંપી દો, હું કાશી મારા મા-બાપને ઘરે જઈ રહું. જ્યારે બીજો સારો હાકેમ આવશે ત્યારે આવીશ. જો આ જ હાકેમ રહે તો પછીથી તમે પણ કાશી ચાલ્યા આવજો. ત્યારે વીરબાઇના પતિએ કહ્યુ, તેં સારૂં કહ્યું. ત્યારે તે કાયસ્થ બધુ દ્રવ્ય ભેગું કરિ દશ-પાંચ દિવસમાં મહોર કરાવી વીરબાઈ સ્ત્રીને સોંપી. પછી દામોદરદાસ બેટા, બે બેટી બધાને કાશી મોકલી દીધાં. તે વીરબાઈ કાશી આવી રહી. ત્યારે મહિના ચાર પછી તે હાકેમે એક બ્રાહ્મણને કલંક લગાડી બધુ દ્રવ્ય ઘર લૂંટી લીધું. એના ગૌર સ્વરૂપના શ્રીઠાકુરજી મોટા અને એક લાલજી તેમનાં પણ ઘરેણાં, કપડાં, વાસણ હાકેમ લૂટી લઈ ગયો. ત્યારે તે બ્રાહ્મણની સ્ત્રી રોવા લાગી. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, તૂ રોઈશ નહી. દેખ, હવે શું કામ થાય છે ? પછી હાકેમ બજારમાં ઘોડા ઉપર ચઢીને જતો હતો ત્યારે એ બ્રાહ્મણે તલવાર લઇ તે હાકેમને મારી. તે ઘોડાથી પડયો ત્યારે છાતી ઉપર ચઢી કટારી પેટ ઉપર મારી તે મરી ગયો. પછી તે હાકેમના મનુષ્યોએ તે બ્રાહ્મણને માર્યો. આ પ્રકારે બન્ને મર્યા. એ વાત રાજાએ સાંભળી પછી બીજો હાકેમ શેરગઢ મોકલ્યો. તે બહુ ભલો મનુષ્ય આવ્યો. બધાંને સુખ દીધું. તે બ્રાહ્મણ

स्त्री कों दोय रुपैया को महिना करि दियो। सेरगढ़ में चेन भयो। सो लोग जहां तहां भाजि गये हते सो सगरे सेरगढ़ आये। तब वह ब्राह्मणी जाको ब्राह्मण मारयो गयो सो वीरबाई के पति सों कह्यो, जो—मोसों अकेलें श्रीठाकुरजी की पूजा नाहीं बनत, मेरे द्रव्य नाहीं है। तब वह कायस्थ नें कही, मेरी स्त्री बेटा, बेटी कासी हैं। अब गाम में चेन भयो है सो यहां बुलावत हों। उनकें आयेतें ठाकुर हम राखेंगे। तब वह ब्राह्मणी ने कही बहोत आछो। सो वे ठाकुर सेरगढ़ की नदी है तहां उह ब्राह्मण आयो हतो तहां ते प्राप्त भये हते। पाछे वह कायस्थ वीरबाई के बुलायवे कों चार मनुष्य आछे प्रमाणिक गांव के तिनकों कासी पठाये। सो मनुष्य आयकें वीरबाई सों कहे, अब सेरगढ़ में दूसरो हाकिम आयो हैं, सो भलौ मनुष्य है। तातें अब तुम सेरगढ़ चलो। तिहारे धनीनें बुलाये हों। तब वीरबाई नें सगरे धन की पेटी ले बेटा दामोदरदास कों, दोऊ बेटी सहित कासी सों चले। सो मजलि पांच आयकें छोटो सो गाम हतो तहां उतरे। सो चोर पाछें लगे। जब रात्रि पहर पिछली रहि गई तब मनुष्यन कों नींद आई। सो चोर ने पेटी लीनी। सवेरो होतो जानि गाम के बाहिर रेति धूरि में गाड़ि कें उहां गाम में चोर आय बैठे। सो सवेरो होत ही वीरबाई ने कही, पेटी गई अब कैसें करूं? मेरो तो सगरे घर

મર્યો તેની સ્ત્રીને બે રૂપીઆ મહિનો કરી આપ્યો. શેરગઢમાં ચેન થયુ. પછી લોકો જ્યાં ત્યાં ભાગી ગયા હતા તે બધા શેરગઢ આવ્યા. ત્યારે એ બ્રાહ્મણીએ જેનો બ્રાહ્મણ માર્યો ગયો હતો. તેણે વીરબાઇના પતિને કહ્યું, કે મારા એકલાથી શ્રીઠાકુરજીની પૂજા નથી બનતી મારી પાસે દ્રવ્ય નથી. ત્યારે તે કાયસ્થે કહ્યું મારી સ્ત્રી, બેટા, બેટી કાશી છે. હવે ગામમાં ચેન થયું છે તે અહીં બોલાવું છું. એમના આવ્યાથી ઠાકુર અમે રાખીશું. ત્યારે તે બ્રાહ્મણીએ કહ્યું, બહુ સારૂં. એ ઠાકુર શેરગઢની નદી છે ત્યાં તે બ્રાહ્મણ ગયો હતો ત્યાંથી પ્રાપ્ત થયા હતા. પછી એ કાયસ્થે વીરબાઇને બોલાવવાને ગામના પ્રામાણિક ચાર સારા મનુષ્ય હતા તેમને કાશી મોકલ્યા. તે મનુષ્ય આવીને વીરબાઇને કહે, હવે શેરગઢમાં બીજો હાકિમ આવ્યો છે તે ભલો મનુષ્ય છે, તેથી હવે તમે શેરગઢ ચાલો. તમારા ધણીએ બોલાવ્યાં છે. ત્યારે વીરબાઈ બધા ધનની પેટી લઈ બેટા દામોદરદાસ ને બન્ને બેટી સહિત કાશીથી ચાલી. તે મજલ પાંચ આવીને નાનું સરખું ગામ હતું ત્યાં ઉતરી. તે ચોર પાછળ લાગ્યા. જ્યારે રાત્રિ પ્રહર પાછલી રહી ત્યારે મનુષ્યોને ઉંઘ આવી. ત્યારે ચોરે પેટી લીધી. સવાર થતું જાણી ગામની બહાર પેટી ધૂળમાં દાટીને ત્યાં ગામમાં ચોર

को द्रव्य वामें हैं। पाछें वा गाम के लोगन सों पूछें, वे कहें, हम कहा जाने? तब वीरबाई तलाव पर बैठि रुदन करन लागी। सो श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत उह तलाव पर पधारे, प्रातःकाल की संध्या कियें।। तब बाई रुदन करत ही ताकों देखे। जो–ये दैवी जीव ऐसी दुःखी क्यो हैं? तब वासों पूछे, ऐसो तोकों कहा दुःख परयो है? तब बीरबाई ने कही, महाराज! मोकों महादुःख परयो हैं। कुटुम्ब तो बहोत और द्रव्य हूँ बहोत हतो, सो पेटी रात्रि कों चोरी गई। अब मेरो यहां कोई नाहीं। किनसों अपनो दुःख कहुं? पाछे जा प्रकार कासी सों आई सो सब कह्यो। तब श्रीआचार्यजी कों दया आई। कहें, रोवे मति श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे। तब वीरबाई दंडोत करि कह्यो, महाराज! यह द्रव्य मिलें तो आधो आपु लेऊ, और हमारे सगरे कुटुम्ब आदि आपुकी कृपा तें जीवें। और मैं आपुकी दासी होय जन्म भर यह गुन आपुको न भूलोंगी। तब श्रीआचार्यजी कहें। तू दैवी जीव है सो हमारी है। हमकों द्रव्य तेरो नाहीं चहिये। पाछे कृष्णदास मेघनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, चोरन नें धूरि में पेटी गाड़ी हैं। सो जायकें याकों बताय आऊ। तब कृष्णदास वह वीरबाई के संग जाय बताये। सो वह धूरि डारि पेटी ले श्रीआचार्यजी पास आय आगे धरि

આવીને બેઠા. પછી સવાર થતાં જ વીરબાઈએ કહ્યું, પેટી ગઈ હવે શું કરૂં ? મારૂં તો સઘળું ઘરનું દ્રવ્ય એમાં જ હતું. પછી ગામના લોકોને પુછ્યું, તે કહે અમે શું જાણિએ ? ત્યારે વીરબાઈ તલાવ ઉપર બેસી રૂદન કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતા તે તલાવ ઉપર પધાર્યા. પ્રાતઃકાલની સંધ્યા કરી. ત્યારે તે બાઇ રૂદન કરતી હતી તેને જોઈ. કે આ દૈવીજીવ આવી દુઃખી કેમ છે ? ત્યારે તેને પૂછ્યું, આવું તને શું દુઃખ પડયું છે. ત્યારે વીરબાઈએ કહ્યું, મહારાજ ! મને મહાન દુઃખ પડયું છે. કુટુંબ તો ઘણુ અને દ્રવ્ય પણ ઘણું હતું તે પેટી રાત્રિએ ચોરાઈ ગઈ. હવે મારૂં અહીં કોઇ નથી. કોને મારૂ દુઃખ કહું ? પછી જે પ્રકારે કાશીથી આવી તે બધું કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દયા આવી, કહે રોઈશ નહી. શ્રીઠાકુરજી બધું સારૂં કરશે. ત્યારે વીરબાઈએ દંડવત્ કરીને કહ્યું, મહારાજ ! આ દ્રવ્ય મળે તો અડધું આપ લો. અને અમારૂં સઘળુ કુટુંબ આદિ આપની કૃપાથી જીવે. અને હું આપની દાસી થઈ જન્મભર આ ગુણુ આપનો નહીં ભૂલું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તુ દૈવીજીવ છે તે અમારી છે. અમારે તારૂં દ્રવ્ય જોઈતુ નથી. પછી કૃષ્ણદાસ મેઘનને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ

दिये। (और कहे) महाराज! आपु आधो मोकों दीजिये। आधो आपुको हैं। यह आपुको दियो मोकों मिल्यो है, मोकों सेवक कीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही तू मार्ग में हैं। सो हमारे पुष्टिमार्ग को धर्म बनेगो नाहीं। तू कछू समुझति नाहीं। तातें द्रव्य ले सेरगढ़ जा, हम सेरगढ़ पधारेंगे तब तोकों सेवक करेंगे। तू कहेगी सो करेंगे। तब बाई विनती करिकें कहें, महाराज! आपु तो साक्षात् ईश्वर हों, मैं द्रव्य देति हों सो नाहीं लेत तो सेरगढ़ काहे कों पधारोगे? आपुको दरसन परम दुर्लभ हैं। तातें श्रीठाकुरजी ने मोपर बड़ी कृपा करी, जो–आपु दरसन दिये, तातें मोकों नाम सुनावो, द्रव्य आधो लेऊ। तब श्रीआचार्यजी कहें तेरे गाम आयकें तोकों सेवक करनो हैं। उह ब्राह्मण मारयो गयो ताकी स्त्री पास श्रीठाकुरजी हैं, सो तेरे माथे पधरावने हैं। तातें हम सेरगढ़ निश्चय पधारेंगे। तब तेरो कार्य होयगो। तब वीरबाई ने कही, महाराज! सरीर को निश्चय नाहीं हैं। और आपुके साम्हें मोकों बहोत बोलनो अपराध हैं। तातें मेरे माथे चरन धरि आपु कहो, जो–सेरगढ़ पधारेंगे। सो आपुके चरन धरे तें मेरो मन सुद्ध रहेगो। तब श्रीआचार्यजी वीरबाई की प्रीति देखि बहोत प्रसन्न भये। अपने चरणा-

---

કહ્યું, ચોરોએ ધૂળમાં પેટી દાબી છે તે જઇને આને બતાવી આવ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે વીરબાઇની સાથે જઈ બતાવ્યું. તે ધૂળ નાખી, પેટી લઇ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી આગળ ધરી દીધી. અને કહે, મહારાજ! આપ અડધું મને આપો. અડધું આપનું છે. આ આપનું આપેલું મને મળ્યું છે. મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તૂ માર્ગમાં છે તેથી અમારા પુષ્ટિમાર્ગનો ધર્મ બનશે નહી. તૂ કંઈ સમજતી નથી. તેથી દ્રવ્ય લઈ શેરગઢ જા. અમે શેરગઢ પધારીશું ત્યારે તને સેવક કરીશું. તૂ કહીશ તે કરીશું. ત્યારે બાઇએ વિનંતી કરીને કહ્યું, મહારાજ! આપ તો સાક્ષાત્ ઈશ્વર છો. હું દ્રવ્ય આપું છું તે લેતા નથી તો શેરગઢ શા માટે પધારશો? આપનાં દર્શન પરમ દુર્લભ છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ મારા ઉપર બહુ કૃપા કરી તે આપે દર્શન દીધાં તેથી મને નામ સંભળાવો દ્રવ્ય અડધું લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે તારે ગામ આવી તને સેવક કરવી છે. તે બ્રાહ્મણ માર્યો ગયો તેની સ્ત્રી પાસે શ્રીઠાકુરજી છે તે તારા માથે પધરાવવા છે. તેથી અમે શેરગઢ નિશ્ચે પધારીશું. ત્યારે તારૂં કાર્ય થશે. ત્યારે વીરબાઇએ કહ્યું, મહારાજ! શરીરનો નિશ્ચય નહી અને આપની પાસે મને વધારે બોલવું અપરાધ છે. તેથી મારા માથે ચરણ ધરી આપ કહો જે શેરગઢ પધારીશું. આપના ચરણ ધરવાથી મારૂં મન શુદ્ધ રહેશે.

को द्रव्य वामें हैं। पाछे वा गाम के लोगन सों पूछें, वे कहें, हम कहा जाने? तब वीरबाई तलाव पर बैठि रुदन करन लागी। सो श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत उह तलाव पर पधारे, प्रातःकाल की संध्या किये।। तब बाई रुदन करत ही ताकों देखे। जो–ये दैवी जीव ऐसी दुःखी क्यो हैं? तब वासों पूछे, ऐसो तोकों कहा दुःख पर्यो है? तब बीरबाई ने कही, महाराज! मोकों महादुःख पर्यो हैं। कुटुम्ब तो बहोत और द्रव्य हूँ बहोत हतो, सो पेटी रात्रि कों चोरी गई। अब मेरो यहां कोई नाहीं। किनसों अपनो दुःख कहुं? पाछे जा प्रकार कासी सों आई सो सब कह्यो। तब श्रीआचार्यजी कों दया आई। कहें, रोवे मति श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे। तब वीरबाई दंडोत करि कह्यो, महाराज! यह द्रव्य मिलें तो आधो आपु लेऊ, और हमारे सगरे कुटुम्ब आदि आपुकी कृपा तें जीवें। और मैं आपुकी दासी होय जन्म भर यह गुन आपुको न भूलोंगी। तब श्रीआचार्यजी कहें। तू दैवी जीव है सो हमारी है। हमकों द्रव्य तेरो नाहीं चहिये। पाछे कृष्णदास मेघनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, चोरन नें धूरि में पेटी गाड़ी हैं। सो जायकें याकों बताय आऊ। तब कृष्णदास वह वीरबाई के संग जाय बताये। सो वह धूरि डारि पेटी ले श्रीआचार्यजी पास आय आगे धरि

આવીને બેઠા. પછી સવાર થતાં જ વીરબાઈએ કહ્યું, પેટી ગઈ હવે શું કરૂં ? મારૂં તો સઘળું ઘરનું દ્રવ્ય એમાં જ હતું. પછી ગામના લોકોને પુછ્યું, તે કહે અમે શું જાણિએ ? ત્યારે વીરબાઈ તલાવ ઉપર બેસી રૂદન કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતા તે તલાવ ઉપર પધાર્યા. પ્રાતઃકાલની સધ્યા કરી. ત્યારે તે બાઇ રૂદન કરતી હતી તેને જોઈ. કે આ દૈવીજીવ આવી દુઃખી કેમ છે ? ત્યારે તેને પૂછ્યુ, આવુ તને શું દુઃખ પડયું છે. ત્યારે વીરબાઈએ કહ્યું, મહારાજ ! મને મહાન દુઃખ પડયું છે. કુટુંબ તો ઘણુ અને દ્રવ્ય પણ ઘણું હતું તે પેટી રાત્રિએ ચોરાઈ ગઈ. હવે મારૂ અહીં કોઈ નથી. કોને મારૂ દુઃખ કહુ ? પછી જે પ્રકારે કાશીથી આવી તે બધુ કહ્યુ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દયા આવી, કહે રોઈશ નહી. શ્રીઠાકુરજી બધું સારૂં કરશે. ત્યારે વીરબાઈએ દંડવત્ કરીને કહ્યું, મહારાજ ? આ દ્રવ્ય મળે તો અડધું આપ લો. અને અમારૂં સઘળુ કુટુંબ આદિ આપની કૃપાથી જીવે. અને હું આપની દાસી થઈ જન્મભર આ ગુણ આપનો નહીં ભૂલું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તુ દૈવીજીવ છે તે અમારી છે. અમારે તારૂં દ્રવ્ય જોઈતુ નથી. પછી કૃષ્ણદાસ મેઘનને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ

दिये। (और कहे) महाराज! आपु आधो मोकों दीजिये। आधो आपुको हैं। यह आपुको दियो मोकों मिल्यो है, मोकों सेवक कीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही तू मार्ग में हैं। सो हमारे पुष्टिमार्ग को धर्म बनेगो नाहीं। तू कछू समुझति नाहीं। तातें द्रव्य ले सेरगढ़ जा, हम सेरगढ़ पधारेंगे तब तोकों सेवक करेंगे। तू कहेगी सो करेंगे। तब बाई विनती करिकें कहें, महाराज! आपु तो साक्षात् ईश्वर हों, मैं द्रव्य देति हों सो नाहीं लेत तो सेरगढ़ काहे कों पधारोगे? आपुको दरसन परम दुर्लभ हैं। तातें श्रीठाकुरजी ने मोपर बड़ी कृपा करी, जो–आपु दरसन दिये, तातें मोकों नाम सुनावो, द्रव्य आधो लेऊ। तब श्रीआचार्यजी कहें तेरे गाम आयकें तोकों सेवक करनो हैं। उह ब्राह्मण मारयो गयो ताकी स्त्री पास श्रीठाकुरजी हैं, सो तेरे माथे पधरावने हैं। तातें हम सेरगढ़ निश्चय पधारेंगे। तब तेरो कार्य होयगो। तब वीरबाई ने कही, महाराज! सरीर को निश्चय नाहीं हैं। और आपुके साम्हें मोकों बहोत बोलनो अपराध हैं। तातें मेरे माथे चरन धरि आपु कहो, जो–सेरगढ़ पधारेंगे। सो आपुके चरन धरे तें मेरो मन सुद्ध रहेगो। तब श्रीआचार्यजी वीरबाई की प्रीति देखि बहोत प्रसन्न भये। अपने चरणा-

---

કહ્યું, ચોરોએ ધૂળમાં પેટી દાબી છે તે જઇને આને બતાવી આવ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે વીરબાઇની સાથે જઈ બતાવ્યું. તે ધૂળ નાખી, પેટી લઇ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી આગળ ધરી દીધી. અને કહે, મહારાજ ! આપ અડધું મને આપો. અડધું આપનું છે. આ આપનું આપેલું મને મળ્યું છે. મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તૂ માર્ગમાં છે તેથી અમારા પુષ્ટિમાર્ગનો ધર્મ બનશે નહી. તૂ કંઈ સમજતી નથી. તેથી દ્રવ્ય લઈ શેરગઢ જા. અમે શેરગઢ પધારીશું ત્યારે તને સેવક કરીશુ. તૂ કહીશ તે કરીશું. ત્યારે બાઇએ વિનંતી કરીને કહ્યું, મહારાજ ! આપ તો સાક્ષાત્ ઈશ્વર છો. હું દ્રવ્ય આપું છું તે લેતા નથી તો શેરગઢ શા માટે પધારશો ? આપનાં દર્શન પરમ દુર્લભ છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ મારા ઉપર બહુ કૃપા કરી તે આપે દર્શન દીધાં તેથી મને નામ સંભળાવો દ્રવ્ય અડધું લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે તારે ગામ આવી તને સેવક કરવી છે. તે બ્રાહ્મણ માર્યો ગયો તેની સ્ત્રી પાસે શ્રીઠાકુરજી છે તે તારા માથે પધરાવવા છે. તેથી અમે શેરગઢ નિશ્ચે પધારીશું. ત્યારે તારૂં કાર્ય થશે. ત્યારે વીરબાઇએ કહ્યું, મહારાજ ! શરીરનો નિશ્ચય નહી અને આપની પાસે મને વધારે બોલવું અપરાધ છે. તેથી મારા માથે ચરણ ધરી આપ કહો જે શેરગઢ પધારીશું. આપના ચરણ ધરવાથી મારૂં મન શુદ્ધ રહેશે.

रविन्द वीरबाई के माथे धरि के वचन दिये। जो हम सेरगढ़ पधारिकें तेरो अङ्गीकार करेंगे। तब वीरबाई दंडवत करिकें बेटा, बेटी कों लेकें सेरगढ़ कों चली। कछुक दिन में सेरगढ़ आई। अपने पतिसों सगरी श्रीआचार्यजी की बात कही। जो या प्रकार कृपा करी हैं। और श्रीआचार्यजी नें एक ब्राह्मणी के यहां ठाकुर बताये, गौर स्वरूप कहें, सो तेरे घर पधरावेंगे, सो वह ब्राह्मणी कौन है? तब वीरबाई के पति नें कही, वह ब्राह्मणी अकेली रही, वाको पति तो मारयो गयो। सो नित्य कहत है, मेरे ठाकुर पधरावो। तब वीरबाई ने पति सों कही, ढील मति करो, उह ठाकुर अपने घर लाय राखो। श्रीआचार्यजी दोय चारि दिन में निश्चय पधारेंगे। ता समय वह ब्राह्मणी ठाकुर देय न देय, सो श्रीठाकुरजी बचन करिकें लीजो। फेरि देयंगे नाहीं। तब बाई को पति उह ब्राह्मणी पास जाय कह्यो, जो–अब हमारी स्त्री, बेटा, बेटी, सब कासी सों आये हैं। तातें श्रीठाकुरजी देने होय तो देऊ, नाहीं तो हम औरं ठाकुर पधरावेंगे। तब ब्राह्मणी नें कही, मैं तो तुमसों पहले ही कही मोसों पूजा नाहीं होत। तुम अबही ले जाव। तब इन कही, कदाचित् फेरि तुम कबहूँ श्रीठाकुरजी कों मांगों, तो मैं न पधराऊंगो। तब वह ब्राह्मणी ने

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી વીરબાઇની પ્રીતિ જોઇને બહુ પ્રસન્ન થયા. પોતાના ચરણારવિંદ વીરબાઈના માથે ધરીને વચન આપ્યું, કે અમે શેરગઢ પધારીને તારો અંગીકાર કરીશુ. ત્યારે વીરબાઈ દડવત્ કરીને બેટા બેટીને લઈ શેરગઢ ચાલી, પછી કેટલાક દિવસમાં શેરગઢ આવી. પોતાના પતિને બધી વાત કહી, કે આ પ્રકારે કૃપા કરી છે. અને શ્રીઆચાર્યજીએ એક બ્રાહ્મણીને ત્યાં ઠાકુર બતાવ્યા, ગૌર સ્વરૂપ કહ્યું, ને તારા ઘર પધરાવીશું તે બ્રાહ્મણી કોણ છે? ત્યારે વીરબાઇના પતિએ કહ્યું, તે બ્રાહ્મણી એકલી રહી તેનો પતિ તો માર્યો ગયો. તે નિત્ય કહે છે મારા ઠાકુર પધરાવો. ત્યારે વીરબાઇએ પતિને કહ્યું, ઢીલ ન કરો. તે ઠાકુર આપણા ઘરે લાવી રાખો. શ્રીઆ-ચાર્યજી બે ચાર દિવસમાં નિશ્ચે પધારશે. તે સમયે તે બ્રાહ્મણી ઠાકુર દે કે ન દે. શ્રીઠાકુરજી વચન કરીને લેજો. ફરી દઇશું નહી. ત્યારે બાઈના પતિએ તે બ્રાહ્મણી પાસે જઇને કહ્યુ, કે હવે અમારી સ્ત્રી બેટા–બેટી બધાં કાશીથી આવ્યાં છે. તેથી તેથી શ્રીઠાકુરજી દેવા હોય તો દો નહી તો અમે બીજા ઠાકુરજી પધરાવીશુ. ત્યારે બ્રાહ્મણીએ કહ્યુ, મેં તો તમને પહેલાં જ કહ્યું હતું, કે મારાથી પૂજા થતી નથી. તે હમણાં જ લઈ જાવ. ત્યારે આને કહ્યુ કદાચિત્ ફરી તમે કયારેય શ્રીઠા-કુરજીને માંગો તો પધરાવી નહિ આપું? ત્યારે તે બ્રાહ્મણીએ કહ્યુ, હવે શુ પધરાવું,

कही, मैं अब कहा पधराऊँगी ? द्रव्य नाहीं, मनुष्य मेरे घर नाहीं । तब इन कही, एक ठाकुर मैं लेहू, एक तुम लेऊ। मेरे घर पधराय आवो । तब वह ब्राह्मणी लालजी लियो, वड़े गौर स्वरूप कों उह कायस्थ ले आयो। दोनों स्वरूप कों अपुने घर पधरायो । पाछे चारि दिनमें श्रीआचार्यजी सेरगढ़ पधारे । सो नदी के तीर एक बाग में उतरे । तब कृष्णदास सों कही, उह वीरबाई कों खबरि हमारी जताईयो, लाईयो मति । वाको मन प्रसन्न होय तो आवे । तब कृष्णदास गाम में गये, और वाके वेटा दामोदरदास कों देखिके कहे, तू घर जाय, अपनी माता सों कहियो, जो–नदी के तीर बगीची है, तहां श्रीआचार्यजी पधारे हैं। यह कहि कृष्णदास श्रीआचार्यजी पास आय कहें, जो–वीरबाई को वेटा दामोदरदास मिल्यो तासों कहि आयो । जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं । तब दामोदरदास नें अपनी माता सों जायके कह्यो, श्रीआचार्यजी पधारे हैं सो मोसों उनको एक सेवक कहि गयो है, सो मैं तोसों कह्यो । यह सुनत ही वीरबाई दौरि आई । बगीची में आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती करी, जो–महाराज ! घरमें पधारिये । सगरे कुटुम्ब कों सरनि लीजिये । श्रीठाकुरजी आप कहे हते सो घरमें लाय राखे हैं, सो मेरे माथे पधराइये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तू दैवी जीव है, तोसों भगवद् सेवा

દ્રવ્ય નથી, મનુષ્ય મારા ધરે નથી. ત્યારે આને કહ્યુ, કે એક ઠાકુર હું લઉં એક તમે લો. મારા ધરે પધરાવી આવો. ત્યારે તે બ્રાહ્મણીએ લાલજી લીધા, મોટું ગૌર સ્વરૂપ તે કાયસ્થ લઈ આવ્યો. બન્ને સ્વરૂપને પોતાને ધરે પધરાવ્યાં. પછી ચાર દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી શેરગઢ પધાર્યા. તે નદીના તીરે એક બાગમાં ઉતર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસને કહે, તે વીરબાઇને અમારી ખબર કહાવજે. લાવીશ નહીં. એનું મન પ્રસન્ન હોય તો આવે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ગામમાં ગયા. અને એના પુત્ર દામોદરદાસને જોઇને કહે, તૂ ધર જઈ તારી માતાને કહેજે કે નદીના તીર બગીચી છે ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે. એમ કહી કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી કહે, કે વીરબાઇનો બેટા દામો-દરદાસ મળ્યો તેને કહી આવ્યો, કે શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે. ત્યારે દામોદરદાસે પોતાની માતાને જઇને કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે. મને એમનો એક સેવક કહી ગયો છે. તે મેં તને કહ્યું. એ સાંભળતાં જ વીરબાઈ દોડી આવી. બગીચીમાં આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! ધરમાં પધારો. બધા કુટુંબને શરણે લો. શ્રીઠાકુરજી આપે કહ્યા હતા તે ધરમાં લાવી રાખ્યા છે તે મારા માથે પધરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ દૈવી જીવ છે. તારાથી ભગવદ્સેવા

बनेगी। तातें तोकों नाम और ब्रह्मसंबंध दोऊ करावने हैं। और तेरे कुटुम्ब साधारण जीव हैं, तिनकों नाम सुनावेंगे। तेरे संग तें सबको उद्धार होयगो। तातें तू नदी में नहाय आव। तब वीरबाई नदी में नहाय आई। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वाकों नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराय कहें, अब तू घर जा, तेरे पति कों पठाइयो। तब हम तेरे घर पधारेंगे। तब वीरबाई घर जाय पति सों कही, नदी तीर बगीची में श्रीआचार्यजी पधारे हैं, सो बिनती करिके पधरावो। सेवक सगरे होऊ, कृतार्थ होऊ। तब वह पति कह्यो, तू हू संग चलि। पाछे स्त्री पुरुष दोऊ आय श्रीआचार्यजी सों बिनती करि घर पधराये। सबकों श्रीआचार्यजी नाम सुनाये। पाछें श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठाये। वीरबाई के माथे पधराये। बड़े गौर स्वरूप हते। तिनको नाम 'श्रीकपूररायजी' धरे। लालाजी हते तिनको नाम 'श्रीनवनीतप्रियजी' धरे। और आगें किये, हिंडोरा, पालना सों श्रीनवनीतप्रियजी कों झुलाये। पाछें वीरबाई नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करिके पांच दिन घरमें राखे। पुष्टिमार्ग की सेवा की रीति सब सीखी। पाछे आधो द्रव्य श्रीआचार्यजी को धरि राख्यो हतो सो भेट कियो। पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे।

બનશે. તેથી તને નામ અને બ્રહ્મસંબંધ બન્ને કરાવવાં છે. અને તારૂ કુટુંબ સાધારણ જીવ છે તેમને નામ સંભળાવીશું. તારા સંગથી બધાનો ઉદ્ધાર થશે. તેથી તૂ નદીમાં ન્હાઈ આવ. ત્યારે વીરબાઈ નદીમાં ન્હાઈ આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ એને નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવી કહે, હવે તૂ ઘર જા તારા પતિને મોકલજે. ત્યારે અમે તારા ઘરે પધારીશુ. ત્યારે વીરબાઇએ ઘર આવી પતિને કહ્યુ, નદી તીર બગીચીમાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા છે. તે વિનંતી કરીને પધરાવો. સેવક બધા થાવ. ત્યારે તે પતિ કહે તૂ પણ ચાલ. પછી સ્ત્રી પુરૂષ બન્ને આવી શ્રીઆચાર્યજીને વિનતી કરી ઘર પધરાવ્યા બધાને શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવ્યું. પછી શ્રીઠાકુરજીને પચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડ્યા. વીરબાઇને માથે પધરાવ્યા. મોટુ ગૌર સ્વરૂપ હતુ. તેમનું નામ શ્રીકપૂરરાયજી ધર્યું. લાલજી હતા તેમનું નામ શ્રીનવનીતપ્રિયજી ધર્યું. અને આગળના કરેલા હિંડોરા પ્રાલનાથી શ્રીનવનીતપ્રિયજીને ઝુલાવ્યા. પછી વીરબાઇએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરીને પાંચ દિવસ ઘરમાં રાખ્યા. પુષ્ટિમાર્ગની સેવાની રીતિ બધી શીખી. પછી અડધું દ્રવ્ય શ્રીઆચાર્યજીનુ ધરી રાખ્યુ હતુ તે ભેટ કર્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા.

वार्ता-प्रसंग १—सो वीरबाई श्रीठाकुरजी की सेवा बहोत प्रीति सों करन लागी। कछुक दिनन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। पाछे वीरबाई के गर्भ रह्यो। तब घरी दोय रात्रि पिछली रही तब बेटा भयो, सो लोग सगरे बेटा की बधाई, ज्ञाति व्यवहार में लागे। श्रीठाकुरजी कों चारि घरी दिन चढ़ि गयो। तब वीरबाई बहोत ही दुःख करन लागी, जो-मेरे श्रीठाकुरजी कों अबेर भई। सबसों कहें, जो-श्रीठाकुरजी कों कोऊ जगावो। सो कोऊ जगावे नाहीं। ऐसे करत प्रहर दिन चढ़्यो। तब तो वीरबाई मनमें महा ताप करिकें रोवन लागी। जो-यह पुत्र पापी कहां ते याही समय भयो? जो मेरे ठाकुर काल्हिके पौढ़े हैं कोई जगावत नाहीं, अब मैं कहा करूँ? या प्रकार अत्यंत विरह भयो। तब श्रीठाकुरजी सज्या में ते बोले, जो-तू रुदन काहे कों करत है? कोऊ नाहीं जगावत, तो तू ही मोकों जगाव। तब वीरबाई ने कही, महाराज! मैं यह अघोर नर्क में परी हों। कैसें तुमकों छूवों? तब श्रीठाकुरजी कहें, गोबर लगाय स्नान करि, काछ बांधि कें मोकों तू ही जगाव। मैं और तें सेवा न कराऊंगो। मेरी आज्ञा है, तोकों यामें अपराध नाहीं। तब वीरबाई उठिके गोबर लगाय, आछे न्हाय काछ मारिकें श्रीठाकुरजी कों जगाये। पाछे मंगला करिकें शृंगार करि, रसोई करि, भोग धरि प्रसाद ले पड़ी रही।

વાર્તા-પ્રસંગ ૧—તે વીરબાઇ શ્રીઠાકુરજીની સેવા બહુજ પ્રીતિથી કરવા લાગી. કેટલાક દિવસોમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. પછી વીરબાઇને ગર્ભ રહ્યો. ત્યારે ઘડી બે રાત્રિ પાછલી રહી ત્યારે પુત્ર થયો. તે લોક બધા બેટાની વધાઇ જ્ઞાતિ વ્યવહારમાં લાગ્યા. શ્રીઠાકુરજીને ચાર ઘડી દિન ચઢી ગયો ત્યારે વીરબાઇ ઘણીજ દુઃખ કરવા લાગી કે મારા શ્રીઠાકુરજીને મોડું થયું બધાને કહે, કે શ્રીઠાકુરજીને કોઇ જગાડો પણ કોઇ જગાડે નહીં. એમ કરતાં પ્રહર દિન ચઢયો ત્યારે તો વીરબાઇ મનમાં મહા તાપ કરીને રોવા લાગી, કે આ પુત્ર પાપી ક્યાંથી આ સમય થયો? કે મારા ઠાકુર કાલના પોઢયા છે કોઇ જગાડતું નથી. હવે હું શું કરું? આ પ્રકારે અત્યંત વિરહ થયો ત્યારે શ્રીઠાકુરજી શૈયામાંથી બોલ્યા કે તૂ રૂદન શા માટે કરે છે? કોઇ ન જગાવે તો તૂજ મને જગાડ. ત્યારે વીરબાઇએ કહ્યું, મહારાજ! હું આ અઘોર નર્કમાં પડી છું કેવી રીતે તમને અડું? ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, છાણ લાવી સ્નાન કરી કચ્છ બાંધીને મને તૂજ જગાડ. હું બીજાથી સેવા નહીં કરાવું. મારી આજ્ઞા છે તને એમાં અપરાધ નહીં. ત્યારે વીરબાઇએ ઉઠીને છાણ લગાડી સારી રીતે ન્હાઇ કચ્છ મારીને

या प्रकार सों तेरह दिन पाछें अपरस काढ़ी । पाछें चालीस दिन भये तब सगरे वस्त्र पात्र काढ़ि अपरस नई करी । श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों न्हवाय सुद्ध होय पुष्टिमारग की रीति सों सेवा करन लागी । तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय वीरबाई सों कहें । तू मेरी हू आज्ञा मानी जो सूतक में सेवा करी । पाछे मारग की रीति सों अपरस हू काढ़ी । तातें मैं तो पर बहोत प्रसन्न हों । या प्रकार वीरबाई के उपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय पिंडरू में हू सेवा कराई । परन्तु और सों न कराई । सो वीरबाई ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय हती । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये । वार्ता ॥६१॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-बहोत सुद्ध होय, उत्तम होय, तोऊ प्रीति बिना श्रीठाकुरजी सेवा न करावे । और करे तोऊ प्रीति बिना सेवा मानें नाहीं । और कैसेहू अपवित्र, हीन, नीच, होय ताकों प्रीति होय तो ताहिसों भगवद् सेवा करावे, याहि प्रकार सूतक, पिंडरू तथा महिना के महिना अटकाव मेंहू वीरबाई सेवा किये, परन्तु घरमें कुटुम्ब परिवार बहोत हतो तासों सेवा न कराई । और वाकी वार्ता अनिर्वचनीय हैं । जैसें पुलिन्दी कों कुंकुम चरणारविंद को, ताहि द्वारा सब रस को अनुभव करायें । सोई पति भावसों, इहां हू सगरे रस

શ્રીઠાકુરજીને જગાડ્યા. પછી મંગલા કરીને શૃંગાર કરી રસોઇ કરી ભોગ ધરી પ્રસાદ લઇ પડી રહી. આ પ્રકારે તેર દિવસ પછી અપરસ કાઢી પછી ચાલીસ દિવસ થયા ત્યારે, બધા વસ્ત્ર પાત્ર કાઢી અપરસ નવી કરી. શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી શુદ્ધ થઇ પુષ્ટિમાર્ગની રીતિથી સેવા કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થઇ વીરબાઇને કહે, તેં મારી પણ આજ્ઞા માની જે સૂતક (પિંડરૂ) માં સેવા કરી. પછી માર્ગની અપરસ પણ કાઢી. તેથી હું તારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન છું. આ પ્રકારે વીરબાઇના ઉપર પ્રસન્ન થઇ પિંડરૂમાં પણ સેવા કરાવી. પરંતુ બીજાથી ન કરાવી. તે વીરબાઇ એવી શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. એની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? ॥૬૧॥

ભાવપ્રકાશ—આમાં એ જણાવ્યું કે, બહુ શુદ્ધ હોય ઉત્તમ હોય, તો પણ પ્રીતિ વિના શ્રીઠાકુરજી સેવા ન કરાવે અને કરે તો પણ પ્રીતિ વિના સેવા માને નહીં. અને કેવોય અપવિત્ર હીન નીચ હોય તેને પ્રીતિ હોય તો તેનાથી ભગવત્સેવા કરાવે. એજ પ્રકારે સૂતક, પિંડરૂ તથા મહિને મહિને અટકાવમાં પણ વીરબાઇએ સેવા કરી. પરંતુ ઘરમાં કુટુંબ પરિવાર ઘણો હતો તેનાથી સેવા ન કરાવી. વળી એની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. જેમ પુલિંદીને ચરણારવિંદનું કુંકુમ તેની દ્વારા બધા

को अनुभव कराये। सो वार्ता कही न जाय। तातें इतनी हू लोक वेद विरुद्ध वार्ता कही है। सो प्रेम की रीति अटपटी है। भगवदीय यह भेद जानें, तिनहू के सुनन जोग हैं। और कों ऐसी वार्ता पर विश्वास न उपजें। सो वीरबाई सदा श्रीठाकुरजी की लीला रसमें मगन रहती। प्रथम गिरिराजजी परम भगवदीय हरिदासराई तिनको संग हैं। तातें इनको भाव अनिर्वचनीय हैं। वैष्णव ॥६१॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दोऊ स्त्री पुरुष, क्षत्री सिंहनंद के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में दोऊ विसाखाजी की सखी हैं। पुरुष को नाम 'रंगा' स्त्री को नाम 'हंसा' सखी। सो ये दोऊ श्रीयमुनाजी स्नान कों गई, तहाँ इनकों श्रीठाकुरजी मिले। सो नाना प्रकार की विहार लीला में मग्न होय गई। पाछें जल विहार करन लागी। तब श्रीस्वामिनीजी और विसाखाजी श्रीयमुनाजी न्हायवे कों पधारी। तब श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी तें निकसि वृक्षन की आड़ में ठाड़े भये। और ये दोऊ सखी चक्रत होय जल में ठाड़ी रहीं। तब श्रीस्वामिनीजी पुकारि के कहें, रंगा, हंसा, हमारे पास आवो। सो इनको मन

રસનો અનુભવ કરાવ્યો તે વાર્તા કહી ન જાય. તેજ પતિભાવથી અહીં પણ બધા રસનો અનુભવ કરાવ્યો તે વાર્તા કહી ન જાય. તેથી આટલી પણ લોક–વેદ વિરુદ્ધ વાર્તા કહી છે તે પ્રેમની રીતિ અટપટી છે. ભગવદીય એ ભેદ જાણે તેમનેજ સાંભળવા યોગ્ય છે. બીજાને આવી વાર્તા ઉપર વિશ્વાસ ન આવે. તે વીરબાઇ સદા શ્રીઠાકુરજીની લીલા-રસમાં મગન રહેતી. પ્રથમ ગિરિરાજજી પરમ ભગવદીય હરિદાસરાય તેમનો સંગ છે. તેથી તેનો ભાવ અનિર્વચનીય છે. વૈ. ॥૬૧॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, બેઉ સ્ત્રી-પુરૂષ ક્ષત્રી સિંહનંદનાં વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં બેઉ વિશાખાજીની સખી છે. પુરુષનું નામ 'રંગા' સ્ત્રીનું નામ 'હંસા' સખી. એ બેઉ શ્રીયમુનાજી સ્નાન માટે ગઈ ત્યાં એમને શ્રીઠાકુરજી મળ્યા. તે નાના પ્રકારની વિહાર-લીલામાં મગ્ન થઇ ગઇ. પછી જલ વિહાર કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી અને વિશાખાજી શ્રીયમુનાજી ન્હાવાને પધારી ત્યારે શ્રીઠાકુરજી શ્રીયમુનાજીથી નિકળી વૃક્ષની આડમાં ઉભા રહ્યા અને આ બન્ને સખી ચકિત થઇ જલમાં ઉભી રહી. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી પોકારીને કહે 'રંગા' 'હંસા'

श्रीठाकुरजी में लग्यो, जो–कब फिरि आवें ? तातें ये सुने नाहीं । तब श्रीस्वामिनीजी ने कही, विसाखा ! ये दोऊ तेरी सखी बहोत ढीट हैं । मैं बुलाई सो आई नाहीं । तब विसाखाजी नें पुकारयो, रंगा हंसा यहाँ आवो । तऊ न आई । तब विसाखाजी कहें, ऐसो मान गर्व भयो, जो–इतनो बुलायो जुवाब नाहीं दियो । भूमि में गिरो, तब दोऊ गिरीं । सो सिंहनंद में दोय क्षत्री के घर हते, तहां दोऊ प्रगटें । समय पाय वरष दसके भये । तब दोऊन को विवाह भयो । तब दोऊन के मन में वैराग्य आयो । सो दोऊ अपने मन में आपुस में बतराये जो विषय आदि सुख तो पशु, पंछी में हू हैं,। तातें श्रीठाकुरजी ने मनुष्य देह दियो तो व्रतादिक करि देह इन्द्रिकों दमन करिये । तब दोऊन नें व्रत साध्यो, भूमि पर सोवें । नित्य फलाहार लेय, कबहू दूध कबहूँ जलादि, एकादशी निर्जल करें । कार्तिक में एक दिन फलाहार, एक दिन निर्जल । या प्रकार व्रत करि सरीर दोऊन नें सुखाय डारयो। तब दोऊन के मा बाप खीजन लागे । जो तुम अब ही तें ऐसो कष्ट करत हो, सो काहे के लिये ? अब ही तो तिहारे खायवे पहरिवे के दिन हैं । आछे भोग भोगो, श्रीठाकुरजी चारि पैसा दियो हैं सो संसार के सुख करो । तब दोऊ जनें कहें, संसार के सुख कुत्ता, गदहा होय सो करें । हम तो

અમારી પાસે આવો. પણ એમનું મન શ્રીઠાકુરજીમાં લાગ્યું કે કયારે ફરી પધારે તેથી એ સાંભળે નહી. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ કહ્યુ, વિશાખા ! આ બન્ને તારી સખી બહુ નફટ છે. મેં બોલાવી તે આવી નહીં. ત્યારે વિશાખાજીએ બોલાવ્યાં. રંગા હંસા અહીં આવો. તોય ન આવી. ત્યારે વિશાખાજી કહે, એવું માન-ગર્વ થયો કે આટલી બોલાવી (પણ) જવાબ ન આપ્યો ? ભૂમિમાં પડો. ત્યારે બન્ને પડી. તે સિંહનંદમાં બે ક્ષત્રીનાં ઘર હતાં ત્યાં બન્ને પ્રકટ્યાં. સમય થયે વરસ દશનાં થયાં ત્યારે બન્નેનો વિવાહ થયો. ત્યારે બન્નેના મનમાં વૈરાગ્ય આવ્યો. બન્ને પોતાના મનમાં આપસમાં કહે કે, વિષય આદિ સુખ તો પશુ પંખીમાં પણ છે માટે શ્રીઠાકુરજીએ મનુષ્ય દેહ દીધો તો વ્રતાદિ કરી દેહ ઇન્દ્રિયનું દમન કરીએ. ત્યારે બન્નેએ વ્રત સાધ્યાં. ભૂમિ ઉપર સુવે. નિત્ય ફલાહાર લે. કયારેક દૂધ, કયારેક જલ આદિ એકાદશી નિર્જલ કરે. કાર્તિકમાં એકદિન ફલાહાર. એક દિન નિર્જલ. આ પ્રકારે વ્રત કરી શરીર બન્નેએ સુકાવી નાખ્યાં ત્યારે બન્નેનાં મા-બાપ ખિજવાઇ ગયાં કે તમે હમણાંથી આવું કષ્ટ કરો છો તે શાને માટે ! હજુ તો તમારા ખાવા પહેરવાના દિવસ છે. સુંદર ભોગ ભોગવો. શ્રીઠાકુરજીએ ચાર પૈસા આપ્યા છે તેથી સંસારનું સુખ કરો.

व्रत करेंगे। तब वे चुप होय रहे। पाछे एक दिन दोऊ माघ महिना न्हात हते, सरस्वती में। ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु थानेस्वर पधारे। सो सरस्वती पर संध्यावन्दन कों पधारे। तब दोऊ कों जल में ठाड़े देखिकें थानेस्वर के वैष्णव सों पूछें, ये दोऊ स्त्री पुरुष कौन हैं? ऐसें सीत में जल में ठाड़े हैं, महा दुर्बल। तब वैष्णव नें कही, महाराज! ये दोऊ क्षत्री के बेटा, बेटी हैं, स्त्री-पुरुष। ये लौकिक संसार को सुख नाहीं जान्यो। व्रत सदा करत हैं, अन्न की वस्तु लेत नाहीं। महा कष्ट करि देह सुखाय डारे हैं। मा बाप काहू को कह्यो मानत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें। इनकों हमारे पास लाबो, कोई उपाय करि। तब वैष्णव पार जाय दोऊन सों कहें, तुम पार चलो तो श्रीआचार्यजी बुलावे हैं। तुम कों व्रत को जो फल चहिये सो मिलेगो। तब दोऊ सुनिकें प्रसन्न भये, वैष्णव के संग पार आये। तब श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि ठाड़े रहे। तब श्रीआचार्यजी नें कही, तुम ऐसो कष्ट सहि कें व्रत करत हो, सो मनोरथ कहा है? जो तुम कों फल चहिये सो लेहु। तब दोऊ नें कही, महाराज! फल तो बहोत बड़ो चाहत हैं, और साधन तुच्छ करत हैं। सो फल कैसें मिलेगो? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कहो तो सही। तब दोऊ नें कही, हम कों यह मनोरथ हैं, जो-या जन्म में

ત્યારે બન્ને જણ કહે, સંસારનુ સુખ કુત્તા ગધેડા હોય તે કરે અમે તો વ્રત કરીશુ. ત્યારે તે ચુપ થઈ રહ્યાં. પછી એક દિવસ માહ મહિના ન્હાતાં હતાં સરસ્વતીમાં, તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ થાનેશ્વર પધાર્યા. તે સરસ્વતી ઉપર સંધ્યાવંદન માટે પધાર્યા. ત્યારે બન્નેને જલમાં ઉભાં જોઇને થાનેશ્વરના વૈષ્ણવોને પૂછ્યું કે આ બેઉ સ્ત્રી પુરૂષ કોણ છે? આવી ઠંડીમાં જલમાં ઉભા છે મહા દુર્બલ, ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યુ, મહારાજ! એ બન્ને ક્ષત્રીના બેટા-બેટી છે સ્ત્રી, પુરૂષ. એમણે લૌકિક સંસારનું સુખ જાણ્યું નથી. વ્રત સદા કરે છે. અન્નની વસ્તુ લેતાં નથી. મહાકષ્ટ કરી દેહ સુખાવી નાખે છે. મા-બાપ કોઈનું કહ્યું માનતાં નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એમને અમારી પાસે લાવો કોઈ ઉપાય કરીને. ત્યારે વૈષ્ણવો પાર જઈ બન્નેને કહે તમે પાર ચાલો તો શ્રીઆચાર્યજી બોલાવે છે. તમને વ્રતનું જે ફલ જોઇએ તે મળશે. ત્યારે બન્ને સાંભળીને પ્રસન્ન થઈ વૈષ્ણવના સંગે પાર આવ્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી ઉભાં રહ્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યુ, તમે આવું કષ્ટ કરીને વ્રત કરો છો તે મનોરથ શો છે? તમને ફલ જોઇએ તે લો. ત્યારે બેઉ કહે, મહારાજ! ફલ તો બહુ મોટું ઈચ્છીએ છીએ. અને સાધન તુચ્છ કરીએ છીએ. તે ફલ કેમ મલશે?

याही सरीर सों श्रीठाकुरजी हम सों बोले, कृपा करें। सो श्रीठाकुरजी तीर्थ, व्रत किये, साधन सों कैसें मिलेंगे? तातें हम कहा करे? हारिकें व्रतादिक करि सरीर छोड़ेगें। और उपाय कछु जानत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें, इतनो कष्ट व्रत करि सरीर कों देत हों। सो श्रीठाकुरजी के सेवा सुमिरन में सरीर, मन लगावो, तो याहि जन्म में प्रभु कृपा करें। तब स्त्री-पुरुष दोऊन नें कह्यो, महाराज! श्रीठाकुरजी की सेवा कैसें बनें? हमनें तो कछु नाहीं पास राख्यो। यह दोय कपरा मेले पहरे हैं। और मा बाप के पास द्रव्य है सो संसार सुख के लिये जो मांगे सो देई। परन्तु परमार्थ के अर्थ श्रीठाकुरजी के नाम पर एक कोड़ी न देइंगे। हम सों द्वेष करत हैं। सो भगवद् सेवा बिना द्रव्य कहां ते होय? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-वे द्वेष करें तामें तो तुम कों आछो है। बहिर्मुख सों बोलनो मिट्यो। और सेवा लायक तुम दोय चारि आठ घरी कछु उद्यम करोगे तो वाही में तुमकों निर्वाह जोग मिलेगो, ताहि में निर्वाह करियो। सेवा अर्थ सरीर कों कष्ट होय तब धीरज धरि दुःख सहो तो श्रीठाकुरजी सों सह्यो न जाय। तुमकों अनुभव जतावेंगे। तातें हम थानेस्वर के वैष्णव सों कहि देइंगे, तुमकों उधारो देइगे। व्योपार हू सिद्धि करि देइगें। परन्तु तिहारो मन भगवद् सेवा करन में

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે કહો તો ખરાં. ત્યારે બેઉએ કહ્યું, અમને એ મનોરથ છે કે આ જન્મમાં આજ શરીરથી શ્રીઠાકુરજી અમારાથી બોલે, કૃપા કરે. તે શ્રીઠાકુરજી તીર્થ વ્રત કર્યે, સાધનથી કેવી રીતે મળશે ? તેથી અમે શું કરીએ. થાકીને વ્રતાદિ કરીને શરીર છોડીશું. બીજો ઉપાય તો કંઈ જાણતા નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આટલું કષ્ટ વ્રત કરીને શરીરને દો છો તે શ્રીઠાકુરજીની સેવા-સ્મરણમાં શરીર મન લગાડો તો આ જ જન્મમાં પ્રભુ કૃપા કરે. ત્યારે સ્ત્રી-પુરુષ બન્નેએ કહ્યું, મહારાજ ! શ્રીઠાકુરજીની સેવા કેવી રીતે બને ? અમે પાસે તો કંઈ રાખ્યું નથી. આ બે કપડાં મેલાં પહેર્યાં છે. અને મા-બાપની પાસે દ્રવ્ય છે તે સંસાર સુખને માટે જે માગે તે દે. પરંતુ પરમાર્થને માટે શ્રીઠાકુરજીના નામ ઉપર કોડી નહી દે. અમારાથી દ્વેષ કરે છે. તેથી ભગવદ્સેવા વિના દ્રવ્ય કેમ થાય ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે એ દ્વેષ કરે તેમાં તો તમને સારૂં છે. બહિર્મુખથી બોલવું મટયું. વળી સેવા લાયક તમે બે ચાર આઠ ઘડી કંઈ ઉદ્યમ કરશો તો તેમાં જ તમને નિર્વાહ લાયક મળશે. તેમાં નિર્વાહ કરજો. સેવા અર્થ શરીરને કષ્ટ હોય ત્યારે ધીરજ ધરી દુઃખ સહો તો શ્રીઠાકુરજીથી સહ્યું ન જાય. તમને અનુભવ જતાવશે. તેથી અમે થાનેશ્વરના વૈષ્ણવને કહી

होय तो उपायश्रीठाकुरजी सब करेंगे। जो मन न होय तो तिहारी तुम जानो। तब दोऊन ने कही, महाराज! हमारो मन तो वहोत हैं। मा बाप के प्रतिबंध सों डरपत हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम मावाप के प्रतिबंध सों मति डरपो। हम कहें तेसो करो। तिहारो सगरो मनोरथ पूरण होयगो। तब दोऊ प्रसन्न होय कहें, महाराज! हम आपकी सरनि हैं। जा प्रकार हमारो भलो होय सो करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, स्नान करि आये, अपरस में तो तुम हों, आगे आवो। तब दोऊ आगें आये। तब नाम निवेदन करायो। पाछे श्रीआचार्यजी थानेस्वर के वैष्णवन सों कहे। अब इनके लिये श्रीठाकुरजी को स्वरूप ठीक करो। तब एक नामधारी वैष्णव थानेस्वर को हतो, वाने कह्यो, महाराज! मेरे दोय स्वरूप हैं, सो एक लालजी मैं देऊँगो। तब श्रीआचार्यजी कहें यहां वेगे लाऊ। तब वह नामधारी वैष्णव स्वरूप ले आयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पञ्चामृत सों स्नान कराय स्त्री-पुरुष के माथे पधराये। पाछें सिंहनन्द के वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन कों आये हते तिनसों कहें, ये दोऊ स्त्री–पुरुष हमारे हैं। तातें इन दोऊ, कोई प्रकार सों दुःख न पावें, सो करियो। तब वैष्णव कहें, महाराज! हम मान

દઈશું તમને ઉધાર આપશે. વેપાર પણ સિદ્ધ કરી દેશે. પરંતુ તમારૂં મન ભગવદ્-સેવા કરવાનું હોય તો ઉપાય શ્રીઠાકુરજી બધો કરશે. જો મન ન હોય તો તમારી તમે જાણો. ત્યારે બન્નેએ કહ્યું, મહારાજ! અમારૂં મન તો બહુ છે. મા-બાપના પ્રતિબંધથી ડરીએ છીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે મા–બાપના પ્રતિબંધથી ન ડરો. અમે કહીએ તેમ કરો. તમારો બધો મનોરથ પૂર્ણ થશે. ત્યારે બન્ને પ્રસન્ન થઇ કહે, મહારાજ! અમે આપની શરણે છીએ. જે પ્રકારે અમારૂં ભલું થાય તે કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સ્નાન કરી આવ્યા અપરસમાં તો તમે છો આગળ આવો. ત્યારે બન્ને આગળ આવ્યાં ત્યારે નામ–નિવેદન કરાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજી થાનેશ્વરના વૈષ્ણવોને કહે, હવે આમને માટે શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ ઠીક કરો. ત્યારે એક નામધારી વૈષ્ણવ થાનેશ્વરનો હતો તેણે કહ્યું, મહારાજ! મારે બે સ્વરૂપ છે. તેથી એક લાલજી હું આપીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અહીં જલ્દી લાવ. ત્યારે તે નામધારી વૈષ્ણવ સ્વરૂપ લઈ આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી સ્ત્રી-પુરૂષના માથે પધરાવ્યા. પછી સિંહનંદમાં વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શને આવ્યાં હતાં તેમને કહે, આ બન્ને સ્ત્રી–પુરૂષ અમારાં છે માટે આ બન્ને કોઈ પ્રકારથી દુઃખ ન પામે તેમ કરજો. ત્યારે વૈષ્ણવ કહે, મહારાજ! અમે પ્રાણની માફક એમને જે જોઇશે તે

की नाईं इनकों जो चहिये सो सिद्ध करि देंइगें। ता समय सास बहू दरसन करन कों आई हती। सो कही, मेरे घर में जगह बहोत हैं, सो मैं इनकों देऊँगी। सेवा संबंधी सब सिद्ध करि देऊँगी, सिंघासन, सिज्या, आदि। तब श्रीआचार्यजी स्त्री पुरुष सों कहें। तुम बहू के संग जाव। तुम पर प्रभु वेगें कृपा करेंगे। और जहां तुम रहोगे तहां सुख पावोगे। जामें पुष्टिमार्ग धर्म सिद्ध होय सो कार्य करियो। तव स्त्री-पुरुष श्रीआचार्यजी कों दण्डोत करि वह बहू के घर आये। तब न्यारी जगह करि तहां श्रीठाकुरजी कों पधराये। एक वैष्णव सों रुपैया २२) मांगि लाये उधारे, सो सामग्री लाये। रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद लिये। साधन व्रतादिक सब छोडि दिये, विष्णुपञ्चक व्रत करे। जयन्ती और एकादसी राखे, इनकों विष्णुपञ्चक कहे हैं। जो ये पांचों व्रत, चार जयन्ती, एकादशी विष्णुसंबंधी हैं। सो वैष्णव कूँ अवस्य करने, और व्रत नाहीं करने। पाछें सेवा सों पहोंचिकें पुरुष बजार में गयो। सो वैष्णव बहोत सन्मान करिकें कहें, तुम दुकान करो तो द्रव्य लेऊ। चाकरी करो तो महिना लेऊ। जामें तिहारो मन प्रसन्न होय सो करो। तब इन कही मेरो मन दलाली करिवे में हैं, तब दलाली करें। सो वैष्णव प्रीति करि रुपैया दोय रुपैया नित्य इनकों पैदा कराय देई। सो

સિદ્ધ કરી દઇશું. તે સમયે સાસુ-વહુ દર્શન કરવાને આવ્યાં હતાં તેમણે કહ્યું, મારા ઘરમાં જગા ઘણી છે. તે હું એમને આપીશ. સેવા સંબંધી બધું સિદ્ધ કરી દઇશ. સિંહાસન શય્યા આદિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સ્ત્રી-પુરૂષને કહે, તમે વહુની સાથે જાવ. તમારા ઉપર પ્રભુ જલ્દી કૃપા કરશે. અને જ્યાં તમે રહેશો ત્યાં સુખ પામશો. જેમાં પુષ્ટિમાર્ગ ધર્મ સિદ્ધ હોય તે કાર્ય કરજો. ત્યારે સ્ત્રી-પુરૂષ આચાર્યજીને દંડવત્ કરી તે વહુના ઘરે આવ્યાં. ત્યારે અલગ જગ્યા કરી ત્યાં શ્રીઠાકુરજીને પધારાવ્યા. એક વૈષ્ણવથી રૂપીઆ ૨૨) ઉધાર માંગી લાવ્યા. તેની સામગ્રી લાવ્યાં. રસોઈ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લીધો. સાધન-વ્રતાદિ બધું છોડી દીધુ. વિષ્ણુપચક વ્રત કરે. જયંતિ અને એકાદશી વ્રત રાખે એને વિષ્ણુપંચક કહે છે. એ પાંચે વ્રત ચાર જયતિ, એકાદશી વિષ્ણુ સંબંધી છે. તે વૈષ્ણવે અવશ્ય કરવાં બીજાં વ્રત નહીં કરવાં. પછી સેવાથી પહોંચી પુરૂષ બજારમાં ગયો. ત્યારે વૈષ્ણવ બહુ સન્માન કરીને કહે, તમે દુકાન કરો તો દ્રવ્ય લો. ચાકરી કરો તો મહિના લો, જેમાં તમારૂં મન પ્રસન્ન હોય તે કરો. ત્યારે આમને કહ્યું, મારૂ મન દલાલી કરવામાં છે. ત્યારે દલાલી કરે. તે વૈષ્ણવ પ્રીતિ કરી રૂપીઆ બે રૂપીઆ

बाइस रुपैया करज हू दे डारे। और भगवद् सेवा करन लागे। तब स्त्री पुरुष दोऊन के मा बाप इनकी निन्दा करन लागे। जो पहलें तो दोऊ बड़े त्यागी हते। अब वैष्णव सों भीख मांगिकें निर्वाह करत हैं। पराये घर में जाय रहे। सो हमकों लाज लगावत हैं। ऐसोई करनो हतो तो कोई और गाम में जाय रहते। ठाकुर ले बड़े भक्त भये हैं, लोगन कों ठगिवे कों। यह बात सब सों कहें। सो एक ने यह पुरुष सों कही। तब पुरुष के मन में बुरी लागी। तब स्त्री सों आय कही। जो-तेरे मा बाप, हमारे मा बाप या प्रकार जहां तहां निंदा करत हैं। तब स्त्री नें कही, जो-तुमारे, हमारे, मा बाप सांचे हैं। अपने पास कहा हतो, एक कोड़ी न हती। सो सब वैष्णव ने श्रीआचार्यजी के सेवक जानिकें करि दियो हैं। सो अब अपने सुखी हैं। परन्तु या प्रकार श्रीठाकुरजी सेवा मानेंगे नाहीं। अपुनो धर्म नास भयो। वैष्णव सों पूजाय के धन ले निर्वाह अपुनें किये। सो अपने कों धिक्कार हैं। तातें ऐसे ठिकाने चलो जहां अपुनें कोऊ वैष्णव जाने नाहीं। तहां जो कमाय के लावो, सो भोग धरि निर्वाह करेंगे। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयगें। तातें अपनें मा बाप सांचे निंदा करत हैं। अपुनें निन्दा ही जोग हैं। काहेतें, श्रीठाकुरजी प्रसन्न करिवे के लिये श्रीआचार्यजी की सरनि आये, सेवा पधराये। कछू वैष्णव सों पूजायवे के

नित्य એમને પેદા કરાવી દે. પછી ૨૨) રૂપીઆ કરજના આપી દીધા અને ભગવદ્સેવા કરવા લાગ્યા. ત્યારે સ્ત્રી પુરૂષ બન્નેનાં મા-બાપ એમની નિંદા કરવા લાગ્યાં. જે પહેલે તો મોટાં ત્યાગી હતાં. હવે વૈષ્ણવથી ભીખ માંગીને નિર્વાહ કરે છે. બીજાના ઘરમાં રહે છે તે અમને લાજ લગાડે છે. એવું જ કરવું હતું તો કોઈ બીજા ગામમાં જઈ રહેતાં. ઠાકુર લઈ મોટા ભક્ત થયા છે. લોકોને ઠગવાને આ વાત બધાને કહે. તે એકે આ પુરૂષને કહ્યું. ત્યારે પુરૂષના મનમાં ખોટું લાગ્યું. ત્યારે સ્ત્રીને આવી કહ્યું, કે તારાં મા-બાપ અમારાં મા-બાપ આ પ્રમાણે જ્યાં ત્યાં નિંદા કરે છે. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું કે, તમારાં અમારાં મા-બાપ સાચાં છે. આપણી પાસે શું હતું ? એક કોડી ન હતી. બધું વૈષ્ણવોએ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક જાણી કરી આપ્યું છે. તે હવે આપણે સુખી છીએ. પરંતુ આ પ્રકારે શ્રીઠાકુરજી સેવા માનશે નહી. આપણો ધર્મ નાશ થયો. વૈષ્ણવથી પૂજાઇને ધન લઈ આપણે નિર્વાહ કર્યો તે આપણને ધિક્કાર છે. તેથી એવી જગાએ ચાલો જ્યાં આપણને કોઈ વૈષ્ણવ જાણે નહી. ત્યાં જે કમાઇને લાવો તેમાં ભોગ ધરીને નિર્વાહ કરીશું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થશે. તેથી આપણાં મા-બાપ સાચી નિંદા કરે છે. આપણે નિંદાને

लिये, अपुनी बड़ाई के लिये वैष्णव नाहीं भये। तातें अपनो धर्म राख्यो चहिये। होंय तो श्रीठाकुरजी कों ले, या गाम ते ओर ठौर कछुक दूरि निकसि चले। यह वात स्त्री की सुनिकें पुरुष नें कही, तू धन्य, तू धन्य, जो-ऐसी वात सिक्षा की कही। पाछें सब तयारी करि सास बहू सों कहें, अब हम जात हैं, तिहारी वस्तू सब संभारि लेहु। तब सास ने कही, हमारो कछू अपराध होय तो कहो। तब बहू ने कही अपराध नाहीं। अब इन पर श्रीआचार्यजी की कृपा भई, पूरन भई। तब सास बहू सों सीख ले श्रीठाकुरजी कों पधराय स्त्री पुरुष निकसि चलें। काहू वैष्णव कों, मा बाप कों जताये नाहीं।

वार्ता-प्रसंग १—**सो वे दोऊ कछुक दिन में आगरे आय रहें। सो एक कोठा भाड़े लियो। जगह निपट छोटी। सो एक-आला में श्रीठाकुरजी पधराये। आला के आगें लकरी माटी सों मेंरा बांधि बढ़ाये। तापर सज्या रहती। एक ओर रसोई, एक ओर सीधा सामग्री धरें। रात्रि कों स्त्री-पुरुष कोठरी के द्वार पर सोय रहें। द्वार पर मारग हतो, सो सीतकाल, उष्णकाल तो या प्रकार सों वितायो। पाछे वर्षा ऋतु आई। सो रात्रि कों मेह बरसे कोठा के द्वार दोऊ बैठे भीजें।**

યોગ્ય છીએ. કેમકે શ્રીઠાકુરજીને પ્રસન્ન કરવાને માટે શ્રીઆચાર્યજીની શરણે આવ્યાં સેવા પધરાવી. કંઈ વૈષ્ણવ થઇ પૂજાવાને પોતાની બડાઇને માટે વૈષ્ણવ નથી થયાં. તેથી આપણો ધર્મ રાખવો જોઇએ. બને તો શ્રીઠાકુરજીને લઇને આ ગામથી બીજી જગાએ કંઈક દૂર નીકળી જઇએ. આ વાત સ્ત્રીની સાંભળીને પુરુષે કહ્યું, તૂ ધન્ય! તૂ ધન્ય! જે આવી શિક્ષાની વાત કહી. પછી બધી તૈયારી કરી સાસુ-વહુને કહે, હવે અમે જઇએ છીએ. તમારી વસ્તુ બધી સંભાળી લો. ત્યારે સાસુએ કહ્યું; અમારો કંઈ અપરાધ હોય તો કહો. ત્યારે વહુએ કહ્યું, અપરાધ નહી. હવે એમના ઉપર શ્રીઆચાર્યજીની કૃપા થઈ, પૂર્ણ થઈ. ત્યારે સાસુ-વહુથી વિદાય લઈ શ્રીઠાકુરજીને પધરાવી સ્ત્રી પુરુષ નિકળી ચાલ્યાં. કોઈ વૈષ્ણવને મા-બાપને જણાવ્યુ નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એ બેઉ કેટલાક દિવસે આગરા આવી રહ્યા. તે એક કોઠો ભાડે લીધો. જગ્યા બીલકુલ નાની. તે એક ગોખલામાં શ્રીઠાકુરજીને પધરાવ્યા. ગોખલાની આગળ લાકડી માટીથી મુડગેલી બાંધી વધાર્યો. તેના ઉપર શૈયા રહેતી. એક તરફ રસોઈ એક તરફ સીધો-સામગ્રી ધરે. રાત્રિએ સ્ત્રી-પુરુષ કોઠરીના દરવાજા ઉપર સુઇ રહે. દરવાજા ઉપર માર્ગ હતો. તે શીતકાલ ઉષ્ણકાલ તો આ પ્રકારે વીતાવ્યો. પછી વર્ષાઋતુ આવી. તે રાત્રિએ મેહ વર્ષે. ઓરડાના દ્વારે બન્ને બેઠાં ભીંજે. એમ કરતાં

ऐसें करत अर्द्ध रात्रि भीजते वीती। तब श्रीठाकुरजी भीतर मंदिर में ते बोले, वैष्णव! तुम क्यों भीजत हो? बाहर ते भीतर आवो। तब स्त्री-पुरुष ने कही, महाराज! कोठो निपट छोटो है। हमारी मल मूत्र की देह, हम आपुके पास कैसें सोवें? मर्यादा रहे नाहीं। तब श्रीठाकुरजी कहें हमतो ऊपर चौवारे में हैं, तुम नीचे आवो। तुम भीजत हो सो हमकों बहोत दुःख है। तुम भीतर आवो तो हमकों सुख होय। तब दोऊ स्त्री-पुरुष भीतर आय धरती पर सोये। सो सगरी रात्रि डरपत रहे। जो-छींक, खांसी, वायु सरेगो तो अपराध परेगो। यह भय करत रहे। पाछें सवेरो भयो तब श्रीठाकुरजी सों पहोंचि कें स्त्री-पुरुष मनमें विचार किये, जो-वर्षाऋतु आई। अपुनें भीतर सोवनो नाहीं। बाहर सोवें तो भीजें, श्रीठाकुरजी दुःख पावें। तातें एक छोटोसो छपरा द्वार बनावनों। तब एक छपरा द्वार पर बनवाय दोऊ स्त्री-पुरुष बाहिर आय सोये। तब श्रीठाकुरजी नें कही, भीतर क्यों न सोये? हमारी आज्ञा हती। तब दोऊ जनेन कही, महाराज! हम लौकिक जीव हैं, सो अनोसर में पास आछो नाहीं आवनो, आपुकी आज्ञा करें, भीजत नाहीं, छपरा नीचे हैं। तब श्रीठाकुरजी सुद्ध भाव देखि अनुभव जनावन लागें। मांगि मांगि के अरोगते। सो स्त्री-पुरुष

અર્દ્ધરાત્રિ ભીજતાં વીતી ત્યારે શ્રીઠાકુરજી અંદર મંદિરમાંથી બોલ્યા, વૈષ્ણવ! તમે કેમ ભીંજો છો? બહારથી અંદર આવો. ત્યારે સ્ત્રી પુરૂષે કહ્યું, મહારાજ! ઓરડો બિલકુલ નાનો છે. અમારી મલમૂત્રની દેહ અમે આપની પાસે કેમ સૂઇએ? મર્યાદા રહે નહી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, અમે તો ચોરામાં છીએ તમે નીચે આવો. તમે ભીંજો છો તે અમને બહુ દુ:ખ છે. તમે અંદર આવો તો અમને સુખ થાય. ત્યારે બન્ને સ્ત્રી પુરૂષ અંદર આવી ધરતી ઉપર સોયાં. તે આખી રાત્રિ ડરતાં રહ્યાં, જે છીંક, ખાંસી, વાયુ સરે તો અપરાધ પડશે. આમ ભય કરતાં રહ્યાં. પછી સવાર થયું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને પહોંચિને સ્ત્રી-પુરૂષે મનમાં વિચાર કર્યો કે, વર્ષા-ઋતુ આઇ. આપણે અંદર સુવું નથી. બહારે સોવે તો ભીંજે, શ્રીઠાકુરજી દુ:ખ પામે. તેથી એક નાનું સરખું છાપરૂં દ્વારે બનાવવું. ત્યારે એક છાપરૂં દ્વાર ઉપર બનાવી બન્ને સ્ત્રી-પુરૂષ બહાર આવી સોયાં. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, અંદર કેમ ન સોયાં? અમારી આજ્ઞા હતી. ત્યારે બન્ને જણાએ કહ્યું, મહારાજ! અમે લૌકિક જીવ છીએ. તે અનોસરમાં પાસ આવવું ઠીક નહીં. આપની આજ્ઞા કરી ભીંજતાં નથી. છાપરા નીચે છીએ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી શુદ્ધ ભાવ જોઇને અનુભવ જણાવવા લાગ્યા. માંગી માંગીને આરોગતા.

ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। बड़े भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ६२ ॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो–श्रीठाकुरजी सों डरपत रहनों। अपराध परे तो बाधक होय। दास को यह धर्म है, जो–स्वामी को भय राखें। प्रीति सों सेवा करे, और अपनो धर्म गोप्य राखे, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय। सो स्त्री पुरुष की ऐसी प्रीति हती। वैष्णव ॥६२॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक, एक सूनार, खातीघरको काम करतो, सो अड़ेल में रहतो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह लीला में श्रीठाकुरजी के अंतरंगी 'श्रीदामा' सखा को प्रागट्य है। श्रीस्वामिनीजी, श्रीदामोदरजी जो लीला करें, ताको अनुभव करे। सो श्रीस्वामिनीजी को श्रीदामा भाई लागे। श्रीठाकुरजी को अंतरंगी सखा है। तातें लीलाको सहायक हैं। सो श्रीस्वामिनीजी सगरी बात श्रीदामा सों पूछती। सो एक दिन श्रीदामा श्रीठाकुरजी के कांधे पर खेल में चढ्यो, यह बात श्रीस्वामिनीजी सुनिकें अप्रसन्न भई। जदपि श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों

તે સ્ત્રી-પુરૂષ એવાં શ્રીઆચાર્યજીનાં કૃપાપાત્ર હતાં. મહાન ભગવદીય હતાં તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૬૨॥

ભાવપ્રકાશ—એમની વાર્તામાં એ સિદ્ધાન્ત થયો કે, શ્રીઠાકુરજીથી ડરતાં રહેવું. અપરાધ પડે તો બાધક થાય. દાસનો એ ધર્મ છે કે, સ્વામીનો ભય રાખે, પ્રીતિથી સેવા કરે. અને પોતાનો ધર્મ ગોપ્ય રાખે તો શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન હોય. તે સ્ત્રી–પુરૂષની એવી પ્રીતિ હતી. વૈષ્ણવ ॥૬૨॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સેવક, એક સુથાર મિસ્ત્રીપણાનું કામ કરતો, તે અડલમાં રહેતો, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીઠાકુરજીના અતરંગી 'શ્રીદામા' સખાનુ પ્રાકટ્ય છે. શ્રીસ્વામિનીજી, શ્રીદામોદરજી જે લીલા કરે તેનો અનુભવ કરે. તે શ્રીદામા શ્રીસ્વામિનીજીનો ભાઈ થાય. શ્રીઠાકુરજીનો અંતરંગી સખા છે. તેથી લીલાનો સહાયક છે. શ્રીસ્વામિનીજી બધી વાત શ્રીદામાથી પૂછતા. તે એક દિવસ શ્રીદામા શ્રીઠાકુરજીના કંધા ઉપર રમતમાં ચઢ્યો. એ વાત શ્રીસ્વામિનીજી સાંભળીને અપ્રસન્ન થઈ, યદ્યપિ શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીસ્વામિનીજીને સમજાવ્યા. શ્રીસુબોધિનીજીમાં

समुझायो। श्रीसुबोधिनीजी में कहे हैं। श्रीदामा मालाकार माला रूप हैं। तातें श्रीठाकुरजी काँधे पर धरे। यह कहें, तऊ श्रीस्वामिनीजी कों आछो न लग्यो। सो शाप दियें, जा भूमि में गिरि। तब श्रीदामा सूतार के घर अड़ेल में जन्मे सो जब सुतार वर्ष तेईस को भयो। तब श्रीआचार्यजी को दरसन करत ही मन आसक्त होय गयो। तब दंडोत करिकें विनती कियो, महाराज! मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमसों पुष्टिमार्गीय धर्म कैसे निबहेगो? ज्ञाति में खानपान। तब सुतार ने विनती करी, महाराज! मोकों घर सों कहा काम है? मैं तो आपुके पास बैठ्यो आपुके दरसन करूँगो। आपु विना एक क्षण मोसों रह्यो नाहीं जात है। तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, श्रीयमुनाजी स्नान करि आऊ। तब वह सुतार नहाय कें श्रीआचार्यजी पास आयो। तब श्रीआचार्यजी वाकों नाम निवेदन करवायो।

वार्ता-प्रसंग १—**सो सुतार श्रीआचार्यजी के स्वरूप पर आसक्त होय गयो। सो श्रीआचार्यजी के पास बैठ्यो दरसन करे, सो उह सूतार के घर के सब भूखन मरन लागे। तब वह सूतार के कुटुम्बी, माता, स्त्री, श्रीआचार्यजी के माताजी पास आय एलमागारुजी सों कही। यह सुतार रात्रि दिन श्रीआचार्यजी के पास रहत**

કહે છે, શ્રીદામા માલાકાર રૂપ છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ કંધા ઉપર ધર્યા. એમ કહ્યું. તો પણ શ્રીસ્વામિનીજીને ઠીક ન લાગ્યું. તે શાપ દીધો. જા, ભૂમિમાં પડ. ત્યારે શ્રીદામા સુથારના ઘરે અડેલમાં જન્મ્યા. પછી જ્યારે તે સુથાર વર્ષ ૨૩ ના થયા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરતાં જ મન આસક્ત થઈ ગયું. ત્યારે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી, મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમારાથી પુષ્ટિમાર્ગનો ધર્મ કેમ નભશે? જ્ઞાતિમાં ખાન-પાન. ત્યારે સુથારે વિનંતી કરી, મહારાજ! મારે ઘરથી શું કામ છે? હું તો આપની પાસે બેસી આપનાં દર્શન કરીશ. આપના વિના એક ક્ષણ મારાથી રહી શકાતુ નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા, શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી આવ. ત્યારે તે સુથાર ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ એને નામ સંભળાવ્યું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એ સુથાર શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપ ઉપર આસક્ત થઇ ગયો. શ્રીઆચાર્યજીની પાસે બેસીને દર્શન કરે તેથી સુથારના ઘરનાં બધાં ભૂખે મરવા લાગ્યા. ત્યારે તે સુથારના કુટુંબી, માતા, સ્ત્રી, શ્રીઆચાર્યજીની માતા પાસે આવી

है, सुतार को काम कछू करत नाहीं। हम खान पान कहां तें करें? तातें तुम श्रीआचार्यजी सों कहियो। तब माता एलंमागारुजी ने श्रीआचार्यजी सों कही, तुम सूतार के पास क्यों बैठत हो? वाके घरके भूखे मरत हैं। तातें याकों घर बिदा करो तो अपने काम कों जाय। तब श्रीआचार्यजी वह सुतार सों कहे, तुम अपने घर जाव, काम काज करो। तब सुतार ने कही, महाराज! आपुके दरसन बिना मोसों रह्यो नाहीं जात। तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारी माताजी खीजत हैं, तातें तुम घर जाव, काम काज करो अपनों। हम तेरे पास आवेंगे। तब वह सुतार दंडोत करि घर में आय काम काज करे। परन्तु मन श्रीआचार्यजी में, जो–कब पधारेंगे? कब मोकों दरसन होयगो?

सो वह सुतार की आरति प्रीति जानि आपु वाके पास पधारें। तब काम काज छोडि श्रीआचार्यजी सों वार्ता करन लाग्यो। सो नित्य ऐसें करे। तब वह सुतार के घर के फेरि एलंमागारु माताजी सों आय कहें, जो–श्रीआचार्यजी सुतार पास जाय बैठत हैं। तब वह काम काज छोड़ि के वार्ता करत है। तातें तुम श्रीआचार्यजी सों कहियो। तब एलंमाजी नें कही, तुम सुतार के घर क्यों जात हो? या बात में आछो नाहीं। सुतार पास मति बैठो। तब श्रीआचार्यजी कहें, ऐसें

ઇલમ્માગારૂજીને કહ્યું. આ સુથાર રાત્રિ દિવસ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહે છે. સુથારનું કામ કંઈ કરતો નથી. અમે ખાનપાન ક્યાંથી કરીએ? તેથી તમે શ્રીઆચાર્યજીને કહેજો ત્યારે માતા ઇલમ્માગારૂજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, તમે સુથારને પાસે કેમ બેસાડો છો? એના ઘરનાં ભૂખે મરે છે તેથી એને ઘર વિદાય કર્યો તો પોતાને કામે જાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તે સુથારને કહે, તમે તમારા ઘર જાવ, કામકાજ કરો, ત્યારે સુતારે કહ્યું, મહારાજ! આપના દર્શન વિના મારાથી રહી શકાતું નથી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે. અમારી માતા ખીજે છે તેથી તમે ઘર જાવ અમે ત્યાં આવી તમને દર્શન, આપીશું ત્યારે તે સુથાર દંડવત્ કરી ઘરમાં આવી કામકાજ કરે. પરંતુ મન શ્રીઆચાર્યજીમાં કે ક્યારે પધારશે ક્યારે મને દર્શન થશે? પછી તે સુથારની આર્તિ પ્રીતિ જાણી પોતે તેની પાસે પધાર્યા. ત્યારે કામકાજ છોડી શ્રીઆચાર્યજીથી વાર્તા કરવા લાગ્યો. તે નિત્ય એમ કરે. ત્યારે તે સુતારના ઘરનાં ફરી ઇલમ્માગારૂ માતાજીથી આવી કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી સુતાર પાસે જઇ બેસે છે ત્યારે તે કામકાજ છોડીને વાર્તા કરે છે. તેથી તમે શ્રીઆચાર્યજીને કહેજો ત્યારે ઇલિમ્માજીએ કહ્યું, તમે સુથારના ઘરે કેમ જાવ છો? એ વાતમાં સારૂં નહીં. સુથાર પાસે ન બેસો ત્યારે

ही करेंगे । तउ वाकी प्रीति ऐसी, जो–श्रीआचार्यजी एक बार उह सुतार कों दरसन दे आवते । घरी दोय घरी वार्ता चर्चा करि आवते । ऐसी कृपा करते ।

भावप्रकाश—यामें अभिप्राय यह, पहलें वाकों सरनि लियें, पास वैठारि वार्ता करि वाको मन स्वरूप में लगायो । परन्तु विरह विना रस हृदयारूढ होय नाहीं । तातें वाके कुटुम्ब के मिस करि, वाकों घर पठाय विरह करायें । सो विरह दुःख सह्यो न जाय । तातें आपु पधारते उहां वैठते । फेरि वाके कुटुम्ब के मिस एक घरी दोय घरी वैठते । पाछे आपुकों पृथ्वी परिक्रमा पधारनो हैं । वाकों ऐसे ही छोड़ि जाय तो विरह दुःख करि व्याकुल होय । तातें अपुने आगें ही विरह कराय वाकों ऐसो करि दियो, जो–हृदय में श्रीआचार्यजी को दरसन अष्ट–प्रहर होय, या प्रकार वाकों दरसन दिये । जैसे व्रज में श्रीठाकुरजी प्रगटे, तव व्रजभक्तन कों दरसन दे प्रेम वढ़ाये । सो ऐसो प्रेम वढ्यो जो पलक की ओट जुग वीते । पाछे विरह वढ़ायवे के लियें गोचारन लीला कियें । तामें सगरो दिन वेनुगीत, जुगलगीत, गायकें निर्वाह करें । संध्या समय की आसा लगाय रहें । पाछे मथुरा पधारिवे के मिस रात्रि दिन को विरह दियें । परन्तु इतनो संतोष जो मथुरा पास हैं, अव

શ્રીઆચાર્યજી કહે એમજ કરીશું. તોપણ એની પ્રીતિ એવી કે શ્રીઆચાર્યજી એક-વાર તે સુથારને દર્શન દઈ આવતા. એવી કૃપા કરતા.

ભાવપ્રકાશ—એમાં અભિપ્રાય આ, પહેલાં એને શરણે લીધો. પાસે બેસાડી વાર્તા કરી એનું મન સ્વરૂપમાં લગાડયું, પરંતુ વિરહ વિના રસ હૃદયારૂઢ થાય નહીં. તેથી એના કુટુંબના મિષે એને ઘર મોકલી વિરહ કરાવ્યો. તે વિરહ દુઃખ સહ્યું ન જાય. તેથી આપ પધારતા, ત્યાં બેસતા. ફરી એના કુટુંમ્બના મિષે એક ઘડી બે ઘડી બેસતા. પછી આપને પૃથ્વી પરિક્રમા પધારવું છે. એને એમજ છોડી જાય તો વિરહ દુઃખ કરી વ્યાકુલ હોય. તેથી પોતાની આગળજ વિરહ કરાવી એને એવો કરી દીધો કે હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન અષ્ટપ્રહર થાય. આ પ્રકારે, એને દર્શન આપ્યાં. જેમ વ્રજમાં શ્રીઠાકુરજી પ્રકટ્યા ત્યારે વ્રજભક્તોને દર્શન દઇ પ્રેમ વધાર્યો. તે એવો પ્રેમ વધ્યો કે પલકની ઓટ યુગ વીતે. પછી વિરહ વધારવાને માટે ગોચારણ લીલા કરી. તેમાં બધો દિવસ વેણુગીત, યુગલ ગીત, ગાઇને નિર્વાહ કરે. સંધ્યા સમયની આશા લગાવી રહે. પછી મથુરા પધારવાના બહાને રાત્રિ–દિવસનો વિરહ આપ્યો પરંતુ એટલો સંતોષ કે મથુરા

आवें। तब द्वारिका पधारिवे के मिस पूर्ण विरह कराय रात्रि दिन सगरे व्रजभक्तन कों स्वरूपानंद को अनुभव जनायो। तेसेई कृपा करि उह सूतार कों पूरन विरह कराय हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव कराये। तब वह सूतार की बाहिर दृष्टि हती सो भीतर की दृष्टि सों घर में मगन रह्यो। पाछें आपु पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें। वैष्णव ॥६३॥

सो वह सुतार एसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें वाकी वार्ता अनिवर्चनीय है। सो प्रकाम नाहीं किये। वार्ता ॥ ६३ ॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, एक क्षत्री हतो, सो पूर्व में रहतो पटनाके चारि मजलि आगे, ता क्षत्रिकों एक अन्यमार्गीय सों संग हतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में उह क्षत्री है सो कुमारिका के जूथ में हैं। लीला में इनको नाम 'मोहिनी' हैं। और उह अन्य मार्गीय मोहनी की सखी 'लक्षनि' वाको नाम हैं। सो उह यहाँ पूर्व में एक ब्राह्मण गौड़ के घर जन्म्यो। 'मोहनी' एक क्षत्री के घर जन्मे। सो दोऊ वरस आठ के भये, सो एक पण्ड्या के घर पढ़िवे कों जाते। सो दोऊन कों पूर्व लीला में संबंध हैं, तातें प्रीति यहां बहोत बढ़ी।

પાસે છે હમણાં આવશે. ત્યારે દ્વારકા પધારવાના બ્હાને પૂર્ણ વિરહ કરાવી રાત્રિ દિવસ વ્રજભક્તોને સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ જણાવ્યો. તેવીજ કૃપા કરી સુથારને પૂર્ણ વિરહ કરાવી હૃદયમાં સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ કરાવ્યો. ત્યારે તે સુથારની બાહર દૃષ્ટિ હતી તે અંદરની દૃષ્ટિથી ઘરમાં મગન રહ્યો પછી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. વૈષ્ણવ ॥ ૬૩ ॥

તે સુથાર એવો કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતો. તેથી તેની વાર્તા અનિર્વચનીય છે તેથી પ્રકાશ નથી કર્યો. વાર્તા ॥૬૩॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સેવક, એક ક્ષત્રી હતો તે પૂર્વમાં રહેતો, પટનાથી ચાર મુકામ આગળ, તે ક્ષત્રીને એક અન્યમાર્ગીયનો સંગ હતો, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ ક્ષત્રી કુમારિકાના યૂથમાં છે. લીલામાં એમનું નામ 'મોહની' છે. અને તે અન્યમાર્ગીય મોહનીની સખી 'લક્ષનિ' એનું નામ છે. તે અહીં પૂર્વમાં એક ગોડ બ્રાહ્મણને ત્યાં જન્મ્યો. 'મોહની' એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મી. તે બેઉ વરસ આઠના થયા. તે એક પણ્ડયાના ઘરે ભણવાને જતા. તે

सो वरष पन्द्रह के दोऊ भये। तब एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारें, सो उह गाम में उतरे। तब वह क्षत्री को पिता कह्यो, जो–इनके संग श्रीजगन्नाथरायजी को दरसन करिये। सो पुत्र कों ले श्रीआचार्यजी के संग चल्यो। उह अन्य मार्गीय घर रह्यो। सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे। तहां मायावादी भेले भये हते। तिनसों वाद करि मायावाद खंडन किये। तब वह क्षत्री ने पिता सों कही, श्रीआचार्यजी के सेवक होय तो आछो। तब पिता नें कही, मेरे तो श्रीजगन्नाथरायजी के रथकें नीचे मरनो हैं। पाछे तेरो मन आवे सो करियो। तब पुत्र नें कही, तुम ऐसी हत्या क्यों करो ? श्रीआचार्यजी के सेवक होय, श्रीठाकुरजी की सेवा स्मरन करो। तब पिता ने कही मैं वृद्ध भयो। मोसों अब कछु बनें नाहीं। और मैं यही मनोरथ करि आयो हों। तब पुत्र चुप होय रह्यो। सो दिन दस पाछे रथयात्रा आई। तब श्रीजगन्नाथरायजी रथ पर चढ़ि बाहिर पधारे। सो उह पिता रथ के पैया नीचे मरयो। तब उह पुत्र श्रीआचार्यजी के पास आय के पिता की बात कही, महाराज ! रथ के नीचे मेरो पिता मरयो, ताको कहा फल ? तब श्रीआचार्यजी कहें मरिवे को कहा

બન્નેનો પૂર્વે લીલાનો સંબંધ છે. તેથી પ્રીતિ અહીં ઘણી વધી. પછી વર્ષ પંદરના બંને થયા, ત્યારે એક સમય શ્રીઆચાર્યજી શ્રીજગન્નાથજીના દર્શને પધાર્યા. ત્યારે તે ગામમાં ઉતર્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રીના પિતાએ કહ્યું, કે આમની સાથે શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરીએ. તે પુત્રને લઇ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે ચાલ્યો. તે અન્યમાર્ગીય ઘર રહ્યો. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી શ્રીજગન્નાથરાયજી પધાર્યા. ત્યાં માયાવાદી ભેગા થયા હતા. તેમનાથી વાદ કરી માયાવાદ ખંડન કર્યો. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ પિતાને કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઈએ તો સારૂં. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, મારે તો શ્રીજગન્નાથરાયજીના રથ નીચે મરવું છે. પછી તારા મનમાં આવે તે કરજે. ત્યારે પુત્રે કહ્યું, તમે એવી હત્યા કેમ કરો છો ? શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થાવ. શ્રીઠાકુરજીની સેવા–સ્મરણ કરો. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, હું વૃદ્ધ થયો છું મારાથી હવે કંઇ બને નહીં. અને હું આ જ મનોરથ કરીને આવ્યો છું. ત્યારે પુત્ર ચુપ થઇ રહ્યો. પછી દશ દિવસ પછી રથયાત્રા આવી. ત્યારે શ્રીજગન્નાથરાયજી રથ ઉપર ચઢી બાહર પધાર્યા. ત્યારે તે પિતા રથના પૈયા નીચે મર્યો. ત્યારે તે પુત્રે શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને પિતાની વાત કહી. મહારાજ ! રથની નીચે મારો પિતા મર્યો. તેનું શું ફલ ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, મરવાનું શું ફલ ?

आवें। तब द्वारिका पधारिवे के मिस पूर्ण विरह कराय रात्रि दिन सगरे व्रजभक्तन कों स्वरूपानंद को अनुभव जनायो। तेसेई कृपा करि उह सुतार कों पूरन विरह कराय हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव कराये। तब वह सुतार की बाहिर दृष्टि हती सो भीतर की दृष्टि सों घर में मगन रह्यो। पाछें आपु पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें। वैष्णव ॥६३॥

सो वह सुतार एसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें वाकी वार्ता अनिवर्चनीय है। सो प्रकाम नाहीं किये। वार्ता ॥ ६३ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, एक क्षत्री हतो, सो पूर्व में रहतो पटनाके चारि मजलि आगे, ता क्षत्रिकों एक अन्यमार्गीय सों संग हतो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में उह क्षत्री है सो कुमारिका के जूथ में हैं। लीला में इनको नाम 'मोहिनी' हैं। और उह अन्य मार्गीय मोहनी की सखी 'लक्षनि' वाको नाम हैं। सो उह यहाँ पूर्व में एक ब्राह्मण गौड़ के घर जन्म्यो। 'मोहनी' एक क्षत्री के घर जन्मे। सो दोऊ वरस आठ के भये, सो एक पण्ड्या के घर पढ़िवे कों जाते। सो दोऊन कों पूर्व लीला में संबंध हैं, तातें प्रीति यहां बहोत वढ़ी।

પાસે છે હમણાં આવશે. ત્યારે દ્વારકા પધારવાના બહાને પૂર્ણ વિરહ કરાવી રાત્રિ દિવસ વ્રજભક્તોને સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ જણાવ્યો. તેવીજ કૃપા કરી સુથારને પૂર્ણ વિરહ કરાવી હૃદયમાં સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ કરાવ્યો. ત્યારે તે સુથારની બાહર દૃષ્ટિ હતી તે અંદરની દૃષ્ટિથી ઘરમાં મગન રહ્યો પછી પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. વૈષ્ણવ ॥ ૬૩ ॥

તે સુથાર એવો કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતો. તેથી તેની વાર્તા અનિર્વચનીય છે તેથી પ્રકાશ નથી કર્યો. વાર્તા ॥૬૩॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સેવક, એક ક્ષત્રી હતો તે પૂર્વમાં રહેતો, પટનાથી ચાર મુકામ આગળ, તે ક્ષત્રીને એક અન્યમાર્ગીયનો સંગ હતો, તેની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ ક્ષત્રી કુમારિકાના યૂથમાં છે. લીલામાં એમનુ નામ 'મોહની' છે. અને તે અન્યમાર્ગીય મોહનીની સખી 'લક્ષનિ' એનુ નામ છે. તે અહીં પૂર્વમાં એક ગોડ બ્રાહ્મણને ત્યાં જન્મ્યો. 'મોહની' એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મી. તે બેઉ વરસ આઠના થયા. તે એક પણ્ડ્યાના ઘરે ભણવાને જતા. તે

सो वरष पन्द्रह के दोऊ भये। तब एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारें, सो उह गाम में उतरे। तब वह क्षत्री को पिता कह्यो, जो–इनके संग श्रीजगन्नाथरायजी को दरसन करिये। सो पुत्र कों ले श्रीआचार्यजी के संग चल्यो। उह अन्य मार्गीय घर रह्यो। सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे। तहां मायावादी मेले भये हते। तिनसों वाद करि मायावाद खंडन किये। तब वह क्षत्री ने पिता सों कही, श्रीआचार्यजी के सेवक होय तो आछो। तब पिता नें कही, मेरे तो श्रीजगन्नाथरायजी के रथकें नीचे मरनो हैं। पाछे तेरो मन आवे सो करियो। तब पुत्र नें कही, तुम ऐसी हत्या क्यों करो? श्रीआचार्यजी के सेवक होय, श्रीठाकुरजी की सेवा स्मरन करो। तब पिता ने कही मैं वृद्ध भयो। मोसों अब कछू बनें नाहीं। और मैं यही मनोरथ करि आयो हों। तब पुत्र चुप होय रह्यो। सो दिन दस पाछे रथयात्रा आई। तब श्रीजगन्नाथरायजी रथ पर चढ़ि बाहिर पधारे। सो उह पिता रथ के पैया नीचे मर्‍यो। तब उह पुत्र श्रीआचार्यजी के पास आय के पिता की बात कही, महाराज! रथ के नीचे मेरो पिता मर्‍यो, ताको कहा फल? तब श्रीआचार्यजी कहैं मरिवे को कहा

બન્નેનો પૂર્વ લીલાનો સંબંધ છે. તેથી પ્રીતિ અહીં ઘણી વધી. પછી વર્ષ પંદરના બંને થયા, ત્યારે એક સમય શ્રીઆચાર્યજી શ્રીજગન્નાથજીના દર્શને પધાર્યા. ત્યારે તે ગામમાં ઉતર્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રીના પિતાએ કહ્યું, કે આમની સાથે શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરીએ. તે પુત્રને લઇ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે ચાલ્યો. તે અન્યમાર્ગીય ઘર રહ્યો. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી શ્રીજગન્નાથરાયજી પધાર્યા. ત્યાં માયાવાદી ભેગા થયા હતા. તેમનાથી વાદ કરી માયાવાદ ખંડન કર્યો. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ પિતાને કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઈએ તો સારૂ. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, મારે તો શ્રીજગન્નાથરાયજીના રથ નીચે મરવું છે. પછી તારા મનમાં આવે તે કરજે. ત્યારે પુત્રે કહ્યું, તમે એવી હત્યા કેમ કરો છો? શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થાવ. શ્રીઠાકુરજીની સેવા–સ્મરણ કરો. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, હું વૃદ્ધ થયો છું મારાથી હવે કંઇ બને નહીં. અને હું આ જ મનોરથ કરીને આવ્યો છું. ત્યારે પુત્ર ચુપ થઇ રહ્યો. પછી દશ દિવસ પછી રથયાત્રા આવી. ત્યારે શ્રીજગન્નાથરાયજી રથ ઉપર ચઢી બાહર પધાર્યા. ત્યારે તે પિતા રથના પૈયા નીચે મર્યો. ત્યારે તે પુત્રે શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને પિતાની વાત કહી. મહારાજ! રથની નીચે મારો પિતા મર્યો. તેનું શું ફલ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, મરવાનું શું ફલ?

फल ? भगवान की प्राप्ति भये बिना कहा फल ? मरती वेर जहां मन होय तहां जाय। परन्तु याकों सुख की कामना हती, तातें स्वर्ग कों गयो। कछुक दिन भोग करि गिरेगो। परन्तु तू दैवी जीव है। तेरे संबंध करि वाकी मुक्ति होयगी। तब वह क्षत्री नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! मेरो सेवा को मनोरथ है। तब श्रीआचार्यजी कहे, अब ही तो तोकों सूतक हैं। सूतक उतरे सेवक करेंगे। पाछे सूतक उतरयो, तब वह क्षत्री आयो। दंडवत करि बिनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, नहाय आऊ। तब वह नहाई आयो। तब श्रीआचार्यजी नें नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करवायो। तब वह क्षत्री एक लालाजी को स्वरूप सुन्दर देखिकें न्योछावरि देकें ले आयो। तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत सों स्नान कराय उह क्षत्री के माथे पधराये। पाछे दोय दिन उह क्षत्री श्रीआचार्यजी के पास रहि मार्ग की रीति सीखि, आज्ञा मांगी। तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, घर में सेवा मन लगायकें करियो। तब वह क्षत्री दंडोत करि विदा होय, घर में आय सेवा भली भांति सों करन लाग्यो। कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। और वह अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्ग की रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करतो। तासों स्नेह बहोत हतो, सो यह क्षत्री कों तो यह

ભગવાનની પ્રાપ્તિ થયા વિના શું ફલ ? મરતી સમય જ્યાં મન હોય ત્યાં જાય. પરંતુ એને સુખની કામના હતી તેથી સ્વર્ગમાં ગયો. થોડા દિવસ ભોગ કરી પડશે. પરંતુ તૂ દૈવી જીવ છે. તારા સંબંધથી એની મુક્તિ થશે. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ શ્રીઆ-ચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારો (સેવાનો) ઘણો મનોરથ છે (મને સેવક કરો). ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તને સૂતક છે. સૂતક ઉતરે સેવક કરીશું. પછી સૂતક ઉતર્યું ત્યારે તે ક્ષત્રી આવ્યો. દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારો અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી એ ક્ષત્રી એક લાલાજીનું સુંદર સ્વરૂપ જોઇને ન્યોછાવર દઇને લઈ આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી તે ક્ષત્રીને માથે પધરાવ્યું. પછી બે દિવસ તે ક્ષત્રીએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહી માર્ગની રીતિ શીખી આજ્ઞા માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા, ઘરમાં સેવા મન લગાડીને કરજે. ત્યારે તે ક્ષત્રી દંડવત્ કરી વિદાય થઈ ઘરમાં આવી સેવા સારી રીતિથી કરવા લાગ્યો. કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. પેલો અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણ મર્યાદામાર્ગની રીતિથી શ્રીઠાકુરજીની પૂજા કરતો. તેનાથી સ્નેહ ઘણો હતો. આ ક્ષત્રીને તો એ

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सों भयो। जो यह अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी है। कोई प्रकार वैष्णव होय तो आछो। तब एक दिन वह क्षत्री उह अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कहे, जो–तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होऊ तो आछो। तब वह ब्राह्मण नें कही, अब तो मैं और मारग को सेवक ह्वै चुक्यो। अब वैष्णव कैसें होऊ? तब वह क्षत्री वैष्णव बोल्यो नाहीं। मन में दुःख पायो। जो दैवी जीव है, परन्तु वैष्णव न भयो कहा करूं? यह चिंता करत घर आयो। श्रीठाकुरजी के उत्थापन कराये। तब श्रीठाकुरजी कहें, चिंता मति करे, वह अन्यमार्गीय सेवक होय कृपापात्र भगवदीय होइगो। तब यह क्षत्री नें कह्यो महाराज! उह कौन प्रकार होयगो? मैं वासों वैष्णव होन की कही, सो वह नाहीं कही। वाको मन तो नाहीं हैं। तब श्रीठाकुरजी कहें, मेरी इच्छा वाकों अंगीकार करन की है। सो एक क्षण में मैं वाको मन फेरि देऊँगो। तातें तू एक काम करियो। कबहूँ वह अन्यमार्गीय तुमसों रसोई करन की कहें, तो तू वाके घर सामग्री करि भोग वाकें ठाकुर कों धरिके महाप्रसाद लीजो। तब यह क्षत्री नें कही, उह अन्यमार्गीय कें ठाकुर आगें भोग कैसे धरूं? प्रसाद कैसें लेहू? श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति नाहीं हैं। तब श्रीठाकुरजी कहें मेरी आज्ञा तें

જ્ઞાન શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની શરણથી થયું છે, અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણ દૈવી છે. કોઈ પ્રકારે વૈષ્ણવ થાય તો સારૂં. ત્યારે એક દિવસે એ ક્ષત્રીએ તે અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણને કહ્યું, કે તમે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક થાવ તો સારૂં. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે હવે તો હું બીજા માર્ગનો સેવક થઈ ચૂકયો છું. હવે વૈષ્ણવ કેવી રીતે થઉં? ત્યારે તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવ બોલ્યો નહીં. મનમાં દુઃખ પામ્યો કે દૈવીજીવ છે પરંતુ વૈષ્ણવ ન થયો તો શું કરૂં' એમ ચિંતા કરતાં ઘર આવ્યો. શ્રીઠાકુરજીને ઉત્થાપન કરાવ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, ચિંતા ન કરીશ તે અન્યમાર્ગીય સેવક થઈ કૃપાપાત્ર ભગવદીય થશે. ત્યારે એ ક્ષત્રીએ કહ્યું, મહારાજ! તે કયા પ્રકારે થશે? મેં એને વૈષ્ણવ થવાનું કહ્યું તે એણે ના કહી. એનું મન તો નથી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, મારી ઈચ્છા એને અંગીકાર કરવાની છે. તે એક ક્ષણમાં હું એનું મન ફેરવી દઈશ. તેથી તૂ એક કામ કરજે. ક્યારેય એ અન્યમાર્ગીય તને રસોઈ કરવાનું કહે, તો તૂ એના ઘર સામગ્રી કરી એના ઠાકુરને ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લેજે. ત્યારે આ ક્ષત્રીએ કહ્યું, એ અન્યમાર્ગીયના ઠાકુર આગળ ભોગ કેવી રીતે ધરૂં, પ્રસાદ કેમ લઉં? શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગની રીતિ નથી. ત્યારે

फल ? भगवान की प्राप्ति भये बिना कहा फल ? मरती वेर जहां मन होय तहां जाय। परन्तु याकों सुख की कामना हती, तातें स्वर्ग कों गयो। कछुक दिन भोग करि गिरेगो। परन्तु तू दैवी जीव है। तेरे संबंध करि वाकी मुक्ति होयगी। तब वह क्षत्री नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! मेरो सेवा को मनोरथ है। तब श्रीआचार्यजी कहे, अब ही तो तोकों सूतक हैं। सूतक उतरे सेवक करेंगे। पाछे सूतक उतर्यो, तब वह क्षत्री आयो। दंडवत करि बिनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, नहाय आऊ। तब वह नहाई आयो। तब श्रीआचार्यजी नें नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करवायो। तब वह क्षत्री एक लालाजी को स्वरूप सुन्दर देखिकें न्योछावरि देकें ले आयो। तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत सों स्नान कराय उह क्षत्री के माथे पधराये। पाछे दोय दिन उह क्षत्री श्रीआचार्यजी के पास रहि मार्ग की रीति सीखि, आज्ञा मांगी। तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, घर में सेवा मन लगायकें करियो। तब वह क्षत्री दंडोत करि विदा होय, घर में आय सेवा भली भांति सों करन लाग्यो। कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। और वह अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्ग की रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करतो। तासों स्नेह बहोत हतो, सो यह क्षत्री कों तो यह

ભગવાનની પ્રાપ્તિ થયા વિના શું ફલ ? મરતી સમય જ્યાં મન હોય ત્યાં જાય. પરંતુ એને સુખની કામના હતી તેથી સ્વર્ગમાં ગયો. થોડા દિવસ ભોગ કરી પડશે. પરંતુ તૂ દૈવી જીવ છે. તારા સંબંધથી એની મુક્તિ થશે. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ શ્રીઆ-ચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારો (સેવાનો) ઘણો મનોરથ છે (મને સેવક કરો). ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હમણાં તો તને સૂતક છે. સૂતક ઉતરે સેવક કરીશું. પછી સૂતક ઉતર્યું ત્યારે તે ક્ષત્રી આવ્યો. દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ ! મારો અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી એ ક્ષત્રી એક લાલાજીનું સુંદર સ્વરૂપ જોઇને ન્યોછાવર દઇને લઈ આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી તે ક્ષત્રીને માથે પધરાવ્યું. પછી બે દિવસ તે ક્ષત્રીએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહી માર્ગની રીતિ શીખી આજ્ઞા માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા, ઘરમાં સેવા મન લગાડીને કરજે. ત્યારે તે ક્ષત્રી દંડવત્ કરી વિદાય થઈ ઘરમાં આવી સેવા સારી રીતિથી કરવા લાગ્યો. કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. પેલો અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણ મર્યાદામાર્ગની રીતિથી શ્રીઠાકુરજીની પૂજા કરતો. તેનાથી સ્નેહ ઘણો હતો. આ ક્ષત્રીને તો એ

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सों भयो। जो यह अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी है। कोई प्रकार वैष्णव होय तो आछो। तब एक दिन वह क्षत्री उह अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कहे, जो–तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होऊ तो आछो। तब वह ब्राह्मण नें कही, अब तो मैं और मारग को सेवक ह्वै चुक्यो। अब वैष्णव कैसें होऊ? तब वह क्षत्री वैष्णव बोल्यो नाहीं। मन में दुःख पायो। जो दैवी जीव है, परन्तु वैष्णव न भयो कहा करूं? यह चिंता करत घर आयो। श्रीठाकुरजी के उत्थापन कराये। तब श्रीठाकुरजी कहें, चिंता मति करे, वह अन्यमार्गीय सेवक होय कृपापात्र भगवदीय होइगो। तब यह क्षत्री नें कह्यो महाराज! उह कौन प्रकार होयगो? मैं वासों वैष्णव होन की कही, सो वह नाहीं कही। वाको मन तो नाहीं हैं। तब श्रीठाकुरजी कहें, मेरी इच्छा वाकों अंगीकार करन की है। सो एक क्षण में मैं वाको मन फेरि देऊँगो। तातें तू एक काम करियो। कबहूँ वह अन्यमार्गीय तुमसों रसोई करन की कहें, तो तू वाके घर सामग्री करि भोग वाकें ठाकुर कों धरिके महाप्रसाद लीजो। तब यह क्षत्री नें कही, उह अन्यमार्गीय कें ठाकुर आगें भोग कैसे धरूं? प्रसाद कैसें लेहू? श्रीआचार्यजी के मार्ग की रीति नाहीं हैं। तब श्रीठाकुरजी कहें मेरी आज्ञा तें

જ્ઞાન શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની શરણથી થયું કે, અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણ દૈવી છે. કોઈ પ્રકારે વૈષ્ણવ થાય તો સારૂં. ત્યારે એક દિવસે એ ક્ષત્રીએ તે અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણને કહ્યું, કે તમે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક થાવ તો સારૂં. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે હવે તો હું બીજા માર્ગનો સેવક થઈ ચૂકયો છું. હવે વૈષ્ણવ કેવી રીતે થઉં? ત્યારે તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવ બોલ્યો નહીં. મનમાં દુઃખ પામ્યો કે દૈવીજીવ છે પરંતુ વૈષ્ણવ ન થયો તો શું કરૂં? એમ ચિંતા કરતાં ઘર આવ્યો. શ્રીઠાકુરજીને ઉત્થાપન કરાવ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, ચિંતા ન કરીશ તે અન્યમાર્ગીય સેવક થઈ કૃપાપાત્ર ભગવદીય થશે. ત્યારે એ ક્ષત્રીએ કહ્યું, મહારાજ! તે કયા પ્રકારે થશે? મેં એને વૈષ્ણવ થવાનું કહ્યુ તે એણે ના કહી. એનું મન તો નથી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, મારી ઈચ્છા એને અંગીકાર કરવાની છે. તે એક ક્ષણમાં હું એનું મન ફેરવી દઈશ. તેથી તૂ એક કામ કરજે. કયારેય એ અન્યમાર્ગીય તને રસોઈ કરવાનું કહે, તો તૂ એના ઘર સામગ્રી કરી એના ઠાકુરને ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લેજે. ત્યારે આ ક્ષત્રીએ કહ્યું, એ અન્યમાર્ગીયના ઠાકુર આગળ ભોગ કેવી રીતે ધરૂં, પ્રસાદ કેમ લઉં? શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગની રીતિ નથી. ત્યારે

करियो, तोकों बाधक नाहीं। और तेरो भोग धरयो सो मैं उहां आयकें आरोगुंगो। तातें तू महाप्रसाद लीजियो। तब वह वैष्णव होयगो।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन सीतकाल के दिन हते, सो क्षत्री वैष्णव एक पहर पाछली रात्रितें उठिकें घरी एक दिन चढ्यो। तब राजभोग आरती करि अनोसर करायो। पाछे वह अन्यमार्गीय के घर गयो। तब वह अन्यमार्गीय वैष्णव नें बहोत आग्रह कियो। जो–आजु पाक सामग्री यहां करो।

भावप्रकाश—तब वह वैष्णव मन में बहोत प्रसन्न भयो। जो–अब यह वैष्णव होयगो। श्रीठाकुरजी की आज्ञा विचारि, पाक सामग्री अनसखड़ी तऊ करी। जदपि श्रीठाकुरजी की आज्ञा हती, जो–सखड़ी करते तो बाधक नाहीं। परन्तु इतनी अपने मार्ग की का'नि राखी।

तब वाने अनसखड़ी करि वाके श्रीठाकुरजी आगें भोग धर्यो, श्रीआचार्यजी की का'नि कही, श्रीगोवर्द्धनधर सों बिनती करि कह्यो, महाराज! सामग्री हू आरोगो, और या दैवी जीव कों अंगीकार हू करो। तब श्रीगोवर्द्धनधर तत्काल पधारि सामग्री आरोगिकें (पाछे) पधारें। पाछें वह अन्यमार्गीय वैष्णव ब्राह्मण कों हू महाप्रसाद धरें।

શ્રીઠાકુરજી કહે, મારી આજ્ઞાથી કરજે. તને બાધક નહીં. વળી તારો ભોગ ધર્યો હું ત્યાં આવીને આરોગીશ. તેથી તૂં મહાપ્રસાદ લેજે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ થશે

વાર્તા-પ્રસંગ ૧–પછી એક સમય **શીતકાલના દિવસ હતા. ત્યારે તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવ એક પ્રહર પાછલી રાતે ઉઠીને ઘડી એક દિવસ ચઢયો ત્યારે રાજભોગ આરતી કરી અનોસર કરાવ્યો. પછી તે અન્યમાર્ગીયના ઘરે ગયો. ત્યારે તે અન્યમાર્ગીય વૈષ્ણવે ઘણો આગ્રહ કર્યો, કે આજ પાક-સામગ્રી અહીં કરો.**

ભાવપ્રકાશ—ત્યારે એ વૈષ્ણવ મનમાં ઘણું પ્રસન્ન થયો, કે હવે આ વૈષ્ણવ થશે. શ્રીઠાકુરજીની આજ્ઞા વિચારી પાક-સામગ્રી અનસખડી તો પણ કરી. જો કે શ્રીઠાકુરજીની આજ્ઞા હતી. સખડી કરતા તો બાધક નહોતું પરંતુ એટલી સ્વમાર્ગની મર્યાદા રાખી.

ત્યારે એને અનસખડી કરી એના શ્રીઠાકુરજી આગળ ભોગ ધર્યો. શ્રીઆચાર્યજીની કા'ન કહી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને વિનંતી કરી કહ્યુ, મહારાજ! સામગ્રીએ આરોગો અને આ દૈવીજીવને અંગીકાર પણ કરો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર તત્કાલ પધારી સામગ્રી આરોગીને (પાછા) પધાર્યા પછી તે અન્યમાર્ગી વૈષ્ણવ બ્રાહ્મણને પણ

वैष्णव क्षत्री हू महाप्रसाद ले अपुने घर आयो । तब तीसरो प्रहर भये तब न्हाय के उत्थापन करायो । और वह अन्यमार्गीय महाप्रसाद ले सोयो । तब वाके ठाकुरजी, नित्य आवाहन विसर्जन करतो सो विभूति, श्रीठाकुरजी द्वारा, वा अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कह्यो । जो-आजु हम भूखे हैं । तब वह अन्यमार्गीय नें कह्यो, भूखे क्यों हो ? श्रीआचार्यजी के सेवक क्षत्री ने भोग धर्यो, सो तुम क्यों न अरोगे । तब वह विभूति नें कही, उह वैष्णव नें श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्मरण कियो, सो वे आयके अरोगे । हम तो पुरुषोत्तम की विभूति हैं । सो पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगें तहां हमारी गति नाहीं । हम तो मंत्र को आवाहन करें, तब वह भगवत प्रतिमा में प्रवेस करि अरोगें । विसर्जन करे तब चलि जाय । यह रीति हमारी हैं । और पुरुषोत्तम मंत्र के आधीन नाहीं है, एक प्रेम के आधीन हैं । तातें वह क्षत्री के ऐसो प्रेम है, जो-पुरुषोत्तम आरोगिवे पधारत हैं । (जहां) पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगत हैं, तहां हमारी न चले । तब वह अन्यमार्गीय धूप दीप करि नैवेद्य धरि, पाछे वैष्णव क्षत्री पास आयो । आयकें कही, तुमनें हमकों पहले श्रीआचार्यजी के सेवक होन कों कही, सो हम न माने, सो बुरी करी । अब हमकों सेवक

પ્રસાદ ધર્યો. વૈષ્ણવ ક્ષત્રી પણ પ્રસાદ લઇ પોતાને ઘરે ગયો. પછી ત્રીજો પ્રહર થયો ત્યારે ન્હાઇને ઉત્થાપન કરાવ્યા. અને તે અન્યમાર્ગીય મહાપ્રસાદ લઈ સોયો. ત્યારે તેના ઠાકુરજીને નિત્ય આવ્હાહન વિસર્જન કરતો. પછી તે વિભૂતિએ શ્રીઠાકુરજી દ્વારા તે અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણને કહ્યું, કે આજ અમે ભૂખ્યા છીએ. ત્યારે તે અન્યમાર્ગીયે કહ્યું, ભૂખ્યા કેમ છો ? શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ક્ષત્રીએ ભોગ ધર્યો ને તમે કેમ ન આરોગ્યા ? ત્યારે તે વિભૂતિએ કહ્યુ, તે વૈષ્ણવે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું સ્મરણ કર્યું. તેથી તે આવીને આરોગ્યા. અમે તો પુરુષોત્તમની વિભૂતિ છીએ. તેથી પુરુષોત્તમ પધારીને આરોગે ત્યાં અમારી ગતિ નહીં. અમે તો મંત્રનું આવાહન કરે ત્યારે તે ભગવત પ્રતિમામાં પ્રવેશ કરી આરોગીએ. વિસર્જન કરે ત્યારે ચાલ્યા જઇએ. એ રીત અમારી છે. અને પુરુષોત્તમ મંત્રને આધીન નથી. એક પ્રેમને આધીન છે તેથી તે ક્ષત્રીને એવો પ્રેમ છે કે પુરુષોત્તમ આરોગવા પધારે છે. જ્યાં પુરુષોત્તમ પધારીને આરોગે છે ત્યાં અમારી ન ચાલે. ત્યારે તે અન્યમાર્ગીય ધૂપ-દીપ કરી નૈવેદ્ય ધરી પછી વૈષ્ણવ ક્ષત્રી પાસે આવ્યો. આવીને કહ્યું, તમે અમને પહેલાં શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થવાનું કહ્યું હતું તે અમે ન માન્યું તે ખોટું કર્યું. હવે અમને સેવક

कराय वैष्णव करो। आजु तुम मेरे घर रसोई करी, सो मेरे घर आजु पुरुषोत्तम पधारिकें आरोगे। तातें तुमारो वैष्णव धर्म सबतें बड़ो है। तब क्षत्री वैष्णव नें कही, श्रीआचार्यजी महाप्रभु कासी तें श्रीजगन्नाथरायजी कों पधारत हैं। सो दिन पांच सात में यहां पधारेंगे। तब सेवक होय वैष्णव ह्वजियो। मैं तो तुम सों पहले ही कही हती। तब तुमनें मानी नाहीं। अब श्रीठाकुरजी नें तुम पर कृपा करी।

भावप्रकाश—यामें यह जताये जो वैष्णव जाकों अंगीकार करनो विचारें ताकों श्रीठाकुरजी निश्चय कृपा करें। और जाके यहां वैष्णव एक दिन हू आयकें कछु अङ्गीकार करें सो श्रीठाकुरजी की बड़ी कृपा जाननी। भगवदीय अङ्गीकार कियें सो श्रीठाकुरजी नें किये जानने। तातें भगवदीय को संग कृतार्थ सब करें। यह सिद्धान्त प्रगट किये।

पाछें श्रीआचार्यजी पधारे सो वह क्षत्री वैष्णव के घर उतरे। तब वह क्षत्री वैष्णव उह अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कहें। श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वह अन्यमार्गीय श्रीआचार्यजी पास आय दंडोत करि विनती कियो, महाराज! मोकों सरनि लिजिये। कृपा करि मेरे घर पधारो। तब श्रीआचार्यजी वाके घर पधारि वह ब्राह्मण कों नाम निवेदन कराये। वाके सगरे कुटुंब कों नाम सुनायें।

કરાવી વૈષ્ણવ કરો આજ તમે મારા ઘરે રસોઈ કરી. તે મારા ઘરે આજ પુરુષોત્તમ પધારીને આરોગ્યા. તેથી તમારો વૈષ્ણવ ધર્મ સૌથી ઉત્તમ છે. ત્યારે ક્ષત્રી વૈષ્ણવે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કાશીથી શ્રીજગન્નાથરાયજી પધારે છે તે પાંચ સાત દિવસમાં અહીં પધારશે. ત્યારે સેવક થઇ વૈષ્ણવ થજે. હવે શ્રીઠાકુરજીએ તમારા ઉપર કૃપા કરી.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે વૈષ્ણવ જેનો અંગીકાર કરવાનું વિચારે તેને શ્રીઠાકુરજી નિશ્ચય કૃપા કરે. વળી જેને ત્યાં વૈષ્ણવ એક દિવસ પણ આવીને કંઇ અંગીકાર કરે તો શ્રીઠાકુરજીની મોટી કૃપા જાણવી. ભગવદીય અંગીકાર કરે તો શ્રીઠાકુરજીએ કર્યું જાણવુ. તેથી ભગવદીયનો સંગ કૃતાર્થ સર્વને કરે. આ સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો.

પછી શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા ત્યારે તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવના ઘરે ઉતર્યા. ત્યારે તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવ તે અન્યમાર્ગીય બ્રાહ્મણને કહે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા છે. ત્યારે તે અન્યમાર્ગીયે શ્રીઆચાર્યજી પાસ આવી દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મને શરણે લો. કૃપા કરી મારા ઘરે પધારો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી તેના ઘરે પધારી તે

पाछें वाके श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बेठारे। सामग्री करि भोग धरि आपु आरोगें। वा ब्राह्मण कों जूठन धरें। पाछें आपु जगन्नाथरायजी के दरसन कों पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे। सो वह अन्यमार्गीय, वह क्षत्री वैष्णव के संग तें भलो वैष्णव भयो। तातें क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥६४॥

भावप्रकाश—ताते सत्संग बड़ो पदार्थ है, सत्संग पूर्ण कृपोतें मिलें। ॥६४॥

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री कवी हते, सो कासी में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीनंदरायजी के घर के भाट हैं। इनको नाम लीला में उमाशंकर, सो कासी में एक क्षत्री के घर में जन्में। सो आठ वरष के भये। तब ही तें कवित्त-दोहा करते। सो राजा के, धन पात्र के, सेठ कें, ऐसें करते कवित्त। सो श्रीआचार्यजी कासी पधारे, सो मणिकर्णिका घाट ऊपर संध्यावंदन करत हते। कृष्णदास, सेठ पुरुषोत्तमदास आदि सगरे ठाड़े हे। तहां लघु पुरुषोत्तमदास कवि आये। तब सेठ पुषोत्तमदास डरपे, जो-यह धनपात्रन

બ્રાહ્મણને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. એના બધા કુટુંબને નામ સંભળાવ્યું. પછી એના શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડ્યા. સામગ્રી કરી ભોગ ધરી આપ આરોગ્યા. તે બ્રાહ્મણને જૂઠન ધરી. પછી આપ જગન્નાથરાયજીના દર્શને પુરુષોત્તમ ક્ષેત્ર પધાર્યા. પછી તે અન્યમાર્ગીય તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવના સંગથી સારો વૈષ્ણવ થયો. તેથી ક્ષત્રી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીનો એવો કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતો. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૬૪॥

ભાવપ્રકાશ—તેથી સત્સંગ મોટો પદાર્થ છે. સત્સંગ પૂર્ણ કૃપાથી મળે. ॥૬૪॥

⁂ ⁂ ⁂

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, લઘુ (નાના) પુરુષોત્તમ ક્ષત્રી કવિ હતા તે કાશીમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીનંદરાયજીના ઘરના ભાટ છે. એમનું નામ લીલામાં ઉમાશંકર. તે કાશીમાં એક ક્ષત્રીના ઘરમાં જન્મ્યા. પછી આઠ વર્ષના થયા. ત્યારથી તે કવિત્ત-દોહા કરતા. તે રાજાના ધનપાત્રના શેઠના એવાનાં કવિત્ત કરતા. પછી શ્રીઆચાર્યજી કાશી પધાર્યા તે મણિકર્ણિકા ઘાટ ઉપર સંધ્યાવંદન કરતા હતા. કૃષ્ણદાસ, શેઠ પુરુષોત્તમદાસ બધા ઉભા હતા. ત્યાં લઘુ

के कवित्त करत हैं, सो मेरो जस कहूं गावे तो श्रीआचार्यजी के आगें ठीक नाहीं। तब सेठ पुरुषोत्तमदास लघु पुरुषोत्तमदास के पास आयकें कह्यो, जो–या समय मेरो कवित्त दोहा मति करियो। तब लघु पुरुषोत्तमदास ने कही, फेर तुमसों हमसों मिलाप कहां होय ? मैं तो तिहारो कवित्त करन कों यहां आयो हों, सो करूंगो। तिहारे मन आवे तो कछू दीजो, मन आवे मति दीजो। पैसा देनो परे ताके लिये वरजत हो, जो–कवित्त मति करे। तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें रुपैया पांच देकें कह्यो, घर आइयो, और कछू देइगें। परन्तु या समय श्रीआचार्यजी हमारे गुरु संध्यावंदन करत हैं। तिनके आगें मेरो जस भूलिकें मति कहियो। तब लघु पुरुषोत्तमदास प्रसन्न होयके कहें, मैं और राजा के कवित्त श्रीआचार्यजी के आगें कहोंगो। तिहारो न कहूंगो। तब पुरुषोत्तमदास सेठ ने कही। मेरे कवित्त मति करियो, ओर को तो तुम जानों। तब लघु पुरुषोत्तमदास कवि श्रीआचार्यजी के पास जाय अनेक राजान के दस पांच कवित्त कहें। तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानि लघु पुरुषोत्तमदासकी ओर कृपा–दृष्टि करि कहें, लघु पुरुषोत्तमदास ! तू श्रीनंदरायजी के घर को भाट, चारन होय, श्रीठाकुरजी को जस छोड़ि राजसी

પુરૂષોત્તમદાસ કવિ આવ્યા. ત્યારે શેઠ પુરૂષોત્તમદાસ ડર્યા, કે આ ધનપાત્રોનાં કવિત્ત કરે છે. તે મારો યશ જો ગાશે તો શ્રીઆચાર્યજી આગળ ઠીક નહીં. ત્યારે શેઠ પુરૂષોત્તમદાસે લધુ પુરૂષોત્તમદાસ પાસે આવીને કહ્યુ, કે આ સમયે મારૂં કવિત કે દોહા ન કરતા. ત્યારે લધુ પુરૂષોત્તમદાસે કહ્યું, ફરી તમારો–અમારો મિલાપ કયાં થાય ? હુ તો તમારૂં કવિત્ત કરવાને અહીં આવ્યો છું. તમારા મનમાં આવે તો કંઈ આપજો. મનમાં આવે તો ન આપજો. પૈસા દેવા પડે તે માટે રોકો છો કે કવિત્ત ન કર. ત્યારે શેઠ પુરૂષોત્તમદાસે રૂપૈયા પાંચ આપીને કહ્યુ, ધર આવજે. બીજું પણ કંઈ દઇશુ. પરતુ આ વખતે શ્રીઆચાર્યજી અમારા ગુરૂ સધ્યાવંદન કરે છે તેમની આગળ મારો યશ ભૂલીને પણ ન કહેજે. ત્યારે લધુ પુરૂષોત્તમદાસ પ્રસન્ન થઇને કહે, હુ બીજા રાજાનાં કવિત્ત શ્રીઆચાર્યજીની આગળ કહીશ. તમારાં નહીં કહુ. ત્યારે પુરૂષોત્તમદાસ શેઠે કહ્યુ, મારાં કવિત્ત ન કરજો. બીજાનાં તમે જાણો. ત્યારે લધુ પુરૂષોત્તમદાસ કવિએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે જઈ અનેક રાજાઓનાં દશ-પાંચ કવિત્ત કહ્યાં ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દૈવી જીવ જાણીને લધુ પુરૂષોત્તમદાસની તરફ કૃપા દૃષ્ટિ કરીને કહ્યું, લધુ પુરૂષોત્તમદાસ ! તૂ શ્રીનંદરાયજીનો ભાટ થઈને ચારણ થઈ શ્રીઠાકુરજીનો યશ

लोगन को जस गावत हैं, सो आछो नाहीं। तू कवि है, चतुर है, राजान को एसो जस तू कह्यो सो कछु गुन इन राजान में हैं? अनेक रोग दुःख सों भरे हैं। मृतकवत् पापी, तिनको जस गाय मिथ्या भाषन किये सो आछो नाहीं। गायवे लायक एक श्रीठाकुरजी को जस है।

यह सुनत ही लघु पुरुषोत्तमदास कुं ज्ञान भयो। तब श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि बिनती करी। महाराज! सगरो जन्म योंही मिथ्या भाषन करि गमायो। अब मैं आपकी सरनि हौं, सो ऐसी कृपा करो जो सदा श्रीठाकुरजी को जस गाऊँ। मोकों श्रीठाकुरजी के जस को ज्ञान नाहीं। तातें राजसी लोगन को जस गायो। तब श्रीआचार्यजी कहें, गंगाजी में नहाय ले, हम तोकों समुझावें। तब लघु पुरुषोत्तमदास गंगाजी में स्नान करिकें श्रीआचार्यजी के पास आयो, तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय समर्पण करायो, अपनों चरणामृत दीनों। तब लघु पुरुषोत्तमदास कों श्रीठाकुरजी की लीला को ज्ञान भयो। श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो।

वार्ता-प्रसंग १—सो वे श्रीगोवर्धननाथजी के कवित्त और श्रीआचार्यजी के कवित्त एक सार करते। या प्रकार श्रीआचार्यजी कों

છોડી રાજસી લોકોનો યશ ગાય છે? તે ઠીક નહીં. તૂ કવિ છે ચતુર છે. રાજાઓનો આવો યશ તેં કહ્યો તે એ રાજાઓમાં એવા કઇ ગુણ છે? અનેક રોગ દુઃખોથી ભરેલા છે મૃતકવત્ પાપી તેમનો યશ ગાઇ મિથ્યા ભાષણ કર્યું તે ઠીક નહીં. ગાવા લાયક એક શ્રીઠાકુરજીનો યશ છે. એ સાંભળતાંજ લઘુ પુરૂષોત્તમદાસને જ્ઞાન થયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દંડવત કરી વિનતી કરી, મહારાજ! બધો જન્મ એમજ મિથ્યા ભાષણ કરી ખોયો. હવે હું આપની શરણે છુ. તો એવી કૃપા કરો કે સદા શ્રીઠાકુરજીનો યશ ગાઉં. મને શ્રીઠાકુરજીના યશનું જ્ઞાન નથી. તેથી રાજસી લોકોનો યશ ગાયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે ગંગાજીમાં ન્હાઇ લે. અમે તને સમજાવીશું. ત્યારે લઘુ પુરૂષોત્તમદાસ ગંગામાં સ્નાન કરીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી સમર્પણ કરાવ્યું. પોતાનું ચરણામૃત આપ્યું. ત્યારે લઘુ પુરૂષોત્તમદાસને શ્રીઠાકુરજીની લીલાનું જ્ઞાન થયુ. શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયુ.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં કવિત્ત અને શ્રીઆચાર્યજીનાં કવિત્ત એક સરખાં કરતા. એ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીને સાક્ષાત્ પુરૂષોત્તમ જાણવા લાગ્યા.

साक्षात् पुरुषोत्तम जानन लागे । ता दिन तें राजा आदि धनपात्र के यहां जानो, उनके कवित्त कहनो सब, छोड़ि दियो । सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । सदा भगवान की लीला रस में मग्न रहतें । सो या प्रकार श्रीआचार्यजी नें लघु पुरुषोत्तमदास पर कृपा करी । तातें लघु पुरुषोत्तमदास बड़े भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये । वार्ता ॥६५॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कविराज भाट, सनोढ़िया ब्राह्मण, मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में कविराज शांडिल्य मुनि, श्रीनंदरायजी के पुरोहित हैं । सो मथुरा में एक पुरोहित के घर जनमें । सो तीन भाई हते, तामें दोय भाई तो मूर्ख हते । कविराज देवी देवतान के कवित्त, राजान के कवित्त पढ़ि निर्वाह करते । तातें सब कोई इनकों कविराज भाट कहतें । सो मथुरा में विश्रान्त घाट पर कवित्त ये कहते ।

वार्ता-प्रसंग १—**सो एक दिन वे विश्रांत पें भूतेश्वर महादेव के कवित्त करिकें कहत हे, ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु महावन तें मथुरा पधारे । सो विश्रांत घाट पर संध्यावंदन करत हे, ता समय कविराज भाट कों श्रीआचार्यजी के दरसन भये । तब कविराज भाट**

તે દિવસથી રાજા આદિ ધનપાત્રને ત્યાં જવું, એમનાં કવિત્ત કહેવા બધું છોડી દીધું. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. સદા ભગવલ્લીલા રસમાં મગન રહેતા. એ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીએ લઘુ પુરૂષોત્તમદાસ ઉપર કૃપા કરી. તેથી લઘુ પુરૂષોત્તમદાસ મહાન ભગવદીય હતા તેમની વાર્તા ક્યાંસુધી કહિયે વા.॥૬૫॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક, કવિરાજ ભાટ, સનોઢીયા બ્રાહ્મણ, મથુરામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં કવિરાજ શાંડિલ્યમુનિ શ્રીનંદરાયજીના પુરોહિત છે. તે મથુરામાં એક પુરોહિતના ઘરે જન્મ્યા. તે ત્રણ ભાઈ હતા. તેમાં બે ભાઈ તો મૂર્ખ હતા. કવિરાજ દેવી, દેવતાનાં કવિત્ત રાજાનાં કવિત્ત ભણી નિર્વાહ કરતા. તેથી સહુ કોઈ એમને કવિરાજ ભાટ કહેતા. તે મથુરામાં વિશ્રાન્ત ઘાટ ઉપર એ કવિત્ત કહેતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એક દિવસ તે વિશ્રાંત ઉપર ભૂતેશ્વર મહાદેવનાં કવિત્ત કરીને કહેતા હતા. તે સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ મહાવનથી મથુરા પધાર્યા. ત્યારે વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર સંધ્યાવંદન કરતા હતા તે સમયે કવિરાજ ભાટને શ્રીઆચાર્યજીનાં

नें जानी, जो–ये बड़े पंडित से दीसत हैं। तातें इनसों कछू पूछों। तब कविराज भाट श्रीआचार्यजीके पास आय दंडवत करि एक प्रश्न कियो, महाराज! देवी बड़ी के महादेव बड़े? तब श्रीआचार्यजी कहे, शास्त्र रीति सों श्रीठाकुरजी बड़े, और जाके मन में जो निश्चय बड़ो मान्यो ताकों सोई बड़ो। तब कविराज भाट नें कही, महाराज! श्रीठाकुरजी में और महादेवजी में कहा भेद है? ईश्वर दोऊ कहावत हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, श्रीभागवत में कहे हैं, जो–जब भगवान् मोहिनी रूप धरे, तब महादेव मोहित भये। और महादेव कोई रूप धरे परन्तु श्रीठाकुरजी कों मोहित न करे। तातें भगवान् के आधीन महादेव हैं। महादेव के आधीन भगवान् नाहीं हैं, इतनो तारतम्य है।

या प्रकार बचन श्रीआचार्यजीने श्रीमुखसों कहे सो सुने। सो कविराज भाट की बुद्धि निर्मल ह्वै गई। तब कविराज दंडवत करि विनती कियो, महाराज! मोकों सरनि लीजिये। काहे तें, एक क्षण आपुके पास बैठे तें, बतरायेतें श्रीठाकुरजी में मन लाग्यो, सो आपुको सेवक होय कछुक दिन आपको संग करूंगो तो निश्चय श्रीठाकुरजी मोपर प्रसन्न होंयगे। तातें मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कविराज हो, कवित्त करत हो, सो सेवक होय कहा करोगे?

દર્શન થયાં ત્યારે કવિરાજ ભાટે જાણ્યું, કે આ મોટા પંડિત જેવા દેખાય છે તેથી એમનાથી કંઇ પૂછું. ત્યારે કવિરાજ ભાટે શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવી દંડવત્ કરી એક પ્રશ્ન કર્યો, મહારાજ! દેવી મોટી કે મહાદેવ મોટા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, શાસ્ત્ર રીતિથી શ્રીઠાકુરજી મોટા અને જેના મનમાં જે નિશ્ચય જેને મોટા માન્યા તેને માટે તે મોટો. ત્યારે કવિરાજ ભાટે કહ્યું, મહારાજ! શ્રીઠાકુરજીમાં અને શ્રીમહાદેવજીમાં શો ભેદ છે? ઇશ્વર બન્ને કહેવાય છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, શ્રીભાગવતમાં કહે છે, કે જ્યારે ભગવાને મોહનીરૂપ ધર્યું ત્યારે મહાદેવજી મોહિત થયા અને મહાદેવજી કોઇરૂપ ધરે પરંતુ શ્રીઠાકુરજીને મોહિત ન કરી શકે. તેથી ભગવાનને આધીન મહાદેવ છે. મહાદેવને આધીન ભગવાન નથી એટલું તારતમ્ય છે.

આ પ્રકારનાં વચન શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી કહ્યાં તે સાંભળ્યાં. તેથી કવિરાજ ભાટની બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઇ, ત્યારે કવિરાજે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી, મહારાજ! મને શરણે લો. કેમકે એક ક્ષણ આપની પાસે બેસવાથી વાતો કરવાથી શ્રીઠાકુરજીમાં મન લાગ્યું. તો આપનો સેવક થઈ કેટલાક દિવસ આપનો સંગ કરીશ તો નિશ્ચય શ્રીઠાકુરજી મારા ઉપર પ્રસન્ન થશે. તેથી મને સેવક કરો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે,

तब कविराज नें कही, महाराज ! आपुके संग बिना योंही भटकत हतो, कछू ज्ञान तो हतो नाहीं । तातें अनेक देवतान के गुन, श्रीठाकुरजी के छोड़ि कें, गावत हतो । अब मोपर आपु कृपा करो, जो-सदा श्रीठाकुरजी के गुन गाऊँ । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो हम अड़ेल पधारत हैं, तहां तीनों भाई सहित अइयो, सो तहां सेवक करेंगे । यह कहि श्रीआचार्यजी अड़ेल पधारे ।

भावप्रकाश—सो यातें जो याकी पूर्व प्रीति सेवक होयवे की होयगी, जब तो आयकें सेवक होयगो । प्रीति बिना अंगीकार न होय । तातें श्रीआचार्यजी अडेल आयवे की कही । सो आपु तो अड़ेल पधारे ।

तब कविराज अपने दोऊ भाईन सों कह्यो, अड़ेल चलि श्री-आचार्यजी के सेवक ह्वै आवें । तब तीनों भाई अड़ेल चले । सो कछुक दिन में जाय पहुँचे । तब श्रीआचार्यजी कहे, न्हाय आवो । तब तीनों जने नहाय आये । तब श्रीआचार्यजी कविराज भाट कों नाम निवेदन कराये । और दोऊ भाईन कों नाम सुनायो । तब कविराज भाट नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! हम आगें पूर्व जन्म में कौन हे, सो ऐसे यहां श्रीठाकुरजी कों भूलि संसार में भटकें ? तब

તમે કવિરાજ છો કવિત્ત કરો છો. તે સેવક થઇને શું કરશો ? ત્યારે કવિરાજે કહ્યું, મહારાજ ! આપના સંગ વિના એમજ ભટકતો હતો. કંઇ જ્ઞાન તો હતું નહીં. શ્રીઠાકુરજીને છોડીને તેથી અનેક દેવતાઓના ગુણ ગાતો હતો. હવ મારા ઉપર આપ કૃપા કરી કે સદા શ્રીઠાકુરજીના ગુણ ગાઉં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તો અમે અડેલ પધારીએ છીએ. ત્યાં તમે ત્રણે ભાઈ સાથે આવજો. પછી ત્યાં સેવક કરીશું. એમ કહી શ્રીઆચાર્યજી અડેલ પધાર્યા.

ભાવપ્રકાશ—તે એ માટે, કે જો એની પ્રીતિ સેવક થવાની હશે તો તો આવીને સેવક થશે પ્રીતિ વિના અંગીકાર નહીં. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ અડેલ આવવાને કહ્યું. પછી આપ તો અડેલ પધાર્યા.

ત્યારે કવિરાજે પોતાના બન્ને ભાઇઓને કહ્યું કે, અડેલ ચાલી શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ આવીએ. ત્યારે ત્રણે ભાઇ અડેલ ચાલ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં જઇ પહોચ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ન્હાઇ આવો. ત્યારે ત્રણે જણ ન્હાઇને આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કવિરાજ ભાટને નામ-નિવેદન કરાવ્યું અને બન્ને ભાઇઓને નામ સંભળાવ્યું. પછી કવિરાજ ભાટે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ ! અમે આગળ પૂર્વજન્મમાં કોણ હતા ? તે આમ શ્રીઠાકુરજીને ભૂલીને સંસારમાં

श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीनंदरायजी के मुख्य पुरोहित हो, भक्ति सूत्र तो तुमही प्रगट किये हो। यह भक्तिमारग द्रढ़ तो तिहारे किये सूत्र की साखितें जगत में प्रसिद्ध है। सो तुम सगरे मुनीन में श्रेष्ठ हो। सो एक समय तुमकों अहंकार भयो, जो-भक्तिमारग कों मैं बहोत जानत हों। तब विश्वामित्र शाप दियो। जो-भूमि पर गिरो, मूर्ख होऊ। तातें तिहारो जन्म भूमि में भयो। अब देह छोड़ि फेरि शांडिल्य मुनि होंऊगे। तब कविराज दंडवत करि विदा होयके फेरि मथुरा आये। सो सरनि आय गोवर्द्धन पर जाय श्रीनाथजी के दरसन करि सन्मुख कवित्त किये। पाछें आचार्यजी के, श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के कवित्त बहोत किये। सो लीला रस में मग्न भये। सो कविराज भाट ऐसे भगवदीय भये। श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र हे। इनके संगतें उन दोऊ भाईन को उद्धार भयो। तातें कविराज की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥६६॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक, गोपालदास ईंटोड़ा क्षत्री, सो ये पच्छिम में पंजाब में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में ये ललिताजी की सखी हैं। 'नृत्य-कला'

ભટક્યા ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે શ્રીનંદરાયજીના મુખ્ય પુરોહિત છો. ભક્તિ-સૂત્ર તો તમેજ પ્રકટ કર્યાં છે. આ ભક્તિમાર્ગ દૃઢ તો તમારાં કહેલાં સૂત્રની સાક્ષીથી જગતમાં પ્રસિદ્ધ છે. તેથી તમે બધા મુનિઓમાં શ્રેષ્ઠ છો. પછી એક સમય તમને અહંકાર થયોકે ભક્તિમાર્ગને હું બહુ જાણું છું. ત્યારે વિશ્વામિત્રે શ્રાપ આપ્યો કે ભૂમિ ઉપર પડો. મૂર્ખ થાવ. ત્યારે તમારો જન્મ ભૂમિ ઉપર થયો. હવે દેહ છોડી ફરી શાંડિલ્ય-મુનિ થશો. ત્યારે કવિરાજ દંડવત કરી વિદાય થઈને ફરી મથુરાજી આવ્યા. પછી શરણે આવી ગોવર્દ્ધન ઉપર જઈ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી સન્મુખ કવિત્ત કર્યાં. પછી શ્રીઆ-ચાર્યજીનાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં કવિત્ત ઘણાં કર્યાં. તે લીલા-રસમાં મગન થયા. એ કવિરાજ ભાટ એવા ભગવદીય થયા. શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર હતા. એમના સંગથી એમનાબે ભાઈઓનો ઉદ્ધાર થયો. તેથી કવિરાજની વાર્તા ક્યાં સુધી કહિએ.

વાર્તા ॥ ૬૬ ॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક ગોપાળદાસ ઈંડોટા ક્ષત્રી, તે પશ્ચિ-મમાં પંજાબમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ લલિતાજીની સખી છે. 'નૃત્યકલા' એનું

इनको नाम है लीला में। सो इनकों एक समय मद भयो। जो संगीत को गान मोकों आवत हैं। ऐसो काहू सखीकों ललिताजी कों हू नाहीं आवत हैं। यह मन में आवत ही ललिताजी नें कही। जा मूर्ख भूमि में जन्म। ता अपराध तें पच्छिम में एक क्षत्री के जनमें। पाछे बड़े भये। तब मन में आई, जो–व्रज की जात्रा और पिता की गया हू करि आवें। यह विचारि पच्छिम तें चले सो व्रज में आये। सो मथुरा न्हाय कासी कों चले। सो कासी जाय गया में पिता श्राद्ध करि पाछें कासी आये। सो कासी तें मथुरा कों चले। तब मार्ग में श्रीआचार्यजी को संग भयो। सो एक मजलि में छोटो गाम हतो तहां उतरे। सो रात्रि कों डाको तहां पर्यो। गोपालदास के हाथ में रंच तीर लग्यो। वस्तु भाव सब लूटि गई। पाछे श्रीआचार्यजी सबेरे कहें, गोपालदास कहा खबरि है, तब वाने कही, महाराज! खरची, वासन, वस्तू सगरी गई, ताकी तो चिन्ता नाहीं। आगरे ते हूंडी कर घर सों मंगाय लेऊँगो। परन्तु दोय चारि दिनमें आगरे खरची बिना कैसे पहोचोंगो, यह चिन्ता है। और हाथ में रंच लागी है सो आछो होय जायगो। तब श्रीआचार्यजी नें कही, प्रारब्ध भोग मिट्यो, अब चिन्ता मति करो। खरची चाहिये सो कृष्णदास सों लीजो। तब गोपालदास ने कही, महाराज! प्रारब्ध भाग

નામ છે, લીલામાં. એને એક સમય મદ થયો કે, મને સંગીતનું જ્ઞાન આવડે છે એવું કોઈ સખીને, લલિતાજીને પણ નથી આવડતું. આ મનમાં આવતાં જ લલિતાજીએ કહ્યુ, જા મૂર્ખ ! ભૂમિમાં જન્મ. તે અપરાધથી પશ્ચિમમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. પછી મોટા થયા ત્યારે મનમાં આવ્યું કે, વ્રજની યાત્રા અને પિતાની ગયા પણ કરી આવું. એમ વિચારી પશ્ચિમથી ચાલ્યા તે વ્રજમાં આવ્યા. પછી મથુરા ન્હાઈ કાશીએ ચાલ્યા. પછી કાશીથી ગયા જઈ પિતાનુ શ્રાદ્ધ કરી પાછા કાશી આવ્યા. તે કાશીથી મથુરા ચાલ્યા. ત્યારે માર્ગમાં શ્રીઆચાર્યજીનો સંગ થયો. ત્યાં એક મુકામે નાનુ ગામ હતું ત્યાં ઉતર્યા. ત્યાં રાત્રિએ ધાડ પડી. તેથી ગોપાલદાસના હાથમાં રચક તીર લાગ્યું. વસ્તુ ભાવ બધી લુંટાઈ ગઈ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ સવારે કહ્યું, ગોપાલદાસ ! શી ખબર છે ? ત્યારે તેણે કહ્યુ, મહારાજ ! ખર્ચી, વાસણ, વસ્તૂ બધી ગઈ. તેની તો ચિંતા નથી. આગરાથી હુંડી કરી ઘરથી મગાવી લઈશ. પરંતુ બે ચાર દિવસમાં આગ્રા ખર્ચી વિના કેવી રીતે પહોંચીશ એ ચિંતા છે. વળી હાથમાં રચક લાગ્યું છે તે સારૂં થઈ જશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, પ્રારબ્ધ ભોગ મટ્યો. હવે ચિંતા ન કરો. ખર્ચી જોઇએ

कैसो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, बरस दस याही बात कों भये। तू रात्रि कों एक गाम जात हतो। सो मार्ग में और चोर और ठोर तें चोरी करि जात हते। सो तू उनकों पकरि कें बहोत मारयो, उन की वस्तू छीनि लीनी ताको पलटो भयो। तेरी वस्तू गई, और चोट तोकों लागी। तोकों सुधि हैं ? तब गोपालदास कहें, महाराज! ठीक हैं। या बात कों दस बरष भये। पाछें कृष्णदास सों रुपैया ५) ले चले। तब गोपालदास अपने मन में विचारें, जो-श्रीआचार्यजी साक्षात् ईश्वर हैं। दस बरस की बात मेरे देस की सब बताय दीनी। तातें इनको मैं सेवक होऊं तो कृतार्थता होय! यह विचार करि श्रीआचार्यजी सों बिनती कियें, महाराज! मोकों कृपा करि सरनि लीजिये। और मेरो संसार-दुःख छूटे, ऐसो अनुग्रह करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, आगरे में चलो। तहां तुमकों नाम सुनावेंगे। तब गोपालदास नें बिनती करी, महाराज! मोकों विश्वास नाहीं हैं। एक क्षण में देह छूटि जाय तो मैं आपुकों कहाँ पाऊँ ? फेरि सरनि कब मिलें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, स्नान करि आऊँ। तब गोपालदास न्हाय आयें। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराये। तब गोपालदास नें बिनती करी, महाराज! मैं महामूर्ख हूँ। कछु

તે કૃષ્ણદાસથી લેજે. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, મહારાજ! પ્રારબ્ધ ભોગ કેવો ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, આ વાતને દશ વર્ષ થયાં. તૂ રાત્રિએ એક ગામ જતો હતો અને માર્ગમાં બીજો ચોર બીજી જગાએથી ચોરી કરી જતો હતો. તેં એને પકડીને બહુ માર્યો. એની વસ્તુ ઝૂંટવી લીધી તેનો બદલો મળ્યો. તારી વસ્તુ ગઈ અને ચોટ તને લાગી. તને યાદ છે ? ત્યારે ગોપાલદાસ કહે, મહારાજ! બરોબર છે. એ વાતને દશ વર્ષ થયાં. પછી કૃષ્ણદાસથી પાંચ રૂપીયા લઇને ચાલ્યા. ત્યારે ગોપાલદાસ પોતાના મનમાં વિચારે, કે શ્રીઆચાર્યજી સાક્ષાત્ ઈશ્વર છે. દશ વર્ષની વાત મારા દેશની બધી બતાવી દીધી. તેથી એમનો હું સેવક થઉં તો કૃતાર્થતા થાય. એમ વિચાર કરીને શ્રીઆચાર્યજીથી વિનંતી કરી, મહારાજ! મને કૃપા કરી શરણે લો અને મારૂ સંસાર-દુઃખ છુટે એવો અનુગ્રહ કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આગ્રામાં ચાલો. ત્યાં તમને નામ સંભળાવીશુ. ત્યારે ગોપાલદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ! મને વિશ્વાસ નથી. એક ક્ષણમાં દેહ છુટી જાય તો હું આપને ક્યાંથી મેળવું ? ફરી શરણ કયારે મળે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, સ્નાન કરી આવો. ત્યારે ગોપાલદાસ ન્હાઈ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. ત્યારે ગોપાલદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ! હું મહા મૂર્ખ છું. કંઈ આપના

आपको प्रकार मार्ग को जानत नाहीं। सो मोकों ऐसी कृपा करो, जो–पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त हृदयारूढ़ होय। और आपुके स्वरूप को कछू ज्ञान होय। तब श्री-आचार्यजी अपने चरणारविंद को चरणामृत दीनो। और "सिद्धान्त रहस्य" ग्रन्थ पढ़ायें। तब गोपालदास के हृदय में पुष्टिमारग के सिद्धान्त को भाव हृदयारूढ़ भयो। श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। तब गोपालदास दंडवत करि चोखरा छंद बहोत बरनन कियें। तब श्रीआचार्यजी कहें। गोपालदास तुम पर श्री-ठाकुरजी की कृपा भई। तब गोपालदास दंडवत करि कहें, मैं तो श्रीठाकुरजी को नाम हूं कबहूँ नाहीं लियो। सो श्रीठाकुरजी मोकों कहा जानें? यह सब आपु की कृपा हैं। जो मो सारिखे अधमन कों सरनि ले एसो दान दिये। तब श्री-आचार्यजी गोपालदास की दैन्यता देखि प्रसन्न भये। जो या प्रकार वैष्णव कों दैन्यता चहियें। श्रीआचार्यजी के संग गोपालदास आगरे आये। पाछे ब्रज में संग रहें। श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन करि श्रीआचार्यजी सों विदा होय पंजाब गये। सो चोखरा गान करि मगन रहतें।

वार्ता–प्रसंग १—**और एक समय गोपालदास श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल आये। सो श्रीआचार्यजी को जनम दिन आयो। सो केसर सों न्हाय मार्कण्डेय पूजा करन कों विराजें। ता समय**

માર્ગનો પ્રકાર જાણતો નથી. તેથી મને એવી કૃપા કરો કે પુષ્ટિમાર્ગનો સિદ્ધાંત હૃદયારૂઢ થાય અને આપના સ્વરૂપનું કંઈ જ્ઞાન થાય. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાના ચરણારવિંદનું ચરણામૃત આપ્યું. અને 'સિદ્ધાન્તરહસ્ય' ગ્રંથ ભણાવ્યો. ત્યારે ગોપાલદાસના હૃદયમાં પુષ્ટિમાર્ગના સિદ્ધાંતનો ભાવ હૃદયારૂઢ થયો. શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે ગોપાલદાસે દંડવત્ કરીને ચોખરા–છંદ પદ ઘણાં વર્ણન કર્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ગોપાલદાસ! તમારા ઉપર શ્રીઠાકુરજીની કૃપા થઈ. ત્યારે ગોપાલદાસ દંડવત્ કરીને કહે, મેં તો શ્રીઠાકુરજીનું નામ ક્યારેય લીધું નથી. તેથી શ્રીઠાકુરજી મને શું જાણે? આ બધી આપની કૃપા છે, કે મારા સરખા અધમને શરણે લઈ આવું દાન કર્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ગોપાલદાસની દીનતા જોઈ પ્રસન્ન થયા, કે આ પ્રકારે વૈષ્ણવોને દીનતા જોઇએ. પછી શ્રીઆચાર્યજીના સંગે ગોપાલદાસ આગ્રા આવ્યા. પછી વ્રજમાં સંગ રહ્યા. શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન કરી શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય થઈ પંજાબ ગયા. તે ચોખરા–ગાન કરીને મગ્ન રહેતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-વળી એક સમય ગોપાલદાસ શ્રીઆચાર્યના દર્શને અડેલ

गोपालदास यह चोखरा, छंद विलावल राग में गाये-

" माधव मासें भरि वैसाखे, श्रीवल्लभ हरि जनम लियो । "

छंद-प्रगटिया जिन भक्तिमारग बंध जीव छुडाईयां । संसार ते जे मुक्त कीने शरन जो जन आइयां ॥ अभयदान निशान मेले चित्त जिन हरिकों दिया । गोपालदास अनतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ १ ॥ दाता मुक्ता और न दूजा, साँचा त्रिभुवनराय वहां । विरह निवारणा भवजल तारणा देखत उपजे चाव जहां ॥ छंद-देखत हरिकों चाव उपजे सकल दुःख निवार ही । जाकौ नाम सुमरे जरे पातक कर जोर निगम पुकार ही ॥ पतितपावन विरद जाकौ शील माधौ कर मया । 'गोपालदास' अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥२॥ ये व्रजबालियाँ गोप गुवालियाँ ये गोकुल के लोग उहाँ । ये वन क्रीडा, हरिमुख व्रीडा हरि सेवा रस भोग वहां । ॥ छंद ॥ रसभोग और संयोग मिलि यों हिये अंतर रम रह्या । तुव बालचरित्र अनंतलीला दान दे सब गुन कह्या ॥ तेरी भली मूरति देखि सूरति राधिका अंचल गह्या । 'गोपालदास' अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ३ ॥ पूरनब्रह्म सनातन माधो कलि केशव अवतार वहां । जिन जैसा देखा तिन तैसा पेखा भक्तन प्रान आधार वहां ॥ छंद-भक्तन प्रान आधार श्रीवल्लभ हिये अंतर राखिया । रामकृष्ण मुकुद माधो सदा जिह्वा भाखिया । गोपीनाथ अनाथ बधु वेद में करुणामया । 'गोपालदास' अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ४ ॥

यह चोखरा सुनिकें श्रीआचार्यजी गोपालदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । सो गोपालदास ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये । वार्ता ॥६७॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री थानेस्वर के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जनार्दनदास लीला में कुमारिका के जूथ में हैं । लीला में इनको नाम 'कृष्णावती' हैं । सो थानेस्वर में एक क्षत्री के घर जनमें ।

આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીનો જન્મદિન હતો. તે કેશરથી ન્હાઈ માર્કંડેય પૂજા કરવા માટે બિરાજ્યા. તે સમયે ગોપાલદાસે આ ચોખરો-છંદ બિલાવલ રાગમાં ગાયો- 'માધવ માસે ભરિ વૈશાખે' (ઉપર જુઓ) એ ચોખરો સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી ગોપાલદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા. તે ગોપાલદાસ શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર એવા ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૬૭॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, જનાર્દનદાસ ચોપડા ક્ષત્રી થાનેશ્વરના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ જનાર્દનદાસ લીલામાં કુમારિકાના યૂથમાં છે લીલામાં

सो इनको पिता शस्त्र बांधिकें थानेस्वर के हाकिम पास चाकरी करतो। सो वह हाकिम एक दूसरे हाकिम पास लरन कों चढ्यो। ता समय जनार्दनदास को पिता शस्त्र लेके चढ्यो। सो जनार्दनदास को पिता कायर बहोत हतो। सो जब लराई होन लागी, तब जनार्दनदास को पिता डरपिकें भाज्यो। सो घर में आय जनार्दन-दास वर्ष सोरह के हते, तिनसों कह्यो, मैं युद्ध में ते भाजि आयो, सो हाकिम आयकें मोकों मारेगो। तब जनार्दनदास नें पिता सों कही। जो तुमनें बुरी करी, क्षत्री होय रण सों भाजें ? परन्तु अब या देस में रहनों कठिन हैं। तब जनार्दनदास के पिता नें कही। मैं पूर्व कासी कों निकसि जात हों। यह कहिकें जनार्दनदास को पिता निकस्यो। सो पूर्व होय दक्षिण कों निकसि गयो। यहां जनार्दनदास के पिता के भाजें फोज भाजी, सो हाकिम हू भाज्यो। पाछे मामला तै करिकें थानेस्वर में आयो। तब सगरे सिपाईन सों पूछ्यो, जो–पहिलें कोन भाज्यो ? तब सबन ने कही, जो–जनार्दनदास को पिता भाज्यो। तब उह हाकिम नें कही, जो–वाकों मेरे आगें पकरि लावो। तब प्यादे घर आयें। सो जनार्दनदास कों ले गये। तब हाकिम नें कही। तेरे पिता कों बताव, कहां हैं। उह रन में ते भाज्यो सो मेरी सगरी फोज बिचरि आई। तातें वाकों मारूंगो। पिता कूं न बतावेगो

એમનું નામ ' કૃષ્ણાવતી ' છે. તે થાનેશ્વરમાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. તેમનો પિતા શસ્ત્ર બાંધીને થાનેશ્વરના હાકિમ પાસ ચાકરી કરતો. તે હાકિમ એક બીજા હાકિમ પાસે લડવાને ચઢ્યો. તે સમય જનાર્દનદાસનો પિતા શસ્ત્ર લઇને ચઢ્યો પણ જનાર્દનદાસનો પિતા કાયર ઘણો હતો. તે જ્યારે લડાઇ થવા લાગી ત્યારે જનાર્દનદાસનો પિતા ડરીને ભાગ્યો. તેણે ઘરમાં આવી સોળ વર્ષના જનાર્દનદાસ હતા તેમને કહ્યું, હું યુદ્ધમાંથી ભાગી આવ્યો છુ. તેથી હાકિમ આવીને મને મારશે. ત્યારે જનાર્દનદાસે પિતાને કહ્યુ, કે તમે ખોટું કર્યું. ક્ષત્રી થઈ રણમાંથી ભાગ્યા. પરંતુ હવે આ દેશમાં રહેવુ કઠિણ છે. ત્યારે જનાર્દનદાસના પિતાએ કહ્યુ, હું પૂર્વ (તરફ) કાશીએ નિકળી જઉં છુ. એમ કહીને જનાર્દનદાસનો પિતા નિકળ્યો. તે પૂર્વ થઈ દક્ષિણ તરફ નિકળી ગયો. અહી જનાર્દનદાસના પિતાના ભાગવાથી ફોજ ભાગી તેથી હાકીમ પણ ભાગ્યો. પછી મામલો થાળે પાડી થાનેશ્વરમાં આવ્યો. ત્યારે બધા સિપાઇઓને પૂછ્યું, કે પહેલુ કોણ ભાગ્યુ ? ત્યારે બધાએ કહ્યુ, કે જનાર્દનદાસનો પિતા ભાગ્યો. ત્યારે તે હાકીમે કહ્યું, કે એને મારી આગળ પકડી લાવો. પછી સિપાઇઓ ઘર આવ્યા. તે જનાર્દનદાસને લઈ ગયા. ત્યારે હાકેમે કહ્યું, તારા પિતાને બતાવ કયાં છે ? એ રણમાંથી ભાગ્યો તેથી મારી બધી ફોજ

तो तोकूं मारूंगो। तब जनार्दनदास नें कही, जो–मेरो पिता भाजिकें घर आयो। सो तुम्हारो भय करि पूर्व कासी को नाम लेकें भाजि गयो। और मैं तुम्हारें आगे हौं, चाहो सो करो। तब हाकिम नें कही झूंठो है। पिता को कहूँ छिपाइ राख्यो हैं। तब जनार्दनदास नें कही मैं छिपायो होय तो या बात को मुचरका लिखों। मैं झूंठ नाहीं कहत। तब वह हाकिम नें इनकों बंदीखाने दीनों। सो बंदीखाने में डारत ही संध्या समय हाकिम के घर में आगि लागि। वह हाकिम को बेटा, वहू, सगरो कुटुम्ब जरि मर्यो, अब अकेलो रह्यो। तब वह हाकिम के मन में आई, जो–मैं बुरी करी। जो जनार्दनदास कों बंदीखाने में डार्यो। याकों बिना दोष में दंड दियो, ताको फल पायो। तब हाकिम जनार्दनदास कों बुलायो, कह्यो, मैं तोकों बिना दोष दंड दियो। तेरो पिता भाज्यो, तामें तू कहा करें? सो मेरो कुटुम्ब सब नास भयो। अब तू अपनें पिता कों बुलाव। मैं कछु न कहूँगो। होनहार हती सो भई। और तोकुं बिश्वास न आवे तो गाम के दस भले मनुष्यन के आगें लिखि देऊ। पाछे गाम के प्रमानिक सेठ बुलाय हाकिम नें लिखि दीनों, जनार्दनदास को पिता घर में आवें। मोसों कछू दावो नाहीं। कछू कहूँ तो पंचन में

રણુમાંથી વિખરાઈ ગઈ. તેથી એને મારીશ. પિતાને નહીં બતાવે તો તને મારીશ. ત્યારે જનાર્દનદાસે કહ્યું, કે મારો પિતા ભાગીને ઘર આવ્યો. તે તમારાથી ભય કરીને પૂર્વ કાશીનું નામ લઈ ભાગી ગયો છે અને હું તમારી આગળ છું. હવે તે કરો. ત્યારે હાકીમે કહ્યું, તૂ જૂઠો છું. પિતાને કંઈ સંતાડી રાખ્યો છે. ત્યારે જનાર્દનદાસે કહ્યું, મે સંતાડી રાખ્યો હોય તો આ વાતનો 'મુચરકો' (અદાલતી પ્રતિજ્ઞાપત્ર) લખું. હું જુઠું નથી કહેતો. ત્યારે તે હાકીમે જનાર્દનદાસને બંદીખાનામાં મૂક્યા. પછી બંદીખાનામાં મૂકતાં જ હાકીમના ઘરમાં આગ લાગી. તેથી હાકેમના પુત્ર, વહુ, બધું કુટુંબ બળી ગયું. હાકેમ એકલો રહ્યો. ત્યારે હાકમના મનમાં આવ્યું, કે મેં ખોટું કર્યું, જે જનાર્દનદાસને બંદીખાને નાખ્યો. એને વિના દોષ મેં દંડ આપ્યો. તેનું ફલ મળ્યું. ત્યારે હાકેમે જનાર્દનદાસને બોલાવ્યો, કહ્યું, મેં તને વિના દોષ દંડ દીધો. તારો પિતા ભાગ્યો, તેમાં તૂ શું કરે? તેથી મારૂં કુટુંબ બધું નાશ થયું. હવે તૂ તારા પિતાને બોલાવ. હું કંઈ નહી કહુ. થવા કાળ હતું તે થયું અને તને વિશ્વાસ ન આવે તો ગામના દશ ભલા માણસોની આગળ લખી દઉં. પછી ગામના પ્રામાણિક શેઠને બોલાવી હાકિમે લખી દીધું. જનાર્દનદાસનો પિતા ઘરમાં આવે તો મારે એને કંઈ દાવો નહી. કંઈ કહુ તો પાંચમાં જૂઠો. પછી

झूंठो। पाछे जनार्दनदास के पिता की चाकरी के पैसा बहोत दिनकें बाकी हते सो जनार्दनदास कों दिये। जनार्दनदास घर आय विचारें, अब पिताकों घर लावनों, कहा उपाय करूं? पाछे यह विचारे जो–कासी के आसपास होयगो, मैं जायकें लिवाय लाऊँ। नाहीं तो वह कबहूँ न आवेंगो। यह विचारि जनार्दनदास थानेस्वर सों चले। सो आगरे आये। पाछे आगरे तें चलें, तब मार्ग में दोय मोहोर परी पाये। सो लेकें मन में प्रसन्न भये। मोकूं सगुन तो आछो भयो, जो–सुवर्ण पायो। पाछे उहां ते दोय मजलि चले आगें, तब वासुदेवदास छकड़ा मिलें। तिनसों जनार्दनदास पूछें, जो–मेरे पिता कहूँ देखे? तब वासुदेवदास छकड़ा ने कही जो–मैं तेरो पिता नाहीं देख्यो। परन्तु एक बात तोसों कहूं, जो–तू मानें तो। तू दैवी जीव है, तातें कहत हूँ। तब जानार्दनदास नें कही तुम बड़े हो, मेरे पुरोहित हो। मैं तुम्हारो जिजमान, बालक बराबर हों। तुम कहो सो करूं। तब वासुदेवदास नें कही, तू घरतें निकस्यो है तो श्रीगोकुल मथुरा जैयो। तहां श्रीआचार्यजी के दरसन तोकों होयगो। तिनकी तू सरनि जैयों। संसार में बहुत दुःख भोग्यो। अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों सेवक होय तो तू कृतार्थ होय। और कासी कों काहे कों भटकें? तेरो पिता तो दक्षिण गयो है। सो महीना एक में तहां मरेगो।

જનાર્દનદાસના પિતાની ચાકરીના પૈસા ઘણા દિવસના બાકી હતા તે જનાર્દનદાસને આપ્યા. જનાર્દનદાસે ઘર આવી વિચાર્યું, કે હવે પિતાને ઘર લાવવો (પણ) શો ઉપાય કરૂં? પછી એ વિચાર્યું કે કાશીના આસપાસ હશે. હુ જઇને બોલાવી લાઉં. નહીં તો તે કયારેય નહી આવે. એ વિચારી જનાર્દનદાસ થાનેશ્વરથી ચાલ્યા તે આગરા આવ્યા. પછી આગ્રાથી ચાલ્યા ત્યારે માર્ગમાં બે મોહોર પડેલી મળી તે લઇને મનમાં પ્રસન્ન થયા. મને શુકન તો સારા થયા, કે સોનું મળ્યું. પછી ત્યાંથી બે મુકામ આગળ ચાલ્યા. ત્યારે વાસુદેવદાસ છકડા મળ્યા. તેમને જનાર્દનદાસે પૂછ્યું, કે મારા પિતાને કઈ જોયા? ત્યારે વાસુદેવદાસ છકડાએ કહ્યુ, કે મે તારા પિતાને જોયા નથી. પરતુ એક વાત તને કહુ જો તૂં માને તો, તૂ દૈવી જીવ છે. તેથી કહુ છુ. ત્યારે જનાર્દનદાસે કહ્યું, તમે મોટા છો મારા પુરોહિત છો. હુ તમારો જજમાન બાલક બરાબર છું. તમે કહો તે કરૂ. ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, તૂ ઘરથી નિકળ્યો છે તો શ્રીગોકુલ–મથુરા જજે. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન તને થશે. તેમની તૂં શરણે જજે. સસારમાં બહુ દુઃખ ભોગવ્યુ. હવે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થાય તો તૂ કૃતાર્થ થાય અને કાશીએ શા માટે ભટકે છે? તારો પિતા તો

तातें मैं कही सो करि। तब जनार्दनदास ने कही। तुम कैसें जाने जो दक्षिण मेरो पिता गयो है। तहां महिना एक में मरेगो ? काल कोई जानत हैं ! तब वासुदेवदास नें कही, जो–मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कृपातें काल की वात जानत हों। तू दोय मार्ग में मोहौर पायकें प्रसन्न भयो। सो यह मोहौर तोकों वहुत दुःख देंयगी। तातें काहू ब्राह्मण कूँ दे डारियो। जैसे मैं मोहौर की वात जानी तैसें तेरे पिता की मृत्यु वताई। अब तेरो मन होय सो करियो। तब जनार्दनदास कों दृढ़ विश्वास भयो। जो वासुदेवदास कहें सो सांची वात हैं। तब वासुदेवदास कों दंडवत करि कह्यो, जो–अब मैं श्रीआचार्यजी को सेवक निश्चय होऊँगो।

वार्ता–प्रसंग १—**सो जनार्दनदास मथुरा होय श्रीगोकुल आये। तहां श्रीआचार्यजी को दरसन करि, दंडवत करी। सो मनमें यह कहें, जो–उह जो दोय मोहौर पाई हैं, सो और ब्राह्मण कहां ढूंढ़ोगो, श्री-आचार्यजी की भेट करि देऊं। तव दोऊ मोहौर निकारि श्रीआचार्यजी की भेट कियो। तव श्रीआचार्यजी कहें, तू बड़ो मूर्ख है, मार्ग में परी पाई मोहौर हमारी भेट कर्‍यो। सो हमकों नाहीं चहियें। तव जना-र्दनदास फेरि दंडवत करि विनतीकियो, जो–महाराज ! आपु पूर्ण**

દક્ષિણ ગયો છે. તે મહિના એકમાં ત્યાં મરશે. તેથી મેં કહ્યું તે કર. ત્યારે જનાર્દ-નદાસે કહ્યું, તમે કેમ જાણ્યું કે દક્ષિણ મારો પિતા ગયો છે ? ત્યાં મહિના એકમાં મરશે ? કાળને કોઈ જાણે છે ? ત્યારે વાસુદેવદાસે કહ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્ર-ભુજીની કૃપાથી કાળની વાત જાણું છું. તૂ માર્ગમાં બે મોહોર મેળવીને પ્રસન્ન થયો, પણ આ મોહોર તને બહુ દુઃખ દેશે. તેથી કોઈ બ્રાહ્મણને આપી દેજે. જેમ મેં મોહારની વાત જાણી તેમ તારા પિતાનુ મૃત્યુ બતાવ્યું. હવે તારૂં મન હોય તે કર. ત્યારે જનાર્દનદાસને દૃઢ વિશ્વાસ થયો, કે વાસુદેવદાસે કહ્યું તે સાચી વાત છે. ત્યારે વાસુદેવદાસને દંડવત્ કરી કહ્યું, કે હવે હું શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક નિશ્ચય થઇશ.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧–તે જનાર્દનદાસ મથુરા થઇ શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્ય-જીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કર્યા. મનમાં એ કહે, કે પેલી જે બે મોહોર મળી છે એ બીજા બ્રાહ્મણને કયાં ખોળીશ શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કરી દઉં. ત્યારે બન્ને મોહોર કાઢી શ્રીઆચાર્યજીને ભેટ કરી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂં બહુ મૂર્ખ છે. માર્ગમાં પડેલી મહોર અમારી ભેટ કરી ? તે અમને નથી જોઇતી. ત્યારે જનાર્દનદાસે ફરી

पुरुषोत्तम हो । वासुदेवदास मोकों मार्ग में कह्यो, जो–श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान हैं तिनकी तू सरनि जैयो । और ये मोहौर तेरे काम की नाहीं हैं । दुःख रूप हैं । तातें आप कृपा करिकें सरन लीजिये । और ये मोहौर जाकों देनी होय ताकों दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, मोहौर तू उठाय ले । मथुरा में चौबे ब्राह्मण बहोत हैं तिनकों दीजो । और श्रीगोवर्द्धननाथ के दरसन कों संग चलो, तहां तुमकूं सेवक करेंगे । तब जनार्दनदास मोहौर दोऊ ले आचार्यजी के संग गोवर्द्धन आये। पाछें आन्योर में जब आये तब श्रीआचार्यजी नें कही, जनार्दनदास ! स्नान करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चलि । तब जनार्दनदास स्नान करिकें श्रीआचार्यजी के संग श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करें । तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर के सन्मुख बैठाय नाम निवेदन कराये। पाछे कहे, जो–अब तू भागवद् सेवा करि। तब जनार्दनदास नें कही, जो–आप जा प्रकार बतावो ता प्रकार करूं। तब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी की पाग जनार्दनदास कों सेवा करिवे कों दिये । सो दिन दस जनार्दनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग आन्योर में रहि, एतनमार्ग की रीति सीख्यो । तब श्रीआचार्यजी नें जनार्दनदास सों कही । जो–अब हम पृथ्वी परिक्रमा कों जायंगे ।

દંડવત કરી વિનંતી કરી કે મહારાજ ! આપ પૂર્ણ પુરૂષોતમ છો. વાસુદેવદાસે મને માર્ગમાં કહ્યું છે કે શ્રીઆચાર્યજી સાક્ષાત ભગવાન છે તેમની તૂ શરણે જજે. વળી આ મહોર તારા કામની નથી. દુ:ખરૂપ છે. તેથી આપ કૃપા કરીને શરણ લો અને આ મહોરો જેને દેવી હોય તેને દેજો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, મહોર તૂ ઉઠાવી લે. મથુરામાં ચોબા–બ્રાહ્મણ ઘણા છે તેને દેજે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના દર્શને સાથે ચાલ. ત્યાં તને સેવક કરીશું. ત્યારે જનાર્દનદાસ બન્ને મહોર લઇ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે ગોવર્દ્ધન આવ્યા પછી આન્યોરમાં જ્યારે આવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જનાર્દનદાસ સ્નાન કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના દર્શને ચાલ. ત્યારે જનાર્દનદાસે સ્નાન કરીને શ્રીઆચાર્યજીની સાથે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રી આચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરના સન્મુખ બેસાડી નામ નિવેદન કરાવ્યું. પછી કહે, કે હવે તૂ ભગવદ્સેવા કર. ત્યારે જનાર્દનદાસે કહ્યું, આપ જે પ્રકારે બતાવો તે પ્રકારે કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનાથજીની પાગ જનાર્દનદાસને સેવા કરવા માટે આપી. પછી દિવસ દશ જનાર્દનદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની સાથે આન્યોરમાં રહી એતન્માર્ગની રીતી શિખ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ જનાર્દનદાસને કહ્યું,

तू घर जाय भगवद् सेवा मन लगाय कें करियो। तब जनार्दनदास श्री-गोवर्द्धननाथजी के दरसन करि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत करि विदा होय थानेश्वर अपुने घर आयो। पाछें पिता के देह छूटे के समाचार दक्षिण तें आये। तब जनार्दनदास मन में कहें, जो–वासुदेवदास बड़े भगवदीय हैं। उनको कह्यो सब सांच है। पाछें मन लगाय भगवद् सेवा करन लागें। सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे। और सिंहनंदते वासुदेवदास थानेश्वर आवते। तब जनार्दनदास वासुदेवदास कों अपने घर प्रीतिसों राखते। कहतें, मैं तुम्हारी कृपा तें श्रीआचार्यजी की सरन पाई हैं। तातें तुम जब थानेश्वर आवो तब यह घर सब तुम्हारो है, यहां उतर्‌यो करियो। सो एक क्षण वैष्णव के संग तें जनार्दनदास भगवदीय भये। तातें सत्संग भगवदीय को करनों। सो जनार्दनदास ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। ॥६८॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गड्डू स्वामी सनोढ़िया ब्राह्मण, श्रीवृन्दावन में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीनंदरायजी के घरकी दासी हैं। 'वंदी'

કે હવે અમે પૃથ્વી પરિક્રમાએ જઇશું. તૂ ઘર જઈ ભગવદ્‌સેવા મન લગાડીને કરજે. ત્યારે જનાર્દનદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરી, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને દંડવત કરી વિદાય થઇ થાનેશ્વર પોતાના ઘરે આવ્યા. પછી પિતાના દેહ છુટ્યાના સમાચાર દક્ષિણથી આવ્યા ત્યારે જનાર્દનદાસ મનમાં કહે, કે વાસુદેવદાસ મહાન ભગવદીય છે. એમનું કહેવું બધું સાચું છે. પછી મન લગાડી ભગવદ્‌સેવા કરવા લાગ્યા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા. વળી સિંહનંદથી વાસુદેવદાસ થાનેશ્વર આવતા ત્યારે જનાર્દનદાસ વાસુદેવદાસને પોતાના ઘરે પ્રીતિથી રાખતા. કહેતા, મેં તમારી કૃપાથી શ્રીઆચાર્યજીનું શરણ મેળવ્યું છે. તેથી તમે જ્યારે થાનેશ્વર આવો ત્યારે આ ઘર બધું તમારૂં છે. અહીં ઉતર્યા કરો. આમ એક ક્ષણ વૈષ્ણવના સંગથી જનાર્દનદાસ ભગવદીય થયા તેથી સત્સંગ ભગવદીયનો કરવો. તે જનાર્દનદાસ એવા ભગવદીય શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ. વાર્તા ॥ ૬૮ ॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ગડૂ સ્વામિ સનોઢીયા બ્રાહ્મણ, શ્રીવૃંદાવનમાં રહેતા તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રીનંદરાયજીના ઘરની દાસી છે. 'બંદી'

इनको नाम हैं। सो जसोदाजी जब दामोदर लीला में श्रीठाकुरजी कों बांधन लागी, तब एक दाम बंदी ने दियो, जसोदाजी कों। सो रोहिणीजी सुनि के शाप दियो। जो तू दासी हृे कें अपनो दाम बाँधिवे कों श्रीजसोदाजी कों क्यों दियो ? तातें भूमि में गिरि। तब बंदी मथुरा में एक सनोढ़िया के जन्में। सो जब ये आठ वर्ष के भये। तबही तें वैराग दिसा हती। सो मथुरा छोड़ि वृन्दावन में अकेले आय रहें। मथुरा तें सीधो सामान दस पांच दिना को लाय, वृन्दावन में केशीघाट पर बैठे विचार करते। जो मोकों कब कृपा करेंगे। और ब्रजवासी आदि जो आय कहते, हमकों सेवक करो, तिनकों सेवक करते। तिनसों यही कहते, श्रीठाकुरजी को नाम सदा मुखसों कहियो।

वार्ता-प्रसंग १—**सो एक दिन रात्रि कों गडू स्वामी कों विरह बहोत भयो। जो जन्म सगरो बीत्यो। यह मनुष्य देह वृथा गई, तातें जीवनो वृथा है। यह कहि नेत्रन तें अश्रूपात बहें। तब गडू स्वामी कों रंच नींद आई। तब श्रीठाकुरजी नें कही, जो–सवेरे श्रीवल्लभाचार्यजी तेरे पास केशीघाट ऊपर स्नान करन कों पधारेंगे तिनकी सरन तू जैयो। तब तोपर कृपा होयगी। तब गडू स्वामी की आंख खुली, सो कहन लागे। जो कब सवेरो होय, कब मैं श्री-**

એમનું નામ છે. શ્રીજશોદાજી જ્યારે દામોદરલીલામાં શ્રીઠાકુરજીને બાંધવા લાગી ત્યારે એક દોરડુ બંદીએ આપ્યું, જશોદાજીને. એ રોહિણીજીએ સાંભળ્યું ત્યારે શાપ આપ્યો, કે તૂ દાસી થઇને તારૂં દોરડું બાંધવાને શ્રીજશોદાજીને કેમ આપ્યું ? તેથી ભૂમિમાં પડ. ત્યારે બંદી મથુરામાં એક સનોડીયાને ત્યાં જન્મે. તે વર્ષ આઠના થયા ત્યારથી વૈરાગ્ય દશા હતી. તેથી મથુરા છોડી વૃંદાવનમાં એકલા આવી રહ્યા. મથુરાથી સીધુસામાન દશ-પાંચ દિવસનું લાવી વૃંદાવનમાં કેશી ઘાટ ઉપર બેસીને વિચાર કરતા કે મને ક્યારે કૃપા કરશે ? વળી વ્રજવાસીઓ બધા આવીને કહેતા, અમને સેવક કરો. તેમને સેવક કરતા. તેમને એજ કહેતા, શ્રીઠાકુરજીનું નામ સદા મુખથી કહો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી એક દિવસ રાત્રિના ગડૂ સ્વામીને વિરહ ઘણો થયો જે જન્મ બધો વીત્યો. આ મનુષ્ય દેહ વૃથા ગઈ તેથી જીવવું વૃથા છે. એમ કહી નેત્રોમાંથી અશ્રુપાત વહેતો. ત્યારે ગડૂ સ્વામીને રંચક નિંદ્રા આવી. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, કે સવારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી તારી પાસે કેશીઘાટ ઉપર સ્નાન કરવાને પધારશે. તેમની તૂ શરણે જજે ત્યારે તારા ઉપર કૃપા થશે. ત્યારે ગડૂ સ્વામીની આંખ ખુલી. તે કહેવા લાગ્યા, કે ક્યારે સવાર થાય ક્યારે હું શ્રીઆચાર્યજીની શરણે જઉં. એટલામાં

आचार्यजी की सरनि जाऊं। इतने में सवेरो भयो। गिरिराज सों रात्रि कों श्रीआचार्यजी चले सो प्रातःकाल केशीघाट पधारि श्रीयमुनाजी स्नान करि संध्यावंदन करत हे। तब गड्डू स्वामी ने पूछी जो ये कोन हैं। तब कृष्णदास मेघन नें कही, जो–श्रीवल्लभाचार्यजी गिरिराज सों पधारे हैं। तब गड्डू स्वामी नें दंडवत करि श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो–महाराज! मोकों कृपा करिकें सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें। जो तुम तो स्वामी कहावत हों। तुम हू सेवक करो हो। सो तुम सेवक होंन की क्यों कहत हो? तब गड्डू स्वामी नें कही, महाराज! मोकों भगवद आज्ञा भई। जो–तू श्रीआचार्यजी को सेवक हूजियो, तब तोपर कृपा होयगी तातें मोकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी गड्डू स्वामी कों कहे, जो–स्नान करि ले। तब गड्डू स्वामी स्नान करिके श्रीआचार्यजी के पास आयो। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे गड्डू स्वामी ने अपुने जो सेवक किये हते। तिन सबन कों श्रीआचार्यजी के पास नाम सुनाये।

भावप्रकाश—पाछे गड्डू स्वामी नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! मेरे माता पिता तो बहिरमुख हैं, सो मथुरा में हैं। तातें उनकों छोड़ि मैं यहाँ आयो हूं। व्याह तो मेरो भयो नाहीं। बालपने तें वैराग दसा में रह्यो।

સવાર થયું. ત્યારે ગિરિરાજથી રાત્રિએ શ્રીઆચાર્યજી ચાલ્યા તે પ્રાતઃકાલ કેશીઘાટ પધારી શ્રીયમુનાજી સ્નાન કરી સંધ્યાવંદન કરતા હતા ત્યારે ગડૂ સ્વામીએ પૂછ્યું, કે આ કોણ છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘને કહ્યુ, કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ગિરિરાજથી પધાર્યા છે. ત્યારે ગડૂ સ્વામીએ દંડવત્ કરી શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને કૃપા કરીને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે તમે તો સ્વામી કહેવાવ છો તમે પણ સેવક કરો છો. તેથી તમે સેવક થવાનું કેમ કહો છો? ત્યારે ગડૂ સ્વામીએ કહ્યું, મહારાજ! મને ભગવદાજ્ઞા થઈ કે તુ શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક થજે. ત્યારે તારા ઉપર કૃપા થશે. તેથી મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી ગડૂ સ્વામીને કહે, કે સ્નાન કરી લે. ત્યારે ગડૂ સ્વામી સ્નાન કરીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી ગડૂ સ્વામીએ પોતાના જે સેવક હતા તે બધાને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે નામ સંભળાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—પછી ગડૂ સ્વામીએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! મારા માતા–પિતા તો બહિર્મુખ છે તે મથુરામાં છે. તેથી એમને છોડીને હું અહીં આવ્યો છું. લગન તો મારૂં થયું નથી. બાલપણથી વૈરાગ્ય દશામાં

सो अब ऐसी कृपा करो, जो–मेरो मन श्रीठाकुरजी की लीला तें अनत न भटके। तब श्रीआचार्यजी अपुनो चरणामृत दे 'त्रिविध नामावली' रचि, ताको पाठ करायें। तब गड्डू स्वामी कों श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव होन लाग्यो। सो मानसी सेवा में मगन ह्वे गये।

सो गड्डू स्वामी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे, ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है। मानसी को प्रकार कह्यो न जाय। तातें गड्डू स्वामी की वार्ता को विस्तार नाहीं किये। वार्ता ॥६९॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कन्हैयाशाल क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये कन्हैया शाल लीला में ललिताजी की सखी हैं। तहां उनको नाम 'कमोदिनी' हैं। सो आगरे में एक 'शाल' क्षत्री के घर जन्में। सो द्रव्य को संकोच पहलें बहोत हतो। सो जा दिना कन्हैया शाल जन्में ताही दिन पिता माता के घर में द्रव्य धरती सों निकस्यो। तब पिता माता नें कही, यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जो–जनमत ही लक्ष्मी आई। तातें या बालक को नाम कन्हैया शाल। या प्रकार सों माता पिता कन्हैया शाल सों प्रीति बहोत करी।

રહ્યો. હવે એવી કૃપા કરો કે મારૂં મન શ્રીઠાકુરજીની લીલાથી અન્યત્ર ન ભટકે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતાનું ચરણામૃત આપી 'ત્રિવિધનામાવલી' રચી તેનો પાઠ કરાવ્યો. ત્યારે ગડૂ સ્વામીને શ્રીઠાકુરજીની લીલાનો અનુભવ થવા લાગ્યો. એ માનસી સેવામાં મગન થઈ ગયા.

એ ગડૂ સ્વામી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેથી એમની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. માનસીનો પ્રકાર કહી ન શકાય, તેથી ગડૂ સ્વામીની વાર્તાનો વિસ્તાર નથી કર્યો. વાર્તા ॥૬૯॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક, કન્હૈયાશાલ ક્ષત્રી, આગરામાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ કન્હૈયાશાલ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. ત્યાં એમનું નામ 'કમોદની' છે. તે આગ્રામાં એક ક્ષત્રીના ઘરે જન્મ્યા. ત્યાં દ્રવ્યનો સંકોચ પહેલાથી ઘણો હતો. પણ જે દિવસે કન્હૈયાશાલ જન્મ્યા તેજ દિવસે પિતા–માતાના ઘરમાં ધરતીમાંથી દ્રવ્ય નિકળ્યુ. તે જન્મતાં જ લક્ષ્મી આવી. તેથી આ બાલકનું નામ કન્હૈયાશાલ (રાખ્યુ) એ પ્રકારથી માતા–પિતાએ કન્હૈયાશાલથી પ્રીતિ

वड़े भये परन्तु घरके बाहर जान न देय। सो जब तेरह वर्ष के भये। तब पिता की देह छूटी। पाछे कन्हैया शाल ने माता सों कही, अब मोकों बाहर जान दे, मैं वड़ो भयो, मथुरा बड़ो धाम है। सो कबहूँ दरसन नाहीं कियो। तब माता नें कही, जो–बेटा तू मेरे नेत्रन तें कहूँ न्यारो मति जाय। तब कन्हैया शाल चुप ह्वे रहे। पाछे कन्हैया शाल के एक मामा हतो, सो मथुरा चल्यो। तब कन्हैया शाल नें माता सों कही, जो–अब मामा के संग मथुरा मोकों न्हायवे कों जान दे। नाही तो मैं अकेलो भाजि जाऊंगो। तब माता डरपि कें अपने भाई सों कह्यो। मेरे बेटा कों बहोत दरसन मति कराईयो, फिराईयो मति, मथुरा में न्हवाय के वेगि लाईयो। तुमकों व्रज में जात्रा करनी होय, फिरनो होय, तो मेरे बेटा कों मेरे पास घर पहुंचाय फिरियो। तब कन्हैया शाल मथुरा आय विश्रान्ति न्हाये। तब कन्हैया शाल नें मामा सों कही, मोकों सगरे व्रज के दरसन करावो। तब मामा ने कही। तुम्हारी मातानें तो नाहीं करी है। तब कन्हैया शाल ने कही, जो–मोपर मा को मोह बहोत है। परन्तु मैं फेरि कब आऊंगो? तातें चलो, व्रज के दरसन करों, सो वन परिक्रमा कों निकसे। सो पांच दिन में श्रीगोवर्द्धन पहुँचे। सो गिरिराज कों देखि कन्हैया शाल बावरे ह्वे गये। न बुलाये बोलें, न उठाये

घणी करी. મોટા થયા પણ ઘરની બહાર જવા ન દે. પછી તેર વર્ષના થયા ત્યારે પિતાની દેહ છૂટી. પછી કન્હૈયાશાલે માતા ને કહ્યુ, હવે મને બહાર જવા દે. હું મોટો થયો. મથુરા મોટું ધામ છે. ક્યારેય દર્શન નથી કર્યાં. ત્યારે માતાએ કહ્યું, કે બેટા! તું મારી આંખથી કંઈ દૂર ન જા. ત્યારે કન્હૈયાશાલ ચૂપ થઈ રહ્યા. પછી કન્હૈયા-શાલનો એક મામા હતો. તે મથુરા ચાલ્યો. ત્યારે કન્હૈયાશાલે માતાને કહ્યું, કે હવે મામાની સાથે મથુરા મને ન્હાવાને જવા દે. નહી તો હું એકલો ભાગી જઈશ. ત્યારે માતાએ ડરીને પોતાના ભાઇને કહ્યું, મારા બેટાને ઘણાં દર્શન ન કરાવીશ. ફેરવીશ નહીં. મથુરામાં ન્હવડાવીને જલ્દી લાવજે. તમારે વ્રજમાં યાત્રા કરવી હોય, ફરવું હોય, તો મારા બેટાને મારી પાસે ઘર પહોંચાડીને ફરજે. ત્યારે કન્હૈયાશાલ મથુરા આવી વિશ્રાન્ત ન્હાયા. ત્યારે કન્હૈયાશાલે મામાને કહ્યું, મને બધા વ્રજનાં દર્શન કરાવો. ત્યારે મામાએ કહ્યુ, તમારી માતાએ તો ના પાડી છે. ત્યારે કન્હૈયા-શાલે કહ્યું, કે મારા ઉપર મા નો મોહ ઘણો છે. પરંતુ હું ફરી ક્યારે આવીશ? તેથી ચાલો, વ્રજનાં દર્શન કરું. પછી વન-પરિક્રમાએ નિકળ્યા. તે પાંચ દિવસમાં ગોવ-ર્દ્ધન પહોંચ્યા. ત્યાં શ્રીગિરિરાજજીને જોઇને કન્હૈયાશાલ બ્હાવરા થઇ ગયા. ન

उठें। जाकों देखे ताकी ओर हँसें। कोऊ मुख में डारि देई तो खाय। पहिरावे जो वस्त्र पहिरें। या प्रकार सरीर की सुधि भूलि गये। तब मामा कों महा चिन्ता भई। जो या दसा सों घर ले जाय तो याकी माता रोवेगी। तातें गोवर्द्धन में कन्हैया शाल कों लेकें वह मामा रह्यौ। वैरागी, अतीत, वैद्य सब सों कहें, जो–कन्हैया शाल कों कोऊ आछो करे तो वह जो मांगे सो मैं देहुं। सो बहोतेरी औषधि लोगन नें करी। अनेक जंत्र मंत्र किये। परन्तु कन्हैया शाल आछे न भये।

ऐसे करत एक महिना बीत्यो। तब घरमें माता नें बहोत चिन्ता करी। जो पुत्र की कछू खबरि हूँ नाहीं आई। मेरो भाई पांच दिन को नाम ले गयो हो, सो महिना एक भयो। कछू कारन दीसत है। तब एक मनुष्य बुलाय के कह्यो, जो–तू मथुरा जा, व्रज में मेरो भाई, पुत्र गयो है सो देखि आऊ कहाँ है? कहा करत हैं? कैसे हैं? सब समाचार ले आऊ। उनकों मति जताईयो। मोकों सब समाचार आय कहेगो तो तोकों रुपैया दस देहूँगी। तब वह मनुष्य चल्यो। सो मथुरा में खबरि पाई, जो–गोवर्द्धन में हैं। तब गोवर्द्धन में आय दोऊन कों देखि आगरे आयो। सो कन्हैया शाल की माता सों कही, जो–तेरो बेटा तो बावरो ह्वै गयो है। सरीर की सुधि नाहीं हैं, तेरो भाई जंत्र मंत्र अनेक करत हैं,

---

બોલાવ્યા બોલે ન ઉઠાયા ઉઠે જેને જુએ તેની તરફ હસે. કોઈ મહોડામાં નાખી જાય તો ખાય. પહેરાવે તો વસ્ત્ર પહેરે. આ પ્રકારે શરીરની સુધિ ભૂલી ગયા. ત્યારે મામાને મહા ચિંતા થઈ, કે આ દશાથી ઘેર લઈ જાય તો એની માતા રોશે તેથી ગોવર્દ્ધનમાં કન્હૈયાશાલને લઇને તે મામા રહ્યો. વૈરાગી, અતીથી, વૈદ્ય બધાને કહે, કે કન્હૈયાશાલને કોઈ સારો કરે તો તે જે માંગે તે હુ દઉં. પછી ઘણીય ઓષધી લોકોએ કરી, અનેક યંત્રમંત્ર કર્યા. પરંતુ કન્હૈયાશાલ સારા ન થયા. એમ કરતાં એક મહીનો વીત્યો. ત્યારે ઘરમાં માતાએ ઘણી ચિંતા કરી, કે પુત્રની કંઇ ખબર પણ ન આવી. મારો ભાઈ પાંચ દિવસનું નામ લઇને ગયો છે. તે મહીનો એક થયો. કોઈ કારણ જણાય છે. ત્યારે એક મનુષ્યને બોલાવીને કહ્યું, કે તૂ મથુરા જા. વ્રજમાં મારો ભાઈ, પુત્ર ગયો છે તેને જોઈ આવ, ક્યાં છે? શું કરે છે, કેમ છે? બધા સમાચાર લઈ આવ. એમને ન જણાવીશ. મને બધા સમાચાર આવીને કહીશ તો તને રૂપીઆ દશ આપીશ. ત્યારે તે મનુષ્ય ચાલ્યો. તેને મથુરામાં ખબર મળી કે ગોવર્દ્ધનમાં છે. ત્યારે ગોવર્દ્ધનમાં આવી બન્નેને જોઈ આગ્રા આવ્યો. તેણે કન્હૈયાશાલની માતાને કહ્યું, કે તારો બેટા તો બ્હાવરો થઇ ગયો છે. શરીરની

औषध करत हैं। तब माता कों बहोत दुःख भयो, जो–मैं याहिके लियें पुत्र कों बाहिर नाहीं निकासती। अब मैं कहा करों? पाछे वा मनुष्य सों कही, जो–एक डोली भाड़े करि लाओ, तुम मेरे संग चलो, तुमकों दस रुपैया और देऊंगी। मोकों मेरे पुत्र पास पहुंचाय देहु। तब वह डोली भाड़े करि लायो। तब वह माता हजार रुपैया ले डोली पर चली। सो गोवर्द्धन आय, पुत्र के पास जाय, पुत्र कों हृदय सों लगाय रुदन कियो। पाछे भाई कों खीझि कें निकारि दियो। जो–तू मेरे पुत्र कों बावरो कियो। पाछे अनेक गुनी उह माता नें बुलाये, परन्तु कन्हैया शाल आछे न भये। तब गोवर्द्धन के सगरे व्रजवासिन सों पूछ्यो, कोई ऐसो महापुरुष बतावो, जो–मेरे पुत्र कों आछो करें। तिनकी मैं दासी ह्वे कें रहूँ। ता समय सदू पांडे गोवर्द्धन आये हे, आन्योर तें। तिनसों डोकरी नें पूछ्यो। तब सदू पांडे नें कही, हमारे गाम में श्रीआचार्यजी पधारे हैं। सो कितने व्रजवासिन कों परचो दे सरन लिये हैं। गोवर्द्धन पर्वत तें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट किये हैं। सो श्रीआचार्यजी साक्षात भगवान हैं। उनके मन में आवे तो यह कितनीक बात है। परन्तु हमारो नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभु के आगें मति लीजों। तब वह डोकरी नें कही। तुम मोकों अपने गाम में ले चलो, मैं विनती करि

सुध नथी. तारो भाई जंत्र–मंत्र अनेक करे छे. औषध करे छे. त्यारे माताने बहु दुःख थयुं, के हुं आ माटे ज पुत्रने बहार नहोती काढती. हवे हुं शु करूं? पछी ते मनुष्यने कह्युं, के एक डोली भाडे करी लावो. तमे मारी साथे चालो. तमने दश रूपीआ बीजा आपीश. मने मारा पुत्र पासे पहोंचावी दो. त्यारे ते डोली भाडे करी लाव्यो. त्यारे ते माता हजार रूपीआ लई डोली उपर चाली. ते गोवर्द्धन आवी पुत्रनी पासे जई पुत्रने हृदयथी लगाडी रूदन कर्युं. पछी भाइने खीजीने काढी मूक्यो, के तें मारा पुत्रने बहावरो कर्यो. पछी अनेक गुणीने ते माताए बोलाव्या, परंतु कन्हैयालाल सारा न थया. त्यारे गोवर्द्धनना बधा व्रजवासीओने पूछ्युं, कोई एवो महापुरुष बतावो, के मारा पुत्रने सारो करे. तेमनी हुं दासी थइने रहुं. ते समये सदूपांडे गोवर्द्धन आव्या हता, आन्योरथी. तेमने डोकरीए पूछ्युं. त्यारे सदूपांडेए कह्युं, अमारा गाममां श्रीआचार्यजी पधार्या छे अने केटलाय व्रजवासीओने परचो दइ शरणे लीधा छे. गोवर्द्धन पर्वतमांथी श्रीगोवर्द्धननाथजीने प्रकट कर्या छे. तेथी श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान छे. एमना मनमां आवे तो आ ते शी वात छे? परंतु अमारूं नाम श्रीआचार्यजी

लेंहुगी। तब सदू पांडे कहें, मेरे संग चलो। मैं अपुनें गाम जात हों। तब मा कन्हैया शाल कों डोली पर बैठारि आन्यौर आई। एक घर व्रजवासी को ले ता कन्हैया शाल कों बैठारि द्वार को तारो लगायो। पाछे आयकें श्रीआचार्यजी कं दंडवत करी। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–हम जान्यो डोकरी जाके लिये तू आ है। तातें अपुनें बेटा कों यहां बेगि लाउ, हम आछो करि देई। बहोत बात मति करे। तब डोकरी कन्हैया शाल कों ले श्रीआचार्यजी के पास आई। तब श्रीआचार्यजी झारी में ते जल हाथ में ले वेद–मंत्र पढ़ि कन्हैया शाल के ऊपर छिरके सो कन्हैया शाल सावधान ह्वै गये। तब श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि बिनत कीनी, महाराज! मैं तो बहोत सुखी हतो, व्रजकी गोवर्द्धन की, लीला में मग हतो। तहाँ तें मोकों बाहिर आप क्यों निकासे? आप तो अधिक दान देन अ प्रगटे हो। सो यह कहा कियो? तब श्रीआचार्यजी कहें, उछलित रस, ऊपर को प्रेम एक दिन बहि जाय। तातें तोकों सावधान कियो। भीतर स्थिर प्रेम होय लीला रस को अनुभव होय, जगत में कोई जानें नाहीं। सो प्रेम को कबहूं नाश न होय। तब कन्हैया शाल ने बिनती करी, महाराज! कृपा करि स्थिर प्रेम क

મહાપ્રભુજી આગળ લઈશ નહી. ત્યારે તે ડોશીએ કહ્યું, તમને મને તમારા ગામમ લઇ ચાલો. હું વિનંતી કરી લઇશ. તમારૂં નામ નહી લઉં. ત્યારે સદૂપાંડે કહે મારી સંગે ચાલો. હું મારા ગામ જઉં છુ. ત્યારે માતા કન્હૈયાશાલને ડોલી ઉપ બેસાડી આન્યોર આવી. પછી એક ઘર વ્રજવાસીનું લઈ તેમાં કન્હૈયાશાલને બેસાડી દ્વારે તાળું માર્યું. પછી આવીને શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી. ત્યારે શ્રી આચાર્યજી કહે, કે અમે જાણ્યું ડોશી તૂ જેને માટે આવી છે તે તારા પુત્રને અહીં લઈ આવ. અમે સારો કરી દઇએ. વધારે વાત ન કર. ત્યારે ડોશી કન્હૈયા-શાલને લઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ઝારીમાંથી જલ લઇ વેદ–મંત્ર ભણી કન્હૈયાશાલ ઉપર છાંટયું. એટલે કન્હૈયાલાલ સાવધાન થઇ ગયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનતી કરી, મહારાજ! હુ તો ઘણો સુખી હતો. વ્રજની, ગોવર્દ્ધનની, લીલામાં મગન હતો. ત્યાંથી મને બહાર આપે કેમ કાઢ્યો? આપ તો અધિક દાન દેવા માટે પ્રકટ્યા છો. તેથી આ શું કર્યું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, ઉછલિત રસ ઉપરનો પ્રેમ એક દિવસ વહી જાય. તેથી તને સાવધાન કર્યો, અંદર સ્થિર પ્રેમ હોય, લીલારસનો અનુભવ હોય, તો જગતમાં

दान करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कन्हैया शाल कों न्हवाय, श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के सन्मुख बैठाय, नाम निवेदन कराये। साक्षात् श्रीठाकुरजी की लीला रस को अनुभव कराय दिये। पाछें कन्हैया शाल की माता कों नाम सुनाये। सो श्रीआचार्यजी जितने छोटे ग्रंथ किये हते सो सब कन्हैया शाल कों पढ़ाये। पाछे कन्हैया शाल सों कहें, अब तुम घर में जाय रस को अनुभव करो। अब तुमकों संसार, लौकिक, वैदिक बाधा न करेगो। तब कन्हैया शाल की माता नें हजार रुपैया भेट धरि विनती करी, जो—महाराज! मोपर बड़ी कृपा करी। आप साक्षात् पुरुषोत्तम हो। तुम विना मेरे पुत्र कों कौन आछो करें? तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तू पुत्र कों लेके अपुने घर जा। तब कन्हैया शाल की माता नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! एक वार आगरे मेरे घर पधारो तो आपकी बहोत भेट हैं। सो अङ्गीकार करि गृह पावन करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम अड़ेल पधारेंगे तब तुम्हारे घर आवेंगे। अब तुम घर जाऊ। तब कन्हैया शाल और डोकरी दंडवत् करि, श्रीआचार्यजी सों विदा होय आगरे आये। सो कन्हैया शाल तो लीला में मगन रहें। और डोकरी सगरो काम घर को करें। पाछे श्री-आचार्यजी महाप्रभु आगरे पधारे तब कन्हैया शाल के घर उतरें। सगरे ग्रन्थ के

મહારાજ! કૃપા કરીને સ્થિર પ્રેમનું દાન કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ કન્હૈયાશાલને ન્હવડાવી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સન્મુખ બેસાડી નામ-નિવેદન કરાવ્યું. સાક્ષાત્ શ્રીઠાકુરજીની લીલા રસનો અનુભવ કરાવી દીધો. પછી કન્હૈયાશાલની માતાને નામ સંભળાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ જેટલા નાના ગ્રંથો કર્યા હતા તે બધા કન્હૈયાશાલને ભણાવ્યા. પછી કન્હૈયાશાલને કહ્યું, હવે તમે ઘરમાં જઈ રસનો અનુભવ કરો. હવે તમને સંસાર, લૌકિક વૈદિક બાધા નહીં કરે. ત્યારે કન્હૈયાશાલની માતાએ હજાર રૂપૈયા ભેટ ધરી વિનતી કરી કે, મહારાજ! મારા ઉપર મોટી કૃપા કરી. આપ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમ છો. તમારા વિના મારા પુત્રને કોણ સારો કરે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, હવે તૂ પુત્રને લઇને તારા ઘરે જા. ત્યારે કન્હૈ-યાશાલની માતાએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! એક વાર આગ્રા મારા ઘરે પધારો તો આપની ઘણી ભેટ છે તે અંગીકાર કરી ઘર પાવન કરીએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે અડેલ પધારીશું. ત્યારે તમારા ઘરે આવીશું. હવે તમે ઘર જાવ. ત્યારે કન્હૈયાશાલ અને ડોશી દંડવત્ કરી શ્રીઆચાર્યજીથી વિદાય થઈ આગરામાં આવ્યાં. ત્યાં કન્હૈયાશાલ લીલામાં મગન રહેતા અને ડોશી ઘરનું બધું

भाव, लीला के भाव, पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त कन्हैया शाल के हृदय में स्थापन किये। पांच रात्रि रहे। तब डोकरी नें बहुत भेट कियो, सो लेकें अड़ेल पधारे।

वार्ता प्रसंग १—**सो श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजी सों पूछ्यो, जो- मार्ग की वार्ता तो दामोदरदास द्वारा जानें। परन्तु श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ कहां मिलें? तब श्रीअक्काजी नें कही, आगरे में कन्हैयाशाल क्षत्री के पास ग्रन्थ हैं, तहां ते लेहु। तब श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल क्षत्री के घर पधारें। तब कन्हैयाशाल परम प्रीति सों श्रीगुसांईजी कों पधराये। पाछें श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल पास श्रीआचार्यजी के सारे ग्रन्थ पढ़े। पाछे श्रीगुसांईजी ग्रन्थन की टीका करि कन्हैयाशाल कों कृपा करि पढ़ाये! पाछे श्रीगुसांईजी आपुनें ग्रन्थ, दान लीला, हुल्लास, व्रतचर्या आदि रहस्य ग्रन्थ किये हते, सो कन्हैयाशाल कों पढ़ाये। और कन्हैयाशाल कों श्रीगुसांईजी दंडवत न करन देते। कहेतें, तुम्हारे हृदय में श्रीआचार्यजी विराजत हैं। या प्रकार श्री- आचार्यजी, श्रीगुसांईजी की अत्यंत कृपातें कन्हैयाशाल संयोग रस विप्रयोग रस दोऊ लीला के रस में मगन रहते। पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे।**

કામ કરે. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આગરા પધાર્યા. ત્યારે કન્હૈયાશાલના ઘરે ઉતર્યા. બધા ગ્રંથનો ભાવ, લીલાનો ભાવ, પુષ્ટિમાર્ગનો સિદ્ધાન્ત, કન્હૈયાશાલના હૃદયમાં સ્થાપન કર્યો. પાંચ રાત્રિ રહ્યા ત્યારે ડોશીએ ઘણી ભેટ કરી તે લઇને અડેલ પધાર્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીઅક્કાજીથી પુછયું, કે માર્ગની વાર્તા તો દામોદરદાસ દ્વારા જાણી, પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રંથ કયાં મળે? ત્યારે શ્રીઅક્કાજીએ કહ્યું, આગરામાં કન્હૈયાશાલ ક્ષત્રીની પાસે ગ્રંથ છે ત્યાંથી તે લો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કન્હૈયાશાલ ક્ષત્રીને ઘરે પધાર્યા. ત્યારે કન્હૈયાશાલે પરમ પ્રીતિથી શ્રીગુસાંઇજીને પધરાવ્યા પછી શ્રીગુસાંઇજી કન્હૈયાશાલ પાસે શ્રીઆચાર્યજીના બધા ગ્રંથ ભણ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ ગ્રંથોની ટીકા કરી કન્હૈયાશાલને કૃપા કરી ભણાવ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતાના ગ્રન્થ દાનલીલા હુલ્લાસ, વ્રતચર્યા આદિ રહસ્યગ્રંથ કર્યા હતા તે કન્હૈયાશાલને ભણાવ્યા. વળી કન્હૈયાશાલને શ્રીગુસાંઇજી દંડવત કરવા ન દેતા. કહેતા, તમારા હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે. આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી, શ્રીગુસાંઇજીની અત્યંત કૃપાથી કન્હૈયાશાલ સંયોગરસ વિપ્રયોગરસ બન્ને લીલાના રસમાં મગન રહેતા. પછી શ્રીગુસાંઇજી અડેલ પધાર્યા.

भावप्रकाश—पाछे कन्हैया शाल की माता की देह छूटी। तब कन्हैया शाल कहें, यहू प्रतिबंध मिट्यो। छिन छिन में खानपान को प्रतिबंध करती। तबतें कन्हैयाशाल कों सरीरकी सुधि होय तब खान पान करें। नाहीं तो वैसे ही बैठे रहें।

वार्ताप्रसंग २—पाछें एक समय श्रीगुसांईजी अडेल तें आगरे पधारे सो कन्हैया शाल के घर उतरे। तब कन्हैया शाल सों कहें हम द्वारिका पधारेंगे। तब कन्हैया शाल नें कही, मैं हू पाछें ते आय कें आपके दरसन करूंगो। तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम कौन भांति आवोगे? वैष्णव बिना तो और सों बोलत नाहीं, मार्ग दूरि हैं। तब कन्हैया शाल नें कही, मेरे और सों काहे कों बोलनो परेगो? मैं आपके पाछे आऊंगो। तब श्रीगुसांईजी कहें। तुम्हें कृपा को बल है। जो-चाहो सो करो। पाछे श्रीआचार्यजी के ग्रन्थन की वार्ता कन्हैया शाल पास दोय दिन श्रीगुसांईजी करें। पाछें आप तो द्वारिका पधारे। सो एक दिन कन्हैया शाल के मनमें आई, जो-द्वारिका जैये, श्रीगुसांईजी सों मिलियें। सो निकसि चले, सो मार्ग की ठीक नाहीं। काहू सों बोले नाहीं। सो तीनि दिन चले गये। सो एक वन में जाय निकसें। तहां सघन वन, जल नाहीं। तब विचारे, जो-देह छूटेगी। तब श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ एक रूख के नीचें बेठिकें पाठ करन लागें।

ભાવપ્રકાશ—પછી કન્હૈયાશાલની માતાની દેહ છુટી. ત્યારે કન્હૈયાશાલ કહે, આ પણ પ્રતિબંધ મટ્યો. ક્ષણ ક્ષણમાં ખાનપાનનો પ્રતિબંધ કરતી. ત્યારથી કન્હૈયાશાલને શરીરની સુધ હોય ત્યારે ખાન પાન કરે, નહીં તો એમજ બેસી રહે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨-પછી એક સમય શ્રીગુસાંઈજી અડેલથી આગ્રા પધાર્યા. ત્યાં કન્હૈયાશાલના ઘરે ઉતર્યા. ત્યારે કન્હૈયાશાલને કહે, અમે દ્વારિકા પધારીશું. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, હું પણ પાછળથી આવીને આપનાં દર્શન કરીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, તમે કઇ રીતે આવશો? વૈષ્ણવ વિના તો કોઇથી બોલતા નથી. માર્ગ લાંબો છે. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, મારે બીજાથી શા માટે બોલવું પડશે? હું તો આપની પાછળ આવીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, તમને કૃપાનું બલ છે. જે ચાહો તે કરો. પછી શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થોની વાર્તા કન્હૈયાશાલ પાસે બે દિવસ શ્રીગુસાંઈજીએ કરી. પછી આપ તો દ્વારકા પધાર્યા. પછી એક દિવસ કન્હૈયાશાલના મનમાં આવ્યું, કે દ્વારકા જૈએ, શ્રીગુસાંઈજીને મળીએ. તે નિકળી ચાલ્યા પણ માર્ગનું જ્ઞાન નહી. કોઇથી બોલે નહી. તે ત્રણ દિવસ ચાલ્યા ગયા. તે એક વનમાં જઇ નિકળ્યા, ત્યાં સઘન વન જલ નહીં. ત્યારે વિચાર્યું કે દેહ છૂટશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થના

इतने में एक ग्वारिया आयकें कह्यो, जो–यहां तू क्यों बैठ्यो है। यहां स्याँप, नाहर को डर है। तब कन्हैयाशाल नें कही, मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक हों। सों स्याँप, नाहर तो मेरे पास कोई आवें नाहीं। तब ग्वारिया नें कही, तलाब तेरे पाछें हैं, जल तो पी। तब पीछे देखे तो जल भरयो है। सो जल पीवन लागे। तब दूसरो ग्वारिया महाप्रसाद श्रीनाथजी को सखड़ी, अनसखड़ी ले आय कह्यो, यह महाप्रसाद तू ले। तब कन्हैयाशाल नें कही, महाप्रसाद कहां को है? मैं तो घर को लेहूं के श्रीगुसांईजी के यहां को लेहुं। और को महाप्रसाद तो लेत नाहीं। तब ग्वारिया नें कही, यह श्रीनाथजी को महाप्रसाद है। तू कहा श्रीरणछोडजी के ऊपर हत्या देवें कों निकस्यो है? इतनो हठ करत है? तब महाप्रसाद देखें, सो श्रीनाथजी को जानि महाप्रसाद कों दंडवत करि, लियो। पाछे तीसरो ग्वारिया आय कह्यो यहां आय बैठ्यो कहा करत हैं? श्रीरणछोडजी के दरसन कों जा। तब पाछें फिरिकें देखे तो श्रीरणछोड़जी को मंदिर दीसत है। तब कन्हैया शाल नें कही, उहां श्रीगुसांईजी पधारे होंहि तो जाऊ। तब ग्वारिया नें कही, मोकों श्रीगुसांईजी नें पठायो है, तोकों संदेसो कहन कों। सो तू वेगि जा। तब कन्हैया शाल श्रीरण-

---

એક વૃક્ષ નીચે બેસીને પાઠ કરવા લાગ્યા. એટલામાં એક ગોવાળીયો આવીને કહે, અહીં તૂ કેમ બેઠો છે? અહીં સાપ, વાઘ, નો ડર છે. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, હું શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો સેવક છું. સાપ, વાઘ, મારી પાસે કોઇ આવે નહીં. ત્યારે ગોવાળીએ કહ્યું, તલાવ તારી પાછળ છે જલ તો પી. ત્યારે પાછળ જુએ તો જલ ભર્યું છે. જલ પીવા લાગ્યા. ત્યારે બીજો ગોવાળીઓ શ્રીનાથજીનો સખડી, અનસખડી મહાપ્રસાદ લઇને આવ્યો. કહ્યું, આ મહાપ્રસાદ તૂ લે. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, મહાપ્રસાદ ક્યાંનો છે? હું તો ઘરનો લઉં કે શ્રીગુસાંઇજીને ત્યાંનો લઉં. બીજાનો મહાપ્રસાદ લેતો નથી. ત્યારે ગોવાળીએ કહ્યું, આ શ્રીનાથજીનો મહાપ્રસાદ છે. તૂ શું શ્રીરણછોડજી ઉપર હત્યા દેવાને નિકળ્યો છે? આટલી હઠ કરે છે? ત્યારે મહાપ્રસાદ જુએ તો શ્રીનાથજીનો જાણી મહાપ્રસાદને દંડવત્ કરી, લીધો. પછી ત્રીજો ગોવાળીઓ આવ્યો ને કહ્યું, અહીં આવીને બેસીને શું કરે છે? શ્રી રણછોડજીના દર્શને જા. ત્યારે પાછળ ફરીને જુએ તો રણછોડજીનું મંદિર દેખાય છે. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, ત્યાં શ્રીગુસાંઇજી પધાર્યા હોય તો જાઉં. ત્યારે ગોવાળીએ કહ્યું, મને શ્રીગુસાંઇજીએ મોકલ્યો છે. તને સંદેશો કહેવાને તેથી તૂ જલ્દી જા. ત્યારે કન્હૈ-

छोडजी के मन्दिर में गये, श्रीगुसांईजी पास। तब श्रीगुसांईजी आप कहें, कन्हैया शाल आये? मार्ग में काहू सों बोले कें नाहीं? तब कन्हैया शाल कहें, महाराज! मेरे और सों बोलिवे को कहा काम है? तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम तीनि ग्वारियान सों बोले, (ताते) एसें क्यों कहत हो? तब कन्हैया शाल नें कही, महाराज! मेरी बानी आप विना और काहू सों निकसें ही नाहीं। तीनों ग्वारियान को स्वरूप, आप बिना मोंकों वन में सखड़ी अनसखड़ी महाप्रसाद कौन धरे? और के हाथ को मैं लेऊँ कैसें? यह सब आप की कृपा है। तब श्रीगुसांईजी कन्हैया शाल को हाथ पकरि कें श्रीरणछोड़जी के दरसन कराये। सो कन्हैया शाल कों श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन भये। तब कन्हैयाशाल सों श्रीगुसांईजी कहें। जो-श्रीरणछोड़जी के दरसन किये। तब कन्हैयाशाल नें कही, आपकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धनधर नैनन लागि रहे हैं। सो श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन भये।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-कन्हैया शाल कों व्रजलीला विना और में मन जाय ही नाहीं।

तब श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल कों अपने डेरा पर लाय कहें, अब तुम हमारे संग आगरे चलियो। तब कन्हैयाशाल ने कही, म-

---

યાશાલ શ્રીરણછોડજીના મંદિરમાં ગયા, શ્રીગુસાંઇજી પાસે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કન્હૈયાશાલ આવ્યા? માર્ગમાં કોઇથી બોલ્યા કે નહીં? ત્યારે કન્હૈયાશાલ કહે, મહારાજ! મારે બીજાથી બોલવાનું શું કામ છે? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, તમે ત્રણ ગોવાળીઆઓથી બોલ્યા તેથી એમ કેમ કહો છો? ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, મહારાજ! મારી વાણી આપના વિના બીજા કોઇ આગળ નિકળેજ નહીં. ત્રણે ગોવાળીઆના સ્વરૂપે આપના વિના મને વનમાં સખડી, અનસખડી, કોણ ધરે? બીજાના હાથનું હું કેવી રીતે લઉં? આ બધી આપની કૃપા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કન્હૈયાશાલનો હાથ પકડીને શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરાવ્યાં. તે કન્હૈયાશાલને શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન થયાં. ત્યારે કન્હૈયાશાલને શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કર્યાં? ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, આપની કૃપાથી શ્રીગોવર્દ્ધનધર નેત્રોમાં લાગી રહ્યા છે. તે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન થયાં.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે કન્હૈયાશાલનું વ્રજલીલા વિના બીજામાં મન જાયજ નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧–ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કન્હૈયાશાલને પોતાના મુકામે લાવીને કહે,

हाराज! आपतो दैवी जीवन कों अंगीकार करन कों पधारे हो, सो आपुकों ढील लागेगी। और मोकों अकेले बहोत सुहात हैं। तातें आपकी कृपा तें आगरे जाय पहोंचोंगो। तब श्रीगुसांईजी कहें, जो–तुमकों श्रीआचार्यजी की कृपा को बल है। जो करोगे सोई तुमकों ठीक है। पाछे कन्हैयाशाल श्रीगुसांईजी सों आज्ञा मांगि आगरे कों चले। सो भगवदावेस में दोय दिन चले गये। सो आगें झाड़ी सघन आई, तहां मार्ग न पावें। तहां एक रूख के नीचे बैठि गये। तहां श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ श्रीगुसांईजी कृत टीका तथा रहस्य ग्रन्थ देखन लागे। तब एक ग्वारिया आय कह्यो। तू यहां क्यों बैठ्यो है। श्रीयमुनाजी में स्नान करनो होंय, जलपान करनो होय, तो करिकें अपुने घर जा। तब कन्हैयाशाल की द्दष्टि पोथी पर ही, सो ऊँची द्रष्टि करिकें देखें तो श्रीयमुनाजी और आगरो सहेर है। तब श्रीयमुनाजी में स्नान करि, जलपान करि, पाठ पूजन करि घर आये। पाछे श्रीगुसांईजी द्वारिका तें कछुक दिनमें आप आगरे पधारे। तब कन्हैयाशाल सों पूछे, तुम आगरे कै दिन में और कैसे आये? तब कन्हैयाशाल ने कही, मोकों तो खबरि नाहीं। आपही मोकों द्वारिका ले गये और आपही आगरे पहुँचाये, इतनो मैं जानत हों। तब श्रीगु-

હવે તમે અમારી સાથે આગ્રા ચાલજો. ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, મહારાજ! આપ તો દૈવી જીવોનો અંગીકાર કરવા પધાર્યા છો. તેથી આપને વાર લાગશે. વળી મને એકલામાં ઘણું ગમે છે. તેથી આપની કૃપાથી આગ્રા જઇ પહોંચીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે તમને શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાનું બલ છે. જે કરશો તેજ તમને ઠીક છે. પછી કન્હૈયાશાલ શ્રીગુસાંઇજીથી આજ્ઞા માંગી આગરાએ ચાલ્યા. તે ભગવદાવેશમાં બે દિવસ ચાલ્યા ગયા. આગળ ઝાડી સઘન આવી ત્યાં માર્ગ ન મળે, ત્યાં એક વૃક્ષ નીચે બેસી ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થ શ્રીગુસાંઇજીકૃત ટીકા તથા રહસ્ય ગ્રંથ દેખવા લાગ્યા. ત્યારે એક ગોવાળીએ આવી કહ્યું, તૂ અહીં કેમ બેઠા છે? શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરવું હોય, જલપાન કરવું હોય તો કરીને તારે ઘરે જા, ત્યારે કન્હૈયાશાલની દૃષ્ટિ પોથી ઉપર હતી તે ઉંચી દૃષ્ટિ કરીને જુએ તો શ્રીયમુનાજી અને આગ્રા શહર છે. ત્યારે શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી જલપાન કરી પાઠપૂજન કરી ઘર આવ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી દ્વારકાથી થોડા દિવસમાં આપ આગ્રા પધાર્યા. ત્યારે કન્હૈયાશાલને પૂછ્યું, તમે આગ્રા કેટલા દિવસમાં અને કેવી રીતે આવ્યા? ત્યારે કન્હૈયાશાલે કહ્યું, મને તો ખબર નથી. આપજ મને દ્વારકા લઇ ગયા અને આપેજ આગ્રા પહોંચાડયો એટલું

सांईजी प्रसन्न होयकें तीन दिन कन्हैयाशाल के घर रहे। भगवद वार्ता करि बहोत प्रसन्न भये। पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे। कन्हैयाशाल कों लौकिक वैदिक जब सरीर की सुधि होय तब करे। परन्तु पाछें कछू सुधि न रहें। लीला रस में मगन रहते। सो कन्हैयाशाल की ऐसी लोक वेद विरुद्ध बात हैं। सो कही न जाय।

भावप्रकाश—काहेतें, कहिये तो लोगन कों श्रीठाकुरजी की लीला के भाव की खबरि नाहीं है, तातें उनकों विश्वास न होय। तातें प्रकास नाहीं किये। प्रेम की रीति अटपटी हैं। सो सूरदासजी नें गायो है—

राग सारंग—व्रज लीला कोऊ पार न पायो।
ब्रह्मा, शेष, महेस, नारायण मति ही भुलायो ॥१॥
वेद स्मृति सुनि हरि ही मिलन बहु मारग बतायो।
गोपीजन निज मारग "सूर" न्यारो दिखरायो ॥२॥

तातें कन्हैयाशाल ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७०॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक, नरहरदास गोडिया ब्राह्मण, बंगाला के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो नरहरदास बंगाला में प्रगटे। लीला में ये कुमारिका

हुं जाणुं छुं. त्यारे श्रीगुसांईजी प्रसन्न थईने त्रण दिवस कन्हैयाशालना घरमां रह्या. भगवद्‌वार्ता करी बहुज प्रसन्न थया. पछी श्रीगुसांईजी अडेल पधार्या. कन्हैयाशालने लौकिक वैदिक ज्यारे शरीरनी सुधि होय त्यारे करे. ते कन्हैयाशालनी एवी लोक-वेद विरुद्ध वात छे ते कही न जाय.

भावप्रकाश—केमके, कहीए तो लोकोने श्रीठाकुरजीनी लीलाना भावनी खबर नथी तेथी एमने विश्वास न थाय. तेथी प्रकाश नथी कर्यो. प्रेमनी रीत अटपटी छे, ते सूरदासजीए गायुं छे– 'व्रजलीला कोउ पार न पायो' (उपर जुओ).

वार्ता-प्रसंग १–तेथी कन्हैयाशाल एवा श्रीआचार्यजीना कृपापात्र भगवदीय हता. एमनी वार्ता क्यां सुधी कहीए? वार्ता ॥ ७० ॥

✻ ✻ ✻

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक नरहरदास गोडीया ब्राह्मण बंगालाना तेमनी वार्तानो भाव कहीए छीए—

भावप्रकाश—ए नरहरदास बंगालामां प्रकट्या. लीलामां ए कुमारिकाना

के जूथ में हैं। तहां इनको नाम 'सुगंधरा' है। सो पूर्व में जब बड़े भये तब नरहरदास की प्रीति श्रीजगन्नाथरायजी में लगी। सो एक समय वर्ष दिन जगन्नाथरायजी में लगे रहे, पाछे घर गये। तब पिताने कही, बेटा! मैं तो अब वृद्ध भयो। तू जिजमान पास जात नाहीं। मेरे मरे पाछे कहांते खायगो? तू बेर बेर श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों जात है। कछु जगन्नाथरायजी देत हैं? तब नरहरदास नें कही, जगन्नाथरायजी सगरे जगत कों देत हैं, सो मोहूँ कों देत हैं। आजु पाछें तू मोकों कछु मति दीजो, देखों जगन्नाथरायजी मेरो पालन करत हैं के नाहीं। तब नरहरदास के पिता ने कही, जो–जगन्नाथरायजी सबकों देत हैं तो भेट पूजा क्यों लेत हैं? सब लेवे वारे हैं। देवे वारो कोई ठाकुर नाहीं है। जब मैं तोकों खरची देत हों, तब तू जाय श्रीजगन्नाथरायजी को दरसन करत है। जो मैं न देऊंगो तो भीख मांगेगो। तब नरहरदास कों बहोत क्रोध चढ्यो। सो पिता सों कही, तू भगवान को निंदक है। तातें आजु पाछें तेरो कछु लेहुंगो नाहीं। और तेरे घरमें न रहुंगो। तेरो मुख देखनो उचित नाहीं है। तू ऐसी बात कह्यो, जो–म्लेच्छ हू ऐसी बात न कहें। यह कहि घरसों उठि चले। तब पिता नें बहोत समुझायो, बिनती हू करी, जो–मैं चूक्यो। परन्तु नरहरदास दैवी जीव हैं। सो

યૂથમાં છે. ત્યાં એમનું નામ 'સુગધરા' છે. એ પૂર્વમાં જ્યારે મોટા થયા ત્યારે નરહુરદાસની પ્રીતિ શ્રીજગન્નાથરાયજીમાં લાગી. પછી એક સમય વર્ષ દિન જગન્નાથરાયજીમાં લગાતાર રહ્યા. તે પછી ઘર આવ્યા. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, બેટા! હું તો હવે વૃદ્ધ થયો. તૂ યજમાનો પાસે જતો નથી તો મારા મર્યા પછી ક્યાંથી ખાઈશ? તૂ વારે વારે જગન્નાથરાયજીનાં દર્શને જાય છે, કંઈ જગન્નાથરાયજી આપે છે? ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, જગન્નાથરાયજી બધા જગતને આપે છે, તે મને પણ આપે છે. આજ પછી તૂ મને કંઈ આપીશ નહી. જો જગન્નાથરાયજી મારૂ પાલન કરે છે કે નહી? ત્યારે નરહુરદાસના પિતાએ કહ્યું, કે જગન્નાથરાયજી બધાને આપે છે તો ભેટ પૂજા કેમ લે છે? બધા લેવાવાળા છે આપવાવાળો કોઈ ઠાકુર નથી. જ્યારે હું તને ખર્ચી આપું છું ત્યારે તૂ જઈને શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરે છે. જો હું ન આપું તો ભીખ માગીશ. ત્યારે નરહુરદાસને બહુ ક્રોધ ચઢ્યો તેથી પિતાને કહ્યું, તૂ ભગવાનનો નિંદક છે તેથી આજ પછી તારૂં કંઈ લઈશ નહીં અને તારા ઘરમાં નહી રહું. તારૂ મુખ જોવું ઉચિત નથી. તે એવી વાત કહી! જે મ્લેચ્છ પણ એવી વાત ન કહે. એમ કહી ઘરથી ઉઠી ચાલ્યા ત્યારે પિતાએ ઘણો સમજાવ્યો.

श्रीठाकुरजी की निन्दा सुनी न गई। सो जगन्नाथरायजी के दरसन आय करे। परन्तु कछु पास नाहीं। तब समुद्र के तीर जाय बैठे। मनमें विचारयो, जो–अब काहुसों मांगनों नाहीं। मांगि कें निर्वाह करूँगो तो मेरो पिता कबहूं आवे, तथा घरही में सुने तो कहेगो, जो–मैं कही सो भई। तातें, जो–जगन्नाथरायजी देयंगे तो खाऊंगो। नाहीं तो होनहार होयगी सो सही। पाछे रात्रि भई तब श्रीजगन्नाथरायजी महाप्रसाद लैं एक बालक वर्ष सोरह को भेख करि आय कहें, ब्राह्मण! महाप्रसाद ले। तब नरहरदास ने कही, मैं महाप्रसाद की अवज्ञा कैसें करूँ, दे जाऊ। परन्तु मोकों तो श्रीजगन्नाथरायजी देंहीगे तब ही लेहुँगो। यह मन में निर्द्धार कियो हैं। तब (उन) कहे, श्रीजगन्नाथरायजी देत हैं। और कौन देत हैं? उनकी इच्छा विना कौन तोकों यहां देन आवेगो? तब प्रसन्न होय महाप्रसाद लियो। आप तो पधारे। पाछे नरहरदास सोयो। तब श्रीजगन्नाथरायजी ने कही, तू प्रातःकाल श्रीआचार्यजी के पास जाय सेवक होउ। सो तेरो सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो। तब नरहरदास ने कही, मैं तो श्रीआचार्यजी कों पहिचानत नाहीं, कहां जाऊँ? तब श्रीजगन्नाथरायजी कहें, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रसिद्ध हैं। जासों

વિનતી પણ કરી, કે હું ચૂક્યો. પરંતુ નરહરદાસ દૈવી જીવ છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીની નિંદા સાંભળી ન ગઈ. પછી શ્રીજગન્નાથરાયનાં આવીને દર્શન કર્યાં, પરંતુ કંઇ પાસે ન હતું. તેથી સમુદ્રના કિનારે જઈ બેઠા. મનમાં વિચાર્યું, કે હવે કોઇથી માંગવું નહીં. માંગીને નિર્વાહ કરીશ તો મારો પિતા કયારેક આવે તથા ઘરમાં સાંભળે તો કહેશે કે મેં કહ્યું તે થયું. તેથી જો જગન્નાથરાયજી દેશે તો ખાઈશ. નહીં તો થવા કાળ હશે તે ખરૂં. પછી રાત્રિ થઈ ત્યારે શ્રીજગન્નાથરાયજી મહાપ્રસાદ લઈ એક સોળ વર્ષના બાળકનું રૂપ ધરી આવી કહે, બ્રાહ્મણ! મહાપ્રસાદ લે. ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, હું મહાપ્રસાદની અવજ્ઞા કેમ કરૂં? દે જાવ. પરંતુ મને તો શ્રીજગન્નાથરાયજી દેશે ત્યારે જ લઈશ એવો મનમાં નિશ્ચય કર્યો છે. ત્યારે (તેણે) કહ્યું, શ્રીજગન્નાથરાયજી દે છે, બીજો કોણ દે છે? એમની ઈચ્છા વિના કોણ તને અહીં દેવા આવે? ત્યારે પ્રસન્ન થઈ પ્રસાદ લીધો. (પછી) આપ તો પધાર્યા. પછી નરહરદાસ સોયા. ત્યારે જગન્નાથરાયજીએ કહ્યું, તૂ પ્રાતઃકાલ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે જઈ સેવક થજે. તારો બધો મનોરથ પૂર્ણ થશે. ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, હું તો શ્રીઆચાર્યજીને ઓળખતો નથી. કયાં જઉં? ત્યારે શ્રીજગન્નાથરાયજી કહે, શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પ્રસિદ્ધ છે જેને પૂછીશ તે તને બતાવશે. એ મારૂં સ્વરૂપ આ-

पूछेगो सोई तोकों बतावेगो। सो मेरो स्वरूप श्रीआचार्यजी कों जानियो। तब प्रातःकाल नरहरदास उठिकें पूछत पूछत जाय श्रीआचार्यजी पास दंडवत् किये। तब श्रीआचार्यजी कहें आऊ, नरहरदास! तोकों ऐसी ही टेक चहिये। जो–पिता कों तिरस्कार करि आयो। आगें प्रह्लादजी हूँ पिता कों कह्यो नाहीं किये। ताते तेरो नाम अब नरहरदास ठीक भयो। परन्तु तू पुष्टिमार्गीय दैवी जीव परम उत्तम हैं। तब नरहरदास जानें, जो–ये साक्षात् ईश्वर हैं। मेरे पिता की सगरी बात कहि दीनी। तब नरहरदास नें विनती करी, जो–महाराज! मोकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–अबही तेरो चित्त द्रव्य में हैं। तातें भगवद् नाम अब ही तोकों फलेगो नाहीं। तातें तू जायके समुद्र के तीर बैठि, समुद्र की लहरि में तोकों द्रव्य मिलेगो। ता द्रव्य तें जो मनोरथ श्रीजगन्नाथरायजी को विचारयो है सो पूर्ण करो। पाछे सरनि लेंयगे, तू हमारो है। तातें अब तोकों संसार दुःख बाधा न करेगो। तब नरहरदास ने कही, महाराज! द्रव्य में मेरो मन बहोत है, सो जस करिवे कों। जो–मन मान्यो खरचूं, पिता हूं सुनिकें लाज पावें। जो जगन्नाथरायजी ऐसे ठाकुर हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–जा, समुद्र किनारें तेरो मनोरथ पूरन होयगो। तब नरहदास जहां कोई न हतो। तहां जाय समुद्र के किनारे बैठें।

ચાર્યજીને જાણજે. ત્યારે પ્રાતઃકાલ નરહરદાસ ઉઠીને પૂછતા પૂછતા જઈ આચાર્યજી પાસે દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આવો નરહરદાસ! તને એવી જ ટેક જોઇએ કે પિતાનો તિરસ્કાર કરી આવ્યો. આગળ પ્રહ્લાદજીએ પણ પિતાનું કહ્યું ન્હોતું માન્યુ. તેથી તારૂં નામ હવે નરહરદાસ ખરૂં થયું. પરંતુ તૂ પુષ્ટિમાર્ગીય દૈવી જીવ પરમ ઉત્તમ છે. ત્યારે નરહરદાસે જાણ્યું, કે આ સાક્ષાત્ ઈશ્વર છે. મારા પિતાની બધી વાત કહી દીધી. ત્યારે નરહરદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે હજુ તારૂ ચિત્ત દ્રવ્યમાં છે. તેથી હમણાં તને ભગવદ્‌નામ ફલશે નહીં. તેથી તૂ જઇને સમુદ્રના કિનારે બેસ. સમુદ્રની લહેરમાં તને દ્રવ્ય મળશે. તે દ્રવ્યથી જે મનોરથ શ્રીજગન્નાથરાયજીનો વિચાર્યો છે તે પૂર્ણ કરો. પછી શરણ લઈશું? તૂ અમારો છે. તેથી હવે તને સંસાર દુઃખ બાધા નહીં કરે. ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, મહારાજ! દ્રવ્યમાં મારૂં મન બહુ છે. તે જશ કરવાને, કે મન–માન્યું ખર્ચું. પિતા પણ સાંભળીને લજ્જા પામે, કે જગન્નાથરાયજી આવા ઠાકુર છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે જા, સમુદ્ર કિનારે તારો મનોરથ પૂર્ણ થશે. ત્યારે નરહરદાસ જ્યાં કોઈ ન હતો ત્યાં જઈ સમુદ્રના કિનારે બેઠા.

लहरि में सोना, रूपा, हीरा, मोती आदि नरहरदास के आगें ढेर भयो। सो पोट बांधि मन में प्रसन्न होय श्रीआचार्यजी पास आय, दिखाय कह्यो, जो–महाराज! आपुकी कृपा तें द्रव्य तो बहोत मिलौ। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–जाऊ, श्री-जगन्नाथरायजी को मनोरथ करो। तब नरहरदास नें कही, महाराज! मैं द्रव्य ले जाय खरचों तो, मोकों गरीब सब जानत हैं, सो राजा दंड दे तो मैं कहा करूँ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारो नाम लीजो, कोई न दंडेगो। तब नरहरदास नें कही, महाराज! यामें तें कछु आप राखो। तब श्रीआचार्यजी कहें, यह श्रीजग-न्नाथरायजी को द्रव्य है, सो श्रीजगन्नाथरायजी को मनोरथ करो। यह हमारे काम न आवे। हमारे तो जो कोई हमारो सेवक होय, खरी मजूरी को द्रव्य होय सो हम अंगीकार करत हैं। तब नरहरदास एक जगा ले, तहां सुनार, दरजी बजाज बुलायें। अनेक बागा, वस्त्र, आभूषन, रसोई की सामग्री श्रीजगन्नाथरायजी कों कियो। गाम में कोई भूखो न रहें। पंडान कों दीनों। सो सगरे चकृत ह्वे गये। जो आगे तो नरहरदास गरीब हतो। अब ऐसो द्रव्य कहां ते ले आयो? जो पूछे तिनसों नरहरदास कहें, श्रीआचार्यजी ने दियो हैं, मनोरथ करन कों। पाछे राजा सुनिके आयो, सो कह्यो, जों–तें इतनो द्रव्य कहां पायो? तब नरहरदास नें कही,

---

પછી તરંગમાં સોના, રૂપા, હીરા, મોતી આદિનો નરહરદાસ આગળ ઢગલો થયો. તે ગાંઠ બાંધી મનમાં પ્રસન્ન થઈ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી દેખાડી કહ્યું, કે મહારાજ! આપની કૃપાથી દ્રવ્ય ઘણું મળ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે જાવ શ્રીજગન્નાથરાયજીનો મનોરથ કરો. ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, મહારાજ! હું દ્રવ્ય લઈ ખરચું તો મને બધા ગરીબ જાણે છે તેથી રાજા દંડ દે તો હું શું કરૂં? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારૂં નામ લેજો. કોઈ નહીં દંડે. ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, મહારાજ! એમાંથી કંઇ આપ રાખો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ શ્રીજગન્ના-થરાયજીનું દ્રવ્ય છે. તેથી શ્રીજગન્નાથરાયજીનો મનોરથ કરો. આ અમારે કામ ન આવે. અમારે તો જે કોઈ અમારો સેવક હોય, ખરી મજૂરીનું દ્રવ્ય હોય તેને અમે અંગીકાર કરીએ છીએ. ત્યારે નરહરદાસે એક જગા લઈ ત્યાં સોની, દરજી, કાપ-ડીઆને બોલાવ્યા અને વાગા, વસ્ત્ર, આભૂષણ, રસોઇની સામગ્રી, શ્રીજગન્નાથરાયજીની કરી ગામમાં કોઈ ભૂખ્યો ન રહે. પંડાઓને આપ્યું. બધા ચકિત થઈ રહ્યા, કે આગળ તો નરહરદાસ ગરીબ હતો. હવે આટલું દ્રવ્ય ક્યાંથી લાવ્યો? જે પૂછે તેને નરહરદાસ કહે, શ્રીઆચાર્યજીએ આપ્યું છે મનોરથ કરવાને. પછી રાજા

श्रीआचार्यजी मनोरथ करन कों दिये हैं। पाछे राजा श्रीआचार्यजी के पास आय पूछ्यो। तब श्रीआचार्यजी नें कही जो हम कह्यो हैं। जो श्रीठाकुरजी को मनोरथ करो। सो राजा श्रीआचार्यजी के भेद की बात तो समुझयो नाहीं। यह जान्यो जो आपु दिये होयेंगे। पाछे राजा घर गयो। पाछें पिता ने सुनी, जो-नरहरदास हजारन के मनोरथ करत हैं। तब नरहरदास को पिता नरहरदास के पास आयो। तब नरहरदास पिता की ओर पीठि करि कहे, जो-तू श्रीठाकुरजी को निंदक है, तातें तेरो मुख न देखोंगो। तू देखि, श्रीजगन्नाथरायजी नें कितनों द्रव्य मोकों दियो? सो जाकों दृढ़ विश्वास ठाकुर पर हैं ताकों सब कछू सिद्धि हैं। जाकों श्रीठाकुरजी में विश्वास नाहीं हैं। सो याहू जन्म में दुःखी है, और परलोक में भ्रष्ट होय। परन्तु तू पिता है, श्रीजगन्नाथरायजी की न्योछावरि तू हूं कछू ले जा। सो हजार रुपैया को माल दे कहें, आजु पाछें मोकों मुख मति दिखावो। तब पिता द्रव्य लेकें घर गयो। पाछें कछुक दिन में द्रव्य हूँ निघट्यो। और मन को मनोरथ हू पूर्ण करि नरहरदास श्रीआचार्यजी के पास आय दंडोत करि, बिनती करी, जो-महाराज! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये। अब मेरो मन काहू बात में नाहीं है। आपकी सरनि होन में है। तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, स्नान करि

સાંભળીને આવ્યો. કહ્યું, કે તેં આટલું દ્રવ્ય ક્યાંથી મેળવ્યું ? ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીએ મનોરથ કરવાને દીધું છે. પછી રાજાએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને પુછ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, અમે કહ્યું છે કે શ્રીઠાકુરજીનો મનોરથ કરો. તે રજા શ્રીઆચાર્યજીના ભેદની વાત તો સમજ્યો નહીં. એ જાણ્યું કે આપે દીધું હશે. પછી રાજા ઘરે ગયો. પછી પિતાએ સાંભળ્યું, કે નરહરદાસ હજારોના મનોરથો કરે છે. ત્યારે નરહરદાસનો પિતા નરહરદાસની પાસે આવ્યો. ત્યારે નરહરદાસે પિતાની તરફ પીઠ કરીને કહ્યું, કે તૂ શ્રીઠાકુરજીનો નિંદક છે. તેથી તારૂં મુખ નહીં જોઉં. તૂ જો, શ્રીજગન્નાથરાયજીએ કેટલું દ્રવ્ય મને આપ્યું છે? જેને શ્રીઠાકુરજીમાં વિશ્વાસ નથી તે આ જન્મમાં પણ દુઃખી છે અને પરલોકમાં ભ્રષ્ટ થાય છે. પરંતુ તુ પિતા છે. શ્રીજગન્નાથરાયજીની ન્યોછાવર તૂ પણ કંઈ લઈ જા. પછી હજાર રૂપીઆનો માલ દઇને કહ્યું, આજ પછી મને મુખ ન દેખાડીશ. ત્યારે પિતા દ્રવ્ય લઇને ઘર ગયો. પછી કેટલાક દિવસમાં દ્રવ્ય પણ ઘટયું, અને મનનો મનોરથ પણ પૂર્ણ કરી નરહરદાસે શ્રીઆચાર્યજીની પાસે દંડવત્ કરી વિનંતી કરી કે, મહારાજ! મને કૃપા કરીને શરણે લો. હવે મારૂં મન કોઈ વાતમાં નથી.

आऊ। तब नरहरदास न्हाय कें श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। तब नरहरदास के हृदय में पुष्टिमार्ग को ज्ञान भयो। तब श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती किये, महाराज! मैं बहोत बुरो काम कियो हैं। जो श्रीठाकुरजी कों श्रम कराय द्रव्य लें अपुनो जस प्रगट कियो हैं। मैं महादुष्ट, सो मेरो जस कहा, उलटो मन होय, परलोक बिगरें। तातें मोकों धिकार हैं। ठाकुर को द्रव्य ले ठाकुर कों कर्यो। तामें बड़ो स्वार्थ, अज्ञान करिकें मान्यों। अब मैं आपकी सरनि हों मेरो परलोक सुधरें, श्रीठाकुरजी कृपा करें, सो प्रकार मोकों कहो। तब नरहरदास सों श्रीआचार्यजी कहें। तुम श्रीठाकुरजी की सेवा करो। तब नरहरदास नें विनती करी, महाराज! मोकों श्रीठाकुरजी पधराय दीजें। तब श्रीआचार्यजी कहें। तुम समुद्र के किनारे फेरि जाऊ। तहां भगवद् स्वरूप तुमकों मिलेंगे सो ले आवो। तब नरहरदास फेरि वाही ठिकानें समुद्र पास जाय बैठे। सो समुद्र की लहरि मैं दोऊ जुगल स्वरूप आयें। नरहरदास के आगें लहरि धरि चली गई। तब नरहरदास जुगल स्वरूप कों ले श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु जुगल स्वरूप कों पंचामृत सों स्नान कराय पाछें श्रीमदनमोहनजी नाम धरि नरहरदास के माथे पधराये। तब नरहरदास

આપની શરણે થવામાં છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જા સ્નાન કરી આવ. ત્યારે નરહરદાસ ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે નરહરદાસના હૃદયમાં પુષ્ટિમાર્ગનું જ્ઞાન થયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ! મેં બહુ ખોટું કામ કર્યું છે. શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરાવી દ્રવ્ય લઈ પોતાનો યશ પ્રકટ કર્યો છે. હું મહાદુષ્ટ તેથી મારો જશ કેવો? ઉલટું મન થઈ પરલોક બગડે. તેથી મને ધિઃક્કાર છે. ઠાકુરનું દ્રવ્ય લઈ ઠાકુરને કર્યું. તેમાં મોટો સ્વાર્થ અજ્ઞાન કરી મેં માન્યો. હવે હું આપની શરણે છું. મારો પરલોક સુધરે, શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે તે પ્રકાર મને કહો. ત્યારે નરહરદાસને શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે શ્રીઠાકુરજીની સેવા કરો. ત્યારે નરહરદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ! મને શ્રીઠાકુરજી પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે સમુદ્રના કિનારે ફરી જાવ. ત્યાં ભગવદ્સ્વરૂપ તમને મળશે તે લઈ આવો. ત્યારે નરહરદાસ ફરી તે ઠેકાણે સમુદ્ર પાસે જઈ બેઠા. તે સમુદ્રની છોળમાં બન્ને યુગલ સ્વરૂપ આવ્યાં. નરહરદાસની આગળ છોળ ધરી ચાલી ગઈ. ત્યારે નરહરદાસ યુગલ સ્વરૂપને લઇને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ

नें श्रीआचार्यजी सों बिनती कीनी, महाराज ! मेरे घरमें पिता बहिर्मुख हैं, सो मोपें घर गयो न जाय। और यहां मेरो लौकिक में जस भयो। सो यहां मांगिकें सेवा करी न जाय। सो मेरे जिजमान बङ्गाली कासी में बहोत हैं। तहां आप कहो तो जायकें भगवद् सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी कहें, जहां भगवद् सेवा भली भांति सों बने बाकों वही देस उत्तम हैं। और हम हूँ कों यहां बहोत दिन भये हैं। तातें हम दक्षिण होय कासी आवेंगे। तू सूधो कासी कों जा। पाछे श्रीआचार्यजी तो दक्षिण पधारे। और नरहरदास कासी में आय श्रीमदनमोहनजी की सेवा मन लगायकें करन लागें। सो कछुक दिन में श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जनावन लागें।

वार्ता-प्रसंग १—**सो नरहरदास ने श्रीमदनमोहनजी की सेवा बहोत वर्ष लों भली भांतिसों करी। पाछें सरीर थक्यो वृद्ध भये। सो सेवा ह्वे न सकें। तब श्रीमदनमोहनजी कों पधरायकें श्रीगोकुल आये, श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि श्रीमदनमोहनजी कों श्रीगुसांईजी के घर पधराये। पाछें श्रीगुसांईजी नें गोकुलचन्द्रमाजी के पास बैठाये। सो श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के पास जुदे सिंघासन पर बैठे हैं।**

યુગલ સ્વરૂપને પંચામૃતથી સ્નાન કરાવી પછી શ્રીમદનમોહનજી નામ ધરી નરહરદાસના માથે પધરાવ્યા. ત્યારે નરહરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! મારા ઘરમાં પિતા બહિર્મુખ છે તેથી મારાથી ઘર ન જવાય. અને અહીં મારો લૌકિકમાં યશ થયો તેથી અહીં માંગીને સેવા કરી ન જાય. તેથી મારા યજમાન બંગાલી કાશીમાં ઘણા છે. ત્યાં આપ કહો તો જઇને ભગવદ્સેવા કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જ્યાં ભગવદ્સેવા સારી રીતથી બને તેને માટે તેજ દેશ ઉત્તમ છે. વળી અમને પણ અહીં ઘણા દિવસ થયા છે. તેથી અમે દક્ષિણ થઈ કાશી આવીશું. તૂ કાશીએ સીધો જા. પછી શ્રીઆચાર્યજી તો દક્ષિણ પધાર્યા. અને નરહરદાસ કાશીમાં આવી શ્રીમદનમોહનજીની સેવા મન લગાવીને કરવા લાગ્યા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીમદનમોહનજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧–**એ નરહરદાસે શ્રીમદનમોહનજીની સેવા ઘણા વર્ષ સુધી સારી રીતે કરી. પછી શરીર થાકયો વૃદ્ધ થયા. તેથી સેવા થઇ ન શકી. ત્યારે શ્રીમદનમોહનજીને પધરાવીને શ્રીગોકુલ આવ્યા, શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરી શ્રીમદનમોહનજીને શ્રીગુસાંઇજીના ઘરે પધરાવ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની પાસે બેસાડ્યા. તે શ્રીગોકુલચંદ્રમાજીની પાસે જુદા સિંઘાસન ઉપર બેઠા છે.** પછી નરહર-

सो नरहरदास पाछें व्रज में जन्म भरि भावना करि मानसी सेवा सों निर्वाह किये। सो नरहरदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय है। इनकी वार्ता कहां तांई कहियें। वार्ता ॥७१॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नरहर सन्यासी गौड़ ब्राह्मण, आगरे तें गुजरात जाय कें इनको पिता रह्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—नरहर सन्यासी लीला में श्रुतिरूपा हैं, मनसुखा गोप की बेटी, इनको नाम लीला में "गुलाबी" और गुलाबी की एक सखी हती। तिनको नाम 'पॉडरि'। सो वेणी कोठारी गुजरात में भये। सो एक समय आगरे में दुष्काल भयो तब नरहर सन्यासी को पिता आगरो छोड़ि गुजरात कुटुम्ब सहित जाय रह्यो। तहां नरहर सन्यासी जन्में। और वर्ष पन्द्रह के भये तब नरहर कों एक सन्यासी को संग भयो। सो नरहर, सन्यासी भये। सो वरष दिन लों तपस्या करी। उष्णकाल में पंचाग्नि तापें। वरषायत में जलकी धारा माथे लिये। सीतकाल में प्रातःकाल जलमें बैठते। सो नरहर सन्यासी की मानता गुजरात में बहोत भई। सेवक हू बहोत लोगन कों किये। तब वेणी कोठारी हू नरहर सन्यासी को सेवक भयो। सो नरहर सन्यासी स्त्री कूं देखें तब मुख पर कपरा डारि लेय। ऐसी त्याग

દાસે જન્મભર વ્રજમાં ભાવના કરી માનસી સેવાથી નિર્વાહ કર્યો. તે નરહરદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, નરહર સન્યાસી ગૌડ બ્રાહ્મણ આગરાથી ગુજરાત જઇને એમનો પિતા રહ્યો, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—નરહર સન્યાસી લીલામાં શ્રુતિરૂપા છે. મનસુખા ગોપની બેટી. એનું નામ 'ગુલાબી' અને ગુલાબીની એક સખી હતી 'પૉડરી' એ વેણી કોઠારી ગુજરાતમાં થયા. પછી એક સમય આગરામાં દુકાળ થયો ત્યારે નરહર સન્યાસીનો પિતા આગ્રા છોડી ગુજરાત કુટુંબ સહિત જઈ રહ્યો. ત્યાં નરહર સન્યાસી જન્મ્યા. પછી વર્ષ પંદરના થયા ત્યારે નરહરને એક સન્યાસીનો સંગ થયો. તે નરહર સન્યાસી થયા. તે વર્ષ દિવસ સુધી તપસ્યા કરી. ઉષ્ણકાલમાં પંચાગ્નિ તાપે. વર્ષાઋતુમાં જલની ધારા માથે લે. શીતકાલમાં પ્રાતઃકાલ જલમાં બેસતા. તે નરહર સન્યાસીની માનતા ગુજરાતમાં ઘણી થઈ. સેવક પણ ઘણાં લોકોને કર્યા. ત્યારે વેણી કોઠારી પણ નરહર સન્યાસીનો સેવક થયો. તે નરહર સન્યાસી સ્ત્રીને જુએ

दसा में रहें। सो मही नदी के किनारे एकान्त में, जहाँ पास गाम नाहीं, तहां स्थल बनाय कें रहे। तहां तें कोस दोय पर गाम। तहां एक तेली के सन्तान न हती। सो उह तेली की स्त्री नें विचारी, जो–नरहर सन्यासी बड़े महापुरुष हैं। वह कछु औषध देइ तो मेरे पुत्र होय। परन्तु वे काहू को मुख देखत नाहीं। पाछें एक दिन सीरा पूरी करि संध्या समय उह तेलिन आई। तब नरहर सन्यासी के पास आई। तब तेलिन नें अपने मुख पर कपरा डारि नरहर सन्यासी कों पुकार्यो। तब नरहर सन्यासी पास आय पूछें, तू कौन है? तब इन कही मैं तेलिन हूँ। सो तुम्हारे लिये सीरा पूरी लाई हों। तुम स्त्री को मुख नाहीं देखत ताते मैं अपने मुख पर कपरा डार्यो। तब नरहर सन्यासी ने कही, मैं हूँ द्वै दिन को भूखो हों। परन्तु तेरी प्रीति बड़ी है, जो–दोय कोस तें मेरे लिये ले आई। तब नरहर सन्यासी लियो। तब तेलिन प्रसन्न भई। जो ये लिये तो सही। पाछे दूसरे दिन फेरि संध्या समय सीरा पूरी लाई। तब नरहर सन्यासी ने कही, अब तो यहां कोई है नाहीं, तातें तू मुख खोलि। तब उह तेलिन नें मुख खोल्यो। सीरा पूरी दे आई। पाछें नित्य संध्या समय जाय। ऐसे करत दिन दस बारह भये। सो एक दिन

त्यारे मुख उपर कपडुं नाखी दे. एवी त्याग दशामां रहे. ते मही नदीना किनारे एकान्तमां ज्यां पासे कोई गाम नहीं त्यां स्थल बनावीने रहे. त्यांथी कोस बे उपर गाम. त्यां एक घांचीने संतान न हतुं. तेथी ते घांचीनी स्त्रीए विचार्युं, के नरहर सन्यासी मोटा महापुरुष छे ते कंई औषध दे तो मारे पुत्र थाय. परंतु ए कोइनुं मुख जोता नथी. पछी एक दिवस शीरो पुरी करी संध्या समय ते घांचण आवी. त्यारे नरहर सन्यासीनी पासे आवी. त्यारे घांचणे पोताना मुख उपर कपडुं नाखी नरहर संन्यासीने पुकार्या. त्यारे नरहर सन्यासी पासे आवीने पूछे, तू कोण छे? त्यारे एणे कह्युं, हुं घांचण छुं. तमारा माटे शीरो पुरी लावी छुं. तमे स्त्रीनुं मुख नथी जोता तेथी मारा मुख उपर वस्त्र नाख्युं छे. त्यारे नरहर सन्यासीए कह्युं, हुं पण बे दिवसनो भूख्यो छुं परंतु तारी प्रीति वधारे छे के बे कोसथी मारा माटे लई आवी. त्यारे नरहर सन्यासीए लीधुं. त्यारे घांचण प्रसन्न थई, के ए लीधुं तो खरुं. पछी बीजा दिवसे फरी संध्या समय शीरो पुरी लावी. त्यारे नरहर सन्यासीए कह्युं, हवे तो अहीं कोई छे नहीं. तेथी तू मुख खोल. त्यारे ते घांचणे मुख खोल्युं. शीरो पुरी दई आवी. पछी नित्य संध्या समय जाय. एम करतां दिवस दश–बार थया. पछी एक दिवस शीरो पुरी लइने नरहर

सीरा पूरी लेकें नरहर सन्यासी के कोठा भीतर गई। इतने में गुजरात को हाकिम नरहर सन्यासी की बड़ाई सुनिकें मिलिवे कों आयो। तव वह तेलिन नरहर सन्यासी के घरमें छिप रही। सो उह हाकिम रात्रि कों नरहर सन्यासी के पास रह्यो। सो सवेरो होत ही वह तेलिन नरहर सन्यासी पास आय कह्यो, मेरी वहू काल्हि सांझ की तुमकों सीरा पूरी देन आई, सो फिर घर नाहीं आई। रात्रि कों तुम क्यों राखे? तुम तो स्त्री को मुख नाहीं देखत। तब नरहर सन्यासी ने कही यहां तो नाहीं आई। तब तेली नें कही, तुम्हारे घर में निकसे तो! पाछे तेली नें नरहर सन्यासी को घर ढूंढ्यो। तब भीतर तें पकरि कें काढ़ी। सो देखिकें हाकिम वहोत कोप्यो। तब नरहर सन्यासी को घर गिराय कह्यो, यहां तें और देस निकसि जा। तब नरहर सन्यासी व्रज में आये। मनमें कहें स्त्री को संग ऐसोई है, बुरो है। जो संग होतो तो परलोक बिगरतो। प्रभू नें मोकों दंड दिखायो। यह बिचारि व्रज में फिरें। पाछें वेनी कोठारी ने सुनी, जो–नरहर सन्यासी व्रज में हैं। तब मनमें विचारी जो वहोत दिन भये हैं। मेरे गुरु नरहर सन्यासी हैं, सो व्रज में ह्वै आऊँ। नरहर सन्यासी सों मिलि आऊँ। तब वेनी कोठारी गुजरात तें व्रज में आये। सो वृन्दावन में नरहर सन्यासी कों मिले। वार्ता करत हते। सो एक दिन

સન્યાસીના ઓરડા અંદર ગઈ. એટલામાં ગુજરાતનો હાકેમ નરહર સન્યાસીની વડાઈ સાંભળીને મળવાને આવ્યો. ત્યારે તે ઘાંચણ નરહર સન્યાસીના ઘરમાં છુપાઈ રહી. પછી તે હાકેમ રાત્રિએ નરહર સન્યાસીના પાસે રહ્યો. પછી સવાર થતાં જ તે ઘાંચીએ નરહર સન્યાસી પાસે આવી કહ્યું, મારી વહૂ કાલ સાંજની તમને શીરો પુરી દેવા આવી તે ફરી ઘર નથી આવી. રાત્રિએ તમે કેમ રાખી? તમે તો સ્ત્રીનું મુખ જોતા નથી. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ કહ્યું, અહીં તો નથી આવી. ત્યારે ઘાંચીએ કહ્યું, તમારા ઘરમાં નિકળે તો! પછી ઘાંચીએ નરહર સન્યાસીનું ઘર ખોળ્યું. ત્યારે અંદરથી પકડીને કાઢી. તે જોઇને હાકેમ બહુ જ કોપ્યો. ત્યારે નરહર સન્યાસીનું ઘર પાડીને કહ્યું, અહીંથી બીજા દેશમાં નીકળી જા. ત્યારે નરહર સન્યાસી વ્રજમાં આવ્યા. મનમાં કહે, સ્ત્રીનો સંગ આવો જ છે. ખોટો છે. જો સંગ થતો તો પરલોક બગડતો, પ્રભુએ મને દંડ આપ્યો. એ વિચારી વ્રજમાં ફરે. પછી વેણી કોઠારીએ સાંભળ્યું કે નરહર સન્યાસી વ્રજમાં છે ત્યારે મનમાં વિચાર્યું કે ઘણા દિવસ થયા છે. મારા ગુરુ નરહર સન્યાસી છે. તેથી વ્રજમાં જઈ આઉં. નરહર સન્યાસીને મળી આઉં. ત્યારે વેણી કોઠારી ગુજરાતથી વ્રજમાં આવ્યા. પછી

वृन्दावन श्रीआचार्यजी पधारे। तब नरहर सन्यासी कों दरसन भये। तब नरहर सन्यासी ने बेनी कोठारी सों कही, देखो! कैसे तेजस्वी पुरुष आये हैं? तब बेनी कोठारी ने कही, इनको संग कछुक दिन करिये। तब इनके स्वरूप की ठीक परे। तब नरहर सन्यासी ने कही, चलो, दोऊ जने इनको संग करिये। या प्रकार दोऊ बतराय श्रीआचार्यजी पास आय दंडोत करि विनती किये, जो–महाराज! हमारो मन आपको संग चारि रात्रि करवे को है। जो आप प्रसन्न होय आज्ञा देऊ तो हम संग रहें। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम द्वारिका कों जाइवे को विचार किये हैं, तुम्हारो मन होय तो तुमहू चलो। तब नरहर सन्यासी और बेनी कोठारी हू संग चले। तब मार्ग में नरहर सन्यासी नें श्रीआचार्यजी सों प्रश्न कियो, जो–हमारे मनमें एक सन्देह है। जो–महाराज! सन्यास धर्म बड़ो कै वैष्णव धर्म बडो? तब श्रीआचार्यजी कहें, इनको प्रकार सब न्यारो है। सन्यास धर्म कलियुग में सिद्ध होनो कठिन है। सन्यास लिये पाछे जहां तक जीवे तहां तांई नारायण बिना कहूँ चित्त जाय, तब सगरे जन्म को सन्यास धर्म नास होय। और भक्तिमार्ग में, दुःसंगतें भ्रष्ट हू होय जाय, परन्तु भक्ति–बीज जाय नाहीं। कबहू

વૃંદાવનમાં નરહર સન્યાસીને મળ્યા. વાર્તા કરતા હતા. તે એક દિવસ વૃંદાવન શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા ત્યારે નરહર સન્યાસીને દર્શન થયાં. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ વેણી કોઠારીને કહ્યું, જુઓ, કેવા તેજસ્વી પુરુષ આવ્યા છે? ત્યારે વેણી કોઠારીએ કહ્યું, એમનો થોડાક દિવસ સંગ કરીએ ત્યારે એમના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ કહ્યું, ચાલો બન્ને જણા એમનો સંગ કરીએ. એ પ્રકારે બન્ને વાતચિત કરી શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! અમારૂં મન ચાર રાત્રિ આપનો સંગ કરવાનું છે. જો આપ પ્રસન્ન થઈ આજ્ઞા આપો તો અમે સાથે રહિએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે દ્વારિકા જવાનો વિચાર કર્યો છે. તમારૂં મન હોય તો તમે પણ ચાલો. ત્યારે નરહર સન્યાસી અને વેણી કોઠારી પણ સંગે ચાલ્યા. ત્યારે માર્ગમાં નરહર સન્યાસીએ આચાર્યજીને પ્રશ્ન પુછયો, કે અમારા મનમાં એક સંદેહ છે, કે મહારાજ! સન્યાસ ધર્મ મોટો કે વૈષ્ણવ ધર્મ મોટો? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, એનો પ્રકાર બધો ભિન્ન છે. સન્યાસ ધર્મ કલિયુગમાં સિદ્ધ થવો કઠણ છે. સન્યાસ લીધા પછી જ્યાં સુધી જીવે ત્યાં સુધી નારાયણ વિના ક્યાંય ચિત્ત જાય ત્યારે બધા જન્મનો સન્યાસ ધર્મ નાશ થાય અને ભક્તિમાર્ગમાં દુઃસંગથી ભ્રષ્ટ પણ થાય પરંતુ ભક્તિ–બીજ જાય નહી. ક્યારેક

सत्संग पाय फेरि बढ़ें। सो श्रीभागवत में कहे हैं। जडभरत कों मृग के संग तें तीन जन्म को अन्तराय भयो। पाछें कृतार्थ भयो। चित्रकेतु पार्वती के शाप करि वृत्रासुर भयो, असुर जोनि में, तोहू भक्ति वढ़ी। इतनो तारतम्य है। और या कलियुग में भगवत नाम ही तें चाण्डाल पर्यंत पवित्र होय, उद्धार होय,। सो तुमही मनमें विचारो। तें तपस्या हू करी, सन्यास के धर्म हू साध्यो। परन्तु कछु सिद्धि भयो? तब नरहर सन्यासी दंडवत करि विनती करी, महाराज! अब जा प्रकार उद्धार होय सो करो। मैं सगरे धर्म में दुःख ही पायो। परन्तु मन निर्मल न भयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम सन्यासी हो, जगत में पूज्य हो। सेवक हू करत हों। सो सेवक होयकें तो दास होनों परै। सो तुम स्वामी पद में हो, दास भाव कैसे होयगो? तातें स्वामी पद कों छोडो तब सरनि होऊ। तब वैष्णव धर्म बढे। तब नरहर सन्यासी नें विनती करी, महाराज! मैं अब स्वामी पद छोड्यो। अब तो मैं आपको दास हों। जो आज्ञा करो सोई मैं करों। तब श्रीआचार्यजी कहें। यह डाढ़ी मुंडाय कें भगवा वस्त्र पलटि ऊजरे वस्त्र पहिर कें आवो, तो सेवक होऊ। तब नरहर सन्यासी जटा डाढ़ी मुंडाय नये ऊजरे वस्त्र पहिर कें आये। तब श्रीआचार्यजी कहें, आजु व्रत करो। सगरी इंद्री सुद्ध होय। काल्हि तुमकों

સત્સંગ મળે ફરી (ભક્તિ) વધે. તે શ્રીભાગવતમાં કહે છે કે, જડભરતને મૃગના સંગથી ત્રણ જન્મનો અંતરાય થયો પછી કૃતાર્થ થયો. ચિત્રકેતુ પાર્વતીના શાપથી વૃત્રાસર થયો, અસુર યોનિમાં. તો પણ ભક્તિ વધી. એટલું તારતમ્ય છે. વળી આ કલિયુગમાં ભગવદ્‌નામથી જ ચણ્ડાલ પર્યંત પવિત્ર થાય ઉદ્ધાર થાય. હવે તમેજ મનમાં વિચારો. તેં તપસ્યા પણ કરી. સન્યાસનો ધર્મ પણ સાધ્યો પરંતુ કંઈ સિદ્ધ થયું ? ત્યારે નરહર સન્યાસીએ દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, મહારાજ ! હવે જે પ્રકારે ઉદ્ધાર થાય તેમ કરો. હું બધા ધર્મમાં દુઃખ જ પામ્યો પરંતુ મન નિર્મલ ન થયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે સન્યાસી છો. જગતમાં પૂજ્ય છો. સેવક પણ કરો છો. તે સેવક થઇને તો દાસ થવું પડે. તમે સ્વામી પદમાં છો તે દાસભાવ કેમ થશે ? તેથી સ્વામી પદને છોડો ત્યારે શરણે થાવ. ત્યારે વૈષ્ણવ ધર્મ વધે. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ વિનંતી કરી, મહારાજ ! મેં હવે સ્વામી પદ છોડયું. હવે તો હું આપનો દાસ છું. જે આજ્ઞા કરો તેજ હું કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ જટા દાઢી કઢાવીને ભગવા વસ્ત્ર બદલીને ઉજળાં વસ્ત્ર પહેરીને આવો તો સેવક થાવ. ત્યારે નરહર સન્યાસી જટા, દાઢી કપાવી નવા ઉજળાં વસ્ત્ર પહે-

नाम सुनावेंगे। तब नरहर सन्यासी व्रत किये। पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करायें।

वार्ता-प्रसंग १—**सो नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज! वेनी कोठारी कों नाम सुनाइये। तब वेनी कोठारी कों न्हवाय के नाम निवेदन कराये। तब नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! मोकों व्रत कराये, वेनी कोठारी कों व्रत नाहीं कराये, ताको कारन कहा? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम स्वामी पद में हते, और अनेक कर्म धर्म किये। सो तुम्हारो मन अनेक ठिकाने फैलि गयो। और यह गृहस्थाश्रम को दुःख जाने, और धर्म कर्म नाहीं जानें। तातें याकों व्रत नाहीं कराये।**

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-अन्य मारग में परिकें बहोत शास्त्र पढ़ें, बहोत जोग साधन करें। वाकों भक्ति बेगि न होय। और सूधे निष्कपट कों भक्ति बेगि सत्संग तें होय।

तब नरहर सन्यासी बड़ो भगवदीय कृपापात्र भयो। और वेनी कोठारी हू बड़े भगवदीय भये। सदा मानसी में मग्न रहें। पाछे द्वारिका होय श्रीआचार्यजी तो पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे। वेनी

रीने આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આજ વ્રત કરો. બધી ઈંદ્રિયો શુદ્ધ થાય. કાલ તમને નામ સંભળાવીશું. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ વ્રત કર્યું. પછી બીજા દિવસે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી નરહર સન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનંતિ કરી, મહારાજ! વેણી કોઠારીને નામ સંભળાવીએ. ત્યારે વેણી કોઠારીને ન્હવડાવીને નામ-નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, મહારાજ! મને વ્રત કરાવ્યું અને વેણી કોઠારીને વ્રત નહીં કરાવ્યું તેનું કારણ શું? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમે સ્વામીપદમાં હતા અને અનેક કર્મ-ધર્મ કર્યાં. તેથી તમારૂં મન અનેક ઠેકાણે ફેલી ગયું. અને આ ગૃહસ્થાશ્રમનું દુઃખ જાણે છે. કર્મ, ધર્મ નથી જાણતો તેથી એને વ્રત નથી કરાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, કે અન્યમાર્ગમાં પડીને બહુ શાસ્ત્ર ભણે, બહુ યોગ સાધન કરે, એને ભક્તિ જલ્દી ન થાય. અને સીધા નિષ્કપટને ભક્તિ જલ્દી સત્સંગથી થાય.

પછી નરહર સન્યાસી મોટા ભગવદીય કૃપાપાત્ર થયા અને વેણી કોઠારી પણ મોટા ભગવદીય થયા. સદા માનસીમાં મગન રહે. પછી દ્વારિકા થઈ શ્રીઆચાર્યજી

कोठारी द्वारिका में नरहरदास पास कछुक दिन रहि, पाछे गुजरात अपने घर आये। नरहर सन्यासी सदा फिरयो करते।

वार्ता-प्रसंग २—सो एक समय नरहर सन्यासी बद्रिकाश्रम फिरते फिरते आये। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे। सो नरहर सन्यासी कों दरसन भये। तब नरहर सन्यासी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती कियो, महाराज ! मैं पहिलें सन्यास ग्रहण कियो हतो। पाछें आपकी कृपातें भक्तिमारग में आयो। सो सन्यास को प्रकार है, सो तो मैं जानत हों और भक्तिमारग को कहा प्रकार हे सो मैं जानत नाहीं। सो मोकों कृपा करि कहिये। तब श्रीआचार्यजी कहें। तोसों भक्तिमारग के सन्यास को प्रकार कहत हों। तब श्रीआचार्यजी 'सन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि नरहर सन्यासी कों पढ़ाय भाव कहि सुनाये। तब नरहर सन्यासी के हृदय में पुष्टिमारग को सिद्धान्त स्थित भयो। तब श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव भयो, सो मग्न होय गये। पाछें श्रीआचार्यजी आगें पधारे। नरहर सन्यासी स्वरूपानंद में मग्न होय फिरिवो करते। सो नरहर सन्यासी ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। ॥ वार्ता ७२ ॥

✻ ✻ ✻

તો પૃથ્વી પરિક્રમાએ પધાર્યા. વેણી કોઠારી દ્વારિકામાં નરહર પાસે કેટલાક દિવસ રહી પછી ગુજરાત પોતાના ઘરે આવ્યા. નરહર સન્યાસી સદા ફર્યા કરતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨-એક સમય નરહર સન્યાસી બદ્રીકાશ્રમ ફરતા ફરતા આવ્યા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા ત્યારે નરહર સન્યાસીને દર્શન થયાં. ત્યારે નરહર સન્યાસીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! મેં પહેલાં સન્યાસ ગ્રહણ કર્યો હતો પછી આપની કૃપાથી ભક્તિમાર્ગમાં આવ્યો. તે સન્યાસનો પ્રકાર તો હું જાણું છું પરંતુ ભક્તિમાર્ગનો શો પ્રકાર છે તે હું જાણતો નથી. માટે મને કૃપા કરીને કહો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તને ભક્તિમાર્ગના સન્યાસનો પ્રકાર કહું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ 'સન્યાસ નિર્ણય' ગ્રંથ કરી નરહર સન્યાસીને ભણાવી ભાવ કહી સંભળાવ્યો ત્યારે નરહર સન્યાસીના હૃદયમાં પુષ્ટિમાર્ગનો સિદ્ધાંત સ્થિત થયો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીની લીલાનો અનુભવ થયો. તે મગન થઈ ગયા. પછી શ્રીઆચાર્યજી આગળ પધાર્યા. નરહર સન્યાસી સ્વરૂપાનંદમાં મગન થઈ ફર્યા કરતા. તે નરહર સન્યાસી એવા શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૭૨॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सदू पांडे, सदू पांडे की वहू भवानी, और सदू पांडे की बेटी नरो, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये श्रीगिरिराज के नीचे आन्योर में रहते। लीला में सदू पांडे वृषभानजी के भाई 'चन्द्रभान' गोप, नरो और भवानी 'रामदे' 'श्यामदे' जसोदाजी की ननद हैं, तिनको प्रागट्य हैं।

वार्ता-प्रसंग १—**श्रीआचार्यजी महाप्रभु जब पृथ्वी परिक्रमा करत दक्षिण झारखंड में पधारे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी झारखंड में श्रीआचार्यजी कों दरसन देकें कहें, जो–तुम मेरी सेवा जगत में प्रगट करो तो दैवी जीव वेगि सरनि आवें। हम ब्रज में गोवर्द्धन पर्वत पर तीनि दमन सों प्रगटे हैं। देव दमन सो मैं हों। मेरे आस-पास दोय दमन हैं।**

भावप्रकाश—ताको भाव कहत हैं। नागदमन तो श्रीठाकुरजी के वाम भाग हैं। और इन्द्र दमन सो दक्षिण भाग हैं। सो वाम भाग नागदमन श्रीयमुनाजी के स्वरूप तें। काहे तें, काल सर्प की दमन कर्ता। यमदंड, कालदंड श्रीयमुना पान तें न होय। और श्रीठाकुरजी की प्रिया हैं नित्यसिद्धा। तातें वाम भाग विराजि सेवा करत हैं। और दक्षिण दिस इन्द्रदमन हैं। सो गिरिराजजी स्वरूप

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક સદૂપાંડે, સદૂપાંડેની વહૂ ભવાની, અને સદૂપાંડેની બેટી નરો, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ શ્રીગિરિરાજજીની નીચે આન્યોરમાં રહેતા. લીલામાં સદૂપાંડે વૃષભાનજીના ભાઈ 'ચન્દ્રભાન' ગોપ, નરો અને ભવાની 'રામદે' 'શ્યામદે' જશોદાજીની નનદ છે તેમનું પ્રાકટ્ય છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧–શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ જ્યારે પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં દક્ષિણ ઝારખંડમાં પધાર્યા ત્યારે શ્રીગોવર્ધનનાથજીએ ઝારખંડમાં શ્રીઆચાર્યજીને દર્શન દઇને કહ્યું, કે તમે મારી સેવા જગતમાં પ્રકટ કરો તો દૈવી જીવ જલ્દી શરણે આવે. અમે વ્રજમાં ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર ત્રણ દમનથી પ્રકટ્યા છીએ. દેવદમન, નાગદમન, ઇન્દ્રદમન. તેમનામાં મધ્ય દેવદમન તે હું છું. મારી આસપાસ બે દમન છે.

ભાવપ્રકાશ—એનો ભાવ કહે છે. નાગદમન તો શ્રીઠાકુરજીના વામ ભાગમાં છે અને ઇંદ્રદમન દક્ષિણ ભાગમાં છે, તે વામભાગ નાગદમન શ્રીયમુનાજીના સ્વરૂપથી, કેમકે કાલ–સર્પ–ની દમન કર્તા. યમદંડ, કાલદંડ, શ્રીયમુનાજીથી ન થાય. વળી શ્રીઠાકુરજીની પ્રિયા છે નિત્યસિદ્ધા. તેથી વામ ભાગ બિરાજી સેવા કરે

करि सेवा में तत्पर हैं। काहे तें, हरिदासराय हैं। भक्तन के सिरोमनि हैं। सो इन्द्र कोप के समय प्रभु की इच्छा जानि आपुहि छत्राकार होय सगरे व्रज की रक्षा कियें। और इन्द्र कों दंड दिये। और जस प्रभु कों प्रगट किये। सो यातें, भगवदी अपुनों जस प्रगट नाहीं करत हैं। तातें श्रीठाकुरजी को जस प्रगट कियो। और मध्य में देवदमन, सो यातें, जितने औतार हैं श्रीजगन्नाथदेव, नारायणदेव आदि, तिनकें मान मर्दन कर्ता श्रीगोवर्द्धनधर हैं। तातें श्रीभागवत में कहें–"एते चांश-कला पुंसः कृष्णस्तुभगवानस्वयं" तातें देवदमन मेरो नाम हैं। सो मोकों प्रगट करो।

तब श्रीआचार्यजी दक्षिण के झारखंड सों पृथ्वी परिक्रमा छोडि व्रज पधारे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। ता समय पांच सेवक संग श्रीआचार्यजी के हैं। दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, बड़े रामदास, माधवदास, और नारायणदास। सो संध्या समय श्रीआचार्यजी सद्दू पांडे के द्वार चोंतरा पर तहां विराजे। तब सद्दू आय दंडोत करि कहें, स्वामी कछू खाऊगे? तब कृष्णदास मेघन ने कही, ये श्रीआचार्यजी काहू के घर को लेत नाहीं। आप सेवक करत हैं, सो सेवक होय, जो देत हैं, तिनको लेत हैं। या प्रकार वार्ता

છે અને દક્ષિણ દિશાએ ઇંદ્રદમન છે તે ગિરિરાજજી સ્વરૂપથી સેવામાં તત્પર છે. કેમકે હરિદાસરાય છે. ભકતોના શિરોમણી છે. તે ઇન્દ્રકોપના સમયે પ્રભુની ઈચ્છા જાણી આપજ છત્રાકાર થઈ બધા વ્રજની રક્ષા કરી અને ઇંદ્રને દંડ દીધો. અને યશ પ્રભુનો પ્રકટ કર્યો. તે એથી કે ભગવદીય પોતાનો યશ પ્રકટ કરતા નથી. તેથી શ્રીઠાકુરજીનો યશ પ્રકટ કર્યો અને મધ્યમાં દેવદમન. તે એથી કે જેટલા અવતાર છે શ્રીજગન્નાથદેવ, નારાયણદેવ, આદિ તેમના માન–મર્દન કર્તા શ્રીગોવર્દ્ધનધર છે. તેથી શ્રીભાગવતમાં કહ્યું છે– 'एतेचांश....' તેથી દેવદમન મારૂં નામ છે તે મને પ્રકટ કરો.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દક્ષિણના ઝારખંડથી પૃથ્વિ-પરિક્રમા છોડી વ્રજ પધાર્યા. શ્રીગોવર્દ્ધન આવ્યા. તે સમય પાંચ સેવક શ્રીઆચાર્યજીની સાથે હતા. દામોદરદાસ હરસાની. કૃષ્ણદાસ મેઘન, મોટા રામદાસ, માધવદાસ અને નારાયણદાસ. પછી સંધ્યા સમય શ્રીઆચાર્યજી સદુ પાંડેના દ્વાર ચોતરા ઉપર ત્યાં બિરાજ્યા. ત્યારે સદુએ આવી દંડવત્ કરીને કહ્યું, સ્વામી કંઇ ખાશો? ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘને કહ્યું, આપ શ્રીઆચાર્યજી કોઇના ઘરનું લેતા નથી. આપ સેવક કરે છે. સેવક થઇ જે દે છે તેનું લે છે. આ પ્રકારે વાર્તા કરતા હતા. એટલામાં પર્વત ઉપરથી

करत हते। इतने में पर्वत पर तें श्रीगोवर्द्धनधर बोले। सदू पांडे की बेटी सों कहें, नरो! मेरे नेग को दूध लाऊ। तब नरो ने कही, अहो, वारी जाऊँ लाल! ल्याई, मेरे पाहुनें आये हैं। तिनकों समाधान करि लेऊ तो दूध लाऊं। तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें। पाहुनें आये तो भले आये परन्तु मोकों अवार होति हैं। तब नरो दूध को कटोरा भरि पर्वत पर जाय श्रीगोवर्द्धनधर कों प्यायो, कछू बच्यो सो लेकें नरो नीचे आई। तब श्रीआचार्यजी कहें, तू कहां गई हती? तब नरो ने कही, पर्वत को देवता देवदमन हैं तिनकों दूध प्याइ आई। तब श्री-आचार्यजी कहें, या कटोरा में दूध बच्यो होय सों हमकों देऊ। तब नरो ने दियो। सो श्रीआचार्यजी पान किये। तब सदू पांडे नरो भवानी के मन में यह आई, जो ये काहू के घर को लेत नाहीं। देव-दमन को आरोग्यो लियें। तातें इनकी, देवदमन की, बड़ी प्रीति जानि परत हैं। तब सदू पांडे ने पूछी, महाराज! यहां आप पधारे हो, ब्रज के तीर्थ करिवे कों, के कछू और मनोरथ हैं? तब श्रीआचा-र्यजी कहें, हमकों दक्षिण में झारखंड में देवदमन नें कही, जो–मोकों प्रगट करो। मैं श्रीगोवर्द्धन पर हों। इन्द्रदमन, नागदमन, मध्य में देवदमन हों। ताके लिये हम यहां पधारे। सो देवदमन तुम्हारे ऊपर बड़ी कृपा करत हैं। तब सदू पांडे, नरो, भवानी विनती करी,

---

શ્રીગોવર્દ્ધનધર બોલ્યા, સદુપાંડેની બેટીને કહે, નરો! મારું નેગનું દૂધ લાવ. ત્યારે નરોએ કહ્યું, અહો વારી જાઉં લાલ! લાઇ. મારે પરોણા આવ્યા છે. તેમનું સમાધાન કરી લઉં ત્યારે દૂધ લાઉં. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર કહે પરોણા આવ્યા તો ભલે આવ્યા પરંતુ મને વાર લાગે છે. ત્યારે નરો દૂધનો કટોરો ભરી પર્વત ઉપર જઇ શ્રીગોવર્દ્ધન-ધરને (તે) પાયું. કંઇ બચ્યું હતું તે લઇને નરો નીચે આવી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે તૂ ક્યાં ગઇ હતી? ત્યારે નરોએ કહ્યું, પર્વતનો દેવતા દેવદમન છે તેમને દૂધ પાઇ આવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આ કટોરામાં દૂધ બચ્યું હોય તે અમને દે. ત્યારે નરોએ દીધું. તે શ્રીઆચાર્યજીએ પાન કર્યું. ત્યારે સદુપાંડે, નરો, ભવાનીના મનમાં એ આવ્યું, કે એ કોઇના ઘરનું લેતા નથી. દેવદમનનું આરોગ્યું લીધું. તેથી એમની, ને દેવદમનની મહાન પ્રીતિ જાણી પડે છે. ત્યારે સદૂપાંડેએ પુછ્યું, મહારાજ! અહીં આપ પધાર્યા છો તે વ્રજનાં તીર્થ કરવાને કે કાંઈ બીજો મનોરથ છે? ત્યારે શ્રીઆ-ચાર્યજી કહે, અમને દક્ષિણમાં ઝારખંડમાં દેવદમને કહ્યું હતું કે મને પ્રકટ કરો, હું શ્રીગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર છું. તેને માટે અહીં પધાર્યા છીએ. તે દેવદમન તમારા ઉપર

महाराज ! तुम जीते, हम हारे, हमकों सेवक करो ।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो–हमारे व्रज में गोवर्द्धन में आवे सो दहीं, दूध, रोटी, सीधो सामग्री जो मांगे सो हम देंहि । और आप तो सेवक विना काहू को लेत नाहीं । तातें हम हारे । आप सेवक करो । हम व्रजवासी जगत के पूज्य, आप हमारे पूज्य ।

तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि सवेरे तुमकों नाम सुनावेंगे । पाछें प्रातःकाल भयो तब सदू पांडे नरो, भवानी तीन्योन कों न्हवाय कें बैठारे । पाछे नाम सुनाय निवेदन कराये । पाछें श्रीआचार्यजी ने कही, तुम देवदमन की सेवा करो । तब सदू पांडे ने कही, महाराज ! हम व्रजवासी गँवार है । आचार विचार जानत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें । तुम्हारो प्रेम देवदमन में है सोई सबके ऊपर हैं । तुम निष्कपट सुद्ध भक्त हो । तातें जैसो तुमतें बनें सो करियो । पाछे सदू पांडे ने सीधो, सामग्री, दूध, दहीं, घृत, खांड सब दियो । तब श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरि भोजन किये । पाछें सदू पांडे के चोंतरा पर वैष्णवन सहित आय विराजें । तब सदू पांडेको भाई मानिकचंद, सो सदू पांडे सों न्यारो रहतो । सो रात्रि परी तब आयो ।

મહાન કૃપા કરે છે ત્યારે સદ્દૂપાંડે, નરો, ભવાનીએ વિનંતી કરી, મહારાજ! તમે જીત્યા અમે હાર્યા. અમને સેવક કરો.

ભાવપ્રકાશ—એનો અર્થ એ કે અમારા વ્રજમાં ગોવર્દ્ધનમાં આવે તે દહીં, દૂધ, રોટી, સીધુ-સામગ્રી; જે માગે તે અમે આપીએ, અને આપ તો સેવક વિના કોઇનું લેતા નથી. તેથી અમે હાર્યા, આપ સેવક કરો. અમે વ્રજવાસી જગતના પૂજ્ય, આપ અમારા પૂજ્ય.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કાલ સવારે તમને નામ સંભળાવીશું. પછી સવાર થયું ત્યારે સદ્દૂપાંડે, નરો, ભવાની, ત્રણેયને ન્હવડાવીને બેસાડ્યા, પછી નામ સંભળાવીને નિવેદન કરાવ્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, તમે દેવદમનની સેવા કરો. ત્યારે સદ્દૂપાંડેએ કહ્યું, મહારાજ ! અમે વ્રજવાસી ગમાર છીએ. આચાર વિચાર જાણતા નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, તમારો પ્રેમ દેવદમનમાં છે તે જ સહુથી ઉપર છે. તમે નિષ્કપટ શુદ્ધ ભક્ત છો. તેથી જેમ તમારાથી બને તેમ કરજો. પછી સદ્દૂપાંડેએ સીધું, સામગ્રી, દૂધ, દહીં, ઘી, ખાંડ, બધું આપ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ રસોઈ કરી ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. પછી સદ્દૂપાંડેના ચોતરા ઉપર વૈષ્ણવો

भावप्रकाश—सो 'मधुमंगल' सखा को प्रागट्य मानिकचंद को है।

पाछे सदू पांडे रात्रि कों सब व्रजवासीन सों कहें, जो-मेरे घर बड़े महापुरुष पधारे हैं। सो सवेरे देवदमन को प्रागट्य करेंगे। तातें तुम सगरे दरसन कों आइयो। तब बड़े बड़े वृद्ध व्रजवासी प्रमाणिक सब आये। मानिकचंद, सदू पांडे आदि। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर देवदमन कौन प्रकार प्रगट भये हैं? सो कहो। तब सदू पांडे ने कही, 'महाराज! हमारे एक ग्वाल हतो। सो गाम की सगरी गाय चरायवे कों जातो। सो एक ब्राह्मण की बड़ी गाय हती, सो दूध बहोत देती। सो वह ब्राह्मण दुहिवे कों बैठ्यो, सो गाय कछू दूध न दियो। पाछें फेरि सवेरे दुहन बैठ्यो, तब हू दूध न दियो। ऐसे दोय दिन दूध न दियो, तब तीसरे दिन वह ग्वारिया पर ब्राह्मण खीज्यो। जो-मेरी गाय बहोत दूध देती। सो तू गाय मेरी दुहि लेत हैं। या प्रकार ग्वाल कों बहोत डरपायो। तब वह ग्वाल नें कही, मैं तो तेरी गाय दुहत नाहीं। आजु तेरी गाय की ठीक पारूंगो। पाछे वह ग्वारिया, गाय सगरी बन में ले गयो। उह गाय कों नजरि में राखी। तब उह गाय

સહિત આવીને બિરાજ્યા. ત્યારે સદૂ પાંડેના ભાઈ માણિકચંદ, જે સદૂ પાંડેથી અલગ રહેતા હતા તે, રાત્રિ થઈ ત્યારે આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—'મધુમંગલ' સખાનું પ્રાકટ્ય માણેકચંદનું છે.

પછી સદૂપાંડે રાત્રિએ બધા વ્રજવાસીને કહે, કે મારા ઘર મોટા મહાપુરુષ પધાર્યા છે. તે સવારે દેવદમનનું પ્રાકટ્ય કરશે. તેથી તમે બધા દર્શને આવજો. ત્યારે મોટા મોટા વૃદ્ધ વ્રજવાસી પ્રામાણિક બધા આવ્યા. માણેકચંદ, સદુ પાંડે આદિ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે શ્રીગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર દેવદમન કયા પ્રકારે પ્રગટ થયા છે તે કહો. ત્યારે સદૂ પાંડેએ કહ્યું, મહારાજ! અમારે એક ગોવાળીઓ હતો તે ગામની બધી ગાયોને ચરાવવા જતો. તેમાં એક બ્રાહ્મણની મોટી ગાય હતી, તે દૂધ બહુજ દેતી. તે ગાયને તે બ્રાહ્મણ દોહવાને બેઠો ત્યારે તેણે કંઇ દૂધ ન આપ્યું. પછી ફરી સવારે દૂધ દોહવા બેઠો. ત્યારે પણ દૂધ ન દીધું. એમ બે દિવસ દૂધ ન આપ્યું. ત્યારે ત્રીજા દિવસે તે ગોવાળીઆ ઉપર બ્રાહ્મણ ખીજ્યો, કે મારી ગાય ઘણું દૂધ દેતી. મારી ગાયને તૂ દોહી લે છે. આ પ્રકારે ગોવાળીઆને ઘણો ડરાવ્યો. ત્યારે તે ગોવાળીઆએ કહ્યું, હું તો તારી ગાય દોહતો નથી. આજ તારી ગાયની ખબર રાખીશ. પછી તે ગોવાળીઓ બધી ગાયોને વનમાં લઈ ગયો. તે ગાયને નજરમાં રાખી. ત્યારે તે ગાય પર્વત

पर्वत ऊपर चढ़ी। तब ग्वारिया पीछे छिपि कें गयो। सो उह गाय जाय गोवर्द्धन पर्वत पर एक सिला में छेद हतो, तहां आपही तें सगरो दूध अव दियो। तव ग्वारिया देखिकें फिरि वैठि रह्यो। पाछे घरी चारि दिन पिछलो रह्यो। तब फेरि वह गाय पर्वत पर चढ़ि उह छेद में दूध अय दियो। सो ग्वारिया, सब गाय घर लायकें उह ब्राह्मण सों कही। तेरी गाय, गोवर्द्धन पर्वत हैं तापर एक छेद में, सगरो दूध अवत हैं। तें मोकों झूठेई चोरी लगाई। तेरे विश्वास न होय तो सवेरे मेरे संग चलियो। तव वह ब्राह्मण नें कही। मैं सवेरे चलूंगो। तव सवेरे दूध दुहन बैठ्यो। सो गाय दूध सब ऊपर चढाय गई, रंच हू न दियो। तब वह ब्राह्मण ग्वारिया के संग गयो। सो गाय पर्वत पर जाय, दूध छेद में करि दियो। पाछें सांझ, याहि प्रकार गाय दूध करि, घर आई। तव उह ब्राह्मण (ने) रात्रि कों व्रजवासी भेले करि यह बात गाय की कही। तव एक वृद्ध व्रजवासी ने कही। के तो छेद के नीचें कछु द्रव्य है, के कोई श्रीठाकुरजी को स्वरूप है। ये दोय वस्तु होय तहां गाय अवे। पाछें दस पांच व्रजवासी मिलि, छेद के नीचे देखिवे को विचार कियो। सो प्रातःकाल भयो तव दस पन्द्रह वृद्ध वृद्ध व्रजवासी मिलि उह गाय कें पीछें

ઉપર ચઢી. ત્યારે ગોવાળીઓ પાછળથી સંતાઇને ગયો. તે ગાય જઈ ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર એક શીલામાં છેદ હતો ત્યાં આપ મેળે જ બધું દૂધ શ્રવી દીધું. ત્યારે ગોવાળીઓ જોઇને ફરી બેસી રહ્યો. પછી ઘડી ચાર દિવસ પાછલો રહ્યો. ત્યારે ફરી તે ગાય પર્વત ઉપર ચઢી તે છેદમાં દૂધ શ્રવી દીધું. પછી ગોવાળીઓ બધી ગાયોને ઘર લાવીને તે બ્રાહ્મણને કહે, તારી ગાય ગોવર્દ્ધન પર્વત છે. તેના ઉપર એક છેદમાં બધું દૂધ શ્રવે છે. તેં મને જુઠી જ ચોરી લગાડી. તને વિશ્વાસ ન હોય તો સવારે મારી સાથે ચાલજે. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે કહ્યું, હું સવારે ચાલીશ. ત્યારે સવારે દૂધ દોહવાને બેઠ્યો. ત્યારે ગાય બધું દૂધ ઉપર ચઢાવી ગઈ રંચ પણ ન આપ્યું. ત્યારે તે બ્રાહ્મણ ગોવાળીઆની સાથે ગયો. પછી તે ગાયે પર્વત ઉપર જઈ દૂધ છેદમાં કરી દીધું. પાછી સાંજે પણ આજ પ્રકારે ગાય દૂધ કરી ઘર આવી. ત્યારે તે બ્રાહ્મણે રાત્રિના વ્રજવાસીઓને ભેગા કરી ગાયની આ વાત કહી. ત્યારે એક વૃદ્ધ વ્રજવાસીએ કહ્યું, કે તો છેદના નીચે કંઈ દ્રવ્ય છે કે કોઈ શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ છે. એ બે વસ્તુ હોય ત્યાં ગાય શ્રવે. પછી દશ પાંચ વ્રજવાસીઓએ મળી છેદની નીચે જોવાનો વિચાર કર્યો. પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે દશ-પંદર વૃદ્ધ વ્રજવાસી મળી તે ગાયની પાછળ ગયા. ત્યારે ગાય

गये। सो गाय उह छेद में दूध करि पर्वत तें नीचे उतरी। तब हमनें जो सिला में छेद हतो सो सिला खोदि कें उठाई। तब नीचें बरस सात को बालक निकस्यो। तब मैं पूछ्यो जो-तू कौन हैं? तब उन कही, मैं पर्वत को देवता हों। देवदमन मेरो नाम है। सो मोकों दूध दहीं बहोत प्रिय हैं। तेरी बेटी नरो हैं, ताके हाथ पठाय दीजो, सांज सवारे। और अब सिला ऊपर मति धरो। तब उह समय सगरे व्रजवासी अपने अपने घर आये। सवेरे दूध, दहीं, माखन देवदमन कों अरोगाय आवते। सांज कों दूध अरोगावतें। और भूख लागत हैं, तब, आप ही देवदमन आय मांगि ले जात हैं। या प्रकार व्रजवासी सबन कों देवदमन नें बहोत सुख दियो हैं। व्रजवासी जो मानता करत हैं, सो देवदमन पूरन करत हैं। अब आपकी जैसी इच्छा होय, सो मनोरथ करो। हम तो जा प्रकार देवदमन प्रगटें सो सब प्रकार कह्यो। तब मानिकचंद, सदू पांडे के भाई ने कही, मोकों देवदमन जब प्रगटे तब जतायो, जो-मैं गिरिराज ऊपर प्रगट्यो हों, सो मोकों माखन नित्य दीजों। सो मैं माखन नित्य सवेरे देवदमन कों अरोगाय आवत हों। तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि सवेरे पर्वत चलि दरसन करेंगे। पाछे प्रातःकाल श्रीआचार्यजी महाप्रभु स्नान करि वैष्णव सहित पर्वत पर जायवें को विचार किये। तब सदू पांडे

તે છેદમાં દૂધ કરી પર્વતથી નીચે ઉતરી. ત્યારે અમે જે શિલામાં છેદ હતો તે શિલાને ખોદીને ઉઠાવી. ત્યારે નીચે સાત વર્ષનો બાલક નિકળ્યો. ત્યારે મેં પૂછ્યું કે તૂ કોણ છે? ત્યારે તેણે કહ્યું, હું પર્વતનો દેવતા છું. દેવદમન મારૂં નામ છે. મને દૂધ-દહીં બહુ પ્રિય છે. તારી બેટી નરો છે તેના હાથે મોકલી આપજે સાંજ-સવારે. અને હવે શિલા ઉપર ન ધરો. ત્યારે તે સમય બધા વ્રજવાસી પોત-પોતાના ઘરે આવ્યા. સવારે દૂધ-દહીં માખણ દેવદમનને આરોગાવી આવતા. સાંજે દૂધ આરોગાવતા અને ભૂખ લાગે છે ત્યારે આપજ દેવદમન આવી માંગી લઈ જાય છે. આ પ્રકારે બધા વ્રજવાસીઓને દેવદમને બહુ સુખ આપ્યું છે. વ્રજવાસી જે માનતા કરે છે તે દેવદમન પૂરી કરે છે. હવે આપની જેવી ઈચ્છા હોય તેવો મનોરથ કરો. અમે તો જે પ્રકારે દેવદમન પ્રકટ્યા તે બધો પ્રકાર કહ્યો. ત્યારે માણેકચંદ સદૂપાંડેના ભાઇએ કહ્યું, મને દેવદમન જ્યારે પ્રકટ્યા ત્યારે જણાવ્યું કે હું ગિરિરાજ ઉપર પ્રકટ્યો છું તે મને માખણ નિત્ય આપજે. તેથી હું માખણ નિત્ય સવારે દેવદમનને આરોગાવી આવું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કાલે સવારે પર્વત ઉપર ચાલી દર્શન કરીશું. પછી પ્રાતઃકાલ

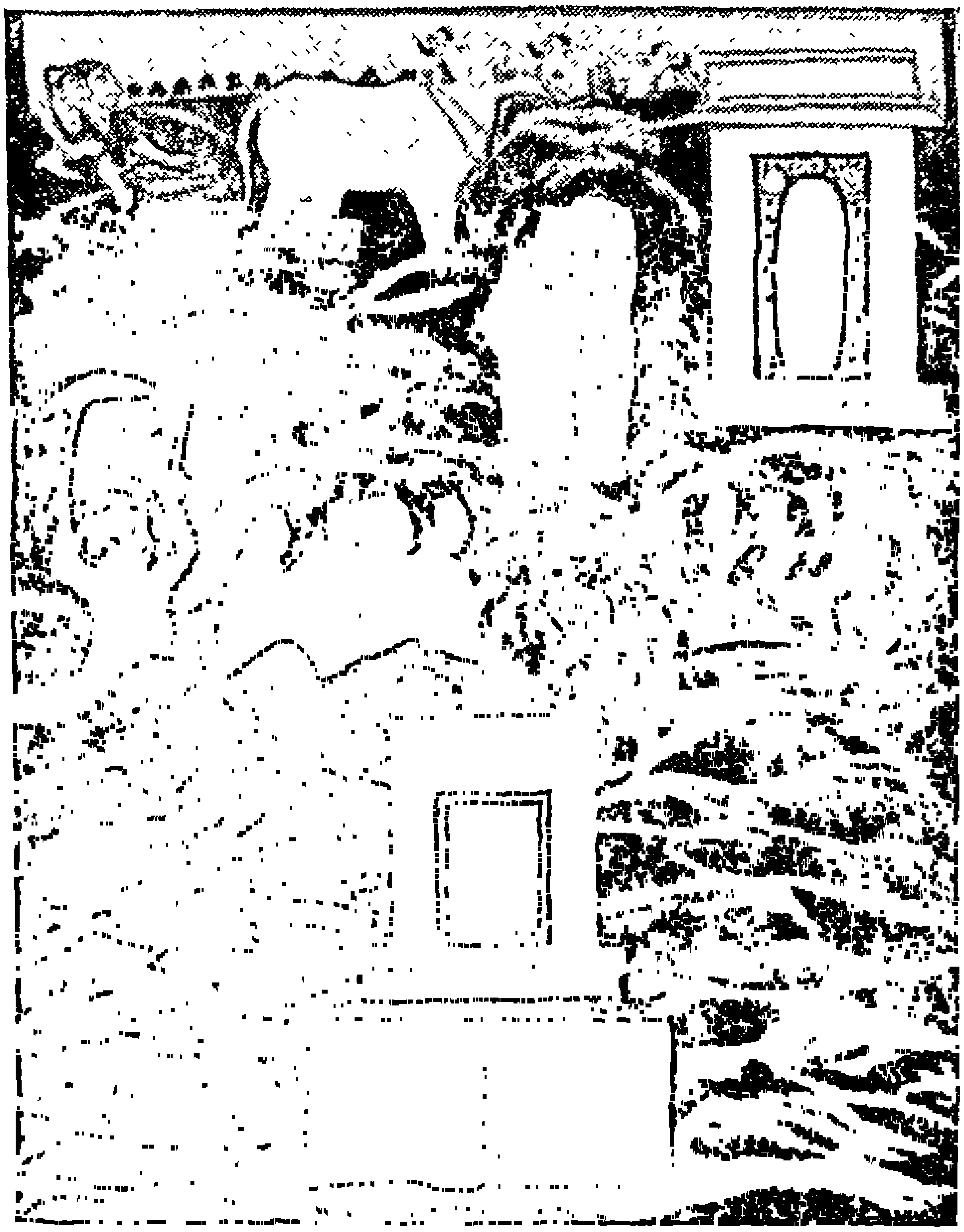

ऊपर : श्रीनाथजी का प्राकट्य । श्रीनाथजी महाप्रभु मिलाप ।

शिखर पर : सदू माणिकचंद ।

नीचे दांइ ओर : श्रीगिरिराज पास : नरो, भवानी, सदू-माणिचंद

बाइ ओर : १. रामदास । २. त्रिपुरदास । ३. नारायणदास ।
४. कन्हैयालाल । ५. वासुदेवदास ।

कों बुलाये। तब सदू पांडे मानिकचंद दोऊ आए। तब मानिकचंद ने कही, महाराज! मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी मानिकचंद कों न्हवाय नाम निवेदन कराये। पाछे सदू पांडे, मानिकचंद, आपुनें संग कें वैष्णव ले, पर्वत ऊपर पधारे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी उठिकें श्रीआचार्यजी के साम्हें आये। तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर कों गोद में ले दोऊ कपोल परसि कहें, बावा! अब तुम्हारी कहा इच्छा है। तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें, मेरी सेवा प्रगट करो। तब गोवर्द्धन पर्वत पर छोटो सो मंदिर करि अपछरा कुंड पर रामदास चोहान रजपूत गुफा में रहते तिनकों सेवक करि श्रीनाथजी की सेवा करन कों कही। पाग परदनी को सिंगार करि ऊपर चन्द्रका मैंनसों जोरि मुकुट सारिखो करि धराये। गुंजा की माला पहिराये। और दूध, दहीं, माखन सदू पांडे लाये सो भोग धरे। पाछें सदू पांडे कों कही, तुम सामग्री वस्तु चहिये सो रामदास कों दीजो। तब जमुनावतामें कुंभनदासजी गोरवा रहत हते, सो आय सेवक भये। तब कुंभनदास कों कीर्तन गायवे की सेवा दीनी। तब तहां व्रजवासी गिरिराज के आसपास के बहोत श्रीआचार्यजी के सेवक भये। या प्रकार कछुक दिन सेवा भई। पाछे मंदिर समरायवे की आज्ञा

શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ સ્નાન કરી વૈષ્ણવ સહિત પર્વત ઉપર જવાનો વિચાર કર્યો. ત્યારે સદ્દૂ પાંડેને બોલાવ્યા. ત્યારે સદ્દૂ પાંડે માણેકચંદ પાંડે બન્ને આવ્યા. ત્યારે માણેકચંદે કહ્યું, મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ માણેકચંદને ન્હવડાવી નામ-નિવેદન કરાવ્યું. પછી સદ્દૂ પાંડેને, માણેકચંદને તથા પોતાની સાથેના વૈષ્ણવોને લઇને પર્વત ઉપર પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઉઠીને શ્રીઆચાર્યજીની સામે પધાર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને ગોદમાં લઇ બન્ને કપોલ સ્પર્શી કહે, બાવા! હવે તમારી શી ઇચ્છા છે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર કહે, મારી સેવા પ્રકટ કરો. ત્યારે ગોવર્દ્ધન પર્વત ઉપર નાનું સરખું મંદિર કરી અપ્સરા કુંડ ઉપર રામદાસ ચોહાણ રજપૂત ગુફામાં રહેતા તેમને સેવક કરી શ્રીનાથજીની સેવા કરવાને કહ્યું, પાગ-પરદનીનો શૃંગાર કરી ઉપર ચંદ્રિકા મીણથી જોડી મુકુટ સરખો કરી ધરાવ્યો. ગુંજાની માલા પહેરાવી, અને દૂધ, દહીં, માખણ સદ્દૂ પાંડે લાવ્યા તે ભોગ ધર્યો. પછી સદ્દૂ પાંડેને કહ્યું, તમે સામગ્રી વસ્તુ જોઇએ તે રામદાસને આપજો. ત્યારે જમનાવતામાં કુંભનદાસજી ગોરવા રહેતા હતા તે આવી સેવક થયા. ત્યારે કુંભનદાસને કીર્તન ગાવાની સેવા આપી. ત્યારે ત્યાં વ્રજવાસી ગિરિરાજજીની આસપાસના ઘણા શ્રીઆ-

पूरनमल्ल कों करी। जब मंदिर सँवर्‍यो, तब रामदास चोहान रजपूत की देह छूटी। तब श्रीआचार्यजी सदू पांडे सों कहें, तुम सेवा करो। तब सदू पांडे ने कही, महाराज! हम ब्रजवासी कछू सेवा पूजा की रीति जानत नाहीं। और अनेक घर के काम खेती, सो हमसों न बनेगी। सामग्री वस्तु जो चहियेगी सो पहोंचावेंगे। तब श्रीआचार्यजी सदू पांडे सों कहें, और कोऊ विचारो। तब सदू पांडे नें कही, राधा-कुंड कृष्णकुंड पर बंगाली हैं, कहो तो बुलाऊं। तब श्रीआचार्यजी कहें बुलावो। तब बंगाली बुलाय रुद्र कुंड पर झोंपरी बंगालीन कों बनाय दिये। और कृष्णदास शूद्र कों सेवक करि अधिकारी किये हैं। जो बंगालीन कों चहिये सो मथुरा आगरे तें लाय दीजो। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों काढि वैष्णव राखें। सो कृष्णदास की वार्ता में कहेंगे। या प्रकार सदू पांडे, नरो, भवानी, मानिकचंद आदि सेवक करि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बाहिर पधराय सेवा करायें।

वार्ता–प्रसंग २—एक समय श्रीगोवर्द्धनधर कहें, मोकों गाय बहोत प्रिय हैं। तब श्रीआचार्यजी सदू पांडे कों बुलाय वेद–कर्म करिवे की पवित्री हती, सो दे कहें, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धनना-थजी कों गाय लाय देहु! तब सदू पांडे नें कही, महाराज! हमारे घर

ચાર્યજીના સેવક થયા. એ પ્રકારે કેટલાક દિવસ સેવા થઇ. પછી મંદિર સિદ્ધ કરાવવાની આજ્ઞા પૂરણમલને કરી. જ્યારે મંદિર સિદ્ધ થયું. ત્યારે રામદાસ ચોહાણ રજપૂતની દેહ છુટી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સદૂ પાંડેને કહે, તમે સેવા કરો. ત્યારે સદૂ પાંડએ કહ્યું, મહારાજ! અમે વ્રજવાસી કંઈ સેવા–પૂજાની રીતિ જાણતા નથી. વળી ઘરનાં અનેક કામ ખેતી તેથી અમારાથી નહીં બને. સામગ્રી વસ્તૂ જે જોઇશે તે પહોંચાડીશું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સદૂ પાંડેને કહે, બીજો કોઇ વિચારો. ત્યારે સદૂ પાંડએ કહ્યું, રાધાકુંડ, કૃષ્ણકુંડ, ઉપર બંગાલી છે. કહો તો બોલાવું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે બોલાવો. ત્યારે બંગાલી બોલાવી રૂદ્ર કુંડ ઉપર ઝૂંપડી બંગાલીઓને બનાવી દીધી. અને કૃષ્ણદાસ શૂદ્રને સેવક કરી અધિકારી કર્યા. કહ્યું, બંગાલીને જે જોઇએ તે મથુરા આગ્રાથી લાવી દેજો. પછી કૃષ્ણદાસે બંગાલીને કાઢી વૈષ્ણવ રાખ્યા. તે આગળ કૃષ્ણ-દાસની વાર્તામાં કહીશું. આ પ્રકારે સદૂ પાંડે, નરો, ભવાની, માણિકચંદ આદિને સેવક કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને બહાર પધરાવી સેવા કરાવી.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨–એક સમય શ્રીગોવર્દ્ધનધર કહે, મને ગાય બહુજ પ્રિય છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ સદૂ પાંડેને બોલાવી વેદકર્મ કરવાની પવિત્રી હતી તે દઇ કહે, એના પૈસા કરી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ગાય લાવી દો. ત્યારે સદૂ પાંડએ કહ્યું, મહારાજ!

गाय भैंसि हैं सो सब श्रीगोवर्द्धननाथजी की हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम कहें तैसें करो। या सोनों वेचि गाय हमारी ओर की श्रीनाथजी की भेट करति हैं। और तुम ब्रजवासी सगरे मिलिकें एक एक दोय दोय गाय न्यारी भेट करो। तब सदू पांडे उह पवित्रि वेचि दोय गाय लाये। सो श्रीआचार्यजी नें श्रीनाथजी की भेट करी। और सदू पांडे ब्रजवासी आदि काहू नें एक गाय भेट करी, काहू नें दोय गाय भेट करी। काहू नें चारि गाय भेट करी। सो हजारन गाय भेट भई। तब गायन के रहिवे के लिये गोपालपुर गाम मंदिर पास बसायें। 'गोपाल' नाम श्रीठाकुरजी को धरे। ता दिन तें श्रीनाथजी के गाय बहोत बढ़ी। सो गाय श्रीठाकुरजी कों बहोत प्रिय हैं। सो छीतस्वामी गाये हैं— राग गौरी—

आगें गाय, पाछें गाय, इत गाय उत गाय, गोविंद कों गायन में वसिवोई भावें।
गायन के संग धावें, गायन में सचुपावें, गायन की खुररेनु अंग सों लगावें ॥१॥
गायन सों व्रज छायो, वैकुण्ठ हु विसरायो, गायन के हेतु, गिरि कर लैं उठावें।
'छीतस्वामी' गिरिधारि, विठ्ठलेस वपु धारि, ग्वालिया को भेष किये, गायन में आवें ॥२॥

या प्रकार सदू पांडे आदि ब्रजवासी सबन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी सुख दिये।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन सदू पांडे के घर श्री गोवर्द्धननाथजी सोने की कटोरी ले कें मंदिर तें आये। सो नरो सों कहें, यामें

અમારા ઘરે ગાય-ભેંસ છે તે બધી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમે કહીએ તેમ કરો. આ સોનું વેચી ગાય અમારી તરફથી શ્રીનાથજીને ભેટ કરીએ છીએ. અને તમે બધા વ્રજવાસી મળીને એક-એક બબ્બે ગાય જુદી ભેટ કરો. ત્યારે સદ્દૂ પાંડે તે પવિત્રી વેચી બે ગાય લાવ્યા, તે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનાથજીને ભેટ કરી. અને સદ્દૂ પાંડે વ્રજવાસી આદિ કોઇએ એક ગાય ભેટ કરી, કોઇએ બે ગાય ભેટ કરી, કોઇએ ચાર ગાય ભેટ કરી. એમ હજારો ગાય ભેટ થઇ. ત્યારે ગાયોને રહેવા માટે ગોપાલપુર ગામ વસાવ્યું. 'ગોપાલ' નામ શ્રીઠાકુરજીનું ધર્યું. તે દિવસથી શ્રીનાથજીને ગાય ઘણી વધી. તેથી ગાય શ્રીઠાકુરજીને બહુજ પ્રિય છે. તે છીતસ્વામીએ ગાયું છે- રાગ ગોરી. 'આગે ગાય પાછે ગાય...' (ઉપર જુઓ) એ પ્રકારે સદ્દૂ પાંડે આદિ વ્રજવાસી બધાને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ સુખ આપ્યું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩-વળી એક દિવસ સદ્દુ પાંડેના ઘર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સોનાની કટોરી લઇને મંદિરથી પધાર્યા. ત્યારે નરોને કહે આમાં મને દૂધ કરી દે. ત્યારે નરોએ

मोकों दूध करि दे। तब नरो नें कही, यह कटोरी तो छोटी है, यामें कहा दूध समायगो ? तब श्रीनाथजी कहें, तू यामें करि-करि दे मैं पान करूं। सो नरो दूध कटोरी में करति जाय और श्रीगोवर्द्धनधर पान करत जाय। या प्रकार दूध पीके कटोरी नरोके उहांई डारिके रात्रि कों पाछे आय मंदिर में पौढि रहे। पाछें सवेरे भये घर की टहल, दूध तातो करि, दहीं बिलोय, पाछें दूध, दहीं, माखन नित्य के नेग को ले, सोने की कटोरी ले, मंदिर में आय कह्यो। रात्रि कों देवदमन कटोरी सोने की ले के आयो, सो दूध पी कें कटोरी मेरे घर डारि आयो। आखरि लरिका तो सही। सो यह सोने की कटोरी लेहु। तब सगरे भीतरिया सेवक चक्रत ह्वे रहें। जो-नरो पर ऐसी कृपा है। सो या प्रकार सदू पांडे के घर एक वार नित्य पधारतें।

वार्ता-प्रसंग ४—सो सदू पांडे के परोस में सदू पांडे को छोटो भाई मानिकचंद ब्रजवासी रहत हतो। ताके घर गाय भेंसि बहोत। सो मानिकचंद की मा, सदू पांडेकी मा, ये वृद्ध बहौत हती। सो डोकरी मानिकचन्द के घर रहें। सो जब सवेरे दहीं को बिलोवनो होय चुकें तब माखन रोटी दहीं उह डोकरी के आगें सगरे घरके लोग धरि दे। सगरे बालकन कों कलेऊ बांटिवें को उह डोकरी कौ नेम

કહ્યું. આ કટોરી તો નાની છે. એમાં શું દૂધ મ્હાશે? ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, તૂ આમાં કરતી જા હું પાન કરૂં. ત્યારે નરો દૂધ કટોરીમાં કરતી જાય અને શ્રીગોવર્દ્ધનધર પાન કરતા જાય. આ પ્રકારે દૂધ પીને કટોરી નરોને ત્યાં જ મૂકીને રાત્રિએ પાછા આવી મંદિરમાં પોઢી રહ્યા. પછી સવાર થયે ઘરની ટહલ, દૂધ ગરમ કરી દહીં વલોવી પછી દૂધ, દહીં, માખણ નિત્યના નેગને લઈ સોનાની કટોરી મંદિરમાં લઈ આવી કહ્યું, રાત્રિએ દેવદમન સોનાની કટોરી લઈ આવ્યો હતો તે દૂધ પીને કટોરી મારા ઘરે નાખી આવ્યો. આખર બાલક તો ખરો. આ સોનાની કટોરી લો. ત્યારે બધા ભીતરિયા, સેવક ચકિત થઈ રહ્યા, કે નરો ઉપર આવી કૃપા છે. આ પ્રકારે સદૂ પાંડેના ઘરે એક વાર નિત્ય પધારતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૪-વળી સદુ પાંડેની પાડોશમાં સદૂ પાંડેનો નાનો ભાઈ માણેકચંદ વ્રજવાસી રહેતો હતો. એના ઘરે ગાય ભેંસ ઘણી. તે માણેકચંદની મા, સદૂ પાંડેની મા, એ વૃદ્ધ ઘણી હતી. તે ડોશી માણેકચંદના ઘરે રહે. તે જ્યારે સવારે દહીંનું વલોવણું થઈ ચુકે ત્યારે માખણ, રોટી, દહીં, તે ડોશીની આગળ બધા ઘરના લોકો ધરી દેતા. બધા બાલકોને કલેઉ વાંટવાનો તે ડોકરીનો નેમ હતો. પછી બધા

हतो। सो सगरे बालक आन्योर के भेले होय द्वार पर बैठि रहें। जब वह डोकरी पुकारै, अरे सगरे लरिका! अपनो अपनो कलेऊ ले जाउ। तब सगरे बालक पास आवें। तामें श्रीगोवर्द्धनधर हू बरष सात के बालक ह्वै के आवें। सो वह डोकरी एक बालक को हाथ पकरि नाम पूछि हाथ पर रोटी माखन दहीं धरे। या प्रकार सब कों देई। पाछें जब श्रीनाथजी को हाथ पकरें तब पूछे तेरो कहा नाम है? तब श्रीनाथजी कहें, मेरो नाम देवदमन! तब डोकरी कहै, पर्वत को देवता देवदमन? तब श्रीनाथजी कहें, हां, हां, वारि जाऊं, नित्य कलेऊ याहि समय लै जैयो। तब श्रीनाथजी पधारें। या प्रकार सदू पांडे आदि व्रजवासिन पर श्रीगोवर्द्धनधर कृपा करते। बालक की नांई मांगि कें लेते। सो सदू पांडे, मानिकचंद, नरो, भवानी, सदू पांडे मानिकचंद की माता डोकरी, ये बड़े श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ७३ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास, जटाधारी गौड़ ब्राह्मण प्रयाग के तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में ललिताजी की सखी हैं। 'रस-

બાલક આન્યોરના ભેગા થઈ દ્વાર ઉપર બેસી રહે. જ્યારે તે ડોકરી પોકારે, અરે બધા છોકરાઓ! પોતપોતાનું કલેઉ (નાસ્તો) લઈ જાવ. ત્યારે બધા બાલકો પાસે આવે. તેમાં શ્રીગોવર્દ્ધનધર પણ વર્ષ સાતના બાલક થઇને આવે. પછી તે ડોશી એક-એક બાલકનો હાથ પકડી નામ પૂછી હાથ પર રોટી, માખણ દહીં ધરે. આ પ્રકારે બધાને આપે. પછી જ્યારે શ્રીનાથજીનો હાથ પકડે ત્યારે પૂછે તારૂં શું નામ છે? ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, મારૂં નામ દેવદમન. ત્યારે ડોકરી કહે, પર્વતનો દેવતા દેવદમન? ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, હાં હાં, ત્યારે રોટી ઉપર દહીં, માખણ ધરી હાથમાં દે, કહે, હું વારી જાઉં. નિત્ય કલેઉ આ જ સમયે લઈ જજે. ત્યારે શ્રીનાથજી પધારે. આ પ્રકારે સદ્દૂ પાંડે આદિ વ્રજવાસીઓ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનધર કૃપા કરતા. બાલકની માફક માંગીને લેતા. તે સદ્દૂ પાંડે, માણિકચંદ, નરો, ભવાની સદ્દૂ પાંડે, માણેકચંદ પાંડેની માતા ડોશી એ શ્રીઆચાર્યજીના મહાન કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતાં. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥૭૩॥

* * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, ગોપાલદાસ જટાધારી, ગૌડ બ્રાહ્મણ પ્રયાગના, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ ગોપાલદાસ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. 'રસભદ્રા'

द्रा' लीला में इनको नाम है। सो प्रयाग में एक गौड़ ब्राह्मण के घर प्रगटे।
। वरष छै के भये। तब कासी में नागा वैरागी वहोत आये। सो कासी में कछु
द्दिन रहि प्रयाग में मकर-स्नान कों सब आये। सो गोपालदास पिता के संग मकर-
नान कों गये। सो भीड़ में पिता सों बिछुटि गये। तब रोवन लागे। तब एक
ागा नें कही, मैं तोकों तेरे पिता पास ले चलूंगो। यों कहि अपुने डेरा जाय तहाँ ते
पुनी वस्तुभाव ले गोपालदास कों ले भाज्यो। सो दक्षिण में जाय अपुनो चेला करि
राख्यो। पाछें गोपालदास उह नागाकी जमाति में रहे। सो वरष तीसके भये।
ब उह नागा मरयो तब गोपालदास के मनमें यह आई, जो–तीर्थ करिये। तब,
ो पचास नागा वैरागी को संग करि द्वारिका गयो। पाछे द्वारिका तें वही संग
थुरा कों चल्यो। सो मथुरा आयो। तामें गोपालदास हू आयो। सो ता समय
िश्रांति पर श्रीआचार्यजी संध्या वंदन करत हे। सो गोपालदास कों श्रीआचा-
जी के दरसन भये। सो श्रीआचार्यजी के पास ठाड़े ह्वै रहें। तब कृष्णदास
घन नें कही। तू यहां क्यों ठाडो होय रह्यो है। तेरो संग नागा वैरागी को तो
यो। तब गोपालदास नें कही मेरो संग बहोत जन्म तें बिछुरयो है। सो अब
ीआचार्यजी मोपर कृपा करें। सो फेरि मोकों भगवदीय, भगवान को संग

ીલામાં એમનું નામ છે. એ પ્રયાગમાં એક ગોડ બ્રાહ્મણના ઘરે પ્રકટ્યા. પછી
ર્ષ ૬ ના થયા. ત્યારે કાશીમાં નાગા વૈરાગી ઘણા આવ્યા. તે કાશીમાં થોડા
દિવસ રહી પ્રયાગમાં મકર સ્નાન માટે બધા આવ્યા. ગોપાલદાસ પણ પિતાના સંગે
મકર સ્નાન માટે ગયા. તે ભીડમાં પિતાથી વિખુટા પડી ગયા. ત્યારે રોવા લાગ્યા.
ત્યારે એક નાગાએ કહ્યું, હું તને તારા પિતા પાસે લઈ ચાલીશ. એમ કહી પોતાના
મુકામે જઈ ત્યાંથી પોતાની વસ્તુ ભાવ લઈ ગોપાલદાસને લઇને ભાગ્યો. પછી દક્ષિ-
ણમાં જઈ પોતાનો ચેલો કરીને રાખ્યો. પછી ગોપાલદાસ તે નાગાઓની જમાતમાં
રહ્યા. તે વર્ષ ત્રીસના થયા. ત્યારે એ નાગો મર્યો. ત્યારે ગોપાલદાસના મનમાં એ
આવ્યું કે તીર્થ કરીયે. ત્યારે સો-પચાસ નાગા વૈરાગીનો સંગ કરી દ્વારકા ગયો.
પછી દ્વારકાથી તે જ સંગ મથુરાએ ચાલ્યો. તે મથુરા આવ્યો તેમાં ગોપાલદાસ
પણ આવ્યા. તે સમયે વિશ્રાંત પર શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યા-વંદન કરતા હતા. ત્યારે
ગોપાલદાસને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પાસે ઉભા થઈ
રહ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેધને કહ્યું, તૂ અહીં કેમ ઉભો રહ્યો છે. તારો સંગ નાગા
વૈરાગીનો તો ગયો. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, મારો સંગ ઘણા જન્મથી વિછર્યો છે.

मिले। तब श्रीआचार्यजी संध्या वंदन करि कहें, गोपालदास ! आयो ? तब गोपालदास दण्डवत् करि कह्यो, महाराज ! आपकी कृपा भई तो आयो। परन्तु महाराज मैं वहोत भटक्यो। अनेक मार्ग में दुःसंग में सगरे पापाचरन करि महा दुष्ट मैं ह्वै गयो। सो आपकी कृपातें या संसार समुद्र तरूंगो। और तो मेरो बल कछु नाहीं हैं। तातें कृपा करि मोकों अपनी सरन राखो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जटा माथे की मुंड़ाय के न्हाय आवो, तव तुमकूं नाम सुनावेंगे। तब गोपालदास जटा मुड़ाय कूंप में न्हाय पाछें श्रीयमुनाजी में न्हाय श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। तब गोपालदास नें विनती करी, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा हैं ? जो सेवा बतावो सो करूं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग गोवर्द्धन चलो। तहां श्रीगोवर्द्धनधर के बाग की सेवा करो। पाछें श्रीआचार्यजी मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन पधारे। तब तहां श्रीनाथजी के मंदिर में पधारे। तब गोपालदास कूँ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कराये। पाछें श्रीनाथजी के बाग की सेवा दीने। सो सेवा ऐसी करें, एक एक फूल फल सब नजरि में राखे, सगरे वृक्षन की चौकसी राखें। बाग में कहूं कूड़ा घास न रहें। सगरे वृक्ष जल सों हरे राखें।

તેથી હવે શ્રીઆચાર્યજી મારા ઉપર કૃપા કરે તો ફરી મને ભગવદીય ભગવાનનો સંગ મળે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવંદન કરીને કહે, ગોપાલદાસ આવ્યો ? ત્યારે ગોપાલદાસે દંડવત્ કરીને કહ્યું, મહારાજ ! આપની કૃપા થઈ તો આવ્યો. પરંતુ મહારાજ હું ઘણું ભટક્યો. અનેક માર્ગમાં દુઃસંગમાં બધાં પાપાચરણ કરી હું મહાદુષ્ટ થઈ ગયો. આપની કૃપાથી આ સંસાર સમુદ્રમાંથી તરીશ. બીજું તો મારૂં બલ કંઈ નથી. તેથી કૃપા કરી મને આપની શરણે રાખો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જટા માથાની મુંડાવીને ન્હાઇ આવો ત્યારે તમને નામ સંભળાવીશું. ત્યારે ગોપાલદાસ જટા મુંડાવી કુવા ઉપર ન્હાઈ પછી શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે ગોપાલદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! હવે મને શી આજ્ઞા છે ? જે સેવા બતાવો તે કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અમારી સાથે ગોવર્દ્ધન ચાલો. ત્યાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરના બાગની સેવા કરો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મથુરાથી શ્રીગોવર્દ્ધન પધાર્યા. ત્યારે ત્યાં શ્રીનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે ગોપાલદાસને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરાવ્યાં. પછી શ્રીનાથજીના બાગની સેવા આપી. તે સેવા એવી કરે કે એક એક ફૂલ, ફલ, બધાં નજરમાં રાખે. બધાં વૃક્ષોની ચોકસાઈ રાખે, બાગમાં કંઈ કૂડો-ઘાસ ન રહે.

यह भाव विचारे जो, यहां श्रीठाकुरजी खेलन कों पधारत हैं। तातें उत्तम जगह रहें तो आछो। या प्रकार कछुक दिन सेवा करी, सो एक वैष्णव को लरिका अपुने श्रीठाकुरजी के लिये नित्य दस पांच फूल चुराय ले जाय। सो गोपालदास बहोतेरो जतन कियो जो–कोन फूल ले जात हैं। परन्तु जानि न परी। तब एक दिन गोपालदास उह बाग में छिप रहें। सो उह वैष्णव को लरिका वर्ष ग्यारह को, सो चारों ओर गोपालदास कों देख्यो। जान्यो, जो–अब ये नाहीं हैं। तब पांच फूल तोरयो। तब गोपालदास दौरिकें आयो, सो उह लरिका कों पकरि के मारयो। तब वह लरिका छुड़ाय के भाज्यो। सो गोपालदास क्रोध करिकें उह लरिका के पाछें दौरे। तब वह लरिका छुड़ायकें भाज्यो, सो श्रीनाथजी के मंदिर में छिप्यो। तहां भोग के किवाड़ खुले हते। तहां आइ वह लरिका दरसन में छिप्यो। सो गोपालदास रीस के मारे चले आये। सो क्रोध में मंदिर को ज्ञान न रह्यो। उह बालक कों एक धोल मारी। तब सबन नें छुड़ाय दियो। सो श्रीनाथजी कों बहोत बुरी लागी, जो–गोपालदास मेरी हू कानि न करी? मंदिर में मारयो। पाछें भूलि हू गये। और उह बालक कों यातें इतनो दंड भयो, जो–श्रीनाथजी के फूल, घरके ठाकुर कों धरनो नाहीं। यह सिक्षा किये। पाछें पानघर

બધાં વૃક્ષ જલથી હર્યાં રાખે. એ ભાવ વિચારે કે અહીં શ્રીઠાકુરજી ખેલવા માટે પધારે છે. તેથી ઉત્તમ જગા રહે તે સારૂં. આ પ્રકારે કેટલાક દિવસ સેવા કરી. પછી એક વૈષ્ણવનો બાલક પોતાના શ્રીઠાકુરજીને માટે નિત્ય દશ-પાંચ ફૂલ ચોરીને લઈ જાય. ગોપાલદાસે ઘણોય યત્ન કર્યો કે કોણ ફૂલ લઈ જાય છે? પરંતુ ખબર ન પડી. ત્યારે એક દિવસ ગોપાલદાસ એ બાગમાં સંતાઈ રહ્યા ત્યારે તે વૈષ્ણવનો બાલક વર્ષ અગ્યારનો હતો તેણે ચારે તરફ ગોપાલદાસને જોયા. (પછી) જાણ્યું કે હવે એ નથી. ત્યારે પાંચ ફૂલ તોડ્યાં. ત્યારે ગોપાલદાસ દોડીને આવ્યા. પછી તે બાલકને પકડીને માર્યો. ત્યારે તે બાલક છોડાવીને ભાગ્યો. પછી ગોપાલદાસ ક્રોધ કરીને તે બાલકની પાછળ દોડ્યા. ત્યારે તે બાલક છોડાવીને ભાગ્યો તે શ્રીનાથજીના મંદિરમાં સંતાયો. ત્યાં ભોગનાં કમાડ ખુલ્યાં હતાં ત્યાં આવી તે બાલક દર્શનમાં સંતાયો. તે ગોપાલદાસ રીસના માર્યા ચાલ્યા આવ્યા. તે ક્રોધમાં મંદિરનું જ્ઞાન રહ્યું નહીં. તે બાલકને એક ધોલ મારી ત્યારે બધાએ છોડાવી દીધો. ત્યારે શ્રીનાથજીને ઘણું ખોટું લાગ્યું, કે ગોપાલદાસે મારી પણ કાનિ ન કરી! મંદિરમાં માર્યો? પછી ભૂલી પણ ગયા. વળી તે બાલકને એથી આટલો દંડ થયો કે શ્રીનાથ-

की सेवा में कोई न हतो ! तब श्रीआचार्यजी गोपालदास जटाधारी कों पानघरकी सेवा दीनी । सो पान की सेवा भली भांति सों करन लागे । सो आषाढ़ के दिन गरमी ऊमस बहोत परे, तब गोपालदास पान छाब पर बिछाय ऊपर आलो कपरा ढाँकि सगरी रात्रि पंखा करें। सो श्रीआचार्यजी को यह नियम हतो, जो–रात्रि में दोय तीन बेर उठि सगरे सेवकन कों देखि जाय। जो कोई सेवक लौकिक वार्ता, काहू की निंदा न करन पावे। सो अर्द्ध रात्रि समय एक दिवस श्रीआचार्यजी पधारे। सो दूरितें देखे तो कोई सेवक कीर्तन गावत है। कोई सेवक घोल गावत है, कोई सेवक पंचाध्यायी को पाठ करत है। कोई भगवद् वार्ता करत है। सो देखिकें प्रसन्न भये। जो कोई लौकिक बात काहू की निंदा नाहीं करत है। पाछें गोपालदास कों आय देखें तो नींद को झोका आयो है, परन्तु पानन कों पंखा करत हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। जो यह सबतें श्रेष्ठ है। जो नींद हू आवत में भगवद सेवा करत हैं।

वार्ता–प्रसंग १—**सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो–गोपालदास सवेरे तुम न्हाइ कें श्रीनाथजी के मंदिर भीतर जाई श्रीनाथजी के निकट जाई, पंखा श्रीनाथजी कों करियो।**

જીનાં ફૂલ ઠાકુરને ધરવાં નહીં. આ શિક્ષા કરી. પછી પાનઘરની સેવામાં કોઈ ન હતું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ ગોપાલદાસ જટાધારીને પાનઘરની સેવા આપી. તે પાનની સેવા સુંદર રીતિથી કરવા લાગ્યા. પછી અષાઢના દિવસ (આવ્યા) ગરમી ઉમસ બહુ પડે. ત્યારે ગોપાલદાસ પાન છાબ ઉપર બીછાવી ઉપર ભીનું કપડું ઢાંકી બધી રાત્રિ પંખા કરે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીનો એ નિયમ હતો કે રાત્રિમાં બે–ત્રણ વાર ઉઠી બધા સેવકોને જોઈ જાય, કે કોઈ સેવક લૌકિક વાર્તા, કોઇની નિંદા ન કરવા પામે. પછી અર્દ્ધ રાત્રિ સમય એક દિવસ શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા, તે દૂરથી જુએ તો કોઈ સેવક કીર્તન ગાય છે, કોઈ સેવક ધોલ ગાય છે, કોઈ સેવક પંચાધ્યાયીનો પાઠ કરે છે. તે જોઇને પ્રસન્ન થયા, કે કોઈ લૌકિક વાત કોઇની નિંદા નથી કરતા. પછી ગોપાલદાસને આવીને જુએ તો નિંદ્રાનું ઝોકુ આવ્યું છે. પરંતુ પાન ને પંખા કરે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ગોપાલદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા, કે આ સહુથી શ્રેષ્ઠ છે. કેમ જે નિંદ્રામાં પણ ભગવત્સેવા કરે છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧–પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે ગોપાલદાસ! સવારે તમે ન્હાઇને શ્રીનાથજીના મંદિર અંદર જઈ શ્રીનાથજીને પંખા કરજો.

भावप्रकाश—काहे तें, पहलें खिचेमा पंखा हतो नाहीं।

तब गोपालदास सवेरे न्हाइ कें श्रीनाथजी के मंदिर में श्रीनाथजी के निकट जाई पंखा श्रीनाथजी कों करन लागें। सो प्रेम में मगन है गये सो अनोसर में हू श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें पंखा करते। श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-गोपालदास! अनोसर में आंखि मीचि के पंखा करियो। नेत्र मति खोलियो। सो रात्रि में हू आँखि मीचि कें पंखा करते। सो ऐसे भगवदीय गोपालदास भये। जो सरीर को अध्यास लंघी आदि रात्रि कों बाधा न होती। पाछे रात्रि कों एक दिन श्रीनाथजी कहें, जो-गोपालदास! नेत्र खोलि, मेरे दरसन करि। तब गोपालदास कहें, महाराज! मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की आज्ञा नाहीं है। जातें नेत्र न खोलूंगो, तब श्रीनाथजी गोपालदास के मुख में महाप्रसाद हू खवाय देते, परन्तु गोपालदास नेत्र न खोलते। ऐसे आज्ञा श्रीआचार्यजी की पालन करते, जो-श्रीनाथजी के कहेतें हू न खोलते। श्रीस्वामिनीजी पधारते, श्रीगोवर्द्धनधर सों वार्ता करती, सो सब सुनते। या प्रकार की कृपा गोपालदास पर हती।

वार्ता-प्रसंग २—पाछें एक दिन श्रीनाथजी के मन में यह आई,

ભાવપ્રકાશ—કેમકે પહેલાં ખેંચવાનો પંખો ન હતો.

ત્યારે ગોપાલદાસ સવારે ન્હાઇને શ્રીનાથજીના મંદિરમાં શ્રીનાથજીની નિકટ જઈ શ્રીનાથજીને પંખો કરવા લાગ્યા. તે પ્રેમમાં મગન થઈ ગયા. પછી અનોસરમાં પણ શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞાથી પંખો કરતા. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે ગોપાલદાસ! અનોસરમાં આંખ મીંચીને પંખો કરજે. નેત્ર ખોલીશ નહી. પછી રાત્રિમાં પણ આંખ મીંચીને પંખા કરતા. એવા ભગવદીય ગોપાલદાસ થયા કે શરીરનો અધ્યાસ લઘી આદિ રાત્રિએ કંઈ બાધા ન થતું. પછી રાત્રિએ એક દિવસ શ્રીનાથજી કહે, કે ગોપાલદાસ! નેત્ર ખોલ. મારાં દર્શન કર. ત્યારે ગોપાલદાસ કહે, મહારાજ! મને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની આજ્ઞા નથી. તેથી નેત્ર નહીં ખોલું. ત્યારે શ્રીનાથજી ગોપાલદાસના મુખમાં મહાપ્રસાદ પણ ખવડાવી દેતા. પરંતુ ગોપાલદાસ નેત્ર ન ખોલતા. એ રીતે શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા પાલન કરતા. જે શ્રીનાથજીના કહેવાથી પણ (આંખ) ન ખોલતા. શ્રીસ્વામિનીજી પધારતાં. શ્રીગોવર્દ્ધનધરથી વાતો કરતાં તે બધું સાંભળતાં. આ પ્રકારની કૃપા ગોપાલદાસ ઉપર હતી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨-પછી એક દિવસ શ્રીનાથજીના મનમાં એ આવ્યું કે આ એ જ

वैष्णव को बेटा श्रीनाथजी के बाग के फूल चुरावतो ताकों ये गोपालदास श्रीनाथजी के मंदिर में मारे। ता अपराध को दंड प्रभु दिये हैं। सो यह आगें जाय न सकेगो। विरह ताप सों देह छोडि लीला में प्राप्त होइगो। गोपालदास के परलोक में बाधक नाहीं।

भावप्रकाश—यामें यह जताये,—पाप पुण्य को भोग इहां करि चुके तब भगवद् प्राप्ति होई।

तब सब वैष्णवन को संदेह निवृत्त भयो। पाछें गोपालदास जब मजलि द्वै गये। तब श्रीनाथजी के स्वरूपानंद की सुधि आई। तब विरह तें व्याकुल होई गिरे। हाय, हाय, मो बराबर दुष्ट कौन? यह श्रीनाथजी की सेवा स्वरूपानंद को अनुभव, वैष्णव को संग, सो सब छोडि कें मैं पृथ्वी परिक्रमा कों चल्यो? धिक्कार मोकों, धिक्कार मेरी बुद्धि कों, जो—यह मनमें आई। या प्रकार कहत विरह तें मूर्छा आई। सो श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप को ध्यान धरि देह छोडि लीला में प्राप्त भये।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो—अपराध काहू को न करनो। अपराध है सो उत्तम भगवद् धर्म में आई बाधा करे। तब धर्म छूटि जाई। तातें

વાને ચાલ્યા? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે એનો એક મોટો અપરાધ છે. એક વૈષ્ણવનો બાલક શ્રીનાથજીના બાગમાં ફૂલ ચોરાવતો તેને આ ગોપાલદાસે શ્રીનાથજીના મંદિરમાં માર્યો. તે અપરાધનો દંડ પ્રભુ આપે છે. પણ આ આગળ જઈ નહીં શકે. વિરહ તાપથી દેહ છોડી લીલામાં પ્રાપ્ત થશે. ગોપાલદાસને પરલોકમાં બાધક નથી.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું, પાપ–પુણ્યનો ભોગ અહીં કરી ચૂકે ત્યારે ભગવત્પ્રાપ્તિ થાય.

ત્યારે બધા વૈષ્ણવોનો સંદેહ નિવૃત્ત થયો. પછી ગોપાલદાસ બે મજલ ગયા ત્યારે શ્રીનાથજીના સ્વરૂપાનંદની સુધ આવી. ત્યારે વિરહથી વ્યાકુલ થઈને પડ્યા. હાય! હાય! મારા બરાબર દુષ્ટ કોણ? આ શ્રીનાથજીની સેવા, સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ, વૈષ્ણવનો સંગ એ બધું છોડીને હું પૃથ્વી પરિક્રમાએ ચાલ્યો? ધિ:કાર મને; ધિ:કાર મારી બુદ્ધિને જે આવું મનમાં આવ્યું. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં સ્વરૂપનું ધ્યાન ધરી દેહ છોડી લીલામાં પ્રાપ્ત થયા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું; કે કોઇનો અપરાધ ન કરવો. અપરાધ છે તે ઉત્તમ ભગવદ્ધર્મમાં આવીને બાધા કરે, ત્યારે ધર્મ છુટી જાય.

अपराध तें सदा भय राखनो । और श्रीआचार्यजी की आज्ञा को दृढ़ विश्वास राखनों । जो श्रीठाकुरजी हू कहें, नेत्र खोलि, परन्तु श्रीआचार्यजी की आज्ञा नाहीं, तातें न खोले । तब श्रीनाथजी प्रसन्न भये । और यह पुष्टिमार्ग में सगरे अपराध दूरि करिवे कों एक श्रीठाकुरजी को विरह मुख्य कारन है । विरह करि प्रभु की प्राप्ति होई, यह सिद्धान्त जताये । वैष्णव ॥ ७४ ॥

सो गोपालदास ऐसे श्रीआचार्यजी के टेक के कृपापात्र भगवदीय हैं । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये । ॥ वार्ता ७४ ॥

✻ ✻ ✻

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कृष्णदास और कृष्णदास की स्त्री, गुजराती ब्राह्मण, सो गुजरात में वाड चोइला गाम, सो वाड़ में रहतें, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रुतिरूपान में हैं । मदन गोप की दोऊ वेटी । सो श्रीचन्द्रावलीजी कों श्रीठाकुरजी संकेत में मिलें सो बात, ये मदनगोप की वेटी दोऊ 'नंदा' 'शुभदा' इनको नाम, सो नंदा, शुभदा नें कीरतिजी सों सब कही । जो श्रीचंद्रावलीजी और श्रीकृष्ण संकेत में एकान्त बात करत हते । तब कीरति खीझि कहें, ऐसी बात काहू की करिये नाहीं । सो बात सुनिके चंद्रा-

---

તેથી અપરાધથી સદા ભય રાખવો. વળી શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞાનો દૃઢ વિશ્વાસ રાખવો. જે શ્રીઠાકુરજીએ પણ કહ્યું નેત્ર ખોલ પરંતુ આચાર્યજીની આજ્ઞા નહીં તેથી ન ખોલ્યાં. ત્યારે શ્રીનાથજી પ્રસન્ન થયા અને આ પુષ્ટિમાર્ગમાં બધા અપરાધોને દૂર કરવાને એક શ્રીઠાકુરજીનો વિરહ મુખ્ય કારણ છે. વિરહથી પ્રભુની પ્રાપ્તિ થાય એ સિદ્ધાન્ત બતાવ્યો. વૈ. ॥ ૭૪ ॥

એ ગોપાલદાસ એવા શ્રીઆચાર્યજીના ટેકના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તેમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૭૪॥

✻ ✻ ✻

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, કૃષ્ણદાસ અને કૃષ્ણદાસની સ્ત્રી ગુજરાતી બ્રાહ્મણ, તે ગુજરાતમાં વાડ ચોઇલા ગામ છે ત્યાં વાડમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં શ્રુતિરૂપાઓમાં છે. મદનગોપની બન્ને બેટી શ્રીચંદ્રાવલીજીને શ્રીઠાકુરજી સંકેતમાં મળ્યા તે વાત એ મદનગોપની બન્ને બેટી 'નંદા' 'શુભદા' એમનું નામ, તે નંદા શુભદાએ કીર્તિજીને બધી કહી, કે ચંદ્રાવલીજી અને શ્રીકૃષ્ણ સંકેતમાં એકાંતમાં વાત કરતા હતા ત્યારે કીર્તિજી ખીજીને

वलीजी नें शाप दियो, जो–भूमि पर तुम प्रगटो। तब नंदा तो कृष्णदास भये। और शुभदा सो इनकी स्त्री भई। 'बाड' में कृष्णदास भये। 'चोइला' में एक ब्राह्मण के घर स्त्री प्रगटी। सो बड़े भये। तब कृष्णदास को ब्याह भयो। सो बालपने सों इनकी दोऊन की यह रीति जो वैरागी, साधु, संत आवे सो इनके घर सों खाली न जाई। सो एक दिन कृष्णदास की स्त्री माटी लेंन गाम की दस पांच स्त्रीन के संग गई। सो माटी खोदत में ऊपरते बड़ो टीबो टूटि परयो सो सब स्त्री दबी। तहां श्रीआचार्यजी आय निकसे। सो टीबो टूटत देखे। तब सब वैष्णवन सों कहें, वेगे माटी टारो, यहां स्त्री दबी हैं। ता समें गुजरात के वैष्णव संग बहोत हते। सो हाथों हाथ सगरी माटी टारि, सगरी स्त्रीन कों निकासें। तामें द्वै चार तो अधमरी भई। तब श्रीआचार्यजी वेद मन्त्र पढिकें सब स्त्रीन पर जल छिरके। तब सब सावधान भई। इतने (में) गाम के लोग आये। सो अपनें अपनें घर की स्त्रीन कों ले गये। तब कृष्णदास की स्त्री श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती करी, जो–महाराज! आप कौन हो? जो–हम सगरीन कों दबीन कों, मरीन कों जिवाये। ऐसी आप दया करी। सो भगवान बिना या समय और कौन सहाय

કહે, એવી વાત કોઈની કરીએ નહી. એ વાત સાંભળીને શ્રીચંદ્રાવલીજીએ શાપ આપ્યો, કે ભૂમિ ઉપર પ્રગટો. ત્યારે નંદા તો કૃષ્ણદાસ થયા અને શુભદા તેમની સ્ત્રી થઈ. 'વાડ'માં કૃષ્ણદાસ થયા. 'ચોઇલા'માં એક બ્રાહ્મણને ઘરે સ્ત્રી પ્રકટી. પછી મોટાં થયાં ત્યારે કૃષ્ણદાસનું લગન થયું. તે બાલપણથી આ બન્નેની એવી રીતી કે વૈરાગી, સાધુ, સંત આવે તે એમના ઘરથી ખાલી ન જાય. પછી એક દિવસ કૃષ્ણદાસની સ્ત્રી માટી લેવા ગામની દશ-પાંચ સ્ત્રીઓને સાથે લઇને ગઇ. ત્યાં માટી ખોદતાંમાં ઉપરથી મોટી ઢેખળ ટૂટી પડી ત્યારે બધી સ્ત્રી દબી. ત્યાં શ્રીઆ-ચાર્યજી આવી નિકળ્યા. તે ઢેખળ ટૂટતાં જોઇ ત્યારે બધા વૈષ્ણવોને કહ્યું, જલ્દી માટી હટાવો. અહીં સ્ત્રીઓ દબાઈ છે. તે સમયે ગુજરાતના વૈષ્ણવ ઘણા સાથે હતા. ને હાથોહાથ બધી માટી હટાવી બધી સ્ત્રીઓને કાઢી. તેમાં બેચાર તો અધમરી થઇ ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વેદમંત્ર ભણીને બધી સ્ત્રીઓ ઉપર જલ છાંટયું. ત્યારે બધી સાવધાન થઈ. એટલામાં ગામના લોકો આવ્યા. પછી પોતપોતાના ઘરની સ્ત્રીઓને લઇ ગયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસની સ્ત્રીએ શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી કે, મહારાજ! આપ કોણ છો? કે અમે બધી દબાયેલીઓને મરેલીઓને જીવાડી એવી આપે દયા કરી. માટે ભગવાન વિના આ સમય બીજો કોણ સહાય

करें ! तब श्रीआचार्यजी कहें, तू दैवी जीव हैं, भगवदीय है । सो भगवदीय के पाछें सगरी स्त्रीन के प्रान बचे । तब कृष्णदास को स्त्री नें विनती करी, जो–महाराज ! आप कृपा करिकें मेरे घर पधारिये । मेरी सत्ता अङ्गीकार करिये । तब कृष्णदास मेघन नें कही, ये श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपुनें सेवक को लेत हैं । और काहू को कछू लेत नाहीं । या प्रकार वार्ता करत हे इतने में, गाम में कृष्णदास नें सुनी, जो–स्त्री माटी में दबी, सो, दौरे आये । तब स्त्रीनें कही, श्रीआचार्यजी महाप्रभु ये साक्षात् ईश्वर हैं । सो हम सगरी स्त्रीन कों निकारि कें जल छांटिकें जिवाये । परन्तु ये अपुनें सेवक को लेत हैं । और काहू को कछू लेत नाहीं । तब कृष्णदास श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती किये, जो–महाराज ! हमारे घर पधारि हमकों, स्त्री कों सेवक करियें । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास के घर पधारि कृष्णदास कों स्त्री सहित न्हवाई नाम निवेदन कराये । पाछे तें उन दोउन ने विनती करी, जो–महाराज ! हमकों सेवा पधराय दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमकों वैष्णव सेवा दीनी है, सो आये गये वैष्णव की सेवा करियो और श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र की सेवा दीनी । तीन रात्रि श्रीआचार्यजी कृष्णदास के घर रहि मार्ग की सब रीति बताये । पाछें आपु द्वारिका पधारे । कृष्णदास स्त्री सहित सेवा करे ।

કરે ? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તૂ દૈવી જીવ છે, ભગવદીય છે. તેથી ભગવદીયની પાછળ બધી સ્ત્રીઓના પ્રાણ બચ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસની સ્ત્રીએ વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! આપ કૃપા કરીને મારા ઘરે પધારો. મારી સત્તા અંગીકાર કરો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘને કહ્યું, એ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોતાના સેવકોનું લે છે બીજા કોઇનું કંઇ લેતા નથી. એ પ્રકારે વાર્તા કરતા હતા એટલામાં કૃષ્ણદાસે સાંભળ્યું કે સ્ત્રી માટીમાં દબી તેથી દોડયા આવ્યા. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, આ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ સાક્ષાત્ ઇશ્વર છે. તેથી અમને બધી સ્ત્રીઓને કાઢીને જલ છાંટીને જીવાડી. પરંતુ એ પોતાના સેવકોનું લે છે. બીજા કોઇનું લેતા નથી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી કે મહારાજ ! અમારા ઘરે પધારી અમને, સ્ત્રીને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસના ઘરે પધારી કૃષ્ણદાસ ને સ્ત્રી સહિત નવડાવી નામ નિવેદન કરાવ્યું. પછીથી એ બન્નેએ વિનંતી કરી કે, મહારાજ ! અમને સેવા પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, તમને વૈષ્ણવ-સેવા દીધી. તેથી આવ્યા ગયા વૈષ્ણવની સેવા કરજો. અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીના વસ્ત્રની સેવા આપી ત્રણ રાત્રિ શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસના ઘરે રહી પોતે માર્ગની બધી રીતિ બતાવી.

आये गये वैष्णव को समाधान करे। पाछें श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिका तें पाछे पधारे। तब एक रात्रि कृष्णदास के घर रहि अड़ेल कूं पधारे।

वार्ता प्रसंग १—सो एक समे दस पंद्रह वैष्णव भेले होई अड़ेल श्रीआचार्यजी के दरसन कों चले। सो कृष्णदास के घर आइ उतरे। ता दिन कृष्णदास के घर कछू सीधो सामग्री न हती। और कृष्णदास घर न हते। तब स्त्री नें सगरे वैष्णवन कों दंडौत करि घर में उतारि दिये। पाछें विचार कियो, जो–घर में तो कछू है नाहीं। और आप घर नाहीं। वैष्णव भूखे होइंगे, तातें अब मैं कहा उपाय करूँ? सो वह गाम में एक बनिया हतो, सो या स्त्री कों सुन्दर देखिके वह बनिया कबहूं कबहूं या स्त्री सों टोक करे। जो–तू मेरे घर एक रात्रि आवे तो तू चाहे सो ले जा, तब वा स्त्री नें विचारी, जो–वा बनियाँ के पास जाऊँ। सो वा बनिया की हाट पर आई वासों कही, जो–एक रात्रि आऊंगी, सीधो सामग्री चहिये। तब वह बनिया प्रसन्न होइ के जो इन माँग्यो सो दियो। तब वह स्त्री सामग्री घर लाई। स्नान करि, रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। बच्यो सो गायन कूँ खवाय दियो। आप वामें ते कछू न लियो। पाछें सीधो सामग्री लेके सांज कूं कृष्णदास

પછી આપ દ્વારકા પધાર્યા. કૃષ્ણદાસ સ્ત્રી સહિત સેવા કરે. આવ્યા ગયા વૈષ્ણવોનું સમાધાન કરે પછી શ્રીઆચાર્યજી દ્વારિકાથી પાછા પધાર્યા ત્યારે એક રાત્રિ કૃષ્ણદાસના ઘરે રહી અડેલ પધાર્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી એક સમય દશ-પંદર વૈષ્ણવ ભેગા થઈ અડેલ શ્રીઆચાર્યજીના દર્શને ચાલ્યા. તે કૃષ્ણદાસના ઘરે આવી ઉતર્યા. તે દિવસે કૃષ્ણદાસના ઘરે સીધુ-સામગ્રી કંઇ ન હતું. અને કૃષ્ણદાસ ઘર ન હતા. ત્યારે સ્ત્રીએ બધા વૈષ્ણવોને દંડવત્ કરી ઘરમાં ઉતારી દીધા. પછી વિચાર કર્યો કે ઘરમાં તો કંઇ છે નહીં. અને કૃષ્ણદાસ ઘર નથી. વૈષ્ણવ ભૂખ્યા હશે. તેથી હવે હું શું ઉપાય કરૂં? પછી તે ગામમાં એક વાણિયો હતો. તે આ સ્ત્રીને સુંદર જોઇને એ વાણિયો કોઇ કોઇ વાર આ સ્ત્રીને ટોક કરે. કે તૂ મારા ઘર એક રાત્રિ આવે તો તૂ જે જોઇએ તે લઇ જા. ત્યારે તે સ્ત્રીએ વિચાર્યું કે એ વાણિયાની પાસે જાઉં. પછી તે વાણીયાની દૂકાન ઉપર આવી. એને કહ્યું કે એક રાત્રિ આવીશ સીધું-સામગ્રી જોઇએ. ત્યારે તે વાણિઆએ પ્રસન્ન થઇને જે માગ્યું તે આપ્યું. ત્યારે તે સ્ત્રી સામગ્રી ઘર લાવી. સ્નાન કરી રસોઈ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો. બચ્યો તે ગાયોને ખવડાવી

घर आये। सो वैष्णवन कों देखिकें प्रसन्न होइके सबसों मिलें। पाछें पूछे कब के आये? तब वैष्णवन ने कही, जो-मध्याह्न के समें आये। तब कृष्णदास नें स्त्री सों कही, वैष्णव भूखे होंगे, सीधा ले रसोई वेगि करि। तब स्त्री नें कही, सो तो महाप्रसाद ले चुके, चिंता मति करो। तब कृष्णदास कहें, वैष्णव कहाँ तें लिये होंगे, घरमें तो कछू हतो नाहीं। तब स्त्री नें जा प्रकार कर्यो सो कह्यो। तब स्त्री कों दंडौत करि कहे, तू धन्य है, जो-मेरो धर्म राख्यो। पाछें फेरि रात्रि कों रसोई करि भोग धरि वैष्णवन कों लिवाइ स्त्री पुरुष महाप्रसाद लिये। रात्रि कों वैष्णवन सों मिलि कीर्तन वार्ता किये। पाछे सवेरे वैष्णव चलन लागे तब बिनती करि कहें, मेरे घरते भूखे मति जाउ। पाछें स्त्री सहित कृष्णदास वेगि रसोई करि, भोग धरि महाप्रसाद लिवाई, वैष्णवन कों प्रीति सहित बिदा करि थोरीसी दूरि लों कृष्णदास पहुचावन गये। पाछें जब घर आये तब स्त्री सहित महाप्रसाद लिये। पाछें संध्या भई, तब कृष्णदास स्त्री सों कहें, तू वा बनिया सों कालिह कोल करि आई है। सो वह बनिया तेरो मारग देखत होइगो। वाकी सामग्री ते आपुनो मनोरथ सिद्ध भयो, आपुनो धर्म रह्यो, तातें वाको मनोरथ हू सिद्ध करयो चहिये। तू न्हाइ के सिंगार

દીધો પોતે એમાંથી કંઇ ન લીધું. પછી સીધું સામગ્રી લઇને કૃષ્ણદાસ સાંજે ઘર આવ્યા. પછી વૈષ્ણવોને જોઇને પ્રસન્ન થઇને બધાને મળ્યા. પછી પુછ્યું કયારે આવ્યા? ત્યારે વૈષ્ણવોએ કહ્યું, કે મધ્યાહ્નની સમે આવ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે સ્ત્રીને કહ્યું, વૈષ્ણવ ભૂખ્યા હશે સીધું લઇ રસોઈ જલ્દી કર. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, કે એ મહાપ્રસાદ લઈ ચૂકયા ચિંતા ન કરો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, વૈષ્ણવે કયાંથી લીધું હશે ઘરમાં તો કંઈ હતું નહી. ત્યારે સ્ત્રીએ જે પ્રકાર કર્યો તે બધો કહ્યો. ત્યારે સ્ત્રીને દંડવત્ કરી કહે, તૂ ધન્ય છે કે મારો ધર્મ રાખ્યો. પછી ફરી રાત્રિના રસોઇ કરી ભોગ ધરી વૈષ્ણવોને લેવડાવી સ્ત્રી-પુરુષે મહાપ્રસાદ લીધો રાત્રિના વૈષ્ણવોને મળી કીર્તન-વાર્તા કરી. પછી સવારે વૈષ્ણવ ચાલવા લાગ્યા ત્યારે વિનંતી કરી કહ્યું, મારા ઘરથી વૈષ્ણવ ભૂખ્યા ન જાવ. પછી સ્ત્રી સહિત કૃષ્ણદાસે જલ્દી રસોઇ કરી ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લેવડાવી વૈષ્ણ-વોને પ્રીતિ સહિત વિદાય કરી થોડી દૂર સુધી કૃષ્ણદાસ પહોંચાડવા ગયા. પછી જ્યારે ઘરે આવ્યા ત્યારે સ્ત્રી સહિત મહાપ્રસાદ લીધો. પછી સંધ્યા થઈ ત્યારે કૃષ્ણદાસે સ્ત્રીને કહ્યું, તૂ તે વાણિયાને કાલે કોલ કરીને આવી છે તે વાણિયો તારો માર્ગ જોતો હશે. એની સામગ્રીથી આપણો મનોરથ સિદ્ધ થયો. આપણો ધર્મ રહ્યો, તેથી તેનો મનો-

करि ले। तब स्त्री उबटना लगाइ न्हाइ कें काजर बेंदी सिंदूर लगाइ पावन में महावर दियो। इतनें चलन लागी। सो वर्षा के दिन हते, सो मेह बरसन लाग्यो। अँधेरी होई आई। तब कृष्णदास नें कही, मार्ग में कीच भई है सो तेरे पांव कीच सों भरेंगे। और पावन की महावरि छूटि जाइ तो आछो नाहीं। उह बनिया को मन बिगरेगो। तातें तू मेरे कांधे पर चढ़ि ले। मैं वाकी हाट पर तोकों उतारि आउँ। तब स्त्री कों कांधे पर चढ़ाइ लेके वाकी हाट पर पहोंचाई, आप कृष्णदास घर आये। तब स्त्री नें बनिया कों पुकार्यो, जो–किवाड़ खोलि। तब वह बनिया मनमें प्रसन्न होइ पानी को लोटा संग लिये आयो। कह्यो, कीच के पांव धोइ ले। तब या स्त्री नें कही, मेरे पांव सूखे, आछे, कोरे हैं। तब बनिया नें कही, मारग में कीच बहोत है। तेरे पांव कोरे कैसें रहे? तब स्त्री नें कही मेरे पांव कोरे हैं, तेरे या बात पूछिवे को कहा काम है? तेरो काम है सो तू करि। तब बनिया नें कही, तू यह बात सांच बताइ दे, तेरे पांव ऐसे मेह में कोरे क्यों रहे! तब स्त्री नें कही, मेरो पति अपने कांधे पर बैठाइ मोकों तेरी हाट पर उतारि गयो है। तब बनिया नें कही, यह बात तू सब सांची कही? तेरो पति मेरे इहाँ क्यों लायो? और तु कबहूं मोसों

રથ પણ સિદ્ધ કરવો જોઇએ. તૂ ન્હાઇને શૃંગાર કરી લે. ત્યારે તે સ્ત્રીએ ઉબટના લગાડી ન્હાઇને કાજળ, બેંદી, સિંદુર લગાડી પગમાં મહાવર લગાડ્યું. પછી ચાલવા લાગી. ત્યારે વર્ષાના દિવસ હતા. તે મેહ વર્ષવા લાગ્યો. અંધારૂં થઈ આવ્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, માર્ગમાં કીચડ થઇ છે. તેથી તારા પગ કીચડથી ભરાશે. અને પગની મેંદી ધોવાઈ જાય તો ઠીક નહીં. તે વાણિયાનું મન બગડે તેથી તૂ મારા કંધા ઉપર ચઢી જા. હું તને તેની દુકાન ઉપર ઉતારી આઉં. પછી સ્ત્રીને કંધા ઉપર ચઢાવી લઇને એની દુકાન ઉપર પહોંચાડી કૃષ્ણદાસ પોતે ઘર આવ્યા. ત્યારે સ્ત્રીએ વાણિયાને પોકાર્યો કે કમાડ ખોલ. ત્યારે તે વાણિઓ મનમાં પ્રસન્ન થઇને પાણીનો લોટો સાથે લઇને આવ્યો. કહ્યું, કીચડના પગ ધોઈ લે. ત્યારે આ સ્ત્રીએ કહ્યું, મારા પગ સૂકા, સારા, કોરા છે. ત્યારે વાણિઆએ કહ્યું, માર્ગમાં કીચડ ઘણો છે. તારા પગ કોરા કેવી રીતે રહ્યા? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, મારા પગ કોરા છે. તારે આ વાત પૂછીને શું કામ છે? તારૂં કામ છે તે તૂ કર. ત્યારે વાણિઆને કહ્યું, તૂ આ વાત સાચી બતાવી દે. તારા પગ આવા વરસાદમાં કોરા કેમ રહ્યા? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, મારો પતિ પોતાના કંધા ઉપર બેસાડીને મને તારી દુકાન ઉપર ઉતારી ગયો છે. ત્યારે વાણિયાએ કહ્યું, તેં આ વાત બધી સાચી કહી? તારો પતિ મારે ત્યાં કેમ લાવ્યો? અને તૂ કોઈ દિવસ મારાથી બોલતી નહી

बोलत नाहीं। सो आप अपुनें मुख कही, मैं एक रात्रि आऊँगी। ऐसे कहि सीधो सामग्री लियों। कछू द्रव्यादि नाहीं मांग्यो। सो यह सब कारन मोसों कहि। तब स्त्री नें कही मेरे घर वैष्णव, मेरे गुरु भाई दस पांच आये सो घर में कछू हतो नाहीं। सो मैं विचारी, जो-यह देह कहा काम आवेगी। वैष्णव तो भूखे हैं सो भली नाहीं। तातें उनके लिये सीधो मैं ले गई। सो मेरो पति तेरे ऊपर प्रसन्न होई तेरी हाट पर उतारि गयो है। ताते तू अपने मन में डरपै मति। यह सुनि बनिया अपने जन्म कों धिक्कार करन लाग्यो। और कह्यो, तुम स्त्री पुरुष धन्य हो। पाछें दंडोत करि कह्यो, तू मेरी धरम की बहनि है, मेरो अपराध क्षमा करो। पाछें एक नई साड़ी पहराई कृष्णदास के घर लिवाइ चल्यो। तहां जाई कृष्णदास कों दंडोत कही, जो-मैं महापापी हों मेरो अपराध क्षमा करो। धन्य, तुम्हारो सांचो धरम हैं। और अब मोकों कृपा करिके सरन लेहु। यह मेरी धरम की बहिन है। और तुम मेरे बहनोई हो, मेरे पूज्य हो। परन्तु अब तुम मोकों अपनी सरनि लेकें यह संसार दुःख तें छुटावो। तब कृष्णदास कहें, हमतो काहू कों सेवक करत नाहीं। हमहू श्रीआचार्यजी के सेवक हैं। तुम हू श्रीआचार्यजी के सेवक होई कृतार्थ होउ। अब कछुक

અને તેં તારા મુખથી કહ્યું, હું એક રાત્રિ આવીશ. એમ કહી સીધું-સામગ્રી લીધાં કંઇ દ્રવ્ય આદિ નહીં માંગ્યું. તેથી આ બધું કારણ મને કહે. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, મારા ઘરે વૈષ્ણવ મારા ગુરુભાઇ દશ પાંચ આવ્યા ત્યારે ઘરમાં કંઈ હતું નહી. તેથી મેં વિચાર્યું કે આ દેહ શા કામમાં આવશે. વૈષ્ણવો તો ભૂખ્યા છે તે સારૂં નહીં. તેથી એમને માટે સીધું હું લઈ ગઈ. તેથી મારો પતિ તારા ઉપર પ્રસન્ન થઇ તારી દુકાને ઉતારી ગયો છે. તેથી તૂ તારા મનમાં ડરીશ નહીં. એ સાંભળી વાણિઓ પોતાના જન્મને ધિઃક્કાર કરવા લાગ્યો અને કહ્યું, તમે સ્ત્રી-પુરૂષ ધન્ય છો. પછી દંડવત્ કરી કહ્યું, તૂ મારી ધર્મની બહેન છે. મારો અપરાધ ક્ષમા કર. પછી એક નવી સાડી પહેરાવી કૃષ્ણદાસના ઘરે લઈ ચાલ્યો. ત્યાં જઈ કૃષ્ણદાસને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે હું મહા પાપી છું. મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. ધન્ય, તમારો સાચો ધર્મ છે અને હવે મને કૃપા કરીને શરણે લો. આ મારી ધર્મની બહેન છે અને તમે મારા બનેવી છો. મારા પૂજ્ય છો. પરંતુ હવે મને તમારી શરણે લઇને આ સંસાર દુઃખથી છોડાવો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, અમે તો કોઇને સેવક કરતા નથી. અમે પણ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છીએ. તમે પણ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇ કૃતાર્થ થાવ. હવે થોડા દિવસમાં શ્રીઆ-

करि ले। तब स्त्री उबटना लगाइ [illegible] तब इहां पधारेंगे। तब
पावन में महावर दियो। इतनें [illegible] घर आयो। पाछें नित्य
सो मेह बरसन लाग्यो। अँधेरी [illegible] तो कछुक दिन में श्रीआचा-
मार्ग में कीच भई है सो तेरे [illegible] दास के घर उतरे। तब कृष्ण-
महावरि छूटि जाइ तो आछो [illegible] आचार्यजी आगें कह्यो। बनिया
तातें तू मेरे कांधे पर चढ़ि ले [illegible]। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास
तब स्त्री कों कांधे पर चढ़ा [illegible]। तब कृष्णदास बनिया सों जाइ
कृष्णदास घर आये। [illegible] पधारे हैं। तब वह बनिया कृष्णदास
खोलि। तब वह बनिया [illegible] दंडोत करि बिनती कियो, जो–महा-
आयो। कह्यो, कीच के [illegible] पर कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी
सूखे, आछे, कोरे हैं। [illegible] सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द'
तेरे पांव कोरे कैसें [illegible] बनिया सों कहें, जो–कृष्णदास के संग
बात पूछिवे को कह [illegible] तातें तू कृष्णदास को संग करियो। ताकरि
नें कही, त यह [illegible]। पाछें कृ[illegible] के घर श्रीआचार्यजी

तातें तुम समान और कोई नाहीं। यह कहि आप पधारे, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पेंली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछें भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों दृढ़ धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्रीआचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी विराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

* * *

तने કહી હતી. તેવી જ તેં વૈષ્ણવની સેવા તન, મન, ધનથી કરી. તેથી તારા સમાન બીજું કોઈ નથી. એમ કહી આપ પધાર્યા અને કૃષ્ણદાસ ઘર આવ્યા. એવા ભગવદીય કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી સહિત શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. જેમના સંગથી વાણિઓ ભલો વૈષ્ણવ થયો. તેથી કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી પુરુષની વાત ક્યાં સુધી કહિએ? વાર્તા ॥૭૫॥

ભાવપ્રકાશ—તે વાણિઓ લીલામાં ગોપ છે, 'પેલી' એનું નામ છે, મૂલમાં દૈવીજીવ છે. તેથી કૃષ્ણદાસના સંગથી નામ-નિવેદન થયું. પછી સારો કૃપાપાત્ર થયો. તે કૃષ્ણદાસની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. જો વૈષ્ણવમાં દૃઢ ધર્મ હોય તો આ વાર્તાને કહે, સાંભળે અને કાચી દશાવાળા વૈષ્ણવ આવું સાંભળીને ક્રિયા કરવાનું મન પણ કરે તો ભ્રષ્ટ થાય. કેમકે કૃષ્ણદાસ સ્ત્રી-પુરુષ તો શ્રીઆચાર્યજીનાં અંગીકૃત છે. એમના હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે તેથી અગ્નિરૂપ છે. એમના ઉપર કોઇ લૌકિક દૃષ્ટિ કરે તો ભસ્મ થઇ જાય. આ તો વાણિયાને કૃપા કરવા માટે જ આ પ્રકાર કર્યો અને વૈષ્ણવસેવા અત્યંત દુર્લભ દેખાડી. શ્રીઠાકુરજીનો, ગુરૂનો દાસ થઇ સેવા કરે પરંતુ વૈષ્ણવનો દાસ વૈષ્ણવની સેવા થવી બહુ કઠણ છે એ સિદ્ધાન્ત દેખાડયો. વૈષ્ણવ ॥૭૫॥

* * *

दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका कों पधारेंगे, तब इहां पधारेंगे। तब तुम सेवक होइयो। तब वह बनिया अपुने घर आयो। पाछें नित्य सवेरे कृष्णदास कों दंडौत करि जाई। सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी उह गाम में पधारे। तब कृष्णदास के घर उतरे। तब कृष्णदास नें सर्वप्रकार वा बनिया को श्रीआचार्यजी आगें कह्यो। बनिया कों आर्ति सेवक होन की बहोत है। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास सों कहें, उह बनिया कों बुलाओ। तब कृष्णदास बनिया सों जाइ कहे, जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वह बनिया कृष्णदास के संग आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती कियो, जो–महाराज! मैं महा अधम हों, मो पर कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी उह बनिया कों न्हवाय नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द' नाम धर्‍यो। पाछें आप उह बनिया सों कहें, जो–कृष्णदास के संग तें तोकों ज्ञान भयो है। तातें तू कृष्णदास को संग करियो। ताकरि तोकों भगवद्‌ प्राप्ति होइगी। पाछें कृष्णदास के घर श्रीआचार्यजी रसोई पाक करि भोग धरि भोजन करि पोढे। पाछे प्रातःकाल पधारे। तब कृष्णदास थोरीसी दूरि पहोंचावन कों गयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–कृष्णदास! तू धन्य है, जो–हम वैष्णव सेवा की तोसों कही हती तैसे ही वैष्णव की सेवा तेंने तन मन धन सों करी।

ચાર્યજી દ્વારકાએ પધારશે ત્યારે તમે સેવક થજો. ત્યારે તે વાણિઓ પોતાના ઘરે આવ્યો. પછી નિત્ય સવારે તે વાણિયો કૃષ્ણદાસને દંડવત્ કરી જાય. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી તે ગામમાં પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસના ઘરે ઉતર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે બધો પ્રકાર તે વાણિયાનો શ્રીઆચાર્યજી આગળ કહ્યો. વાણિયાને સેવક થવાની આર્તિ ઘણી છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને કહે, તે વાણિયાને બોલાવો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ વાણિઆને જઇને કહે, શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પધાર્યા છે. ત્યારે તેવાણિયો કૃષ્ણદાસની સાથે આવી શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! હું મહા અધમ છું. મારા ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ તે વાણિઆને ન્હવડાવી નામ સંભળાવી બ્રહ્મ સંબંધ કરાવ્યું. જ્ઞાનચંદ નામ ધર્યું. પછી પોતે તેવાણીઆને કહે, કે કૃષ્ણદાસના સંગથી તને જ્ઞાન થયું છે તેથી તૂ કૃષ્ણદાસનો સંગ કરજે. તે વડે તને ભગવત્પ્રાપ્તિ થશે. પછી કૃષ્ણદાસના ઘરે શ્રીઆચાર્યજી રસોઇ પાક કરી ભોગ ધરી ભોજન કરી પોઢયા. પછી પ્રાતઃકાલ પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ થોડીક દૂર પહોંચાડવા ગયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કૃષ્ણદાસ! તૂ ધન્ય છે કે અમે વૈષ્ણવ–સેવાની

तातें तुम समान और कोई नाहीं। यह कहि आप पधारे, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पेंली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछें भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों दृढ़ धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्रीआचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी बिराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

* * *

तने कही हती. तेवी ज तें वैष्णवनी सेवा तन, मन, धनथी करी. तेथी तारा समान बीजुं कोई नथी. एम कही आप पधार्या अने कृष्णदास घर आव्या. एवा भगवदीय कृष्णदास–स्त्री सहित श्रीआचार्यजीना कृपापात्र हता. जेमना संगथी वाणिओ भलो वैष्णव थयो. तेथी कृष्णदास–स्त्री पुरुषनी वात क्यां सुधी कहिए? वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—ते वाणिओ लीलामां गोप छे, 'पेंली' एनुं नाम छे, मूलमां दैवीजीव छे. तेथी कृष्णदासना संगथी नाम-निवेदन थयुं. पछी सारो कृपापात्र थयो. ते कृष्णदासनी वार्ता अनिर्वचनीय छे. जे वैष्णवमां दृढ धर्म होय तो आ वार्ताने कहे, सांभळे अने काची दशावाळा वैष्णव आवुं सांभळीने क्रिया करवानुं मन पण करे तो भ्रष्ट थाय. केमके कृष्णदास स्त्री-पुरुष तो श्रीआचार्यजीनां अंगीकृत छे. एमना हृदयमां श्रीआचार्यजी बिराजे छे तेथी अग्निरूप छे. एमना उपर कोइ लौकिक दृष्टि करे तो भस्म थइ जाय. आ तो वाणियाने कृपा करवा माटे ज आ प्रकार कर्यो अने वैष्णवसेवा अत्यंत दुर्लभ देखाडी. श्रीठाकुरजीनो, गुरुनो दास थइ सेवा करे परंतु वैष्णवनो दास वैष्णवनी सेवा थवी बहु कठण छे ए सिद्धान्त देखाडयो. वैष्णव ॥७५॥

* * *

दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका कों पधारेंगे, तब इहां पधारेंगे। तब तुम सेवक होइयो। तब वह बनिया अपुने घर आयो। पाछें नित्य सवेरे कृष्णदास कों दंडौत करि जाई। सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी उह गाम में पधारे। तब कृष्णदास के घर उतरे। तब कृष्णदास नें सर्व प्रकार वा बनिया को श्रीआचार्यजी आगें कह्यो। बनिया कों आर्ति सेवक होन की बहोत है। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास सों कहें, उह बनिया कों बुलाओ। तब कृष्णदास बनिया सों जाइ कहे, जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वह बनिया कृष्णदास के संग आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती कियो, जो–महाराज! मैं महा अधम हों, मो पर कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी उह बनिया कों न्हवाय नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द' नाम धर्यो। पाछें आप उह बनिया सों कहें, जो–कृष्णदास के संग तें तोकों ज्ञान भयो है। तातें तू कृष्णदास को संग करियो। ताकरि तोकों भगवद प्राप्ति होइगी। पाछें कृष्णदास के घर श्रीआचार्यजी रसोई पाक करि भोग धरि भोजन करि पोढे। पाछे प्रातःकाल पधारे। तब कृष्णदास थोरीसी दूरि पहोंचावन कों गयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–कृष्णदास! तू धन्य है, जो–हम वैष्णव सेवा की तोसों कही हती तैसे ही वैष्णव की सेवा तेंने तन मन धन सों करी।

चार्यजी द्वारकाओ पधारशे त्यारे तमे सेवक थजो. त्यारे ते वाणिओ पोताना घरे आव्यो. पछी नित्य सवारे ते वाणियो कृष्णदासने दंडवत् करी जाय. पछी केटलाक दिवसमां श्रीआचार्यजी ते गाममां पधार्या. त्यारे कृष्णदासना घरे उतर्या. त्यारे कृष्णदासे बधो प्रकार ते वाणियानो श्रीआचार्यजी आगळ कह्यो. वाणियाने सेवक थवांनी आर्ति घणी छे. त्यारे श्रीआचार्यजी कृष्णदासने कहे, ते वाणियाने बोलावो. त्यारे कृष्णदास वाणिआने जइने कहे, श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या छे. त्यारे तेवाणियो कृष्णदासनी साथे आवी श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनंती करी, के महाराज! हुं महा अधम छुं. मारा उपर कृपा करो. त्यारे श्रीआचार्यजीए ते वाणिआने न्हवडावी नाम संभळावी ब्रह्म संबंध कराव्युं. ज्ञानचंद नाम धर्युं. पछी पोते तेवाणीआने कहे, के कृष्णदासना संगथी तने ज्ञान थयुं छे तेथी तू कृष्णदासनो संग करजे. ते वडे तने भगवत्प्राप्ति थशे. पछी कृष्णदासना घरे श्रीआचार्यजी रसोइ पाक करी भोग धरी भोजन करी पोढया. पछी प्रातःकाल पधार्या. त्यारे कृष्णदास थोडीक दूर पहोंचाडवा गया. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, कृष्णदास! तू धन्य छे के अमे वैष्णव–सेवानी

तातें तुम समान और कोई नाहीं। यह कहि आप पधारे, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पेंली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछें भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों दृढ़ धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्रीआचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी बिराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

* * *

तने કહી હતી. તેવી જ તેં વૈષ્ણવની સેવા તન, મન, ધનથી કરી. તેથી તારા સમાન બીજું કોઈ નથી. એમ કહી આપ પધાર્યા અને કૃષ્ણદાસ ઘર આવ્યા. એવા ભગવદીય કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી સહિત શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. જેમના સંગથી વાણિઓ ભલો વૈષ્ણવ થયો. તેથી કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી પુરુષની વાત ક્યાં સુધી કહિએ? વાર્તા ॥૭૫॥

ભાવપ્રકાશ—તે વાણિઓ લીલામાં ગોપ છે, 'પેલી' એનું નામ છે, મૂલમાં દૈવીજીવ છે. તેથી કૃષ્ણદાસના સંગથી નામ-નિવેદન થયું. પછી સારો કૃપાપાત્ર થયો. તે કૃષ્ણદાસની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. જો વૈષ્ણવમાં દૃઢ ધર્મ હોય તો આ વાર્તાને કહે, સાંભળે અને કાચી દશાવાળા વૈષ્ણવ આવું સાંભળીને ક્રિયા કરવાનું મન પણ કરે તો ભ્રષ્ટ થાય. કેમકે કૃષ્ણદાસ સ્ત્રી-પુરુષ તો શ્રીઆચાર્યજીનાં અંગીકૃત છે. એમના હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે તેથી અગ્નિરૂપ છે. એમના ઉપર કોઇ લૌકિક દૃષ્ટિ કરે તો ભસ્મ થઇ જાય. આ તો વાણિયાને કૃપા કરવા માટે જ આ પ્રકાર કર્યો અને વૈષ્ણવસેવા અત્યંત દુર્લભ દેખાડી. શ્રીઠાકુરજીનો, ગુરૂનો દાસ થઇ સેવા કરે પરંતુ વૈષ્ણવનો દાસ વૈષ્ણવની સેવા થવી બહુ કઠણ છે એ સિદ્ધાન્ત દેખાડયો. વૈષ્ણવ ॥૭૫॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, संतदास चोपड़ा क्षत्री, आगरे में सेऊ के बजार पास घर हतो तहां रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में चंद्रावली की सखी हैं। 'चंद्रिका' इनको नाम है। सो एक दिन चंद्रावलीजी के संग श्रीयमुनाजी न्हान कूं दोऊ जनी गई। सो न्हाई चुकी तब चंद्रावलीजी कहें, श्रीठाकुरजी अज हू लों श्रीयमुनाजी के तीर नाहीं पधारे। सो तू जाइकें ठीक तो पारि आउ, जसोदाजी के घर। तब चन्द्रिका चली, सो श्रीनन्दरायजी के द्वार पर श्रीस्वामिनीजी मिली। तब श्रीस्वामिनीजी ने पूछी, जो चंद्रिका तू कहां चली ? और चन्द्रावलीजी कहां हैं ? तब चन्द्रिका नें कही मैं नाहीं जानत कहां हैं, तब स्वामिनीजी नें कही, तुम झूंठ क्यों बोलत हो। श्रीठाकुरजी कूं लेन आई होउगी। तुमहूँ या बात में बहोत चतुर हो। तब चन्द्रिका नें कही, या बात में तो तुम चतुर हो, के चंद्रावलीजी हैं। मैं तो कछू जानत नाहीं। मैं तो श्रीयमुनाजी न्हाइ आई हों। अब अपने घर जाति हों। या चतुराई में कहा है। ब्रज के लोग सब चर्चा करत हैं। या प्रकार अभिमान पूर्वक कहें। तब श्रीस्वामिनीजी कहें, ऐसो मद भयो तो भूमि पर प्रगटो। मद जाई तब यहां आइयो। तब चन्द्रिका सखी आगरे में एक चोपड़ा क्षत्री बड़ो धनाढ्य

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, સંતદાસ ચોપડા ક્ષત્રી, આગ્રામાં 'સેઉ' ના બજાર પાસે રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં ચંદ્રાવલીની સખી છે. 'ચંદ્રિકા' એમનું નામ છે. તે એક સમય ચંદ્રાવલીજીની સાથે શ્રીયમુનાજી ન્હાવાને બન્ને જણી ગઇ. તે ન્હાઇ ચૂકી ત્યારે ચંદ્રાવલીજી કહે, શ્રીઠાકુરજી હજુ સુધી શ્રીયમુનાજીના તીરે પધાર્યા નહીં. તેથી તૂ જઇને ખબર કાઢી આવ. જશોદાજીના ઘરે. ત્યારે 'ચન્દ્રિકા' ચાલી. ત્યાં શ્રીનંદરાયજીના દ્વાર ઉપર શ્રીસ્વામિનીજી મળ્યાં. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ પૂછ્યું, કે ચંદ્રિકા તૂ ક્યાં ચાલી અને શ્રીચંદ્રાવલીજી ક્યાં છે ? ત્યારે ચન્દ્રિકાએ કહ્યું હું નથી જાણતી. ક્યાં છે ? ત્યારે સ્વામિનીજીએ કહ્યું, તમે જુઠું કેમ બોલો છો ? શ્રીઠાકુરજીને લેવા માટે આવ્યાં હશો. તમે પણ આ વાતમાં બહુ ચતુર છો. ત્યારે ચન્દ્રિકાએ કહ્યું, આ વાતમાં તમે ચતુર છો કે શ્રીચંદ્રાવલીજી છે. હું તો કંઇ જાણતી નથી. હું તો શ્રીયમુનાજી ન્હાઇ આવી છું હવે મારા ઘરે જાઉં છું. આ ચતુરાઇમાં શું છે ? વ્રજના લોકો બધી ચર્ચા કરે છે. આ પ્રકારે અભિમાનપૂર્વક કહ્યું. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી કહે, એવો મદ થયો તો ભૂમિ ઉપર

हतो ताके घर प्रगटे । सो उह संतदास के पिता कों कोऊ संतति न हुती । तातें वैरागी, संतजन कों पुत्र निमित्त सीधो सामान देई । और सब सों विनती करे, मेरे संतति नाहीं हैं तुम्हारी कृपा तें होई । तब एक वैरागी नें कही, पुत्र तो महादेव प्रसन्न होइ तब देई । तब उह क्षत्री महादेव की पूजा व्रत ऐसो कियो सो सरीर सगरो सूकि गयो । तब स्वप्न में महादेव ने कही तुम कूं कहा चहिये सो कहो । तब उह क्षत्री नें कही आछो हरि भक्त वेटा मेरे होई, तब महादेव नें कही, मेरे दिये वेटा जितनें हैं सो भगवान सों बहिर्मुख हैं । और तू हरिभक्त पुत्र मांग्यो सो मैं कहां ते देऊँ ? हरि भक्तन को संग तो मैं ही सदा चाहत हों । परन्तु याको जुवाब मैं काल्हि देऊँगो । तब महादेव भगवान पास जाइकें पूछे, महाराज ! एक क्षत्री कूँ मैं वर देन गयो, सो उह हरि भक्त पुत्र मांग्यो । सो वाके भाग्य में कछू पुत्र है के नाहीं । तब भगवान कहें, वासों जाय कहियो जो तेरे घर हरिभक्त पुत्र होइगो । सो सगरे कुटुम्ब को उद्धार करेगो । ऐसो भगवदीय लीला संबंधी जीव मेरे बराबर को प्रगटेगो । तब महादेव उह क्षत्री सों दूसरे दिन स्वप्न में कहें, जो- तेरे बड़े भाग्य हैं, तेरे घर पुत्र ऐसो हरिभक्त होइगो जो तेरो सगरो कुल पवित्र

પ્રકટો. મદ જાય ત્યારે અહિં આવજો. ત્યારે ચન્દ્રિકા સખી આગરામાં એક ચોપડા ક્ષત્રી મોટો ધનાઢ્ય હતો તેના ઘરે જન્મી, તે સંતદાસના પિતાને કોઈ સંતતી ન હતી. તેથી વૈરાગી સંતજનોને પુત્ર નિમિત્ત સીધું સામાન દે. વળી બધાને વિનંતી કરે, મારે સંતતી નથી. તમારી કૃપાથી થશે. ત્યારે એક વૈરાગીએ કહ્યું, પુત્ર તો મહાદેવ પ્રસન્ન હોય ત્યારે દે. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ મહાદેવની પૂજા-વ્રત એવું કર્યું, કે બધું શરીર સુકાઈ ગયું. ત્યારે સ્વપ્નમાં મહાદેવે કહ્યું, તમારે શું જોઇએ છે તે કહો. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ કહ્યું, સુંદર હરિભક્ત પુત્ર મારે થાય. ત્યારે મહાદેવે કહ્યું, મારા આપેલા જેટલા પુત્રો છે તે ભગવાનથી બહિર્મુખ છે અને તેં હરિભક્ત પુત્ર માંગ્યો તે હું ક્યાંથી દઉં ? હરિભક્તોનો સંગ તો હું યે સદા ચાહું છું. પરંતુ આનો જવાબ હું કાલે આપીશ. ત્યારે મહાદેવે ભગવાન પાસે જઇને પૂછ્યું, મહારાજ ! એક ક્ષત્રીને હું વર દેવા ગયો. તેણે હરિ-ભક્ત પુત્ર માંગ્યો. તેથી એના ભાગ્યમાં કંઈ પુત્ર છે કે નહીં ? ત્યારે ભગવાને કહ્યું, તેને જઈ કહેજે કે તારા ઘરે હરિભક્ત પુત્ર થશે. તે બધા કુટુંબનો ઉદ્ધાર કરશે. એવો ભગવદીય લીલા-સંબંધી જીવ મારી બરાબરનો પ્રકટશે. ત્યારે મહાદેવે એ ક્ષત્રીને બીજા દિવસે સ્વપ્નમાં કહ્યું, કે તારાં મહાન ભાગ્ય છે. તારા ઘરે એવો હરિભક્ત પુત્ર થશે કે તારું સઘળું કુલ

करेगो। पाछें महादेव घर गये। उह क्षत्री स्वप्न देखि प्रसन्न भयो। परंतु मन में यों आई जो कछू नाहीं भयो, जो–स्वप्न की बात है, जब सांची होई तब जानिये। पाछें वाकी स्त्री कों गर्भ रह्यो। समय पाय पुत्र भयो, और द्रव्य हू बढ्यो। सो पुत्र बड़ो भयो। तब पिताने संतदास वाको नाम धरयो। पाछे संतदास को विवाह भयो। पाछें संतदास को पिता मरयो। तब सूतक के दिन बीते नाहीं। तब ज्ञाति के क्षत्री सों संतदास कहें। मेरे दिन बीतत नाहीं। सो कहूँ कथा वार्ता होत होई तो सुनों। तब वा क्षत्री नें कही, इहां श्रीआचार्यजी कन्हैयाशाल क्षत्री के घर पधारें हैं। तिनकी कथा तुम सुनो तो मगन ह्वै जाउ। तब संतदास कहें तुम जब जाउ तब मोकों ले जैयो। पीछे तीसरे प्रहर उह क्षत्री के संग संतदास आये। तब श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि, बैठिकें कथा सुनी। सो हृदय में यह ज्ञान उपज्यो, जो–श्रीआचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। पाछे संतदास नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो–महाराज! कृपा करि मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अभी तो तुमकों सूतक है, सूतक पाछे तुमकूं सेवक करेंगे। तब दंडोत करि संतदास घर आये। पाछे सूतक लों नित्य कथा सुनिवे आवते। श्रीआचार्यजी को दरसन करि आवते, तब खानपान करते। सो जब शुद्ध भये, तब न्हायकें श्री-

---

પવિત્ર થશે. પછી મહાદેવ ઘર ગયા. તે ક્ષત્રી સ્વપ્ન જોઈ પ્રસન્ન થયો. પરંતુ મનમાં એમ જાણ્યું કે કંઈ નથી થયું. એ સ્વપ્નની વાત છે જ્યારે ખરી થાય ત્યારે જાણિયે. પછી એની સ્રીને ગર્ભ રહ્યો. સમય થયે પુત્ર થયો અને દ્રવ્ય પણ વધ્યું. પછી પુત્ર મોટો થયો ત્યારે પિતાએ સંતદાસ એનું નામ ધર્યું. પછી સંતદાસનો વિવાહ થયો. પછી સંતદાસનો પિતા મર્યો. ત્યારે સૂતકના દિવસ વીતે નહીં. ત્યારે જ્ઞાતિના એક ક્ષત્રીને સંતદાસ કહે, મારા દિવસ વીતતા નથી તેથી કંઇ કથા-વાર્તા થતી હોય તો સાંભળું. ત્યારે તે ક્ષત્રીએ કહ્યું, અહીં શ્રીઆચાર્યજી કન્હૈયાશાલ ક્ષત્રીને ઘરે પધાર્યા છે. તેમની કથા સાંભળો તો તમે મગન થઈ જાવ. ત્યારે સંતદાસ કહે, તમે જ્યારે જાવ ત્યારે મને લઈ જજો. પછી ત્રીજા પ્રહરે તે ક્ષત્રીની સાથે સંતદાસ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી ત્યાં બેસીને કથા સાંભળી. પછી હૃદયમાં એ જ્ઞાન થયું કે શ્રીઆચાર્યજી પૂર્ણ પુરૂષોત્તમ છે. પછી સંતદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! કૃપા કરી મને શરણે લો. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજી કહે, હમણાં તો તમને સૂતક છે. સૂતક પછી તમને સેવક કરીશું. ત્યારે દંડવત્ કરી સંતદાસ ઘરે આવ્યા. પછી સૂતક સુધી નિત્ય કથા સાંભળવા

आचार्यजी पास आई दंडोत करि विनती करी, जो–महाराज ! कृपा करि मेरे घर पधारिये, मेरे कुटुम्ब कों, मोकों पावन करिये । तब श्रीआचार्यजी संतदास के घर पधारि संतदास कों न्हवाई नाम निवेदन कराये । तब संतदास ने विनती करी, जो–महाराज ! स्त्री कों सरनि लीजे । तब श्रीआचार्यजी कहें स्त्री कों नाम सुनावेंगे, दैवी तो है नाहीं । परन्तु तेरे संगतें कृतार्थ होयगी । पाछे स्त्री कों नाम सुनाये । तब संतदास नें विनती करी, जो–महाराज ! अब मोकों भगवद् सेवा पधराय दीजिये । तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र सेवा कों पधराय दिये । पाछें खासा करि संतदास के घर पाक सामग्री करि, भोग धरि, भोजन करि, संतदास स्त्री पुरुष कों जूठन की पातरि आप प्रभु धरें । सो महाप्रसाद स्त्री पुरुष लिये । पाछें श्रीआचार्यजी एकान्त में अकेले बैठे हते, तहां संतदास जाई दंडोत करि विनती किये, जो–महाराज ! मोपर ऐसी कृपा करिये जो या देह सों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें । और संसार को दुःख सुख बाधा न करें । आपुको स्वरूप हृदयारूढ़ होई । पुष्टिमार्गीय फल को अनुभव होई । तब श्रीआचार्यजी संतदास कों 'पुरुषोत्तम-सहस्रनाम' पढ़ाये । और आपुनें ग्रन्थ किये हते सो पोथी संतदास कों देकें कहें,

---

આવતા. શ્રીઆચાર્યજીના દર્શન કરી આવ્યા પછી ખાનપાન કરતા. પછી જ્યારે શુદ્ધ થયા ત્યારે ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવી દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! કૃપા કરી મારા ઘરે પધારો. મારા કુંટુંબને, મને પાવન કરો. ત્યારે શ્રી-આચાર્યજીએ સંતદાસના ઘરે પધારી સંતદાસને ન્હવડાવી નામ–નિવેદન કરાવ્યું. ત્યારે સંતદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! સ્ત્રીને શરણે લો, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, સ્ત્રીને નામ સંભળાવીશું. દૈવી નથી. પરંતુ તારા સંગથી કૃતાર્થ થશે. પછી સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે સંતદાસે વિનંતી કરી, મહારાજ ! હવે મને ભગવ-ત્સેવા પધરાવી દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીના પ્રસાદી વસ્ત્ર સેવા માટે પધરાવી આપ્યાં. પછી ખાસા કરી સંતદાસના ઘરે પાક–સામગ્રી કરી ભોગ ધરી, ભોજન કરી, સંતદાસ સ્ત્રી–પુરુષને જુઠણની પાતર આપ પ્રભુએ ધરી. પછી સ્ત્રી-પુરુષે મહાપ્રસાદ લીધો. પછી શ્રીઆચાર્યજી એકાન્તમાં એકલા બેઠા હતા ત્યાં સંતદાસે જઈ દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! મારા ઉપર એવી કૃપા કરો કે આ દેહથી શ્રીઠાકુરજી અનુભવ જણાવે અને સંસારનું દુઃખ સુખ બાધા ન કરે. આપનું સ્વરૂપ હૃદયારૂઢ થાય. પુષ્ટિમાર્ગીય ફલનો અનુભવ થાય. ત્યારે શ્રીઆચા-ર્યજીએ સંતદાસને 'પુરુષોત્તમ સહસ્રનામ' ભણાવ્યું અને પોતે ગ્રંથ કર્યા હતા

तुमकों यह ग्रन्थ द्वारा सब मनोरथ पूर्ण होइगो। और, कछू दिन में तेरो सगरो द्रव्य नास होइगो। जो द्रव्य श्रीठाकुरजी में लगावेगो सो रहेगो। परन्तु श्रीठाकुरजी को वैभव बढ़ाये (पाछे) जब द्रव्य न होई तब वामे तें खान पान करे सो बहिर्मुख होई। सो तू विवेक धैर्याश्रय राखि धीरज धारियो, तू दैवी है। सो तोसों धर्म निबहेगो। और सों कठिन हैं। मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हों, तातें तोकों लौकिक बाधा न करेगो। या प्रकार संतदास पर कृपा करि आप व्रज में पधारे। तब संतदास ने सोने रूपे के बासन आभूषन अनेक श्रीठाकुरजी के बनवायकें कितनें घर में राखें, कितनें श्रीनाथजी के यहां पठाये। कितनें श्रीगुसांईजी के यहां पठाये।

वार्ता–प्रसंग १—**सो संतदास बहोत संपन्न हुते। लक्ष रुपैया को व्योपार हतो, सो व्योपार में द्रव्य सब खोये। कछू चोरन नें लियो, कछू राजा दंड लियो। पाछें निष्किञ्चन भये। परन्तु मनमें आनंद भयो, जो–श्रीआचार्यजी कहे सो भयो। पाछें चोबीस टका की पूंजी रही, ताकों ले कौडी सेऊ के बजार में बेचन लागे। सो कौड़िन की ढेरी पैसा पैसा की न्यारी न्यारी करिकें धरते। आप काहू तें बोलते नाहीं। लोग पैसा धरिकें कोड़ी की ढेरी ले जाते। सो अढाई**

તે પોથી સંતદાસને આપીને કહ્યું, તમને આ ગ્રંથ દ્વારા બધા મનોરથ પૂર્ણ થશે. અને કેટલાક દિવસમાં તારૂં બધું દ્રવ્ય નાશ થશે. જે દ્રવ્ય શ્રીઠાકુરજીમાં લગાડીશ તે રહેશે. પરંતુ શ્રીઠાકુરજીનો વૈભવ વધાર્યા પછી જ્યારે દ્રવ્ય ન હોય ત્યારે તેમાંથી ખાનપાન કરે તો બહિર્મુખ થાય. માટે તૂ વિવેક ધૈર્યાશ્રય રાખી ધીરજ ધરજે. તૂ દૈવી છે તેથી તારાથી ધર્મ નભશે. બીજાથી કઠણ છે. હું તારા ઉપર પ્રસન્ન છું. તેથી તને લૌકિક બાધા નહીં કરે. આ પ્રકારે સંતદાસ ઉપર કૃપા કરી આપ વ્રજમાં પધાર્યા ત્યારે સંતદાસે સોના રૂપાનાં વાસણ આભૂષણ અનેક શ્રીઠાકુરજીને બનાવરાવી કેટલાંક ઘરમાં રાખ્યાં, કેટલાંક શ્રીનાથજીને ત્યાં મોકલ્યાં, કેટલાંક શ્રીગુસાંઇજીને ત્યાં મોકલ્યાં.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧–એ સંતદાસ બહુજ સંપન્ન હતા. લાખ રૂપીઆનો વહેપાર હતો. તે વેપારમાં દ્રવ્ય બધું ખોયું થોડુંક ચોરોએ લીધું. થોડુંક રાજાએ દંડમાં લીધું પછી નિષ્કંચન થયા. પરન્તુ મનમાં આનન્દ થયો. કે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું તે થયું. પછી ચોવીસ ટકાની પૂંજી રહી તેને લઇને સેઉના બજારમાં કોડી વેચવા લાગ્યા. તે પૈસા પૈસાની કોડીઓની ઢગલીઓ અલગ અલગ કરીને ધરતા. પોતે કોઇથી બોલતા નહીં.

पैसा नित्य कमाते। आप बैठे पोथी देखते। और आधे पैसा की चवेनी, उष्णकाल में दारि भिजोई धरते, सीतकाल में भूंजे चना धरते, एक टका में राजभोग धरते, सो महाप्रसाद लेते। आधे पैसा की चवेनी रात्रिकों, इनके घर वैष्णव मंडली होती सो कीर्तन, वार्ता, भये उपरान्त बांटते। या प्रकार निर्वाह करते। ऐसे करत गौड देस के नारायनदास श्रीगुसांईजी के सेवक नें सुनी, जो–संतदास कों द्रव्य को संकोच बहोत है। तब नारायनदास नें संतदास कों एक पत्र लिख्यौ। तामें सौ मोहौर की हुंडी पठाई। ता पत्र ऊपर टका कासद कूं लिख्यौ। सो वह पत्र आगरे आयो। सो संतदास बांचिकें अढाई पैसा कमात हते तामें टका कासद कों दियो, और आप रसोई की नागा किये। हुंडी निकसी सो श्रीगुसांईजी कूं श्रीगोकुल पठाये। और नारायनदास कूं पत्र लिख्यो तामें यह लिख्यो, जो–या तुम्हारी प्रभुता सें एक दिन राजभोग को नागा भयो, अब कबहू ऐसी कृपा मति कीजो। और हुंडी तुम्हारी श्रीगुसांईजी कों पठाई है। सो हुंडी श्रीगोकुल चांपाभाई, संकरभाई, भंडारी पास आई। तब चांपाभाई संकरभाई श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनाये। कहें, महाराज! नारायनदास गौड देस के ने संतदास कों हुंडी पठाई हुती, सो संत-

---

લોકો પૈસા ધરીને કોડીની ઢગલી લઈ જતા. એમ ત્યાંથી પૈસા નિત્ય કમાતા. પોતે બેસીને પુસ્તક વાંચતા. પછી અડધા પૈસાની ચવેણી, ઉષ્ણકાલમાં દાળ ભીંજવીને ધરતા. શીતકાલમાં શેકેલા ચણા ધરતા. એક ટકામાં રાજભોગ ધરતા. તે મહાપ્રસાદ લેતા. અડધા પૈસાની ચવેણી રાત્રિએ, એમના ઘરે વૈષ્ણવ મંડલી થતી તે કીર્તન–વાર્તા થયા ઉપરાંત વાંટતા. આ પ્રકારે નિર્વાહ કરતા. એમ કરતાં ગૌડ દેશના નારાયણદાસ શ્રીગુસાંઇજીના સેવકે સાંભળ્યું, કે સંતદાસને દ્રવ્યનો ઘણો સંકોચ છે. ત્યારે નારાયણદાસે સંતદાસને એક પત્ર લખ્યો. તેમાં સો મોહરોની હુંડી મોકલી તે પત્ર ઉપર ટકા ટપાલીનો લખ્યો. પછી તે પત્ર આગ્રા આવ્યો. ત્યારે સંતદાસે વાંચીને અઢી પૈસા કમાતા હતા તેમાંથી ટકો ટપાલીને આપ્યો. અને પોતે તે દિવસે રસોઈ ન કરી. હુંડી નિકળી તે શ્રીગુસાંઇજીને શ્રીગોકુલ મોકલી. અને નારાયણદાસને પત્ર લખ્યો, તેમાં એ લખ્યું કે આ તમારી પ્રભુતામાં એક દિવસ રાજભોગ ન ધરાયો. હવે ક્યારેય આવી કૃપા ન કરતા. અને હુંડી તમારી શ્રીગુસાંઇજીને મોકલી છે. પછી હુંડી શ્રીગોકુલ ચાંપાભાઈ, શંકરભાઈ, ભંડારી પાસે આવી. ત્યારે ચાંપાભાઇ શંકરભાઇએ શ્રીગુસાંઇજીને વાંચી સંભળાવી. કહ્યું, મહારાજ! ગૌડ દેશના નારાયણદાસે સંતદાસને હુંડી

दास नें आपकों पठाई हैं। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहें, जो–संतदास बड़े भगवदीय श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक हैं। सो वैष्णव को द्रव्य कैसें राखें। तातें इहां पठाये।

भावप्रकाश—यह वार्ता में संदेह है, जो–चोबीस टका की पूंजी में अढ़ाई पैसा कमाते। तामे ते टका कासद कों दिये। और लिखे जो राजभोग को नागा पर्यो। सो पूंजी मे ते एक टका को क्यों न राजभोग धरें। इनकों तो भगवदाश्रय हैं। चोबीस टका पूंजी को आश्रय नाहीं हैं, जो–काल्हि कैसें कमाईगें? सहज मे जाको मन भगवान मे लागें। सो श्रीठाकुरजी कों नागा पूंजी राखिकें न करें, तो संतदास चोबीस टका की पूंजी राखिकें राजभोग में नागा क्यों किये? एक यह सन्देह, और आगरे सहर में स्त्री सहित रहें सो अढ़ाई पैसा में निर्वाह कौन प्रकार करें? घर में अनेक खर्च, लकड़ी, तेल, घी, नोंन, सागादि। उत्सव, पवित्रा, श्रीआचार्यजी को जन्म दिन, यह सन्देह। तहां यह भाव जाननो, जब संतदास को सगरो द्रव्य गयो, तब श्रीठाकुरजी की सेवा में मंडान श्रीठाकुरजी के द्रव्य सों राखें। और श्रीठाकुरजी के द्रव्य में तें चोबीस टका पूंजी करि कोड़ी वेचते। सो श्रीठाकुरजी की पूंजी में तें तो कासिद कों दियो न जाई। सो कमाई

મોકલી હતી તે સંતદાસે આપને મોકલી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે કે સંતદાસ મહાન્ ભગવદીય શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર સેવક છે. તે વૈષ્ણવનું દ્રવ્ય કેમ રાખે? તેથી અહીં મોકલ્યું.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં સંદેહ છે કે ચોવીસ ટકાની પુંજીમાં અઢી પૈસા કમાતા. તેમાંથી ટકો ટપાલીને આપ્યો અને લખ્યું કે રાજભોગ ન ધરાયો તો પૂંજીમાંથી એક ટકાનો રાજભોગ કેમ ન ધર્યો? એમને તો ભગવદાશ્રય છે. ચોવીસ ટકા પુંજીનો આશ્રય નથી. કે કાલે કેમ કમાઇશું? જેમનું મન સહજમાં ભગવાનમાં લાગે તે શ્રીઠાકુરજીને પુંજી રાખીને રાજભોગ બંધ ન રાખે. તો સંતદાસે ચોવીસ ટકાની પુંજી રાખીને રાજભોગ કેમ ન ધર્યો. એક આ સંદેહ, વળી આગ્રા શહરમાં સ્ત્રી સહિત રહ્યા. ને અઢી પૈસામાં નિર્વાહ કયા પ્રકારે કરે? ઘરમાં અનેક ખર્ચ, લાકડાં, તેલ, ઘી, મીઠું, શાક આદિ. ઉત્સવ પવિત્રા, શ્રીઆચાર્યજીનો જન્મદિવસ (બીજો) આ સંદેહ. ત્યાં આ ભાવ જાણવો. જ્યારે સંતદાસનું બધું દ્રવ્ય ગયું ત્યારે શ્રીઠાકુરજીની સેવાનું મંડાણ શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યથી રાખ્યું વળી શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યમાંથી ચોવીસ ટકા પુંજી કરી કોડી વેચતા તેથી શ્રીઠાકુરજીની

को टका दिये। तब इनकी मजूरी को राजभोग न भयो। सो महाप्रसाद हू न लियो। टका के चून को न्यारो भोग धरते। सो राजभोग जानते, महाप्रसाद लेते। और नित्य को नेग बहोत श्रीठाकुरजी के द्रव्य सों होतो। तातें अपुनी सेवा सिद्ध राजभोग की न भई। कासिद कों दिये। सो नारायनदास कों लिखे, जो–तुम्हारी प्रभुता तें एक दिन राजभोग को नागा परयो, जो–मेरी सत्ता को भोग न धरयो। या प्रकार संतदास विवेकधैर्याश्रय को रूप दिखाये। विवेक यह, जो–श्रीगुसांईजी कों हुँडी पठाई, अपुनी सेवा न भई, राजभोग को नागा जानें। धैर्य यह, जो–श्रीठाकुरजी के द्रव्य को खानपान न किये। आश्रय यह, जो–मनमें आनंद पाये। दुःख क्लेश न पाये।

या प्रकार संतदास श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ के अनुसार सेवा किये। और रस में मगन रहते। तातें इन संतदास की वार्ता कहां तांई कहिये।

वार्ता–प्रसंग २—**और संतदासजी के घर वैष्णव मंडली होई। सो चौक में सगरे वैष्णव बैठें। तब महादेवजी छिपि कें घर के द्वार के पास नित्य भगवद् वार्ता सुनिवे कूं आवें, सो कोई जानें नाहीं। सो आगरे में एक सेठ श्रीगुसांईजी को सेवक हतो। सो राजसी बहोत हतो।**

પુંજીમાંથી તો ટપાલીને આપ્યું ન જાય. તેથી કમાઇનો ટકો આપ્યો. ત્યારે એમની મજુરીનો રાજભોગ ન થયો. તેથી મહાપ્રસાદ ન લીધો. ટકાનો લોટ તો અલગ ભોગ ધરતા તે રાજભોગ જાણતા. મહાપ્રસાદ લેતા. અને નિત્યનો નેક ઘણો શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યથી થતો. તેથી પોતાની રાજભોગની સેવા સિદ્ધ ન થઈ. (કહેવાય) (તેથી) ટપાલીને ટકો આપ્યો (અને) નારાયણદાસને લખ્યું કે તમારી પ્રભુતામાં એક દિવસ રાજભોગ ન ધર્યો. કેમ જે મારી સત્તાનો ભોગ ન ધર્યો. એ પ્રમાણે સંતદાસે વિવેક ધૈર્ય આશ્રયનું રૂપ દેખાડયું. વિવેક એ કે શ્રીગુસાંઇજીને હુંડી મોકલી, પોતાની સેવા ન થઈ, રાજભોગ બંધ જાણ્યો. ધૈર્ય એ કે શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યથી ખાનપાન ન કર્યું. આશ્રય એ કે મનમાં આનંદ પામ્યા દુઃખ કલેશ ન પામ્યા.

આ પ્રકારે સંતદાસે શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રંથને અનુસાર સેવા કરી અને રસમાં મગન રહેતા. તેથી એ સંતદાસની વાર્તા કયા સુધી કહીએ.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨–સંતદાસના ઘરે વૈષ્ણવ મંડલી થાય ત્યારે ચોકમાં બધા વૈષ્ણવ બેસે. ત્યારે મહાદેવજી સંતાઇને ઘરના દ્વાર પાસે નિત્ય ભગવદ્ વાર્તા સાંભળવા આવતા. તે કોઈ જાણે નહીં. વળી આગ્રામાં એક શેઠ શ્રીગુસાંઇજીનો સેવક હતો. તે

वानें सुनी, जो-संतदास के घर रात्रि कों वैष्णव मंडली भेली होई हैं। तहां भगवद् वार्ता होत है। सो बहोत सुख होत हैं। तब वा सेठ नें कही, महाप्रसाद हू कछु बांटत हैं? तब एक वैष्णव नें कही, चना चबेनी बांटत हैं। तब वा सेठ ने कही, मैं अपने घर वैष्णव मंडली भेली करि ठोर लाडू बांटूगो। पाछें वा सेठ ने लाडू ठोर करि सांझ कों सगरे वैष्णवन सों कहवाये। जो-सेठ के घर वैष्णव मंडली भेली होत हैं। तहां ठोर लाडू बांटत हैं। पाछें रसिकजन कथा वार्ता के लोभी तो सब संतदास के घर आवें। और खान पान के लोभी सेठ की खुसामद करिवेवारे सेठ के घर द्वै चारि आवें। या प्रकार दस पन्द्रह दिन बीते। तब सेठ ने कही, मैं ठोर लाडू बांटत हूँ तो हू सगरे वैष्णव मेरे घर नाहीं आवत। संतदास के उहां चना की चबेनी बटत है तहां सगरे जात हैं। तब एक नें कही, संतदास के उहां भगवद् वार्ता कीर्तन को सुख बहोत परत हैं। तातें सब वैष्णव तहां जात हैं। तब सेठ ने कही, अपुनें एक दिन संतदास के उहां चलिकें देखें, कैसो रस आवत है। ताहि प्रकार अपनें घर करेंगे। सो द्वै चार अपने संग के वैष्णव लें सेठ संतदास के घर आयो। सो भगवद् वार्ता भई सो सेठ कछु समुझ्यो नाहीं। पाछे नींद आइ गई, पाछे कीर्तन वार्ता ह्वै

રાજસી ઘણો હતો. એણે સાંભળ્યું કે સંતદાસના ઘરે રાત્રિએ વૈષ્ણવ મંડલી ભેગી થાય છે. ત્યાં ભગવદ્ વાર્તા થાય છે તે ઘણું સુખ થાય છે. ત્યારે તે શેઠે કહ્યું, મહાપ્રસાદ પણ કંઈ વાંટે છે? ત્યારે એક વૈષ્ણવે કહ્યું, ચણા, ચવેણી વાંટે છે. ત્યારે તે શેઠે કહ્યું, હું મારા ઘરે વૈષ્ણવ મંડલી ભેગી કરી ઠોર લાડુ વાંટીશ. પછી તે શેઠે લાડુ ઠોર કરી સાંજે બધા વૈષ્ણવોને કહેવડાવ્યું, કે શેઠના ઘરે વૈષ્ણવ મંડલી ભેગી થાય છે ત્યાં ઠોર લાડુ વાંટે છે. પછી રસિકજન કથા વાર્તાના લોભી તો બધા સંતદાસના ઘરે આવ્યા. અને ખાનપાનના લોભી શેઠની ખુશામદ કરવાવાળા શેઠના ઘરે બે-ચાર આવ્યા. આ પ્રકારે દશ-પંદર દિવસ વીત્યા. ત્યારે શેઠે કહ્યું, હું ઠોર-લાડુ વાંટું છું તો પણ બધા વૈષ્ણવ મારા ઘરે નથી આવતા. સંતદાસને ત્યાં ચણાની ચવેણી વંટાય છે ત્યાં બધા જાય છે. ત્યારે એકે કહ્યું, સંતદાસના ત્યાં ભગવદ્ વાર્તા કીર્તનનું સુખ ઘણું થાય છે. તેથી બધા વૈષ્ણવ ત્યાં જાય છે. ત્યારે શેઠે કહ્યું, આપણે એક દિવસ સંતદાસને ત્યાં ચાલીને જોઇએ કેવો રસ આવે છે? તેજ પ્રકારે આપણા ઘરે કરીશું. પછી બે ચાર પોતાના સંગના વૈષ્ણવોને લઇ શેઠ સંતદાસના ઘરે આવ્યો. ત્યાં ભગવદ્ વાર્તા થઈ તે શેઠ કંઈ સમજ્યો નહી. પછી ઉંઘ આવી ગઇ. પછી કીર્તન વાર્તા થઇ ચુકી ત્યારે ચણા

चुकी। तब चना बँटे। सो सेठ कों हू जगाई के चना दिये। सो सेठ नें हाथ में लिये, परन्तु लाज पाई, मुख में न डार्‌यो। हाथ में लिये उठ्‌यो सो जोड़ा पहिरिवे लाग्यो। तहां चना डारि दिये। तब महादेव-जी चना बीनन लागे। सो वैष्णवन कही, यह कौन हैं? सो चोर चोर कहि पकरे। तब संतदास आय वैष्णवन सों कहें, ऐसे मति कहो, भगवद् वार्ता में चोर काहे कों आवेंगे? तब महादेव सों संतदास पूछे, जो–तुम कौन हो सांच कहो। तब कहें, तुम भगवदीय हो तातें कहत हों। इन सबन कों जान देहू। तब सगरे वैष्णव गये, तब कह्यो, मैं महादेव हों, सो छिपिकें भगवद् वार्ता कीर्तन सुनत हों। सो आज वा राजसी सेठ नें महाप्रसाद धरती पर डारि दियो सो मैं बीनिकें खायो। महाप्रसाद कहूं पांव नीचे आवे तो महा अनर्थ होई। तब संतदास नें कह्यो, तुम द्वार के पास क्यों बैठत हो? भीतर आयो करो। तब महादेव नें कही, तुम पुष्टिमार्गीय भक्तन के बीच में मर्यादा-मार्गीय को अधिकार नाहीं हैं। और तुम रस में मगन होई श्रीठाकु-रजी की अनेक लीला की वार्ता करत हो। सो सुनिवे को हमारो अधिकार नाहीं हैं। तातें जितनो मेरो अधिकार है तितनो सुनत हों। तासों इतनी दूरि बैठिवो मोकों ठीक है। तब संतदासजी

वांट्या. ते शेठने पण जगाडीने चणा आप्या. शेठे हाथमां लीधा परंतु लाजना मार्या मुखमां न नाख्या. हाथमां लइ ऊठ्यो पछी जोडा पहेरवा लाग्यो त्यां चणा नाखी दीधा. त्यारे महादेवजी चणा विणवा लाग्या. त्यारे वैष्णवोए कह्युं, आ कोण छे? चोर चोर कही पकड्या. त्यारे संतदासे आवी वैष्णवोने कह्युं, एम न कहो, भगवद् वार्तामां चोर शा माटे आवे? त्यारे महादेवने संतदासे पूछ्युं, तमे कोण छो साचुं कहो. त्यारे कहे, तमे भगवदीय छो तेथी कहुं छुं. आ बधाने जवा दो. त्यारे बधा वैष्णव गया. त्यारे कह्युं, हुं महादेव छुं. संताइने भगवद् वार्ता कीर्तन सांभळुं छुं. आजे पेला राजसी शेठे महाप्रसाद धरती उपर नाखी दीधो ते में वीणीने खाधो. महाप्रसाद कोइना पग नीचे आवे तो महा अनर्थ थाय. त्यारे संतदासे कह्युं, तमे द्वारनी पासे केम बेसो छो, अंदर आव्या करो. त्यारे महादेवे कह्युं, तमे पुष्टिमार्गीय भक्तोना वचमां मर्यादामार्गीयनो अधिकार नथी वळी तमे रसमां मगन थइ श्री-ठाकुरजीनी अनेक प्रकारनी वार्ता करो छो ते सांभळवानो अमारो अधिकार नथी. तेथी जेटलो मारो अधिकार छे तेटलुं सांभळुं छुं. तेथी आटलुं दूर बेसवुं मने ठीक छे. त्यारे संतदासजीथी विदाय थइ महादेवजी अंतर्धान थया. त्यारे कमाड लगाडी

सों विदा होई महादेवजी अंतरधान भये। तब किवाड़ लगाय संतदासजी घर में आये। ता दिन तें संतदास नें यह रीति करी। जब अपुने मंडली के सब वैष्णव आई चुके तब द्वार के किवाड़ लगाई कें भगवद् वार्ता करें। जो–कोई लौकिक जीव आवे तो आछो नाहीं। सो संतदास ऐसे भगवदीय हे।

वार्ता-प्रसंग ३—और जब श्रीगुसांईजी को जन्म दिन आवतो, तब संतदास वर्ष के वर्ष श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आवते। श्रीगुसांईजी संतदास कों श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक जानि, बहोत कृपा करते। पाछें कितनेक दिन में संतदास को सरीर थक्यो, वृद्ध भये। तब श्रीगोकुलजी तें चांपाभाई, संकरभाई बुलाये, श्रीगुसांईजी कों विनती पत्र लिखिकें। तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई भंडारी सों कहे, जो–तुम आगरे जाउ, संतदास वैष्णव के घर। अब वे देह छोड़ेंगे, सो चरणामृत महाप्रसाद ले जाउ। तब चांपाभाई श्रीगुसांईजी को चरणामृत ले महाप्रसाद ले आगरे संतदास पास आये। तब संतदास प्रीति पूर्वक चांपाभाई भंडारी कों भेटे। तब चांपा भाई संतदास कों चरणामृत महाप्रसाद दिये। सो लेकें संतदास नें चांपा भाई सों कही, जो घर में बासन पात्र जो कछू है सो सब श्रीगुसांईजी को है। पाछें श्रीठाकुरजी और श्रीठाकुरजी को जो द्रव्य हतो,

---

સંતદાસજી ઘરમાં આવ્યા. તે દિવસથી સંતદાસે એ રીતિ કરી કે જ્યારે પોતાની મંડળીના બધા વૈષ્ણવ આવી ચુકે ત્યારે દ્વારનાં કમાડ લગાડીને ભગવદ્ વાર્તા કરે. કેમ જે, કોઇ લૌકિક જીવ આવે તો ઠીક નહી. તે સંતદાસ એવા ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩-વળી જ્યારે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મ દિવસ આવતો ત્યારે સંતદાસ પ્રતિ વર્ષ શ્રીગુસાંઇજીના દર્શને શ્રીગોકુલ આવતા. શ્રીગુસાંઇજી સંતદાસ ઉપર શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર સેવક જાણી બહુજ કૃપા કરતા. પછી કેટલાક દિવસમાં સંતદાસજીનું શરીર થાકયું વૃદ્ધ થયા. ત્યારે શ્રીગોકુલજીથી ચાંપાભાઇ, શંકરભાઇને બોલાવ્યા શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી પત્ર લખીને. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી ચાંપાભાઈ ભંડારીને કહે, કે તમે આગ્રા જાવ સંતદાસ વૈષ્ણવના ઘરે. હવે એ દેહ છોડશે. તેથી ચરણામૃત મહાપ્રસાદ લઈ જાવ. ત્યારે ચાંપાભાઇ શ્રીગુસાંઇજીનું ચરણામૃત લઈ મહાપ્રસાદ લઇ આગ્રા સંતદાસજી પાસે આવ્યા. ત્યારે સંતદાસ પ્રીતિપૂર્વક ચાંપાભાઈ ભંડારીને ભેટ્યા. ત્યારે ચાંપાભાઇએ સંતદાસને ચરણામૃત મહાપ્રસાદ આપ્યો. તે લઇને સંતદાસે ચાંપાભાઇને કહ્યું, આ ઘરમાં વાસણ પાત્ર જે કંઈ છે તે બધું શ્રીગુસાંઇજીનું છે. પછી

घर को खतपत्र, सब चांपाभाई कों दे कहें, जो-चाहो तो कोईक दिन स्त्रीजन कों घर में रहन देउ। चाहो अबही बेचिकें दाम लेउ। या प्रकार सब चांपाभाई कों सोंपे। सो चांपाभाई घर के खतपत्र और सगरे वासन द्रव्य लेकें श्रीगोकुल आय सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे। तब श्रीगुसांईजी कहें, संतदास श्रीआचार्यजी के सेवक हैं। इनको विवेक, धैर्य, आश्रय, इनहीं सों बने। पाछें संतदास की देह बहोत असक्त भई। सो भूमि-सयन किये। तब आगरे के सब वैष्णव आइ जुरें। सो संतदास सों कहें, जो-तुम कहो तो तुमकों रेनुका तीर्थ ले चलें। और कहो तो, मथुरा बड़ो छेत्र है तहां ले चलें। तब संतदास कहें, रेनुका, मथुरा, मोकों कहा कृतार्थ करेगी? जन्म भरि श्रीआचार्यजी को आश्रय कियो। अब या समय तीर्थ को आश्रय मैं कहा करूं? और करूं तो महा बाधक है। तब सब वैष्णवन ने कही, जो-तुम कहो तो, श्रीगोकुल ले जाईं तुमकों। तब संतदास कहें, अब हों श्रीगोकुल जाइ कहा राख उड़ाऊं? श्रीगोकुल की सेवा तो मोसों कछू बनी नाहीं आई। तातें अब तुम सब कोऊ भगवद् नाम लेउ। तब सब वैष्णव भगवद् नाम लेन लागें। सो कोई तो पंचाध्यायी को पाठ करन लागें, कोई कीर्तन गावन लागें। पाछें

શ્રીઠાકુરજી અને શ્રીઠાકુરજીનું જે કંઈ દ્રવ્ય હતું, ઘરનું ખતપત્ર બધું ચાંપાભાઇને આપીને કહ્યું, કે ચાહો તો થોડાક દિવસ સ્ત્રીજનને ઘરમાં રહેવા દેજો, ચાહો તો હમણાંજ વેચીને પૈસા લો. આ પ્રકારે બધું ચાંપાભાઇને સોંપ્યું. પછી ચાંપાભાઇએ ઘરનું ખતપત્ર તથા બધાં વાસણ દ્રવ્ય લઇને શ્રીગોકુલ આવીને બધા સમાચાર શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, સંતદાસ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છે. એમનો વિવેક, ધૈર્ય, આશ્રય, એમનાથી જ બને. પછી સંતદાસની દેહ ઘણીજ અશક્ત થઇ. ભૂમિ-શયન કર્યું. ત્યારે આગ્રાના બધા વૈષ્ણવ ભેગા થયા. પછી સંતદાસને કહે, કે તમે કહો તો તમને રેણુકા તીર્થ લઇ ચાલીએ. અને કહો તો મથુરા મોટું ક્ષેત્ર છે ત્યાં લઇ ચાલીએ. ત્યારે સંતદાસ કહે, રેણુકા, મથુરા મને શું કૃતાર્થ કરશે? જન્મભર શ્રીઆચાર્યજીનો આશ્રય કર્યો. હવે આ સમય તીર્થનો આશ્રય હું શું કરું? અને કરું તો મહા બાધક છે. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ કહ્યું, કે તમે કહો તો તમને શ્રીગોકુલ લઇ જઇએ. ત્યારે સંતદાસ કહે, હવે હું શ્રીગોકુલ જઇ શું રાખ ઉડાવું? શ્રીગોકુલની સેવા તો મારાથી કંઇ બની નથી આવી. તેથી હવે તમે બધા ભગવદ્નામ લો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ ભગવન્નામ લેવા લાગ્યા. તે કોઇ તો પંચાધ્યાઇનો પાઠ કરવા લાગ્યા. કોઇ કીર્તન ગાવા લાગ્યા. પછી

जब देह छोड़िवे को समें भयो। तब संतदास वैष्णवन सों कहें, अब तुम सब चुप होइकें मेरी बात सुनों। तब सब वैष्णव चुप ह्वै गये। तब संतदास कहे, जो–एक समें श्रीगुसांईजी को जन्म दिन हतो। ता दिन मैं श्रीगोकुल गयो। सो श्रीगुसांईजी केसरि स्नान करि केसरि धोती पहरि केसरी उपरना झटकिकें ओढ़त हते। तब मैं जाय दंडोत कियो। तब श्रीगुसांईजी कहें, संतदास अब आये? तब मैं कही, हां महाराज! अबही आयो। तब मोकों पाछे आयो जानि जल मंगाई प्रभु चरणोदक दिये। यह ध्यान वा समें को करि देह छोड़ि लीला में प्राप्त भये।

भावप्रकाश—सो संतदास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हे, कोई तीर्थ को आश्रय न किये। एक श्रीआचार्यजी को दृढ़ आश्रय राखे। श्रीगोकुल आइवे की नाहीं कहे, जो–अब कहा राख उड़ाऊँ। सो यह भाव, जो लीला–स्थल में लौकिक देह कहा डारूं? अलौकिक देह सूं जो सेवा बनें श्रीगोकुल की, श्रीठाकुरजी की, सोई आछो है। ओर देह की कहा हे? भगवद् आश्रय सर्वोपरी पदार्थ हैं। देह कहूं परी, यह जताये। वैष्णव ॥७६॥

पाछें वैष्णवन नें संतदास की देह को संस्कार कियो। पाछें

જ્યારે દેહ છોડવાનો સમય થયો ત્યારે સંતદાસે વૈષ્ણવોને કહ્યું, હવે તમે બધા ચૂપ થઇને મારી એક વાત સાંભળો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ ચુપ થઇ ગયા. ત્યારે સંતદાસ કહે, કે એક સમય શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિન હતો તે દિવસે હું શ્રીગોકુલ ગયો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કેસર સ્નાન કરી કેસરી ધોતી પહેરી કેસરી ઉપરણા ઝટકીને ઓઢતા હતા. ત્યારે મેં જઇને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, સંતદાસ! હમણાં આવ્યા? ત્યારે મેં કહ્યું, હાં મહારાજ! હમણાં જ આવ્યો. ત્યારે મને પાછળથી આવ્યો જાણી જલ મંગાવી પ્રભુએ ચરણોદક આપ્યું. આ ધ્યાન તે સમયનું કરી દેહ છોડી લીલામાં પ્રાપ્ત થયા.

ભાવપ્રકાશ—એ સંતદાસ એવા ટેકના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. (કે) કોઈ તીર્થનો આશ્રય ન કર્યો. એક શ્રીઆચાર્યજીનો દૃઢ આશ્રય રાખ્યો. શ્રીગોકુલ આવવાની ના કહી, કે હવે શું રાખ ઉડાવું. તે આ ભાવથી કે લીલા–સ્થલમાં લૌકિક દેહ શું પાડું? અલૌકિક દેહથી જે સેવા બને શ્રીગોકુલની, શ્રીઠાકુરજીની, તેજ સારી છે અને દેહનું શું? ભગવદાશ્રય સર્વોપરી પદાર્થ છે. દેહ ગમે ત્યાં પડે એ જણાવ્યું. વૈષ્ણવ ॥૭૬॥

પછી વૈષ્ણવોએ સંતદાસની દેહનો સંસ્કાર કર્યો. પછી સંતદાસની આ બધી

संतदास की यह सब बात एक वैष्णव नें श्रीगोकुल आयकें श्रीगुसांईजीके आगें कही। तब श्रीगुसांईजी कों रोमांच ह्वे आये। कहे, संतदास बड़े भगवदीय हे, ऐसो आश्रय वैष्णव कों करनों, जैसे संतदास नें कियो। या प्रकार संतदास की बहोत सराहना किये। सो संतदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते। इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७६॥

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सुंदरदास, माधोदास, गंगापुत्र ब्राह्मण हते, सो श्रीजगन्नाथरायजी सों कोस दस उरे एक गाम में रहतें, ता गाम को नाम पीपरी है, तहां रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में सुन्दरदास, माधोदास, दोऊ कुमारिका के जूथ में राधा सहचरी की सखी हैं। तहां सुन्दरदास को नाम 'शीला', माधोदास को नाम 'लीला'। ये दोऊ पूर्व में पीपरी गाम में, (तहां) सुन्दरदास तो गंगापुत्र ब्राह्मण के घर जन्में। और माधोदास सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्में। सो माधोदास को पिता, एक महजति में पीर हतो। ताहि को आश्रय करे। म्लेच्छ जैसें करें, ताही प्रकार सों माला बतासा नित्य चढावें। वाकें पुत्र न हतो, सो पीर की मानता करी। तब पुत्र भयो। (तब) वा सारस्वत ब्राह्मण को पीर में दृढ़ विश्वास भयो।

વાત એક વૈષ્ણવે શ્રીગોકુલ આવીને શ્રીગુસાંઇજીના આગળ કહી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીને રોમાંચ થઈ આવ્યાં. કહે, સંતદાસ મહાન ભગવદીય હતા. એવો આશ્રય વૈષ્ણવે કરવો જેવો સંતદાસે કર્યો. આ પ્રકારે સંતદાસની બહુ જ પ્રશંસા કરી. તે સંતદાસ શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ? વા. ॥૭૬॥

⁂ ⁂ ⁂

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, સુંદરદાસ માધવદાસ ગંગાપુત્ર બ્રાહ્મણ હતા, તે શ્રીજગન્નાથરાયજીથી કોસ દશ આ તરફ એક ગામમાં રહેતા, તે ગામનું નામ પીપરી છે ત્યાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં સુંદરદાસ માધવદાસ, બન્ને કુમારિકાના યૂથમાં રાધા સહચરીની સખી છે ત્યાં સુંદરદાસનું નામ 'શીલા' માધવદાસનું નામ 'લીલા' એ બન્ને પૂર્વમાં પીપરી ગામમાં (ત્યાં) સુંદરદાસ તો ગંગાપુત્ર બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. અને માધવદાસ સારસ્વત બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. તે માધવદાસનો પિતા એક મસ્જીદમાં પીર હતો તેનો જ આશ્રય કરે. મ્લેચ્છ જેમ કરે તેજ પ્રકારથી માલા પતાસાં નિત્ય ચઢાવે. એને પુત્ર ન હતો. તેથી પીરની માનતા કરી. ત્યારે પુત્ર

सो उह पीर उह सारस्वत सों बोलतो, बातें करतो। सो बात वह सारस्वत ब्राह्मण हिन्दू ह्वै कें प्रगट करे तो निन्दा होई। तातें बेटा को नाम माधोदास धर्‍यो। कृष्णचैतन्य गौड देस में भये। तिनको सेवक माधोदास कों करायो। परन्तु मनमें दृढ़ता माधोदास के पिता की और माधोदास की पीर में, ऊपर तें एक ठाकुर ले राखे। सो लोगन के दिखाइबे कों पूजें। जब ठाकुर आगें भोग धरे, तब पीर को नाम लेकें बुलावें, सो पीर खाई जाई। और वाही गाम में सुन्दरदास गंगापुत्र ब्राह्मण रहे। सो इनकी रीत यह, जो–कोई संत महन्त महापुरुष आवें, तिनकी टहल सगरो दिन करें। पांव दाबें, पानी, सीधा सब ल्याइ देई। द्वै कोस लों पहुंचावे। या प्रकार सों रहें। सो एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी कों पधारें। सो पीपरी गाम के पास तलाब पर उतरे। सो सुन्दरदास आय कृष्णदास कों दंडौत करि कहे, मैं आपके चरन दाबूं, पानी ले आऊँ। सीधा सामग्री जो कछू कहो सो ले आऊं। मैं या गाम में रहत हों। सो जो कोउ संत महन्त महापुरुष आवत हैं तिनकी मैं टहल करत हों। मैं गंगापुत्र ब्राह्मण गृहस्थ हों। तातें जो कछू टहल आप मोसों कहो सो मैं करूँ। तब कृष्णदास कहे, जो–तू हमारी वस्तु, भाव सों न्यारो रहियो, जो–तू कछू छूवेगो सो छूइ जायगो। तातें तू अपने

થયો. ત્યારે તે સારસ્વત બ્રાહ્મણને પીરમાં વિશ્વાસ થયો. પછી તે પીર એ સારસ્વતથી બોલતો, વાતો કરતો. તે વાત એ સારસ્વત બ્રાહ્મણ હિન્દુ થઇને પ્રકટ કરે તો નિંદા થાય તેથી બેટાનું નામ માધવદાસ ધર્યું. કૃષ્ણચૈતન્ય ગોડ દેશના થયા માધવદાસને તેમના સેવક કરાવ્યા. પરંતુ મનમાં દૃઢતા માધવદાસના પિતાની અને માધવદાસની પીરમાં ઉપરથી એક ઠાકુર લઈ રાખ્યા. તે લોકોને દેખાડવાને પૂજે. જ્યારે ઠાકુર આગળ ભોગ ધરે ત્યારે પીરનું નામ લઇને બોલાવે તે પીર ખાઈ જાય. વળી તેજ ગામમાં સુંદરદાસ ગંગાપુત્ર બ્રાહ્મણ રહે. એની એ રીતિ, કે કોઈ સંત–મહંત મહાપુરુષ આવે તેમની ટહલ આખો દિવસ કરે. પગ દાબે, પાણી સીધું બધું લાવી દે. બે કોશ સુધી પહોંચાઈ આવે. આ પ્રકારે રહે. પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી શ્રીજગન્નાથરાયજીએ પધાર્યા. ત્યારે પીપરી ગામની પાસે તલાવ ઉપર ઉતર્યા. ત્યારે સુંદરદાસે આવી દંડવત્ કરીને કહ્યું, હું આપના ચરણ દાબૂં. પાણી લઈ આવું. સીધું સામગ્રી જે કંઈ કહો તે લઈ આવું. હું આ ગામમાં રહું છું અને જે કંઈ સંત–મહંત મહાપુરુષ આવે છે તેમની હું ટહલ કરૂં છું. હું ગંગાપુત્ર બ્રાહ્મણ ગૃહસ્થ છું. તેથી જે કંઈ ટહલ આપ મને કહો તે હું કરૂં. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે,

काम जा, हमारे कछु काम नाहीं हैं। देखि, काहू सों छुइयो मति। तब सुन्दरदास नें कह्यो, मेरो कहा अपराध है? जो कछु टहल नाहीं बतावत। मैं तो जो वैष्णव आवत हैं तिन सबन की टहल करत हों। और तुम कहे कछु छुवे मति। ताको कारन कहा? मैं तो ब्राह्मण हों। तब कृष्णदास ने कही, जो–तू ब्राह्मण है तो अपने घरको है। यहाँ तो श्रीआचार्यजी के सेवक होई ताही सों टहल करावत हैं। ताही कों सब छुवावत हैं। और की छूई वस्तु कछु काम न आवे। तब सुन्दरदास नेक दूरि ठाड़े रहे। सो वैष्णवन ने रंच रंच सब जगह खोदि के, जल ल्याई, छिरकि के आसन बिछायो। ता ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु विराजे। सो श्री-आचार्यजी को स्वरूप देखि के सुन्दरदास मोहित होइ गये। पाछे कृष्णदास गाम में जाय, सीधो सामग्री ले आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु न्हाइ रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, आप भोजन करे। पाछे सुन्दरदास कों दैवी जीव जानि महाप्रसाद दिये। सो महाप्रसाद लेत ही सुन्दरदास की बुद्धि निर्मल ह्वै गई। तब सुन्दरदास ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! आप साक्षात् ईश्वर हो। सो मेरो कहा अपराध है, जो–मोसों कछु टहल न कराई। तब श्री-

---

કે તૂ અમારી વસ્તુ ભાવથી અલગ રહેજે. જો તૂ કંઈ અડીશ તો અભડાઈ જશે. તેથી તૂં તારા કામે જા, અમારે કંઈ કામ નથી. દેખ! કોઇને અડતો નહીં. ત્યારે સુંદરદાસે કહ્યું, મારો શો અપરાધ છે, કે કંઈ ટહલ નથી બતાવતા? હું તો જે વૈષ્ણવ આવે છે તે બધાની ટહલ કરૂં છું અને તમે કહો છો કંઈ અડીશ નહીં. તેનું કારણ શું? હું તો બ્રાહ્મણ છું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે તૂ બ્રાહ્મણ છે તો તારા ઘરનો છે. અહીં તો શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હોય તેની પાસે ટહલ કરાવીએ છીએ. એને જ બધે અડકાડીએ છે બીજાની અડેલી વસ્તુ કંઈ કામ ન આવે. ત્યારે સુંદરદાસ જરા દૂર ઉભા રહ્યા. પછી વૈષ્ણવોએ થોડી થોડી બધી જગા ખોદીને જલ લાવીને છાંટીને આસન બિછાવ્યું. તે ઉપર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ બિરાજ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજીનું સ્વરૂપ જોઇને સુંદરદાસ મોહિત થઈ ગયા. પછી કૃષ્ણદાસ ગામમાં જઈ-સીધું–સામગ્રી લાવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ ન્હાઈ રસોઈ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી પોતે ભોજન કર્યું. પછી સુંદરદાસને દૈવી જીવ જાણી મહાપ્રસાદ આપ્યો. ત્યારે મહાપ્રસાદ લેતાં જ સુંદરદાસની બુદ્ધિ નિર્મળ થઈ ગઈ. ત્યારે સુંદરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, મહારાજ! આપ સાક્ષાત્ ઈશ્વર છો. મારો શો અપરાધ છે કે મારાથી કંઈ ટહલ ન કરાવી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે,

आचार्यजी महाप्रभु कहे, जो–हमारे संग वैष्णव हैं सो सब हमारी रीति मर्यादा जानत हैं। तुमकों अबही हमारी रीति मर्यादा की खबरि नाहीं है। तातें तुमपै टहल कराये नाहीं। तब सुन्दरदास कहें, महाराज! मोकों सरन ले, जा प्रकार मोंसों बतावो ता प्रकार कछू टहल मैं आपकी करूं। तब मेरे मनमें सुख होय। तातें मोकों चरन तो छूवाओ? तब श्रीआचार्यजी सुन्दरदास की दैन्यता देखि सुन्दरदास कों नाम सुनाय चरन छूवाये। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पौढ़े। तब सुन्दरदास सगरी रात्रि परम प्रीति सों चरन सेवा कियो करे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु दोय चार बार रात्रि कों कहैं, जो–सुन्दरदास अब तुम सोई रहो। तब सुन्दुरदास ने बिनती करी, जो–महाराज! सोवनो तो नित्य है, परन्तु यह सेवा आपकी मोकों कब मिलेगी? पाछे प्रातःकाल भयो तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत् करि विनती किये, जो–महाराज! आप कृपा करिके मेरे घर पधारिये। और मेरी स्त्री कों अंगीकार करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु सुन्दरदास के घर पधारि, आप स्नान करि रसोइ करि पाछे सुन्दरदास सों कहे, जो–सुन्दरदास स्त्री सहित न्हाई के आउ। तब श्रीआचार्यजी सुन्दरदास कों ब्रह्मसंबंध कराय स्त्री कों नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे सुंदरदास के घर लालाजी ठाकुर

કે અમારા સાથે વૈષ્ણવ છે તે બધા અમારી રીત મર્યાદા જાણે છે. તમને હજુ અમારી રીતિ મર્યાદાની ખબર નથી. તેથી તમારી પાસે ટહલ કરાવી નહી. ત્યારે સુંદરદાસ કહે, મહારાજ! મને શરણે લો. જે પ્રકાર મને બતાવો તે પ્રકારે હું કંઈ આપની ટહલ કરૂં. ત્યારે મારા મનમાં સુખ થાય. તેથી મને ચરણનો તો સ્પર્શ કરાવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સુંદરદાસની દીનતા જોઇને સુંદરદાસને નામ સંભળાવી ચરણનો સ્પર્શ કરાવ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોઢ્યા. ત્યારે સુંદરદાસે આખી રાત્રિ પરમ પ્રીતિથી ચરણ-સેવા કર્યા કરી. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ બે વાર રાત્રિએ કહે, કે સુંદરદાસ! હવે તમે સુઇ રહો. ત્યારે સુંદરદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! સુવાનું તો નિત્ય છે પરંતુ આ સેવા આપની ક્યારે મળશે? પછી પ્રાતઃકાલ થયું ત્યારે સુંદરદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપ કૃપા કરીને મારા ઘરે પધારો અને મારી સ્ત્રીને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ સુંદરદાસના ઘરે પધારી, આપ સ્નાન કરી, રસોઈ કરી, પછી સુંદરદાસને કહે, કે સુંદરદાસ! સ્ત્રી સહિત ન્હાઇ આવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ સુંદરદાસને બ્રહ્મસંબંધ કરાવી સ્ત્રીને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું.

हते। तिनकों पञ्चामृत सों न्हवाय आप भोग धरें। पाछे आप भोजन करि सुन्द-दास कों स्त्री सहित जूठन महाप्रसाद दिये। पाछे दोई दिन सुन्दरदास के घर रहि पुष्टिमार्ग की सब रीति बताय, आपतो श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारे। सुन्दरदास सेवा करन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—सो सुन्दरदास को माधोदास सूं स्नेह बहोत हतो। सो सुन्दरदास नें मनमें विचारी, जो-यह माधोदास श्रीआ-चार्यजी महाप्रभुन को सेवक होइ तो कृतार्थ होई। याको सब अन्या-श्रय छूटे। तब सुन्दरदास नें माधोदास आगे श्रीआचार्यजी महा-प्रभुन की बहोत बड़ाई करी। और माधोदास सों कह्यो, जो-तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होउ तो याही जन्म में कृतार्थ होउ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु साक्षात् भगवान् हैं। तब माधोदास नें कह्यो, जो-मेरे तो जो कछू हैं सो कृष्णचैतन्य है। तब सुन्दरदास चुप करि रहै। परन्तु दोई जने में स्नेह बहोत।

भावप्रकाश—काहेते, लीला को सम्बन्ध दृढ़ है, तातें इहां दृढ़ स्नेह भयो। और सुन्दरदास ने माधोदास को कल्यान याही जन्म में विचार्‍यो। सो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करेंगे। भगवदीय जो विचारे सोई होय।

પછી સુંદરદાસના ઘરે લાલાજી ઠાકુર હતા, તેમને પંચામૃતથી ન્હવડાવી આપે ભોગ ધર્યો. પછી આપે ભોજન કરી સુંદરદાસને સ્ત્રી સહિત જૂઠન મહાપ્રસાદ આપ્યો. પછી બે દિવસ સુંદરદાસના ઘરે રહી પુષ્ટિમાર્ગની બધી રીતિ બતાવી આપ તો શ્રીજગન્નાથરાયજીના દર્શને પધાર્યા. સુંદરદાસ સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એ સુંદરદાસને માધવદાસથી સ્નેહ ઘણો હતો. એથી સુંદરદાસે મનમાં વિચાર્યું, કે આ માધવદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુનો સેવક થાય તો કૃતાર્થ થાય અને બધો અન્યાશ્રય છુટે. ત્યારે સુંદરદાસે માધવદાસ આગળ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની ઘણી વડાઇ કરી અને માધવદાસને કહ્યું, કે તમે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક થાવ તો આ જ જન્મમાં કૃતાર્થ થાવ. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ સાક્ષાત્ ભગવાન છે. ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મારે તો જે કંઇ છે તે કૃષ્ણચૈતન્ય છે. ત્યારે સુંદરદાસ ચૂપ કરી રહ્યા. પરંતુ બન્નેમાં સ્નેહ ઘણો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે લીલાનો સંબંધ દૃઢ છે તેથી અહીં દૃઢ સ્નેહ થયો અને સુંદરદાસે માધવદાસનું કલ્યાણ આ જ જન્મમાં વિચાર્યું તેથી શ્રીઠાકુરજી અંગીકાર કરશે. ભગવદીય જે વિચારે તે થાય.

पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करि कछुक दिन तहां रहिके पाछे पुरुषोत्तमपुरी सों पधारे। तब सुन्दरदास के घर उतरि स्नान करि पाक सामग्री करे। पाछे श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। ता समें माधोदास, सुन्दरदास के घर आई सुन्दरदास के पास बैठे। इतने में समय भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु भोग सराये। सो माधोदास ने महाप्रसाद को थार भर्‍यो देख्यो। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करि पोढें तब माधोदास ने सुन्दरदास सों कही, जो–तेरे गुरु श्रीआचार्यजी के हाथ श्रीठाकुरजी अरोगत है नाहीं। मैं महाप्रसाद को भर्‍यो थार देख्यो। और मेरे घर मैं, जो श्रीठाकुरजी कों धरत हूं, तामें ते एक ग्रास हू रहत नाहीं। ठाकुर मेरे सब खाय जात है। तब सुन्दरदास ने कही, कछू नाहीं रहत है, तो तुम कहा खात हो? तब माधोदास ने कही, हों अपने घर लायक न्यारो धरि राखत हों। ठाकुर कों अधिक होई तितनों धरत हों। तामें ते कछु खावत नाहीं। तब सुन्दरदास ने कही, या बात को उत्तर तुम पिछले पहर अइयो तब तुमसों कहूंगो। तब माधोदास घर गये। और सुन्दरदास स्त्री सहित महाप्रसाद लिये। पाछे श्रीआचार्यजी पोढिके उठे। तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभु सों कहै, जो–महाराज! एक माधोदास

પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરી કેટલાક દિવસ ત્યાં રહીને પછી પુરુષોત્તમપુરીથી પધાર્યા. ત્યારે સુંદરદાસના ઘરે ઉતરી સ્નાન કરી પાક-સામગ્રી કરી. પછી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધર્યો. તે સમયે માધવદાસ, સુંદરદાસના ઘરે આવી સુંદરદાસની પાસે બેઠા. એટલામાં સમય થયો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ ભોગ સરાવ્યો. ત્યારે માધવદાસે મહાપ્રસાદનો થાળ ભર્યો જોયો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કરી પોઢયા. ત્યારે માધવદાસે સુંદરદાસને કહ્યું, કે તારા ગુરુ શ્રીઆચાર્યજીના હાથે શ્રીઠાકુરજી આરોગતા નથી. મેં મહાપ્રસાદનો થાળ ભર્યો જોયો અને મારા ઘરમાં હું જે શ્રીઠાકુરજીને ધરૂં છું તેમાંથી એક ગ્રાસ પણ રહેતો નથી. મારા ઠાકુર બધું ખાઇ જાય છે. ત્યારે સુંદરદાસે કહ્યું, કંઇ નથી રહેતું તો તમે શું ખાવ છો? ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, અમારા ઘર લાયક અલગ ધરી રાખું છું. ઠાકુરને વિશેષ હોય એટલું ધરૂં છું. એમાંથી કંઇ ખાતો નથી. ત્યારે સુંદરદાસે કહ્યું, આ વાતનો ઉત્તર તમે પાછલા પહોરે આવજો ત્યારે તમને કહીશ. ત્યારે માધવદાસ ગયા અને સુંદરદાસે સ્ત્રી સહિત મહાપ્રસાદ લીધો. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોઢીને ઉઠ્યા. ત્યારે સુંદરદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહે, જે મહારાજ! એક માધવદાસ

सारस्वत ब्राह्मण है, सो कहत है, मैं ठाकुर के आगें धरत हूँ सो सब मेरे ठाकुर खाई जात हैं। वाकी थार में कछू रहत नाहीं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, वह मूर्ख है। वाके घर भूत खाय जात है। श्रीठाकुरजी को हस्त लगे सो वस्तु कबहू घटे नाहीं। सो वह माधोदास दैवी है, और तुम्हारे मन में वाको उद्धार करन को आयो है, तातें अब वाकों सरनि लेके वैष्णव अवस्य करनो है। तब सुन्दर-दास प्रसन्न भये। पाछे माधोदास आये। तब श्रीआचार्यजी महा-प्रभु माधोदास कों निकट बुलाई के कहै, माधोदास! तेरे घर ठाकु-रजी सगरी सामग्री खाई जात हैं? तब माधोदास ने कही, हां, हां, कछू रहत नाहीं, थार में ते सब खाई जात है। ऐसे मेरे ठाकुर हैं। तब श्रीआ-चार्यजी महाप्रभु कहे, जो–कालिह जब तू भोग धरे तब हमकों पहले खबरि करियो, हमहू देखें। तब माधोदास ने कही कालिह सवेरे तुमकों खबरि करूंगो। पाछे माधोदास घर गये। सवेरे उठि रसोई करि, आय, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, महाराज! पधारिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु तहां मंदिर के द्वार पर जाय रहें। तब माधोदास थार में सगरी सामग्री धरि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दिखाय कह्यो, जो–अब में भोग धरत हूं। तब श्रीआचार्यजी महा-

---

સારસ્વત બ્રાહ્મણ છે તે કહે છે, હું ઠાકુરના આગળ ધરું છું તે બધું મારા ઠાકુર ખાઇ જાય છે. એની થાળીમાં કંઈ રહેતું નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે. એ મૂર્ખ છે. એના ઘર ભૂત ખાઈ જાય છે. શ્રીઠાકુરજીનો હાથ લાગે તે વસ્તુ કયારેય ઘટે નહીં. પણ તે માધવદાસ દૈવી છે વળી તમારા મનમાં એનો ઉદ્ધાર કરવાનું આવ્યું છે. તેથી હવે એને શરણે લઇને વૈષ્ણવ અવશ્ય કરવો છે. ત્યારે સુંદરદાસ પ્રસન્ન થયા. પછી માધવદાસ આવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ માધવદાસને પાસે બોલાવીને કહે, માધવદાસ! તારા ઘરે ઠાકુરજી બધી સામગ્રી ખાઇ જાય છે? ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, હાં, હાં, કંઇ રહેતું નથી. થાળમાંથી બધું ખાઈ જાય છે એવા મારા ઠાકુર છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે કાલે જ્યારે તૂ ભોગ ધરે ત્યારે અમને પહેલાં ખબર કરજે અમે પણ જોઇએ. ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, કાલ સવારે તમને ખબર કરીશ. પછી માધવદાસ ઘરે ગયા. સવારે ઉઠી રસોઇ કરી આવી શ્રીઆચાર્યજી મહા-પ્રભુને કહ્યું, મહારાજ! પધારો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ત્યાં મંદિરના દ્વાર ઉપર જઇ બેઠા. ત્યારે માધવદાસ થાળમાં બધી સામગ્રી ધરી શ્રીઆચાર્યજીને દેખાડીને કહ્યું, કે હવે હું ભોગ ધરું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે ધરો. પછી

प्रभु कहे जो–धरो। सो वह माधोदास ठाकुर के आगे धरि कें पीर को सुमिरन कियो। सो वह पीर भूत हतो सो आयो, तब मन्दिर के पास आवत ही श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों देखि अग्नि तें जरन लाग्यो। और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो–आजु मैं भूखो मर्‍यो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु भूत सों कहे, जो–आज तांई तू खायो, सो तो खायो। आज पीछे तू कबहू मति अइयो, फेरि इहां आवेगो तो भस्म ह्वै जायगो। तातें बेगि जा। तब वह पीर रोवत भाजि गयो। पाछे समय भयो तब माधोदास भोग सरावन कों मंदिर में गयो। सो तहां जाई देखे तो थार में सगरी सामग्री ज्यों की त्यां भरी है। तब माधोदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो–आज तुम इहां आये। सो मेरे ठाकुर आरोगे नाहीं, भूखे रहे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधोदास सूं कछू कहे नाहीं। आप चुपचाप सुन्दरदास के घर पधारे। तहां रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद ले आप पोढ़ें। पाछे सगरे वैष्णव, सुन्दरदास, महाप्रसाद लियो। पाछे रात्रि भई तब माधोदास सोये। ऐसेमें अर्द्ध रात्रि गई तब श्रीठाकुरजी के अनुचर आय माधोदास कों खाटतें औंधो डारि के मारन लागे। तब माधोदास हाहा खाय के कहै, जो–तुम मोकों

તે માધવદાસે ઠાકુરના આગળ ધરીને પીરનું સ્મરણ કર્યું. તે પીર ભૂત હતો તે આવ્યો. ત્યારે મંદિરની પાસે આવતાંજ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને જોઇને અગ્નિથી બળવા લાગ્યો અને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યું, કે આજ હું ભૂખ્યો રહ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ભૂતને કહે, કે આજસુધી તેં ખાધું તે તો ખાધું. આજ પછી તૂ કયારેય આવીશ નહીં. ફરી અહીં આવીશ તો ભસ્મ થઇ જઇશ. તેથી જલ્દી જા. ત્યારે તે પીર રોતાંરોતાં ભાગી ગયો. પછી સમય થયો ત્યારે તે માધવદાસ ભોગ સરાવાને મંદિરમાં ગયો. ત્યાં જઇ જુએ તો થાળમાં બધી સામગ્રી જેમની તેમ ભરી છે. ત્યારે માધવદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યું, આજ તમે અહીં આવ્યા એથી મારા ઠાકુર આરોગ્યા નહીં, ભૂખ્યા રહ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ માધવદાસને કંઇ કહ્યું નહીં. પોતે ચુપચાપ સુંદરદાસના ઘરે પધાર્યા. ત્યાં રસોઇ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી મહાપ્રસાદ લઇ આપ પોઢયા. પછી બધા વૈષ્ણવ (તથા) સુંદરદાસે મહાપ્રસાદ લીધો. પછી રાત્રિ થઇ ત્યારે માધવદાસ સૂઇ રહ્યા. એવામાં અર્દ્ધરાત્રિ ગઇ ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના અનુચરોએ આવીને માધવદાસને ખાટથી ઉંધો નાખીને મારવા લગ્યા. ત્યારે માધવદાસે નાક રગડીને કહ્યું, તમે મને શા માટે મારો છો ?

काहे कों मारत हो? तब अनुचरन ने कही, श्रीआचार्यजी तो भगवत्स्वरूप है। तिनसों तू कह्यो, जो–तुम्हारे आए मेरे ठाकुर भूखे रहे। ताते तोकों मारत हैं। तेरे घर जो भूत खाई जात है, जा पीर को तू आश्रय कियो है, नित्य बुलावत है। सो आज श्रीआचार्यजी बैठे हते, ताते वह प्रेत अग्नि सों जरन लाग्यो सो भाजि गयो। तेरे ठाकुर तो इतने दिन में आज ही अरोगे हैं। तब माधोदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को स्वरूप जान्यो नाहीं, तातें कह्यो। अब सवारे अपराध क्षमा कराय सेवक होऊंगो। अब तुम मोकों मति मारो। तब श्रीठाकुरजी के अनुचर कहे, जो–सवारे अपराध क्षमा न करावेगो तो, (और) सेवक उनको न होईगो तो, काल्ह रात्रि कों हम तोकों मारि डारि चूर्ण करेंगे। यह कहिके श्रीठाकुरजी के अनुचर गये। पाछे सवारो भयो तब माधोदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आई दंडवत विनती कियो। जो महाराज! मैं आपको अपराध बहोतसो कियो, मैं अज्ञानी जीव हूं, आपको स्वरूप कहा जानूं? आप तो साक्षात भगवान हो। अब मेरो अपराध क्षमा करो। मेरो पिता मर्यो, सो मोसों कह्यो, जो–तू या पीर को माने जैयो। सो उपर दिखायवे कूं ठाकुर राखो हतो। तातें आप अब कृपा करि मेरे घर पधारो, मोकों सरन लेहू। जा प्रकार आप बतावो

ત્યારે અનુચરોએ કહ્યું, શ્રીઆચાર્યજીતો ભગવત્સ્વરૂપ છેઃ તેમને તેં કહ્યું, કે તમારા આવ્યાથી મારા ઠાકુર ભૂખ્યા રહ્યા? જે પીરનો તેં આશ્રય કર્યો છે. નિત્ય બોલાવે છે તે આજ શ્રીઆચાર્યજી બેઠા હતા ત્યારે તે પ્રેત અગ્નિથી બળવા લાગ્યો તે ભાગી ગયો. તારા ઠાકુરતો આટલા દિવસમાં આજેજ આરોગ્યા છે. ત્યારે માધવદાસે કહ્યું, મેં શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપને જાણ્યું નહીં તેથી કહ્યું. હવે સવારે અપરાધ ક્ષમા કરાવી સેવક થઈશ. હવે તમે મને ન મારો. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના અનુચર કહે, કે સવારે અપરાધ ક્ષમા કરાવીશ નહીં તો, અને એમનો સેવક થઈશ નહીં તો કાલ રાત્રિએ અમે તને મારી નાખી ચુરણ કરીશું. એમ કહીને શ્રીઠાકુરજીના અનુચર ગયા. પછી સવાર થયું ત્યારે માધવદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવી દંડવત વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મેં આપનો અપરાધ ઘણોજ કર્યો. હું અજ્ઞાની જીવ છું. આપનું સ્વરૂપ શું જાણું? આપતો સાક્ષાત્ ભગવાન છો. હવે મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. મારો પિતા પીરને બહુજ માનતો પછી મારો પિતા મર્યો ત્યારે મને કહ્યું, કે તૂ આ પીરને માને જજે. ઉપર દેખાડવાને ઠાકુર રાખ્યા હતા. તેથી આપ હવે કૃપા કરી

ता प्रकार मैं भगवद सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधोदास की दैन्यता देखिके माधोदास के उपर प्रसन्न होई, माधोदास के घर कृपा करि, फेरि पधारे। तहां स्नान कराई नाम सुनाई ब्रह्मसंबन्ध कराये। पाछे श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराई, पाट बैठाय, माधोदास के माथे पधराये। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरिकें आप भोजन किये। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने माधोदास सूँ कह्यो, जो-माधोदास! या गाम में जितने वैष्णव होई तिन सबन कों महाप्रसाद लेंन कों बुलाई ल्याऊ। तब माधोदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो–महाराज! महाप्रसाद तो थोरो है। और या गाम में वैष्णव तो बहोत हैं। सो सबकों कैसे पहोंचेगो? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो–तू मूर्ख है, महाप्रसाद कबहूं निघट्यो है? जा सब वैष्णव कों बुलाई लाव। तब माधोदास वैष्णवन सों कहै, जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु वेगे बुलावत हैं, सो चलो। सो सुनत ही सगरे वैष्णव सब काम काज छोड़िके दौरे आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु सबन के आगे महाप्रसाद की पातरि धरि के सबन कों महाप्रसाद लिवाय दियो। और महाप्रसाद को थार भर्यो को भर्यो ही रह्यो। तब

મારા ઘરે પધારો મને શરણે લો જે પ્રકાર બતાવો તે પ્રકારે હું ભગવદ સેવા કરૂં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ માધવદાસની દીનતાને જોઇને માધવદાસના ઉપર પ્રસન્ન થયા. માધવદાસના ઘરે કૃપા કરીને ફરી પધાર્યા. ત્યાં સ્નાન કરી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ માધવદાસને સ્નાન કરાવી નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી શ્રીઠાકુરજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવી પાટ બેસાડી, માધવદાસના માથે પધરાવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પોતે રસોઇ કરી શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરીને પોતે ભોજન કર્યું. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ માધવદાસને કહ્યું, કે માધવદાસ! આ ગામમાં જેટલા વૈષ્ણવ હોય તે બધાને મહાપ્રસાદ લેવાને બોલાવી લાવ. ત્યારે માધોદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યું, કે મહારાજ! મહાપ્રસાદ તો થોડો છે. અને આ ગામમાં વૈષ્ણવ તો ઘણા છે. તે બધાને કેમ પહોંચશે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે તૂ મૂર્ખ છે. મહાપ્રસાદ ક્યારેય ઘટે છે? જા, બધા વૈષ્ણવને બોલાવી લાવ. ત્યારે માધવદાસ વૈષ્ણવોને કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ જલ્દી બોલાવે છે. માટે ચાલો. તે સાંભળતાંજ બધા વૈષ્ણવો બધું કામકાજ છોડીને દોડી આવ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ બધાની આગળ મહાપ્રસાદની પાતળ ધરીને બધાને મહા-

श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने माधोदास सूँ कह्यो, जो–माधोदास! देखि वैष्णव कों दृढ़ विश्वास चहिये। महाप्रसाद कबहूं न घटे। या प्रकार कौ महात्म्य श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने माधोदास कों वा समय वा ठौर दिखायो।

भावप्रकाश—क्यों, जो–इन कों अब ही दृढ़ विश्वास नांही है, नये वैष्णव हैं। कछु महात्म्य देखें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को दृढ़ आश्रय होय। आश्रय विना भगवद्–प्राप्ति फल सिद्धि न होई। तातें महात्म्य दिखायो।

तब माधोदास कों विश्वास दृढ़ भयो। पाछें श्रीआचार्यजी वहां रहि, माधोदास कों सगरी रीति भांति पुष्टिमार्ग की बताय, आप कासी पधारे।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो–भगवदीय के संग तें कैसोउ दुष्ट होई परन्तु वाको उद्धार होई। और माधोदास ठाकुर के आगे भोग धरे सो भूत खाई, यह बात संभव नाहीं। काहे तें, जहां श्रीठाकुरजी को नाम होई, तहां भूत आदि को प्रवेस न होई। तो श्रीठाकुरजी के आगे भोग धरे सो भूत कैसे खाय? तातें ऊपर कहि आये, जो–माधोदास कों, पिता के संग तें प्रेत को आश्रय (सिद्ध) भयो हतो। तातें भूत खाई जातो। यातें यह जताये, जो–

પ્રસાદ લેવડાવી દીધો. અને મહાપ્રસાદનો થાળ ભર્યોને ભર્યોજ રહ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ માધવદાસને કહ્યું, કે માધવદાસ! જો, વૈષ્ણવને દૃઢ વિશ્વાસ જોઇએ. મહાપ્રસાદ ક્યારેય ન ઘટે. આ પ્રકારનું મહાત્મ્ય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ માધવદાસને તે સમય તે જગાએ દેખાડયું.

ભાવપ્રકાશ—કેમ, જે એને હજુ વિશ્વાસ નથી. નવા વૈષ્ણવ છે. કંઈ માહાત્મ્ય જુએ તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનો દૃઢ વિશ્વાસ હોય. આશ્રય વિના ભગવત્પ્રાપ્તિ ફલ સિદ્ધ ન હોય તેથી માહાત્મ્ય દેખાડયું.

ત્યારે માધવદાસને દૃઢ વિશ્વાસ થયો. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ ત્યાં રહી માધવદાસને બધી રીતિભાંતિ પુષ્ટિમાર્ગની બતાવી. પછી આપ કાશી પધાર્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ સિદ્ધાન્ત થયો, કે ભગવદીયના સંગથી કેવો પણ દુષ્ટ હોય પરંતુ એનો ઉદ્ધાર થાય. વળી માધવદાસ ઠાકુરના આગળ ભોગ ધરે અને તે ભૂત ખાય એ વાત સંભવ નહી. કેમકે, જ્યાં શ્રીઠાકુરજીનું નામ હોય ત્યાં ભૂત આદિનો પ્રવેશ ન હોય તો શ્રીઠાકુરજીની આગળ ભોગ ધરે તે ભૂત કેમ ખાય? તેથી ઉપર કહી આવ્યા કે માધવદાસને પિતાના સંગથી પ્રેતનો આશ્રય

खोटे मनुष्य को संग किये दुःख होई, सतसंग किये कृतार्थ होई। वैष्णव ॥७७॥

सो सुन्दरदास के संग ते माधोदास बड़े भगवदीय भये। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। तातें सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ७७ ॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, मावजी पटेल और इनकी स्त्री बिरजो, ये उज्जैन में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—और मावजी पटेल और बिरजो, जा प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक भये, सो सब पत्नारावल सहित गोपालदास की वार्ता में ऊपर कहि आये हैं। तातें इहां नाहीं कहे। लीला में ये श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। इन मावजी पटेल को नाम 'रूपा' है। और 'हरखा' बिरजो को नाम है। सो उज्जैन में जन्में। सो मावजी पटेल के पास द्रव्य बहोत हतो। सो एक वार बिरजो श्रीगोकुल आई, तब श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो—महाराज! मोकों भगवद् सेवा पधराइ दीजें। मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों बिनती करी हती,

---

સિદ્ધ થયો હતો. તેથી ભૂત ખાઇ જતો. એમાં એ જણાવ્યું કે ખોટા મનુષ્યનો સંગ કરે દુઃખ થાય, સત્સંગ કરવાથી કૃતાર્થ થાય. વૈષ્ણવ ॥૭૭॥

તે સુંદરદાસના સંગથી માધવદાસ મોટા ભગવદીય થયા. શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવતા. તેથી સુંદરદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તા કયાં સુધી કહિએ ? વાર્તા ॥ ૭૭ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, માવજી પટેલ અને એમની સ્ત્રી વીરજો એ ઉજ્જૈનમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—માવજી પટેલ અને વીરજો જે પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયાં તે બધું પદ્મારાવલ સહિત ગોપાલદાસની વાર્તામાં ઉપર કહી આવ્યા છીએ તેથી અહીં નથી કહ્યું. લીલામાં એ શ્રીચન્દ્રાવલીજીની સખી છે એ માવજી પટેલનું નામ ' રૂપા ' છે અને ' હરખા ' વિરજોનું નામ છે. તે ઉજ્જૈનમાં જન્મ્યાં. એ માવજી પટેલ પાસે દ્રવ્ય ઘણું હતું. પછી એક વાર વીરજો શ્રીગોકુલ આવી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીથી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને ભગવદ્‌સેવા પધરાવી આપો. મેં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનંતી કરી હતી ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो–तुम्हारो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे। तातें आप अब मोपे कृपा करिये। तब श्रीगुसांइजी श्रीनवनीतप्रियजी के खेलवे के ठाकुर में ते एक लालजी विरजो के माथे पधराय दिये। तब विरजो ने श्री-गुसांईजी सों विनती करी, जो–महाराज! श्रीठाकुरजी वेगि कृपा करि अनुभव जतावें, सो उपाय आप कृपा करिके कहिये। तब श्रीगुसांईजी कहें, जैसो भाव हमारे ऊपर राखत हो तेसो भाव पुष्टिमार्गीय वैष्णवन में राखियो। तुम्हारो सगरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूर्ण करेंगे। तब विरजो श्रीगुसांईजी सों बिदा होई श्रीठाकुरजी कूँ घर में पधराय के बड़ो उत्सव कियो। गाम गाम के वैष्णव बुलाई महाप्रसाद, खरची आदि वस्त्र सों सबको समाधान कियो। उज्जैन में पद्मारावल के वेटा कृष्ण-भट्ट के संग तें अलौकिक बुद्धि भई। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे।

वार्ता-प्रसंग १—**और विरजो वर्ष दिन में दोय बार व्रज में श्रीगोकुल, श्रीगुसांईजी के दरसन कों, (तथा) श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवती। सो एक गाड़ा गुड़ को, एक घी को, भरि के संग ले आवती। सो पन्द्रह दिन श्रीनाथजीद्वार में रहती। और पन्द्रह दिन श्रीगोकुल में रहती। तब श्रीगोवर्द्धनधर के सामग्री करावती।**

કહ્યું, કે તમારો મનોરથ શ્રીગુસાંઈજી પૂર્ણ કરશે. તેથી આપ હવે મારા ઉપર કૃપા કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીના ખેલવાના ઠાકુરમાંથી એક લાલજી વીરજોને માથે પધરાવી આપ્યા. ત્યારે વીરજોએ શ્રીગુસાંઈજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! શ્રીઠાકુરજી જલ્દી કૃપા કરી અનુભવ જણાવે એવો ઉપાય આપ કૃપા કરીને કહો. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, જેવો ભાવ અમારા ઉપર રાખો છો તેવો ભાવ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોમાં રાખજો. તમારો બધો મનોરથ શ્રીઠાકુરજી પૂર્ણ કરશે. ત્યારે વિરજોએ શ્રીગુસાંઇજીથી વિદાય થઈ શ્રીઠાકુરજીને ઘરમાં પધરાવીને મોટો ઉત્સવ કર્યો. ગામ ગામના વૈષ્ણવોને બોલાવીને મહાપ્રસાદ, ખર્ચી આદિ વસ્ત્રથી બધાનું સમાધાન કર્યું. ઉજ્જૈનના પદ્મારાવલના બેટા કૃષ્ણભટ્ટના સંગથી અલૌકિક બુદ્ધિ થઈ. શ્રીઠાકુરજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-**વળી વીરજો** વર્ષ દિવસમાં બે વાર વ્રજમાં શ્રીગોકુલ શ્રીગુસાં-ઇજીના દર્શને (તથા) શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના દર્શને આવતી. ત્યારે એક ગાડું ગોળનું, એક ઘીનું ભરીને સાથે લઇ આવતી. ત્યારે પંદર દિવસ તો શ્રીનાથજીદ્વારમાં રહતી અને પંદર દિવસ શ્રીગોકુલમાં રહતી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધરને સામગ્રી કરાવતી, મહા-

महाप्रसाद आवतो सो ढांकि राखती। सो ग्वाल गाय चराय के आवते तब सगरो महाप्रसाद लिवाय गायन के खिड़क में आवती, ग्वालन कों, गायन कों महाप्रसाद लिवावती। गेहूंन की थूली करि गायन कों खवावती। सगरे सेवकन कों पहरावनी करती। सबन कों सेवगी देती। श्रीनाथजी कों नित्य नये मनोरथ, आभूषण, वस्त्र करती। सो सगरे सेवक प्रसन्न रहते। और श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी की भेंट पधरावनी, सगरे बालक बहू बेटीन कों पहिरावनी नित्य नये मनोरथ करती।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय उत्सव के दिन वैष्णव महाप्रसाद लेत हते। बिरजो अनसखड़ी परोसत हती। तब बिरजो के मन में यह मनोरथ भयो, जो—सगरे वैष्णव की मण्डली बैठी होई, और मैं सखड़ी महाप्रसाद परोसों। पाछें बिरजो नें कृष्णभट्ट सों कही, मेरे मन में यह मनोरथ भयो है, जो—सगरे गाम गाम के वैष्णव बुलाई सखड़ी महाप्रसाद मैं अपने हाथ सों सगरे वैष्णवन कों परोसों। तब कृष्णभट्ट कहें, यह मनोरथ श्रीगुसांईजी आज्ञा करें तो भक्ति भाव सों सिद्ध होई। सो सगरे वैष्णव के समाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जैये। तब आप कहें सो होय। परन्तु यह मनोरथ द्रव्य साध्य है। तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही,

---

પ્રસાદ આવતો તે ઢાંકી રાખતી. પછી બધા ગ્વાલ ગાય ચરાવીને આવતા ત્યારે બધો મહાપ્રસાદ લેવડાવી ગાયોની ખીડકમાં આવતી. ગાયોને, ગ્વાલોને મહાપ્રસાદ લેવડાવતી. ઘઉંની થુલી કરીને ગાયોને ખવડાવતી. બધા સેવકોને પહેરામણી કરતી. બધાને સેવકી દેતી. શ્રીનાથજીને નિત્ય નવા મનોર્થ, આભૂષણ, વસ્ત્ર કરતી, તેથી બધા સેવકો પ્રસન્ન રહેતા. વળી શ્રીગોકુલમાં શ્રીગુસાંઇજીને ભેટ પધરામણી બધા બાલકો, વહુ-બેટીઓને પહેરામણી નિત્ય નવા મનોર્થ કરતી.

વર્તા-પ્રસંગ ૨-વળી એક સમય ઉત્સવના દિવસે વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લેતા હતા, વિરજો અનસખડી પીરસતી હતી ત્યારે વીરજોના મનમાં એ મનોર્થ થયો, કે બધા વૈષ્ણવોની મંડલી બેઠી હોય અને હું સખડી મહાપ્રસાદ પીરસું. પછી વીરજોએ કૃષ્ણભટ્ટને કહ્યું, મારા મનમાં આવો મનોર્થ થયો છે કે બધા ગામ-ગામના વૈષ્ણવોને બોલાવી સખડી મહાપ્રસાદ હું મારા હાથથી બધા વૈષ્ણવોને પીરસું. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટ કહે, એ મનોર્થ શ્રીગુસાંઇજી આજ્ઞા કરે તો ભક્તિ-ભાવથી સિદ્ધ થાય. માટે બધા વૈષ્ણવોના સમાજ સહિત શ્રીગુસાંઇજી પાસે શ્રીગોકુલ જૈયે. ત્યારે આપ કહે તેમ થાય.

जो-मेरो यह मनोरथ है, सो तुम पूरण करो। सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवाऊं, अपने हाथ सों। सो मैं कृष्णभट्ट सों पूछी। तब कृष्ण भट्ट कहें, द्रव्य साध्य है। वैष्णवन कों श्रीगोकुल ले जैये। तब मावजी पटेल नें कही, मो पास लक्ष मोहोर हैं। जो-इतने में काम होई तो सुखेन कृष्णभट्ट सों पूछिके मनोरथ करो। तब बिरजो कृष्णभट्ट पास आइ कही, लक्ष मोहोर हैं, इतने में मनोरथ पूरण होई तो। तब कृष्णभट्ट नें कह्यो, अवश्य, तुम्हारो मनोरथ प्रभु पूरण करेंगे। तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही, कृष्णभट्ट नें कही है, इतने में मनोरथ पूरण होइगो। तब मावजी द्रव्य भेलो करि लक्ष मोहोर बिरजो कों दियो। तब बिरजो लक्ष मोहोर कृष्णभट्ट के आगे धरि बिनती करी, अब तुम्हारे हाथ है, मेरो मनोरथ पूरण करो। तब कृष्ण भट्ट गाम गाम के वैष्णवन कों पत्र लिखि के असवार गाड़ी, खरची पठाई। प्रीति पूर्वक सगरे वैष्णव गुजरात, हालार के भेले करि सबन कों न्यारो न्यारो डेरा, खर्ची दिये। पाछें उजैन तें सगरे वैष्णव सहित कृष्णभट्ट, बिरजो श्रीगोकुल कों चले। सो श्रीनाथजीद्वार आयके समाज सहित श्रीनाथजी के दरसन करे। श्रीनाथजी कों सामग्री, वागा, वस्त्र, आभूषण को मनोरथ करि श्रीगोकुल आये। श्रीनवनीत-

---

પરંતુ આ મનોર્થ દ્રવ્ય સાધ્ય છે. ત્યારે વીરજોએ આવી માવજી પટેલને કહ્યું, મારો આ મનોર્થ છે તે તમે પૂરણ કરો. બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ લેવડાઉં મારા હાથથી. મેં કૃષ્ણભટ્ટને પૂછ્યું ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટે કહ્યું એ દ્રવ્ય સાધ્ય છે. વૈષ્ણવોને શ્રીગોકુલ લઇ જઇએ. ત્યારે માવજી પટેલે કહ્યું મારી પાસે લાખ મોહોર છે. જો એટલામાં કામ થાય તો સુખેથી કૃષ્ણભટ્ટને પૂછીને મનોર્થ કરો. ત્યારે વિરજોએ કૃષ્ણભટ્ટ પાસે આવીને કહ્યું, લાખ મહોર છે એટલામાં મનોર્થ પૂરણ હોય તો. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટે કહ્યું, અવશ્ય તમારો મનોર્થ પ્રભુ પૂરણ કરશે. ત્યારે વીરજોએ આવી માવજી પટેલને કહ્યું, કૃષ્ણભટ્ટે કહ્યું છે એટલામાં મનોર્થ પૂરણ થશે. ત્યારે માવજીએ દ્રવ્ય ભેગું કરી લક્ષ મોહર વીરજોને આપી. ત્યારે વીરજોએ લક્ષ મોહર કૃષ્ણભટ્ટની આગળ ધરી વિનંતી કરી, હવે તમારે હાથ છે. મારો મનોરથ પૂરણ કરો. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટે ગામ-ગામના વૈષ્ણવોને પત્ર લખીને અસવાર ગાડી, ખર્ચી મોકલી. પ્રીતિપૂર્વક બધા વૈષ્ણવો ગુજરાત, હાલારનાને ભેગા કરી બધાને અલગ-અલગ ડેરા ખર્ચી આપ્યાં. પછી ઉજ્જૈનથી કૃષ્ણભટ્ટ, વિરજો બધા વૈષ્ણવો સહિત શ્રીગોકુલ ચાલ્યાં. તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવીને સમાજ સહિત શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. શ્રીનાથજીને સામગ્રી, વાગા, વસ્ત્ર, આભૂષણનાં મનોરથો

महाप्रसाद आवतो सो ढांकि राखती। सो ग्वाल गाय चराय के आवते तब सगरो महाप्रसाद लिवाय गायन के खिड़क में आवती, ग्वालन कों, गायन कों महाप्रसाद लिवावती। गेहूंन की थूली करि गायन कों खवावती। सगरे सेवकन कों पहरावनी करती। सबन कों सेवगी देती। श्रीनाथजी कों नित्य नये मनोरथ, आभूषण, वस्त्र करती। सो सगरे सेवक प्रसन्न रहते। और श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी की भेंट पधरावनी, सगरे बालक बहू बेटीन कों पहिरावनी नित्य नये मनोरथ करती।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय उत्सव के दिन वैष्णव महाप्रसाद लेत हते। बिरजो अनसखड़ी परोसत हती। तब बिरजो के मन में यह मनोरथ भयो, जो-सगरे वैष्णव की मण्डली बैठी होई, और मैं सखड़ी महाप्रसाद परोसों। पाछें बिरजो नें कृष्णभट्ट सों कही, मेरे मन में यह मनोरथ भयो है, जो-सगरे गाम गाम के वैष्णव बुलाई सखड़ी महाप्रसाद मैं अपने हाथ सों सगरे वैष्णवन कों परोसों। तब कृष्णभट्ट कहें, यह मनोरथ श्रीगुसांईजी आज्ञा करें तो भक्ति भाव सों सिद्ध होई। सो सगरे वैष्णव के समाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जैये। तब आप कहें सो होय। परन्तु यह मनोरथ द्रव्य साध्य है। तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही,

---

પ્રસાદ આવતો તે ઢાંકી રાખતી. પછી બધા ગ્વાલ ગાય ચરાવીને આવતા ત્યારે બધો મહાપ્રસાદ લેવડાવી ગાયોની ખીડકમાં આવતી. ગાયોને, ગ્વાલોને મહાપ્રસાદ લેવડાવતી. ઘઉંની થુલી કરીને ગાયોને ખવડાવતી. બધા સેવકોને પહેરામણી કરતી. બધાને સેવકી દેતી. શ્રીનાથજીને નિત્ય નવા મનોર્થ, આભૂષણ, વસ્ત્ર કરતી, તેથી બધા સેવકો પ્રસન્ન રહેતા. વળી શ્રીગોકુલમાં શ્રીગુસાંઇજીને ભેટ પધરામણી બધા બાલકો, વહુ-બેટીઓને પહેરામણી નિત્ય નવા મનોર્થ કરતી.

વર્તા-પ્રસંગ ૨-વળી એક સમય ઉત્સવના દિવસે વૈષ્ણવ મહાપ્રસાદ લેતા હતા, વિરજો અનસખડી પીરસતી હતી ત્યારે વીરજોના મનમાં એ મનોર્થ થયો, કે બધા વૈષ્ણવોની મંડલી બેઠી હોય અને હું સખડી મહાપ્રસાદ પીરસું. પછી વીરજોએ કૃષ્ણભટ્ટને કહ્યું, મારા મનમાં આવો મનોર્થ થયો છે કે બધા ગામ-ગામના વૈષ્ણવોને બોલાવી સખડી મહાપ્રસાદ હું મારા હાથથી બધા વૈષ્ણવોને પીરસું. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટ કહે, એ મનોર્થ શ્રીગુસાંઇજી આજ્ઞા કરે તો ભકિત-ભાવથી સિદ્ધ થાય. માટે બધા વૈષ્ણવોના સમાજ સહિત શ્રીગુસાંઇજી પાસે શ્રીગોકુલ જૈયે. ત્યારે આપ કહે તેમ થાય.

प्रियजी के दरसन करि, श्रीगुसांईजी के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी सों कृष्णभट्ट नें बिनती करी, जो–महाराज! बिरजो को यह मनोरथ भयो है। जो–सगरे वैष्णवन कों सखड़ी महाप्रसाद हों अपने हाथ सों परोसों। ताके लिये सगरे वैष्णवन के समाज सहित आपके पास आये हैं। सो आप आज्ञा देहु तब यह मनोरथ पूरण होय। तब श्रीगुसांईजी मनमें विचारे, जो–बिरजो के बड़े भाग्य है, जो ऐसो मनोरथ उठ्यो। परन्तु अब हम आज्ञा देंइ तो या समय तो बाधा नहीं। यह मनोरथ जगत में प्रसिद्ध होवे। परन्तु श्रीआचार्यजी नें वेद–मर्यादा राखी है, जो–हमतें लोग सगरे यह कहेंगे, जो–श्रीगुसांईजी वेद–मर्यादा के पालन हारे, सगरे ब्राह्मणन कों पटेल के हाथ सों सखड़ी महाप्रसाद लिवाये। या प्रकार दोष बुद्धि करि अनेक जीव को बिगार होई। और वैष्णव को मनोरथ पूरण न करिये तो पुष्टि–भक्ति को विरोध होय। तातें भक्तन के मनोरथ कों तो अवश्य पूरण कर्‍यो चहिये। पाछें यह विचार्‍यो, जो–जामें मर्यादा रहे, भक्तन को मनोरथ पूरण होई, सगरे वैष्णव प्रसन्न होई, सो करनो। तब श्रीगुसांईजी नें कही, जो–यह मनोरथ तो श्रीजगन्नाथरायजी पुरुषोत्तमपुरी में सिद्ध होई। तामें पूरब के वैष्णव हू सगरे आवेंगे।

કરી શ્રીગોકુલ આવ્યા. શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શન કરી શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીને કૃષ્ણભટ્ટે વિનંતી કરી કે મહારાજ! વીરજોનો આ મનોર્થ થયો છે કે બધા વૈષ્ણવોને સખડી મહાપ્રસાદ હું મારા હાથે પીરસું. તે માટે બધા વૈષ્ણવોના સમાજ સહિત આપની પાસે આવ્યા છીએ. આપ આજ્ઞા દો તો આ મનોર્થ પૂર્ણ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ મનમાં વિચાર્યું કે વીરજોનું મોટું ભાગ્ય છે કે આવો મનોર્થ ઉઠયો. પરંતુ હમણાં અમે આજ્ઞા દઇએ તો આ સમય તો બાધા નથી. આ મનોર્થ જગતમાં પ્રસિદ્ધ થાય. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીએ વેદ–મર્યાદા રાખી છે તેથી અમને બધા લોકો એમ કહેશે કે શ્રીગુસાંઇજી વેદમર્યાદાના પાલન કરવાવાળા, બધા બ્રાહ્મણોને પટેલના હાથથી સખડી મહાપ્રસાદ લેવડાવ્યો!! આ પ્રકારે દોષ–બુદ્ધિ કરી અનેક જીવનો બગાડ થાય. વળી વૈષ્ણવનો મનોર્થ પૂર્ણ ન કરીએ તો પુષ્ટિ–ભક્તિનો વિરોધ થાય. તેથી ભક્તોના મનોરથને તો અવશ્ય પુરો કરવો જોઇએ. પછી એમ વિચાર્યું કે જેમાં મર્યાદા રહે, ભક્તોના મનોરથ પૂરણ થાય, બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થાય તેમ કરવું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું, કે આ મનોર્થ તો શ્રીજગન્નાથરાયજી પુરૂષોત્તમપુરીમાં સિદ્ધ થાય. તેમાં પૂરવના વૈષ્ણવો પણ બધા આવશે. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટે વીર-

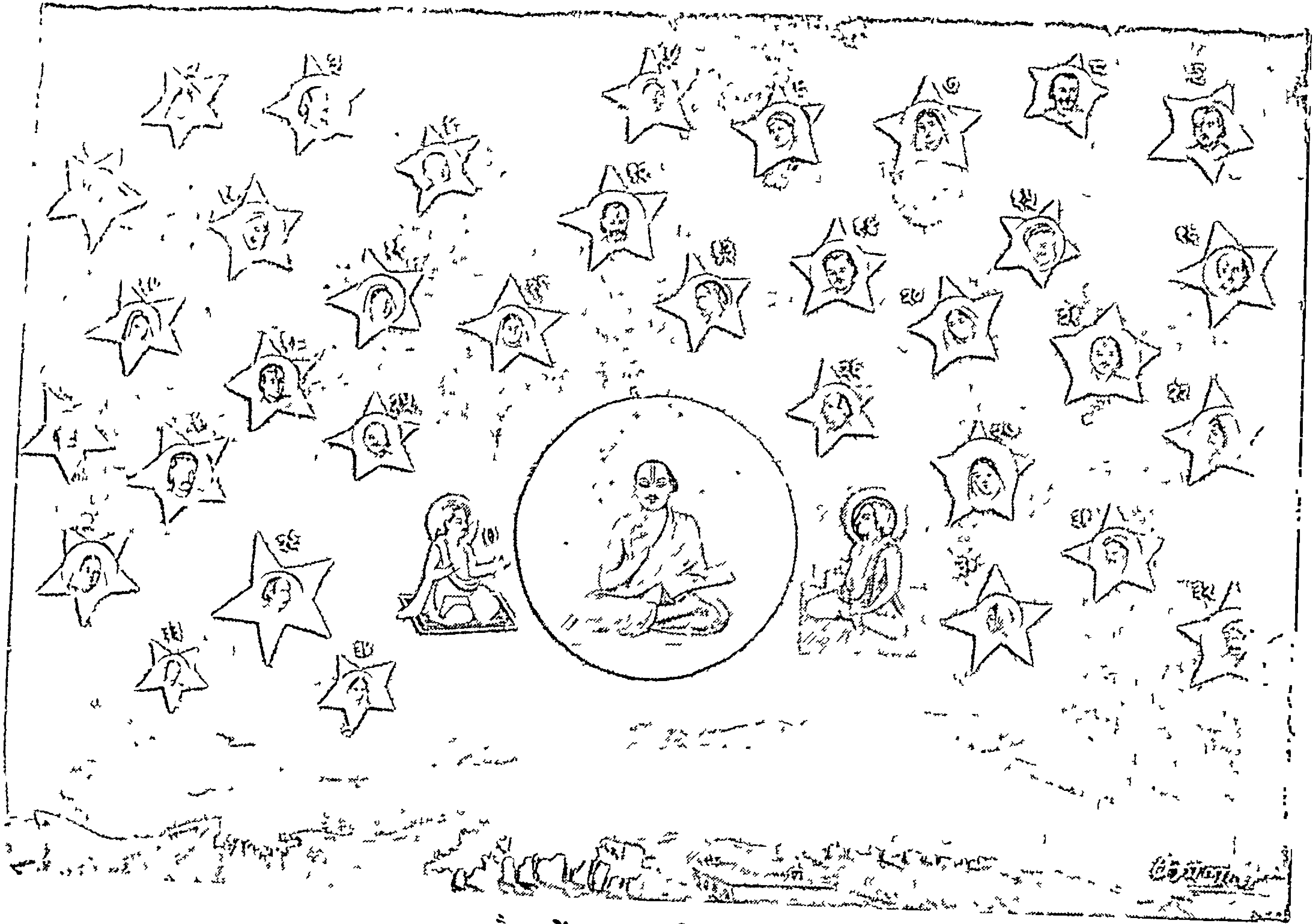

वैष्णवों का सामूहिक चित्र

बीच मे : १. श्रीमहाप्रभुजी। चमनी ओर : २. श्रीगोपीनाथजी। बाईं ओर : ३. श्रीगुसांईजी

तब कृष्णभट्ट नें बिरजो सों कही, जो–यह मनोरथ श्रीजगन्नाथजी चलिये, तहां पुरुषोत्तमपुरी में सिद्ध होइगो। तहां पूरो मनोरथ है, सो सिद्ध होइगो। तब बिरजो नें कही, बहोत आछो, पुरुषोत्तमपुरी चलिये। श्रीगुसांईजी हू कृपा करि पधारे तो बहोत सुख होय। तब कृष्ण-भट्ट ने श्रीगुसांईजी सों विनती करी, जो–महाराज! आपहू कृपा करिके पुरुषोत्तमपुरी पधारो तो बहोत सुख होई। तब श्रीगुसांईजी कहे, हमहूं पधारेंगे, वैष्णव प्रसन्न होई सो करनों। पाछें श्रीनन्द, पच्छिम के, वैष्णव बुलाये। मथुरा के वैष्णव संग ले श्रीगुसांईजी सहित आगरे आये। आगरे के वैष्णव संग ले समाज सहित कासी आय कासी के वैष्णव सगरे संग लिये। या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग लिये। सो जाही गाम में उतरे तहां नित्य नई सामग्री के मनोरथ गाम गाम के वैष्णव के डेरा न्यारे न्यारे ठाड़े होई। तहां न्यारे न्यारे कीरतन–वार्ता श्रीगुसांईजी कों नित्य नये मनोरथ। व्यौपारी अपुने गाड़ी सीधा सामानके लिये संग चले। सो सगरे वैष्णव के हृदय में आनंद। नित्य श्रीगुसांईजी को दरसन। नित्य नये उत्सव। जैसे श्रीकृष्ण की असवारी द्वारिका में निकसे, या प्रकार को। वैष्णव बूढे आदि कों असवारी, भांति भांति की। जा गाम में उतरे ता

જોને કહ્યું, કે આ મનોરથ શ્રીજગન્નાથરાયજી ચાલીએ ત્યાં પુરૂષોત્તમપુરીમાં સિદ્ધ થશે. ત્યાં પુરો મનોરથ સિદ્ધ થશે. ત્યારે વીરજોએ કહ્યું, બહુ સારૂં પુરૂષોત્તમપુરી ચાલો. શ્રીગુસાંઇજી પણ કૃપા કરીને પધારે તો બહુ સુખ થાય. ત્યારે કૃષ્ણભટ્ટે શ્રીગુ-સાંઇજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપ પણ કૃપા કરીને પુરુષોત્તમપુરી પધારો તો બહુ સુખ થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, અમે પણ પધારીશું. વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થાય તેમ કરવું. પછી શ્રીનંદ (સિંહનંદ) પશ્ચિમના વૈષ્ણવોને બોલાવ્યા. મથુરાનાં વૈષ્ણવોને સંગ લઈ શ્રીગુસાંઇજી સહિત આગરા આવ્યા. આગરાના વૈષ્ણવોને સંગ લઇ સમાજ સહિત કાશી આવી કાશીના બધા વૈષ્ણવોને સંગ લીધા. આ પ્રકારે ગામ–ગામના વૈષ્ણવોને સંગ લીધા. પછી જે ગામમાં ઉતરે ત્યાં નિત્ય નવા સામગ્રીના મનોર્થો. (તેમજ) ગામ–ગામના વૈષ્ણવોના તંબુ અલગ અલગ ઉભા થાય. ત્યાં અલગ અલગ કીર્તન, વાર્તા, શ્રીગુસાંઇજીને ત્યા નિત્ય નવા મનોર્થ. વેપારી પોતાની ગાડી સીધા-સામગ્રીને લઇને સંગ ચાલે. બધા વૈષ્ણવોના હૃદયમાં આનંદ. નિત્ય શ્રીગુસાંઇજીના દર્શન, નિત્ય નવા ઉત્સવ, જેમ શ્રીકૃષ્ણની સવારી દ્વારકામાં નિકળે એ પ્રકારે વૈષ્ણવ વૃદ્ધ વિગેરેને સવારી તરહ તરહની. જે ગામમાં ઉતર્યા તે ગામના લોકો અનેક સુખી થયા, દ્રવ્યાદિ-

गाम के लोग अनेक सुखी भये, द्रव्यादिक सों। या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग ले श्रीपुरुषोत्तमपुरी आये। श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। नाना प्रकार की सखड़ी अनसखड़ी सामग्री कराई। पाछें बिरजो ने श्रीगुसांईजी कों अपने हाथ सों सखड़ी, अनसखड़ी को थार साजि के भोजन करायो। पाछें सगरे वैष्णवन कों बिरजो परोसि के प्रेम में मगन ह्वै गई। आनन्द के आँसू नेत्रन में भरे। देह सगरी में पुलकावली भई। मन में कही, धन्य श्रीगुसांईजी हैं, और कृष्णभट्ट सरीखे भगवदीय हैं। जो-मोकों या सुख को अनुभव करायो। पाछें कछुक दिन पुरुषोत्तमपुरी में रहिके नित्य नये मनोरथ नाना प्रकार की सामग्री के, जा वैष्णव कों जो रुचे सो लिवाए। पाछें पुरुषोत्तमपुरी सों सब समाज सहित चले, सो वाही प्रकार प्रति दिन नित्य नई। ऐसे करत श्रीगोकुल आये। कछुक दिन गोकुल श्रीनाथजीद्वार रहि नाना प्रकार के मनोरथ किये। पाछें द्रव्य बच्यो सो बिरजो ने श्रीगुसांईजीं की भेट कियो। तब श्रीगुसांईजी बिरजो के ऊपर बहोत प्रसन्न भये, जो-अलौकिक, वैष्णव को मनोरथ कियो। पाछें बिरजो श्रीगुसांईजी सों विदा होई के समाज सहित उज्जैन आई। सगरे वैष्णव कों प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लिवाइ, खरची न हती तिनकों खरची, वस्त्र पात्र दे, सबन कों प्रसन्न करि

કથી. આ પ્રકારે ગામે ગામના વૈષ્ણવોને સાથે લઇ શ્રીપુરુષોત્તમપુરી આવ્યા. શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કર્યાં. નાના પ્રકારની સખડી, અનસખડી સામગ્રી કરાવી. પછી વીરજોએ શ્રીગુસાંઇજીને પોતાના હાથથી સખડી, અનસખડીનો થાળ સાજીને ભોજન કરાવ્યું. પછી બધાં વૈષ્ણવોને વીરજો પીરસીને પ્રેમમગ્ન થઇ ગઇ. આનંદનાં આંસુ નેત્રોમાં ભરાયાં. બધી દેહમાં પુલકાવલી થઇ. મનમાં કહ્યું ધન્ય શ્રીગુસાંઇજી છે અને કૃષ્ણભટ્ટ સરખા ભગવદીય છે કે મને આ સુખનો અનુભવ કરાવ્યો. પછી કેટલાક દિવસ પુરુષોત્તમપુરીમાં રહીને નિત્ય નવા મનોર્થ નાના પ્રકારની સામગ્રીના, જે વૈષ્ણવોને જે રૂચે તે લેવડાવે. પછી પુરુષોત્તમપુરીથી બધા સમાજ સહિત ચાલ્યા. તે એજ પ્રકારે પ્રતિદિન નિત્ય નવી (સામગ્રી) એમ કરતાં શ્રીગોકુલે આવ્યા. થોડા દિવસ શ્રીગોકુલ શ્રીનાથજીદ્વારે રહી નાના પ્રકારના મનોર્થ કર્યા. પછી દ્રવ્ય બચ્યું તે વીરજોએ શ્રીગુસાંઇજીને ભેટ કર્યું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વીરજોના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા કે અલૌકિક, વૈષ્ણવનો મનોરથ કર્યો. પછી વીરજો શ્રીગુસાંઇજીથી વિદાય થઈ સમાજ સહિત ઉજ્જૈન આવી. બધા વૈષ્ણવોને પ્રીતિપૂર્વક મહાપ્રસાદ લેવડાવી ખર્ચી

विदा किये। सो विरजो कृष्णभट्ट के संग तें भली वैष्णव भई। सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी इनसों प्रसन्न रहते। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। सो मावजी पटेल और विरजो ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ७८ ॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास क्षत्री, पश्चिम में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में श्रीनन्दरायजी के मुख्य खवास हैं। तहां 'जसवन्त' इनको नाम है। सो जसवंत, नंदरायजी कों वरुन पकरि ले गयो ता दिन श्रीनन्दरायजी कों घाट पर बैठारि आप अपने घर अपने कार्य कों गयो। पाछे श्री नन्दरायजी अकेले हते। सो वरुन ने पकरे। सो श्रीठाकुरजी सुनि के वरुनलोकतें श्रीनन्दरायजी कों ले आये। तब श्रीबलदेवजी श्रीनंदरायजी के खवास जसवन्त सों कहे, जो–श्रीनन्दरायजी कों वरुण ले गयो तब तू कहां रह्यो? तब जसवन्त ने कही, मैं अपने घर कछू काम आयो हतो। तब श्रीबलदेवजी शाप दिये। जो–जाऊ, भूमि पर परो। इतनो श्रम श्रीनन्दरायजी

न हती तेमने खर्ची वस्त्र, पात्र दई बधांने प्रसन्न करी विदाय कर्या. ते वीरजो कृष्णभट्टना संगथी भली वैष्णव थई. बधा वैष्णव अने श्रीगुसांईजी एमनाथी प्रसन्न रहेता. श्रीठाकुरजी सानुभावता जणावता. ते मावजी पटेल अने वीरजो एवां श्रीआचार्यजीनां कृपापात्र भगवदीय हतां. तेथी एमनी वार्ता क्यां सुधी कहीए. वा. ॥७८॥

※ ※ ※

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, गोपालदास क्षत्री पश्चिममां रहेता, नरोडाना वासी, तेमनी वार्तानो भाव कहीए छीए—

भावप्रकाश—ए गोपालदास लीलामां श्रीनंदरायजीना मुख्य खवास छे. त्यां 'जशवंत' एमनुं नाम छे. ते जशवंत नंदरायजीने वरुण पकडी लई गयो ते दिवसे श्रीनंदरायजीने घाट उपर बेसाडी पोते पोताना घर पोताना कार्य माटे गयो. पछी श्रीनंदरायजी एकला हता तेथी वरुणे पकड्या. ते श्रीठाकुरजीए सांभळीने वरुण लोकथी श्रीनंदरायजीने लई आव्या. त्यारे श्रीबलदेवजी श्रीनंदरायजीना खवास जशवंतने कहे, के श्रीनंदरायजीने वरुण लई गयो त्यारे तू क्यां रह्यो? त्यारे जशवंते कह्युं, हुं मारा घरे कंई कामे आव्यो हतो. त्यारे श्रीबलदेवजीए शाप आप्यो, के जा भूमिमां पडो. एटलो श्रम श्रीनंदरायजीने कराव्यो. खवास थई

गाम के लोग अनेक सुखी भये, द्रव्यादिक सों। या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग ले श्रीपुरुषोत्तमपुरी आये। श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। नाना प्रकार की सखड़ी अनसखड़ी सामग्री कराई। पाछें बिरजो ने श्रीगुसांईजी कों अपने हाथ सों सखड़ी, अनसखड़ी को थार साजि के भोजन करायो। पाछें सगरे वैष्णवन कों बिरजो परोसि के प्रेम में मगन है गई। आनन्द के आँसू नेत्रन में भरे। देह सगरी में पुलकावली भई। मन में कही, धन्य श्रीगुसांईजी हैं, और कृष्णभट्ट सरीखे भगवदीय हैं। जो–मोकों या सुख को अनुभव कराये। पाछें कछुक दिन पुरुषोत्तमपुरी में रहिके नित्य नये मनोरथ नाना प्रकार की सामग्री के, जा वैष्णव कों जो रुचे सो लिवाए। पाछें पुरुषोत्तमपुरी सों सब समाज सहित चले, सो वाही प्रकार प्रति दिन नित्य नई। ऐसे करत श्रीगोकुल आये। कछुक दिन गोकुल श्रीनाथजीद्वार रहि नाना प्रकार के मनोरथ किये। पाछें द्रव्य बच्यो सो बिरजो ने श्रीगुसांईजी की भेट कियो। तब श्रीगुसांईजी बिरजो के ऊपर बहोत प्रसन्न भये, जो–अलौकिक, वैष्णव को मनोरथ कियो। पाछें बिरजो श्रीगुसांईजी सों बिदा होई के समाज सहित उज्जैन आई। सगरे वैष्णव कों प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लिवाइ, खरची न हती तिनकों खरची, वस्त्र पात्र दे, सबन कों प्रसन्न करि

કથી. આ પ્રકારે ગામેગામના વૈષ્ણવોને સાથે લઇ શ્રીપુરુષોત્તમપુરી આવ્યા. શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કર્યાં. નાના પ્રકારની સખડી, અનસખડી સામગ્રી કરાવી. પછી વીરજોએ શ્રીગુસાંઇજીને પોતાના હાથથી સખડી, અનસખડીનો થાળ સાજીને ભોજન કરાવ્યું. પછી બધા વૈષ્ણવોને વીરજો પીરસીને પ્રેમમગ્ન થઇ ગઇ. આનંદનાં આંસુ નેત્રોમાં ભરાયાં. બધી દેહમાં પુલકાવલી થઇ. મનમાં કહ્યું ધન્ય શ્રીગુસાંઇજી છે અને કૃષ્ણભટ્ટ સરખા ભગવદીય છે કે મને આ સુખનો અનુભવ કરાવ્યો. પછી કેટલાક દિવસ પુરુષોત્તમપુરીમાં રહીને નિત્ય નવા મનોર્થ નાના પ્રકારની સામગ્રીના, જે વૈષ્ણવોને જે રૂચે તે લેવડાવે. પછી પુરુષોત્તમપુરીથી બધા સમાજ સહિત ચાલ્યા. તે એજ પ્રકારે પ્રતિદિન નિત્ય નવી (સામગ્રી) એમ કરતાં શ્રીગોકુલ આવ્યા. થોડા દિવસ શ્રીગોકુલ શ્રીનાથજીદ્વારે રહી નાના પ્રકારના મનોર્થ કર્યા. પછી દ્રવ્ય બચ્યું તે વીરજોએ શ્રીગુસાંઇજીને ભેટ કર્યું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી વીરજોના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા કે અલૌકિક, વૈષ્ણવનો મનોરથ કર્યો. પછી વીરજો શ્રીગુસાંઇજીથી વિદાય થઈ સમાજ સહિત ઉજ્જૈન આવી. બધા વૈષ્ણવોને પ્રીતિપૂર્વક મહાપ્રસાદ લેવડાવી ખર્ચી

विदा किये। सो बिरजो कृष्णभट्ट के संग तें भली वैष्णव भई। सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी उनसों प्रसन्न रहते। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते। सो मावजी पटेल और विरजो ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥ ७८ ॥

⁂ ⁂ ⁂

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास क्षत्री, पश्चिम में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में श्रीनन्दरायजी के मुख्य खवास हैं। तहां 'जसवन्त' इनको नाम है। सो जसवंत, नंदरायजी कों वरुन पकरि ले गयो ता दिन श्रीनन्दरायजी कों घाट पर बैठारि आप अपने घर अपने कार्य कों गयो। पाछे श्री नन्दरायजी अकेले हते। सो वरुन ने पकरे। सो श्रीठाकुरजी सुनि के वरुनलोकतें श्रीनन्दरायजी कों ले आये। तब श्रीबलदेवजी श्रीनंदरायजी के खवास जसवन्त सों कहे, जो–श्रीनन्दरायजी कों वरुण ले गयो तब तू कहां रह्यो? तब जसवन्त ने कही, मैं अपने घर कछू काम आयो हतो। तब श्रीबलदेवजी शाप दिये। जो–जाऊ, भूमि पर परो। इतनो श्रम श्रीनन्दरायजी

न हती तेमने खर्ची वस्त्र, पात्र दई बधांने प्रसन्न करी विदाय कर्या. ते वीरजो कृष्णभट्टना संगथी भली वैष्णव थई. बधा वैष्णव अने श्रीगुसांईजी एमनाथी प्रसन्न रहेता. श्रीठाकुरजी सानुभावता जणावता. ते मावजी पटेल अने वीरजो एवां श्रीआचार्यजीनां कृपापात्र भगवदीय हतां. तेथी एमनी वार्ता क्यां सुधी कहीए. वा. ॥७८॥

⁂ ⁂ ⁂

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, गोपालदास क्षत्री पश्चिममां रहेता, नरोडाना वासी, तेमनी वार्तानो भाव कहीए छीए—

भावप्रकाश—ए गोपालदास लीलामां श्रीनंदरायजीना मुख्य खवास छे. त्यां 'जशवंत' एमनुं नाम छे. ते जशवंत नंदरायजीने वरुण पकडी लई गयो ते दिवसे श्रीनंदरायजीने घाट उपर बेसाडी पोते पोताना घर पोताना कार्य माटे गयो. पछी श्रीनंदरायजी एकला हता तेथी वरुणे पकड्या. ते श्रीठाकुरजीए सांभळीने वरुण लोकथी श्रीनंदरायजीने लई आव्या. त्यारे श्रीबलदेवजी श्रीनंदरायजीना खवास जशवंतने कहे, के श्रीनंदरायजीने वरुण लई गयो त्यारे तू क्यां रह्यो? त्यारे जशवंते कह्युं, हुं मारा घरे कंई कामे आव्यो हतो. त्यारे श्रीबलदेवजीए शाप आप्यो, के जा भूमिमां पडो. एटलो श्रम श्रीनंदरायजीने कराव्यो. खवास थई

कों करायो। खवास होई रात्रि कों संग न रह्यो। सो पश्चिम में गोपालदास नरोड़ा में एक क्षत्री के घर प्रगटे। सो सात वर्ष के भये तब विद्या बहोत पढ़े। और द्रव्य बहोत हतो। और राजसी स्वभाव बहोत हतो। दस पांच आदमी आगे पाछे चलते। सो काहू कों बदते नाहीं। जो कोई भले मनुष्य होई तिनकूं एक दोय दोष लगावते। पाछे पश्चिम में एक दूसरो गाम हतो। तहां गोपालदास को विवाह भयो। सो ब्याह करि स्त्री कों ले गोपालदास आवत हते। सो मार्ग में एक बड़ो पंडित मिल्यो, तासों वाद करन लागे। सो तीन दिन मार्ग में डेरा करि रहै। परन्तु उह पंडित सों जीते नाहीं। पाछे लराई भई। तब गोपालदास को पिता छुड़ावन गयो। सो पंड़ित के मनुष्यन ने तीर मार्यो। सो गोपालदास को पिता मर्यो, तब गोपालदास हथियार ले दोरे। सो पंडित अपने मनुष्यन सहित भाजि गयो। गोपालदास बहोत ढूंढे, परन्तु कहूं पाये नाहीं। तब पिता की देह को संस्कार करि घर आये। पाछे गोपालदास द्वारिका श्रीरणछोडजी के दरसन कों गये। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हते। तब गोपालदास ने सुनी, जो–श्रीआचार्यजी बड़े पंडित हैं, मायामत खंडन किये हैं। तब गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों वाद करन कों आये। सो ततकाल चरचा में हारे।

રાત્રિએ સંગ ન રહ્યો. પછી પશ્ચિમમાં ગોપાલદાસ નરોડામાં એક ક્ષત્રીના ઘરે પ્રકટ્યા. તે સાત વર્ષના થયા, પછી વિદ્યા ઘણી ભણ્યા અને દ્રવ્ય બહુજ હતું. અને રાજસી સ્વભાવ ઘણો હતો. દશ–પાંચ મનુષ્ય આગળ પાછળ ચાલતા. તે કોઇને ગણકારતા નહીં. જે કોઈ ભલો મનુષ્ય હોય તેને એક બે દોષ લગાડતા. પછી પશ્ચિમમાં એક બીજું ગામ હતું ત્યાં ગોપાલદાસનો વિવાહ થયો. પછી વિવાહ કરી સ્ત્રીને લઈ ગોપાલદાસ પિતા સહિત આવતા હતા ત્યારે ગામમાં એક મોટો પંડિત મળ્યો તેનાથી વાદ કરવા લાગ્યા. ત્યાં ત્રણ દિવસ માર્ગમાં મુકામ કરી રહ્યા પરંતુ પંડિતથી જીતે નહીં. પછી લડાઈ થઈ ત્યારે ગોપાલદાસનો પિતા છોડાવવા ગયો. ત્યારે પંડિતોના મનુષ્યોએ તીર માર્યું. એટલે ગોપાલદાસનો પિતા મર્યો. ત્યારે ગોપાલદાસ હથિયાર લઈ દોડ્યા. ત્યારે તે પંડિત એના મનુષ્યો સહિત ભાગી ગયો. ગોપાલદાસે બહુ ખોળ્યો પરંતુ કંઈ મળ્યો નહી. પછી પિતાની દેહનો સંસ્કાર કરી ઘર આવ્યા. પછી ગોપાલદાસ દ્વારકાએ શ્રીરણછોડજીના દર્શને ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પધાર્યા હતા. ત્યારે ગોપાલદાસે સાંભળ્યું, કે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ મોટા પંડિત છે. માયાવાદ ખંડન કર્યો છે. ત્યારે ગોપાલદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુથી

तब गोपालदास ने श्रीआचार्य महाप्रभुन सों कह्यो, जो–वैष्णव धर्म में कहा है ? ठाकुरजी तो सब के घट में विराजत हैं । सगरो जगत कृष्णरूप आपहू कहें । तब वैष्णव कुत्ता आदि सों छुई क्यों जात हैं ? सब भगवद् रूप भयो तहां छुई कैसो जाई ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें । हमारो तो वेद मार्ग है । सो वेद शास्त्र यह कहत हैं, जो–जगत भगवद् रूप और इतने हीनतें छुई जाई । इतने उत्तम । दया सबके उपर करनो । यह कहे सो वेद रीति, वैष्णव कहत हैं । और तू निर्गुण व्यापक कहत हैं, संसार सब ब्रह्म रूप है । सो तू सब में दोष बुद्धि करि जाकी ताकी निन्दा क्यों करत है ? कपरा क्यों पहरे हैं ? ब्रह्म कों तो कछू करनो नाहीं । साक्षीवत् ह्वे रहे । अब तू सोच । या प्रकार सुनि के गोपालदास कों ज्ञान भयो । तब गोपालदास ने कही, अब मैं आपकी सरन हों । जन्म सगरो कुटिलता करत मोकों बीत्यो । अब मोकों सरन लेके कृतार्थ करो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास कों न्हवाय के नाम सुनाई ब्रह्मसंबंध कराये । तब गोपालदास ने कही, कृपा करि आप मेरे घर पधारिये । तब गोपालदास के घर नरोड़ा में श्री-आचार्यजी महाप्रभु पधारे । तब गोपालदास को बेटा वर्ष चार को हतो । ताकों

वाद करवाने आव्या. ते तत्काल चर्चामां हार्या त्यारे गोपालदासे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कह्युं, के वैष्णव धर्ममां शुं छे ? ठाकुरजी तो बधाना हृदयमां बिराजे छे. बधुं जगत कृष्णरूप आप पण कहे. त्यारे वैष्णव कुत्ता आदिथी अभडाई केम जाय छे ? बधुं भगवद्‌रूप थयुं त्यां अभडाई जवुं केवुं ? त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, अमारो तो वेद मार्ग छे. ते वेदशास्त्र एम कहे छे के जगत भग-वद्‌रूप अने आटला हीनथी अभडाई जाय. आटलां उत्तम. दया बधा उपर करवी. ए कह्युं ते वेद रीति, वैष्णव कहे छे अने तू निर्गुण व्यापक कहे छे. संसार बधो ब्रह्मरूप छे. तो तू बधामां दोष बुद्धि करी जेनी तेनी निंदा केम करे छे ? कपडा केम पहेरे छे ! ब्रह्मने तो कंइ करवानुं नथी. साक्षीवत् थई रहे. हवे तू विचार. आ प्रकार सांभळीने गोपालदासने ज्ञान थयुं. त्यारे गोपालदासे कह्युं, हवे हुं आपनी शरणे छुं. मारो बधो जन्म कुटिलता करतां वीत्यो. हवे मने शरणे लइने कृतार्थ करो. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुए गोपालदासने न्हवडावी नाम संभ-ळावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं. त्यारे गोपालदासे कह्युं, कृपा करी आप मारा घरे पधारो. त्यारे गोपालदासना घर नरोडामां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या. त्यारे गोपाल-दासनो बेटो चार वर्षनो हतो. तेने नाम संभळावी गोपालदासनी स्त्रीने नाम

नाम सुनाय गोपालदास की स्त्री कों नाम सुनाये। तब गोपालदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों बिनती करी, जो—महाराज! अब हमकों कहा आज्ञा है? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास सों कहें, तुमतें भगवद् सेवा तो बनेगी नाहीं। काहे तें, स्त्री पुत्र दैवी नांही हैं। तुम दैवी हो, सो तुमकों विरह बहोत है। विरह वारे कों हृदय में अनुभव बहोत होई। बाहर की क्रिया न बने। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गद्य-श्लोक और पंचाक्षर-मंत्र लिखके गोपालदास कों दिये। और कहे, इनकों भोग धरि खान-पान करियो। और हमारी आज्ञा है, जो जीव आवे तिनकों तुम नाम सुनैयो। जन्म तें स्वामी पद में रहै। तातें स्वामी पद तुम कों दिये हैं। जो वादी आवे तिन सों वाद करियो। तुमसों कोई न जीतेगो। यह गोपालदास सों कहि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अड़ेल पधारे। सो गोपालदास नाम सुनावते। बड़े टेक के वैष्णव भये। वादी सों वाद करे, जो मुख सों वात निकसे सोई करि दिखावे, श्रीआचार्य महाप्रभुन के बल सों इनको यश पश्चिम में फैल्यो।

वार्ता-प्रसंग १— **पाछे एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारकाजी पधारे, तब मार्ग में नरोड़ा गाम आयो। तब तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के घर पधारे। सो गोपालदास**

સંભળાવ્યું. ત્યારે ગોપાલદાસે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! હવે અમને શી આજ્ઞા છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ગોપાલદાસને કહે, તમારાથી ભગવદ્સેવા તો બનશે નહીં કેમકે સ્ત્રી-પુત્ર દૈવી નથી. તમે દૈવી છો તેથી તમને વિરહ ઘણો છે. વિરહવાળાને હૃદયમાં અનુભવ ઘણો થાય. બહારની ક્રિયા ન બને. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ ગદ્યશ્લોક અને પંચાક્ષર મંત્ર લખીને ગોપાલદાસને આપ્યાં અને કહે, એમને ભોગ ધરી ખાનપાન કરજે. વળી અમારી આજ્ઞા છે કે જે જીવ આવે તેને તમે નામ સંભળાવજો. જન્મથી સ્વામીપદમાં રહ્યા તેથી સ્વામીપદ તમને આપ્યું છે. જે વાદી આવે તેનાથી વાદ કરજો. તમને કોઈ નહીં જીતે. એમ ગોપાલદાસને કહી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોતે અડેલ પધાર્યા. પછી ગોપાલદાસ નામ સંભળાવતાં. મોટા ટેકના વૈષ્ણવ થયા. વાદીથી વાદ કરે. મુખેથી વાત નિકળે તેજ કરી દેખાડે. શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના બળથી એમનો યશ પશ્ચિમમાં ફેલ્યો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી એક સમય શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીદ્વારકાજી પધાર્યા. ત્યારે માર્ગમાં નરોડા ગામ આવ્યું. ત્યારે ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ગોપાલ-

तो घर न हते। गोपालदास को बेटा वर्ष चौदह को हतो। सो गोपालदास के बेटा सों श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूछे, जो–गोपालदास कहां गये हैं? तब गोपालदास के बेटा ने कही, जो–महाराज! श्रीठाकुरजी की सेवा कों गये हैं। यह वचन सुनि श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के बेटा पर बहोत अप्रसन्न भये। कहे, जो–गोपालदास को बेटा ऐसो अनुचित क्यों बोल्यो? अब इहां रहनो उचित नाहीं। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु मनमें विचारे, जो–गोपालदास कूं आवन दीजे, देखिये, गोपालदास की बुद्धि कैसी है? उह कैसो बोलत है? इतने में गोपालदास आय श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत् कियो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो–गोपालदास! तू कहां गयो हतो? तब गोपालदास ने कही, महाराज! पेट लाग्यो है। सो कछू व्यावृत्ति कों गयो हतो। यह बचन सुनि गोपालदास ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहोत प्रसन्न भये। कहे, वैष्णव कों ऐसो बोलनो उचित है। ऐसे बोलनो नाहीं, जो–व्यावृति लौकिक कों जाई, तहां श्रीठाकुरजी की सेवा को नाम लेई।

भावप्रकाश—पुष्टिमार्गी की यह रीति है, जो–सेवा में जाई तऊ लौकिक को नाम लेई। भगवद् धर्म प्रकास न करें, सो भगवदीय। आछे जीव

દાસના ઘરે પધાર્યા. ત્યારે ગોપાલદાસ ઘર ન હતા. ગોપાલદાસનો પુત્ર વર્ષ ચૌદનો હતો. ત્યારે ગોપાલદાસના બેટાને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પૂછે, કે ગોપાલદાસ ક્યાં ગયા છે? ત્યારે ગોપાલદાસના બેટાએ કહ્યું, મહારાજ! શ્રીઠાકુરજીની સેવા માટે ગયા છે. એ વચન સાંભળી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ગોપાલદાસના બેટા ઉપર બહુજ અપ્રસન્ન થયા. કહે, કે ગોપાલદાસનો પુત્ર આવું અનુચિત કેમ બોલ્યો? હવે અહીં રહેવું ઉચિત નથી. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ મનમાં વિચાર્યું, કે ગોપાલદાસને આવવા દો, જોઇએ ગોપાલદાસની બુદ્ધિ કેવી છે? એ કેવું બોલે છે? એટલામાં ગોપાલદાસે આવી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે ગોપાલદાસ! તુ ક્યાં ગયો હતો? ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, મહારાજ! પેટ લાગ્યું છે તે કંઈ વ્યાવૃત્તિએ ગયો હતો. એ વચન સાંભળી ગોપાલદાસ ઉપર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ ઘણા પ્રસન્ન થયા. કહે, વૈષ્ણવને એવું બોલવું ઉચિત છે. એવું બોલવું નહી કે વ્યાવૃત્તિ લૌકિકમાં જાય ત્યાં શ્રીઠાકુરજીની સેવાનું નામ લે.

ભાવપ્રકાશ—પુષ્ટિમાર્ગીઓની આ રીત છે, કે સેવામાં જાય તો પણ લૌકિકનું નામ લે. ભગવદ્ધર્મ પ્રકાશ ન કરે તે ભગવદીય. સારો જીવ ન હોય

सों कहें, जो-गोपालदास! तुम रात्रि कों जल कहां तें पियो। तब गोपालदास कहें, मोकों तो ज्वर चढ्यो, और तृषा बहोत लगी। कंठ सूख्यो, सो व्याकुल भयो हतो। तातें मोकों कछू खबरि नाहीं जो-किन जलपान करायो। तब रामदासजी ने गोपालदास सों कह्यो, जो-तुमकों श्रीगोवर्द्धनधर जलपान कराई झारी इहाँ ही धरि गये, सो हम झारी लेन आये हैं। तातें तिहारे बड़े भाग्य हैं। तब गोपालदास कहें, प्रभुन कों इतनो श्रम करनो पड्यो? अपने मनुष्य पर खीजे, तू पानी मेरे पास क्यों न राख्यो? और तू सोई गयो? मोकों प्यास बहोत लागी, सो श्रीठाकुरजी कों श्रम करनो पड्यो। सो बुरी भई। पाछे रामदासजी गोपालदास को समाधान करि झारी ले मन्दिर में आये। पाछे गोपालदास आछे भये। श्रीनाथजी को दरसन करि अपने घर आये। परन्तु श्रीगोवर्द्धनधर को विरह अष्ट प्रहर इनकों रहे।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन विरह बहोत भयो। सो विरह को चोखरा करिके गाये।

" केकी सिखंडी स्याम घन कंठ मनोहर हार।
धन्य ते दिन देखिशुं नैनन नन्दकुमार॥ "

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिका कों

ગોપાલદાસને કહ્યું, કે ગોપાલદાસ તમે રાત્રે જલ ક્યાંથી પીધું? ત્યારે ગોપાલદાસ કહે, મને તો જવર ચઢયો અને તૃષા ઘણી લાગી કંઠ સુકયો-તે વ્યાકુલ થયો હતો તેથી મને કંઇ ખબર નથી કે કોણે જલપાન કરાવ્યું? ત્યારે રામદાસજીએ ગોપાલદાસને કહ્યું, કે તમને શ્રીગોવર્દ્ધનધર જલપાન કરાવી ઝારી અહીં ધરી ગયા તે અમે ઝારી લેવા આવ્યા છીએ તેથી તમારાં મોટાં ભાગ્ય છે. ત્યારે ગોપાલદાસ કહે, પ્રભુને આટલો શ્રમ કરવો પડયો? પોતાના માણસ ઉપર ખીજ્યા, તેં પાણી મારી પાસે કેમ ન રાખ્યું? અને તૂ સૂઇ ગયો? મને તરસ બહુ લાગી તેથી શ્રીઠાકુરજીને શ્રમ કરવો પડયો તે ખરાબ થયું. પછી રામદાસજી ગોપાલદાસનું સમાધાન કરી ઝારી લઈ મન્દિરમાં આવ્યા. પછી ગોપાલદાસ સારા થયા. શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી પોતાને ઘરે આવ્યા પરંતુ શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો વિરહ અષ્ટ-પ્રહર એમને રહે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩-વળી એક દિવસ વિરહ ઘણો થયો. તેથી વિરહનો ચોખરો કરીને ગાયો-'કેકી શિખંડી શ્યામ ઘન'- (ઉપર જુઓ)

વાર્તા-પ્રસંગ ૪-વળી એક સમય શ્રીગુસાંઇજી શ્રીદ્વારકાએ શ્રીરણછોડજીના

श्रीरणछोड़जी के दरसन कों पधारे। तब मार्ग में नरोड़ा गाम में आये। सो गाम के बाहर डेरा करि उतरे। सो उत्थापन के समय गोपालदास श्रीगुसांईजी के दरसन कों चले। तब दोय जने गोपालदास के संग चले। सो श्रीगुसांईजी के दरसन तहां जाई किये। तब दोऊ जने गोपालदास सों कहें, हमकों श्रीगुसांईजी पास नाम दिवावो। तब गोपालदास ने कही, हमहूं नाम देन हैं। सो हम घर चलेंगे तब तुम हमारे घर आईयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे। या प्रकार दोऊ जने तीन बार गोपालदास सों कहै, जो–हमारो मनोरथ यह है, जो–हमकों श्रीगुसांईजी नाम सुनावें। सो तीनों बार गोपालदास ने कही, हमारे घर आइयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे। यह बात सब श्रीगुसांईजी ने सुनी। तब श्रीगुसांईजी उन दोऊ जनेन सों पूछे, जो–तुम गोपालदास सों कहा कहत हो? तब उनने कही, जो-महराज! हमारो मनोरथ यह है, जो–हमकों कृपा करिके आप नाम सुनावो। तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों नाम सुनाय कृतार्थ किये। पाछें श्रीगुसांईजी ने गोपालदास सों कही, जो–तुमकों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अङ्गीकार किये हैं, सो तो दृढ़ है। प्रभु तुमकों कबहू न छोड़ेंगे। परन्तु जितने सेवक तुम नाम सुनाय के किये हो, सो सब हमारे

દર્શને પધાર્યા ત્યારે માર્ગમાં નરોડા ગામમાં આવ્યા. ત્યાં ગામ બહાર મુકામ કરીને ઉતર્યા. પછી ઉત્થાપનના સમયે ગોપાલદાસ શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શને ચાલ્યા. ત્યારે બે જણા ગોપાલદાસની સાથે હતા. પછી શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન ત્યાં જઇને કર્યાં. ત્યારે બન્ને જણ ગોપાલદાસને કહે, અમને શ્રીગુસાંઇજી પાસે નામ અપાવો. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, અમે પણ નામ આપીએ છીએ. તે અમે ઘર ચાલીએ ત્યારે તમે અમારા ઘરે આવજો. અમે તમને નામ સંભળાવીશું. આ પ્રકારે બન્ને જણે ત્રણવાર ગોપાલદાસને કહ્યું, કે અમારો મનોરથ એ છે કે અમને શ્રીગુસાંઇજી નામ સંભળાવે. ત્યારે ત્રણેવાર ગોપાલદાસે કહ્યું, અમારા ઘરે આવજો. અમે તમને નામ સંભળાવીશું. એ વાત બધી શ્રીગુસાંઇજીએ સાંભળી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી એ બન્નેને પૂછે, કે તમે ગોપાલદાસને શું કહો છો? ત્યારે એમણે કહ્યું, મહારાજ! અમારો મનોરથ એ છે કે અમને કૃપા કરીને આપ નામ સંભળાવો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ બન્નેને નામ સંભળાવી કૃતાર્થ કર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ ગોપાલદાસને કહ્યું, કે તમને તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ અંગીકાર કર્યા છે. તે તો દૃઢ છે. પ્રભુ તમને કદી નહીં છોડે. પરંતુ જેટલા સેવક તમે નામ સંભળાવીને કર્યા છે તે બધા અમારા નહીં થાય. પુષ્ટિમાર્ગથી બહિ-

न होइंगे। पुष्टिमार्ग तें बहिर्मुख होइंगे। सो यह बात सगरे वैष्णव सुनिके श्रीगुसांईजी के सेवक होई कृतार्थ भये। और जो कोई रहि गये सो पुष्टिमार्ग तें भ्रष्ट भये। तिनकों श्रीगुसांईजी 'गंगोज' कहते। सो गोपालदास सदा विरह दसा में मगन रहते। ताते इनकी वार्ता कहां तांई कहिये। वार्ता ॥७९॥

भावप्रकाश—जैसे श्रीगंगाजी की धारा सों जल छूटि न्यारों जल रहै। सो सगरे मनुष्यन कों पाप रूप है। ताके छूवे तें दोष लागे, तद्वत् भये। यामें यह जताये, जो-गोपालदास कों स्वामी पद आयेतें जीवन को बिगार भयो। तातें दैन्यता बड़ो पदार्थ है। सब फल कों सिद्ध करे। और अहंकार महाबाधक है यह दिखाये। तातें गोपालदास तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। जिनकों श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जनावते। जल पान अपनी झारी तें पिवाये। वैष्णव ॥७९॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बादरायनदास, पुष्करना ब्राह्मण स्त्री पुरुष, सो मोरवी में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये लीला में श्रीललिताजी की सखी हैं। इनको नाम 'श्रुतिरूपा' है। और इनकी स्त्री को नाम 'गंगा' है।

मुख थशे. એ વાત બધા વૈષ્ણવોએ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીના સેવક થઈ કૃતાર્થ થયા. અને જે કોઈ રહી ગયા તે પુષ્ટિમાર્ગથી ભ્રષ્ટ થયા. તેમને શ્રીગુસાંઇજી 'ગંગોજ' કહેતા ને ગોપાલદાસ સદા વિરહ દશામાં મગન રહેતા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

ભાવપ્રકાશ—જેમ ગંગાજીની ધારાથી જલ છૂટી અલગ જલ રહે તે બધા મનુષ્યોને પાપ રૂપ છે. એને અડવાથી દોષ લાગે તદ્વત્ થયા. એમાં એ જતાવ્યું કે ગોપાલદાસને સ્વામી પદ આવવાથી જીવોનો બગાડ થયો. તેથી દીનતા મોટો પદાર્થ છે. બધા ફલને સિદ્ધ કરે અને અહંકાર મહાબાધક છે એ દેખાડયું. તેથી ગોપાલદાસ તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા જેમને શ્રીગોવર્દ્ધનધર અનુભવ જણાવતા. જલપાન પોતાની ઝારીથી કરાવ્યું. ॥ વૈ. ૭૯ ॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, બાદરાયણદાસ પુષ્કરણા બ્રાહ્મણ સ્ત્રી-પુરૂષ તે મોરબીમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'શ્રુતિ-રૂપા' છે અને એમની સ્ત્રીનું નામ 'ગંગા' છે.

वार्ता प्रसंग १—सो मोरबी में एक पुष्करना ब्राह्मण के घर जन्में। तब माता पिता नें इनको नाम बादा धर्‍यो। पाछें जब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक भये, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु इनको नाम बादरायनदास धरे। सो बादा बरस तेरह के भये। तब इनको गाम ही में ब्याह भयो। सो मोरबी में रहते। और एक वाछव भट्ट (वत्सा भट्ट) गुजराती ब्राह्मण हते, सो गुजरात में रहते। श्रीभागवत की कथा कहि निर्वाह करते। सो वाछव भट्ट श्रीद्वारिका श्रीरणछोड़जी के दरसन कों चले। तब मारग में मोरबी गाम आयो, तहां गये। तब बादराइन ने वाछव भट्ट कों राखे, अपने घरमें। सो वाछवभट्ट के सेवक होई नाम पायो। पाछें घरमें भट्ट पास श्रीभागवत बादराइनदास ने संपूर्ण सुन्यो। पाछें वाछवभट्ट तो श्रीद्वारिका कों गये। पाछें कछुक दिन में श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारिका कों पधारे। सो मोरबी गाम के बाहर एक बगीची में उतरे। तब मोरबी के सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन कूं आये। तामें बादा हू आये। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु वा समय श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहे। सो 'भँवर गीत' को प्रसंग ऐसो कहे, जो-बादा कों मूर्छा आइ गई। सो एक पहर में सावधान भये। तब

વાર્તા પ્રસંગ ૧-એ મોરબીમાં એક પુષ્કરણા બ્રાહ્મણને ઘરે જન્મ્યા ત્યારે માત-પિતાએ એમનું નામ 'વાદા' ધર્યું. પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક થયા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ એમનું નામ બાદરાયણદાસ ધર્યું. પછી વાદા વરસ તેરના થયા. ત્યારે એમનો ગામમાંજ વિવાહ થયો. તે મોરબીમાં રહેતા. વળી એક વાછવ ભટ્ટ (વત્સા ભટ્ટ) ગુજરાતી બ્રાહ્મણ હતા. તે ગુજરાતમાં રહેતા. શ્રીભાગવતની કથા કહી નિર્વાહ કરતા. તે વાછવ ભટ્ટ શ્રીદ્વારિકા શ્રીરણછોડજીના દર્શને ચાલ્યા. ત્યારે માર્ગમાં મોરબી ગામ આવ્યું ત્યાં ગયા. ત્યારે બાદરાયણે વાછવ ભટ્ટને રાખ્યા, પોતાના ઘરમાં. પછી વાછવભટ્ટના સેવક થઇ નામ પામ્યા. પછી ઘરમાં ભટ્ટ પાસે શ્રીભાગવત બાદરાયણદાસે સંપૂર્ણ સાંભળ્યું. પછી વાછવભટ્ટ તો શ્રીદ્વારકાએ ગયા. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીદ્વારકાએ પધાર્યા. ત્યારે મોરબી ગામની બહાર એક બગીચામાં ઉતર્યા. ત્યારે મોરબીના બધા વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુનાં દર્શને આવ્યા. તેમાં વાદા પણ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ તે સમયે શ્રીસુબોધિનીજીની કથા કહી, તે ભ્રમરગીતનો પ્રસંગ એવો કહ્યો કે વાદાને મૂર્છા આવી ગઇ. પછી એક પ્રહરમાં સાવધાન થયા. ત્યારે વાદા મનમાં કહે, કે વાછ-

वादा मनमें कहे, जो–वाछव भट्ट पास गये, श्रीभागवत सुन्यो, परन्तु ऐसो आनन्द नाहीं आयो। तब वादा ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत् करि बिनती करी, जो–महाराज! आप कृपा करि मोकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो–तू वाछव भट्ट को सेवक तो होई चुक्यो है। अब सेवक क्यों होत हैं? हम तो तुमकों फेरि सेवक न करेंगे। तब वादा श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों बिनती करि, अपने घर आई, स्त्री सों कह्यो, जो–श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं, सो तो साक्षात् भगवान ही हैं। भँवर गीत को प्रसंग कथा ऐसी कहे सो मोकों मूर्छा आई। पाछें मैं सेवक होन की बिनती करी, सो आपने नाहीं करी। जो तू तो वाछव भट्ट को सेवक है, अब सेवक तोकों न करेंगे। सो अब कैसे करिये? जो–श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेवक करें तों कृतार्थ याही जन्म में होई। तब स्त्री ने कही, तुमकों बिनती करतें आई नाहीं। मोकों ले चलो, तो मैं बिनती करूँ। तब वादा ने कही चलो। सो वादा और वादा की स्त्री श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आये। तब वादा की स्त्री ने दण्डवत् करिके कह्यो, जो–महाराज! मेरो पति सेवक होनकी बिनती आपुसों कियो। सो आप नाहीं किये। सो आप तो, पतित, अधम हम सरीखे संसार में पड़े हैं, तिनके उद्धार करनार्थ पधारे हो। सो सरन लीजे। तब श्रीआचा-

---

વભટ્ટ પાસ ગયા શ્રીભાગવત સાંભળ્યું પરંતુ આવો આનન્દ નહીં આવ્યો. ત્યારે વાદાએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી કે, મહારાજ! આપ કૃપા કરી મને સેવક કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે તુ વાછવભટ્ટનો સેવક તો થઇ ચુકયો છે. હવે સેવક કેમ થાય છે? અમે તો તને ફરી સેવક નહીં કરીએ. ત્યારે વાદાએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને વિનંતી કરી પોતાના ઘરે આવી સ્રીને કહ્યું, કે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પધાર્યા છે. તે તો સાક્ષાત્ ભગવાનજ છે. ભ્રમરગીતનો પ્રસંગ કથા એવી કહી, કે મને મૂર્છા આવી. પછી મેં સેવક થવાની વિનંતી કરી ત્યારે આપે ના કહી. કે તુ તો વાછવભટ્ટનો સેવક છે. હવે સેવક તને નહીં કરીએ. માટે હવે શુ કરીએ? જો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ સેવક કરે તો કૃતાર્થ આ જ જન્મમાં થઇએ. ત્યારે સ્રીએ કહ્યું, તમને વિનંતી કરતાં આવડી નહીં. મને લઇ ચાલો. પછી વાદા અને વાદાની સ્રી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવ્યાં. ત્યારે વાદાની સ્રીએ દંડવત કરીને કહ્યું, કે મહારાજ! મારા પતિએ આપને સેવક કરવાની વિનંતી કરી તે આપે ના કહી. તે આપ તો પતિત, અધમ અમારા સરખા જે સંસારમાં પડ્યા છે તેમનો ઉદ્ધાર કર-

र्यजी महाप्रभु कहें, जो हम तो यातें यों नाहीं करी, जो—वाछव भट्ट के सेवक है चुके हो। फेरि क्यों सेवक होत हो? तब स्त्री ने कही, जो—महाराज! वाछव भट्ट के सेवक भये तातें हमारो तो कछू अर्थ सर्यो नाहीं। ऐसे ब्राह्मण जीविका के लिये ठोर ठोर श्रीभागवत की कथा कहेत डोलत हैं। सो हमारो उद्धार कहा करेंगे? तातें आप सरन ले हमारो उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहें, जो—आज तो सांझ भई है, सवेरे तुमकों सेवक करेंगे। अब तो तुम घर जाव। तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत् करि घर आये। पाछें प्रातःकाल दोऊ जने आइ, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत् करि बिनती किये, जो—महाराज! कृपा करि हमारे घर पधारि रसोई करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु बादा के घर पधारि, स्त्री पुरुष दोऊ जनकों न्हवाय के नाम सुनाये, ब्रह्मसम्बन्ध कराये। पाछें आप रसोई पाक सामग्री करि भोग धरि भोजन किये। बादा को नाम बादराईनदास धरि, श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र भगवद् सेवा दे, दोय दिन बादरायनदास के घर रहे। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी श्रीद्वारिका कों पांउ धारे। तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग द्वारिका कों

વાને પધાર્યા છો તેથી શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, અમે તો એને એમ ના કહી કે વાછવભટ્ટના સેવક થઇ ચુકયા છો, ફરી કેમ સેવક થાવ છો ? ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, કે મહારાજ ! વાછવભટ્ટના સેવક થયા તેથી અમારો તો કાંઇ અર્થ સર્યો નહીં. એવા બ્રાહ્મણ જીવિકાને માટે જગે જગે શ્રીભાગવતની કથા કહેતા ફરે છે તે અમારો ઉદ્ધાર શું કરશે ? તેથી આપ શરણે લઇ અમારો ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે, કે આજ તો સાંજ થઇ છે. સવારે તમને સેવક કરીશું. હવે તો તમે ઘર જાવ. ત્યારે સ્ત્રીપુરૂષ બન્ને જણા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કરી ઘરે આવ્યાં પછી પ્રાતઃકાળ બન્ને જણાએ આવીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! કૃપા કરી અમારા ઘરે પધારી રસોઇ કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ વાદાના ઘરે પધારી સ્ત્રી-પુરૂષ બન્ને જણને ન્હવડાવીને નામ સંભળાવી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી પોતે રસોઇ પાક-સામગ્રી કરી ભોગ ધરી ભોજન કર્યું. વાદાનું નામ બાદરાયણદાસ ધરી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં પ્રસાદી વસ્ત્ર ભગવદ્-સેવા દઈ બે દિવસ બાદરાયણના ઘરે રહ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દ્વારકા પધાર્યા. ત્યારે સ્ત્રીપુરૂષ બન્ને જણ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે દ્વારિકાં ગયાં. ત્યારે શ્રીદ્વારકા-

गये। सो श्रीद्वारिकाजी में श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी एक बरस १ महिना तांई रहे। तब बादरायनदास और बादरायनदास की स्त्री सगरी सेवा किये। जल ल्यावनो, रसोई की परचारगी, धोवती उपरेना श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के नित्य धोवते। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी प्रसन्न होई बादरायनदास सों कहे, तुम जाइ स्त्री सहित घर में भगवद् सेवा करो। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे। और बादरायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने मोरबी में अपने घर आय वस्त्र सेवा प्रीति पूर्वक करन लागे। तब श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जनावन लागे। सो बादरायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ? वार्ता ॥८०॥

※ ※ ※

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सूरदासजी सारस्वत ब्राह्मण, दिल्ली के पास सींहीं गाम है तहां रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये सूरदासजी लीला में श्रीठाकुरजी के अष्टसखा हैं, सो तिन में ये 'कृष्णसखा' को प्राकट्य हैं। तहाँ यह सन्देह होय जो—निकुंज लीला में तो सखीजन कों अनुभव है, जो सखा तहां नाहीं है। सो सूरदासजी ने रहस्य-

---

જીમાં શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ એક વર્ષ એક મહિના સુધી રહ્યા. ત્યારે બાદરાયણદાસ અને બાદરાયણદાસની સ્ત્રીએ બધી સેવા કરી. જળ લાવવું, રસોઇની પરચારગી, ધોતીઉપરણા શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના નિત્ય ધુએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પ્રસન્ન થઇને બાદરાયણદાસને કહે, તમે જઇ સ્ત્રી સહિત ઘરમાં ભગવદ્‌સેવા કરો. પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ પૃથ્વીપરિક્રમાએ પધાર્યા અને બાદરાયણદાસ, સ્ત્રી-પુરૂષ બન્ને જણ મોરબીમાં પોતાના ઘરે આવી વસ્ત્ર-સેવા પ્રીતિપૂર્વક કરવા લાગ્યાં. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા તે બાદરાયણદાસ સ્ત્રી-પુરુષ બન્ને જણ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીનાં એવાં કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતાં તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ ? વાર્તા ॥૮૦॥

※ ※ ※

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, સૂરદાસજી સારસ્વત બ્રાહ્મણ દિલ્હીની પાસે સિંહીં ગામ છે ત્યાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ સૂરદાસજી લીલામાં શ્રીઠાકુરજીના અષ્ટસખા છે તેમાં એ 'કૃષ્ણ સખા'નું પ્રાકટ્ય છે. ત્યાં એ સંદેહ થાય કે, નિકુંજ લીલામાં તો સખીજનોને અનુભવ છે. સખા ત્યાં નથી. તો સૂરદાસજીએ રહસ્ય લીલા વિના અનુભવ કેવી રીતે

लीला, बिना अनुभव कैसे गाई? तहां कहत हैं, जो श्रीभागवत में कहे हैं, जो–जब श्रीठाकुरजी आप वन में गौचारन लीला में सखान के संग पधारत हैं, सो सगरी गोपीजन लीला को अनुभव करत हैं। सो घर में सगरी लीला वन की गान करत हैं। ता पाछें जब श्रीठाकुरजी संध्या समय वन तें घरकूँ आवत हैं, ता पाछें रात्रि कों गोपीजन सों निकुंज में लीला करत हैं। सो तब अंतरंगी सखान कों विरह होत है, तब वे निकुंजलीला को गान करत हैं, अनुभव करत हैं। सो काहेते? कुंज में सखीजन हैं सो तिनके दोय स्वरूप हैं सो कहत हैं—पुंभाव के सखा और स्त्री भाव की सखी। सो दिन में सखा द्वारा अनुभव और रात्रि कों सखी द्वारा अनुभव है। सो काहेतें? जो वेद की ऋचा हैं सो गोपी हैं। और वेद के जो मंत्र है सो सखा हैं। परंतु गोपीजन देखिवे मात्र स्त्री हैं, सो इनके पति हैं, परंतु ये स्त्री नाहीं हैं। सो ऐसे–(जैसे) भुज्यो अन्न होय सो धरती में बीज नाहीं ऊगे। तेसे ही इनकों लौकिक विषय नाहीं है। सो यहां तो रसरूपलीला सदा सर्वदा एक रस हैं। सो तेसे ही अंतरंगी सखा श्रीठाकुरजी के अंगरूप हैं। सो सखी रूप, सखा रूप, दोय रूप सों रात्रदिन लीलारस करत हैं। सो तासों सूरदास 'कृष्णसखा' को प्राकट्य हैं और कृष्णसखा को दूसरो स्वरूप सखी है, सो लीला कुंज में हैं तिनको नाम "चंपकलता" है। सो तासों सूरदास कों सगरी लीलाको

ગાઈ? ત્યાં કહે છે જે શ્રીભાગવતમાં કહે છે, કે જ્યારે શ્રીઠાકુરજી આપ વનમાં ગોચારણ લીલામાં સખીઓની સાથે પધારે છે ત્યારે સઘળી ગોપીજન લીલાનો અનુભવ કરે છે તે ઘરમાં બધી લીલા વનની ગાન કરે છે. તે પછી જ્યારે શ્રીઠાકુરજી સંધ્યા સમય વનથી ઘરે આવે છે તે પછી રાત્રિએ ગોપીજન સાથે નિકુંજમાં લીલા કરે છે ત્યારે અંતરંગી સખાઓને વિરહ થાય છે. ત્યારે તે નિકુંજ લીલાનું ગાન કરે છે અનુભવ કરે છે. તે શાથી? કુંજમાં સખીજનો છે તેમનાં બે સ્વરૂપ છે તે કહીએ છીએ–પુંભાવના સખા અને સ્ત્રીભાવની સખી. દિવસમાં સખાદ્વારા અનુભવ અને રાત્રિએ સખી દ્વારા અનુભવ છે તે શાથી? કે વેદની ઋચા છે તે ગોપી છે. અને વેદના જે મંત્ર છે તે સખા છે. પરંતુ ગોપીજન દેખવા માત્રનાં સ્ત્રી છે એમના પતિ છે પરંતુ એ સ્ત્રી નથી. તે એમ કે જેમ શેકેલું અન્ન હોય તેનું ધરતીમાં બીજ ન ઉગે તેમજ આમને લૌકિક વિષય નથી. અહીંતો રસરૂપ લીલા સદાસર્વદા એકરસ છે. તે અંતરંગી સખા શ્રીઠાકુરજીના અંગરૂપ છે તે સખીરૂપ સખારૂપ બન્ને રૂપોથી રાત્રિ દિવસ લીલા કરે છે. તેથી સૂરદાસ 'કૃષ્ણ સખા'નું પ્રાકટ્ય છે અને કૃષ્ણ સખાનું બીજું સ્વરૂપ સખી છે તે લીલા કુંજમાં છે તેમનું નામ 'ચંપકલતા' છે. તેથી સૂરદાસને બધી લીલાનો અનુભવ

अनुभव श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कृपातें होयगो । सो प्रकार कहत हैं । तहां यह संदेह होय जो लीला संबंधी है सो पहले तें अनुभव क्यों नाहीं भयो । सो इनकों मोह क्यों भयो ? तहां कहत हैं, जो–श्रीठाकुरजी भूमि के ऊपर प्रगट होय कैं लौकिक की नांई लीला करत हैं, सो जस प्रकट करनार्थ । सो लीला गाइ जगत में लौकिक जीव कृतार्थ होत हैं। तैसेई श्रीठाकुरजी के भक्त हू जगत में लौकिक लीला करि अलौकिक दिखावत हैं । जैसे श्रीरुकिमिनीजी साक्षात् श्रीलक्ष्मीजीको स्वरूप हैं, परंतु जब जन्मी तब देवी पूजिकैं वर मांग्यो । फेरि श्रीठाकुरजी के पास ब्राह्मण ब्याह के लिये पठायो । सो यह जगत में लीला प्रगट करनार्थ । जैसे कालिंदीजी सूर्य द्वारा प्रगट होय कैं श्रीयमुनाजी में मंदिर करि तपस्या करि, अर्जुन सों कही, जो मैं श्रीठाकुरजी कों वरूँगी । तब श्रीठाकुरजी आपु विवाह कियो । सो ये लीलामात्र, (क्यों जो) ये सदा श्रीठाकुरजी की प्रिया हैं । सो व्रज में श्रीस्वामिनीजी और श्रीठाकुरजी आपु ये दोउ एक रूप हैं, परंतु व्रजलीला प्रगट करिवे के लिये श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजी के घर प्रगटे और स्वामिनीजी श्रीवृषभानजी के घर प्रगट होय कैं अनेक उपाय मिलिवे कों रात्रदिन किये । सो यह लीला (केवल) जगत में प्रगट करिवे के लिये (ही) । (नाँतरु) ये तो सदा एक रस लीला करत हैं । सो तैसेई सूरदास श्रीआचार्यजी के सेवक होय कें भगवल्लीला

શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની કૃપાથી થશે તે પ્રકાર કહે છે. ત્યાં આ સંદેહ થાય કે લીલા સંબંધી છે તો પહેલાંથી અનુભવ કેમ ન થયો ? એમને મોહ કેમ થયો ? ત્યાં કહે છે શ્રીઠાકુરજી ભૂમિ ઉપર પ્રગટ થઇને લૌકિકની માફક લીલા કરે છે તે યશ પ્રકટ કરવાને માટે. તે લીલા ગાઇ જગતમાં લૌકિક જીવ કૃતાર્થ થાય છે. તેવીજ રીતે શ્રીઠાકુરજીના ભક્ત પણ જગતમાં લૌકિક લીલા કરી અલૌકિક બતાવે છે. જેમ શ્રીરૂકમણીજી સાક્ષાત્ શ્રીલક્ષ્મીજીનું સ્વરૂપ છે પરંતુ જ્યારે જન્મી ત્યારે દેવી પૂજીને વર માગ્યો. પછી શ્રીઠાકુરજીની પાસે બ્રાહ્મણ લગનને માટે મોકલ્યો. તે આ જગતમાં લીલા પ્રકટ કરવા માટે. જેમ કાલિંદીજી સૂર્યદ્વારા પ્રકટ થઇને શ્રીયમુનાજીમાં મંદિર કરી તપસ્યા કરી અર્જુનને કહ્યું, કે હું શ્રીઠાકુરજીને વરીશ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પોતે વિવાહ કર્યો. એ લીલા માત્ર. કેમ જે એ સદા શ્રીઠાકુરજીની પ્રિયા છે. વળી વ્રજમાં શ્રીસ્વામિનીજી અને શ્રીઠાકુરજી આપ એ બન્ને એકરૂપ છે. પરંતુ વ્રજલીલા પ્રકટ કરવાને માટે શ્રીઠાકુરજી શ્રીનંદરાયજીના ઘરે પ્રકટ્યા અને સ્વામિનીજી શ્રીવૃષભાનજીના ઘરે પ્રગટ થઇને અનેક ઉપાય મળવાના રાત્ર દિવસ કર્યા. એ લીલા કેવલ જગતમાં પ્રકટ કરવાને માટેજ હતી. નહિં તો એ તો સદા એકરસ લીલા કરે છે તેમજ સૂરદાસે શ્રીઆચાર્ય-

गाये। सो यामें स्वामी को जस बढ़े। सो जिनके सेवक सूरदास ऐसे भगवदीय, तिनके स्वामी श्रीआचार्यजी आपु तिन की सरन जैये। सो या प्रकार जगत में लीला करि जस प्रगट किये, सो आगे लौकिक जीव कों गान करि भगवत्प्राप्ति होय।

सो सूरदासजी जगत पर अब ही प्रगटे, परंतु लीलाको ज्ञान नाहीं है। सो सूरदासजी दिल्ली पास चारि कोस उरे में एक सीहीं गाम है, जहां राजा परीक्षित के बेटा जन्मेजय ने सर्प-यज्ञ कियो है। सो ता गाम में एक सारस्वत ब्राह्मण के यहां प्रगटे। सो सूरदासजीके जन्मत ही सों नेत्र नाहीं हैं। और नेत्रन को आकार गठेला कछू नाहीं; ऊपर भोंह मात्र है। सो या भांति सों सूरदासजी को स्वरूप है। सो तीन बेटा या सारस्वत ब्राह्मण के आगे के हते, और घर में बहोत निष्किंचन हतो। वा सारस्वत ब्राह्मण के घर चौथे सूरदासजी प्रगटे। सो तब इनके नेत्र न देखे, आकार (हू) नाहीं। सो या प्रकार देख के वा ब्राह्मण ने अपने मन में बहोत सोच कियो, और दुःख पायो। जो देखो—एक तो विधाता ने हमकों निष्कंचन कियो, और दूसरे घर में ऐसे पुत्र जन्म्यों। जो अब याकी कौन तो टहल करेगो? और कौन याकी लाठी पकरेगो? सो या प्रकार ब्राह्मण ने अपने मन में बहोत दुःख पायो। सो काहेतें जो-जन्में पाछे नेत्र जांय तिनकों

જીના સેવક થઇને ભગવલ્લીલા ગાઇ એમાં સ્વામીનો યશ વધે. જેમના સેવક સૂરદાસ એવા ભગવદીય તેમના સ્વામી શ્રીઆચાર્યજી આપ તેમની શરણે જઇએ આ પ્રકારે જગતમાં લીલા કરી યશ પ્રકટ કર્યો. કેમ જે આગળ લૌકિક જીવોને ગાન કરી ભગવત્પ્રાપ્તિ થાય.

એ સૂરદાસજી જગત ઉપર હમણાંજ પ્રકટ્યા પરંતુ લીલાનું જ્ઞાન નથી. સૂરદાસજી દિલ્હી પાસે ચાર કોસ આ તરફ એક સીહીં ગામ છે, જ્યાં રાજા પરીક્ષિતના બેટા જન્મેજયે સર્પયજ્ઞ કર્યો છે તે ગામમાં એક સારસ્વત બ્રાહ્મણને ત્યાં પ્રકટ્યા. તે સૂરદાસજીને જન્મથીજ નેત્ર નથી અને નેત્રોનો આકાર ઉપસેલો ભાગ કંઇ નથી. ઉપર ભમર માત્ર છે. એ રીતિનું સૂરદાસજીનું સ્વરૂપ છે વળી ત્રણ બેટા આ સારસ્વત બ્રાહ્મણને આગળ હતા અને ઘરમાં બહુ નિષ્કંચન હતો. તે સારસ્વત બ્રાહ્મણને ઘરે ચોથા સૂરદાસજી પ્રકટ્યા ત્યારે એમનાં નેત્ર ન જોયાં આકાર પણ નહીં. આ પ્રકારે જોઇને એ બ્રાહ્મણે પોતાના મનમાં બહુ શોચ કર્યો અને દુઃખ પામ્યો. કે જુઓ એકતો વિધાતાએ અમને નિષ્કંચન કર્યા અને બીજું ઘરમાં આવો પુત્ર જન્મ્યો. હવે આની કોણ તો ટહલ કરશે. અને કોણ એની લાઠી પકડશે? આ પ્રમાણે બ્રાહ્મણ પોતાના મનમાં બહુ દુઃખ પામ્યો. કેમકે જન્મ્યા પછી નેત્ર જાય તેને આંધળો કહિએ, સૂર ન કહિએ અને આતો

आंधरा कहिये, सूर न कहिये। और ये तो सूर हैं, सो माता–पिता घर के सब कोई इनसों प्रीति करें नाहीं। जानें, जो नेत्र बिना को पुत्र कहा ? तासों इनसों कोई बोलतो नाहीं। सो एसे करत सूरदासजी बरस छह के भये। तब पिता कों वा गाम के एक द्रव्यपात्र क्षत्री जजमान ने दोय मोहौर दान में दीनी। तब यह ब्राह्मण उन मोहौरन कों ले के अपने घर आयो, और अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो, और स्त्री तथा घर में देह संबंधी बेटा बेटी हते सो तिन सबन सों कही जो– भगवान ने दोय मोहौर दीनी हैं सो काल्हि इनकों बटाय के सीधो सामान लाऊँगो। तातें अपने घर में दोय चार महीना को काम चलेगो। सो या प्रकार सबन कों वे दोय मोहोर दिखाई। ता पाछें रात्रि कों एक कपड़ा में बांधि के ताक में धरि के सोयो। तब रात्रि कों दोय मोहौरन कों मूसा ले गये। सो घर की छांतिन में भिल्ले में धरि दीनी। तब सवारे उठि के देखे तो मोहौर नाहीं है। सो तब तो सूरदास के मातापिता छाती कूटन लागे, और रोवन लागे, और अपने मन में अति कलेश करन लागे। सो वा दिन खानपान नाहीं कियो। सो या भांति सों घनो विलाप करन लागे। सो देखिके सूरदासजी मातापिता सों बोले, जो–तुम एसो दुःख विलाप क्यों करत हो ? जो–भगवान को भजन सुमिरन करो तासों सब भलो होय। सो या भांति सूरदास उनसों बोले। तब माता-

---

સૂર છે. તેથી માતાપિતા ઘરના સર્વ કોઇ એમનાથી પ્રીતિ ન કરે. જાણે કે નેત્ર વિનાનો પુત્ર શા કામનો ? તેથી એમનાથી કોઇ બોલતું નહીં. એમ કરતાં સૂરદાસજી વર્ષ છ ના થયા. ત્યારે પિતાને તે ગામના એક દ્રવ્યપાત્ર ક્ષત્રી જજમાને બે મોહોર દાનમાં દીધી. ત્યારે આ બ્રાહ્મણ એ મહોરોને લઇને પોતાના ઘરે આવ્યો અને પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થયો અને સ્રી તથા ઘરમાં દેહ સંબંધી બેટા–બેટી હતાં તેમને બધાંને કહ્યું, કે ભગવાને બે મહોરો દીધી છે. તે કાલે એને વટાવીને સીધું સામાન લાવીશ. ત્યારે આપણા ઘરમાં બે ચાર મહીનાનું કામ ચાલશે. આ પ્રકારે બધાંને બે મહોર દેખાડી. ત્યાર પછી રાત્રિએ એક કપડામાં બાંધીને (તેને) તાકમાં ધરીને સુઈ રહ્યો. ત્યારે રાત્રિએ બેય મોહોરોને ઉંદર લઇ ગયા ને ઘરની છતના દરમાં ધરી દીધી. ત્યારે સવારે ઉઠીને જુએ તો મોહોર નહીં. ત્યારે સૂરદાસના માતાપિતા છાતી કુટવા લાગ્યા અને રોવા લાગ્યા અને પોતાના મનમાં અતિ કલેશ કરવા લાગ્યા. તે દિવસે ખાનપાન ન કર્યું. એ રીતે ઘણો વિલાપ કરવા લાગ્યા. એ જોઇને સૂરદાસજી માતાપિતાથી બોલ્યા કે તમે આવો દુઃખ વિલાપ કેમ કરો છો, ભગવાનનું ભજન સ્મરણ કરો. તેથી બધું ભલું થશે. આ પ્રમાણે સૂરદાસજી એમનાથી બોલ્યા. ત્યારે માતાપિતાએ સૂરદાસને

पिता ने सूरदास सों कही जो–तू एसी घडी को सुर जनम्यो है, सो हमको वाही दिन सों दुःख ही मे जनम बीतत है। जो हमकों काहू दिन सुख नाहीं भयो, और हमकों भर पेट अन्नहू नाहीं मिलत है। जो श्रीभगवान ने हमकों दोय मोहौर दीनी हती सोहू योंही गई। तब सूरदासजी बोले, जो–तुम मोकों घरमें न राखो तो मैं अबही तिहारी मोहौर बताय देउ। परि पाछे मोकों घर में राखियो मति, और तुम मेरे पीछे मति परियो। तब यह सुनि के मातापिता ने सूरदास सों कह्यो जो–और हमकों कहा चहियत है? जो–तू हमकों मोहौर बताय देउ, और हमारी मोहौर पावे फेरि तेरे मन में आवे तहां तू जइयो। हम तोकों बरजेंगे नाहीं। तब सूरदास बोले जो–छांति में भिल्लो है सो भिल्ले के मोहोडे पर धरी हैं। तब यह ब्राह्मण खोदि के मोहोर पायो। तब सूरदासजी घरतें चलन लागे। सो माता-पिता कों मोह उत्पन्न भयो। जो देखो या सूरदास को सगुन बहोत आछो भयो। याके कहे प्रमान मोकों तुरत ही मोहौर मिली हैं। सो यह विचारि के मातापिता ने सूरदासजी सों कह्यो–जो सूरदास! अब तुम घरतें क्यों जात हो? अब तो यह मोहौर पाय गई हैं, तातें जहां तांई यह मोहौरन को अनाज रहै तहां तांई तुमहू खावो, पाछें जहां जानो होय तहां तुम जैयो। तब सूरदास बोले जो–मोकों अब तुम घर में मति राखो, जो मोकों घर में राखोगे तो तिहारी मोहौर फेरि जायगी,

---

કહ્યું, કે તૂ એવી ઘડીનો સૂર જન્મ્યો છે કે અમને તેજ દિવસથી દુઃખમાંજ જનમ વીતે છે. અમને કોઇ દિવસ સુખ ન થયું અને અમને પેટ ભરીને અન્ન પણ નથી મળતું. ભગવાને અમને બે મોહોર આપી હતી તે પણ એમજ ગઇ. ત્યારે સૂરદાસજી બોલ્યા, કે જો તમે મને ઘરમાં ન રાખો તો હું હમણાંજ તમારી મહોર બતાવી દઉં. પણ પછી મને ઘરમાં રાખતા નહી. અને તમે મારી પાછળ ન પડતા. ત્યારે એ સાંભ-ળીને માતાપિતાએ સૂરદાસને કહ્યું, કે બીજું અમને શું જોઇએ છે? તુ અમને મહોરો બતાવી દે અને અમારી મહોર મળે પછી તારા મનમાં આવે ત્યાં તૂ જજે. અમે તને રોકીશુ નહીં. ત્યારે સૂરદાસ બોલ્યા, કે છતમાં દર છે તે દરના મોહડા ઉપર ધરી છે ત્યારે આ બ્રાહ્મણે ખોદીને મોહોર મેળવી ત્યારે સૂરદાસજી ઘરથી ચાલવા લાગ્યા. ત્યારે માતાપિતાને મોહ ઉત્પન્ન થયો. જો દેખો, આ સૂરદાસનો શુકન બહુ સારો થયો. એના કહેવા પ્રમાણે મને તરતજ મોહોર મળી છે. તેથી એ વિચારીને માતાપિતાએ સૂરદાસજીને કહ્યું, કે સૂરદાસ! હવે તમે ઘરથી કેમ જાવ છો? હવે તો આ મહોર મળી ગઇ છે તેથી જ્યાં સુધી આ મહોરનું અનાજ રહે ત્યાં સુધી તમે પણ ખાવ. પછી જ્યાં જવું હોય ત્યાં જજો. ત્યારે સૂરદાસ બોલ્યા, કે મને હવે તમારા ઘરમાં ન રાખો.

और तुम दुःख पावोगे। यह सुनि के मातापिता कछु बोले नाहीं, और सूरदासजी तो हाथ में एक लाठि लेकें घर सों निकले। सो सीहीं ते चले, सो चार कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां एक तलाव गाम बाहिर हतो। सो वहां एक पीपर के वृक्ष नीचे सूरदासजी आय बैठे, और वा तलाब को जल पियो। तहां दोय चार घडी दिन पाछिलो रह्यो हतो, तब ता गाम को ब्राह्मण जमींदार तहां आयके सूरदासजी कौं पहिचानके कहन लाग्यो जो–मेरी १० गाय तीन दिनतें मिलत नाहीं, कोई बतावे तो दो गाय वाकों देऊं। तब सूरदासजी ने कही जो–मोकों तेरी गाय कहा करनी हैं? परंतु तू पूछत है तब कहत हूं जो–यहां सों कोस ऊपर एक गाम है। सो वा गाम के जमींदार के मनुष्य रात्रि कों आयके तेरी १० गाय ले गये हैं। वा जमींदार के घर के भीतर एक दूसरो घर है, सो तहां जमींदार के घोड़ा बंधे है, सो उन घोड़ान के पास तेरी गाय बंधी हैं। तब वे जमींदार दस आदमी संग ले जाइ देखे तो गाय सब बंधी हैं, सो ले आय के सूरदासजी सों कह्यो, जो–सूरदास! तिहारे कहे प्रमान मेरी दस गाय पाय गई हैं, सो ये दोय तुम राखो। तब सूरदासजी ने कही, जो–मैं अपनों ही घर छोडि के श्रीठाकुरजी को आश्रय करिके बैठो हूं, सो मैं तेरी गाय काहे कों लेऊं? तब वह जमींदार सूरदास कों

જો મને ઘરમાં રાખશો તો તમારી મહોર ફરી જશે અને તમે દુઃખ પામશો. આ સાંભળીને માતાપિતા કંઇ બોલ્યા નહીં અને સૂરદાસજી તો હાથમાં લાઠી લઇ ઘરથી નિકળ્યા. તે સિહીંથી ચાલ્યા તે ચાર કોસ ઉપર એક ગામ હતું ત્યાં એક તલાવ ગામ બહાર હતું ત્યાં એક પીપળના વૃક્ષ નીચે સૂરદાસજી આવીને બેઠા અને તે તલાવનું જલ પીધું. ત્યાં બેચાર ઘડી દિવસ પાછલો રહ્યો હતો ત્યારે તે ગામનો બ્રાહ્મણ જમીનદાર ત્યાં આવીને સૂરદાસજીને ઓળખીને કહેવા લાગ્યો, કે મારી દશ ગાય ત્રણ દિવસથી મળતી નથી. કોઇ બતાવે તો બે ગાય એને આપું. ત્યારે સૂરદાસજીએ કહ્યું. કે મારે તમારી ગાય શું કરવી છે? પરંતુ તૂ પૂછે છે ત્યારે કહું છું કે અહીંથી કોસ ઉપર એક ગામ છે તે ગામના જમીનદારના મનુષ્યો રાત્રિએ આવીને તારી દશ ગાય લઇ ગયા છે. તે જમીનદારના ઘરના અંદર એક બીજું ઘર છે ત્યાં જમીનદારે ઘોડા બાંધ્યા છે. એ ઘોડાઓની પાસે તારી ગાયો બાંધી છે. ત્યારે તે જમીનદાર દશ આદમીને સાથે લઇને જુએ તો ગાય બધી બાંધી છે તે લઇ આવીને સૂરદાસજીને કહ્યું. કે સૂરદાસ! તમારા કહેવા પ્રમાણે મારી દશ ગાય મળી ગઇ છે તેથી આ બે ગાય તમે રાખો. ત્યારે સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે હું પોતાનુંજ ઘર છોડીને શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય કરીને બેઠો છું તારી ગાય શા માટે લઉં? ત્યારે તે જમીનદાર સૂરદાસને બાલક જાણીને

बालक जानि कें सिक्षा की बात करन लाग्यो, जो अरे! तू फलाने सारस्वत को बेटा है, और नेत्र तेरे हैं नाहीं, और कोऊ मनुष्य हू तेरे पास नाहीं है, सो तू अपने घर कों छोडि के रूठि के यहाँ क्यों बैठ्यो है? नेत्र हैं नाहीं, कैसे दिन कटेंगे? तब सूरदास ने कह्यो जो–मैं तेरे ऊपर तो घर छोड्यो नाहीं। मैं तो नारायण के ऊपर घर छोड्यो है, सो वे सगरे जगत को पालन करत हैं सो मेरो हू करेंगे। और जो होनहार होयगी सो होयगी। तब जमींदार ने कही, मैं हू ब्राह्मण हौं, दारि रोटी मेरे घर भई हैं, कहे तो लाउं। तब सूरदास ने कही, जो–मैं तो गैलकी चली रोटी नाहीं खात। तब वह जमींदार अपुने घर जाइ पूरी कराय और दूध ले जाइ, सूरदास कौं जल भरि दे के कह्यो, जो–सूरदास! तुम कोई बात को दुःख मति पाइयो। जो जहां तांई भगवान मोकों खायवे कों देयगो, तहांतांई यहां मैं तुमकों लाऊंगो। और सवेरे या तलाब पर तथा गाम में जहां कहोगे तहां छापरा डार देऊंगो। पाछे सवेरो भयो, तब यह जमींदार ने आय के कह्यो जो–तिहारो मन कहां रहेवे को है? तब सूरदास ने कही, जो–अब तो याही तलाब पर पीपरा नीचे कछुक दिन रहवे को मन है। तब वा जमींदार ने वहां एक झोंपडी छवाय दीनी और टहल करिवेकुं एक चांकर राखि दियो। ता पाछें वा जमींदार ने दसपांच जने के आगे बात करी, जो–फलाने को बेटा सूरदास बड़ो

શિક્ષાની વાત કરવા લાગ્યો કે અરે! તૂ ફલાણા સારસ્વતનો બેટો છે અને નેત્ર તારે છે નહીં અને કોઇ મનુષ્ય પણ તારી પાસે નથી તે તૂ તારૂં ઘર છોડીને રીસાઇને અહીં કેમ બેઠો છે? નેત્ર છે નહીં દિવસ કેમ જશે? ત્યારે સૂરદાસે કહ્યું, કે મેં તારા ઉપર તો ઘર છોડયું નથી! મેં તો નારાયણના ઉપર ઘર છોડયું છે તે બધા જગતનું પાલન કરે છે તે મારૂં પણ કરશે અને જે હોનહાર હશે તે થશે. ત્યારે જમીનદારે કહ્યું, હું પણ બ્રાહ્મણ છું, દાળ–રોટલી મારા ઘર થઇ છે કહે તો લાવું. ત્યારે સૂરદાસે કહ્યું, હું તો રસ્તામાં ચાલીને લાવેલી રોટલી નથી ખાતો ત્યારે તે જમીનદારે પોતાના ઘરે જઇ પુરી કરાવી અને દૂધ લઇ જઇ સૂરદાસને જલ ભરી દઇને કહ્યું, કે સૂરદાસ! તમે કોઇ વાતનું દુઃખ ન પામતા. જ્યાં સુધી ભગવાન મને ખાવાનું આપશે ત્યાં સુધી અહીં હું તમને લાવીશ અને સવારે આ તલાવ ઉપર તથા ગામમાં જ્યાં કહેશો ત્યાં છાપરૂં નાખી આપીશ. પછી સવાર થયું ત્યારે તે જમીનદારે આવીને કહ્યું, કે તારૂં મન ક્યાં રહેવાનું છે? ત્યારે સૂરદાસે કહ્યું, કે હમણાં તો આ જ તલાવ ઉપર પીપળા નીચે થોડાક દિવસ રહેવાનું મન છે. ત્યારે તે જમીનદારે ત્યાં એક ઝોંપડું છવાઇ દીધું અને ટહલ કરવાને એક ચાકર રાખી દીધો. ત્યાર પછી એ જમીનદારે દશ–પાંચ જણની

ज्ञानी है। हमारी गाय खोय गइ हती सो बताय दीनी। सो वह सगुन में आछो जाने है। सो मैं वाकों तलाव के ऊपर पीपर के नीचे झोंपरी छवाय, वाके पास एक चाकर राखि दियो है। और नित्य पूरी, दहीं, दूध, पठावत हूं। सो तासों काहू कों सगुन पूछनो होय तो वाकूं जाय के पूछि आइयो। यह सुनि के सब लोग गाम के आवन लागे। सो जो कोइ पूछे तिनकों सगुन बतावे सो होई। तब सूरदास की बड़ी पूजा चली, भीर लगी रहै। खानपान भली भांति सों आवन लाग्यो। सो तब कछुक दिन में सूरदास कों रहिवे के लिये एक बड़ो घर तलाब पर बनाय दियो, और वह झोंपरी हू दूरि कीनी। और वस्त्र, द्रव्य, बहोत वैभव भेलो भयो। सो सूरदास स्वामी कहवाये, बहोत मनुष्य इनके सेवक भये। जाके कंठी बांधनी होय सो सूरदासको सेवक होय। सो सूरदास विरह के पद सेवक कों सुनावते। सो सब गायवे के बाजे को सरंजाम सब भेलो होय गयो। या प्रकार सूरदास तलाब पे पीपर के वृक्ष नीचे बरस अठारे के भये। सो एक दिन, रात्रि कों सोवत हते, ता समय सूरदास कों वैराग्य आयो तब सूरदासजी अपने मन में विचारे जो–देखो, मैं श्रीभगवान के मिलन अर्थ वैराग्य करि के घरसों निकस्यो हतो, सो यहां माया ने ग्रसि लियो। मोकूं अपनो जस काहे कों बढ़ावनो हतो? जो मैं श्रीप्रभु को जस बढ़ावतो तो आछो। और यामें मेरो बिगार भयो, तासों

આગળ વાત કરી, કે ફલાણાનો બેટો સૂરદાસ બહુ જ્ઞાની છે. અમારી ગાય ખોવાઇ હતી તે બતાવી દીધી. તે શુકનમાં સારૂં જાણે છે. મેં એને તલાવના ઉપર પીપળાના નીચે ઝૂંપડી બનાવી તેના પાસે એક ચાકર રાખી દીધો છે. અને નિત્ય પુરી દહીં દૂધ મોકલું છું. તેથી જેને શુકન પૂછવો હોય તે તેની પાસે જઇને પૂછી આવજો. એ સાંભળીને બધા લોકો ગામના આવવા લાગ્યા ને કોઇ પૂછે તેને શુકન બતાવે તે થાય. ત્યારે સૂરદાસની બહુ પૂજા ચાલી. ભીડ લાગી રહે. ખાવાપીવાનું સારી રીતે આવવા લાગ્યું. ત્યારે કેટલાક દિવસમાં સૂરદાસને રહેવાને માટે એક મોટું ઘર તલાવ ઉપર બનાવી દીધું અને તે ઝુંપડી દૂર કરી અને વસ્ત્ર, દ્રવ્ય ઘણો વૈભવ ભેગો થયો. સૂરદાસ સ્વામી કહેવાયા. ઘણા મનુષ્યો એમના સેવક થયા. જેને કંઠી બાંધવી હોય તે સૂરદાસનો સેવક થાય. સૂરદાસ વિરહનાં પદ સેવકોને સંભળાવતા તેથી ગાવાનાં વાજાંનો બધો સાજ ભેળો થઇ ગયો. એ પ્રકારે સૂરદાસ પીપળાના વૃક્ષ નીચે અઢાર વર્ષના થયા ત્યારે એક દિવસે રાત્રિએ સૂતા હતા તે સમયે સૂરદાસને વૈરાગ્ય આવ્યો. ત્યારે સૂરદાસજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે જુઓ, હું ભગવાનને મળવા માટે વરાગ્ય કરીને નીકળ્યો હતો તે અહીં આવીને ફસાઇ ગયો. મારે પોતાનો યશ શા માટે વધરવાનો હતો? હું

अब कब सवारो होय और मैं यहां सों कूंच करूं। सो ऐसे करत सवारो भयो। तब एक सेवक कों पठाय मातापिता कों बुलाय सब घर उनकों सोंपि दियो। पाछें सूरदास एक वस्त्र पहिर के लाठी ले के उहां ते कूंच किये। सो तब जो सेवक माया के जंजाल में हते, सो संसार में लपटे और उहांई रहे। और कितनेक सेवक जो संसार सों रहित हते, सो सूरदास के संग ही चले। सो सूरदास मनमें विचारे जो–व्रज है सो श्रीभगवान को धाम है, सो उहां चलिये। तब सूरदास उहां तें चले, सो मथुराजी में आये। तहां विश्रांत घाट पै रहिके सूरदास ने विचार कियो, जो–मैं मथुराजी में रहूंगो तो यहां हू मेरो माहात्म्य बढ़ेगो और यह श्रीकृष्ण की पुरी है, सो यहां मोकों अपनो माहात्म्य प्रगट करनो नाहीं। और संसार में अनेक लोग सुख दुःख पावें हैं सो सब पूछिवे आवेंगे। और यहां मथुरिया चौबे हैं सो यहां माहात्म्य बढ़ेगो तो ये दुख पावेंगे। तासों यहां रहनो ठीक नाहीं। सो यह विचारि के सूरदास मथुरा के और आगरे के बीचों बीच गऊघाट है तहां आयके श्रीयमुनाजी के तीर स्थल बनाय कें रहें। सूरदास को कंठ बहौत सुन्दर हतो। सो गान विद्या में चतुर, और सगुन बतायवे में चतुर। सो उहां हू बहोत लोग सूरदासजी के पास आवते। उहां हूं सेवक बहोत भये। सो सूरदास जगत में प्रसिद्ध भये।

શ્રીપ્રભુનો યશ વધારતો તો સારૂં અને આમાં મારૂં અહિત થયું. તેથી હવે ક્યારે સવાર થાય અને અહીંથી હું કૂચ કરૂં. એમ કરતાં સવાર થયું ત્યારે એક સેવકને મોકલી માતાપિતાને બોલાવી બધું ઘર એમને સોંપી દીધું પછી સૂરદાસે એક વસ્ત્ર પહેરીને લાઠી લઇને ત્યાંથી કૂચ કરી. ત્યારે જે સેવક માયાના જંજાળમાં હતા તે સંસારમાં લપટાયા અને ત્યાંજ રહ્યા અને કેટલાક સેવક જે સંસારથી રહિત હતા તે સૂરદાસની સાથે ચાલ્યા. પછી સૂરદાસે મનમાં વિચાર્યું કે વ્રજ છે તે શ્રીભગવાનનું ધામ છે ત્યાં ચાલિયે. ત્યારે સૂરદાસ ત્યાંથી ચાલ્યા તે મથુરાજીમાં આવ્યા. ત્યાં વિશ્રામ ઘાટ ઉપર રહીને વિચાર કર્યો, કે હું મથુરાજીમાં રહીશ તો અહીં પણ મારૂં મહાત્મ્ય વધશે અને આ શ્રીકૃષ્ણની પુરી છે તેથી અહીં મારે મારૂં મહાત્મ્ય પ્રકટ કરવું નહીં અને આ સંસારમાં અનેક લોક સુખદુઃખ પામે છે તે બધા પૂછવા આવશે અને અહીં મથુરિયા ચોબે છે તે અહીં મહાત્મ્ય વધશે તો એ દુઃખ પામશે તેથી અહીં રહેવું ઠીક નહીં. એમ વિચારીને સૂરદાસ મથુરા અને આગરાની વચ્ચો વચ્ચ ગઉઘાટ છે ત્યાં આવીને શ્રીયમુનાજીના તીરે સ્થલ બનાવીને રહ્યા. સૂરદાસનો કંઠ બહુ સુંદર હતો તે ગાન વિદ્યામાં ચતુર અને શુકન બતાવવામાં ચતુર તેથી ત્યાં પણ ઘણા લોકો સૂરદાસજીની પાસે આવતા. ત્યાં પણ સેવક ઘણા થયા ને સૂરદાસ જગતમાં પ્રસિદ્ધ થયા.

वार्ता-प्रसंग १—सो गऊघाट ऊपर सूरदास रहते, तब कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अड़ेल तें व्रज कूँ पधारत हते। सो कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी आप गऊघाट पधारे। ता समय श्रीआचार्यजी के संग सेवकन को बहोत समाज हतो। सो सब वैष्णव सहित श्रीआचार्यजी आपु श्रीयमुनाजी में स्नान किये। ता पाछें संध्यावंदन करि पाक करन कों पधारे। और सेवक हू सब अपनी अपनी रसोइ करन लगे। ता समय एक सेवक सूरदास को तहाँ आयो। सो वाने जायके सूरदास कों खबरि करी, जो—सूरदासजी! आज यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं। जो जिनने कासी में तथा दक्षिण में मायावाद खंडन कियो है, और भक्तिमार्ग स्थापन कियो है। तब यह सुनि के सूरदास ने अपने सेवक सों कह्यो, जो—जब श्रीवल्लभाचार्यजी भोजन करिकें निश्चिंतता सों गादी तकियान के ऊपर बिराजें ता समय तू हमकों खबरि करियो। जो—मैं श्रीवल्लभाचार्यजी के दरसन कों चलूंगो। तब वह सेवक दूरि आय के बैठि रह्यो। सो जब श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके गादी तकियान पै बिराजे, और सेवक हू सब आसपास आय बैठे, तब वा सेवक ने जाय के खबरि करी। तब सूरदास वाही समय अपने संग सगरे सेवकन कों

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-ગઉઘાટ ઉપર સૂરદાસ રહેતા. ત્યારે કેટલાક દિવસ પછી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પોતે અડેલથી વ્રજમાં પધારતા હતા. તે કેટલાક દિવસમાં શ્રીઆચાર્યજી આપ ગઉઘાટ પધાર્યા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજીના સંગે સેવકોનો મોટો સમાજ હતો. તે બધા વૈષ્ણવો સહિત શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કર્યું; ત્યાર પછી સંધ્યાવંદન કરી પાક કરવાને પધાર્યા. અને સેવકો પણ બધા પોતપોતાની રસોઇ કરવા લાગ્યા. તે સમયે એક સેવક સૂરદાસનો ત્યાં આવ્યો. તેને જઇને સૂરદાસને ખબર કરી, કે સૂરદાસજી! આજ અહીં શ્રીવલ્લભાચાર્યજી પધાર્યા છે, કે જેમણે કાશીમાં તથા દક્ષિણમાં માયાવાદ ખંડન કર્યો છે અને ભક્તિમાર્ગ સ્થાપન કર્યો છે. ત્યારે એ સાંભળી સૂરદાસે પોતાના સેવકને કહ્યું, કે જ્યારે શ્રીવલ્લભાચાર્યજી ભોજન કરીને નિશ્ચિંતતાથી ગાદી તકિયા ઉપર બિરાજે તે સમયે તૂ અમને ખબર કરજે. હું શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના દર્શને ચાલીશ. ત્યારે તે સેવક દૂર આવીને બેસી રહ્યો. પછી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ ભોજન કરીને ગાદીતકિયા ઉપર બિરાજ્યા અને સેવકો પણ બધા આસપાસ આવી બેઠા ત્યારે તે સેવકે જઇને ખબર કરી. ત્યારે સૂરદાસ તેજ સમયે પોતાની સંગે બધા સેવકોને લઇને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શને આવ્યા. ત્યારે

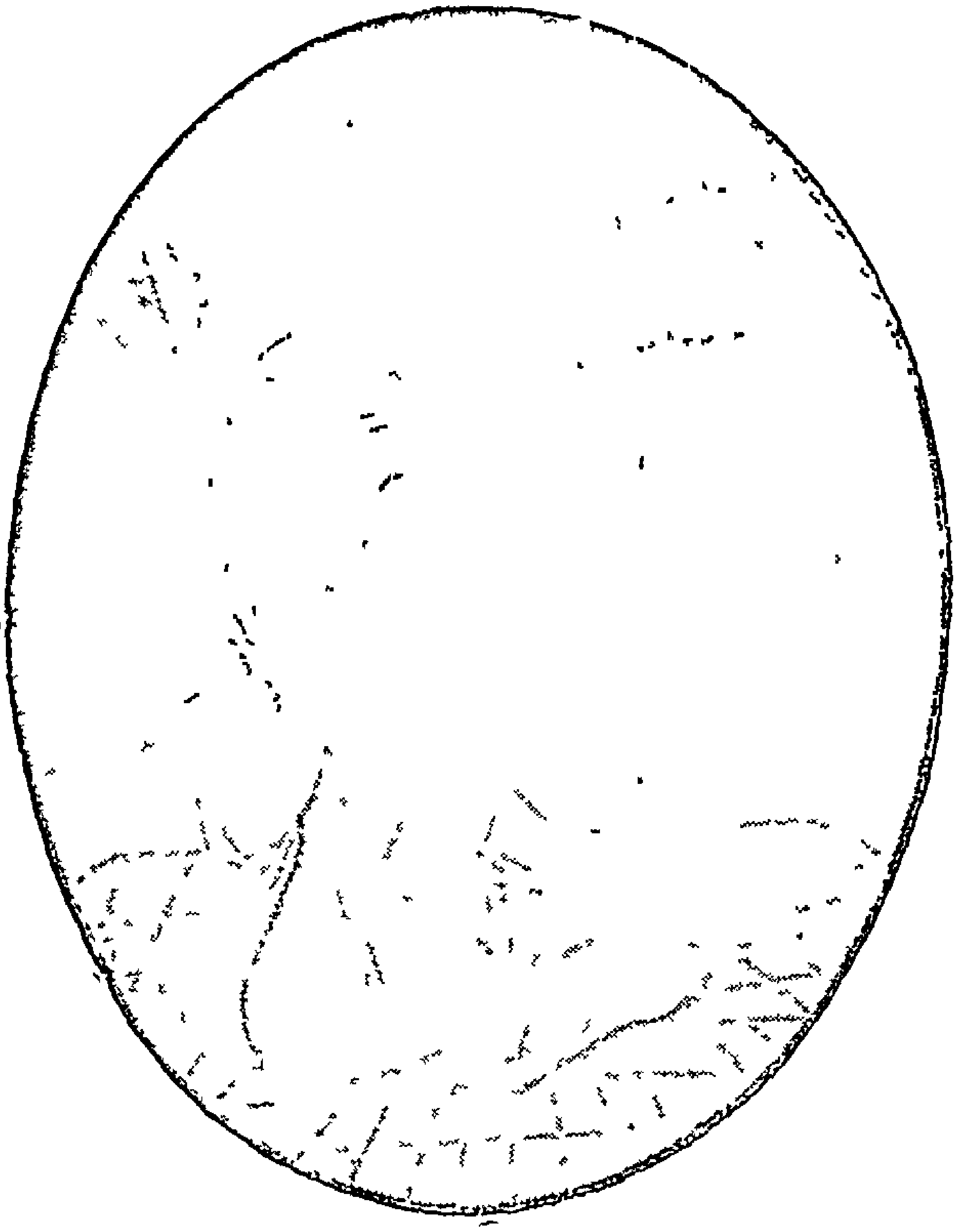

सूरदास

जन्म सं० १५३५ : देहावसान सं० १६४०

☆

लेकें श्रीआचार्यजी के दरसन कों आये। सो तब आयके श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करी। तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख सों कहे, जो-सूर! कछू भगवत् जस वर्णन करो। तब सूरदास ने श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि कह्यो, जो-महाराज! जो आज्ञा। ता पाछें सूरदास ने यह पद श्रीआचार्यजी आगे गायो। सो पद :—

राग धनाश्री—हों हरि सब पतितन कौ नायक। को करि सके बराबरि मेरी इते मानकौ लायक ॥१॥ जो तुम अजामिल सों कीनी सो पाती लिख पाऊं। होय विश्वास भलो जिय अपने और पतित बुलाऊं ॥२॥ सिमिट जहां तहां तें सब कोऊ आइ जूरे इकठोर। अबके इतने और मिलाऊं बेर दूसरी और ॥३॥ होडा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट। सबकों ले पायन तरि पारों यही हमारी भेट। ऐसी कितिक बनाउं प्रानपति सुमिरन व्है भयो आड़ो। अबकी बेर निबेर लेउ प्रभु 'सूर' पतित को टाँडो।

फेरि दूसरो पद गायो, सो पद :—

राग धनाश्री—प्रभु हों सब पतितनकौ टीको। और पतित सब द्योस चारि के हों तो जन्मत ही कौ॥ बधिक-अजामिल गनिका तारी और पूतना ही कों। मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूल क्यों जी कौ॥ कोऊ न समरथ सुद्ध करन कों खेंचि कहत हों लीको। मरियत लाज 'सूर' पतितन में कहत सबै मोहि नीको।

सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु सूरदास सों कहे, जो-सूर ह्वै कैं ऐसो घिघियात काहे कों है? सो तासों कछु भगवल्लीला वर्णन करि।

भावप्रकाश—ताको आसय यह है, जो-जीव श्रीभगवान सों बिछुर्‍यो, सो तब पतित तो भयो। सो ताकों बहोत कहा कहनो? तासों भगवल्लीला गावो, जासों शुद्ध होय।

આવીને શ્રીઆચાર્યજીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીમુખથી કહે, કે સૂર! કંઇ ભગવદ્દયશ વર્ણન કરો. ત્યારે સૂરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને દંડવત્ કરી કહ્યું, મહારાજ! જેવી આજ્ઞા. તે પછી સૂરદાસે આ પદ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ ગાયું. તે પદ:—હોં હરિ સબ પતિતન કો ટીકો—(ઉપર જુઓ)

પછી બીજું પદ ગાયું:—પ્રભુ હોં સબ પતિતન કો ટીકો—(ઉપર જુઓ)

એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે સૂરદાસને કહે, કે સૂર થઇને આવો ગળગળો કેમ થાય છે? તેથી કંઇ ભગવલ્લીલા વર્ણન કર.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ કે જીવ ભગવાનથી વિછર્યો ત્યારે પતિત તો થયો તેને બહુ શું કહેવું? તેથી ભગવલ્લીલા ગાવ જેથી શુદ્ધ થવાય.

तब सूरदास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! मैं कछू भगवल्लीला समुझत नाहीं हूँ। तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख तें कहे, जो–सूर! श्रीयमुनाजी में स्नान करि आवो, जो हम तुमकों समुझाय देंगे। तब सूरदास प्रसन्न होय कें श्रीयमुनाजी में स्नान करिके अपरस ही में श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी ने कृपा करि कें सूरदास कों नाम सुनायो, ता पाछें समर्पन करवायो। पाछें आप दसमस्कंध की अनुक्रमणिका करी हती सो सूरदास कों सुनाये।

भावप्रकाश—अष्टाक्षर मंत्र सुनायो तासों सूरदास के सगरे जनम के दोष मिटाये, और सात भक्ति भई। पाछें ब्रह्मसंबंध करवायो, तासों सात भक्ति और नवधा भक्ति की सिद्धि भई। सो रही प्रेमलक्षणा, सो दसमस्कन्ध की अनुक्रमणिका सुनाये। तब संपूरन पुरुषोत्तम की लीला सूरदास के हृदय में स्थापन भई, सो प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध भई।

सो सगरी श्रीसुबोधिनीजी को ज्ञान श्रीआचार्यजी ने सूरदास के हृदय में स्थापन कियो। तब भगवल्लीला जस वर्णन करिवे को सामर्थ्य भयो। तब अनुक्रमणिका तें सगरी लीला हृदय में स्फुरी। सो कैसे जानिये? जो श्रीआचार्यजी आप दसमस्कन्ध की सुबो-

---

ત્યારે સૂરદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! હું કંઇ ભગવલ્લીલા (માં) સમજતો નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીમુખથી કહે કે સૂર! શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી આવો. અમે તમને સમજાવી દઇશું. ત્યારે સૂરદાસ પ્રસન્ન થઇને શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરીને અપરસમાં જ શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કૃપા કરીને સૂરદાસને નામ સંભળાવ્યું. તે પછી સમર્પણ કરાવ્યું પછી આપે દશમસ્કંધની અનુક્રમણિકા કરીને સૂરદાસને સંભળાવી.

ભાવપ્રકાશ—અષ્ટાક્ષર મંત્ર સંભળાવ્યો તેનાથી સૂરદાસના સઘળા જન્મોનો દોષ મટાડ્યો અને સાત ભક્તિ થઇ. પછી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું તેનાથી સાત ભક્તિ અને નવધા ભક્તિની સિદ્ધિ થઇ. રહી પ્રેમલક્ષણા તે દશમસ્કન્ધની અનુક્રમણિકા સંભળાવી ત્યારે સંપૂર્ણ પુરુષોત્તમની લીલા સૂરદાસના હૃદયમાં સ્થાપન થઇ, તેથી પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ સિદ્ધ થઇ.

તેથી સઘળી શ્રીસુબોધિનીજીનું જ્ઞાન શ્રીઆચાર્યજીએ સૂરદાસના હૃદયમાં સ્થાપન કર્યું. ત્યારે ભગવલ્લીલા યશ વર્ણન કરવાનું સામર્થ્ય થયું. ત્યારે અનુક્રમણિકાથી બધી લીલા હૃદયમાં સ્ફુરી. તે કેમ જાણિએ? ત્યાં કહે છે કે શ્રીઆચાર્યજી

धिनीजी में मंगलाचरण की प्रथम कारिका किये हैं, सो कारिका कहत हैं। श्लोक :—

"नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि-शायिनं।
लक्ष्मीसहस्र-लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्॥"

सो या मंगलाचरण के अनुसार सूरदास ने श्रीआचार्यजी के आगे यह पद करिके गायो। सो पद :—

राग बिलावल—चकईरी चलि चरन सरोवर जहां नहीं प्रेम वियोग। जहां भ्रमनिसा होति नहीं कबहू सो सायर सुख योग॥ सनकसे हंस मीनसे मुनिगन नख रवि-प्रभा प्रकास। प्रफुल्लित कमल निमिष नहीं ससि डर गुंजत निगम सुवास॥ जिहिं सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत विमल जल पीजे। सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम यहां रहि कहा कीजे॥ जहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत सोभित 'सूरजदास'। अब न सुहाय विषयरस छिल्लर वा समुद्र की आस॥

सो यह पद दसमस्कन्ध की कारिका के अनुसार किये हैं।

श्लोक—'लक्ष्मीसहस्रलीलाभि: सेव्यमानं कलानिधिम्।'

जैसे श्लोक में कह्यो है, तैसेही सूरदास ने या पद में कही, जो-

"जहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत सोभित सूरजदास।"

सो यामें कहे। तामें जानि परी, जो-सूरदास कों सगरी लीला श्रीसुबोधिनीजी की स्फुरी। सो सुनिके श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। और जाने, जो-अब लीला को अभ्यास भयो। सो तब श्री-आचार्यजी आप श्रीमुख तें सूरदास सों आज्ञा किये, जो-सूर! कछू नंदालय की लीला गावो। तब सूरदास नें नंद महोत्सव को कीर्तन वर्णन करिके गायो। पद :—

देवगंधार—ब्रज भयो महरिके पूत जब यह बात सुनी। सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गनित गुनी॥ ब्रज पूरव पूरे पून्य रूपी कुल सुथिर थुनी। ग्रह लग्न

આપ દશમસ્કન્ધની સુબોધિનીજીમાં મંગલાચરણની પ્રથમ કારિકા કરી છે તે કારિકા કહીએ છીએ. શ્લોક—(ઉપર પ્રમાણે) આ મંગળાચરણ પ્રમાણે સૂરદાસે શ્રીઆચા-ર્યજીની આગળ આ પદ કરીને ગાયું. તે પદ (ઉપર જુઓ)

આ પદ દશમસ્કન્ધની કારિકાને અનુસાર કર્યું છે. જેમ શ્લોકમાં કહ્યું છે તેમજ સૂરદાસે આ પદમાં કહ્યું છે. જે, જહાં શ્રીસહસ્ર સહિત નિત્ય ક્રીડત શોભિત 'સૂર-જદાસ' આમાં કહ્યું. તેમાં સમજાય છે કે સૂરદાસને બધી લીલા શ્રીસુબોધિનીજીની સ્ફુરી. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા. જાણ્યું, કે હવે લીલાનો અભ્યાસ થયો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ આપે શ્રીમુખથી સૂરદાસને આજ્ઞા કરી કે સૂર!

नक्षत्र बलि सोधि कीनी वेदधुनी ॥१॥ सुनि धाईं सबै व्रजनारि सहज सिंगार किये। तन पहरे नौतन चीर काजर नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलाट सोभित हार हिये। कर कंकन कंचन थार मंगल साज लिये ॥२॥ वे अपने अपने मेल निकसी भांति भली। मानो लाल मुनिनकी पांति पिंजरन चूर चली ॥ वे गावे मंगल गीत मिलि दश पांच अली। मानो भोर भयो रवि देखि फूली कनककली ॥३॥ उर अंचल उडत न जान्यो सारी सुरंग सुही। मुख मांड्यो रोरीरंग सेंदुर मांग छुही। श्रम श्रवनन तरल तरोना बेनी सिथिल गुही। सिर बरखत कुसुम सुदेस मानो मेघ फुहीं ॥४॥ पिय पहेलें पहोंची जाय अति आनंद भरी। लई भीनर भवन बुलाय सब सिसु पांय परी ॥ एक वदन उघारि निहारति देति असील खरी। चिरजीयो यसोदानंद पूरन काम करी ॥५॥ घनि घनि दिवस घनि राति घनि यह पहर घरी। धनि धनि महरिजु की कुखि भाग-सुहाग भरी ॥ जिन जायो एसो पूत सब सुख फलन फरी। थिर थाप्यो सब परिवार मनकी सूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लये। गुहि गुंजा घसि बन–धातु अंग अंग चित्र ठये ॥ सिर दधि माखन के माट गावत गीत नये। डफ झांझ मृदंग बजावत सब नंद भवन गये ॥७॥ एक नाचत करत कोलाहल छिरकत हरद दहीं। मानों बरखत भादों मास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित्त जाय कौतुक तहीं तहीं। रस आनंद मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥८॥ एकु धाइ नंदजू पे जाइ पुनि पुनि पांय परे। एक आपु आपु हि मांझ हँसि हँसि अंक भरे ॥ एक अंबर सबहि उतारि देत निशंक खरे। एक दधि रोचन और दूध सबन के सीस घरे ॥९॥ तब नंद न्हाय भये ठाडे अरु कुश हाथ धरे। घसि चंदन चारु मंगाय विप्रन तिलक करे ॥ नंदी मुख पितर पुजाय अंतर सोच हरे। वर गुरुजन द्विजन पहराय सबन के पांय परे ॥१०॥ गन गैया गिनी न जाय तरुन सुबच्छ बढीं। नित चरे जमुना के काछ दूने दूध चढी ॥ खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग मढीं। ते दीनी द्विजन अनेक हरखि अशीष पढी ॥११॥ सब अपने मित्र सु बंधु हँसि हँसि बोलि लिये। मथि मृगमद मलय-कपूर माथे तिलक किये ॥ उर मनिमाला पहराय बसन विचित्र दिये। मानों बरखत मास अषाढ दादुर मोर जिये ॥१२॥ वर बंदी मागध सूत आंगन भवन भरे। ते बोले लेले नाम हित कोउ ना बिसरे ॥ जिन जो जाच्यो सो दीनो रस नंदराय ढरे। अति दान मान परधान पूरन काम करे ॥१३॥ तब रोहिनी अंबर मंगाइ सारी सुरंग घनी। ते दीनी बधुन बुलाय जेसी जाय बनी। वे अति आनंदित बहोरि निज ग्रह गोपधनी। मिलि निकसी देति असीस रुचि अपनी अपनी ॥१४॥ तब घरघर भेरि मृदंग पटह निसान बजे। वर बांधी बंदनमाल अरु ध्वज कलस सजे ॥ तब ता दिन तें वे लोग सुखसंपति ना तजे। सुनि 'सूर' सबनकी यह गति जिन हरि चरन भजे ॥

કંઇ નંદાલયની લીલા ગાંવ. ત્યારે સૂરદાસે નંદમહોત્સવનું કીર્તન વર્ણન કરીને ગાયું. તે પદ :—રાગ દેવગંધાર ' બ્રજ ભયો મહરિ કે પૂત ' (ઉપર જુઓ)

सो यह बड़ी बधाई गाई। सो श्रीनंदरायजी के घरको वर्णन किये, तहां तांई तो श्रीआचार्यजी आप सुने। ता पाछें गोपीजन के घर को वर्णन करन लागे तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख तें सूरदास सों कहे जो—

'सुन सूर सबन की यह गति जो हरि-चरन भजे।'

सो या भोग की तुक आपु कहि कें सूरदास कों चुप करि दिये।

भावप्रकाश—सो यातें जो-व्रजभक्तन को आनंद है सो भगवदीयन के हृदय में अनुभव योग्य है। सो बाहिर प्रकास होय तासों सूरदास को थांभि दिये। और सूरदासजी के हृदय में यह भी आयो हतो, जो-मैंने सेवक किये हैं तिनकी कहा गति होयगी? तब श्रीआचार्यजी ने कही:—'सुन सूर! सबन की यह गति जिन हरिचरन भजे।'

तब श्रीआचार्यजी आप प्रसन्न होय के कहे, जो-मानों सूर नंदालय की लीला में निकट ही ठाड़े हैं। सो ऐसौ कीर्तन गायो। ता पाछें श्रीआचार्यजी ने सूरदास कूं 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' सुनायो। तब सगरे श्रीभागवत की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी। सो सूरदास ने प्रथम स्कंध श्रीभागवत सों द्वादस स्कंध पर्यंत कीर्तन वर्णन किये। तामें अनेक दानलीला, मानलीला आदि वर्णन किये हैं। ता पाछें गऊघाट ऊपर श्रीआचार्यजी आप तीन दिन रहे। सो तब

એ મોટી વધાઇ ગાઇ. તેમાં શ્રીનંદરાયજીના ઘરનું વર્ણન કર્યું ત્યાં સુધી તો શ્રી આચાર્યજી આપે સાંભળ્યું. ત્યારપછી ગોપીજનના ઘરનું વર્ણન કરવા લાગ્યા ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપે શ્રીમુખથી સૂરદાસને કહ્યું, કે "સુન 'સૂર' સબનકી યહ ગતિ જો હરિ ચરણ ભજે, આ ભોગની તુક પોતે કહીને સૂરદાસને ચૂપ કરી દીધા.

ભાવપ્રકાશ—તે એ માટે કે વ્રજભકતોનો આનંદ છે તે ભગવદીયોના હૃદયમાં અનુભવ (કરવા) યોગ્ય છે. બહાર પ્રકાશ થાય તેથી સૂરદાસને રોકી દીધા. વળી સૂરદાસના હૃદયમાં એ પણ આવ્યું હતું કે મેં સેવક કર્યા છે તેની શી ગતિ થશે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, 'સુન સૂર સબનકી યહ ગતિ જિન હરિ ચરણ ભજે'

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ પ્રસન્ન થઇને કહે, કે જાણો, સૂર નંદાલયની લીલાની પાસે જ ઉભા છે. એવું કીર્તન ગાયું. તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ સૂરદાસને 'પુરુષોત્તમસહસ્રનામ' સંભળાવ્યું. ત્યારે બધી શ્રીભાગવતની લીલા સૂરદાસના હૃદયમાં સ્ફૂરી. તેથી સૂરદાસે ભાગવતના પ્રથમ સ્કંધથી દ્વાદશ સ્કંધ પર્યંતનાં કીર્તન વર્ણન કર્યાં. તે પછી ગૌઘાટ ઉપર શ્રીઆચાર્યજી આપ ત્રણ દિવસ રહ્યા. ત્યારે

सूरदासने जितने सेवक किये हते, सो सबकों श्रीआचार्यजी के सेवक कराये। ता पाछें श्रीआचार्यजी आप व्रज में पधारे। तब सूरदास हू श्रीआचार्यजी के संग व्रज में आये। सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गोकुल पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख सों कह्यो जो–सूर! श्रीगोकुल को दरसन करो। तब सूरदासजी ने श्रीगोकुल कों साष्टांग दंडवत किये। सो दंडवत करत ही श्रीगोकुल की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी। तब सूरदासजी अपने मन में विचारे, जो–श्रीगोकुल की लीला मैं बरनन कैसें करौं? सो काहे तें, जो–श्रीआचार्यजी को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप के ऊपर आसक्त है, सो श्रीनवनीतप्रियजी को कीर्तन श्रीगोकुल की बाललीला को बरनन, ऐसो पद सूरदासजी ने गायो। सो पद—

राग बिलावल—सोभित कर नवनीत लिए॥ घुटुरुवन चलत रेनु तनु मंडित मुख दधि लेप किए॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दिए। लट लटकनि मानों मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि-नख राजत हैं सखि रुचिर हिए। धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिए॥३॥

सो यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आप सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। सो ता पाछें सूरदास ने और हू पद बाललीला के श्रीआचार्यजी कों सुनाये। ता पाछें श्रीआचार्यजीने विचार्‍यो–जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मंदिर तो सम्पूरायो, और सेवा हू को

સૂરદાસે જેટલા સેવક કર્યા હતા તે બધાને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક કરાવ્યા. તે પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે વ્રજમાં પધાર્યા. ત્યારે સૂરદાસ પણ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે વ્રજમાં આવ્યા. તે પ્રથમ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ગોકુલ પધાર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી કહ્યું, કે સૂર શ્રીગોકુલનાં દર્શન કરો. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીગોકુલને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા. ત્યારે દંડવત્ કરતાંજ શ્રીગોકુલની લીલા સૂરદાસના હૃદયમા સ્ફુરી. ત્યારે સૂરદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું કે શ્રીગોકુલની-લીલા હું વર્ણન કેવી રીતે કરૂં? કેમકે શ્રીઆચાર્યજીનું મન શ્રીનવનીતપ્રિયજીના સ્વરૂપ ઉપર આસક્ત છે તેથી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું કીર્તન શ્રીગોકુલની બાલલીલાનું વર્ણન એવું પદ સૂરદાસજીએ ગાયું તે પદ-શોભિત કર નવનીત લિયે. (ઉપર જુઓ) આ પદ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ સૂરદાસના ઉપર બહુજ પ્રસન્ન થયા. તે પછી સૂરદાસે બીજાં પણ પદ બાલલીલાનાં શ્રીઆચાર્યજીને સંભળાવ્યાં. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર્યું કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું મંદિર તો સિદ્ધ કરાવ્યું અને સેવાનું પણ બંધાણ થયું.

मंडान भयो । तातें सूरदास कूं श्रीनाथजी के पास राखिये । तब समे समे के सगरे कीरतन को मंडान ओर भयो चाहिये । सो आगे वैष्णवजन सूरदास के पद गाय के कृतार्थ बहोत होंयगे । तब यह विचारिके सूरदास कूं संग लेके श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधारे, सो ऊपर पधारके श्रीनाथजी के दरसन किये । तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुख सों सूरदास सों कहे, जो–सूर! श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो और कीर्तन गावो ।' तब सूरदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें सूरदासजी ने प्रथम विज्ञप्ति को पद दैन्यता सहित गायो । सो पद—

राग धनाश्री—अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल । काम क्रोध को पहरि चोलना कंठ विषय की माल ॥ १ ॥ महा मोह के नूपुर बाजे निंदा सब्द रसाल । भरम भर्‍यो मन भयो पखावज उपर हंस-गति चाल ॥ २ ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के ताल । माया कौ कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ ३ ॥ कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नाहिं काल । 'सूरदास' की सबै अविद्या दूरि करहु नंदलाल ॥ ४ ॥

सो यह पद सूरदासजी ने श्रीनाथजी कों सुनायो । सो सुनि के श्रीआचार्यजी आप सूरदास सों कहे, जो–सूरदास! अब तो तिहारे मन में कछू अविद्या रही नाहीं, जो–तिहारी अविद्या तो प्रथम ही श्रीनाथजी ने दूरि कीनी है । तासों अब तुम भगवल्लीला गावो जामें माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय ।

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय जितने हैं सो तितनेन की यही बोली

તેથી સૂરદાસને શ્રીનાથજી પાસે રાખિયે. ત્યારે સમય સમયના બધા કીર્તનોનું બંધાણ પણ થવું જોઇએ. જેથી આગળ બહુ વૈષ્ણવો સૂરદાસનાં પદ ગાઇને કૃતાર્થ થશે. એમ વિચારીને સૂરદાસને સાથે લઇને શ્રીઆચાર્યજી આપ શ્રીગોવર્દ્ધન પધાર્યા. ત્યાં ઉપર પધારીને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ શ્રીમુખથી સૂરદાસને કહે, કે સૂર! શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરો અને કીર્તન ગાવ. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં તે પછી સૂરદાસજીએ પ્રથમ વિજ્ઞપ્તિનું પદ દૈન્યતા સહિત ગાયું તે પદ—અબહોં નાચ્યો બહુત ગોપાલ (ઉપર જુઓ). આ પદ સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીને સંભળાવ્યું. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ સૂરદાસને કહે, કે સૂરદાસ! હવે તો તમારા મનમાં કંઇ અવિદ્યા રહી નથી. તમારી અવિદ્યા તો પ્રથમ જ શ્રીનાથજીએ દૂર કરી છે તેથી હવે તમે ભગવદ્લીલા ગાવો જેમાં માહાત્મ્ય પૂર્વક સ્નેહ હોય.

सूरदासने जितने सेवक किये हते, सो सबकों श्रीआचार्यजी के सेवक कराये। ता पाछें श्रीआचार्यजी आप व्रज में पधारे। तब सूरदास हू श्रीआचार्यजी के संग व्रज में आये। सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गोकुल पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख सों कह्यो जो–सूर! श्रीगोकुल को दरसन करो। तब सूरदासजी ने श्रीगोकुल कों साष्टांग दंडवत किये। सो दंडवत करत ही श्रीगोकुल की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी। तब सूरदासजी अपने मन में विचारे, जो–श्रीगोकुल की लीला मैं बरनन कैसें करौं? सो काहे तें, जो–श्रीआचार्यजी को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप के ऊपर आसक्त है, सो श्रीनवनीतप्रियजी को कीर्तन श्रीगोकुल की बाललीला को बरनन, ऐसो पद सूरदासजी ने गायो। सो पद—

राग बिलावल—सोभित कर नवनीत लिए॥ घुटुरुवन चलन रेनु तनु मंडित मुख दधि लेप किए॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचन को तिलक दिए। लट लटकनि मानो मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि-नख राजत हैं सखि रुचिर हिए। धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिए॥३॥

सो यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आप सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। सो ता पाछें सूरदास ने और हू पद बाललीला के श्रीआचार्यजी कों सुनाये। ता पाछें श्रीआचार्यजीने विचार्यो–जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मंदिर तो सम्परायो, और सेवा हू को

સૂરદાસે જેટલા સેવક કર્યા હતા તે બધાને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક કરાવ્યા. તે પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે વ્રજમાં પધાર્યા. ત્યારે સૂરદાસ પણ શ્રીઆચાર્યજીના સંગે વ્રજમાં આવ્યા. તે પ્રથમ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ગોકુલ પધાર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીમુખથી કહ્યું, કે સૂર શ્રીગોકુલનાં દર્શન કરો. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીગોકુલને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા. ત્યારે દંડવત્ કરતાંજ શ્રીગોકુલની લીલા સૂરદાસના હૃદયમા સ્ફુરી. ત્યારે સૂરદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું કે શ્રીગોકુલની-લીલા હું વર્ણન કેવી રીતે કરૂં? કેમકે શ્રીઆચાર્યજીનું મન શ્રીનવનીતપ્રિયજીના સ્વરૂપ ઉપર આસક્ત છે તેથી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું કીર્તન શ્રીગોકુલની બાલલીલાનું વર્ણન એવું પદ સૂરદાસજીએ ગાયું તે પદ-શોભિત કર નવનીત લિયે. (ઉપર જુઓ) આ પદ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ સૂરદાસના ઉપર બહુજ પ્રસન્ન થયા. તે પછી સૂરદાસે બીજાં પણ પદ બાલલીલાનાં શ્રીઆચાર્યજીને સંભળાવ્યાં. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ વિચાર્યું કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું મંદિર તો સિદ્ધ કરાવ્યું અને સેવાનું પણ બંધાણ થયું.

मंडान भयो। तातें सूरदास कूं श्रीनाथजी के पास राखिये। तब समे समे के सगरे कीरतन को मंडान ओर भयो चाहिये। सो आगे वैष्णवजन सूरदास के पद गाय के कृतार्थ बहोत होंयगे। तब यह विचारिके सूरदास कूं संग लेके श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधारे, सो ऊपर पधारके श्रीनाथजी के दरसन किये। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुख सों सूरदास सों कहे, जो–सूर! श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो और कीर्तन गावो।' तब सूरदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। ता पाछें सूरदासजी ने प्रथम विज्ञप्ति को पद दैन्यता सहित गायो। सो पद—

राग धनाश्री—अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल। काम क्रोध कौ पहरि चोलना कंठ विषय की माल॥१॥ महा मोह के नूपुर बाजे निंदा सब्द रसाल। भरम भर्‍यो मन भयो पखावज उपर हंस-गति चाल॥२॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के ताल। माया कौ कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल॥३॥ कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल। 'सूरदास' की सबै अविद्या दूरि करहु नंदलाल॥४॥

सो यह पद सूरदासजी ने श्रीनाथजी कों सुनायो। सो सुनि के श्रीआचार्यजी आप सूरदास सों कहे, जो–सूरदास! अब तो तिहारे मन में कछू अविद्या रही नाहीं, जो–तिहारी अविद्या तो प्रथम ही श्रीनाथजी ने दूरि कीनी है। तासों अब तुम भगवल्लीला गावो जामें माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय।

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय जितने हैं सो तितनेन की यही बोली

તેથી સૂરદાસને શ્રીનાથજી પાસે રાખિયે. ત્યારે સમય સમયના બધા કીર્તનોનું બંધાણ પણ થવું જોઇએ. જેથી આગળ બહુ વૈષ્ણવો સૂરદાસનાં પદ ગાઇને કૃતાર્થ થશે. એમ વિચારીને સૂરદાસને સાથે લઇને શ્રીઆચાર્યજી આપ શ્રીગોવર્દ્ધન પધાર્યા. ત્યાં ઉપર પધારીને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ શ્રીમુખથી સૂરદાસને કહે, કે સૂર! શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરો અને કીર્તન ગાવ. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં તે પછી સૂરદાસજીએ પ્રથમ વિજ્ઞપ્તિનું પદ દૈન્યતા સહિત ગાયું તે પદ—અબહોં નાચ્યો બહુત ગોપાલ (ઉપર જુઓ). આ પદ સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીને સંભળાવ્યું. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ સૂરદાસને કહે, કે સૂરદાસ! હવે તો તમારા મનમાં કંઇ અવિદ્યા રહી નથી. તમારી અવિદ્યા તો પ્રથમ જ શ્રીનાથજીએ દૂર કરી છે તેથી હવે તમે ભગવદ્લીલા ગાવો જેમાં માહાત્મ્ય પૂર્વક સ્નેહ હોય.

है जो अपने को हीन कहत हैं। सो यह भगवदीयन को लक्षण है। और जो कोई अपने को आछो कहै और आपुनी बड़ाई करे, सो भगवान तें सदा बहिर्मुख है।

तब श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे सूरदासजी ने माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन किये। सो पद—

राग गौरी—कौन सुकृत इन व्रजबासिन कौ बदत बिरंचि सिव सेष। श्रीहरि, जिनके हेत प्रगटे मानुष-वेस ॥ ध्रुव ॥ ज्योति रूप जग-धाम जगतगुरु जगत-पिता जगदीस। जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल-इस ॥१॥ जाके उदर लोक त्रय, जल थल पंच तत्त्व चोखान। बालक ह्वै झूलत व्रज पलना जसुमति भवन-निधान ॥ २ ॥ इकइक रोम कुप बिराट सम आनंद कोटि ब्रह्मांड। लिए उछंग ताहि मात यसोदा अपने भरि भुज-दंड ॥ ३ ॥ रवि-ससि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात। अंजन देत हेत सुत के चख लेकर काजर मात ॥ ४ ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियो है पतार। देहरी उलंघि सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंद के द्वार ॥ ५ ॥ अनुदिन स्त्रवत सुधारस पंचम चिंतामनि सी धेनु। सो त्यजि जसुमति कौ पय पीवत भक्तन कों सुख देनु ॥ ६ ॥ वेद वेदान्त उपनिषद् षटरस अरपे भुगते नाहिं। सो हरि ग्वाल-बाल मंडल में हँसि हँसि जूठनि खाहिं ॥ ७ ॥ कमलानायक वैकुंठ दायक सुख दुख जिनके हाथ। कांध कमरिया हाथ लकुटिया नग्न पद, बिहरत बन बच्छ साथ ॥ ८ ॥ करन हरन प्रभुदाता भुक्ता विश्वंभर जग जानि। ताहि लगाइ माखन की चोरी बांध्यौ नंदजू की रानि ॥ ९ ॥ बकी बकासुर सकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास। कंस केसी कों यह गति दीनी राखे चरन निवास ॥१०॥ भक्त बछल हरि पतित उद्धारन रहे सकल भरिपूर। मारग रोकि पर्‌यो हरि-द्वारे पतित सिरोमनि 'सूर' ॥११॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहोत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—क्यों जो—जैसो श्रीआचार्यजी आपु पुष्टिमार्ग प्रगट किये, ताही अनुसार सूरदासजी ने यह कीर्तन गायो। सो श्रीआचार्यजी के मारग को कहा स्वरूप है? जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक दृढ़ स्नेह सो सर्वोपरि है, सो

ભાવપ્રકાશ—પરંતુ ભગવદીય જેટલા છે તે બધાની એજ બોલી છે કે પોતાને હીન કહે છે. તે ભગવદીયોનું લક્ષણ છે. અને જે કોઇ પોતાને સારો કહે અને પોતાની વડાઇ કરે તે ભગવાનથી સદા બહિર્મુખ છે.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના આગળ સૂરદાસે માહાત્મ્ય સ્નેહ યુક્ત કીર્તન કર્યાં. તે પદ-કૌન સુકૃત ઇન બ્રજબાસિન કો. (ઉપર જુઓ) એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ બહુ પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે, જેવો શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પુષ્ટિમાર્ગ પ્રકટ કર્યો તેજ અનુસાર સૂરદાસજીએ આ કીર્તન ગાયું. શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગનું શું સ્વરૂપ છે?

ठाकुरजी कों बहोत प्रिय हैं। परन्तु जीव माहात्म्य राखे। सो काहेतें ? जो–माहात्म्य विना अपराध को भय मिट जाय। तासों प्रथम दसा में माहात्म्य युक्त स्नेह आवश्यक चाहिये। और व्रजभक्तन को स्नेह है सो सर्वोपरि है। तासों भक्तन के स्नेह के आगे श्रीठाकुरजी को माहात्म्य रहत नाहीं। सो ठाकुरजी स्नेह के वस होय भक्तन के पाछें २ डोलत हैं। सो जहां तांई एसो स्नेह नाहीं होय तहां तांई माहात्म्य राखनो। सो जब स्नेह को नाम ले के माहात्म्य छोड़े और श्रीठाकुरजी के आगे बैठे, वात करे और पीठि देय तो भ्रष्ट होय जाय। तासों माहात्म्य विचारे और अपराध सों डरपे, तो, कृपा होय। और जब (सर्वोपरि) स्नेह होयगो तब आपही तें स्नेह एसो पदार्थ है, जो–माहात्म्य कूं छुड़ाय देयगो। सो दसम स्कंध में वरनन है, जो–श्रीभगवानने वारवार माहात्म्य व्रजभक्तन कों और श्रीयसोदाजी कों दिखायो। सो पूतना वध करि, सकट तृनावर्त करि, यमलार्जुन करि, बकासुर, धेनुक, कालीदमन करिकें लीला में माहात्म्य दिखायो। परंतु व्रजभक्तन को स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय है। तासों माहात्म्य तथा ईश्वरभाव न भयो। सो एसो स्नेह प्रभु कृपा करि दान करें ताकों आपही तें माहात्म्य छूटि जायगो। और जाको स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंब में तथा द्रव्य में है, और अपने देह सुख में है सो भगवान को माहात्म्य छोड़ि लौकिक रीति करे

જે માહાત્મ્ય જ્ઞાનપૂર્વક દૃઢ સ્નેહ સર્વોપર છે તે શ્રીઠાકુરજીને બહુ પ્રિય છે પરંતુ જીવ માહાત્મ્ય રાખે. કેમકે ? માહાત્મ્ય વિના અપરાધનો ભય મટી જાય. તેથી પ્રથમ દશામાં માહાત્મ્યયુક્ત સ્નેહ આવશ્યક જોઇએ. અને વ્રજભક્તોનો સ્નેહ છે તે સર્વોપરી છે. તેથી ભક્તોના સ્નેહની આગળ શ્રીઠાકુરજીનું માહાત્મ્ય રહેતું નથી. શ્રીઠાકુરજી સ્નેહને વશ થઇ ભક્તોની પાછળ પાછળ ફરે છે. તેથી જ્યાં સુધી એવો સ્નેહ ન થાય ત્યાં સુધી માહાત્મ્ય રાખવું. જો સ્નેહનું નામ લઇને માહાત્મ્ય છોડે અને શ્રીઠાકુરજીની આગળ બેસે, વાત કરે અને પીઠ દે તો ભ્રષ્ટ થઇ જાય. તેથી માહાત્મ્ય વિચારે અને અપરાધથી ડરે તો કૃપા થાય. અને જીવ ને સર્વોપરી સ્નેહ થશે ત્યારે આપમેળે જ સ્નેહ એવો પદાર્થ છે કે મહાત્મ્યને છોડાવી દેશે. દશમસ્કંધમાં વર્ણન છે કે શ્રીભગવાને વારંવાર માહાત્મ્ય વ્રજભક્તોને અને શ્રીયશોદાજીને દેખાડ્યું. પૂતના વધ કરીને, શકટ તૃણાવર્ત વધ કરીને, યમલાર્જુનનો (ઉદ્ધાર) કરીને, બકાસુર, ધેનુક, કાલીદમન (લીલા) કરીને લીલામાં માહાત્મ્ય દેખાડ્યું. પરંતુ વ્રજભક્તોનો સ્નેહ પરમ અદ્‌ભુત અનિર્વચનીય છે તેથી માહાત્મ્ય તથા ઇશ્વરભાવ ન થયો. એવો સ્નેહ પ્રભુ કૃપા કરીને દાન કરે તેને આપમેળે જ માહાત્મ્ય છુટી જશે. અને જેનો સ્નેહ પતિ, પુત્ર, સ્ત્રી, કુટુંબમાં તથા

है जो अपने को हीन कहत हैं। सो यह भगवदीयन को लक्षण है। और जो कोई अपने को आछो कहै और आपुनी बड़ाई करे, सो भगवान तें सदा बहिर्मुख है।

तब श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे सूरदासजी ने माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन किये। सो पद—

राग गौरी—कौन सुकृत इन व्रजबासिन को वदत विरंचि सिव सेष। श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष-वेस ॥ ध्रुव ॥ ज्योति रूप जग-धाम जगतगुरु जगत-पिता जगदीस। जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल-इस ॥१॥ जाके उदर लोक त्रय, जल थल पंच तत्त्व चोखान। बालक ह्वै झूलत व्रज पलना जसुमति भवन-निधान ॥ २ ॥ इकइक रोम कूप विराट सम आनंद कोटि ब्रह्मांड। लिए उछंग ताहि मात यसोदा अपने भरि भुज-दंड ॥ ३ ॥ रवि-ससि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात। अंजन देत हेत सुत के चख लेकर काजर मात ॥ ४ ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियो है पतार। देहरी उलंघि सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंद के द्वार ॥ ५ ॥ अनुदिन स्रवत सुधारस पंचम चिंतामनि सी धेनु। सो त्यजि जसुमति को पय पीवत भक्तन कों सुख देनु ॥ ६ ॥ वेद वेदान्त उपनिषद् षटरस अरपे भुगते नाहिं। सो हरि ग्वाल-बाल मंडल में हँसि हँसि जूठनि खाहिं ॥ ७ ॥ कमलानायक वैकुंठ दायक सुख दुख जिनके हाथ। कांध कमरिया हाथ लकुटिया नग्न पद, बिहरत बन वच्छ साथ ॥ ८ ॥ करन हरन प्रभुदाता भुक्ता विश्वंभर जग जानि। ताहि लगाइ माखन की चोरी बांध्यौ नंदजू की रानि ॥ ९ ॥ बकी वकासुर सकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास। कंस केसी कों यह गति दीनी राखे चरन निवास ॥१०॥ भक्त वछल हरि पतित उद्धारन रहे सकल भरिपूर। मारग रोकि पर्‌यो हरि-द्वारे पतित सिरोमनि 'सूर' ॥११॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहोत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—क्यों जो-जैसो श्रीआचार्यजी आपु पुष्टिमार्ग प्रगट किये, ताही अनुसार सूरदासजी ने यह कीर्तन गायो। सो श्रीआचार्यजी के मारग को कहा स्वरूप है ? जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक दृढ़ स्नेह सो सर्वोपरि है, सो

ભાવપ્રકાશ—પરંતુ ભગવદીય જેટલા છે તે બધાની એજ બોલી છે કે પોતાને હીન કહે છે. તે ભગવદીયોનું લક્ષણ છે. અને જે કોઇ પોતાને સારો કહે અને પોતાની વડાઇ કરે તે ભગવાનથી સદા બહિર્મુખ છે.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના આગળ સૂરદાસે માહાત્મ્ય સ્નેહ યુક્ત કીર્તન કર્યાં. તે પદ-કૌન સુકૃત ઇન બ્રજબાસિન કો. (ઉપર જુઓ) એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ બહુ પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે, જેવો શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પુષ્ટિમાર્ગ પ્રકટ કર્યો તેજ અનુસાર સૂરદાસજીએ આ કીર્તન ગાયું. શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગનું શું સ્વરૂપ છે?

ठाकुरजी कों वहोत प्रिय हैं। परन्तु जीव माहात्म्य राखे। सो काहेतें ? जो–माहात्म्य विना अपराध को भय मिट जाय। तासों प्रथम दसा में माहात्म्य युक्त स्नेह आवश्यक चाहिये। और व्रजभक्तन को स्नेह है सो सर्वोपरि है। तासों भक्तन के स्नेह के आगे श्रीठाकुरजी को माहात्म्य रहत नाहीं। सो ठाकुरजी स्नेह के वस होय भक्तन के पाछें २ डोलत हैं। सो जहां तांई एसो स्नेह नाहीं होय तहां तांई माहात्म्य राखनो। सो जव स्नेह को नाम ले के माहात्म्य छोड़े और श्रीठाकुरजी के आगे वैठे, वात करे और पीठि देय तो भ्रष्ट होय जाय। तासों माहात्म्य विचारे और अपराध सों डरपे, तो, कृपा होय। और जव (सर्वोपरि) स्नेह होयगो तव आपही तें स्नेह एसो पदार्थ है, जो–माहात्म्य कूं छुड़ाय देयगो। सो दसम स्कंध में वरनन है, जो–श्रीभगवानने वारवार माहात्म्य व्रजभक्तन कों और श्रीयसोदाजी कों दिखायो। सो पूतना वध करि, सकट तृनावर्त करि, यमलार्जुन करि, बकासुर, धेनुक, कालीदमन करिकें लीला में माहात्म्य दिखायो। परंतु व्रजभक्तन को स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय है। तासों माहात्म्य तथा ईश्वरभाव न भयो। सो एसो स्नेह प्रभु कृपा करि दान करें ताकों आपही तें माहात्म्य छूटि जायगो। और जाको स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंब में तथा द्रव्य में है, और अपने देह सुख में है सो भगवान को माहात्म्य छोड़ि लौकिक रीति करे

જે માહાત્મ્ય જ્ઞાનપૂર્વક દૃઢ સ્નેહ સર્વોપર છે તે શ્રીઠાકુરજીને બહુ પ્રિય છે પરંતુ જીવ માહાત્મ્ય રાખે. કેમકે ? માહાત્મ્ય વિના અપરાધનો ભય મટી જાય. તેથી પ્રથમ દશામાં માહાત્મ્યયુક્ત સ્નેહ આવશ્યક જોઇએ. અને વ્રજભકતોનો સ્નેહ છે તે સર્વોપરી છે. તેથી ભકતોના સ્નેહની આગળ શ્રીઠાકુરજીનું માહાત્મ્ય રહેતું નથી. શ્રીઠાકુરજી સ્નેહને વશ થઇ ભકતોની પાછળ પાછળ ફરે છે. તેથી જ્યાં સુધી એવો સ્નેહ ન થાય ત્યાં સુધી માહાત્મ્ય રાખવું. જો સ્નેહનું નામ લઇને માહાત્મ્ય છોડે અને શ્રીઠાકુરજીની આગળ બેસે, વાત કરે અને પીઠ દે તો ભ્રષ્ટ થઇ જાય. તેથી માહાત્મ્ય વિચારે અને અપરાધથી ડરે તો કૃપા થાય. અને જીવ ને સર્વોપરી સ્નેહ થશે ત્યારે આપમેળે જ સ્નેહ એવો પદાર્થ છે કે મહાત્મ્યને છોડાવી દેશે. દશમસ્કંધમાં વર્ણન છે કે શ્રીભગવાને વારંવાર માહાત્મ્ય વ્રજભકતોને અને શ્રીયશોદાજીને દેખાડ્યું. પૂતના વધ કરીને, શકટ તૃણાવર્ત વધ કરીને, યમલાર્જુનનો (ઉદ્ધાર) કરીને, બકાસુર, ધેનુક, કાલીદમન (લીલા) કરીને લીલામાં માહાત્મ્ય દેખાડ્યું. પરંતુ વ્રજભકતોનો સ્નેહ પરમ અદ્ભુત અનિર્વચનીય છે તેથી માહાત્મ્ય તથા ઇશ્વરભાવ ન થયો. એવો સ્નેહ પ્રભુ કૃપા કરીને દાન કરે તેને આપમેળે જ માહાત્મ્ય છુટી જશે. અને જેનો સ્નેહ પતિ, પુત્ર, સ્ત્રી, કુટુંબમાં તથા

तो श्रीभगवान को अपराधी होय। तासों वेद मर्यादा सहित श्रीठाकुरजी के भय सहित सेवा करे, और सावधान रहे। सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मारग की रीति है। तासों माहात्म्य पूर्वक स्नेह करिये। और माहात्म्य पूर्वक स्नेह यह, जो–समय समय ऋतु अनुसार सेवा में सावधान रहै, ताको नाम माहात्म्य पूर्वक स्नेह कहिये।

पाछें श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–सूर! तुमकों पुष्टिमारग को सिद्धांत फलित भयो है, तासों तुम श्रीगोवर्द्धनधर के यहां समय समय के कीर्तन करो। ता समय सेन भोग सरि चुक्यो हतो, सो तब मान के कीर्तन सूरदास ने गाये। सो पद—

राग विहागरो—बोलति काहे न नागरि वैनां। तोहि मिलनकों बहुत करत हैं गिरिधरलाल कमलदल नैनां॥ १॥ जब तें दृष्टि परी मोहन की बिसर्‍यो गृह–सुख सेनां। रटत 'सूर' राधे राधे कहि कहूं बनमाल कहूं उपरेनां॥ २॥

राग बिहागरो—सुखद सेज में पोढ़े रसिकवर रसमय अंग संग जाय रेन जागे हैं। सिथिल बसन भूषन अलक छबि सोहे मुख मुखसों लपट उर लागे हैं॥ १॥ झुकझुक आवें नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहत अति अनुरागे हैं। 'सूरदास' नंदसुवन तुम्हारो यस जानो प्रानप्रिया सुख ही में रस पागे हैं॥ २॥

राग विहागरो—पोढे लाल राधिका उर लाय। नवकुसुम अरु नवल सिज्या नव चतुर दोऊ राय॥ १॥ गान करत सहचरी द्वारें सरस राग जमाय। 'सूर' प्रभु गिरिधरन संग सुख रह्यो उर लपटाय॥ २॥

सो पाछें या प्रकार सों कीर्तन सूरदासजी नें नित्य प्रातःकाल के जगायवे तें लेके सेन पर्यंत के हजारन किये।

द्रव्यमां छे अने पोताना देहसुखमां छे ते भगवानना माहात्म्यने छोडी लौकिक रीति करे तो अपराधी थाय. तेथी वेद मर्यादा सहित श्रीठाकुरजीना भय सहित सेवा करे अने सावधान रहे. आ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना मार्गनी रीति छे. तेथी माहात्म्यपूर्वक स्नेह करीए. वळी माहात्म्यपूर्वक स्नेह ए के समय समय ऋतु अनुसार सेवामां सावधान रहे. तेनुं नाम महात्म्यपूर्वक स्नेह कहिये.

पछी श्रीआचार्यजी आप कहे, के सूर! तमने पुष्टिमार्गनो सिद्धांत फलित थयो छे. तेथी हवे तमे श्रीगोवर्द्धनधरने त्यां समय—समयनां कीर्तन करो. ते समये सेनभोग सरी चूक्यो हतो. त्यारे माननां कीर्तन सूरदासजीए गायां. पद-१ 'बोलत काहे न नागर बैनां' २ 'सुखद सेजमें पोढे रसिक वर' ३ 'पोढे लाल राधिका उर लाय, (उपर जुओ) पछी सूरदासजीए, आ प्रकारनां कीर्तन नित्य प्रातःकालथी जगाववानां लईने सेन पर्यंतनां हजारो कर्यां.

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय सूरदासजी पांच सात वैष्णवन के संग मारग में चले जात हते। सो तहां दस पांच जने चोपड खेलत हते। सो चोपड के खेल में एसे लीन भये हते सो मारग में गैल में काहू आवते जाते मनुष्य की कछू खबरि नाहीं। सो या प्रकार उनकों मगन देखिकें सूरदासजी ने अपने संग के वैष्णवन के आगे एक पद गायो। और उन वैष्णवन सों सूरदासजी ने कह्यो, जो-देखो, यह प्राणी मनुष्यजन्म वृथा खोवत है। जो-श्रीभगवान ने मनुष्य-देह अपने भजन करिवे के लिये दीनी है। सो या देह सों यह प्राणी वृथा हाड कूटत है। सो यामें लौकिक में तो निंदा है, जो-यह जुवारी है। और अलौकिक में भगवान सों बहिर्मुखता है। तासों भगवानने तो एसी जिनकों मनुष्य-देह दीनी है, तिनकों एसी चोपड खेलि चाहिये। सो ता समय सूरदासजी ने यह पद करि के संग के वैष्णव हते, तिनकों सुनायो। सो पद—

राग केदारो—मन ! तू समझ सोच विचार। भक्ति विना भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥ साधु संगति डार पासा फेरि रसना सार। दाव अबके पर्यो पूरो, उतरि पेली पार॥ छांडि सत्रह सुन अठारे, पंच ही कों मार। दूरि तें तजि तीन काने चमक चौंक विचार॥ काम क्रोध मद लोभ भूल्यो ठग्यो ठगिनी नारि। 'सूर' हरि के पद भजन विन चल्यो दोउ कर झारि॥

सो सुनिके उन वैष्णवननें सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदासजी ! या पद में समुझ नाहीं परी है। तासों हमकों अर्थ करिके समुझावो,

---

વાર્તા-પ્રસંગ-૨—વળી એક સમય સૂરદાસજી પાંચ-સાત વૈષ્ણવોની સાથે માર્ગમાં ચાલ્યા જતા હતા. ત્યાં દશ પાંચ જણ ચોપડ રમતા હતા. તે ચોપડની રમતમાં એવા તલ્લીન થયા હતા કે માર્ગમાં રસ્તામાં કોઇ આવતા જતા મનુષ્યની કંઇ ખબર ન રહે. આ પ્રકારે એમને મગન જોઇને સૂરદાસજીએ પોતાની સંગ ના વૈષ્ણવોની આગળ એક પદ ગાયું. પછી એ વૈષ્ણવોને સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે જુઓ, આ પ્રાણી મનુષ્યજન્મ વૃથા ખોવે છે ભગવાને મનુષ્ય દેહ પોતાનું ભજન કરવા માટે આપી છે છતાં આ દેહથી આ પ્રાણી વૃથા હાડ કૂટે છે. એમાં લૌકિકમાં તો નિંદા છે, કહે આ જુગારી છે અને અલૌકિકમાં ભગવાનથી બહિર્મુખતા છે તેથી ભગવાને તો જેને એવી મનુષ્ય દેહ દીધી છે તેને આવી ચોપડ રમવી જોઇએ નહિ. તે સમયે સૂરદાસે આ પદ કહી ને સંગ ના વૈષ્ણવો હતા તેમને સંભળાવ્યું. તે પદ 'મન તૂ સમજ શોચ વિચાર' (ઉપર જુઓ). એ સાંભળીને એ વૈષ્ણવોએ સૂરદાસને કહ્યું,

सो तब समझ्यो जाय।तब सूरदासजी उन वैष्णवन सों कहे। जो—

तीन वस्तु चोपड़ में चाहियें, समुझ सोच और विचार। सो ये तीन्यो वस्तु भगवान के भजन में हू चाहिये (क्यों?) जो—जैसे पहले समुझै तब चोपड़ खेलेगो, सो तैसे ही भगवान कों जानेगो तो भजन करेगो। और चोपड़ में सोच होय, जो—एसो फांसा परे तो मैं जीतूं। सो तैसे ही या जीव कों काल को सोच होय, तब यह जीव प्रभु की सरन जाय। और (तीसरी वस्तु जो) विचार, सो यह जो—विचार के गोट कों, फांसा के दावकूं चले, जो—यहां नाहीं मारी जायगी इत्यादि। सो तैसेही विचार वैष्णव कों होय, जो—यह कार्य मैं करत हूं सो आछो है, के बुरो है? तब यह जीव बुरो काम छोड़िकें भगवत धरम की चाल में चले। और चोपड़ में फांसा के दाव परें तब दोऊ ओर के मनुष्य पुकारत हैं। सो तेसे ही जगत में निगम जो वेद पुराण सो पुकारि के कहत हैं, जो—भक्ति विना भगवान दुर्लभ हैं, सो तासों कोटि साधन करो। और चोपड़ में दूसरो संग मिले तब चोपड़ खेली जाय, सो तैसे ही भगवान की भक्ति में भगवदीय वैष्णव की संगति होय तब भक्ति बढ़े। और चोपड़ खेलिवेवारे के मन में (जैसे) अपने दाव को सुमिरन रहत है, जो—यह दाव परे तो मैं जीतूं, सो तैसे ही रसना सों यह जीव भगवद् वार्ता में मन लगाय के सब रस को सार रूप (एसो भगवन्नाम) कह्यो

કે સૂરદાસજી! આ પદમાં સમજ પડી નથી. તેથી અમને અર્થ કરીને સમજાવો ત્યારે સમજાય. ત્યારે સૂરદાસજીએ તે વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે—

ત્રણ વસ્તુ ચોપડમાં જોઇએ, સમજ, શોચ, અને વિચાર. એ ત્રણે વસ્તુ ભગવાનના ભજનમાં પણ જોઇએ. (કેમ) જે જ્યારે પહેલાં સમજે ત્યારે ચોપડ ખેલશે. તેજ રીતે ભગવાનને જાણશે તો ભજન કરશે. અને ચોપડમાં શોચ હોય કે આવો પાસા પડે તો હું જીતું. તેવીજ રીતે આ જીવને કાલનો શોચ હોય ત્યારે આ જીવ પ્રભુની શરણે જાય. અને (ત્રીજી વસ્તુ જે) વિચાર તે એ કે વિચારીને ગોટને, પાસાના દાવને ચાલે કે અહીં મારી નહીં જાય ઇત્યાદિ. તેવોજ વિચાર વૈષ્ણવને હોય કે આ કાર્ય હું કરૂં છું તે સારૂં છે કે ખોટું? ત્યારે આ જીવ ખોટું કામ છોડીને ભગવદ્ધર્મની ચાલમાં ચાલે. વળી ચોપડમાં પાસાનો દાવ પડે ત્યારે બન્ને તરફના મનુષ્યો પોકારે છે તેવીજ રીતે જગતમાં નિગમ જે વેદ પુરાણ તે પોકારી ને કહે છે, કે ભક્તિ વિના ભગવાન દુર્લભ છે. તેથી કોટી સાધન કરો વળી ચોપડમાં બીજો સાથ મળે ત્યારે ચોપડ રમાય. તેવીજ રીતે ભગવાનની ભક્તિમાં ભગવદીય વૈષ્ણવની સંગત હોય ત્યારે ભક્તિ વધે અને ચોપડ રમનારના મનમાં જેમ દાવનું સ્મરણ રહે છે કે આ દાવ પડે તો હું જીતું તેવીજ રીતે રસનાથી આ જીવ ભગવદ્વાર્તામાં મન લગાડીને બધા

करे। और (जैसे) चोपड में सुंदर पूरो दाव परे तब गोट पार जाय, और तब उतरि के घर में आवे, और मरिवे को भय मिटे। सो तैसे ही मनुष्य देह संसार सों पार उतरिवेकों पूरो दाव बड़ी पुन्याई सों मिले है, सो तो या देह सों भगवदाश्रय करि संसारतें पार उतरि जाय। 'राखि सत्रे सुनि अठारे' चोपड में सत्रे अठारे बड़े दाव है। सो तैसे ही जगत में सब पुराण हैं, सो तिनही कों राखि, सुनि अठारे जो–श्रीभागवत सुनन कों (और) पुराण हू कों धरि राख। और पांचों जो इन्द्रिय; पंचपर्वा अविद्या है, सो इनकूं मार। सो काहे तें ? जो शास्त्र के वचन है जो—

पतंग–मातंग–कुरंग–भृंग–मीना हताः पञ्चभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च ॥ १ ॥

१ पतंग–नेत्र विषय तें दीपक में परे। २ हाथी–स्पर्श विषय करि मरे। ३ कुरंग–श्रवन विषय तें मरे। ४ भृंग–गंध नासिका विषय तें मरे, ५ मीन–जिभ्या विषय तें मरे। सो एक एक विषय तें मरि परै, तो मनुष्य तो पांचन को सेवन करत है, सो निश्चय काल इनको भक्षण करे। तासों नाद पांचो मारि। सो जैसे चोपड़ में गोट मारत हैं। और चोपड़ में सब तें छोटो दाव तीनि काने हैं, सो कोऊ नाहीं चाहत है। तैसे ही तू तीन–तामस, राजस, सात्त्विक यह माया के गुण हैं, सो सगरो संसार सोइ चोक है, सो यामें चतुराई सों डार। चतुराई

રસ ના સાર રૂપ (એવું ભગવન્નામ) કહ્યા કરે. અને જેમ ચોપડમાં સુંદર પૂરો દાવ પડે ત્યારે ગોટી પાર જાય અને ત્યારે ઉતરીને ઘરમાં આવે અને મરવાનો ભય મટે તેવીજ રીતે મનુષ્ય–દેહ સંસારથી પાર ઉતરવાને પૂરો દાવ બહુ પુન્યાઇથી મળે છે. તે તો આ દેહથી ભગવદાશ્રય કરી સંસારથી પાર ઉતરી જાય છે. 'રાખિ સત્રે સુનિ અઠારે' ચોપડમાં સત્તર અઢાર મોટા દાવ છે તેવીજ રીતે જગતમાં બધાં પુરાણ છે તેને પણ રાખીને અઢારમું (પુરાણ) જે શ્રીભાગવત તે સાંભળ. શ્રીભાગવત સાંભળવાને બીજાં પુરાણોને પણ ધરી રાખ. વળી પાંચે ઇંદ્રિયો, પંચપર્વા અવિદ્યા છે તેને માર. કેમકે શાસ્ત્રનાં વચન છે જે 'પતંગ, માતંગ' (જુઓ ઉપર) ૧ **પતંગ**–નેત્ર વિષયથી દીવામાં પડે. ૨ **હાથી**–સ્પર્શ વિષયથી મરે. ૩ **હરણ**–શ્રવણ–વિષયથી મરે. ૪ **ભમરો**–ગંધનાસિકા વિષયથી મરે. ૫ **માછલું**–જીભના વિષયથી મરે. આ એક એક વિષયથી મરી પડે તો મનુષ્ય તો પાંચેયનું સેવન કરે છે તેથી કાલ નિશ્ચય એનું ભક્ષણ કરે. તેથી પાંચે નાદને માર. તે જેમ ચોપડમાં ગોટી મારે છે. વળી ચોપડમાં બધાથી નાનો દાવ ત્રણ કાણાં છે તે કોઇ ઇચ્છતું નથી તે જ રીતે તે ત્રણ–તામસ, રાજસ, સાત્વિક એ માયા-

यह, जो–इनकों डारे पाछे इनकी ओर देखे मति। सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो। सो तैसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है। सो यह सगरे जगत कों ठगेगी। सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारि के उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई। जो कछु भलो परोपकार संग नाहीं कियो। सो या प्रकार वैष्णव सुनि के सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

वार्ता–प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो–आवो सूरसागर! सो ताको आसय यह है, जो–समुद्र में सगरो पदार्थ होत है। तैसे ही सूरदास ने सहस्रावधि पद किये हैं। तामें ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन सबन की लीला को वरनन कियो है। पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे। सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो। सो पद:—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन। कोऊ निंदो कोऊ वंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥१॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है भच्छन। कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन। 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहिं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ना ગુણ છે (એને) બધો સંસાર તે ચોક છે એમાં ચતુરાઇથી નાખ. ચતુરાઈ એ કે એને નાખ્યા પછી એની સામે જોઇશ નહીં અને ચોપડમાં બધા શુધ બુધ ભૂલી જાય છે તે બધા ઠગાયા છે તેમ કામ–ક્રોધાદિ જંજાલ છે. વળી સ્ત્રીરૂપી ભગવદ્ માયા છે. તે આ બધા જગતને ઠગશે. જેમ ચોપડ ખેલીને હારીને બધા બન્ને હાથ ખંખેરીને ઉઠે તેજ રીતે શ્રીઠાકુરજીના ચરણકમલના ભજન વિના બન્ને હાથ ખંખેરીને આ મનુષ્યે દેહ ખોઇ. કંઇ સારો પરોપકાર સાથે નહીં કર્યો. આ પ્રકારે વૈષ્ણવ સાંભળીને સૂરદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા પ્રસંગ ૩-વળી સૂરદાસને જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી જોતા ત્યારે કહેતા કે આવો 'સૂરસાગર'! એનો આશય એ છે કે સમુદ્રમાં બધો પદાર્થ હોય છે. તેજ રીતે સૂરદાસે સહસ્રાવધિ પદ કર્યાં છે તેમાં જ્ઞાન–વૈરાગ્યનાં, અલગ અલગ ભક્તિ–ભેદનાં અનેક ભગવદ્ અવતારનાં,(તેમજ) એ બધાની લીલાનું વર્ણન કર્યું છે. પછી એમનાં

यह सुनि देसाधिपति अकबर ने कह्यो, जो-ऐसे लक्षन वारे भक्तन सों मिलाप होय तो कहा कहिये ? सो तानसेन ने कही, जो-जिननें यह कीर्तन कियो है सो व्रज में रहत हैं। और सूरदासजी उनको नाम है। यह सुनि देसाधिपति के मन में आई, जो कोई उपाय करिके सूरदास सों मिलिये। पाछें देसाधिपति दिल्ली तें आगरा आयो। तब अपने हलकारान सों कह्यो, जो-व्रज में सूरदासजी श्रीनाथजी के पद गावत हैं, सो तिनकी ठीक पारिके मोकों श्रीमथुराजी में खबरि दीजियों, और (जो) यह बात सूरदास जानें नाहीं। तब उन हलकारान ने श्रीनाथजीद्वार आयके खबरि काढ़ी। तब सुनी, जो-सूरदासजी तो मथुरा गये हैं। सो तब वे हलकारा श्रीमथुरा में आयके सूरदास कों नजरि में राखे, जो-या समय यहाँ बैठे हैं। तब उन हलकारान ने देसाधिपति कों खबरि करी, जो-अजी साहब ! सूरदासजी तो मथुराजी में हैं। तब सूरदास कूं अकबर बादशाह ने दस पांच मनुष्य बुलायबे कों पठाये। सो सूरदासजी देसाधिपति के पास आये। तब देसाधिपति ने उनको बहोत आदर सन्मान कियो। पाछें सूरदासजी सों देसाधिपति ने कह्यो, जो-सूरदासजी !

પદ જ્યાં ત્યાં લોકો શિખીને ગાવા લાગ્યા. ત્યારે એક સમય તાનસેને એક પદ શિખીને અકબર બાદશાહની આગળ ગાયું. તે પદ- 'યહ સબ જાનો ભક્તકે લક્ષણ' (ઉપર જુઓ) એ સાંભળી દેશાધિપતિ અકબરે કહ્યું, એવા લક્ષણવાળા ભક્તોથી મેળાપ થાય તો શું કહીએ ? ત્યારે તાનસેને કહ્યું, કે જેમણે આ કીર્તન કર્યું છે તે વ્રજમાં રહે છે અને સૂરદાસજી એમનું નામ છે ! એ સાંભળી દેશાધિપતિના મનમાં આવ્યું કે કોઇ ઉપાય કરીને સૂરદાસને મળીએ. પછી દેશાધિપતિ દિલ્હીથી આગ્રા આવ્યો. ત્યારે પોતાના હલકારાઓને કહ્યું, વ્રજમાં સૂરદાસજી શ્રીનાથજીના પદ ગાય છે તેમની ઠીક પાડીને મને મથુરાજીમાં ખબર આપજો અને આ વાત સૂરદાસજી જાણે નહીં. ત્યારે તે હલકારાઓએ શ્રીનાથજીદ્વારમાં આવીને ખબર કાઢી. ત્યારે સાંભળ્યું કે સૂરદાસજી તો મથુરાજી ગયા છે. ત્યારે તે હલકારાએ શ્રીથુમરાજીમાં આવીને સૂરદાસજીને નજરમાં રાખ્યા કે આ સમય અહીં બેઠા છે. પછી એ હલકારાઓએ દેશાધિપતિને ખબર કરી કે સાહબ ! સૂરદાસજી તો મથુરાજીમાં છે. ત્યારે સૂરદાસજીને અકબર બાદશાહે દશ પાંચ મનુષ્ય બોલાવવાને મોકલ્યા. ત્યારે સૂરદાસજી દેશાધિપતિની પાસે આવ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિએ એમનું બહુ આદર સન્માન કર્યું. પછી સૂરદાસજીને દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે સૂરદાસજી ! તમે વિષ્ણુ પદ ઘણાં કર્યાં છે તેથી મને

यह, जो–इनकों डारे पाछे इनकी ओर देखे मति। सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो। सो तैसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है। सो यह सगरे जगत कों ठगेगी। सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारि के उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई। जो कछु भलो परोपकार संग नाहीं कियो। सो या प्रकार वैष्णव सुनि के सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

वार्ता–प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो–आवो सूरसागर! सो ताको आसय यह है, जो–समुद्र में सगरो पदार्थ होत है। तैसे ही सूरदास ने सहस्त्रावधि पद किये हैं। तामें ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन सबन की लीला को वरनन कियो है। पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे। सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो। सो पद:—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन। कोऊ निंदो कोऊ वंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥१॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है भच्छन। कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह वडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन। 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहिं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ના ગુણ છે (એને) બધો સંસાર તે ચોક છે એમાં ચતુરાઇથી નાખ. ચતુરાઇ એ કે એને નાંખ્યા પછી એની સામે જોઇશ નહીં અને ચોપડમાં બધા શુધ બુધ ભૂલી જાય છે તે બધા ઠગાયા છે તેમ કામ–ક્રોધાદિ જંજાલ છે. વળી સ્રીરૂપી ભગવદ્ માયા છે. તે આ બધા જગતને ઠગશે. જેમ ચોપડ ખેલીને હારીને બધા બન્ને હાથ ખંખેરી ને ઉઠે તેજ રીતે શ્રીઠાકુરજીના ચરણકમલના ભજન વિના બન્ને હાથ ખંખેરીને આ મનુષ્યે દેહ ખોઇ. કંઇ સારો પરોપકાર સાથે નહીં કર્યો. આ પ્રકારે વૈષ્ણવ સાંભળીને સૂરદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા પ્રસંગ ૩–વળી સૂરદાસને જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી જોતા ત્યારે કહેતા કે આવો 'સૂરસાગર'! એનો આશય એ છે કે સમુદ્રમાં બધો પદાર્થ હોય છે. તેજ રીતે સૂરદાસે સહસ્રાવધિ પદ કર્યા છે તેમાં જ્ઞાન–વૈરાગ્યનાં, અલગ અલગ ભક્તિ–ભેદનાં અનેક ભગવદ્ અવતારનાં,(તેમજ) એ બધાની લીલાનું વર્ણન કર્યું છે. પછી એમનાં

यह सुनि देसाधिपति अकबर ने कह्यो, जो–ऐसे लक्षन वारे भक्तन सों मिलाप होय तो कहा कहिये ? सो तानसेन ने कही, जो–जिननें यह कीर्तन कियो है सो व्रज में रहत हैं। और सूरदासजी उनको नाम है। यह सुनि देसाधिपति के मन में आई, जो कोई उपाय करिके सूरदास सों मिलिये। पाछें देसाधिपति दिल्ली तें आगरा आयो। तब अपने हलकारान सों कह्यो, जो–व्रज में सूरदासजी श्रीनाथजी के पद गावत हैं, सो तिनकी ठीक पारिके मोकों श्रीमथुराजी में खबरि दीजियों, और (जो) यह बात सूरदास जानें नाहीं। तब उन हलकारान ने श्रीनाथजीद्वार आयके खबरि काढ़ी। तब सुनी, जो–सूरदासजी तो मथुरा गये हैं। सो तब वे हलकारा श्रीमथुरा में आयके सूरदास कों नजरि में राखे, जो–या समय यहाँ बैठे हैं। तब उन हलकारान ने देसाधिपति कों खबरि करी, जो–अजी साहब ! सूरदासजी तो मथुराजी में हैं। तब सूरदास कूं अकबर बादशाह ने दस पांच मनुष्य बुलायवे कों पठाये। सो सूरदासजी देसाधिपति के पास आये। तब देसाधिपति ने उनको बहोत आदर सन्मान कियो। पाछें सूरदासजी सों देसाधिपति ने कह्यो, जो–सूरदासजी !

પદ જ્યાં ત્યાં લોકો શિખીને ગાવા લાગ્યા. ત્યારે એક સમય તાનસેને એક પદ શિખીને અકબર બાદશાહની આગળ ગાયું. તે પદ– 'યહ સબ જાનો ભક્તકે લક્ષણ' (ઉપર જુઓ) એ સાંભળી દેશાધિપતિ અકબરે કહ્યું, એવા લક્ષણવાળા ભક્તોથી મેળાપ થાય તો શું કહીએ ? ત્યારે તાનસેને કહ્યું, કે જેમણે આ કીર્તન કર્યું છે તે વ્રજમાં રહે છે અને સૂરદાસજી એમનું નામ છે ! એ સાંભળી દેશાધિપતિના મનમાં આવ્યું કે કોઇ ઉપાય કરીને સૂરદાસને મળીએ. પછી દેશાધિપતિ દિલ્હીથી આગ્રા આવ્યો. ત્યારે પોતાના હલકારાઓને કહ્યું, વ્રજમાં સૂરદાસજી શ્રીનાથજીના પદ ગાય છે તેમની ઠીક પાડીને મને મથુરાજીમાં ખબર આપજો અને આ વાત સૂરદાસજી જાણે નહીં. ત્યારે તે હલકારાઓએ શ્રીનાથજીદ્વારમાં આવીને ખબર કાઢી. ત્યારે સાંભળ્યું કે સૂરદાસજી તો મથુરાજી ગયા છે. ત્યારે તે હલકારાએ શ્રીથુમરાજીમાં આવીને સૂરદાસજીને નજરમાં રાખ્યા કે આ સમય અહીં બેઠા છે. પછી એ હલકારાઓએ દેશાધિપતિને ખબર કરી કે સાહબ ! સૂરદાસજી તો મથુરાજીમાં છેઃ ત્યારે સૂરદાસજીને અકબર બાદશાહે દશ પાંચ મનુષ્ય બોલાવવાને મોકલ્યા. ત્યારે સૂરદાસજી દેશાધિપતિની પાસે આવ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિએ એમનું બહુ આદર સન્માન કર્યું. પછી સૂરદાસજીને દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે સૂરદાસજી ! તમે વિષ્ણુ પદ ઘણાં કર્યાં છે તેથી મને

यह, जो-इनकों डारे पाछे इनकी ओर देखे मति। सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो। सो तेसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है। सो यह सगरे जगत कों ठगेगी। सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारि के उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई। जो कछु भलो परोपकार संग नाहीं कियो। सो या प्रकार वैष्णव सुनि के सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

वार्ता-प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो-आवो सूरसागर! सो ताको आसय यह है, जो-समुद्र में सगरो पदार्थ होत है। तैसे ही सूरदास ने सहस्रावधि पद किये हैं। तामें ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन सबन की लीला को वरनन कियो है। पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे। सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो। सो पदः—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन। कोऊ निंदो कोऊ वंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥१॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है मच्छन। कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन। 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहिं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ના ગુણ છે (એને) બધો સંસાર તે ચોક છે એમાં ચતુરાઇથી નાખ. ચતુરાઇ એ કે એને નાખ્યા પછી એની સામે જોઇશ નહીં અને ચોપડમાં બધા શુધ બુધ ભૂલી જાય છે તે બધા ઠગાયા છે તેમ કામ–ક્રોધાદિ જંજાલ છે. વળી સ્રીરૂપી ભગવદ્ માયા છે. તે આ બધા જગતને ઠગશે. જેમ ચોપડ ખેલીને હારીને બધા બન્ને હાથ ખંખેરીને ઉઠે તેજ રીતે શ્રીઠાકુરજીના ચરણકમલના ભજન વિના બન્ને હાથ ખંખેરીને આ મનુષ્યે દેહ ખોઇ. કંઇ સારો પરોપકાર સાથે નહીં કર્યો. આ પ્રકારે વૈષ્ણવ સાંભળીને સૂરદાસના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા.

વાર્તા પ્રસંગ ૩-વળી સૂરદાસને જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી જોતા ત્યારે કહેતા કે આવો 'સૂરસાગર'! એનો આશય એ છે કે સમુદ્રમાં બધો પદાર્થ હોય છે. તેજ રીતે સૂરદાસે સહસ્રાવધિ પદ કર્યાં છે તેમાં જ્ઞાન–વૈરાગ્યનાં, અલગ અલગ ભક્તિ–ભેદનાં અનેક ભગવદ્ અવતારનાં,(તેમજ) એ બધાની લીલાનું વર્ણન કર્યું છે. પછી એમનાં

भावप्रकाश—सो यह पद कैसो है, जो–या पद को सुमिरन रहै तब भगवत् अनुग्रह होय, और मनकूं बोध होय। और संसार सों वैराग्य होय, और श्रीभगवान के चरणारविंद में मन लगे। तब दुःसंग सों भय होय, सत्संग में मन लगे। सो देहादिक में ते स्नेह घटे, और लौकिक आसक्ति छूटे। जो भगवान को प्रेम है, सो अलौकिक है। सो ताके ऊपर प्रीति वढ़े।

यह सुनि देसाधिपति बहोत प्रसन्न भयो। पाछे देसाधिपति के मनमें यह आई, जो–सूरदासजी की परीक्षा देखूं। सो भगवान् को आश्रय होयगो, तो ये मेरो जस गावेगो नाहीं। सो यह विचार के देसाधिपति नें सूरदास सों कही, जो–श्रीभगवान ने मोकों राज्य दियो है, सो सगरे गुनीजन मेरो जस गावत हैं, सो तिनकों मैं अनेक द्रव्यादिक देत हौं। तासों तुमहू गुनी हो, सो तुमहू मेरो कछू जस गावो। सो तिहारे मन में जो इच्छा होय सो माँगि लेहू। सो यह देसाधिपति ने कह्यो। तब सूरदासजी ने यह पद गायो—

राग केदारो—नाहिन रह्यो मन में ठौर। नंदनंदन अछत कैसे आनिए उर और॥ १॥ चलत चितवत दिवस जागत सुपन सोवत राति। हृदय तें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥ २॥ कहत कथा अनेक ऊधो लाख लोभ दिखाय। कहा करौं चित्त प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय॥ ३॥ स्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास। 'सूर' ऐसे दरस कों ये मरत लोचन प्यास॥ ४॥

કંઇ સંભળાવો. ત્યારે સૂરદાસે અકબર બાદશાહ આગળ એક પદ ગાયું. તે પદ 'મનારે તૂ કરિ માધોં સોં પ્રીત' (ઉપર જુઓ)

ભાવપ્રકાશ—આ પદ કેવું છે? કે આ પદનું સ્મરણ રહે ત્યારે ભગવદનુગ્રહ હોય, અને ભગવાનના ચરણારવિંદમાં મન લાગે. ત્યારે દુઃસંગનો ભય હોય, સત્સંગમાં મન લાગે. દેહાદિકમાંથી સ્નેહ ઘટે અને લૌકિક આસક્તિ છુટે. ભગવાનનો પ્રેમ છે તે અલૌકિક છે. તેના ઉપર પ્રીતિ વધે.

આ પદ સાંભળી દેશાધિપતિ બહુજ પ્રસન્ન થયો. પછી દેશાધિપતિના મનમાં આવ્યું કે સૂરદાસજીની પરીક્ષા લઉં. ભગવાનનો આશ્રય હશે તો એ મારો યશ ગાશે નહીં. એ વિચારીને દેશાધિપતિએ સૂરદાસને કહ્યું, કે શ્રીભગવાને મને રાજ્ય આપ્યું છે તેથી બધા ગુણીજન મારો યશ ગાય છે તેમને હું દ્રવ્યાદિક આપું છું. તેથી તમે પણ ગુણી છો, તેથી તમે પણ મારો કંઇક યશ ગાવ અને તમારા મનમાં જે ઇચ્છા હોય તે માંગી લો. આ દેશાધિપતિએ કહ્યું. ત્યારે સૂરદાસજીએ આ પદ ગાયું:- 'નાહિન રહ્યો મનમેં ઠાર' (ઉપર જુઓ.) એ પદ સાંભળીને દેશાધિપતિએ પોતાના મનમાં

तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं, सो तुम मोकों कछु सुनावो। तब सूरदास नें अकबर बादशाह आगे यह पद गायो। सो पद–

राग बिलावल—मनारे! तू करि माधौं सौं प्रीति। काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांडि सकल विपरीति। भौंरा भोगी बन भ्रमेरे मोद न माने माप। सब कुसुमन कौं नीरस करे रे कमल बंधावे आप ॥ १ ॥ सुनि परमित पिय-प्रेमकी रे चातक-चितवे वारि। घन आसा सब दुःख सहेरे अनत न जाचे द्वारि ॥ २ ॥ देखहू करनी कमलकी रे कीनो रविसों हेत। प्रान तजे प्रेम ना तजै रे सूक्यो सर ही समेत ॥ ३ ॥ दीपक पीर न जान ही रे पावक परे पतंग। तन तो तिहिं ज्वाला जर्‍यो रे चित न भयो रस भंग ॥ ४ ॥ मीन वियोग न सहि सकेरे, नीर न पूछे बात। देखि जू तू ताकी गति रे रति न घटे तन जात ॥ ५ ॥ परन परेवा प्रेमको रे चित ले चढन अकास। तहां चढि ताहि जू देखि ही रे भू पर लेत उसास ॥ ६ ॥ सुमिर सनेह कुरंग कौ रे श्रवननि राच्यो राग। धरि न सक्यो पग पिछमनो रे सर सन्मुख उर लाग ॥ ७ ॥ देखि करनी जड नारिकी रे जरत प्रेत के संग। चिता न चित फीको भयो रे राची पियके संग ॥ ८ ॥ लोक वेद बरजे सबेरे नेनन देखे त्रास। चोर न जिय चोरी तजे रे सब तन सहत चिनास ॥ ९ ॥ सब रस कौ रस प्रेम है रे विषई खेले सार। तन-मन-धन जोवन खस्यो रे तोऊ न माने हार ॥१०॥ तैं रतन पायो भलो रे जान्यो साधन साध। प्रेमकथा अनुदिन सुनी रे तोउ न उपनी लाज ॥११॥ सदा संगाती आपुनो रे जियके जीवन प्रान। सो बिसर्‍यो तू सहज ही रे हरि ईश्वर भगवान ॥१२॥ वेद पुरान सुमरे सबे रे सुर तरु सेवत जाहि। महा मोह अज्ञान में रे क्यों न सम्हारे ताहि ॥१३॥ खग मृग मीन पतंग लों रे मैं सोधे सब ठौर। जलथल जीव जिते किते रे कहों कहां लगि और ॥१४॥ प्रभु पूरन पावन सखा रे प्राननहू के नाथ। परम दयाल कृपाल कृपानिधि जीवन जाके हाथ ॥१५॥ गर्भवास अति त्रास में रे जहां न एको अंग। सुनि सठ तेरे प्रानपति रे तहां हु न छांड्यो संग ॥१६॥ दिन रात पोषत रहे रे जैसे चोली पान। वा दुःख तें तोहि काढि के रे गहे दीनो पयपान ॥१७॥ जिहिं जड तें चेतन कियो रे रचि गुन तत्त्व निधान। चरन चिकुर कर नख दिये रे नैन नासिका कान ॥१८॥ असन बसन बहु विधि दिए रे औसर औसर आन। मात-पिता भैया मिले रे नइ रुचि नइ पहचान ॥१९॥ सज्जन कुटुंब परिकर वढ्यो रे सुतदारा धन धाम। महा मोह विषयी भयो रे चित्त आकर्ष्यो काम ॥२०॥ खानपान परिधान में रे जोवन गयो सब बीत। ज्यों विट परतिय संग वस्यो रे भोर भये भयभीत ॥२१॥ जैसे सुख ही धन वढ्यो रे तैसे तन हि अनंग। धूम वढ्यो लोचन खस्यो रे सखा न सूझ्यो संग ॥२२॥ जब जान्यो सब जग मूओ रे वाढ्यो अयस अपार। वीच न काहू तब कियो रे जमदूतन दीनी मार ॥२३॥ को जाने के वार मूओरे ऐसो कुमति कुमीच। हरिसों हेत बिसारिकै सुख चाहत है नीच ॥२४॥ जो पै जिय लज्जा नहीं रे कहा कहों सौ बार। ऐको अंग ते न हरि भज्यो रे सुनि सठ 'सूर' गँमार ॥२५॥

भावप्रकाश—सो यह पद कैसो है, जो–या पद को सुमिरन रहै तब भगवत् अनुग्रह होय, और मनकूं बोध होय। और संसार सों वैराग्य होय, और श्रीभगवान के चरणारविंद में मन लगे। तब दुःसंग सों भय होय, सत्संग में मन लगे। सो देहादिक में ते स्नेह घटे, और लौकिक आसक्ति छूटे। जो भगवान को प्रेम है, सो अलौकिक है। सो ताके ऊपर प्रीति बढ़े।

यह सुनि देसाधिपति बहोत प्रसन्न भयो। पाछे देसाधिपति के मनमें यह आई, जो–सूरदासजी की परीक्षा देखूं। सो भगवान् को आश्रय होयगो, तो ये मेरो जस गावेगो नाहीं। सो यह विचार के देसाधिपति नें सूरदास सों कही, जो–श्रीभगवान ने मोकों राज्य दियो है, सो सगरे गुनीजन मेरो जस गावत हैं, सो तिनकों मैं अनेक द्रव्यादिक देत हौं। तासों तुमहू गुनी हो, सो तुमहू मेरो कछू जस गावो। सो तिहारे मन में जो इच्छा होय सो माँगि लेहू। सो यह देसाधिपति ने कह्यो। तब सूरदासजी ने यह पद गायो—

राग केदारो—नाहिन रह्यो मन में ठौर। नंदनंदन अछत कैसे आनिए उर और॥ १॥ चलत चितवत दिवस जागत सुपन सोवत राति। हृदय तें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥ २॥ कहत कथा अनेक उधो लाख लोभ दिखाय। कहा करौं चित्त प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय॥ ३॥ स्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास। 'सूर' ऐसे दरस कों ये मरत लोचन प्यास॥ ४॥

કંઇ સંભળાવો. ત્યારે સૂરદાસે અકબર બાદશાહ આગળ એક પદ ગાયું. તે પદ 'મનારે તૂ કરિ માધો સોં પ્રીત' (ઉપર જુઓ)

ભાવપ્રકાશ—આ પદ કેવું છે? કે આ પદનું સ્મરણ રહે ત્યારે ભગવદનુગ્રહ હોય, અને ભગવાનના ચરણારવિંદમાં મન લાગે. ત્યારે દુઃસંગનો ભય હોય, સત્સંગમાં મન લાગે. દેહાદિકમાંથી સ્નેહ ઘટે અને લૌકિક આસક્તિ છુટે. ભગવાનનો પ્રેમ છે તે અલૌકિક છે. તેના ઉપર પ્રીતિ વધે.

આ પદ સાંભળી દેશાધિપતિ બહુજ પ્રસન્ન થયો. પછી દેશાધિપતિના મનમાં આવ્યું કે સૂરદાસજીની પરીક્ષા લઉં. ભગવાનનો આશ્રય હશે તો એ મારો યશ ગાશે નહીં. એ વિચારીને દેશાધિપતિએ સૂરદાસને કહ્યું, કે શ્રીભગવાને મને રાજ્ય આપ્યું છે તેથી બધા ગુણીજન મારો યશ ગાય છે તેમને હું દ્રવ્યાદિક આપું છું. તેથી તમે પણ ગુણી છો, તેથી તમે પણ મારો કંઇક યશ ગાવ અને તમારા મનમાં જે ઇચ્છા હોય તે માંગી લો. આ દેશાધિપતિએ કહ્યું. ત્યારે સૂરદાસજીએ આ પદ ગાયું:– 'નાહિન રહ્યો મનમેં ઠોર' (ઉપર જુઓ.) એ પદ સાંભળીને દેશાધિપતિએ પોતાના મનમાં

सो यह पद सुनिके देसाधिपति ने अपने मनमें विचार्यो, जो–ये मेरो जस काहे कों गावेंगे ? जो इनकों कछू लेवे को लालच होय तो ये मेरो जस गावें। ये तो परमेश्वर के जन हैं, सो ये तो ईश्वर को जस गावेंगे। सो सूरदासजी या कीर्तन में पिछले चरन में कहे हैं जो–

'सूर ! ऐसे दरस कों ये मरत लोचन प्यास ।'

सो देसाधिपति ने सूरदास सों कह्यो, जो–सूरदास ! तुम्हारे तो नेत्र हैं नाहीं, सो प्यासे कैसे मरत हैं ? सो यह तुम कहा कहे ? तब सूरदासजी ने कही, जो या–बात की तुमकों कहा खबरि है ? जो ये लोचन तो सबके हैं, परन्तु भगवान के दरसन की प्यास काहू कों है ? जो श्रीभगवान के दरसन के जे प्यासे नेत्र हैं, सो तो सदा भगवान के पास ही रहत हैं। सो स्वरूपानंद को रसपान छिन छिन में करत हैं, और सदा प्यासे मरत हैं। यह सुनि अकबर बादशाह ने कही, जो–इनके नेत्र तो परमेश्वर के पास हैं, सो परमेश्वर कों देखत हैं, और कों देखत नाहीं। तब बादशाह ने सूरदास के समाधान की ईच्छा कीनी। दोय चारि गाम तथा द्रव्य बहोत देन लाग्यो, सो सूरदास ने कछू नाहीं लियो। तब अकबर बादशाह सूरदासजी सों कहे, जो–बाबा साहिब ! कछू तो मोकों आज्ञा करिये। तब सूरदासजी ने कही, जो–आज पाछें हमकों कबहू फेरि मति बुलाइयो और मोसों कबहू मिलियो मति ।

વિચાર્યું, કે એ મારો યશ શા માટે ગાય ? એમને કંઈ લેવાની લાલચ હોય તો એ મારો યશ ગાય એ તો પરમેશ્વરના જન છે તેથી એ તો ઇશ્વરનો યશ ગાશે. તે સૂરદાસજીએ આ કીર્તનમાં પાછલા ચરણમાં કહ્યું છે કે–' સૂર ઐસે દરસ કોં એ મરત લોચન પ્યાસ ' તેથી દેશાધિપતિએ સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસ ! તમારે તો નેત્ર છે નહીં તો તરસ્યાં કેમ મરે છે ? તેથી તમે આવું શું કહ્યું ? ત્યારે સૂરદાસજી એ કહ્યું, કે આ વાતની તમને શી ખબર છે ? આ નેત્ર તો બધાંને છે; પરંતુ ભગવાનના દર્શનની તરસ કોઇને છે ? શ્રીભગવાનના દર્શનનાં તરસ્યાં જે નેત્ર છે તે તો સદા ભગવાનની પાસેજ રહે છે તે સ્વરૂપાનંદના રસનું પાન ક્ષણ ક્ષણમાં કરે છે. અને સદા તરસ્યાં મરે છે. એ સાંભળી બાદશાહ અકબરે કહ્યું, કે એમના નેત્ર તો પરમેશ્વરની પાસે છે તે પરમેશ્વરને જુએ છે બીજાને જોતાં નથી. ત્યારે બાદશાહે સૂરદાસના સમાધાનની ઇચ્છા કરી. બે-ચાર ગામ તથા દ્રવ્ય ઘણું આપવા લાગ્યો. તે સૂરદાસે કંઇ લીધું નહીં. ત્યારે અકબર બાદશાહ સૂરદાસજીને કહે, કે બાવા સાહબ ! કંઇક તો મને

भावप्रकाश—सो अकबर बादशाह विवेकी हतो। सो काहेतें ? जो ये योगभ्रष्ट तें म्लेच्छ भयो है। सो पहले जन्म में ये बालमुकुन्द ब्रह्मचारी हतो। सो एक दिन ये बिना छाने दूध पान कियो, तामें एक गाय को रोम पेट में गयो। सो ता अपराध तें यह म्लेच्छ भयो है।

सो सूरदास कों दंडवत करिके विदा किये।

वार्ता-प्रसंग ४—ता पाछे सूरदास श्रीनाथजीद्वार आये। पाछे देसाधिपति ने आगरे में आयके सूरदास के पदन की तलास कीनी। जो कोऊ सूरदासजी के पद लावे तिनकूं रुपैया और मोहौर देय। सो वे पद फारसी में लिखाय के बांचे। सो मोहौर के लालच सों पंडित कवीश्वर हू सूरदास के पद बनाय के लाये। तब अकबर पातसाह ने उनसों कह्यो, जो-यह पद सूरदासजी को नाहीं। सो ये पैसा के लिये पद की चोरी करत हैं। तब पंडित कवीश्वरन ने कही, जो-तुम कैसे जाने जो वह सूरदास को पद नाहीं ? जो यह तो सूरदास को ही पद है। तब पातसाह ने अपने पास सों सूरदास को पद अपने कागद के ऊपर लिखायो। और वे पंडित कवीश्वर सूरदासको भोग (छाप) को बनाय के लाये सो दोऊ कागद जल में धरिके कह्यो, जो-ईश्वर सांचे होय तो या बात को न्याव करि दीजो। सो यह कहि

આજ્ઞા કરો. ત્યારે સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે આજ પછી અમને ક્યારેય ફરી બોલાવતા નહીં અને મને ક્યારેય મળતા નહીં.

ભાવપ્રકાશ—તે અકબર બાદશાહ વિવેકી હતો. કેમ કે તે યોગભ્રષ્ટથી મ્લેચ્છ થયો છે. પહેલા જન્મમાં એ બાલમુકુન્દ બ્રહ્મચારી હતો. તે એક દિવસ એણે ગાળ્યા વિના દૂધપાન કર્યું તેમાં ગાયનો એક વાળ પેટમાં ગયો. તે અપરાધથી એ મ્લેચ્છ થયો છે.

પછી સૂરદાસને દંડવત કરીને સમાધાન કરીને વિદાય કર્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૪-તે પછી સૂરદાસજી શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. પછી દેશાધિપતિએ આગ્રામાં આવીને સૂરદાસના પદોની ખોળ કરી. જે કોઇ સૂરદાસજીનાં પદ લાવે તેને રૂપીઆ અને મહોર આપે. તે પદ ફારસીમાં લખાવીને વાંચે. પછી મહોરની લાલચથી પંડિત કવિશ્વર પણ સૂરદાસનાં પદ બનાવીને લાવ્યા. ત્યારે અકબર બાદશાહે એમને કહ્યું, કે આ પદ સૂરદાસજીનું નથી. એ પૈસાને માટે પદની ચોરી કરે છે. ત્યારે પંડિત કવિશ્વરે કહ્યું, કે તમે કેમ જાણ્યું કે આ સૂરદાસનું પદ નથી ? આ તો સૂરદાસનું જ પદ છે. ત્યારે પાદશાહે પોતાની પાસેથી સૂરદાસનું પદ પોતાના કાગળ ઉપર લખાવ્યું અને એ પંડિત કવિશ્વર સૂરદાસની છાપનું બનાવીને લાવ્યા તે બન્ને કાગળને જલમાં

सो यह पद सुनिके देसाधिपति ने अपने मनमें विचार्यो, जो–ये मेरो जस काहे कों गावेंगे ? जो इनकों कछू लेवे को लालच होय तो ये मेरो जस गावें। ये तो परमेश्वर के जन हैं, सो ये तो ईश्वर को जस गावेंगे। सो सूरदासजी या कीर्तन में पिछले चरन में कहे हैं जो–

'सूर ! ऐसे दरस कों ये मरत लोचन प्यास ।'

सो देसाधिपति ने सूरदास सों कह्यो, जो–सूरदास ! तुम्हारे तो नेत्र हैं नाहीं, सो प्यासे कैसे मरत हैं ? सो यह तुम कहा कहे ? तब सूरदासजी ने कही, जो या–बात की तुमकों कहा खबरि है ? जो ये लोचन तो सबके हैं, परन्तु भगवान के दरसन की प्यास काहू कों है ? जो श्रीभगवान के दरसन के जे प्यासे नेत्र हैं, सो तो सदा भगवान के पास ही रहत हैं। सो स्वरूपानंद को रसपान छिन छिन में करत हैं, और सदा प्यासे मरत हैं। यह सुनि अकबर बादशाह ने कही, जो–इनके नेत्र तो परमेश्वर के पास हैं, सो परमेश्वर कों देखत हैं, और कों देखत नाहीं। तब बादशाह ने सूरदास के समाधान की ईच्छा कीनी। दोय चारि गाम तथा द्रव्य बहोत देन लाग्यो, सो सूरदास ने कछू नाहीं लियो। तब अकबर बादशाह सूरदासजी सों कहे, जो–बाबा साहिब ! कछू तो मोकों आज्ञा करिये। तब सूरदासजी ने कही, जो–आज पाछें हमकों कबहू फेरि मति बुलाइयो और मोसों कबहू मिलियो मति ।

વિચાર્યું, કે એ મારો યશ શા માટે ગાય ? એમને કંઇ લેવાની લાલચ હોય તો એ મારો યશ ગાય એ તો પરમેશ્વરના જન છે તેથી એ તો ઇશ્વરનો યશ ગાશે. તે સૂરદાસજીએ આ કીર્તનમાં પાછલા ચરણમાં કહ્યું છે કે–' સૂર ઐસે દરસ કો એ મરત લોચન પ્યાસ ' તેથી દેશાધિપતિએ સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસ ! તમારે તો નેત્ર છે નહીં તો તરસ્યાં કેમ મરે છે ? તેથી તમે આવું શું કહ્યું ? ત્યારે સૂરદાસજી એ કહ્યું, કે આ વાતની તમને શી ખબર છે ? આ નેત્ર તો બધાંને છે; પરંતુ ભગવાનના દર્શનની તરસ કોઇને છે ? શ્રીભગવાનના દર્શનનાં તરસ્યાં જે નેત્ર છે તે તો સદા ભગવાનની પાસેજ રહે છે તે સ્વરૂપાનંદના રસનું પાન ક્ષણ ક્ષણમાં કરે છે. અને સદા તરસ્યાં મરે છે. એ સાંભળી બાદશાહ અકબરે કહ્યું, કે એમના નેત્ર તો પરમેશ્વરની પાસે છે તે પરમેશ્વરને જુએ છે બીજાને જોતાં નથી. ત્યારે બાદશાહે સૂરદાસના સમાધાનની ઇચ્છા કરી. બે–ચાર ગામ તથા દ્રવ્ય ઘણું આપવા લાગ્યો. તે સૂરદાસે કંઇ લીધું નહીં. ત્યારે અકબર બાદશાહ સૂરદાસજીને કહે, કે બાવા સાહબ ! કંઇક તો મને

राग रामकली—प्रेङ्ख पर्यङ्क शयनं । चिर विरह-तापहरमतिरुचिरमीक्षणं प्रकटय प्रेमायनं । ध्रु० । तनुतर द्विजपंक्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् । यदवधि परमेतदाशयासमभवज्जीवितं तावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् । अग्रिमे वयसि किमु भावि कामेऽपि निजगोपिका भावकरणम् ॥ २ ॥ व्रजयुवति हृद्यकनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरण-युगलम् । तत्तुमुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ ! सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ॥ ३ ॥ अधिगोरोचनातिलकमलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम् । भूषणं राजते मुग्धताऽमृतभरस्यंदि वदनेन्दुरसितम् ॥ ४ ॥ भ्रूतटे मातृरचिताऽञ्जनबिंदुरतिशयितशोभया दृग्दोषऽमपनयन् । स्मर धनुषि मधु पिबन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥ ५ ॥ वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्ति भारमपनयनं । पालय सदाऽस्मानस्मदीय श्रीविठ्ठले निजदास्यमुपनयन् ॥ ६ ॥

सो यह पद सूरदास ने श्रीनवनीतप्रियजी के आगे गायो । पाछे या पद के अनुसार सूरदासजीने बहोत पद करिके गाये । सो पद—

राग रामकली—प्रेंख पर्यंक गिरिधरन सोहे । प्रेम आनंदभरी गोपिका कर धरि देति झोटा तहां काम को है ॥ १ ॥ मदनमोहन हसत दंत कांति हि लसत बजत नूपुर मधुर रुणनकारी । भाल मसि बिंदु केसर तिलक तहां लसे नैन अंजन मनसि बान मारी ॥ २ ॥ अलक राजत मुख ही भुज पसारत सुख ही हरत गोपांगना मान तिहिं समै तहां । देत सुखसिंधु सब गोपिका मननकुं 'सूर' शोभा निरखि वारत तन मन जहां ॥ ३ ॥

सो यह पलना को कीर्तन सूरदासजी ने गायो । पाछे बाललीला के पद बहोत गाये । सो पद—

राग बिलावल—देखि सखी एक अदूभुत रूप । एक अंबुज मधि देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एक अवली दोय जलचर उभय अर्क अनूप । पंच वारिज ढिग हि देखियत कहो कहा स्वरूप ॥ २ ॥ सिसुगति में भई सोभा करो कोऊ विचार । 'सूर' श्रीगोपाल की छवि राखिए उर धार ॥ ३ ॥

सोभा आजु भली बनि आई । जलसुत उपर हंस विराजत ता पर इंद्र-वधू दरसाई ॥ १ ॥ दधिसुत लियो दियो दधि सुतकों यह छवि देखि नंद मुसिक्याई । नीरज सुत वाहन कौ भच्छन 'सूरस्यांम' लेकीर चुगाई ॥ २ ॥

સૂરદાસજીએ શ્રીગુસાંઈજી કૃત આ પલનું ગાયું. એ પદ :— રાગ રામકલી— 'પ્રેંખ પર્યંક શયનમ' (ઉપર જુઓ) એ પદ સૂરદાસજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીના આગળ ગાયું. પછી એ પદને અનુસાર સૂરદાસજીએ ઘણાં પદ કરીને ગાયાં તે પદ 'પ્રેંખ પર્યંક ગિરિધરન સોહે' એ પલનાનું કીર્તન સૂરદાસજીએ ગાયું. પછી બાલલીલાનાં પદ ઘણાં ગાયાં. તે:પદ :— રાગ બિલાવલ—૧ દેખ સખી ઈક અદ્દભુત રૂપ ૨ 'સોભા આજ ભલી બની આઈ.' (ઉપર જુઓ) ઈત્યાદિક પદ સૂરદાસજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીના

जल में डारि दिये। सो उन पंडित जोतसीन को पद बनायो हतो सो कागद जल में भीजि गयो; और सूरदास को पद हतो सो कागद जल में नाहीं भीज्यो।

भावप्रकाश—सो या भांति सों, जो-जिन भगवदीयन कों भगवान मिले हैं, उनके पद जो गायगो सो संसार सों तरेगो। और चतुराई करि लौकिक मनुष्य के काव्य के कीर्तन कवित्त जो गावेगो, सो या प्रकार सों संसार में डूबेगो।

तब सगरे पंडित कवीश्वर लज्जा पायके नीचो माथो करके अपने घरकों गये। सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी के एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ५—सो इन सूरदासजी नें श्रीनाथजी के कीर्तन की सेवा बहोत दिन तांई करी। सो बीच बीच में जब कुंभनदासजी, परमानंददासजी के कीर्तन के ओसरा आवते, तब सूरदासजी श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कूं आवते। सो एक दिन सूरदासजी श्रीगोकुल आये हते, सो बाललीला के पद बहोत गाये। सो सुनिकें श्रीगुसांईजी आप बहोत प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांईजी आप एक पलना को कीर्तन करिकें संस्कृत में सूरदास कों सिखायो। सो ता समय श्रीनवनीतप्रियजी पालने में बिराजे, तब सूरदास ने श्रीगुसांईजी कृत यह पलना गायो। सो पद—

धरीने कह्युं, के ઇશ્વર સાચા હોય તો આ વાતનો ન્યાય કરી દેજો. એમ કહી જલમાં નાખી દીધા. ત્યારે તે પંડિત જોતસીનું બનાવેલું પદ હતું તે કાગળ જલમાં ભીંજાઇ ગયો અને સૂરદાસનું પદ હતું તે કાગળ જલમાં ન ભીંજ્યો.

ભાવપ્રકાશ—એ આ રીતિ કે જે ભગવદીયોને ભગવાન માન્યા છે. એમનાં પદ જે ગાશે તે સંસારથી તરશે અને ચતુરાઇ કરી લૌકિક મનુષ્યનાં કાવ્ય કે કીર્તન કવિત્ત જે ગાશે તે આ પ્રકારથી સંસારમાં ડૂબશે.

પછી પંડિત કવિશ્વર લજ્જા પામીને નીચું માથું કરીને પોતાના ઘરે ગયા. એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૫-એ સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીનાં કીર્તનની સેવા ઘણા દિવસ સુધી કરી. વચ-વચમાં કુંભનદાસજી, પરમાનંદદાસજીના કીર્તનના વારા આવતા ત્યારે સૂરદાસજી શ્રીગોકુલમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીના દર્શને આવતા. એક દિવસ સૂરદાસજી શ્રીગોકુલ આવ્યા હતા. ત્યાં બાલલીલાનાં પદ બહુ ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે ઘણા પ્રસન્ન થયા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એક પલનાનું કીર્તન કરીને સંસ્કૃતમાં સૂરદાસજીને શીખવાડ્યું. તે સમયે શ્રીનવનીતપ્રિયજી પાલનામાં બિરાજ્યા. ત્યારે

बालकनने श्रीगिरिधरजी सों कही, जो–हमारो मन है, सो यामें कछु बाधा नाहीं है। तब श्रीगिरधरजी कहे, जो-सवारे श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करेंगे सो अद्भुत सिंगार करेंगे। ता पाछे सवारे श्रीगिरधरजी तीनों बालकन सहित श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे और सेवा में न्हाये। पाछें श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाये, ता पाछें भोग धर्यो। फेरि न्हवाय के सिंगार धरावन लागे। सो आषाढ़ के दिन हते तातें गरमी बहोत। सो नवनीतप्रियजी कों कछु वस्त्र नाहीं धराए। सो मोतीन की दो लर मस्तक पर, मोती के बाजू पहोंची, कटि-किंकनी नुपूर, हार, सब मोतिनके, तिलक, नकवेसर, करनफूल, और कछु नाहीं। सो सूरदासजी जगमोहन में बेठे हते, सो इनके हृदयमें अनुभव भयो। तब सूरदासजी अपने मन में विचारे जो–आजु तो श्रीनवनीतप्रियजी को अद्भुत सिंगार कियो है। ऐसो सिंगार तो मैंने कबहू देख्यो नाहीं, और सुन्योहू नाहीं, जो केवल मोती धराए हैं, और वस्त्र तो कछु धराए हैं नाहीं। तासों आज मोकों कीर्तन हू अद्भुत गायो चहिये। सो जब सिंगार के दरसन खुले, तब श्रीगिरधरजी ने सूरदासजी कों बुलाये और कह्यो, जो–सूरदासजी! दरसन करो, और कीर्तन गाओ। तब सूरदासजी ने बिलावल में यह कीर्तन करिके श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनायो। सो पद—

ત્યારે તે ત્રણે બાલકોએ શ્રીગિરિધરજીને કહ્યું, કે અમારૂં મન છે એમાં કંઇ બાધા નહી. ત્યારે શ્રીગિરિધરજી કહે, કે સવારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીનો શૃંગાર કરીશું. તે અદ્ભુત કરીશું. તે પછી સવારે શ્રીગિરિધરજી ત્રણે બાલકો સહિત શ્રીનવનીતપ્રિયજીના મંદિરમાં પધાર્યા અને સેવામાં ન્હાયા. પછી શ્રીનવનીતપ્રિયજીને જગાડ્યા. તે પછી ભોગ ધર્યો. ફરી ન્હાઇને શૃંગાર ધરાવવા લાગ્યા. તે અષાઢના દિવસ હતા. તેથી ગરમી ઘણી. તેથી શ્રીનવનીતપ્રિતજીને કંઇ વસ્ત્ર નહીં ધરાવ્યાં. મોતીની બે લડ મસ્તક ઉપર તિલક, નકવેસર, કરણફૂલ બીજું કંઇ નહીં. ત્યારે સૂરદાસજી જગમોહનમાં બેઠા હતા. ત્યાં એમના હૃદયમાં અનુભવ થયો. ત્યારે સૂરદાસજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું કે આજ તો શ્રીનવનીતપ્રિયજીનો અદ્ભુત શૃંગાર કર્યો છે. એવો શૃંગાર તો મેં કદી જોયો નહીં અને સાંભળ્યો યે નહીં. જો કેવળ મોતી ધરાવ્યાં છે અને વસ્ત્ર તો કંઈ ધરાવ્યાં નથી. તેથી આજે મારે કીર્તન પણ અદ્ભુત ગાવાં જોઇએ. પછી જ્યારે શૃંગારનાં દર્શન ખુલ્યાં ત્યારે શ્રીગિરિધરજીએ સૂરદાસજીને બોલાવ્યા અને કહ્યું, કે સૂરદાસજી દર્શન કરો અને કીર્તન ગાવ. ત્યારે સૂરદાસજીએ બિલાવલમાં આ કીર્તન

इत्यादिक पद सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजी के आगे गाये। तब श्रीगुसांईजी और श्रीगिरधरजी आदि सब बालक कहन लागे जो-हम जा प्रकार श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करत हैं, सो ताही प्रकार के कीर्तन सूरदासजी गावत हैं। तातें इन सूरदास के ऊपर बहोत ही कृपा है।

वार्ता-प्रसंग ६—तापाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनाथजीद्वार पधारे। सो सूरदासजीने हू श्रीनाथजीद्वार जाइवेको विचार कियो। तब श्रीगिरधरजी आदि सब बालकनने कह्यो, जो-सूरदासजी! दोय दिन श्रीनवनीतप्रियजी कों और हू कीर्तन सुनावो, पाछे तुम जइयो। तब सूरदासजी श्रीगोकुल में रहे। सो तब श्रीगिरिधरजी सों श्री-गोविंदरायजी, श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी ये तीनों भाई कहें, जो-ये सूरदासजी, जेसो सिंगार श्रीनवनीतप्रियजी को होत है, तेसेही वस्त्र आभूषण वरणन करत हैं। सो एक दिन अद्भुत अनोखो सिंगार करो, और सूरदासजी कों जनावो मति, सो देखें ये कीर्तन कैसो करत हैं? तब गिरिधरजी ने कह्यो जो-ये सूरदासजी भगवदीय है, सो इनके हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव है। तासों जेसो तुम सिंगार करोगे, सो तेसो ही पद सूरदासजी वरणन करिके गावेंगे। तासों भगवदीय की परीक्षा नाहीं करनी। तब उन तीनों

આગળ ગાયાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી અને શ્રીગિરિધરજી આદિ બધા બાલક કહેવા લાગ્યા, કે અમે જે પ્રકારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીનો શૃંગાર કરીએ છીએ તેજ પ્રકારનાં કીર્તન સૂરદાસજી ગાય છે. તેથી આ સૂરદાસજીના ઉપર ઘણી જ કૃપા છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૬-ત્યાર પછી શ્રીગુસાંઇજી આપ તો શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ પણ શ્રીનાથજીદ્વાર જવાનો વિચાર કર્યો. ત્યારે શ્રીગિરિધરજી આદિ બધા બાલકોએ કહ્યું, કે સૂરદાસજી! બે દિવસ શ્રીનવનીતપ્રિયજીને બીજાં પણ કીર્તન સં-ભળાવો. પછી તમે જજો. ત્યારે સૂરદાસજી શ્રીગોકુલમાં રહ્યા. તે પછી શ્રીગિરિધરજીને શ્રીગોવિંદરાયજી, શ્રીબાલકૃષ્ણજી, અને શ્રીગોકુલનાથજી એ ત્રણે ભાઇઓએ કહ્યું, કે આ સૂરદાસજી જેવો શૃંગાર શ્રીનવનીતપ્રિયજીને થાય છે તેવાંજ વસ્ત્ર, આભૂષણનું વર્ણ-ન કરે છે. તેથી એક દિવસ અદ્ભુત અનોખો શૃંગાર કરો. અને સૂરદાસજીને જણાવો નહી. જોઇએ, એ કીર્તન કેવું કરે છે? ત્યારે ગિરિધરજીએ કહ્યું, કે સૂરદાસજી ભગવ-દીય છે. તેમના હૃદયમાં સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ છે. તેથી જેવો તમે શૃંગાર કરશો તેવું જ પદ સૂરદાસજી વર્ણન કરીને ગાશે. તેથી ભગવદીયની પરીક્ષા કરવી નહીં.

वार्ता–प्रसंग ७—और सूरदासजी के पास एक व्रजवासी को लरिका हतो, सो सब कामकाज सूरदासजी को करतो। ताको नाम गोपाल हतो। सो एक दिन सूरदासजी महाप्रसाद लेन कों बैठे, तब वा गोपालसों सूरदासजी कहे, जो-मोकूं तू लोटी में जल भरि दीजो। तब गोपाल व्रजवासी ने कह्यो, जो-तुम महाप्रसाद लेन कों बैठो जो मैं जल भरि देऊंगो। सो यह कहिके गोपाल तो गोबर लेवेकों गयो। सो तहां दोय चारि वैष्णव हते सो तिनसों बात करन लाग्यो, तब सूरदास कों जल देनो भूलि गयो। और सूरदासजी तो महाप्रसाद लेन बैठे, सो गरे में कौर अटक्यो। तब बांये हाथ सों लोटा इत उत देखन लागे, सो पायो नाहीं। तब गरे में कौर अटक्यो सो बोल्यो न जाय। तब सूरदास व्याकुल भये। सो इतने में श्रीनाथ-जी सूरदासजी के पास आयके अपनी झारी धरि आए। तब सूर-दासजीने झारी में ते जल पियो। तब गोपाल व्रजवासी कों सुधि आई, जो–सूरदासजी कों मैं जल नाहीं भरि आयो हूं। सो दोर्‍यो आयो। इतने में सूरदास महाप्रसाद लेकें आये। तब गोपाल व्रज-वासीने आयके सूरदास सों कह्यो, जो–सूरदासजी! तुम महाप्रसाद ले उठे, सो तुमने जल कहां ते पियो? जो-मैं तो गोबर लेन गयो हतो,

---

વાર્તા–પ્રસંગ ૭–વળી સૂરદાસજીની પાસે એક વ્રજવાસીનો બાલક હતો. તે સૂર-દાસજીનું બધું કામકાજ કરતો. એનું નામ ગોપાલ હતું. તે એક દિવસ સૂરદાસજી મહાપ્રસાદ લેવા બેઠા ત્યારે આ ગોપાલને સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે મને તું લોટીમાં જલ ભરી દેજે. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીએ કહ્યું, કે તમે મહાપ્રસાદ લેવાને બેસો હું જલ ભરી દઇશ. એમ કહીને ગોપાલ તો છાણ લેવાને ગયો. ત્યાં બે ચાર વૈષ્ણવ હતા તેમનાથી વાત કરવા લાગ્યો. એટલે સૂરદાસજીને જલ દેવું ભૂલી ગયો અને સૂરદાસજી તો મહાપ્રસાદ લેવા બેઠા. તે ગળામાં કોળીઓ અટક્યો ત્યારે ડાબા હાથથી લોટો આમ-તેમ જોવા લાગ્યા. તે મળ્યો નહીં. ત્યારે ગળામાં કોળિઓ અટક્યો હતો તે બોલાયું નહી. ત્યારે સૂરદાસજી વ્યાકુલ થયા. એટલામાં શ્રીનાથજી સૂરદાસજીની પાસે આવીને પોતાની ઝારી ધરી ગયા. ત્યારે સૂરદાસજીએ ઝારીમાંથી જલ લીધું. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીને યાદ આવ્યું કે સૂરદાસજીને હું જલ નથી ભરી આવ્યો તેથી દો-ડેયો આવ્યો. એટલામાં સૂરદાસજી મહાપ્રસાદ લઇને આવ્યા. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીએ આવીને સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસજી ! તમે મહાપ્રસાદ લઇ ઉઠ્યા તે તમે જલ ક્યાંથી પીધું ? હું તો છાણ લેવા ગયો હતો, તે વૈષ્ણવોના સંગે વાતો કરવામાં ભૂલી ગયો.

राग बिलावल—देखे री हरि नंगमनंगा। जलसुत भूषन अंग बिराजत बसन हीन छबि उठत तरंगा ॥ १ ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी निरखि लज्जित रति कोटि अनंगा। किलकत दधिसुत मुख लेपन करि 'सूर' हसत व्रज युवतिन संगा ॥२॥

सो सुनिके श्रीगिरधरजी आदि सगरे बालक अपने मनमें बहोत प्रसन्न भये। और सूरदास सों कहन लागे, जो सूरदासजी! यह तुम कहा गाये? तब सूरदासजीने बिनती किनी, जो–महाराज! जेसो आपने अद्भुत सिंगार कियो, तेसो ही मैंने अद्भुत कीर्तन गायो है। तब सगरे बालक यह सुनिके सूरदासजी के ऊपर बहोत-प्रसन्न भये। सो ए सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के एसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे, सो इनकों श्रीठाकुरजी नित्य हृदय में अनुभव करावते। ता पाछे श्रीगिरधरजी आप सूरदासजी कों संग लेके श्रीनाथजीद्वार आये। तब श्रीगिरधरजी ने सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–या प्रकार अद्भुत सिंगार श्रीनवनीतप्रियजी को सगरे बालकन के मनोरथ सों कियो। सो सूरदास जी ने एसो ही कीर्तन कियो। सो इनके हृदय में अनुभव है। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरधरजीसों कहे, जो–सूरदासजीकी कहा बात है? जो–ये पुष्टिमार्ग के जहाज है। सो भगवल्लीला को अनुभव इनकों अष्ट प्रहर हैं। सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे कृपा पात्र भगवदीय हते।

ગાઇને શ્રીનવનીતપ્રિયજીને સંભળાવ્યું. તે પદ:— 'દેખે રી હરિ નંગમનંગા' (ઉપર જુઓ) એ સાંભળીને શ્રીગિરિધરજી આદિ બધા બાલક પોતાના મનમાં બહુજ પ્રસન્ન થયા અને સૂરદાસજીને કહેવા લાગ્યા કે સૂરદાસજી! આ તમે શું ગાયું? ત્યારે સૂરદાસજીએ વિનંતી કરી, કે મહારાજ! જેવો આપે અદ્ભુત શૃંગાર કર્યો તેવુંજ મેં અદ્ભુત કીર્તન ગાયું છે. ત્યારે સઘળા બાલકે એ સાંભળીને સૂરદાસજી ઉપર બહુ પ્રસન્ન થયા. એથી એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમને શ્રીઠાકુરજી નિત્ય હૃદયમાં અનુભવ કરાવતા. તે પછી શ્રીગિરિધરજી આપ સૂરદાસજીને સંગ લઇને શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. ત્યારે શ્રીગિરિધરજીએ બધા સમાચાર શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યા, કે આ પ્રકારે અદ્ભુત શૃંગાર શ્રીનવનીતપ્રિયજીને બધા બાલકોના મનોરથથી કર્યો અને સૂરદાસજીએ એવું કીર્તન ગાયું એમના હૃદયમાં અનુભવ છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ શ્રીગિરિધરજીને કહે, કે સૂરદાસજીની શી વાત છે? એ પુષ્ટિમાર્ગના જહાજ છે. એમને ભગવલ્લીલાનો અનુભવ અષ્ટપ્રહર છે, એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

वार्ता-प्रसंग ७—और सूरदासजी के पास एक व्रजवासी को लरिका हतो, सो सब कामकाज सूरदासजी को करतो। ताको नाम गोपाल हतो। सो एक दिन सूरदासजी महाप्रसाद लेन कों बैठे, तब वा गोपालसों सूरदासजी कहे, जो-मोकूं तू लोटी में जल भरि दीजों। तब गोपाल व्रजवासी ने कह्यो, जो-तुम महाप्रसाद लेन कों बैठो जो मैं जल भरि देऊंगो। सो यह कहिके गोपाल तो गोबर लेवेकों गयो। सो तहां दोय चारि वैष्णव हते सो तिनसों बात करन लाग्यो, तब सूरदास कों जल देनो भूलि गयो। और सूरदासजी तो महाप्रसाद लेन बैठे, सो गरे में कौर अटक्यो। तब बांये हाथ सों लोटा इत उत देखन लागे, सो पायो नाहीं। तब गरे में कौर अटक्यो सो बोल्यो न जाय। तब सूरदास व्याकुल भये। सो इतने में श्रीनाथजी सूरदासजी के पास आयके अपनी झारी धरि आए। तब सूरदासजीने झारी में ते जल पियो। तब गोपाल व्रजवासी कों सुधि आई, जो-सूरदासजी कों मैं जल नाहीं भरि आयो हूं। सो दौर्यो आयो। इतने में सूरदास महाप्रसाद लेकें आये। तब गोपाल व्रजवासीने आयके सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदासजी! तुम महाप्रसाद ले उठे, सो तुमने जल कहां ते पियो? जो-मैं तो गोबर लेन गयो हतो,

---

વાર્તા-પ્રસંગ ૭-વળી સૂરદાસજીની પાસે એક વ્રજવાસીનો બાલક હતો. તે સૂરદાસજીનું બધું કામકાજ કરતો. એનું નામ ગોપાલ હતું. તે એક દિવસ સૂરદાસજી મહાપ્રસાદ લેવા બેઠા ત્યારે આ ગોપાલને સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે મને તું લોટીમાં જલ ભરી દેજે. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીએ કહ્યું, કે તમે મહાપ્રસાદ લેવાને બેસો હું જલ ભરી દઇશ. એમ કહીને ગોપાલ તો છાણ લેવાને ગયો. ત્યાં બે ચાર વૈષ્ણવ હતા તેમનાથી વાત કરવા લાગ્યો. એટલે સૂરદાસજીને જલ દેવું ભૂલી ગયો અને સૂરદાસજી તો મહાપ્રસાદ લેવા બેઠા. તે ગળામાં કોળીઓ અટક્યો ત્યારે ડાબા હાથથી લોટો આમ-તેમ જોવા લાગ્યા. તે મળ્યો નહીં. ત્યારે ગળામાં કોળિઓ અટક્યો હતો તે બોલાયું નહી. ત્યારે સૂરદાસજી વ્યાકુલ થયા. એટલામાં શ્રીનાથજી સૂરદાસજીની પાસે આવીને પોતાની ઝારી ધરી ગયા. ત્યારે સૂરદાસજીએ ઝારીમાંથી જલ લીધું. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીને યાદ આવ્યું કે સૂરદાસજીને હું જલ નથી ભરી આવ્યો તેથી દોડેચો આવ્યો. એટલામાં સૂરદાસજી મહાપ્રસાદ લઇને આવ્યા. ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસીએ આવીને સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસજી ! તમે મહાપ્રસાદ લઇ ઉઠ્યા તે તમે જલ ક્યાંથી પીધું ? હું તો છાણ લેવા ગયો હતો, તે વૈષ્ણવોના સંગે વાતો કરવામાં ભૂલી ગયો.

सो वैष्णव के संग बात करत में भूलि गयो। तासों अब मैं दोर्‍यो आयो हूं। तब सूरदासने व्रजवासी सों कह्यो, जो–तेंनें गोपाल नाम काहे कों धरायो ? जो गोपाल तो एक श्रीनाथजी हैं। तासों आज मेरी रक्षा करी। नाँतर गरे में ऐसो कोर अटक्यो हतो सो जल विना बोल निकसे नाही। तब मैं व्याकुल भयो, तब हाथ में जल की झारी आई सो मैं जल पान कियो। तासों मैंने जान्यो जो तेने धर्‍यो होयगो। और अब तू कहत है, जो मैं नाहीं हतो। सो तातें मंदिरवारो गोपाल होयगो। जो देखि तो झारी कैसी है। तब गोपाल व्रजवासी जहां सूरदासजी महाप्रसाद लिये हते तहाँ आय के देखे तो सोने की झारी है। सो उठाय के गोपाल सूरदास-जी के पास आय के कह्यो, जो–ये झारी तो मंदिर की है। सो तब सूरदास ने वा गोपाल व्रजवासी सों कह्यो, जो-तैने बहोत बुरो काम कियो, जो ठाकुरजी कों इतनो श्रम करवायो। जो मेरे लिये झारी लेकें श्रीठाकुरजी कों आनो पर्‍यो। सो या प्रकार सूरदासजी ने गो-पालदास सों कह्यो, जो-ये झारी तू जतन सों राखियो। और जब श्रीगुसांईजी आपु पोंढि के उठे तब उनकों सोंपि आइयो। तब गोपा-लदास ने झारी लेके श्रीगुसांइजी के पास आय, दंडवत करि आगे राखी। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, ये झारी तेरे पास कैसे आई ?

તેથી હવે હું દોડીને આવ્યો છું. ત્યારે સૂરદાસજીએ વ્રજવાસીને કહ્યું, કે તેં ગોપાલ નામ શા માટે ધરાવ્યું ? ગોપાલ તો એક શ્રીનાથજી છે. તેથી આજ મારી રક્ષા કરી. નહીં તો ગળામાં એવો કોળિઓ અટકયો હતો કે જલ વિના બોલ ન નિકળે. ત્યારે હું વ્યાકુળ થયો. ત્યારે હાથમાં જલની ઝારી આવી તે મેં જલપાન કર્યું. તેથી મેં જાણ્યું કે તેં ધર્યું હશે અને હવે તૂ કહે છે કે હું નહતો. તેથી મંદિરવાળો ગોપાલ હશે. જો તો, ઝારી કેવી છે ? ત્યારે ગોપાલ વ્રજવાસી જ્યાં સૂરદાસજી મહાપ્રસાદ લેતા હતા ત્યાં આવીને જુએ તો સોનાની ઝારી છે તે ઉઠાવીને ગોપાલે સૂરદાસજીની પાસે આવીને કહ્યું, કે આ ઝારી તો મંદિરની છે. ત્યારે સૂરદાસજીએ આ ગોપાલ વ્રજવાસીને કહ્યું, કે તેં ઘણું ખોટું કામ કર્યું. શ્રીઠાકુરજીને આટલો શ્રમ કરાવ્યો ? કે મારે માટે ઝારી લઇને શ્રીઠાકુરજીને આવવું પડ્યું. એ પ્રકારે સૂરદાસજીએ ગોપાલદાસને કહ્યું, (પછી કહ્યું) કે ઝારી તૂ સાચવીને રાખજે અને જ્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ જાગીને ઉઠે ત્યારે એમને સોંપી આવજે. ત્યારે ગોપાલદાસે ઝારી લઇને શ્રીગુસાંઇજી પાસે આવી દંડવત્ કરી આગળ ધરી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, એ ઝારી તારી પાસે

जो-ये झारी तो श्रीगोवर्द्धनधर की है। तब गोपालदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! यह अपराध मोसों पर्‍यो है। पाछे सब बात कही। तब यह बात सुनिके श्रीगुसांईजी आप तत्काल स्नान करिकें झारी कों मँजवाय, दूसरो वस्त्र लपेटिकें मंदिर में वेगि ही झारी लेके पधारे। पाछे श्रीगोवर्द्धनधर कूं जलपान कराइ के कहे, जो आज-तो सूरदास की वडी रक्षा कीनी। सो तुम विन कौन वैष्णवकी रक्षा करे? तब श्रीनाथजी ने कही, जो-सूरदास के गरे में कौर अटक्यो सो व्याकुल भये, तासों झारी धरि आयो।

भावप्रकाश—सो काहेते? जो सूरदास व्याकुल भये, सो मैं ही व्याकुल भयो। जो भगवदीय है सो मेरो स्वरूप है।

ता पाछे उत्थापन के किंवाड़ खोले। सो सूरदासजी आइ के उत्थापन के दरसन किये। सो उत्थापन समे को भोग श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी कों धरि सूरदास के पास आईके कहे, जो-आज गोपाल ने तिहारे ऊपर बड़ी कृपा करी है। तब सूरदासजी ने कह्यो, जो-महाराज! यह सब आपकी कृपा है। नाहिं तो श्रीनाथजी मो सरीखे पतितन कों कहा जानें? जो सब श्रीआचार्यजी की का'नि तें अंगीकार करत हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-तुम बड़े भगवदीय

કેવી રીતે આવી? એ ઝારી તો શ્રીગોવર્દ્ધનધરની છે. ત્યારે ગોપાલદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કે, મહારાજ! આ અપરાધ મારાથી પડયો છે. પછી બધી વાત કહી. ત્યારે આ વાત સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી આપે તત્કાલ સ્નાન કરીને ઝારીને મંજાવી બીજું વસ્ત્ર લપેટીને મંદિરમાં જલ્દી જ ઝારી લઇને પધાર્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને જલપાન કરાવીને કહે, કે આજ તો સૂરદાસની ખૂબ રક્ષા કરી. તમારા વિના વૈષ્ણવની રક્ષા કોણ કરે? ત્યારે શ્રીનાથજીએ કહ્યું, કે સૂરદાસજીના ગળામાં કોળિઓ અટકયો તે વ્યાકુલ થયા. તેથી ઝારી ધરી આવ્યો.

ભાવપ્રકાશ—તે શાથી? જે સૂરદાસ વ્યાકુલ થયા તે હુંજ વ્યાકુલ થયો. કેમ, જે ભગવદીય છે તે મારૂં સ્વરૂપ છે.

તે પછી ઉત્થાપનનાં કમાડ ખોલ્યાં ત્યારે સૂરદાસજીએ આવીને ઉત્થાપનનાં દર્શન કર્યાં. પછી ઉત્થાપન સમયનો ભોગ શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીનાથજીને ધરી સૂરદાસજીની પાસે આવીને કહ્યું, કે આજ ગોપાલે તમારા ઉપર મહાન કૃપા કરી છે. ત્યારે સૂરદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! આ બધી આપની કૃપા છે. નહીં તો શ્રીનાથજી મારા જેવા પતિતોને શું જાણે? બધું શ્રીઆચાર્યજીની કા'નિથી અંગીકાર કરે છે. ત્યારે

हो। जो भगवदीय बिना ऐसी दैन्यता कहां मिले? सो सूरदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ८—श्रीनाथजी के मंदिर के नीचे गोपालपुर गाम है। सो तहां एक बनिया रहतो। सो ऐसो गृहकार्य में और लोभ में आसक्त हतो, जो-कबहुं श्रीनाथजी को दरसन नाहीं कियो। और श्रीगुसांईजी की सरन हू नाहीं आयो। सो गोपालपुर में परवत के नीचे वाकी दुकान हती। सो वह बनिया गोपालपुर में दुकान खोलतो सो पहले जो कोई वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन करि के परवत के ऊपर सों आवतो ताकों बुलाय के पहेले पूछतो, जो-आज श्रीनाथजीकौ कहा सिंगार है? सो वैष्णव याकों बतावतो। सो ताही प्रकार बनिया सब वैष्णवन के आगे श्रीनाथजी के दरसन की बड़ाई करतो, जो-देखो, आज श्रीनाथजी को कैसो सिंगार भयो है। कैसो अलौकिक दरसन भयो है। या भांति सों सबतें कहतो, आप दरसन कों कबहू नाहीं आवतो, और वैष्णवन कों दिखाइवे के लिये माला पहरि लेतो, और आछो तिलक, आछो छापा लगावतो। और वैष्णव आगे प्रेम की वार्ता करतो। सो वे वैष्णव प्रसन्न होय के वाकों वैष्णव जानिके सीधो सामग्री लेते। सो या प्रकार पाखंड करि वि-

---

શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કે તમે મહાન ભગવદીય છો. ભગવદીય વિના આવી દૈન્યતા ક્યાં મળે? તે સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૮-શ્રીનાથજીના મંદિરના નીચે ગોપાલપુર ગામ છે. ત્યાં એક વાણિયો રહેતો હતો. તે ગૃહકાર્ય અને લોભમાં એવો આસક્ત હતો કે કોઇ દિવસે શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં નહતાં અને શ્રીગુસાંઇજીની શરણે પણ આવ્યો નહતો. તેની દુકાન ગોપાલપુરમાં પર્વત નીચે હતી. તે વાણિઓ ગોપાલપુરમાં દુકાન ખોલતો તે પહેલાં જે કોઇ વૈષ્ણવ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરી પર્વત ઉપરથી આવતો તેને બોલાવીને પહેલાં પૂછતો કે આજ શ્રીનાથજીનો શૃંગાર શો છે? ત્યારે એ વૈષ્ણવ એને બતાવતો. પછી તેજ પ્રકારે તે વાણિયો બધા વૈષ્ણવોની આગળ શ્રીનાથજીના દર્શનની વડાઇ કરતો. કે જુઓ, આજે શ્રીનાથજીનો કેવો સુંદર શૃંગાર થયો છે. કેવાં અલૌકિક દર્શન થયાં છે. એ પ્રકારે બધાને કહેતો. તે પોતે દર્શને કદીય ન આવતો. વળી વૈષ્ણવોને દેખાડવાને માટે માળા પહેરી લેતો અને સુંદર તિલક, સુંદર છાપા લગાવતો. વળી વૈષ્ણવો આગળ પ્રેમની વાર્તા કરતો. તેથી તે વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને એને વૈષ્ણવ જાણીને સીધું સામગ્રી લેતા. એ પ્રકારે પાખંડ કરી વિશ્વાસ દઇ-દઇને બધા વૈષ્ણવોને ઠગે. તેણે

इवास दे देके सब वैष्णवन कों ठगे। सो द्रव्य बहोत भेलो कियो, परन्तु कोडी एक खरचे नाहीं। सो ऐसे करत साठ बरस को भयो। तब एक दिन सूरदासजी सों वा बनिया ने कही, जो-सूरदासजी! आज तुम देखो, कैसो सुन्दर सिंगार भयो है। और तुम तो कोई दिन मेरी हाट सों सीधो सामान लेत नाहीं हो, और कोई दिन मेरी हाट ऊपर तुम आवत नाहीं हो। सो तुम ऐसे वैष्णव गुनी हो सो मेरो अपराध कहा, जो मेरी हाट तें सोदा लेत नाहीं? ओर यह हाट तिहारी है। मैं तो तुम वैष्णवन को दास हूँ तासों मो पर कृपा करो। या भांति बनिया के बचन सुनि सूरदास अपने मनमें विचारी जो देखो, बनिया कैसो सुंदर बोलत है, जो ऊपर सों लोभ सों कपट करत है, तासों अब याको कपट छुड़ावनो। और बनियाने कोई दिन श्रीनाथजी के दरसन किये नाहीं सो याकों दरसन हू करावनो और याकों वैष्णव हू कराय देनो। तब यह विचारि के सूरदास ने वा बनिया सों कही, जो-तें जनम भर में कोई दिन दरसन नाहीं कियो है, सो मैं तोकों जानत हों। और तू वैष्णव है नाहीं, सो तासों मैं तेरी हाट पर नाहीं आवत हों। तू सांची कहि दे, जो-तेंने जनम भर में कोई दिन श्रीनाथजी के दरसन किये हैं। तब यह बचन सुनिके बनिया अपने मन में बहोत ही खिसयानो होय गयो, और वह बनिया सूरदास

द्रव्य पण घणुं भेगुं कर्युं. परंतु कोडी एक खरच्ये नहीं. एम करतां साठ वर्षनो थयो. त्यारे एक दिवस सूरदासजीने ए वाणिआए कह्युं, के सूरदासजी! आजे तमे जुओ केवो सुंदर शृंगार थयो छे? वळी तमे तो कोइ दिवस मारी दुकानेथी सीधुं सामान लेता नथी अने कोई दिवस मारी दुकान उपर तमे आवता नथी. तमे आवा वैष्णव गुणी छो ते मारो अपराध शो, के मारी दुकानेथी तमे सोदो लेता नथी? अने आ दुकान तो तमारी छे. हुं तो तमारा वैष्णवोनो दास छुं तेथी मारा उपर कृपा करो. ए प्रकारे वाणियानां वचन सांभळीने सूरदासजीए पोताना मनमां विचार्यं के जुओ, वाणियो केवुं सुंदर बोले छे. जे उपरथी लोभथी कपट करे छे तेथी हवे तेनुं कपट छोडाववुं. वळी वाणिआए कोइ दिवस श्रीनाथजीनां दर्शन कर्यां नथी तेथी एने दर्शन पण कराववां अने एने वैष्णव पण कराववो. एम विचारीने सूरदासजीए ते वाणिआने कह्युं, के तें जन्मभर कोइ दिवस दर्शन कर्यां नथी ते हुं तने जाणुं छुं. वळी तू वैष्णव नथी तेथी हुं तारी दुकान उपर आवतो नथी. तू सत्य कही दे के तें जन्मभरमां कोइ दिवस श्रीनाथजीनां दर्शन कर्यां छे? ए वचन सांभळीने वाणियो

सों बोल्यो, जो–सूरदासजी ! तुम यह बात और काहू के आगे मति कहियो। जो–मैं यासों दरसन कों नहिं आवत हों, जो हाट छोड़ि दरसन कों जाऊं तो यहां वैष्णव सोदा कों फिरि जाय, जो और की हाट सों लेन लागें, तब मैं खाऊं कहां ते ? और कोऊ मेरे पास ऐसो मनुष्य नाहिं है, जो–जा समय दरसन के किंवाड़ खुलें ता समय मोकों आय के खबर करे, जातें मैं बेगि ही दौरिके दरसन करि आऊँ। तब वा बनिया तें सूरदास ने कही, जो–मैं जा समय आईकें खबरि करूं सो ता समय तू चलेगो ? तब बनिया ने कही, जो–तुम आइके खबरि करियो, जो–मैं चलूंगो। जो मेरे मन में दरसन की बहोत है। तब सूरदासजी कहे, जो मैं उत्थापन के समय आऊंगो। सो यह कहिके सूरदासजी तो गये। पाछे जब उत्थापन को समय भयो तब शंखनाद भये, तब सूरदासजी ने आइके वा बनिया सों कही, जो–अब शंखनाद भये हैं तासों दरसन को समय है, सो अब चलो। तब वा बनिया ने सूरदासजी सों कह्यो, जो–या समय गाँव के लोग सौदा लेन आवत हैं, सो भोग के किंवाड़ खुलें ता समय तुम मोकों खबरि करियो। तब सूरदासजी ने पर्वत ऊपर आइके श्रीनाथजी के दरसन किये, और कीर्तन किये। ता पाछे श्रीनाथजी के भोग के

પોતાના મનમાં બહુ ભોંઠો પડી ગયો અને તે વાણિઆએ સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસજી ! તમે આ વાત બીજાની આગળ ન કહેતા. હું એથી દર્શને નથી આવતો કે દુકાન છોડી દર્શને જાઉં તો અહીં વૈષ્ણવો સોદાને માટે પાછા જાય અને બીજાની દુકાનેથી લેવા લાગે. ત્યારે હું ખાઉં શું ? અને કોઇ મારી પાસે એવો મનુષ્ય નથી કે જે સમયે દર્શનનાં કમાડ ખુલે તે સમયે મને આવીને ખબર કરે જેથી હું જલ્દી દોડીને દર્શન કરી આવું. ત્યારે એ વાણિયાને સૂરદાસે કહ્યું, કે હું જે સમયે આવીને ખબર કરૂં તે સમયે તૂ ચાલીશ ? ત્યારે વાણિઆએ કહ્યું, કે તમે આવીને ખબર કરજો, હું ચાલીશ. કેમ જે મારા મનમાં દર્શનની (લાલસા) બહુ છે. ત્યારે સૂરદાસજી કહે, કે હું ઉત્થાપનના સમયે આવીશ. એમ કહીને સૂરદાસજી તો ગયા. પછી જ્યારે ઉત્થાપનનો સમય થયો ત્યારે શંખનાદ થયા. ત્યારે સૂરદાસજીએ આવીને એ વાણિઆને કહ્યું, કે હવે શંખનાદ થયા છે તેથી દર્શનનો સમય છે હવે ચાલો. ત્યારે એ વાણિઆએ સૂરદાસજીને કહ્યું, કે આ સમય ગામના લોકો સોદા લેવા આવે છે એથી ભોગનાં કમાડ ખુલે તે સમયે તમે મને ખબર કરજો. ત્યારે સૂરદાસજીએ પર્વત ઉપર આવીને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં અને કીર્તન કર્યાં. તે પછી શ્રીનાથજીના

दरसन को समय भयो, तब सूरदासजी परवत सों नीचे उतरि के वा बनिया सों कहे, जो–दरसन को समय है, तासों अब तो दरसन कों चलि! तब वा बनिया ने सूरदास सों कह्यो, जो–सूरदासजी! अब तो बनतें गाय आइवे को समय भयो है, तासों मंदिर में चलूं तो गाय आइके मेरो सगरो अनाज खाय जाँय। तासों अब तुम सेन आरती के समय जताइयो सो तहां तांई गाय सब अपने अपने घर जाँयगी। तब सूरदासजो फेरि भोग के समय जायके दरसन किये ता पाछें संध्या के दरसन किये। पाछें सेन आरती के दरसन को समय भयो तब सूरदासजी ने आइके बनिया कों खबरि कीनी, जो–चलि अब सेन आरती के दरसन को समय है। तब वा बनिया ने सूरदास सों कही, जो–सूरदासजी! आज तुमकों बहोत श्रम भयो है। परन्तु अब दीया बारिवे को समय है, सो काहेतें, जो–अब या समय लक्ष्मी आवत है, तासों दीया न होय तो लक्ष्मी पाछी फिरि जाय। और कोई मेरी हाटतें अन्न चुराय लेय तो म कहा करूं? तासों अब मैं सवारे प्रातःकाल दरसन करि ता पाछें हाट खोलूंगो। तासों मोकों मंगला के समय आइके खबरि करियो। आज मैंने तुमसों बहोत फेरा खवाये। तब सूरदासजी मंदिर में आइके श्री-

---

ભોગના દર્શનનો સમય થયો. ત્યારે સૂરદાસજીએ પર્વતથી નીચે ઉતરીને તે વાણિઆ-ને કહ્યું, કે દર્શનનો સમય છે તેથી હવે તો દર્શને ચાલો. ત્યારે તે વાણિઆએ સૂરદા-સજીને કહ્યું, કે સૂરદાસજી! હવે તો વનમાંથી ગાયો આવવાનો સમય થયો છે તેથી મંદિરમાં ચાલું તો ગાય આવીને મારૂં બધું અનાજ ખાઇ જાય. તેથી હવે તમે સેન આરતીના સમયે જણાવજો. ત્યાં સુધી ગાય બધી પોતપોતાને ઘરે જશે. ત્યારે સૂરદા-સજીએ ફરી ભોગના સમયે જઇને દર્શન કર્યાં. તે પછી સંધ્યાનાં દર્શન કર્યાં. પછી સેન-આરતીના દર્શનનો સમય થયો ત્યારે સૂરદાસજીએ આવીને વાણિઆને ખબર કરી કે ચાલ હવે સેન-આરતીના દર્શનનો સમય છે. ત્યારે તે વાણિઆએ સૂરદાસને કહ્યું, કે સૂરદાસજી! આજ તમને બહુ શ્રમ થયો છે. પરંતુ હવે દીવો બાળવાનો સમય છે. કેમકે હવે આ સમયે લક્ષ્મી આવે છે. તેથી દીવો ન હોય તો લક્ષ્મી પાછી ફરી જાય. અને કોઇ મારી દુકાનેથી અન્ન ચોરી લે તો હું શું કરૂં? તેથી હવે હું સવારે પ્રાતઃકાલ દર્શન કરી તે પછી દુકાન ખોલીશ. તેથી મને મંગલાના સમયે આવીને ખબર કરજો. આજે મેં તમને બહુ ફેરા ખવડાવ્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ મંદિરમાં આવીને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. તે પછી સેન સમયે કીર્તન ગાયાં. પછી પ્રાતઃકાલ

नाथजी के दरसन किये। ता पाछें सेन समय कीर्तन गाये। पाछें प्रातःकाल भयो, तब न्हाय के सूरदासजी ने आइके वा बनिया सों कही, जो-मंगला को समय है, सो अब तो चलि! तब वा बनिया ने कही, जो-सूरदासजी! अब ही तो हाट बुहारि के मांडनी है। तासों बोहनी के समय कोई गाहक फिरि जाय तो सगरो दिन खाली जाय। तासों हाट लगाय के सिंगार के दरसन कों चलूंगो। तासों सिंगार के समय कहियो। तब सूरदासजी ने मंगला आरती के दरसन किये। पाछें सूरदासजी सिंगार के समय फेरि आये। तब वा बनिया ने कही, जो-अब ही मैं आछी काहू की बोहनी कीनी नाहीं है, और गाय डोलत हैं। तासों अब राजभोग के दरसन अवश्य करूंगो। सो देखो तुम कालिह तें मेरे लिये बहोत फिरत हो, जो-तुम बड़े भगवदीय हो। सो सूरदासजी फेरि श्रीनाथजी के दरसन कों परवत पर आये। तब श्रीनाथजी के सिंगार के दरसन किये कीर्तन किये। ता पाछें राजभोग आरती को समय भयो, तब सूरदासजी ने वा बनिया सों कह्यो, जो-अब चलोगे? तब वा बनियाने कह्यो, जो-या समय मैं कैसे चलें? जो अब वैष्णव राजभोग के दरसन करि के नीचे आवेंगे। सो सब या समय सीधा सामग्री लेत हैं। जो मैं बूढो, कब आऊँ परवत सों उतरि कें, कैसे बेगि आयो जाय? और याही

थयुं त्यारे न्हाईने सूरदासजीए आवीने ते वाणियाने कह्युं, के मंगलानो समय छे तेथी हवे तो चाल. त्यारे ते वाणिआए कह्युं, के सूरदासजी! हवे तो दुकान झाडीने मांडवी छे तेथी बोणीना समये कोई घराक पाछुं जाय तो आखो दिवस खाली जाय. तेथी दुकान मांडीने शृंगारना दर्शने चालीश. तेथी शृंगारना समये कहेजो. त्यारे सूरदास-जीए मंगला आरतीनां दर्शन कर्यां. पछी सूरदासजी शृंगारना समये फरी आव्या. त्यारे ते वाणिआए कह्युं, के हजु तो में कोईनी सारी बोणी करी नथी अने गाय भटके छे. तेथी हवे राजभोगनां दर्शन अवश्य करीश. जुओ तमे कालथी मारा माटे बहु फरो छो ते तमे मोटा भगवदीय छो. त्यारे सूरदासजी फरी श्रीनाथजीना दर्शने पर्वत उपर आव्या. त्यारे श्रीनाथजीना शृंगारनां दर्शन कर्यां, कीर्तन कर्यां. ते पछी राजभोग आरतिनो समय थयो त्यारे सूरदासजीए ते वाणिआने कह्युं, के हवे चालशो? त्यारे ते वाणिआए कह्युं, के आ समये हुं केवी रीते आवुं? हवे वैष्णवो राजभोगनां दर्शन करीने नीचे आवशे. ते बधा आ समये सीधुं सामग्री ले छे. हुं वृद्ध क्यारे आवुं? पर्वत उपरथी उतरीने केवी रीते जल्दी आवी शकाय.

बखत बिक्री को समय है। जो याही समय कछू मिले सो मिले। तासों उत्थापन के समय दरसन करूंगो। या प्रकार सूरदासजी वा बनिया के साथ तीन दिन तांई रहे। परंतु वह बनिया ऐसो लोभी सो दरसन कों नाहीं गयो। ता पाछे चौथे दिन न्हाय के सूरदासजी प्रातःकाल मंगला के दरसन कों चले। तब सूरदासजी अपने मन में बिचारे, जो–देखो, या बनिया कों तीन दिन भये, परंतु दरसन कों नाहीं गयो। तासों आज जो यह न चले तो याकों भय दिखावनो, और दरसन करावनो। यह बिचारिके सूरदासजी वा बनिया की पास आय के कह्यो, जो–तीन दिन बीति चुके मोकों फिरते, परि तू दरसन कों नाहीं चल्यो। जो आज तो चलि। तब वा बनियानें कह्यो, जो–कछू बोहनी करि सिंगार के दरसन करूंगो। तब सूरदासजी वह बनिया सों कही, जो-अब तो मैं तेरी बात सगरे वैष्णवन में प्रगट करूंगो। जो यह बनिया झूंठो बहोत है, सो कबहू याने श्रीनाथजी को दरसन नाहीं कियो। और यह वैष्णव हू नाहीं है। अब तेरे पास कोई वैष्णव सोदा लैन आवेगो तो मैं तेरे दोहा, चौपाई, पद, कुटिलता के करिके वैष्णवन कों सुनाऊंगो। सो या भाँति कहिके भैरव राग में एक पद गायो–

વળી આ વખત વેચવાનો છે. આ સમય જે મળે તે મળે. તેથી ઉત્થાપનના સમયે દર્શન કરીશ. એ પ્રકારે સૂરદાસજી એ વાણિયાની સાથે ત્રણ દિવસ સુધી રહ્યા. પરંતુ એ વાણિઓ એવો લોભી કે દર્શને ન ગયો. તે પછી ચોથા દિવસે ન્હાઇને સૂરદાસજી પ્રાતઃકાલ મંગલાના દર્શને ચાલ્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે જુઓ, આ વાણિઆને ત્રણ દિવસ થયા પરંતુ દર્શને નહીં ગયો તેથી આજ તો આ ન ચાલે તો એને ભય દેખાડવો અને દર્શન કરાવવાં. એમ વિચારીને સૂરદાસજીએ એ વાણિયાની પાસે આવીને કહ્યું, કે ત્રણ દિવસ વીતી ચુકયા મને ફરતાં પરંતુ તૂ દર્શને ન ચાલ્યો માટે આજ તો ચાલ. ત્યારે તે વાણિઆએ કહ્યું, કે કંઇ બોણી કરી શૃંગારનાં દર્શન કરીશ. ત્યારે સૂરદાસજીએ વાણિઆને કહ્યું; કે હવે તો હું તારી વાત બધા વૈષ્ણવોમાં પ્રકટ કરીશ, કે આ વાણિઓ જૂઠો ઘણો છે. એણે કયારેય શ્રીનાથજીનાં દર્શન નથી કર્યાં અને આ વૈષ્ણવ પણ નથી. હવે તારી પાસે કોઇ વૈષ્ણવ સોદા લેવા આવશે તો હું તારા દોહા, ચોપાઇ, પદ કુટીલતાનાં કરીને વૈષ્ણવોને સંભળાવીશ. એમ કહીને ભૈરવ રાગમાં એક પદ ગાયું :— રાગ ભૈરવ—'આજ કામ કાલ કામ'

राग भैरव—आज काम काल्हि काम परसों काम करना। पहेले दिन बोहोत काम विमुख भए चरना ॥ २ ॥ जागत काम सोवत काम काम ही में पचि मरना। छांडि काम सुमरि स्याम 'सूर' पकरि सरना ॥ २ ॥

सो यह पद सूरदासजी नें वा बनिया कों वाही समय करिके सुनायो। सो तब तो वा बनिया अपने मन में डरप्यो।' पाछे, सूरदासजी के पाँवन परि वा बनिया ने बिनती कीनी, जो–तुम मेरे दोहा कवित्त कछू बरनन मति करो, और मेरी बात कोई सों प्रगट मति करो। जो मैं अबही तिहारे संग चलूंगो। पाछे वह बनिया सूरदासजी के संग आयो। तब मंगला के किंवाड़ खुले, तब सूरदासजी नें श्रीनाथजी सों कह्यो, जो-महाराज! यह बनिया दैवी जीव है, सो तासों अब याके मन कों आकर्षन करिके याको उद्धार करो। सो काहेतें? जो यह तिहारी ध्वजा के नीचे रहत है। तब श्रीनाथजी कहें, जो–मेरे पास रहत है, सो कहा मोकों जानत है? तुम सब भगवदीयन की कृपा होय सो तबही मोकों पावे।

भावप्रकाश—सो काहेते? जो गंगा यमुना में अनेक जीव हैं सो कहा कृतार्थ हैं? जो माखी मच्छर चेंटी आदि श्रीप्रभु के बहोत जीव हैं, सो कहा कृतार्थ हैं? जो भगवदीयन को संग होय तब ही कृतार्थ होय। सो तब ही श्रीप्रभून कों पावे। भगवदीयन के संग सों दासभाव होय तब ही कृपा होय।

पाछे श्रीनाथजी ने वा बनिया कों ऐसो दरसन दियो, सो

(ઉપર જુઓ) એ પદ સૂરદાસજીએ એ વાણિયાને તેજ સમયે કરીને સંભળાવ્યું. ત્યારે તે વાણિયો પોતાના મનમાં ડર્યો. પછી સૂરદાસજીના પગે પડી તે વાણિયાએ વિનંતી કરી કે તમે મારા દોહા, કવિત્ત કંઇ વર્ણન ન કરો અને મારી વાત કોઇની આગળ ન કરતા. હું હમણાં જ તમારી સાથે ચાલીશ. પછી એ વાણિયો સૂરદાસજીના સંગે આવ્યો. ત્યારે મંગલાનાં કમાડ ખુલ્યાં. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીને કહ્યું, કે મહારાજ! આ વાણિયો દૈવી જીવ છે. તેથી હવે એના મનનું આકર્ષણ કરીને એનો ઉદ્ધાર કરો. કેમકે એ તમારી ધ્વજાની નીચે રહે છે. ત્યારે શ્રીનાથજી કહે, કે મારી પાસે રહે છે તે શું મને જાણે છે? તમારા બધા ભગવદીયોની કૃપા થાય ત્યારેજ મને પામે.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે ગંગા–યમુનામાં અનેક જીવ છે તે શું કૃતાર્થ છે? માખી, મચ્છર, કીડી આદિ શ્રીપ્રભુના ઘણા જીવો છે તે શું કૃતાર્થ છે? ભગવદીયનો સંગ હોય ત્યારે જ કૃતાર્થ થાય. ત્યારે જ શ્રીપ્રભુને પામે. ભગવદીયોના સંગથી દાસભાવ હોય ત્યારે કૃપા થાય.

वाको मन हरि लीनो। सो जब मंगला के दरसन होय चुके तब वा बनियाने सूरदासजी के चरन पकरि के विनती कीनी, जो-महाराज! मेरो जनम सगरो वृथा गयो, द्रव्य जोरवे में। मेरे पास द्रव्य बहोत हैं, सो अब तुम चाहो तहां या द्रव्य कों खरच करो। और मोकों श्री-गुसांईजी को सेवक कराय के वैष्णव करो। तब सूरदासजी ने या बनिया सों कह्यो, जो-तू न्हाय के काहू कों छुइयो मति, यहां आय बैठियो। सो इतने में श्रीगुसांईजी आप सिंगार करि चुके, तब सूर-दासजी नें श्रीगुसांईजी सों विनती कीनी, जो-महाराज! या बनिया कों सरन लीजिये। तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों सूरदासजी सों कहे, जो-सूरदासजी! तुमने भलो साठि वरस को बूढ़ो बेल नाथ्यो। तुम विना या बनिया को सगरो जनम योंही जातो। पाछे श्रीगुसां-ईजी आप वा बनिया कों बुलाय कें श्रीनाथजी के सन्निधान बैठाय के नाम-ब्रह्मसंबंध करवायो। सो वा बनिया की बुद्धि निरमल होय गई। सो तब सगरे दरसन नित्य नेम सों करन लाग्यो। और वा बनिया नें श्रीगुसांईजी कों बहोत भेट करी। और श्रीनाथजी के वागा वस्त्र सामग्री कराय आभूषण कराये, और अंगीकार कराये। ता पाछे एक दिन वा बनिया ने सूरदासजी सों कही, जो-सूरदासजी! तिहारी

પછી શ્રીનાથજીએ એ વાણિયાને એવાં દર્શન દીધાં કે એનું મન હરી લીધું. પછી જ્યારે મંગલાનાં દર્શન થઇ ચૂક્યાં ત્યારે તે વાણિઆએ સૂરદાસજીના ચરણ પકડીને વિનંતી કરી કે મહારાજ! મારો જન્મ સઘળો વૃથા ગયો, દ્રવ્ય જોડવામાં. મારી પાસે દ્રવ્ય ઘણું છે. હવે તમે ચાહો ત્યાં એ દ્રવ્યને ખર્ચો અને મને શ્રીગુસાંઇ-જીનો સેવક કરાવીને વૈષ્ણવ કરો. ત્યારે સૂરદાસજીએ તે વાણિઆને કહ્યું, કે તું ન્હાઇને કોઇને અડીશ નહીં. અહીં આવી બેસજે. એટલામાં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શૃંગાર કરી ચૂક્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આ વાણિઆને શરણે લો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ શ્રીમુખથી સૂરદાસજીને કહે, કે સૂરદાસજી! તમે ભલો સાઠ વર્ષનો વૃદ્ધ બળદ નાથ્યો. તમારા વિના આ વાણિઆનો બધો જન્મ વૃથા જતો. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે તે વાણિઆને બોલાવીને શ્રીનાથજીના સન્નિધાન બેસાડીને નામ-બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. ત્યારે તે વાણિઆની બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઇ. ત્યાર પછી બધાં દર્શન નિત્ય નેમથી કરવા લાગ્યો. વળી તે વાણિઆએ શ્રીગુસાંઇજીને બહુ ભેટ કરી અને શ્રીનાથજીના વાગા વસ્ત્ર સામગ્રી કરાવી આભૂષણ કરાવ્યાં અને અંગીકાર કરાવ્યાં. તે પછી એક દિવસે તે વાણિઆએ સૂરદાસજીને કહ્યું, કે સૂરદાસજી!

कृपातें मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन पायो, और वैष्णव भयो। तासों अब ऐसी कृपा करो, जो-याही जनम में मेरो अंगीकार प्रभु करें, और मोकों संसार को दुःख सुख बाधा न करे। तब सूरदासजी ने एक पद करिके वा बनिया कों सिखायो।

राग बिलावल—कृष्ण सुमिर तन पावन कीजे। जौलों जग सुपना सों जीजे ॥ १ ॥ अवधि उसास गिने सब तेरे। सो बीतत भय आवत नेरे ॥ २ ॥ जो यह सपनो नाहिं विचारे। कबहू न जनम विषय लगि हारे ॥ ३ ॥ गहे विवेक बीज ले बोवे। कबहू न जठर अग्नि में सोवे ॥४॥ बार बार तोकों समुझावे। जो छिन जाय सो बोहोरि नहीं आवे ॥ ५ ॥ ठगिनी विषय ठगोरी लाई। घटिका घटत छिन ही छिन जाई ॥ ६ ॥ गिनत ही गिनत अवधि नियरानी। छांडि चल्यो निधि भई बिरानी ॥ ७ ॥ होत कहा अब के पछताने। तरुवर-पत्र न मिले पुराने ॥ ८ ॥ पवन उडे सो बहुरि न आवे। कर्ता और अनेक बनावे ॥९॥ जल थल पसु पंछी सुकर कृमि। मानुष तन पायो सब जुग भ्रमि ॥१०॥ सो तन खोवे रति वित्त मनि। काच गह्यो विसरी चिंतामनि ॥११॥ कबहू नीके नाथ न गायो। एक मन दसहू दिस धायो ॥१२॥ मन हि मन माया अवगाहत। नायक भयो तिहिं पुर चाहत ॥१३॥ स्वर्ग रसातल भुव रजधानी। तोऊ तृपत भयो न अभिमानी ॥१४॥ ऐसे ही करत अवधि सब बीती। गह्यो न ज्ञान रह्यो यह रीति ॥१५॥ कबहू सज्जन मिलि करत बडाई कबहूक ललना ललित लजाई ॥१६॥ कबहूक हय हाथी रथ आसन। कबहूक पलका सुखद सुवासन ॥१७॥ कबहूक चँवर छत्र सिर ढारे। कबहू सुभट पसुन चढि मारे ॥१८॥ कबहू तोरन छत्र बनावे। कबहू मद गज जूथ लरावे ॥१९॥ जोबन द्वारं दूती सब ठाढी। त्यो त्यों तृष्णा सतगुनी बाढी ॥२०॥ दिव्य बसन फलफूल सुबासी। नव जोबन अबला सुखरासी ॥२१॥ द्वार कपाट सहस एक लागे। सुभट पहरुवा चहुं दिस जागे ॥२२॥ रमनी रमत न रजनी जानी। माया मद पियो अभिमानी ॥२३॥ सुत वित बनिता हेत लगायो। तब चेत्यो जब काल चेतायो ॥२४॥ झूंठो नाटक संग न साथी। नोबत द्वार हय गज हाथी ॥२५॥ भूप छिनक में भयो भिखारी। क्यों हरै सूल न सहे विकारी ॥२६॥ भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो। तिर्यक सूर-सर सन्मुख साध्यो ॥२७॥ मनुष्य देह धरि कर्म कमायो। ते तिरछे दुःख द्वारे पायो ॥२८॥ जिहिं तन काज जीव बध कीने। रसना-रस अमि पट-रस लीने ॥२९॥ सो तन छुटत प्रेत करि डार्‍यो। प्रेत प्रेत कहि नगर निकार्‍यो ॥३०॥ हिंसा करि पालन करी जाकी। विष्ठा करम भस्म भई ताकी ॥३१। भोग अष्ट अरु बीस भयानक। हरिपद विमुख विषयरस पावक ॥३२॥ जागि जागि रे यहां को

તમારી કૃપાથી મેં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં અને હું વૈષ્ણવ થયો. તેથી હવે એવી કૃપા કરો કે આ જ જન્મમાં પ્રભુ મારો અંગીકાર કરે અને મને સંસારનું દુઃખસુખ બાધા ન કરે. ત્યારે સૂરદાસજીએ એક પદ કરીને તે વાણિઆને શિખવાડયું.

तेरो । माया सुपन कहत सब मेरो ॥३३॥ कृष्ण विना तोहि कौन छुडावे । सो करुणामय बिरद बुलावे ॥३४॥ आन देव कौ नहीं भरोसो । बातन खटरस लाख परोसो ॥३५॥ जीवन गयो तृपित की नाँई । मृग-तृष्णा कबहू न अघाई ॥३६॥ ऐसे आन देव सुखदायक । हरि बिनु कौन छुडावन लायक ॥३७॥ धर्मराज कहि सुनि कृतहारी । तू विषयन-रति सूरति बिसारी ॥३८॥ गर्भ अगिन रक्षा जिहिं कीनी । संकट मेटि अभयता दीनी ॥३९॥ हस्त चरन लोचन नासा मुख । रुधिर बूंदते लह्यो ऐसो सुख ॥४०॥ सो सुख तू सपने नहीं जान्यो । प्राननाथ कहि निकट न आन्यो ॥४१॥ कित ये सूल सहे अपराधी । निगम सिख एको नहीं साधी ॥४२॥ कोटिन बार मनुष्य तन पायो । हरि-पथ छांड अपथ कों धायो ॥४३॥ समय गए असमय पछितैये । मानुष जन्म बहुरि नहीं पैये ॥४४॥ सुझन स्वामी पीठ दे आगे । पुनि पुरुषारथ काहे लागे ॥४५॥ पारस पाइ जलधि में बोरे । पुनि गुन सुनत कपार हि फोरे ॥४६॥ चिंतामणि कोडी लगि दीनी । सुनि परसिन करुणा अति कीनी ॥४७॥ पाइ कल्पतरु मूल खनावे । सो तरु पुनि कैसें सो पावे ॥४८॥ मधु भाजन पूरन विधि दीनो । सो तू छांडि हलाहल कीनो ॥४९॥ कामधेनु तजि अज हि बिसाहे । गज-बल छांडि स्याल-बल चाहे ॥५०॥ यह नर-देह स्याम बिनु खोई । कपि कोनिक लों बांधि बिगोई ॥५१॥ काहे न करम कियो तू ऐसो । सुक सन सनक सनंदन जैसो ॥५२॥ सुर नर मुनि असुर पुनि देवक । हरिपद भजि सब तेरे सेवक ॥५३॥ पर-दक्षणा दे सीस नँवावे । मनसिज तोइ न परसन पावे ॥५४॥ जाकों भजत ऐसो सुख पैये । सुनि सठ सो कैसे बिसरैये ॥५५॥ अगनित पतित नाम-निस्तारी । जनम करम संताप निवारी ॥५६॥ निरभय होइ भक्ति निधि पाई । कबहू काल व्याल नहीं खाई ॥५७॥ सर्वसु जीवन कृष्ण नाम पद । भवजल व्याधि उपाधि परम गद ॥५८॥ श्रीभागवत परम हितकारी । द्वारे रटत हरि 'सूर' भिखारी ॥५९॥ परम पतित सरनाई लीजे । पदरज दान अभयता दीजे ॥६०॥

तब वा बनिया कों दृढ़ भक्ति भई । लौकिक की वासना सब दूरि भई । सो ज्ञान वैराग्य सर्वोपरि भक्ति भई । सो श्रीनाथजी के चरण कमल में दृढ़ आसक्ति और स्वरूपानंद को अनुभव भयो । तब रस में मगन होय गयो । सो या प्रकार सूरदासजी के संगतें ऐसो लोभी बनिया हू कृतार्थ भयो । सो वे सूरदासजी ऐसे भग-वदीय हते ।

રાગ બિલાવલ—'કૃષ્ણ સુમર તન પાવન કીજે' (ઉપર જુઓ) ત્યારે એ વાણિઆને દૃઢ ભક્તિ થઇ. લૌકિકની વાસના બધી દૂર થઇ. જ્ઞાન-વૈરાગ્ય સર્વોપર ભક્તિ થઇ. શ્રીનાથજીનાં ચરણ કમલમાં દૃઢ આસક્તિ અને સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ થયો. ત્યારે રસમાં મગ્ન થઇ ગયો. આ પ્રકારે સૂરદાસજીના સંગથી એવો લોભી વાણિયો પણ કૃતાર્થ થયો. તે સૂરદાસજી એવા ભગવદીય હતા.

कृपातें मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन पायो, और वैष्णव भयो। तासों अब ऐसी कृपा करो, जो-याही जनम में मेरो अंगीकार प्रभु करें, और मोकों संसार को दुःख सुख बाधा न करे। तब सूरदासजी ने एक पद करिके वा बनिया कों सिखायो।

राग बिलावल—कृष्ण सुमिर तन पावन कीजे। जोंलों जग सुपना सों जीजे ॥ १ ॥ अवधि उसास गिने सब तेरे। सो बीतत भय आवत नेरे ॥ २ ॥ जो यह सपनो नाहिं विचारे। कबहू न जनम विषय लगि हारे ॥ ३ ॥ गहे विवेक बीज ले बोवे। कबहू न जठर अग्नि में सोवे ॥४॥ बार बार तोकों समुझावे। जो छिन जाय सो बोहोरि नहीं आवे ॥ ५ ॥ ठगिनी विषय ठगोरी लाई। घटिका घटत छिन ही छिन जाई ॥ ६ ॥ गिनत ही गिनत अवधि नियरानी। छांडि चल्यो निधि भई बिरानी ॥ ७ ॥ होत कहा अब के पछताने। तरुवर-पत्र न मिले पुराने ॥ ८ ॥ पवन उडे सो बहुरि न आवे। कर्ता और अनेक बनावे ॥९॥ जल थल पसु पंछी सुकर कृमि। मानुष तन पायो सब जुग भ्रमि ॥१०॥ सो तन खोवे रनि वित्त मनि। काच गह्यो बिसरी चिंतामनि ॥११॥ कबहू नीके नाथ न गायो। एक मन दसहू दिस धायो ॥१२॥ मन हि मन माया अवगाहत। नायक भयो निहिं पुर चाहत ॥१३॥ स्वर्ग रसातल भुव रजधानी। तोऊ तृपन भयो न अभिमानी ॥१४॥ ऐसे ही करत अवधि सब बीती। गह्यो न ज्ञान रह्यो यह रीति ॥१५॥ कबहू सज्जन मिलि करत बडाई कबहूक ललना ललित लजाई ॥१६॥ कबहूक हय हाथी रथ आसन। कबहूक पलका सुखद सुवासन ॥१७॥ कबहूक चँवर छत्र सिर ढारे। कबहू सुभट पसुन चढि मारे ॥१८॥ कबहू तोरन छत्र बनावे। कबहू मद गज जूथ लगावे ॥१९॥ जोवन द्वार दूती सब ठाढी। त्यो त्यों तृष्णा सतगुनी बाढी ॥२०॥ दिव्य बसन फलफूल सुबासी। नव जोवन अबला सुखरासी ॥२१॥ द्वार कपाट सहस एक लागे। सुभट पहरुवा चहुं दिस जागे ॥२२॥ रमनी रमत न रजनी जानी। माया मद पियो अभिमानी ॥२३॥ सुत वित वनिता हेत लगायो। तब चेत्यो जब काल चेतायो ॥२४॥ झूंठो नाटक संग न साथी। नोबत द्वार हय गज हाथी ॥२५॥ भूप छिनक में भयो भिखारी। क्यों हूदे सूल न सहे विकारी ॥२६॥ भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो। तिर्यक सूर-सर सन्मुख साध्यो ॥२७॥ मनुष्य देह धरि कर्म कमायो। ते तिरछे दुःख द्वारे पायो ॥२८॥ जिहिं तन काज जीव बध कीने। रसना-रस अमि षट-रस लीने ॥२९॥ सो तन छुटत प्रेत करि डार्‌यो। प्रेत प्रेत कहि नगर निकार्‌यो ॥३०॥ हिंसा करि पालन करी जाकी। विष्टा करम भस्म भई ताकी ॥३१। भोग अष्ट अरु बीस भयानक। हरिपद विमुख विषयरस पावक ॥३२॥ जागि जागि रे यहां को

તમારી કૃપાથી મેં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં અને હું વૈષ્ણવ થયો. તેથી હવે એવી કૃપા કરો કે આ જ જન્મમાં પ્રભુ મારો અંગીકાર કરે અને મને સંસારનું દુઃખસુખ બાધા ન કરે. ત્યારે સૂરદાસજીએ એક પદ કરીને તે વાણિઆને શિખવાડ્યું.

तेरो । माया सुपन कहत सब मेरो ॥३३॥ कृष्ण विना तोहि कौन छुडावे । सो करुणामय विरद बुलावे ॥३४॥ आन देव कौ नहीं भरासो । बातन खटरस लाख परोसो ॥३५॥ जीवन गयो तृपित की नाँई । मृग-तृष्णा कबहू न अघाई ॥३६॥ ऐसे आन देव सुखदायक । हरि विनु कौन छुडावन लायक ॥३७॥ धर्मराज कहि सुनि कृतहारी । तू विषयन-रति सूरति विसारी ॥३८॥ गर्भ अगिन रक्षा जिहिं कीनी । संकट मेटि अभयता दीनी ॥३९॥ हस्त चरन लोचन नासा मुख । रुधिर बूंदते लह्यो ऐसो सुख ॥४०॥ सो सुख तू सपने नहीं जान्यो । प्राननाथ कहि निकट न आन्यो ॥४१॥ कित ये सूल सहे अपराधी । निगम सिख एको नहीं साधी ॥४२॥ कोटिन बार मनुष्य तन पायो । हरि-पथ छांड अपथ कों धायो ॥४३॥ समय गए असमय पछितैये । मानुष जन्म बहुरि नहीं पैये ॥४४॥ सूझत स्वामी पीठ दे आगे । पुनि पुरुषारथ काहे लागे ॥४५॥ पारस पाइ जलधि में बोरे । पुनि गुन सुनत कपार हि फोरे ॥४६॥ चिंतामणि कोडी लगि दीनी । सुनि परसिन करुणा अति कीनी ॥४७॥ पाइ कल्पतरु सूल खनावे । सो तरु पुनि कैसें सो पावे ॥४८॥ मधु भाजन पूरन विधि दीनो । सो तू छांडि हलाहल कीनो ॥४९॥ कामधेनु तजि अज हि विसाहे । गज-बल छांडि स्याल-बल चाहे ॥५०॥ यह नर-देह स्याम विनु खोई । कपि कोनिक लों बांधि विगोई ॥५१॥ काहे न करम कियो तू ऐसो । सुक सन सनक सनंदन जैसो ॥५२॥ सुर नर मुनि असुर पुनि देवक । हरिपद भजि सब तेरे सेवक ॥५३॥ पर-दक्षणा दे सीस नँवावे । मनसिज तोइ न परसन पावे ॥५४॥ जाकों भजत ऐसो सुख पैये । सुनि सठ सो कैसे विसरैये ॥५५॥ अगनित पतित नाम-निस्तारी । जनम करम संताप निवारी ॥५६॥ निरभय होइ भक्ति निधि पाई । कबहू काल व्याल नहीं खाई ॥५७॥ सर्वसु जीवन कृष्ण नाम पद । भवजल व्याधि उपाधि परम गद ॥५८॥ श्रीभागवत परम हितकारी । द्वारे रटत हरि 'सूर' भिखारी ॥५९॥ परम पतित सरनाई लीजे । पदरज दान अभयता दीजे ॥६०॥

तब वा वनिया कों दृढ़ भक्ति भई । लौकिक की वासना सब दूरि भई । सो ज्ञान वैराग्य सर्वोपरि भक्ति भई । सो श्रीनाथजी के चरण कमल में दृढ़ आसक्ति और स्वरूपानंद को अनुभव भयो । तब रस में मगन होय गयो । सो या प्रकार सूरदासजी के संगतें ऐसो लोभी वनिया हू कृतार्थ भयो । सो वे सूरदासजी ऐसे भगवदीय हते ।

રાગ બિલાવલ—'કૃષ્ણ સુમર તન પાવન કીજે' (ઉપર જુઓ) ત્યારે એ વાણિઆને દૃઢ ભક્તિ થઇ. લૌકિકની વાસના બધી દૂર થઇ. જ્ઞાન-વૈરાગ્ય સર્વોપર ભક્તિ થઇ. શ્રીનાથજીનાં ચરણ કમલમાં દૃઢ આસક્તિ અને સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ થયો. ત્યારે રસમાં મગ્ન થઇ ગયો. આ પ્રકારે સૂરદાસજીના સંગથી એવો લોભી વાણિયો પણ કૃતાર્થ થયો. તે સૂરદાસજી એવા ભગવદીય હતા.

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है। सो श्रीललिताजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'विरजा' है। सो सूरदास को संग पायके लीला को अनुभव भयो। तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। सो सेनआरती के दरसन करि सूरदासजी के पास आये। तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई। कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्तिसुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्है जाके। 'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहेत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई। तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे। 'सूर'यह निश्चै बिचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई। महाराज ऋषिराज देवमुनि देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप। हरि-जस विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकी लोग बडो उच्छाह। काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते। मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि धर्म मोक्ष सिर नावे॥ विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर लीने। छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कछू नहीं व्यापे जो रस-रीति यह जाने। 'सूरदास' नर तन पाए गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि स्नान करन फल दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त लावत। मनक्रमवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गावत। 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो हरि सूरत करावत ॥३॥

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે ? મૂળમાં દૈવી જીવ છે. શ્રીલલિતાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ ' વીરજા ' છે. એને સૂરદાસનો સંગ પામીને લીલાનો અનુભવ થયો. તેથી ભગવદીયનો સંગ સર્વોપરી છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯—વળી એક સમય શ્રીગોકુલથી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવો દસ-પંદર સૂરદાસજીને મળવાને અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરવાને આવ્યા.

सो या प्रकार सूरदासजी ने अनेक पद वैष्णवन कों सुनाये। तब सब वैष्णव बहोत प्रसन्न भये। पाछें सूरदासजी ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-कछू मो पर कृपा करिके आज्ञा करिये। तब सब वैष्णवन ने सूरदासजी सों कह्यो, जो-ज्ञान, योग, परमतत्त्व और श्रीठाकुरजी को प्रेम, स्नेह को स्वरूप सुनाओ। तब सूरदासजी ने यह कीर्तन सुनायो। सो पद—

राग बिहागरो—जोग सों कोऊ नहीं हरि पाए। निज आज्ञा तप कियो बिधाता कब रसरास खिलाए॥ १॥ जोग जुगति संकर आराधत परमतत्त्व चित्त लाए। भुज धरि ग्रीव कबहि नंदनंदन हिलमिल कल सुर गाए॥ २॥ बगदाबल महारिषि कबहु तृन छाया न कराए। बरखत बरखत दुखी जानि नंदनंदन कब गिरिवर कर छाए॥ ३॥ अति तपपुंज बिप्र दुर्वासा दुर्वा तृन नित खाए। चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए॥४॥ बहुत तप कियो मार्कंडे मुनि आय सिंधु भरमाये। सत कल्प बीतत भये तब हरि बरुन फांस मुकराए॥ ५॥ भक्त बिरह कातर करुनामय वेद निरंतर गावे। को है जोग सुनत यहां उधो 'सूर' स्याम मन भावे॥ ६॥

सो या भांति अनेक कीर्तन करि वैष्णवन कों समुझाये। तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयकें कहे, जो सूरदासजी के ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है। ता पाछे सवारे भये सगरे वैष्णव ने श्रीनाथजी के दरसन किये। ता पाछे सूरदासजी सों विदा होय के गोकुल आये। सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

તે સેન આરતિનાં દર્શન કરી સૂરદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ બધા વૈષ્ણવોનું બહુ આદર-સન્માન કર્યું અને તેજ સમયે કીર્તન ગાયાં:—૧ 'હરિજન સંગ છિનક જો હોઇ' ૨ 'પ્રભુજન પર પ્રસન્ન જબ હોઇ' ૩ 'હરિ કે જનકી અતિ ઠકુરાઇ' ૪ 'જા દિન સંત પાહુને આવે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે સૂરદાસજીએ અનેક પદ વૈષ્ણવોને સંભળાવ્યાં. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો બહુ પ્રસન્ન થયા. પછી સૂરદાસજીએ તે વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે કંઇ મારા ઉપર કૃપા કરીને આજ્ઞા કરો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ સૂરદાસજીને કહ્યું, કે જ્ઞાન, યોગ, પરમતત્વ અને શ્રીઠાકુરજીના પ્રેમસ્નેહનું સ્વરૂપ સંભળાવો. ત્યારે સૂરદાસજીએ આ કીર્તન સંભળાવ્યું. એ પદ:—'જોગ સોં કોઉ નાહીં હરિ પાયે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે અનેક કીર્તન કરી વૈષ્ણવોને સમજાયા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને કહે, કે સૂરદાસજીના ઉપર મહાન ભગવત્કૃપા છે. તે પછી સવાર થયે બધા વૈષ્ણવોએ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. તે પછી સૂરદાસજીથી વિદાય થઇને ગોકુલ આવ્યા. એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है। सो श्रीललिताजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'विरजा' है। सो सूरदास को संग पायके लीला को अनुभव भयो। तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। सो सेनआरती के दरसन करि सूरदासजी के पास आये। तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई। कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्तिसुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्है जाके। 'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहेत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई। तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे। 'सूर'यह निश्चै बिचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई। महाराज ऋषिराज देवमुनि देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप। हरि-जस विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकौ लोग वडो उच्छाह। काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते। मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि धर्म मोक्ष सिर नावे॥ विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर लीने। छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कछू नहीं व्यापे जो रस-रीति यह जाने। 'सूरदास' नर तन पाए गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि स्नान करन फल दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त लावत। मनक्रमवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गावत। 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो हरि सूरत करावत ॥३॥

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે ? મૂળમાં દૈવી જીવ છે. શ્રીલલિતાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ ' વીરજા ' છે. એને સૂરદાસનો સંગ પામીને લીલાનો અનુભવ થયો. તેથી ભગવદીયનો સંગ સર્વોપરી છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯-વળી એક સમય શ્રીગોકુલથી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવો દસ-પંદર સૂરદાસજીને મળવાને અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરવાને આવ્યા.

सो या प्रकार सूरदासजी ने अनेक पद वैष्णवन कों सुनाये। तब सब वैष्णव बहोत प्रसन्न भये। पाछें सूरदासजी ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-कछू मो पर कृपा करिके आज्ञा करिये। तब सब वैष्णवन ने सूरदासजी सों कह्यो, जो-ज्ञान, योग, परमतत्त्व और श्रीठाकुरजी को प्रेम, स्नेह को स्वरूप सुनाओ। तब सूरदासजी ने यह कीर्तन सुनायो। सो पद—

राग बिहागरो—जोग सों कोऊ नहीं हरि पाए। निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रसरास खिलाए ॥ १ ॥ जोग जुगति संकर आराधन परमतत्त्व चित्त लाए। भुज धरि ग्रीव कबहि नंदनंदन हिलमिल कल सुर गाए ॥ २ ॥ बगदावल महारिषि कबहु तृन छाया न कराए। बरखत बरखत दुखी जानि नंदनंदन कब गिरिवर कर छाए ॥ ३ ॥ अति तपपुंज विप्र दुर्वासा दुर्वा तृन नित खाए। चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए ॥४॥ बहुत तप कियो मार्कंडे मुनि आय सिंधु भरमाये। सत कल्प बीतत भये तब हरि बरुन फांस मुकराए ॥ ५ ॥ भक्त विरह कातर करुनामय वेद निरंतर गावे। को है जोग सुनत यहां उधो 'सूर' स्याम मन भावे ॥ ६ ॥

सो या भांति अनेक कीर्तन करि वैष्णवन कों समुझाये। तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयकें कहे, जो सूरदासजी के ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है। ता पाछे सवारे भये सगरे वैष्णव ने श्रीनाथजी के दरसन किये। ता पाछे सूरदासजी सों विदा होय के गोकुल आये। सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

તે સેન આરતિનાં દર્શન કરી સૂરદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે સૂરદાસજીએ બધા વૈષ્ણવોનું બહુ આદર-સન્માન કર્યું અને તેજ સમયે કીર્તન ગાયાં:—૧ 'હરિજન સંગ છિનક જો હોઇ' ૨ 'પ્રભુજન પર પ્રસન્ન જબ હોઇ' ૩ 'હરિ કે જનકી અતિ ઠકુરાઇ' ૪ 'જા દિન સંત પાહુને આવે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે સૂરદાસજીએ અનેક પદ વૈષ્ણવોને સંભળાવ્યાં. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો બહુ પ્રસન્ન થયા. પછી સૂરદાસજીએ તે વૈષ્ણવોને કહ્યું, કે કંઇ મારા ઉપર કૃપા કરીને આજ્ઞા કરો. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ સૂરદાસજીને કહ્યું, કે જ્ઞાન, યોગ, પરમતત્વ અને શ્રીઠાકુરજીના પ્રેમસ્નેહનું સ્વરૂપ સંભળાવો. ત્યારે સૂરદાસજીએ આ કીર્તન સંભળાવ્યું. એ પદ:—'જોગ સોં કોઉ નાહીં હરિ પાયે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે અનેક કીર્તન કરી વૈષ્ણવોને સમજાયા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને કહે, કે સૂરદાસજીના ઉપર મહાન ભગવત્કૃપા છે. તે પછી સવાર થયે બધા વૈષ્ણવોએ શ્રીનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. તે પછી સૂરદાસજીથી વિદાય થઇને ગોકુલ આવ્યા. એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है । सो श्रीललिताजी की सखी है । सो लीला में याको नाम 'विरजा' है । सो सूरदास को संग पायके लीला को अनुभव भयो । तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है ।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये । सो सेनआरती के दरसन करि सूरदासजी के पास आये । तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये ।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई । कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्तिसुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्है जाके । 'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहेत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई । तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे । 'सूर'यह निश्चै बिचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज देवमुनि देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप । हरि-जस विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकौ लोग बडो उच्छाह । काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते । मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि धर्म मोक्ष सिर नावे ॥ विनय विवेक विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर लीने । छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कछू नहीं व्यापे जो रस-रीति यह जाने । 'सूरदास' नर तन पाए गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटि स्नान करन फल दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त लावत । मनक्रमवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गावत । 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो हरि सूरत करावत ॥३॥

ભાવપ્રકાશ—કેમ જે ? મૂલમાં દૈવી જીવ છે. શ્રીલલિતાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ 'વીરજા' છે. એને સૂરદાસનો સંગ પામીને લીલાનો અનુભવ થયો. તેથી ભગવદીયનો સંગ સર્વોપરી છે.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯–વળી એક સમય શ્રીગોકુલથી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવો દસ-પંદર સૂરદાસજીને મળવાને અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરવાને આવ્યા.

सो तब सूरदासजी मन में विचारे, जो–मैं तो अपने मन में सवा लाख कीर्तन प्रकट करिवे को संकल्प कियो है, सो तामेतें लाख कीर्तन तो प्रकट भये हैं। सो भगवद् इच्छा तें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने। ता पाछे यह देह छोड़िके अंतर्धान होय जानो। सो या प्रकार सूरदासजी अपने मनमें विचार करत हते। वाही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रकट होयके दरसन दे के कह्यो, जो–सूरदासजी! तुमने जो सवा लाख कीर्तन को मन में मनोरथ कियो है, सो तो पूरन होय चुक्यो है, जो–पचीस हजार कीर्तन मैंने पूरन करि दिये हैं। तासों तुम अपने कीर्तनन के चोपडा देखो। तब सूरदासजी ने एक वैष्णव सों कह्यो जो-तुम मेरे कीर्तनके चोपडा देखो। सो तब वह वैष्णव देखे तो सूरदासजी के कीर्तन के बीच बीच में 'सूरश्याम' को भोग (छाप) है। सो एसे कीर्तन सगरी लीला में हैं। सो पचीस हजार हैं। सो बात वा वैष्णव ने सूरदास सों कही जो-कालिह तक तो 'सूरश्याम' के कीर्तन हते नाहीं, और आज सगरी लीला की बीच में हैं। तब सूरदासजी श्रीनाथजी कों दंडवत करिके कहे, जो–अब मेरो मनोरथ आपकी कृपा तें पूरन भयो। तासों अब आपु आज्ञा देऊ सो करों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो-अब तुम

કે તમે ગુજરાત જાવ. એ પ્રકારે ગુજરાત મોકલી અંતર્ધાન લીલા કરી. એથી સૂરદાસજીને નિત્ય લીલામાં બોલવવાની ઇચ્છા શ્રીગોવર્દ્ધનધરની છે.

ત્યારે સૂરદાસજીએ મનમાં વિચાર્યું કે મેં તો મારા મનમાં સવા લાખ કીર્તન પ્રકટ કરવાનો સંકલ્પ કર્યો છે તેમાંથી લાખ કીર્તન તો પ્રકટ થયાં છે. ભગવદીચ્છાંથી પચીસ હજાર કીર્તન બીજાં પ્રકટ કરવાં. તે પછી આ દેહ છોડીને અંતર્ધાન થઇ જવું. આ પ્રકારે સૂરદાસજી પોતાના મનમાં વિચાર કરતા હતા. તેજ સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રકટ થઇને દર્શન દઇને કહ્યું, કે સૂરદાસજી! તમે જે સવાલાખ કીર્તનોનો મનમાં મનોરથ કર્યો છે તે તો પૂરણ થઇ ચૂક્યો છે. પચીસ હજાર કીર્તન મેં પૂરાં કરી દીધાં છે તેથી તમે તમારાં કીર્તનોના ચોપડા જુઓ. ત્યારે સૂરદાસજીએ એક વૈષ્ણવને કહ્યું, કે તમે મારાં કીર્તનોના ચોપડા જુઓ. ત્યારે તે વૈષ્ણવ જુએ તો સૂરદાસજીના કીર્તનોના વચ્ચે વચ્ચે 'સૂરશ્યામ'ની છાપ છે એવાં કીર્તન બધી લીલામાં છે તે પચીસ હજાર છે એ વાત તે વૈષ્ણવે સૂરદાસને કહી, કે કાલ સુધી તો 'સૂરશ્યામ' નાં કીર્તન હતાં નહી અને આજ બધી લીલાના વચમાં છે. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીને દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે હવે મારો મનોરથ આપની કૃપાથી પૂર્ણ થયો. તેથી

वार्ता-प्रसंग १०—सो या प्रकार सूरदासजीने बहोत दिन ताईं भगवद् सेवा कीनी। ता पाछें जानें, जो-भगवद् इच्छा मोकों बुलायवे की है।

भावप्रकाश—सो काहेते ? जो प्रभुन की यह रीति है, जो जब वैकुंठ सों भूमि पर प्रकट होयवे की इच्छा करत हैं, तब वैकुंठवासी जो भक्त हैं, सो उनकों पहले भूमि पर प्रकट करत हैं। ता पाछें आपु श्रीभगवान प्रकट होय भक्तन के संग लीला करत हैं। पाछें अपुने भक्तन कों या जगत सों तिरोधान कराय ता पाछें वैकुंठ में लीला करत हैं। सो जैसे नंद, जसोदा, गोपीजन, सखा, वसुदेव, देवकी, यादव, सब प्रकट पहले ही किये। ता पाछे आप प्रकट होयकें लीला भूमि पर करिकै पाछे जादवनकूं मूसल द्वारा अंतर्धान करि लौकिक लीला किये। सो श्रीनंदरायजी, श्रीजसोदाजी, गोपीजन कों अंतर्धान लौकिक लीला नाहीं दिखाये। सो तैसेही श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी श्रीपूर्णपुरुषोत्तम को प्राकट्य है। सो लीला-संबंधी वैष्णव प्रकट किये। अब श्रीआचार्यजी आप अंतर्धान लीला किये। ओर श्रीगुसांईजी कों करनो है। सो पहले भगवदीयन कूं नित्यलीला में स्थापन करके आप पधारेंगे। सो भगवदीय कों (अपनी) लौकिक अंतर्धानलीला दिखावत नाहीं। सो जैसे चाचा हरिवंशजी सों कहे, जो-तुम गुजरात जावो। सो या प्रकार गुजरात पठाय के अंतर्धान लीला किये। सूरदासजी कूं नित्यलीलामें बुलायवेकी इच्छा श्रीगोवर्धनधर की है।

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૦–આ પ્રકારે સૂરદાસજીએ બહુ દિવસો સુધી ભગવત્સેવા કરી. તે પછી જાણ્યું કે ભગવદીચ્છા મને બોલાવવાની છે.

ભાવપ્રકાશ—તે શાથી ? કે પ્રભુની એ રીત છે કે જ્યારે વૈકુંઠથી ભૂમી ઉપર પ્રકટ થવાની ઇચ્છા કરે છે ત્યારે વૈકુંઠવાસી જે ભક્ત છે તેમને પહેલાં ભૂમી ઉપર પ્રકટ કરે છે તે પછી પોતે શ્રીભગવાન પ્રકટ થઇ ભક્તોના સંગે લીલા કરે છે. પછી પોતાના ભક્તોને આ જગતથી તિરોધાન કરાવીને વૈકુંઠમાં લીલા કરે છે. જેમ નંદ, યશોદા, ગોપીજન, સખા, વસુદેવ, દેવકી, યાદવ, બધાને પહેલાંજ પ્રકટ કર્યા. તે પછી આપ પ્રકટ થઇને ભૂમી ઉપર લીલા કરી પછી યાદવોને મૂશલ દ્વારા અંતર્ધાન કરી લૌકિક લીલા કરી. શ્રીનંદરાયજી, શ્રીયશોદાજી, ગોપીજનને લૌકિક અંતર્ધાન લીલા ન દેખાડી. તેજ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી, શ્રીગુસાંઇજી પૂરણ પુરુષોત્તમનું પ્રાકટ્ય છે. એથી લીલા-સંબંધી વૈષ્ણવ પ્રકટ કર્યા. હવે શ્રીઆચાર્યજી આપે અંતર્ધાન લીલા કરી અને શ્રીગુસાંઇજીને કરવી છે તેથી પહેલાં ભગવદીયોને નિત્ય લીલામાં સ્થાપન કરીને આપ પધારશે. ભગવદીયોને પોતાની લૌકિક અંતર્ધાન લીલા દેખાડતા નથી. જેમ ચાચા હરિવંશજીને કહ્યું

सो तब सूरदासजी मन में विचारे, जो-मैं तो अपने मन में सवा लाख कीर्तन प्रकट करिवे को संकल्प कियो है, सो तामेतें लाख कीर्तन तो प्रकट भये हैं। सो भगवद् इच्छा तें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने। ता पाछे यह देह छोड़िके अंतर्धान होय जानो। सो या प्रकार सूरदासजी अपने मनमें विचार करत हते। वाही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रकट होयके दरसन दे के कह्यो, जो-सूरदासजी! तुमने जो सवा लाख कीर्तन को मन में मनोरथ कियो है, सो तो पूरन होय चुक्यो है, जो-पचीस हजार कीर्तन मैंने पूरन करि दिये हैं। तासों तुम अपने कीर्तनन के चोपडा देखो। तब सूरदासजी ने एक वैष्णव सों कह्यो जो-तुम मेरे कीर्तनके चोपडा देखो। सो तब वह वैष्णव देखे तो सूरदासजी के कीर्तन के बीच बीच में 'सूरश्याम' को भोग (छाप) है। सो एसे कीर्तन सगरी लीला में हैं। सो पचीस हजार हैं। सो बात वा वैष्णव ने सूरदास सों कही जो-कालिह तक तो 'सूरश्याम' के कीर्तन हते नाहीं, और आज सगरी लीला की बीच में हैं। तब सूरदासजी श्रीनाथजी कों दंडवत करिके कहे, जो-अब मेरो मनोरथ आपकी कृपा तें पूरन भयो। तासों अब आपु आज्ञा देऊ सो करों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो-अब तुम

કે તમે ગુજરાત જાવ. એ પ્રકારે ગુજરાત મોકલી અંતર્ધાન લીલા કરી. એથી સૂરદાસજીને નિત્ય લીલામાં બોલવવાની ઇચ્છા શ્રીગોવર્દ્ધનધરની છે.

ત્યારે સૂરદાસજીએ મનમાં વિચાર્યું કે મેં તો મારા મનમાં સવા લાખ કીર્તન પ્રકટ કરવાનો સંકલ્પ કર્યો છે તેમાંથી લાખ કીર્તન તો પ્રકટ થયાં છે. ભગવદીચ્છાથી પચીસ હજાર કીર્તન બીજાં પ્રકટ કરવાં. તે પછી આ દેહ છોડીને અંતર્ધાન થઇ જવું. આ પ્રકારે સૂરદાસજી પોતાના મનમાં વિચાર કરતા હતા. તેજ સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રકટ થઇને દર્શન દઇને કહ્યું, કે સૂરદાસજી! તમે જે સવાલાખ કીર્તનોનો મનમાં મનોરથ કર્યો છે તે તો પૂરણ થઇ ચૂકયો છે. પચીસ હજાર કીર્તન મેં પૂરાં કરી દીધાં છે તેથી તમે તમારાં કીર્તનોના ચોપડા જુઓ. ત્યારે સૂરદાસજીએ એક વૈષ્ણવને કહ્યું, કે તમે મારાં કીર્તનોના ચોપડા જુઓ. ત્યારે તે વૈષ્ણવ જુએ તો સૂરદાસજીના કીર્તનોના વચ્ચે વચ્ચે 'સૂરશ્યામ'ની છાપ છે એવાં કીર્તન બધી લીલામાં છે તે પચીસ હજાર છે એ વાત તે વૈષ્ણવે સૂરદાસને કહી, કે કાલ સુધી તો 'સૂરશ્યામ' નાં કીર્તન હતાં નહી અને આજ બધી લીલાના વચમાં છે. ત્યારે સૂરદાસજીએ શ્રીનાથજીને દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે હવે મારો મનોરથ આપની કૃપાથી પૂર્ણ થયો. તેથી

मेरी लीला में आयके लीलारस को अनुभव करो। सो यह आज्ञा करिके श्रीनाथजी अंतर्धान भये। तब सूरदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके मन में बहोत प्रसन्न भये। परंतु पास दोय वैष्णव साधारन हते, सो जाने नाहीं, जो-श्रीठाकुरजी आपु सूरदासजीके पास पधारे, और कहा आज्ञा दीनी। सो काहेतें, जो-ठाकुरजीके स्वरूप को अनुभव भगवदीय विना और काहू कों नाहीं।

वार्ता-प्रसंग ११—सो तब सूरदासजी अपने मनमें यह विचार करिके परासोली आये। सो तहां अखंड रासलीला ब्रह्मरात्र करि भगवानने रासपंचाध्याई की सगरी लीला उहां करी है। सो जहां उडुराज चंद्रमा प्रकट्यो है। सो तहां चंद्रसरोवर है एसे अलौकिक स्थल में आये।

भावप्रकाश—जो ये अष्टसखा हैं। सो श्रीगिरिराजमें आठ द्वार हैं। सो तहां के ये अधिकारी हैं। तासों आठों सखा अपने अपने द्वार पर श्रीगिरिराज में ही देह छोडी है। और अलौकिक देह धरिके सदा सर्वदा लीला में बिराजमान हैं। (१) सो गोविंदकुंड ऊपर एक द्वार है। ताके सन्मुख परासोली चंद्रसरोवर है, तहां सूरदासजी सेवा में मुखिया हैं। (२) अप्सराकुंड ऊपर एक द्वार है, तहां सेवा में छीतस्वामी मुखिया हैं। (३) सुरभीकुंड ऊपर द्वार है, तहां परमानंदास सेवामें मु-

---

હવે આપ આજ્ઞા દો તેમ કરૂં. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે હવે તમે મારી લીલામાં આવીને લીલારસનો અનુભવ કરો. એ આજ્ઞા કરીને શ્રીનાથજી અંતર્ધાન થયા. ત્યારે સૂરદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને દંડવત્ કરીને મનમાં બહુ પ્રસન્ન થયા. પરંતુ પાસે બે વૈષ્ણવ સાધારણ હતા તે જાણે નહીં કે શ્રીઠાકુરજી આપ સૂરદાસજીની પાસે પધાર્યા અને શી આજ્ઞા કરી. કેમકે શ્રીઠાકુરજીના સ્વરૂપનો અનુભવ ભગવદીય વિના બીજા કોઇને નથી.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૧-ત્યારે સૂરદાસજી પોતાના મનમાં એ વિચાર કરીને પરાસોલી આવ્યા. ત્યાં અખંડ રાસલીલા બ્રહ્મરાત્ર કરી ભગવાને રાસપંચાધ્યાયીની બધી લીલા ત્યાં કરી છે. જ્યાં તારાપતિ ચંદ્રમા પ્રકટ્યો છે ત્યાં ચંદ્રસરોવર છે એવા અલૌકિક સ્થલમાં આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એ અષ્ટસખા છે તે શ્રીગિરિરાજજીમાં આઠ દ્વાર છે ત્યાંના એ અધિકારી છે. તેથી આઠે સખાઓએ પોત-પોતાના દ્વાર ઉપર શ્રીગિરિરાજજીમાંજ દેહ છોડી છે. (૧) ગોવિંદ કુંડ ઉપર એક દ્વાર છે તેના સન્મુખ પરાસોલી ચંદ્રસરોવર છે ત્યાં સૂરદાસજી સેવામાં મુખિયા છે. (૨) અપ્સરા કુંડ ઉપર એક દ્વાર છે ત્યાં સેવામાં

खिया हैं। (४) और गोविंदस्वामीकी कदमखंडी पास एक द्वार है, तहां गोविंद-स्वामी मुखिया हैं। (५) और रुद्रकुंड के पास एक द्वार है तहां चतुर्भुजदास सेवामें मुखिया हैं। (६) बिलछू सन्मुख एक बारी है, सो ता मारग होयके रास-लीला कों पधारत हैं, सो तहां की सेवा के कृष्णदास अधिकारी मुखिया हैं। (७) और मानसी गंगा के पास एक द्वार है सो तहांकी सेवा में नंददास मुखिया हैं। (८) और अन्योर के सन्मुख एक द्वार है, सो तहां जमुनावतो एक गाम है, सो ता द्वार के मुखिया कुंभनदास हैं। या प्रकार श्रीगिरिराज में नित्य निकुंज-लीला है। सो ता निकुंजलीला के आठ द्वार हैं। तहांके आठ सखा, सखी रूप हैं, सो सेवा में सदा तत्पर हैं। तासों सूरदास को ठिकानो परासोली है।

सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की ध्वजा कों साष्टांग दंडवत् करि के ध्वजा के सन्मुख मुख करिके सूरदासजी सोये, परंतु मन में यह आई, जो-श्रीआचार्यजी और श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी है। श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला को याही देह सों अनुभव कराये। परंतु या समय एक वार श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर कृपा करिके दरसन देय, तो मेरे बड़े भाग्य हैं। श्रीगुसांईजीको नाम कृपासिंधु हैं, सो भक्तन के मनोरथ पूरन कर्ता हैं, सो पूरन करेंगे।

છીતસ્વામી મુખિયા છે. (૩) સુરભી કુંડ ઉપર દ્વાર છે ત્યાં પરમાનંદદાસ સેવામાં મુખિયા છે. (૪) ગોવિંદસ્વામીની કદમ ખંડી પાસે એક દ્વાર છે ત્યાં ગોવિંદસ્વામી મુખિયા છે. (૫) રૂદ્રકુંડ પાસે એક દ્વાર છે ત્યાં ચતુર્ભુજદાસ સેવામાં મુખિયા છે. (૬) બિલછુ સન્મુખ એક બારી છે તે માર્ગે થઇને રાસલીલામાં પધારે છે ત્યાંની સેવાના કૃષ્ણદાસ અધિકારી મુખિયા છે. (૭) માનસીગંગાની પાસે એક દ્વાર છે ત્યાંની સેવામાં નંદદાસ મુખિયા છે. (૮) આન્યોરની સન્મુખ એક દ્વાર છે ત્યાં જમનાવતો ગામ છે તે દ્વારના મુખિયા કુંભનદાસ છે. આ પ્રકારે શ્રીગિરિરાજજીમાં નિત્ય નિકુંજ લીલા છે તે નિકુંજલીલાનાં આઠ દ્વાર છે. ત્યાંના આઠ સખા સખી રૂપ છે તે સેવામાં સદા તત્પર રહે છે. તેથી સૂર-દાસનું ઠેકાણું પરાસોલી છે.

પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ધ્વજાને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કરીને ધ્વજાની સન્મુખ મુખ કરીને સૂરદાસજી સુઇ રહ્યા. પરંતુ મનમાં એ આવ્યું કે શ્રીઆચાર્યજી અને શ્રી-ગુસાંઇજીએ પોતે મારા ઉપર મહાન કૃપા કરી છે. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની લીલાનો આજ દેહથી અનુભવ કરાવ્યો. પરંતુ આ સમય એક વાર શ્રીગુસાંઇજી પોતે મારા ઉપર કૃપા કરીને દર્શન દે તો મારાં મોટાં ભાગ્ય છે. શ્રીગુસાંઇજીનું નામ કૃપાસિંધુ

सो या प्रकार सूरदासजी श्रीगुसांईजीके स्वरूप को चिंतवन करत हते, और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार करत हते। सो वा दिन श्रीगुसांईजी ने सूरदास कों जगमोहन में बैठे कीर्तन करत न देखे। सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु सेवकन सों पूछे, जो-सूरदासजी कहां है? तब एक वैष्णव नें बिनती कीनी जो-महाराज! सूरदासजी तो आज मंगला आरती के दरसन करिके परासोलीमें सगरे सेवकन सों भगवत्-स्मरण करिके गये हैं। तब श्रीगुसांईजी आप जाने जो-भगवद् इच्छा सूरदासजी कों बुलायवे की भई हैं, तासों आज सूरदासजी परासोली कों गये हैं। सो तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों सगरे वैष्णवन सों यह आज्ञा किये जो-'पुष्टिमारग को जहाज' जात है सो जाकों कछू लेनो होय सो लेऊ, और उहां जायके सूरदासजी कों देखो। सो या भांति सों जो राजभोग आरती उपरांत रहत हैं तो मैं हू आवत हों। सो तब सगरे वैष्णव सूरदासजी के पास आये।

भावप्रकाश—सो यहां 'जहाज' कहिवे को आसय यह है, जो-जैसे कोई जहाज में काहू व्यौपारी ने व्यौपार अर्थ अनेक वस्तु जहाज में भरी है, सो तैसे ही सूरदासजी के हृदय में अलौकिक वस्तु नाना प्रकार की भरी हैं।

છે. ભક્તોના મનોરથ પૂરણ કરવાવાળા છે તે પૂરણ કરશે. આ પ્રકારે સૂરદાસજી શ્રીગુસાંઇજીના સ્વરૂપનું ચિંતવન કરતા હતા અને અહીં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો શૃંગાર કરતા હતા. તે દિવસે શ્રીગુસાંઇજીએ સૂરદાસજીને જગમોહનમાં બેસીને કીર્તન કરતા ન જોયા તે સમયે શ્રીગુસાંઇજી પોતે સેવકોને પૂછે, કે સૂરદાસજી ક્યાં છે? ત્યારે એક વૈષ્ણવે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! સૂરદાસજી તો આજ મંગલા આરતિનાં દર્શન કરીને પરાસોલી બધા સેવકોને ભગવત્સ્મરણ કરીને ગયા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે જાણ્યું કે ભગવદીચ્છા સૂરદાસજીને બોલાવવાની થઇ છે, તેથી આજ સૂરદાસજી પરાસોલી ગયા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીમુખથી બધા વૈષ્ણવોને આજ્ઞા કરી કે, 'પુષ્ટિમાર્ગનું જહાજ' (દીવાદાંડી-નાવ) જાય છે. જેને કંઇ લેવું હોય તે લો અને ત્યાં જઇને સૂરદાસજીને જુઓ. આ પ્રકારથી જો રાજભોગ આરતિ ઉપરાંત (સૂરદાસ) રહે છે તો હું પણ આવું છું. ત્યારે બધા સૂરદાસજીની પાસે આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—અહીં 'જહાજ' કહેવાનો આશય એ છે કે જેમ કોઇ જહાજમાં કોઇ વેપારીએ વેપાર અર્થે અનેક વસ્તુ જહાજમાં ભરી છે તેજ પ્રકારે સૂરદાસજીના હૃદયમાં વિવિધ પ્રકારની અલૌકિક વસ્તુ ભરી છે.

ता समय सूरदासजीने श्रीगुसांईजी के और श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में मन लगाईके बोलिवो छोड़ दियो। सो तब श्रीगुसांईजी ने पंद्रह व्रजवासी दोराये। जो घड़ी २ के हमसों सूरदासजी के समाचार आय कहियो। तब वे व्रजवासी आयके श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-महाराज! अब तो सूरदासजी काहू सों बोलत नाहीं हैं। सो एसे करत २ राजभोग आरती को समय भयो। सो राजभोग आरती को समय भयो तब राजभोग आरती श्रीगोवर्द्धननाथजी की करिके, श्रीगुसांईजी आपु परासोली में जहां सूरदासजी हते तहां पधारे। तब श्रीगुसांईजी के संग रामदास, कुंभनदास, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास, आदि सगरे वैष्णव सूरदासजी के पास आये। तब देखे तो सूरदासजी अचेत होय रहे है, कछू देह को अनुसंधान नाहीं है। सो श्रीगुसांईजी आप सूरदासजी को हाथ पकरिके कहे जो-सूरदासजी! कैसे हो? तब सूरदासजी तत्काल उठिके दंडवत करिके कहे जो-बाबा! आये? जो मैं आपकी बाट ही देखत हतो। या समय आपने बडी कृपा करिके दरसन दियो। जो महाराज! मैं आप के स्वरूप को ही चिंतन करत हतो। ताही समय सूरदासजीने यह कीर्तन सारंग राग में गायो। सो पद—

राग सारंग—देखो देखो हरि जू को एक सुभाव। अति गंभीर उदार उदधि प्रभु ज्ञानि-सिरोमनि राय॥ १॥ राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान।

તે સમયે સૂરદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીના અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સ્વરૂપમાં મન લગાડીને બોલવું છોડી દીધું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પંદર વ્રજવાસીઓને દોડાવ્યા, કે ઘડી ઘડીના અમને સૂરદાસજીના સમાચાર આવીને કહો. ત્યારે તે વ્રજવાસીઓએ આવીને શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ! હવે તો સૂરદાસજી કોઇથી બોલતા નથી. એમ કરતાં કરતાં રાજભોગ આરતિનો સમય થયો એટલે રાજભોગ આરતિ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની કરીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરાસોલીમાં જ્યાં સૂરદાસજી હતા ત્યાં પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીના સંગે રામદાસ, કુંભનદાસ, ગોવિંદસ્વામી, ચતુર્ભુજદાસ આદિ સઘળા વૈષ્ણવ સૂરદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે જુએ તો સૂરદાસજી અચેત થઇ રહ્યા છે. કંઇ દેહનું અનુસંધાન નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે સૂરદાસજીના હાથ પકડીને કહ્યું, કે સૂરદાસજી! કેમ છો? ત્યારે સૂરદાસજીએ તત્કાલ ઉઠીને દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે બાવા! આવ્યા? હું આપની વાટ જોતો હતો. આ સમયે આપે મહાન કૃપા કરીને દર્શન દીધાં. મહારાજ! હું આપના સ્વરૂપનું જ ચિંતન કરતો હતો. તેજ સમયે

समझ दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ मान ॥ २ ॥ बदन प्रसन्न कमल पद सन्मुख देखत हो हरि जैसे। बिमुख भए कृपा या मुखकी जब देखो तब तैसे ॥ ३ ॥ भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछे लागे। 'सूरदास' ऐसे प्रभुकों क्यों दीजे पीठ अभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासने श्रीगुसांईजी के आगे गायो। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीमुख सों कहे, जो–या प्रकार श्रीठाकुरजी आपु अपने भगवदीयन कों दीनता को दान करत हैं, सो ताको पूरन कृपा जानिये। सो दैन्यतारस के पात्र यही है। सो ता समय सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास ठाड़े हते। उनमें ते चतुर्भुजदास ने कह्यो, जो–सूरदासजी परम भगवदीय हैं। और सूरदासजीने श्रीठाकुरजी के लक्षावधि पद किये हैं। परंतु सूरदासजी नें श्री आचार्यजी महाप्रभुनको जस बरनन नाहीं कियो। यह सुनिके सूरदासजी कहे जो–मैं तो सगरो जस श्रीआचार्यजी को ही बरनन कियो है, जो मैं कछु न्यारो देखतो तो न्यारो करतो। परि तैंने मोसों पूछी है, सो मैं तेरे पास कहत हों, सो या कीर्तन के अनुसार सगरे कीर्तन जानियो। सो पद—

राग बिहागरो—भरोसो दृढ इन चरनन केरौ। श्रीवल्लभ नख चंद्र छटा बिनु सब जगमांझ अंधेरो ॥ १ ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो ॥ 'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरों बिना मोल को चेरो ॥ २ ॥

भावप्रकाश—सो या कीर्तन में सूरदासजी ने अपने हृदय को भाव

સૂરદાસજીએ સારંગ રાગમાં આ કીર્તન ગાયું. પદ :— 'દેખો દેખો હરિજીકો એક સ્વભાવ ' (ઉપર જુઓ) એ પદ સૂરદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીની આગળ ગાયું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે પોતાના શ્રીમુખથી કહે, કે આ પ્રકારે શ્રીઠાકુરજી પોતે પોતાના ભગવદીયોમાં દીનતાનું દાન કરે છે એને પૂરણ કૃપા જાણિએ. દૈન્યતારસના પાત્ર આ જ છે. તે સમયે બધા વૈષ્ણવો શ્રીગુસાંઇજીની પાસે ઉભા હતા. એમાંથી ચતુર્ભુજદાસે કહ્યું, કે સૂરદાસજી પરમ ભગવદીય છે. વળી સૂરદાસજીએ શ્રીઠાકુરજીનાં લક્ષાવધિ પદ કર્યાં છે. પરંતુ સૂરદાસજીએ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુનો યશ વર્ણન નથી કર્યો. એ સાંભળીને સૂરદાસજી કહે, કે મેં તો બધો યશ શ્રીઆચાર્યજીનો જ વર્ણન કર્યો છે. જો હું કંઇ અલગ જોતો તો અલગ કરતો. પરંતુ તેં મને પૂછ્યું છે તો હું તારી પાસે કહું છું. જે આ કીર્તનને અનુસાર બધાં કીર્તન જાણજે. પદ :—રાગ બિહાગરો— દૃઢ ઇન ચરનન કેરો ભરોસો (ઉપર જુઓ)

ભાવપ્રકાશ—આ કીર્તનમાં સૂરદાસજીએ પોતાના હૃદયનો ભાવ ખોલી દીધો.

खोल दियो। जो भरोसो, सो जीव कों विश्वास, दृढ़ चरण के सरन को। सो मोकों (सूरदासकों) दृढ़ता श्रीआचार्यजी के चरन की है। सो श्रीआचार्यजी के नख जो दसों चरणारविंद के अलौकिक मणिरूप नख को प्रकास, सो ता विना सगरे त्रिलोकीमे अंधारो दीखे है। सो तब भरोसो दृढ़ जानिये। सो या कलि में श्रीआचार्यजी के चरण के आश्रय विना और उपाय फल सिद्धि को नाहीं है। तासों में न्यारो कहा वर्णन करों ? जो श्रीगोवर्धनधर में और श्रीआचार्यजीके स्वरूप में भिन्न, जो द्विविध तामें तो मैं अंध हों। सो जैसे श्रीकृष्ण और स्वामिनीजी में न्यारो स्परूप जाने सो अज्ञानी। सो तैसें श्रीगोवर्द्धनधर और श्रीआचार्यजी हैं। सो तिनको मैं विना मोल को चेरो हों। सो विना मोल कहा? जो केवल भाव करि के। जैसें रासपंचाध्याई में व्रजभक्त गोपिकागीत में कहे हैं, जो-'अशुल्क दासिका' सो विना मोल की दासी, अलौकिक, जाको मोल नाहीं। सो काहे ते? जो भक्ति करिके प्रभुन सों (अर्थ) चाहै, सो सगरे, मोल के दास कहिये। उनकी भक्ति श्रेष्ठ नाहीं। तासों निष्काम भक्ति सर्वोपरि है। सो ताकों अमोलिक दास कहिये। ता भाव के प्रभु वस होय। सो जैसें पंचाध्याई में श्रीभगवान कहे हैं, जो-तिहारो भजन ऐसो है, जो मौसों पलटो दियो न जाय। जो मैं सदा तिहारो रिनियाँ रहूंगो। सो यह अमोलिक दासके लक्षन है। सो यह पद गायो। सो यह पद कैसो

જે ભરોસો તે જીવનો વિશ્વાસ દૃઢ ચરણની શરણનો. તેથી મને દૃઢતા શ્રીઆચાર્યજીના ચરણની છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીના નખ જે દશે, ચરણારવિંદના અલૌકિક મણિ રૂપ નખનો પ્રકાશ તે વિના બધી ત્રિલોકીમાં અંધારૂં દેખાય છે. (એમ દેખાય) ત્યારે ભરોસો દૃઢ જાણિયે. આ કલિમાં શ્રીઆચાર્યજીના ચરણના આશ્રય વિના ફલ સિદ્ધિનો બીજો ઉપાય નથી. તેથી હું અલગ વર્ણન શું કરૂં ? શ્રીગોવર્દ્ધનધરમાં અને શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપમાં ભિન્ન એટલે દ્વિવિધપણું (જોવામાં) તો હું આંધળો છું. જેમ શ્રીકૃષ્ણ અને શ્રીસ્વામિનીજીને ભિન્ન સ્વરૂપે જાણે તે અજ્ઞાની તેવી રીતે શ્રીગોવર્દ્ધનધર અને શ્રીઆચાર્યજી છે. તેમનો હું વિના મોલનો ચેરો છું. તે વિના મોલ શું ? કેવલ ભાવ કરીને. જેમ રાસ પંચાધ્યાઇમાં વ્રજભક્ત ગોપિકાગીતમાં કહે છે કે 'અશુલ્ક દાસિકા' એટલે વિના મૂલ્યની દાસી. અલૌકિક, જેનું મૂલ્ય નહીં. કેમકે જે ભક્તિ કરીને પ્રભુથી અર્થ ચાહે તે બધા મૂલ્યના દાસ કહેવાય. એમની ભક્તિ શ્રેષ્ઠ નહીં. તેથી નિષ્કામ ભક્તિ સર્વોપરી છે. તેને અમોલિક દાસ કહીએ. એ ભાવથી પ્રભુ વશ થાય. જેમ પંચાધ્યાઇમાં શ્રીભગવાન કહે છે કે 'તમારૂં ભજન એવું છે કે મારાથી બદલો ન આપી શકાય. હું સદા તમારો રૂણી રહીશ. આ અમોલિક દાસનાં લક્ષણ. એ ભાવે આ પદ ગાયું. આ

है? जो या कीर्तन के भावतें, (पाठतें) सवा लाख कीर्तन सूरदासजी ने किये हैं, सो सब को पाठ होय।

तब चतुर्भुजदास प्रसन्न भये। पाछें सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-सूरदास के हृदय को महा अलौकिक भाव है, तासों श्रीआचार्यजी आपु सूरदासजी कों 'सागर' कहते। जैसे समुद्र अगाध है, तैसे सूरदासजी को हृदय अगाध है। सो तब चतुर्भुजदास कहे, जो-सूरदासजी! तुम बिना अलौकिक भाव कौन दिखावे? जो अब थोरे में श्रीआचार्यजी को यह पुष्टिभक्तिमारग है, ताको स्वरूप सुनावो। सो कौन प्रकार सों पुष्टिमारग के रस को अनुभव करिये। तब वा समय सूरदासजीने यह पद गायो। सोपद-

राग सारंग—भजि सखी भाव-भाविक देव। कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न माने सेव ॥ १ ॥ धुम्रकेतु कुमार मांग्यो कौन मारग रीति। पुरुषतें त्रिय भाव उपन्यो सबै उलटी रीत ॥ २ ॥ बसन भूषन पलटि पहेरे भाव सों संजोई। उलट मुद्रा दई अंकन बरन सूधे होई ॥ ३ ॥ वेदविधिको नेम नहीं जहां प्रीतिकी पहचानि। ब्रजवधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥ ४ ॥

सो पद सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन कों सुनायो।

भावप्रकाश—सो या पद में यह जताये, जो-गोपीजन के भाव सों जो प्रभु कों भजे। सो तिनके भाविक जो-श्रीगोवर्द्धनधर, सो तिन कों गोपिन के भाव करि सखी भाव सों भजिये। कुंजलीला में सखीजन कों अधिकार है।

પદ કેવું છે? કે આ કીર્તનના ભાવથી (પાઠથી) સવા લાખ કીર્તન સૂરદાસજીએ કર્યાં છે તે બધાંનો પાઠ થાય.

ત્યારે ચતુર્ભુજદાસ પ્રસન્ન થયા. પછી બધા વૈષ્ણવો અને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કહ્યું, કે સૂરદાસજીના હૃદયનો મહા અલૌકિક ભાવ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી પોતે સૂરદાસજીને 'સાગર' કહેતા. જેમ સમુદ્ર અગાધ છે તેમ સૂરદાસજીનું હૃદય અગાધ છે. ત્યારે ચતુર્ભુજદાસ કહે, કે સૂરદાસજી! તમારા વિના અલૌકિક ભાવ કોણ દેખાડે? હવે થોડામાં શ્રીઆચાર્યજીનો આ પુષ્ટિભક્તિમાર્ગ છે તેનું સ્વરૂપ સંભળાવો. કયા પ્રકારે પુષ્ટિમાર્ગના રસનો અનુભવ કરીએ? ત્યારે તે સમયે સૂરદાસજીએ આ પદ ગાયું. તે પદ:—રાગ સારંગ—'ભજ સખી ભાવ ભાવિક દેવ' (ઉપર જુઓ) એ પદ સૂરદાસજીએ બધા વૈષ્ણવોને સંભળાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—એ, પદમાં એ જણાવ્યું છે કે શ્રીગોપીજનના ભાવથી પ્રભુને ભજે. તેમના ભાવિક જે શ્રીગોવર્દ્ધનધર તેમને ગોપીજનોના ભાવ કરી સખી ભાવથી ભજિયે. કુંજ લીલામાં સખીજનોનો અધિકાર છે. તેથી અહીં સખી કહ્યું. વળી કોટી

तासों (यहां) सखी कहे। और कोटि साधन वेद के करो, परंतु एक हू सेवा नाहीं मानत हैं। ताको दृष्टांत जो–सोलह हजार अग्निकुमारिका ऋचा हैं। 'धूम्र–केतु' ऐसी जो अग्नि ताके पुत्र जो सोलह हजार ऋषि, सो वे रामचंद्रजीके स्वरूप ऊपर मोहित होंई दंडकारण्य में कहे, जो–हमसों विहार करो। तब उनसों श्रीरामचंद्रजी यह आज्ञा किये, जो–व्रज में तुम स्त्री होइ प्रकटोगी तब तिहारो मनोरथ पूरन होयगो। तासों स्त्री कों वेद कर्म में अधिकार नाहीं है। और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम की लीला में मुख्य स्त्रीभाव को अधिकार है। यह भक्तिमारग की वेद सों उलटी रीत है। जैसें रास पंचाध्याई में व्रजभक्त उलटे आभूषण वस्त्र धारन करे, सो लोक में उनसों 'बावरो' कहें, सो स्नेह में सर्वोपरि कहिये। जैसे जा छाप में उलटे अक्षर होय सो सरीरमें सूधे आछे अक्षर होंय, तैसे या जगत में अज्ञानी (और) प्रभु की लीलामें चतुर होय सो प्रपंच भूले, सो ताकों प्रेम कहिये। मुख्य भक्तिरस में वेदविधि को नेम नाहीं है। तासों ऐसो जो प्रेम होय सो श्रीठाकुरजी कों वस करे, जैसे गोपीजन ने श्रीठाकुरजी वस किये। सो श्रीठाकुरजी कैसें हैं, जो सब ही कों मोहि डारें। और सूर है, सो काहूसों जीते जाय नाहीं। और वे ही चतुर सिरोमणि हैं, सो काहू के वस होय नाहीं तोऊ, प्रेम के वस हैं। सबकूं भूलि जाय। यह पुष्टिमारग की भक्ति और पुष्टिमारग को स्वरूप है। सो या भांति सों सूरदासजी कहे।

સાધન વેદનાં કરો પરંતુ એક પણ સેવા નથી માનતા. તેનું દૃષ્ટાંત–જે સોળ હજાર કુમારિકાઓ ઋચા છે. ધૂમ્ર–કેતુ એવો જે અગ્નિ તેના પુત્ર સોળ હજાર રૂષી, એમણે રામચંદ્રજીના સ્વરૂપ ઉપર મોહિત થઇ દંડકારણ્યમાં કહ્યું, કે અમારથી વિહાર કરો. ત્યારે એમને શ્રીરામચંદ્રજીએ એ આજ્ઞા કરી, કે વ્રજમાં તમે સ્ત્રી થઇ પ્રકટ થશો ત્યારે તમારો મનોરથ પૂર્ણ થશે. તેથી સ્ત્રીને વેદ કર્મમાં અધિકાર નથી. અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમની લીલામાં મુખ્ય સ્ત્રીભાવનો અધિકાર છે. આ ભક્તિમાર્ગની વેદથી ઉલટી રીતિ છે. જેમ રાસપંચાધ્યાઇમાં વ્રજભક્તોએ ઉલટાં આભૂષણ વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં. તે લોકમાં એને બાવરો કહે, સ્નેહમાં સર્વોપરિ કહીએ. જેમ, જે છાપમાં ઉલટા અક્ષર હોય તે શરીરમાં સીધા સારા અક્ષર થાય. તેમજ આ જગતમાં અજ્ઞાની (અને) પ્રભુની લીલામાં ચતુર હોય તે પ્રપંચ ભૂલે તેને પ્રેમ કહીએ. મુખ્ય ભક્તિરસમાં વેદ વિધિનો નિયમ નથી. તેથી એવો જે પ્રેમ હોય તે શ્રીઠાકુરજીને વશ કરે. જેમ ગોપીજનોએ શ્રીઠાકુરજીને વશ કર્યા. તે શ્રીઠાકુરજી કેવા છે? જે બધાનેય મોહી નાંખે. વળી શૂર છે તે કોઇથી જીત્યા ન જાય. તો પણ પ્રેમને વશ છે. બધાને ભૂલી જાય. આ પુષ્ટિમાર્ગની ભક્તિ અને પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ છે. એ પ્રકારે સૂરદાસજીએ કહ્યું.

है ? जो या कीर्तन के भावतें, (पाठतें) सवा लाख कीर्तन सूरदासजी ने किये हैं, सो सब को पाठ होय ।

तब चतुर्भुजदास प्रसन्न भये । पाछें सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–सूरदास के हृदय को महा अलौकिक भाव है, तासों श्रीआचार्यजी आपु सूरदासजी कों 'सागर' कहते । जैसे समुद्र अगाध है, तैसे सूरदासजी को हृदय अगाध है । सो तब चतुर्भुजदास कहे, जो–सूरदासजी ! तुम बिना अलौकिक भाव कौन दिखावे ? जो अब थोरे में श्रीआचार्यजी को यह पुष्टिभक्तिमारग है, ताको स्वरूप सुनावो । सो कौन प्रकार सों पुष्टिमारग के रस को अनुभव करिये । तब वा समय सूरदासजीने यह पद गायो । सोपद–

राग सारंग—भजि सखी भाव-भाविक देव । कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न माने सेव ॥ १ ॥ धुम्रकेतु कुमार मांग्यो कौन मारग रीति । पुरुषतें त्रिय भाव उपन्यो सबै उलटी रीत ॥ २ ॥ बसन भूषन पलटि पहेरे भाव सों संजोई । उलट मुद्रा दई अंकन बरन सूधे होई ॥ ३ ॥ वेदविधिको नेम नहीं जहां प्रीतिकी पहचानि । व्रजवधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥ ४ ॥

सो पद सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन कों सुनायो ।

भावप्रकाश—सो या पद में यह जताये, जो–गोपीजन के भाव सों जो प्रभु कों भजे । सो तिनके भाविक जो–श्रीगोवर्द्धनधर, सो तिन कों गोपिन के भाव करि सखी भाव सों भजिये । कुंजलीला में सखीजन कों अधिकार है ।

પદ કેવું છે ? કે આ કીર્તનના ભાવથી (પાઠથી) સવા લાખ કીર્તન સૂરદાસજીએ કર્યાં છે તે બધાંનો પાઠ થાય.

ત્યારે ચતુર્ભુજદાસ પ્રસન્ન થયા. પછી બધા વૈષ્ણવો અને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કહ્યું, કે સૂરદાસજીના હૃદયનો મહા અલૌકિક ભાવ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજી પોતે સૂરદાસજીને 'સાગર' કહેતા. જેમ સમુદ્ર અગાધ છે તેમ સૂરદાસજીનું હૃદય અગાધ છે. ત્યારે ચતુર્ભુજદાસ કહે, કે સૂરદાસજી ! તમારા વિના અલૌકિક ભાવ કોણ દેખાડે ? હવે થોડામાં શ્રીઆચાર્યજીનો આ પુષ્ટિભક્તિમાર્ગ છે તેનું સ્વરૂપ સંભળાવો. કયા પ્રકારે પુષ્ટિમાર્ગના રસનો અનુભવ કરીએ ? ત્યારે તે સમયે સૂરદાસજીએ આ પદ ગાયું. તે પદ :—રાગ સારંગ—'ભજ સખી ભાવ ભાવિક દેવ' (ઉપર જુઓ) એ પદ સૂરદાસજીએ બધા વૈષ્ણવોને સંભળાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—એ પદમાં એ જણાવ્યું છે કે શ્રીગોપીજનના ભાવથી પ્રભુને ભજે. તેમના ભાવિક જે શ્રીગોવર્દ્ધનધર, તેમને ગોપીજનોના ભાવ કરી સખી ભાવથી ભજિયે. કુંજ લીલામાં સખીજનોનો અધિકાર છે. તેથી અહી સખી કહ્યું. વળી કોટી

तासों (यहां) सखी कहे। और कोटि साधन वेद के करो, परंतु एक हू सेवा नाहीं मानत हैं। ताको दृष्टांत जो–सोलह हजार अग्निकुमारिका ऋचा हैं। 'धूम्र–केतु' ऐसी जो अग्नि ताके पुत्र जो सोलह हजार ऋषि, सो वे रामचंद्रजीके स्वरूप ऊपर मोहित होंई दंडकारण्य में कहे, जो–हमसों विहार करो। तब उनसों श्रीरामचंद्रजी यह आज्ञा किये, जो–व्रज में तुम स्त्री होइ प्रकटोगी तब तिहारो मनोरथ पूरन होयगो। तासों स्त्री कों वेद कर्म में अधिकार नाहीं है। और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम की लीला में मुख्य स्त्रीभाव को अधिकार है। यह भक्तिमारग की वेद सों उलटी रीत है। जैसें रास पंचाध्याई में व्रजभक्त उलटे आभूषण वस्त्र धारन करे, सो लोक में उनसों 'बावरो' कहें, सो स्नेह में सर्वोपरि कहिये। जैसे जा छाप में उलटे अक्षर होय सो सरीरमें सूधे आछे अक्षर होंय, तैसे या जगत में अज्ञानी (और) प्रभु की लीलामें चतुर होय सो प्रपंच भूले, सो ताकों प्रेम कहिये। मुख्य भक्तिरस में वेदविधि को नेम नाहीं है। तासों ऐसो जो प्रेम होय सो श्रीठाकुरजी कों वस करे, जैसे गोपीजन ने श्रीठाकुरजी वस किये। सो श्री-ठाकुरजी कैसें हैं, जो सब ही कों मोहि डारें। और सूर है, सो काहूसों जीते जाय नाहीं। और वे ही चतुर सिरोमणि हैं, सो काहू के वस होय नाहीं तोऊ, प्रेम के वस हैं। सबकूं भूलि जाय। यह पुष्टिमारग की भक्ति और पुष्टिमारग को स्वरूप है। सो या भांति सों सूरदासजी कहे।

સાધન વેદનાં કરે પરંતુ એક પણ સેવા નથી માનતા. તેનું દૃષ્ટાંત–જે સોળ હજાર કુમારિકાઓ ઋચા છે. ધૂમ્ર–કેતુ એવો જે અગ્નિ તેના પુત્ર સોળ હજાર રૂપી, એમણે રામચંદ્રજીના સ્વરૂપ ઉપર મોહિત થઇ દંડકારણ્યમાં કહ્યું, કે અમાર થી વિહાર કરો. ત્યારે એમને શ્રીરામચંદ્રજીએ એ આજ્ઞા કરી, કે વ્રજમાં તમે સ્ત્રી થઇ પ્રકટ થશો ત્યારે તમારો મનોરથ પૂર્ણ થશે. તેથી સ્ત્રીને વેદ કર્મમાં અધિકાર નથી. અને પૂર્ણ પુરુષોત્તમની લીલામાં મુખ્ય સ્ત્રીભાવનો અધિકાર છે. આ ભક્તિમાર્ગની વેદથી ઉલટી રીતિ છે. જેમ રાસપંચાધ્યાઇમાં વ્રજભક્તોએ ઉલટાં આભૂષણ વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં. તે લોકમાં એને બાવરો કહે, સ્નેહમાં સર્વોપરિ કહીએ. જેમ, જે છાપમાં ઉલટા અક્ષર હોય તે શરીરમાં સીધા સારા અક્ષર થાય. તેમજ આ જગતમાં અજ્ઞાની (અને) પ્રભુની લીલામાં ચતુર હોય તે પ્રપંચ ભૂલે તેને પ્રેમ કહીએ. મુખ્ય ભક્તિરસમાં વેદ વિધિનો નિયમ નથી. તેથી એવો જે પ્રેમ હોય તે શ્રીઠાકુરજીને વશ કરે. જેમ ગોપીજનોએ શ્રીઠાકુરજીને વશ કર્યા. તે શ્રીઠાકુરજી કેવા છે? જે બધાનેય મોહી નાંખે. વળી શૂર છે તે કોઇથી જીત્યા ન જાય. તો પણ પ્રેમને વશ છે. બધાને ભૂલી જાય. આ પુષ્ટિમાર્ગની ભક્તિ અને પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ છે. એ પ્રકારે સૂરદાસજીએ કહ્યું.

सो तब चतुर्भुजदास आदि सगरे वैष्णव सूरदासजीकों धन्य धन्य कहे, जो-इनके ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है, तब सूरदासजी चुप होय रहे। तब श्रीगुसांईजी आप सूरदासजीसों पूछ्यो, जो—सूरदासजी! अब या समय चित्त की वृत्ति कहां है? तब वाही समय सूरदासजी ने एक पद गायो सो पद—

राग सारंग—बलि बलि हौं कुंवरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी। वे अतिचतुर तुम चतुरसिरोमनी प्रीति करी कैसे रहे छानी॥ १॥ वे जो धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी। तें पुनि स्याम सहज यह सोभा अंबर मिस अपने उर आनी॥ २॥ पुलकित अंग अब ही व्है आयो निरखि सुभग निज देह सयानीं। 'सूर' सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकास भयो विहँसानी॥ ३॥

पाछें दूसरो यह पद गायो—

राग बिहागरो—खंजन नैन रूप रस माते। अतिसै चारू चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते। चलि-चलि जात निकट श्रवननके उलट फिरत तार्टक फंदाते। 'सूरदास' अंजन गुन अटके नाँतर अब उडि जाते॥

सो यह पद सूरदासजीने गायो। पाछें सूरदासजी जुगल स्वरूप को ध्यान करिके यह लौकिक सरीर छोड़ि लीला में जाय प्राप्त भये। ता पाछे श्री गुसांईजी आप तो गोपालपुर पधारे। तब सगरे वैष्णवन ने मिलिके सूरदासजीकी देहको अग्निसंस्कार कियो। ता पाछें सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास आये।

भावप्रकाश—सो इन सूरदासजी के चारि नाम हैं। श्रीआचार्यजी आप तो 'सूर' कहते। जैसे सूर होय सो रण में सों पाछो पांव नाहिं देय, जो-

---

ત્યારે ચતુર્ભુજદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોએ સૂરદાસજીને ધન્ય ધન્ય કહ્યા. કહ્યું, કે એમના ઉપર મહાન્ ભગવત્કૃપા છે. ત્યારે સૂરદાસજી ચૂપ થઇ રહ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે સૂરદાસજીને પુછ્યું, કે સૂરદાસજી! હવે આ સમય ચિત્તની વૃત્તિ ક્યાં છે? ત્યારે તે સમય સૂરદાસજીએ એક પદ ગાયું. તે પદ:—'બલિ બલિ હોં કુંવરિ રાધિકા' (ઉપર જુઓ). પછી બીજું આ પદ ગાયું. રાગ બિહાગરો:—'ખંજન નૈન રૂપરસ માતે' (ઉપર જુઓ). એ પદ સૂરદાસજીએ ગાયું. પછી સૂરદાસજી જુગલ સ્વરૂપનું ધ્યાન કરીને આ લૌકિક શરીર છોડી લીલામાં જઇ પ્રાપ્ત થયા. તે પછી શ્રીગુસાંઇજી આપ તો ગોપાલપુર પધાર્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ મળીને સૂરદાસજીના દેહનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો. તે પછી બધા વૈષ્ણવ શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—એ સૂરદાસજીનાં ચાર નામ છે. શ્રીઆચાર્યજી પોતે 'સૂર' કહેતા. જેમ શૂર થઇને રણમાંથી પાછો પગ ન દે. બધાની આગળ ચાલે તેજ પ્રકારે

सबसों आगे चले। तैसेई सूरदासजी की भक्ति दिन दिन चढ़ती दशा भई। तासों श्रीआचार्यजी आप 'सूर' कहते। और श्रीगुसांईजी आप 'सूरदास' कहते। सो दासभाव में कबहू घटे नाहीं। ज्यों ज्यों अनुभव अधिक भयो, त्यों त्यों सूरदासजी कों दीनता अधिक भई। सो सूरदासजी कों कबहूं अहंकार मद नाहीं भयो। सो 'सूरदासजी' इनको नाम कहे। और तीसरो, इनको नाम 'सूरजदास' है। जो श्रीस्वामिनीजी के ७ हजार पद सूरदासजी ने किये हैं, तामें अलौकिक भाव वर्णन किये हैं। तासों श्रीस्वामिनीजी कहते जो ये 'सूरज' हैं। जैसे सूरज सों जगत में प्रकास होय, सो या प्रकार स्वरूपको प्रकास कियो सो जब श्रीस्वामिनीजी ने 'सूरजदास' नाम धरयो, तब सूरदासजी ने बहोत कीर्तनन में 'सूरज' भोग धरे। और श्रीगोवर्द्धननाथजीने पचीस हजार कीर्तन आपु सूरदासजी कों करि दिये। तामें 'सूरश्याम' नाम धरे। सो या प्रकार सूरदासजी के चारि नाम प्रकट भये। सो सूरदासजी के कीर्तन में ये चारों 'भोग' कहे हैं।

या प्रकार सूरदासजी मानसी सेवा में सदा मगन रहते। तातें इनके माथे श्रीआचार्यजी ने भगवत् सेवा नाहीं पधराये। सो काहेतें ? जो सूरदासजी कों मानसी सेवा में फल रूप अनुभव है। सो ये सदा लीलारस में मगन रहत हैं। सो सूरदासजी की वार्ता में यह सर्वोपरि सिद्धांत है, जो–दैन्यता समान और पदारथ कोई नाहीं है,

---

સૂરદાસની ભક્તિની દિવસે દિવસે ચઢતી દશા થઇ તેથી શ્રીઆચાર્યજી આપ 'સૂર' કહેતા. વળી શ્રીગુસાંઇજી આપ 'સૂરદાસ' કહેતા. તે દાસ ભાવમાં કદીયે ઘટ્યા નહી. જેમ જેમ અનુભવ અધિક થયો તેમ તેમ સૂરદાસજીને દીનતા અધિક થઇ. સૂરદાસજીને કયારેય અહંકાર ન થયો. તેથી સૂરદાસજી એમનું નામ કહ્યું. વળી ત્રીજું એમનું નામ 'સૂરજદાસ' છે. શ્રીસ્વામિનીજીનાં સાતહજાર પદ સૂરદાસજીએ કર્યાં છે. તેમાં અલૌકિક ભાવ વર્ણન કર્યો છે. તેથી શ્રીસ્વામિનીજી કહેતાં કે એ 'સૂરજ' છે. જેમ સૂરજથી જગતમાં પ્રકાશ થાય. એ પ્રકારે સ્વરૂપનો પ્રકાશ કર્યો. ત્યારે સૂરદાસજીએ ઘણાં કીર્તનોમાં 'સૂરજ' છાપ ધરી. વળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પચીસહજાર કીર્તન પોતે સૂરદાસજીને કરી દીધાં. તેમાં 'સૂરશ્યામ' નામ ધર્યું. એ પ્રકારે સૂરદાસજીનાં ચાર નામ પ્રકટ થયાં. તેથી સૂરદાસજીનાં કીર્તનોમાં એ ચારે છાપ કહી છે.

એ પ્રકારે સૂરદાસજી માનસી સેવામાં સદા મગ્ન રહેતા. તેથી એમના માથે શ્રીઆચાર્યજીએ ભગવત્સેવા નહીં પધરાવી. કેમકે સૂરદાસજીને માનસી સેવામાં ફલરૂપ અનુભવ છે. તે સદા લીલારસમાં મગન રહેતા. સૂરદાસજીની વાર્તામાં આ સર્વોપરી

और परोपकार समान दूसरो धर्म नाहीं है। जो वा बनियाके लिये सूरदासजी ने इतनो श्रम कियो। परि वाकों अंगीकार करवाय वाको उद्धार करि दियो। तासों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी आपु और सगरे वैष्णव जीव-मात्र सूरदासजी के ऊपर बहोत प्रसन्न रहते। सो जो कोऊ सूरदासजी सों आयके पूछतो, तिनकों प्रीति सों मारग को सिद्धांत बतावते, और उनको मन प्रभुन में लगाय देते। तासों सूरदासजी सरीखे भगवदीय कोटिन में दुर्लभ हैं। सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र हते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥ ८१ ॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक परमानंदस्वामी, कनौजिया ब्राह्मण कनौज में रहते, जिनके पद गाइयत हैं अष्टछाप में, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये परमानंददासजी लीला में अष्टसखान में 'तोक' सखा को प्राकट्य हैं। सो तोक सखा को दूसरो स्वरूप निकुंज में सखीरूप है। ता स्वरूपको नाम 'चंद्रभागा' है। सो सुरभीकुंड के पास श्रीगिरिराज के एक द्वार है ताके मुखिया हैं। सो ये कनौज में कनौजिया ब्राह्मण के यहां जन्मे। जा दिन

સિદ્ધાંત છે કે દૈન્યતા સમાન બીજો પદાર્થ કોઇ નથી અને પરોપકાર સમાન બીજો ધર્મ નથી. તે વાણિયાને માટે સૂરદાસજીએ એટલો શ્રમ કર્યો, પરંતુ તેનો અંગીકાર કરાવી તેનો ઉદ્ધાર કરી દીધો શ્રીઆચાર્યજી, શ્રીગુસાંઇજી પોતે અને બધા વૈષ્ણવો જીવ-માત્ર સૂરદાસજી ઉપર બહુ પ્રસન્ન રહેતા. જે કોઇ સૂરદાસજીને આવીને પૂછતો તેમને પ્રીતિથી માર્ગનો સિદ્ધાંત બતાવતા અને એમનું મન પ્રભુમાં લગાડી દેતા. તેથી સૂરદાસજી સરખા ભગવદીય કોટીમાં દુર્લભ છે. એ સૂરદાસજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમની વાર્તાનો પાર નહીં. તે ક્યાં સુધી કહીએ?

* * * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પરમાનંદ સ્વામી, કનોજીઆ બ્રાહ્મણ કનોજમાં રહેતા, જેમનાં પદ અષ્ટછાપમાં ગાઇએ છીએ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ.

ભાવપ્રકાશ—એ પરમાનંદદાસ લીલામાં અષ્ટસખાઓમાં 'તોક' સખાનું પ્રાકટ્ય છે. તોક સખાનું બીજું સ્વરૂપ નિકુંજમાં સખી રૂપ છે. તે સ્વરૂપનું નામ 'ચંદ્રભાગા' છે. સુરભી કુંડની પાસે શ્રીગિરિરાજજીનું એક દ્વાર છે તેના મુખિયા છે. એ કનોજમાં કનોજિયા બ્રાહ્મણને ત્યાં જન્મ્યા. જે દિવસે પરમાનન્દદાસજી જન્મ્યા તે

परमानंददासजी जन्मे, वा दिन उनके पिता कों एक सेठ ने वहोत द्रव्य दान दियो। तब या ब्राह्मण ने वहोत प्रसन्न होय के कह्यो, जो–श्रीठाकुरजी ने मोकों पुत्र दियो और धन हू वहोत दियो। तासों यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जाके जनमत ही मोकों परम आनंद भयो है। सो मैं या पुत्र को नाम 'परमानंददास' ही धरूंगो। पाछे जब नाम करन लागे तब वा ब्राह्मण ने कही, जो–नाम तो मैं पहले ही पुत्र को 'परमानंद' विचारि चुक्यो हों। तब सब ब्राह्मण बोले, जो–तुमने विचार्यो है सोइ नाम जन्मपत्रिका में आयो है। तब तो वह ब्राह्मण वहोत ही प्रसन्न भयो। पाछे वा ब्राह्मण ने जातकर्म करि दान बहुत कियो। ऐसे करत परमानंददास बडे भये। तब पितानें बडो उत्सव कियो। और इनको यज्ञोपवीत कियो। सो ये परमानंददास बडे कृपापात्र भगवदीय हैं, लीलामध्यपाती श्रीठाकुरजी के अत्यंत (अतरंग) सखा हैं। सो जब श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा तें दैवी जीवन के उद्धारार्थ भूतल पर प्रकट भये, तेसेही श्रीठाकुरजी सहित सगरो परिकर प्रकट भयो। सो दैवी जीव अनेक देशांतर में प्रकट भये। सो गोपालदासजी वल्लभाख्यान में गाये हैं, जो–'अनेक जीवने कृपा करवा देशांतर प्रवेश'०। सो कनौज में परमानंददासजी वहोत ही प्रसन्न वालपने तें रहते। पाछें ये वडे योग्य भये, और कवीश्वर हू भये। वे अनेक पद वनाय के गावते।

દિવસે એમના પિતાને એક શેઠે ઘણું દ્રવ્ય દાન કર્યું. ત્યારે એ બ્રાહ્મણે બહુ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું કે શ્રીઠાકુરજીએ મને પુત્ર આપ્યો અને ધન પણ ઘણું આપ્યું. તેથી આ પુત્ર મોટો ભાગ્યશાળી છે એના જન્મતાંજ મને પરમઆનંદ થયો છે. તેથી હું આ પુત્રનું નામ પરમાનંદદાસજ ધરીશ પછી જ્યારે નામ કરવા લાગ્યા ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે પુત્રનું નાંમ તો હું પહેલાંજ 'પરમાનંદ' વિચારી ચૂકયો છું. ત્યારે બધા બ્રાહ્મણ બોલ્યા, કે તમે વિચાર્યું છે તેજ નામ જન્મપત્રિકામાં આવ્યુ છે ત્યારે તે બ્રાહ્મણ ઘણોજ પ્રસન્ન થયો. પછી એ બ્રાહ્મણે જાત કર્મ કરી બહુ દાન કર્યું. એમ કરતાં પરમાનંદદાસ મોટા થયા. ત્યારે પિતાએ મોટો ઉત્સવ કર્યો અને એમનું યજ્ઞોપવિત કર્યું. એ પરમાનંદદાસ મોટા કૃપાપાત્ર ભગવદીય છે. લીલા મધ્યપાતી શ્રીઠાકુરજીના અત્યંત (અંતરંગ) સખા છે. જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની આજ્ઞાથી દૈવીજીવોના ઉદ્ધારાર્થ ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા ત્યારે તેજ રીતે શ્રીઠાકુરજી સહિત બધો પરિકર પ્રકટ થયો. તેથી દૈવીજીવ અનેક દેશાંતરમાં પ્રકટ થયા. ગોપાલદાસજીએ વલ્લભાખ્યાનમાં ગાયું છે કે 'અનેક જીવને કૃપા કરવા દેશાંતર પરવેશ' કનોજમાં પરમાનંદદાસજી બાલપણમાં બહુજ પ્રસન્ન રહેતા. પછી એ મોટા યોગ્ય થયા અને કવીશ્વર

सो 'स्वामी' कहावते और सेवक हू करते। सो परमानंददास के साथ समाज बहोत, अनेक गुनीजन संग रहते। एक समय कनौज में अकाल पर्यो सो हाकिम की बुद्धि बिगरी। सो गाम में सों दंड लियो। और परमानंददास के पिता को सब द्रव्य लूटि लियो। तब मातापिता बहोत दुःख पाय के परमानंददास सों कहे, जो– हम तेरो ब्याह हू न करन पाये, और सब द्रव्य योंही गयो, तासों अब तू कमायवे को उपाय करि। सो काहेतें? जो–तू गुनी है और तेरे द्रव्य बहोत आवत है सो तू वा द्रव्य कों इकठोरे करे तो हम तेरो ब्याह करें। तब परमानंददासने मातापिता सों कह्यो, जो–मेरे तो ब्याह करनो नाहीं है, और तुमने इतनो द्रव्य भेलो करिके कहा पुरुषार्थ कियो? सगरो द्रव्य योंही गयो। तासों द्रव्य आये को फल यही है, जो-वैष्णव ब्राह्मण कों खवावनों। तासों मैं तो द्रव्य को संग्रह कबहू नाहीं करूंगो और तुम खायवे लायक मोसों नित्य अन्न लेहू, और बैठे २ श्रीठाकुरजी को नाम लियो करो। जो–अब निर्धन भये हो तासों अब तो धनको मोह छोडो। तब पिताने परमानंददास सों कह्यो, जो–तू तो वेरागी भयो। तेरी संगति वेरागीन की है, तासों तेरी ऐसी बुद्धि भई। और हम तो गृहस्थी हैं। तासों हमारे धन जोरे विना कैसे चले? जो–कुटुंब में ज्ञाति में खरचें तब हमारी बड़ाई होय। पाछे पिता धन के लिये पूरब कों गयो। तहां जीविका न मिली तब दक्षिन कों गयो

પણ થયા. એ અનેક પદ બનાવીને ગાતા. સ્વામી કહેવાતા અને સેવક પણ કરતા પરમાનંદદાસની સાથે સમાજ ઘણો, અનેક ગુણીજન સંગે રહેતા. એક સમય કનોજમાં દુષ્કાલ પડયો. તેથી હાકેમની બુદ્ધિ બગડી. તેણે ગામમાંથી દંડ લીધો. અને પરમાનંદદાસના પિતાનું બધું દ્રવ્ય લૂંટી લીધું. ત્યારે માતાપિતા બહુ દુઃખ પામીને પરમાનંદદાસને કહે કે અમે તારું લગ્ન પણ ન કરવા પામ્યાં, બધું દ્રવ્ય એમજ ગયું. તેથી હવે તું કમાવવાનો ઉપાય કર. કેમકે ? તું ગુણી છે અને તારે દ્રવ્ય બહુ આવે છે. તું એ દ્રવ્યને ભેગું કરે તો અમે તારું લગ્ન કરીએ. ત્યારે પરમાનંદદાસે પોતાનાં માતાપિતાને કહ્યું, કે મારે લગ્ન કરવું નથી. અને તમે આટલું દ્રવ્ય ભેગું કરીને શો પુરુષાર્થ કર્યો ? બધું દ્રવ્ય એમજ ગયું. તેથી દ્રવ્ય આવવાનું ફલ એજ છે કે વૈષ્ણવ–બ્રાહ્મણને ખવડાવવું. તેથી હું દ્રવ્યનો સંગ્રહ કદીય ન કરૂં અને તમે ખાવા લાયક મારાથી નિત્ય અન્ન લો. અને બેઠાં બેઠાં શ્રીઠાકુરજીનું નામ લીધા કરો. કેમકે હવે નિર્ધન થયાં છો તેથી હવે તો ધનનો મોહ છોડો. ત્યારે પિતાએ પરમાનંદદાસને કહ્યું કે તું તો વૈરાગી થયો. તને સંગત વૈરાગીની છે. તેથી તારી એવી બુદ્ધિ થઇ. અને અમે તો ગૃહસ્થી છીએ. તેથી અમારે ધન જોડયા વિના કેમ ચાલે ? કુટુંબમાં જ્ઞાતિમાં ખર્ચે ત્યારે અમારી વડાઇ થાય. પછી

और तहां द्रव्य मिल्यो सो तहां रह्यो । और परमानंददासने अपने घर कीर्तन को समाज कियो । सो गाम गाम में प्रसिद्ध भये। और परमानंददास गान-विद्या में परम चतुर हते ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय परमानंददास कनौज तें मकर-स्नान कों प्रयाग में आये, सो तहां रहे। और कीर्तन को समाज नित्य करैं, सो बहोत लोग इनके कीर्तन सुनिवे कों आवते। सो पार अडेल में श्रीआचार्यजी विराजत हते। अडेल तें लोग कछू कार्यार्थ गाम में आवते। सो परमानंददास के कीर्तन सुनिके अडेल में जायके श्रीआचार्यजी सों कहते, जो-एक परमानंददास कनौज तें आयो है, सो कीर्तन बहोत आछो गावत है। तब श्रीआचार्यजी कहे, जो-परमानंददास दैवी जीव है, जो-इनको गुन होय सो उचित ही है। सो श्रीआचार्यजी को सेवक एक 'कपूर क्षत्री' जलघरिया हतो, वाकी राग ऊपर बहोत आसक्ति हती। सो यह बात सुनि के वाके मन में आई, जो-मैं श्रीआचार्यजी न जानें ऐसे परमानंदस्वामी को गान सुनूं। काहेतें जो-श्रीआचार्यजी आपु सुनेंगे तो खीजेंगे, जो-तू सेवा छोड़िके क्यों गयो? तासों प्रयाग न जाय सके। परंतु वा जलघरिया 'क्षत्री कपूर' को मन परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिवे कों बहोत हतो।

પિતા ધનને માટે પૂરવમાં ગયો, ત્યાં જીવિકા ન મળી ત્યારે દક્ષિણ ગયો ત્યાં દ્રવ્ય મળ્યું. એટલે ત્યાં રહ્યો. અને પરમાનંદદાસે પોતાના ઘરે કીર્તનનો સમાજ કર્યો ગામ-ગામમાં પ્રસિદ્ધ થયા. વળી પરમાનંદદાસ ગાન-વિદ્યામાં પરમ ચતુર હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-એક સમય પરમાનંદદાસ કન્નોજથી મકર સ્નાન અર્થે પ્રયાગમાં આવ્યા. ત્યાં રહ્યા અને કીર્તનનો સમાજ નિત્ય કરે. તે ઘણા લોકો એમનાં કીર્તન સાંભળવાને આવતા. ત્યારે પાર અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજતા હતા. અડેલથી લોકો કંઇ કામ માટે ગામમાં આવતા. તે પરમાનંદદાસનાં કીર્તન સાંભળીને અડેલમાં જઇને શ્રીઆચાર્યજીને કહેતા, કે એક પરમાનંદદાસ કન્નોજથી આવ્યો છે તે કીર્તન બહુ સારાં ગાય છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે પરમાનંદદાસ દૈવી જીવ છે એમનો ગુણ-(પ્રસિદ્ધ) હોય તે ઉચિત જ છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક એક 'કપૂર' ક્ષત્રી જલઘરીયા હતો. એની રાગ ઉપર બહુ આસક્તિ હતી. તે વાત સાંભળીને એના મનમાં આવ્યું કે હું શ્રીઆચાર્યજી ન જાણે એમ પરમાનંદ સ્વામીનું ગાન સાંભળું. કેમકે શ્રીઆચાર્યજી પોતે સાંભળશે તો ખીજશે, કે તૂ સેવા છોડીને

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-इनको पूर्व को संबंध है । जो-लीला में यह क्षत्री परमानंददासकी सखी है, सो ये चंद्रभागा की सखी 'सोनजुही' याको नाम है । सो यह क्षत्री सुदामापुरी में एक क्षत्री के घर प्रकटे, इनको पिता महा-विषयी हतो । सो जहां तहां परस्त्री को संग करतो । और द्रव्य बहोत हतो, सो सब विषय में खोयो । ता पाछें गाम के राजाने सगरो घर लूटि लियो । सो या क्षत्री के मातापिता पुत्र सहित बंदीखाने में दिये । तब याको पिता एक सिपाही कों कछु देकें रात्रि कों स्त्रीपुरुष और या पुत्र कों ले भाग्यो । सो ये दिन दोय तीन तांई भाजे, सो तहां एक वन में जाय निकसे । तहां नाहरने याके मातापिताकों मार्‍यो, और यह पुत्र बरस चौदह को बच्यो । सो वन में बेठ्यो रुदन करे, सो भूख्यो प्यासो चल्यो न जाय । सो भागिजोग तें पृथ्वीपरिक्रमा करत श्रीआचार्यजी गह-वरवन (सघन वन) में आये । तब या क्षत्री सों पूछी, जो-तू कौन है ? जो अकेलो वन में रुदन करत है । तब इनने दंडवत् करिके अपनो सब वृत्तांत कह्यो । तब श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास मेघन सों कहे, जो-कछू महाप्रसाद होय तो याकों खवायके बेगि जलपान करावो, जो-याके प्राण बचें । तब कृष्णदास मेघन के पास प्रसाद हतो, सो या क्षत्री कों न्हवाय के खवायके जल पिवायो । तब या क्षत्री

કેમ ગયો ? તેથી પ્રયાગ જઇ શકે નહીં. પરંતુ એ જલઘરીયા કપૂરનું મન પરમાનંદ-દાસજીના કીર્તન સાંભળવાનું હતું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે એને પૂર્વનો સંબંધ છે. લીલામાં એ ક્ષત્રી પરમાનંદ-દાસની સખી છે. એ ' ચંદ્રભાગા ' ની સખી ' સોનજુહી ' એનું નામ છે. એ ક્ષત્રી સુદામાપુરીમાં એક ક્ષત્રીને ઘરે પ્રકટ્યો. એનો પિતા મહા વિષયી હતો. જ્યાં ત્યાં પર-સ્ત્રીનો સંગ કરતો. દ્રવ્ય ઘણું હતું બધું વિષયમાં ખોયું. પછી ગામના રાજાએ બધું ઘર લૂંટી લીધું. એ ક્ષત્રીના માતાપિતા પુત્ર સહિત બધાને કેદમાં રાખ્યાં. પછી એનો પિતા એક સિપાઇને કંઇ આપીને રાત્રિએ સ્ત્રી-પુરૂષ અને આ પુત્રને લઇ કેદમાંથી ભાગ્યો. એ દિવસ બે ત્રણ ભાગ્યાં ત્યારે એક વનમાં જઇ નિકળ્યાં. ત્યાં વાઘે એના માતા-પિતાને માર્યા અને આ પુત્ર વરસ ચૌદનો બચ્યો. તે વનમાં બેઠયો રૂદન કરે. તે ભૂખ્યો તરસ્યો (તેથી) ચલાય નહીં. પછી ભાગજોગથી પૃથ્વી પરિક્રમા કરતાં શ્રીઆચાર્યજી ત્યાં સઘન વનમાં આવ્યા. ત્યારે આ ક્ષત્રીને પુછ્યું, કે તૂ કોણ છે ? જે એકલો વનમાં રૂદન કરે છે ? ત્યારે એણે દંડવત્ કરીને પોતાનું બધું વૃત્તાંત કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કૃષ્ણદાસ મેઘનને કહે, કે કંઇ મહાપ્રસાદ હોય તો એને ખવડાવીને જલ્દી જલપાન કરાવો. જે એના પ્રાણ બચે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેઘનની પાસે પ્રસાદ હતો તે એ ક્ષત્રીને

को मन ठिकाने आयो। तब या क्षत्रीनें श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी जो–महाराज! मोकों आप पास राखो। जो मैं जनम भरि आप को गुलाम रहूंगो। अब मेरे मातपिता भगवान आपु हो। तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख सों कहे, जो–तू चिंता मति करे, और तू हमारे संग ही रहियो। तब यह क्षत्री श्रीआचार्यजी के संग ही रह्यो। ता पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी आपु वा क्षत्री कों नाम, ब्रह्मसंबंध करवायो, और जल लायवे की सेवा याकों दिये। पाछे कछुक दिन में श्रीआचार्यजी आपु अड़ेल पधारे तब, वह क्षत्री श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करिके अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो। और कह्यो, जो–मैं अनाथ हतो, सो श्रीआचार्यजी आपु मोकों कृपा करिके सरन लेके संग लाये, सो मोकों साक्षात् श्रीयशोदोत्संगलालित श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन भये। तब वा क्षत्री कपूर जलघरिया को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप में लगि गयो। सो तब या क्षत्रीने अपने मन में विचारी, जो–अब मोकों श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा कछू मिले, तब मैं सदा सेवा करूं और दरसन करूं। सो श्रीआचार्यजी आप साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, सो या क्षत्री के मन की जानि याकों पास बुलाय के कह्यो, जो–तेरे मन में सेवा की आई, सो तेरे बड़े भाग्य हैं। तासों अब तू श्रीनवनीतप्रियजी के जलघरा की सेवा कियो करि। तब वा क्षत्रीने प्रसन्न होयकें

न्हुवडावीने खवडावीने जल पीवडाव्युं. त्यारे એ क्षत्रीनुं मन ठेकाणे आव्युं. त्यारे आ क्षत्रीએ श्रीआचार्यજીने विनंति करी, के महाराज! मने आपनी पासे राखो. हुं जनम भर आपनो गुलाम रहीश. हवे मारा मातापिता भगवान आप छो. त्यारे श्रीआचार्यજી पोते श्रीमुखथी कहे, के तू चिंता न कर अने तू अमारी साथेज रहेजे. त्यारे એ क्षत्री श्रीआचार्यજીनी साथेज रह्यो. ते पछी श्रीआचार्यજીએ पोते ते क्षत्रीने नाम–ब्रह्मसंबंध कराव्युं अने जल लाववानी सेवा એने आपी. पछी केटलाक दिवसमां श्रीआचार्यજી पोते अडेल पधार्या. त्यारे ते क्षत्री श्रीनवनीतप्रियજીनां दर्शन करीने पोताना मनमां बहु प्रसन्न थयो अने कह्युं, के हुं अनाथ हतो ते श्रीआचार्यજી पोते मने कृपा करीने शरण लईने संग लाव्या. मने साक्षात् श्रीयशोदोत्संगलालित श्रीनवनीतप्रियજીनां दर्शन थयां. त्यारे आ क्षत्री कपूर जलघरीयानुं मन श्रीनवनीतप्रियજીना स्वरूपमां लागी गयुं. त्यारे आ क्षत्रीએ पोताना मनमां विचार्युं, के हवे मने श्रीनवनीतप्रियજીनी सेवा कंई मळे तो हुं सदा सेवा करुं अने दर्शन करुं. श्रीआचार्यજી आप तो साक्षात् पुरुषोत्तम छे એटले आ क्षत्रीना मननी जाणी એने पासे बोलावीने कह्युं; के तारा मनमां सेवानी आवी એ तारां मोटां भाग्य छे. तेथी हवे

श्रीआचार्यजी कों दंडवत करिकें विनती कीनी, जो–महाराज! मेरे हू मन में ऐसें हती, सो आपु तो परम कृपालु हो, तासों मेरो सर्व मनोरथ पूरन कियो। ता पाछें अति प्रीति सों वह क्षत्री वैष्णव प्रसन्न होयके खारो तथा मीठो जल भरन लाग्यो। सो कछुक दिन में श्रीनवनीतप्रियजी आपु सानुभावता जतावन लागे। परंतु सेवा में अवकास नाहीं, जो–ये परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिवे कों जाय।

सो एक दिन एकादशी को दिन हतो। ता दिन प्रयाग सों एक वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल में आयो। तब वा क्षत्री जलघरियाने वा वैष्णव सों परमानंदस्वामी के समाचार पूछे। तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो–नित्य तो चारि घडी तथा पहर को समाज होत है रात्रि के समे, और आज तो एकादशी है, जो–सगरी रात्रि परमानंदस्वामी के यहां जागरन होयगो। सो ये बचन सुनिके वह क्षत्री वैष्णव अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो, और विचार कियो, जो–आजु परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिवे को दाव लग्यो है। तासों जब श्रीआचार्यजी आपु रात्रि कों पोढ़ेंगे तब मैं रात्रि कों प्रयाग में जायके परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनूंगो। ता पाछें रात्रि भई। तब

તૂ શ્રીનવનીતપ્રિયજીના જલઘરાની સેવા કર્યા કર. ત્યારે એ ક્ષત્રીએ પ્રસન્ન થઇને શ્રી-આચાર્યજીને દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મારા પણ મનમાં એવું હતું. તે આપ તો પરમ કૃપાળુ છો તેથી મારો સર્વ મનોરથ પૂરણ કર્યો. તે પછી અતિ પ્રીતિથી તે ક્ષત્રી વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થઇને ખારૂં તથા મીઠું જલ ભરવા લાગ્યો. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજી પોતે સાનુભાવતા જણાવવા લાગ્યા પરંતુ સેવામાં અવકાશ નહીં કે એ પરમાનંદદાસજીનાં કીર્તન સાંભળવાને જાય.

પછી એક દિવસ એકાદશીનો દિવસ હતો. તે દિવસે પ્રયાગથી એક વૈષ્ણવ શ્રી-આચાર્યજીના દર્શને અડેલમાં આવ્યો. ત્યારે એ ક્ષત્રી જલઘરીયાએ એ વૈષ્ણવને પરમાનંદ સ્વામીના સમાચાર પૂછ્યા. ત્યારે એ વૈષ્ણવે કહ્યું, કે નિત્ય તો ચાર ઘડી તથા પ્રહરનો સમાજ થાય છે રાત્રિના સમયે, અને આજ તો એકાદશી છે. એટલે આખી રાત પરમાનંદ સ્વામીને ત્યાં જાગરણ થશે. એ વચન સાંભળીને એ ક્ષત્રી વૈષ્ણવ પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થયો અને વિચાર કર્યો કે આજ પરમાનન્દ સ્વા-મીનાં કીર્તન સાંભળવાનો દાવ લાગ્યો છે. તેથી જ્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ રાત્રીએ પોઢશે ત્યારે હું રાત્રીએ પ્રયાગમાં જઇને પરમાનંદ સ્વામીનાં કીર્તન સાંભળીશ. તે પછી રાત્રી થઇ. ત્યારે એ ક્ષત્રી કપૂર જલઘરિયા પોતાની સેવાથી પહોંચીને શ્રીઆચા-

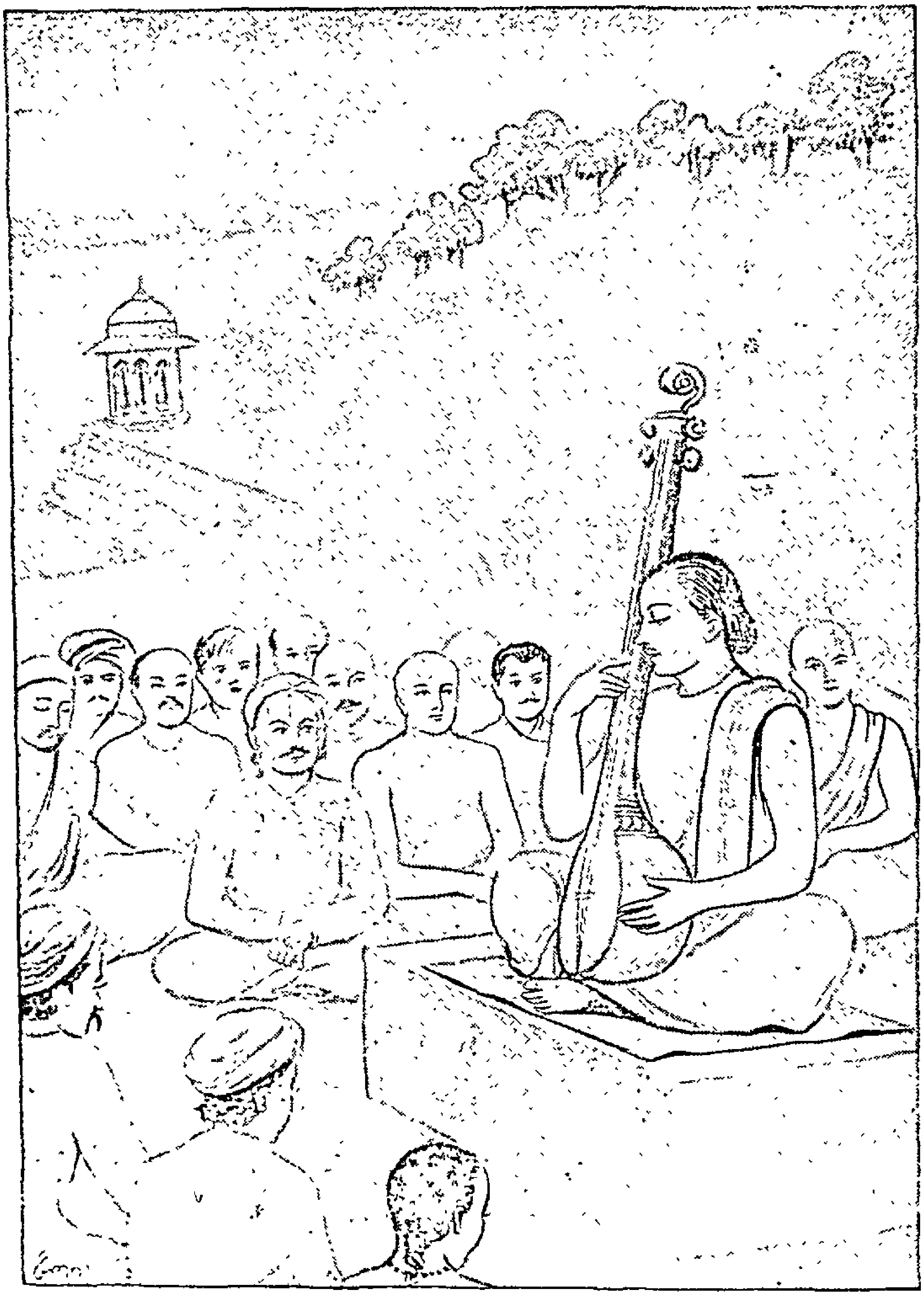

मकर संक्रांति पर प्रयाग में भजन-कीर्तन करते हुए—

परमानंददास

जन्म सं० १५५०] [देहावसान सं० १६४१

वह क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहोंचिके श्रीआचार्यजी के श्रीमुख तें कथा सुनिके रात्रि प्रहर डेढ़ गई, ताही समय अड़ेल सों प्रयाग कों चल्यो। तब अपने मन में बिचार्यो, जो-या समय घाट ऊपर तो नाव मिलनी नाहीं है, तासों पैरिके जाऊं। सो वे पेरिवे में बड़े निपुन हते। पाछे घाट ऊपर आय परदनी एक छोटीसी पहरिके, धोती उपरना माथे सों बांधे। सो उष्णकाल गरमी के दिन हते सो पैरिके परमानंदस्वामी कीर्तन करत हते तहां आये। सो इनको पहलें परमानंदस्वामी सों मिलाप तो कबहू भयो न हतो, तासों दूरि बैठि गये। उहां श्रीआचार्यजी के सेवक प्रयाग के वैष्णव बैठे हते सो इनकों जानत हते। सो तहां अपने पास ही इन क्षत्री कपूर कों बैठारि लिये। सो वे जहां परमानंदस्वामी बैठे हते तिनके पास जाय बैठे। तब और और गुनीन के पद गाये पाछें परमानंदस्वामी ने गाइवै को आरंभ कियो। सो परमानंदस्वामी विरह के पद गावते।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो-ऊपर इनको स्वरूप कहि आये हैं, जो-ये परमानंददास लीला में सों बिछुरे हैं, सो अब ही श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भये नाहीं हैं। सो जब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी को दरसन करावेंगे तब परमानंददास कों लीला को ज्ञान होयगो। श्रीआचार्यजी के मारग

र्यजीना श्रीमुखथी कथा सांभळीने रात्रि दोढ प्रहर गइ तेज समये अडेलथी प्रयाग चाल्या. त्यारे पोताना मनमां विचार्युं के आ समय घाट उपर तो नाव मळशे नहीं तेथी तरीने जाउं. ए तरवामां बहु प्रवीण हता. पछी घाट उपर आवी एक नानुं पोतियुं पहेरीने धोती उपरणा माथेथी बांध्या. उष्णकाल गरमीना दिवस हता. तेथी तरीने ज्यां परमानंद स्वामी कीर्तन करता हता त्यां आव्या. एमनो परमानंद स्वामीथी पहेलां क्यारेय मिलाप थयो न हतो तेथी दुर बेसी गया. त्यां आचार्यजीना सेवक प्रयागना वैष्णव बेठा हता. ए आमने जाणता हता. एमणे त्यां पोतानी पासेज आ क्षत्री कपूरने बेसाडी लीधा. ते ज्यां परमानंद स्वामी बेठा हता तेमनी पासे जइ बेठा. त्यारे बीजा गुणीओए पद गायां पछी परमानंद स्वामीए गावानो आरंभ कर्यो. ते परमानंद स्वामी विरहनां पद गाता.

भावप्रकाश—केमके ? एमनुं स्वरूप उपर कही आव्या छीए के ए परमानंददास लीलामांथी विछर्या छे. हजु श्रीआचार्यजी अने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन थयां नथी. ज्यारे श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीनां दर्शन करावशे त्यारे परमानंददासने

चौरासी वैष्णवन की वार्ता

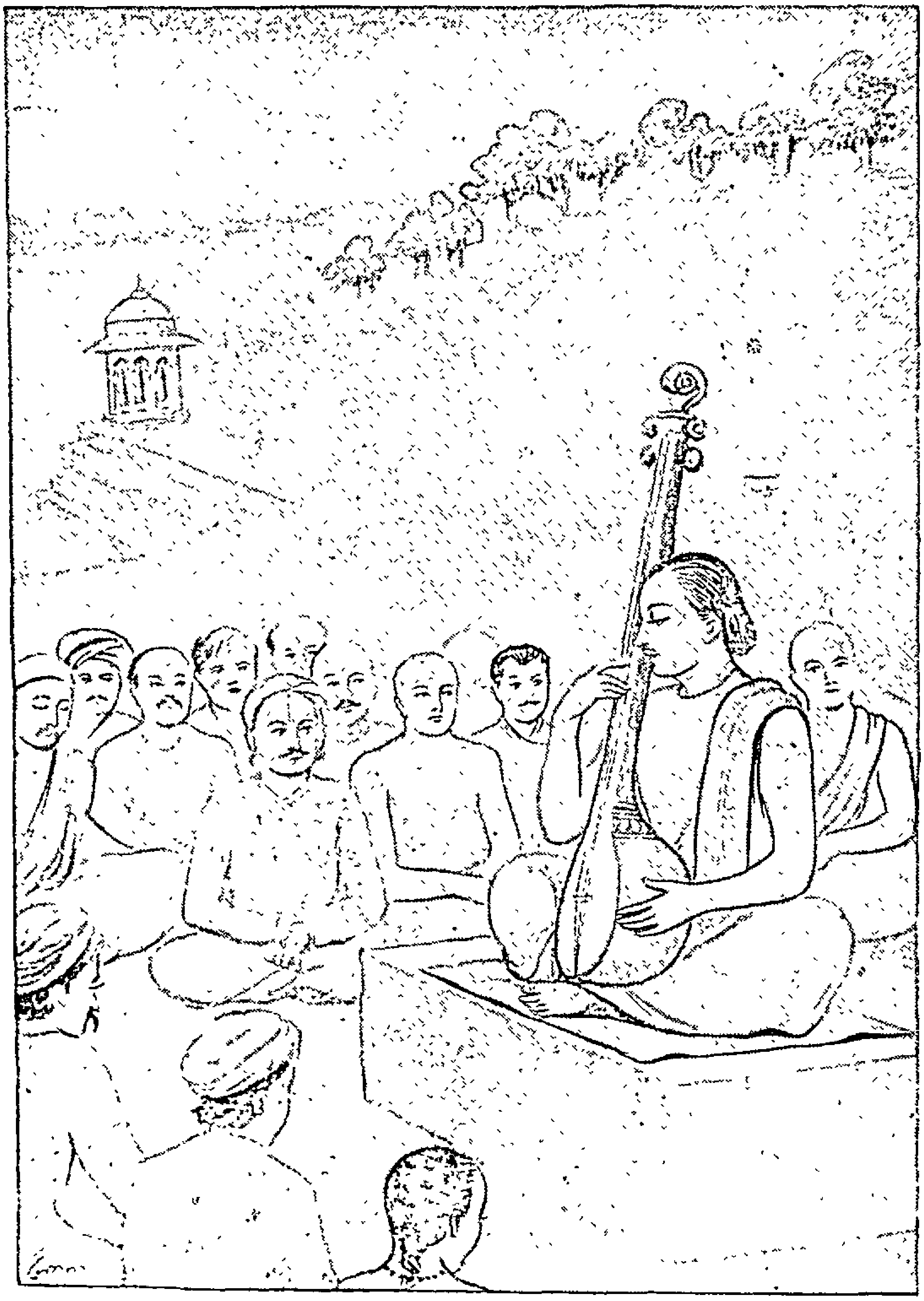

मकर संक्रांति पर प्रयाग में भजन-कीर्तन करते हुए—

परमानंददास

जन्म सं० १५५०] [देहावसान सं० १६४१

राग कान्हरो—कौन रसिक है इन बातन कौ। नंदनंदन बिनु कासों कहिए सुनिरी सखी मेरे दुःख या तन कौ ॥ १ ॥ कहां वह जमुना पुलिन मनोहर कहां वह खटपद जल-जातन कौ ॥ २ ॥ कहां वह सेज पौढिवो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ। कहां वह दरस परस 'परमानंद' कमलनैन कोमल गातन कौ ॥ ३ ॥

राग सोरठ—माई को मिलिवे नंदकिसोरै। एकवार को नैन दिखावे मेरे मन के चोरै ॥ १ ॥ जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाउंगी भोरै। सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि तमचर खग रोरै ॥ २ ॥ जो पै सत्य प्रीति अंतरगति जिनि काहुऽव निहोरै। 'परमानंद' प्रभु आन मिलेंगे सखी सीस जिनि फोरै ॥ ३ ॥

इत्यादि बहोत कीर्तन परमानंददासनें गाये सगरी रात्रि। ता पाछें चार घड़ी रात्रि रही तब कीर्तन राखे। सो जो कोई जागरन में आये हते वे सब अपने अपने घर कों गये। पाछे यह जलघरिया क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी सों भगवत्स्मरन करिके उठिके तहांते चल्यो। परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिके अपने मनमें बहोत प्रसन्न होयके कह्यो, जो-जैसो परमानंदस्वामी को गुन सुनत हते सो तैसेई हैं। सो या प्रकार परमानंदस्वामी की सराहना करत करत वह क्षत्री कपूर यमुनाजी के तट पर आइके वाही प्रकार सों पैरिकें पार आय, धोवती उपरना परदनी सहित न्हाय के अपरसही में आये। ताही समय श्रीआचार्यजी आपु पोंढ़िके उठे हते। सो श्रीआचार्यजी के दरसन करि, दंडवत करि अपने जलघरा की सेवा में तत्पर भये।

भावप्रकाश—सो या प्रकार ये क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करिवे के अर्थ परमानंदस्वामी के पास गये। नाहीं तो इनकों श्रीठाकुरजी

ઇત્યાદિ ઘણાં કીર્તન પરમાનંદદાસે ગાયાં, આખી રાત. તે પછી ચાર ઘડી રાત રહી ત્યારે કીર્તન રાખ્યાં. ત્યારે જે કોઇ જાગરણમાં આવ્યા હતા તે બધા પોતપોતાને ઘરે ગયા. પછી આ જલઘરીયો ક્ષત્રી કપૂર પરમાનંદ સ્વામીથી ભગવદ્સ્મરણ કરીને ઉઠીને ત્યાંથી ચાલ્યો. તે પરમાનંદ સ્વામીનાં કીર્તન સાંભળીને પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, કે જેવો પરમાનંદ સ્વામીનો ગુણ સાંભળ્યો હતો તેવા જ છે. આ પ્રકારે પરમાનંદ સ્વામીનાં વખાણ કરતો કરતો તે ક્ષત્રી કપૂર શ્રીયમુનાજીના તટ ઉપર આવીને તેજ પ્રકારે તરીને પાર આવી ધોતી ઉપરણા પરદની સહિત ન્હાઇને અપરસમાં જ આવ્યો. તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ પોઢીને ઉઠ્યા હતા. તેથી શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કરી પોતાની જલઘરાની સેવામાં તત્પર થયા.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે એ ક્ષત્રી કપૂર પરમાનંદ સ્વામીના ઉપર કૃપા કરવાને માટે પરમાનંદ સ્વામીની પાસે ગયા. નહીં તો એમને શ્રીઠાકુરજી પોતે સાનુભાવ

को यह सिद्धांत है, जो–भगवदीय को संग होय तब श्रीठाकुरजी कृपा करें। ताके लिये श्रीआचार्यजी परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करन के अर्थ अपने कृपापात्र भगवदीय क्षत्री कपूर जलघरिया कों पठाये। सो क्षत्री कपूर जलघरिया कैसे हते, जो–जिनकों श्रीठाकुरजी एक क्षण हू नाहीं छोड़त हैं, जो–सदा इनके संग ही रहत हैं। तासों सूरदासजी गाये हैं–'जो भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछें लागे॰'। और ऊपर जगन्नाथजोसी की वार्ता में कहि आये हैं, जो–जब वा रजपूत ने तरवार काढी तब श्रीठाकुरजी आपु पाछे तें आयके तरवार सहित हाथ ऊपर ही थांमि दियो, सो हाथ चलन न दियो। तासों श्रीभागवत में सब ठौर वरनन है, जो–भगवदीय वैष्णव के संग ही श्रीठाकुरजी डोलत हैं। सो परमानंदादस कों अब ही वियोग है। तासों विरह के कीर्तन नित्य गावते।

राग विहागरो—ब्रज के बिरही लोग बिचारे। बिनु गोपाल ठगे से ठाढे अतिदुर्बल तनु हारे॥ १॥ मात जसोदा पंथ निहारति निरखत सांझ सवारे। जो कोऊ कान्ह कान्ह कहि टेरत अखियन बहत पनारे॥ २॥ यह मथुरा काजर की रेखा जो निकसे सो कारे। 'परमानंद'–स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंद बिनु तारे॥ ३॥

राग विहागरो—गोकुल सब गोपाल ऊपासी। जो गाहक साधन के उधो वे सब बसत ईस-पुरि कासी॥१॥ जदपि हरि हम तजि अनाथ करी अब छांडत क्यों रति की गांसी। अपनी सीतलता तऊ न छांडत यद्यपि विधु भयो राहु ग्रासी॥ २॥ किहिं अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन तें करत उदासी। 'परमानंद' ऐसी को बिरहनि मांगे मुक्ति छांडि गुनरासी॥ ३॥

લીલાનું જ્ઞાન થશે. શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગનો એ સિદ્ધાંત છે કે ભગવદીયનો સંગ હોય ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ પરમાનંદ સ્વામી ઉપર કૃપા કરવાને માટે પોતાના કૃપાપાત્ર ભગવદીય ક્ષત્રી કપૂર જલઘરીયાને મોકલ્યા. એ ક્ષત્રી કપૂર જલઘરીયા કેવા હતા કે જેમને શ્રીઠાકુરજી એક ક્ષણ પણ છોડતા નહીં. સદા એમની સાથેજ રહે છે. તેથી સૂરદાસજીએ ગાયું છે કે, 'ભક્તવિરહકાતર કરૂણામય ડોલત પાછે લાગે' અને ઉપર જગન્નાથ જોષીની વાર્તામાં કહી આવ્યા છીએ કે જ્યારે તે રજપૂતે તરવાર કાઢી ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પોતે પાછળથી આવીને તરવાર સહિત હાથ ઉપર જ થાંભિ દીધો. હાથ ચાલવા ન દીધો. તેથી શ્રીભાગવતમાં બધી જગાએ વર્ણન છે, કે ભગવદીય વૈષ્ણવના સંગે જ શ્રીઠાકુરજી વિચરે છે. પરમાનંદદાસને હજુ વિયોગ છે. તેથી વિરહ નિત્ય ગાતા. (૧) 'વ્રજકે વિરહી લોગ બિચારે' (૨) 'ગોકુલ સબ ગોપાલ ઉપાસી' (૩) 'કૌન રસિક હૈ ઇન બાતન કો' (૪) 'માઇરી! કો મિલિવે નંદકિશોરે'

राग कान्हरो—कौन रसिक है इन बातन कौ। नंदनंदन बिनु कासों कहिए सुनिरी सखी मेरे दुःख या तन कौ ॥ १ ॥ कहां वह जमुना पुलिन मनोहर कहां वह खटपद जल-जातन कौ ॥ २ ॥ कहां वह सेज पौढिवो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ। कहां वह दरस परस 'परमानंद' कमलनैन कोमल गातन कौ ॥ ३ ॥

राग सोरठ—माई को मिलिवे नंदकिसोरै। एकबार को नैन दिखावे मेरे मन के चोरै ॥ १ ॥ जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाउंगी भोरै। सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि तमचर खग रोरै ॥ २ ॥ जो पै सत्य प्रीति अंतरगति जिनि काहुऽव निहोरै। 'परमानंद' प्रभु आन मिलेंगे सखी सीस जिनि फोरै ॥ ३ ॥

इत्यादि बहोत कीर्तन परमानंददासनें गाये सगरी रात्रि। ता पाछें चार घड़ी रात्रि रही तब कीर्तन राखे। सो जो कोई जागरन में आये हते वे सब अपनें अपने घर कों गये। पाछे यह जलघरिया क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी सों भगवत्स्मरन करिके उठिके तहांते चल्यो। परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिके अपने मनमें बहोत प्रसन्न होयके कह्यो, जो-जैसो परमानंदस्वामी को गुन सुनत हते सो तैसेई हैं। सो या प्रकार परमानंदस्वामी की सराहना करत करत वह क्षत्री कपूर यमुनाजी के तट पर आइके वाही प्रकार सों पैरिकें पार आय, धोवती उपरना परदनी सहित न्हाय के अपरसही में आये। ताही समय श्रीआचार्यजी आपु पोंढ़िके उठे हते। सो श्रीआचार्यजी के दरसन करि, दंडवत करि अपने जलघरा की सेवा में तत्पर भये।

भावप्रकाश—सो या प्रकार ये क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करिवे के अर्थ परमानंदस्वामी के पास गये। नाहीं तो इनकों श्रीठाकुरजी

ઇત્યાદિ ઘણાં કીર્તન પરમાનંદદાસે ગાયાં, આખી રાત. તે પછી ચાર ઘડી રાત રહી ત્યારે કીર્તન રાખ્યાં. ત્યારે જે કોઇ જાગરણમાં આવ્યા હતા તે બધા પોતપોતાને ઘરે ગયા. પછી આ જલઘરીયો ક્ષત્રી કપૂર પરમાનંદ સ્વામીથી ભગવદ્‌સ્મરણ કરીને ઉઠીને ત્યાંથી ચાલ્યો. તે પરમાનંદ સ્વામીનાં કીર્તન સાંભળીને પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થઇને કહ્યું, કે જેવો પરમાનંદ સ્વામીનો ગુણ સાંભળ્યો હતો તેવા જ છે. આ પ્રકારે પરમાનંદ સ્વામીનાં વખાણ કરતો કરતો તે ક્ષત્રી કપૂર શ્રીયમુનાજીના તટ ઉપર આવીને તેજ પ્રકારે તરીને પાર આવી ધોતી ઉપરણા પરદની સહિત ન્હાઇને અપ-રસમાં જ આવ્યો. તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ પોઢીને ઉઠ્યા હતા. તેથી શ્રીઆ-ચાર્યજીનાં દર્શન કરી દંડવત્ કરી પોતાની જલઘરાની સેવામાં તત્પર થયા.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે એ ક્ષત્રી કપૂર પરમાનંદ સ્વામીના ઉપર કૃપા કરવાને માટે પરમાનંદ સ્વામીની પાસે ગયા. નહીં તો એમને શ્રીઠાકુરજી પોતે સાનુભાવ

आप सानुभाव हते, सो ऐसे भगवदीय काहेकों काहूके घर जाय ? परंतु परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा होनहार है, तासों श्रीनवनीतप्रियजी वा क्षत्री कपूर जलघरिया को मन प्रेरिकें याके संग आपुही पधारि, याही की गोद में बैठिके परमानंदस्वामी के कीर्तन सुने।

सो या प्रकार वह क्षत्री जलघरिया परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनि जब प्रयाग सों अड़ेल कों चले, सो तब परमानंदस्वामी सगरी रात्रि के श्रमित हते, सो येहू सोये।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय, जो–परमानंदस्वामी सगरी रात्रि जागरन करिके चारि घड़ी पिछली रात्रि रही तब सोये। सो सोये तें जागरन कों फल जात रहत है। सो परमानंदस्वामी तो सुज्ञान है, और चतुर हैं तासों वे क्यों सोये ? तहां कहत हैं, जो–परमानंदस्वामी लीला संबंधी पुष्टिजीव हैं। सो एक श्रीठाकुरजी कों चाहत हैं और जागरन के फल कों चाहत नाहीं हैं। सो ये परमानंदस्वामी एकादसी के जागरन को मिस मात्र लेकें भगवन्नाम अधिक लियो जाय ताके लिये जागरन करत हते। सो इनकों विधि रीति सों कछु जागरन करिवे के फल को कारन नाहीं है। तासों परमानंददास चारि घड़ी रात्रि पिछली रही तब सोये। सो यातें जो–जागरन को फल जायगो, परंतु भगवन्नाम लियो, सो गुन तो कोई काल में जायगो नाहीं। तासों भगवन्नाम लेयवे

હતા તેથી એવા ભગવદીય શા માટે કોઇના ઘરે જાય ? પરંતુ પરમાનંદ સ્વામીના ઉપર કૃપા થવાવાળી છે તેથી શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ ક્ષત્રી કપૂર જલઘરીયાનું મન પ્રેરીને એની સાથે આપજ પધાર્યા. એનીજ ગોદીમાં બેસીને પરમાનંદસ્વામીનાં કીર્તન સાંભળ્યાં.

એ પ્રકારે એ ક્ષત્રી જલઘરીયા પરમાનંદ સ્વામીનાં કીર્તન સાંભળી જ્યારે પ્રયાગથી અડેલ ચાલ્યા ત્યારે પરમાનંદ સ્વામી બધી રાત્રિએ શ્રમિત હતા તે પણ સૂઈ રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં આ સંદેહ હોય કે પરમાનંદ સ્વામી આખી રાત્રિ જાગરણ કરીને ચાર ઘડી પાછલી રાત્રિ રહી ત્યારે સૂતા. તે સુવાથી જાગરણનું ફલ જતું રહે છે. પરમાનંદ સ્વામી તો સુજ્ઞાન છે ચતુર છે તેથી એ કેમ સુઇ રહ્યા ? ત્યાં કહે છે કે પરમાનંદ સ્વામી લીલા સંબંધી પુષ્ટિજીવ છે. તેથી એક શ્રીઠાકુરજીને ચાહે છે. જાગરણના ફલને નથી ચાહતા. એ પરમાનંદ સ્વામી એકાદશીના જાગરણનું મિષ માત્ર લઇને ભગવન્નામ અધિક લેવાય તેને માટે જાગરણ કરતા હતા. એમને વિધિ-રીતિથી કંઇ જાગરણ કરવાના ફલનું કારણ નથી. તેથી પરમાનંદદાસ ચાર ઘડી રાત્રિ પાછલી રહી ત્યારે સુઇ રહ્યા. તે એથી કે જાગરણનું ફલ જશે પરંતુ ભગવન્નામ લીધું તે ગુણ

के अर्थ चारि घड़ी रात्रि पाछिली कों सोये । सो काहेतें ? जो–सोवे नाहीं तो द्वादसी के दिन आलस सरीर में रहे । फेरि द्वादसी की रात्रि कों डेढ़ पहर रात्रि तांई कीरतन करने हैं । तासों जागरन को आश्रय छोडिकें भगवन्नाम को आश्रय करिके सोये ।

सो नींद आवत ही परमानंदस्वामी कों स्वप्न आयो । सो स्वप्न में देखे तो श्रीआचार्यजी के सेवक क्षत्री जागरन में बैठे हैं । और इनकी गोद में श्रीनवनीतप्रियजी बैठे देखे । और श्रीनवनीतप्रियजी स्वप्न में मुसिक्याय के परमानंदस्वामी कों आज्ञा किये, जो–आज मैंने तेरे कीर्तन सुने हैं । सो श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक कपूर क्षत्री जलघरिया तेरे यहां रात्रि कों जागरन में आये । तासों इनके साथ मैं हू आयो । सो इतने दिनन में आजु तेरे कीर्तन सुन्यो हों ।

भावप्रकाश—सो यह कहे, तहां यह संदेह होय, जो–श्रीठाकुरजी तो सदा सुनत हैं, और सब ठौर व्यापक हैं । सो कहे, जो–'आज मैं सुन्यो' ताको कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो–इतने दिन सों अंगीकार में ढील हती, सो अंतर्यामी साक्षि रूप सों सुने । तासों अब अंगीकार करनो है और कृपा करनी है. सो वेगि कृपा करन को लक्षन बताये । तासों कहे, जो–आजु हौं तेरे कीर्तन सुन्यो

તો કોઇ કાલમાં જશે નહીં. તેથી ભગવન્નામ લેવાને માટે ચાર ઘડી રાત્રિ પાછલી એ સોયા. કેમકે ? સુવે નહીં તો દ્વાદશીના દિવસે શરીરમાં આળસ રહે. ફરી દ્વાદશીની રાત્રિએ દોઢ પ્રહર રાત્રિ સુધી કીર્તન કરવાં છે. તેથી જાગરણનો આશ્રય છોડીને ભગવન્નામનો આશ્રય કરીને સૂઇ રહ્યા.

પછી નિંદ્રા આવતાં જ પરમાનંદ સ્વામીને સ્વપ્ન આવ્યું. સ્વપ્નમાં જુએ તો શ્રીઆચાર્યજીના સેવક ક્ષત્રી જાગરણમાં બેઠા છે અને એમની ગોદીમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીને બિરાજેલા જોયા અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ સ્વપ્નમાં હસીને પરમાનંદ સ્વામીને આજ્ઞા કરી, કે આજ મેં તારાં કીર્તન સાંભળ્યા છે શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર સેવક કપૂર ક્ષત્રી જલઘરીયા તારે ત્યાં રાત્રિએ જાગરણમાં આવ્યા. તેથી એમની સાથે હું આવ્યો. તેથી આટલા દિવસમાં આજ તારાં કીર્તન સાંભળ્યાં છે.

ભાવપ્રકાશ—આ કહ્યું ત્યાં એ સંદેહ થાય કે શ્રીઠાકુરજી તો સદા સાંભળે છે. બધી જગે વ્યાપક છે તેથી કહ્યું કે આજ મેં સાંભળ્યાં તેનું કારણ શું ? ત્યાં કહે છે કે આટલા દિવસથી અંગીકારમાં ઢીલ હતી એટલે અંતર્યામી સાક્ષીરૂપથી સાંભળ્યાં. તેથી હવે અંગીકાર કરવો છે અને કૃપા કરવી છે એટલે જલ્દી કૃપા કરવાનું લક્ષણ

हों। सो आज मैं तोपर पूरन कृपा करी। तासों अब बेगि मोकों पावोगे। सो यह आसय जाननो।

तब परमानंदस्वामी की नींद खुली। सो नेत्रन में श्रीनवनीतप्रियजी को स्वरूप कोटिकंदर्पलावण्य, ऐसो स्वप्न में दरसन भयो। तासों नेत्रन में हृदय में ज्ञान भयो। तब परमानंदस्वामी के मन में बड़ी चटपटी लगी, और आर्ति भई, जो–अब मैं कब श्रीनवनीतप्रियजी को दरसन करों? ता पाछें परमानंदस्वामी ने अपने मन में विचार कियो, जो–मैं इतने दिन तें जागरन कियो और कीर्तन हू गाये, परंतु मोकों ऐसो दरसन कबहू न भयो। जो आज भयो है। सो श्रीआचार्यजी को सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर आयो, तासों उनकी गोद में भयो। सो क्षत्री कपूर बिना श्रीनवनीतप्रियजी को दरसन न होयगो, तासों उनके पास चलिये, और उनसों मिलिये तब अपनो कार्य सिद्ध होय। सो यह बिचार मनमें करिके परमानंदस्वामी तत्काल उठि के अड़ेल कों चले। इतने में प्रातःकाल भयो। सो श्रीयमुनाजी के तीर पे आये, सो प्रथम ही नाव पार चली, तामें बैठिके परमानंदस्वामी पार आये। ता समय श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी में स्नान करिके प्रातःकाल की संध्या करत हते। परमानंदस्वामी कों श्रीआ-

---

બતાવ્યું. તેથી કહે, કે આજ મેં તારાં કીર્તન સાંભળ્યાં છે. આજ મેં તારા ઉપર પૂરણ કૃપા કરી. તેથી હવે જલ્દી મને પામીશ. આ આશય જાણવો.

ત્યારે પરમાનંદ સ્વામીની નીંદ ખુલી. નેત્રોમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીનું સ્વરૂપ કોટી કંદર્પ લાવણ્ય જે સ્વપ્નમાં દર્શન થયાં તેનાથી નેત્રમાં, હૃદયમાં જ્ઞાન થયું. ત્યારે પરમાનંદ સ્વામીના મનમાં બહુ ચટપટી લાગી અને આર્તિ થઇ કે હવે હું કયારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શન કરૂં ? તે પછી પરમાનંદ સ્વામીએ પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે મેં આટલા દિવસથી જાગરણ કર્યું અને કીર્તન પણ ગાયાં પરંતુ મને એવાં દર્શન કયારેય ન થયાં. જે આજે થયાં છે. તે શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક જલઘરીયા ક્ષત્રી કપૂર આવ્યો તેથી તેની ગોદીમાં થયાં. તેથી ક્ષત્રી કપૂર વિના શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શન નહીં થાય માટે એમની પાસે ચાલો અને એમને મળીએ ત્યારે આપણું કાર્ય સિદ્ધ થાય. એ વિચાર મનમાં કરીને પરમાનંદ સ્વામી તત્કાલ ઉઠીને અડેલ ચાલ્યા એટલામાં પ્રાતઃકાલ થયો. ત્યારે શ્રીયમુનાજીના તીરે આવ્યા. ત્યાં પ્રથમ જ નાવ પાર ચાલી તેમાં બેસીને પરમાનંદ સ્વામી પાર આવ્યા. તે સમય શ્રીઆચાર્યજી શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરીને પ્રાતઃકાલની સંધ્યા કરતા હતા. ત્યારે પરમાનંદ સ્વામીને

चार्यजी के दरसन अत्यद्भुत अलौकिक साक्षात् श्रीकृष्ण के स्वरूप सों भये। सो जैसो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टक में वर्णन किये है, जो-'वस्तुतः कृष्ण एव०' ऐसो दरसन करिके परमानंदस्वामी चकित होय रहे। सो कछु बोल न निकस्यो। तब परमानंदस्वामी नें अपने मन में बिचार कियो, जो—श्रीआचार्यजी के सेवक कपूर क्षत्री की गोद में बैठिके श्रीनवनीतप्रियजी मेरे कीर्तन क्यों न सुनें? जिनके माथे श्रीआचार्यजी आपु ऐसे धनी बिराजत हैं। तासों मैं हू इनको सेवक होऊंगो। परि मेरो सामर्थ्य नाहीं है, जो—मैं इनकों सेवक होंन की विनती करों। तासों वह क्षत्री फेर मिले तो उनसों सगरी बात कहिके सेवक होंन की विनती करों। यह विचार परमानंदस्वामी अपने मनमें करत हते, इतने में श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखतें परमानंदस्वामी सों आज्ञा किये, जो—परमानंददास! कछु भगवल्लीला गावो। तब परमानंददासजीने श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करिके ये पद गाये :—

राग सारंग—कौन बेर भई चलेरी गोपालैं। हौं ननसार गई ही त्यौंते बार-बार बूझति व्रजबालैं ॥ १ ॥ तेरे तन को रूप कहां गयो भामिनि और [illegible] सुकाइ रह्यो। सब सौभाग्य गयो हरि के संग हतो सकोमल बिरह [illegible] ॥ २ ॥ को बोलै को नैन उघारे को उत्तर देहि बिकल मन। सो सरवहु [illegible] 'परमानंदस्वामी' जीवन घन ॥ ३ ॥

राग सारंग—जियकी साधि जिय ही रही री। बहुरि [illegible] बिलपति कुंज अहीरी ॥ १ ॥ इक दिन सो जु सखी यह मारग [illegible] प्रीतिके लिए दान मिस मोहन मेरी बांह गही री ॥ २ ॥ बिनु [illegible] भरि बिरहा अनल दहीरी। 'परमानंदस्वामी' बिनु दरसन [illegible] ॥ ३ ॥

શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન અતિ અદ્ભુત અલૌકિક [illegible]ાં
જેવું શ્રીગુસાંઈજીએ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં વર્ણન કર્યું છે કે [illegible]ને
દર્શન કરીને પરમાનંદ સ્વામી ચકિત [illegible]જી
નંદસ્વામીએ પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે શ્રીઆચાર્યજીના [illegible]ર્ય-
ગોદીમાં બેસીને શ્રીનવનીતપ્રિયજી [illegible] મારા
ચાર્યજી જેવા ધણી બિરાજે છે. [illegible] મારી
નથી કે હું એમના સેવક [illegible] આપે
બધી વાત કહીને સેવક [illegible] આચા-
પોતાના મનમાં કરતા હતા [illegible] મનોરથ

राग सारंग—वह बात कमल दल नैन की। बार-बार सुधि आवत सजनी वह दुरि देनी सैन की ॥ १ ॥ वह लीला वह रास सरद की गौरज रंजित आवनी। अरू वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोहि बुलावनी ॥२॥ वे बातें सालनि उर अंतर को पर पीर हिं पावे। 'परमानंद' कह्यो न परे कछु हियो सुरूंध्यो आवे ॥ ३ ॥

राग सारंग—सुधि करति कमलदल नैनकी। भरि भरि लेति नीर अति आतुर रति वृन्दावन चन की ॥ १ ॥ दे-दे गाढे आलिंगन मिलती कुंजलता द्रुम ऐन की। वे बातें कैसे कै बिसरति बांह उसीसे सेन की ॥ २ ॥ वसि निकुंज रास खिलाए व्यथा गँवाई मेन की। 'परमानंद प्रभु' सो क्यों जीवहि जो पोखी मृदु बैनकी ॥३॥

या भांति सों परमानंददास ने विरह के पद श्रीआचार्यजी के आगे गाये। सो सुनिके श्रीआचार्यजी श्रीमुख सों कहे, जो-परमानंददास! कछु बाललीला के पद गावो। तब परमानंददास ने हाथ जोरिके श्रीआचार्यजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मैं बाललीला में कछु समुझत नाहीं हों। तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख सों परमानंददास सों आज्ञा किये, जो-तुम श्रीयमुनाजी में स्नान करि आवो; जो-हम तुमकों समुझाय देयगें। पाछें परमानंददासने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज! आपुको सेवक क्षत्री कपूर कहां है? सो तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो-कछु सेवा टहल में होयगो। तब परमानंददास श्रीयमुनाजी में स्नान करन कों चले, और श्रीआचार्यजी तो सेवा को समय हतो सो वेगि ही उहां ते मंदिर में पधारे।

સ્વામીને આજ્ઞા કરી, કે પરમાનંદદાસ! કંઇ ભગવલ્લીલા ગાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસજીએ શ્રીઆચાર્યજીને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીને આ પદ ગાયું. રાગ સારંગ—૧ 'કૌન બેર ભઇ ચલેરી ગોપાલ' ૨ 'જિયકી સાધ જિયહી રહી રી' ૩ 'વહુ બાત કમલદલ નેનકી' ૪ 'સુધિ કરત કમલદલ નેનકી' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે પરમાનંદદાસે વિરહનાં પદ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી શ્રીમુખથી કહે, કે પરમાનંદદાસ! કંઇ બાલલીલાનાં પદ ગાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસે હાથ જોડીને શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! હું બાલલીલામાં કંઇ સમજતો નથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે શ્રીમુખથી પરમાનંદદાસને આજ્ઞા કરી, કે તમે શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી આવો અમે તમને સમજાવી દઇશું. પછી પરમાનંદદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપનો સેવક ક્ષત્રી કપૂર ક્યાં છે? ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે કંઇ સેવા ટહેલમાં હશે. ત્યારે પરમાનંદદાસ શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરવાને ચાલ્યા અને શ્રીઆચાર્યજી તો સેવાનો સમય હતો તે જલ્દી જ ત્યાંથી મંદિરમાં પધાર્યા અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીને જગાવ્યા. એટલામાં જ

और श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाये। इतने ही में वह क्षत्री जलघरिया श्रीयमुना जल भरिवे कों गागर लेके श्रीयमुनाजीके पार आयो। सो उनकों देखि के परमानंदस्वामी परम आनंद सों दोऊ हाथ जोरिके भगवत् स्मरन करिके कह्यो, जो–रात्रि कों तुम कृपा करिकें जागरन में पधारे हते, सो नवनीतप्रियजी तिहारी गोदि में बैठिके मेरे कीर्तन सुने। सो मैं सोयो तब श्रीनवनीतप्रियजीने दरसन दियो, और कृपा करिके आज्ञा किये, जो–आज मैं तेरे कीर्तन सुन्यो हूं। तासों तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी। सो अब तिहारे दरसन कों आयो हों। तासों अब आप जा प्रकार श्रीआचार्यजी आपु मोकों सरन लेइ और श्रीठाकुरजी कृपा करिके मोकों नित्य दरसन देइ, सो प्रकार कृपा करिके बतावो। और मोकों श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके श्रीकृष्ण-जी के स्वरूप को दरसन दियो है, सो यह तिहारे सत्संग को प्रताप हैं। तब यह बात सुनिके क्षत्री कपूरने उनसों कह्यो, जो–तिहारी ऊपर श्रीआचार्यजी की कृपा भई है। तासों तुमकों ऐसो दरसन भयो हैं। और तुमसों आपने आज्ञा करी है, सरन लेवे के लिये, सो जासों तुम बेगिही न्हायके अपरस ही में श्रीआचार्यजी के पास चलो। सो तुमकों प्रभु कृपा करिके सरन लेंयगे, तब तिहारो सब मनोरथ सिद्ध होयगो। और रात्रि कों मैं जागरन में तिहारे पास गयो, सो बात

તે ક્ષત્રી જલઘરીયો શ્રીયમુના જલ ભરવાને ગાગર લઇને શ્રીયમુનાજીના પાર આવ્યો એટલે એને જોઇ પરમાનંદસ્વામીએ પરમ આનંદથી બન્ને હાથ જોડીને ભગવદ્સ્મરણ કરીને કહ્યું, કે રાત્રિએ કૃપા કરીને તમે જાગરણમાં પધાર્યા હતા ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ તમારા ખોળામાં બેસીને મારાં કીર્તન સાંભળ્યાં. પછી હું સુઇ રહ્યો ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ દર્શન આપ્યાં અને કૃપા કરીને આજ્ઞા કરી, કે આજ મેં તારાં કીર્તન સાંભળ્યાં છે તેથી તમે મારા ઉપર બહુ મોટી કૃપા કરી. હવે તમારાં દર્શને આવ્યો છું. તેથી હવે જે પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે મને શરણે લે અને શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરીને મને નિત્ય દર્શન દે તે પ્રકાર કૃપા કરીને બતાવો. વળી મને શ્રીઆચાર્ય-જીએ આપે કૃપા કરીને શ્રીકૃષ્ણજીના સ્વરૂપનાં દર્શન આપ્યાં છે. તે આ તમારા સત્સંગનો પ્રતાપ છે. ત્યારે એ વાત સાંભળીને ક્ષત્રી કપૂરે એમને કહ્યું, કે તમારી ઉપર શ્રીઆચાર્યજીની કૃપા થઇ છે તેથી તમને એવાં દર્શન થયાં છે અને તમને આપે આજ્ઞા કરી છે શરણ લેવાને માટે તેથી તમે જલદી ન્હાઇને અપરસમાં જ શ્રીઆચા-ર્યજીની પાસે ચાલો. તમને પ્રભુ કૃપા કરીને શરણ લેશે. ત્યારે તમારો બધો મનોરથ

तुम श्रीआचार्यजीके आगें मति करियो। नाहिं तो आपु मेरे ऊपर खीजेंगे, जो-तू सेवा छोड़िके क्यों गयो हतो? यह वचन परमानंदस्वामी सों कहिके वा क्षत्री वैष्णव ने तो श्रीयमुनाजलकी गागर भरी, और परमानंददास स्नान करिके अपरसही में श्रीआचार्यजीके पास उन जलघरिया क्षत्री के पाछे आये। ता समय श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करिके श्रीगोपीवल्लभ भोग धरिकें बिराजे हते। ता समय परमानंददास न्हाय के आये। तब श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सों कहे, जो-परमानंददास बेठो। तब परमानंददास श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करिके बेठे। पाछें श्रीआचार्यजी आपु भीतर पधारि भोग सराय के परमानंददास कों बुलायके श्रीनवनीतप्रियजी की सन्निधान कृपा करिके नाम सुनायो। ता पाछे ब्रह्मसंबंध करवायो। पाछे श्रीभागवत दशमस्कंध की अनुक्रमणिका सुनाये।

भावप्रकाश—सो ताको हेतु यह है, जो-प्रथम परमानंददास सों श्रीआचार्यजीने कह्यो, जो-कछु भगवद्लीला वर्णन करो। तब परमानंददास ने बिरह के पद गाये। पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों कहे, जो-बाललीला गावो। सो ताको हेतु यह है, जो-बाललीला श्रीनंदरायजी के घर की लीला है,

---

સિદ્ધ થશે અને રાત્રિએ હું જાગરણમાં તમારી પાસે ગયો તે વાત તમે શ્રીઆચાર્યજી આગળ કરતા નહીં. નહીંતો આપ મારા ઉપર ખીજશે કે તું સેવા છોડીને કેમ ગયો હતો ? એ વચન પરમાનંદસ્વામીને કહીને એ ક્ષત્રી વૈષ્ણવે તો શ્રીયમુના જલની ગાગર ભરી અને પરમાનંદદાસ સ્નાન કરીને અપરસમાં જ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે એ જલઘરીયા ક્ષત્રીની પાછળ આવ્યા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનો શૃંગાર કરીને શ્રીગોપીવલ્લભ ભોગ ધરીને બિરાજ્યા હતા. તે સમયે પરમાનંદદાસ ન્હાઇને આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી આપ પરમાનંદદાસને કહે, કે પરમાનંદદાસ બેસો. પછી શ્રીઆચાર્યજી આપે અંદર પધારી ભોગ સરાવીને પરમાનંદદાસને બોલાવીને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની સન્નિધાન કૃપા કરી નામ સંભળાવ્યું. તે પછી બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. પછી શ્રીભાગવત દશમસ્કંધની અનુક્રમણિકા સંભળાવી.

ભાવપ્રકાશ—તેનો હેતુ એ છે કે પ્રથમ પરમાનન્દદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે કંઇ ભગવલ્લીલા વર્ણન કરો. ત્યારે પરમાનંદદાસે વિરહનાં પદ ગાયાં. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે પરમાનંદદાસને કહે, કે બાલલીલા ગાવો. તેનો હેતુ એ છે, કે બાલલીલા શ્રીનંદરાયજીના ઘરની લીલા છે તે સંયોગ રસ છે. એટલે એકવાર સંયોગ

सो संयोग रस है। सो एकवार संयोग होय ता पाछे विरह फलरूप होय। सो काहेतें ? जो–रास पंचाध्यायी में व्रजभक्तन कों बुलाय के लीला किये। ता पाछें अंतर्धान में विरह फलरूप भयो। तासों भगवान कहे–'यथाऽधनो लब्धधने विनष्टे तच्चिन्तया०' जैसे धन पायके धन जाय, तब धन को चितन बहोत होय। सो पहले श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–बाललीला गावो। क्यों ? जो–अनुभव करिके विरह को गान वेगि फले। परि परमानंददास ने विनती कीनी, जो–महाराज ! मैं कछू समझत नाहीं हों। ताको आसय यह है, जो–संयोग रस अब ही है नाहीं। जो मूल लीला में हतो सो विस्मृत भयो है। परि लीला में तें बिछुरे हैं, और दैवी जीव हैं, तासों विरह जनम ही तें गाये। सो अब नाम समर्पण कराय के अज्ञान प्रतिबंध दूरि कियो, ता पाछें श्रीभागवत दशमस्कंध की अनुक्रमणिका सुनाये। सो तब साक्षात् श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप को अनुभव भयो और दशम की सगरी लीला स्फुरी। परमानंददास कों दशम की अनुक्रमणिका सुनाये ताको कारन यह है, जो–सर्वोत्तम ग्रंथ श्रीगुसांईजी प्रकट किये हैं। तामें श्रीआचार्यजी को नाम कहे हैं, जो–'श्रीभागवत–पीयूषसमुद्र–मथन क्षमः'। सो श्रीभागवत को श्रीगुसांईजी अमृत को समुद्र करिके वर्णन किये, सो श्रीआचार्यजी आपु अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र परमानंददास के हृदय में स्थापन

થાય ત્યાર પછી વિરહ ફલ રૂપ થાય. કેમકે ? રાસ પંચાધ્યાયીમાં વ્રજભક્તોને બોલાવીને લીલા કરી. તે પછી અંતર્ધાનમાં વિરહ ફલ રૂપ થયો. તેથી ભગવાન કહે, 'યથાડધનો' (ઉપર જુઓ) જેમ ધન પામીને ધન જાય ત્યારે ધનનું ચિંત્વન બહુ થાય. તેથી પહેલાં શ્રીઆચાર્યજી આપ કહે કે બાલલીલા ગાવો. કેમ ? જે અનુભવ કરીને વિરહનું ગાન જલ્દી ફળે. પરંતુ પરમાનંદદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ ! હું કંઇ સમજતો નથી. તેનો આશય એ છે કે એમને સંયોગ રસ હજુ નથી. મૂળ લીલામાં હતો તે વિસ્મરણ થયો છે. પરંતુ લીલામાંથી વિછુર્યા છે અને દૈવી જીવ છે. તેથી વિરહ જનમથીજ ગાયો. હવે નામ–સમર્પણ કરાવીને અજ્ઞાન પ્રતિબંધ દૂર કર્યો તે પછી શ્રીભાગવત દશમસ્કંધની અનુક્રમણિકા સંભળાવી. ત્યારે સાક્ષાત શ્રીનવનીતપ્રિયજીના સ્વરૂપનો અનુભવ થયો અને દશમની બધી લીલા સ્ફૂરી. પરમાનંદદાસને દશમની અનુક્રમણિકા સંભળાવી તેનું કારણ એ છે કે સર્વોત્તમ ગ્રંથ શ્રીગુસાંઇજીએ પ્રકટ કર્યો છે. તેમાં શ્રીઆચાર્યજીનું નામ કહ્યું છે કે 'શ્રીભાગવતપીયુષસમુદ્રમથન ક્ષમઃ' ત્યાં શ્રીભાગવતને શ્રીગુસાંઇજીએ અમૃતનો સમુદ્ર કહીને વર્ણન કર્યું તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ આપે અનુક્રમણિકા દ્વારા શ્રીભાગવતરૂપી સમુદ્ર પરમાનંદદાસના હૃદયમાં સ્થા-

कियो। तैसे ही प्रथम सूरदास के हृदय में अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र स्थापन कियो हतो। तासों वैष्णव तो अनेक श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे, परंतु सूरदास और परमानंददास ये दोऊ 'सागर' भये। इन दोउन के कीर्तन की संख्या नाहीं, सो दोऊ सागर कहवाये। सो श्रीआचार्यजीने आज्ञा करी, जो बाललीला गावो। अब संयोग रस को अनुभव भयो।

तब परमानंददासजी ने श्रीआचार्यजी के आगे बाललीला के पद गाये। सो पद—

राग आसावरी—माईरी! कमल नैन स्यामसुंदर झूलत हैं पलना। बाललीला गावति सब गोकुल की ललना ॥ १ ॥ लालके अरुन तरुन चरनकमल नख-मनि ससि-ज्योती। कुंचित कच भँवराकृति लर लटकै गज-मोती ॥ २ ॥ लाल अंगुठा गहि कमल पानि मेलत मुख मांही। अपनो प्रतिबिंब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं ॥ ३ ॥ रानी जसुमति के पुन्य पुंज निरखि निरखि लालैं। 'परमानंदस्वामी' गोपाल सुत सनेह पालैं ॥ ४ ॥

राग विलावल—जसोदा! तेरे भाग्यकी कहीय न जाइ। जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हैं आइ ॥ १ ॥ सिव नारद सनकादि महामुनि मिलिवे करत उपाई। ते नंदलाल धूरिधूसर वपु रहत कंठ लपटाई ॥ २ ॥ रतन जटित पौढाय पालने वदन देखि मुसिकाई। झूलो मेरे लाल जाऊं बलिहारी 'परमानंद' बाल जाई ॥ ३ ॥

राग विलावल—मनिमें आंगन नंद के खेलत दोऊ भैया। गौर स्याम जोरी बनी बल कुंवर कन्हैया ॥ १ ॥ नूपुरु कंकन किंकनी रुनझुन बाजे। मोहि रही व्रज सुंदरि मनसिज सुनि लाजे ॥ २ ॥ संग जसुमति रोहिणी हितकारिनी मैया। चुटकी दे दे नचावही सुत जानि नन्हैया ॥ ३ ॥ नीलपीत पट ओढनी देखत मोहि भावे। बाल विनोद प्रमोद सों 'परमानंद' गावे ॥ ४ ॥

राग कान्हरो—प्यारे हरि कौ जस गावति गोपांगना। मनिमय आंगन नंदराय के बाल विनोद करत हैं रिंगना ॥ १ ॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुवन टेकत जानुपानि मेरो छगन कौ मगना। धूसर धूरि उठाय गोद ले मात यसोदा के प्रेम को भजना ॥ २ ॥ त्रिपद पहुमि नापी तव न आलस भयो अव जो कठिन भयो दहेरी उलंघना। 'परमानंद प्रभु' भक्तवत्सल हरि रुचिर हार वरकंठ सोहे बघना ॥ ३ ॥

પન કર્યો. તેજ પ્રકારે પ્રથમ સૂરદાસના હૃદયમાં અનુક્રમણિકા દ્વારા શ્રીભાગવતરૂપી સમુદ્રને સ્થાપન કર્યો હતો. તેથી વૈષ્ણવ તો અનેક શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. પરંતુ સૂરદાસ અને પરમાનંદદાસ એ બે ‘ સાગર ’ થયા. એ બન્નેનાં કીર્તનોની સંખ્યા નથી. તેથી બન્ને સાગર કહેવાયા. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા કરી કે બાલલીલા ગાવો હવે સંયોગરસનો અનુભવ થયો.

ત્યારે પરમાનંદદાસજીએ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ બાલલીલાનાં પદ ગાયાં. (૧) ‘ માઇરી કમલનૈન શ્યામસુંદર ’ (૨) ‘ જશોદા તેરે ભાગ્ય કી ’ (૩)

सो एसे पद परमानंददास ने बाललीला के बहोत ही गाये। सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत ही प्रसन्न भये। ता पाछें परमानंददास अड़ेल में श्रीआचार्यजी के पास रहे। तब श्रीआचार्यजी परमानंददास सों कहे, जो-अब समय समय के पद नित्य श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनायो करो, सो यह सेवा तुमकों दीनी। तब परमानंददास नित्य नये पद करिके समय समय के श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनावते। और जब श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर होय, तब परमानंददास श्रीआचार्यजीके आगे अनेक व्रजलीला के कीर्तन करते। और श्रीआचार्यजी आपु श्रीसुबोधिनी की कथा कहते। सो जा समय (जा) प्रसंग की कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख तें सुनते ताही प्रसंग के कीर्तन कथा भये पाछे परमानंददास श्रीआचार्यजी कों सुनावते।

वार्ता–प्रसंग २—एक दिन परमानंददासनें श्रीठाकुररजी के चरणारविंद को माहात्म्य कथामें श्रीआचार्यजी के श्रीमुखतें सुन्यो। सो ता समय परमानंददासने श्रीठाकुरजी के चरणारविंद को माहात्म्य सहित कीर्तन श्रीआचार्यजी के आगे गायो। सो पद—

राग कान्हरो—चरनकमल वंदों जगदीस जे गोधन के संग धाए। जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिनि उर लाए ॥ १ ॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजित राजसूयमें चलि आए। जे पदकमल पितामह भीषम भारत में देखन पाए ॥२॥ जे

'મણિમય આંગન નંદકે' (૪) 'પ્યારે હરિકો વિમલ જશ' (ઉપર જુઓ) એવાં પદ પરમાનંદદાસે બાલલીલાનાં ઘણાં ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે બહુ પ્રસન્ન થયા. તે પછી પરમાનંદદાસ અડેલમાં શ્રીઆચાર્યજીની પાસે રહ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પરમાનંદદાસને કહે, કે હવે સમય-સમયનાં પદ નિત્ય નવનીતપ્રિયજીને સંભળાવ્યા કરો. એ સેવા તમને આપી. ત્યારે પરમાનંદદાસ નિત્ય નવાં પદ કરીને સમય-સમયનાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીને સંભળાવતા અને જ્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અનોસર થાય ત્યારે પરમાનંદદાસ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ અનેક વ્રજલીલાનાં કીર્તન કરતા. વળી શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીસુબોધિનીની કથા કહેતા એ સમય જે પ્રસંગની કથા શ્રીઆચાર્યજીના શ્રીમુખથી સાંભળે તેજ પ્રસંગનાં કીર્તન કથા થયા પછી પરમાનંદદાસ શ્રીઆચાર્યજીને સંભળાવતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૨-એક દિવસ પરમાનંદદાસે શ્રીઠાકુરજીના ચરણારવિંદનું માહાત્મ્ય કથામાં શ્રીઆચાર્યજીના શ્રીમુખથી સાંભળ્યું. તે સમયે પરમાનંદદાસે શ્રીઠાકુરજીના ચરણારવિંદનું માહાત્મ્ય સહિત કીર્તન શ્રીઆચાર્યજીની આગળ ગાયું. તે પદ :—

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे। जेपद कमल रमा-उर भूषन वेद भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन बलिराजा के पीठ घरे। सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो। सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ। मानुस जनम और हरि की सेवा व्रज बसिवो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ ह्वों चेरो वैष्णवजन कौ दास कहाऊं। श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम वचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥ श्रीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं। 'परमानंददास' यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो। सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में व्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी है। तासों परमानंददास कों व्रज के दरसन अवश्य करवावने। तब श्रीआचार्यजी आपु व्रजमें पधारिवे को उद्यम किये। सो तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें व्रज कों पधारे। सो व्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम कनौज आयो। तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि अपने घर पधराये। पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये। और जो वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो सामान देके रसोई करवाई। पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

'ચરણકમલ વંદો જગદીશ' (ઉપર જુઓ). તે પછી શ્રીઆચાર્યજીની આગળ પ્રાર્થનાનું પદ ગાયું. તે પદ :— 'યહ માંગો ગોપીજનવલ્લભ' (ઉપર જુઓ). એ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પોતે જાણ્યું કે આ પદમાં વ્રજના દર્શનની પ્રાર્થના કરી છે. તેથી પરમાનંદદાસને વ્રજનાં દર્શન અવશ્ય કરાવવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે વ્રજમાં પધારવાનો ઉદ્યમ કર્યો. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ મેઘન, પરમાનંદદાસ અને યાદવેંદ્રદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને સંગ લઇ શ્રીઆચાર્યજી પોતે અડેલથી વ્રજ તરફ પધાર્યા. તે વ્રજમાં આવતાં માર્ગમાં પરમાનંદદાસનું ગામ કનોજ આવ્યું. ત્યારે પરમાનંદદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી પોતાના ઘરે પધરાવ્યા. પછી પરમાનંદદાસ પોતાનાં ભાગ્ય માનીને પરમ પ્રીતિથી પોતાના ઘરે પધરાવીને બધી સામગ્રી બજારથી લાવ્યા અને જે વૈષ્ણવ હતા તેમને બહુજ વિનતી દીનતા કરીને બધાને સીધું સામગ્રી દઇ રસોઇ કરાવી. પછી શ્રીઆ-

सखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी कों भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये। ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद देकें आपु गादी तकीयानके ऊपर बिराजे। पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे। तब आपु आज्ञा किये जो-परमानंददास! कछू भगवद् जस गावो। तब परमानंददास अपने मनमें बिचारे, जो-या समय श्रीआचार्यजी को मन तो व्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है। तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय। सो पद—

राग सोरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे। कमलनैन मनमोहन सूरति मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकबार जाहि मिलत मया करि सो कैसे बिसरावे। मुख मुसक्यान बंक अवलोकन चाल मनोहर भावे ॥ २ ॥ कबहु निविड तिमिर आलिंगत कबहुक पिकसुर गावे। कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहि उठि धावे ॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अंतर गति मणिमाला पहरावे। 'परमानंद-प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायो। सो यामें यह कहें, जो-'हरि तेरी लीला की सुधि आवे।' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसांईजो श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक'में बरनन कियो है, जो-'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द-सन्दोहरूप

चार्यजीએ પોતે સખડી અનસખડી પાક સામગ્રી સિદ્ધ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી ભોગ સરાવી પોતે ભોજન કર્યું. તે પછી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ આપીને પોતે ગાદીતકિયા ઉપર બિરાજ્યા. પછી પરમાનંદદાસ મહાપ્રસાદ લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને દંડવત્ કરીને બેઠા. ત્યારે પોતે આજ્ઞા કરી, કે પરમાનંદદાસ! કંઇ ભગવદ્યશ ગાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે આ સમય શ્રીઆચાર્યજીનું મન તો વ્રજલીલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પાસે છે. તેથી વિરહનાં પદ ગાઉં. જેમાં એક ક્ષણ કલ્પ સમાન જાય. તે પદ :— રાગ સોરઠ— 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' (ઉપર જુઓ). આ પદ પરમાનંદદાસજીએ ગાયું. એમાં એમ કહ્યું કે 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ લીલામાં મગ્ન થઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીઆચાર્યજીનું સ્વરૂપ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં વર્ણન કર્યું છે કે 'શ્રીમદ્દૃંદાવનેંદુ' (ઉપર જુઓ.) એવા રસથી ભર્યા છે. વળી સર્વો-

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे। जेपद कमल रमा-उर भूषन वेद भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन बलिराजा के पीठ धरे। सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो। सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ। मानुस जनम और हरि की सेवा व्रज बसिवो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ हौं चेरो वैष्णवजन कौ दास कहाऊं। श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम बचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥ श्रीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं। 'परमानंददास' यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो। सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में व्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी है। तासों परमानंददास कों व्रज के दरसन अवश्य करवावने। तब श्रीआचार्यजी आपु व्रजमें पधारिबे को उद्यम किये। सो तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें व्रज कों पधारे। सो व्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम कनौज आयो। तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि अपने घर पधराये। पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये। और जो वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो सामान देके रसोई करवाई। पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

---

'ચરણકમલ વંદો જગદીશ' (ઉપર જુઓ). તે પછી શ્રીઆચાર્યજીની આગળ પ્રાર્થનાનું પદ ગાયું. તે પદ:— 'યહ માંગો ગોપીજનવલ્લભ' (ઉપર જુઓ). એ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પોતે જાણ્યું કે આ પદમાં વ્રજના દર્શનની પ્રાર્થના કરી છે. તેથી પરમાનંદદાસને વ્રજનાં દર્શન અવશ્ય કરાવવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે વ્રજમાં પધારવાનો ઉદ્યમ કર્યો. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ મેઘન, પરમાનંદદાસ અને યાદવેંદ્રદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને સંગ લઇ શ્રીઆચાર્યજી પોતે અડેલથી વ્રજ તરફ પધાર્યા. તે વ્રજમાં આવતાં માર્ગમાં પરમાનંદદાસનું ગામ કનોજ આવ્યું. ત્યારે પરમાનંદદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી પોતાના ઘરે પધરાવ્યા. પછી પરમાનંદદાસ પોતાનાં ભાગ્ય માનીને પરમ પ્રીતિથી પોતાના ઘરે પધરાવીને બધી સામગ્રી બજારથી લાવ્યા અને જે વૈષ્ણવ હતા તેમને બહુજ વિનતી દીનતા કરીને બધાને સીધું સામગ્રી દઇ રસોઇ કરાવી. પછી શ્રીઆ-

सखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी कों भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये। ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद देकें आपु गादी तकीयानके ऊपर बिराजे। पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे। तब आपु आज्ञा किये जो-परमानंददास! कछू भगवद् जस गावो। तब परमानंददास अपने मनमें विचारे, जो-या समय श्रीआचार्यजी को मन तो व्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है। तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय। सो पद—

राग सोरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे। कमलनैन मनमोहन मूरति मन मन चित्र बनावे॥ १॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सो कैसे बिसरावे। मुख मुसक्यान वंक अवलोकन चाल मनोहर भावे॥ २॥ कबहु निविड तिमिर आलिंगत कबहुक पिकसुर गावे। कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहि उठि धावे॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अंतर गति मणिमाला पहरावे। 'परमानंद-प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावे॥ ४॥

यह पद परमानंददास ने गायो। सो यामें यह कहें, जो-'हरि तेरी लीला की सुधि आवे।' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक'में वरनन कियो है, जो-'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द-सन्दोहरूप

चार्यजीએ પોતે સખડી અનસખડી પાક સામગ્રી સિદ્ધ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી ભોગ સરાવી પોતે ભોજન કર્યું. તે પછી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ આપીને પોતે ગાદીતકિયા ઉપર બિરાજ્યા. પછી પરમાનંદદાસ મહાપ્રસાદ લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને દંડવત્ કરીને બેઠા. ત્યારે પોતે આજ્ઞા કરી, કે પરમાનંદદાસ! કંઇ ભગવદ્‌યશ ગાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે આ સમય શ્રીઆચાર્યજીનું મન તો વ્રજલીલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પાસે છે. તેથી વિરહનાં પદ ગાઉં. જેમાં એક ક્ષણ કલ્પ સમાન જાય. તે પદ :— રાગ સોરઠ— 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' (ઉપર જુઓ). આ પદ પરમાનંદદાસજીએ ગાયું. એમાં એમ કહ્યું કે 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ લીલામાં મગ્ન થઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીઆચાર્યજીનું સ્વરૂપ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં વર્ણન કર્યું છે કે 'શ્રીમદ્‌વૃંદાવનેંદુ' (ઉપર જુઓ.) એવા રસથી ભર્યા છે. વળી સર્વો-

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे । जेपद कमल रमा-उर भूषन वेद भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन वलिराजा के पीठ घरे। सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो। सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ । मानुस जनम और हरि की सेवा व्रज बसिवो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ हौं चेरो वैष्णवजन कौ दास कहाऊं । श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम वचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥ श्रीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं। 'परमानंददास' यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो। सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में व्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी है। तासों परमानंददास कों व्रज के दरसन अवश्य करवावने। तब श्रीआचार्यजी आपु व्रजमें पधारिवे को उद्यम किये। सो तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें व्रज कों पधारे। सो व्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम कनौज आयो। तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि अपने घर पधराये। पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये। और जो वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो सामान देके रसोई करवाई। पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

'ચરણકમલ વંદો જગદીશ' (ઉપર જુઓ). તે પછી શ્રીઆચાર્યજીની આગળ પ્રાર્થનાનું પદ ગાયું. તે પદ :— 'યહ માંગો ગોપીજનવલ્લભ' (ઉપર જુઓ). એ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પોતે જાણ્યું કે આ પદમાં વ્રજના દર્શનની પ્રાર્થના કરી છે. તેથી પરમાનંદદાસને વ્રજનાં દર્શન અવશ્ય કરાવવાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે વ્રજમાં પધારવાનો ઉદ્યમ કર્યો. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ મેઘન, પરમાનંદદાસ અને યાદવેંદ્રદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને સંગ લઇ શ્રીઆચાર્યજી પોતે અડેલથી વ્રજ તરફ પધાર્યા. તે વ્રજમાં આવતાં માર્ગમાં પરમાનંદદાસનું ગામ કનોજ આવ્યું. ત્યારે પરમાનંદદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી પોતાના ઘરે પધરાવ્યા. પછી પરમાનંદદાસ પોતાનાં ભાગ્ય માનીને પરમ પ્રીતિથી પોતાના ઘરે પધરાવીને બધી સામગ્રી બજારથી લાવ્યા અને જે વૈષ્ણવ હતા તેમને બહુજ વિનતી દીનતા કરીને બધાને સીધું સામગ્રી દઇ રસોઇ કરાવી. પછી શ્રીઆ-

सखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी कों भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये। ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद देकें आपु गादी तकीयानके ऊपर बिराजे। पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे। तब आपु आज्ञा किये जो–परमानंददास! कछू भगवद् जस गावो। तब परमानंददास अपने मनमें विचारे, जो–या समय श्रीआचार्यजी को मन तो व्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है। तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय। सो पद—

राग सोरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे। कमलनैन मनमोहन सूरति मन मन चित्र बनावे॥ १॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सो कैसे बिसरावे। मुख मुसक्यान वंक अवलोकन चाल मनोहर भावे॥ २॥ कबहु निविड तिमिर आलिंगत कबहुक पिकसुर गावे। कबहुक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहि उठि धावे॥३॥ कबहुक नैन मूंदि अंतर गति मणिमाला पहरावे। 'परमानंद–प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावे॥ ४॥

यह पद परमानंददास ने गायो। सो यामें यह कहें, जो–'हरि तेरी लीला की सुधि आवे।' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसांईजो श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक'में वरनन कियो है, जो–'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द–सन्दोहरूप

ચાર્યજીએ પોતે સખડી અનસખડી પાક સામગ્રી સિદ્ધ કરીને શ્રીઠાકુરજીને ભોગ ધરી ભોગ સરાવી પોતે ભોજન કર્યું. તે પછી પરમાનંદદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવોને મહાપ્રસાદ આપીને પોતે ગાદીતકિયા ઉપર બિરાજ્યા. પછી પરમાનંદદાસ મહાપ્રસાદ લઇ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને દંડવત્ કરીને બેઠા. ત્યારે પોતે આજ્ઞા કરી, કે પરમાનંદદાસ! કંઇ ભગવદ્યશ ગાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે આ સમય શ્રીઆચાર્યજીનું મન તો વ્રજલીલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પાસે છે. તેથી વિરહનાં પદ ગાઉં. જેમાં એક ક્ષણ કલ્પ સમાન જાય. તે પદ :— રાગ સોરઠ— 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' (ઉપર જુઓ). આ પદ પરમાનંદદાસજીએ ગાયું. એમાં એમ કહ્યું કે 'હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે' તેજ સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ લીલામાં મગ્ન થઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીઆચાર્યજીનું સ્વરૂપ શ્રીવલ્લભાષ્ટકમાં વર્ણન કર્યું છે કે 'શ્રીમંદ્દ્વાવનેંદુ' (ઉપર જુઓ.) એવા રસથી ભર્યા છે. વળી સર્વો-

–स्फूर्जद्रासादिलीलामृत० । ऐसे रस सों भरे हैं । और 'सर्वोत्तम' में श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी को नाम कहे–रासलीलैकतात्पर्याय नमः' । सो श्रीआचार्यजी को कार्य कहियत हैं, जो–जो ग्रन्थ किये सो तामें रासलीला ही तात्पर्य है । और कछु काहू बात में आपु को तात्पर्य नाहीं है । सो तासों रासलीला में मगन होय गये ।

सो ऊपर सरीर को देह को–अनुसंधान हू रह्यो नाहीं । सो तीन दिनलों श्रीआचार्यजी कों मूर्छा रही । सो नेत्र मूँदि के गादी तकियान पें बिराजे हते, और दामोदरदास हरसानी आदि वैष्णव (जो) श्रीमहाप्रभुजी के स्वरूप कों जानत हते सो जाने । सो कोई वैष्णव बोले नाहीं, बैठे बैठे चुप होय के श्रीआचार्यजी को दरसन कियो करें ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो–श्रीआचार्यजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं सो इनकों सरीरधर्म बाधक नाहीं । जो–मनुष्य देह धारन कियो है तासों मनुष्य–क्रिया जगत में दिखावत हैं, परि इनकों देह को धर्म बाधक नाहीं है । तासों सब सेवक तीन दिनलों बैठे रहे ।

सो पाछें चौथे दिन सावधान होयकें श्रीआचार्यजी ने नेत्र खोले, तब सब वैष्णव प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—सो तहां यह पूर्वपक्ष होय, जो–रासादिक लीला में

त्तममां श्रीगुसांइजी श्रीआचार्यजीनुं नाम कहे, 'रासलीलैकतात्पर्य' त्यां श्रीआचार्यजीनुं कार्य कहीए छीए, जे–जे ग्रंथ कर्या तेमां रासलीलाज तात्पर्य छे. बीजी कोइ वातमां आपनुं तात्पर्य नथी. तेथी रासलीलामां मगन थई गया.

तेथी उपरनुं देहानुसंधान पण न रह्युं. ते त्रण दिवस सुधी श्रीआचार्यजीने मूर्छा रही. तेथी नेत्र मूंदिने गादीतकिया उपर बिराज्या हता अने दामोदरदास हरसानी आदि वैष्णव जे श्रीमहाप्रभुजीना स्वरूपने जाणता हता ते जाणे. तेथी कोइ वैष्णव बोल्या नहीं. बेठा बेठा चुप थइने श्रीआचार्यजीनां दर्शन कर्या करे.

भावप्रकाश—केमके श्रीआचार्यजी आप पूरण पुरुषोत्तम छे. तेथी आपने शरीर धर्म बाधक नथी. मनुष्य देह धारण कर्यो तेथी मनुष्यनी क्रिया जगतमां देखाडे छे. परंतु एमने देहनो धर्म बाधक नथी. एम समजी बधा सेवको त्रण दिवस सुधी बेसी रह्या.

पछी चोथा दिवसे सावधान थइने श्रीआचार्यजीए नेत्र खोल्यां. त्यारे बधा वैष्णव प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—त्यां ए पूर्वपक्ष थाय के रासादिलीलामां मगन त्रण दिवस

मगन तीन दिन तांई क्यों रहे ? सो तहां कहत हैं, जो–रासादिक लीला में तीन ही ठौर मुख्य हैं । जो–श्रीगिरिराज, श्रीवृंदावन और श्रीयमुनाजी । १ श्रीगिरिराज स्वरूप होय सगरी लीला की सामग्री सिद्ध करत हैं । २ श्रीवृंदावन की लीला रसात्मक कुंजविहार में । ३ और श्रीयमुनाजी सब रास को मूल । या प्रकार जल स्थल की लीला हैं । सो एक दिन श्रीगिरिराज संबंधी लीला को अनुभव किये, जो–कंदरा में नाना प्रकार के विलास, चतुर्भुजदासजी गाये हैं–' श्रीगोवर्द्धनगिरि सघन कंदरा । ' आदि । दूसरे दिन वृंदावन लीला, और तीसरे दिन श्रीयमुनाजी की पुलिन (में) रास जलविहारादि । या प्रकार तीन दिनलों तीनों रसको अनुभव किये । ता पाछें भूमि पर भक्तिमारग प्रकट करिकें अनेक जीवन कों सरन लेकें लीलारस को अनुभव करवावनो है, सो चौथे दिन श्रीआचार्यजी आपु नेत्र खोलि के सावधान भये ।

तब परमानंददासजी अपने मनमें डरपे, जो–ऐसे पद फेरि कबहूं नाहीं गाऊंगो ।

भावप्रकाश—सो परमानंददासजी यासों डरपे, जो–श्रीआचार्यजी आपु रसको अनुभव करिके कदाचित् लीलारस में मगन होइ जांय । सो भूमि पर पधारिवे को मन न करें तो यह दैवीजीवन कौ उद्धार कौन भांति सों होयगो ?

સુધી કેમ રહ્યા ? ત્યાં કહે છે કે રાસાદિલીલામાં ત્રણજ જગા મુખ્ય છે શ્રીગિરિરાજજી, શ્રીવૃંદાવન અને શ્રીયમુનાજી. શ્રીગિરિરાજજી સ્વરૂપે બધી લીલાની સામગ્રી સિદ્ધ કરે છે. શ્રીવૃંદાવનની લીલા રસાત્મક કુંજ વિહારમાં અને શ્રીયમુનાજી બધા રાસનું મૂલ. એ પ્રકારે જલ સ્થલની લીલા છે. તે એક દિવસ શ્રીગિરિરાજજી સંબંધી લીલાનો અનુભવ કર્યો ? એટલે કંદરામાં નાના પ્રકારનો વિલાસ. ચતુર્ભુજદાસજીએ ગાયું છે. ' શ્રી ગોવર્દ્ધનગિરિ સઘનકંદરા રેન નિવાસ કિયો પિય પ્યારી ' આદિ. બીજા દિવસે વૃંદાવન લીલા અને ત્રીજા દિવસે શ્રીયમુનાજીના પુલિનમાં રાસ જલવિહારાદિ. આ પ્રકારે ત્રણ દિવસ સુધી ત્રણે રસનો અનુભવ કર્યો. તે પછી ભૂમિ પર ભક્તિમાર્ગ પ્રકટ કરવાને અનેક જીવોને શરણે લઇને લીલારસનો અનુભવ કરાવવો છે તેથી ચોથા દિવસે શ્રીઆચાર્યજી આપ નેત્ર ખોલીને સાવધાન થયા.

ત્યારે પરમાનંદદાસ પોતાના મનમાં ડર્યા કે આવાં પદ ફરી કદીય નહીં ગાઉં.

ભાવપ્રકાશ—તે પરમાનંદદાસ એથી ડર્યા કે શ્રીઆચાર્યજી પોતે રસનો અનુભવ કરીને કદાચિત લીલારસમાં મગન થઇ જાય તો ભૂમિ ઉપર પધારવાનું મન ન કરે તો આ દૈવીજીવોનો ઉદ્ધાર કેવી રીતે થશે ? તેથી પરમાનંદદાસે પોતાના મનમાં વિચાર

तासों परमानंददास ने अपुने मन में विचार कियो, जो–अब मैं फेरि विरह को पद श्रीआचार्यजी आगे नाहीं गाऊंगो। सो काहेंते? जो–श्रीआचार्यजी आपु विरहात्मक स्वरूप हैं। सर्वोत्तममें श्रीगुसांईजी आपु श्रीआचार्यजी को नाम कहे हैं 'जो–विरहानुभवैकार्थ सर्वत्यागोपदेशकः' सो विरहरसके अनुभवके अर्थ सर्व लौकिक में त्याग किये, सो उपदेश करत हैं। यामें विरह को स्वरूप जतायें। विरह दसा में लौकिक वैदिक की कछु सुधि न रहे सो तब विरह भयो जानिये।

ता पाछें परमानंददास ने सूधे पद गाये। सो पद—

राग रामकली—माईरी! हों आनंद मंगल गाऊं। गोकुलकी चिंतामणि माधौ जों मांगों सो पाऊं॥ १॥ जब तें कमल नैन व्रज आए सकल संपदा बाढी। नंदराय के द्वारे देखो अष्ट महासिद्धि ठाढी॥ २॥ फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजे। मांग्यो मेह ईंद्र बरसावे कृष्ण कृपा तें जीजे॥ ३॥ कहत जसोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे। 'परमानंद' को ठाकुर मुरली मनोहर भावे॥ ४॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके पोढ़े, तब सब वैष्णव महाप्रसाद लियो। ता पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले के श्रीआचार्यजी आगे यह पद गाये—

राग गोरी—बिमल जस वृन्दावन के चंद कौ। कहा प्रकास सोम सूरज कौ जो मेरे गोविंद कौ॥ १॥ कहति जसोदा औरन आगे वैभव आनंद-कंद कौ। खेलत फिरत गोप-बालक संग ठाकुर 'परमानंद' कौ॥ २॥

ता पाछे परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—चलि सखी नंदगाम जाइ बसिए। खरिक-खेलत व्रजचंद जु सों हसिए॥ १॥ बसि नठेन सबै सुख माई, एक कठिन दुख दूर कन्हाई॥ २॥ माखन चोरत दुरि दुरि देखों, सजनी जनम सुफल कर लेखों॥ ३॥ जलचर लोचन छिनु छिनु प्यासा। कठिन प्रीति परमानंददासा॥ ४॥

कर्यो के हवे हुं फरी विरहनुं पद श्रीआचार्यजी आगळ नहीं गाउं. केमके श्रीआचार्यजी पोते विरहात्मक स्वरूप छे. सर्वोत्तममां श्रीगुसांइजी पोते श्रीआचार्यजीनुं नाम कहे छे के 'विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः' विरहरसना अनुभवअर्थे लौकिकमां बधुं त्याग कर्युं. तेवो उपदेश करे छे. एमां विरहनुं स्वरूप जणाव्युं. विरहदशामां लौकिक वैदिकनी कंइ सुध न रहे त्यारे विरह थयो जाणिए.

ते पछी परमानंददासे सीधां पद गायां. ते पद– 'माइरी हों आनंद मंगल गाउं' (उपर जुओ) ते पछी श्रीआचार्यजी पोते भोजन करीने पोढया त्यारे बधा वैष्णवोए महाप्रसाद लीधो. ते पछी परमानंददासे महाप्रसाद लइने श्रीआचार्यजी आगळ आ पद गायुं. 'विमलजश वृंदावनके चंदको' (उपर जुओ) ते पछी पर-

यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–अब व्रज कों चलिये। पाछें परमानंददास ने जो सेवक किये हते, तिन सबन कों श्रीआचार्यजी के पास लाय बिनती कीनी, जो–महाराज! इन जीवन कों अंगीकार करिये। तब श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सों कहे, जो–इनकों तुम नाम सुनाय के सेवक किये हैं, तातें अब हम पास तुम इनकों सेवक क्यों करावत हो? तब परमानंददास कहे, जो–महाराज! यह तो पहली दसा में स्वामीपनो हतो, तासों सेवक किये हते। और अब तो मैं आप को दास हों। 'स्वामीपद' तो जो स्वामी हैं तिनही कों सोहत है। दास होय स्वामीपद चाहे सो मूरख है। तासों में अज्ञान दसा में सेवक किये, सो अब आप इन कों सरन लेके उद्धार करिये। तब सबन कों श्रीआचार्यजी ने नाम सुनाय सेवक किये। ता पाछे सब वैष्णवन कों संग ले कनौज सों व्रज में पधारे। सो कछुक दिन में श्रीगोकुल पधारे। सो गोविंदघाट ऊपर स्नान करिके छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी आपु अपनी बैठकमें आय बिराजे। सो एक भीतर बैठक श्रीद्वारकानाथजी के मंदिर के पास है, तहां रात्रि कों श्रीआचार्यजी के विश्राम करिवे की ठोर है। सो आपु जब श्रीगोकुल पधारते, तब आपु उहां उतरते। सो यह

માનંદદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ 'ચલિ સખી નંદગામ જાય વસિયે' (ઉપર જુઓ). તે પદ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે હવે વ્રજમાં ચાલિએ. પછી પરમાનંદદાસે જે સેવક કર્યા હતા તે બધાને શ્રીઆચાર્યજી પાસે લાવીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આ જીવોને અંગીકાર કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે પરમાનંદદાસને કહે, કે આમને તમે નામ સંભળાવી સેવક કર્યા છે તેથી હવે અમારી પાસે એમને સેવક કેમ કરાવો છો? ત્યારે પરમાનંદદાસ કહે, કે મહારાજ! આ તો પહેલી દશામાં સ્વામીપણું હતું તેથી સેવક કર્યા હતા. અને હવે તો હું આપનો દાસ છું. 'સ્વામી પદ' તો જે સ્વામી છે તેમનેજ શોભે છે. દાસ થઇ સ્વામી પદ ચાહે તે મૂરખ છે. તેથી મેં અજ્ઞાન દશામાં સેવક કર્યા. હવે આપ આમને શરણે લઇ ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે બધાને શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવી સેવક કર્યા. તે પછી બધા વૈષ્ણવોને સંગ લઇ કનોજથી વ્રજમાં પધાર્યા. તે કેટલાક દિવસે શ્રીગોકુલ પધાર્યા. ત્યાં ગોવિંદ ઘાટ ઉપર સ્નાન કરીને શમી વૃક્ષની નીચે શ્રીઆચાર્યજી પોતે પોતાની બેઠકમાં આવી બિરાજ્યા. એક અંદર બેઠક શ્રીદ્વારકાનાથજીના મંદિરની પાસે છે. ત્યાં રાત્રિએ શ્રીઆચાર્યજીને વિશ્રામ કરવાની જગા છે જ્યારે આપ શ્રીગોકુલ પધારતા ત્યારે ત્યાં ઉતરતા. આ અંદ-

भीतर की बैठक है। सो श्रीआचार्यजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों पालने झुलाय दधिकादो जन्माष्टमी को उत्सव किये हैं। सो ऊपर गज्जनधावन की वार्ता में बरनन करि आये हैं। सो श्रीआचार्यजी आपु स्नान करि छोंकर के नीचे अपनी बैठक में बिराजे हते। तब सब वैष्णव परमानंददास सहित स्नान करि प्रभुनके (श्रीआचार्यजी के) पास बैठे हते। पाछें श्रीआचार्यजीने श्रीयमुनाष्टक को पाठ परमानंददासकों सिखाये तब परमानंददास के हृदय में श्रीयमुनाजी को स्वरूप स्फुरयो। सो श्रीयमुनाजी को जस बरनन कियो। सो पद–

राग रामकली—श्रीयमुनाजी ! यह प्रसाद हों पाऊं। तिहारे निकट रहों निसबासर रामकृष्ण गुन गाऊं ॥ १ ॥ मज्जन करों बिमल जल पावन चिंता कलह बहाऊं। तिहारी कृपा तें भानु की तनया हरि पद प्रीत बढाऊं ॥ २ ॥ बिनती करों यही वर मांगों अधम संग बिसराऊं। 'परमानंद' चारि फलदाता मदनगोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥

राग रामकली—श्रीयमुनाजी दीन जानि मोहि दीजे। नंद को लाल सदा वर मांगो गोपिन की दासी मोहि कीजे ॥ १ ॥ तुम हो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी। तिहारे बस सदा लाडिलीवर वर्तत निर्तत गिरिवरधारी ॥ २ ॥ व्रजनारी सब खेलति हरिसंग अद्भुतरास बिलासी। तिहारे पुलिन मधि कुंज द्रुम कमल पुहुप सुखरासी ॥ ३ ॥ श्रमजल भरि न्हात व्रजसुंदरि जलक्रीडा सुखकारी। मनहु तारा मध्य चंद बिराजत भरि भरि छिरकत नारी ॥ ४ ॥ रानी जू के पांइ परों नित्य गृह-कारज सब कीजे। 'परमानंददास' दासी व्है चरन कमल सुख दीजे ॥५॥

राग रामकली—कालिंदी कलि-कलमष हरनी। रवितनया जम-अनुजा स्यामा महासुन्दरी गोविंद घरनी ॥ १ ॥ जै जमुने श्रीकृष्णवल्लभा पतितन कों पावन भव तरनी। सरनागत कों देति अभयपद जननी तजत जैसे सुत की करनी ॥ २ ॥ सीतल मंद सुगंध सुधानिधि धारा धरि वपु उतरी धरनी। 'परमानंद प्रभु' परम पावनी जुग जुग साखि निगम नित बरनी ॥ ३ ॥

રની બેઠક છે. શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને પાલને ઝુલાવી દધિકાદવ (થી) જન્માષ્ટમીનો ઉત્સવ કર્યો છે. તે ઉપર ગજ્જન ધાવનની વાર્તામાં કહી આવ્યા છીએ. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી પોતે સ્નાન કરી છોંકરની નીચે પોતાની બેઠકમાં બિરાજ્યા હતા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ પરમાનંદદાસ સહિત સ્નાન કરી પ્રભુની પાસે બેઠા હતા. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીયમુનાષ્ટકનો પાઠ પરમાનંદદાસને શિખાવ્યો. ત્યારે પરમાનંદદાસના હૃદયમાં શ્રીયમુનાજીનું સ્વરૂપ સ્ફુર્યું. એટલે શ્રીયમુનાજીનો યશ વર્ણન કર્યો. તે પદ (૧) શ્રીયમુનાજી યહ પ્રસાદ હોં પાઉં. (૨) શ્રીયમુનાજી દીન

ऐसे पद परमानंददासनें श्रीआचार्यजी के आगे श्रीयमुनाजी के तटपैं गाये। तब श्रीआचार्यजी आपु प्रसन्न होय के परमानंददास कों श्रीगोकुल की बाललीला के दरसन करवाये। सो बाललीला विशिष्ट परमानंददास कों ऐसे दरसन भये, जो–व्रजभक्त श्रीयमुना-जल भरत हैं, और श्रीठाकुरजी आप व्रजभक्तन सों नाना प्रकारकें ख्याल लीला करि सुख देत हैं। सो परमानंदास लीला के दरसन करि ऐसे पद श्रीआचार्यजी के आगे गाये। सो पद—

राग बिलावल—श्रीयमुनाजल घट भरि ले चली श्रीचंद्रावलि नारि। मारग में खेलत मिले श्रीघनस्याम मुरारि ॥ १ ॥ नैनन सों नैना मिले मन रह्यो हैं लुभ्याई। मोहन मूरति मन बसी पग धर्‍यो न जाई ॥ २ ॥ मन की प्रीति प्रगट भई यह पहेली भेट। 'परमानंद' ऐसें मिली जैसें गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग—लाल नेक टेको मेरी बहियां। औघट घाट भर्‍यो नहीं जाई रपटन हों कालिंदी महियां ॥१॥ सुन्दरस्याम कमल दल लोचन देखि स्वरूप ग्वालिनि अरुझानी। उपजी प्रीति काम अंतरगति तब नागर नागरी पहचानी ॥ २ ॥ हँसि व्रजनाथ गह्यो कर पल्लव जैसे गगरी गिरन न पावे। 'परमानंद' ग्वालि सयानी कमल नैन परसोई भावे ॥ ३ ॥

ता पाछे परमानंददासने श्रीगोकुल की बाललीला के पद बहोत किये। सो जामें श्रीगोकुल को स्वरूप जान्यो परे। सो पद—

राग कान्हरो—गावति गोपी मधु मृदुवानी। जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद जसोदा रानी ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावति गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जग नायक गावत सेस सहस्र मुखरास। मन क्रम वचन प्रीति पद अंबुज अब गावत 'परमानंददास' ॥ ३ ॥

જાનિ મોહી દીજે. (૩) કાલિંદી કલિ કલ્મષહરની. (ઉપર જુઓ) એવાં પદ પરમાનંદદાસે શ્રીઆચાર્યજીની આગળ શ્રીયમુનાજીના તટ ઉપર ગાયાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પ્રસન્ન થઈને પરમાનંદદાસને શ્રીગોકુલની બાલલીલાનાં દર્શન કરાવ્યાં. ત્યારે બાલલીલા વિશિષ્ટ પરમાનંદદાસને એવાં દર્શન થયાં કે વ્રજભક્ત શ્રીયમુનાજલ ભરે છે અને શ્રીઠાકુરજી આપ વ્રજભક્તો સાથે નાના પ્રકારના ખ્યાલ લીલા કરી સુખ દે છે. ત્યારે પરમાનંદદાસે લીલાનાં દર્શન કરી એવાં જ પદ શ્રીઆચાર્યજીની આગળ ગાયાં તે પદ–૧ 'શ્રીયમુના જલ ઘટ ભર લે ચલી' (૨) લાલનેક ટેકો મેરી બહિયાં (ઉપર જુઓ). તે પછી પરમાનંદદાસે શ્રીગોકુલની લીલાનાં પદ ઘણાં કર્યાં. જેમાં શ્રીગોકુલનું સ્વરૂપ જાણ્યું પડે. તે પદ– ૧ 'ગાવત ગોપી મધુ મૃદુ બાની' ૨ 'રાની જસુમતિ ગૃહ આવતિ ગોપીજન' ૩ ગિરિધર

राग कान्हरो— रानी जसुमति गृह आवति गोपीजन। वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमलमुख निरखन ॥ १ ॥ चाहत पकरि देहरी उल्लंघन किलकि किलकि हुलसत मन हि मन। राई लौंन उतारि दुहूंकर वार फेरि डारति तन मन धन ॥ २ ॥ लेति उठाय चांपति हियो भरि प्रेम विवस लागे द्रग ढरकन। चली ले पलना पोढावन कों अरकसाय पोढे सुन्दरघन ॥ ३ ॥ देति असीस सकल गोपीजन चिरजीयो जौंलों गंग यमुन। 'परमानंददास' को ठाकुर भक्तवच्छल भक्तन मनरंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर— गिरिधर सब ही अंग कौ बांकौ। बांकी चाल चलत गोकुल में छेल छबीलो कहां कौ ॥ १ ॥ बांकी भौंह चरन गति बांकी बांकौ हृदयो है ताकौ। 'परमानंददास' कौ ठाकुर कियो खोर ब्रज सांकौ ॥ २ ॥

या भांति परमानंददासने बहोत कीर्तन किये। सो श्रीगोकुल के दरसन करिके परमानंददास कों श्रीगोकुल पै बहोत आसक्ति भई। तब श्रीआचार्यजी के आगे ऐसे प्रार्थनाके पद गाये, जो-मोकों श्रीगोकुल में आपके चरणारविंद के पास राखो, जासों नित्य श्री-ठाकुरजी के दरसन करों, और सगरी लीला कोअनुभव होय।

राग सारंग-यह मांगों जसोदानंदन। चरनकमल मेरो मन मधुकर यह छबि नैनन पाऊं दरसन ॥ १ ॥ चरनकमल की सेवा दीजे दोऊ तन राजत बिज्जुलता घन। नंदनंदन वृषभाननंदिनी मेरे सर्वसु प्रानजीवन धन ॥ २ ॥ व्रज बसिवो जमुनाजल अचिवौ श्रीवल्लभ को दास यहे पन। महाप्रसाद पाऊं हरिगुन गाऊं 'परमानंददास' दासी जन ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—यह मांगों संकर्षन बीर। चरनकमल अनुराग निरंतर भावत हैं भक्तन की भीर ॥ १ ॥ संग देहो तो हरिभक्तन कौ बास वृन्दाबन जमुनातीर। श्रवण देहु तो कृष्णकथारस ध्यान देउ तो स्याम सरीर। मनकामना सकल परिपूरन मज्जन विमल कालिंदी नीर। 'परमानंददास'कौ ठाकुर गोकुल नायक सब विधि धीर ॥

सो ऐसे कीर्तन परमानंददासने प्रार्थना के गाये सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

સઘળી અંગકો બાંકો (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે પરમાનંદદાસે બહુ કીર્તન કર્યાં. પછી શ્રીગોકુલનાં દર્શન કરીને પરમાનંદદાસને શ્રીગોકુલ ઉપર ઘણી આસક્તિ થઇ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીની આગળ એવાં પ્રાર્થનાનાં પદ ગાયાં કે મને શ્રીગોકુલમાં આપના ચરણારવિંદની પાસે રાખો. જેથી નિત્ય શ્રીઠાકુરજીનાં દર્શન કરૂં. અને બધી લીલાનો અનુભવ થાય. તે પદ (૧) 'યહ માંગો જશોદા નંદન ' (૨) 'યહ માંગો સંકર્ષણ વીર '. એવાં કીર્તન પરમાનંદદાસે પ્રાર્થનાનાં ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે પરમાનંદદાસના ઉપર બહુજ પ્રસન્ન થયા.

वार्ता-प्रसंग ३—पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सहित सब वैष्णव समाज लेके श्रीगोकुल तें श्रीगोवर्द्धन पधारे। सो उत्थापन के समय श्रीआचार्यजी आपु श्रीगिरिराज पधारे। तहां स्नान करि श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर पधारे। तब परमानंददास न्हाय के श्रीगिरिराज कों साष्टांग दंडवत करिके पर्वत के ऊपर मंदिर में आय, उत्थापनके दरसन किये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही परमानंददास आसक्त होय रहे। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें परमानंददास सों कहे, जो-परमानंददास! कछू भगवल्लीला के कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनावो। तब परमानंददास अपने मनमें विचार किये, जो-मैं कहा गाऊँ? क्यों जो रसना तो एक है, और श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्वरूप तो अपार है, और इनकी लीला हू अपार है। जो वस्तु स्मरन करों सो ताही में बुद्धि विक्षिप्त होय जात है। परंतु श्रीआचार्यजी की आज्ञा है, तासों कछू गावनो तो सही। सो ऐसो पद गाऊं जामें प्रथम तो अवतार-लीला, पाछें कुंज-लीला, पाछें चरणारविंद की वंदना, पाछें स्वरूप को वर्णन, ता पाछें माहात्म्य सहित श्रीठाकुरजी की लीला होय। सो ऐसो पद गायो। सो पद—

વાર્તા પ્રસંગ-૩—પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે પરમાનંદદાસ સહિત બધા વૈષ્ણવ સમાજને લઇને શ્રીગોકુલથી ગોવર્દ્ધન પધાર્યા. તે ઉત્થાપનના સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ ગિરિરાજ પધાર્યા. ત્યાં સ્નાન કરી શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગિરિરાજજી ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરે પધાર્યા. ત્યારે પરમાનંદદાસે ન્હાઇને શ્રીગિરિરાજજીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કરીને પર્વતના ઉપર મંદિરમાં આવી ઉત્થાપનનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરતાંજ પરમાનંદદાસ આસક્ત થઇ ગયા. તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી આપ શ્રીમુખથી પરમાનંદદાસને કહે, કે પરમાનંદદાસ કંઇ ભગવલ્લીલાનાં કીર્તન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સંભળાવો. ત્યારે પરમાનંદદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે હું શું ગાઉં? કેમ? જે રસના તો એક છે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું સ્વરૂપ તો અપાર છે. વળી એમની લીલા પણ અપાર છે. જે વસ્તુ સ્મરણ કરૂં તેમાંજ બુદ્ધિ વિક્ષિપ્ત થઇ જાય છે. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા છે તેથી કંઇ ગાવું તો ખરૂં. એવું પદ ગાઉં જેમાં પ્રથમ તો અવતાર-લીલા, પછી કુંજ લીલા, પછી ચરણારવિંદની વંદના, પછી સ્વરૂપનું વર્ણન, તે પછી માહાત્મ્ય સહિત શ્રીઠાકુરજીની લીલા હોય. એવું પદ ગાયું

राग बिलावल—मोहन नंदराइ कुमार। प्रकट ब्रह्म निकुंज-नायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरन-सरोज वंदों स्यामघन गोपाल। मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन बिसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत। 'दास परमानंद प्रभु' हरि निगम बोलत नेति ॥ ३ ॥

सो यह प्रार्थना को पद गायके पाछें आसक्ति के पद गाये।

राग आसावरी—माई मेरो माधौ सों मन मान्यो। अपनो मन और वा ढोटा कौ एक-मेक करि सान्यो ॥ १ ॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्योति आपुने आन्यो। एक गोविंदचंद के कारन बैर सबन सों ठान्यो ॥ २ ॥ अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी दूध मिल्यौ ज्यों पान्यौ। 'परमानंद' मिले हैं गिरिधर है पहलो पहचान्यौ ॥३॥

राग गोरी—मैं अपुनो मन हरि सों जोर्‍यो। हरि सों जोरि सबन सों तोर्‍यो १ ॥ आगे पाछे कौ सोच मिट्यो अब बाट मांझ मटुका ले फोर्‍यो। कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोर्‍यो ॥ २ ॥ नवल लाल गिरिधर पिया संग प्रेम रंग में यह तन बोर्‍यो। 'परमानंदप्रभु' लोक हँसन दै विधि-निषेध को नांतौ तोर्‍यौ ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—तिहारी बात मोहि भावति, लाल। बार-बार जसोमति के भवन में यह सुनन हों आवति जाति ॥ १ ॥ पार परोसी अनख करत हैं और कछुक लगावति लाल। ताकी साखि विधाता जाने जिहिं लालच उठि धावति लाल ॥ २ ॥ दधिको मथन अरु गृह को कारज तिहारे प्रेम बिसरावति लाल। 'परमानंद प्रभु' कुंवर भांमतो तुम देखे सचु पावत लाल ॥ ३ ॥

ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेनआरती किये। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग केदारो—पौढे रंगमहल गोविंद। राधिका संग सरद-रजनी उदित पूरनचंद ॥ १ ॥ विविध बिचित्र चित्र चित्रित कोक कोटिक फंद। निरखि निरखि विलास बिलसत दंपति रसकंद ॥ २ ॥ मलयचंदन अंग लेपन परस्पर आनंद। कुसुम विंजना ब्यार ढोरे सजनी 'परमानंद' ॥ ३ ॥

सो एसे पद परमानंददासजीने बहोत गाये। सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये। ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पोढ़ायके अनोसर करि पर्वत नीचे पधारे। तब

તે પદ (૧) 'મોહન નંદરાયકુમાર' (ઉપર જુઓ) એ પ્રાર્થનાનું પદ ગાઇને પછી આસક્તિનાં પદ ગાયાં. (૧) માઇ મેરો માધો સોં મન માન્યો. (૨) મેં અપુનો મન હરિસોં જોર્યો (૩) તિહારી બાત મોહી ભાવત લાલ' (ઉપર જુઓ). તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેન આરતી કરી. તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું એ પદ (૧) 'પોઢે રંગમહલ ગોવિંદ' (ઉપર જુઓ). એવાં પદ પરમાનંદદાસજીએ ઘણાં ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ બહુ પ્રસન્ન થયા. તે પછી શ્રીઆચા-

श्रीआचार्यजीने रामदास भीतरिया सों कह्यो, जो-परमानंददास कों प्रसादी दूध पठाय दीजो। तब रामदासने वह प्रसादी दूध पठायो सो परमानंददास प्रसादी-दूध लेंन लागे, सो तातो लाग्यो। तब सीरो करिके लियो। पाछें परमानंददास श्रीआचार्यजी पास आय दंडवत करिके बैठे। तब श्रीआचार्यजी आप परमानंददास सों पूछे, जो-परमानंददास! महाप्रसादी दूध लियो सो कैसो हतो? तब परमानंददासनें श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! दूध तो तातो हो। तब श्रीआचार्यजीने सब भीतरियान सों बुलाय के पूछ्यो, जो-दूध तातो क्यों भोग धरत हो? सो आछो सुहातो होय तब भोग धरनो। तब सगरे भीतरियानने कही, जो-महाराज! अब ते सुहातो सीरो करिके भोग धरेंगे।

भावप्रकाश—सो परमानंददास कों श्रीआचार्यजी आपु प्रसादी दूध यासों दिवायो, जो-श्रीठाकुरजी कों दूध बहोत प्रिय है। तासों सेवक कों दूध निकुंज-लीला संबंधी रसके दान करन कों, और सामग्री बिगरी सुधरी वैष्णवन द्वारा श्रीठाकुरजी कहत हैं। जो-सामग्री वैष्णव सराहें तब जानिये, जो-श्रीठाकुरजी भली भांति सों अनुभव किये। सो या भावतें दूध दिये।

र्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीने पोढावीने अनोसर करी पर्वत नीचे पधार्या. त्यारे श्री-आचार्यजीए रामदास भीतरियाने कह्युं, के परमानंददासने प्रसादी दूध मोकली देजो. त्यारे रामदासे ते प्रसादी दूध मोकल्युं. त्यारे परमानंददास प्रसादी दूध लेवा लाग्या. ते गरम लाग्युं. त्यारे ठंडु करीने लीधुं. पछी परमानंददास श्रीआचार्यजी पासे आवी दंडवत करीने बेठा त्यारे श्रीआचार्यजी पोते परमानंददासने पूछे, के परमानंददास! महाप्रसादी दूध लीधुं ते केवुं हतुं? त्यारे परमानंददासे श्रीआचार्यजीने कह्युं, के महाराज दूध तो गरम हतुं. त्यारे श्रीआचार्यजीए बधा भीतरियाओने बोलावीने पूछ्युं, के दूध गरम केम भोग धरो छो? सुंदर सुहातु होय त्यारे भोग धरवुं. त्यारे बधा भीतरियाओए कह्युं, के महाराज! हवेथी सुहातु ठंडु करीने भोग धरीशुं.

भावप्रकाश—परमानंददासने श्रीआचार्यजी पोते प्रसादी दूध एथी देवडाव्युं के श्रीठाकुरजीने दूध बहु प्रिय छे तेथी सेवकने दूध निकुंज-लीला संबंधी रसनुं दान करवाने, अने सामग्री बगडी सुधरी वैष्णवो द्वारा श्रीठाकुरजी कहे छे. जे, सामग्री वैष्णव वखाणे त्यारे जाणवुं के श्रीठाकुरजी सारी रीते आरोग्या. ए भावथी दूध आप्युं.

राग बिलावल—मोहन नंदराइ कुमार। प्रकट ब्रह्म निकुंज-नायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरन-सरोज वंदों स्यामघन गोपाल। मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन बिसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत। 'दास परमानंद प्रभु' हरि निगम बोलत नेति ॥ ३ ॥

सो यह प्रार्थना को पद गायके पाछें आसक्ति के पद गाये।

राग आसावरी—माई मेरो माधौ सों मन मान्यो। अपनो मन और वा ढोटा कौ एक-मेक करि सान्यो ॥ १ ॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्योति आपुने आन्यो। एक गोविंदचंद के कारन बैर सबन सों ठान्यो ॥ २ ॥ अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी दूध मिल्यौ ज्यों पान्यौ। 'परमानंद' मिले हैं गिरिधर है पहलो पहचान्यौ ॥३॥

राग गोरी—मैं अपुनो मन हरि सों जोर्यो। हरि सों जोरि सबन सों तोर्यो १ ॥ आगे पाछे कौ सोच मिट्यो अब बाट मांझ मटुका ले फोर्यो। कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोर्यो ॥ २ ॥ नवल लाल गिरिधर पिया संग प्रेम रंग में यह तन बोर्यो। 'परमानंदप्रभु' लोक हँसन दै विधि-निषेध कौ नांतौ तोर्यौ ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—तिहारी बात मोहि भावति, लाल। बार-बार जसोमति के भवन में यह सुनन हों आवति जाति ॥ १ ॥ पार परोसी अनख करत हैं और कछुक लगावति लाल। ताकी साखि बिधाता जाने जिहिं लालच उठि धावति लाल ॥ २ ॥ दधिकौ मथन अरु गृह कौ कारज तिहारे प्रेम बिसरावति लाल। 'परमानंद प्रभु' कुंवर भांमतो तुम देखे सचु पावत लाल ॥ ३ ॥

ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेनआरती किये। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग केदारो—पौढे रंगमहल गोविंद। राधिका संग सरद-रजनी उदित पूरनचंद ॥ १ ॥ विविध बिचित्र चित्र चित्रित कोक कोटिक फंद। निरखि निरखि विलास बिलसत दंपति रसकंद ॥ २ ॥ मलयचंदन अंग लेपन परस्पर आनंद। कुसुम बिंजना ब्यार ढोरे सजनी 'परमानंद' ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद परमानंददासजीने बहोत गाये। सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये। ता पाछें श्रीआचार्यजी श्री-गोवर्द्धननाथजी कों पोढ़ायके अनोसर करि पर्वत नीचे पधारे। तब

તે પદ (૧) 'મોહન નંદરાયકુમાર' (ઉપર જુઓ) એ પ્રાર્થનાનું પદ ગાઇને પછી આસક્તિનાં પદ ગાયાં. (૧) માઇ મેરો માધો સોં મન માન્યો. (૨) મૈં અપુનો મન હરિસોં જોર્યો (૩) તિહારી બાત મોહી ભાવત લાલ' (ઉપર જુઓ). તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેન આરતી કરી. તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું એ પદ (૧) 'પોઢે રંગમહલ ગોવિંદ' (ઉપર જુઓ). એવાં પદ પરમાનંદદાસજીએ ઘણાં ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ બહુ પ્રસન્ન થયા. તે પછી શ્રીઆચા-

चार्यजी आपु स्नान करिके पर्वत ऊपर पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये। तब परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग रामकली—जागो गोपाललाल देखों मुख तेरो। पाछें गृहकाज करों नित्य नेम मेरो ॥ १ ॥ बिगसत निसा अरुन दिसा उदित भयो भान। गुंजत अली पंकज वन जागिए भगवान ॥ २ ॥ द्वारें ठाढे वंदीजन करत हैं उच्चार। वंस प्रसंस गावत है हरि-लीला अवतार ॥ ३ ॥ 'परमानंदस्वामी' गोपाल जगत मंगल रूप। वेद पुरान पढत ज्ञान महिमा अनूप ॥ ४ ॥

राग रामकली—लाल को मुख देखन हों आई। कालिह मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो है बिकाई ॥ १ ॥ दिनतें दूनो लाभ भयो घर काजर वछिया जाई। आई हों धाय थँमाय साथकीन मोहन देहु जगाई ॥ २ ॥ सुनि त्रिय वचन वे हँसि वैठे नागरी निकट बुलाई। 'परमानंद' सयानि ग्वालिन सेन संकेत बताई ॥३॥

राग रामकली—ग्वालिन पिछवारें व्है बोल सुनायो। कमलनैन प्यारो करत कलेऊ कोर न मुख लों आयो ॥ १ ॥ अरी मैया एक वन व्याई गैया वछरा उहाँई वसायो। मुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ॥ २ ॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आइ कैंधों सुपनो पायो। फूले अंगन माय रसिकवर त्रिभुवन-राय सिर-छत्र जु छायो ॥ ३ ॥ वैठे जाइ निकुंज सदन में विविध भांति कियो मन भायो। 'परमानंद' सयानी ग्वालिन उलटि अंक गिरिधर पिय पायो ॥ ४ ॥

सो या प्रकार के पद परमानंददासने बहोत गाये। ता पाछे श्रीआचार्यजी ने परमानंददास कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा दीनी। सो नित्य नये पद करिके परमानंददास श्रीनाथजी कों सुनावते।

वार्ता-प्रसंग ४—एक दिन एक राजा अपनी रानी कों संग लेके व्रज में यात्रा करिवे आयो। वह राजा श्रीआचार्यजी को सेवक हतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिके डेरान में आइके वा

ભવ કર્યો. તે બહુ કીર્તન ગાયાં. તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વત ઉપર પધાર્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાડ્યા ત્યારે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયાં તે પદ-(૧) જાગો ગોપાલલાલ દેખોં મુખ તેરો (૨) લાલકો મુખ દેખન કોં આઇ (૩) ગ્વાલિન પિછવારે વ્હે બોલ સુનાયો (ઉપર જુઓ) એ પ્રકારનાં પદ પરમાનંદદાસે ઘણાં ગાયાં. તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ પરમાનંદદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં કીર્તનની સેવા આપી. પછી નિત્ય નવાં પદ કરીને પરમાનંદદાસ શ્રીનાથજીને સંભળાવતા.

વાર્તા પ્રસંગ-૪—એક દિવસ એક રાજા પોતાની રાણીને સાથે લઇને વ્રજમાં યાત્રા કરવા આવ્યો. તે રાજા શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હતો. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં

तापाछें परमानंददास कों दूध अधरामृत पिये तें सगरी रात्रि लीला-रस को अनुभव भयो। तब रात्रि की लीला में मगन होय के ये पद गाये। सो पद—

राग कान्हरो—आनंदसिंधु बढ्यो हरितन में। श्रीराधा पूरन ससि मुख निरखत उमगि चल्यो व्रज वृन्दावन में ॥१॥ इत रोक्यो यमुना उत गोपी कछु इक फैल पर्‌यो त्रिभुवन में। ना परस्यो कर्मठ अरु ज्ञानी अटकि रह्यो रसिकन के मन में ॥२॥ मंद मंद अवगाहत बुद्धिबल भक्त हेत लीला छिन छिन में। कछु एक लह्यो नंदसुवन कृपातें सो देखियत 'परमानंद' जन में ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—पिय मुख देखत ही रहिये। नैनन को सुख कहत न आवे जा कारन दुःख सब हि सहिए ॥ १ ॥ सुनो गोपाललाल पाँइ लागों भली पोच ले बहिए। हों आसक्त भई या रूप हि बड़े भागि तें लहिए ॥ २ ॥ तुम बहुनायक चतुरसिरोमनि मेरी बांह दृढ गहिए। 'परमानंदस्वामी' मनमोहन तुमहि पें निरबहिए ॥३॥

राग गोरी—कौन रस गोपिन लीनो घूंट। मदन गोपाल निकट कर पाए प्रेम काम की लूंट ॥ १ ॥ निरखि रूप नंदनंदन को लोकलाज गई छूटि। 'परमानंद' वेद सागर की मर्यादा गई तूट ॥ २ ॥

राग गोरी—यातें माई भवन छांडि बन जैए। अखि-रस कनरस बत-रस सब रस नंदनंदन पें पैये ॥ १ ॥ कर पल्लव गहि कंठ बाहु धरि संग मिले गुन गैये। रास बिलास बिनोद अनूपम माधौ के मन भैये ॥२॥ यह सुख सखी कहत नहिं आवे देखत दुःख बिसरैये। 'परमानंदस्वामी' को संगम भाग्य बडे तें पैये ॥३

राग हमीर—अमृत निचोय कियो इकठौर। तेरो बदन सुधारि सुधानिधि तब तें विधना रचि न और ॥ १ ॥ सुनि राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए हैं चकोर। सादर पान करत तुव आनन तृषित काम बस नंद किसोर ॥ २ ॥ कौन कौन अंग करोंरी निरूपन नवगुन सील रूपकी रासि। 'परमानंद प्रभु' को चित्त चोर्‌यो लोचन बँधे प्रेम की प्यास ॥ ३ ॥

राग विहागरो—यह तन नवल कुंवर परवारों। नव निकुंज में गौरस्याम तन बारंबार निहारों ॥ १ ॥ इतनी टहल कृपा करि दीजे संग मिलि जीव उधारों। 'परमानंदस्वामी' के मिले बिनु और काज सब वारों ॥ २ ॥

सो या भांति परमानंददासने सगरी रात्रि लीलाको अनुभव कियो, सो बहुत कीर्तन गाये। ता पाछे प्रातःकाल भयो तब श्रीआ-

---

તે પછી પરમાનંદદાસને દૂધ પીવાથી આખી રાત્રિ લીલા રસનો અનુભવ થયો. રાત્રિની લીલામાં મગન થઇને આ પદ ગાયાં. તે પદ (૧) આનંદ સિંધુ બઢયો હરિ તનમેં (૨) પિય મુખ દેખતહી રહીયે (૩) કૌન રસ ગોપિન લીનો ઘૂંટ (૪) યાતેં માઇ ભવન છાંડિ બન જૈયે (૫) અમૃત નિચોઇ કિયો ઇકઠૌર (૬) યહ તન નવલ કુંવર પર વારોં (ઉપર જુઓ) એ પ્રકારે પરમાનંદદાસે આખી રાત્રિ લીલાનો અનુ-

चार्यजी आपु स्नान करिके पर्वत ऊपर पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये। तब परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग रामकली—जागो गोपाललाल देखों मुख तेरो। पाछें गृहकाज करों नित्य नेम मेरो ॥ १ ॥ विगसत निसा अरुन दिसा उदित भयो भान। गुंजत अली पंकज वन जागिए भगवान ॥ २ ॥ द्वारें ठाढे वंदीजन करत हैं उच्चार। वंस प्रसंस गावत है हरि-लीला अवतार ॥ ३ ॥ 'परमानंदस्वामी' गोपाल जगत मंगल रूप। वेद पुरान पढत ज्ञान महिमा अनूप ॥ ४ ॥

राग रामकली—लाल को मुख देखन हों आई। काल्हि मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो है विकाई ॥ १ ॥ दिनतें दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई। आई हों धाय थँमाय साथकीन मोहन देहु जगाई ॥ २ ॥ सुनि प्रिय वचन वे हँसि वैठे नागरी निकट बुलाई। 'परमानंद' सयानि ग्वालिन सेन संकेत बताई ॥३॥

राग रामकली—ग्वालिन पिछवारे व्है बोल सुनायो। कमलनैन प्यारो करत कलेऊ कोर न मुख लों आयो ॥ १ ॥ अरी मैया एक वन व्याई गैया बछरा उटाँई बसायो। मुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरबराय कोऊ सखा न बुलायो ॥ २ ॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आइ कैंधों सुपनो पायो। फूले अंगन माय रसिकवर त्रिभुवन-राय सिर-छत्र जु छायो ॥ ३ ॥ वैठे जाइ निकुंज सदन में विविध भांति कियो मन भायो। 'परमानंद' सयानी ग्वालिन उलटि अंक गिरिधर पिय पायो ॥ ४ ॥

सो या प्रकार के पद परमानंददासने बहोत गाये। ता पाछे श्रीआचार्यजी ने परमानंददास कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा दीनी। सो नित्य नये पद करिके परमानंददास श्रीनाथजी कों सुनावते।

वार्ता-प्रसंग ४—एक दिन एक राजा अपनी रानी कों संग लेके व्रज में यात्रा करिवे आयो। वह राजा श्रीआचार्यजी को सेवक हतो। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिके डेरान में आइके वा

ભવ કર્યો. તે બહુ કીર્તન ગાયાં. તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વત ઉપર પધાર્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાડ્યા ત્યારે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયાં તે પદ-(૧) જાગો ગોપાલલાલ દેખોં મુખ તેરો (૨) લાલકો મુખ દેખન કોં આઇ (૩) ગ્વાલિન પિછવારે વ્હે બોલ સુનાયો (ઉપર જુઓ) એ પ્રકારનાં પદ પરમાનંદદાસે ઘણાં ગાયાં. તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ પરમાનંદદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં કીર્તનની સેવા આપી. પછી નિત્ય નવાં પદ કરીને પરમાનંદદાસ શ્રીનાથજીને સંભળાવતા.

વાર્તા પ્રસંગ-૪—એક દિવસ એક રાજા પોતાની રાણીને સાથે લઇને વ્રજમાં યાત્રા કરવા આવ્યો. તે રાજા શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક હતો. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં

राजानें अपनी रानी सों कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन बहुत सुंदर है, सो तू गिरिराज पर जायके श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आव। तब रानीनें राजासों कह्यो, जो–जैसे हमारी रीत है, तैसे परदान में दरसन होय तो मैं करूं। तब राजानें रानी सों कही, जो ये ब्रज के ठाकुर हैं सो श्रीठाकुरजी के दरसन में परदा को कहा काम है ? सो ये ठाकुर ब्रज के हैं सो काहू को परदा राखत नाहीं। या प्रकार राजा ने रानी कों बहोत समझाई, पर रानी ने राजा को कह्यो मान्यो नाहीं। तब राजा ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो–महाराज ! मैंने रानी कों बहोत समुझायो, परन्तु वह मानत नाहीं, जो वह परदा में दरसन कियो चाहत है। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–वाको परदा में ही ले आव, जो सबतें पहले दरसन करवाय देंगे। तब रानी परदान में आई और श्रीनाथजी के दरसन करन लागी। तब श्रीनाथजी (भक्तोद्धारक स्वरूप सों) सिंहासन सों उठिके सिंहपौरि के किंवाड़ खोलि दिये सो भीड़ वा रानी के ऊपर परी। सो वाके देह के सब वस्त्र निकसि गये। तब रानी बहोत लज्जित भई। सो जब राजा सों रानी ने डेरान में आयके सब समाचार कहे। तब राजा ने रानी सों कही, जो–मैं तोसों पहले ही

દર્શન કરીને ડેરામાં આવીને તે રાજાએ પોતાની રાણીને કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન બહુ સુંદર છે. તું શ્રીગિરિરાજ ઉપર જઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરી આવ. ત્યારે રાણીએ રાજાને કહ્યું, કે જેવી અમારી રીત છે તે રીતે પડદામાં દર્શન હોય તો હું કરૂં. ત્યારે રાજાએ રાણીને કહ્યું, કે વ્રજના ઠાકુર છે તે ઠાકુરના દર્શનમાં પડદાનું શું કામ છે ? એ ઠાકુર વ્રજના છે એ કોઇનો પડદો રાખતા નથી. એ પ્રકારે રાજાએ રાણીને બહુ સમજાવી, પરંતુ રાણીએ રાજાનું કહ્યું માન્યું નહીં. ત્યારે રાજાએ શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! મેં રાણીને બહુ સમજાવી પરંતુ એ માનતી નથી. એ પડદામાં દર્શન કરવાને ચાહે છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે એને પડદામાં જ લઇ આવો. બધાનાં પહેલાં દર્શન કરાવી દઇશું. ત્યારે રાણી પડદામાં આવી અને શ્રીનાથજીનાં દર્શન કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીનાથજીએ (ભક્તોદ્ધારક સ્વરૂપથી) સિંહાસનથી ઉઠીને સિંહપોરનાં કમાડ ખોલી દીધાં. એટલે ભીડ એ રાણી ઉપર પડી. તેથી એના દેહનાં બધાં વસ્ત્ર નિકળી ગયાં. ત્યારે રાણી બહુ લજ્જિત થઇ. પછી જ્યારે રાજાને રાણીએ ડેરામાં આવીને બધા સમાચાર કહ્યા ત્યારે રાજાએ રાણીને કહ્યું, કે મેં તને પહેલાં જ કહ્યું હતું કે એ શ્રીનાથજી વ્રજના ઠાકુર છે. એમણે

कह्यो हतो, जो–ये श्रीनाथजी व्रज के ठाकुर हैं, सो इनने काहू को परदा राख्यो नाहीं है। ता समय परमानंददास यह पद गावत हते, सो वाकी एक तुक कही हती। सो पद—

'कौन यह खेलिवे की वानि।
मदन गोपाललाल काहू की राखत नांहिन कानि०॥'

सो यह सुनिके श्रीआचार्यजी परमानंददास कों वरजे, जो–ऐसे न कहिये, यासों ऐसे कहो, जो–'भली यह खेलिवे की वानि।'

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो–अब ही परमानंददास कों दास पदवी दिये हैं। सो दासभाव सों रहे, और बोले, तो प्रभु आगे कृपा करें। जब सख्य भाव दृढ़ होय, तब बराबरी सों वार्ता होय। तासों बिना अधिकार अधिक भाव नाहीं है। जो–करे तो नीचे गिरे। सो जब श्रीठाकुरजी सरल भाव को दान करें, तब ही बने। दूसरो आसय, श्रीआचार्यजी आपु आपनो स्नेह श्रीगोवर्द्धननाथजी में राखे सो सर्वोपरि दिखाये, जो–स्नेही सों ऐसे न बोले। जो–कार्य सनेही प्रीति सों न करे सो तासों हू कहिये, जो–भलो कार्य किये। ऐसी सनेह की रीति है। तासों श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों वरजे–'कौन यह खेलिवे की बानि०।' या भाँति सों कबहू न कहिये। कहिवे, बरजिवे लायक तो व्रजभक्त हैं, सो तासों चाहै तैसें बोलें। तासों तुम ऐसे कहो जो–'भली यह खेलिवे की बानि।'

तब परमानंददास ने ऐसे ही पद गायो। सो पद—

કોઈનો પડદો રાખ્યો નથી. તે સમય પરમાનંદદાસ આ પદ ગાતા હતા એની એક તુક કહી હતી. તે પદ :—' કૌન યહ ખેલિવેકી બાન। મદનગોપાલલાલ કાહુકી રાખત નાહીં'ન કા'નિ ' એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજીએ પરમાનંદદાસને રોકયા કે એમ ન કહીએ એથી એમ કહો કે, ' ભલી યહ ખેલવેકી બાન '

ભાવપ્રકાશ—તે શાથી ? કે હમણાં જ પરમાનંદદાસને દાસ પદવી આપી છે એ દાસ ભાવથી રહે. અને બોલે તો પ્રભુ આગળ કૃપા કરે. જ્યારે સખ્યભાવ દૃઢ હોય ત્યારે બરાબરીથી વાર્તા થાય. તેથી વિના અધિકાર અધિક ભાવ ન કરવો. જો કરે તો નીચે પડે એથી જ્યારે શ્રીઠાકુરજી સરળ ભાવનું દાન કરે ત્યારેજ બને. બીજો આશય, શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પોતાનો સ્નેહ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીમાં રાખ્યો છે તે સર્વોપરી દેખાડયો, કે સ્નેહીથી એમ ન બોલવું. જો, કાર્ય સ્નેહી પ્રીતિથી ન કરે તેને પણ કહીએ કે સારું કાર્ય કર્યું. એવી સ્નેહની રીતિ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પરમાનંદદાસને રોકયા. ' કૌન યહ ખેલિવેકી બાન ' એ પ્રકારે કદી ન કહીએ. કહેવા, રોકવા લાયક તો વ્રજભક્ત છે તેથી ચાહે તેમ બોલે. તેથી તમે એમ કહો કે ' ભલી યહ ખેલવેકી બાન '

राग सारंग—भली यह खेलिवेकी बानि । मदनगुपाललाल काहूकी राखत नाहीन कानि ॥ १ ॥ अपने हाथ ले देत बनचरन हि दूध भात घृत सानि । जो वरजों तो आंख दिखावे पर घर कूदन-दानि ॥ २ ॥ सुनरि जसोदा सुत के करतब यह ले माट मथानि । फोड़ि ढोरि दधि डारि अजिर में कौन सहे नित हानि ॥ ३ ॥ ठाढी हँसति नंदजूकी रानि मूंदि कमल मुख पानि । 'परमानंददास' इह जाने वालि बूझि र्धों आनि ॥ ४ ॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—या प्रकार सहस्त्रावधि कीर्तन परमानंददास ने किये। तासों परमानंददास के पदन में बाल लीला भाव, (और) रहस्य हू झलकत है। सो जा लीला को अनुभव परमानंददास कों भयो, ताही लीला के पद परमानंददास गाये। परन्तु श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों बाललीला रस को दान हृदय में कियो है, तासों बाललीला गूढ़ पदन में हू झलकत है।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक दिन सगरे भगवदीय सूरदासजी, कुंभनदासजी तथा रामदास आदि सब वैष्णव मिलिके जहां परमानंददास रहत हते तहाँ इनके घर आये। सो सब भगवदीय कों अपने घर आये देखिके परमानंददास अपने मन में बहोत प्रसन्न भये, जो—आज मेरो बड़ो भाग्य है। सो सब भगवदीय मेरे ऊपर कृपा करिके पधारे, ये भगवदीय कैसे हैं, जो—साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्वरूप ही हैं, तासों आज मो ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी नें बड़ी कृपा करी है।

ત્યારે પરમાનંદદાસે એમજ પદ ગાયું તે પદ–'ભલી યહુ ખેલિવેકી બાન' (ઉપર જુઓ.)

એ પદ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી બહુ પ્રસન્ન થયા.

ભાવપ્રકાશ—એ પ્રકારે સહસ્રાવધિ કીર્તન પરમાનંદદાસે કર્યા તેથી પરમાનંદદાસનાં પદોમાં બાલલીલાભાવ અને રહસ્ય પણ ઝલકે છે. જે લીલાનો અનુભવ પરમાનંદદાસને થયો તેજ લીલાનાં પદ પરમાનદદાસે ગાયાં. પરંતુ શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે પરમાનંદદાસને બાલલીલારસનું દાન કર્યું છે. તેથી બાલલીલા ગૂઢ પદોમાં પણ ઝળકે છે.

વાર્તા–પ્રસંગ ૫-વળી એક દિવસે બધા ભગવદીયો સૂરદાસજી, કુંભનદાસજી, તથા રામદાસ આદિ બધા વૈષ્ણવો મળીને જ્યાં પરમાનંદદાસ રહેતા હતા ત્યાં એમના ઘરે આવ્યા ત્યારે બધા ભગવદીયોને પોતાના ઘરે આવ્યા જોઇને પરમાનંદદાસ પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થયા, કે આજ મારૂં મોટું ભાગ્ય છે. બધા ભગવદીયો મારા ઉપર કૃપા કરીને પધાર્યા. આ ભગવદીયો કેવા છે ? કે સાક્ષાત્ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું સ્વરૂપ છે. તેથી આજે મારા ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ મહાન કૃપા કરી છે.

भावप्रकाश—सो काहेत ? जो-अनेक रूप होयके श्रीठाकुरजी मेरे घर पधारे हैं। सो भगवदीय के हृदय में श्रीठाकुरजी आपु बिराजत हैं, तासों मेरे बड़े भाग्य हैं। अब मैं कृतकृत्य होय गयो, जो सब भगवदीय कृपा किये हैं। सो प्रथम तो इन भगवदीयन की न्योछावरि करी चाहिये। सो ऐसी कहा वस्तु है ? जासों सब भगवदीयन की न्योछावरि होय ?

पाछें परमानंददास ने भगवदीय वैष्णवन सों मिलिकें ऊँचे आसन बैठारि के यह पद गायो। सो पद—

राग विहागरो—आए मेरे नंदनंदन के प्यारे। माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ॥ १ ॥ प्रेम सहित उर बसत निरंतर नेक हू टरत न टारे। हृदै कमल के मध्य विराजत श्रीव्रजराज दुलारे ॥ २ ॥ कहा जानों कौन पुन्य उदय भयो मेरे घर जु पधारे, 'परमानंद' करत न्योछावरि वारि वारि वहो वारे ॥ ३ ॥

ता पाछें दूसरो पद गायो। सो पद—

राग विहागरो—हरिजन संग छिनक जो होई। करें कृपा गिरिधरन जीव पर पातक रहे न कोई ॥ १ ॥ सकल कुतर्क वासना नासे हरि सुमरे सुमरावे। जड व्है चतुर मंद बुद्धि निरमल मनमोहन मन भावे ॥ २ ॥ माया काल कछू नहीं व्यापे जो हरिजन कों जाने। 'परमानंद' यही मन निश्चय हरिजन गुन हि बखाने ॥ ३ ॥

सो एसे पद परमानंददास ने गाये। सो सुनिके सब भगवदीय परमानंददास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। तब परमानंददास ने सब वैष्णवन सों बिनती कीनी, जो-आजु कृपा करिके मेरे घर पधारे सो कछू आज्ञा करिये। तब रामदासजी ने पूछी, जो-परमानंददास !

ભાવપ્રકાશ—કેમકે અનેક રૂપ થઇને શ્રીઠાકુરજી મારા ઘરે પધાર્યા છે. ભગવદીયના હૃદયમાં શ્રીઠાકુરજી પોતે બિરાજે છે તેથી મારાં મોટાં ભાગ્ય છે. હવે હું કૃતકૃત્ય થઇ ગયો. કેમ, જે બધા ભગવદીયોએ કૃપા કરી છે. તેથી પ્રથમ તો આ ભગવદીયોની ન્યોછાવર કરવી જોઇએ. તે એવી વસ્તુ કયીછે જેથી બધા ભગવદીયોની ન્યોછાવર થાય ?

પછી પરમાનંદદાસે ભગવદીય વૈષ્ણવોને મળીને ઉંચે આસને બેસાડીને આ પદ ગાયું. પદ :—'આયે મેરે નંદનંદનકે પ્યારે' (ઉપર જુઓ). તે પછી બીજું પદ ગાયું પદ :—'હરિજન સંગ છિનક જો હોઈ' (ઉપર જુઓ) એવાં પદ પરમાનંદદાસે ગાયાં. એ સાંભળીને બધા ભગવદીયો પરમાનંદદાસની ઉપર ઘણા પ્રસન્ન થયા. ત્યારે પરમાનંદદાસે બધા વૈષ્ણવોને વિનંતી કરી, કે આજ કૃપા કરીને મારા ઘરે પધાર્યા તેથી કંઇ આજ્ઞા કરો. ત્યારે રામદાસજીએ પૂછયું કે પરમાનંદદાસ વ્રજમાં

ब्रज में सगरो प्रेम ब्रजभक्तन को है, सो श्रीनंदरायजी, गोपीजन, ग्वाल, सखानको। तामें सब तें श्रेष्ठ प्रेम किन को है?

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो–तिहारी बाललीला में लगन वहुत है। और तुम कृपापात्र भगवदीय हो, तासों यह संदेह है सो दूरि करो। सो या प्रकार रामदासजी ने परमानंददास सों यों पूछी, जो–श्रीआचार्यजी के अभिप्रायमें तो गोपीजनको प्रेम वहोत है। और परमानंददासने नंदालय की लीला और बाललीला वहोत वर्णन किये हैं, तासों श्रीआचार्यजी के हृदय के अभिप्रायकी खबरि परी के नाहीं? तासों परमानंददासकी परीक्षा लेनी।

ता समय परमानंददास ने यह पद गायो। सो पद—

राग नायकी—गोपी प्रेमकी ध्वजा। जिन गोपाल कियो बस अपने उर धरि स्याम भुजा ॥ १ ॥ सुक मुनि व्यास प्रसंसा कीनी उद्धव संत सराही। भूरि भागि गोकुल की वनिता अति पूनित जगमांही ॥ २ ॥ कहा भयो जु विप्रकुल जन्म्यो जो हरि सेवा नाहीं। सोई पूनित दास 'परमानंद' जो हरि सन्मुख जाहीं ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—व्रजजन सम घर पर कोऊ नाहीं। जिन सब तन मन हरि अर्पन करि मोहन धरे उर मांहीं ॥ १ ॥ सदा संग डोलत मन मोहन गोपी धरि उर ध्यान। गोपी गोपी रटत निरंतर भूलि गये सब ज्ञान ॥ २ ॥ जा गोपी की पद-रज उद्धव ब्रह्मादिक सब जाचें। ता गोपी गृह माखन काजें सब दिन गिरिधर नाचे ॥ ३ ॥ गोपीजन में कौन बताऊं हरि हू पार न पावे। तो हों मंद बुद्धि कहा जानों 'परमानंद' गुन गावें ॥ ४ ॥

सो यह पद परमानंददास ने गाये। तब सगरे वैष्णव कहे, जो–परमानंददास! तुम धन्य हो। या प्रकार सगरे वैष्णव प्रसन्न होयके परमानंददास की सराहना करत विदा होय अपने घर आये।

બધો પ્રેમ વ્રજભક્તોનો છે. શ્રીનંદરાયજી, ગોપીજન, ગ્વાલ, સખાઓનો. તેમાં બધાથી શ્રેષ્ઠ પ્રેમ કોનો છે?

ભાવપ્રકાશ—કેમકે તમારી બાલલીલામાં લગન ઘણી છે અને તમે કૃપાપાત્ર ભગવદીય છો. તેથી આ સંદેહ છે તે દૂર કરો. આ પ્રકારે રામદાસજીએ પરમાનંદદાસને એમ પૂછ્યું કે શ્રીઆચાર્યજીના અભિપ્રાયથી તો શ્રીગોપીજનનો પ્રેમ ઘણો છે અને પરમાનંદદાસે નંદાલયની લીલા અને બાલલીલાનું ઘણું વર્ણન કર્યું છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીના હૃદયના અભિપ્રાયની ખબર પડી કે નહીં. તેથી પરમાનંદદાસની પરીક્ષા લીધી.

તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ 'ગોપી પ્રેમકી ધ્વજા' 'વ્રજજન સમ ઘર પર કોઉ નાહી' (ઉપર જુઓ). એ પદો પરમાનંદદાસે ગાયાં. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો કહે, કે પરમાનંદદાસ તમે ધન્ય છો. એ પ્રકારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને

ता पाछे परमानंददास ने बहोत दिन ताई श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा कीनी।

वार्ता-प्रसंग ६—ता पाछे एक दिन परमानंददास श्रीगुसांईजी के और श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कों गोपालपुर तें श्रीगोकुल आये, सो दरसन करिके रात्रि तहां रहे। पाछे प्रातःकाल श्रीगुसांईजी स्नान करिके श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे तब परमानंददास कों बुलाये। तब परमानंददास आगे आय दंडवत किये। सो तब श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास सों कहे, जो–श्रीठाकुरजी कों सगरी लीला व्रज की बहोत प्रिय है। सो नित्य-लीला व्रज की श्रीठाकुरजी कों सुनावे, सो तो कोई काल में हू पार पावे नाहीं। काहेतें? जो–एक लीला को पार न पैये, तो सगरी लीला कौन गावे। परंतु मैं एक कीर्तन करि देत हों, तामें सगरी व्रज की लीला को अनुभव है। सो तुम या समय नित्य गाईयो। तब परमानंददास कहे, जो–महाराज! वह पद कृपा करिके बताइये। सो श्रीगुसांईजी तो मारग के चलायवे वारे हैं सो भाषा के पद करे नाहीं। तासों संस्कृत में कीर्तन गायो। सो पद—

राग रामकली— मंगल मंगलं व्रजभुवि मंगलम्। मंगलमिह श्रीनंदयसोदा नामसुकीर्तनमेतद्रुचिरोत्संगसुलालितपालितरूपम्॥ १॥ श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्तजनाशयतापापहमिति मंगलरावम्। व्रजसुंदरीवयस्यसुरभिवृन्द

પરમાનંદદાસના વખાણ કરતા વિદા થઇ પોતાને ઘરે આવ્યા. તે પછી પરમાનંદદાસે ઘણા દિવસ સુધી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં કીર્તનની સેવા કરી.

વાર્તા પ્રસંગ-૬—તે પછી એક દિવસ પરમાનંદદાસ શ્રીગુસાંઇજીના અને શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શને ગોપાલપુરથી શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યારે દર્શન કરીને રાત્રિએ ત્યાં રહ્યા. પછી પ્રાતઃકાલ શ્રીગુસાંઇજી સ્નાન કરીને શ્રીનવનીતપ્રિયજીના મંદિરમાં પધાર્યા ત્યારે પરમાનંદદાસને બોલાવ્યા. ત્યારે પરમાનંદદાસે આગળ આવીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરમાનંદદાસને કહે, કે શ્રીઠાકુરજીને વ્રજની બધી લીલા બહુજ પ્રિય છે તેથી નિત્યલીલા વ્રજની શ્રીઠાકુરજીને સંભળાવે તે તો કોઇ કાલમાં પણ પાર ન પામે. કેમકે? જો એક લીલાનો પાર ન પામીયે તો બધી લીલા કોણ ગાઇ શકે? પરંતુ હું એક કીર્તન કહી દઉં છું તેમાં બધી વ્રજની લીલાનો અનુભવ છે. તે તમે આ સમયે નિત્ય ગાજો. ત્યારે પરમાનંદદાસ કહે કે મહારાજ! એ પદ કૃપા કરીને બતાવો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી તો માર્ગના ચલાવવાળા છે તે ભાષાનાં પદ કર્યાં નહીં તેથી સંસ્કૃતમાં કીર્તન ગાયું. તે પદ 'મંગલ મંગલ' (ઉપર જુઓ). એ પદ શ્રી-

मृगीगणनिरूपमभावा मंगलसीधुचया ॥ २ ॥ मंगलमीषत्स्मितयुतमीक्षणभाषण मुन्नतनासापुटगतमुक्ताफल चलनम् । कोमलचलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणुनिनाद विमोहितवृन्दावनभुवि जाताः ॥ ३ ॥ मंगलमखिलं गोपी शितु रतिमंथरगनि विभ्रम मोहितरासस्थितगानम् । त्वं जय सततं श्रीगोवर्द्धनधर पालय निजदासान् ॥ ४ ॥

सो यह पद श्रीगुसांईजी आपु गायके परमानंददास कों गवाये । सो परमानंददास 'मंगल मंगल०' गाये । तब मंगल रूप परमानंददास ने और हू पद गाये । सो पद—

राग भैरव—मंगल माधौ नाम उच्चार । मंगल बदन कमलकर मंगल मंगलजन की सदा सम्हार ॥ १ ॥ खेलत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल गीत उदार । मंगल श्रवन कथारस मंगल मंगल तन वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल रुचि वृन्दावनचंद । मंगल करन गोवर्द्धनधारी मंगल भेख जसोदानंद ॥ ३ ॥ मंगलधेनु रेनु भुवमंगल मंगल मधुर बजावत वेनु । मंगल गोपवधू परिरंभन मंगल कालिंदी पय फेनु ॥ ४ ॥ मंगल चरनकमलदल मंगल मंगल कीरति जगत निवास । अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगल मति 'परमानंददास' ॥ ५ ॥

सो यह पद परमानंददास ने गायो, ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु मंगल-भोग सराय के मंगला-आरती किये । ता समय परमानंददास ने यह पद गायो । सो पद—

राग भैरव—मंगल आरती करि मन मोर । भरम निसा बीती भयो भोर ॥१॥ मंगल बाजत झालर ताल । मंगल रूप उठे नंदलाल ॥ २ ॥ मंगल बाजत बीन मृदंग । मंगल बांसुरी सरस उपंग ॥ ३ ॥ मंगल धूपदीप करि जोर । मंगल गावत सब मिलि कोर ॥ ४ ॥ मंगल उदयो मंगल रास । मंगल मति 'परमानंददास' ॥ ५ ॥

सो या प्रकार श्रीगुसांईजी कृत 'मंगल मंगल०' के अनुसार परमानंददास ने बहोत कीर्तन किये, और श्रीगुसांईजी कृत मंगल मंगलं० पद नित्य गावते ।

भावप्रकाश—यामें सगरी व्रजलीला है, सो ठाकुरजीकों नित्य सुना-

ગુસાંઇજીએ પોતે ગાઇને પરમાનંદદાસને ગવડાવ્યું તે પરમાનંદદાસે ગાયું. ત્યારે મંગલ રૂપનાં પરમાનંદદાસે બીજાં પણ પદ ગાયાં તે પદ 'મંગલ માધો નામ ઉચ્ચાર' (ઉપર જુઓ). એ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ મંગલભોગ સરાવીને મંગલા આર્તિ કરી. તે સમય પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ :—'મંગલ આરતી કરિ મન મોર' (ઉપર જુઓ). આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજીકૃત 'મંગલ મંગલ' અનુસાર પરમાનંદદાસે ઘણાં કીર્તન કર્યાં અને શ્રીગુસાંઇજીકૃત 'મંગલ મંગલ' નિત્ય ગાતા.

ભાવપ્રકાશ—આમાં બધી વ્રજલીલા છે. તે શ્રીઠાકુરજીને નિત્ય સંભળાવે છે.

वत हैं । और मंगल मंगलं० के पाठतें ब्रजलीलाको सब पाठ होय। सो तहां मंगला को पद परमानंददास ने कियो सो तामें कहे–'मंगल तन वसुदेवकुमार०'। सो तहां यह संदेह होय, जो–परमानंददास तो नंदनंदन के उपासक हैं । सो वसुदेवकुमार ब्रजलीलामें कहे, ताको कारन कहा ? तहां कहतहैं, जो–वेणुगीत और युगलगीत में 'देवकीसुत' गोपिकानने कहे, सो ये कुमारिका के भावतें। सो काहेतें ? जो–कुमारिका श्रीयशोदाजी कों माता कहते, तासों श्रीठाकुरजी में पतिभाव है । याही सों वसुदेव–सुत कहि पतिभाव दृढ करत हैं। जो–यशोदा सुत कहें, तो भाइ बहन को भाव होय।

पाछे परमानंददास श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन कों श्रीगोकुलतें श्रीगिरिराज आये। सो तहां मंगला आरती पहले 'मंगल मंगलं०' पद परमानंददासने गायो। सो श्रीगोवर्द्धनधर के यहां 'मंगल मंगलं०' की रीत भई। सो वे परमानंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता–प्रसंग ७—और जब जन्माष्टमी आवती तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों पंचामृत स्नान करवायके सिंगार करि श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारिके श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगार करते। ता पाछे राजभोग सों पहोंचिके फेरि श्रीगिरिराज तें श्रीगोकुल आवते। सो तहां श्रीनवनीतप्रियजी कों मध्यरात्रि कों जन्मकी रीति

વળી મંગલ મંગલના પાઠથી વ્રજલીલાનો બધો પાઠ થાય. ત્યાં મંગલાનું પદ પરમાનંદદાસે કર્યું તેમાં કહ્યું, મંગલ તન વસુદેવકુમાર. તેમાં એ સંદેહ થાય કે પરમાનંદદાસ તો નંદનંદનના ઉપાસક છે. તો વસુદેવકુમાર વ્રજલીલામાં કહ્યા તેનું કારણ શું ? ત્યાં કહીએ છીએ કે વેણુગીત અને યુગલ ગીતમાં ગોપિકાઓએ 'દેવકીસુત' કહ્યા છે. તે કુમારિકાઓના ભાવથી. કેમકે ? કુમારિકા શ્રીયશોદાજીને માતા કહેતાં તેથી શ્રીઠાકુરજીમાં પતિભાવ છે. એથીજ વસુદેવ સુત કહી પતિભાવ દૃઢ કરે છે. જો યશોદા સુત કહે તો ભાઇ–બ્હેનનો ભાવ થાય.

પછી પરમાનંદદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનધરના દર્શને શ્રીગોકુલથી શ્રીગિરિરાજજી આવ્યા. ત્યાં મંગલા આર્તિ પહેલાં 'મંગલ મંગલ' પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. (ત્યારથી) શ્રીગોવર્દ્ધનધરને ત્યાં 'મંગલ-મંગલ' ની રીત થઇ. તે પરમાનંદદાસ એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૭-વળી જ્યારે જન્માષ્ટમી આવતી ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને પંચામૃત સ્નાન કરાવીને શૃંગાર કરી શ્રીગિરિરાજ પર્વત ઉપર પધારીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના શૃંગાર કરતા. તે પછી રાજભોગથી પહોંચીને ફરી

करिके पलना झुलाय श्रीनाथजीके यहां नंदमहोत्सव करते। सो जब जन्माष्टमी आई, तब श्रीगुसांईजी आप परमानंददासजीकों संग लेय के श्रीगिरिराज सों श्रीगोकुल पधारे। सो जन्माष्टमी के दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराये। ता समय परमानंददासने यह बधाई गाई। बधाई—

राग धनाश्री—मिलि मंगल गावहु माई, सबे मिलि०। आजु लाल कौ जन्म दिवस है बाजत रंग बधाई ॥ १ ॥ आंगन लींपो चोक पुरावो विप्र पढन लागे वेद। करहु सिंगार स्यामसुंदर कों चोवा चंदन मेद ॥ २ ॥ आनंदभरी बावा नंदजू की रानी फूली अंग न समाई। 'परमानंददास कौ ठाकुर' बहुत न्योछावरि पाई ॥३॥

ता पाछे श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजी के सिंगार करिके तिलक कियो। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—आज बधाई को दिन नीकौ। नंदघरनी जसुमति जायो है लाल भाँवतो जी कौ ॥ १ ॥ पंच सब्द बाजे बाजत है घर-घर तें आयो टीको। मंगल कलस लिये व्रजसुंदरि ग्वाल बनावत छीकौ ॥२॥ देति असीस सकल गोपीजन जीवो कोटि वरीसो। 'परमानंददास कौ ठाकुर' गोप भेख जगदीसो ॥ ३ ॥

राग सारंग—घर घर ग्वाल देत हैं हेरी। बाजत तालमृदंग बांसुरी ढोल दमामा भेरी ॥ १ ॥ लूटत झपटत खात मिठाई कही न सकत कोऊ फेरी। उनमद ग्वाल बदत नहीं काहू व्रजवनिता सब घेरी ॥ २ ॥ ध्वजा पताका तोरनमाला सबे सिंगारी सेरी। जै जै कृष्ण कहत 'परमानंद' प्रगट्यो कंस कौ वैरी ॥ ३ ॥

या प्रकार परमानंददासने बहोत पद गाये। ता पाछे अर्द्ध रात्रिके समय श्रीगुसांईजी आपु जन्म करायके श्रीनवनीतप्रियजीकों पालने में पधराये, श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी, गोपी ग्वाल को भेख धराये। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

શ્રીગિરિરાજથી શ્રીગોકુલ આવતા. ત્યાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીને મધ્ય રાત્રિએ જન્મની રીતિ કરીને પલના ઝૂલાવી શ્રીનાથજીને ત્યાં નંદમહોત્સવ કરતા. તે (એક વખત) જ્યારે જન્માષ્ટમી આવી ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પરમાનંદદાસને સંગ લઇને શ્રીગિરિરાજજીથી શ્રીગોકુલ પધાર્યા. પછી જન્માષ્ટમીના દિવસે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અભ્યંગ કરાવ્યાં તે સમયે પરમાનંદદાસે આ વધાઇ ગાઇ, વધાઇ—' મિલિ મંગલ ગાવો માઇ ' (ઉપર જુઓ). પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીને શૃંગાર કરીને તિલક કર્યું. તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયુ. તે પદ—' આજ બધાઇ કો દિન નીકો ' ' ઘર ઘર ગ્વાલ દેત હૈં હેરી ' (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે પરમાનંદદાસે બહુ પદ ગાયાં. તે પછી અર્ધરાત્રિના સમયે શ્રીગુસાંઇજી પોતે જન્મ કરાવીને શ્રીનવ-

राग धनाश्री—जसोदा रानी सोवन फूले फूली। तुम्हारे पुत्र भयो कुलमंडन वासुदेव समतूली ॥ १ ॥ देति असीस विरध जे ग्वालिनि गाम-गाम तें आई। ले ले भेट सबै मिलि निकसी मंगल चार वधाई ॥ २ ॥ ऐसे दसक होइ जो औरे तो सब कोऊ सचुपावे। वाढौ वंस नंद वावा को 'पमानंद' जिय भावे ॥ ३ ॥

भावप्रकाश—सो या पद में परमानंददासजी यह कहे, जो–'ऐसे दसक होय जो औरे तो सब कोऊ सचु पावे'। सो भगवदीयनके वचन सत्य करिवेके लिये श्रीगुसांईजी के बालक सातों और श्रीगुसांईजी तथा श्रीआचार्यजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी सो ये दस स्वरूप प्रकट होयके सबकों सुख दिये हैं। सो 'सब' माने सगरे दैवी पुष्टिमार्गीय। सो या प्रकार सों भाव सहित परमानंददासजीने कीर्तन गाये।

पाछें श्रीनंदरायजी और गोपी ग्वाल, वैष्णवनके जूथ, अपने लालजी सब (कों) लेके दधिकादो किये। तब परमानंददास को चित्त आनंद में विक्षिप्त होय गयो। वा समय परमानंददास नाचन लागे और यह पद गायो। सो वा प्रेम में परमानंददास रागको हू क्रम भूलि गये। सो रात्रि को तो समय और सारंग में गाये। सो पद—

राग सारंग—आज नंदराय के आनंद भयो। नाचत गोपी करति कोलाहल मंगल चार ठयो ॥ १ ॥ राती पीयरी चोली पहेरे नौतम झूमक सारी। चोवा चंदन अंग लगाए सेंदुर मांग सँवारी ॥ २ ॥ माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल ले आए। वाजत वेनु पखान महुवरि गावत गीत सुहाये ॥ ३ ॥ हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम आंगन वाढी कीच। हसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागि लागि भुज वीच ॥ ४ ॥ चहुं वेद ध्वनि करत महामुनि पंच सब्द ढम ढोल। 'परमानंद' बढ्यो गोकुल में आनंद हृदै कलोल ॥ ४ ॥

નીતપ્રિયજીને પાલનામાં પધરાવ્યા. શ્રીનંદરાયજી શ્રીયશોદાજી ગોપીગ્વાલને ભેખ ધરાવ્યા. તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું. 'સોવન ફૂલે ફૂલી જશોદા રાની' (ઉપર જુઓ).

ભાવપ્રકાશ—એ પદમાં પરમાનંદદાસજીએ કહ્યું કે 'એસે દસેક હોઇ જો ઔરે તો સબ કોઉ સચુ પાવે' એથી ભગવદીયોનાં વચન સત્ય કરવાને માટે શ્રીગુસાંઇજીના સાત બાલકો, શ્રીગુસાંઇજી તથા શ્રીઆચાર્યજી તથા શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી એમ દશ સ્વરૂપે પ્રકટ થઇને બધાંને સુખ આપ્યું છે. બધા એટલે બધા દૈવી પુષ્ટિમાર્ગીય. આ પ્રકારે ભાવ સહિત પરમાનંદદાસજીએ કીર્તન ગાયાં.

પછી શ્રીનંદરાયજી અને ગોપીગ્વાલ, વૈષ્ણવોના જૂથ, પોતાના લાલજી બધાને લઇને દધિકાદવ કર્યો. ત્યારે પરમાનંદદાસનું ચિત્ત આનંદમાં વિક્ષિપ્ત થઇ ગયું. એ સમયે

यह पद गाये पाछे परमानंददास प्रेम में मूर्छा खाय भूमिमें गिरि पड़े। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीहस्तकमलसों परमानंददास कों उठायके अंजुलि में जल लेके वेदमंत्र पढ़िके आपु परमानंददास के ऊपर छिरके। सो तब उच्छलित प्रेम जो विकल करतो, सो हृदय में स्थिर भयो। सो परमानंददास सगरी लीला को अनुभव किये, और गान किये। या प्रकार परमानंददास के ऊपर श्रीगुसांईजीनें कृपा करी। ता पाछें यह पलना को पद परमानंददासने गायो—

राग बिलावल—हालरो हुलरावति माता। बलि बलि जाय घोष सुख दाता ॥ १ ॥
अति लोहित कर चरन सरोजे। जे ब्रह्मादिक मनसा खोजे ॥ २ ॥
जसुमति अपनो पुन्य बिचारे। बारबार मुख कमल निहारे ॥ ३ ॥
अखिल भुवनपति गरूडागामी। नंदसुवन 'परमानंदस्वामी' ॥ ४ ॥

भावप्रकाश—सो या भांति सों 'अखिल भुवनपति गरुडागामी' ऐसे परमानंदजीने कह्यो। सो अखिल भुवन–पति यातें, जो–श्रीभगवान गरुड पैं विराजमान सो (तो) सब जगत्के पति हैं। और नंदसुवन ठाकुर, सो परमानंद-दासने कही, जो–ये मेरे स्वामी हैं।

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास की ऊपर बहोत प्रसन्न भये। ता पाछे परमानंददासने यह पद कान्हरो राग में करिके गायो। सो प्रेम में राग को क्रम नाहीं, लीला को

પરમાનંદદાસ નાચવા લાગ્યા અને આ પદ ગાયું. ત્યારે પ્રેમમાં પરમાનંદદાસ રાગનો પણ ક્રમ ભૂલી ગયા. રાત્રિનો સમય અને સારંગમાં ગાયું. તે પદ—'આજ નંદરાય કે આનંદ ભયો' (ઉપર જુઓ). એ પદ ગાયા પછી પરમાનંદદાસ પ્રેમમાં મૂર્છા ખાઇને ભૂમિમાં પડી ગયા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પોતાના શ્રીહસ્તથી પરમાનં-દદાસને ઉઠાડીને ખોબામાં જલ લઇને વેદમંત્ર ભણીને પોતે પરમાનંદદાસના ઉપર છાંટ્યું. ત્યારે ઉચ્છલિત પ્રેમ જે વિકલ કરતો તે હૃદયમાં સ્થિર થયો. ત્યારે પરમાનં-દદાસે બધી લીલાનો અનુભવ કર્યો અને ગાન કર્યું. એ પ્રમાણે પરમાનંદદાસના ઉપર શ્રીગુસાંઇજીએ કૃપા કરી. તે પછી આ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે પદ—'હાલરો હુલરાવત માતા' (ઉપર જુઓ).

ભાવપ્રકાશ—એ પ્રકારે 'અખિલ ભુવન પતિ ગરૂડાગામી' એમ પરમાનં-દદાસે કહ્યું ' અખિલ ભુવન પતિ એથી કે શ્રીભગવાન ગરૂડ ઉપર બિરાજમાન તે બધા જગતના પતિ છે. અને નંદસુવન ઠાકુર તે પરમાનંદદાસે કહ્યું, કે એ મારા સ્વામી છે.

આ કીર્તન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરમાનંદદાસની ઉપર ઘણા પ્રસન્ન

क्रम। सो जेसी लीला करी, सो स्फुरी। सो तैसे परमानंददास गाये। सो पद—

राग कान्हरो— रानीजु तिहारो घर सुबस बसो। सुनहु जसोदा तिहारे ढोटा कौ न्हात हु जिनि बार खसो ॥ १ ॥ कोऊ करत वेद मंगल धुनि कोऊ गावो कोऊ हसो। निरखि निरखि मुख कमल नयन कौ आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥ २ ॥ देति असीस सकल गोपीजन कोऊ अति आनंद लसो। 'परमानंद' नंद घर आनंद पुत्रजन्म भयो जगत जसो ॥ ३ ॥

सो यह असीसको पद परमानंददासने गायो। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने पुत्र श्रीगिरिधरजीकों श्रीनवनीतप्रियजी के पास राखिके दधिकादों किये। ता पाछे परमानंददास कों संग लेके श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो दधिकादों देखिके परमानंददास लीलारस में मगन होय गये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग धरिके बाहिर आये। तब श्री-गुसांईजी आपु परमानंददास की अलौकिक दसा देखके कहे, जो-जैसे कुंभनदास को किसोर लीला में निरोध भयो, सो तैसे बाललीला में परमानंददास को निरोध भयो है। पाछें परमानंददास श्रीगुसां-ईजी कों दंडवत करि, पर्वततें नीचे उतरे। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की ध्वजा कों दंडवत करि, सुरभी कुंड ऊपर आयके अपने ठिकाने कुटीमें आय बोलिवो छोड़ि दियो। सो नंदमहोत्सवकें रसमें मगन होयके परमानंददास अपनी देह छोड़िवे को विचार करिके सुरभी

थया. ते पछी परमानंददासे आ पद कान्हरा रागमां करीने गायुं. प्रेममां रागनो क्रम नहीं लीलानो क्रम जेवी लीला करी ते स्फूरी तेवुं परमानंददासे गायुं. ते पद :— 'रानी तिहारो घर' (उपर जुओ). आ आशीषनुं पद परमानंददासे गायुं. त्यारे श्रीगुसांईजीए पोते पोताना पुत्र श्रीगिरिधरजीने श्रीनवनीतप्रियजीनी पासे राखीने दधिकादव कर्यो. ते पछी परमानंददासने साथे लईने श्रीगुसांईजीए पोते श्री-गोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्यां. ते दधिकादव जोईने परमानंददास लीलारसमां मगन थई गया ते पछी श्रीगुसांईजी पोते श्रीगोवर्द्धननाथजीने राजभोग धरीने बहार पधार्या. त्यारे श्रीगुसांईजी पोते परमानंददासनी अलौकिक दशा जोईने कहे, के जेम कुंभनदासनो किशोरलीलामां निरोध थयो तेम बाललीलामां परमानंददासनो निरोध थयो छे. पछी परमानंददास पर्वत नीचे उतरी श्री गोवर्द्धननाथजीनी ध्वजाने दंड-वत् करी सुरभीकुंड उपर आवीने पोताना ठेकाणे कुटीमां आवी बोलवुं छोडी दीधुं. पछी नंद महोत्सवना रसमां मगन थई परमानंददास पोतानी देह छोडवानो विचार

कुंड ऊपर आयके सोये। और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी को राजभोग आरती करिके अनोसर करवाये। पाछें श्रीगुसांईजी आपु सेवकनसों पूछे, जो–आज राजभोग आरती के समय परमानंददास कों नाहीं देखे, सो कहां गये? तब एक वैष्णवने श्रीगुसांईजो सों आय बिनती कीनी, जो–महाराज! परमानंददास तो आजु विकल से दीसत हैं, और काहू सों बोलत नाहीं, और सुरभी कुंड पें जायके सोये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु वा वैष्णव कों संग ले सुरभी कुंड ऊपर पधारिके परमानंददास के पास आये। परमानंददास के माथे पर श्रीहस्त फेरिके श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास सों कहें, जो–परमानंददास! हम तुम्हारे मन की जानत हैं। जो अब तिहारो दरसन दुर्लभ भयो। तब परमानंददास ने उठि के श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत किये। ता समय यह पद परमानंददास ने गायो। सो पद—

राग सारंग— प्रीति तो नंदनंदन सों कीजे। संपति बिपति परे प्रतिपाले कृपा करें तो जीजे॥ १॥ परम उदार चतुर चिंतामनि सेवा सुमरन माने। चरन कमल की छाया राखे अंतरगति की जानें॥ २॥ वेद पुरान भागवत भाखे कियो भक्तन मन भायो। 'परमानंद' इंद्र को वैभव विप्र सुदामा पायो॥ ३॥

सो यह पद परमानंददास ने श्रीगुसांईजी कों सुनायो।

भावप्रकाश—सो परमानन्दजी ने या पद में श्रीगुसांईजी सों प्रार्थना कीनी, जो-प्रीत हू तुमसों करनी सो सदा कृपा एकरस करो। सो परम कृपालु,

---

કરીને સુરભીકુંડ ઉપર આવીને સૂઇ રહ્યા. અહીં શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીનાથજીની રાજભોગ આર્તિ કરીને અનોસર કરાવ્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે સેવકોને પૂછે કે આજ રાજભોગ આર્તિના સમયે પરમાનંદદાસને જોયા નહીં. તે ક્યાં ગયા? ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીને આવીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! પરમાનંદદાસજી તો આજ વિકલ જેવા દેખાય છે અને કોઇથી બોલતા નથી અને સુરભીકુંડ ઉપર જઇને સૂઇ રહ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે તે વૈષ્ણવને સંગે લઇ સુરભીકુંડ ઉપર પધારીને પરમાનંદદાસની પાસે આવ્યા. પરમાનંદદાસના માથા ઉપર શ્રીહસ્ત ફેરવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરમાનંદદાસને કહે, કે પરમાનંદદાસ! અમે તમારા મનની જાણિએ છીએ. હવે તમારાં દર્શન દુર્લભ થયાં. ત્યારે પરમાનંદદાસે ઉઠીને શ્રીગુસાંઇજીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા. તે સમયે આ પદ પરમાનંદદાસે ગાયું. તે પદ:—'પ્રીતિ તો નંદનંદન સાં કીજે' આ પદ પરમાનંદદાસે શ્રીગુસાંઇજીને સંભળાવ્યું.

ભાવપ્રકાશ—પરમાનંદદાસજીએ આ પદમાં શ્રીગુસાંઇજીને પ્રાર્થના કરી કે

अपने हस्त कमल की छाया तें जन कों राखत हैं। या समय हू मोकों दरसन दे मेरे मस्तक ऊपर श्रीहस्तकमल धरे। सो मेरे अंतःकरणमें, जो-मेरो मनोरथ हतो सो पूरन कियो। सो वेद पुरान सब ही कहत हैं, जो-सदा भक्तन को भायो करि आनंद दिये हैं। जैसे एक समें इन्द्रकी पदवी लायक जीव कोई न देखे तब भगवान ही इन्द्र होय के इन्द्र को कार्य चलाये। सो प्रसाद वैष्णव सुदामा भक्त-कों दिये। तामें सुदामा को वैभव पाये हू मोह न भयो। सो तेसें आपु जो-ब्रज में लीला करत हैं सो परमानंदरूप सों कृपा करके मोकों दान दिये। सो आपके गुन मैं कहां तांई कहौं। ऐसी प्रार्थना परमानंददासजी श्रीगुसांईजी सों किये।

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आप बहुत प्रसन्न भये। ता समय एक वैष्णव ने परमानंददास सों कह्यो, जो-मोकों कछू साधन बतावो सो मैं करों। तातें श्रीठाकुरजी आपु मेरे ऊपर प्रसन्न होय के कृपा करें। तब परमानंददास वा वैष्णव सों प्रसन्न होंय के कहे, जो-तुम मन लगाय के सुनो। जो सुगम उपाय है सो मैं कहूँ। या बात कों मन लगाय के सुनोगे तो फल-सिद्धि होयगी। सो या प्रकार प्रीत सों समाधान करि के परमानंददासने एक पद वा वैष्णव कों सुनायो। सो पद—

પ્રીતિ પણ તમારાથી કરવી જે સદા કૃપા એક રસ કરો. પરમ કૃપાલુ પોતાના હસ્ત કમલની છાયાથી (પોતાના) જનને રાખો છો. આ સમય પણ મને દર્શન દઇ મારા મસ્તક ઉપર શ્રીહસ્તકમલ ધર્યા. મારા અંતઃકરણમાં મારો જે મનોરથ હતો તે પૂરણ કર્યો. વેદ પુરાણ બધાંજ કહે છે કે સદા ભક્તોનું ગમતું કરી આનંદ આપ્યો છે. જેમ એક સમય ઇન્દ્રની પદવી લાયક જીવ કોઇ ન જોયો ત્યારે ભગવાને ઇન્દ્ર થઇ ને ઇન્દ્રનું કાર્ય ચલાવ્યું. આ પ્રસાદ (કૃપા) વૈષ્ણવ સુદામા ભક્તને આપ્યો. તેમાં સુદામાને વૈભવ મળે પણ મોહ ન થયો. તેથી પોતે વ્રજમાંજ લીલા કરે છે. તે પરમાનંદ રૂપથી કૃપા કરીને મને દાન દીધું. આપના ગુણ હું કયાં સુધી કહું. એવી પ્રાર્થના પરમાનંદ-દાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને કરી.

આ પદ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી આપ ઘણા પ્રસન્ન થયા. તે સમય એક વૈષ્ણવે પરમાનંદદાસને કહ્યું, કે મને કંઈ સાધન બતાવો તે હું કરૂં. તેથી શ્રીઠાકુરજી મારા ઉપર પ્રસન્ન થઇને કૃપા કરે. ત્યારે પરમાનંદદાસ એ વૈષ્ણવને પ્રસન્ન થઇને કહે કે તમે મન લગાડીને સાંભળો. જે સુગમ ઉપાય છે તે હું કહું. આ વાતને મન લગાડીને સાંભળશો તો ફલસિદ્ધિ થશે. એ પ્રકારે પ્રીતિથી સમાધાન કરીને પરમાનંદદાસે

राग भैरव—प्रात समै उठि करिए श्रीलक्ष्मन सुत गान । प्रगट भए श्रीवल्लभ प्रभु देत भक्ति दान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठलेस महाप्रभु रूप ही सुहान । श्रीगिरिधर श्रीगिरिधर उदय भयो भान ॥ २ ॥ श्रीगोविंद आनंदकंद कहा बरनों गुनगान । श्रीबालकृष्ण बालकेलि रूप ही सुहान ॥ ३ ॥ श्रीगोकुलनाथ प्रगट कियो मारग बखान । श्रीरघुनाथलाल देख मन्मथ ही लजान ॥ ४ ॥ श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरन भगवान । श्रीघनश्याम पूरन काम पोथी में ध्यान ॥ ५ ॥ पांडुरंग विट्ठलेस करत वेद गान । 'परमानंद' निरखि लीला थके सुर विमान ॥ ६ ॥

सो या प्रकार यह कीर्तन परमानंददासने गायो । यह सुनि के श्रीगुसांईजी और सगरे वैष्णव प्रसन्न भये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास सों पूछे, जो–परमानंददास ! अब तिहारो मन कहां है ? तब परमानंददासने यह कीर्तन सारंग राग में गायो । सो पद—

राग सारंग—राधे बैठी तिलक संवारति । मृगनैनी कुसुमाकर धरि नंदसुवनकौ रूप विचारति ॥ १ ॥ दरपन हाथ सिंगार बनावति बासर सम जुग ढारति । अंतर प्रीति स्यामसुंदरसों हरि संग केलि सम्हारति ॥ २ ॥ बासर गत रजनी व्रज आवत मिलत गोवर्द्धनधारी । 'परमानंदस्वामी' के संगम मुदित भई ब्रजनारी ॥ ३ ॥

सो या प्रकार जुगल स्वरूप की लीला में मन लगाय के परनंददास देह छोड़ि के श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला में जायके प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसांईजी गोपालपुर में आयके स्नान करिके पर्वतके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी कों उत्थापन कराये । पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहोंचिके अनोसर करवाय पर्वत तें उतरि अपनी बैठक में आय बिराजे । तब सब वैष्णवननें परमानंददास की देह को अग्निसंस्कार कियो और पाछें गोपालपुर में आय के श्रीगुसांईजी के आगे बहोत

એક પદ વૈષ્ણવને સંભળાવ્યું. તે પદ. 'પ્રાત સમય ઉઠ કરિએ શ્રી લક્ષ્મણ સુત ગાન' (ઉપર જુઓ). આ પ્રકારે એ કીર્તન પરમાનંદદાસે ગાયું. એ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી અને બધા વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થયા. તે પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે પરમાનંદદાસને પૂછે કે, પરમાનંદદાસ હવે તમારૂં મન ક્યાં છે ? ત્યારે પરમાનંદદાસે આ કીર્તન સારંગમાં ગાયું. 'રાધે બેઠી તિલક સંવારે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે જુગલ સ્વરૂપની લીલામાં મન લગાડીને પરમાનંદદાસ દેહ છોડીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની લીલામાં જઇને પ્રાપ્ત થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ ગોપાલપુરમાં આવીને સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ઉત્થાપન કરાવ્યા. પછી સેન પર્યંત સેવાથી પહોંચીને અનોસર કરાવી પર્વતથી ઉતરી પોતાની બેઠકમાં આવી બિરાજ્યા. ત્યારે બધા વૈષ્ણવોએ પરમાનંદદાસની દેહનો અગ્નિસંસ્કાર કર્યો. અને પછી ગોપાલપુરમાં આવીને

बड़ाई करन लागे। सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु उन वैष्णवन के आगे यह वचन श्रीमुख सों कहे, जो–ये पुष्टिमारग में दोइ 'सागर' भये। एक तो सूरदास और दूसरे परमानंददास। सो तिनको हृदय अगाधरस, भगवल्लीला रूप जहां रत्न भरे हैं। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों परमानंददास की सराहना किये। सो वे परमानंददासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। सो अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिये ॥८२॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कुंभनदासजी गोरवा क्षत्री, जमुनावते रहते, जिनके पद अष्टछाप में गाइयत हैं तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये कुंभनदासजी लीला में श्रीठाकुरजी के 'अर्जुन' सखा अंतरंग तिनको प्राकट्य हैं। सो दिवस की लीला में तो अर्जुन सखा हैं और रात्रि की लीला में विसाखा सखी हैं, सो श्रीस्वामिनीजी की। सो तिनको (विसाखाजी को) दूसरो स्वरूप कृष्णदास मेघन, सदा पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी के संग रहते, और कुंभनदासजी सदा श्रीगोवर्द्धननाथजी के संग रहते। सो या

શ્રીગુસાંઇજીની આગળ ઘણી બડાઇ કરવા લાગ્યા. તે સમય શ્રીગુસાંઇજી પોતે એ વૈષ્ણવોની આગળ આ વચન શ્રીમુખે કહ્યું, કે પુષ્ટિમાર્ગમાં બે સાગર થયા. એક તો સૂરદાસ અને બીજા પરમાનંદદાસ. તેમનું હૃદય અગાધરસ (રૂપ) ભગવલ્લીલા રૂપ જ્યાં રત્ન ભર્યાં છે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીમુખથી પરમાનંદદાસની સરાહના કરી. એ પરમાનંદદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. જેમના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નથી. તે અનિર્વચનીય છે તે ક્યાં સુધી કહિએ? ॥ વાર્તા ૮૨ ॥

* * * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક કુંભનદાસજી ગોરવા ક્ષત્રી જમનાવતે રહેતા જેમનાં પદ અષ્ટછાપમાં ગાઇએ છીએ તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ.

ભાવપ્રકાશ—એ કુંભનદાસજી લીલામાં શ્રીઠાકુરજીના 'અર્જુન' સખા અંતરંગ તેમનું પ્રાકટ્ય છે. એ દિવસની લીલામાં તો અર્જુન સખા છે અને રાત્રિની લીલામાં વિશાખા સખી છે. શ્રીસ્વામિનીજીની. તેમનું બીજું સ્વરૂપ કૃષ્ણદાસ મેઘન સદા પૃથ્વિ પરિક્રમામાં શ્રીઆચાર્યજીની સાથે રહેતા. એ ભાવથી કુંભનદાસજી સખાભાવમાં

भावतें कुंभनदासजी सखाभाव में अर्जुन सखारूप, और सखी भाव में विसाखारूप हैं। सो गिरिराज में आठ द्वार हैं। तामें एक द्वार आन्योर पास है। सो तहांकी सेवा के ये मुखिया हैं। और गाम को नाम 'जमुनावता' यासों कहत हैं, जो–श्रीयमुनाजी के प्रवाह, सारस्वत कल्प में दोय हते। एक तो जमुनावता होय कें आगरे के पास जात हतो, और एक चीरघाट होय श्रीगोकुल होयकें। आगें दोऊ धारा एक मिलि सारस्वत कल्प में बहती। और ता समय आगरा आदि गाम नाहीं हतो। दोऊ धारा एक मिलिके आगे को गई हती। सो चीरघाट तें धारा होयके गिरिराज आवती, तासों पंचाध्याई को रास 'परासोली' में चंद्रसरोवर ऊपर किये। सो व्रजभक्त, अंतरधान के समय चंद्रसरोवर सों द्रुमलतान सों पूछत चली सो गोविन्दकुंड के पास होयके अप्सराकुंड ऊपर आयके श्रीठाकुरजी के चरणारविंद के दरसन भये. तासों अप्सराकुंड ऊपर चरनचिन्ह हैं। तहां ते आगे चलिके राधा सहचरी की बेनी गुही, सो सिंदूर, काजर सगरो सिंगार कियो तासों वहां सिंदूरी, कजली और बाजनी सिला है। ता पाछें जब रुद्रकुंड ऊपर आयके राधा सहचरी कों मान भयो। सो श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो–मोसों तो चल्यो नाहीं जात है। तब श्रीठाकुर कांधे चढन (की कहिके ता) के मिष वृक्ष तरे ही अंतर्धान भये। तब राधा सहचरी रुदन कियो, जो– 'हा नाथ रमणप्रेष्ठ क्वासि २ महाभुज ! दास्यास्ते कृपणया मे सखे दर्शय सन्निधिम् '।

અર્જુન સખારૂપ અને સખીભાવમા વિશાખા રૂપ છે. શ્રીગિરિરાજજીમા આઠ દ્વાર છે. તેમાં એક દ્વાર આન્યોર પાસે છે તેની સેવાના એ મુખિયા છે. એમના ગામનું નામ જમનાવતા એથી કહે છે કે શ્રીયમુનાજીના પ્રવાહ સારસ્વત કલ્પમાં બે હતા. એક તો જમનાવતા થઇને આગ્રાની પાસે જતો હતો અને એક ચીરઘાટ થઇ શ્રીગોકુલ થઇને. આગળ બન્ને ધારા એક મળી સારસ્વત કલ્પમાં વહેતી. તે સમયે આગ્રા આદિ ગામ ન હતાં. બન્ને ધારા એક મળીને આગળ ગઈ હતી. ચીરઘાટથી ધારા થઇને શ્રીગિરિરાજ આવતી તેથી પંચાધ્યાઇનો રાસ પરાસોલીમાં ચંદ્રસરોવર ઉપર કર્યો વ્રજભક્તો અંતરધાન સમયે ચંદ્રસરોવરથી વૃક્ષલતાઓને પૂછતાં ચાલ્યાં તે ગોવિંદકુંડની પાસે થઇને અપ્સરા કુંડ ઉપર આવીને શ્રીઠાકુરજીનાં ચરણારવિંદનાં દર્શન થયાં. તેથી અપ્સરા કુંડ ઉપર ચરણચિન્હ છે. ત્યાંથી આગળ ચાલીને રાધા સહચરીની વેણી ગૂંથી તે સિંદૂર, કાજળ બધો શૃંગાર કર્યો તેથી ત્યાં સિંદૂરી, કાજળી અને બાજની શિલા છે તે પછી જ્યારે રૂદ્રકુંડ ઉપર આવીને રાધા સહચરીને માન થયું ત્યારે શ્રીઠાકુરજીને કહ્યું, કે મારાથી નથી ચલાતું ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કંધા ઉપર ચઢાવાના (એ) બાહુને

तासों वा कुंड को नाम 'रुद्रकुंड' है। सो अब ताई लोग वासों रुद्रकुंड कहत हैं। पाछें तहां सब गोपी आय मिली। पाछें आगे चलिके 'जान' 'अजान' वृक्ष सों पूछते पूछते जमुनावता श्रीजमुनाजीकी पुलिन में गोपिका गीत ('जयति तेऽधिकं') गायके सब भक्तनने रुदन कियो। तब श्रीठाकुरजी आपु प्रकट होयके फेरि 'परासोली' चंद्रसरोवरपें रास किये, सो श्रम भयो। तब श्रीयमुनाजी के जल में जलविहार किये। सो या प्रकार सारस्वत-कल्पकी पंचाध्याई को रास श्रीगिरिराज के पास है। और व्रजभक्त ढूंढत २ श्रीठाकुरजी के मिलनार्थ दूरि गई। सो अंधियारो देखिके उहांते फिरे। 'तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुर्हरेः'। इति।

सो यह अंधियारो श्यामढाक के आगे 'सामई' गाम हैं। सो तहां स्यामवन है, सो महासघन। तातें वहां पंचाध्याई के अनुसार सगरे स्थल दरसन देत हैं। और कालीदह घाटतें हू श्रीवृंदावन कहत हैं। तहां हू बंसीवट है। तहां अनेक श्वेतवाराहकल्प में पंचाध्याई को रास उहां ही किये हैं। और सारस्वतकल्प में शरदऋतु किए, सो 'परासोली' श्रीगिरिराज ऊपर किये। पाछें वसंत चैत्र वैसाख को रास केसीघाट पास बंसीवट नीचे किये। सो या प्रकार रास दोऊ ठिकाने। परंतु मुख्य पंचाध्याई सारस्वतकल्प को रास गिरिराज को। या प्रकार लीला के

વૃક્ષ નીચેજ અંતર્ધાન થઇ ગયા. ત્યારે રાધા સહચરીએ રૂદન કર્યું. કે 'હા નાથ રમણ-પ્રેષ્ઠ' (ઉપર જુઓ). તેથી એ કુંડનું નામ રૂદ્રકુંડ છે. તે હજુ સુધી લોકો એને રૂદ્રકુંડ કહે છે. પછી ત્યા બધી ગોપી આવી મળી. પછી આગળ ચાલીને 'જાન,' 'અજાન' વૃક્ષને પૂછતાં પૂછતાં જમનાવતા શ્રીજમનાજીની પુલિનમાં 'ગોપિકા ગીત' ગાઇને બધા ભક્તોએ રૂદન કર્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પોતે પ્રકટ થઇને ફરી પરાસોલી ચંદ્રસરોવર ઉપર રાસ કર્યો. તે શ્રમ થયો. ત્યારે શ્રીયમુનાજીના જલમાં જલવિહાર કર્યો. એ પ્રકારે સારસ્વતકલ્પની પંચાધ્યાઇનો રાસ શ્રીગિરિરાજજીની પાસે છે. વળી વ્રજ-ભક્તો ખોળતાં ખોળતાં શ્રીઠાકુરજીના મળવાને માટે દૂર ગયાં ત્યાં અંધારૂં જોઇને ત્યાંથી ફર્યાં. 'તમઃ પ્રવિષ્ટ' (ઉપર જુઓ) એ અંધારૂં શ્યામઢાકની આગળ 'સામઇ' ગામ છે ત્યાં શ્યામવન છે તે મહાસઘન. ત્યાંથી ફર્યાં ત્યાં (ગિરિરાજજીમાં) પંચા-ધ્યાઇને અનુસાર બધા સ્થલ દર્શન દે છે અને કાલીદહ ઘાટને પણ વૃંદાવન કહે છે. ત્યાં પણ બંસીબટ છે. ત્યાં અનેક શ્વેતવારાહ કલ્પમાં પંચાધ્યાઇનો રાસ ત્યાંજ કર્યો છે. અને સારસ્વતકલ્પમાં શરદઋતુ કરી (રાસ કર્યો) તે પરાસોલી શ્રીગિરિરાજ ઉપર કર્યો. પછી વસંત ચૈત્ર વૈશાખનો રાસ કેશીઘાટ પાસ બંસીબટ નીચે કર્યો. આ પ્રકારે રાસ બે જગાએ. પરંતુ મુખ્ય પંચાધ્યાઇ સારસ્વતકલ્પનો રાસ ગિરિરાજનો. આ પ્રકારે

भेद हैं। तासों 'जमनावता' में एक धारा श्रीयमुनाजी की सारस्वतकल्प में बहती, तासों वा गाम को नाम 'जमुनावता' है। सो नंदगाम बरसाने के मध्य संकेत पास धारा होयके श्रीयमुनावता आई। तासों संकेत के पास श्रीयमुनाजी के पधारिवे को चिह्न है। सो या प्रकार यातें कह्यो, जो—अबके जीव को विश्वास दृढ होत नाहीं है। सो सब चिह्नकों देखे, सुने तब विश्वास होय। और जब फल सिद्ध होय, तब भाव बढ़े, तासों खोलिके कहे।

वार्ता-प्रसंग १—**सो जमुनावता में कुंभनादास रहते। सो परासोली चंद्र सरोवर के ऊपर कुंभनदास के बापदादान के खेत हते। तहां कुंभनदास खेती करते। सो परासोली में कुंभनदास खेत अर्थ बहोत रहत हते। उन कुंभनदास कों बालपने तें गृहासक्ति नाहीं, और झूठ बोलते नाहीं, और पापादिक कर्म नाहीं करते। सूधे व्रजवासी की रीति सों रहते। जो जब कुंभनदास बड़े भये। तब 'जेत' (गाँव) के पास बहुलावन है तहां कुंभनदास को ब्याह भयो, सो स्त्री साधारन आई, लीला संबंधी तो नाहीं। परंतु कुंभनदासजी सरीखे वैष्णव भगवदीयन को संग निष्फल जाय नहीं, सो उद्धार होयगो। परंतु अब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिराज ऊपर प्रकटे नाहीं। जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अपने पास बुलावेंगे, तब श्री-**

લીલાનો ભેદ છે. તેથી જમનાવતામાં એક ધારા શ્રીયમુનાજીની સારસ્વતકલ્પમાં વહેતી. તેથી એ ગામનું નામ જમનાવતા છે. તે નંદગામ બરસાના મધ્ય સંકેત પાસે ધારા થઇને શ્રીયમુનાવતા આવી. તેથી સંકેતની પાસે શ્રીયમુનાજીને પધારવાનું ચિન્હ છે. આ પ્રકાર એથી કહ્યો, કે આજના જીવોને વિશ્વાસ દઢ થતો નથી બધા ચિન્હોને જુએ સાંભળે ત્યારે વિશ્વાસ થાય. અને ત્યારે ફલ સિદ્ધ થાય. ત્યારે ભાવ વધે તેથી ખોલીને કહ્યું.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-જમુનાવતામાં કુંભનદાસ રહેતા ત્યાં પરાસોલી ચંદ્રસરોવર ઉપર કુંભનદાસના બાપદાદાનાં ખેતર હતાં. ત્યાં કુંભનદાસજી ખેતી કરતા. તે પરાસોલીમાં કુંભનદાસ ખેતી માટે ઘણું રહેતા હતા. એમણે બાલપણાથી ગૃહાસક્તિ ન્હોતી. જુઠું બોલતા નહીં. અને પાપાદિક કર્મ ન કરતા. સીધે વ્રજવાસીની રીતિથી રહેતા. જ્યારે કુંભનદાસજી મોટા થયા ત્યારે 'જેત' ગામની પાસે બહુલાવન છે ત્યાં કુંભનદાસનું લગ્ન થયું. તે સ્ત્રી સાધારણ આવી. લીલા સંબંધી તો નહતી. પરંતુ કુંભનદાસ સરખા વૈષ્ણવ ભગવદીયનો સંગ નિષ્ફળ જાય નહીં. તેથી ઉદ્ધાર થશે. પરંતુ હમણાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીગિરિરાજ ઉપર પ્રકટ્યા નથી. જ્યારે શ્રી ગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીગિરિરાજ ઉપર પ્રકટ થઇને શ્રીઆચાર્યજીને પોતાની પાસે

आचार्यजी आपु सरन लेयगें, और तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगें। सो एक समय श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी-परिक्रमा करत दक्षिन में झारखंड में पधारे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी सों कहे, जो-हम श्रीगोवर्द्धन में प्रकटे हैं, सो आपु यहां आयके हमकों बाहिर पधरायके हमारी सेवा जगत में प्रगट करि प्रकास करो। तब श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी परिक्रमा उहां झारखंड में राखिके सूधे व्रज कों पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, माधवभट्ट, नारायनदास और रामदास सिकंदरपुरवारे ये पांच सेवक श्रीआचार्यजी के संग हते। सो तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के नीचे आन्योर में सदूपांडे के द्वारपे एक चोतरा हतो तापे आय विराजे। पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के प्राकट्य को प्रकार श्रीआचार्यजी सदूपांडे, और उनके भाई माणिकचंद पांडे, नरो भवानी, ये सब सेवक भये हते तिनसों पूछ्यो। सो सब प्रकार ऊपर सदूपांडे की वार्ता में कहि आये हैं। पाछें रामदास चौहान पूछरी पास गुफा में रहते सो सेवक भये, तिनकों श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सोंपी। सो रामदास व्रजवासी आदि औरहू सेवक भये। सो कुंभनदास 'जमुनावता' गाम में रहते। तहां ये समाचार सुने

બોલાવશે ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે (તેમને) શરણે લેશે અને ત્યારે એ ભગવદીય પ્રસિદ્ધ થશે. તે એક સમય શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૃથ્વી-પરિક્રમા કરતાં દક્ષિણમાં ઝારખંડમાં પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીઆચાર્યજીને કહે, કે અમે શ્રીગોવર્દ્ધનમાં પ્રકટ્યા છીએ તેથી આપ અહીં આવીને અમને બહાર પધરાવીને અમારી સેવા જગતમાં પ્રકટ કરી પ્રકાશ કરો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૃથ્વી-પરિક્રમા ત્યાં ઝારખંડમાં રાખીને સીધા વ્રજમાં પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસ હરસાની, કૃષ્ણદાસ મેઘન, માધવભટ્ટ, નારાયણદાસ અને રામદાસ સિકંદરપુરવાળા એ પાંચ સેવક શ્રીઆચાર્યજીની સાથે હતા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગિરિરાજ પર્વતની નીચે આન્યોરમાં સદ્દૂપાંડેના દ્વાર ઉપર ચોતરા હતો તેની ઉપર આવી બિરાજ્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના પ્રાકટ્યનો પ્રકાર શ્રીઆચાર્યજી સદ્દૂ પાંડે અને એમના ભાઇ માણેકચંદ પાંડે નરો ભવાની એ બધા સેવક થયા હતા તેમને પૂછ્યો. તે બધો પ્રકાર ઉપર સદ્દૂ પાંડેની વાર્તામાં કહી આવ્યા છીએ. પછી રામદાસ ચૌહાણ પૂછરી પાસે ગુફામાં રહેતા તે સેવક થયા. તેમને શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા સોંપી. રામદાસ વ્રજવાસી આદિ બીજા પણ સેવક થયા. એ કુંભનદાસ જમનાવતા ગામમાં રહેતા હતા.

जो एक बड़े महापुरुष आन्योर में आये हैं। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीठाकुरजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत में सों प्रकट करे हैं, और सदूपांडे आदि व्रजवासी बहोत लोग सेवक भये हैं। तब कुंभनदास सुनिके अपनी स्त्री सों कहे, जो-अन्योर में चलिके श्रीआचार्यजी के सेवक हूजिये, सो इनकी कृपातें श्रीठाकुरजी कृपा करेंगे। सो तब स्त्रीने कही, जो-मैं चलूंगी, जो मेरे कोई संतति बेटा नहीं है, सो वे महापुरुष देंय तो होय। सो या प्रकार बिचार करिके दोऊ जनें श्रीआचार्यजीके पास आयके दंडवत करी। सो तब श्रीआचार्यजी आपु पूछे, जो-कुंभनदास! आये? सो तब कुंभनदास दंडवत करि बिनती करी, जो-महाराज! बहोत दिनतें भटकत हतो; सो अब आपु मो ऊपर कृपा करो। सो कुंभनदास तो दैवीजीव हैं, सो श्रीआचार्यजी के दरसन करत ही श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान होय गयो। तब श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदास सों कहे, जो-तुम स्त्री पुरुष दोउ जने न्हाय आवो। तब दोऊ जने संकर्षणकुंड में न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदास और उनकी स्त्री कों नाम सुनाये। तब वा स्त्री ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो-महाराज! आपु बड़े महापुरुष हो, मेरे बेटा नाहीं है, तासों

ત્યાં (એમણે) એ સમાચાર સાંભળ્યા, કે એક મોટા મહાપુરુષ આન્યોરમાં આવ્યા છે. એમણે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીઠાકુરજીને શ્રીગોવર્દ્ધન પર્વતમાંથી પ્રકટ કર્યા છે અને સદ્દૂ પાંડે આદિ વ્રજવાસી ઘણા લોકો (એમના) સેવક થયા છે. ત્યારે કુંભનદાસ એ સાંભળીને પોતાની સ્ત્રીને કહે, કે આન્યોરમાં ચાલીને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇએ. એમની કૃપાથી શ્રીઠાકુરજી કૃપા કરશે. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, કે હું પણ ચાલીશ. મારે કોઇ સંતતી બેટા નથી. તેથી એ મહાપુરુષ આપે તો થાય. આ પ્રકારે વિચાર કરીને બન્ને જણાંએ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે પૂછે કે કુંભનદાસ! આવ્યા? ત્યારે કુંભનદાસે દંડવત્ કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! ઘણા દિવસથી ભટકતો હતો હવે આપ મારા ઉપર કૃપા કરો. તે કુંભનદાસ તો દૈવી જીવ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરતાંજ શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થઇ ગયું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કુંભનદાસને કહે, કે તમે સ્ત્રી પુરૂષ બન્ને જણાં ન્હાઇ આવો. ત્યારે બન્ને જણ સંકર્ષણ કુંડમાં ન્હાઇને શ્રીઆચાર્યજી પાસે આવ્યાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કુંભનદાસ અને એમની સ્ત્રીને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે સ્ત્રીએ આચાર્યજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપ મોટા મહાપુરુષ છો. મારે

आपु कृपा करिके देऊ। तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके प्रसन्न होयके कहे, जो–तेरे सात बेटा होयगें, तू चिंता मति करे। सो तब वह स्त्री अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई। तब कुंभनदास अपनी स्त्री सों कही, जो–यह कहा तेनें श्रीआचार्यजी के पास मांग्यो। जो श्रीठाकुरजी मांगती तो श्रीठाकुरजी देते। तब वा स्त्रीने कही, जो–मोकों चहियत हतो सो मैंने मांग्यो, और जो तुम कों चाहिये सो तुम मांगि लेहु। तब कुंभनदास चुप होय रहे। ता पाछें श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धनधर को छोटो सो मंदिर बनवायके ता मंदिर में श्रीगोवर्द्धनधर कों पधरायके रामदास चौहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। सो रामदास, सदूपांडे आदि व्रजवासी सब सीधो सामग्री ले आवते। सो श्रीगोवर्द्धनधर कों पधरायके रामदास चौहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। सो रामदास, सदूपांडे आदि व्रजवासी सब सीधो सामग्री ले आवते। सो दूध दही माखन श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग धरिके ता महाप्रसाद सों रामदास निर्वाह करते। और व्रजवासी, जो सेवक कुंभनदास आदि भक्त, तिनकों श्रीआचार्यजी ने आज्ञा दीनी, जो–ये श्रीगोवर्द्धननाथजी हमारो सर्वस्व हैं, तासों इनकी सेवा में तुम तत्पर रहियो, और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन

બેટા નથી તેથી આપ કૃપા કરીને દો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કૃપા કરીને પ્રસન્ન થઇને કહે કે તારે સાત બેટા થશે તૂ ચિંતા ન કર. ત્યારે તે સ્ત્રી પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થઇ ત્યારે કુંભનદાસે પોતાની સ્ત્રીને કહ્યું, કે આ શું તેં શ્રીઆચાર્યજી પાસે માંગ્યું ? શ્રીઠાકુરજી માંગતી તો શ્રીઠાકુરજી દેતા. ત્યારે સ્ત્રીએ કહ્યું, કે મને જે જોઇતું હતું તે મેં માગ્યું અને જે તમારે જોઇએ તે તમે માગી લો. ત્યારે કુંભનદાસ ચૂપ થઇ રહ્યા. તે પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનધરને નાનું સરખું મંદિર બનાવરાવીને તે મંદિરમાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પધરાવીને રામદાસ ચોહાણને સેવાની આજ્ઞા આપી. ત્યારે રામદાસ, સદૂપાંડે આદિ વ્રજવાસી બધું સીધું સામગ્રી લે આવતા. એ રીતે શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પધરાવીને રામદાસ ચોહાણને સેવાની આજ્ઞા આપી. પછી રામદાસ, સદૂપાંડે આદિ વ્રજવાસી બધું સીધું સામગ્રી લઇ આવતા તે દૂધ દહીં માખન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભોગ ધરીને તે મહાપ્રસાદથી નિર્વાહ કરતા. વળી વ્રજવાસી, જે સેવક કુંભનદાસ આદિ ભક્ત તેમને શ્રીઆચાર્યજીએ આજ્ઞા આપી કે એ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી અમારૂં સર્વસ્વ છે તેથી એમની સેવામાં તમે તત્પર રહેજો. અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યા વિના મહાપ્રસાદ ન લેતા, અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા

किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो। और श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सावधानी सों करियो। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत सुन्दर गावते। कंठहू इनको बहोत सुन्दर हतो। तासों कुंभनदास सों श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-तुम समय समय के कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनाइयो। सो प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगायके कुंभनदास कों कहे, जो-कछु भगवल्लीला वरणन करो। तब कुंभनदास श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके पहले यह पद गायो। सो पद—

राग बिलावल— सांझ के साँचे बोल तिहारे।
रजनी अनत जगे नंदनंदन आए निपट सवारे ॥ १ ॥
आतुर भए नीलपट ओढे पीयरे बसन बिसारे।
'कुंभनदास प्रभु' गोवर्द्धनधर भले बचन प्रतिपारे ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदास के मुखतें सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-कुंभनदास! निकुंज-लीला संबंधी रस को अनुभव भयो? तब कुंभनदास ने दंडवत कीनी और कह्यो, जो-महाराज! आपु की कृपातें। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-तिहारे बडे भाग्य हैं। जो-प्रथम प्रभु तुमकों प्रमेय बलको अनुभव बताये, तासों तुम सदा हरिरस में मगन रहोगे। तब कुंभनदास ने बिनती कीनी जो-महाराज! मोकों तो सर्वोपरि याही रस को अनुभव कृपा करिके दीजिये। सो कुंभनदास सगरे कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी किये। सो

સાવધાનીથી કરજો. એ કુંભનદાસ કીર્તન બહુજ સુંદર ગાતા. કંઠ પણ એમનો બહુ સુંદર હતો. તેથી કુંભનદાસને શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે તમે સમય સમયનાં કીર્તન નિત્ય શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સંભળાવજો. પ્રાતઃકાલ શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાવીને કુંભનદાસને કહે, કે કંઇ ભગવલ્લીલા વર્ણન કરો. ત્યારે કુંભનદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને દંડવત્ કરીને પહેલાં આ પદ ગાયું-પદ 'સાંજકે સાંચે બોલ તિહારે' આ કીર્તન કુંભનદાસના મુખથી સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે કુંભનદાસ! નિકુંજ લીલા સંબંધી રસનો અનુભવ થયો? ત્યારે કુંભનદાસે દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે મહારાજ આપની કૃપાથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, તમારાં મોટાં ભાગ્ય છે કે પ્રથમજ પ્રભુએ તમને પ્રમેય બલનો અનુભવ જણાવ્યો તેથી તમે સદા હરિરસમાં મગન રહેશો. ત્યારે કુંભનદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! મને તો સર્વોપરી આજ રસનો અનુભવ કૃપા કરીને આપો. તેથી કુંભનદાસે બધાં કીર્તન યુગલ સ્વરૂપ સંબંધી

बधाई, पलना, बाललीला गाई नाहीं। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। या प्रकार कुंभनदासजी आदि वैष्णव ऊपर कृपा करि श्रीआचार्यजी दक्षिन के झारखंड में पृथ्वी–परिक्रमा छोडिके पधारे हते, सो फेरि जीवन की ऊपर कृपा करन के अर्थ परिक्रमा करन पधारे।

वार्ता–प्रसंग २—और यहां कुंभनदासजी नित्य सवारे 'जमुनावता' तें श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवते सो समय २ के कीर्तन करते। श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास सों सानुभावता जनावते, सो संग खेलन लागे। और खेल की वार्ता करते। पाछें कछुक दिनमें एक म्लेच्छ को उपद्रव भयो, सो सगरे गाम कों लूटत मारत पश्चिमतें आयो। ताके डेरा श्रीगिरिराजतें पांच कोस आगे भये। तब सदूपांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासजी, कुंभनदासजी ये चारि वैष्णवननें अपने मनमें विचार कियो, जो–यह म्लेच्छ बुरो आयो है, जो–भगवद्धर्म को द्वेषी है। तासों कहा विचार करनो? सो ये चारों वैष्णव श्रीनाथजी के अंतरंग हते, सो इन सों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करते। तासों इन चारयों वैष्णवननें मंदिर में जायके श्रीनाथजी सों पूछी, जो–महराज! अब कैसी करें? जो धर्म को द्वेषी म्लेच्छ लूटत आवत है। तासों आपु कृपा करिके

कर्या. वधाइ, पलना, बाललीला गाइ नहीं एवा कृपापात्र भगवदीय थया. ए प्रकारे कुंभनदासजी आदि वैष्णव उपर कृपा करी श्रीआचार्यजी दक्षिणना झारखंडमां पृथ्वी परिक्रमा छोडीने पधार्या हता ते फरी जीवोनी उपर कृपा करवाने माटे परिक्रमा करवा पधार्या.

वार्ता प्रसंग–२—अने अहीं कुंभनदासजी नित्य सवारे 'जमुनावता' थी श्री गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने आवता. त्यारे समय समयनां कीर्तन करता. श्रीगोवर्द्धननाथजी पोते कुंभनदासने सानुभावता जणावता. साथे रमवा लाग्या अने खेलनी वार्ता करता. पछी थोडाक दिवसमां एक यवननो उपद्रव थयो ए बधां गामोने लुटतो मारतो पश्चिमथी आव्यो. तेनो मुकाम श्रीगिरिराजजीथी पांच गाउ आगळ थयो. त्यारे सदू पांडे, माणेकचंद पांडे, रामदासजी, कुंभनदासजी ए चार वैष्णवोए पोताना मनमां विचार कर्यो के आ यवन खराब आव्यो छे. ए भगवद्धर्मनो द्वेषी छे. तेथी शो विचार करवो? ए चारे वैष्णव श्रीनाथजीना अंतरंग हता. एमनाथी श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करता. तेथी ए चारे वैष्णवोए मंदिरमां जइने श्रीनाथजीने पूछयुं, के महाराज! हवे शुं करीए? धर्मनो द्वेषी यवन

किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो। और श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सावधानी सों करियो। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत सुन्दर गावते। कंठहू इनको बहोत सुन्दर हतो। तासों कुंभनदास सों श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–तुम समय समय के कीर्तन नित्य श्री-गोवर्द्धननाथजी कों सुनाइयो। सो प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगो-वर्द्धननाथजी कों जगायके कुंभनदास कों कहे, जो–कछु भगवल्लीला वरणन करो। तब कुंभनदास श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके पहले यह पद गायो। सो पद—

राग बिलावल— सांझ के साँचे बोल तिहारे।
रजनी अनत जगे नंदनंदन आए निपट सवारे ॥ १ ॥
आतुर भए नीलपट ओढे पीयरे बसन बिसारे।
'कुंभनदास प्रभु' गोवर्द्धनधर भले बचन प्रतिपारे ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदास के मुखतें सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-कुंभनदास! निकुंज–लीला संबंधी रस को अनुभव भयो? तब कुंभनदास ने दंडवत कीनी और कह्यो, जो–महाराज! आपु की कृपातें। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो–तिहारे बडे भाग्य हैं। जो-प्रथम प्रभु तुमकों प्रमेय बलको अनुभव बताये, तासों तुम सदा हरिरस में मगन रहोगे। तब कुंभनदास ने बिनती कीनी जो–महाराज! मोकों तो सर्वोपरि याही रस को अनुभव कृपा करिके दीजिये। सो कुंभनदास सगरे कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी किये। सो

સાવધાનીથી કરજો. એ કુંભનદાસ કીર્તન બહુજ સુંદર ગાતા. કંઠ પણ એમનો બહુ સુંદર હતો. તેથી કુંભનદાસને શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે તમે સમય સમયનાં કીર્તન નિત્ય શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સંભળાવજો. પ્રાતઃકાલ શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાવીને કુંભનદાસને કહે, કે કંઇ ભગવલ્લીલા વર્ણન કરો. ત્યારે કુંભનદાસે શ્રી-ગોવર્દ્ધનનાથજીને દંડવત્ કરીને પહેલાં આ પદ ગાયું-પદ 'સાંજકે સાંચે બોલ તિહારે' આ કીર્તન કુંભનદાસના મુખથી સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે કુંભનદાસ! નિકુંજ લીલા સંબંધી રસનો અનુભવ થયો? ત્યારે કુંભનદાસે દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે મહારાજ આપની કૃપાથી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, તમારાં મોટાં ભાગ્ય છે કે પ્રથમજ પ્રભુએ તમને પ્રમેય બલનો અનુભવ જણાવ્યો તેથી તમે સદા હરિરસમાં મગન રહેશો. ત્યારે કુંભનદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! મને તો સર્વોપરી આ જ રસનો અનુભવ કૃપા કરીને આપો. તેથી કુંભનદાસે બધાં કીર્તન યુગલ સ્વરૂપ સંબંધી

वधाई, पलना, बाललीला गाई नाहीं। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। या प्रकार कुंभनदासजी आदि वैष्णव ऊपर कृपा करि श्रीआचार्यजी दक्षिन के झारखंड में पृथ्वी-परिक्रमा छोडिके पधारे हते, सो फेरि जीवन की ऊपर कृपा करन के अर्थ परिक्रमा करन पधारे।

वार्ता-प्रसंग २—और यहां कुंभनदासजी नित्य सवारे 'जमुनावता' तें श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवते सो समय २ के कीर्तन करते। श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास सों सानुभावता जनावते, सो संग खेलन लागे। और खेल की वार्ता करते। पाछें कछुक दिनमें एक म्लेच्छ को उपद्रव भयो, सो सगरे गाम कों लूटत मारत पश्चिमतें आयो। ताके डेरा श्रीगिरिराजतें पांच कोस आगे भये। तब सदूपांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासजी, कुंभनदासजी ये चारि वैष्णवननें अपने मनमें विचार कियो, जो-यह म्लेच्छ बुरो आयो है, जो-भगवद्धर्म को द्वेषी है। तासों कहा विचार करनो? सो ये चारों वैष्णव श्रीनाथजी के अंतरंग हते, सो इन सों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करते। तासों इन चार्यों वैष्णवननें मंदिर में जायके श्रीनाथजी सों पूछी, जो-महराज! अब कैसी करें? जो धर्म को द्वेषी म्लेच्छ लूटत आवत है। तासों आपु कृपा करिके

કર્યાં. વધાઇ, પલના, બાલલીલા ગાઇ નહી એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય થયા. એ પ્રકારે કુંભનદાસજી આદિ વૈષ્ણવ ઉપર કૃપા કરી શ્રીઆચાર્યજી દક્ષિણના ઝારખંડમાં પૃથ્વી પરિક્રમા છોડીને પધાર્યા હતા તે ફરી જીવોની ઉપર કૃપા કરવાને માટે પરિક્રમા કરવા પધાર્યા.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—અને અહીં કુંભનદાસજી નિત્ય સવારે 'જમુનાવતા' થી શ્રી ગિરિરાજ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને આવતા. ત્યારે સમય સમયનાં કીર્તન કરતા. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે કુંભનદાસને સાનુભાવતા જણાવતા. સાથે રમવા લાગ્યા અને ખેલની વાર્તા કરતા. પછી થોડાક દિવસમાં એક યવનનો ઉપદ્રવ થયો એ બધાં ગામોને લુટતો મારતો પશ્ચિમથી આવ્યો. તેનો મુકામ શ્રીગિરિરાજજીથી પાંચ ગાઉ આગળ થયો. ત્યારે સદૂ પાંડે, માણેકચંદ પાંડે, રામદાસજી, કુંભનદાસજી એ ચાર વૈષ્ણવોએ પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે આ યવન ખરાબ આવ્યો છે. એ ભગવદ્ધર્મનો દ્વેષી છે. તેથી શો વિચાર કરવો? એ ચારે વૈષ્ણવ શ્રીનાથજીના અંતરંગ હતા. એમનાથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી વાર્તા કરતા. તેથી એ ચારે વૈષ્ણવોએ મંદિરમાં જઇને શ્રીનાથજીને પૂછ્યું, કે મહારાજ! હવે શું કરીએ? ધર્મનો દ્વેષી યવન

आज्ञा करो सो करैं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी यह आज्ञा किये, जो-हमकों तुम टोंड के घने में पधराय के ले चलो। हमारो मन वहां पधारिवे को है। तब चार्यों वैष्णव नें बिनती कीनी, जो-महाराज! या समय असवारी कहा चहिये? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-सदूपांडे के घर भैंसा है, सोई ले आवो, तापे चढ़िके चलूंगो। पाछें सदूपांडे वा भैंसा कों ले आये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा भैंसा पे चढ़िके पधारे।

भावप्रकाश—सो वह भैंसा दैवी जीव हतो। सो वह लीला में श्रीवृषभानजी के घर की मालिन है। सो नित्य फूलन की माला श्रीवृषभानजीके घर करिके ले आवती। सो लीला में 'वृन्दा' याको नाम है। एक दिन श्रीस्वामिनीजी बगीची में पधारी। ता समय वृन्दा के पास एक बेटी हती, सो ताकों खवावती हती। सो याने उठिके न तो दंडवत कीनी और न समाधान कियो। तब हू श्रीस्वामिनीजी ने यासों कछु कह्यो नाहीं। ता पाछें श्रीस्वामिनीजी ने वृंदा सों कही, जो-तू श्रीनंदरायजी के घर जायके श्रीठाकुरजी सों समस्या सों हमारो यहां पधारिवो कहियो। तब श्रीस्वामिनीजी के वचन सुनिके वृंदा ने कही, जो-अबही मेरे माला करिके श्रीवृषभानजी कों पठावनी है, तासों मैं तो जात नाहीं। यह

લૂટતો ર આવે છે. તેથી આપ કૃપા કરીને આજ્ઞા કરો તેમ કરીએ. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ એ આજ્ઞા કરી કે અમને તમે ટોંડના ઘનામાં પધરાવીને લઇ ચાલો. અમારૂં મન ત્યાં પધારવાનું છે. ત્યારે ચારે વૈષ્ણવોએ વિનંતી કરી કે મહારાજ! આ સમયે સવારી કઇ જોઇએ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે સદૂ પાંડેના ઘરે પાડો છે તેજ લઇ આવો. તેની ઉપર ચઢીને ચાલીશ. પછી સદૂ પાંડે તે પાડાને લઇ આવ્યા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી એ પાડા ઉપર ચઢીને પધાર્યા.

ભાવપ્રકાશ—એ પાડો દેવી જીવ હતો. એ લીલામાં શ્રીવૃષભાનજીના ઘરની માલણ છે. નિત્ય ફૂલોની માળા શ્રીવૃષભાનજીના ઘરે કરીને લઇ આવતી. લીલામાં 'વૃંદા' એનું નામ છે. એક દિવસ શ્રીસ્વામિનીજી બગીચામાં પધારી ત્યારે વૃન્દાની પાસે એક બેટી હતી. તે તેને ખવડાવતી હતી. એથી એણે ઉઠીને ન તો દંડવત્ કરી અને ન સમાધાન કર્યું. તો પણ શ્રીસ્વામિનીજીએ એને કંઇ કહ્યું નહી. તે પછી શ્રીસ્વામિનીજીએ વૃંદાને કહ્યું, કે તૂં શ્રીનંદરાયજીના ઘરે જઇને શ્રીઠાકુરજીને ઇશારતથી અમારૂં અહીં પધારવાનું કહેજે. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીનાં વચન સાંભળીને વૃંદાએ કહ્યું, કે હમણાં મારે માળા કરીને શ્રીવૃષભાનજીને મોકલવી છે તેથી હું તો જતી નથી. એ

वचन सुनिके श्रीस्वामिनीजी ने यासों कही, जो–मैं यहां आई तब तेने उठिके सन्मान हू न कियो, और एक कार्य कह्यो सोऊ तोसों नाहीं बन्यो। तासों तू या बगीची में रहिवे योग्य नाहीं है। और तू यहां सों गिरिके भैंसा को जन्म लेहु। सो यह शाप श्रीस्वामिनीजी नें वा मालिन कों दियो। तब तो यह मालिन श्रीस्वामिनीजी के चरणारविंद में जाय परी, और बहोत ही विनती स्तुति करन लागी। और कही, जो–अब ऐसी कृपा करो, जो–फेरि मैं यहां आऊं। तब श्रीस्वामिनीजी ने यासों कही, जो–जब तेरे ऊपर चढिके श्रीठाकुरजी वन में पधारेंगे, तब तेरो अंगीकार होयगो। सो भैंसा को देह छोडिकें सखी–देह धरिके फेरि या बागकी मालिन होयगी। सो या प्रकार वह मालिन सदूपांडे के घर में भैंसा भई।

सो वाही भैंसा के ऊपर श्रीनाथजी आपु चढ़िके 'टोंड के घने' में पधारे, सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों एक ओर तो रामदासजी पकड़े चले, और एक ओरतें सदूपांडे पकड़े रहे। और कुंभनदास और मानिकचंद पांडे बीच में थांभे जाय। सो मारग में कांटा बहोत लागे, वस्त्र सब फाटि गये, बहोत दुःख पायो। मारग आछो न हतो। सो वा 'टोंड के घना' में, बीच में एक निकुंज है। तहां नदी (?) है, सो कुंभनदास और मानिकचंद पांडे ये दोउ जने श्री-

---

વચન સાંભળીને શ્રીસ્વામિનીજીએ આને કહ્યું, કે હું જ્યારે આવી ત્યારે તેં ઉઠીને સન્માન પણ ન કર્યું અને એક કાર્ય કહ્યું તે પણ તારાથી ન બન્યું. તેથી તૂ આ બગીચામાં રહેવા યોગ્ય નથી અને તૂ અહીંથી (લીલામાંથી) પડ (ભુતલમાં) પાડાનો જન્મ લે. એ શાપ શ્રીસ્વામિનીજીએ તે માલણને આપ્યો. ત્યારે તોં એ માલણ શ્રીસ્વામિનીજીના ચરણારવિંદમાં જઇ પડી અને બહુજ વિનંતી સ્તુતિ કરવા લાગી અને કહ્યું કે હવે કૃપા કરો કે ફરી હું અહીં આઉં. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ એને કહ્યું કે જ્યારે તારા ઉપર ચઢીને શ્રીઠાકુરજી વનમાં પધારશે ત્યારે તારો અંગીકાર થશે. ત્યારે પાડાનો દેહ છોડીને સખી દેહ ધરીને ફરી આ બાગની માલણ થઇશ. એ પ્રકારે એ માલણ સદૂપાંડેના ઘરમાં પાડો થઇ.

તે જ ભેંસાના ઉપર શ્રીનાથજી પોતે ચઢીને 'ટોંડ ના ઘને' પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને એક તરફથી રામદાસજી થાંભિને ચાલે અને બીજી તરફથી સદૂપાંડે થાંભી રહે અને કુંભનદાસ અને માણેકચંદ પાંડે વચમાં થાંભીને ચાલતા. તે માર્ગમાં કાંટા ઘણા લાગે, વસ્ત્ર બધાં ફાટી ગયાં, બહુ દુઃખ પામ્યા. એ 'ટોંડ ના ઘના'ની વચમાં એક નિકુંજ છે ત્યાં નદી (સરોવર) છે. તે કુંભનદાસ અને માણેકચંદ

नाथजी के आगे मारग बतावें, लता कांटा टारत जांय। सो या प्रकार 'टोंड के घने' में भीतर एक चौंतरा है तहाँ छोटो सो सरोवर है, और एक गोल चौक मंडलाकार है। तहाँ रामदासजी और कुंभनदासजी श्रीनाथजी सों पूछे, जो-आपु कहाँ बिराजोगे? तब श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये, जो-याही चौंतरा पे बिराजेंगे। सो तब श्रीनाथजी के नीचे भैंसा के ऊपर गादी डारे हते सो वही गादी चौंतरा ऊपर डारि बिछाई, तापें श्रीनाथजी कों पधराये। पाछें श्रीनाथजी रामदासजी सों आज्ञा किये, जो-तुम कछू भोग धरिके न्यारे ठाड़े होउ। तब रामदासजी तथा कुंभनदासजी मन में बिचारे, जो-कोई व्रजभक्तन के मनोरथ पूरन करिवे के लिये यहाँ लीला करी है। पाछें रामदासजी थोड़ी सामग्री भोग धरे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो-सब सामग्री धरि देउ। सो रामदासजी उतावली में दोय सेर चून को सीरा कर लाये हते, सो सगरो भोग धरे। पाछें रामदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तें कहे, जो-सगरी सामग्री भोग धरी, परि यहां रहनो होय तब कहा करेंगे? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-यहाँ रहनो नाहीं है। जो इतनो ही काम हतो। पाछें कुंभनदास सहित सदूपांडे माणिकचंद पांडे, और रामदासजी ये चारों

પાંડે એ બેઉ જણા શ્રીનાથજીની આગળ માર્ગ બતાવે. લતા-કાંટા ટાળતા જતા. એ પ્રકારે 'ટોંડ ના ઘના'ની અંદર એક ચબુતરો છે. ત્યાં નાનું સરખું સરોવર છે અને એક ગોળ ચોક મંડળાકાર છે. ત્યાં રામદાસજી અને કુંભનદાસજી શ્રીનાથજીને પૂછે કે આપ ક્યાં બિરાજશો ? ત્યારે શ્રીનાથજીએ પોતે આજ્ઞા કરી કે આ જ ચબુતરા ઉપર બિરાજીશું. ત્યારે શ્રીનાથજીની નીચે પાડાની ઉપર ગાદી નાખી હતી તે જ ગાદી ચબુતરા ઉપર નાખી બિછાવી તેની ઉપર શ્રીનાથજીને પધરાવ્યા. પછી શ્રીનાથજીએ રામદાસજીને આજ્ઞા કરી કે તમે કંઇ ભોગ ધરીને અલગ ઉભા રહો. ત્યારે રામદાસજી તથા કુંભનદાસજી મનમાં વિચારે કે કોઇ વ્રજભક્તોનો મનોરથ પૂરણ કરવાને માટે અહીં લીલા કરી છે. પછી રામદાસજીએ થોડી સામગ્રી ભોગ ધરી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે બધી સામગ્રી ધરીદો તે રામદાસજી ઉતાવળમાં બશેર આટાનો શીરો કરીને લાવ્યા હતા તે બધો ભોગ ધર્યો. પછી રામદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને કહે, કે બધી સામગ્રી ભોગ ધરી પરંતુ અહીં રહેવું હોય ત્યારે શું કરીશું ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે અહીં રહેવું નથી. આટલું જ કામ હતું. પછી કુંભનદાસ સહિત સદૂ પાંડે, માણેકચંદ પાંડે અને રામદાસજી એ ચારે જણ એક વૃક્ષની ઓટમાં જઇ બેઠા. ત્યારે

जन एक वृक्ष की ओट में जाय बैठे। सो तब निकुंज के भीतर श्रीस्वामिनीजी अपने हाथ सों मनोरथ की सामग्री करी हती सो ले के श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास पधारी। पाछें मिलिके भोजन करनो विचार कियो। सो सामग्री करत रंचक श्रीस्वामिनीजी कों श्रम भयो। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु श्रीमुखतें कुंभनदास सों आज्ञा किये, जो–कुंभनदास ! तू कछू या समय कीर्तन गावे तो मन प्रसन्न होय। और मैं सामग्री अरोगत हौं, तासों तू कीर्तन गाउ। सो कुंभनदास अपने मन में विचारे, जो–प्रभुन को मन कछू हास्य प्रसंग सुनिवे को है। और कुंभनदास आदि चार्यों वैष्णव भूखे हते और कांटाहू लगे हते, सो ता समय कुंभनदासने एक पद गायो। सो पद—

राग सारंग—भावत है तोहि टोंड कौ घनो। कांटा लागे गोखरू भागे फट्यो जात यह तनो ॥ १ ॥ सिंहै कहा लोंकरी कौ डर यह कहा वानिक बन्यो। 'कुंभनदास' तुम गोवर्द्धनधर वह कौन रांड ढेढ़नी कौ जन्यो ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीस्वामिनीजी बहोत प्रसन्न भये। और सब वैष्णव हू प्रसन्न भये। ता पाछें माला के समय कुंभनदास ने यह पद गायो। सो पद—

राग मालकोस–बोलत स्याम मनोहर वैठे कमल खंड और कदम की छैयां। कुसुमित द्रुम अलि पीक गूंजत कोकिला कल गावत तहियां ॥ १ ॥ सुनत दूतिका के वचन माधुरी भयो हुलास तन मन महियां। 'कुंभनदास प्रभु' व्रज जुवति मिलन चली रसिक कुवर गिरिधर पहियां ॥ २ ॥

यह पद कुंभनदास ने गायो, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

નિકુંજની અંદર શ્રીસ્વામિનીજીએ પોતાના હાથથી મનોરથની સામગ્રી કરી હતી તે લઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પાસે પધાર્યાં. પછી મળીને ભોજન કરવાનો વિચાર કર્યો. તે સામગ્રી કરતાં રંચક શ્રીસ્વામિનીજીને શ્રમ થયો. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે શ્રીમુખથી કુંભનદાસને આજ્ઞા કરી કે, કુંભનદાસ ! તું કંઇ આ સમયે કીર્તન ગાય તો મન પ્રસન્ન થાય અને હું સામગ્રી આરોગું છું તેથી તું કીર્તન ગા. ત્યારે કુંભનદાસે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે પ્રભુનું મન કંઇ હાસ્ય પ્રસંગ સાંભળવાનું છે. વળી કુંભનદાસ આદિ ચારે વૈષ્ણવ ભૂખ્યા હતા અને કાંટા પણ લાગ્યા હતા. તેથી તે સમયે કુંભનદાસે એક પદ ગાયું. તે પદ :—'ભાવત હૈ તોહિ ટોંડકો ઘનો' (ઉપર જુઓ). એ કીર્તન સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી અને શ્રીસ્વામિનીજી ઘણા પ્રસન્ન થયા અને બધા વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થયા. તે પછી માળાના સમયે કુંભનદાસજીએ આ પદ ગાયું. તે પદ :—'બોલત શ્યામ મનોહર બૈઠે' (ઉપર જુઓ). એ પદ કુંભનદાસે

आपु बहोत प्रसन्न भये। तब श्रीस्वामिनीजी नें श्रीगोवर्द्धनधर सों पूछी, जो–तुम कौन प्रकार पधारे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कही, जो–सदूपांडे के घर भैंसा हतो सो वा उपर चढ़िके पधारे हैं। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के वचन सुनिके श्रीस्वामिनीजी आपु वा भैंसा की ओर देखिके कृपा करिके कहे, जो–यह तो मेरे बाग की मालिन है, सो मेरी अवज्ञा तें भैंसा भई परंतु आज याने भली सेवा करी, तासों अब याको अपराध निवृत्त भयो। सो या प्रकार कहि, नाना प्रकार की केलि टोंड के घनेमें करिके श्रीस्वामिनीजी तो बरसाने में पधारे।

भावप्रकाश—सो तहां कांटा बहोत हते, सो श्रीस्वामिनीजी कहां कैसे पधारे ? यह शंका होय तहां कहत हैं। जो–ये व्रज के वृक्ष परम स्वरूपात्मक हैं, सो जहां जैसी इच्छा होय सो तहां तैसी कुंजलता फल फूल होय जात हैं। सो कबहू सकल कांटा तो यह लौकिक लोगन कों दीसत हैं। सो तहां कुंज में सब व्रजभक्तन सहित श्रीठाकुरजी आप लीला करत हैं। सो तहां गोपन कों और मर्यादा वारेन कों यह कांटान की आड़ होत है, (नाँतर) सघन बन होत है। सो व्रज के भक्त सदा सेवा में तत्पर रहत हैं, सो तासों यह संदेह नाहीं है। और श्रीगोवर्द्धननाथजी भैंसा ऊपर चढ़िके टोंड के घना में पधारे। सो ता समय चार वैष्णव संग हते। सो मारग में व्रजवासी लोग बहोत मिलते, सो श्रीगोवर्द्धन-

---

ગાયું. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે ઘણા પ્રસન્ન થયા. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પુછ્યું, કે તમે કયા પ્રકારે પધાર્યા ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કહ્યું, કે સદૂ પાંડેના ઘરે પાડો હતો તેના ઉપર ચઢીને પધાર્યા છીએ. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં વચન સાંભળીને શ્રીસ્વામિનીજી પોતે એ પાડાની તરફ જોઇને કૃપા કરીને કહે, કે આ તો મારા બાગની માલણ છે. તે મારી અવજ્ઞાથી પાડો થઇ પરંતુ આજે એણે સારી સેવા કરી તેથી હવે એનો અપરાધ નિવૃત્ત થયો. એ રીતે કહી નાના પ્રકારની કેલી ટોંડના ઘનામાં કરીને શ્રીસ્વામિનીજી તો બરસાના પધાર્યા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં કાંટા ઘણા હતા. તેથી શ્રીસ્વામિનીજી ત્યાં કેવી રીતે પધાર્યા ? એવી શંકા થાય ત્યાં કહે છે કે એ વ્રજનાં વૃક્ષ પરમ સ્વરૂપાત્મક છે. જ્યાં જેવી ઇચ્છા હોય ત્યાં તેવી કુંજલતા ફલ-ફૂલ થઇ જાય છે. કયારેક બધા કાંટા તો આ લૌકિક લોકોને દેખાય છે. ત્યાં કુંજમાં બધાં વ્રજભક્તો સહિત શ્રીઠાકુરજી પોતે લીલા કરે છે. ત્યાં ગોપોને અને મર્યાદાવાળાને આ કાટાંની આડ થાય છે. નહી તો સઘન વન થાય છે. વ્રજના ભક્ત સદા સેવામાં તત્પર રહે છે તેથી આમાં સંદેહ નથી. અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પાડા ઉપર ચઢીને ટોંડના ઘનામાં પધાર્યા. તે સમયે ચાર વૈષ્ણવ સાથે હતા.

नाथजी कों देखे नाहीं, जाने जो-भैंसा लिये चारि जन जात हैं। सो कांटा न होय तो सगरे व्रजवासी तहां आवे। या प्रकार केवल व्रजभक्तन कों सुख देनार्थ श्रीठाकुरजी की लीला रस है। सो लौकिक में डरिके छिपि के पधारनो; सो यह रस है। ईश्वरता को भाव नाहीं विचारनो है। ईश्वरता में कहे तो भजनो कहा? डर, जहां माधुर्य रस में है सो प्रेम सों; ईश्वरता में डर नाहीं है। या प्रकार रसिक जन नेत्रन सों जो देखत हैं सो तिनकों आनंद उपजत है, सो ज्ञान नेत्रन-अलौकिक नेत्रन-सों लीलारस को अनुभव होत है।

सो जब श्रीस्वामिनीजी बरसाने पधारे, तब चारयों भगवदीयन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने अपने पास बुलाये।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय जो-यह भगवदीय तो अंतरंग हैं। सो जब लीला को अनुभव है तो फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी इन कों न्यारे ओट में क्यों विदा किये? तहाँ कहत हैं, जो-ये भगवदीय यद्यपि सखी रूप सों लीला को दरसन करत हैं, तोऊ श्रीस्वामिनीजी कों अपने हस्त सों हास्यविनोद करत आरोगावनो है, सो पास सखी होय तो लज्जा, संकोच रहे। सो ताही सों निकुंज में जब दोउ स्वरूप लीला करत हैं, तब सखी सब जालरंध्र व्हेके लतान की ओट लीला

ત્યારે માર્ગમાં વ્રજવાસી લોકો ઘણા મળતા. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જુએ નહીં. જાણે કે પાડો લઇ ચાર જણ જાય છે. જો કાંટા ન હોય તો બધા વ્રજવાસી ત્યાં આવે. એ પ્રકારે કેવળ વ્રજભક્તોને સુખ દેવાને માટે શ્રીઠાકુરજીનો લીલા રસ છે. લૌકિકમાં ડરીને સંતાઇને પધારવું એ રસ છે. ઇશ્વરતાનો ભાવ વિચારવો નથી ઇશ્વરતામાં કહે તો ભાગવું કેવું? ડર જ્યાં માધુર્ય રસમાં છે ત્યાં તે પ્રેમથી. ઈશ્વરતામાં ડર નથી. આ પ્રકારની દૃષ્ટિથી જે રસિકજનો જુએ છે તેમને આનંદ ઊપજે છે. માટે જ્ઞાનનેત્રો-અલૌકિક નેત્રો-થી લીલા રસનો અનુભવ થાય છે.

જ્યારે શ્રીસ્વામિનીજી બરસાના પધાર્યાં ત્યારે ચારે ભગવદીયોને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતાની પાસે બોલાવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં આ સંદેહ થાય કે એ ભગવદીયો તો અંતરંગ છે. જ્યારે (તેમને) લીલાનો અનુભવ છે તો પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ એમને અલગ ઓટમાં કેમ વિદાય કર્યા? ત્યાં કહે છે, કે એ ભગવદીય યદ્યપિ સખી રૂપથી લીલાનાં દર્શન કરે છે તો પણ શ્રીસ્વામિનીજીને પોતાના શ્રીહસ્તથી હાસ્યવિનોદ કરતાં આરોગાવવું છે તેથી પાસે સખી હોય તો લજ્જા સંકોચ રહે. તેથી જ નિકુંજમાં જ્યારે બન્ને સ્વરૂપ લીલા કરે છે ત્યારે સખી બધી જાલરંધ્રે લતાઓની આડમાં રહીને લીલાના સુખનું

को सुख अवलोकन करत हैं। सो तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने भगवदीयन कों नेक ओट में बैठाये हते, सो बुलाये।

सो जब चारयों वैष्णव आये, तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदूपांडे सों कह्यो, जो-अब देखो उपद्रव मिट्यो? तब सदूपांडे टोंड के घने सों बाहिरें आये, सो इतने में श्रीगोवर्द्धन सों समाचार आये, जो-वह म्लेच्छ की फौज आई हती सो पाछी गई हैं। तब सदूपांडेने आयके श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-वह फौज तो म्लेच्छकी भाजि गई। तब श्रीगोवर्द्धनधर कहे, जो-अब तुम मोकों गिरिराज ऊपर मंदिर में पधरावो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भैंसा ऊपर बेठाये। पाछें चारयों वैष्णवन ने श्रीनाथजी कों श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर मंदिर में पधराये। तब भैंसा पर्वत सों उतरिके देह छोड़िके फेरि लीला में प्राप्त भयो। पाछे सगरे व्रजवासी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिके बहोत हरषित भये, और कहन लागे, जो-धन्य है, देवदमन! जो इनके प्रतापसों, ऐसो उपद्रव भयो हतो सो एक क्षणमें मिटि गयो, सो कछू जान्यो हू न पर्यो। तब कुंभनदास ने श्रीनाथजी के आगे यह पद गायो। सो पद—

राग श्रीराग—जयति जयति हरिदासवर्यधरने। वारि वृष्टि निवारि, घोख आरति टारि देवपति मान भंग करने ॥ १ ॥ जयति पट पीत दामिनी रुचिर वर

અવલોકન કરે છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ ભગવદીયોને થોડીક ઓટમાં બેસાડ્યા હતા પછી બોલાવ્યા.

પછી જ્યારે ચારે વૈષ્ણવો આવ્યા ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ સદૂ પાંડેને કહ્યું, કે હવે જુઓ ઉપદ્રવ મટ્યો? ત્યારે સદૂ પાંડે ટોડના ઘનેથી બહાર આવ્યા. એટલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનથી સમાચાર આવ્યા કે એ યવનની ફોજ આવી હતી તે પાછી ગઈ છે. ત્યારે સદૂ પાંડેએ આવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને કહ્યું, કે એ યવનની ફોજ તો ભાગી ગઇ. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર કહે, કે હવે તમે મને ગિરિરાજ ઉપર મંદિરમાં પધરાવો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પાડા ઉપર બેસાડ્યા. પછી ચારે વૈષ્ણવોએ શ્રીનાથજીને શ્રીગિરિરાજ પર્વત ઉપર પધરાવ્યા. ત્યારે પાડો પર્વતથી ઉતરીને દેહ છોડીને ફરી લીલામાં પ્રાપ્ત થયો. પછી બધા વ્રજવાસી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરીને બહુજ પ્રસન્ન થયા અને કહેવા લાગ્યા કે ધન્ય છે દેવદમન! જે એમના પ્રતાપથી એવો ઉપદ્રવ થયો હતો તે એક ક્ષણમાં મટી ગયો. તે કંઇ જાણ્યું ન ગયું. ત્યારે કુંભનદાસે શ્રીનાથજીની આગળ આ પદ ગાયું. તે પદ:—૧ 'જયતિ ૨ શ્રીહરિદાસ વર્ય ધરને'

मृदुल अंग सांवल जलद वरने । कर अधर वेनु धरि गान कल-रव सब्द सहज व्रज युवती जन चित्त हरने ॥ २ ॥ जयति वृंदा विपिन भूमि डोलनि अखिल लोक-वंदनि अंबुरुह चरने । तरनि-तनया-तीर विहार नंदगोप-कुमार 'दासकुंभन' नमित तुव शरने ॥ ३ ॥

राग श्रीराग—कृष्ण तरनी तनया तीर रासमंडल रच्यो अधर कर मधुर सुर वेनु बाजे । जुवती जन जूथ संग निर्नत अनेक रंग निरखि अभिमान तजि काम लाजे ॥ १ ॥ श्यामतन पीत कौशेय सुभ पद-नखचन्द्रिका सकल भुव तिमिर भाजे । ललित अवतंस भ्रुव भु धनुस लोचन चपल चितवनि मनों मदनवान साजे ॥ २ ॥ मुखर मंजीर कटि किंकनी कुनीत रव वचन गंभीर मनु मेघ गाजे । 'दास कुंभन' नाथ हरिदासवर्यधरन नखसिख स्वरूप अद्भुत विराजे ॥ ३ ॥

सो ऐसे कीर्तन कुंभनदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बहोत सुनाये। सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये। सो कुंभनदासजी के पद जगत में प्रसिद्ध भये।

वार्ता-प्रसंग ३—सो कुंभनदासने बहोत पद बनाये, सो जहां तहां लोग गावन लागे। ता पाछें एक कलावत ने एक पद कुंभनदासजी को सीख्यो, सो देसाधिपति के आगे गायो। सो सीकरी फतेपुर में देसाधिपति के डेरा हते सो तहां यह पद गायो। सो पद—

राग धनाश्री—देखरी आवनी मदन गोपाल की। सक्रवाहन-गति निरख लाजत गजगति अनूप लटक चालकी ॥ १ ॥ स्याम तन कटि बसन मन हरन सुंदरता उर श्रीमाल की। भोंह धनुस सजि मनहु मदन सर चितवनी लोचन विसाल की ॥ २ ॥ रेनुमंडित कुंतल-अलक सोभा केसर कौ तिलक भाल की (य) 'दास कुंभन' चारु रास मोहे जगत गोवर्द्धनधर कुंवर रसाल की ॥ ३ ॥

सो यह कीर्तन सुनिके देसाधिपति को मन वा पद में गडि गयो, सो माथो धुन्यो और कह्यो, जो-ऐसे ऐसे महापुरुष भूमि पर होय गये, सो जिनकों ऐसे दरसन परमेश्वर के होते। तब वा कला-

---

૨ 'કૃષ્ણ તરનિ તનયા તીર' (ઉપર જુઓ). એવાં કીર્તન કુંભનદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ઘણાં સંભળાવ્યાં. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસ ઉપર ઘણા પ્રસન્ન થયા. એ કુંભનદાસજીનાં પદ જગતમાં પ્રસિદ્ધ થયાં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩—કુંભનદાસે બહુ પદ બનાવ્યાં તે જ્યાં ત્યાં લોકો ગાવા લાગ્યા. તે પછી એક ગવૈયો કુંભનદાસજીનું એક પદ શીખ્યો. તે તેણે દેશાધિપતિની આગળ ગાયું. પછી ફતેહપુર સીકરીમાં દેશાધિપતિનો મુકામ હતો ત્યાં તેણે એ પદ ગાયું. તે પદ :—'દેખરી આવની મદન ગોપાલકી' એ કીર્તન સાંભળીને દેશાધિપતિનું મન એ પદમાં ચોંટી ગયું તેથી માથું ધુણાવ્યું અને કહ્યું, કે એવા એવા મહાપુરુષ ભૂમિ

वत ने देसाधिपति सों कही, जो–साहिब ! वे महापुरुष पद करिवे वारे यहां ही हैं। सो तब यह देसाधिपति वा कलावतके ऊपर बहोत प्रसन्न होयके पूछ्यो, जो–वे महापुरुष कहां हैं ? तब कलावत ने कही, जो–श्रीगोवर्द्धन के पास 'जमुनावतो' गाम है, सो तहां वे महापुरुष रहत हैं, और कुंभनदासजी उनको नाम है। तब देसाधिपतिने कही, जो–उनकों यहां ही बुलावो, जो–हम उन सों मिलेंगे। पाछें देसाधिपतिने अपने मनुष्य और सब तरहकी असवारी कुंभनदास कों लेवे कों पठाई। सो जमुनावता गाममें भेजी। तब वे मनुष्य असवारी लिवाये, जमुनावता गाम में आये। ता समय कुंभनदासजी तो जमुनावता में हते नाहीं, परासोली चंद्रसरोवरि में अपने खेत ऊपर बैठे हते। सो तब उन मनुष्यन ने जमुनावतामें आय के पूछी। पाछें खबरि पायके गाम में तें एक मनुष्य कों संग लेके वे लोग कुंभनदासजीके पास आये। तब देसाधिपतिके मनुष्यनने आयके कुंभनदाससों कह्यो, जो–तुमकों देसाधिपतिने बुलाये हैं। तब कुंभनदास ने कही, जो–हम तो गरीब व्रजवासी हैं, सो काहूके चाकर नाहीं हैं। तासों हमारो देसाधिपति सों कहा काम है ? जो मैं चलूं। तब देसाधिपतिके मनुष्य ने कह्यो, जो–बाबा साहिब ! हम तो कछु

ઉપર થઇ ગયા કે જેમને એવાં દર્શન પરમેશ્વરનાં થતાં. ત્યારે એ ગવૈયાએ દેશાધિપતિને કહ્યું, કે સાહબ ! એ મહાપુરુષ પદના કરવાવાળા અહીંજ છે. ત્યારે એ દેશાધિપતિએ તે ગવૈયાના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થઇને પૂછ્યું, કે તે મહાપુરુષ ક્યાં છે ? ત્યારે કલાવતે કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનની પાસે જમનાવતો ગામ છે. ત્યાં તે મહાપુરુષ રહે છે અને કુંભનદાસજી એમનું નામ છે. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, એમને અહીંજ બોલાવો અમે એમને મળીશું. પછી દેશાધિપતિએ પોતાના મનુષ્ય અને બધી પ્રકારની અસવારી કુંભનદાસને લેવા માટે મોકલી. તે જમનાવતા ગામમાં મોકલી. ત્યારે એ મનુષ્ય અસવારી લઇને જમનાવતા ગામમાં આવ્યા. તે સમયે કુંભનદાસજી તો જમનાવતા ગામમાં તો હતા નહીં. પરાસોલી ચંદ્રસરોવરમાં પોતાના ખેતર ઉપર બેઠા હતા. ત્યારે એ મનુષ્યોએ જમનાવતામાં આવીને પૂછ્યું, પછી ખબર કાઢીને ગામમાંથી એક મનુષ્યને સંગ લઇને એ લોકો કુંભનદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિના મનુષ્યોએ આવીને કુંભનદાસજીને કહ્યું, કે તમને દેશાધિપતિએ બોલાવ્યા છે. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે અમે તો ગરીબ વ્રજવાસી છીએ કોઇના ચાકર નથી. તેથી અમારૂં દેશાધિપતિથી શું કામ છે, કે હું ચાલું ? ત્યારે દેશાધિપ-

समुझत नाहीं हैं। सो हमकों तो देसाधिपति को हुकम है, जो-तुम कुंभनदासजी कों ले आवो, सो ये घोड़ा पालकी तिहारी असवारी के लिये आये हैं। सो तिनके ऊपर तुम असवार होयके चलिये। हम आये हैं जो देसाधिपति ने भेजे हैं, सो हम तुमकों लेके जांयगे। और जो हम न ले जांय तो देसाधिपति को हुकम टरें, तो देसाधिपति हमकों मरवाय डारे। तासों आपु चलिये, और उनसों मिलिके चले आईये। तब कुंभनदास अपने मनमें विचार कियो, जो-यह आपदा जो आई है, तासों अब गये विना चले नाहीं। तासों आपदा होय सोऊ भुगतनो। सो कुंभनदास कों देसाधिपति ने असवारी पठाई हती, सो तिनके संग मनुष्य आये हते सो उनने कह्यो, जो-बाबा साहिब! घोड़ा तथा पालकी पर चढ़िके वेगि चलिये। तब कुंभनदास ने उन मनुष्यन सों कह्यो, जो-मैं तो कबहू असवारी में बैठ्यो नाहीं। हम सों तुम कछू बोलो मति, जो-हम जोड़ा पहरि के पाँयन चलेंगे। तब उन मनुष्यन ने बहोत विनती कीनी, परि कुंभनदास तो असवारी में बैठे नाहीं, सो जोड़ा पहरिके पाँयन चले। सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के डेरान के पास गये। तब देसाधिपति कों खबरि करवाई, जो-कुंभनदास महापुरुष आये हैं। तब

તેના મનુષ્યોએ કહ્યું, કે બાવા સાહબ! અમે તો કંઇ સમજતા નથી. અમને તો દેશાધિપતિનો હુકમ છે કે તમે કુંભનદાસજીને લઇ આવો. આ ઘોડા. પાલખી તમારી અસવારીને માટે આવ્યાં છે. તેમના ઉપર તમે અસવાર થઇને ચાલો. અમે આવ્યા છીએ જે દેશાધિપતિએ મોકલ્યા છે તે અમે તમને લઇને જઇશું અને જો અમે ન લઇ જઇએ તો દેશાધિપતિનો હુકમ ટળે તો દેસાધિપતિ અમને મરાવી નાખે. તેથી આપ ચાલો અને એમને મળીને ચાલ્યા આવો. ત્યારે કુંભનદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો, કે આ આપદા આવી છે તેથી હવે ગયા વિના નહીં ચાલે. તેથી આપદા હોય તે પે ભોગવવી. પછી કુંભનદાસે દેશાધિપતિને અસવારી મોકલી હતી તેની સાથે મનુષ્યો આવ્યા હતા. એમણે કહ્યું, કે બાવા સાહબ! ઘોડા તથા પાલખી ઉપર ચઢીને જલ્દી ચાલો. ત્યારે કુંભનદાસે એ મનુષ્યોને કહ્યું, કે હું તો કયારેય અસવારીમાં બેઠ્યો નથી. અમારાથી તમે કંઇ બોલો નહીં. અમે જોડા પહેરીને પગે ચાલીશું. ત્યારે એ મનુષ્યોએ બહુ વિનંતી કરી પરંતુ કુંભનદાસતો અસવારીમાં બેઠા નહીં. જોડા પહેરીને પગે ચાલ્યા. તે ફતેપુરસીકરીમાં દેશાધિપતિના મુકામની પાસે ગયા. ત્યારે દેશાધિપતિને ખબર કરાવી કે કુંભનદાસજી મહાપુરુષ આવ્યા છે.

वत ने देसाधिपति सों कही, जो–साहिब ! वे महापुरुष पद करिवे वारे यहां ही हैं। सो तब यह देसाधिपति वा कलावतके ऊपर बहोत प्रसन्न होयके पूछ्यो, जो–वे महापुरुष कहां हैं ? तब कलावत ने कही, जो–श्रीगोवर्द्धन के पास 'जमुनावतो' गाम है, सो तहां वे महापुरुष रहत हैं, और कुंभनदासजी उनको नाम है। तब देसाधिपतिने कही, जो–उनकों यहां ही बुलावो, जो–हम उन सों मिलेंगे। पाछें देसाधिपतिने अपने मनुष्य और सब तरहकी असवारी कुंभनदास कों लेवे कों पठाई। सो जमुनावता गाममें भेजी। तब वे मनुष्य असवारी लिवाये, जमुनावता गाम में आये। ता समय कुंभनदासजी तो जमुनावता में हते नाहीं, परासोली चंद्रसरोवरि में अपने खेत ऊपर बैठे हते। सो तब उन मनुष्यन ने जमुनावतामें आय के पूछी। पाछें खबरि पायके गाम में तें एक मनुष्य कों संग लेके वे लोग कुंभनदासजीके पास आये। तब देसाधिपतिके मनुष्यनने आयके कुंभनदाससों कह्यो, जो–तुमकों देसाधिपतिने बुलाये हैं। तब कुंभनदास ने कही, जो–हम तो गरीब व्रजवासी हैं, सो काहूके चाकर नाहीं हैं। तासों हमारो देसाधिपति सों कहा काम है ? जो मैं चलूं। तब देसाधिपतिके मनुष्य ने कह्यो, जो–बाबा साहिब ! हम तो कछु

ઉપર થઇ ગયા કે જેમને એવાં દર્શન પરમેશ્વરનાં થતાં. ત્યારે એ ગવૈયાએ દેશાધિપતિને કહ્યું, કે સાહબ ! એ મહાપુરુષ પદના કરવાવાળા અહીંજ છે. ત્યારે એ દેશાધિપતિએ તે ગવૈયાના ઉપર બહુ પ્રસન્ન થઇને પૂછ્યું, કે તે મહાપુરુષ કયાં છે ? ત્યારે કલાવતે કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનની પાસે જમનાવતો ગામ છે. ત્યાં તે મહાપુરુષ રહે છે અને કુંભનદાસજી એમનું નામ છે. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, એમને અહીંજ બોલાવો અમે એમને મળીશું. પછી દેશાધિપતિએ પોતાના મનુષ્ય અને બધી પ્રકારની અસવારી કુંભનદાસને લેવા માટે મોકલી. તે જમનાવતા ગામમાં મોકલી. ત્યારે એ મનુષ્ય અસવારી લઇને જમનાવતા ગામમાં આવ્યા. તે સમયે કુંભનદાસજી તો જમનાવતા ગામમાં તો હતા નહીં. પરાસોલી ચંદ્રસરોવરમાં પોતાના ખેતર ઉપર બેઠા હતા. ત્યારે એ મનુષ્યોએ જમનાવતામાં આવીને પૂછ્યું, પછી ખબર કાઢીને ગામમાંથી એક મનુષ્યને સંગ લઇને એ લોકો કુંભનદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિના મનુષ્યોએ આવીને કુંભનદાસજીને કહ્યું, કે તમને દેશાધિપતિએ બોલાવ્યા છે. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે અમે તો ગરીબ વ્રજવાસી છીએ કોઇના ચાકર નથી. તેથી અમારૂં દેશાધિપતિથી શું કામ છે, કે હું ચાલું ? ત્યારે દેશાધિપ-

समुझत नाहीं हैं। सो हमकों तो देसाधिपति को हुकम है, जो-तुम कुंभनदासजी कों ले आवो, सो ये घोड़ा पालकी तिहारी असवारी के लिये आये हैं। सो तिनके ऊपर तुम असवार होयके चलिये। हम आये हैं जो देसाधिपति ने भेजे हैं, सो हम तुमकों लेके जांयगे। और जो हम न ले जांय तो देसाधिपति को हुकम टरें, तो देसाधिपति हमकों मरवाय डारे। तासों आपु चलिये, और उनसों मिलिके चले आईये। तब कुंभनदास अपने मनमें विचार कियो, जो-यह आपदा जो आई है, तासों अब गये विना चले नाहीं। तासों आपदा होय सोऊ भुगतनो। सो कुंभनदास कों देसाधिपति ने असवारी पठाई हती, सो तिनके संग मनुष्य आये हते सो उनने कह्यो, जो-बाबा साहिब! घोड़ा तथा पालकी पर चढ़िके वेगि चलिये। तब कुंभनदास ने उन मनुष्यन सों कह्यो, जो-मैं तो कबहू असवारी में बैठ्यो नाहीं। हम सों तुम कछू बोलो मति, जो-हम जोड़ा पहरि के पाँयन चलेंगे। तब उन मनुष्यन ने बहोत विनती कीनी, परि कुंभनदास तो असवारी में बैठे नाहीं, सो जोड़ा पहरिके पाँयन चले। सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के डेरान के पास गये। तब देसाधिपति कों खबरि करवाई, जो-कुंभनदास महापुरुष आये हैं। तब

તિના મનુષ્યોએ કહ્યું, કે બાવા સાહબ! અમે તો કંઇ સમજતા નથી. અમને તો દેશાધિપતિનો હુકમ છે કે તમે કુંભનદાસજીને લઇ આવો. આ ઘોડા. પાલખી તમારી અસવારીને માટે આવ્યાં છે. તેમના ઉપર તમે અસવાર થઇને ચાલો. અમે આવ્યા છીએ જે દેશાધિપતિએ મોકલ્યા છે તે અમે તમને લઇને જઇશું અને જો અમે ન લઇ જઇએ તો દેશાધિપતિનો હુકમ ટળે તો દેસાધિપતિ અમને મરાવી નાખે. તેથી આપ ચાલો અને એમને મળીને ચાલ્યા આવો. ત્યારે કુંભનદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો, કે આ આપદા આવી છે તેથી હવે ગયા વિના નહીં ચાલે. તેથી આપદા હોય તે યે ભોગવવી. પછી કુંભનદાસે દેશાધિપતિને અસવારી મોકલી હતી તેની સાથે મનુષ્યો આવ્યા હતા. એમણે કહ્યું, કે બાવા સાહબ! ઘોડા તથા પાલખી ઉપર ચઢીને જલ્દી ચાલો. ત્યારે કુંભનદાસે એ મનુષ્યોને કહ્યું, કે હું તો કયારેય અસવારીમાં બેઠ્યો નથી. અમારાથી તમે કંઇ બોલો નહીં. અમે જોડા પહેરીને પગે ચાલીશું. ત્યારે એ મનુષ્યોએ બહુ વિનંતી કરી પરંતુ કુંભનદાસતો અસવારીમાં બેઠા નહીં. જોડા પહેરીને પગે ચાલ્યા. તે ફતેપુરસીકરીમાં દેશાધિપતિના મુકામની પાસે ગયા. ત્યારે દેશાધિપતિને ખબર કરાવી કે કુંભનદાસજી મહાપુરૂષ આવ્યા છે.

देसाधिपति ने कुंभनदास कों भीतर बुलवाये, तब भीतर गये। पाछें देसाधिपति ने कही, जो–बाबा साहिब! आगे आवो। तब कुंभनदासजी तनिया पहरे, फटी मेली पाग, पिछोरा, टूटे जोड़ा सहित देसाधिपति के आगे जाय ठाड़े भये। तब देसाधिपतिने कही, जो–बाबा साहिब! बैठो। सो तहां जड़ाउ रावटी ही, तामें मोतिन की झालरी लागि रही है, और सुगंध की लपट आवत है। परंतु कुंभनदासजी के मन में महादुःख, जो–जीवते मानो नरक में बैठ्यो हूं। (और बिचारे जो) यासों तो मेरे ब्रज के रूख आछे हैं। जहां साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर खेलत हैं। सो या प्रकार कुंभनदासजी अपने मन में विचार करत हते, इतने में देसाधिपति बोल्यो, जो–बाबा साहिब! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं। तासों तिहारे मुखतें मैं कछू विष्णुपद सुनूंगो, तासों आप कोई विष्णु–पद गावो। तब देसाधिपति के बचन सुनिके एक तो कुंभनदास मन में कुढि रहे हते और दूसरे देसाधिपति ने गायवे की कही। तब कुंभनदास के मन में बहोत बुरी लगी। तब कुंभनदास अपने मनमें बिचार कियो, जो–गाये बिना छुटकारो होयगो नाहीं। और म्लेच्छ के आगे तो श्रीठाकुरजी की लीला के पद गाये जाय नाहीं। सो तासों मैं कहा

ત્યારે દેશાધિપતિએ કુંભનદાસને અંદર બોલાવ્યા. ત્યારે અંદર ગયા. પછી દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે બાવા સાહબ! આગળ આવો. ત્યારે કુંભનદાસજી લંગોટ પહેરીને ફાટી મેલી પાગ, પિછોડા (લાંઘ વિનાની ધોતી) ટૂટેલા જોડા સહિત દેશાધિપતિની આગળ જઇ ઉભા રહ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે બાવા સાહબ? બેસો, એ સમયે ત્યાં જડાવની રાવટી હતી તેમાં મોતીની ઝાલર લાગી રહી છે. અને સુગંધની લપટ આવે છે. પરંતુ કુંભનદાસજીના મનમાં બહુ દુઃખ કે જાણે જીવતાં નરકમાં બેઠો છું. (અને વિચાર્યું કે) આનાથી તો મારા વ્રજનાં વૃક્ષ સારાં છે, જ્યાં સાક્ષાત્ શ્રીગોવર્દ્ધનધર રમે છે. એ પ્રકારે કુંભનદાસજી પોતાના મનમાં વિચાર કરતા હતા એટલામાં દેશાધિપતિ બોલ્યા કે બાવા સાહબ! તમે વિષ્ણુ પદ ઘણાં કર્યાં છે. તેથી તમારા મુખથી હું કંઇ વિષ્ણુ પદ સાંભળું. તેથી આપ કોઇ વિષ્ણુ પદ ગાવ. ત્યારે દેશાધિપતિનાં વચન સાંભળીને એક તો કુંભનદાસજી મનમાં બળી રહ્યા હતા અને બીજું દેશાધિપતિએ ગાવાનું કહ્યું, ત્યારે કુંભનદાસના મનમાં બહુ ખોટું લાગ્યું. ત્યારે કુંભનદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે ગાયા વિના છુટકારો થશે નહીં. અને આ યવનની આગળ શ્રીઠાકુરજીની લીલાનાં પદ ગાયાં જાય નહીં. તેથી હું શું ગાઉં?

देसाधिपति ने कुंभनदास कों भीतर बुलवाये, तब भीतर गये। पाछें देसाधिपति ने कही, जो–बाबा साहिब ! आगे आवो। तब कुंभनदासजी तनिया पहरे, फटी मेली पाग, पिछोरा, टूटे जोड़ा सहित देसाधिपति के आगे जाय ठाड़े भये। तब देसाधिपतिने कही, जो–बाबा साहिब ! बैठो। सो तहां जड़ाउ रावटी ही, तामें मोतिन की झालरी लागि रही है, और सुगंध की लपट आवत है। परंतु कुंभनदासजी के मन में महादुःख, जो–जीवते मानो नरक में बैठ्यो हूं। (और बिचारे जो) यासों तो मेरे ब्रज के रूख आछे हैं। जहां साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर खेलत हैं। सो या प्रकार कुंभनदासजी अपने मन में विचार करत हते, इतने में देसाधिपति बोल्यो, जो–बाबा साहिब ! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं। तासों तिहारे मुखतें मैं कछु विष्णुपद सुनूंगो, तासों आप कोई विष्णु–पद गावो। तब देसाधिपति के बचन सुनिके एक तो कुंभनदास मन में कुढि रहे हते और दूसरे देसाधिपति ने गायवे की कही। तब कुंभनदास के मन में बहोत बुरी लगी। तब कुंभनदास अपने मनमें बिचार कियो, जो–गाये बिना छुटकारो होयगो नाहीं। और म्लेच्छ के आगे तो श्रीठाकुरजी की लीला के पद गाये जाय नाहीं। सो तासों मैं कहा

ત્યારે દેશાધિપતિએ કુંભનદાસને અંદર બોલાવ્યા. ત્યારે અંદર ગયા. પછી દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે બાવા સાહેબ ! આગળ આવો. ત્યારે કુંભનદાસજી લંગોટ પહેરીને ફાટી મેલી પાગ, પિછોડા (સાંધ વિનાની ધોતી) ટૂટેલા જોડા સહિત દેશાધિપતિની આગળ જઇ ઉભા રહ્યા. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, કે બાવા સાહેબ ? બેસો, એ સમયે ત્યાં જડાવની રાવટી હતી તેમાં મોતીની ઝાલર લાગી રહી છે. અને સુગંધની લપટ આવે છે. પરંતુ કુંભનદાસજીના મનમાં બહુ દુ:ખ કે જાણે જીવતાં નરકમાં બેઠો છું. (અને વિચાર્યું કે) આનાથી તો મારા વ્રજનાં વૃક્ષ સારાં છે, જ્યાં સાક્ષાત્ શ્રીગોવર્દ્ધનધર રમે છે. એ પ્રકારે કુંભનદાસજી પોતાના મનમાં વિચાર કરતા હતા એટલામાં દેશાધિપતિ બોલ્યા કે બાવા સાહેબ ! તમે વિષ્ણુ પદ ઘણાં કર્યાં છે. તેથી તમારા મુખથી હું કંઇ વિષ્ણુ પદ સાંભળું. તેથી આપ કોઇ વિષ્ણુ પદ ગાવ. ત્યારે દેશાધિપતિનાં વચન સાંભળીને એક તો કુંભનદાસજી મનમાં બળી રહ્યા હતા અને બીજું દેશાધિપતિએ ગાવાનું કહ્યું, ત્યારે કુંભનદાસના મનમાં બહુ ખોટું લાગ્યું. ત્યારે કુંભનદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે ગાયા વિના છુટકારો થશે નહીં. અને આ યવનની આગળ શ્રીઠાકુરજીની લીલાનાં પદ ગાયાં જાય નહીં. તેથી હું શું ગાઉં ?

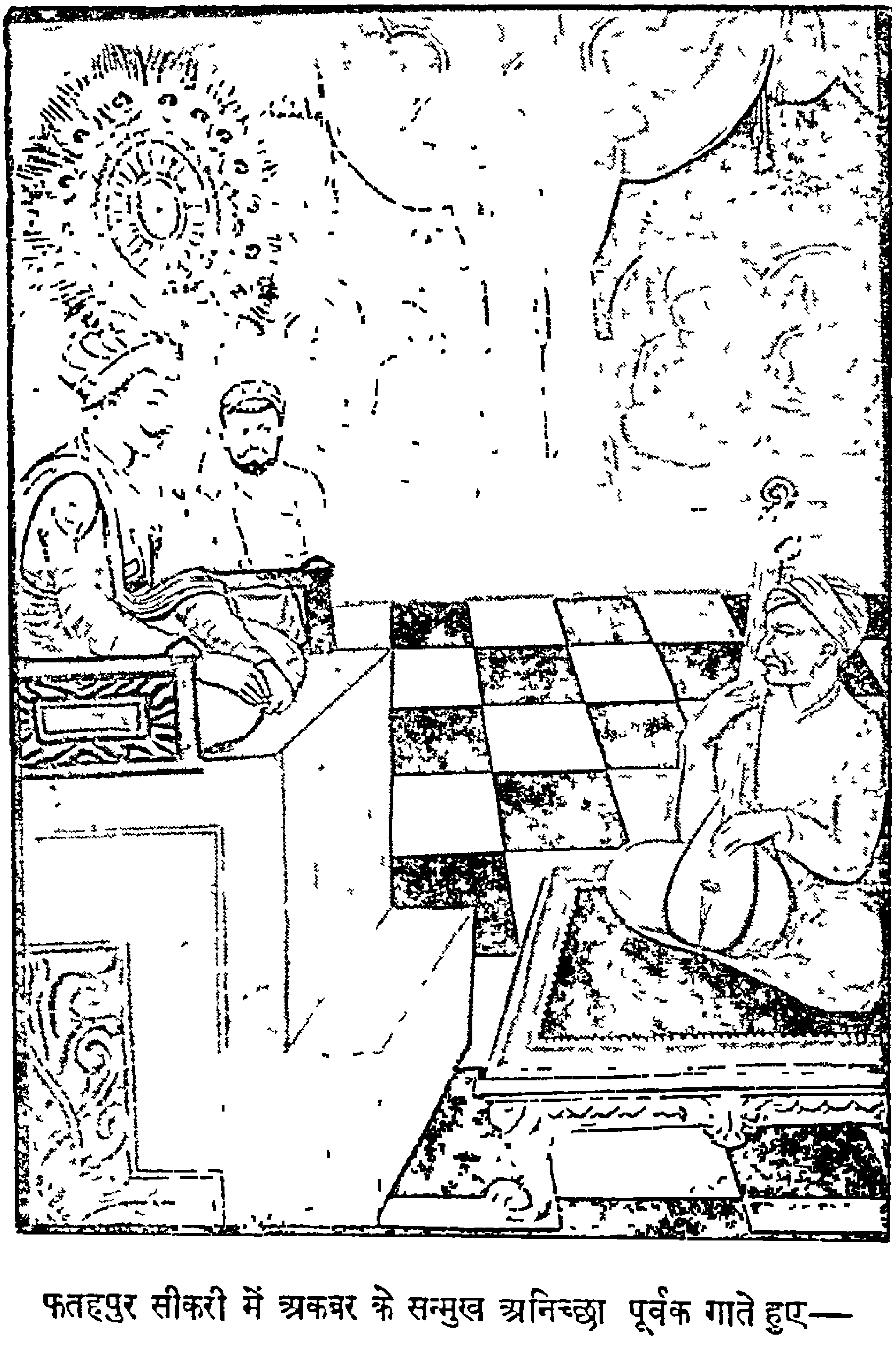

फतहपुर सीकरी में अकबर के सन्मुख अनिच्छा पूर्वक गाते हुए—

कुंभनदास

जन्म सं० १५२५ : देहावसान सं० १६४०

★

गाऊं? जो मेरी बानी के सुनिवेवारे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं, और या म्लेच्छ ने मोकों बुलाइके श्रीगोवर्द्धननाथजी सों विछोयो करायो है। तासों याकों कछू ऐसो सुनाऊं जो–यह बुरो माने तो आछो। और बुरो मानि के मेरो कहा करेगो? तब कुंभनदास के मनमें यह बात आई–'जाकों मनमोहन अंगीकार करें, एको केस खसै नहीं सिरतैं जो जग बैर परे।' सो यह विचारिके एक नयो पद करिके कुंभनदास ने देसाधिपति के आगे गायो। सो पद—

राग सारंग—भक्तन कों कहा सिकरी काम। आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥ जाको मुख देखे दुःख उपजे ताकों करनों पर्‌यो प्रनाम। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर बिनु यह सब झूंठो धाम ॥ २ ॥

सो यह पद कुंभनदासने गायो सो सुनिके देसाधिपति अपने मन में बहोत कुढ्यो। सो पाछें उनने अपने मन में बिचारी, जो–इनकों कछु लेवे को लालच होय तो ये मेरी खुसामद करें। जो–इनकों तो अपने इश्वर सों काम हैं। यह विचारिके अकबर पात्साह ने कुंभनदास सों कह्यो, जो–बाबासाहिब! मोकों कछु आज्ञा फरमावो सो मैं करूं। तब कुंभनदास ने कही, जो–आज पाछें मोकों कबहूँ बुलाइयो मति। तब देसाधिपतिने कुंभनदास कों बिदा किये। सो तब कुंभनदास उहां ते चले, सो मारग में आवत कुंभनदास के मन में श्रीगोवर्द्धननाथजी को बिरह कलेश (भयो) जो–अब मैं श्री-

---

मारी वाणीना सांभळवावाळा तो श्रीगोवर्द्धननाथजी छे. अने आ यवने मने बोलावीने श्रीगोवर्द्धननाथजीथी वियोग कराव्यो छे. तेथी आने कंइ एवुं संभळावुं के ए खोटुं माने तो सारुं. अने खोटुं मानीने ए मारुं शुं करशे? त्यारे कुंभनदासजीना मनमां ए वात आवी. 'जाकों मनमोहन अंगीकार करे, एको केस खसे नहीं शिरते जो जग वैर पडे॥' ए विचारीने एक नवुं पद करीने कुंभनदासे देशाधिपतिनी आगळ गायुं. ते पद–'भक्तकों कहा सिकरी काम' (उपर जुओ). आ पद कुंभनदासजीए गायुं. ए सांभळीने देशाधिपति पोताना मनमां बहु बळ्यो. पछी एणे पोताना मनमां विचार्युं, के एमने कंइ लेवानी लालच होय तो ए मारी खुशामद करे. एमने तो पोताना ईश्वरथी काम छे. ए विचारीने अकबरबादशाहे कुंभनदासने कह्युं, के बावा साहेब! मने कंइ आज्ञा फरमावो ते हुं करुं? त्यारे कुंभनदासे कह्युं, के आज पछी मने कदी बोलावता नहीं. त्यारे देशाधिपतिए कुंभनदासने विदाय कर्या. त्यारे कुंभनदास त्यांथी चाल्या. ते मारगमां आवतां कुंभनदासना

गोवर्द्धननाथजी को मुख कब देखौं ? सो ऐसें बिचार करत मारग में आवत कुंभनदास ने विरह को पद गायो । सो पद—

राग धनाश्री—कब हौं देखि हों इन नैननु । सुंदर स्याम मनोहर मूरति अंग अंग सुख दैननु ॥ १ ॥ वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप-वृन्द संग लेननु । हँसि हँसि हरखि पतौवनि पीवनु बाँटि बाँटि पय फेननु ॥ २ ॥ 'कुंभनदास' केते दिन बिते किए रेन सुख सैननु । अब गिरिधर बिनु निसि अरु बासर मन न परत कछु चैननु ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद मारग में गावत कुंभनदास श्रीगिरिराज ऊपर आय श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरशन किये । सो दोय प्रहर बीते, सो कुंभनदास कों मानों दोय जुग बीते । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी को श्रीमुख देखत ही सगरो दुःख बिसरि गयो । ता समय कुंभनदास ने एक पद गायो । सो पद—

राग धनाश्री—नैन भरि देख्यो नंदकुमार । ता दिन तें सब भूलि गई हौं बिसर्यो पति-परिवार ॥ १ ॥ बिनु देखे हौं बिबस भई री अंग-अंग सब हारि । तातें सुधि द्वै सांवरी मूरति लोचन भरि भरि वारि ॥ २ ॥ रूपरासी परिमित नहीं मानों कैसे मिले कन्हाई । 'कुंभनदास प्रभु' गोवर्द्धनधर मिली बहुरि उर लाई ॥ ३ ॥

राग धनाश्री—हिलगन कठिन है या मन की । जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की ॥ १ ॥ धरम जाउ और लोग हसौ सब, अरु आवो कुल-गारी । सो क्यों रहे ताहि बिनु देखे जो जाकौ हितकारी ॥ २ ॥ रस-लुब्ध एक निमिष नहीं छांडत ज्यों अधीन मृग गाने । 'कुंभनदास' यह सनेह मरम कौ श्री-गोवर्द्धनधर जाने ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद कुंभनदास ने बहोत ही गाये । सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहे, जो-कुंभनदास ! तू धन्य है । जो-मेरे बिना एक छिन तोकों कल नाहीं है । तासों मोहू कों तो बिना कछू सुहात

મનમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો વિરહ ક્લેશ થયો, કે હવે હું શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું મુખ ક્યારે જોઇશ ? એમ વિચાર કરતાં માર્ગમાં આવતાં કુંભનદાસે વિરહનું પદ ગાયું. તે પદ-'કબ હોં દેખિ હોં ઇન નેનન' (ઉપર જુઓ) એવાં પદ મારગમાં ગાતાં કુંભનદાસે શ્રીગિરિરાજ ઉપર આવી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. તે બે પ્રહર વીત્યા તેમાં કુંભનદાસને જાણે બે યુગ વીત્યા. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું શ્રીમુખ જોતાં જ બધું દુઃખ વિસરી ગયા. તે સમયે કુંભનદાસે એક પદ ગાયું. ૧ 'નૈન ભરિ દેખ્યો નંદકુમાર' ૨ 'હિલગન કઠિન હૈ યા મનકી' એવાં પદ કુંભનદાસજીએ ઘણાં જ ગાયાં. એ સાંભળીને શ્રીનાથજી પોતે કહે, કે કુંભનદાસ તૂ ધન્ય છે. મારા વિના

नाहीं है। सो या प्रकार कुंभनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी की परस्पर प्रीति हती।

वार्ता–प्रसंग ४—और एक समय मानसिंह देसदेस में दिग्विजय करिके जीतिके आगरे में देसाधिपति के पास आयो। तब देसाधिपति सों सीख मांगि के अपने देस कों चल्यो। तब राजा मानसिंह अपने मन सों विचार्यो, जो–बहोत दिन में आयो हूं, सो श्रीमथुराजी में न्हायके अपने देस जाऊं तो आछो है। सो राजा मानसिंह यह विचारिके श्रीमथुराजी में आयो। तहां विश्रांत घाट ऊपर न्हायो। तब चोवेनने मिलिके कह्यो, जो–श्रीकेसोरायजी श्रीठाकुरजी के दरसन कों चलो। सो गरमी ज्येष्ठ मास के दिन और मथुरिया चोवेनने राजा कों आवत जानिके श्रीकेसोरायजी कों जरीकी ओढनी, वागा, पिछवाई, चंदोवा सब जरी के किये। सोने के आभूषण पहिराये। सो दरसन करिके राजा मानसिंह ने अपने मन में कह्यो, जो–इनने मेरे दिखायवे के लिये श्रीठाकुरजी कों इतनी जरी लपेटी है। पाछें भेट धरिके चले। पाछें उनने कही, जो–वृंदावन में श्रीठाकुरजी के मंदिर हैं, सो तहां दरसन कों चलेंगे। पाछें राजा मानसिंह श्रीवृंदावन में आयो। सो श्रीवृंदावन के संत महंतनने सुनिके मनमें

એક ક્ષણ પણ તને કળ નથી. તેથી મને પણ તારા વિના કંઇ ગમતું નથી. આ પ્રકારે કુંભનદાસજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પરસ્પર પ્રીતિ હતી.

વાર્તા પ્રસંગ-૪ –વળી એક સમય માનસિંહ દેશ-દેશમાં દિગ્વિજય કરીને જીતીને આગ્રામાં દેશાધિપતિની પાસે આવ્યો. ત્યારે દેશાધિપતિથી આજ્ઞા માંગીને પોતાના દેશ ચાલ્યો. ત્યારે માનસિંહે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે બહુ દિવસમાં આવ્યો છું તેથી શ્રીમથુરાજીમાં ન્હાઇને આપણા દેશમાં જઉં તો સારૂં. રાજા માનસિંહ એમ વિચારીને મથુરાજી આવ્યો. ત્યાં વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર ન્હાયો. ત્યારે ચોબાઓએ મળીને કહ્યું, કે શ્રીકેશવરાયજી ઠાકુરજીનાં દર્શને ચાલો. ત્યારે ગરમી જ્યેષ્ઠ માસના દિવસ અને મથુરિયા ચોબાઓએ રાજાને આવતો જાણીને શ્રીકેશવરાયજીને જરીની ઓઢણી, વાગા, પિછવાઇ, ચંદરવા બધું જરીનું કર્યું. સોનાનાં આભૂષણ પહેરાવ્યાં. પછી દર્શન કરીને રાજા માનસિંહે પોતાના મનમાં કહ્યું, કે આ લોકોએ મને દેખાડવાને માટે શ્રીઠાકુરજીને આટલી જરી લપેટી છે. પછી ભેટ ધરીને ચાલ્યા. પછી એમણે કહ્યું, કે વૃંદાવનમાં શ્રીઠાકુરજીનાં મંદિર છે ત્યાં દર્શને ચાલીશું. પછી રાજા માનસિંહ શ્રીવૃંદાવનમાં આવ્યો. ત્યારે શ્રીવૃંદાવનના સંત મહંતોએ સાંભળીને

बिचारी, जो–यहां राजा मानसिंह दरसन कों आवेगो। यह जानि के अपने श्रीठाकुरजी के लिये भारी भारी जरी के चीरा, वागा, पटका, सूथन, जरी की ओढनी भारी भारी उढाई, और सोने के आभूषण पहराये। पाछें राजा मानसिंह आयके दोय चार ठिकाने बड़े-बड़े मंदिर में दरसन करि भेट किये। गरमी बहोत लगी सो डेरान पें आयो और कह्यो, जो–ये मोकों दिखायवे के लिये कियो है। ता पाछें राजा मानसिंह वृंदावन सों चल्यो, सो तीसरे प्रहर श्रीगोवर्द्धन में आयो। तब काहूने कही, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलोगे? तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन तो अवश्य करने हैं। सो तब गोपालपुर में आयके दरसन को समय पूछ्यो, तब काहूने कही, जो–उत्थापन के दरसन होय चुके है। और भोग के दरसन की तैयारी है। तब यह सुनिके राजा मानसिंह पर्वत की ऊपर चढ्यो, सो महा गरमी पड़ै। सो उघारे पांव राजा गरमी में व्याकुल होय ऊपर गयो। सो तब ही भोग के किंवाड़ खुले हते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही राजा मानसिंह के नेत्र सीरे होय गये। सो उन दिनन में श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा बड़े वैभव सों होत ही। सो ऊष्णकाल के दिन हते, तातें गुलाब के जल

मनमां विचार्युं, के अहीं राजा मानसिंह दर्शने आवशे ए जाणीने पोताना श्रीठाकुरजीने माटे भारी भारी जरीना चीरा, वागा, पटका सूथन जरीनी ओढणी भारी भारी ओढावी अने सोनानां आभूषण पहेराव्यां. पछी राजा मानसिंहे आवीने बेचार जगाए मोटां मोटां मंदिरोमां दर्शन करी भेट करी. गरमी घणी लागी पछी मुकामे आव्यो अने कह्युं, के ए मने देखाडवाने माटे कर्युं छे. ते पछी राजा मानसिंह वृंदावनथी चाल्यो. ते त्रीजा प्रहरे श्रीगोवर्द्धनमां आव्यो. त्यारे कोइए कह्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने चालशो? त्यारे राजा मानसिंहे कह्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन तो अवश्य करवां छे. पछी गोपालपुरमां आवीने दर्शननो समय पूछ्यो. त्यारे कोइए कह्युं, के उत्थापननां दर्शन थइ चूक्यां छे अने भोगनां दर्शननी तैयारी छे. ए सांभळीने राजा मानसिंह पर्वत उपर चढ्यो. ते गरमी घणी पड. तेथी उघाडा पगे राजा गरमीमां व्याकुळ थइने उपर गयो ते समये ज भोगनां कमाड खुल्यां हतां. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करतां ज राजा मानसिंहनां नेत्र टाढां थई गयां. ए दिवसोमां श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा बहु वैभवथी थती हती. ते उष्णकाळना दिवस हता. तेथी गुलाबना जळनो छंटकाव थयो हतो अने

विचारी, जो-यहां राजा मानसिंह दरसन कों आवेगो। यह जानि के अपने श्रीठाकुरजी के लिये भारी भारी जरी के चीरा, वागा, पटका, सूथन, जरी की ओढनी भारी भारी उढाई, और सोने के आभूषण पहराये। पाछें राजा मानसिंह आयके दोय चार ठिकाने बड़े-बड़े मंदिर में दरसन करि भेट किये। गरमी बहोत लगी सो डेरान पें आयो और कह्यो, जो-ये मोकों दिखायवे के लिये कियो है। ता पाछें राजा मानसिंह वृंदावन सों चल्यो, सो तीसरे प्रहर श्रीगोवर्द्धन में आयो। तब काहूने कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलोगे? तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन तो अवश्य करने हैं। सो तब गोपालपुर में आयके दरसन को समय पूछ्यो, तब काहूने कही, जो-उत्थापन के दरसन होय चुके है। और भोग के दरसन की तैयारी है। तब यह सुनिके राजा मानसिंह पर्वत की ऊपर चढ्यो, सो महा गरमी पड़ै। सो उघारे पांव राजा गरमी में व्याकुल होय ऊपर गयो। सो तब ही भोग के किंवाड़ खुले हते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही राजा मानसिंह के नेत्र सीरे होय गये। सो उन दिनन में श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा बड़े वैभव सों होत ही। सो ऊष्णकाल के दिन हते, तातें गुलाब के जल

मनमां विचार्युं, के अहीं राजा मानसिंह दर्शने आवशे ए जाणीने पोताना श्रीठाकुरजीने माटे भारी भारी जरीना चीरा, वागा, पटका सूथन जरीनी ओढणी भारी भारी ओढावी अने सोनानां आभूषण पहेराव्यां. पछी राजा मानसिंहे आवीने बेचार जगाए मोटां मोटां मंदिरोमां दर्शन करी भेट करी. गरमी घणी लागी पछी मुकामे आव्यो अने कह्युं, के ए मने देखाडवाने माटे कर्युं छे. ते पछी राजा मानसिंह वृंदावनथी चाल्यो. ते त्रीजा प्रहरे श्रीगोवर्द्धनमां आव्यो. त्यारे कोइए कह्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने चालशो? त्यारे राजा मानसिंहे कह्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन तो अवश्य करवां छे. पछी गोपालपुरमां आवीने दर्शननो समय पूछ्यो. त्यारे कोइए कह्युं, के उत्थापननां दर्शन थइ चूक्यां छे अने भोगनां दर्शननी तैयारी छे. ए सांभळीने राजा मानसिंह पर्वत उपर चढ्यो. ते गरमी घणी पड. तेथी उघाडा पगे राजा गरमीमां व्याकुल थइने उपर गयो ते समये ज भोगनां कमाड खुल्यां हतां. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करतां ज राजा मानसिंहनां नेत्र ठंडां थई गयां. ए दिवसोमां श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा बहु वैभवथी थती हती. ते उष्णकाळना दिवस हता. तेथी गुलाबना जळनो छंटकाव थयो हतो अने

सों छिरकाव भयो हतो, और अरगजा की लपट आवत है, और सुगंध आवत है, और दोहरो पंखा होत है। सुपेद पाग परदनी को सिंगार, श्रीकंठ में मोतीन की माला, और मोतीनके करनफूल और मोतीनके सूक्ष्म आभूषन। सो सुगंध सहित सीरी बयारि लागी। सो राजा मानसिंह को रोम २ सीतल भयो। सेवा रीति देखि के राजा मानसिंहने कह्यो, जो–सेवा तो यहां है। जो श्रीठाकुरजी सुख सों बिराजे हैं। सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भये सुने हते श्रीभागवत में। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी यही हैं। तासों आजु मेरे बड़े भाग्य हैं। जो मैंने ऐसो दरसन पायो है। ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे कुंभनदासजी पद गावत हते। सो जैसे श्रीगोवर्द्धनधर कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप मन हरन, और तैसे रसरूप कुंभनादासजीने पद गाये। सो पद—

राग नट—रूप देखि नैनां पलक लगे नहीं। गोवर्द्धनधर के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत तहीं॥ १॥ कहा री कहों कछु कहत न आवे चित्त चोर्‍यो वे मांग दहीं। 'कुंभनदास' प्रभु के मिलिवेकी सुंदर बात सखियन सों जु कही॥२॥

राग नट—पूतरी पोरिया इनके भए री माई। को रोके या मग आवत खंजन छोरि दए पलक न कपाट दिये री माई॥ १॥ ठाढ़े रहत प्रेम के वाढ़े निसवासर सब सुख चितए री माई। 'कुंभनदास' लाल गिरिधरन मन के भाजन फोरि ढँढोरि लिये री माई॥ २॥

राग श्रीराग—आवत गिरिधर मन जू हर्‍यो हो। हों अपने घर सचु सों बैठी निरखि बदन अचरा विसर्‍यो हो॥ १॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि नैन धीरज न धर्‍यो हो। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूष भर्‍यो हो॥२॥

અને અરગજા (એક પ્રકારનું મિશ્રિત સુગંધી દ્રવ્ય) ની મહેક આવે છે અને બેવડો પંખા ચાલે છે. સફેદ પાગ, પરદનીનો શૃંગાર શ્રીકંઠમાં મોતીની માળા અને મોતીનાં કર્ણફૂલ અને મોતીનાં સૂક્ષ્મ આભરણ. પછી સુગંધ સહિત ઠંડી હવા લાગી ત્યારે રાજા માનસિંહનાં રોમ રોમ શીતલ થયાં. સેવા રીતિ જોઇને રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે સેવા તો અહીં છે. શ્રીઠાકુરજી સુખથી બિરાજે છે. સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણ પ્રકટ થયા સાંભળ્યા હતા શ્રીભાગવતમાં, તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આ જ છે. તેથી આજ મારાં મોટાં ભાગ્ય છે, કે મને આવાં દર્શન મળ્યાં. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આગળ કુંભનદાસજી પદ ગાતા હતા. તે જેવા શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કોટી કંદર્પ લાવણ્ય સ્વરૂપ મન હરણ, તેવાં રસ રૂપ કુંભનદાસજીએ પદ ગાયાં. તે પદ-૧ રૂપ દેખિ-નૈનાં પલક લગે નહીં. ૨ પૂતરી પોરિયા ઇન કે ભયે માઇ ૨ આવત ગિરિધર મનજુ હર્યો હો. (ઉપર જુઓ). એવાં પદ કુંભનદાસજીએ ગાયાં. પછી ભોગનો સમય

श्री नाथजी

प्रा. स्थान : गिरिराज

प्रा. सं. १५३५

सों छिरकाव भयो हतो, और अरगजा की लपट आवत है, और सुगंध आवत है, और दोहरो पंखा होत है। सुपेद पाग परदनी को सिंगार, श्रीकंठ में मोतीन की माला, और मोतीनके करनफूल और मोतीनके सूक्ष्म आभूषन। सो सुगंध सहित सीरी बयारि लागी। सो राजा मानसिंह को रोम २ सीतल भयो। सेवा रीति देखि के राजा मानसिंहने कह्यो, जो–सेवा तो यहां है। जो श्रीठाकुरजी सुख सों विराजे हैं। सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भयें सुने हते श्रीभागवत में। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी यही हैं। तासों आजु मेरे बड़े भाग्य हैं। जो मैंने ऐसो दरसन पायो है। ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे कुंभनदासजी पद गावत हते। सो जैसे श्रीगोवर्द्धनधर कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप मन हरन, और तैसे रसरूप कुंभनादासजीने पद गाये। सो पद—

राग नट—रूप देखि नैनां पलक लगे नहीं। गोवर्द्धनधर के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत तहीं ॥ १ ॥ कहा री कहों कछु कहत न आवे चित्त चोरयो वे मांग दहीं। 'कुंभनदास' प्रभु के मिलिवेकी सुंदर वात सखियन सों जु कही ॥२॥

राग नट—पूतरी पोरिया इनके भए री माई। को रोके या मग आवत खंजन छोरि दए पलक न कपाट दिये री माई ॥ १ ॥ ठाढ़े रहत प्रेम के बाढ़े निसवासर सब सुख वितए री माई। 'कुंभनदास' लाल गिरिधरन मन के भाजन फोरि ढँढोरि लिये री माई ॥ २ ॥

राग श्रीराग—आवत गिरिधर मन जू हरयो हो। हों अपने घर सचु सों वैठी निरखि वदन अचरा विसरयो हो ॥ १ ॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि नैन धीरज न धरयो हो। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूष भरयो हो ॥२॥

અને અરગજા (એક પ્રકારનું મિશ્રિત સુગંધી દ્રવ્ય) ની મહેક આવે છે અને બેવડા પંખા ચાલે છે. સફેદ પાગ, પરદનીનો શૃંગાર શ્રીકંઠમાં મોતીની માલા અને મોતીનાં કર્ણફૂલ અને મોતીનાં સૂક્ષ્મ આભરણ. પછી સુગંધ સહિત ઠંડી હવા લાગી ત્યારે રાજા માનસિંહનાં રોમ રોમ શીતલ થયાં. સેવા રીતિ જોઈને રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે સેવા તો અહીં છે. શ્રીઠાકુરજી સુખથી બિરાજે છે. સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણ પ્રકટ થયા સાંભળ્યા હતા શ્રીભાગવતમાં, તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આ જ છે. તેથી આજ મારાં મોટાં ભાગ્ય છે, કે મને આવાં દર્શન મળ્યાં. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આગળ કુંભનદાસજી પદ ગાતા હતા. તે જેવા શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કોટી કંદર્પ લાવણ્ય સ્વરૂપ મન હરણ, તેવાં રસ રૂપ કુંભનદાસજીએ પદ ગાયાં. તે પદ-૧ રૂપ દેખિ-નૈનાં પલક લગે નહીં. ૨ પૂતરી પોરિયા ઇન કે ભયે માઇ ૨ આવત ગિરિધર મનજુ હર્યો હો. (ઉપર જુઓ). એવાં પદ કુંભનદાસજીએ ગાયાં. પછી ભોગનો સમય

सो एसे पद कुंभनदासजीने गाये। ता पाछें भोग को समय होय चुक्यो तब टेरा आयो। पाछें राजा मानसिंह दंडवत करिके अपने डेरान में आयो। ता पाछें सेन आरती के समे कुंभनदासजी ने यह पद गायो। सो पद—

राग केदारो—लाल के बदन पर आरती वारों। चारु चितवनि करों साज नीकी युक्ति बाती अगनित घृत कपूर सो बारों ॥ १ ॥ संख धुनि भेरि-मृदंग झालर झाँझ ताल घंटा बाजे बहुत विस्तारों। गाऊं सामल सुजस रसना सुखस्वाद रस परम हरख तन चमर कर डारों ॥ २ ॥ कोटि उद्योत रविकांति अंग अंग छबि सकल भूलोक को तिमिर टारों। 'दासकुंभन' पिय लाल गिरिधरन को रूप देखि नयनन भरि भरि निहारों ॥ ३ ॥

सो या प्रकार सनेह के कीर्तन गाय अपनी सेवा सों पहोंचि के कुंभनदासजी अपने घर जमुनावता में आये। सो ऊहां राजा मानसिंह अपने डेरान में जाय के अपने मनुष्य के आगे श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सिंगार की वार्ता कहन लाग्यो। और कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे विष्णु पद गावन हते, सो कौन हतो? जो–ऐसे पद गाये, जो–मनमें पैठि गये हैं। ऐसे पद आज तांई मैनें कबहू सुने नाहीं। तब एक व्रजवासी ने कह्यो, जो–ए गोरवा हैं और कुंभनदासजी इनको नाम हैं। जो–अपनी खेती में अन्न होय सो ताही सों निर्वाह करत हैं। जो–तुमने सुने ही होयगें, जो-आगे देसाधिपति ने बुलाये हते, परंतु कुंभनदासजी कछू लिये नाहीं। जो ये महापुरुष हैं। सो तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो–आज तो रात्रि

થઇ ચૂકયો ત્યારે રાજા માનસિંહ દંડવત્ કરીને પોતાના મુકામે આવ્યો. તે પછી સેન આર્તિના સમયે કુંભનદાસજીએ આ પદ ગાયું. તે પદ-લાલકે વદન પર આરતિ વારોં. (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે સ્નેહનાં કીર્તન ગાઇ પોતાની સેવાથી પહોંચીને કુંભનદાસજી પોતાના ઘરે જમનાવતામાં આવ્યા. ત્યાં રાજા માનસિંહ પોતાના મુકામે જઇને પોતાના મનુષ્યોની આગળ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સેવા-શૃંગારની વાર્તા કરવા લાગ્યા અને કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની આગળ વિષ્ણુ પદ ગાતા હતા તે કોણ હતા? (એમણે) એવાં પદ ગાયાં કે મનમાં ગડી ગયાં છે. આવાં પદ આજ સુધી મેં કયારેય સાંભળ્યાં નથી. ત્યારે એક વ્રજવાસીએ કહ્યું, કે એ ગૌરવા છે અને કુંભનદાસજી એમનું નામ છે. એ પોતાની ખેતીમાં જે અન્ન થાય છે તેનાથીજ નિર્વાહ કરે છે. તમે સાંભળ્યું જ હશે કે આગળ દેશાધિપતિએ બોલાવ્યા હતા. પરંતુ કુંભનદાસજીએ કંઇ લીધું નહી. એ મહાપુરુષ છે. ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે આજ તો રાત્રિ થઇ છે

भई हैं याते काल सकारे हमहू इनसों मिलेंगे। सो तब प्रातःकाल राजा मानसिंह उठिके श्रीगिरिराज की परिक्रमा करत परासोली में आयो। सो परासोली में चंद्रसरोवर हैं। तहां कुंभनदासजी न्हाय के खेत ऊपर बैठे हते। सो इतने ही में श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास के पास पधारे। सो श्रीमुख देखत ही कुंभनदासजी श्रीनाथजी सों कहे, जो-बाबा! आगे आवो। तब श्रीनाथजी आपु कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो-कुंभनदास! मैं तोसों एक बात कहन आयो हूं। सो या प्रकार कहत हते, इतने में राजा मानसिंह कुंभनदास के पास आयो। सो ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भाजि के डरि के एक वृक्ष की ओट में जाय के ठाढ़े गये। सो ताही समय कुंभनदासजी की दृष्टि तो एक श्रीगोवर्द्धननाथजी के संग गई। सो जहां श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े हते सो ताही ओर कों देख्यो करें। तब राजा मानसिंह कुंभनदास कों प्रणाम करिके पास बेठ्यो. परंतु कुंभनदासजी तो राजा मानसिंह की ओर दृष्टि हू नाहीं किये। सो कुंभनदासजी की एक भतीजी हती। सो जमुनावते सों बेझरिको चून कठोटी में करि, लेके कुंभनदास कों रसोई करिवे के लिये लावत हती। सो या भतीजी सों एक व्रजवासी ने कह्यो, जो-तू वेगि जा। जो-कुंभनदासजी पास राजा गयो है सो वह कछू देवे तो तू लीजियो।

તેથીં કાલે સવારે અમે પણ એમને મળીશું. પછી પ્રાતઃકાલે રાજા માનસિંહ ઉઠીને શ્રીગિરિરાજની પરિક્રમા કરતો પરાસોલીમાં આવ્યો. ત્યાં પરાસોલીમાં ચંદ્રસરોવર છે ત્યાં કુંભનદાસજી ન્હાઇને ખેત ઉપર બેઠા હતા. એટલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે કુંભનદાસજી પાસે પધાર્યા. ત્યારે શ્રીમુખ જોતાંજ કુંભનદાસજી શ્રીનાથજીને કહે, બાવા આગળ આવો. ત્યારે શ્રીનાથજી પોતે કુંભનદાસજીની ગોદીમાં બેસીને કહે, કે કુંભનદાસ! હું તને એક વાત કહેવા આવ્યો છું. એ પ્રકારે કહેતા હતા એટલામાં રાજા માનસિંહ કુંભનદાસજીની પાસે આવ્યો. તે જ સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે ભાગીને ડરીને એક વૃક્ષની ઓટમાં જઇને ઉભા રહ્યા. તે જ સમયે કુંભનદાસની દૃષ્ટિ તો એક શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સંગે ગઇ. જ્યાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઉભા હતા તે જ તરફ જોયા કરે. ત્યારે રાજા માનસિંહ કુંભનદાસજીને પ્રણામ કરીને પાસે બેઠા. પરંતુ કુંભનદાસજીએ તો રાજા માનસિંહની તરફ દૃષ્ટિ પણ ન કરી. એ કુંભનદાસજીની એક ભત્રિજી હતી તે જમનાવતાથી બેજર (જવ ચણા) નો આટો કઠરોટમાં કરી લઇને કુંભનદાસજીને રસોઇ કરવાને માટે લાવતી હતી. એ ભત્રિજીને એક વ્રજવાસીએ

क्यों, जो-कुंभनदासजी तो छूवेंगे हू नाहीं। तब यह भतीजी वेगि ही कुंभनदासजी के पास आई। तब कुंभनदासजी की दृष्टि एक वृक्ष के ओर देखिके कहे, जो-बाबा! राजा बैठ्यो है। सो कछू इनको समाधान करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो-मैं कहा करूँ जो बैठ्यो है तो। जो-कछू बात कहत हते सोऊ भाजि गये। सो अब बात कहेंगे के, नाहीं कहेंगे? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु सेन ही में कुंभनदासजी सों कहे, जो-मैं तिहारे ऊपर बहोत प्रसन्न हूं। जो-मैं बात कहूंगो तू चिंता मति करे। तब कुंभनदासजीको चित्त ठिकाने आयो। सो कुंभनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी की वार्ता राजा आदि काहू ने जानी नाहीं। पाछें कुंभनदासजी ने भतीजी सों कह्यो, जो-बेटी! आसन और आरसी लावे, तो मैं तिलक करि लेऊं। तब भतीजी ने कह्यो, जो-बाबा! आसन (घासको) पडिया (भैंसकी पाडी) खाय के आरसी (कठोटी को जल) पी गई। तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-आरसी करि ले आऊ तो आछो। यह बात सुनिके राजा मानसिंह ने अपने मन में कह्यो, जो-आसन खाय के आरसी पडिया पी गई! (सो कहा?) सो इतने ही में भतीजी एक पूरा घास को और एक कठोटी में पानी भरि के ले आई। सो पूरा को आसन बिछाय दियो

કહ્યું, કે તૂ જલ્દી જા. કુંભનદાસજી પાસે રાજા ગયો છે. એ કંઈ આપે તો તૂ લેજે. કેમ? જે કુંભનદાસજી તો અડશે પણ નહીં. ત્યારે એ ભત્રિજી જલ્દી કુંભનદાસજી પાસે આવી. ત્યારે કુંભનદાસની દૃષ્ટિ એક વૃક્ષ તરફ જોઇને કહે, કે બાવા! રાજા બેઠો છે. કંઇ એનું સમાધાન કરો. ત્યારે કુંભનદાસજી કહે, હું શું કરૂં? બેઠો છે તો, કંઇ વાત કહેતા હતા તે પણ ભાગી ગયા. હવે વાત કહેશે કે નહીં કહે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આપ ઇશારાથી કહે, કે હું તારા ઉપર ઘણો પ્રસન્ન છું. હું વાત કહીશ. તૂ ચિંતા ન કર. ત્યારે કુંભનદાસજીનું ચિત્ત ઠેકાણે આવ્યું. આ કુંભનદાસજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની વાર્તા રાજા આદિ કોઇએ જાણી નહીં. પછી કુંભનદાસજીએ ભત્રીજીને કહ્યું, કે બેટી! આસન અને આરસી લાવે તો હું તિલક કરી લઉં. ત્યારે ભત્રીજીએ કહ્યું, કે બાવા! (ઘાસનું) આસન પાડી ખાઇ ને આરસી (કથરોટનું જલ) પી ગઇ. આ વાત સાંભળીને રાજા માનસિંહે પોતાના મનમાં કહ્યું, કે આસન ખાઇને આરસી પાડી પી ગઇ (એ શું?) એટલામાંજ ભત્રીજી એક ઘાસનો પૂળો અને એક કથરોટમાં પાણી ભરીને લઇ આવી. તે પૂળાનું આસન બિછાવી દીધું. તે પૂળા ઉપર કુંભનદાસજી બેસીને કથરોટમાં

सो ता पूरा पर कुंभनदासजी बैठि के कठोटी में पानी में मुख देखि के तिलक करन लागे। तब राजा मानसिंह ने अपने मन में जान्यो, जो-कुंभनदासजी के द्रव्य को बहोत संकोच हैं, जो आसन आरसी तिलक करबे की नाहीं है। सो कुंभनदासजी त्यागी सुनत हते सो देखे। तब राजा मानसिंह ने आरसी सोने की जड़ाऊ घर में जडी ऐसी मनुष्य सों मंगाई। और पाछे वह आरसी कुंभनदासजी के आगे धरिके कह्यो, जो-बाबा साहिब! यामें मुख देखिके तिलक करिये। तब कुंभनदासजी कहे, जो-अरे भैया! मैं याकों धरूँगो कहां? हमारे तो यह छानि के घर हैं। सो यह आरसी हमारे घर में होय तो याके पीछे कोई हमारो जीव लेय, तासों हमारे नाहीं चहियत है। तब राजा मानसिंह ने मन में बिचारी जो-ये आरसी लेके कहा करेंगे? जो-कहा याकों बेचन जांयगे? यह तो इनके काम की नाहीं है। तासों कछू ऐसो द्रव्य देऊं जो जनमादि भरिके खायो करें। तब हजार मोहौर की थेली कुंभनदासजी के आगे धरी। तब कुंभनदासजी ने कही, जो-यह हमारे काम की नाहीं है। हमारे तो खेती होत है, तामें जो धान उपजत हैं सो हम खात हैं। और कछू हमकों चहियत नाहीं। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-तिहारो गाम जमुनावता है, सो ताको मैं तुमकों लिख्यो करि देऊं। तब कुंभनदा-

---

પાણીમાં મુખ જોઇને તિલક કરવા લાગ્યા. ત્યારે રાજા માનસિંહે પોતાના મનમાં જાણ્યું કે કુંભનદાસજીને દ્રવ્યનો ઘણો સંકોચ છે. આસન, આરસી તિલક કરવાની નથી. કુંભનદાસજી ત્યાગી સાંભળતા હતા તે જોયા. ત્યારે રાજા માનસિંહે આરસી સોનાની જડાઉ ઘરમાં જડેલી એવી મનુષ્યો પાસે મંગાવી અને પછી તે આરસી કુંભનદાસજીની આગળ ધરીને કહ્યું, બાવા સાહેબ! આમાં મુખ જોઇને તિલક કરો. ત્યારે કુંભનદાસે કહ્યું, કે અરે ભાઇ! હું આને ધરીશ ક્યાં? અમારે તો આ ઘાસનાં ઘર છે. આ આરસી અમારા ઘરમાં હોય તો એની પાછળ કોઇ અમારો જીવ લે તેથી અમારે જોઇએ નહીં. ત્યારે રાજા માનસિંહે પોતાના મનમાં વિચાર્યું કે એ આરસી લઇને શું કરશે? શું આને વેચવા જશે? આતો એમના કામની નથી. તેથી કંઇ એવું દ્રવ્ય દઉં કે જન્મ પર્યંત ખાધા કરે. ત્યારે હજાર મહોરની થેલી કુંભનદાસજીના આગળ ધરી. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે આ અમારા કામની નથી. અમારે તો ખેતી થાય છે. તેમાં જે અનાજ ઉપજે છે તે અમે ખાઇએ છીએ. બીજું કંઇ અમને જોઇતું નથી. ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે તમારૂં ગામ જમ-

सजी ने राजा मानसिंह सों कह्यो, जो–मैं ब्राह्मण तो नाहीं, जो–तेरो उद्क लेऊं। और जो तेरे देनो होय तो और काहू ब्राह्मण कों दीजियो, मोकों तिहारो कछु नाहीं चहियत है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो–तुम मोकों अपनो मोदी बतावो, सो ताके पास सों सीधो सामान लियो करो। तब कुंभनदासजीने कही, जो–जैसे हम हैं सो तैसे ही हमारो मोदी है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो–बतावो तो सही, जो–मैं वाकों देऊंगो। तब कुंभनदासजी ने एक करील को वृक्ष दिखायो, और एक बेर को वृक्ष दिखायके कह्यो, जो–उष्णकाल में तो मोदी करील है, सो फूल और टेंटी देत है। और सीतकाल को मोदी बेरको झाड़ है। सो बेर बहोत देत हैं। सो ऐसे काम चल्यो जात है। तब राजा मानसिंहने कही, जो–धन्य है। जिनके वृक्ष मोदी हैं, जो मैंने आज तांई बड़े २ त्यागी वैरागी देखे, परंतु ये गृहस्थ, सो ऐसे त्यागी हैं! सो ऐसे धरती पर नाहीं हैं। सो तब राजा मानसिंह कुंभनदासजी कों प्रणाम करिके कह्यो, जो–बाबा साहिब! मोसों कछू तो आज्ञा करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो–हम कहेंगे सो करोगे? तब राजा मानसिंहने कही, जो–तुम आज्ञा करो सोई मैं अपनो परम भाग्य मानिके करूंगो। तब कुंभनदासजी ने कही, जो–आज पाछें तुम

નાવતા છે. તેને હું તમને લખી આપું. ત્યારે કુંભનદાસજીએ રાજા માનસિંહને કહ્યું, હું તો બ્રાહ્મણ નથી કે તારૂં દાન લઉં અને જો તારે આપવું હોય તો બીજા કોઇ બ્રાહ્મણને આપજે. મને તારૂં કંઇ ન જોઇએ. ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, તમે મને તમારો મોદી બતાવો. તેની પાસેથી સીધું સામાન લીધા કરો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, જેવા અમે છીએ તેવોજ અમારો મોદી છે. ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, બતાવો તો ખરા? હું એને આપીશ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કેરડાંનું ઝાડ બતાવ્યું અને એક બોરનું વૃક્ષ બતાવીને કહ્યું, કે ઉષ્ણકાલમાં તો મોદી કેરડાં છે તે ફૂલ અને ટેંટી (કેરડાંનાં ફૂલ) આપે છે અને શિયાળાનો મોદી બોરનું ઝાડ છે તે બોર ઘણાં આપે છે. એનાથી કામ ચાલ્યું જાય છે. ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે ધન્ય છે, જેના વૃક્ષ મોદી છે! મેં આજ સુધી મોટા મોટા ત્યાગી વૈરાગી જોયા પરંતુ એ ગૃહસ્થ તે આવા ત્યાગી છે! એવા ધરતી ઉપર નથી. ત્યારે રાજા માનસિંહે કુંભનદાસને પ્રણામ કરીને કહ્યું, કે બાવા સાહબ! મને કંઇ તો આજ્ઞા કરો? ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે અમે કહીશું તે કરશો? ત્યારે રાજા માનસિંહે કહ્યું, કે તમે આજ્ઞા કરો તે હું મારૂં પરમ ભાગ્ય માનીને કરીશ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે

हमारे पास कबहू मति आइयो, और हम सों कछु कहियो मति। तब राजा मानसिंह ने दंडवत करिके कही, जो–तुम धन्य हो, माया के भक्त तो मैं सगरी पृथ्वी में फिर्‌यो, सो बहोत देखे, परंतु श्रीठाकुरजीके सांचे भक्त तो एक तुम ही देखे। सो यह कहिके राजा मानसिंह चल्यो गयो। तब भतीजी ने पास आयके कुंभनदासजी सों कही, जो–घरमें तो कछू हतो नाहीं, सो राजा देन हतो सो क्यों न लियो? तब कुंभनदासजी कहे, जो–बैठि रांड! गोवर्द्धननाथजी सुनेंगे तो खीजेंगे, जो–कुंभनदास की भतीजी बड़ी लोभिन है। तब भतीजी ने कह्यो, जो–मैंने तो हँसिके कह्यो हतो, जो–मोकों तो कछू नाहीं चहियत है। तब कुंभनदासजी कह्यो, जो-बेटी! काहू सों लेवेकी वार्ता हांसी में हू कबहू न कहिये। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो–तू एक छिन में ऐसो क्यों होय गयो? तेरे मन में कहा है? सो तू मोसों कहे? तब कुंभनदास जीने यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—परम भाँवते जियके मोहन नैनन तें मति टरो। जो लों जीऊं तो लों देखों वार वार पाइ लागों चित्त अनत न धरों॥ १॥ तव सुख चिंतत तोहि लों ले ले अंग भरों। रसिकन मांझ रसिक-नंदनंदन तुम पिय मेरे सकल दुःख हरो॥ २॥ आवहु सदा रहो घर मेरे स्याम मनोहर संग किन करो? 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर तुम विनु अंजन कासों करों॥ ३॥

सो यह कीर्तन कुंभनदासजी को सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

આજ પછી તમે અમારી પાસે કદીયે આવતા નહીં અને અમને કંઇ કહેતા નહીં. ત્યારે રાજા માનસિંહે દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે તમે ધન્ય છો. માયાના ભક્ત તો હું આખી પૃથ્વીમાં ફર્યો તે ઘણા જોયા પરંતુ શ્રીઠાકુરજીના સાચા ભક્ત તો એક તમનેજ જોયા. એમ કહીને રાજા માનસિંહ ચાલ્યો ગયો. ત્યારે ભત્રીજીએ પાસે આવીને કુંભનદાસને કહ્યું, કે ઘરમાં તો કંઇ હતું નહીં તેથી રાજા દેતો હતો તે કેમ ન લીધું? ત્યારે કુંભનદાસજી કહે બેઠ રાંડ! ગોવર્દ્ધનનાથજી સાંભળશે તો ખીજશે, કે કુંભનદાસની ભત્રીજી બહુ લોભણ છે. ત્યારે ભત્રીજીએ કહ્યું, કે મેં તો હસવામાં કહ્યું હતું. મારે તો કંઇ જોઇતું નથી. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બેટી! કોઇનાથી લેવાની વાર્તા હસવામાં પણ કદીય ન કહીએ. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આવીને કુંભનદાસજીની ગોદીમાં બેસીને કહે કે તૂ એક ક્ષણમાં એવો કેમ થઇ ગયો? તારા મનમાં શું છે? તે તૂ મને કહે. ત્યારે કુંભનદાસજીએ આ પદ ગાયું. 'પરમ ભાવ તેં જીય કે મોહન નૈનન તેં મતિ ટરો.' એ કીર્તન કુંભનદાસજીનું સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ગળે

सजी ने राजा मानसिंह सों कह्यो, जो–मैं ब्राह्मण तो नाहीं, जो–तेरो उदक लेऊं। और जो तेरे देनो होय तो और काहू ब्राह्मण कों दीजियो, मोकों तिहारो कछु नाहीं चहियत है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो–तुम मोकों अपनो मोदी बतावो, सो ताके पास सों सीधो सामान लियो करो। तब कुंभनदासजीने कही, जो–जैसे हम हैं सो तैसे ही हमारो मोदी है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो–बतावो तो सही, जो–मैं वाकों देऊंगो। तब कुंभनदासजी ने एक करील को वृक्ष दिखायो, और एक बेर को वृक्ष दिखायके कह्यो, जो–उष्णकाल में तो मोदी करील है, सो फूल और टेंटी देत है। और सीतकाल को मोदी बेरको झाड़ है। सो बेर बहोत देत हैं। सो ऐसे काम चल्यो जात है। तब राजा मानसिंहने कही, जो–धन्य है। जिनके वृक्ष मोदी हैं, जो मैंने आज तांई बड़े २ त्यागी वैरागी देखे, परंतु ये गृहस्थ, सो ऐसे त्यागी हैं! सो ऐसे धरती पर नाहीं हैं। सो तब राजा मानसिंह कुंभनदासजी कों प्रणाम करिके कह्यो, जो–बाबा साहिब ! मोसों कछू तो आज्ञा करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो–हम कहेंगे सो करोगे? तब राजा मानसिंहने कही, जो–तुम आज्ञा करो सोई मैं अपनो परम भाग्य मानिके करूंगो। तब कुंभनदासजी ने कही, जो–आज पाछें तुम

नावता छे. तेने हुं तमने लखी आपुं. त्यारे कुंभनदासजीए राजा मानसिंह-ने कह्युं, हुं तो ब्राह्मण नथी के तारूं दान लउं अने जो तारे आपवुं होय तो बीजा कोइ ब्राह्मणने आपजे. मने तारूं कंइ न जोइए. त्यारे राजा मानसिंहे कह्युं, तमे मने तमारो मोदी बतावो. तेनी पासेथी सीधुं सामान लीधा करो. त्यारे कुंभनदासजीए कह्युं, जेवा अमे छीए तेवोज अमारो मोदी छे. त्यारे राजा मान-सिंहे कह्युं, बतावो तो खरा? हुं एने आपीश. त्यारे कुंभनदासजीए केरडांनुं झाड बताव्युं अने एक बोरनुं वृक्ष बतावीने कह्युं, के उष्णकालमां तो मोदी केरडां छे ते फूल अने टेंटी (केरडांनां फूल) आपे छे अने शियाळानो मोदी बोरनुं झाड छे ते बोर घणां आपे छे. एनाथी काम चाल्युं जाय छे. त्यारे राजा मानसिंहे कह्युं, के धन्य छे, जेना वृक्ष मोदी छे! में आज सुधी मोटा मोटा त्यागी वैरागी जोया परंतु ए गृहस्थ ते आवा त्यागी छे! एवा धरती उपर नथी. त्यारे राजा मानसिंहे कुंभनदासने प्रणाम करीने कह्युं, के बावा साहब! मने कंइ तो आज्ञा करो? त्यारे कुंभनदासजीए कह्युं, के अमे कहीशुं ते करशो? त्यारे राजा मानसिंहे कह्युं, के तमे आज्ञा करो ते हुं मारूं परम भाग्य मानीने करीश. त्यारे कुंभनदासजीए कह्युं, के

हमारे पास कबहू मति आइयो, और हम सों कछु कहियो मति। तब राजा मानसिंह ने दंडवत करिके कही, जो-तुम धन्य हो, माया के भक्त तो मैं सगरी पृथ्वी में फिर्यो, सो बहोत देखे, परंतु श्रीठाकुरजीके सांचे भक्त तो एक तुम ही देखे। सो यह कहिके राजा मानसिंह चल्यो गयो। तब भतीजी ने पास आयके कुंभनदासजी सों कही, जो-घरमें तो कछू हतो नाहीं, सो राजा देन हतो सो क्यों न लियो? तब कुंभनदासजी कहे, जो-बैठि रांड! गोवर्द्धननाथजी सुनेंगे तो खीजेंगे, जो-कुंभनदास की भतीजी बड़ी लोभिन है। तब भतीजी ने कह्यो, जो-मैंने तो हँसिके कह्यो हतो, जो-मोकों तो कछू नाहीं चहियत है। तब कुंभनदासजी कह्यो, जो-बेटी! काहू सों लेवेकी वार्ता हांसी में हू कबहू न कहिये। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो-तू एक छिन में ऐसो क्यों होय गयो? तेरे मन में कहा है? सो तू मोसों कहे? तब कुंभनदासजीने यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—परम भाँवते जियके मोहन नैनन तें मति टरो। जो लों जीऊं तो लों देखों बार बार पाइ लागों चित्त अनत न धरों॥ १॥ तव सुख चिंतत तोहि लों ले ले अंग भरों। रसिकन मांझ रसिक-नंदनंदन तुम पिय मेरे सकल दुःख हरो॥ २॥ आवहु सदा रहो घर मेरे स्याम मनोहर संग किन करो? 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर तुम विनु अंजन कालों करों॥ ३॥

सो यह कीर्तन कुंभनदासजी को सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

આજ પછી તમે અમારી પાસે કદીયે આવતા નહીં અને અમને કંઇ કહેતા નહીં. ત્યારે રાજા માનસિંહે દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે તમે ધન્ય છો. માયાના ભક્ત તો હું આખી પૃથ્વીમાં ફર્યો તે ઘણા જોયા પરંતુ શ્રીઠાકુરજીના સાચા ભક્ત તો એક તમને જ જોયા. એમ કહીને રાજા માનસિંહ ચાલ્યો ગયો. ત્યારે ભત્રીજીએ પાસે આવીને કુંભનદાસને કહ્યું, કે ઘરમાં તો કંઇ હતું નહીં તેથી રાજા દેતો હતો તે કેમ ન લીધું? ત્યારે કુંભનદાસજી કહે બેઠ રાંડ! ગોવર્દ્ધનનાથજી સાંભળશે તો ખીજશે, કે કુંભનદાસની ભત્રીજી બહુ લોભણ છે. ત્યારે ભત્રીજીએ કહ્યું, કે મેં તો હસવામાં કહ્યું હતું. મારે તો કંઇ જોઇતું નથી. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બેટી! કોઇનાથી લેવાની વાર્તા હસવામાં પણ કદીય ન કહીએ. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આવીને કુંભનદાસજીની ગોદીમાં બેસીને કહે કે તૂ એક ક્ષણમાં એવો કેમ થઇ ગયો? તારા મનમાં શું છે? તે તૂ મને કહે. ત્યારે કુંભનદાસજીએ આ પદ ગાયું. 'પરમ ભાવ તેં જીય કે મોહન નૈનન તેં મતિ ટરો.' એ કીર્તન કુંભનદાસજીનું સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ગળે

गरे सों लपटिके कहे, जो-कुंभनदास ! मैं तोसों एक बात कहन कों आयो हूं। तब कुंभनदासजीने कही, जो-कहिये। आपु वा समय बात कहत हते सो ता समय तो राजा अभागिया आय गयो, सो आपु भाजि गये। सो तब सों मेरो मन वा बातमें लागि रह्यो है, सो यह बात आपु कृपा करिके कहिये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदाससों कहे, जो-कुंभनदास ! आज सखानमें होड परी है, जो-भोजन सबके घरको न्यारो न्यारो देखिये। तामें सुन्दर कौनके घरको है ? सो तुमहू कछु मनोरथ करोगे ? सो मैं यह बात तोसों कहिवे आयो हूं। तब कुंभनदासजी पूछे, जो-आपकी रुचि काहे पे है ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-ज्वार की महेरी, दही, दूध, बेझरि की रोटी और टेंटी को साग संधानो। तब कुंभनदासजी कहे, जो-यह तो घर में सिद्ध है। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-बेगि मंगावो। सो तब कुंभनदासजी भतीजी सों कहे, जो-घरतें बेझरि को चून, टेंटी को साग, संधानो, दही दूध बेगि ले आउ। तब भतीजी ने कही, जो-बेझरि को चून टेंटी को साग, संधानो, दही इतनो तो मैं ले आई हूं और दूध जमायवेके तांई तातो होत है, तब कुंभनदासजी कहे, जो-आज दूध जमावे मति। दूध की हांडी और ज्वार घर तें

લપટીને કહે, કે કુંભનદાસ ! હું તને એક વાત કહેવા આવ્યો છું. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે કહો. આપ તે સમયે વાત કહેતા હતા તે સમયે તો રાજા અભાગિયો આવી ગયો તેથી આપ ભાગી ગયા. ત્યારથી મારૂં મન એ વાતમાં લાગી રહ્યું છે. તેથી એ વાત આપ કૃપા કરીને કહો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આપ કુંભનદાસજીને કહે, કે કુંભનદાસ ! આજ સખાઓમાં હોડ પડી છે કે બધાના ઘરનું ભોજન અલગ અલગ જોઇએ, તેમાં સુંદર કોના ઘરનું છે ? તેથી તમે પણ કંઇ મનોરથ કરશો ? હું એ વાત તને કહેવા આવ્યો છું. ત્યારે કુંભનદાસજીએ પૂછયું, કે આપની રૂચી શેના ઉપર છે ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે જવારની મહેરી (ઘેંસ) દહીં, દૂધ, બેજરની રોટી, અને ટેંટીનું સાક, અથાણું. ત્યારે કુંભનદાસજી કહે એ તો ઘરમાં સિદ્ધ છે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, જલ્દી મંગાવો. ત્યારે કુંભનદાસજી ભત્રિજીને કહે, ઘરથી બેજરનો આટો ટેંટીનું સાક અથાણું દહી દૂધ જલ્દી લઇ આવ. ત્યારે ભત્રિજીએ કહ્યું, કે બેજરનો આટો, ટેંટીનું શાક, અથાણું, દહીં એટલું તો હું લઇ આવી છું અને દૂધ જમાવવા માટે ઉનું થાય છે. ત્યારે કુંભનદાસજી કહે, કે આજ દૂધ જમાવીશ નહીં. દૂધની હાંડી અને જવાર ઘરથી દળીને લઇ આવ. ત્યાં સુધી હું રસોઈ કરૂં છું. ત્યારે

दरिके ले आव, सो तहां तांई मैं रसोई करत हौं। सो न्हाय के तो कुंभनदासजी बैठे ही हते। तासों बेझरि की रोटी नोंन डारिके ठीकरा पे किये। इतने में भतीजी जमुनावता गाम में जायके ज्वारि दरिके दूधकी हांडी ले आई। तब कुंभनदासजी हांडीमें पानी डारिके ज्वारकी सामग्री सिद्ध किये। इतने में घरतें सखान की छाक आई, सो कुंभनदास की सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजी पास राखे। पाछें घर के सखान कों चखाय आपु आरोगे।

भावप्रकाश—कुंभनदासजी की सामग्री विसाखाजीने दूध में मिश्री डारि श्रीस्वामिनीजी कों आरोगाय अति मधुर कर दीनी। सो काहेतें? जो-विसाखाजी को प्रागट्य कुंभनदासजी हैं।

और जब श्रीठाकुरजी कों कुंभनदासजी की सामग्री बहोत स्वाद लगी, ता समय कुंभनदासजी ने कीर्तन गाये। सो पद—

राग सारंग—व्रज में बडो मेवा यह टेंटी। जाकौ होत है साग संघानो और बेजर की रोटी ॥१॥ ले ले डलिया बीनन निकसी बडे गोप की बेटी। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर सों व्है गई भेटा भेटी ॥ २ ॥

राग सारंग—घर घर तें आई है छाक। खाटे मीठे और सलोने विविध भांति के पाक ॥ १ ॥ मंडल रचना करी जमुना तट सघन लता की छांहि। गोपी-ग्वाल सकल मिलि जेंमत मुख हि सराहत जाहि ॥२॥ बांटत बल मोहन दोउ भैया कर दोना अति सोहे। चाखत आपुन सखन मुखन दे के गोपीजन मन मोहे ॥ ३ ॥ टेंटी, साग, संघानो रोटी, गोरस, सरस महेरी। 'कुंभनदास' गिरिधर रस-लंपट नाचत दे दे फेरी ॥ ४ ॥

न्हाईने तो कुंभनदासजी बेठाज हता. तेथी बेजरनी रोटी मीठुं नाखीने ठीकरा उपर करी. एटलामां भत्रिजी जमनावता गाममां जईने जवार दळीने दूधनी हांडी लई आवी. त्यारे कुंभनदासजीए हांडीमां पाणी नाखीने जवारनी सामग्रीसिद्ध करी एटलामां घरथी सखाओनी छाक आवी. त्यारे कुंभनदासजीनी सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजीए पासे राखी. पछी घरना सखाओने बोलावीने आप आरोग्या.

भावप्रकाश—कुंभनदासजीनी सामग्री विशाखाजीए दूधमां मिश्री नाखी श्रीस्वामिनीजीने आरोगावी अति मधुर करी दीधी. केमके विशाखाजीनुं प्राकट्य कुंभनदासजी छे.

पछी ज्यारे श्रीठाकुरजीने कुंभनदासजीनी सामग्री बहु स्वाद लागी ते समये कुंभनदासजीए कीर्तन गायां. ते पद (१) 'व्रजमें बडा मेवा एक टेंटी' (२) 'घर तें आइ है छाक' ए पदो कुंभनदासजीए अति आनंदथी गायां अने पोताना

सो यह कुंभनदासजी अति आनंद पायके गाये। और अपने मन में कहे, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी ने भली एक बात कही, जो–यामें या लीला को अनुभव भयो। या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी की ऊपर कृपा करते। वा दिन कुंभनदासजी रस में मग्न होय गये। सो सांझ कों सरीर की सुधि नाहीं। तब परासोली तें दौरे, जो आज मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन नाहीं पायो। विरह मन में उठि आयो सो भोग सरत हतो ता समय कुंभनदासजी मंदिर में आये। मन में यह, जो–कब दरसन पाऊं। इतने में सेन के किंवाड़ खुले। तब कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि नेत्र इकटक लगाय के यह कीर्तन गाये। सो पद—

राग विहाग—लोचन मिलि गए जब चारयो। हौं व्है रही ठगी सी ठाढी उर अचरा न सँवारयो ॥ १ ॥ अपने सुभाई नंद जू के आइ सुन्दर स्याम निहारयो। इक टक लगी चरन गति थाकी क्यों हू टरत नहीं टारयो ॥ २ ॥ उपजी प्रीति मदन मोहन सों गृह कौ काज विसारयो। 'कुंभनदास' गिरिधर रस लोभी भलो आरज पंथ पारयो॥ ३ ॥

राग विहागरो—नंदनंदन की वलि जैये। सांवल मृदुल कलेवर की छबि देखि देखि सुख पैये ॥ १ ॥ सकल लोकपति ठाकुर रसना रसिक विमल जस गैये। 'कुंभनदास प्रभु' गिरिधर कों तन मन सर्वस्व दैये ॥ २ ॥

राग केदारो—छिनु छिनु बानिक और ही और। जब देखों तब नौतन सखीरी दृष्टि न रहे इकठौर ॥ १ ॥ कहा कहों परमित नहीं पावत बोहोत करों चित दौर। 'कुंभनदास प्रभु' सौभग सींवा गिरिधर रसिकराय सिर मोर ॥ २ ॥

सो या प्रकार रस के कीर्तन कुंभनदासने वहोत गाये। सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

મનમાં કહે, કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ ભલી એક વાત કહી, કે આમાં આ લીલાનો અનુભવ થયો. આ પ્રકારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસજીના ઉપર કૃપા કરતા. તે દિવસે કુંભનદાસજી રસમાં મગ્ન થઇ ગયા. તે સાંજે, શરીરની સુધ રહી નહીં. તેથી પરાસોલીથી દોડયા. કે આજ મેં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન નથી કર્યાં. વિરહ મનમાં થઇ આવ્યો. તે સેન ભોગ સરતો હતો. તે સમયે કુંભનદાસજી મંદિરમાં આવ્યા. મનમાં એ કે ક્યારે દર્શન કરૂં ? એટલામાં સેનનાં કમાડ ખુલ્યાં. ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરીને નેત્ર એકટક લગાડીને આ પદ ગાયાં—(૧) 'લોચન મિલિ ગયે જબ ચારોં' (૨) નંદનંદનકી બલિ બલિ જૈયે. (૩) છિનુ છિનુ બાનિક ઓરહી ઓર (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે રસનાં કીર્તન કુંભનદાસે બહુ ગાયાં. તે કુંભનદાસજી એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समय वृंदावन के संत महंत कुंभनदासजी सों मिलिवे कों श्रीगिरिराज पे आये। सो यासों आये, जो-जाने जो इनसों श्रीठाकुरजी साक्षात् बोलत हैं। और कुंभनदासजी श्रीस्वामिनीजी की बधाई गाये हैं, तासों इनसों मिलिके पूछें, जो-श्रीस्वामिनीजी को वर्णन हमहू किये हैं। और देखें, जो-कुंभनदासजी कैसो वर्णन करत हैं? सो यह बिचारिके हरिवंश, हरिदास प्रभृति महंत, स्वामी आय कुंभनदासजी सों मिलिके पूछे, जो-कुंभनदासजी तुमने जुगल स्वरूप के कीर्तन किये हैं, सो हमने तिहारे कीर्तन वहोत सुने, परि कोई श्रीस्वामिनीजी को कीर्तन नाहीं सुन्यो, तासों आपु कृपा करिके कोई पद श्रीस्वामिनीजी को सुनावो। तब कुंभनदासजी ने श्रीस्वामिनीजी को एक पद करिके उनकों सुनायो। सो पद—

राग रामकली—कुंवरि राधिके तुव सकल सौभाग्य सींवा या बदन पर कोटि सत चंद वारि डारों। खंजन कुरंग सत कोटि नैनन उपर वारने करत जियमें विचारों ॥ १ ॥ कदली सत कोटि जंघन ऊपर सिंघ सत कोटि कटि पर न्योछावर करि उतारों। मत्त गज कोटि सत चाल पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥२॥ कीर सत कोटि नासिका ऊपर कुंद सत कोटि दसनन ऊपर काहे न वारों? पक्व बिंदूर वंधूक सत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचि गर्व टारों ॥३॥ नाग सत कोटि वेनी ऊपर कपोत सत कोटि ग्रीवा दूरि सारों। कमल सत कोटि कर-जुगल पर वारने नाहिन कोऊ उपमा जु धारों ॥४॥ 'दासकुंभन' स्वामिनी सुनख-सिख अद्भुत सुठान कहां लों संभारों। लाल गिरिधर कहत मोहि तोहि लों सुख जो लोंये रूप छिनु छिनु निहारों ॥ ५ ॥

यह पद कुंभनदासजी ने गायो सो सुनिके श्रीवृंदावन के संत

વાર્તા-પ્રસંગ ૫-વળી એક સમય વૃંદાવનના સંતમહંતો કુંભનદાસજીને મળવાને શ્રીગિરિરાજ આવ્યા. તે એથી આવ્યા કે જાણે જે એમનાથી શ્રીઠાકુરજી સાક્ષાત્ બોલે છે અને શ્રીસ્વામિનીજીની વધાઈ ગાય છે તેથી એમને મળીને પૂછીએ અને શ્રીસ્વામિનીજીનું વર્ણન અમે પણ કર્યું છે તેથી જોઈએ કે કુંભનદાસજી કેવું વર્ણન કરે છે? એ વિચારીને હરિવંશ, હરિદાસ પ્રભૃતિ મહંત સ્વામી આવી કુંભનદાસજીને મળીને પૂછે, કે કુંભનદાસ! તમે જુગલ સ્વરૂપનાં કીર્તન કર્યાં છે તે અમે તમારાં કીર્તન ઘણાં સાંભળ્યાં પરંતુ કોઈ સ્વામિનીજીનું કીર્તન નથી સાંભળ્યું. તેથી આપ કૃપા કરીને કોઈ પદ શ્રીસ્વામિનીજીનું સંભળાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ, શ્રીસ્વામિનીજીનું એક પદ કરીને એમને સંભળાવ્યું. તે પદ:— 'કુંવરિ રાધિકે' (ઉપર જુઓ). એ પદ કુંભનદાસજીએ ગાયું. એ સાંભળીને શ્રીવૃંદાવનના સંતમહંત બહુ

महंत बहोत प्रसन्न भये। और कहे, जो–हमने श्रीस्वामिनीजी के पद बहोत किये हैं, तामें चंद्रमा आदि की उपमा बहोत दीनी हैं। परि कुंभनदास! तुमने तो शतकोटि चंद्रमा वारि डारें हैं। तासों कुंभनदासजी कों श्रीस्वामिनीजी आगे जगत में कोऊ उपमा देवे योग्य नाहीं (दीसत), सो या प्रकार अद्‌भुत स्वरूपको वरणन किये हैं। पाछें कुंभनदासजी सों बिदा होयके सिगरे वृंदावन में आये। सो ये कुंभनदासजी किशोर भावना, लीला रसमें मग्न रहते। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे।

वार्ता–प्रसंग ६—और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी सों बिदा मांगिके श्रीद्वारिकाजी पधारिवे को विचार किये, सो परदेस में दैवी जीवन के उद्धारार्थ। सो श्रीगोकुलतें श्रीनाथजीद्वार आयके श्रीगोवर्द्धननाथजी के सेवा सिंगार किये। ता पाछें अनोसर करायके आपु भोजन करि के अपनी बैठक में गादी तकियान के ऊपर बिराजे हते, सो तहां सिगरे वैष्णव आयके पास बैठे हते। सो बात चलत में कुंभनदासजी की बात चली। तब काहू वैष्णवनें श्रीगुसांईजी के आगे यह बात कही, जो–महाराज! कुंभनदासजी के घर आजकाल द्रव्य को बहोत संकोच है, सो काहेतें? जो घरमें परिवार बहोत है, जो–सात बेटा हैं, और सातों बेटान की

પ્રસન્ન થયા અને કહે કે અમે શ્રીસ્વામિનીજીનાં પદ ઘણાં કર્યાં છે તેમાં ચંદ્ર આદિની ઉપમા ઘણી દીધી છે પરંતુ કુંભનદાસજી! તમે તો સો કરોડ ચંદ્રમા વારી નાખ્યા છે. તેથી કુંભનદાસજીને શ્રીસ્વામિનીજીની આગળ જગતમાં કોઇ ઉપમા દેવા યોગ્ય નથી જણાતું. એ પ્રકારે અદ્‌ભુત સ્વરૂપનું વર્ણન કર્યું છે. તે પછી કુંભનદાસજીથી વિદાય થઇને બધા વૃંદાવનમાં આવ્યા. એ કુંભનદાસજી કિશોર ભાવના લીલારસમાં મગન રહેતા. એ એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૬–વળી એક સમય શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીગોકુલમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીથી વિદાય થઇને શ્રીદ્વારકાજી પધારવાનો વિચાર કર્યો. તે પરદેશમાં દૈવી જીવોના ઉદ્ધાર માટે. પછી શ્રીગોકુલથી શ્રીનાથજીદ્વાર આવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સેવા–શૃંગાર કર્યા. તે પછી અનોસર કરાવીને પોતે ભોજન કરીને પોતાની બેઠકમાં ગાદીતકિયા ઉપર બિરાજ્યા હતા ત્યાં સઘળા વૈષ્ણવો આવીને પાસે બેઠા હતા. ત્યારે વાત ચાલતામાં કુંભનદાસની વાત ચાલી. ત્યારે કોઇ વૈષ્ણવે શ્રીગુસાંઇજીની આગળ એ વાત કહી, કે મહારાજ! કુંભનદાસજીના ઘરે આજકાલ દ્રવ્યનો ઘણો સંકોચ છે.

बहू हैं। और आपु स्त्रीपुरुष और एक भतीजी। सो तामें आये गये वैष्णवन को समाधान करत हैं, और आमदनी तो थोरीसी है। जो परसोली में खेती है, तामें निर्वाह टेंटी फूलन सों करत हैं। यह बात सुनिके श्रीगुसांईजी ने अपने मनमें राखी। ता पाछें (जब) कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी के दरसन कूं आये, तब दंडवत करिके ठाड़े होय रहे। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–कुंभनदासजी! बैठो। तब कुंभनदासजी बैठे। पाछें श्रीगुसांईजी सिगरे वैष्णवनकों विदा करिके कुंभनदास सों कहे, जो–कुंभनदासजी! हम श्रीद्वारिकाके मिस परदेसकों जात हैं, तहां अनेक वैष्णवन सों मिलाप होयगो। सो वैष्णवननें बहोत बिनती पत्र लिखे हैं, तासों अवश्य जानो है। सो तुम हमारे संग चलो। सो भगवदीयन कों विरहको कलेश बाधा न करे, और भगवदीयन को काल आछें व्यतीत होय। सो तिहारे संग तें कछू जान्यो न परे। और हमने सुन्यो है, जो–तिहारे घर द्रव्यको संकोच है, सोऊ कार्य सिद्ध होयगो। तासों तुमकों सर्वथा चल्यो चहिये। तब कुंभनदासजीने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! आपु के साम्हे हमसों बहोत बोल्यो नाहीं जात है, जो–आपु आज्ञा करो सोई हमकों करनो। इतने में उत्थापन को समय भयो। तब

કેમકે? ઘરમાં પરિવાર ઘણો છે. જે સાત બેટા છે અને સાતે બેટાઓની વહૂઓ છે. વળી આપ પોતે સ્ત્રીપુરુષ અને એક ભત્રીજી. તેમાંએ આવ્યા ગયા વૈષ્ણવોનું સમાધાન કરે છે અને આવક તો થોડી સરખી છે. પરાસોલીમાં ખેતી છે તેમાં નિર્વાહ ટેંટી ફૂલોથી કરે છે. એ વાત સાંભળીને શ્રીગુસાંઈજીએ પોતાના મનમાં રાખી. તે પછી જ્યારે કુંભનદાસજી શ્રીગુસાંઈજીના દર્શને આવ્યા ત્યારે દંડવત્ કરીને ઉભા રહ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, કે કુંભનદાસજી! બેસો. ત્યારે કુંભનદાસજી બેઠા. પછી શ્રીગુસાંઈજી બધા વૈષ્ણવોને વિદાય કરીને કુંભનદાસજીને કહે, કે કુંભનદાસજી! અમે શ્રીદ્વારકાના મિષે પરદેશ જઈએ છીએ. ત્યાં અનેક વૈષ્ણવોથી મિલાપ થશે. વૈષ્ણવોએ ઘણા વિનંતી–પત્રો લખ્યા છે તેથી અવશ્ય જવું છે. તેથી તમે અમારી સાથે ચાલો. જેથી ભગવદીયોને વિરહનો કલેશ બાધા ન કરે અને ભગવદીયોનો સમય સારી રીતે વ્યતીત થાય. તમારા સંગથી કંઈ (વિરહ) જાણ્યો નહીં જાય. વળી અમે સાંભળ્યું છે કે તમારા ઘરમાં દ્રવ્યનો સંકોચ છે. તે પણ કાર્ય સિદ્ધ થશે. તેથી તમારે સર્વથા ચાલવું જોઈએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઈજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપની સામે અમારાથી ઘણું બોલાતું નથી. આપ આજ્ઞા કરો તે જ અમારે

श्रीगुसांईजी स्नान करिके, श्रीगोवर्द्धननाथजी कों उत्थापन करायकें, सेन पर्यंतकी सेवा सों पहोंचिके आपु बैठक में पधारे। तब श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदास सों कहे, जो–अब तुम घर जाऊ, जो–सवारे घर सों विदा होयके आइयो, राजभोग आरती पाछें परदेस कों चलेंगे। पाछें कुंभनदासजी श्रीगुसांईजीकों दंडवत करिके अपुने घर जमुनावतामें आये। ता पाछें सवारे घरतें श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत ऊपर पधारिके श्रीनाथजी कों जगाये। पाछें सेवा सिंगार करि राजभोग धरि समयानुसार भोग सरायके, राजभोग आरती करि श्रीगोवर्द्धननाथजी सों विदा होय परवत सों नीचे पधारे। सो अप्सराकुंड ऊपर डेरा अगाऊ भये हते। तब कुंभनदास सों कहें, जो–अब हम अप्सराकुंड ऊपर डेरान में जायकें सोवेंगे। सो तब सब वैष्णव तथा कुंभनदासजी अप्सराकुंड ऊपर आये। तब कुंभनदासजी अपने मनमें विचार करन लागे, जो–हे मन! अब कहा करिये? 'कहिये कहा कहिवे की होय? प्राणनाथ बिछुरन की वेदन जानत नाहिं न कोय ॥ १ ॥' या प्रकार विचार करत श्रीगोवर्द्धननाथजी को विरह हृदय में बढ़ि गयो। तब श्रीगुसांईजी आपु डेरान के भीतर जागे। सो जब उत्थापन को समय भयो,

---

કરવું. એટલામાં ઉત્થાપનનો સમય થયો ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી સ્નાન કરી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ઉત્થાપન કરાવીને સેન પર્યંતની સેવાથી પહોંચીને પોતે બેઠકમાં પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીને કહે, કે હવે તમે ઘર જાવ. સવારે ઘરથી વિદાય થઇને આવજો. રાજભોગ આર્તિ પછી પરદેશ ચાલીશું. પછી કુંભનદાસજી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને પોતાના ઘર જમનાવતે આવ્યા. ત્યાર પછી સવારે ઘરથી શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે સ્નાન કરીને પર્વત ઉપર પધારીને શ્રીનાથજીને જગાડ્યા. પછી સેવા-શૃંગાર કરી રાજભોગ ધરી સમયાનુસાર ભોગ સરાવીને રાજભોગ આર્તિ કરી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીથી વિદાય થઇ પર્વતથી નીચે પધાર્યા. ત્યારે અપ્સરાકુંડ ઉપર મુકામ અગાઉથી થયા હતા. તેથી કુંભનદાસે કહ્યું, કે હવે અમે અપ્સરાકુંડ ઉપર મુકામે જઇને સૂઇશું. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ અને કુંભનદાસજી અપ્સરા કુંડ ઉપર આવ્યા. ત્યારે કુંભનદાસજી પોતાના મનમાં વિચાર કરવા લાગ્યા કે, હે મન! હવે શું કરવું? 'કહિયે કહા કહિવે કી હોય? પ્રાણનાથ બિછુરન કી વેદન જાનત વિરલા કોઇ' એ પ્રકારે વિચાર કરતાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો વિરહ હૃદયમાં વધી ગયો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે તંબુના અંદર જાગ્યા. ત્યારે ઉત્થાપનનો

तब कुंभनदासजी कों श्रीनाथजी के दरसन की सुधि आई, नेत्रन में सों आंसुनकी धारा चली, सो सगरे सरीर में पुलकावली होंन लागी। पाछें कुंभनदासजी डेरान के पास ही एक वृक्ष तरें ठाड़े-ठाड़े धीरे-धीरे गावन लागे। सो पद—

राग सारंग—किते दिन व्है जु गए विनु देखे। तरून किसोर रसिक नंद-नंदन कछुक उठत मुख रेखे ॥ १ ॥ वह सोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद्र विसेखे। वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु मेखे ॥ २ ॥ स्यामसुंदर संग मिलि खेलन की आवत जिय अपेखें। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर विनु जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह कीर्तन कुंभनदासजीनें अत्यंत विरह क्लेश सों गायो। सो श्रीगुसांईजी आपु डेरान के भीतर बेठिके कुंभनदासजी को सगरो कीर्तन सुने। सो कुंभनदासजी को क्लेश श्रीगुसांईजी आपु सहि नाहीं सके। सो आपु डेरानतें बाहिर पधारिके कुंभनदासजी की यह दसा देखे, जो-नेत्रन सों जल बह्यो जात है, महा विरह करिके दुःखी होय रहे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखतें कुंभनदास सों कहे, जो-कुंभनदास! तुम मंदिर में जायके श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो, जो-तिहारो विदेश होय चुक्यो।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो जैसी तिहारी दसा यहां है, सो तैसी दसा उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी की होयगी। सो कैसे जानिये? जो जैसे 'गज्जनधावन' कों श्रीअक्काजी ने पान लेवे कों पठायो सो गज्जन कों तो श्रीनवनीतप्रियजी के

સમય થયો. ત્યારે કુંભનદાસજીને શ્રીનાથજીના દર્શનની યાદ આવી. નેત્રોમાંથી આંસુઓની ધારા ચાલી તેથી બધા શરીરમાં રોમાંચ થવા લાગ્યાં. પછી કુંભનદાસજી મુકામની પાસે જ એક વૃક્ષની નીચે ઉભા ઉભા ધીરે ધીરે ગાવા લાગ્યા. તે પદ :— 'કેતે દિન વ્હે જુ ગયે' (ઉપર જુઓ). આ કીર્તન કુંભનદાસજીએ અત્યંત વિરહ ક્લેશથી ગાયું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે તંબુની અંદર બેસીને કુંભનદાસજીનું સઘળું કીર્તન સાંભળ્યું. પછી કુંભનદાસનો ક્લેશ શ્રીગુસાંઇજી પોતે સહી ન શક્યા. એટલે પોતે તંબુથી પધારીને કુંભનદાસજીની આ દશા જોઇ, કે નેત્રોમાંથી જલ ચાલ્યું જાય છે. મહા વિરહ કરીને દુઃખી થઇ રહ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ શ્રીમુખથી કુંભનદાસજીને કહે, કુંભનદાસ! તમે મંદિરમાં જઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરો. તમારો વિદેશ થઇ ચૂક્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે ? જેવી તમારી દશા અહીં છે એવી દશા ત્યાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની હશે. તે કેમ જાણિએ ? કે જેમ ગજ્જનધાવનને શ્રીઅક્કાજીએ પાન

विरह को एक क्षन सह्यो न जातो, सो पान लेवे कों द्वार सों बाहिर जात ही विरह ज्वर चढ्यो। सो द्वार पास ही दुकान में परि रह्यो, मूर्छा खाइके। और यहाँ मंदिर में श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरे। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने महाप्रभुन सों कही, जो–मेरो गज्जन आवेगो तब मैं आरोगूंगो। तब श्रीआचार्यजी सबन सों पूछे, जो–गज्जन कहाँ गयो है? तब श्रीअक्काजी कहे, जो–पान न हते तासों गज्जन कों पान लेवे पठायो है। तब श्रीआचार्यजी कहे, जो–तुम जानत नाहीं, जो–गज्जन विना श्रीनवनीतप्रियजी एक छिन नाहीं रहत हैं? तासों गज्जन कों पान लेन कों क्यों पठायो? ता पाछें गज्जन कों बुलायेवे कों व्रजवासी पठायो, सो गज्जन कों बुलाय के ले आयो। तब गज्जन ने श्रीनवनीतप्रियजी के पास आय के कह्यो, जो–बाबा? आरोगो। तब श्रीनवनीतप्रियजी आरोगे। सो गज्जन विना आपु विरह करिकें बैठि रहे। सो यह श्रीआचार्यजी के मार्ग की मर्यादा है। जो जैसो सेवक को एक चित्त सों स्वामी के ऊपर (अनन्य) भाव होय, तैसेही स्वामी को भाव दास विषे (विशेष) सेवक के ऊपर होय। सो श्रीभगवान अर्जुन प्रति कहे हैं, जो—

'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।'

तासों श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदासजी सों कहे, जो–जैसो तुम यहाँ

લેવાને મોકલ્યા ત્યારે ગજ્જનને તો શ્રીનવનીતપ્રિયજીના વિરહની એક ક્ષણ પણ સહી ન જાતી. તે પાન લેવાને દ્વાર સુધી બહાર જતાંજ વિરહ જવર ચઢ્યો તે દ્વાર પાસેજ દુકાનમાં પડી રહ્યા મૂર્છા ખાઇને અને અહીં મંદિરમાં શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીનવનીતપ્રિયજીને રાજભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ મહાપ્રભુને કહ્યું. કે મારો ગજ્જન આવશે ત્યારે હું આરોગીશ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી બધાંને પૂછે, કે ગજ્જન ક્યાં ગયો છે? ત્યારે શ્રીઅક્કાજી કહે, કે પાન ન હતાં તેથી ગજ્જનને પાન લેવા મોકલ્યો છે. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે તમે જાણતા નથી કે ગજ્જન વિના શ્રીનવનીતપ્રિયજી એક ક્ષણ નથી રહેતા તેથી ગજ્જનને પાન લેવા કેમ મોકલ્યો? તે પછી ગજ્જનને બોલાવવાને એક વ્રજવાસી મોકલ્યો. તે ગજ્જનને બોલાવીને લઇ આવ્યો. ત્યારે ગજ્જને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની પાસે આવીને કહ્યું, કે બાવા! આરોગો. ત્યારે શ્રીનવનીતપ્રિયજી આરોગ્યા. ગજ્જન વિના આપ વિરહ કરીને બેસી રહ્યા. આ શ્રીઆચાર્યજીના માર્ગની મર્યાદા છે, કે જેવો સેવકનો એક ચિત્તથી સ્વામીના ઉપર (અનન્ય) ભાવ હોય તેવો જ સ્વામીનો ભાવ દાસ વિષે સેવકના ઉપર હોય. તે શ્રીભગવાને અર્જુન પ્રતિ કહ્યું છે કે 'યેયથામાં' (ઉપર જુઓ). તેથી શ્રીગુસાંઇજી આપ કુંભનદાસજીને કહે, કે જેવું

श्रीगोवर्द्धननाथजी के लिये विरह दुःख करत हो, तैसे उहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजी तिहारे लिये विरह दुःख करत हैं। तासों तुम वेगि जायकें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो, तिहारो विदेश होय चुक्यो।

या प्रकार श्रीगुसांईजी ने कुंभनदास कों आज्ञा दीनी। तब कुंभनदास को रोम रोम सीतल होय गयो। तब मनमें प्रसन्न होय श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि वेगि अप्सराकुंडतें दोरि के श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में आये। ता समय उत्थापन के दरसन को समय हतो, सो किंवाड खुले। तब कुंभनदासजी ने यह पद गायो। सो पद—

राग नट—जोपें चोंप मिलनकी होंई। तो क्यों रह्यो परे सुनि सजनी लाख करे किन कोई॥१॥ जोपे विरह परस्पर व्यापे तो कछु जीय बने। लोक लाज कुल की मर्यादा एको चित्त न गिने॥२॥ 'कुंभनदास' जिहिं तन लागी और कछु न सुहाय। गिरिधरलाल तोय बिनु देखे छिन छिन कलप विहाय॥३॥

यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होय के कुंभनदास सों कहे, जो–कुंभनदास! मैं तेरे मनकी बात जानत हूं। जो-तू मेरे बिना रहि नाहीं सकत है। तैसें मैं हू तो विना रहि नाहीं सकत हों। तासों अब तू सदा मेरे पास ही रहेगो। तब कुंभनदासजी ने वहोत प्रसन्न होयके साष्टांग दंडवत कीनी, और हाथ जोरिके कुंभनदासजी ने श्रीगोवर्धननाथजी सों बिनती कीनी जो–महाराज! मोकों

તમે અહીં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના માટે વિરહ દુઃખ કરો છો તેવું ત્યાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી તમારા માટે વિરહ દુઃખ કરે છે. તેથી તમે જલ્દી જઈને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરો. તમારો વિદેશ થઈ ચૂક્યો.

એ પ્રકારે શ્રીગુસાંઈજીએ કુંભનદાસને આજ્ઞા આપી ત્યારે કુંભનદાસનું રોમ–રોમ શીતલ થઈ ગયું. ત્યારે મનમાં પ્રસન્ન થઈ શ્રીગુસાંઈજીને દંડવત્ કરી જલ્દી અપ્સરા કુંડથી દોડીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં આવ્યા. તે સમય ઉત્થાપનના દર્શનનો સમય હતો. તે કમાડ ખુલ્યાં. ત્યારે કુંભનદાસજીએ એ પદ ગાયું. તે પદ 'જો પે ચોંપ મિલનકી હોય' (ઉપર જુઓ). એ પદ સાંભળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પ્રસન્ન થઈને કુંભનદાસજીને કહે, કે કુંભનદાસ હું તારા મનની વાત જાણું છું. કે તૂ મારા વિના રહી શકતો નથી. તેમ હું પણ તારા વિના રહી શકતો નથી. તેથી હવે તૂ સદા મારી પાસેજ રહીશ. ત્યારે કુંભનદાસે બહુ પ્રસન્ન થઈને સાષ્ટાંગ દંડવત કરી અને હાથ જોડીને કુંભનદાસજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને વિનંતી કરી, કે મહા-

यही चहियत हतो, और यही अभिलाषा हती, जो–तुमसों बिछायो न होय। सो कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता–प्रसंग ७—और एक समय श्रीगुसांईजी के पास कुंभनदास बैठे हते और सगरे वैष्णव हू बैठे हते। सो श्रीगुसांईजी आपु हँसिके कुंभनदासजी सों पूछे, जो–कुंभनदास! तिहारे बेटा कितने हैं? तब कुंभनदासजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो–महाराज! बेटा तो मेरे डेढ़ हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–हमने तो सात बेटा सुने हैं, और तुम डेढ़ बेटा कहे, ताको कारन कहा? तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो–महाराज! यों तो सात बेटा हैं, तामें पांच तो लौकिकासक्त हैं, जो–वे बेटा काहे के हैं? और पूरो एक बेटा तो चतुर्भुजदास है। और आधो बेटा कृष्णदास है। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गायन की सेवा करत है।

भावप्रकाश—सो तहां संदेह होय–गायन की सेवा तो सर्वोपरि है। और गायन की सेवा किये तें बहोत वैष्णव श्रीठाकुरजी कों पाये है; और कुंभनदासजी कृष्णदास कों आधो बेटा क्यों कहे? तहां कहत हैं, जो–श्रीआचार्यजी आपु यह पुष्टिमार्ग प्रगट किये हैं। सो पुष्टिमार्ग व्रजजन को भावरूप मार्ग है। सो भगवदीय गाये हैं, जो–'सेवा रीति प्रीति व्रजजन की जनहित जग प्रगटाई।'

રાજ! મને એજ જોઈએ છે અને એજ અભિલાષા હતી કે તમારાથી વિયોગ ન થાય. એ કુંભનદાસજી એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૭—વળી એક સમય શ્રીગુસાંઈજીની પાસે કુંભનદાસજી બેઠા હતા અને બધા વૈષ્ણવો પણ બેઠા હતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી આપ હસિને કુંભનદાસજીને પૂછે કે કુંભનદાસજી! તમારે બેટા કેટલા છે? ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઈજીને કહ્યું. કે મહારાજ! બેટા તો મારે દોઢ છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, કે અમે તો સાત બેટા સાંભળ્યા હતા અને તમે દોઢ કહ્યો તેનું કારણ શું? ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, મહારાજ! એમ તો સાત બેટા છે તેમાં પાંચ તો લૌકિક આસક્ત છે. એ બેટા શેના? અને પૂરો એક બેટો તો ચતુર્ભુજદાસ છે અને અર્ધો બેટો કૃષ્ણદાસ છે. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયોની સેવા કરે છે.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં સંદેહ થાય કે ગાયોની સેવા તો સર્વોપરી છે અને ગાયોની સેવા કરવાથી ઘણા વૈષ્ણવ શ્રીઠાકુરજીને પામ્યા છે અને કુંભનદાસજીએ કૃષ્ણદાસને અર્ધો બેટો કેમ કહ્યો? ત્યાં કહે છે, કે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે આ પુષ્ટિમાર્ગને પ્રકટ કર્યો છે. એ પુષ્ટિમાર્ગ વ્રજજનોનો ભાવરૂપ માર્ગ છે. તેથી ભગવદીયે ગાયું છે, 'સેવા

सो व्रजभक्तन की कहा रीति है ? जो-श्रीठाकुरजी के सन्निधान में तो सेवा करें, सो स्वरूपानंद को अनुभव करि संयोग रस में मग्न रहैं। और श्रीठाकुरजी गोचारन अर्थ व्रज में पधारें तब व्रजभक्त विरह रस को अनुभव करि गान करें। सो या प्रकार संयोग रस और विप्रयोग रस को अनुभव जाकों होय सो पूरो वैष्णव होय। और (जामें) एक न होय सो आधो वैष्णव है। सो कृष्णदास तो गायन की सेवा करत है। और श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन हू होत है। परंतु व्रजभक्तन की रहस्य लीला को अनुभव नाहीं है। तासों ये आधो है। और चतुर्भुजदास संयोग और विप्रयोग दोऊ रस के अनुभवयुक्त सेवा करत हैं, सो लीलासंबंधी कीर्तन हू गान करत हैं। तासों कुंभनदासजी चतुर्भुजदास कों पूरो बेटा कहे।

यह कुंभनदासजी के बचन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके कहे, जो-कुंभनदास ! तुम सांची बात कही। जो-भगवदीय है सोई बेटा है। और बहोत भये तो कौन काम के ? सो चतुर्भुजदासजी की वार्ता तो श्रीगुसांईजी के सेवकन में लिखी है, और अब कृष्णदास की वार्ता कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग ८—सो ये कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के गायन की सेवा करते, सो गायन के ग्वाल हते। सो श्रीगुसांईजी आपु

રીતિ પ્રીતિ વ્રજજન કી જનહિત જગ પ્રગટાઇ ' તે વ્રજભકતોની શી રીત છે ? કે શ્રીઠાકુરજીના સાનિધ્યમાં તો સેવા કરે અને સ્વરૂપાનંદનો અનુભવ કરી સંયોગ રસમાં મગન રહે અને શ્રીઠાકુરજી ગોચારણ અર્થ વ્રજમાં પધારે ત્યારે વ્રજભક્ત વિરહ રસનો અનુભવ કરી ગાન કરે. આ પ્રકારે સંયોગ રસ અને વિપ્રયોગ રસનો અનુભવ જેને હોય તે પૂરો વૈષ્ણવ થાય અને જેમાં એક ન હોય તે અર્ધો વૈષ્ણવ છે. તેથી કૃષ્ણદાસ તો ગાયોની સેવા કરે છે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન પણ કરે છે પરંતુ વ્રજભક્તાની રહસ્યલીલાનો અનુભવ નથી. તેથી એ અર્ધો છે અને ચતુર્ભુજદાસ સંયોગ અને વિપ્રયોગ બન્ને રસના અનુભવયુક્ત સેવા કરે છે. તે લીલા સંબંધી કીર્તન પણ ગાન કરે છે તેથી કુંભનદાસજીએ ચતુર્ભુજદાસને પૂરો બેટા કહ્યો.

આ કુંભનદાસજીના વચન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પ્રસન્ન થઇને કહે કે કુંભનદાસ ! તમે સાચી વાત કહી જે ભગવદીય છે તેજ બેટા છે બીજા ઘણા થયા તે શા કામના ? એ ચતુર્ભુજદાસની વાર્તા તો શ્રીગુસાંઇજીના સેવકોમાં લખી છે અને હવે કૃષ્ણદાસની વાર્તા કહીએ છીએ.

વાર્તા-પ્રસંગ ૮—એ કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયોની સેવા કરતા. એ

कृष्णदास कों गायन की सेवा दीनी हती। सो सगरे खिरक की सेवा करि कें आछें झारि बुहारिके ता पाछें गायन के संग बन में जाते, सो सगरे दिन गाय चरावते। सो संध्या समय गायन कों घेरि के ले आवते। एक दिन कृष्णदास गाय चराय के घर आवत हते सो पूंछरी के पास आये। सो सगरी गाय तो खिरक में गई, और एक गाय बहुत बडी हती, ताको एन बहोत भारी हतो। सो दूध हू बहोत देती, और थन हू बडे हते। सो वह गाय हरुवे-हरुवे चलती। वा गायके पाछें कृष्णदास आवत हते सो पूंछरी के पास श्रीगिरिराज की कंदरा में ते एक नाहर निकस्यो। सो वह सगरी गाय तो भाजिके खिरक में आई। और वह गाय धीरे चलती, सो वा गाय के ऊपर नाहर दोर्‌यो। तब कृष्णदास ने नाहर सों ललकारि के कह्यो, जो-अरे अधर्मी! यह श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय है, और तू भूख्यो होय तो मेरे ऊपर आव। सो नाहर की यह रीति है, जो-ललकारे सो ताही पे आवे। तब नाहर निकट आयो। सो जब कृष्णदास ने वा गाय कों हांकी, सो वह डरपि के भाजी सो खिरक में आई, और कृष्णदास कों नाहर ने मार्‌यो। और सब गाय भाजिके खिरक में आई हती सो गायन कों गोपीनाथ आदि ग्वाल दुहन लागे। सो

ગાયોના ગ્વાલ હતા. શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કૃષ્ણદાસને ગાયોની સેવા આપી હતી. તેથી એ સમગ્ર ગૌશાળાની સેવા કરીને સુંદર ઝાડી બુહારીને તે પછી ગાયોની સાથે વનમાં જતા. ત્યાં આખો દિવસ ગાય ચરાવતા. પછી સંધ્યા સમય ગાયોને ઘેરીને લઇ આવતા. એક દિવસ કૃષ્ણદાસ ગાયો ચરાવીને ઘર આવતા હતા ત્યારે પૂંછરીની પાસે આવ્યા. ત્યારે બધી ગાય તો ગૌશાળામાં ગઇ અને એક ગાય બહુંજ મોટી (જાડી) હતી તેનું આઉ ભારી હતું. તે દૂધ બહુ દેતી હતી અને થન પણ મોટાં હતાં. તે ગાય ધીરે ધીરે ચાલતી. એ ગાયની પાછળ કૃષ્ણદાસ આવતા હતા. ત્યારે પૂંછરીની પાસે શ્રીગિરિરાજજીની કંદરામાંથી એક વાઘ નિકળ્યો. તેથી તે બધી ગાયો તો ભાગીને ગૌશાળામાં આવી અને તે ગાય ધીરે ધીરે ચાલતી એથી એ ગાયના ઉપર વાઘ દોડયો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે વાઘને લલકારીને કહ્યું, કે અરે અધર્મી ! એ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાય છે અને તૂ ભૂખ્યો હોય તો મારા ઉપર આવ. તે વાઘની એ રીતિ છે કે લલકારે તેની પાસે આવે. ત્યારે વાઘ નિકટ આવ્યો. તે જ્યારે કૃષ્ણદાસે તે ગાયને હાંકી ત્યારે તે ડરીને ભાગી તે ગૌશાળામાં આવી અને કૃષ્ણદાસને વાઘે માર્યા અને બધી ગાયો જે ગૌશાળામાં આવી હતી તે ગાયોને

गोपीनाथ ग्वाल बड़े कृपापात्र भगवदीय हते। सो देखे तो–श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बड़ी गाय कों दुहत हैं। और कृष्णदास वा गाय को बछरा पकरें ठाड़े हैं, सो कुंभनदासजी हू ठाड़े हते। सो गाय बछरा कों चाटत है। सो कुंभनदासजी कों खिरक में ऐसो दरसन भयो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बड़ी गाय कों दुहिके आपु तो मंदिर में पधारे। तब गुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सेन भोग धरे। सो कुंभनदास हू खिरक में ते मंदिर में चले, सो दंडोती सिलाके पास आये। इतने में सब समाचार आये, जो–कृष्णदास ग्वाल कों नाहर ने मार्‍यो। तब कृष्णदास की बात काहूने कुंभनदास सों कही जो–तिहारे बेटा कृष्णदास कों नाहर ने मार्‍यो है। यह बात सुनिके कुंभनदासजी मूर्छा खाइके गिर पड़े। सो ऐसे गिरे जो कछू देहानुसंधान न रह्यो। सो कुंभनदास कों व्रजवासी वैष्णव बहोतेरो बुलावें सो कुंभनदासजी बोले नाहीं। तब ये समाचार काहूने श्रीगुसांईजी सों जायके कहे, जो–महाराज! कुंभनदास को बेटा कृष्णदास ग्वाल नाहर ने मार्‍यो है, और कृष्णदास ने गाय बचाई। आपु नाहर के आड़े परि देह छोड़ी, सो कृष्णदास पूंछरी की ओर परे हैं। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–ऐसे मति कहो। क्यों? जो–गाय कृष्णदास कों कबहू छोडि आवे नाहीं।

ગોપીનાથ આદિ દોહવા લાગ્યા. તે ગોપીનાથ ગ્વાલ મોટા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તે જુએ તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી તે મોટી ગાયને દૂહે છે અને કૃષ્ણદાસ એ ગાયનું વાછડું પકડીને ઉભા છે. (એ સમયે) કુંભનદાસજી પણ (ત્યાં) ઉભા હતા. ગાય વાછડાને ચાટે છે. કુંભનદાસજીને (પણ) ગૌશાલામાં એવાં દર્શન થયાં. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી એ મોટી ગાયને દોહીને પોતે તો મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સેનભોગ ધર્યો. પછી કુંભનદાસજી પણ ગૌશાળામાંથી મંદિરમાં ચાલ્યા. તે દંડવતી શીલાની પાસે આવ્યા. એટલામાં બધા સમાચાર આવ્યા કે કૃષ્ણદાસ ગ્વાલને વાઘે માર્યા છે. એ વાત સાંભળીને કુંભનદાસજી મૂર્છા ખાઈને પડ્યા. તે એવા પડ્યા, કે કંઈ દેહાનુસંધાન ન રહ્યું. ત્યારે કુંભનદાસને વ્રજવાસી વૈષ્ણવ ઘણું ઘણું બોલાવે પરંતુ કુંભનદાસજી બોલે નહીં. ત્યારે એ સમાચાર કોઈએ શ્રીગુસાંઈજીને જઈને કહ્યા, કે મહારાજ! કુંભનદાસના બેટા કૃષ્ણદાસને વાઘે માર્યા અને કૃષ્ણદાસે ગાય બચાવી. પોતે વાઘની આડે પડી દેહ છોડી. તે કૃષ્ણદાસ પૂંછરીની તરફ પડ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, એમ ન કહો. કેમ જે ગાય કૃષ્ણદાસને ક્યારેય છોડે નહીં.

भावप्रकाश—सो काहेतें, जो-अंत समय गाय संकल्प करत है, सो ताकों गाय उत्तम लोक में ले जात है। और कृष्णदास ने तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय बचाई है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कृष्णदास कों कबहू न छोड़ेगी।

तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदासजी कहां है? तब काहू वैष्णव ने विनती कीनी, जो-महाराज! कुंभनदास कों तो पुत्र को सोक बहोत व्याप्यो है, सो दंडोती सिला के पास मूर्छा खायके गिर परे हैं। सो कितनेक लोग पुकारत हैं, परि कुंभनदासजी काहू सों बोलत नाहीं। जो अचेत परे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी की सेवा सों पहोंचि के अनोसर कराय परवत तें नीचे पधारि दंडोती सिला के पास कुंभनदासजी परे हते तहां पधारे। ता समय वैष्णव ने सब समाचार कहे। सो श्रीगुसांईजी आपु देखें तो कुंभनदासजी के पास सब लोग ठाड़े हैं। ता समय लोगन नें कही, जो-महाराज! कुंभनदासजी बड़े भगवदीय हैं, परंतु पुत्र को सोक महा बुरो होत है, सो या पीड़ा सों कोई बच्यो नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-इनकों पुत्रको सोक नाहीं है; जो-इनकों और दुःख है। सो तुम कहा जानो? इनकों यह दुःख है जो-सूतक में श्रीनाथजी के दरसन कैसें होयगे? सो या दुःख सों

ભાવપ્રકાશ—કેમકે જે અંતસમયે ગાય સંકલ્પ કરે છે તેને ગાય ઉત્તમ લોકમાં લઇ જાય છે અને કૃષ્ણદાસે તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાય બચાવી છે. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાય કૃષ્ણદાસને કદીય નહીં છોડે.

પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે પૂછે કે કુંભનદાસજી ક્યાં છે? ત્યારે કોઇ વૈષ્ણવે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! કુંભનદાસને તો પુત્રનો શોક ઘણો વ્યાપ્યો છે. તેથી દંડવતી શિલાની પાસે મૂર્છા ખાઇને પડયા છે. તે કેટલાક લોકો બોલાવે છે પરંતુ કુંભનદાસજી કોઇથી બોલતા નથી. જે અચેત પડયા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનાથજીની સેવાથી પહોંચીને અનોસર કરાવી પર્વતથી નીચે પધારી દંડવતી શિલાની પાસે કુંભનદાસજી પડયા હતા ત્યાં પધાર્યા. તે સમયે વૈષ્ણવોએ બધા સમાચાર કહ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે જુએ તો કુંભનદાસજીની પાસે બધા લોકો ઉભા છે. તે સમયે લોકોએ કહ્યું, કે મહારાજ! કુંભનદાસ મહાન ભગવદીય છે પરંતુ પુત્રનો શોક બહુ ખોટો હોય છે. એ પીડાથી કોઇ બચ્યો નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે એમને પુત્રનો શોક નથી એમને બીજું દુ:ખ છે તે તમે શું જાણો? એમને એ દુ:ખ છે, કે સૂતકમાં શ્રીનાથજીનાં દર્શન કેવી રીતે થશે? આ દુ:ખથી પડયા છે. હવે તમારો સંદેહ દૂર થશે. ત્યારે શ્રી-

गिरे हैं। सो अब तुम्हारो संदेह दूर होयगो। तब श्रीगुसांईजी आपु भगवदीयन को स्वरूप प्रकट करिवे के लिये कुंभनदास कों पुकारि के कहे, जो-कुंभनदास! सवारे श्रीनाथजी के दरसन कों आइयो, जो-तुमकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करवावेंगे। तब श्रीगुसांईजी के यह बचन सुनिके कुंभनदासजी ने तत्काल उठि के श्रीगुसांईजी कों साष्टांग दंडवत कीनी, और विनती कीनी। जो-महाराज! आपु बिना मेरे अंतःकरन की कौन जाने? तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-हम जानत हैं, तुमकों संसार संबंधी दुःख लगे नाहीं। जो कोई वैष्णव तिहारो एक क्षण संग करे तो वाकों लौकिक दुःख न लागे। तो तुमकों कहा? तासों जावो, जो-कृष्णदास के सरीर को संस्कार करो। पाछें सवारे दरसन कों आइयो। तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी कों दंडवत करिके जायके कृष्णदास के सरीर को क्रियाकर्म किये। और श्रीगुसांईजी आप बैठक में जायके विराजे, तब सगरे वैष्णव बैठक में आयके बैठे। सो इतने में गोपीनाथदास ग्वाल(नें) आयके कह्यो, जो-महाराज! कृष्णदास कों तो पूछरी पास नाहर ने मार्यो, और मैं खिरक में गोदोहन करत हतो, सो ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वा बड़ी गाय कों दुहत हते और कृष्णदास वा गाय को बछरा थांमे हते। सो गाय बछरा कों चाटत हती। सो

ગુસાંઇજીએ પોતે ભગવદીયોનું સ્વરૂપ પ્રકટ કરવાને માટે કુંભનદાસને પોકારીને કહ્યું, કે કુંભનદાસ! સવારે શ્રીનાથજીનાં દર્શને આવજો. તમને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરાવીશું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીનાં એ વચન સાંભળીને કુંભનદાસજીએ તત્કાલ ઉઠીને શ્રીગુસાંઇજીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કર્યા અને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપના વિના મારા અંતઃકરણની કોણ જાણે? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે અમે જાણીએ છીએ કે તમને સંસાર સંબંધી દુઃખ લાગે નહીં. જે કોઇ વૈષ્ણવ તમારો એક ક્ષણ પણ સંગ કરે તો એને લૌકિક દુઃખ ન લાગે. તો તમને શું? તેથી જાવ, કૃષ્ણદાસના શરીરનો અગ્નિસંસ્કાર કરો. પછી સવારે દર્શને આવજો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને જઇને કૃષ્ણદાસના શરીરનું ક્રિયાકર્મ કર્યું અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે બેઠકમાં જઇને બિરાજ્યા ત્યારે બધા વૈષ્ણવો બેઠકમાં આવીને બેઠા. એટલામાં ગોપીનાથદાસ ગ્વાલે આવીને કહ્યું, કે મહારાજ! કૃષ્ણદાસને તો પૂછરી પાસે વાઘે માર્યો અને હું ગૌશાલામાં ગોદોહન કરતો હતો તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે એ મોટી ગાયને દોહતા હતા અને કૃષ્ણદાસે એ ગાયના વાછડાને પકડયો હતો. એ ગાય વાછડાને

ऐसो दरसन खिरक में मोकों भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्चर्य कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई। सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये। सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो। और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं। यह बात सुनिके सगरे वैष्णव व्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है। ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो। सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये। सो यह रीति वा दिन तें राखी। जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे। सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे। सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

ચાટતી હતી. એવાં દર્શન ગૌશાળામાં મને થયાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે, કે એમાં આશ્ચર્ય શું ? એ કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા કે પોતે વાઘની આડે પડયા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયને બચાવી. તેથી કૃષ્ણદાસના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રસન્ન થઇને કૃષ્ણદાસને પોતાની લીલામાં પ્રાપ્ત કર્યા. તે તમે ભગવદીય છો તેથી તમને દર્શન થયાં; બીજાને તો લીલાનાં દર્શન દુર્લભ છે. એ વાત સાંભળીને બધા વૈષ્ણવ વ્રજવાસી ઘણા પ્રસન્ન થયા, કે સેવા પદાર્થ એવો છે. તે પછી પ્રાતઃકાલ કુંભનદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ સેવકોને આજ્ઞા કરી, કે સૌથી પહેલાં કુંભનદાસજીને દર્શન કરાવી દો. તે પછી બીજા બધા લોકો દર્શન કરશે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ બધાથી પહેલાં કુંભનદાસને દર્શન કરાવી દીધાં. એ પ્રકારે કુંભનદાસજીના ઉપર શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અનુગ્રહ કર્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂતકીને ભગવત્મંદિરમાં કોણ આવવા દેતો ? તેથી કુંભનદાસને સૂતકમાં દર્શન કરાવ્યાં. એ રીતિ તે દિવસથી રાખી, કે જેને સૂતક હોય તે પણ દર્શન કરે. એ પ્રકારે કુંભનદાસની કૃપાથી સૂતકીઓને દર્શન થવા લાગ્યાં. એ રીતિ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એથી કરી કે વૈષ્ણવના હૃદયમાં સ્નેહ છે એ આગળ કોઇ

किये, जो–वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नाहीं। तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे। तब वैष्णव हू सुख पावें, और श्रीगोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें। तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोली में जायके विरह के पद गावते। सो पद—

राग विहागरो—तिहारे मिलन विनु दुखित गोपाल। अति आतुर कुलवधू व्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु व्याल। चंदन कुसुम सुहाय न बाढी है तन ज्वाल। 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम विनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग विहागरो—अब दिन रात पहारसे भए। तब तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विधाता जुग सम कीने जाम नए। जागत जात विहात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ व्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए। ज्यों विनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हृदे हए। 'कुंभनदास' विछुरि नंदनंदन बहु संताप दए। अब गिरिधर विनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप विछुरनो आयो मेरे ही हिसा। सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहेत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये। ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते ताही प्रकार सों करन लागे। सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो।

वार्ता–प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबाल-

જાણશે નહી. તેથી આગળના વૈષ્ણવોને દર્શનની છુટ્ટી રહે. ત્યારે વૈષ્ણવો પણ સુખ પામે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પણ સુખ પામે તેથી આગળ દર્શનની છુટ્ટી રાખી.

પછી કુંભનદાસજી ભોગ પર્યંત દર્શન કરી પછી પરાસોલીમાં આવીને વિરહનાં પદ ગાતા. તે પદ—(૧) 'તિહારે મિલન બિનુ', (૨) 'અબ દિન રાત' (૩) 'ઔરનકોં સમીપ' (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે વિરહનાં પદ ગાઇને કુંભનદાસજીએ સૂતકના દિવસો વ્યતીત કર્યા. તે પછી શુદ્ધ થઇને કુંભનદાસજી પોતાની સેવામાં આવ્યા. તે જેમ નિત્ય નેમથી સેવા કરતા હતા તેજ પ્રકારથી કરવા લાગ્યા. એ પ્રકારનો સ્નેહ કુંભનદાસજીનો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીમાં હતો.

વાર્તા–પ્રસંગ ૯–વળી એક દિવસ શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી એ બન્ને

ऐसो दरसन खिरक में मोकों भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्चर्य कहा? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई। सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये। सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो। और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं। यह बात सुनिके सगरे वैष्णव व्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है। ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो। सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये। सो यह रीति वा दिन तें राखी। जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे। सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे। सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

ચારતી હતી. એવાં દર્શન ગૌશાળામાં મને થયાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે, કે એમાં આશ્ચર્ય શું? એ કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા કે પોતે વાઘની આડે પડયા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયને બચાવી. તેથી કૃષ્ણદાસના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રસન્ન થઇને કૃષ્ણદાસને પોતાની લીલામાં પ્રાપ્ત કર્યા. તે તમે ભગવદીય છો તેથી તમને દર્શન થયાં. બીજાને તો લીલાનાં દર્શન દુર્લભ છે. એ વાત સાંભળીને બધા વૈષ્ણવ વ્રજવાસી ઘણા પ્રસન્ન થયા, કે સેવા પદાર્થ એવો છે. તે પછી પ્રાતઃકાલ કુંભનદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ સેવકોને આજ્ઞા કરી, કે સૌથી પહેલાં કુંભનદાસજીને દર્શન કરાવી દો. તે પછી બીજા બધા લોકો દર્શન કરશે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ બધાથી પહેલાં કુંભનદાસને દર્શન કરાવી દીધાં. એ પ્રકારે કુંભનદાસજીના ઉપર શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અનુગ્રહ કર્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂતકીને ભગવત્મંદિરમાં કોણ આવવા દેતો? તેથી કુંભનદાસને સૂતકમાં દર્શન કરાવ્યાં. એ રીતિ તે દિવસથી રાખી, કે જેને સૂતક હોય તે પણ દર્શન કરે. એ પ્રકારે કુંભનદાસની કૃપાથી સૂતકીઓને દર્શન થવા લાગ્યાં. એ રીતિ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એથી કરી કે વૈષ્ણવના હૃદયમાં સ્નેહ છે એ આગળ કોઇ

किये, जो-वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नाहीं। तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे। तब वैष्णव हू सुख पावें, और श्री-गोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें। तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोलीं में जायके विरह के पद गावते। सो पद—

राग बिहागरो—तिहारे मिलन बिनु दुखित गोपाल। अति आतुर कुलवधू व्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु व्याल। चंदन कुसुम सुहाय न वाढी है तन ज्वाल। 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम बिनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग बिहागरो—अब दिन रात पहारसे भए। तब तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विधाता जुग सम कीने जाम नए। जागत जात बिहात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ व्रजबासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए। ज्यों बिनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हृदे हए। 'कुंभनदास' बिछुरि नंदनंदन बहु संताप दए। अब गिरिधर बिनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप बिछुरनो आयो मेरे ही हिसा। सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहेत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये। ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते ताही प्रकार सों करन लागे। सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबाल-

જાણશે નહી. તેથી આગળના વૈષ્ણવોને દર્શનની છુટ્ટી રહે. ત્યારે વૈષ્ણવો પણ સુખ પામે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પણ સુખ પામે તેથી આગળ દર્શનની છુટ્ટી રાખી.

પછી કુંભનદાસજી ભોગ પર્યંત દર્શન કરી પછી પરાસોલીમાં આવીને વિર-હનાં પદ ગાતા. તે પદ—(૧) 'તિહારે મિલન બિનુ'. (૨) 'અબ દિન રાત' (૩) 'ઔરનકોં સમીપ' (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે વિરહનાં પદ ગાઇને કુંભન-દાસજીએ સૂતકના દિવસો વ્યતીત કર્યા. તે પછી શુદ્ધ થઇને કુંભનદાસજી પોતાની સેવામાં આવ્યા. તે જેમ નિત્ય નેમથી સેવા કરતા હતા તેજ પ્રકારથી કરવા લાગ્યા. એ પ્રકારનો સ્નેહ કુંભનદાસજીનો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીમાં હતો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯—વળી એક દિવસ શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી એ બન્ને

ऐसो दरसन खिरक में मोकों भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्चर्य कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई। सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये। सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो। और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं। यह बात सुनिके सगरे वैष्णव व्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है। ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो। सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये। सो यह रीति वा दिन तें राखी। जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे। सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे। सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

ચાટતી હતી. એવાં દર્શન ગૌશાળામાં મને થયાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે, કે એમાં આશ્ચર્ય શું ? એ કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા કે પોતે વાઘની આડે પડ્યા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયને બચાવી. તેથી કૃષ્ણદાસના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રસન્ન થઇને કૃષ્ણદાસને પોતાની લીલામાં પ્રાપ્ત કર્યા. તે તમે ભગવદીય છો તેથી તમને દર્શન થયાં. બીજાને તો લીલાનાં દર્શન દુર્લભ છે. એ વાત સાંભળીને બધા વૈષ્ણવ વ્રજવાસી ઘણા પ્રસન્ન થયા, કે સેવા પદાર્થ એવો છે. તે પછી પ્રાતઃકાલ કુંભનદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ સેવકોને આજ્ઞા કરી, કે સૌથી પહેલાં કુંભનદાસજીને દર્શન કરાવી દો. તે પછી બીજા બધા લોકો દર્શન કરશે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ બધાથી પહેલાં કુંભનદાસને દર્શન કરાવી દીધાં. એ પ્રકારે કુંભનદાસજીના ઉપર શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અનુગ્રહ કર્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂતકીને ભગવત્મંદિરમાં કોણ આવવા દેતો ? તેથી કુંભનદાસને સૂતકમાં દર્શન કરાવ્યાં. એ રીતિ તે દિવસથી રાખી, કે જેને સૂતક હોય તે પણ દર્શન કરે. એ પ્રકારે કુંભનદાસની કૃપાથી સૂતકીઓને દર્શન થવા લાગ્યાં. એ રીતિ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એવી કરી કે વૈષ્ણવના હૃદયમાં સ્નેહ છે એ આગળ કોઇ

किये, जो-वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नाहीं। तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे। तब वैष्णव हू सुख पावें, और श्री-गोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें। तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोली में जायके विरह के पद गावते। सो पद—

राग विहागरो—तिहारे मिलन बिनु दुखित गोपाल। अति आतुर कुलवधू व्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु ब्याल। चंदन कुसुम सुहाय न वाढी है तन ज्वाल। 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम बिनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग विहागरो—अब दिन रात पहारसे भए। तब तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विधाता जुग सम कीने जाम नए। जागत जात विहात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ व्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए। ज्यों बिनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हदे हए। 'कुंभनदास' बिछुरि नंदनंदन बहु संताप दए। अब गिरिधर बिनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप बिछुरनो आयो मेरे ही हिसा। सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहेत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये। ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते ताही प्रकार सों करन लागे। सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबाल-

જાણશે નહીં. તેથી આગળના વૈષ્ણવોને દર્શનની છુટ્ટી રહે. ત્યારે વૈષ્ણવો પણ સુખ પામે અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પણ સુખ પામે તેથી આગળ દર્શનની છુટ્ટી રાખી.

પછી કુંભનદાસજી ભોગ પર્યંત દર્શન કરી પછી પરાસોલીમાં આવીને વિરહનાં પદ ગાતા. તે પદ—(૧) 'તિહારે મિલન બિનુ'. (૨) 'અબ દિન રાત' (૩) 'ઓરનકોં સમીપ' (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે વિરહનાં પદ ગાઇને કુંભનદાસજીએ સૂતકના દિવસો વ્યતીત કર્યા. તે પછી શુદ્ધ થઇને કુંભનદાસજી પોતાની સેવામાં આવ્યા. તે જેમ નિત્ય નેમથી સેવા કરતા હતા તેજ પ્રકારથી કરવા લાગ્યા. એ પ્રકારનો સ્નેહ કુંભનદાસજીનો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીમાં હતો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯—વળી એક દિવસ શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી એ બન્ને

ऐसो दरसन खिरक में मोकों भयो। तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्चर्य कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई। सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये। सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो। और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं। यह बात सुनिके सगरे वैष्णव व्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है। ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये। तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे। पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो। सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये। सो यह रीति वा दिन तें राखी। जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे। सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे। सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

चाटती हती. એવાં દર્શન ગૌશાળામાં મને થયાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીમુખથી કહે, કે એમાં આશ્ચર્ય શું ? એ કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા કે પોતે વાઘની આડ પડયા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ગાયને બચાવી. તેથી કૃષ્ણદાસના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે પ્રસન્ન થઇને કૃષ્ણદાસને પોતાની લીલામાં પ્રાપ્ત કર્યા. તે તમે ભગવદીય છો તેથી તમને દર્શન થયાં. બીજાને તો લીલાનાં દર્શન દુર્લભ છે. એ વાત સાંભળીને બધા વૈષ્ણવ વ્રજવાસી ઘણા પ્રસન્ન થયા, કે સેવા પદાર્થ એવો છે. તે પછી પ્રાતઃકાલ કુંભનદાસજી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ સેવકોને આજ્ઞા કરી, કે સૌથી પહેલાં કુંભનદાસજીને દર્શન કરાવી દો. તે પછી બીજા બધા લોકો દર્શન કરશે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ બધાથી પહેલાં કુંભનદાસને દર્શન કરાવી દીધાં. એ પ્રકારે કુંભનદાસજીના ઉપર શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અનુગ્રહ કર્યો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે સૂતકીને ભગવત્મંદિરમાં કોણ આવવા દેતો ? તેથી કુંભનદાસને સૂતકમાં દર્શન કરાવ્યાં. એ રીતિ તે દિવસથી રાખી, કે જેને સૂતક હોય તે પણ દર્શન કરે. એ પ્રકારે કુંભનદાસની કૃપાથી સૂતકીઓને દર્શન થવા લાગ્યાં. એ રીતિ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એથી કરી કે વૈષ્ણવના હૃદયમાં સ્નેહ છે એ આગળ કોઇ

होत है ? जो कुंभनदासजी सरीखे भगवदीय को संग तो या मिष तें होयगो, सो यही वड़ो लाभ होयगो। पाछें दोनो भाई श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेन आरती तांई सेवा सों पहोंचिके श्रीनाथजी कों पोंढ़ाय अनोसर करवाय वाहिर आये। और कुंभनदासजी को हाथ पकरिके भगवद् वार्ता लीला को भाव कहन लागे। सो कुंभनदासजी लीलारस में मगन होय गये, सो कछु सुधि न रही जो हम कहां हैं ? तब श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करत कुंभनदासजी को हाथ पकरिके अन्योर की ओर परवत सों उतरिकें श्रीगोकुल कों चले। सो रहस्य वार्ता में मगन हैं। और श्रीबालकृष्णजी दोय चारि वैष्णव संग चुपचाप होयके कुंभनदासजी की और श्रीगोकुलनाथजी की वार्ता सुनत श्रीगोकुल कों चले। तब मारग में श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिके कुंभनदासजी सों पूछे। जो श्रीस्वामिनीजी को सिंगार कबहू श्रीगोवर्द्धनधर हू करत हैं ? तब कुंभनदासजी प्रेम में मगन होय के कहे, जो–हां, हां, करत हैं। जो एक दिन आश्विन महिना में श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी ललितादिक सखी संग रात्रि कों वन में फूल वीने। ता पाछें समाज सहित रासमंडल के पास सिंगार को चौंतरा हैं सो ता ऊपर आपु विराजे। तब विसाखाजी सिंगार

આપણે પણ પગે ચાલીશું. આ પ્રકારથી ચાલ્યા ચાલીશું, જુઓ શું કૌતુક થાય છે ? કુંભનદાસજી સરખા ભગવદીયનો સંગ તો આ બહાને થશે. એય મોટો લાભ થશે. પછી બન્ને ભાઇ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેન આરતી સુધીની સેવાથી પહોંચીને શ્રીનાથજીને પોઢાવી અનોસર કરી બહાર આવ્યા અને કુંભનદાસજીનો હાથ પકડીને ભગવદ્દવાર્તા લીલાનો ભાવ કહેવા લાગ્યા. ત્યારે કુંભનદાસજી લીલારસમાં મગન થઇ ગયા તે કંઇ સુધ રહી નહી કે અમે ક્યાં છીએ ? ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી ભગવદ્દવાર્તા કરતા કુંભનદાસજીનો હાથ પકડીને આન્યોરની તરફ પર્વતથી ઉતરીને શ્રીગોકુલ ચાલ્યા. તે રહસ્યવાર્તામાં મગન છે અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી બે ચાર વૈષ્ણવોના સંગે ચુપચાપ થઇને કુંભનદાસજીની અને શ્રીગોકુલનાથજીની વાર્તા સાંભળતા શ્રીગોકુલ ચાલ્યા. ત્યારે માર્ગમાં શ્રીગોકુલનાથજી વાર્તા કરીને કુંભનદાસજીને પૂછે કે શ્રીસ્વામિનીજીનો શૃંગાર ક્યારેય શ્રીગોવર્દ્ધનધર પણ કરે છે ? ત્યારે કુંભનદાસજી પ્રેમમાં મગ્ન થઇને કહે, કે હાં ! હાં ! કરે છે. એક દિવસ આસો મહીનામાં શ્રીનાથજી અને શ્રીસ્વામિનીજીએ લલિતાદિક સખી સાથે રાત્રિએ વનમાં ફૂલ વીણ્યાં. તે પછી સમાજ સહિત રાસ મંડલની પાસે શૃંગારનો ચોતરો છે તે ઉપર પોતે બિરાજ્યા.

कृष्णजी ये दोऊ भाई मिलिके श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल नाहीं गये हैं। सो ये कोई प्रकार श्रीगोकुल तांई जाय तब श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कुंभनदासजी करें। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की रहस्य लीला में मगन हैं, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी हिले हैं। तब श्रीगोकुलनाथजी कहे, जो-इनकों ले जायवे को उपाय तो करिये। पाछे न आवें तो भगवद् इच्छा। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-उपाय करो, परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजी पार कबहू न उतरेंगे। पाछे कछुक दिन में श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे हते, और श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजीद्वार में हते। सो वैशाख सुदि ११ के दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी सों कहे, जो-श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी हैं और आपुन दोऊ जने यहां है। तासों कुंभनदासजी कों श्रीगोकुल ले चलिये। तब श्रीबालकृष्णजी ने कह्यो, जो-कैसे ले चलोगे? जो कुंभनदासजी तो असवारी पर बैठत नाहीं हैं। सो तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-कुंभनदासजी असवारी पें तो बैठेंगे नाहीं, और दिन में श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन छोड़िके कहू जांयगे नाहीं। तासों रात्रि उजियारी है, सो हमहू पाँवन सों चलेंगे। सो या प्रकार सों चले चलेंगे सो देखें कहा कौतुक

ભાઇ મળીને શ્રીગુસાંઇજીને કહે, કુંભનદાસજી ક્યારેય શ્રીગોકુલ નથી ગયા તેથી એ કોઇ પ્રકારે શ્રીગોકુલ સુધી જાય ત્યારે કુંભનદાસજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શન કરે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે કુંભનદાસજી તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની રહસ્યલીલામાં મગ્ન છે. એમનાથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથ હળ્યા છે. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી કહે, કે એમને લઇ જવાનો ઉપાય તો કરીએ. પછી ન આવે તો ભગવદીચ્છા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે કે, ઉપાય કરો. પરંતુ કુંભનદાસજી શ્રીયમુનાજી પાર કદીય નહીં ઉતરે. પછી થોડાક દિવસમાં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલ પધાર્યા હતા અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી અને શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીનાથજીદ્વારમાં હતા. ત્યારે વૈશાખ સુદ ૧૧ ના દિવસે શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીને કહે, કે શ્રીગોકુલમાં શ્રીગુસાંઇજી છે અને આપણે બન્ને અહીં છીએ. તેથી કુંભનદાસજીને શ્રીગોકુલ લઇ ચાલો. ત્યારે શ્રીબાલકૃષ્ણજીએ કહ્યું, કે કેવી રીતે લઇ ચાલીશું? કુંભનદાસજી તો અસવારી ઉપર બેસતા નથી. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું, કે કુંભનદાસજી અસવારી ઉપર તો બેસશે નહીં અને દિવસમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન છોડીને કંઇ જશે નહીં. તેથી રાત્રી અજવાળી છે એટલે

होत है ? जो कुंभनदासजी सरीखे भगवदीय को संग तो या मिष तें होयगो, सो यही बड़ो लाभ होयगो। पाछें दोनो भाई श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेन आरती तांई सेवा सों पहोंचिके श्रीनाथजी कों पोंढ़ाय अनोसर करवाय बाहिर आये। और कुंभनदासजी को हाथ पकरिके भगवद् वार्ता लीला को भाव कहन लागे। सो कुंभनदासजी लीलारस में मगन होय गये, सो कछु सुधि न रही जो हम कहां हैं ? तब श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करत कुंभनदासजी को हांथ पकरिके अन्योर की ओर परवत सों उतरिकें श्रीगोकुल कों चले। सो रहस्य वार्ता में मगन हैं। और श्रीबालकृष्णजी दोय चारि वैष्णव संग चुपचाप होयके कुंभनदासजी की और श्रीगोकुलनाथजी की वार्ता सुनत श्रीगोकुल कों चले। तब मारग में श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिके कुंभनदासजी सों पूछे। जो श्रीस्वामिनीजी को सिंगार कबहू श्रीगोवर्द्धनधर हू करत हैं? तब कुंभनदासजी प्रेम में मगन होय के कहे, जो–हां, हां, करत हैं। जो एक दिन आश्विन महिना में श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी ललितादिक सखी संग रात्रि कों वन में फूल बीने। ता पाछें समाज सहित रासमंडल के पास सिंगार को चौंतरा हैं सो ता ऊपर आपु विराजे। तब विसाखाजी सिंगार

આપણે પણ પગે ચાલીશું. આ પ્રકારથી ચાલ્યા ચાલીશું, જુઓ શું કૌતુક થાય છે? કુંભનદાસજી સરખા ભગવદીયનો સંગ તો આ બહાને થશે. એય મોટો લાભ થશે. પછી બન્ને ભાઇ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેન આરતી સુધીની સેવાથી પહોંચીને શ્રીનાથજીને પોઢાવી અનોસર કરી બહાર આવ્યા અને કુંભનદાસજીનો હાથ પકડીને ભગવદ્દવાર્તા લીલાનો ભાવ કહેવા લાગ્યા. ત્યારે કુંભનદાસજી લીલારસમાં મગન થઇ ગયા તે કંઇ સુધ રહી નહી કે અમે કયાં છીએ ? ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી ભગવદ્દવાર્તા કરતા કુંભનદાસજીનો હાથ પકડીને આન્યોરની તરફ પર્વતથી ઉતરીને શ્રીગોકુલ ચાલ્યા. તે રહસ્યવાર્તામાં મગન છે અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી બે ચાર વૈષ્ણવોના સંગે ચુપચાપ થઇને કુંભનદાસજીની અને શ્રીગોકુલનાથજીની વાર્તા સાંભળતા શ્રીગોકુલ ચાલ્યા. ત્યારે માર્ગમાં શ્રીગોકુલનાથજી વાર્તા કરીને કુંભનદાસજીને પૂછે કે શ્રીસ્વામિનીજીનો શૃંગાર કયારેય શ્રીગોવર્દ્ધનધર પણ કરે છે ? ત્યારે કુંભનદાસજી પ્રેમમાં મગ્ન થઇને કહે, કે હાં ! હાં ! કરે છે. એક દિવસ આસો મહીનામાં શ્રીનાથજી અને શ્રીસ્વામિનીજીએ લલિતાદિક સખી સાથે રાત્રિએ વનમાં ફૂલ વીણ્યાં. તે પછી સમાજ સહિત રાસ મંડલની પાસે શૃંગારનો ચોતરો છે તે ઉપર પોતે બિરાજ્યા.

कृष्णजी ये दोऊ भाई मिलिके श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल नाहीं गये हैं। सो ये कोई प्रकार श्रीगोकुल तांई जाय तब श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कुंभनदासजी करें। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की रहस्य लीला में मगन हैं, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी हिले हैं। तब श्रीगोकुलनाथजी कहे, जो-इनकों ले जायवे को उपाय तो करिये। पाछे न आवें तो भगवद् इच्छा। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-उपाय करो, परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजो पार कबहू न उतरेंगे। पाछे कछुक दिन में श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे हते, और श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजीद्वार में हते। सो वैशाख सुदि ११ के दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी सों कहे, जो-श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी हैं और आपुन दोऊ जने यहां है। तासों कुंभनदासजी कों श्रीगोकुल ले चलिये। तब श्रीबालकृष्णजी ने कह्यो, जो-कैसे ले चलोगे? जो कुंभनदासजी तो असवारी पर बैठत नाहीं हैं। सो तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-कुंभनदासजी असवारी पें तो बैठेंगे नाहीं, और दिन में श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन छोड़िके कहूं जांयगे नाहीं। तासों रात्रि उजियारी है, सो हमहू पाँवन सों चलेंगे। सो या प्रकार सों चले चलेंगे सो देखें कहा कौतुक

ભાઇ મળીને શ્રીગુસાંઇજીને કહે, કુંભનદાસજી ક્યારેય શ્રીગોકુલ નથી ગયા તેથી એ કોઇ પ્રકારે શ્રીગોકુલ સુધી જાય ત્યારે કુંભનદાસજી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનાં દર્શન કરે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે કુંભનદાસજી તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની રહસ્યલીલામાં મગ્ન છે. એમનાથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથ હળ્યા છે. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી કહે, કે એમને લઇ જવાનો ઉપાય તો કરીએ. પછી ન આવે તો ભગવદીચ્છા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે કે, ઉપાય કરો. પરંતુ કુંભનદાસજી શ્રીયમુનાજી પાર કદીય નહીં ઉતરે. પછી થોડાક દિવસમાં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલ પધાર્યા હતા અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી અને શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીનાથજીદ્વારમાં હતા. ત્યારે વૈશાખ સુદ ૧૧ ના દિવસે શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજીને કહે, કે શ્રીગોકુલમાં શ્રીગુસાંઇજી છે અને આપણે બન્ને અહીં છીએ. તેથી કુંભનદાસજીને શ્રીગોકુલ લઇ ચાલો. ત્યારે શ્રીબાલકૃષ્ણજીએ કહ્યું, કે કેવી રીતે લઇ ચાલીશું? કુંભનદાસજી તો અસવારી ઉપર બેસતા નથી. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું. કે કુંભનદાસજી અસવારી ઉપર તો બેસશે નહીં અને દિવસમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન છોડીને કંઇ જશે નહીં. તેથી રાત્રી અજવાળી છે એટલે

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महावर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढ़िके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों सरीर की सुधि नाहीं, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति वेगि दोरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिवे कों पीछे ते दौरे। सो कुंभनदास तो भाजे दोरेई गये। इन कोई कों पाये नाहीं। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हमने

શોભા જોઇને રોમ રોમ આનંદ પામે એ પ્રકારે બધો શૃંગાર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કરીને કાજળ બેંદી, તિલક અને ચરણમાં મહાવર કર્યું પછી શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો શૃંગાર કર્યો. તે પછી રાસવિલાસ આદિ અનેક લીલા કરી. આ પ્રકારે વાર્તા કરતા કરતા શ્રીગોકુલ સામે શ્રીયમુનાજીના તીર સુધી કુંભનદાસજી આવ્યા. પછી પાર શ્રીગોકુલથી નાવ ઉપર ચઢીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે આ પાર આવ્યા. સવાર પણ થયું. કુંભનદાસજીને શરીરની સુધ નહીં લીલારસમાં મગન હતા. ત્યારે કુંભનદાજી સાવધાન થઇને જુએ તો સવાર થયું છે એટલામાં શ્રીગુસાંઇજીને જોઇને શ્રીગોકુલનાથજીથી હાથ છૂટી ગયો. ત્યારે કુંભનદાસજી મહા ઉતાવળથી દોડયા જે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ત્યાં કીર્તન કોણ કરશે? (કહે) જો હાય હાય! મ રી સેવા ગઇ. એ પ્રકારે મનમાં કહેતા દોડયા. તે અત્યંત વેગથી દોડયા. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી અને બધા વૈષ્ણવ કુંભનદાસજીને પકડવાને પાછળથી દોડયા. તે કુંભનદાસજી તો ભાગ્યા દોડયાજ ગયા. આ કોઇને મળ્યા નહી. પછી (બધા) શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે કે હવે શું કુંભનદાસજીને પહોંચી શકશો. એમને અહીં કેમ લઇ આવ્યા છો. એ શ્રીયમુનાજીની પાર કયારેય નહીં ઉતરે. અમે

करन लागी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो–आजु सिंगार मैं करूंगो। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी के पास ठाड़े भये। 'सो मुखादिक के दरसन बिना रह्यो न जाय दोउन सों। तब विसाखाजी परम चतुर दोउन के हृदय को अभिप्राय जानि श्रीस्वामिनीजी के आगे एक दर्पन धर्‌यो। तब वा दर्पन में दोउन के श्रीमुख सन्मुख भये, सो अवलोकन लागे। सो श्रीठाकुरजी बड़े लंबे बार श्याम सचिकन श्रीहस्त में कांकसी सों सम्हारि, एक एक बार में झीने मोती परम चतुराई सों पिरोय कें श्रीस्वामिनीजी के मुखचंद्र–शोभा दरपन में देखिके प्रसन्न होय गये, सो हाथ सों केस छूटि गये। तब सगरे मोती बार में सों निकसि सिंगार को चौंतरा है रतन खचित, तहां फेलि गये। तब बड़ो हास्य भयो। जो इतनी बारलों सिंगार किये सो एक छिन में बड़ो होय गयो। सो यह सखीन ने कही। तब श्रीठाकुरजी ने विसाखाजी सों कह्यो, जो–तुम बेनी पकरे रहो, मैं पिरोऊँ। तब विसाखाजी ने बेनी पकरी। सो तब फेरि बेनी मोतीन सों सिंगार करि मोतीन सों मांग सँवारी। पाछें फूलन के आभूषण सखीजन ने बनाय के श्रीठाकुरजी कों दिये। सो श्रीठाकुरजी पहरावत जाँय और छिन छिन में मुखचंद की शोभा देखिके रोम

ત્યારે વિશાખાજી શૃંગાર કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે આજ શૃંગાર હું કરીશ. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીસ્વામિનીજીની પાસે ઉભા રહ્યા. ત્યારે મુખ-આદિનાં દર્શન વિના બન્નેથી રહેવાય નહીં. ત્યારે વિશાખાજી પરમ ચતુર એમણે બન્નેના હૃદયનો અભિપ્રાય જાણીને શ્રીસ્વામિનીજીનાં આગળ એક દર્પણ ધર્યું. ત્યારે તે દર્પણમાં બન્નેનાં શ્રીમુખ સન્મુખ થયાં. ત્યારે અવલોકવા લાગ્યા. પછી શ્રી-ઠાકુરજીએ મોટા લાંબા વાળ શ્યામ ચીકણા શ્રીહસ્તમાં કાંસકાથી સમ્હારી એક એક વાળમાં ઝીણાં મોતી પરમ ચતુરાઇથી પરોવીને શ્રીસ્વામિનીજીના મુખ ચંદ્રની શોભા દર્પણમાં જોઇને પ્રસન્ન થઇ ગયા. તેથી હાથમાંથી વાળ છુટી ગયા. ત્યારે બધાં મોતી વાળમાંથી નિકળી ત્યાં રતન ખચિત શૃંગારના ચોતરા ઉપર ફેલાઇ ગયાં. ત્યારે બહુ હાસ્ય થયું કે આટલીવાર સુધી શૃંગાર કર્યો તે એક ક્ષણમાં વડો થઇ ગયો. એવું સખીઓએ કહ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ વિશાખાજીને કહ્યું, કે તમે વેણી પકડી રહો હું મોતી પરોવું. ત્યારે વિશાખાજીએ વેણી પકડી ત્યારે ફરી એ વેણીનો મોતીઓથી શૃંગાર કરી માંગ સમ્હારી પછી ફૂલોનાં આભૂષણ સખીજનોએ બનાવીને શ્રીઠાકુરજીને આપ્યાં. તે શ્રીઠાકુરજી પહેરાવતા જાય અને ક્ષણ ક્ષણમાં મુખચંદ્રની

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महावर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढ़िके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों सरीर की सुधि नाहीं, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति वेगि दोरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिबे कों पीछे ते दौरे। सो कुंभनदास तो भाजे दोरेई गये। इन कोई कों पाये नाहीं। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेंकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हमने

શોભા જોઇને રોમ રોમ આનંદ પામે એ પ્રકારે બધો શૃંગાર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કરીને કાજળ બેંદી, તિલક અને ચરણમાં મહાવર કર્યું પછી શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો શૃંગાર કર્યો. તે પછી રાસવિલાસ આદિ અનેક લીલા કરી. આ પ્રકારે વાર્તા કરતા કરતા શ્રીગોકુલ સામે શ્રીયમુનાજીના તીર સુધી કુંભનદાસજી આવ્યા. પછી પાર શ્રીગોકુલથી નાવ ઉપર ચઢીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે આ પાર આવ્યા. સવાર પણ થયું. કુંભનદાસજીને શરીરની સુધ નહીં લીલારસમાં મગન હતા. ત્યારે કુંભનદાજી સાવધાન થઇને જુએ તો સવાર થયું છે એટલામાં શ્રીગુસાંઇજીને જોઇને શ્રીગોકુલનાથજીથી હાથ છૂટી ગયો. ત્યારે કુંભનદાસજી મહા ઉતાવળથી દોડયા જે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ત્યાં કીર્તન કોણ કરશે? (કહે) જો હાય હાય! મ રી સેવા ગઇ. એ પ્રકારે મનમાં કહેતા દોડયા. તે અત્યંત વેગથી દોડયા. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી અને બધા વૈષ્ણવ કુંભનદાસજીને પકડવાને પાછળથી દોડયા. તે કુંભનદાસજી તો ભાગ્યા દોડયાજ ગયા. આ કોઇને મળ્યા નહી. પછી (બધા) શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે કે હવે શું કુંભનદાસજીને પહોંચી શકશો. એમને અહીં કેમ લઇ આવ્યા છો. એ શ્રીયમુનાજીની પાર કયારેય નહીં ઉતરે. અમે

करन लागी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो–आजु सिंगार मैं करूंगो। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी के पास ठाड़े भये। 'सो मुखादिक के दरसन बिना रह्यो न जाय दोउन सों। तब विसाखाजी परम चतुर दोउन के हृदय को अभिप्राय जानि श्रीस्वामिनीजी के आगे एक दर्पन धर्‌यो। तब वा दर्पन में दोउन के श्रीमुख सन्मुख भये, सो अवलोकन लागे। सो श्रीठाकुरजी बड़े लंबे बार श्याम सचिकन श्रीहस्त में कांकसी सों सम्हारि, एक एक बार में झीने मोती परम चतुराई सों पिरोय कें श्रीस्वामिनीजी के मुखचंद्र–शोभा दरपन में देखिके प्रसन्न होय गये, सो हाथ सों केस छूटि गये। तब सगरे मोती बार में सों निकसि सिंगार को चौंतरा है रतन खचित, तहां फेलि गये। तब बड़ो हास्य भयो। जो इतनी बारलों सिंगार किये सो एक छिन में बड़ो होय गयो। सो यह सखीन ने कही। तब श्रीठाकुरजी ने विसाखाजी सों कह्यो, जो–तुम बेनी पकरे रहो, मैं पिरोऊँ। तब विसाखाजी ने बेनी पकरी। सो तब फेरि बेनी मोतीन सों सिंगार करि मोतीन सों मांग सँवारी। पाछें फूलन के आभूषण सखीजन ने बनाय के श्रीठाकुरजी कों दिये। सो श्रीठाकुरजी पहरावत जाँय और छिन छिन में मुखचंद की शोभा देखिके रोम

ત્યારે વિશાખાજી શૃંગાર કરવા લાગી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે આજ શૃંગાર હું કરીશ. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીસ્વામિનીજીની પાસે ઉભા રહ્યા. ત્યારે મુખ-આદિનાં દર્શન વિના બન્નેથી રહેવાય નહીં. ત્યારે વિશાખાજી પરમ ચતુર એમણે બન્નેના હૃદયનો અભિપ્રાય જાણીને શ્રીસ્વામિનીજીનાં આગળ એક દર્પણ ધર્યું. ત્યારે તે દર્પણમાં બન્નેનાં શ્રીમુખ સન્મુખ થયાં. ત્યારે અવલોકવા લાગ્યા. પછી શ્રીઠાકુરજીએ મોટા લાંબા વાળ શ્યામ ચીકણા શ્રીહસ્તમાં કાંસકાથી સમ્હારી એક એક વાળમાં ઝીણાં મોતી પરમ ચતુરાઇથી પરોવીને શ્રીસ્વામિનીજીના મુખ ચંદ્રની શોભા દર્પણમાં જોઇને પ્રસન્ન થઇ ગયા. તેથી હાથમાંથી વાળ છુટી ગયા. ત્યારે બધાં મોતી વાળમાંથી નિકળી ત્યાં રતન ખચિત શૃંગારના ચોતરા ઉપર ફેલાઇ ગયાં. ત્યારે બહુ હાસ્ય થયું કે આટલીવાર સુધી શૃંગાર કર્યો તે એક ક્ષણમાં વડો થઇ ગયો. એવું સખીઓએ કહ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ વિશાખાજીને કહ્યું, કે તમે વેણી પકડી રહો હું મોતી પરોવું. ત્યારે વિશાખાજીએ વેણી પકડી ત્યારે ફરી એ વેણીના મોતીઓથી શૃંગાર કરી માંગ સમ્હારી પછી ફૂલોનાં આભૂષણ સખીજનોએ બનાવીને શ્રીઠાકુરજીને આપ્યાં. તે શ્રીઠાકુરજી પહેરાવતા જાય અને ક્ષણ ક્ષણમાં મુખચંદ્રની

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महावर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढ़िके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों सरीर की सुधि नाहीं, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति वेगि दोरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिवे कों पीछे ते दौरे। सो कुंभनदास तो भाजे दोरेई गये। इन कोई कों पाये नाहीं। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हमने

શોભા જોઇને રોમ રોમ આનંદ પામે એ પ્રકારે બધો શૃંગાર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કરીને કાજળ બેંદી, તિલક અને ચરણમાં મહાવર કર્યું પછી શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો શૃંગાર કર્યો. તે પછી રાસવિલાસ આદિ અનેક લીલા કરી. આ પ્રકારે વાર્તા કરતા કરતા શ્રીગોકુલ સામે શ્રીયમુનાજીના તીર સુધી કુંભનદાસજી આવ્યા. પછી પાર શ્રીગોકુલથી નાવ ઉપર ચઢીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે આ પાર આવ્યા. સવાર પણ થયું. કુંભનદાસજીને શરીરની સુધ નહીં લીલારસમાં મગન હતા. ત્યારે કુંભનદાજી સાવધાન થઇને જુએ તો સવાર થયું છે એટલામાં શ્રીગુસાંઇજીને જોઇને શ્રીગોકુલનાથજીથી હાથ છૂટી ગયો. ત્યારે કુંભનદાસજી મહા ઉતાવળથી દોડયા જે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ત્યાં કીર્તન કોણ કરશે? (કહે) જો હાય હાય! મ રી સેવા ગઇ. એ પ્રકારે મનમાં કહેતા દોડયા. તે અત્યંત વેગથી દોડયા. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીબાલકૃષ્ણજી અને બધા વૈષ્ણવ કુંભનદાસજીને પકડવાને પાછળથી દોડયા. તે કુંભનદાસજી તો ભાગ્યા દોડયાજ ગયા. આ કોઇને મળ્યા નહીં. પછી (બધા) શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે કે હવે શું કુંભનદાસજીને પહોંચી શકશો. એમને અહીં કેમ લઇ આવ્યા છો. એ શ્રીયમુનાજીની પાર ક્યારેય નહીં ઉતરે. અમે

तुमसों पहले ही कह्यो हतो। तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–पार न उतरे तो कहा भयो ? परन्तु सगरी रात्रि भगवद्-वार्ता के भाव में महा अलौकिक सिद्धि मिले तें भई। सो वह बड़ो लाभ भयो है, जो–भगवदीयन को सत्संग एक क्षन हू दुर्लभ हैं। यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–यह तो तुम ठीक कहे, परन्तु अब या समय तो कुंभनदास कों दोरनो पर्‍यो। और जहां तांई कुंभन-दास श्रीगिरिराज ऊपर न जांयगे, तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी जागेंगे नाहीं। जो कुंभनदास जगायवे के कीर्तन गावेंगे तब जागेंगे। सो ऐसे, भक्त के आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। तासों तुमकों भग-वद्वार्ता सुननी होय तो परासोली में जमुनावता में जायके कुंभन-दास सों पूछियो। सो तहाँ कुंभनदासजी तुमसों कहेंगे। ता पाछे श्रीगोकुलनाथजी, श्रीबालकृष्णजी, सब वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधारे। श्रीगुसांईजी को घोड़ा जीन सहित पार बंध्यो हतो, सो ता पर आप श्रीगुसांईजी वेगि ही असवार होयके घोड़ा दोराय के चले। और कुंभनदासजी तो दोरे जात हते, सो तहाँ आयके श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी सों कहे, जो–तुमने कबहू यह मारग देख्यो नाहीं, सो तुम भूलि जाओगे। तासों घोड़ा के पीछे पीछे दौरे आवो। तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी के पीछे दौरे चले जाँय। सो यहां रामदास

તમને પહેલાંજ કહ્યું હતું. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજીએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, પાર ન ઉતર્યા તો શું થયું પરંતુ આખી રાત્રી ભગવદ્દવાર્તાના ભાવમાં મહાઅલૌકિક સિદ્ધિ મળ્યાથી થઇ. એ મોટો લાભ થયો. ભગવદીયોનો સત્સંગ એક ક્ષણ પણ દુર્લભ છે. આ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે એ તો તમે ઠીક કહ્યું પરંતુ હવે આ સમય તો કુંભનદાસને દોડવું પડયું અને જ્યાં સુધી કુંભનદાસ શ્રીગિરિરાજ ઉપર નહી જાય ત્યાં સુધી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી જાગશે નહીં. કુંભનદાસજી જગાડવાનાં કીર્તન ગાશે ત્યારે જાગશે એવાં ભક્તના આધીન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી છે. તેથી તમારે ભગવદ્દવાર્તા સાંભળવી હોય તો પરાસોલીમાં જમનાવતામાં જઇને કુંભનદાસને પૂછજો. ત્યાં કુંભ-નદાસજી તમને કહેશે. તે પછી શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજી બધા વૈષ્ણવ સહિત શ્રીગોકુલ પધાર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીનો ઘોડો જીન સહિત પાર બાંધ્યો હતો તે ઉપર પોતે શ્રીગુસાંઇજી જલ્દીજ અસવાર થઇને ઘોડો દોડાવીને ચાલ્યા અને કુંભનદાસજી તો દોડ્યા જતા હતા ત્યાં આવીને શ્રીગુસાંઇજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે ક્યારેય આ માર્ગ જોયો નથી તેથી તમે ભૂલી જશો. તેથી ઘોડાની પાછળ પાછળ દોડ્યા આવો.

भीतरिया आदि जो न्हाय के पर्वत ऊपर आवें सो (ये) छुय जांय। सो ऐसें करत चार घड़ी दिन चढ्यौ। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरिराज पधारिके घोड़ा पर तें उतरिके तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। तब देखे तो सगरे भीतरिया रामदास सहित न्हाय के मंदिर में आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो–रामदास! आज इतनी अवार क्यों भई है? तब रामदास ने विनती कीनी, जो–महाराज! आज न जानिये कहा भयो है? जो चारि वेर न्हाये और चारयों वेर सगरे भीतरिया छुवाने। सो अब पांचमी वार न्हाय के आये हैं, सो कारन जान्यो न परयो। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–यह कुंभदासनजी के लिये श्रीगोवर्द्धननाथजी कौतुक किये हैं। ता पाछे श्रीगुसांईजी आप शंखनाद करवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये। ता समय कुंभनदासजी ने जगायवे के पद गाये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी उठे। तब कुंभनदासजी ने अपने मन में बहोत हरष मान्यो। जो मेरी कीर्तन की सेवा मिली। ता पाछे राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवा सों पहोंचे। सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती। सो केसरी पिछोड़ा, कुलह सिद्ध कियो। ता पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहोंचे। सो या प्रकार कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल कों

ત્યારે કુંભનદાસજી શ્રીગુસાંઇજીની પાછળ પાછળ દોડ્યા ચાલ્યા જાય. અહીં રામદાસ ભીતરિયા આદિ ન્હાઇને પર્વત ઉપર આવે ત્યારે એ છોવાઇ જાય એમ કરતાં ચાર ઘડી દિવસ ચઢ્યો ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે ગિરિરાજ પધારીને ઘોડા ઉપરથી ઉતરીને તત્કાલ સ્નાન કરી પર્વત ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા ત્યારે જુએ તો બધા ભીતરિયા રામદાસ સહિત ન્હાઇને મંદિરમાં આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પૂછ્યું કે રામદાસ! આજે આટલી અવાર કેમ થઇ? ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! આજ ન જાણે શું થયું છે કે ચાર વાર ન્હાયા અને ચારેય વાર ભીતરિયા છોવાયા. હવે પાંચમી વાર ન્હાઇને આવ્યા છીએ. એ કારણ સમજાયું નહી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કે આ કુંભનદાસજીને માટે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કૌતુક કર્યું છે. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શંખનાદ કરાવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાડ્યા. તે સમયે કુંભનદાસજીએ જગાવાનાં પદ ગાયાં એટલે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઉઠ્યા. ત્યારે કુંભનદાસજીએ પોતાના મનમાં બહુજ હર્ષ માન્યો કે મારી કીર્તનની સેવા મળી. તે પછી રાજભોગ પર્યંત શ્રીગુસાંઇજી સેવાથી પહોંચ્યા. સવારે નૃસિંહ ચતુર્દશી હતી તેથી કેસરી પીછોડા, કુલ્હે સિદ્ધ કર્યાં. તે પછી સેન પર્યંત સેવાથી પહોંચ્યા. એ પ્રકારે કુંભનદાસજી ક્યા-

तुमसों पहले ही कह्यो हतो। तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–पार न उतरे तो कहा भयो ? परन्तु सगरी रात्रि भगवद्-वार्ता के भाव में महा अलौकिक सिद्धि मिले तें भई। सो वह बड़ो लाभ भयो है, जो–भगवदीयन को सत्संग एक क्षन हू दुर्लभ हैं। यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–यह तो तुम ठीक कहे, परन्तु अब या समय तो कुंभनदास कों दोरनो पर्‍यो। और जहां तांई कुंभनदास श्रीगिरिराज ऊपर न जांयगे, तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी जागेंगे नाहीं। जो कुंभनदास जगायवे के कीर्तन गावेंगे तब जागेंगे। सो ऐसे, भक्त के आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। तासों तुमकों भगवद्वार्ता सुननी होय तो परासोली में जमुनावता में जायके कुंभनदास सों पूछियो। सो तहाँ कुंभनदासजी तुमसों कहेंगे। ता पाछे श्रीगोकुलनाथजी, श्रीबालकृष्णजी, सब वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधारे। श्रीगुसांईजी को घोड़ा जीन सहित पार बंध्यो हतो, सो ता पर आप श्रीगुसांईजी वेगि ही असवार होयके घोड़ा दोराय के चले। और कुंभनदासजी तो दोरे जात हते, सो तहाँ आयके श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी सों कहे, जो–तुमने कबहू यह मारग देख्यो नाहीं, सो तुम भूलि जाओगे। तासों घोड़ा के पीछे पीछे दौरे आवो। तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी के पीछे दौरे चले जाँय। सो यहां रामदास

તમને પહેલાંજ કહ્યું હતું. ત્યારે શ્રીગોકુલનાથજીએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, પાર ન ઉતર્યા તો શું થયું પરંતુ આખી રાત્રી ભગવદ્‌વાર્તાના ભાવમાં મહાઅલૌકિક સિદ્ધિ મળ્યાથી થઇ. એ મોટો લાભ થયો. ભગવદીયોનો સત્સંગ એક ક્ષણ પણ દુર્લભ છે. આ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે એ તો તમે ઠીક કહ્યું પરંતુ હવે આ સમય તો કુંભનદાસને દોડવું પડયું અને જ્યાં સુધી કુંભનદાસ શ્રીગિરિરાજ ઉપર નહી જાય ત્યાં સુધી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી જાગશે નહીં. કુંભનદાસજી જગાડવાનાં કીર્તન ગાશે ત્યારે જાગશે એવાં ભક્તના આધીન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી છે. તેથી તમારે ભગવદ્‌વાર્તા સાંભળવી હોય તો પરાસોલીમાં જમનાવતામાં જઇને કુંભનદાસને પૂછજો. ત્યાં કુંભનદાસજી તમને કહેશે. તે પછી શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીબાલકૃષ્ણજી બધા વૈષ્ણવ સહિત શ્રીગોકુલ પધાર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજીનો ઘોડો જીન સહિત પાર બાંધ્યો હતો તે ઉપર પોતે શ્રીગુસાંઇજી જલ્દીજ અસવાર થઇને ઘોડો દોડાવીને ચાલ્યા અને કુંભનદાસજી તો દોડ્યા જતા હતા ત્યાં આવીને શ્રીગુસાંઇજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે ક્યારેય આ માર્ગ જોયો નથી તેથી તમે ભૂલી જશો. તેથી ઘોડાની પાછળ પાછળ દોડયા આવો.

भीतरिया आदि जो न्हाय के पर्वत ऊपर आवें सो (ये) छुय जांय। सो ऐसें करत चार घड़ी दिन चढ़्यौ। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरिराज पधारिके घोड़ा पर तें उतरिके तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। तब देखे तो सगरे भीतरिया रामदास सहित न्हाय के मंदिर में आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो–रामदास! आज इतनी अवार क्यों भई है? तब रामदासने विनती कीनी, जो–महाराज! आज न जानिये कहा भयो है? जो चारि वेर न्हाये और चार्‍यों वेर सगरे भीतरिया छुवाने। सो अब पांचमी वार न्हाय के आये हैं, सो कारन जान्यो न पर्‍यो। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–यह कुंभदासनजी के लिये श्रीगोवर्द्धननाथजी कौतुक किये हैं। ता पाछे श्रीगुसांईजी आप शंखनाद करवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये। ता समय कुंभनदासजी ने जगायवे के पद गाये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी उठे। तब कुंभनदासजी ने अपने मन में बहोत हरष मान्यो। जो मेरी कीर्तन की सेवा मिली। ता पाछे राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवा सों पहोंचे। सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती। सो केसरी पिछोड़ा, कुलह सिद्ध कियो। ता पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहोंचे। सो या प्रकार कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल कों

त्यारे कुंभनदासજી श्रीगुसांઇજીની પાછળ પાછળ દોડ્યા ચાલ્યા જાય. અહીં રામદાસ ભીતરિયા આદિ ન્હાઇને પર્વત ઉપર આવે ત્યારે એ છોવાઇ જાય એમ કરતાં ચાર ઘડી દિવસ ચઢ્યો ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે ગિરિરાજ પધારીને ઘોડા ઉપરથી ઉતરીને તત્કાલ સ્નાન કરી પર્વત ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા ત્યારે જુએ તો બધા ભીતરિયા રામદાસ સહિત ન્હાઇને મંદિરમાં આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પૂછ્યું કે રામદાસ! આજે આટલી અવાર કેમ થઇ? ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! આજ ન જાણે શું થયું છે કે ચાર વાર ન્હાયા અને ચારેય વાર ભીતરિયા છોવાયા. હવે પાંચમી વાર ન્હાઇને આવ્યા છીએ. એ કારણ સમજાયું નહી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કે આ કુંભનદાસજીને માટે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કૌતુક કર્યું છે. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શંખનાદ કરાવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને જગાડયા. તે સમયે કુંભનદાસજીએ જગાવાનાં પદ ગાયાં એટલે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઉઠયા. ત્યારે કુંભનદાસજીએ પોતાના મનમાં બહુજ હર્ષ માન્યો કે મારી કીર્તનની સેવા મળી. તે પછી રાજભોગ પર્યંત શ્રીગુસાંઇજી સેવાથી પહોંચ્યા. સવારે નૃસિંહ ચતુર્દશી હતી તેથી કેસરી પીછોડા, કુલ્હે સિદ્ધ કર્યાં. તે પછી સેન પર્યંત સેવાથી પહોંચ્યાં..એ પ્રકારે કુંભનદાસજી ક્યા-

न गये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला रस में मग्न रहते। सो वे कुंभनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग १०—और एक समय परासोली में कुंभनदासजी खेत ऊपर बैठे हते, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के आगे खेत में खेलत हते। इतने में उत्थापन को समय भयो तब कुंभनदासजी उठिके श्रीगिरिराज चलिवे कों कियो। तब श्रीनाथजी ने कुंभनदास-जी सों कही, जो-तू कहां जात है? सो तब इन (नें) कही, जो-उत्था-पन को समय भयो है, सो गिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जात हों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-मैं तो तिहारे पास खेलत हों, तासों तू उहां क्यों जात है? तब कुंभनदासजी ने कही, जो-महाराज! यहाँ तुम खेलत हो और दरसन देत हो सो तो अपनी ओर तें कृपा करिके, और अबही तुम भाजि जाव तो मेरी तुमसों कछू चले नाहीं। और मंदिर में तो श्रीआचार्यजी महा-प्रभुन के पधराये हो सो उहां सों कहूँ जावो नाहीं, और उहां सबकों दरसन देत हो। और मंदिर में दरसन की आसक्ति जो मोकों है, सो तासों तुम घर बैठेहू मोकों कृपा करि दरसन देत हो। या समय तुम कृपा करि दरसन दे अनुभव जतावत हो, सो मंदिर की सेवा

રેય શ્રીગોકુલ ન ગયા. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની લીલારસમાં મગન રહેતા. એ કુંભન-દાસજી એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૦-વળી એક સમય પરાસોલીમાં કુંભનદાસજી ખેતર ઉપર બેઠા હતા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસની આગળ ખેતરમાં રમતા હતા. એટલામાં ઉત્થાપ-નનો સમય થયો ત્યારે કુંભનદાસજીએ ઉઠીને શ્રીગિરિરાજજી જવાનું નક્કી કર્યું. ત્યારે શ્રીનાથજીએ કુંભનદાસને કહ્યું, કે તૂ ક્યાં જાય છે? ત્યારે આમણે કહ્યું, કે ઉત્થાપનનો સમય થયો છે તેથી ગિરિરાજ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને જઉં છું. ત્યારે શ્રી-ગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે હું તો તારી પાસે ખેલું છું તેથી તૂ ત્યાં કેમ જાય છે? ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! અહીં તમે ખેલો છો અને દર્શન દો છો તે તો તમારી તરફથી કૃપા કરીને. જો હમણાં જ તમે ભાગી જાવ તો મારૂં તમારાથી કંઇ ચાલે નહીં અને મંદિરમાં તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પધરાવ્યા છે તે ત્યાંથી ક્યાંય જાવ નહીં અને ત્યાં બધાને દર્શન આપો છો. વળી મંદિરમાં દર્શનની આસક્તિ મને છે તેથી તમે ઘર બેઠાં કૃપા કરીને દર્શન દો છો. આ સમય તમે કૃપા કરીને દર્શન દઇ અનુભવ જણાવો છો. તે મંદિરની સેવા-દર્શન પ્રતાપથી. તેથી ત્યાં ગયા વિના ન

दरसन के प्रताप सों। तासों उहां गये विना न चले। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी हँसिके कहे, जो–कुंभनदास ! तेरो भाव महा अलौकिक है तासों मैं तोकों एक छिन नाहीं छोड़त हों। ता पाछें श्रीनाथजी और कुंभनदासजी परासोली सों संग चले। सो गोविंदकुंड ऊपर आये तब शंखनाद भये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिर में आये, और कुंभनदासजी आन्योर तांई संग आये। सो तहां तें पर्वत ऊपर आप चढि मंदिर में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये। सो कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हते।

वार्ता–प्रसंग ११—और एक दिन माली दोयसे आम बड़े–बड़े महा सुन्दर टोकरा में लेके परासोली चंद्रसरोवर है तहां आयो, पाछें टोकरा उतारि के कुंड के पास सगरे आम भूमि में धरि कें कपड़ा तें पोंछि–पोंछि मेल छुडावन लाग्यो। ता समय कुंभनदासजी राजभोग आरती के दरसन करिके श्रीगिरिराज तें चले सो चंद्रसरोवर ऊपर जल पीवन कों आये। सो आम बहुत सुन्दर श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक देखिके कुंभनदास वा माली सों पूछें, जो–आम तूं कहां ले जायगो ? तब वा मालीने कह्यो, जो–मथुरा ले जाऊंगो, वहां इनके दस रुपैया लेऊंगो। सो कुंभनदास के पास तो कछू पैसा हू न हते।

ચાલે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ હસીને કહ્યું, કે કુંભનદાસ ! તારો ભાવ મહા અલૌકિક છે તેથી હું તને એક ક્ષણ નથી છોડતો. તે પછી શ્રીનાથજી અને કુંભનદાસજી પરાસોલીથી સંગ ચાલ્યા તે ગોવિંદકુંડ ઉપર આવ્યા ત્યારે શંખનાદ થયા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી મંદિરમાં ગયા અને કુંભનદાસજી આન્યોર સુધી સાથે આવ્યા. ત્યાંથી પર્વત ઉપર પોતે ચઢી મંદિરમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કર્યાં. તે કુંભનદાસજી એવા ભગવદીય હતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧૧–વળી એક દિવસ માળી બસો આંબા મોટા મોટા બહુ સુંદર ટોપલામાં લઇને પરાસોલી ચંદ્રસરોવર છે ત્યાં આવ્યો. પછી ટોપલા ઉતારીને કુંડની પાસે બધા આંબા ભૂમીમાં ધરીને કપડાથી પોંછી–પોંછીને મેલ છોડાવા લાગ્યો. તે સમયે કુંભનદાસજી રાજભોગ આરતીનાં દર્શન કરીને શ્રીગિરિરાજજીથી ચાલ્યા. તે ચંદ્રસરોવર ઉપર જલ પીવાને આવ્યા. ત્યાં આંબા બહુ સુંદર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના લાયક જોઇને કુંભનદાસ એ માલીને પૂછે, કે એ આંબા તૂ ક્યાં લઇ જઇશ? ત્યારે એ માલીએ કહ્યું, કે મથુરા લઇ જઇશ. ત્યાં એના દશ રૂપૈયા લેઇશ. ત્યારે કુંભનદાસજીની પાસે તો કંઇ પૈસા હતા નહી તે શું કરે ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનું સ્મરણ

न गये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला रस में मग्न रहते। सो वे कुंभनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग १०—और एक समय परासोली में कुंभनदासजी खेत ऊपर बैठे हते, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के आगे खेत में खेलत हते। इतने में उत्थापन को समय भयो तब कुंभनदासजी उठिके श्रीगिरिराज चलिवे कों कियो। तब श्रीनाथजी ने कुंभनदास-जी सों कही, जो-तू कहां जात है? सो तब इन (नें) कही, जो-उत्थापन को समय भयो है, सो गिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जात हों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-मैं तो तिहारे पास खेलत हों, तासों तू उहां क्यों जात है? तब कुंभनदासजी ने कही, जो-महाराज! यहाँ तुम खेलत हो और दरसन देत हो सो तो अपनी ओर तें कृपा करिके, और अबही तुम भाजि जाव तो मेरी तुमसों कछू चले नाहीं। और मंदिर में तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पधराये हो सो उहां सों कहूं जावो नाहीं, और उहां सबकों दरसन देत हो। और मंदिर में दरसन की आसक्ति जो मोकों है, सो तासों तुम घर बैठेहू मोकों कृपा करि दरसन देत हो। या समय तुम कृपा करि दरसन दे अनुभव जतावत हो, सो मंदिर की सेवा

રેય શ્રીગોકુલ ન ગયા. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની લીલારસમાં મગન રહેતા. એ કુંભનદાસજી એવા પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૦-વળી એક સમય પરાસોલીમાં કુંભનદાસજી ખેતર ઉપર બેઠા હતા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસની આગળ ખેતરમાં રમતા હતા. એટલામાં ઉત્થાપનનો સમય થયો ત્યારે કુંભનદાસજીએ ઉઠીને શ્રીગિરિરાજજી જવાનું નક્કી કર્યું. ત્યારે શ્રીનાથજીએ કુંભનદાસને કહ્યું, કે તૂ ક્યાં જાય છે? ત્યારે આમણે કહ્યું, કે ઉત્થાપનનો સમય થયો છે તેથી ગિરિરાજ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શને જઉં છું. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે હું તો તારી પાસે ખેલું છું તેથી તૂ ત્યાં કેમ જાય છે? ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! અહીં તમે ખેલો છો અને દર્શન દો છો તે તો તમારી તરફથી કૃપા કરીને. જો હમણાં જ તમે ભાગી જાવ તો મારૂં તમારાથી કંઇ ચાલે નહીં અને મંદિરમાં તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પધરાવ્યા છે તે ત્યાંથી ક્યાંય જાવ નહીં અને ત્યાં બધાને દર્શન આપો છો. વળી મંદિરમાં દર્શનની આસક્તિ મને છે તેથી તમે ઘર બેઠાં કૃપા કરીને દર્શન દો છો. આ સમય તમે કૃપા કરીને દર્શન દઇ અનુભવ જણાવો છો. તે મંદિરની સેવા-દર્શન પ્રતાપથી. તેથી ત્યાં ગયા વિના ન

ऊपर श्रीगोवर्द्धन पर्वत है, तहां बिराजत हैं। तब वा रजपूत ने ब्राह्मण सों कही, जो–तू महा मूरख है, जो–ऐसे स्वरूप को साक्षात दरसन करि पाछें और ठोर क्यों भटकत है? सो मैंने स्वरूप के दरसन स्वप्न में पाये। सो मोसों रह्यो नाहीं जात है। जो–सवारे तू सगरे आम ले और मैं तोकों रुपैया पांच देऊंगो, जो–मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कराय दे। तब वा ब्राह्मण ने कही, जो–आछो। ता पाछें सवेरो भयो। तब वा रजपूत ने पचास आम वा ब्राह्मण कों दीने। तब वह ब्राह्मण मथुराजी में अपने घर आयके अपने पास के हू आम सौ देके वा रजपूत के पास आयके दोउ जने चले। सो श्री-गोवर्द्धननाथजी की सेन आरती के दरसन दोउ जनेन ने किये। सो श्रीनाथजीने वा रजपूत को मन हर लीनो। ता पाछे दरसन होय चुके। तब रजपूत ने अपने हथियार, कपड़ा, पांच रुपैया वा ब्राह्मण कों दिये और दस रुपया और हते सो पास राखे। तब वह ब्राह्मणने कही, जो–मैं घर जाऊंगो। सो वह ब्राह्मण तो मथुरा अपने घर आयो। पाछे वह रजपूत एक धोवती पहरे दंडोती सिला के पास ठाड़ो होय रह्यो। सो इतने ही में श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करायके श्रीगुसांईजी आपु पर्वत तें नीचे पधारे। तब रजपूत नें

નાથજી આપ ક્યાં બિરાજે છે ? ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે અહીંથી સાત ગાઉ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધન પર્વત છે ત્યાં બિરાજે છે. ત્યારે એ રજપૂતે બ્રાહ્મણને કહ્યું, કે તૂ મહા મૂરખ છે કે એવા સ્વરૂપનાં સાક્ષાત દર્શન કર્યા પછી બીજી જગાએ કેમ ભટકે છે? મેં સ્વરૂપનાં દર્શન સ્વપ્નમાં કર્યાં તેથી મારાથી રહી શકાતું નથી સવારે તૂ બધા આંબા લે અને હું તને રૂપીઆ પાંચ આપીશ. તેથી મને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરાવી દે. ત્યારે એ રજપૂતે પચાસ આંબા એ બ્રાહ્મણને આપ્યા. ત્યારે એ બ્રાહ્મણ મથુરાજીમાં પોતાના ઘરે આવીને પોતાની પાસેના પણ સો આંબા લઇને તે રજપૂતની પાસે આવીને બન્ને જણા ચાલ્યા. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેન આરતીનાં દર્શન બન્ને જણાએ કર્યાં. તે શ્રીનાથજીએ એ રજપૂતનું મન હરી લીધું. તે પછી દર્શન થઇ ચુક્યાં. ત્યારે રજપૂતે પોતાનાં હથિયાર કપડા પાંચ રૂપૈયા એ બ્રાહ્મણને આપ્યા અને દશ રૂપીઆ બીજા હતા તે પાસે રાખ્યા. ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે હું ઘર જઇશ. પછી તે બ્રાહ્મણ તો મથુરા પોતાના ઘરે આવ્યો. પછી એ રજપૂત એક ધોતી પહેરી દંડવતી શીલાની પાસે ઉભો રહ્યો. એટલામાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને અનોસર કરાવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પર્વતથી નીચે પધાર્યા. ત્યારે રજપૂતે

सो कहा करें? तब मन में श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्मरण करिकें कहे, जो–महाराज! यह सामग्री परम सुन्दर है, और आपु लायक है, (क्यों?) जो उत्तम वस्तु के भोक्ता आपु ही हो। तासों ये आम आरोगो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सगरे आम आयके आरोगे। सो वा माली कों खबरि नाहीं। सो यह माली टोकरा में आम भरि के मथुरा गयो। सो सांझ होय गई। सो एक रजपुत माट गाम में तें मथुरा कछु कार्यार्थ आयो हतो, सो वाने आम देखिके कह्यो, जो–कहा लेयगो? तब माली ने कही, जो–दस रुपैया तें घाट न लेऊंगो। तब वह रजपूत दस रुपैया देके आम सगरे लेके श्रीयमुनाजी के तट पर आयो। सो वा रजपूत के संग एक सनोढ़िया ब्राह्मण हतो सो वाकों सौ आम दिये। सो दोऊ जनेन ने पचास–पचास आम घरके लिये धरिके पचास २ आम दोउनने श्रीयमुनाजी के किनारे बैठिके चूसे। ता पाछें श्रीमथुरा में एक हाट ऊपर दोऊ जने सोये। सो दोउन कों स्वप्न में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भये। सो ये जागे तब वा रजपूत ने कही, जो–ब्राह्मण देव! तुमने कछू देख्यो। तब वा ब्राह्मणने कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर को दरसन भयो है। तब वा रजपूतने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहां बिराजत हैं? तब वा ब्राह्मण ने कही, जो–यहां ते सात कोस

કરીને કહે, કે મહારાજ! આ સામગ્રી પરમ સુંદર છે અને આપના લાયક છે. કેમ જે ઉત્તમ વસ્તુના ભોક્તા આપ જ છો. તેથી આ આંબા આરોગો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ આવીને બધા આંબા આરોગ્યા. એ એ માલીને ખબર નહી. પછી એ માલી ટોપલામાં આંબા ભરીને મથુરા ગયો. પછી સાંજ થઇ ગઇ ત્યારે એક રજપૂત માટ ગામમાંથી મથુરા કંઇ કાર્યાર્થે આવ્યો હતો. એણે આંબા જોઇને કહ્યું, કે શું લઇશ? ત્યારે માલીએ કહ્યું, કે દશ રૂપીઆથી ઓછું નહીં લઉં. ત્યારે એ રજપૂત દશ રૂપૈયા દઇને બધા આંબા લઇને શ્રીયમુનાજીના તટ ઉપર આવ્યો. ત્યારે એ રજપૂતની સાથે એક સનોઢીયા બ્રાહ્મણ હતો. તેથી એને સો આંબા આપ્યા. તે બન્ને જણાએ પચાસ પચાસ આંબા ઘરના માટે ધરીને પચાસ પચાસ આંબા બન્નેએ શ્રીયમુનાજીના કિનારે બેસીને ચૂસ્યા. તે પછી મથુરામાં એક દુકાન ઉપર બન્ને જણા સુઇ રહ્યા. ત્યારે બન્નેને સ્વપ્નમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન થયાં. પછી એ જાગ્યા ત્યારે એ રજપુતે કહ્યું, કે બ્રાહ્મણદેવ! તમે કંઇ જોયું? ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઠાકુરના દર્શન થયાં છે. ત્યારે એ રજપુતે તે બ્રાહ્મણને પૂછ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધન-

नाथजी कों अंगीकार करवाये। ता पाछे वा माली के पासतें दस दमा देके तुमने आम लिये, सो पचास तुमने राखे। तुमने वे महाप्रसादी आम लिये, और तुम दैवी जीव हते, सो तिहारो मन फेरिके श्रीनाथजी ने स्वप्न में दरसन दियो। और वह ब्राह्मण दैवी जीव न हतो, सो वाकों स्वप्न में श्रीनाथजीने दरसन दियो, परंतु तो हू वाकों ज्ञान न भयो। सो लीला में तेरो नाम 'नेना' हतो। अब तुम श्रीनाथजी की गायन के संग शस्त्र बांधिके जायो करो। और श्रीनाथजी की रसोई में महाप्रसाद लेऊ। जो–शस्त्र कपड़ा हम तुमकों देंयगे। और आज तुम व्रत करो, जो–कालिह तुमकों समर्पन करवावेंगे। तब वा रजपूतने दंडवत कीनी। ता पाछे दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी को सिंगार करि वा रजपूत कों न्हवायके श्रीनाथजी के साम्हे ब्रह्मसंबंध करवाये। तब वा रजपूतकी बुद्धि निर्मल होय गई। ता पाछे वा रजपूत कों जूठनि की पातरि धरी। पाछे शस्त्र देके श्रीगुसांईजी आपु वाकों प्रसादी कपड़ा दिये, सो लेकें घोड़ा ऊपर चढ़िके गायन के संग गयो। सो वाको मन श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में लग्यो, सो कछुक दिन में श्रीनाथजी गायन में वा रजपूत कों दरसन देन लगे। ता पाछे वह रजपूत बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो।

भावप्रकाश—सो यामें यह जताये, जो–कुंभनदासजी मानसी सेवामें

રૂપીઆ દઈને તમે આંબા લીધા તે પચાસ તમે રાખ્યા. તમે એ મહાપ્રસાદી આંબા લીધા અને તમે દૈવી જીવ હતા તેથી તમારૂં મન ફેરવીને શ્રીનાથજીએ સ્વપ્નમાં દર્શન દીધાં અને તે બ્રાહ્મણ દૈવીજીવ ન હતો તેથી તેને સ્વપ્નમાં શ્રીનાથજીએ દર્શન આપ્યાં તો પણ તેને જ્ઞાન ન થયું. લીલામાં તારૂં નામ 'નેનાં' હતું. હવે તમે શ્રીનાથજીની ગાયોની સાથે શસ્ત્ર બાંધીને જાયા કરો અને શ્રીનાથજીની રસોઇમાં મહાપ્રસાદ લો. શસ્ત્ર, કપડાં અમે તમને આપીશું અને આજ તમે વ્રત કરો. કાલ તમને સમર્પણ કરાવીશું. ત્યારે એ રજપૂતે દંડવત કર્યા. તે પછી બીજા દિવસે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરી તે રજપૂતને ન્હવડાવીને શ્રીનાથજીની સામે બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. ત્યારે એ રજપૂતની બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઇ. તે પછી એ રજપૂતને જુઠણની પાતર ધરી. પછી શસ્ત્ર દઇને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એને પ્રસાદી, કપડાં દીધાં. એ લઇને ઘોડા ઉપર ચઢીને ગાયોની સંગે ગયો. ત્યારે એનું મન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સ્વરૂપમાં લાગ્યું. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીનાથજી ગાયોમાં તે રજપૂતને દર્શન દેવા લાગ્યા. તે પછી તે રજપૂત મોટો કૃપાપાત્ર ભગવદીય થયો.

दंडवत करिके कही, जो–महाराज ! मैं बहोत दिनन तें भटकत हतो, सो मेरो अंगीकार करि मोकों अपने चरण पास राखिये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–तुम पर कुंभनदासजी की कृपा भई है, तासों तिहारी यह दसा है। जो तेरे बड़े भाग्य हैं। सो तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी बेठकमें पधारि वा रजपूत कों नाम सुनायो। तब वा रजपूत ने दस रुपया श्रीगुसांईजी की भेट किये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–तू अपने पास रहन दे। क्यों जो तेरे पास खरची नाहीं हैं, (तैंने) सब वा ब्राह्मण कों दीनी। तब वा रजपूतने दंडवत् करिके बिनती कीनी, जो–महाराज ! अब मेरे रुपयान सों कहा काम है ? मैं तो अब आपुकी सरन हूं, जो–टहल बतावोगे सो मैं करूंगो। पाछे वा रजपूतने बिनती कीनी, जो–महाराज ! पूर्व जन्म को मैं कौन हूं ? और कौन पुन्य तें मोकों आप को दरसन भयो है। तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वासों कहे, जो–तुम पहले व्रजमें गोप हते। सो तुम शस्त्र बाँधिके श्रीनंदरायजीकी गायनके संग जाते, सो एक दिन तुमने सर्प मार्‍यो, सो अपराध तें तुमने संसार में बहोत जन्म पाये। पाछे ये आम कुंभनदासजीने देखे सो मन करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्पन किये। सो वा माली के सगरे आम कुंभनदासजीने

દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે મહારાજ ! હું બહુ દિવસથી ભટકતો હતો. તેથી મારો અંગીકાર કરી મને પોતાના ચરણ પાસે રાખો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે તમારા ઉપર કુંભનદાસજીની કૃપા થઇ છે. તેથી તારી આ દશા છે. તારાં મહાન ભાગ્ય છે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પોતાની બેઠકમાં પધારી એ રજપુતને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે એ રજપૂતે દશ રૂપીઆ ભેટ કર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે તૂ તારી પાસે રહેવા દે કેમકે તારી ખર્ચી નથી. તેં, બધી તે બ્રાહ્મણને આપી. ત્યારે તે રજપૂતે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી કે મહારાજ ! હવે મારે રૂપીઆથી શું કામ છે ? હું તો હવે આપની શરણે છું જે ટહલ બતાવશો તે કરીશ. પછી તે રજપૂતે વિનંતી કરી કે મહારાજ ! પૂર્વ જન્મનો હું કોણ છું ? અને કયાં પૂણ્યથી મને આપનાં દર્શન થયાં છે ? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કૃપા કરીને તેને કહે, કે તમે પહેલાં વ્રજમાં ગોપ હતા. તમે શસ્ત્ર બાંધીને શ્રીનંદરાયજીની ગાયોની સંગે જતા. પછી એક દિવસ તમે સર્પને માર્યો. તે અપરાધથી તમે સંસારમાં ઘણા જન્મ લીધા. પછી આ આંબા કુંભનદાસજીએ જોયા તે મન કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સમર્પણ કર્યા. એ માલીના બધા આંબા કુંભનદાસજીએ શ્રીનાથજીને અંગીકાર કરાવ્યા. તે પછી એ માલીની પાસેથી દશ

श्रीनाथजी कों अंगीकार करवाये। ता पाछे वा माली के पासतें दस रुपया देके तुमने आम लिये, सो पचास तुमने राखे। तुमने वे महाप्रसादी आम लिये, और तुम दैवी जीव हते, सो तिहारो मन फेरिके श्रीनाथजी ने स्वप्न में दरसन दियो। और वह ब्राह्मण दैवी जीव न हतो, सो वाकों स्वप्न में श्रीनाथजीने दरसन दियो, परंतु तो हू वाकों ज्ञान न भयो। सो लीला में तेरो नाम 'नेना' हतो। अब तुम श्रीनाथजी की गायन के संग शस्त्र बांधिके जायो करो। और श्रीनाथजी की रसोई में महाप्रसाद लेऊ। जो-शस्त्र कपड़ा हम तुमकों देंयगे। और आज तुम व्रत करो, जो-कालिह तुमकों समर्पन करवावेंगे। तब वा रजपूतने दंडवत कीनी। ता पाछे दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी को सिंगार करि वा रजपूत कों न्हवायके श्रीनाथजी के साम्हे ब्रह्मसंबंध करवाये। तब वा रजपूतकी बुद्धि निर्मल होय गई। ता पाछे वा रजपूत कों जूठनि की पातरि धरी। पाछे शस्त्र देके श्रीगुसांईजी आपु वाकों प्रसादी कपड़ा दिये, सो लेकें घोड़ा ऊपर चढ़िके गायन के संग गयो। सो वाको मन श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में लग्यो, सो कछुक दिन में श्रीनाथजी गायन में वा रजपूत कों दरसन देन लगे। ता पाछे वह रजपूत बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो।

भावप्रकाश—सो यामें यह जताये, जो-कुंभनदासजी मानसी सेवामें

રૂપીઆ દઇને તમે આંબા લીધા તે પચાસ તમે રાખ્યા. તમે એ મહાપ્રસાદી આંબા લીધા અને તમે દૈવી જીવ હતા તેથી તમારૂં મન ફેરવીને શ્રીનાથજીએ સ્વપ્નમાં દર્શન દીધાં અને તે બ્રાહ્મણ દૈવીજીવ ન હતો તેથી તેને સ્વપ્નમાં શ્રીનાથજીએ દર્શન આપ્યાં તો પણ તેને જ્ઞાન ન થયું. લીલામાં તારૂં નામ 'નેનાં' હતું. હવે તમે શ્રીનાથજીની ગાયોની સાથે શસ્ત્ર બાંધીને જાયા કરો અને શ્રીનાથજીની રસોઇમાં મહાપ્રસાદ લો. શસ્ત્ર, કપડાં અમે તમને આપીશું અને આજ તમે વ્રત કરો. કાલ તમને સમર્પણ કરાવીશું. ત્યારે એ રજપૂતે દંડવત કર્યા. તે પછી બીજા દિવસે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરી તે રજપૂતને ન્હવડાવીને શ્રીનાથજીની સામે બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યું. ત્યારે એ રજપૂતની બુદ્ધિ નિર્મલ થઇ ગઇ. તે પછી એ રજપૂતને જુઠણની પાતર ધરી. પછી શસ્ત્ર દઇને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એને પ્રસાદી, કપડાં દીધાં. એ લઇને ઘોડા ઉપર ચઢીને ગાયોની સંગે ગયો. ત્યારે એનું મન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સ્વરૂપમાં લાગ્યું. પછી કેટલાક દિવસમાં શ્રીનાથજી ગાયોમાં તે રજપૂતને દર્શન દેવા લાગ્યા. તે પછી તે રજપૂત મોટો કૃપાપાત્ર ભગવદીય થયો.

दंडवत करिके कही, जो–महाराज ! मैं बहोत दिनन तें भटकत हतो, सो मेरो अंगीकार करि मोकों अपने चरण पास राखिये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–तुम पर कुंभनदासजी की कृपा भई है, तासों तिहारी यह दसा है। जो तेरे बड़े भाग्य हैं। सो तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी बेठकमें पधारि वा रजपूत कों नाम सुनायो। तब वा रजपूत ने दस रुपया श्रीगुसांईजी की भेट किये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–तू अपने पास रहन दे। क्यों जो तेरे पास खरची नाहीं हैं, (तेंने) सब वा ब्राह्मण कों दीनी। तब वा रजपूतने दंडवत् करिके बिनती कीनी, जो–महाराज ! अब मेरे रुपयान सों कहा काम है ? मैं तो अब आपुकी सरन हूं, जो–टहल बतावोगे सो मैं करूंगो। पाछे वा रजपूतने बिनती कीनी, जो–महाराज ! पूर्व जन्म को मैं कौन हूं ? और कौन पुन्य तें मोकों आप को दरसन भयो है। तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वासों कहे, जो–तुम पहले व्रजमें गोप हते। सो तुम शस्त्र बाँधिके श्रीनंदरायजीकी गायनके संग जाते, सो एक दिन तुमने सर्प मार्‍यो, सो अपराध तें तुमने संसार में बहोत जन्म पाये। पाछे ये आम कुंभनदासजीने देखे सो मन करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्पन किये। सो वा माली के सगरे आम कुंभनदासजीने

દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે મહારાજ ! હું બહુ દિવસથી ભટકતો હતો. તેથી મારો અંગીકાર કરી મને પોતાના ચરણ પાસે રાખીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે તમારા ઉપર કુંભનદાસજીની કૃપા થઇ છે. તેથી તારી આ દશા છે. તારાં મહાન ભાગ્ય છે. પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પોતાની બેઠકમાં પધારી એ રજપુતને નામ સંભળાવ્યું. ત્યારે એ રજપૂતે દશ રૂપીઆ ભેટ કર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે તું તારી પાસે રહેવા દે કેમકે તારી ખર્ચી નથી. તેં, બધી તે બ્રાહ્મણને આપી. ત્યારે તે રજપૂતે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી કે મહારાજ ! હવે મારે રૂપીઆથી શું કામ છે ? હું તો હવે આપની શરણે છું જે ટહલ બતાવશો તે કરીશ. પછી તે રજપૂતે વિનંતી કરી કે મહારાજ ! પૂર્વ જન્મનો હું કોણ છું ? અને કયાં પૂણ્યથી મને આપનાં દર્શન થયાં છે ? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કૃપા કરીને તેને કહે, કે તમે પહેલાં વ્રજમાં ગોપ હતા. તમે શસ્ત્ર બાંધીને શ્રીનંદરાયજીની ગાયોની સંગે જતા. પછી એક દિવસ તમે સર્પને માર્યો. તે અપરાધથી તમે સંસારમાં ઘણા જન્મ લીધા. પછી આ આંબા કુંભનદાસજીએ જોયા તે મન કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સમર્પણ કર્યા. એ માલીના બધા આંબા કુંભનદાસજીએ શ્રીનાથજીને અંગીકાર કરાવ્યા. તે પછી એ માલીની પાસેથી દશ

सो अलौकिक जानिये। क्यों? जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं। और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये। सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो। और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की बेटी हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई। सो लौकिक संबंध यासों न भयो।

भावप्रकाश—क्यों? जो-मूलमें दैवी जीव है। सो श्रीविसाखाजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'सरोवरि' है। याके माता-पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती। लीला में विसाखाजी की सखी है। सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग। तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते।

वार्ता-प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो-मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये। तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ। सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते। और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो-मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

નાથજી ભગવદીયના વશ છે. વળી કુંભનદાસજીની સ્ત્રી અને પાંચે બેટા નામ માત્ર પામ્યા તેથી કુંભનદાસજીના સંગથી ઉદ્ધાર થયો અને કુંભનદાસજીની ભત્રિજી, જે ભાઇની બેટી હતી તે લગન થતાં જ વિધવા થઇ. તેને લૌકિક સંબંધ થયો ન હતો.

ભાવપ્રકાશ—કેમ? જે મૂલમાં દૈવી જીવ છે. લીલામાં એનું નામ 'સરો-વરિ' છે. એનાં માતા-પિતા મરી ગયાં એથી એ કુંભનદાસના ઘરમાં રહેતી. લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે તેથી અહીં પણ કુંભનદાસજી જેવા ભગવદીયનો સંગ (રહ્યો) તેથી ભત્રિજીને પણ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી દર્શન દેતા અને સાનુભાવ જણાવતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૨-વળી એક દિવસ શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે મારો જન્મદિવસ શ્રીગુસાંઇજીએ બધા વૈષ્ણવો સહિત જગતમાં પ્રકટ કર્યો. તેથી હું પણ હવે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ પ્રકટ કરૂં. એમ વિચારીને જ્યારે પોષ વદ ૮ ના રામદાસજી શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરતા હતા તે સમયે કુંભનદાસ શૃંગારનાં કીર્તન કરતા હતા અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલમાં હતા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી રામદાસજીને કહે, કે મારા જન્મ

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे। सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो। तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं। सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये। तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो–बेटा! आपुन तो सिपाई हैं। सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो–मेरो पिता मरि गयो। तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो। हम तो नाहीं आवेंगे। पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो–हमारो पिता वैरागी भयो है। तासों अब हमारे कहा काम है? पाछें सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होंय तिनकों फलित होय। सो यह सिद्धांत जताये।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो–सहजमें आँबान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये। तासों भगवदीय, जो–कृत्य करत हैं

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે કુંભનદાસજીએ માનસી સેવામાં ભોગ ધર્યા તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગ્યા. એ મહાપ્રસાદી આંબા લેવાથી તે રજપૂત ઉપર ભગવદનુગ્રહ થયો. તેથી જે ભગવદીય પોતાના હાથથી ભોગ ધરે છે તે તો શ્રીઠાકુરજી સર્વથા પ્રીતિથી આરોગે છે. તે મહાપ્રસાદ અલૌકિક હોય તેમાં કહેવું શું?

તે પછી એ રજપૂતના બે બેટા હતા તે રજપૂતની પાસે આવ્યા. ત્યારે એ રજપૂતે બન્ને બેટાઓને કહ્યું કે, બેટા! આપણે તો સિપાઇ છીએ. તે કયાંક લડાઇમાં વૃથા પ્રાણ જતા તેથી મારા ઉપર પ્રભુએ કૃપા કરી છે એટલે હવે તમે એમ જાણજો, કે મારો પિતા મરી ગયો તેથી હવે તમે જાવ. તમારું ઘર સંભાળો. અમારી રાહ ન જોતા. અમે તો નહીં આવીએ. પછી તે રજપૂતના બન્ને બેટા પોતાને ઘરે આવ્યા અને બધા સમાચાર કહ્યા, કે અમારો પિતા વૈરાગી થયો છે. તેથી હવે અમારે શું કામ છે? પછી બધા ઘરના મોહ છોડીને બેસી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે મહાપ્રસાદ અને ભગવદીયોનાં દર્શન જે દૈવી જીવ હોય તેમને ફલિત થાય એ સિદ્ધાંત જણાવ્યો.

એ કુંભનદાસજી એવા ભગવદીય હતા, કે સહજમાં આંબા દ્વારા રજપૂત ઉપર કૃપા કરી. તેથી ભગવદીય જે કૃત્ય કરે છે તે અલૌકિક જાણવું. કેમ? જે શ્રીગોવર્દ્ધન-

सो अलौकिक जानिये। क्यों? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के वस हैं। और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों वेटा नाम मात्र पाये। सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो। और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की वेटी हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई। सो लौकिक संबंध यासों न भयो।

भावप्रकाश—क्यों? जो–मूलमें दैवी जीव है। सो श्रीविसाखाजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'सरोवरि' है। याके माता–पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती। लीला में विसाखाजी की सखी है। सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग। तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते।

वार्ता–प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो–मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये। तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ। सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते। और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो–मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

નાથજી ભગવદીયના વશ છે. વળી કુંભનદાસજીની સ્ત્રી અને પાંચે બેટા નામ માત્ર પામ્યા તેથી કુંભનદાસજીના સંગથી ઉદ્ધાર થયો અને કુંભનદાસજીની ભત્રિજી, જે ભાઇની બેટી હતી તે લગન થતાં જ વિધવા થઇ. તેને લૌકિક સંબંધ થયો ન હતો.

ભાવપ્રકાશ—કેમ? જે મૂલમાં દૈવી જીવ છે. લીલામાં એનું નામ 'સરોવરિ' છે. એનાં માતા–પિતા મરી ગયાં એથી એ કુંભનદાસના ઘરમાં રહેતી. લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે તેથી અહીં પણ કુંભનદાસજી જેવા ભગવદીયનો સંગ (રહ્યો) તેથી ભત્રિજીને પણ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી દર્શન દેતા અને સાનુભાવ જણાવતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧૨–વળી એક દિવસ શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે મારો જન્મદિવસ શ્રીગુસાંઇજીએ બધા વૈષ્ણવો સહિત જગતમાં પ્રકટ કર્યો. તેથી હું પણ હવે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ પ્રકટ કરૂં. એમ વિચારીને જ્યારે પોષ વદ ૮ ના રામદાસજી શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરતા હતા તે સમયે કુંભનદાસ શૃંગારનાં કીર્તન કરતા હતા અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલમાં હતા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી રામદાસજીને કહે, કે મારા જન્મ

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे। सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो। तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं। सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये। तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो–बेटा! आपुन तो सिपाई हैं। सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो–मेरो पिता मरि गयो। तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो। हम तो नाहीं आवेंगे। पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो–हमारो पिता वैरागी भयो है। तासों अब हमारे कहा काम है? पाछें सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होंय तिनकों फलित होय। सो यह सिद्धांत जताये।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो–सहजमें आँबान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये। तासों भगवदीय, जो–कृत्य करत हैं

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે કુંભનદાસજીએ માનસી સેવામાં ભોગ ધર્યા તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગ્યા. એ મહાપ્રસાદી આંબા લેવાથી તે રજપૂત ઉપર ભગવદનુગ્રહ થયો. તેથી જે ભગવદીય પોતાના હાથથી ભોગ ધરે છે તે તો શ્રીઠાકુરજી સર્વથા પ્રીતિથી આરોગે છે. તે મહાપ્રસાદ અલૌકિક હોય તેમાં કહેવું શું ?

તે પછી એ રજપૂતના બે બેટા હતા તે રજપૂતની પાસે આવ્યા. ત્યારે એ રજપૂતે બન્ને બેટાઓને કહ્યું કે, બેટા ! આપણે તો સિપાઇ છીએ. તે ક્યાંક લડાઇમાં વૃથા પ્રાણ જતા તેથી મારા ઉપર પ્રભુએ કૃપા કરી છે એટલે હવે તમે એમ જાણજો, કે મારો પિતા મરી ગયો તેથી હવે તમે જાવ. તમારૂં ઘર સંભાળો. અમારી રાહ ન જોતા. અમે તો નહીં આવીએ. પછી તે રજપૂતના બન્ને બેટા પોતાને ઘરે આવ્યા અને બધા સમાચાર કહ્યા, કે અમારો પિતા વૈરાગી થયો છે. તેથી હવે અમારે શું કામ છે ? પછી બધા ઘરના મોહ છોડીને બેસી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે મહાપ્રસાદ અને ભગવદીયોનાં દર્શન જે દૈવી જીવ હોય તેમને ફલિત થાય એ સિદ્ધાંત જણાવ્યો.

એ કુંભનદાસજી એવા ભગવદીય હતા, કે સહજમાં આંબા દ્વારા રજપૂત ઉપર કૃપા કરી. તેથી ભગવદીય જે કૃત્ય કરે છે તે અલૌકિક જાણવું. કેમ ? જે શ્રીગોવર્દ્ધન-

सो अलौकिक जानिये। क्यों? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं। और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये। सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो। और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की बेटी हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई। सो लौकिक संबंध यासों न भयो।

भावप्रकाश—क्यों? जो–मूलमें दैवी जीव है। सो श्रीविसाखाजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'सरोवरि' है। याके माता–पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती। लीला में विसाखाजी की सखी है। सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग। तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते।

वार्ता–प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में बिचारे, जो–मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये। तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ। सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते। और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो–मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

નાથજી ભગવદીયના વશ છે. વળી કુંભનદાસજીની સ્ત્રી અને પાંચે બેટા નામ માત્ર પામ્યા તેથી કુંભનદાસજીના સંગથી ઉદ્ધાર થયો અને કુંભનદાસજીની ભત્રિજી, જે ભાઇની બેટી હતી તે લગન થતાં જ વિધવા થઇ. તેને લૌકિક સંબંધ થયો ન હતો.

ભાવપ્રકાશ—કેમ? જે મૂલમાં દૈવી જીવ છે. લીલામાં એનું નામ 'સરોવરિ' છે. એનાં માતા–પિતા મરી ગયાં એથી એ કુંભનદાસના ઘરમાં રહેતી. લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે તેથી અહીં પણ કુંભનદાસજી જેવા ભગવદીયનો સંગ (રહ્યો) તેથી ભત્રિજીને પણ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી દર્શન દેતા અને સાનુભાવ જણાવતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧૨–વળી એક દિવસ શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે મારો જન્મદિવસ શ્રીગુસાંઇજીએ બધા વૈષ્ણવો સહિત જગતમાં પ્રકટ કર્યો. તેથી હું પણ હવે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ પ્રકટ કરૂં. એમ વિચારીને જ્યારે પોષ વદ ૮ ના રામદાસજી શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરતા હતા તે સમયે કુંભનદાસ શૃંગારનાં કીર્તન કરતા હતા અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલમાં હતા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી રામદાસજીને કહે, કે મારા જન્મ

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे। सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो। तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं। सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये। तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो–बेटा ! आपुन तो सिपाई हैं। सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो–मेरो पिता मरि गयो। तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो। हम तो नाहीं आवेंगे। पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो–हमारो पिता वैरागी भयो है। तासों अब हमारे कहा काम है ? पाछें सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होंय तिनकों फलित होय। सो यह सिद्धांत जताये।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो–सहजमें आँबान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये। तासों भगवदीय, जो–कृत्य करत हैं

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ જણાવ્યું કે કુંભનદાસજીએ માનસી સેવામાં ભોગ ધર્યા તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગ્યા. એ મહાપ્રસાદી આંબા લેવાથી તે રજપૂત ઉપર ભગવદનુગ્રહ થયો. તેથી જે ભગવદીય પોતાના હાથથી ભોગ ધરે છે તે તો શ્રીઠાકુરજી સર્વથા પ્રીતિથી આરોગે છે. તે મહાપ્રસાદ અલૌકિક હોય તેમાં કહેવું શું ?

તે પછી એ રજપૂતના બે બેટા હતા તે રજપૂતની પાસે આવ્યા. ત્યારે એ રજપૂતે બન્ને બેટાઓને કહ્યું કે, બેટા ! આપણે તો સિપાઇ છીએ. તે ક્યાંક લડાઇમાં વૃથા પ્રાણ જતા તેથી મારા ઉપર પ્રભુએ કૃપા કરી છે એટલે હવે તમે એમ જાણજો, કે મારો પિતા મરી ગયો તેથી હવે તમે જાવ. તમારૂં ઘર સંભાળો. અમારી રાહ ન જોતા. અમે તો નહીં આવીએ. પછી તે રજપૂતના બન્ને બેટા પોતાને ઘરે આવ્યા અને બધા સમાચાર કહ્યા, કે અમારો પિતા વૈરાગી થયો છે. તેથી હવે અમારે શું કામ છે ? પછી બધા ઘરના મોહ છોડીને બેસી રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે મહાપ્રસાદ અને ભગવદીયોનાં દર્શન જે દૈવી જીવ હોય તેમને ફલિત થાય એ સિદ્ધાંત જણાવ્યો.

એ કુંભનદાસજી એવા ભગવદીય હતા, કે સહજમાં આંબા દ્વારા રજપૂત ઉપર કૃપા કરી. તેથી ભગવદીય જે કૃત્ય કરે છે તે અલૌકિક જાણવું. કેમ ? જે શ્રીગોવર્દ્ધન-

सो अलौकिक जानिये। क्यों? जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं। और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये। सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो। और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की बेटी हती, सो ब्याह होत ही विधवा भई। सो लौकिक संबंध यासों न भयो।

भावप्रकाश—क्यों? जो–मूलमें दैवी जीव है। सो श्रीविसाखाजी की सखी है। सो लीला में याको नाम 'सरोवरि' है। याके माता–पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती। लीला में विसाखाजी की सखी है। सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग। तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते।

वार्ता–प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो–मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये। तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ। सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजो श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते। और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो–मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

નાથજી ભગવદીયના વશ છે. વળી કુંભનદાસજીની સ્ત્રી અને પાંચે બેટા નામ માત્ર પામ્યા તેથી કુંભનદાસજીના સંગથી ઉદ્ધાર થયો અને કુંભનદાસજીની ભત્રિજી, જે ભાઇની બેટી હતી તે લગન થતાં જ વિધવા થઇ. તેને લૌકિક સંબંધ થયો ન હતો.

ભાવપ્રકાશ—કેમ? જે મૂલમાં દૈવી જીવ છે. લીલામાં એનું નામ 'સરોવરિ' છે. એનાં માતા–પિતા મરી ગયાં એથી એ કુંભનદાસના ઘરમાં રહેતી. લીલામાં વિશાખાજીની સખી છે તેથી અહીં પણ કુંભનદાસજી જેવા ભગવદીયનો સંગ (રહ્યો) તેથી ભત્રિજીને પણ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી દર્શન દેતા અને સાનુભાવ જણાવતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧૨–વળી એક દિવસ શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે મારો જન્મદિવસ શ્રીગુસાંઇજીએ બધા વૈષ્ણવો સહિત જગતમાં પ્રકટ કર્યો. તેથી હું પણ હવે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મદિવસ પ્રકટ કરું. એમ વિચારીને જ્યારે પોષ વદ ૮ ના રામદાસજી શ્રીનાથજીનો શૃંગાર કરતા હતા તે સમયે કુંભનદાસ શૃંગારનાં કીર્તન કરતા હતા અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલમાં હતા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી રામદાસજીને કહે, કે મારા જન્મ

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो कालिह जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज! कहा सामग्री करें? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहोंचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सदू पांडे ने कही, जो-घी, चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय पाडा और दोय पडिया एक व्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सदू पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसांई-

---

દિવસે શ્રીગુસાંઈજી પોતે મોટો ઓચ્છવ કરે છે તેથી મારે શ્રીગુસાંઈજીનો જન્મ દિવસ માનવો છે તેથી તમે બધા મળીને શ્રીગુસાંઈજીના જન્મ દિવસનું મંડાણ કરો. મને સામગ્રી આરોગાવો. કાલે જન્મ દિવસ છે. ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! શી સામગ્રી કરે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે જલેબી રસરૂપ કરો. ત્યારે રામદાસ કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બહુ સારૂં. પછી રામદાસજીએ સેવાથી પહોંચીને બધા સેવકોને ભેગા કરીને કહ્યું, કે સવારે શ્રીગુસાંઈજીનો જન્મ દિવસ છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સામગ્રી કરવી. ત્યારે સદૂ પાંડેએ કહ્યું, કે ઘી, ચૂન જોઈએ એટલાં મારા ઘરથી લેજો. પછી કુંભનદાસ તત્કાલ ઘર આવ્યા ત્યારે ઘરે તો કંઈ હતું નહીં. તેથી બે પાડા અને બે પાડી એક વ્રજવાસીને વેચીને પાંચ રૂપૈયા લાવીને કુંભનદાસજીએ રામદાસજીને આપ્યા. બીજા બધા સેવકોએ એક રૂપૈયો કોઈએ બે રૂપૈયા એમ આપ્યા. તેની ખાંડ મંગાવી. અને ઘી, મેંદો સદૂ પાંડે લાવ્યા તેની આખી રાત્રિ જલેબી કરી તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે રામદાસજીએ અભ્યંગ કરાવીને કેસરી પાગ કેસરી વસ્ત્ર વાગા કુલહે, શ્રીગુસાંઈજીએ પોતે શ્રીગોકુલથી પોતાના શ્રીહસ્તે સિદ્ધ કરીને મોકલ્યાં હતાં તે ધરાવ્યાં. પછી ભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રી-

जी की बधाई गावो। तब कुंभनदासजी बधाई गाये। सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार। प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार॥१॥ भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार। 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार॥२॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय। सेवा रस विस्तार करनकों गूढ ज्ञान सब प्रगट दिखाय॥१॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार बंधाय। 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा बंदीजन चारन गुन गाय॥२॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये। और यहाँ श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी बागा कुलह धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब रामदास कहे, जो राजभोग आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत के ऊपर मंदिर में पधारे। तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे तो जलेवी के अनेक टोकरा धरे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी सों पूछे, जो–आज कहा उत्सव है, जो–यह सामग्री इतनी अरोगाये हो? तब रामदासजी ने कही, जो–आज आपु को जनमदिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये। ता पाछें अनोसर कराय के आपु अपनी बैठक में पधारे और बिराजे। तहाँ रामदासजी सों बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो–सामग्री बहोत है, और सेवक

ગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે શ્રીગુસાંઇજીની વધાઇ ગાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ વધાઇ ગાઇ. તે પદ (૧) આજ બધાઇ શ્રીવલ્લભ દ્વાર. (૨) પ્રકટ ભયે શ્રીવલ્લભ આય (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે કુંભનદાસજીએ બહુ વધાઇ ગાઇ. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઘણા પ્રસન્ન થયા અને અહીં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અભ્યંગ કરાવી કેસરી વાગા, કુલ્હે ધરાવી રાજભોગ ધરીને શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે રામદાસજી કહે, રાજભોગ આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી જઇને જુએ તો જલેબીના અનેક ટોપલા ધર્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે રામદાસજીને પૂછે કે આજ શો ઉત્સવ છે કે આ સામગ્રી આટલી આરોગાવી છે? ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું કે આજ આપનો જન્મ દિવસ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે માન્યોછે અને બધા સેવકોથી સામગ્રી કરાવી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવીને આરતી કરી. તે પછી અનોસર કરાવીને પોતે પોતાની બેઠકમાં પધાર્યા અને બિરાજ્યા. ત્યાં રામદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પૂછે કે સામગ્રી ઘણી છે અને સેવક (મંદિરના) થોડા

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो कालिह जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज! कहा सामग्री करें? तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहोंचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सदू पांडे ने कही, जो-घी, चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभ-नदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय पाडा और दोय पडिया एक व्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सदू पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसांई-

---

દિવસે શ્રીગુસાંઈજી પોતે મોટો ઓચ્છવ કરે છે તેથી મારે શ્રીગુસાંઈજીનો જન્મ દિવસ માનવો છે તેથી તમે બધા મળીને શ્રીગુસાંઈજીના જન્મ દિવસનું મંડાણ કરો. મને સામગ્રી આરોગાવો. કાલે જન્મ દિવસ છે. ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! શી સામગ્રી કરે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે જલેબી રસરૂપ કરો. ત્યારે રામદાસ કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બહુ સારૂં. પછી રામદાસજીએ સેવાથી પહોંચીને બધા સેવકોને ભેગા કરીને કહ્યું, કે સવારે શ્રીગુસાંઈજીનો જન્મ દિવસ છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સામગ્રી કરવી. ત્યારે સદૂ પાંડેએ કહ્યું, કે ઘી, ચૂન જોઈએ એટલાં મારા ઘરથી લેજો. પછી કુંભનદાસ તત્કાલ ઘર આવ્યા ત્યારે ઘરે તો કંઇ હતું નહીં. તેથી બે પાડા અને બે પાડી એક વ્રજવાસીને વેચીને પાંચ રૂપૈયા લાવીને કુંભ-નદાસજીએ રામદાસજીને આપ્યા. બીજા બધા સેવકોએ એક રૂપૈયો કોઈએ બે રૂપૈયા એમ આપ્યા. તેની ખાંડ મંગાવી. અને ઘી, મેંદો સદૂ પાંડે લાવ્યાં તેની આખી રાત્રિ જલેબી કરી તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે રામદાસજીએ અભ્યંગ કરાવીને કેસરી પાગ કેસરી વસ્ત્ર વાગા કુલ્હે, શ્રીગુસાંઈજીએ પોતે શ્રીગોકુલથી પોતાના શ્રીહસ્તે સિદ્ધ કરીને મોકલ્યાં હતાં તે ધરાવ્યાં. પછી ભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રી-

जी की बधाई गावो। तब कुंभनदासजी बधाई गाये। सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार। प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार॥१॥ भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार। 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार॥२॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय। सेवा रस विस्तार करनकों गूढ ज्ञान सब प्रगट दिखाय॥१॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार बंधाय। 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा वंदीजन चारन गुन गाय॥२॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये। और यहाँ श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी वाघा कुलह धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब रामदास कहे, जो राजभोग आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत के ऊपर मंदिर में पधारे। तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी सों पूछे, जो–आज कहा उत्सव है, जो–यह सामग्री इतनी अरोगाये हो? तब रामदासजी ने कही, जो–आज आपु को जनमदिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये। ता पाछें अनोसर कराय के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे। तहाँ रामदासजी सों बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो–सामग्री बहोत है, और सेवक

ગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે શ્રીગુસાંઇજીની વધાઇ ગાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ વધાઇ ગાઇ. તે પદ (૧) આજ બધાઇ શ્રીવલ્લભ દ્વાર. (૨) પ્રકટ ભયે શ્રીવલ્લભ આય (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે કુંભનદાસજીએ બહુ વધાઇ ગાઇ. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઘણા પ્રસન્ન થયા અને અહીં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અભ્યંગ કરાવી કેસરી વાગા, કુલ્હે ધરાવી રાજભોગ ધરીને શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે રામદાસજી કહે, રાજભોગ આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી જઇને જુએ તો જલેબીના અનેક ટોપલા ધર્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે રામદાસજીને પૂછે કે આજ શો ઉત્સવ છે કે આ સામગ્રી આટલી આરોગાવી છે? ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું કે આજ આપનો જન્મ દિવસ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે માન્યોછે અને બધા સેવકોથી સામગ્રી કરાવી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવીને આરતી કરી. તે પછી અનોસર કરાવીને પોતે પોતાની બેઠકમાં પધાર્યા અને બિરાજ્યા. ત્યાં રામદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પૂછે કે સામગ્રી ઘણી છે અને સેવક (મંદિરના) થોડા

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो कालिह जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज! कहा सामग्री करें? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहोंचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सदू पांडे ने कही, जो-घी, चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय पाडा और दोय पडिया एक व्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सदू पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसांई-

---

દિવસે શ્રીગુસાંઇજી પોતે મોટો ઓચ્છવ કરે છે તેથી મારે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મ દિવસ માનવો છે તેથી તમે બધા મળીને શ્રીગુસાંઇજીના જન્મ દિવસનું મંડાણ કરો. મને સામગ્રી આરોગાવો. કાલે જન્મ દિવસ છે. ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! શી સામગ્રી કરે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે જલેબી રસરૂપ કરો. ત્યારે રામદાસ કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બહુ સારૂં. પછી રામદાસજીએ સેવાથી પહોંચીને બધા સેવકોને ભેગા કરીને કહ્યું, કે સવારે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મ દિવસ છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સામગ્રી કરવી. ત્યારે સદૂ પાંડેએ કહ્યું, કે ઘી, ચૂન જોઇએ એટલાં મારા ઘરથી લેજો. પછી કુંભનદાસ તત્કાલ ઘર આવ્યા ત્યારે ઘરે તો કંઇ હતું નહીં. તેથી બે પાડા અને બે પાડી એક વ્રજવાસીને વેચીને પાંચ રૂપૈયાં લાવીને કુંભનદાસજીએ રામદાસજીને આપ્યા. બીજા બધા સેવકોએ એક રૂપૈયો કોઇએ બે રૂપૈયા એમ આપ્યા. તેની ખાંડ મંગાવી. અને ઘી, મેંદો સદૂ પાંડે લાવ્યાં તેની આખી રાત્રિ જલેબી કરી તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે રામદાસજીએ અભ્યંગ કરાવીને કેસરી પાગ કેસરી વસ્ત્ર વાગા કુલહે, શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીગોકુલથી પોતાના શ્રીહસ્તે સિદ્ધ કરીને મોકલ્યાં હતાં તે ધરાવ્યાં. પછી ભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રી-

जी की बधाई गावो। तब कुंभनदासजी बधाई गाये। सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार। प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार॥१॥ भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार। 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार॥२॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय। सेवा रस विस्तार करनकों गूढ ज्ञान सब प्रगट दिखाय॥१॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार बंधाय। 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा वंदीजन चारन गुन गाय॥२॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये। और यहाँ श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी वागा कुलह धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब रामदास कहे, जो राजभोग आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत के ऊपर मंदिर में पधारे। तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी सों पूछे, जो—आज कहा उत्सव है, जो—यह सामग्री इतनी अरोगाये हो? तब रामदासजी ने कही, जो—आज आपु को जनमदिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये। ता पाछें अनोसर कराय के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे। तहाँ रामदासजी सों बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो—सामग्री बहोत है, और सेवक

ગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે શ્રીગુસાંઇજીની વધાઇ ગાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ વધાઇ ગાઇ. તે પદ (૧) આજ બધાઇ શ્રીવલ્લભ દ્વાર. (૨) પ્રકટ ભયે શ્રીવલ્લભ આય (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે કુંભનદાસજીએ બહુ વધાઇ ગાઇ. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઘણા પ્રસન્ન થયા અને અહીં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અભ્યંગ કરાવી કેસરી વાગા, કુલ્હે ધરાવી રાજભોગ ધરીને શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે રામદાસજી કહે, રાજભોગ આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી જઇને જુએ તો જલેબીના અનેક ટોપલા ધર્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે રામદાસજીને પૂછે કે આજ શો ઉત્સવ છે કે આ સામગ્રી આટલી આરોગાવી છે? ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું કે આજ આપનો જન્મ દિવસ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે માન્યો છે અને બધા સેવકોથી સામગ્રી કરાવી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવીને આરતી કરી. તે પછી અનોસર કરાવીને પોતે પોતાની બેઠકમાં પધાર્યા અને બિરાજ્યા. ત્યાં રામદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પૂછે કે સામગ્રી ઘણી છે અને સેવક (મંદિરના) થોડા

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो– मोकों सामग्री आरोगावो। सो कालिह जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो–महाराज! कहा सामग्री करें? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो–जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो–बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहोंचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो–सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सदू पांडे ने कही, जो–घी, चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय पाडा और दोय पडिया एक व्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सदू पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो–तुम श्रीगुसांई-

---

દિવસે શ્રીગુસાંઇજી પોતે મોટો ઓચ્છવ કરે છે તેથી મારે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મ દિવસ માનવો છે તેથી તમે બધા મળીને શ્રીગુસાંઇજીના જન્મ દિવસનું મંડાણ કરો. મને સામગ્રી આરોગાવો. કાલે જન્મ દિવસ છે. ત્યારે રામદાસે વિનંતી કરી કે મહારાજ! શી સામગ્રી કરે? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે જલેબી રસરૂપ કરો. ત્યારે રામદાસ કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બહુ સારૂં. પછી રામદાસજીએ સેવાથી પહોંચીને બધા સેવકોને ભેગા કરીને કહ્યું, કે સવારે શ્રીગુસાંઇજીનો જન્મ દિવસ છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સામગ્રી કરવી. ત્યારે સદૂ પાંડેએ કહ્યું, કે ઘી, ચૂન જોઇએ એટલાં મારા ઘરથી લેજો. પછી કુંભનદાસ તત્કાલ ઘર આવ્યા ત્યારે ઘરે તો કંઇ હતું નહીં. તેથી બે પાડા અને બે પાડી એક વ્રજવાસીને વેચીને પાંચ રૂપૈયા લાવીને કુંભનદાસજીએ રામદાસજીને આપ્યા. બીજા બધા સેવકોએ એક રૂપૈયો કોઇએ બે રૂપૈયા એમ આપ્યા. તેની ખાંડ મંગાવી. અને ઘી, મેંદો સદૂ પાંડે લાવ્યા તેની આખી રાત્રિ જલેબી કરી તે પછી પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે રામદાસજીએ અભ્યંગ કરાવીને કેસરી પાગ કેસરી વસ્ત્ર વાગા કુલહે, શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીગોકુલથી પોતાના શ્રીહસ્તે સિદ્ધ કરીને મોકલ્યાં હતાં તે ધરાવ્યાં. પછી ભોગ ધર્યા. ત્યારે શ્રી-

जी की बधाई गावो। तब कुंभनदासजी बधाई गाये। सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार। प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार॥१॥ भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार। 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार॥२॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय। सेवा रस विस्तार करनकों गूढ ज्ञान सब प्रगट दिखाय॥१॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार बंधाय। 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा वंदीजन चारन गुन गाय॥२॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये। और यहाँ श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी बागा कुलह धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे। तब रामदास कहे, जो राजभोग आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत के ऊपर मंदिर में पधारे। तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी सों पूछे, जो–आज कहा उत्सव है, जो–यह सामग्री इतनी अरोगाये हो? तब रामदासजी ने कही, जो–आज आपु को जनमदिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये। ता पाछें अनोसर कराय के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे। तहाँ रामदासजी सों बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो–सामग्री बहोत है, और सेवक

ગોવર્દ્ધનનાથજી કુંભનદાસજીને કહે, કે તમે શ્રીગુસાંઇજીની વધાઇ ગાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ વધાઇ ગાઇ. તે પદ (૧) આજ બધાઇ શ્રીવલ્લભ દ્વાર. (૨) પ્રકટ ભયે શ્રીવલ્લભ આય (ઉપર જુઓ). એ પ્રકારે કુંભનદાસજીએ બહુ વધાઈ ગાઇ. એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઘણા પ્રસન્ન થયા અને અહીં શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીને અભ્યંગ કરાવી કેસરી વાગા, કુલ્હે ધરાવી રાજભોગ ધરીને શ્રીનાથજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યારે રામદાસજી કહે, રાજભોગ આવ્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર મંદિરમાં પધાર્યા. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી જઇને જુએ તો જલેબીના અનેક ટોપલા ધર્યા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે રામદાસજીને પૂછે કે આજ શો ઉત્સવ છે કે આ સામગ્રી આટલી આરોગાવી છે? ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું કે આજ આપનો જન્મ દિવસ શ્રીગોવર્દ્ધનધરે માન્યોછે અને બધા સેવકોથી સામગ્રી કરાવી છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવીને આરતી કરી. તે પછી અનોસર કરાવીને પોતે પોતાની બેઠકમાં પધાર્યા અને બિરાજ્યા. ત્યાં રામદાસજીને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પૂછે કે સામગ્રી ઘણી છે અને સેવક (મંદિરના) થોડા

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है? तब रामदासजी कहे, जो-महाराज! घी मेंदा तो सदू पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं। और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो। सो ऐसे रुपैया २१) भये। ताकी खांड आई। सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी। इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत कीनी। तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-कुंभनदास! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं। तब कुंभनदासजी कहे, जो-महाराज! मेरो घर कहाँ है? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो-यह तो आपको है। दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो वेचि दीनी हैं। अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र वेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय। जो-महाराज! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो। सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो। तब आपु कहे, जो-श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें। सो या प्रकार

છે અને નિષ્કંચન છે તેથી સામગ્રી કયા પ્રકારે થઇ? ત્યારે રામદાસજી કહે, કે મહારાજ! ઘી મેંદા તો સદૂ પાંડેએ આપ્યા અને પાંચ રૂપૈયા કુંભનદાસજીએ આપ્યા છે અને એ વૈષ્ણવ કોઇએ એક, કોઇએ બે, જે જેનાથી બની આવ્યું તે આપ્યું. એમ રૂપૈયા ૨૧) થયા તેની ખાંડ આવી. તે શ્રી પ્રભુજીએ અંગીકાર કરી. એટલામાં કુંભનદાસજીએ આવી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે કુંભનદાસજીને શ્રીગુસાંઇજી પૂછે, કે કુંભનદાસજી! તમે પાંચ રૂપૈયા કયાંથી લાવ્યા? તમારા ઘરની વાત તો અમે બધી જાણિયે છીએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! મારૂં ઘર કયાં છે? મારૂં ઘર તો આપના ચરણારવિંદમાં છે. આ તો આપનું છે. બે પાડા અને બે પાડી અધિક હતી તે વેચી દીધી છે. મારૂં શરીર, પ્રાણ, ઘર, સ્ત્રી, પુત્ર વેચીને આપના માટે લાગે ત્યારે વૈષ્ણવ ધર્મ સિદ્ધ થાય. મહારાજ! અમે સંસારી ગૃહસ્થ છીએ. તેથી અમારાથી વૈષ્ણવ ધર્મ શું બને? આ તો આપની કૃપા, દીન જાણીને કરો છો. એવાં કુંભનદાસનાં વચન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીનું હૃદય ભરાઇ આવ્યું, ત્યારે આપ કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી પોતે જેના ઉપર કૃપા કરીને આવી દૈન્યતા દે તે પામે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સદા એમના વશ રહે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીની

श्रीगुसांईजी आपु कुंभदासनजी की वहोत सराहना करे। सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता-प्रसंग १३—और एक समय कुंभनदासजी ने श्रीआचार्यजी सों पुष्टिमारग को सिद्धान्त पूछ्यो। तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके चौरासी अपराध, राजसी, तामसी, सात्विकी भक्तन के लक्षण और प्रातःकालतें सेन पर्यंत की सेवा को प्रकार कहे, बाललीला किशोरलीला को भाव कहे। पाछें कहे, जो-जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा होयगी सो या काल में पूछेंगे और करेंगे। जो तुम सरीखे भगवदीय पूछेंगे और करेंगे। आगे काल महाकठिन आवेगो, और न कोई पूछेगो और न कोई कहेगो। सो या प्रकार सों श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदासजी सों कहे।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो सिंघिनी को दूध सोने के पात्र विना रहे नाहीं। तैसे ही भगवद्लीला को भाव और भगवद्धर्म भगवदीय विना और के हृदय में रहे नाहीं।

वार्ता-प्रसंग १४—और एक दिन कुंभनदासजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज! मेरे घर में स्त्री है और सात में तें पांच बेटा हैं, और सात बेटान की बहू हैं। परंतु भगवद्भाव काहू कों दृढ़ नाहीं है। और एक भतीजी है सो ताकों भगवद्भाव दृढ़,

બહુ સરાહના કરી. એ કુંભનદાસજી એવા કૃપાપાત્ર હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૩-વળી એક સમય કુંભનદાસજીએ શ્રીઆચાર્યજીને પુષ્ટિમાર્ગનો સિદ્ધાંત પૂછ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કૃપા કરીને ૮૪ અપરાધ રાજસી, તામસી, સાત્વિકી ભક્તોનાં લક્ષણ અને પ્રાતઃકાલથી સેન પર્યંતની સેવાનો પ્રકાર કહ્યો. બાલલીલા, કિશોરલીલાનો ભાવ કહ્યો. પછી કહ્યું, કે જેના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની કૃપા થશે તે આ કાલમાં પૂછશે અને કરશે. તમારા સરખા ભગવદીય પૂછશે અને કરશે. આગળ કાલ મહાકઠણ આવશે અને ન કોઇ પૂછશે અને ન કોઇ કહેશે. આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કુંભનદાસજીને કહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે? સિંહણીનું દૂધ સોનાના પાત્ર વિના રહે નહીં. તેવીજ રીતે ભગવદ્લીલાનો ભાવ અને ભગવદ્ધર્મ ભગવદીય વિના બીજાના હૃદયમાં રહે નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૪-વળી એક દિવસ કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કે મહારાજ! મારા ઘરમાં સ્ત્રી છે, સાતમાંથી પાંચ બેટા છે અને સાતે બેટાની વહુઓ

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है? तब रामदासजी कहे, जो–महाराज! घी मेंदा तो सदू पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं। और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो। सो ऐसे रुपैया २१) भये। ताकी खांड आई। सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी। इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत कीनी। तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–कुंभनदास! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं। तब कुंभनदासजी कहे, जो–महाराज! मेरो घर कहाँ है? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो–यह तो आपको है। दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो बेचि दीनी हैं। अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र बेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय। जो–महाराज! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो। सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो। तब आपु कहे, जो–श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें। सो या प्रकार

છે અને નિષ્કંચન છે તેથી સામગ્રી કયા પ્રકારે થઇ? ત્યારે રામદાસજી કહે, કે મહારાજ! ઘી મેંદા તો સદૂ પાંડેએ આપ્યા અને પાંચ રૂપૈયા કુંભનદાસજીએ આપ્યા છે અને એ વૈષ્ણવ કોઇએ એક, કોઇએ બે, જે જેનાથી બની આવ્યું તે આપ્યું. એમ રૂપૈયા ૨૧) થયા તેની ખાંડ આવી. તે શ્રી પ્રભુજીએ અંગીકાર કરી. એટલામાં કુંભનદાસજીએ આવી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે કુંભનદાસજીને શ્રીગુસાંઇજી પૂછે, કે કુંભનદાસજી! તમે પાંચ રૂપૈયા કયાંથી લાવ્યા? તમારા ઘરની વાત તો અમે બધી જાણિયે છીએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! મારૂં ઘર કયાં છે? મારૂં ઘર તો આપના ચરણારવિંદમાં છે. આ તો આપનું છે. બે પાડા અને બે પાડી અધિક હતી તે વેચી દીધી છે. મારૂં શરીર, પ્રાણ, ઘર, સ્ત્રી, પુત્ર વેચીને આપના માટે લાગે ત્યારે વૈષ્ણવ ધર્મ સિદ્ધ થાય. મહારાજ! અમે સંસારી ગૃહસ્થ છીએ. તેથી અમારાથી વૈષ્ણવ ધર્મ શું બને? આ તો આપની કૃપા, દીન જાણીને કરો છો. એવાં કુંભનદાસનાં વચન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીનું હૃદય ભરાઇ આવ્યું; ત્યારે આપ કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી પોતે જેના ઉપર કૃપા કરીને આવી દૈન્યતા દે તે પામે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સદા એમના વશ રહે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીની

श्रीगुसांईजी आपु कुंभदासनजी की बहोत सराहना करे। सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता-प्रसंग १३—और एक समय कुंभनदासजी ने श्रीआचार्यजी सों पुष्टिमारग को सिद्धान्त पूछ्यो। तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके चौरासी अपराध, राजसी, तामसी, सात्विकी भक्तन के लक्षण और प्रातःकालतें सेन पर्यंत की सेवा को प्रकार कहे, बाल-लीला किशोरलीला को भाव कहे। पाछें कहे, जो–जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा होयगी सो या काल में पूछेंगे और करेंगे। जो तुम सरीखे भगवदीय पूछेंगे और करेंगे। आगे काल महाकठिन आवेगो, और न कोई पूछेगो और न कोई कहेगो। सो या प्रकार सों श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदासजी सों कहे।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो सिंघिनी को दूध सोने के पात्र विना रहे नाहीं। तैसे ही भगवद्लीला को भाव और भगवद्धर्म भगवदीय विना और के हृदय में रहे नाहीं।

वार्ता-प्रसंग १४—और एक दिन कुंभनदासजी ने श्रीगुसांईजी सों विनती कीनी, जो–महाराज! मेरे घर में स्त्री है और सात में तें पांच बेटा हैं, और सात बेटान की बहू हैं। परंतु भगवद्भाव काहू कों दृढ़ नाहीं है। और एक भतीजी है सो ताकों भगवद्भाव दृढ़,

---

બહુ સરાહના કરી. એ કુંભનદાસજી એવા કૃપાપાત્ર હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૩-વળી એક સમય કુંભનદાસજીએ શ્રીઆચાર્યજીને પુષ્ટિમાર્ગનો સિદ્ધાંત પૂછ્યો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કૃપા કરીને ૮૪ અપરાધ રાજસી, તામસી, સાત્વિકી ભક્તોનાં લક્ષણ અને પ્રાતઃકાલથી સેન પર્યંતની સેવાનો પ્રકાર કહ્યો. બાલ-લીલા, કિશોરલીલાનો ભાવ કહ્યો. પછી કહ્યું, કે જેના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની કૃપા થશે તે આ કાલમાં પૂછશે અને કરશે. તમારા સરખા ભગવદીય પૂછશે અને કરશે. આગળ કાલ મહાકઠણ આવશે અને ન કોઇ પૂછશે અને ન કોઇ કહેશે. આ પ્રકારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કુંભનદાસજીને કહ્યું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે? સિંહણીનું દૂધ સોનાના પાત્ર વિના રહે નહીં. તેવીજ રીતે ભગવદ્લીલાનો ભાવ અને ભગવદ્ધર્મ ભગવદીય વિના બીજાના હૃદયમાં રહે નહીં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૪-વળી એક દિવસ કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કે મહારાજ! મારા ઘરમાં સ્ત્રી છે, સાતમાંથી પાંચ બેટા છે અને સાતે બેટાની વહુઓ છે. પરંતુ ભગવદ્ભાવ કોઇમાં દઢ નથી અને એક ભત્રીજી છે તેને ભગવદ્ભાવ દઢ છે

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है? तब रामदासजी कहे, जो–महाराज! घी मेंदा तो सदू पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं। और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो। सो ऐसे रुपैया २१) भये। ताकी खांड आई। सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी। इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत कीनी। तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो–कुंभनदास! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं। तब कुंभनदासजी कहे, जो–महाराज! मेरो घर कहाँ है? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो–यह तो आपको है। दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो वेचि दीनी हैं। अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र वेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय। जो–महाराज! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो। सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो। तब आपु कहे, जो–श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें। सो या प्रकार

છે અને નિષ્કંચન છે તેથી સામગ્રી કયા પ્રકારે થઇ? ત્યારે રામદાસજી કહે, કે મહારાજ! ઘી મેંદો તો સદૂ પાંડેએ આપ્યો અને પાંચ રૂપૈયા કુંભનદાસજીએ આપ્યા છે અને એ વૈષ્ણવ કોઇએ એક, કોઇએ બે, જે જેનાથી બની આવ્યું તે આપ્યું. એમ રૂપૈયા ૨૧) થયા તેની ખાંડ આવી. તે શ્રી પ્રભુજીએ અંગીકાર કરી. એટલામાં કુંભનદાસજીએ આવી શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કર્યા. ત્યારે કુંભનદાસજીને શ્રીગુસાંઇજી પૂછે, કે કુંભનદાસજી! તમે પાંચ રૂપૈયા કયાંથી લાવ્યા? તમારા ઘરની વાત તો અમે બધી જાણિયે છીએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે મહારાજ! મારૂં ઘર કયાં છે? મારૂં ઘર તો આપના ચરણારવિંદમાં છે. આ તો આપનું છે. બે પાડા અને બે પાડી અધિક હતી તે વેચી દીધી છે. મારૂં શરીર, પ્રાણ, ઘર, સ્ત્રી, પુત્ર વેચીને આપના માટે લાગે ત્યારે વૈષ્ણવ ધર્મ સિદ્ધ થાય. મહારાજ! અમે સંસારી ગૃહસ્થ છીએ. તેથી અમારાથી વૈષ્ણવ ધર્મ શું બને? આ તો આપની કૃપા, દીન જાણીને કરો છો. એવાં કુંભનદાસનાં વચન સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીનું હૃદય ભરાઇ આવ્યું, ત્યારે આપ કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી પોતે જેના ઉપર કૃપા કરીને આવી દૈન્યતા દે તે પામે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સદા એમના વશ રહે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીની

ब्राह्मनन ने कही। तब बेटी के पिता ने कह्यो, जो–यह तुमने कहा कियो। जो–बेटी तो मेरी एक है। सो तुम चारों जने चार वर करि आये सो कैसे बनेगी? तब उन चारों ब्राह्मनन ने कही, जो–तेनें कह्यो तब हमने सगाई करी है। जो–महीना पीछे बेटी को व्याह न करेगो तो हम तेरे ऊपर जीव देंयगे। जो–हम तिलक करि सगाई करी, सो कबहू छूटे नाहीं। तब वा ब्राह्मण नें कह्यो, जो–भलो, महीना है सो ता बखत की दीखेगी, जो कहा होनहार है? तब चारों ब्राह्मण ने कही, जो–जब एक दिन व्याह को रहेगो, सो तब हम व्याह करावन आवेंगे। सो यह कहिके चारों ब्राह्मण अपने घर कों गये। पाछें या बेटी के पिता कों महा चिंता भई। जो–अब मैं कहाँ निकसि जाऊँ? जो–प्रान छूटे तोऊ कन्या की खराबी है। तासों अब मैं कहा करूँ? सो मारे चिंता के खानपान सब छूटि गयो, सो ऐसे चारि दिन भूखे गये। ता पाछे पाँचमे दिन नदी ऊपर यह ब्राह्मण संध्यावंदन करत हतो सो एक भगवदीय फिरत २ आय निकस्यो, सो नदी में न्हायो। इतने ही में यह ब्राह्मण महादुःख सों पुकारिके रोयो। सो भगवद्‌भक्त को हृदय कोमल, सो वा ब्राह्मण को दुःख सहि नाँही सके। तब उन भगवद्‌भक्त ने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो–ब्राह्मण! तुमकों ऐसो कहा दुःख है? जो तेने पुकारिके रुदन कियो है। तब

મારી એક છે તેથી તમે ચારે જણ ચાર વર કરી આવ્યા તે કેમ બનશે? ત્યારે એ ચારે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, કે તેં કહ્યું ત્યારે અમે સગાઇ કરી છે. જો મહિના પછી બેટીનું લગ્ન નહિ કરે તો અમે તારા ઉપર જીવ દઇશું. કેમ જે અમે તિલક કરી સગાઇ કરી તે ક્યારેય ન છૂટે. ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે સારૂં, મહિનો છે તે વખતની જોઇ લેવાશે. ન જાણે શું થનાર છે? ત્યારે ચારે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, કે જ્યારે એક દિવસ લગનનો રહેશે ત્યારે અમે લગ્ન કરાવવા આવીશું. એમ કહી ચારે બ્રાહ્મણ પોતાના ઘરે ગયા. પછી એ બેટીના પિતાને મહા ચિંતા થઇ કે હવે હું ક્યાં નિકળી જઉં! જો પ્રાણ છૂટે તો પણ કન્યાની ખરાબી છે. તેથી હવે હું શું કરૂં? તે ચિંતાને લીધે ખાનપાન બધું છુટી ગયું. એમ ચાર દિવસ ભૂખે ગયા. તે પછી પાંચમા દિવસે નદી ઉપર આ બ્રાહ્મણ સંધ્યાવંદન કરતો હતો ત્યારે એક ભગવદીય ફરતો ૨ આવી નિકળ્યો. તે નદીમાં ન્હાયો એટલામાં જ એ બ્રાહ્મણ મહા દુઃખથી પોકારીને રોયો. તે ભગવદ્‌ભક્તનું હૃદય કોમળ. તેથી એ બ્રાહ્મણનું દુઃખ સહી ન શકયો. ત્યારે એ ભગવદ્‌ભકતે આ બ્રાહ્મણને પૂછ્યું, કે બ્રાહ્મણ! તમને એવું શું દુઃખ છે? કે તેં પોકારીને રૂદન કર્યું? ત્યારે એ

ताकों कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी आपु सगरे वैष्णव कों सुनाय के कुंभनदासजी सों कहे, जो–कुंभनदास! तुम मन लगायके सुनियो, जो–सावधान होउ। मैं एक पुरान को इतिहास कहत हों। तब सगरे वैष्णव सावधान भये। पाछें श्रीगुसांईजी कहे, जो–एक ब्राह्मण हतो, ताके एक कन्या हती। सो जब वह कन्या ब्याह लायक भई तब ब्राह्मण ने एक और ब्राह्मण कों बुलायके कह्यो, जो–मेरी कन्या को वर ठीक करिके आछो ठिकानो देखिके सगाई करि आवो। तब वह ब्राह्मण तो सगाई करिवे कों गयो। ता पाछें दूसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो। तब दूसरो ब्राह्मण हू सगाई करिवे कों गयो। पाछें तीसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो। सो तीसरो हू ब्राह्मण सगाई करिवे गयो। पाछें चोथो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो। सो तब चारों ब्राह्मण चार दिसान में भगवद्‌–इच्छातें गये। सो दोय दोय तीन ३ कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां न्यारे २ गाँवन में चारों ब्राह्मण ने सगाई करी। सो एक महीना पीछे सगाई ठेराई। पाछें वरन कों तिलक करिके चारों ब्राह्मण या ब्राह्मण की आगे आयके कह्यो, जो–सगाई करि तिलक करि आये हैं। सो एक महीना पीछे प्रातःकाल की लगन है। या प्रकार चारों

તેનું કારણ શું ? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે બધા વૈષ્ણવોને સંભળાવીને કુંભનદાસને કહે, કે કુંભનદાસ ! તમે મન લગાડીને સાંભળો જે સાવધાન થાવ. હું એક પુરાણનો ઇતિહાસ કહું છું ત્યારે બધા વૈષ્ણવો સાવધાન થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે એક બ્રાહ્મણ હતો તેને એક કન્યા હતી તે પછી જ્યારે એ કન્યા લગ્ન લાયક થઇ ત્યારે બ્રાહ્મણે એક બીજા બ્રાહ્મણને બોલાવી ને કહ્યું, કે મારી કન્યાનો વર ઠીક કરીને સારૂં ઠેકાણું જોઇને સગાઇ કરી આવ. ત્યારે એ બ્રાહ્મણ તો સગાઇ કરવાને ગયો. તે પછી બીજો બ્રાહ્મણ આવ્યો તેને પણ એમજ કહ્યું. ત્યારે બીજો બ્રાહ્મણ પણ સગાઇ કરવાને ગયો. પછી ત્રીજો બ્રાહ્મણ આવ્યો તેને પણ એમજ કહ્યું. ત્યારે ત્રીજો બ્રાહ્મણ પણ સગાઇ કરવાને ગયો. પછી ચોથો બ્રાહ્મણ આવ્યો તેને પણ એમજ કહ્યું. ત્યારે ચારે બ્રાહ્મણ ચાર દિશાઓમાં ભગવદીચ્છાથી ગયા. તે બે-બે ત્રણ-ત્રણ ગાઉ ઉપર એક ગામ હતું ત્યાં અલગ અલગ ગામોમાં ચારે બ્રાહ્મણોએ સગાઇ કરી. એક મહિના પછી સગાઇ (લગ્ન) ઠરાવી પછી વરોને તિલક કરીને ચારે બ્રાહ્મણોએ આ બ્રાહ્મણની આગળ આવીને કહ્યું, કે સગાઇ કરી તિલક કરી આવ્યા છીએ. એક મહિના પછી પ્રાતઃકાલનું લગ્ન છે. એ પ્રકારે ચારે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, ત્યારે બેટીના પિતાએ કહ્યુ કે આ તમે શું કર્યું ? બેટી તો

ब्राह्मनन ने कही। तब बेटी के पिता ने कह्यो, जो–यह तुमने कहा कियो। जो–बेटी तो मेरी एक है। सो तुम चारों जने चार वर करि आये सो कैसे बनेगी? तब उन चारों ब्राह्मनन ने कही, जो–तेनें कह्यो तब हमने सगाई करी है। जो–महीना पीछे बेटी को ब्याह न करेगो तो हम तेरे ऊपर जीव देंयगे। जो–हम तिलक करि सगाई करी, सो कबहू छूटे नाहीं। तब वा ब्राह्मण नें कह्यो, जो–भलो, महीना है सो ता बखत की दीखेगी, जो कहा होनहार है? तब चारों ब्राह्मण ने कही, जो–जब एक दिन ब्याह को रहेगो, सो तब हम ब्याह करावन आवेंगे। सो यह कहिके चारों ब्राह्मण अपने घर कों गये। पाछें या बेटी के पिता कों महा चिंता भई। जो–अब मैं कहाँ निकसि जाऊँ? जो–प्रान छूटे तोऊ कन्या की खराबी है। तासों अब मैं कहा करूँ? सो मारे चिंता के खानपान सब छूटि गयो, सो ऐसे चारि दिन भूखे गये। ता पाछे पाँचमे दिन नदी ऊपर यह ब्राह्मण संध्यावंदन करत हतो सो एक भगवदीय फिरत २ आय निकस्यो, सो नदी में न्हायो। इतने ही में यह ब्राह्मण महादुःख सों पुकारिके रोयो। सो भगवद्भक्त को हृदय कोमल, सो वा ब्राह्मण को दुःख सहि नाँही सके। तब उन भगवद्भक्त ने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो–ब्राह्मण! तुमकों ऐसो कहा दुःख है? जो तेने पुकारिके रुदन कियो है। तब

મારી એક છે તેથી તમે ચારે જણ ચાર વર કરી આવ્યા તે કેમ બનશે? ત્યારે એ ચારે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, કે તેં કહ્યું ત્યારે અમે સગાઇ કરી છે. જો મહિના પછી બેટીનું લગ્ન નહિ કરે તો અમે તારા ઉપર જીવ દઇશું. કેમ જે અમે તિલક કરી સગાઇ કરી તે ક્યારેય ન છૂટે. ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે સારૂં, મહિનો છે તે વખતની જોઇ લેવાશે. ન જાણે શું થનાર છે? ત્યારે ચારે બ્રાહ્મણોએ કહ્યું, કે જ્યારે એક દિવસ લગનનો રહેશે ત્યારે અમે લગ્ન કરાવવા આવીશું. એમ કહી ચારે બ્રાહ્મણ પોતાના ઘરે ગયા. પછી એ બેટીના પિતાને મહા ચિંતા થઇ કે હવે હું ક્યાં નિકળી જઉં! જો પ્રાણ છૂટે તો પણ કન્યાની ખરાબી છે. તેથી હવે હું શું કરૂં? તે ચિંતાને લીધે ખાનપાન બધું છુટી ગયું. એમ ચાર દિવસ ભૂખે ગયા. તે પછી પાંચમા દિવસે નદી ઉપર આ બ્રાહ્મણ સંધ્યાવંદન કરતો હતો ત્યારે એક ભગવદીય ફરતો ૨ આવી નિકળ્યો. તે નદીમાં ન્હાયો એટલામાં જ એ બ્રાહ્મણ મહા દુઃખથી પોકારીને રોયો. તે ભગવદ્ભક્તનું હૃદય કોમળ. તેથી એ બ્રાહ્મણનું દુઃખ સહી ન શક્યો. ત્યારે એ ભગવદ્ભક્તે આ બ્રાહ્મણને પૂછ્યું, કે બ્રાહ્મણ! તમને એવું શું દુઃખ છે? કે તેં પોકારીને રૂદન કર્યું? ત્યારે એ

वा ब्राह्मण ने अपनी सब बात कही। यह सुनिके वा भगवद्‌भक्त ने कही, जो-मैं तो एक ठिकाने रहत नाँही हों, परंतु तेरे लिये या नदी पे बैठ्यो हूँ। जो मोकों प्रगट मति करियो। और जा दिन को ब्याह होय तासों एक दिन पहलें मोकों आयके कहियो, जो श्रीठाकुरजी भली करेंगे। और अब तुम घर जायके खानपान करो। तब वा ब्राह्मण ने कह्यो, जो-भलो। पाछें जब ब्याह को एक दिन रह्यो, सो प्रातःकाल को समय हतो। तब वह ब्राह्मण वा भगवद्‌भक्त के पास आयो और विनती कीनी, जो-प्रातःकाल को ब्याह है, तातें अब कछू उपाय बतावो। तब ता वैष्णव ने कही, जो-संध्या कों आइयो। पाछे सांझकों ब्राह्मण वा भगवद्‌भक्त की पास गयो। तब वा भक्त ने कही, जो-तिहारे आगे जो पशु पक्षी आवें सो तिनकों तुम पकरि लीजो। तब वह ब्राह्मण नदी के ऊपर बैठ्यो। सो बिलाइ आई सो पकरी। ता पाछे एक कुतिया आई सो पकरि। पाछे एक गदही आई, सो पकरी। सो तब वा भक्त ने कही, जो-इन तीन्योंन कों एक कोठा में मूंदि देऊ। सो कोठा में मूंदि दिये। तब वा भक्त ने कही, जो-तेरी बेटी सोय जाय तब वाहू कों यामें मूंदि दीजियो। ता पाछें बेटी सोई, तब वा बेटी कों खाट सहित कोठा में मूंदि के ताला लगाय के कहे, जो-

---

બ્રાહ્મણે પોતાની બધી વાત કહી. એ સાંભળીને એ ભગવદ્‌ભક્તે કહ્યું, કે હું તો એક જગાએ રહેતો નથી પરંતુ તારા માટે આ નદી ઉપર બેઠો છું. મને પ્રકટ કરીશ નહીં અને જે દિવસનું લગ્ન હોય તેનાથી એક દિવસ પહેલાં મને આવીને કહેજે. શ્રીઠાકુરજી ભલું કરશે. વળી હવે તમે ઘર જઇને ખાનપાન કરો. ત્યારે એ બ્રાહ્મણે કહ્યું, કે સારૂં. પછી જ્યારે લગ્નનો એક દિવસ રહ્યો ત્યારે પ્રાતઃકાલનો સમય હતો તે વખતે તે બ્રાહ્મણ એ ભગવદ્‌ભક્તની પાસે આવ્યો અને વિનંતી કરી, કે પ્રાતઃકાલનું લગ્ન છે તેથી હવે કંઇ ઉપાય બતાવો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે સંધ્યાએ આવજે પછી સાંજે બ્રાહ્મણ એ ભગવદ્‌ભક્તની પાસે ગયો. ત્યારે એ ભક્તે કહ્યું, કે તારી આગળ જે પશુ-પક્ષી આવે તેને તું પકડી લેજે. ત્યારે એ બ્રાહ્મણ નદીના ઉપર બેઠો. તે બિલાડી આવી તે પકડી. તે પછી એક કુતરી આવી તે પકડી. પછી એક ગધેડી આવી તે પકડી. ત્યારે એ ભક્તે કહ્યું, કે આ ત્રણેને એક કોઠામાં બંધ કર. એટલે કોઠામાં બંધ કર્યાં. ત્યારે એ ભક્તે કહ્યું, હવે તારી બેટી સૂઇ જાય ત્યારે એને પણ આ કોઠામાં પુરી દેજે. તે પછી બેટી સૂઇ ત્યારે તે બેટીને ખાટ સહિત કોઠામાં પૂરીને તાળું લગાડીને કહ્યું, કે લગનની તૈયારી કરો. ત્યારે પ્રહર રાત્રિ ગયે ચારે વર આવ્યા.

ब्याह की तैयारी करो। सो तब प्रहर रात्रि गये चारों वर आये। पाछें सगाई करिवे वारे चारों ब्राह्मण ने समाधान करिके उनकों बैठाये। इतने में ब्याह को समय भयो तब ब्राह्मन ने भगवद्‌भक्त सों कही, जो–अब ब्याह को समय भयो है। तब भक्त ने कह्यो, जो–कोठरी खोलिके चारों बरन कों चारों कन्या देऊ, और ब्याह करि देउ। पाछें वह ब्राह्मण तालो खोलिके देखे तो चारों कन्या एक रूप, एक बय, बरोबरी, पहिचानि न परे। सो चारों कन्या चारों बरन कों ब्याह, बिदा करि दीनी। पाछें चारों ब्राह्मण कों दक्षिणा दे बिदा किये। पाछें भगवद्‌भक्त ने कही, जो–हम चलेंगे। तब ब्राह्मण ने पाँयन परि के कह्यो, जो तुमने मोकों जीवदान दियो है सो यह घर तिहारो है। तातें आपकों जो चहिये सो लेउ। तब भक्तने कही, जो–हमकों कछू चहियत नाहीं है। तेरो दुःख श्रीठाकुरजी ने दूरि कियो है, सो यही बड़ी बात भई है। तब वा ब्राह्मण ने पूछी, जो–चारों कन्या एक सरखी भई है, सो मोकों खबरि कैसे परे, जो–मेरी बेटी कौनसे वर कों ब्याही है? सो वा बेटी कों बुलावनी होय तो कैसे खबरि परेगी? तब भक्त ने कही, जो–तेरे चारों जमाई हैं सो उन ही सों बेटीन के लक्षन पूछि लिजियो। तब तोकों खबरि परेगी। जो मनुष्य के लक्षन होय सोई तेरी बेटी जानियो। सो यह कहिके भग-

---

પછી સગાઇ કરવાવાળા ચારે બ્રાહ્મણોએ સમાધાન કરીને એમને બેસાડ્યા. એટલામાં લગ્નનો સમય થયો. ત્યારે બ્રાહ્મણે ભગવદ્‌ભકતને કહ્યું, કે હવે લગ્નનો સમય થયો છે. ત્યારે ભકતે કહ્યું, કે કોટરી ખોલીને ચારે વરોને ચારે કન્યા દે અને લગ્ન કરી દો. પછી એ બ્રાહ્મણ તો તાળું ખોલીને જુએ તો ચારે કન્યા એક રૂપ, એક વય બરોબરી તે ઓળખી ન જાય. તે ચારે કન્યા ચારે વરોને વિવાહી વિદાય કરી દીધી. પછી ચારે બ્રાહ્મણોને દક્ષિણા દઇ વિદાય કર્યા. પછી ભગવદ્‌ભકતે કહ્યું, કે હવે અમે જઇશું. ત્યારે બ્રાહ્મણે પગે પડીને કહ્યું, કે તમે મને જીવદાન આપ્યું છે તે આ ઘર તમારૂં છે તેથી આપને જે જોઇએ તે લો. ત્યારે ભકતે કહ્યું, કે અમને કંઇ જોઇતું નથી. તારૂં દુઃખ શ્રીઠાકુરજીએ દૂર કર્યું છે એજ બહુ મોટી વાત થઇ છે. ત્યારે પૂછ્યું, કે ચારે કન્યાઓ એક સરખી થઇ છે. હવે મને ખબર કેમ પડે કે મારી બેટી કયા વરથી વિવાહી છે? તે બેટીને બોલાવવી હોય તો કેમ ખબર પડશે? ત્યારે એ ભકતે કહ્યું, કે તારા ચાર જમાઇ છે તેમને જ બેટીનાં લક્ષણ પૂછી લેજે. ત્યારે તને ખબર પડશે. મનુષ્યનાં લક્ષણ હોય તેજ તારી બેટી જાણજે. એમ કહી ભગવદ્‌ભક્ત તો ચાલ્યા ગયા. ત્યારે

वद् भक्त तो चले गये। सो तब ब्राह्मण ने कछुक दिन पीछे चारों जमाईन कों घर बुलाये, और चारों जमाईन कों रसोई करवाई। सो एक जने कों भोजन कों बैठायो। तब भोजन करत में वासों पूछी, जो-मेरी बेटी अनुकूल है के नाहीं? वामें कैसे लक्षन हैं? तब उनने कही, जो-सब गुन हैं परि कुतिया की नांइ भूसत है। जो जीभ ठिकाने नाहीं, और आचार क्रिया नाहीं है, सो तासों प्रिय नाहीं है। ता पाछे दूसरे जमाई कों बुलायो। वासों पूछी, जो-कहो, मेरी बेटी के लक्षन कैसे हैं? तब वाने कही, जो-तिहारी बेटी में आछे लक्षन हैं परंतु चटोरी है, जो-ठाकुर के लिये जो वस्तु आवे सोई वह चौरिके खाय जाय। बिलाई की दसा है, जो-पांच घरको खाये बिना चैन नाहीं परे। ता पाछे तीसरे जमाई कों बुलाइके पूछी, जो-मेरी बेटी के लक्षन कैसे हैं? तब वाने कही, जो-तिहारी बेटी में सब लक्षन आछे हैं, परंतु घर में आवे जाय, तब गदही की नांई भूसे, सदा मलीन रहे और जाकों ताकों तथा मोहूकों गदही की नांई दोउ पावन सों लात मारे है। पाछें चौथे जमाई को बुलायके पूछी, जो-मेरी बेटी के लक्षन कहो? तब उनने कही, जो-तिहारी बेटी की कहा बात है? जो मानो लक्ष्मी है कोऊ देवता है। जो सब कों प्रिय वचन, मीठो बोलनो, उत्तम क्रिया, आचार विचार, पति, गुरु, ठाकुर और

બ્રાહ્મણે કેટલાક દિવસ પછી ચારે જમાઇઓને ઘર બોલાવ્યા અને ચારે જમાઇઓને રસોઇ કરાવી એક જણને ભોજને બેસાડ્યો ત્યારે ભોજન કરતાંમાં એને પૂછ્યું કે મારી બેટી અનુકૂલ છે કે નહીં? એમાં લક્ષણ કેવાં છે? ત્યારે એણે કહ્યું, કે બધા ગુણ છે પરંતુ કુતરીની માફક ભસે છે? જીભ ઠેકાણે નથી અને આચાર-ક્રિયા નથી. તેથી પ્રિય નથી. પછી બીજા જમાઇને બોલાવ્યો તેને પૂછ્યું કે કહો મારી બેટીનાં લક્ષણ કેવાં છે? ત્યારે તેણે કહ્યું, કે તારી બેટીમાં લક્ષણ સારાં છે પરંતુ ચટોકરી છે. શ્રીઠાકુરજીની વસ્તુ આવે તેજ તે ચોરીને ખાઈ જાય. બિલાડીની દશા છે. પાંચ ઘરનું ખાધા વિના ચેન પડતું નથી. તે પછી ત્રીજા જમાઇને બોલાવીને પૂછ્યું કે મારી બેટીનાં લક્ષણ કેવાં છે? ત્યારે તેણે કહ્યું, કે તમારી બેટીમાં બધાં લક્ષણ સારાં છે પરંતુ ઘરમાં આવે જાય ત્યારે ગધેડીની માફક ભસે, સદા મલીન રહે, અને જેને તેને તથા મને પણ ગધેડીની માફક બન્ને પગોથી લાત મારે છે. પછી ચોથા જમાઇને બોલાવીને પૂછ્યું કે મારી બેટીનાં લક્ષણ કહો ત્યારે તેણે કહ્યું કે તમારી બેટીની શી વાત છે? માનો લક્ષ્મી છે કોઇ દેવતા છે. બધાને પ્રિય વચન મીઠું બોલવું, ઉત્તમ ક્રિયા

वैष्णवमें प्रीति। सो तब ब्राह्मणनें जानी, जो–यही मेरी बेटी है। ता पाछें वाही बेटी जमाई कों बुलावतो। सो तासों कुंभनदास! जा मनुष्यमें वैष्णव के लक्षन हैं सोई मनुष्य है। और कहा भयो जो मनुष्य देह भई? जो रावण, कुंभकरण खोटी क्रियातें राक्षस कहाये। यासों जाकी जैसी क्रिया, सो वाको तैसो ही रूप जानजो। जो भतीजी बड़ी भगवदीय है। तासों तिहारे संगतें कृतार्थ होयगी। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदासजी आदि सब वैष्णवनकों समुझाये। सो ये कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता–प्रसंग १५—पाछें कुंभनदासजी की देह बहोत असक्त भई। सो तहां आन्योर की पास संकर्षणकुंड ऊपर कुंभनदासजी आयके बैठि रहे। तब चतुर्भुजदास ने कही, जो–गोदिमें करिके तुमकों जमुनावता गाममें ले चलें? तब कुंभनदासजी कहे, जो–अब तो दोय चार घड़ी में देह छूटेगी। तासों अब तो मैं इहांई रहूंगो। तब चतुर्भुजदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग आर्ति के दरसन किये। तब श्रीगुसांईजी आपु चतुर्भुजदास सों पूछे, जो–कुंभनदास कैसे हैं? और कहां हैं? तब चतुर्भुजदास ने कही, जो–संकर्षण कुंड ऊपर बैठे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदासजी के पास पधारे। पाछें

આચાર વિચાર, પતિ, ગુરુ ઠાકુર અને વૈષ્ણવમાં પ્રીતિ, ત્યારે બ્રાહ્મણે જાણ્યું કે આજ મારી બેટી છે. તે પછી તેજ બેટી જમાઇને બોલાવતો. તેથી કુંભનદાસ! જે મનુષ્યમાં વૈષ્ણવનાં લક્ષણ છે તેજ મનુષ્ય છે. બીજાને શું થયું જો મનુષ્ય દેહ મળી? રાવણ, કુંભકર્ણ ખોટી ક્રિયાથી રાક્ષસ કહેવાયા. એથી જેની જેવી ક્રિયા તેનું તેવુંજ રૂપ જાણવું. ભત્રીજી મોટી ભગવદીય છે. તેથી તમારા સંગથી કૃતાર્થ થશે. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કુંભનદાસજી આદિ બધા વૈષ્ણવોને સમજાવ્યા. તે કુંભનદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧૫-પછી કુંભનદાસજીની દેહ અશક્ત થઇ ત્યારે ત્યાં આન્યોરની પાસે સંકર્ષણ કુંડ ઉપર કુંભનદાસજી આવીને બેસી રહ્યા ત્યારે ચતુર્ભુજદાસે કહ્યું, કે ગોદમાં કરીને તમને જમનાવતા ગામમાં લઇ ચાલીએ? ત્યારે કુંભનદાસજી કહે, કે હવે તો બે-ચાર ઘડીમાં દેહ છૂટશે. તેથી હવે તો હું અહીંજ રહીશ. ત્યારે ચતુર્ભુજદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની રાજભોગ આર્તિનાં દર્શન કર્યાં. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે ચતુર્ભુજદાસને પૂછે કે કુંભનદાસ કેમ છે? અને ક્યાં છે? ત્યારે ચતુર્ભુજદાસે

श्रीगुसांईजी आपु पधारिके कुंभनदासजी सों कहे, जो-कुंभनदास! या समय कौन लीला में मन है? सो कहो। ता समय कुंभनदासजी सों उठ्यो तो गयो नाहीं, सो माथो नँवाय मनसों दंडवत करि यह कीर्तन गाये। सो पद—

राग सारंग—बिसरि गयो लाल करत गो-दोहन। निरखि अनूप चंद मुख इकटक रह्यो है सांवरो मोहन॥१॥ नव नागरी विचित्र चतुर गुन अंग अंग रूप सुठोहन। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर मन हर्‍यो कटिली भौंहन॥२॥

राग सारंग—लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति। नंदगाम वृषभानपुरा बीच मारग चलन न पावति॥१॥ हों भरि हों डरि हों नहिं काहू ललिता दगन चलावति। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर धर्‍यो सो क्यों न बतावत॥२॥

सो ये पद कुंभनदासजी ने गाये। तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदास! यह लीला तुम सुनाये परि अंतःकरणको मन जहां है सो बतावो। तब कुंभनदासजीने श्रीगुसांईजी के आगे यह पद गाये। सो पद—

राग बिहागरो—तोय मिलनकों बोहोत करत है मोहनलाल गोवर्द्धनधारी। उत्तर मोहि देऊ किन भामिनि कहा कहों हों बात तिहारी॥१॥ देखी तू जो झरोखन के मग तन सोहत झूमक सारी। तन मन बसीरी लाल गिरिधर के एक चित तें टरत न टारी। कहिरी सखी हों किहिं मग आऊं तू बताइ दे ठौर सुचारी। 'कुंभनदास' प्रभु बैठे तहां देखियत हैं जहां उंची चित्रसारी॥३॥

राग बिहागरो—रसिकनी रसमें रहति गढ़ी। कनक वेलि वृषभान नंदिनी स्याम तमाल चढ़ी॥१॥ विहरत श्रीगिरिधरनलाल संग कौन पाठ पढ़ी। 'कुंभनदास' प्रभु श्रीगोवर्द्धनधर रति रस केलि बढ़ी॥२॥

यह पद गायके कुंभनदासजी देह छोड़ि निकुंज लीला में जायके प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसांईजी आपु गोपालपुर पधारे। सो

કહ્યું, કે સંકર્ષણ કુંડ ઉપર બેઠા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીની પાસે પધાર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે પધારીને કુંભનદાસને કહે, કે કુંભનદાસ! આ સમયે કઇ લીલામાં મન છે? તે કહો. તે સમયે કુંભનદાસજીથી ઉઠી તો શકાયું નહી. તેથી માથું નમાવી મનથી દંડવત્ કરી આ કીર્તન ગાયાં. તે પદ—(૧) બિસરિ ગયો લાલ કરત ગોદોહન. (૨) લાલ તેરી ચિતવનિ ચિત હી ચુરાવતિ. (ઉપર જુઓ.) એ પદ કુંભનદાસજીએ ગાયાં ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કહ્યું, કે કુંભનદાસ! આ લીલા તમે સંભળાવી પરંતુ અંતઃકરણનું મન જ્યાં છે તે બતાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીની આગળ આ પદ ગાયાં. તે પદ—(૧) તોય મિલન કોં (૨) રસિકની રસમેં રહતિ ગઢી (ઉપર જુઓ). એ પદ ગાઇને કુંભનદાસજી દેહ છોડી નિકુંજ-

चतुर्भुजदासजी आदि सब बेटानने कुंभनदासजीको संस्कार कियो। सो कुंभनदासजी लीला में आन्योर के पास गाम है, तहां द्वार पर प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापन तें सेन पर्यंत की सेवा सों पोहोंचे। परंतु काहू वैष्णवनसों बोले नाहीं, उदास रहे। तब रामदासजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज! एसे क्यों हो? तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख सों कहें, जो-एसे भगवदीय अंतर्धान भये। अब भूमि में भक्तन को तिरोधान भयो। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कुंभनदासजी की सराहना किये। सो वे कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी के एसे कृपापात्र भगवदीय हते, जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिए। वार्ता ॥८३॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कृष्णदास अधिकारी,
सो ये अष्टछाप में हैं, जिनके पद गाइयत हैं,
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये कृष्णदासजी लीला में ऋषभसखा श्रीठाकुरजी के अंतरंग, तिनको यह प्रागट्य हैं। सो दिनकी लीला में तो 'ऋषभ' सखा हैं, और

લીલામાં જઇને પ્રાપ્ત થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે ગોપાલપુર પધાર્યા. પછી ચતુર્ભુજદાસ આદિ બધા પુત્રોએ કુંભનદાસજીનો સંસ્કાર કર્યો. તે કુંભનદાસજી લીલામાં આન્યોર પાસે ગામ છે ત્યાં દ્વાર ઉપર પ્રાપ્ત થયા. પછી શ્રીગુસાંઇજી ઉત્થાપનથી સેન પર્યંતની સેવાથી પહોંચ્યા. પરંતુ કોઇ વૈષ્ણવથી બોલ્યા નહીં. ઉદાસ રહ્યા. ત્યારે રામદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ એમ કેમ છો ? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીમુખથી કહે કે, આવા ભગવદીય અંતર્ધાન થયા. હવે ભૂમિમાં ભક્તોનું તિરોધાન થયું. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીમુખથી કુંભનદાસજીની સરાહના કરી. એ કુંભનદાસજી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. જેમના ઉપર શ્રીગુસાંઇજી સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નહીં. એમની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. તે ક્યાં સુધી કહિએ ? વાર્તા ॥ ૮૩ ॥

* * * *

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક, કૃષ્ણદાસ અધિકારી, એ અષ્ટછાપમાં છે જેમનાં પદ ગાઇએ છીએ, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ :—

ભાવપ્રકાશ—એ કૃષ્ણદાસજી લીલામાં ઋષભસખા શ્રીઠાકુરજીના અંતરંગ

श्रीगुसांईजी आपु पधारिके कुंभनदासजी सों कहे, जो-कुंभनदास ! या समय कौन लीला में मन है ? सो कहो । ता समय कुंभनदासजी सों उठ्यो तो गयो नाहीं, सो माथो नँवाय मनसों दंडवत करि यह कीर्तन गाये । सो पद—

राग सारंग—बिसरि गयो लाल करत गो-दोहन । निरखि अनूप चंद मुख इकटक रह्यो है सांवरो मोहन ॥ १ ॥ नव नागरी विचित्र चतुर गुन अंग अंग रूप सुठोहन । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर मन हर्‌यो कटिली भौंहन ॥ २ ॥

राग सारंग—लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति । नंदगाम वृषभानपुरा बीच मारग चलन न पावति ॥ १ ॥ हौं भरि हौं डरि हौं नहिं काहू ललिता दगन चलावति । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर धर्‌यो सो क्यों न बतावत ॥ २ ॥

सो ये पद कुंभनदासजी ने गाये । तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदास ! यह लीला तुम सुनाये परि अंतःकरणको मन जहां है सो बतावो । तब कुंभनदासजीने श्रीगुसांईजी के आगे यह पद गाये । सो पद—

राग विहागरो—तोय मिलनकों बोहोत करत है मोहनलाल गोवर्द्धनधारी । उत्तर मोहि देऊ किन भामिनि कहा कहौं हौं बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी तू जो झरोखन के मग तन सोहत झूमक सारी । तन मन बसीरी लाल गिरिधर के एक चित तें टरत न टारी । कहिरी सखी हौं किहिं मग आऊं तू बताइ दे ठौर सुचारी । 'कुंभनदास' प्रभु वैठे तहां देखियत हैं जहां उंची चित्रसारी ॥ ३ ॥

राग विहागरो—रसिकनी रसमें रहति गढ़ी । कनक बेलि वृषभान नंदिनी स्याम तमाल चढ़ी ॥ १ ॥ विहरत श्रीगिरिधरनलाल संग कौन पाठ पढ़ी । 'कुंभनदास' प्रभु श्रीगोवर्द्धनधर रति रस केलि वढ़ी ॥ २ ॥

यह पद गायके कुंभनदासजी देह छोड़ि निकुंज लीला में जायके प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसांईजी आपु गोपालपुर पधारे । सो

કહ્યું, કે સંકર્ષણ કુંડ ઉપર બેઠા છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કુંભનદાસજીની પાસે પધાર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે પધારીને કુંભનદાસને કહે, કે કુંભનદાસ ! આ સમયે કઇ લીલામાં મન છે ? તે કહો. તે સમયે કુંભનદાસજીથી ઉઠી તો શકાયું નહી. તેથી માથું નમાવી મનથી દંડવત્ કરી આ કીર્તન ગાયાં. તે પદ—(૧) બિસરિ ગયો લાલ કરત ગોદોહન. (૨) લાલ તેરી ચિતવનિ ચિત હી ચુરાવતિ. (ઉપર જુઓ.) એ પદ કુંભનદાસજીએ ગાયાં ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કહ્યું, કે કુંભનદાસ ! આ લીલા તમે સંભળાવી પરંતુ અંતઃકરણનું મન જ્યાં છે તે બતાવો. ત્યારે કુંભનદાસજીએ શ્રીગુસાંઇજીની આગળ આ પદ ગાયાં. તે પદ—(૧) તોય મિલન કોં (૨) રસિકની રસમેં રહતિ ગઢી (ઉપર જુઓ). એ પદ ગાઇને કુંભનદાસજી દેહ છોડી નિકુંજ-

ब्राह्मणन ने या कुनबी सों कह्यो, जो–हम कों चाहे तू कछु देय, चाहे मति देय। जो यह तेरो बेटा तो श्रीभगवानको भक्त होयगो। जो कृष्णदास याको नाम होयगो और यह तिहारे घर में न रहेगो। यह सुनि के वह पटेल कुनबी बहोत उदास भयो। और दान पुन्य बहोत कियो और कृष्णदास नाम धर्यो। पाछें कृष्णदास पांच बरस के भये तब ही तें भगवद्वार्ता कथा में जान लागे। सो मातापिता न जान देंय तो रोवें, खानपान नांहीं करें। तब मातापिता ने कही जो–याकों जान देऊ। जो यह अबहीतें वैरागीनसों प्रीति करत है, सो यह वैरागी होयगो। जो मोसों ब्राह्मणन नें आगे कह्यो हतो। तासों या बेटामें प्रीति करि मोह मति लगावो। सो यह सबकों दुःख देयगो। पाछे कृष्णदास जहां तहां कथा सुनते। ऐसे करत कृष्णदास बरस बारह तेरह के भये। तब एक बनजारा एक दिन गाम के बाहिर आयके उतरयो, सो किनारो माल सब 'चिलोतरा' गाम में बेचिके रुपैया चौदह हजार कियो। सो रात्रि कों चोर (ने) कृष्णदास के पिता के भेद में, बनजारा के सब चौदह हजार रुपया लूटे। सो चौदह हजार में ते तेरह हजार रुपैया कृष्णदास के पिता ने राखे। सो यह बात कृष्णदास ने जानी। तब कृष्णदास ने अपने पिता सों कह्यो, जो–तुमने बुरो काम कियो है। क्यों? जो–तुमने रुपैया पराये बनजारा के लुटाय के लिये। सो तुम वाकों दे डारोगे तब तिहारो कल्याण होयगो। तब पिता ने कृष्णदास कों मारयो,

---

અમને ચાહે તૂં કઇ દે ચાહે ન દે પણ આ તારો બેટો તો શ્રીભગવાનનો ભકત થશે. કૃષ્ણદાસ એનું નામ થશે અને આ તારા ઘરમાં નહીં રહે. એ સાંભળીને એ પટેલ કણબી બહુ ઉદાસ થયો અને દાન પુણ્ય બહુ કર્યું અને કૃષ્ણદાસ નામ ધર્યું. પછી કૃષ્ણદાસ પાંચ વર્ષના થયા ત્યારથીજ ભગવદ્વાર્તા કથામાં જવા લાગ્યા. માતા પિતા ન જવા દે તો રૂવે ખાનપાન ન કરે. ત્યારે માતા (ને) પિતાએ કહ્યું, કે એને જવાદો. એ હમણાંથીજ વૈરાગીઓથી પ્રીતિ કરે છે એટલે એ વૈરાગી થશે. મને બ્રાહ્મણોએ આગળ કહ્યું હતું તેથી આ બેટામાં પ્રીતિ કરી મોહ લગાડવો નહી. એ બધાને દુઃખ દેશે. પછી કૃષ્ણદાસ જ્યાં ત્યાં કથા સાંભળતા. એમ કરતાં કૃષ્ણદાસ વર્ષ ૧૨–૧૩ ના થયા ત્યારે એક વણઝારો એક દિવસ ગામના બહાર આવીને ઉતર્યો. તેણે કિનારી માલ બધો 'ચિલોતરા' ગામમાં વેચીને રૂપીઆ ચૌદ હજાર કર્યા. પછી રાત્રિએ ચોરોએ કૃષ્ણદાસના પિતાના ભેદમાં તે વણઝારાના બધા ચૌદ હજાર રૂપીયાને લૂટયા. તે ચૌદ હજારમાંથી તેર હજાર રૂપૈઆ કૃષ્ણદાસના પિતાએ રાખ્યા. એ વાત કૃષ્ણદાસે જાણી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પોતાના પિતાને કહ્યું; કે તમે ખોટું કામ કર્યું છે. કેમકે તમે પરાયા રૂપૈયા વણઝારાના લુંટાવી

रात्रि की लीला में श्रीललिताजी अंतरंग सखी हैं। सो ललिता हू चारि रूप, आपु तो मध्या, और श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी की लीला निकुंज संबंधी अनुभव करें। और श्रीललिताजी को दूसरो स्वरूप ऋषभ सखा होयके बन में संग जाय, दिवस की लीला रस को अनुभव करें। और तीसरो स्वरूप दामोदरदास हरसानी होयके श्रीआचार्यजी के संग सदा रहते। तिनसों श्रीआचार्यजी आपु दमला कहते। सो तो दामोदरदासजी की वार्ता में भाव विस्तार करिके कह्यो है। और ललिताजी को चोथो स्वरूप कृष्णदास। सो गोवर्द्धनधर के पास रहिके अधिकार किये। सो श्रीगिरिराज के आठ द्वार हैं तामें 'बिलछू' बरसाने सन्मुख द्वार एक बारी है। सो ता मारग होय के श्रीगोवर्द्धननाथजी रास करन कों पधारते। सो ता द्वार के मुखिया हैं। सो ये कृष्णदास गुजरात में एक 'चिलोतरा' गांव है। तहां एक कुनबी के घर जन्मे। सो वह कुनबी वा गाम को मुखी हतो। सो वा गाम में हाकिमी करतो। जा समय कृष्णदास या कुनबी पटेल के घर जन्मे, सो ता समय या कुनबी ने अनेक पंडित ब्राह्मण गाम गाम में तें बुलायके भेले करि उनसों पूछ्यो, जो—मेरे यह बेटा भयो है, सो याके सगरे लक्षन कहो। और या बेटा की आरबल कहो, सो मैं वाकों जनम भरि में जीवे तहां तांई खरची देऊं। तब सगरे

તેમનું એ પ્રાકટ્ય છે. દિવસની લીલામાં એ 'ઋષભ' સખા છે અને રાત્રિની લીલામાં 'શ્રીલલિતાજી' અંતરંગ સખી છે. એ લલિતાજી પણ ચાર રૂપ છે. પોતે તો મધ્યા (થઇ) શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીસ્વામિનીજીની લીલા નિકુંજ સંબંધી અનુભવ કરે અને લલિતાજીનું બીજું સ્વરૂપ ઋષભ સખા થઇને વનમાં સંગ જાય, દિવસની લીલા રસનો અનુભવ કરે અને ત્રીજું સ્વરૂપ શ્રીદામોદરદાસ હરસાની થઇને શ્રીઆચાર્યજીની સાથે સદા રહેતા. તેમને શ્રીઆચાર્યજી આપ દમલા કહેતા. તે તો દામોદરદાસની વાર્તામાં ભાવ વિસ્તાર કરીને કહ્યો છે અને લલિતાજીનું ચોથું સ્વરૂપ કૃષ્ણદાસ તેમણે શ્રીગોવર્દ્ધનધરની પાસે રહીને અધિકાર કર્યો. શ્રીગિરિરાજજીનાં આઠ દ્વાર છે તેમાં 'બિલછુ' બરસાના સન્મુખ દ્વાર એક બારી છે તે માર્ગ થઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી રાસ કરવા પધારતા. તે દ્વારના મુખિયા છે. એ કૃષ્ણદાસ ગુજરાતમાં એક 'ચિલોતરા' ગામ છે ત્યાં એક કણબીને ઘરે જન્મ્યા એ કણબી તે ગામનો મુખી હતો. એ ગામમાં હાકિમી કરતો. તે સમય કૃષ્ણદાસ આ કણબી પટેલના ઘરે જન્મ્યા. તે સમયે કણબીએ અનેક પંડિત બ્રાહ્મણોને ગામ-ગામથી બોલાવીને ભેગા કરી એમને પૂછ્યું, કે મારે આ બેટો થયો છે એનાં બધાં લક્ષણ કહો અને એ બેટાની આયુષ્ય કહો. હું એને જન્મ ભરમાં જીવે ત્યાં સુધી ખરચી દઉં. ત્યારે બધા બ્રાહ્મણોએ એ કણબીને કહ્યું, કે

में बुलाय लीजियो। परन्तु मेरे पिता के प्रान हू न जाय, और चोरन के
र न जाय, और तेरो भलो होय जाय, सो ऐसो तू करियो। सो या भाँति
पास मोकों बुलाइयो मैं सब बताय देउंगो। तासों तेरो माल रुपैया सब या
सों मिलेंगे। पाछे वा बनजारा राजनगर में आइके राजा के पास सब बात
। और कह्यो, जो-पिताने तो चोरी कराई और बेटानें बतायो। परन्तु कोई के
न जाय। और मेरी वस्तु मिले, ऐसो उपाय करो। तब राजा ने कह्यो, धन्य
टा. जो-पिता की चोरी बताई। सो वाकूं तो मैं राखूंगो। सो यह कहिके
मनुष्य और सिपाई बुलाय के कह्यो, जो-तुम 'चलोतरा' में जायके उहां
किम कों बेटा सहित पकरि लावो। सो या भाँति सों जावो, जो-कोई जानें
। सो ये पचास मनुष्य आये, सो लगे रहे। सो एक दिन संध्या समय वह
म घर के द्वार पर ठाड़ो हतो और वाको बेटाहू ठाड़ो हतो। सो राजा के
वा हकिम कों पकरि के राजनगर में लाये। तब राजा नें यासों पूछी, जो-
केम होय परदेसी कों लूटत है? जो या वनजारे को माल रुपैया देउ। तब
किम ने कही, जो-तुमसों कोई ने झुठेही लगाई होयगी। मैं तो या बात में
ह नाहीं हूँ। तब वा राजा ने कह्यो, जो-तेरो बेटा सोंह खायके कहे सो
पिताने कही. जो-बेटा कहि देय तो सांच है। तो राजा ने कृष्ण-

द करजे. त्यां मने तू साक्षीमां बोलावजे. परंतु मारा
चोरोना पण प्राण न जाय अने तारुं भलुं थाय एम
ने बोलावजे. हुं बधो उत्तर आपीश. तेथी तारो माल
छी ए वणजाराए राजनगरमां आवीने राजानी
: पिताए तो चोरी करावी अने बेटाए बताव्युं.
मारी वस्तु मळे तेवो उपाय करो. त्यारे राजाए कह्युं,
बतावी तेथी एने तो हुं राखीश. एम कहीने पचास
', के तमे 'चलोतरा' मां जईने त्यांना हाकेमने
जाव के कोइ जाणे नही. त्यारे पचास मनुष्य आव्या
दिवस संध्या समये ए हाकेम घरना द्वार उपर
। हतो त्यारे राजाना मनुष्य ए हाकेमने पकडीने
पूछ्युं के तु हाकेम थइ परदेशीने लूंटे छे? आ
ाकेमे कह्युं, के तमने कोइए जुठुंज भराव्युं हशे
थी. त्यारे ए राजाए कह्युं, के तारो बेटा सोगंद

और कह्यो, जो–तू काहू के आगे मति कहियो। जो–हम गाम के हाकिम हैं, सो हाकिम को यही काम है। तब कृष्णदास नें कह्यो, जो–अब तुम खराब होउगे। सो यह कहिके चुप होय रहे। जब सवारो भयो, तब वह बनजारा चोंतरा ऊपर रोवत आयो। सो आयके कृष्णदास के पिता सों कह्यो, जो–हमकों चोरन नें लूट्यो है। तब कृष्णदास के पिता ने कह्यो, जो–तू गाम में क्यों न रह्यो? जो अब हमसों कहा कहत है? सो ऐसे कहिके वा हकिम नें अपने मनुष्यन सों कही, जो–या बनजारा कों गाम तें बाहिर काढि देउ, जो सवारे ही रोवत आयो है। तब मनुष्यन नें काढि दियो। सगरी पूंजी गई, सो यह महाविलाप करे। सो कृष्णदास दूरितें दौरिके वाके पास आये। तब कृष्णदास कों दया आइ गई। तब कृष्णदास मनमें विचारे, जो–पिता को बुरो होय तो सुखेन होउ, परन्तु या बनजारा परदेसी को भलो करनो। पाछे कृष्णदास वा बनजारा के पास आयके कहे, जो–तू एकांत में चलिके बैठ, जो मैं तोसों एक बात कहूँ। पाछे एकांत में बनजारा कों ले जायके कृष्णदास ने कह्यो, जो–तेरो माल रुपैया सब गयो, मेरे पिता यहाँ को हाकिम है, सो ताने चोरी कराई है। सो हजार रुपैया चोरन कों देके सगरो माल मेरे पिताने राख्यो है। तासों या गाम में तेरी न चलेगी। तासों तू जायके राजनगर (अहमदाबाद) राजा के यहाँ फरियाद करियो। सो मोकूं तू

ને લીધા, તમે એને આપી દો ત્યારે તમારૂં કલ્યાણ થશે. ત્યારે પિતાએ કૃષ્ણદાસને માર્યા અને કહ્યું, કે તૂ કોઇની આગળ કહીશ નહી. અમે ગામના હાકિમ છીએ એટલે હાકિમનું એજ કામ છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હવે તમે ખરાબ થશો. એમ કહીને ચૂપ થઈ રહ્યા. પછી જ્યારે સવાર થયું ત્યારે એ વણઝારો ચોતરા ઉપર રૂદન કરતો આવ્યો તેણે આવીને કૃષ્ણદાસના પિતાને કહ્યું, અમને ચોરે લૂંટ્યા છે ત્યારે કૃષ્ણદાસના પિતાએ કહ્યું, તૂ ગામમાં કેમ ન રહ્યો? હવે અમને શું કહે છે? એમ કહીને એ હાકિમે પોતાના મનુષ્યોને કહ્યું, કે આ વણઝારાને ગામથી બહાર કાઢી મૂકો. એ સવારેજ રોતો આવ્યો છે. ત્યારે મનુષ્યે કાઢી મૂકયો. બધી પૂંજી ગઇ ત્યારે એ મહા વિલાપ કરે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ દૂરથી દોડીને એની પાસે આવ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસને દયા આવી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે મનમાં વિચાર્યું કે પિતાનું અહિત થાય તો ભલે થાવ પરંતુ આ વણઝારા પરદેશીનું ભલું કરવું. પછી કૃષ્ણદાસ વણઝારાની પાસે આવીને કહે, તૂ એકાંતમાં ચાલીને બેસ. હું તને એક વાત કહું. પછી એકાંતમાં વણઝારાને લઇ જઇને કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે તારો માલ રૂપૈયા બધું ગયું. મારો પિતા અહીંનો હાકિમ છે એણે ચોરી કરાવી છે. હજાર રૂપીઆ ચોરોને આપીને બધો માલ મારા પિતાએ રાખ્યો છે. તેથી આ ગામમાં તારૂં નહીં ચાલે. તેથી જઇને રાજનગર

साक्षी में बुलाय लीजियो। परन्तु मेरे पिता के प्रान हू न जाय, और चोरन के हू प्रान न जाय, और तेगे भलो होय जाय, सो ऐसो तू करियो। सो या भाँति राजा पास मोकों बुलाइयो मैं सब बताय देउंगो। तासों तेरो माल रुपैया सब या भाँति सों मिलेंगे। पाछे वा बनजारा राजनगर में आइके राजा के पास सब बात कही। और कह्यो, जो-पिताने तो चोरी कराई और बेटानें बतायो। परन्तु कोई के प्राण न जाय। और मेरी वस्तु मिले, ऐसो उपाय करो। तब राजा ने कह्यो, धन्य वह बेटा, जो-पिता की चोरी बताई। सो वाकूं तो मैं राखूंगो। सो यह कहिके पचास मनुष्य और सिपाई बुलाय के कह्यो, जो-तुम 'चलोतरा' में जायके उहां के हाकिम कों बेटा सहित पकरि लावो। सो या भाँति सों जावो, जो-कोई जानें नाहीं। सो ये पचास मनुष्य आये, सो लगे रहे। सो एक दिन संध्या समय वह हाकिम घर के द्वार पर ठाड़ो हतो और वाको बेटाहू ठाड़ो हतो। सो राजा के मनुष्य वा हकिम कों पकरि के राजनगर में लाये। तब राजा नें यासों पूछी, जो-तू हाकिम होय परदेसी कों लूटत है? जो या बनजारे को माल रुपैया देउ। तब वा हाकिम ने कही, जो-तुमसों कोई ने झुठेही लगाई होयगी। मैं तो या बात में जानत ही नाहीं हूँ। तब वा राजा ने कह्यो, जो-तेरो बेटा सोंह खायके कहे सो सांचो। तब पिताने कही, जो-बेटा कहि देय तो सांच है। तो राजा ने कृष्ण-

---

(અમદાવાદ) રાજાને ત્યાં ફરીયાદ કરજે. ત્યાં મને તૂ સાક્ષીમાં બોલાવજે. પરંતુ મારા પિતાના પ્રાણ પણ ન જાય અને ચોરોના પણ પ્રાણ ન જાય અને તારૂં ભલું થાય એમ તૂ કરજે. એ પ્રકારે રાજા પાસે મને બોલાવજે. હું બધો ઉત્તર આપીશ. તેથી તારો માલ રૂપૈયા બધું આ પ્રકારે મળશે. પછી એ વણઝારાએ રાજનગરમાં આવીને રાજાની પાસે બધી વાત કહી અને કહ્યું, કે પિતાએ તો ચોરી કરાવી અને બેટાએ બતાવ્યું. પરંતુ કોઇનો પ્રાણ ન જાય અને મારી વસ્તુ મળે તેવો ઉપાય કરો. ત્યારે રાજાએ કહ્યું, ધન્ય એ બેટા કે પિતાની ચોરીને બતાવી તેથી એને તો હું રાખીશ. એમ કહીને પચાસ મનુષ્ય અને સિપાઇ બોલાવીને કહ્યું, કે તમે 'ચલોતરા' માં જઇને ત્યાંના હાકેમને બેટા સહિત પકડી લાવો. એ પ્રકારે જાવ કે કોઇ જાણે નહી. ત્યારે પચાસ મનુષ્ય આવ્યા તે (દાવમાં) લાગ્યા રહ્યા. પછી એક દિવસ સંધ્યા સમયે એ હાકેમ ઘરના દ્વાર ઉપર ઉભો હતો અને એનો બેટો પણ ઉભો હતો ત્યારે રાજાના મનુષ્ય એ હાકેમને પકડીને રાજનગર લાવ્યા. ત્યારે રાજાએ એને પૂછ્યું કે તુ હાકેમ થઇ પરદેશીને લૂંટે છે? આ વણઝારાના માલ રૂપૈયા દે. ત્યારે તે હાકેમે કહ્યું, કે તમને કોઇએ જુઠુંજ ભરાવ્યું હશે હું તો આ બાબતમાં કંઇ જાણતો નથી. ત્યારે એ રાજાએ કહ્યું, કે તારો બેટા સોગંદ

दास सों पूछी, जो-तू सांच बोलियो। तब कृष्णदास ने वा राजा सों कह्यो, जो-जीव है, तासों चूक्यो तो सही। जो हजार रुपैया चोरन कों दिये और तेरह हजार रुपैया मेरे पिताने राखे हैं। तासों मैंने वाही समय पिता कों समुझायो, परन्तु मान्यो नाहीं, सो ताको फल पायो। परन्तु यासों माल रुपैया ले लेहु और यासों कछु कहो मति। तब कृष्णदास के पिता सों राजा ने कही, जो-अजहू चेत, नाँतर तेरे प्राण जायंगे। तब कृष्णदास को पिता बोल्यो, जो-काम तो बुरो भयो है। परन्तु या बनजारा कों मेरे संग करि देउ। सो याकों सब रुपैया घरतें दै देउंगो। तब राजा ने दोइसे मनुष्य संग करिके बनजारा कों और कृष्णदास के पिता कों घर पठायो। और कृष्णदास सों वा राजा ने कह्यो, जो-तुम मेरे पास रहो, जो तुम सतवादी हो। तब कृष्णदास कहे, जो-मोकों राखिके तुम कहा करोगे? मैं सांच कहूँगो, सबकों बुरो लगूंगो। जो आजु को समय तो ऐसो है, तासों मैं तो वैरागी होउंगो। जो मैं पिता के काम को नाहीं रह्यो। सो या प्रकार वा राजा ने कृष्णदास के राखिवे को बहोत जतन कियो। परि कृष्णदास रहे नाहीं, पाछे पिता के संग घर आये। तब पिताने चोरन कों बुलाय के सब पुत्र के समाचार कहे, जो-या पुत्रने हमारी खराबी करी है, तासों हजार रुपैया लावो। नाँतर तिहारे और हमारे प्राण जांयगे। तब उन चोरनने हजार रुपैया

ખાઇને કહે તો સાચું, ત્યારે પિતાએ કહ્યું, કે બેટો કહી દે તો સાચું છે. ત્યારે રાજાએ કૃષ્ણદાસને પૂછયું, કે તૂ સાચું બોલજે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે એ રાજાને કહ્યું, કે જીવ છે તેથી ચુકયો તો ખરો. હજાર રૂપીઆ ચોરોને આપ્યા અને તેર હજાર રૂપીઆ મારા પિતાએ રાખ્યા છે. તેથી મેં તેજ સમયે પિતાને સમજાવ્યો પરંતુ માન્યું નહી તેનું ફલ મળ્યું. પરંતુ એનો માલ રૂપીઆ લઇલો અને એને કંઇ કહો નહીં. ત્યારે કૃષ્ણદાસના પિતાને રાજાએ કહ્યું, કે હજુએ ચેત નહીં તો તારા પ્રાણ જશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસનો પિતા બોલ્યો કે કામ તો ખરાબ થયું છે. પરંતુ આ વણઝારાને મારી સાથે કરી દો. એને બધા રૂપૈયા ઘરથી દઈ દઇશ. ત્યારે રાજાએ બસો મનુષ્ય સાથે કરીને વણઝારાને અને કૃષ્ણદાસના પિતાને ઘર મોકલ્યો અને કૃષ્ણદાસને રાજાએ કહ્યું, કે તમે મારી પાસે રહો. તમે સત્યવાદી છો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ કહે, કે મને રાખીને તમે શું કરશો ? હું સાચું કહીશ એટલે બધાનો બુરો બનીશ. આજનો સમય એવો છે. તેથી હું તો વૈરાગી થઇશ. હું પિતાના કામનો ન રહ્યો. એ પ્રકારે રાજાએ કૃષ્ણદાસને રાખવાનો ઘણો ઉપાય કર્યો પરંતુ કૃષ્ણદાસ રહ્યા નહીં. પછી પિતાના સંગે ઘર આવ્યા ત્યારે પિતાએ ચોરોને બોલાવીને પુત્રના બધા સમાચાર કહ્યા, કે આ પુત્રે અમારી ખરાબી કરી છે તેથી હજાર રૂપીઆ લાવો નહી તો અમારા તમારા પ્રાણ જશે. ત્યારે એ ચોરોએ હજાર

लाय दिये। सो तेरह हजार घर में सों लेके वा वनजारा कों चौदह हजार रुपैया दिये, और माल लूटि को देके वा वनजारा कों विदा कियो। ता पाछे वा राजा ने दूसरो हाकिम 'चिलोतरा' गाम में पठायो। तब कृष्णदास के पिता ने कह्यो, जो-पुत्र! तेरो ऐसो बुरो कर्म भयो सो हाकिमी हू गई, और आयो करयो द्रव्यहू गयो। तब कृष्णदास ने पिता सों कही, जो-पिता! तैंनें ऐसो बुरो कर्म कियो हतो जो-येहू लोक जातो और परलोक हू विगरतो, जो जीव तो बच्यो। सो हाकिमी छूटी सो आछो भयो। जो हाकिमी होती तो और पाप कमावते। तब पिता ने कह्यो, जो-तू वा जनम को फकीर है। तासों तैने हमकों हू फकीर कियो है। अब तेरे मन में कहा है? तब कृष्णदास ने कही जो-अब तुम मोकों घर में राखोगे तो फकीर होउगे, याते मोकों विदा ही करो। तब पिता ने कही, जो-तू कछु खरचि ले घर में ते कहूँ दूरि चल्यो जा। न तोकों देखेंगे न दुःख होयगो। तब कृष्णदास पिता कूं नमस्कार करि के उठि चले। पाछे मन में विचारे, जो-ब्रज होय सगरे तीरथ करनो। तब कछुक दिनमें कृष्णदास श्रीमथुराजी में आयके विश्रांत घाट न्हाय के ब्रज में निकसे, तब फिरते फिरते श्रीगोवर्द्धन आये। सो तहाँ सुनी, जो-देवदमन को मंदिर बन्यो है, जो-अब दोय चारि दिन में विराजेंगे तो ब्रजवासीन कों वड़ो आनंद होयगो। देवदमन जब तें बाहिर प्रकटे,

---

રૂપૈયા લાવી આપ્યા અને તેર હજાર ઘરમાંથી લઇને એ વણઝારાને ચૌદ હજાર રૂપીઆ આપ્યા અને લૂંટનો માલ દઇને એ વણઝારાને વિદાય કર્યો. તે પછી એ રાજાએ બીજો હાકેમ 'ચિલોતરા' ગામમાં મોકલ્યો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પિતાને કહ્યું, કે પુત્ર! તારૂં એવું ખોટું કર્મ થયું કે હાકિમી પણ ગઇ અને આવેલું દ્રવ્ય પણ ગયું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પિતાને કહ્યું, કે પિતા તમે એવું ખોટું કર્મ કર્યું હતું કે આ લોક પણ જાતો અને પરલોક પણ બગડતો. જો જીવ તો બચ્યો. હાકિમી છુટી તો સારૂં થયુ. જો હાકિમી હોતી તો વધારે પાપ કમાવતા. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, તૂ પહેલા જનમનો ફકીર છે તેથી તેં અમને પણ ફકીર કર્યા. હવે તારા મનમાં શું છે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હવે મને ઘરમાં રાખશો તો ફકીર થશો. તેથી મને વિદાય જ કરો. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, કે તૂ થોડી ખર્ચી લઇ ઘરમાંથી કંઈ દૂર ચાલ્યો જા. ન તને જોઇશું ન દુઃખ થશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ પિતાને નમસ્કાર કરીને ઉઠી ચાલ્યા. પછી મનમાં વિચાર્યું, કે વ્રજ થઇને બધાં તીર્થ કરવાં. પછી કેટલાક દિવસમાં કૃષ્ણદાસ શ્રીમથુરાજીમાં આવીને વિશ્રાંતઘાટે ન્હાઇને વ્રજમાં નીકળ્યા. ત્યારે ફરતા ફરતા શ્રીગોવર્દ્ધન આવ્યા. ત્યાં સાંભળ્યું કે દેવદમનનું મંદિર બન્યું છે. હમણાં બે ચાર દિવસમાં બિરાજશે. ત્યારે વ્રજવાસીઓને

जो श्रीगिरीराज गोवर्द्धन में ते, तब तें सबन कों सुख दियो है। और सबन के मनोरथ पूरन करत हैं। तब यह सुनिके कृष्णदासजी अपने मनमें विचारे, जो-मैं हूँ देवदमन को दरसन करूं। सो तब आयके कृष्णदास ने देवदमन के दरसन किये। सो श्रीआचार्यजी आपु राजभोग आरती किये। सो दरसन करत ही कृष्ण-दास को मन श्रीगोवर्द्धनधर ने हरि लियो। सो कृष्णदास की ओर श्रीगोवर्द्धन-धर देखि रहे। पाछे श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहे, जो-यह कृष्णदास आयो है। सो बहोत दिन को बिछुरयो है, सो मैं याकों देखत हों। तब कृष्णदास के पास आयके श्रीआचार्यजी कहे, जो-कृष्णदास! तू आयो! तब कृष्णदास ने दंडवत करिके बिनति कीनी, जो-महाराज! आपु की कृपा तें आयो हूँ। तासों अब मोकों सरन राखो। तब श्रीआचार्यजी कहे, जो जाऊ, बेगि न्हाय आवो जो तेरे साम्हें श्रीगोवर्द्धननाथजी देखि रहे हैं। तासों बेगि आय जावो। तब कृष्णदास दौरिके रुद्रकुंड में न्हाय आये। पाछे कृष्णदास श्रीआचार्य-जी के पास मंदिर में आये। तब श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धन-नाथजीके सन्निधान बैठायके नाम समर्पन कराये। सो कृष्णदास दैवीजीव हैं, सो तत्काल सगरी लीला को अनुभव भयो। सो ताही समय कृष्णदास ने यह कीर्तन गायो। सो पद—

બહુ આનંદ થશે. દેવદમન જ્યારથી બ્હાર પ્રકટ્યા શ્રીગિરિરાજ શ્રીગોવર્દ્ધનમાંથી ત્યારથી બધાને સુખ થયું છે અને બધાના મનોરથ પૂરણ કરે છે. એ સાંભળીને કૃષ્ણ-દાસ પોતાના મનમાં વિચારે કે હું પણ દેવદમનનાં દર્શન કરૂં. ત્યારે આવીને કૃષ્ણદાસે દેવદમનનાં દર્શન કર્યાં. શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે રાજભોગ આર્તિ કરી. ત્યારે દર્શન કરતાં જ કૃષ્ણદાસનું મન શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ હરી લીધું. કૃષ્ણદાસની તરફ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી જોઇ રહ્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહે, કે આ કૃષ્ણદાસ આવ્યો છે. બહુ દિવસથી વિખુટો પડયો છે તેથી હું એને જોઉં છું. ત્યારે કૃષ્ણદાસના પાસે આવીને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ! તૂ આવ્યો? ત્યારે કૃષ્ણદાસે દંડવત્ કરીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! આપની કૃપાથી આવ્યો છું. તેથી હવે મને શરણે રાખો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે જા, જલ્દી ન્હાઇ આવ. તારા સામે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી જોઇ રહ્યા છે તેથી જલ્દી આવી જજે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ દોડીને રૂદ્ર કુંડમાં ન્હાઇ આવ્યા. પછી કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે મંદિરમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કૃષ્ણદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સન્નિધાન બેસાડીને નામ-સમર્પણ કરાવ્યું. એ કૃષ્ણદાસ દૈવી જીવ છે તેથી તત્કાલ સઘળી લીલાનો અનુભવ થયો.

राग सारंग—वल्लभ पतित-उद्धारन जानो। सरनि लेत लीला दरसावत ता पर ढरत गोवर्द्धनराजो ॥ १ ॥ साधन वृथा करत दिन खोवत श्रीवल्लभ कौ रूप न जाने। जाकी कृपा कटाक्ष सफल फल ' कृष्णदास ' तीनों जनम न माने ॥ २ ॥

सो यह पद कृष्णदास ने गायो, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये। ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर कराये। ता पाछे मंदिर सिद्ध भयो। सो तब सुन्दर अक्षयतृतीया को दिन देखिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों नये मंदिर में पाट बैठाये। तब पूरनमल के सब मनोरथ सिद्ध किये। तब श्रीआचार्यजी आपु सदू पांडे कों बुलायके कहे, जो-मंदिर तो बड़ो भयो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी बिराजे। परंतु अब इनकी सेवा कों मनुष्य ठीक करयो चाहिये, तातें तुम सेवा करो। तब सदू पांडे ने बिनती कीनी, जो-महाराज! हम तो ब्रजवासी हैं, जो-आचार विचार सेवा की रीति कछू समुझत नाहीं हैं। और घर के अनेक काम हैं, तासों आपु आज्ञा देउ तो राधाकुंड ऊपर बंगाली रहत हैं, सो अष्ट प्रहर भजन करत हैं। तासों उनकों राखे तो बुलाय लाऊँ। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-बुलाय लावो। सो सदू पांडे बंगाली बीस-पचीस बुलाय लाये। तब उनकों रुद्रकुंड ऊपर झोंपरी बनवाय दीनी, और श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा दीनी। और कृष्णदास कों भेटिया किये। जो तुम परदेस तें भेट लायके बंगालीन कों दीजो। सो या भांति सों सेवा करोगे। या प्रकार सब

તેજ સમયે કૃષ્ણદાસે આ કીર્તન ગાયું. તે પદઃ—'વલ્લભ પતિત ઉદ્ધારન જાનો'(ઉપર જુઓ) એ પદ કૃષ્ણદાસે ગાયું. એ સાંભળીને શ્રીઆચાર્યજી આપ પ્રસન્ન થયા. તે પછી શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને અનોસર કરાવ્યા. તે પછી મંદિર સિદ્ધ થયું. ત્યારે સુંદર અક્ષયતૃતિયાનો દિવસ જોઈને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પાટ બેસાડ્યા. ત્યારે પૂરણમલનાં બધા મનોરથ સિદ્ધ થયા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે સદ્દૂ પાંડેને બોલાવીને કહે, કે મંદિર તો મોટું થયું એમાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી બિરાજ્યા. પરંતુ હવે એમની સેવા માટે મનુષ્યનો બંદોબસ્ત કરવો જોઈએ તેથી તમે સેવા કરો. ત્યારે સદ્દૂ પાંડેએ વિનંતી કરી, કે મહારાજ! અમે તો વ્રજવાસી છીએ. આચાર-વિચાર સેવાની રીતિ કંઈ સમજતા નથી. વળી ઘરનાં અનેક કામ છે તેથી આપ આજ્ઞા દો તો રાધા કુંડ ઉપર બંગાલી રહે છે, તે અષ્ટપ્રહર ભજન કરે છે તેથી એમને રાખો તો બોલાવી લાઉં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે બોલાવી લાવો. પછી સદ્દૂ પાંડે બંગાલી વીસ પચીસ બોલાવી લાવ્યા. ત્યારે એમને રૂદ્ર કુંડ ઉપર ઝૂંપડી બનવાવી દીધી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા આપી. વળી કૃષ્ણદાસને ભેટીઆ કર્યા, કે તમે પરદેશથી ભેટ લાવીને બંગાલીઓને આપજો. એ રીતે સેવા કરજો. એ પ્રકારે બધા

बंगालीन कों रीति भांति बतायके सेवा सोंपी। और कृष्णदास परदेस तें भेट ले आवते सो बंगालीन कों देते। सो रामदास चौहान रजपूत जब नयो मंदिर बन्यो, तब देह छोड़िके लीला में जायके प्राप्त भये। तब सगरी सेवा बंगाली करते।

वार्ता-प्रसंग १—**पाछें एक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी की ओर भेट लेन कों गये। सो श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजी के दरसन करि के वैष्णवन सों भेट लेके आवत हते। सो एक वैष्णव कृष्णदास के संग हतो। सो मारग में मीराबाईको गाम आयो, सो कृष्णदासजी मीराबाई के घर गये,। तहां संत, महंत अनेक स्वामी और मारग के बैठे हते। सो काहूकों आये दस दिन, काहू कों आये बीस दिन भये हते, परंतु काहूकी बिदा न भई हती। और भेट के लिये बैठे हते। और कृष्णदास तो आवत ही कह्यो, जो-मैं तो चलूंगो। तब मीराबाईने कह्यो, जो-कछुक दिन कृपा करिके रहो। तब कृष्णदास ने कही, जो-हमारे तो जहां हमारे वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक होंयगे सो तहां रहेंगे और अन्यमार्गीय के पास हम नाहीं रहत हैं। तब मीराबाई ११ मोहोर श्रीनाथजी की भेट देन लागी सो कृष्णदास नाहीं लिये। और कृष्णदासने मीराबाई सों कह्यो, जो-तू श्रीआचार्यजी की सेवक नाहीं है, सो हम तेरी मोहोर हाथ तें न छुवेंगे।**

બંગાલીઓને રીતિ ભાંતિ બતાવીને સેવા સોંપી અને કૃષ્ણદાસ પરદેશથી ભેટ લઇને આવતા તે બંગાલીઓને આપતા અને રામદાસ ચૌહાણ રજપુત જ્યારે નવું મંદિર બન્યુ ત્યારે દેહ છોડીને લીલામાં જઇને પ્રાપ્ત થયા. ત્યારે બધી સેવા બંગાલી કરતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧-પછી એક સમય કૃષ્ણદાસ શ્રીદ્વારકાજીની તરફ ભેટ લેવાને ગયા. તે શ્રીદ્વારિકા શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરીને વૈષ્ણવોથી ભેટ લઇને આવતા હતા. ત્યારે એક વૈષ્ણવ કૃષ્ણદાસની સાથ હતો. ત્યાં માર્ગમાં મીરાંબાઇનું ગામ આવ્યું. તે કૃષ્ણદાસ મીરાંબાઇના ઘરે ગયા. ત્યાં સંતમહંત અનેક સ્વામી બીજા માર્ગના બેઠા હતા. તે કોઇને આવે દશ દિવસ ને કોઇને આવે વીસ દિવસ થયા હતા. પરંતુ કોઇની વિદાય થઇ ન હતી અને ભેટને માટે બેઠા હતા અને કૃષ્ણદાસે તો આવતાં જ કહ્યું, કે હું તો ચાલીશ. ત્યારે મીરાંબાઇએ કહ્યું, કે થોડાક દિવસ સુધી કૃપા કરીને રહો. ત્યાર કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે અમારે તો જ્યાં અમારા વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હશે ત્યાં રહીશું. અન્યમાર્ગીયની પાસે અમે નથી રહેતા. ત્યારે મીરાંબાઇ ૧૧ મહોરો શ્રીનાથજીની ભેટની દેવા લાગી. તે કૃષ્ણદાસે લીધી નહી અને કૃષ્ણદાસે મીરાંબાઇને કહ્યું, કે તૂ શ્રીઆચાર્યજીની સેવક નથી તેથી અમે તારી મહોરોને હાથથી નહીં

सो ऐसे कहिके उठि चले। तब संग के वैष्णवने कृष्णदास सों कही, जो-तुमने श्रीगोवर्द्धननाथजी की भेट क्यों फेरि दीनी ? तब कृष्णदासने वा वैष्णव सों कही, जो-भेट की कहा है ? जो बहोतेरी भेट वैष्णवन सों लेंयगे। श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहां कोई बात को टोटा नाहीं है। परंतु सगरे मारग के स्वामी महंत इतने इकठोरे कहां मिलते ? तासों सबकी नाक नीची तो करी, जानेंगे जो हम भेट के लिये इतने दिन सों बैठे हैं, और श्रीआचार्यजी को एक सेवक शूद्र इतनी मोहोर भेट न लीनी। सो जिनके सेवक ऐसे टेकी हैं, तिनके गुरुकी कहा बात होयगी ? सो ये सब या भांती सों जानेंगे। और आपुन अन्यमार्गीय की भेट काहे कों लेय ?

भावप्रकाश—तातें शिक्षापात्र में कह्यो है-'तदीयानां महद्दुःखं विजातीयेन संगमः' तदीय जो भगवदीय है, तिनकों और दुःख कछु नाहीं है। सो जेसो अन्यमारगीय विजातीय के संग को दुःख होय। तासों श्रीठाकुरजी तो निवाहें। जो विजातीय सों बोलनो नाहीं तब ही सुख है। और जो वार्ता करे तो रस को तिरोधान रसाभास निश्चय होय। तासों कृष्णदासजी मीराबाईके घर गये इतनो कहनो परघो। तासों मुख्य सिद्धांत यह जतायो, जो-स्वमार्गीय बिना काहू तें मिलनो नाहीं। और कदाचित् मिलनो परे तो अपने धर्म कों गोप्य राखे।

અડકીએ. એમ કહીને ઉઠી ચાલ્યા. ત્યારે સંગના વૈષ્ણવે કૃષ્ણદાસને કહ્યું, કે તમે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ભેટ કેમ પાછી ફેરી ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે એ વૈષ્ણવને કહ્યું, કે ભેટની શી વાત છે ? ઘણીય ભેટ વૈષ્ણવોથી લઇશું. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ત્યાં કોઇ વાતનો ટોટો નથી. પરંતુ બધા માર્ગના સ્વામી મહંત આટલા એકઠા ક્યાં મળતા ? તેથી બધાની નાક નીચી તો કરી, જાણશે કે અમે ભેટને માટે આટલા દિવસથી બેઠા છીએ અને શ્રીઆચાર્યજીના એક સેવક શૂદ્રે આટલી મહોરો ભેટ ન લીધી. જેના સેવક આવા ટેકી છે તેમના ગુરુની શી વાત હશે ? એ બધા આ પ્રકારે જાણશે વળી આપણે અન્યમાર્ગીયની ભેટ શા માટે લઇએ ?

ભાવપ્રકાશ—તેથી શિક્ષાપત્રમાં કહ્યું છે 'તદીયાનાં મહદ્દુઃખં૦' તદીય જે ભગવદીય છે તેમને બીજું દુઃખ કંઇ નથી જેવું અન્યમાર્ગીય વિજાતીયના સંગનું દુઃખ હોય. તેથી શ્રીઠાકોરજી તો નિર્વાહ કરે પરંતુ વિજાતીયથી બોલવું નથી ત્યારેજ સુખ છે. વળી જો (એનાથી) વાર્તા કરે તો રસનું તિરોધાન રસાભાસ નિશ્ચય થાય. તેથી કૃષ્ણદાસ મીરાંબાઇના ઘરે ગયા. એટલું કહેવું પડ્યું. તેથી મુખ્ય સિદ્ધાંત એ જણાવ્યો કે સ્વમાર્ગીય વિના કોઇથી બોલવું નહીં અને કદાચિત મળવું પડે તો પોતાના

बंगालीन कों रीति भांति बतायके सेवा सोंपी। और कृष्णदास परदेस तें भेट ले आवते सो बंगालीन कों देते। सो रामदास चौहान रजपूत जब नयो मंदिर बन्यो, तब देह छोड़िके लीला में जायके प्राप्त भये। तब सगरी सेवा बंगाली करते।

वार्ता–प्रसंग १—पाछें एक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी की ओर भेट लेन कों गये। सो श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजी के दरसन करि के वैष्णवन सों भेट लेके आवत हते। सो एक वैष्णव कृष्णदास के संग हतो। सो मारग में मीराबाईको गाम आयो, सो कृष्णदासजी मीराबाई के घर गये,। तहां संत, महंत अनेक स्वामी और मारग के वैठे हते। सो काहूकों आये दस दिन, काहू कों आये बीस दिन भये हते, परंतु काहूकी विदा न भई हती। और भेट के लिये बैठे हते। और कृष्णदास तो आवत ही कह्यो, जो–मैं तो चलूंगो। तब मीराबाईने कह्यो, जो–कछुक दिन कृपा करिके रहो। तब कृष्णदास ने कही, जो–हमारे तो जहां हमारे वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक होंयगे सो तहां रहेंगे और अन्यमार्गीय के पास हम नाहीं रहत हैं। तब मीराबाई ११ मोहौर श्रीनाथजी की भेट देन लागी सो कृष्णदास नाहीं लिये। और कृष्णदासने मीराबाई सों कह्यो, जो–तू श्रीआचार्यजी की सेवक नाहीं है, सो हम तेरी मोहौर हाथ तें न छुवेंगे।

બંગાલીઓને રીતિ ભાંતિ બતાવીને સેવા સોંપી અને કૃષ્ણદાસ પરદેશથી ભેટ લઇને આવતા તે બંગાલીઓને આપતા અને રામદાસ ચૌહાણ રજપુત જ્યારે નવું મંદિર બન્યુ ત્યારે દેહ છોડીને લીલામાં જઇને પ્રાપ્ત થયા. ત્યારે બધી સેવા બંગાલી કરતા.

વાર્તા–પ્રસંગ ૧–પછી એક સમય કૃષ્ણદાસ શ્રીદ્વારકાજીની તરફ ભેટ લેવાને ગયા. તે શ્રીદ્વારિકા શ્રીરણછોડજીનાં દર્શન કરીને વૈષ્ણવોથી ભેટ લઇને આવતા હતા. ત્યારે એક વૈષ્ણવ કૃષ્ણદાસની સાથ હતો. ત્યાં માર્ગમાં મીરાંબાઇનું ગામ આવ્યું. તે કૃષ્ણદાસ મીરાંબાઇના ઘરે ગયા. ત્યાં સંતમહંત અનેક સ્વામી બીજા માર્ગના બેઠા હતા. તે કોઇને આવે દશ દિવસ ને કોઇને આવે વીસ દિવસ થયા હતા. પરંતુ કોઇની વિદાય થઇ ન હતી અને ભેટને માટે બેઠા હતા અને કૃષ્ણદાસે તો આવતાં જ કહ્યું, કે હું તો ચાલીશ. ત્યારે મીરાંબાઇએ કહ્યું, કે થોડાક દિવસ સુધી કૃપા કરીને રહો. ત્યાર કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે અમારે તો જ્યાં અમારા વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હશે ત્યાં રહીશું. અન્યમાર્ગીયની પાસે અમે નથી રહેતા. ત્યારે મીરાંબાઇ ૧૧ મહોરો શ્રીનાથજીની ભેટની દેવા લાગી. તે કૃષ્ણદાસે લીધી નહી અને કૃષ્ણદાસે મીરાંબાઇને કહ્યું, કે તૂ શ્રીઆચાર્યજીની સેવક નથી તેથી અમે તારી મહોરોને હાથથી નહીં

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक हते सो व्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय हते, सो अडींग के वासी हते । सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है । सो रासपंचाध्याई में जब श्रीठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नांई मगन होय गये । सो ये भक्तको प्रागट्य अवधूतदासजी को है । सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है । सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे । जब ब्रज में अकाल परयो, तब मा बाप बनिया कों बेटा देके आपु तो पूरब कों गये । पाछें अवधूतदास बरस पंद्रहके भये । तब वह बनियाको घर छोड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी । जो-महाराज! मोकों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेयंगे । तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु । तब अवधूतदास गोविदकुंड में न्हाय आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे । ता समय श्रीगोवर्द्धधनधर कों राजभोग आयो हतो । तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायकें श्रीगोवर्द्धनधर कें सान्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो । तब

ભાવપ્રકાશ—એક અવધૂતદાસ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હતા તે વ્રજમાં ફર્યા કરતા. એ મહાન કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તે અડીંગના વાસી હતા. તે અવધૂતદાસજી કુમારિકાના યૂથમાં છે. તે રાસપંચાધ્યાઇમાં જ્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રકટ થયા ત્યારે આ ભક્ત બધા સ્વરૂપનાં દર્શન કરીને નેત્ર મૂંદીને યોગીની માફક મગન થઇ ગયા. એ ભક્ત (માં) નું પ્રાકટ્ય અવધૂતદાસનું છે લીલામાં એમનું નામ 'કેતિની' છે. તે અડીંગમાં એક સનોડીઆ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. જ્યારે વ્રજમાં અકાલ પડ્યો ત્યારે મા–બાપ વાણિયાને બેટો આપીને પોતે પૂરવમાં ગયા પછી અવધૂતદાસ વર્ષ પંદરના થયા, ત્યારે એ વાણિયાનું ઘર છોડીને મથુરામાં આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે અમારા સાથે શ્રીગોવર્દ્ધન ચાલો. શ્રીનાથજીના સાન્નિધ્ય શરણે લઇશું. ત્યારે અવધૂતદાસ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે શ્રીગિરિરાજ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે અવધૂતદાસને કહે, કે તમે ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ લો. ત્યારે અવધૂતદાસ ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે ગોવિંદકુંડમાં સ્નાન કરીને મંદિરમાં પધાર્યા. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો રાજભોગ આવ્યો હતો. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી અવધૂતદાસને બોલાવીને

सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

‘ विजातीयजनाकीर्णे निजधर्मस्य गोपनं ।
देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव मे मतिः’ ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नाहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपनो धर्म रहे । सो काहेतें ? जो–लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास एसें टेकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता–प्रसंग २—**और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिये हते। और मोरपक्ष को मुकुट, काछिनी, बागा सब बनवाय दिये हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।**

ધર્મને ગોપ્ય રાખે તેથી શ્રીગુસાંઇજી પોતે ચતુઃશ્લોકીમાં કહે છે, ‘ વિજાતીયજના૦ ’ (ઉપર જુઓ). એવા દેશમાં જાય જ્યાં કોઈ વૈષ્ણવ ન હોય ત્યાં પોતાનો ધર્મ પ્રકટ ન કરે ત્યારે પોતાનો ધર્મ રહે. કેમકે ? લૌકિકમાં પણ પરનાળો છે તેથી ન્હાયો હોય તે બચીને ચાલે. તેમ ઉત્તમ જનને બધા પ્રકારથી બચવું પડે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના ભોગ યોગ રહે તેવોજ વૈષ્ણવ ધર્મ છે. તેથી આ ધર્મની રક્ષા રાખે તો રહે. એ સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨–વળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો શૃંગાર બંગાલી કરતા. શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને મીનાનાં બધાં આભરણ સિદ્ધ કરાવ્યાં હતાં અને મોરપક્ષનો મુકુટ, કાછની વાગા બધું બનવાવી દીધું હતું. બંગાલી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા કરતા હતા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભેટ આવતી તે ભેગી કરીને બધી પોતાના ગુરૂને ત્યાં મોકલાવવા લાગ્યા. તે જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં કૃષ્ણદાસને અધિકારી કર્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ મથુરા આગરાથી સામગ્રી લાવી દેતા.

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक हते सो व्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय हते, सो अडींग के वासी हते। सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है। सो रासपंचाध्याई में जब श्रीठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नांई मगन होय गये। सो ये भक्तको प्रागट्य अवधूतदासजी को है। सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है। सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे। जब व्रज में अकाल परयो, तब मा बाप वनिया कों बेटा देके आपु तो पूरब कों गये। पाछें अवधूतदास बरस पंद्रहके भये। तब वह वनियाको घर छोड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी। जो-महाराज! मोकों सरन लीजिये। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेयंगे। तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये। पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु। तब अवधूतदास गोविदकुंड में न्हाय आये। पाछे श्रीआचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे। ता समय श्रीगोवर्द्धधनधर कों राजभोग आयो हतो। तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायकें श्रीगोवर्द्धनधर कें सान्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो। तब

ભાવપ્રકાશ—એક અવધૂતદાસ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હતા તે વ્રજમાં ફર્યા કરતા. એ મહાન કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તે અડીંગના વાસી હતા. તે અવધૂતદાસજી કુમારિકાના યૂથમાં છે. તે રાસપંચાધ્યાઈમાં જ્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રકટ થયા ત્યારે આ ભક્ત બધા સ્વરૂપનાં દર્શન કરીને નેત્ર મૂંદીને યોગીની માફક મગન થઇ ગયા. એ ભક્ત (માં) નું પ્રાકટ્ય અવધૂતદાસનું છે લીલામાં એમનું નામ 'કેતિની' છે. તે અડીંગમાં એક સનોડીઆ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. જ્યારે વ્રજમાં અકાલ પડ્યો ત્યારે મા-બાપ વાણિયાને બેટો આપીને પોતે પૂરવમાં ગયા પછી અવધૂતદાસ વર્ષ પંદરના થયા, ત્યારે એ વાણિયાનું ઘર છોડીને મથુરામાં આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે અમારા સાથે શ્રીગોવર્દ્ધન ચાલો. શ્રીનાથજીના સાન્નિધ્ય શરણે લઇશું. ત્યારે અવધૂતદાસ શ્રીઆચાર્યજીની સાથે શ્રીગિરિરાજ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે અવધૂતદાસને કહે, કે તમે ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ લો. ત્યારે અવધૂતદાસ ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે ગોવિંદકુંડમાં સ્નાન કરીને મંદિરમાં પધાર્યા. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો રાજભોગ આવ્યો હતો. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી અવધૂતદાસને બોલાવીને

सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

'विजातीयजनाकीर्णे निजधर्मस्य गोपनं ।
देशे विधाय सततं स्थैयमित्येव मे मतिः' ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नाहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपनो धर्म रहे । सो काहेतें ? जो–लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास एसे टेकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता–प्रसंग २—और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिये हते। और मोरपक्ष को मुकुट, काछिनी, बागा सब बनवाय दिये हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।

ધર્મને ગોપ્ય રાખે તેથી શ્રીગુસાંઇજી પોતે ચતુઃશ્લોકીમાં કહે છે, 'વિજાતીયજના૦' (ઉપર જુઓ). એવા દેશમાં જાય જ્યાં કોઈ વૈષ્ણવ ન હોય ત્યાં પોતાનો ધર્મ પ્રકટ ન કરે ત્યારે પોતાનો ધર્મ રહે. કેમકે ? લૌકિકમાં પણ પરનાળો છે તેથી ન્હાયો હોય તે બચીને ચાલે. તેમ ઉત્તમ જનને બધા પ્રકારથી બચવું પડે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના ભોગ યોગ રહે તેવોજ વૈષ્ણવ ધર્મ છે. તેથી આ ધર્મની રક્ષા રાખે તો રહે. એ સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨–વળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો શૃંગાર બંગાલી કરતા. શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને મીનાનાં બધાં આભરણ સિદ્ધ કરાવ્યાં હતાં અને મોરપક્ષનો મુકુટ, કાછની વાગા બધું બનવાવી દીધું હતું. બંગાલી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા કરતા હતા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભેટ આવતી તે ભેગી કરીને બધી પોતાના ગુરુને ત્યાં મોકલાવવા લાગ્યા. તે જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં કૃષ્ણદાસને અધિકારી કર્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ મથુરા આગરાથી સામગ્રી લાવી દેતા.

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक हते सो व्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय हते, सो अडींग के वासी हते। सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है। सो रासपंचाध्याई में जब श्री-ठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नांई मगन होय गये। सो ये भक्तको प्रागट्य अवधूतदासजी को है। सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है। सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे। जब व्रज में अकाल परयो, तब मा बाप बनिया कों बेटा देके आपु तो पूरब कों गये। पाछें अवधूतदास बरस पंद्रहके भये। तब वह बनियाको घर छो-ड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी। जो-महाराज! मोकों सरन लीजिये। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेयंगे। तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये। पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु। तब अवधूतदास गोविंदकुंड में न्हाय आये। पाछे श्री-आचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे। ता समय श्रीगो-वर्द्धनधर कों राजभोग आयो हतो। तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायकें श्रीगोवर्द्धनधर के सान्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो। तब

ભાવપ્રકાશ—એક અવધૂતદાસ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક હતા તે વ્રજમાં ફર્યા કરતા. એ મહાન કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. તે અડીંગના વાસી હતા. તે અવધૂતદાસજી કુમારિકાના યૂથમાં છે. તે રાસપંચાધ્યાઇમાં જ્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રકટ થયા ત્યારે આ ભક્ત બધા સ્વરૂપનાં દર્શન કરીને નેત્ર મૂદીને યોગીની માફક મગન થઇ ગયા. એ ભક્ત (માં) નું પ્રાકટ્ય અવધૂતદાસનું છે લીલામાં એમનું નામ ' કેતિની ' છે. તે અડીંગમાં એક સનોડીઆ બ્રાહ્મણના ઘરે જન્મ્યા. જ્યારે વ્રજમાં અકાલ પડ્યો ત્યારે મા–બાપ વાણિયાને બેટો આપીને પોતે પૂરવમાં ગયા પછી અવધૂતદાસ વર્ષ પંદરના થયા, ત્યારે એ વાણિયાનું ઘર છોડીને મથુરામાં આવીને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન કરી વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે અમારા સાથે શ્રીગોવર્દ્ધન ચાલો. શ્રીનાથજીના સાન્નિધ્ય શરણે લઈશું. ત્યારે અવધૂતદાસ શ્રી-આચાર્યજીની સાથે શ્રીગિરિરાજ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે અવધૂતદાસને કહે, કે તમે ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ લો. ત્યારે અવધૂતદાસ ગોવિંદકુંડમાં ન્હાઇ આવ્યા. પછી શ્રીઆચાર્યજી પોતે ગોવિંદકુંડમાં સ્નાન કરીને મંદિરમાં પધાર્યા. તે સમયે શ્રીગોવર્દ્ધન-ધરનો રાજભોગ આવ્યો હતો. ત્યારે સમય થયે ભોગ સરાવી અવધૂતદાસને બોલાવીને

सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

'विजातीयजनाकीर्णे निजधर्मस्य गोपनं ।
देशे विधाय सततं स्थैयमित्येव मे मतिः' ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नाहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपनो धर्म रहे । सो काहेतें ? जो–लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास एसे टेकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता–प्रसंग २—और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिये हते । और मोरपक्ष को मुकुट, काछिनी, बागा सब बनवाय दिये हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।

ધર્મને ગોપ્ય રાખે તેથી શ્રીગુસાંઇજી પોતે ચતુઃશ્લોકીમાં કહે છે, 'વિજાતીયજના૦' (ઉપર જુઓ). એવા દેશમાં જાય જ્યાં કોઈ વૈષ્ણવ ન હોય ત્યાં પોતાનો ધર્મ પ્રકટ ન કરે ત્યારે પોતાનો ધર્મ રહે. કેમકે ? લૌકિકમાં પણ પરનાળો છે તેથી ન્હાયો હોય તે બચીને ચાલે. તેમ ઉત્તમ જનને બધા પ્રકારથી બચવું પડે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીના ભોગ યોગ રહે તેવોજ વૈષ્ણવ ધર્મ છે. તેથી આ ધર્મની રક્ષા રાખે તો રહે. એ સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો.

વાર્તા–પ્રસંગ ૨–વળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો શૃંગાર બંગાલી કરતા. શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને મીનાનાં બધાં આભરણ સિદ્ધ કરાવ્યાં હતાં અને મોરપક્ષનો મુકુટ, કાછની વાગા બધું બનવાવી દીધું હતું. બંગાલી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા કરતા હતા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભેટ આવતી તે ભેગી કરીને બધી પોતાના ગુરુને ત્યાં મોકલાવવા લાગ્યા. તે જ્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં કૃષ્ણદાસને અધિકારી કર્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસ મથુરા આગરાથી સામગ્રી લાવી દેતા.

श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा ऐसी है, जो–बंगालीन कों निकासिवे की। तासों आपु या बात में बोलो मति। तासों मैं जैसे बनेगी वैसे बंगालीन कों काढूंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–अवश्य, बंगालीन कों निकास्यो चहिये। जो बहुत दिन रहेंगे तब झगरो करेंगे। तब कृष्णदास ने कही, जो–महाराज! मोकों दोय पत्र लिखि दीजिये। सो एक तो राजा टोडरमल्ल के नाम को, और एक राजा वीरबल के नाम को। तब श्रीगुसांईजी आपु दोय पत्र लिखि दिये। जो कृष्णदास श्री-गोवर्द्धन में है सो ये तुमसों कहे, सो करि दीजो। जो हमकों बंगाली काढ़ने हैं, और सेवक राखने हैं। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हैं, तासों ये करें सो हमकों प्रमाण है। सो यह लिखिके कृष्णदास कों दोऊ पत्र दिये। तब कृष्णदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत करिके चले, सो कछुक दिन में आगरे में आये। तब राजा टोडरमल कों और बीरबल कों दोऊ पत्र श्रीगुसांईजी के हस्ताक्षरके दिखाये, तब उन कह्यो, जो–तुम कहो सो हम करें। तब कृष्णदास नें कही, जो–अब तो मैं श्रीनाथजीद्वार बंगालीन कों काढ़िवे कों जात हूँ। जो कदाचित् बंगालीन के गुरु श्रीवृन्दावन में हैं सो देसाधिपति के आगे पुकारें तब उनकी ठीक राखियो। तब उन दोऊ जनेन ने कही,

---

રાખ્યા છે. તેથી બંગાલી કેમ નિકળશે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું કે મહારાજ! શ્રીગોવર્દ્ધનધરજીની ઇચ્છા એવી છે બંગાલીઓને કાઢવાની. તેથી આપ આ વાતમાં બોલો નહીં. તેથી હું જેમ બનશે તેમ બંગાલીઓને કાઢીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું જે અવશ્ય બંગાલીઓને કાઢવા જોઇએ. બહુ દિવસ રહેશે ત્યારે ઝઘડો કરશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, મહારાજ! મને બે પત્ર લખી દો. એક તો રાજા ટોડરમલના નામનો અને એક રાજા બીરબલના નામનો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે બે પત્રો લખી દીધા કે કૃષ્ણદાસ ગોવર્દ્ધનમાં છે તે તમને કહે તે કરી દેજો. અમારે બંગાલી કાઢવા છે અને બીજા સેવક રાખવા છે. અને કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી છે. તેથી એ કહે તે અમને પ્રમાણ છે. આ લખીને કૃષ્ણદાસને બે પત્રો આપ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને ચાલ્યા. તે થોડાક દિવસમાં આગ્રામાં આવ્યા. ત્યારે રાજા ટોડરમલને અને બીરબલને બન્ને પત્ર શ્રીગુસાંઇજીના હસ્તાક્ષરના દેખાડ્યા. ત્યારે એમણે કહ્યું કે તમે કહો તે અમે કરીએ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હમણાં તો હું શ્રી-નાથજીદ્વાર બંગાલીઓને કાઢવાને જઉં છું. જો કદાચિત બંગાલીઓના ગુરુ વૃંદાવનમાં છે તે દેશાધિપતિ આગળ પોકારે ત્યારે એમની ખબર રાખજો. ત્યારે એ બન્ને જણાએ

श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कों दंडवत किये। पाछें श्रीगुसांईजी पूछे, जो-कृष्णदास! तुम श्रीनाथजी की सेवा छोड़िके क्यों आये? तब कृष्णदास ने कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अपनो वैभव बढ़ावनो है, और बंगालीन की चुटिया में एक देवी है, सो राज-भोग के समें बैठावत हैं। और जो-भेट आवत है सो सब वृन्दावन में अपने गुरून कों पठाय देन हैं। सो अबही तें काहू को मानत नाहीं हैं। सो आगे बहोत दिन तांई बंगाली रहेंगे तो झगड़ो बढ़ेगो। तासों बंगालीन कों आपु काढ़िवे की आज्ञा दीजिये, सो मैं जायके काढ़ूंगो। तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्णदास सों कहे, जो-श्रीगोपीनाथजी पहेलो परदेस पूरवको कियो हतो, सो एक लक्ष रुपया पूरव सों भेट आई हती। सो गोपीनाथजी प्रथम अड़ेल में आयके कहे। जो-यह पहले परदेस की भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी की है। सो यह कहिके लक्ष रुपया लेके श्रीगोपीनाथजी श्रीजीद्वार पधारे, सो तहां रूपे सोने के थार, कटोरा श्रीनाथजी कों कराये। ता पाछें सेवा सिंगार करि श्रीगोपीनाथजी अड़ेलमें आये। तब बंगाली सब मिलिकें सगरे थार कटोरा द्रव्य वृंदा-वन में अपने गुरुन के यहां पठाय दिये। सो सब समाचार हमारे पास आये परि हम कहा करें? जो बंगालीन कों श्रीआचार्यजीने राखे हैं। सो तासों बंगाली कैसे निकसेंगे। तब कृष्णदासनें कह्यो, जो-महाराज!

કર્યા. પછી શ્રીગુસાંઇજી પૂછે કે કૃષ્ણદાસ! તમે શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને કેમ આવ્યા? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું. કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પોતાનો વૈભવ વધારવો છે અને બંગા-લીઓની ચોટલીમાં એક દેવી છે તેને રાજભોગના સામે બેસાડે છે અને જે ભેટ આવે છે તે બધા વૃંદાવનમાં પોતાના ગુરૂને મોકલી દે છે. હમણાંથીજ તે કોઇને માનતા નથી. એથી આગળ બહુ દિવસ સુધી બંગાલી રહેશે તો ઝઘડો થશે. તેથી બંગાલી-ઓને કાઢવાની આજ્ઞા આપો. હું જઇને કાઢીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કૃષ્ણદાસને કહે કે શ્રીગોપીનાથજીએ પહેલો પરદેશ પૂર્વનો કર્યો હતો ત્યારે એક લાખ રૂપીઆ પૂરવથી ભેટ આવી હતી. ત્યારે શ્રીગોપીનાથજીએ પ્રથમ અડેલમાં આવીને કહ્યું, કે આ પહેલા પરદેશની ભેટ શ્રીનાથજીની છે. એમ કહીને લાખ રૂપીઆ લઇને શ્રીગોપી-નાથજી શ્રીજીદ્વાર પધાર્યા. ત્યાં રૂપા સોનાના થાળ કટોરા શ્રીનાથજીને કરાવ્યા. તે પછી સેવા શૃંગાર કરી શ્રીગોપીનાથજી અડેલમાં આવ્યા. ત્યારે બંગાળી બધા મળીને બધા થાળ કટોરા દ્રવ્ય વૃંદાવનમાં પોતાના ગુરુને ત્યાં મોકલી દીધાં. તે બધા સમાચાર અમારી પાસે આવ્યા પરંતુ અમે શું કરીએ? બંગાલીઓને શ્રીઆચાર્યજીએ

श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा ऐसी है, जो–बंगालीन कों निकासिवे की। तासों आपु या बात में बोलो मति। तासों मैं जैसे बनेगी वैसे बंगालीन कों काढूंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–अवश्य, बंगालीन कों निकास्यो चहिये। जो बहुत दिन रहेंगे तब झगरो करेंगे। तब कृष्णदास ने कही, जो–महाराज! मोकों दोय पत्र लिखि दीजिये। सो एक तो राजा टोडरमल्ल के नाम को, और एक राजा बीरबल के नाम को। तब श्रीगुसांईजी आपु दोय पत्र लिखि दिये। जो कृष्णदास श्री-गोवर्द्धन में है सो ये तुमसों कहे, सो करि दीजो। जो हमकों बंगाली काढ़ने हैं, और सेवक राखने हैं। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हैं, तासों ये करें सो हमकों प्रमाण है। सो यह लिखिके कृष्णदास कों दोऊ पत्र दिये। तब कृष्णदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत करिके चले, सो कछुक दिन में आगरे में आये। तब राजा टोडरमल कों और बीरबल कों दोऊ पत्र श्रीगुसांईजी के हस्ताक्षरके दिखाये, तब उन कह्यो, जो–तुम कहो सो हम करें। तब कृष्णदास नें कही, जो–अब तो मैं श्रीनाथजीद्वार बंगालीन कों काढ़िवे कों जात हूँ। जो कदाचित् बंगालीन के गुरु श्रीवृन्दावन में हैं सो देसाधिपति के आगे पुकारें तब उनकी ठीक राखियो। तब उन दोऊ जनेन ने कही,

---

રાખ્યા છે. તેથી બંગાલી કેમ નિકળશે? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું કે મહારાજ! શ્રીગોવ-ર્દ્ધનધરજીની ઇચ્છા એવી છે બંગાલીઓને કાઢવાની. તેથી આપ આ વાતમાં બોલો નહીં. તેથી હું જેમ બનશે તેમ બંગાલીઓને કાઢીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ કહ્યું જે અવશ્ય બંગાલીઓને કાઢવા જોઇએ. બહુ દિવસ રહેશે ત્યારે ઝઘડો કરશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, મહારાજ! મને બે પત્ર લખી દો. એક તો રાજા ટોડરમલના નામનો અને એક રાજા બીરબલના નામનો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે બે પત્રો લખી દીધા કે કૃષ્ણદાસ ગોવર્દ્ધનમાં છે તે તમને કહે તે કરી દેજો. અમારે બંગાલી કાઢવા છે અને બીજા સેવક રાખવા છે. અને કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી છે. તેથી એ કહે તે અમને પ્રમાણ છે. આ લખીને કૃષ્ણદાસને બે પત્રો આપ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને ચાલ્યા. તે થોડાક દિવસમાં આગ્રામાં આવ્યા. ત્યારે રાજા ટોડરમલને અને બીરબલને બન્ને પત્ર શ્રીગુસાંઇજીના હસ્તાક્ષરના દેખાડયા. ત્યારે એમણે કહ્યું કે તમે કહો તે અમે કરીએ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હમણાં તો હું શ્રી-નાથજીદ્વાર બંગાલીઓને કાઢવાને જઉં છું. જો કદાચિત્ બંગાલીઓના ગુરુ વૃંદાવનમાં છે તે દેશાધિપતિ આગળ પોકારે ત્યારે એમની ખબર રાખજો. ત્યારે એ બન્ને જણાએ

जो-तुम जाउ। तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो। जो हम ठीक राखेंगे। पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये। पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये। तहाँ मारग में अवधूतदास मिले। तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास! ढील क्यों करि राखी है? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है। तासों बंगालीन कों वेगि काढ़ो। जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है। तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ। और अब जातही बंगालीन कों काढ़त हूँ। सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये। सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी। तब सोर भयो। सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे। तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिये। और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो। और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सों कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो। तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकुटी लेके ठाड़े भये। पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

કહ્યું, કે તમે જાવ. તમને શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા હોય તેમ કરો. અમે ઠીક રાખશું. પછી કૃષ્ણદાસ આગ્રાથી ચાલ્યા તે મથુરા આવ્યા. પછી મથુરાથી ગોવર્દ્ધન આવ્યા ત્યાં માર્ગમાં અવધૂતદાસ મળ્યા. ત્યારે અવધૂતદાસે કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ! ઢીલ કેમ કરી રાખી છે? શ્રીનાથજીને પોતાનો વૈભવ વધારવો છે તેથી બંગાળીઓને જલ્દી કાઢો. શ્રીગોવર્દ્ધનધરની ઇચ્છા છે ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હું શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા લઇ આવ્યો છું અને હવે જતાંજ બંગાળીઓને કાઢું છું. એ કહીને કૃષ્ણદાસ ચાલ્યા તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. તે રૂદ્રકુંડ ઉપર આવીને બંગાળીની ઝોંપડીમાં આગ લગાડાવી દીધી. ત્યારે શોર થયો એટલે બધા બંગાળી શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને પરવતથી નીચે ઉતરીને પોત-પોતાની ઝોંપડીમાં આવ્યા. તે અગ્નિ બુઝાવા લાગ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં બધી જગે પોતાના મનુષ્ય વ્રજવાસી બસે રાખ્યા હતા તે બેસાડી દીધા અને કહ્યું કે કોઈ બંગાળી પર્વત ઉપર ચઢે તેને તમે ચઢવા ન દેતા. અને બ્રાહ્મણ સેવક ભીતરિયાઓને કહ્યું, કે તમે શ્રીનાથજીની સેવામાં સાવધાન રહેજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસ પર્વતથી નીચે હાથમાં લાકડી લઇને ઉભા રહ્યા.

चढ़न लागे। तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है। जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं। तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं। सो तब लराई भई। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये। तब सगरे बंगाली भाजे। तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी। और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं। सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योंरे! शूद्र! तैने इन ब्राह्मणन कों क्यों मार्‌यो है? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाव देयगो? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं। परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों। तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो। तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाब देत में बहोत दुःख पावोगे। जो-तुमसों

પછી બંગાલી અગ્નિ બુઝાવીને બધા આવ્યા. તે પર્વત ઉપર મંદિરમાં ચઢવા લાગ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે બંગાલીઓને કહ્યું, કે હવે તમારૂં કામ સેવામાં નથી અમે બીજા ચાકર રાખ્યા છે એ સેવા કરવાને ગયા છે. ત્યારે બંગાલીઓએ લડવાની તૈયારી કરી અને કહ્યું કે અમારો ઠાકુર છે. અમને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ રાખ્યા છે. પછી કૃષ્ણદાસે બંગાલીઓને ભગાડી દીધા. ત્યારે મથુરામાં આવીને રૂપસનાતનને બધી વાત કહી, કે કૃષ્ણદાસ જાતિનો શૂદ્ર એણે બધાની ઝૂંપડી બળાવી દીધી અને બધાને મારીને સેવામાંથી બહાર કાઢી દીધા છે. આ પ્રકારે વાત કરતા હતા એટલામાં કૃષ્ણદાસ પણ રથ ઉપર ચઢીને પચાસ વ્રજવાસીઓ હથિયારબંધ સાથે લઇને શ્રીમથુરાજીમાં આવ્યા. તે પહેલાં રૂપસનાતનની પાસે ગયા. ત્યારે રૂપસનાતને કૃષ્ણદાસને ખીજીને કહ્યું, કે કેમ રે શૂદ્ર? તેં આ બ્રાહ્મણોને કેમ માર્યા છે? એ વાત દેશાધિપતિ સાંભળશે તો તૂં શો જવાબ આપીશ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, હું તો શૂદ્ર છું પરંતુ મેં બ્રાહ્મણોને સેવક નથી કર્યા. તમે પણ અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ તો નથી. તમેય પણ કાયસ્થ છો. કાયસ્થ થઇને આ બ્રાહ્મણોને દંડવત્ કરાવી સેવક કરો છો. તે તમે પણ જવાબ દેવામાં બહુ દુઃખ પામશો. તમા-

जो-तुम जाउ। तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो। जो हम ठीक राखेंगे। पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये। पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये। तहाँ मारग में अवधूतदास मिले। तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास! ढील क्यों करि राखी है? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है। तासों बंगालीन कों वेगि काढ़ो। जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है। तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ। और अब जातही बंगालीन कों काढ़त हूँ। सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये। सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी। तब सोर भयो। सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे। तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य व्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिये। और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो। और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सों कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो। तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकुटी लेके ठाड़े भये। पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

કહ્યું, કે તમે જાવ. તમને શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા હોય તેમ કરો. અમે ઠીક રાખશું. પછી કૃષ્ણદાસ આગ્રાથી ચાલ્યા તે મથુરા આવ્યા. પછી મથુરાથી ગોવર્દ્ધન આવ્યા ત્યાં માર્ગમાં અવધૂતદાસ મળ્યા. ત્યારે અવધૂતદાસે કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ! ઢીલ કેમ કરી રાખી છે? શ્રીનાથજીને પોતાનો વૈભવ વધારવો છે તેથી બંગાલીઓને જલ્દી કાઢો. શ્રીગોવર્દ્ધનધરની ઇચ્છા છે ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હું શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા લઇ આવ્યો છું અને હવે જતાંજ બંગાલીઓને કાઢું છું. એ કહીને કૃષ્ણદાસ ચાલ્યા તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. તે રૂદ્રકુંડ ઉપર આવીને બંગાલીની ઝોંપડીમાં આગ લગાડાવી દીધી. ત્યારે શોર થયો એટલે બધા બંગાલી શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને પરવતથી નીચે ઉતરીને પોત-પોતાની ઝોંપડીમાં આવ્યા. તે અગ્નિ બુઝાવા લાગ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં બધી જગે પોતાના મનુષ્ય વ્રજવાસી બસે રાખ્યા હતા તે બેસાડી દીધા અને કહ્યું કે કોઈ બંગાલી પર્વત ઉપર ચઢે તેને તમે ચઢવા ન દેતા. અને બ્રાહ્મણ સેવક ભીતરિયાઓને કહ્યું, કે તમે શ્રીનાથજીની સેવામાં સાવધાન રહેજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસ પર્વતથી નીચે હાથમાં લાકડી લઇને ઉભા રહ્યા.

चढ़न लागे। तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो–अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है। जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं। तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो–हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं। सो तब लराई भई। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये। तब सगरे बंगाली भाजे। तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो–कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी। और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं। सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो–क्योंरे! शूद्र! तैंने इन ब्राह्मणन कों क्यों मारयो है? जो–यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाब देयगो? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो–हूँ तो शूद्र हौं। परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों। तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो। तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाब देत में बहोत दुःख पावोगे। जो–तुमसों

પછી બંગાળી અગ્નિ બુઝાવીને બધા આવ્યા. તે પર્વત ઉપર મંદિરમાં ચઢવા લાગ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે બંગાળીઓને કહ્યું, કે હવે તમારૂં કામ સેવામાં નથી અમે બીજા ચાકર રાખ્યા છે એ સેવા કરવાને ગયા છે. ત્યારે બંગાળીઓએ લડવાની તૈયારી કરી અને કહ્યું કે અમારો ઠાકુર છે. અમને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ રાખ્યા છે. પછી કૃષ્ણદાસે બંગાળીઓને ભગાડી દીધા. ત્યારે મથુરામાં આવીને રૂપસનાતનને બધી વાત કહી, કે કૃષ્ણદાસ જાતિનો શૂદ્ર એણે બધાની ઝોંપડી બળાવી દીધી અને બધાને મારીને સેવામાંથી બહાર કાઢી દીધા છે. આ પ્રકારે વાત કરતા હતા એટલામાં કૃષ્ણદાસ પણ રથ ઉપર ચઢીને પચાસ વ્રજવાસીઓ હથિયારબંધ સાથે લઇને શ્રીમથુરાજીમાં આવ્યા. તે પહેલાં રૂપસનાતનની પાસે ગયા. ત્યારે રૂપસનાતને કૃષ્ણદાસને ખીજીને કહ્યું, કે કેમ રે શૂદ્ર ? તેં આ બ્રાહ્મણોને કેમ માર્યા છે ? એ વાત દેશાધિપતિ સાંભળશે તો તું શો જવાબ આપીશ ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, હું તો શૂદ્ર છું પરંતુ મેં બ્રાહ્મણોને સેવક નથી કર્યા. તમે પણ અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ તો નથી. તમેય પણ કાયસ્થ છો. કાયસ્થ થઇને આ બ્રાહ્મણોને દંડવત કરાવી સેવક કરો છો. તે તમે પણ જવાબ દેવામાં બહુ દુઃખ પામશો. તમા-

जो-तुम जाउ। तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो। जो हम ठीक राखेंगे। पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये। पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये। तहाँ मारग में अवधूतदास मिले। तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास! ढील क्यों करि राखी है? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है। तासों बंगालीन कों वेगि काढ़ो। जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है। तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ। और अब जातही बंगालीन कों काढ़त हूँ। सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये। सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी। तब सोर भयो। सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे। तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य व्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिये। और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो। और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सों कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो। तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकुटी लेके ठाड़े भये। पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

કહ્યું, કે તમે જાવ. તમને શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા હોય તેમ કરો. અમે ઠીક રાખશું. પછી કૃષ્ણદાસ આગ્રાથી ચાલ્યા તે મથુરા આવ્યા. પછી મથુરાથી ગોવર્દ્ધન આવ્યા ત્યાં માર્ગમાં અવધૂતદાસ મળ્યા. ત્યારે અવધૂતદાસે કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ! ઢીલ કેમ કરી રાખી છે? શ્રીનાથજીને પોતાનો વૈભવ વધારવો છે તેથી બંગાલીઓને જલ્દી કાઢો. શ્રીગોવર્દ્ધનધરની ઇચ્છા છે ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હું શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા લઇ આવ્યો છું અને હવે જતાંજ બંગાલીઓને કાઢું છું. એ કહીને કૃષ્ણદાસ ચાલ્યા તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. તે રૂદ્રકુંડ ઉપર આવીને બંગાલીની ઝોંપડીમાં આગ લગાડાવી દીધી. ત્યારે શોર થયો એટલે બધા બંગાલી શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને પરવતથી નીચે ઉતરીને પોત-પોતાની ઝોંપડીમાં આવ્યા. તે અગ્નિ બુઝાવા લાગ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં બધી જગે પોતાના મનુષ્ય વ્રજવાસી બસે રાખ્યા હતા તે બેસાડી દીધા અને કહ્યું કે કોઈ બંગાલી પર્વત ઉપર ચઢે તેને તમે ચઢવા ન દેતા. અને બ્રાહ્મણ સેવક ભીતરિયાઓને કહ્યું, કે તમે શ્રીનાથજીની સેવામાં સાવધાન રહેજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસ પર્વતથી નીચે હાથમાં લાકડી લઇને ઉભા રહ્યા.

चढ़न लागे। तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो–अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है। जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं। तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो–हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं। सो तब लराई भई। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये। तब सगरे बंगाली भाजे। तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो–कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी। और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं। सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास व्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो–क्योंरे! शूद्र! तैंने इन ब्राह्मणन कों क्यों मार्‍यो है? जो–यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाब देयगो? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो–हूँ तो शूद्र हों। परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों। तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो। तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाव देत में बहोत दुःख पावोगे। जो–तुमसों

પછી બંગાલી અગ્નિ બુઝાવીને બધા આવ્યા. તે પર્વત ઉપર મંદિરમાં ચઢવા લાગ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે બંગાલીઓને કહ્યું, કે હવે તમારૂં કામ સેવામાં નથી અમે બીજા ચાકર રાખ્યા છે એ સેવા કરવાને ગયા છે. ત્યારે બંગાલીઓએ લડવાની તૈયારી કરી અને કહ્યું કે અમારો ઠાકુર છે. અમને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ રાખ્યા છે. પછી કૃષ્ણદાસે બંગાલીઓને ભગાડી દીધા. ત્યારે મથુરામાં આવીને રૂપસનાતનને બધી વાત કહી, કે કૃષ્ણદાસ જાતિનો શૂદ્ર એણે બધાની ઝોંપડી બળાવી દીધી અને બધાને મારીને સેવામાંથી બહાર કાઢી દીધા છે. આ પ્રકારે વાત કરતા હતા એટલામાં કૃષ્ણદાસ પણ રથ ઉપર ચઢીને પચાસ વ્રજવાસીઓ હથિયારબંધ સાથે લઇને શ્રીમથુરાજીમાં આવ્યા. તે પહેલાં રૂપસનાતનની પાસે ગયા. ત્યારે રૂપસનાતને કૃષ્ણદાસને ખીજીને કહ્યું, કે કેમ રે શૂદ્ર ? તેં આ બ્રાહ્મણોને કેમ માર્યા છે? એ વાત દેશાધિપતિ સાંભળશે તો તું શો જવાબ આપીશ ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, હું તો શૂદ્ર છું પરંતુ મેં બ્રાહ્મણોને સેવક નથી કર્યા. તમે પણ અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ તો નથી. તમેય પણ કાયસ્થ છો. કાયસ્થ થઇને આ બ્રાહ્મણોને દંડવત કરાવી સેવક કરો છો. તે તમે પણ જવાબ દેવામાં બહુ દુઃખ પામશો. તમા-

जो-तुम जाउ। तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो। जो हम ठीक राखेंगे। पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये। पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये। तहाँ मारग में अवधूतदास मिले। तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास! ढील क्यों करि राखी है? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है। तासों बंगालीन कों वेगि काढ़ो। जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है। तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ। और अब जातही बंगालीन कों काढ़त हूँ। सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये। सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी। तब सोर भयो। सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे। तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य व्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिये। और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो। और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सों कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो। तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकुटी लेके ठाड़े भये। पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

કહ્યું, કે તમે જાવ. તમને શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા હોય તેમ કરો. અમે ઠીક રાખશું. પછી કૃષ્ણદાસ આગ્રાથી ચાલ્યા તે મથુરા આવ્યા. પછી મથુરાથી ગોવર્દ્ધન આવ્યા ત્યાં માર્ગમાં અવધૂતદાસ મળ્યા. ત્યારે અવધૂતદાસે કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ! ઢીલ કેમ કરી રાખી છે? શ્રીનાથજીને પોતાનો વૈભવ વધારવો છે તેથી બંગાલીઓને જલ્દી કાઢો. શ્રીગોવર્દ્ધનધરની ઇચ્છા છે ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હું શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞા લઇ આવ્યો છું અને હવે જતાંજ બંગાલીઓને કાઢું છું. એ કહીને કૃષ્ણદાસ ચાલ્યા તે શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. તે રૂદ્રકુંડ ઉપર આવીને બંગાલીની ઝોંપડીમાં આગ લગાડાવી દીધી. ત્યારે શોર થયો એટલે બધા બંગાલી શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને પરવતથી નીચે ઉતરીને પોત-પોતાની ઝોંપડીમાં આવ્યા. તે અગ્નિ બુઝાવા લાગ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં બધી જગે પોતાના મનુષ્ય વ્રજવાસી બસે રાખ્યા હતા તે બેસાડી દીધા અને કહ્યું કે કોઈ બંગાલી પર્વત ઉપર ચઢે તેને તમે ચઢવા ન દેતા. અને બ્રાહ્મણ સેવક ભીતરિયાઓને કહ્યું, કે તમે શ્રીનાથજીની સેવામાં સાવધાન રહેજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસ પર્વતથી નીચે હાથમાં લાકડી લઇને ઉભા રહ્યા.

चढ़न लागे। तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है। जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं। तब बंगालीन ने लरिबे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं। सो तब लराई भई। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये। तव सगरे बंगाली भाजे। तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी। और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं। सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास व्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योंरे! शूद्र! तैंने इन ब्राह्मणन कों क्यों मार्यो है? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाव देयगो? तव कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं। परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों। तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो। तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाब देत में बहोत दुःख पावोगे। जो-तुमसों

પછી બંગાલી અગ્નિ બુઝાવીને બધા આવ્યા. તે પર્વત ઉપર મંદિરમાં ચઢવા લાગ્યા ત્યારે કૃષ્ણદાસે તે બંગાલીઓને કહ્યું, કે હવે તમારૂં કામ સેવામાં નથી અમે બીજા ચાકર રાખ્યા છે એ સેવા કરવાને ગયા છે. ત્યારે બંગાલીઓએ લડવાની તૈયારી કરી અને કહ્યું કે અમારા ઠાકુર છે. અમને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ રાખ્યા છે. પછી કૃષ્ણદાસે બંગાલીઓને ભગાડી દીધા. ત્યારે મથુરામાં આવીને રૂપસનાતનને બધી વાત કહી, કે કૃષ્ણદાસ જાતિનો શુદ્ર એણે બધાની ઝૂંપડી બળાવી દીધી અને બધાને મારીને સેવામાંથી બહાર કાઢી દીધા છે. આ પ્રકારે વાત કરતા હતા એટલામાં કૃષ્ણદાસ પણ રથ ઉપર ચઢીને પચાસ વ્રજવાસીઓ હથિયારબંધ સાથે લઇને શ્રીમથુરાજીમાં આવ્યા. તે પહેલાં રૂપસનાતનની પાસે ગયા. ત્યારે રૂપસનાતને કૃષ્ણદાસને ખીજીને કહ્યું, કે કેમ રે શુદ્ર ? તેં આ બ્રાહ્મણોને કેમ માર્યા છે? એ વાત દેશાધિપતિ સાંભળશે તો તૂં શો જવાબ આપીશ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, હું તો શુદ્ર છું પરંતુ મેં બ્રાહ્મણોને સેવક નથી કર્યા. તમે પણ અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ તો નથી. તમેય પણ કાયસ્થ છો. કાયસ્થ થઇને આ બ્રાહ્મણોને દંડવત્ કરાવી સેવક કરો છો. તે તમે પણ જવાબ દેવામાં બહુ દુઃખ પામશો. તમા-

जुवाब न बनेगो। और मैं तो जुवाब दे लेउंगो, जो–तिहारो मन होय तो चलो। देखो तो सही, जो–तुमसों जुवाब होत है? जो कैसे करत हों? सो यह कृष्णदास के वचन सुनिके रूपसनातन ने कही, जो–तुम जानो और ये जाने। जो हमतो कछू जानत नाहीं हैं। सो या प्रकार रूपसनातन सगरे बंगालीन के गुरू हते सो तिनने यह बात कही। तब सगरे बंगाली निरास होय के मथुरा के हाकिम के पास जायके यह बात कही। जो कृष्णदास ने हमकों श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में ते काढ़ि दिये हैं। तासों तुम कोई प्रकार सों हमकों रखाय देउ। यह बात करत हते, इतने ही में कृष्णदास हाकिम के पास आये। सो कृष्णदास को तेज देखत ही वह हाकिम उठि के कृष्णदास कों पूछि, पास बैठाय के कही, जो–तुम बड़े हो, और श्री-गोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हो। तासों तुम इन बंगालीन को गुन्हा माफ करो। अब भई सो तो भई। परि अब इनकों फेरि राखो, जो–सेवा करें। तब कृष्णदास ने कही, जो–अब तो हम इनकों नाहीं राखेंगे, अब ये हमारे चाकर नाहीं। ये चाकर होय लरिवे कों तैयार भये। इनकी झोंपरी जरि गई, तो हम इनकी झोंपरी और बनवाय देते। परन्तु ये सगरे श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा छांड़ि पर्वत तें नीचे क्यों उतरि आये? तासों अब इनको सेवा में काम नाहीं है।

રાથી જવાબ નહીં બને અને હું તો જવાબ દઇ લઇશ. તમારૂં મન હોય તો ચાલો. દેખો તો ખરા તમારાથી જવાબ થાય છે? જે કેમ કરો છો? એ કૃષ્ણદાસનાં વચન સાંભળીને રૂપસનાતને કહ્યું, કે તમે જાણો અને એ જાણે. અમે કંઈ જાણતા નથી. એ પ્રકારે રૂપસનાતન જે બધા બંગાલીઓના ગુરુ હતા તેમણે એ વાત કહી. ત્યારે બધા બંગાલીઓએ નિરાશ થઇને મથુરાના હાકેમ પાસે જઇને આ વાત કહી, કે કૃષ્ણદાસે અમને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવામાંથી કાઢી મૂક્યા છે તેથી તમે કોઇ પ્રકારે અમને રખાવી દો. એ વાત કરતા હતા એટલામાં જ કૃષ્ણદાસ હાકેમની પાસે આવ્યા. તે કૃષ્ણદાસનું તેજ જોઇને જ તે હાકેમે ઉઠીને કૃષ્ણદાસને પૂછયું, પાસ બેસાડીને કહ્યું, કે તમે મોટા છો અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી છો તેથી તમે આ બંગાલીઓનો ગુન્હો માફ કરો. હવે થયું તે થયું, પરંતુ હવે એમને ફેર રાખો, જે સેવા કરે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હવે તો અમે એમને નહી રાખીએ. હવે એ અમારા ચાકર નહીં. એ ચાકર થઇ લડવાને તૈયાર થયા. એમની ઝૂંપડી બળી ગઇ તો અમે એમની ઝૂંપ-ડીઓ બીજી બનાવરાવી દેતા, પરંતુ એ બધા શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા છોડીને

और आपु कहत हो, जो-इनकों राखो। सो अब हम या बात को पत्र श्रीगुसांईजी कों लिखेंगे। सो वे कहेंगे, तैसो करेंगे। तब वा हाकिम ने कही, जो-आछी बात है, जो तुम श्रीगुसांईजी कों लिखो, तब कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आये। ता पाछें वे बंगाली वृन्दावन में रहे। सो ता पाछे फेरि एक दिन सगरे बंगाली भेले होय देसाधिपति के पास आगरे में आयके कृष्णदास की चुगली करी। तब देसाधिपति अकबर पात्साह ने कही, जो-कृष्णदास कौन है? जो-इन ब्राह्मणन कों पूजा में ते काढ़े, सो उनकों बुलावो। तब राजा टोडरमल ने और बीरबल ने अकबर पातसाह सों कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी के हैं। सो पहले ये बंगाली सेवा में राखे हते सो इनकों खरची देते। जो-अब इनकों काढ़ि दिये हैं। तब देसाधिपति ने कही, जो-बंगाली झूठि चुगली करत हैं। जो चाकर को कहा है? तासों कृष्णदास कों बुलाय के कहो, जो-उनको मन होय तो राखे। तब देसाधिपति के मनुष्य कृष्णदास कों लेवे कों श्रीगिरिराज आये। सो कृष्णदास ने तो पहले ही सुनी हती, सो रथ ऊपर चढ़िके दस बीस आदमी लेके देसाधिपति के मनुष्यन के संग आगरे में आये। तब कृष्णदास राजा

પર્વતની નીચે કેમ ઉતરી આવ્યા? તેથી હવે એમનું સેવામાં કામ નથી અને આપ કહો છો કે એમને રાખો. તો હવે અમે આ વાતનો પત્ર શ્રીગુસાંઇજીને લખીશું. એ કહેશે તેમ કરીશું. ત્યારે એ હાકેમે કહ્યું, કે સારી વાત છે. તમે શ્રીગુસાંઇજીને લખો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શ્રીનાથજીદ્વાર આવ્યા. તે પછી તે બંગાલી વૃંદાવનમાં રહ્યા. તે પછી ફરી એક દિવસે બંગાલી બધાએ ભેગા થઇને દેશાધિપતિની પાસે આગરામાં આવીને કૃષ્ણદાસની ચુગલી કરી. ત્યારે દેશાધિપતિ અકબર પાત્સાહે કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ કોણ છે? કે આ બ્રાહ્મણોને પૂજામાંથી કાઢયા તેમને બોલાવો. ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલે અકબર પાત્સાહને કહ્યું, કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ઠાકુર શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી, શ્રીગુસાંઇજીના છે તેમણે પહેલાં એ બંગાલીને સેવામાં રાખ્યા હતા, એમને ખરચ આપતા. હવે એમને કાઢી મૂકયા છે. ત્યારે દેશાધિપતિએ કહ્યું, બંગાલી જૂઠી ચાડી કરે છે, ચાકરનું શું છે? તેથી કૃષ્ણદાસને બોલાવીને કહો, કે એમનું મન હોય તો રાખે. ત્યારે દેશાધિપતિના મનુષ્ય કૃષ્ણદાસને લેવાને શ્રીગિરિરાજ આવ્યા. તે કૃષ્ણદાસે તો પહેલાં જે સાંભળ્યું હતું તેથી રથ ઉપર ચઢીને દસ-વીસ મનુષ્ય લઇને દેશાધિપતિના મનુષ્યોની સાથે આગરામાં આવ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ રાજા ટોડરમલ અને બીરબલને મળ્યા.

टोडरमल और वीरबल सों मिले। तब राजा टोडरमल और बीरबल ने कह्यो, जो-बंगालीन ने चुगली करी हती, सो हमने कहि दीनी है। और फेरि हू आज कहि देंयगे, जो-आजु को दिन तुम यहां रहो। तब कृष्णदास उहां रहे। तब राजा टोडरमल और बीरबल दरबार के समय देसाधिपति के पास आय अकबर सों कहे, जो-कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी आये हैं, और उनको मन बंगालीन कों राखिवे को नाहीं है। जो-और चाकर राखे हैं, और ये तो काढ़े हैं। तब देसाधिपति ने कही, जो-आछो, उनको मन होय सो ताकों चाकर राखें। यामें झूठो झगरो कहा है? तासों बंगालीन कों काढ़ि देउ। तब राजा टोडरमल और बीरबल ने आयके बंगालीन सों कही, जो-देसाधिपति को हुकम तुमकों काढ़ि देवे को भयो है, तासों तुम चुप होयके चले जाउ। जो-झगरो करोगे तो दुःख पावोगे। तासों हमने तुमकों समुझाय दियो है। तब सगरे बंगाली निरास होयके चले आये। सो वृन्दावन में रहे। और कृष्णदास राजा टोडरमल और वीरबल सों विदा होयके चले आये, सो श्रीगिरिराज ऊपर आये। ता पाछें दोय कासिद बुलाय के श्रीगुसांईजी कों विनती पत्र लिख्यो, तामें यह लिख्यो, जो-बंगालीन कों आपु की आज्ञा तें

ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલે કહ્યું, કે બંગાલીઓએ જૂઠી ચુગલી કરી હતી તેથી અમે કહી દીધું છે અને ફરી પણ આજ કહી દઇશું. જેથી આજનો દિવસ તમે અહીં રહો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ત્યાં રહ્યા. ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલ દરબારના સમયે દેશાધિપતિની પાસે આવી અકબરને કહે, કે કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી આવ્યા છે અને એમનું મન બંગાલીઓને રાખવાનું નથી. બીજા ચાકર રાખ્યા છે અને એમને તો કાઢ્યા છે. ત્યારે દેશાધિપતિ કહે, કે સારૂં. એમનું મન હોય તેને ચાકર રાખે એમાં જૂઠો ઝઘડો શો છે? તેથી બંગાલીઓને કાઢી મૂકો. ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલે આવીને બંગાલીઓને કહ્યું, કે દેશાધિપતિનો હુકમ તમને કાઢી મૂકવાનો થયો છે. તેથી તમે ચૂપ થઇને ચાલ્યા જાવ. જો ઝઘડો કરશો તો દુઃખ પામશો. તેથી અમે તમને સમજાવી દીધું. ત્યારે બધા બંગાલી નિરાશ થઇને ચાલ્યા ગયા. શ્રીવૃંદાવનમાં રહ્યા અને કૃષ્ણદાસ રાજા ટોડરમલ અને બીરબલથી વિદાય થઇને ચાલ્યા આવ્યા. તે શ્રીગિરિરાજજી ઉપર આવ્યા. તે પછી બે કાસદને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતીપત્ર લખ્યો. તેમાં એ લખ્યું, કે બંગાળીઓને આપની આજ્ઞાથી કાઢ્યા તેનો

काढ़े, ताको देसाधिपति सों जुवाब होय चुक्यो है, जो-अब झगरो मिटि गयो है। और बंगाली झूठे राजद्वार तें परि चुके हैं। तासों अब आपु कृपा करिके पधारिये। सो दोय जोड़ी कासिद की श्रीगुसांईजी के पास गई। तब श्रीगुसांईजी आपु पत्र बांचि अड़ेल तें वेगि ही पधारे, सो श्रीनाथजीद्वार आयके कृष्णदास कों बुलाय श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख अधिकारी को दुसालो उढ़ायो। और श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखतें कहे, जो-कृष्णदास! तुमने बड़ी सेवा करी है, जो-यह काम तुमही तें बने जो बंगालीन कों काढ़े। तासों अब सगरो अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजी को तुमही करो। हमहू चूकें तो कहियो, जो-कोई बात को संकोच मति राखियो। जो सगरे सेवक टहलुवान के ऊपर तिहारो हुकुम, और की कहा है? जो-ऐसी सेवा तुम ही करी, जो-तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कहोगे सोई करेंगे। तुम श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हो, सो तिहारी आज्ञा में (जो) चलेंगे तिन सबन को भलो होयगो। तासों अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा भली भांति सों करियो। सो सावधान रहियो। पाछें कृष्णदास श्रीगुसांईजी (और) श्रीगोवर्द्धननाथजी कों साष्टांग दंडवत करिके अधिकार की सगरी सेवा करन लागे। ता दिनतें श्रीनाथजी के अधिकार की गादी बिछवे लगी। श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें

દેશાધિપતિ આગળ ઉત્તર થઇ ચૂકયો છે. હવે ઝઘડો મટી ગયો છે અને બંગાલી રાજદ્વારમાં ઝૂઠા પડી ચૂકયા છે. તેથી હવે આપ કૃપા કરીને પધારીએ. તે બે જોડી કાસદની શ્રીગુસાંઇજીની પાસે ગઇ ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે પત્ર વાંચી અડેલથી જલ્દી પધાર્યા. પછી શ્રીનાથજીદ્વાર આવીને કૃષ્ણદાસને બોલાવી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના સન્મુખ અધિકારીનો દુસાલો ઓઢાવ્યો અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીમુખથી કહે, કે કૃષ્ણદાસ! તમે ભારી સેવા કરી છે. આ કામ તમારાથીજ થાય, કે બંગાલીઓને કાઢયા તેથી હવે બધો અધિકાર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો તમેજ કરો. અમે પણ ચૂકીએ તો કહેજો. કોઇ વાતનો સંકોચ ન રાખતા. બધા સેવક ટહેલવા ઉપર તમારો હુકમ બીજાની શી વાત? જે આવી સેવા તમેજ કરી તેથી તમે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને (ય) કહેશો તેજ કરશે. તમે શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર છો. તમારી આજ્ઞામાં જે ચાલશે તે બધાનું ભલું થશે. તેથી હવે તમે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા ભલી-ભાંતિથી કરજો અને સાવધાન રહેજો. પછી કૃષ્ણદાસ શ્રીગુસાંઇજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કરીને અધિકારીની બધી સેવા કરવા લાગ્યા. તે દિવસથી શ્રીનાથજીના અધિકારની ગાદી બિછવા

टोडरमल और बीरबल सों मिले। तब राजा टोडरमल और बीरबल ने कह्यो, जो–बंगालीन ने चुगली करी हती, सो हमने कहि दीनी है। और फेरि हू आज कहि देंयगे, जो–आजु को दिन तुम यहां रहो। तब कृष्णदास उहां रहे। तब राजा टोडरमल और बीरबल दरबार के समय देसाधिपति के पास आय अकबर सों कहे, जो–कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी आये हैं, और उनको मन बंगालीन कों राखिवे को नाहीं है। जो–और चाकर राखे हैं, और ये तो काढ़े हैं। तब देसाधिपति ने कही, जो–आछो, उनको मन होय सो ताकों चाकर राखें। यामें झूठो झगरो कहा है ? तासों बंगालीन कों काढ़ि देउ। तब राजा टोडरमल और बीरबल ने आयके बंगालीन सों कही, जो–देसाधिपति को हुकम तुमकों काढ़ि देवे को भयो है, तासों तुम चुप होयके चले जाउ। जो–झगरो करोगे तो दुःख पावोगे। तासों हमने तुमकों समुझाय दियो है। तब सगरे बंगाली निरास होयके चले आये। सो वृन्दावन में रहे। और कृष्णदास राजा टोडरमल और बीरबल सों विदा होयके चले आये, सो श्रीगिरिराज ऊपर आये। ता पाछें दोय कासिद बुलाय के श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख्यो, तामें यह लिख्यो, जो–बंगालीन कों आपु की आज्ञा तें

ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલે કહ્યું, કે બંગાલીઓએ જૂઠી ચુગલી કરી હતી તેથી અમે કહી દીધું છે અને ફરી પણ આજ કહી દઇશું. જેથી આજનો દિવસ તમે અહીં રહો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ત્યાં રહ્યા. ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલ દરબારના સમયે દેશાધિપતિની પાસે આવી અકબરને કહે, કે કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી આવ્યા છે અને એમનું મન બંગાલીઓને રાખવાનું નથી. બીજા ચાકર રાખ્યા છે અને એમને તો કાઢયા છે. ત્યારે દેશાધિપતિ કહે, કે સારૂં. એમનું મન હોય તેને ચાકર રાખે એમાં જૂઠો ઝઘડો શો છે ? તેથી બંગાલીઓને કાઢી મૂકો. ત્યારે રાજા ટોડરમલ અને બીરબલે આવીને બંગાલીઓને કહ્યું, કે દેશાધિપતિનો હુકમ તમને કાઢી મૂકવાનો થયો છે. તેથી તમે ચૂપ થઇને ચાલ્યા જાવ. જો ઝઘડો કરશો તો દુઃખ પામશો. તેથી અમે તમને સમજાવી દીધું. ત્યારે બધા બંગાલી નિરાશ થઇને ચાલ્યા ગયા. શ્રીવૃંદાવનમાં રહ્યા અને કૃષ્ણદાસ રાજા ટોડરમલ અને બીરબલથી વિદાય થઇને ચાલ્યા આવ્યા. તે શ્રીગિરિરાજજી ઉપર આવ્યા. તે પછી બે કાસદને બોલાવીને શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતીપત્ર લખ્યો. તેમાં એ લખ્યું, કે બંગાળીઓને આપની આજ્ઞાથી કાઢયા તેનો

सेव्य ठाकुर हू मर्यादारूप। सो बंगालीन कों मर्यादा की पूजा है, तासों दिये। और श्रीगुसांईजी ने झगरो हू मिटाय दियो।

ता पाछें श्रीगुसांईजी ने सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवा में राखे। सो मुखिया भीतरिया रामदास कों किये।

भावप्रकाश—सो रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरात में रहते। ये लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। सो लीला में इनको नाम 'मनोरमा' है। सो सात्त्विक भाव। श्रीचन्द्रावलीजी की आज्ञाकारी। जैसे श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी की लीला में ललिता मध्याजी परम चतुर। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के कृपापात्र ललितारूप कृष्णदास सब ठोर हुकम करें. तैसे मनोरमा रूपसों रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसांईजी के आगे सब टहल करें। सो (मनोरमा) रामदास गुजरात में एक सांचोरा ब्राह्मण के यहाँ जनमे। सो बरस बीस के भये। तब माता पिताने देह छोड़ि। ता पाछें रामदासजी श्रीरणछोड़जी के दरसन कों गये। सो श्रीआचार्यजी के दरसन भये, ता समय श्रीआचार्यजी कथा कहत हते। सो कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख सों सुनिके रामदास कों ज्ञान भयो, जो-श्रीआचार्यजी आपु साक्षात ईश्वर हैं, इनकी सरन रहिये तो कृतारथ होय। सो यह मनमें निश्चय कियो। ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु कथा कहि चुके। तब रामदास ने दंडवत

મર્યાદારૂપ. બંગાલીઓને મર્યાદાની પૂજા છે તેથી આપ્યા અને શ્રીગુસાંઇજીએ ઝઘડો પણ મટાવી દીધો.

તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ સાંચોરા ગુજરાતી બ્રાહ્મણ ભીતરિયા સેવામાં રાખ્યા. તે મુખિયા ભીતરિયા રામદાસને કર્યા.

ભાવપ્રકાશ—એ રામદાસ બ્રાહ્મણ સાંચોરા ગુજરાતમાં રહેતા. એ લીલામાં શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ મનોરમા છે. એ સાત્વિક ભાવ; શ્રીચંદ્રાવલીજીની આજ્ઞાકારી, જેમ શ્રીસ્વામિનીજી શ્રીઠાકુરજીની લીલામાં લલિતા મધ્યાજી પરમ ચતુર. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના કૃપાપાત્ર લલિતા રૂપ કૃષ્ણદાસ બધી જગે હુકમ કરે. તેમ મનોરમા રૂપથી રામદાસ મુખિયા ભીતરિયા શ્રીગુસાંઇજીની આગળ બધી ટહલ કરે. તે રામદાસ ગુજરાતમાં એક સાંચોરા બ્રાહ્મણને ત્યાં જન્મ્યા. તે વરસ વીસના થયા ત્યારે માતા પિતાએ દેહ છોડી. તે પછી રામદાસજી રણછોડજીના દર્શને ગયા ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી કથા કહેતા હતા. તે કથા શ્રીઆચાર્યજીનાં મુખથી સાંભળીને રામદાસને જ્ઞાન થયું, કે શ્રીઆચાર્યજી આપ સાક્ષાત્ ઇશ્વર છે. એમની શરણે રહિયે તો કૃતાર્થ થઇએ. એવો મનમાં નિશ્ચય

कृष्णदास गादी ऊपर बैठते। ता पाछें बंगालीन ने सुनी, जो–श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन पधारे हैं, और सिंगार करत हैं। सो सगरे बंगाली मिलके श्रीगुसांईजी के पास आये। पाछे विनती करिके कहे, जो-हमकों श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में राखे हते, सो कृष्णदास नें काढ़े हैं, तासों आपु फेरि हमकों सेवा में राखो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो–तुम सगरे श्रीनाथजी की सेवा छोड़िके परवत तें नीचे उतरि आये, सो दोष तिहारो है। और अब श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तुमकों राखिवे की नाहीं है, तासों अब तुमकों राखे न जाय। पाछें सगरे बंगाली बहोत विनती करन लागे, जो–तुम हमसों सेवा मति करावो, परन्तु अब हम खाँय कहा? जो श्रीनाथजी की सेवा पीछे हमारो खानपान को सब सुख हतो, तासों हमकों कछू और सेवा टहल बतावो। तथा कोई और श्रीठाकुरजी बतावो, जासों हमारो निर्वाह चल्यो जाय। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोपीनाथजी के सेव्य श्रीमदनमोहनजी कों देके कहे, जो–इनकी सेवा तुम करो। सो तब बंगाली श्रीमदनमोहनजी कों लेके श्रीवृन्दावन में आयके सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-बलदेवजी मर्यादारूप। सो तिन के

લાગી. શ્રીગુસાંઇજીની આજ્ઞાથી કૃષ્ણદાસ ગાદી ઉપર બેસતા. તે પછી બંગાલીઓએ સાંભળ્યું, કે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીગોવર્દ્ધન પધાર્યા છે અને શૃંગાર કરે છે. ત્યારે બધા બંગાલીઓ મળીને શ્રીગુસાંઇજીની પાસે આવ્યા. પછી વિનંતી કરીને કહ્યું, કે અમને શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવામાં રાખ્યા હતા તે કૃષ્ણદાસે કાઢયા છે. તેથી આપ ફરી અમને સેવામાં રાખો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી કહે, કે તમે બધા શ્રીનાથજીની સેવા છોડીને પર્વતથી નીચે ઉતરી આવ્યા તે દોષ તમારો છે અને હવે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ઇચ્છા તમને રાખવાની નથી. તેથી હવે તમને રાખ્યા ન જાય. પછી બધા બંગાલીઓ બહુ વિનંતી કરવા લાગ્યા, કે તમે અમારાથી સેવા ન કરાવો પરંતુ હવે અમે શું ખાઇએ? શ્રીનાથજીની સેવા પાછળ અમારૂં ખાનપાનનું સુખ હતું. તેથી અમને કંઇ બીજી સેવા ટહલ બતાવો તથા કોઇ બીજા શ્રીઠાકુરજી બતાવો. જેથી અમારો નિર્વાહ ચાલ્યો જાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીગોપીનાથજીના સેવ્ય શ્રીમદનમોહનજીને આપીને કહ્યું, કે એમની સેવા તમે કરો. ત્યારે બંગાલી શ્રીમદનમોહનજીને લઇને શ્રીવૃંદાવનમાં આવીને સેવા કરવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે બલદેવજી મર્યાદારૂપ છે તેથી એમના સેવ્ય ઠાકુર પણ

सेव्य ठाकुर हू मर्यादारूप। सो बंगालीन कों मर्यादा की पूजा है, तासों दिये। और श्रीगुसांईजी ने झगरो हू मिटाय दियो।

ता पाछें श्रीगुसांईजी ने सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवा में राखे। सो मुखिया भीतरिया रामदास कों किये।

भावप्रकाश—सो रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरात में रहते। ये लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। सो लीला में इनको नाम 'मनोरमा' है। सो सात्विक भाव। श्रीचन्द्रावलीजी की आज्ञाकारी। जैसे श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी की लीला में ललिता मध्याजी परम चतुर। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के कृपापात्र ललितारूप कृष्णदास सब ठोर हुकम करें, तैसे मनोरमा रूपसों रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसांईजी के आगे सब टहल करें। सो (मनोरमा) रामदास गुजरात में एक सांचोरा ब्राह्मण के यहाँ जनमे। सो बरस बीस के भये। तब माता पिताने देह छोड़ि। ता पाछें रामदासजी श्रीरणछोड़जी के दरसन कों गये। सो श्रीआचार्यजी के दरसन भये, ता समय श्रीआचार्यजी कथा कहत हते। सो कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख सों सुनिके रामदास कों ज्ञान भयो, जो-श्रीआचार्यजी आपु साक्षात ईश्वर हैं, इनकी सरन रहिये तो कृतारथ होय। सो यह मनमें निश्चय कियो। ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु कथा कहि चुके। तब रामदास ने दंडवत

મર્યાદારૂપ. બંગાલીઓને મર્યાદાની પૂજા છે તેથી આપ્યા અને શ્રીગુસાંઇજીએ ઝઘડો પણ મટાવી દીધો.

તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ સાંચોરા ગુજરાતી બ્રાહ્મણ ભીતરિયા સેવામાં રાખ્યા. તે મુખિયા ભીતરિયા રામદાસને કર્યા.

ભાવપ્રકાશ—એ રામદાસ બ્રાહ્મણ સાંચોરા ગુજરાતમાં રહેતા. એ લીલામાં શ્રીચંદ્રાવલીજીની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ મનોરમા છે. એ સાત્વિક ભાવ; શ્રીચંદ્રાવલીજીની આજ્ઞાકારી, જેમ શ્રીસ્વામિનીજી શ્રીઠાકુરજીની લીલામાં લલિતા મધ્યાજી પરમ ચતુર. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના કૃપાપાત્ર લલિતા રૂપ કૃષ્ણદાસ બધી જગે હુકમ કરે. તેમ મનોરમા રૂપથી રામદાસ મુખિયા ભીતરિયા શ્રીગુસાંઇજીની આગળ બધી ટહલ કરે. તે રામદાસ ગુજરાતમાં એક સાંચોરા બ્રાહ્મણને ત્યાં જન્મ્યા. તે વરસ વીસના થયા ત્યારે માતા પિતાએ દેહ છોડી. તે પછી રામદાસજી રણછોડજીના દર્શને ગયા ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં તે સમયે શ્રીઆચાર્યજી કથા કહેતા હતા. તે કથા શ્રીઆચાર્યજીનાં મુખથી સાંભળીને રામદાસને જ્ઞાન થયું, કે શ્રીઆચાર્યજી આપ સાક્ષાત્ ઇશ્વર છે. એમની શરણે રહિયે તો કૃતાર્થ થઇએ. એવો મનમાં નિશ્ચય

करिके विनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों सरन लीजे। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-जाओ न्हाय आवो। तब रामदास न्हाय आये। तब श्रीआचार्यजी ने रामदास कों नाम निवेदन करवायो। ता पाछे रामदास सों कहे, जो-अब तुम भगवत् सेवा करो। तब रामदास ने कही, जो-मेरे पिता के ठाकुर मेरे पास हैं, सो आपु आज्ञा देउ तैसे मैं सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी आपु रामदास के श्रीठाकुर-जी कों पंचामृत स्नान कराय, दिये। ता पाछे रामदास कछुक दिन श्रीआचार्यजी के पास रहे, सो सेवा की रीति भांति सीखे। ता पाछे रामदास ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! शास्त्र तो मैं कछु पढ्यो नाहीं हो, परन्तु आपके ग्रन्थ पढ़िवे की इच्छा अभिलाषा है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें रामदास कों अपने ग्रन्थ पढ़ाये तब रामदासजी के हृदय में ब्रज की लीला स्फुरी, सो रामदास ने यह कीर्तन श्रीआचार्यजी के आगे गायो। सो पद—

राग गौरी—चलि सखी चलि अहो ब्रज पेंठ लगी है जहां बिकात हरि-रस प्रेम। सूठ सोंघो प्रानन के पलटे उलट धरो जिय नेम ॥१॥ और भांति पाइवौ अति दुर्लभ कोटिक खर्चों हेम। 'रामदास प्रभु' रत्न अमोलिक सखी पैयत है एम ॥२॥

या प्रकार के रसरूप पद रामदास ने बहोत गाये, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये। तब रामदास श्रीआचार्यजी सों बिदा होयके दंडवत करि गुजरात में अपने घर आयके बहोत दिन तांई सेवा कीनी। ता पाछें एक दिन एक

कर्यो. ते पछी श्रीआचार्यजी पोते कथा कही चुकया त्यारे रामदासे दंडवत् करीने विनंती करी, के महाराज ! मने शरणे लो. त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कहे, के जाव न्हाइ आवो. त्यारे रामदास न्हाइ आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीए रामदासने नाम निवेदन कराव्युं. ते पछी रामदासने कहे, के हवे तमे भगवद् सेवा करो. त्यारे रामदासे कह्युं, के मारा पिताना ठाकुर मारी पासे छे. तेथी आप आज्ञा दो तेम हुं सेवा करुं. त्यारे श्रीआचार्यजीए पोते रामदासना श्रीठाकुरजीने पंचामृत स्नान करावी आप्या. ते पछी रामदास केटलाक दिवस श्रीआचार्यजीनी पासे रह्या. ते सेवानी रीति-भांति शिख्या. ते पछी रामदासे आचार्यजीने विनंती करी, के महाराज ! शास्त्र तो हुं कंइ भण्यो नथी. परंतु आपना ग्रंथ भणवानी इच्छा-अभिलाषा छे. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुए रामदासने पोताना ग्रंथ भणाव्या. त्यारे रामदासजीना हृदयमां व्रजनी लीला स्फुरी ते रामदासे आ कीर्तन श्रीआचार्यजीनी आगळ गायुं. ते पद—'चलि सखी चलि' (उपर जुओ). आ प्रकारे रसरूप पद रामदासजीए बहु गायां. ए सांभळीने श्री-आचार्यजी आप बहु प्रसन्न थया. त्यारे रामदासे श्रीआचार्यजीथी विदाय थइने दंडवत करीने गुजरातमां पोताना घरे आवीने बहु दिवस सुधी सेवा करी. ते पछी एक

वैष्णव रामदास के घर आयो । तब रामदास ने प्रीतिसों वैष्णव कों अपने घर में राख्यो । पाछे रामदास ने कही, जो–वैष्णव को संग दुर्लभ है । सो तुमने बड़ी कृपा करी, जो–तुम मेरे घर पधारे । सो तब वैष्णव ने कही, जो–संग करिवे लायक तो पद्मनाभदासजी हैं, जो–एक क्षण हू संग होय तो भगवत् कृपा होय । सो सुनत ही रामदासजी के मन में यह आई, जो–पद्मनाभदास को संग करूं । ता पाछे चारि दिन रहिके वह वैष्णव तो गयो । तब रामदासजी श्रीठाकुरजी कों पधराय के पद्मनाभदास के घर कनौज में आये । सो पद्मनाभदास प्रीति सों रामदास कों महिना एक राखे, सो भगवद्वार्ता में मगन होय गये । तब रामदासजी ने कही, जो–जैसी तिहारी बड़ाई सुनी हती, तैसेही तिहारे संग तें सुख पायो । सो अब मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आऊं । तासों मेरे ठाकुर कों तुम राखो । तब पद्मनाभदासजी ने रामदास के ठाकुर, श्रीमथुरेशजी की सय्याजी के पास बैठारे । और इहां श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके रामदास कों मुखिया किये, सो जनम भरि श्रीनाथजी की सेवा रामदास ने मन लगाय के कीनी । सो या प्रकार रामदासजी रहे । ता पाछे (जब) पद्मनाभदासजी की देह छूटी तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास श्रीठाकुरजी कों बैठारे । सो सदा श्रीनाथजी के पास रहे ।

ता पाछें श्रीगुसांईजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा को विस्तार

દિવસ એક વૈષ્ણવ રામદાસના ઘરે આવ્યો. ત્યારે રામદાસે પ્રીતિથી વૈષ્ણવને પોતાના ઘરમાં રાખ્યો. પછી રામદાસે કહ્યું, કે વૈષ્ણવનો સંગ દુર્લભ છે. તમે મહાન કૃપા કરી કે તમે મારા ઘરે પધાર્યા. ત્યારે વૈષ્ણવે કહ્યું, કે સંગ કરવા લાયક તો પદ્મનાભદાસજી છે જેનો એક ક્ષણ પણ સંગ થાય તો ભગવત કૃપા થાય. એ સાંભળતાંજ રામદાસજીના મનમાં એ આવ્યું, કે પદ્મનાભદાસનો સંગ કરૂં. તે પછી ચાર દિવસ રહીને તે વૈષ્ણવ તો ગયો. ત્યારે રામદાસજી શ્રીઠાકુરજીને પધરાવીને પદ્મનાભદાસજીના ઘરે કન્નોજમાં આવ્યા ત્યારે પદ્મનાભદાસે પ્રીતિથી રામદાસને મહિના એક રાખ્યા તે ભગવદ્ વાર્તામાં મગન થઈ ગયા. ત્યારે રામદાસજીએ કહ્યું. કે જેવા તમારાં વખાણ સાંભળ્યાં હતાં તેવું જ તમારા સંગથી સુખ મળ્યું. હવે હું શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન કરી આવું. તેથી મારા ઠાકુરને તમે રાખો. ત્યારે પદ્મનાભદાસજીએ રામદાસના ઠાકોર શ્રીમથુરેશજીની શય્યાજીની પાસે પધરાવ્યા અને અહીં શ્રીગુસાંઈજીએ પોતે પ્રસન્ન થઈને રામદાસને મુખિયા કર્યા. તે જનમભર શ્રીનાથજીની સેવા રામદાસે મન લગાડીને કરી. આ પ્રકારે રામદાસજી રહ્યા. તે પછી પદ્મનાભદાસજીની દેહ છુટી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પાસે શ્રીઠાકુરજીને બેસાડયા. ત્યારથી સદા શ્રીનાથજીની પાસે રહ્યા.

बढ़ायो। सो राजसेवा करन लागे, जो-भोग सामग्री को नेग कियो, सेवक बहोत राखे, सो दरजी, सुनार, खाती सगरेन को नेग करि दियो। और भंडारी (अधिकारी) राखे सो भंडारी कों गादी तकिया। या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी की ईश्वरता बढ़ाये। और सगरे सेवकन की ऊपर कृष्णदास अधिकारी कों मुखिया किये, सो जो काम होय सो पूछनो। सो श्रीगुसांईजी तो सेवा सिंगार करि जांय, और काहूसों कछु कहें नाहीं। कोई बात कोई सेवक श्रीगुसांईजी सों पूछे तब श्रीगुसांईजी आप कहें, जो-कृष्णदास अधिकारी के पास जावो। जो हम जांने नाहीं। सो या प्रकार मर्यादा राखी। या भांति सों कृष्णदास को वैभव भारी और हुकम भारी। सो जहां चलें तहां रथ, घोड़ा, बैल, ऊंट, गाड़ी, सौ पचास मनुष्य संग। सो कृष्णदास अधिकारी सब देसन में प्रसिद्ध भये। सो कृष्णदास नित्य नये पद करिके श्रीगोवर्द्धनधर कों सुनावते। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनी, जो-स्यामकुम्हार कों मृदंग समेत संग लेके परासोली सेन आरती पीछे जैयो तहां रामलीला करेंगे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके कृष्णदास परवत तें नीचे आये। ता पाछें श्री-

---

તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ શ્રીનાથજીની સેવાનો વિસ્તાર વધાર્યો. તે રાજભોગ કરવા લાગ્યા. ભોગ સામગ્રીનો નેક કર્યો. સેવક બહુ રાખ્યા. દરજી, સોની, સુથાર બધાનો નેક કરી દીધો અને ભંડારી (અધિકારી) રાખ્યા તે ભંડારીને ગાદી તકિયા એ પ્રકારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ઇશ્વરતા વધારી. અને બધા સેવકોની ઉપર કૃષ્ણદાસ અધિકારીને મુખિયા કર્યા. જે કામ હોય તે પૂછવું. શ્રીગુસાંઇજી તો સેવા-શૃંગાર કરી જાય અને કોઇને કંઇ કહે નહી. કોઇ વાત કોઇ સેવક શ્રીગુસાંઇજીને પૂછે ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે કૃષ્ણદાસ અધિકારીની પાસે જાવ. અમે જાણીએ નહીં. એ પ્રકારે મર્યાદા રાખી. એ પ્રકારે કૃષ્ણદાસનો વૈભવ ઘણો અને હુકમ ઘણો. જ્યાં જાય ત્યાં રથ, ઘોડા, બળદ, ઉંટ, ગાડી અને પચાસ માણસ સાથે. તે કૃષ્ણદાસ અધિકારી બધા દેશોમાં પ્રસિદ્ધ થયા. એ કૃષ્ણદાસ નિત્ય નવાં પદ કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનધરને સંભળાવતા. એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૩-વળી એક દિવસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કૃષ્ણદાસને આજ્ઞા આપી, કે શ્યામકુંભારને મૃદંગ સમેત સાથે લઇને (તમે) પરાસોલી સેન આર્તિ પછી જજો. ત્યાં રાસલીલા કરીશું. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને દંડવત્ કરીને કૃષ્ણદાસ પર્વતથી નીચે આવ્યા. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્યામકુંભારને કહે, કે તમને જ્યાં

गोवर्द्धननाथजी स्यामकुम्हार सों कहे, जो-तुमकों जहां कृष्णदास कहें, तहां मृदंग लेके जैयो। सो या प्रकार स्यामकुम्हार कों श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये।

भावप्रकाश—सो या प्रकार स्यामकुम्हार कों श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये सो यातें, जो-लीला में स्यामकुम्हार बिसाखाजी की सखी है। तहां लीला में इनको नाम 'रसतरंगिनी' है। सो इनकी मृदंग की सेवा है। सो एक समय रसतरंगिनी सेन किये हते, सो बिसाखाजी को मन गान करिवे को भयो। तब रसतरंगिनी कों जगाय के कहे, जो-तू मृदंग बजाव, सो तब मृदंग बजायो। तब बिसाखाजी गान करन लागी। सो अलसातें रसतरंगिनी चूकि जाय। तब बिसाखाजी क्रोध करके कहे, जो-आज कैसें बजावत है? तब रसतरंगिनी ने कह्यो, जो-मोकों नींद आवत है। और तिहारो मन तो गान करिवे को है, सो कैसे बने? तब बिसाखाजी मृदंग आपुही लीये और क्रोध करिके बिसाखाजी ने रसतरंगिनी सों कह्यो, जो-तू मेरी सखी नाहीं है। सो जायके तू भूमि में जनम लेउ। अहंकार करिके बोली सो ताकों यही दंड है। तब ये महावन में एक कुम्हार के घर जन्मे। सो स्यामकुम्हार नाम पर्‍यो। सो सगरे समाज में चतुर हते। श्रीगुसांईजी आपु इनकों बुलाय के श्रीनवनीतप्रियजी के पास राखे। तब इन स्यामकुम्हार कों नाम

કૃષ્ણદાસ કહે ત્યાં મૃદંગ લઇને જજો. એ પ્રકારે શ્યામકુંભારને શ્રીનાથજીએ પોતે આજ્ઞા કરી.

ભાવપ્રકાશ—આ પ્રકારે શ્યામકુંભારને શ્રીનાથજીએ પોતે આજ્ઞા કરી તે એથી કે લીલામાં શ્યામકુંભાર વિશાખાજીની સખી છે. ત્યાં લીલામાં એમનું નામ 'રસતરંગિની' છે. એમની મૃદંગની સેવા છે. તે એક સમય રસતરંગિનીએ શયન કર્યું હતું ત્યારે વિશાખાજીનું મન ગાન કરવાનું થયું. ત્યારે રસતરંગિનીને જગાડીને કહે, કે તું મૃદંગ વગાડ ત્યારે તેણે મૃદંગ વગાડયું. ત્યારે વિશાખાજી ગાન કરવા લાગી ત્યારે આળસને લઇને રસતરંગિની ચૂકી જાય. ત્યારે વિશાખાજી ક્રોધ કરીને કહે, કે આજ કેવું વગાડે છે? ત્યારે રસતરંગિનીએ કહ્યું, કે મને નિંદ્રા આવે છે અને તમારૂં મન તો ગાન કરવાનું છે. તે કેમ બને? ત્યારે વિશાખાજીએ મૃદંગ પોતેજ લીધી અને ક્રોધ કરીને વિશાખાજીએ રસતરંગિનીને કહ્યું, કે તૂ મારી સખી નથી. જઇને ભૂમી ઉપર જન્મ લે. અહંકાર કરીને બોલી તેનો આ જ દંડ છે. ત્યારે એ મહાવનમાં કુંભારના ઘરે જન્મ્યા. શ્યામકુંભાર નામ પડયું. તે બધા સમાજમાં ચતુર હતા. શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે એમને બોલાવીને શ્રીનવનીતપ્રિયજીની પાસે રાખ્યા. ત્યારે એ શ્યામ-

निवेदन करवायो। जब श्रीगोवर्द्धननाथजी को वैभव वढ्यो तब कृष्णदास के मन में आई जो मृदंगी चहिये। तब गोवर्द्धनधर कहे, जो–गोकुल में स्यामकुम्हार है, सो मृदंग आछी बजावत है। ताकों श्रीगुसांईजी कों कहिके यहां राखो। तब कृष्णदास ने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो–स्यामकुम्हार कों श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा में राखो। जो–यह इच्छा प्रभुन की है। तब श्रीगुसांईजी आपु स्यामकुम्हार कों श्रीगोकुल तें बुलायके श्रीनाथजी की सेवा में राखे। सो ता दिन तें स्यामकुम्हार श्रीनाथजी के आगे मृदंग बजावतो। या प्रकार स्यामकुम्हार श्रीगिरिराज रह्यो।

तब कृष्णदास ने स्यामकुम्हार कों बुलायके कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा आजु परासोली में रास करिवे की है, सो मृदंग ले आवो, सेन आरती पीछे चलेंगे। तब स्यामकुम्हारने कह्यो, जो–मोहू कों आज्ञा दीनी है, तासों मृदंग लेके तिहारे पास आयो हूं। सो जब सेन आरती श्रीगोवर्द्धननाथजीकी होय चुकी, तब कृष्णदास स्यामकुम्हार कों लेके परासोली में चंद्रसरोवर है, तहां आये। तहां देखे तो श्रीगोवर्द्धनधर और श्रीस्वामिनीजी सगरी सखीन सहित बिराजे हैं। तब श्रीगोवर्द्धनधरने स्यामकुम्हार सों कही, जो–तू तो मृदंग बजाव, और कृष्णदास सों कह्यो, जो–तू कीर्तन गाव। सो चैत्र सुद १५ पून्यो के दिन रात्रि प्रहर डेढ़ गई, उजियारी फैल

कुंभारने नाम निवेदन कराव्युं. (पछी) ज्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीनो वैभव वध्यो त्यारे कृष्णदासना मनमां आव्युं के मृदंगी जोईए. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे. के श्रीगोकुलमां श्यामकुंभार छे ते मृदंग सारी वगाडे छे. तेने श्रीगुसांईजीने कहीने अहीं राखो. त्यारे कृष्णदासे श्रीगुसांईजीने कह्युं, के श्यामकुंभारने श्रीगोवर्द्धनधरनी सेवामां राखो. ए इच्छा प्रभुनी छे. त्यारे श्रीगुसांईजीए पोते श्यामकुंभारने श्रीगोकुलथी बोलावीने श्रीनाथजीनी सेवामां राख्या. ते दिवसथी श्यामकुंभार श्रीनाथजीनी आगळ मृदंग वगाडतो. ए प्रकारे श्यामकुंभार श्रीगिरिराज रह्यो.

त्यारे कृष्णदासे श्यामकुंभारने बोलावीने कह्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनी इच्छा आज परासोलीमां रास करवानी छे. तेथी मृदंग लइ आवो सेन आर्ति पछी चालीशुं. त्यारे श्यामकुंभारे कह्युं, के मने पण आज्ञा आपी छे तेथी मृदंग लइने तमारी पासे आव्यो छुं. पछी ज्यारे सेन आर्ति श्रीगोवर्द्धननाथजीनी थइ चूकी त्यारे कृष्णदास श्यामकुंभारने लइने परासोलीमां चंद्र सरोवर छे त्यां आव्या. त्यां जुए तो श्रीगोवर्द्धनधर अने श्रीस्वामिनीजी बधी सखीओ सहित बिराज्यां छे. त्यारे श्रीगोवर्द्धनधरे श्यामकुंभारने कह्युं, के तू तो मृदंग बजाव अने

गाई सो अलौकिक रात्रि भई। तब स्यामकुम्हारने मृदंग बजायो। सो वसंत ऋतु के सुंदर फूल लतानसों फूलि रहे। सो श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित नृत्य करन लागे। ता समय कृष्णदासने यह पद गायो। सो पद—

राग केदारो—श्रीवृषभाननंदनी नाचत लाल गिरिधरन संग, लाग डाट उरप तिरप रास रंग राच्यौ। झप ताल मिल्यो राग केदारो सप्त सुरन अवघट २ सुघरतान गान रंग राच्यो॥ १॥ पाई सुख सुरति सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि अभिनव वदन सम सुहाग हुलास रंग राच्यो। वनिता सत-जूथप पिय निरखि थक्यो सघन चंद बलिहारी 'कृष्णदास' सुघर रंग राख्यो॥ २॥

सो यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धनधर प्रसन्न होयके अपने श्री-कंठ की प्रसादी कुंद कुसुमन की माला दीनी। सो कृष्णदास अपने परम भाग्य माने सो रोमरोम में आनंद भरि गयो। सो तब रस में मगन होयके यह पद गायो सो पद—

राग मालव—(१) अलग लागत उरप तिरप गति नटवत् व्रजललना रासें। उघटत सब्द ततथेइ ततथेइ मृगनयनी इषद हासे॥ १॥ भाल चंद लजावन गावत बांधत मदन भौंह पासे। चलत उरज कटि किंकिनी कुंडल श्रमजल-कन सोभित आसे॥ २॥ नूपुर कुनित क्वणित कटिमेखला कटितट काछे नील सु वासे। अवघट तानमान चंघाने मोहित विश्व चरन न्यासे॥ ३॥ मोहनलाल गोवर्द्धनधारी रिझवत छेल सुघर लासे। अपने कंठ की श्रमजल दलमलि माला देति 'कृष्णदासे'॥ ४॥

(२) ततथेई रासमंडल में बने नाचत पियके संग प्रीतमप्यारी। गावत सरस सुजात मिलवत चपल कुटिल भौंह अनियारी॥ १॥ मालव राग अलापति भामिनी लेति उरप नागर नारी। प्यारी के संग वेनु बजावत सुघरराय श्रीगोवर्द्धन-धारी॥ २॥ 'कृष्णदास' प्रभु सौभग सींवा सब युवतिन में सुकुमारी। जोरी अद्भुत प्रगटित भूतल केलिकलारस मनुहारी॥ ३॥

કૃષ્ણદાસને કહ્યું, કે તું કીર્તન ગા. તે ચૈત્ર સુદી ૧૫ પુનમના દિવસે રાત્રિ દોઢ પ્રહર ગઇ અજવાળું ફેલઇ ગયું. તે અલૌકિક રાત્રિ થઇ. ત્યારે શ્યામકુંભારે મૃદંગ વગાડી. વસંત ઋતુનાં સુંદર ફૂલ લતાઓથી ફૂલી રહ્યાં છે. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર શ્રીસ્વામિ-નીજી સહિત નૃત્ય કરવા લાગ્યા. તે સમયે કૃષ્ણદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ—'શ્રીવૃષ-ભાનનંદની નાચત૦' (ઉપર જુઓ). એ પદ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનધરે પ્રસન્ન થઇને પોતાના શ્રીકંઠની પ્રસાદી માળા, કુંદના ફૂલોની માળા આપી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પોતાનાં પરમ ભાગ્ય માન્યાં. એથી રોમરોમમાં આનંદ ભરાઇ ગયો. ત્યારે રસમાં મગન થઇને આ પદ ગાયાં. તે પદ (૧) 'અલાગ લાગિન૦' (૨) 'તતા થેઇ

(३) चंद गोविंद गोपी तारा गन बने रास में बनवारी। सुख प्रताप रंजित वृंदावन नवल युवतिजन सुखकारी ॥ १ ॥ कमलनयन कमनीय मनोहर मनहरनो गोकुल-नारी। हस्तकमल पर गलित कुसुमदल नृत्यमान् प्रीतम प्यारी ॥ २ ॥ रसमयरास-रसिकनि भामिनी अतिरसाल बने विहारी। 'कृष्णदास' प्रभु रसिक शिरोमनि रसिकराय गिरिवरधारी ॥

(४) सिखवति हरिकों मुरली बजावत। सप्त रंध्र पर धरत अंगुली दल कंध बाहु धरि मधुरे गावत ॥ १ ॥ सरसभेद गति राग कान्हरो गति बिलासवर नयन नचावत।'कृष्णदास' बलि बलि वैभवकी गिरिधर पिय प्यारी मन भावन ॥२॥

सो या प्रकार बहोत कीर्तन कृष्णदासजी गाये। तब स्याम-कुम्हार मृदंग बहोत सुंदर बजायो। सो श्रीगोवर्द्धनधर, श्रीस्वामिनीजी सगरे व्रजभक्तन सहित पास अद्भुत नृत्य किये। सो श्रीआ-चार्यजी महाप्रभुन की कानि तें कृष्णदास पर श्रीगोवर्द्धनधर एसी कृपा करते। ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित सगरे व्रजभक्त अंतर्धान भये। तब कृष्णदास और स्यामकुम्हार मृदंग लेके गोपालपुर आये, सो कृष्णदास ने समे २ के कीर्तन किये।

वार्ता-प्रसंग ४—और एक दिन सूरदासजीनें कृष्णदाससों कही, जो–कृष्णदास ! तुमने जितने कीर्तन किये तामें मेरी छाया आवत है। तब कृष्णदासने कही, जो–अबके ऐसो पद करूं सो तामें तिहारी छाया न आवे। पाछें कृष्णदास एकांत में बेठिके विचार किये एकाग्र मन करिके, जो–सूरदास जो वस्तु न गाये होय सो गावनो, यह विचार किये। सो जा लीला को विचार कियो ताही लीला के पद

રાસમંડલ૦' (૩) 'ચંદ ગોવિંદ ગોપી તારાગન૦' (૪) 'સિખવત પિયકો૦'
એ પ્રકારે ઘણાં કીર્તન કૃષ્ણદાસે ગાયાં ત્યારે શ્યામકુંભારે મૃદંગ બહુ સુંદર વગાડી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર શ્રીસ્વામિનીજીએ બધા વ્રજભક્તો સહિત અદ્ભુત નૃત્ય કર્યું. તે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની કાનિથી કૃષ્ણદાસ ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનધર એવી કૃપા કરતા. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધર શ્રીસ્વામિનીજી સહિત બધા વ્રજભક્તો અંતર્ધાન થયાં. ત્યારે કૃષ્ણદાસ અને શ્યામકુંભાર મૃદંગ લઇને ગોપાલપુર આવ્યા. કૃષ્ણદાસે સમય સમયનાં કીર્તન ઘણાં કર્યાં.

વાર્તા-પ્રસંગ ૪-વળી એક દિવસ સૂરદાસજીએ કૃષ્ણદાસજીને કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ ! તમે જેટલાં કીર્તન કર્યાં તેમાં મારી છાયા આવે છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે હવે એવું પદ કરું કે તેમાં તમારી છાયા ન આવે. પછી કૃષ્ણદાસે એકાંતમાં બેસીને વિચાર કર્યો. એકાગ્ર મન કરીને, કે સૂરદાસે જે વાત ન ગાઇ હોય તે ગાવી એ વિચાર કર્યો.

सूरदासजी (नें) गाये हैं। सो दान, मान, और गायन को वर्णन सब लीला के पद सूरदासजीने गाये हते। सो कृष्णदासजी विचार करत हारे। मनमें महाचिंता भई। सो कृष्णदासजी कों प्रहर एक गयो, सो हारिके उठि बैठे। जो कागज लेखनी द्वारा कलम धरिके महाप्रसाद लेन गये। तब श्रीगोवर्द्धनधर आयके पद पूरो करि गये। सो पद—

राग गोरी—आवत बने कान्ह गोप-बालक संग नेचुकी खुर-रेनु छुरित अलकावली। भौंह मन्मथ-चाप वक्रलोचन बान सीस सोभित मत्त मयूर-चंद्रावली ॥ १ ॥ उदित उडुराज सुंदर सिरोमनि वदन निरखि फूली नवल जुवति कुमुदावली। अरुन सकुचित अधरबिंब फल हसत कछु प्रगट होत कुंद दसनावली ॥ २ ॥ श्रवन कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक, कंठ कौस्तुभमनि सुभ त्रिवलावली। रत्न हाटक खचित, उरसि पदिकनि पांति, बीच राजति सुभ्र झलक मुक्तावली ॥ ३ ॥ वलय कंकन बाजूबंद आजानुभुज मुद्रिका कर-दल विराजति नखावली। कुनित कर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिका जन-मनसि ग्रथित प्रेमावली ॥ ४ ॥ कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामनि नाभि अंबुज वलित भ्रंग रोमावली। धाइ कबहुक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडित रुचिर श्रमजल-कणावली ॥ ५ ॥ पीत कौशेय परिधान सुंदर अंग चलत नूपुर गीत सब्दावली। हृदय 'कृष्णदास' गिरिधरनलाल की चरन-नख-चंद्रिका हरति तिमिरावली ॥ ६ ॥

यह पद लिखिके आपु तो पधारे। सो 'नेचुकी' गायन को वर्णन सूरदासजीने नाहीं कियो हतो। जो 'नेचुकी' गाय, वासों कहिये, जो-पहले ब्यांत होय, ताको स्नेह बछरा ऊपर बहोत होय। सो ऐसी नेचुकी गाय काहू सखा ग्वाल सों घिरत नाहीं हैं, सो बारंबार अपने बछरा के तांई घर कों ही भाजत है। जो ऐसी नेचुकी के जूथ में

પછી જે લીલાનો વિચાર કરે તેજ લીલાનાં પદ સૂરદાસજીએ ગાયાં છે. દાન, માન, અને ગાયોનાં વર્ણન, બધી લીલાનાં પદ સૂરદાસજીએ ગાયાં હતાં. તેથી કૃષ્ણદાસજી વિચાર કરતાં થાક્યા. મનમાં મોટી ચિંતા થઇ તેમાં કૃષ્ણદાસજીને એક પ્રહર ગયો. પછી થાકીને ઉઠી બેઠા. કાગળ, લેખની, ખડીયો, કલમ ધરીને મહાપ્રસાદ લેવા ગયા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર આવીને પદ પુરું કરી ગયા. તે પદ—'આવત બને કાન્હ૦' (ઉપર જુઓ). એ પદ લખીને આપ તો પધાર્યા. તે નેચુકી ગાયનું વર્ણન સૂરદાસજીએ કર્યું ન હતું. નેચુકી ગાય એને કહીએ જે પહેલીવાર વિયાઈ હોય તેનો સ્નેહ વાછડા ઉપર ઘણો હોય એવી નેચુકી ગાય કોઇ સખા-ગ્વાલથી ઘેરાતી નથી. એ વારંવાર પોતાના વાછડાને માટે ઘર તરફ જ ભાગે છે. એવી નેચુકીના યૂથમાં

श्रीठाकुरजी आपु पधारे हैं। तब नेचुकी गायकी खुर रेनु मुख पर अलकन पर लगी हैं। सो यह श्रीठाकुरजी आपु एक तुक करि कागज के ऊपर लिखिके पधारे। ता पाछें कृष्णदास महाप्रसाद आनंद सों लेके आये सो कीर्तन पूरन किये। सो पद—

राग गौरी—आवत वने०।

सो या प्रकार कीर्तन पूरो करिके कृष्णदासजी प्रसन्न होयके सूरदासजी के पास आये, हसत-हसत। तब सूरदासजी ने पूछी, जो आज बहोत प्रसन्न हसत आवत हो, सो कहा नौतन पद किये? तब कृष्णदास नें कह्यो, जो-आजु ऐसो पद कियो है, तामें तिहारे पदन की छाया नाहीं है। जो वस्तु तुमने गाई नहीं है। तब सूरदासजी कहे, जो-तुम मोकों बांचिके सुनावो तो सुनों। तब कृष्णदास (ने) पहली ही तुक कही, जो-ताही कों सुनिके कृष्णदास सों सूरदासजी बोले, जो-कृष्णदास! मेरे तिहारे वाद है। कछू तिहारे बापसों विवाद नाहीं है। सो यामें तिहारो कहा है? जो मैंने नेचुकी नाहीं गाई सो प्रभु कहि दिये। और तो श्रीअंगके वरनन के मेरे हजारन पद हैं, सोई तुमने गायके पूरन किये हैं। यह सूरदासजी के बचन सुनिके कृष्णदास चुप होय रहे।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय, जो-कृष्णदासजी तो ललिताजी

શ્રીઠાકુરજી પોતે પધારે છે. ત્યારે નેચુકી ગાયની ખુર-રેણુ મુખ ઉપર અલકો (વાળ) ઉપર લાગી છે એ શ્રીઠાકુરજી પોતે એક તુક કરી કાગળ ઉપર લખીને પધાર્યા. તે પછી કૃષ્ણદાસે મહાપ્રસાદ આનંદથી લઇને આવીને તે કીર્તન પુરૂં કર્યું. 'આવત બને૦' આ પ્રકારે કીર્તન પુરૂં કરીને કૃષ્ણદાસજી પ્રસન્ન થઇને સૂરદાસજીની પાસે આવ્યા હસતા હસતા. ત્યારે સૂરદાસજીએ પુછ્યું, કે આજ ઘણા પ્રસન્ન હસતા આવો છો તે શું નવીન પદ કર્યું? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે આજ એવું પદ કર્યું છે જેમાં તમારા પદોની છાયા નથી. એ વસ્તુ તમે ગાઇ નથી. ત્યારે સૂરદાસજી કહે, કે તમે મને વાંચીને સંભળાવો તો સાંભળું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પહેલીજ તુક કહી તેને જ સાંભળીને કૃષ્ણદાસથી સૂરદાસ બોલ્યા, કે કૃષ્ણદાસ મારે તમારે વાદ છે કંઇ તમારા બાપથી વાદ નથી. આમાં તમારૂં શું છે? મેં નેચુકી ન ગાઇ તે પ્રભુએ કહી દીધું. બીજાં તો શ્રીઅંગનાં વર્ણનનાં મારાં હજારો પદ છે તેજ તમે ગાઇને પૂરાં કર્યાં છે. આ સૂરદાસજીનું વચન સાંભળીને કૃષ્ણદાસજી ચુપ થઇ રહ્યા.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં આ સંદેહ થાય કે કૃષ્ણદાસજી તો લલિતાજીનું સ્વરૂપ છે

को स्वरूप हैं, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदास की पक्ष किये, सो पद बनाये। तोहू सूरदासजी सों न जीते। ताको कारन कहा है ? तहां कहत हैं, जो–कृष्णदासजी ललितारूप हैं। सो तैसेही सूरदासजी चंपकलतारूप हैं। परंतु अपनो अधिकार-भेद है। सो लीलाहू में श्रीललिताजी की सेवा श्रेष्ठ है। तैसेही यहां 'सेवा की भांत तें' कृष्णदास श्रेष्ठ। सो सगरे सेवकन की सेवा में चोकसी, सगरी वस्तु समारनी, सेवा को मंडान विस्तार करनो। यामें कृष्णदास परम चतुर। जैसे सुनार सों दरजी की सेवा न होय और दरजी सों सुनार के आभूपन को काम न होय। सो सब अपनी अपनी सेवा में चतुर हैं। और श्रीस्वामिनीजी की सखी दोऊ प्रिय हैं। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी की प्रीति तो दोउन के ऊपर है। परन्तु कृष्णदास के मन में रंचक अहंकार आयो, जो–मैं हू कीर्तन बहोत किये हैं।

सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिरमें सामग्री चहियत हती, सो तब कृष्णदास गाड़ा लिवाय आपु रथपर असवार होयके श्रीगोवर्द्धन सों, आगरे आये। सो जब आगरे के बजार में गये, तहां एक वेस्या अपनी छोरीकों नृत्य सिखावत हती। सो वह छोरी परम सुंदर बरस बारह की हती, कंठहू परम सुंदर

અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કૃષ્ણુદાસનો પક્ષ કર્યો, તે પદ બનાવ્યાં. તો પણ સૂરદાસજીથી જીત્યા નહીં તેનું શું કારણ છે? ત્યાં કહીએ છીએ, કે કૃષ્ણુદાસજી લલિતા રૂપ છે. તેજ રીતે સૂરદાસજી ચંપકલતા રૂપ છે. પરંતુ પોતાનો અધિકાર ભેદ છે. લીલામાં પણ શ્રી-લલિતાજીની સેવા શ્રેષ્ઠ છે તેજ રીતે અહીં સેવાના ભેદથી કૃષ્ણુદાસ શ્રેષ્ઠ. તે બધા સેવકોની સેવામાં ચોકસી બધી વસ્તુ સંભાળવી સેવાના મંડાણનો વિસ્તાર કરવો. એમાં કૃષ્ણુદાસ પરમ ચતુર. જેમ સોનીથી દરજીની સેવા ન થાય અને દરજીથી સોનીનાં આભૂષણનું કામ ન થાય. તે બધા પોતપોતાની સેવામાં ચતુર છે. વળી શ્રીસ્વામિનીજીની બન્ને પ્રિય સખી છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પ્રીતિ તો બન્નેના ઉપર છે. પરંતુ કૃષ્ણુદાસના મનમાં રંચક અહંકાર આવ્યો કે મેં પણ કીર્તન ઘણાં કર્યાં છે.

એ કૃષ્ણુદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૫-વળી એક સમય શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં સામગ્રી જોઇતી હતી ત્યારે કૃષ્ણુદાસ ગાડું મંગાવી પોતે રથ ઉપર અસવાર થઇને શ્રીગોવર્દ્ધનથી આગ્રા આવ્યા. જ્યારે આગ્રાના બજારમાં ગયા (ત્યારે) ત્યાં એક વેશ્યા પોતાની છોકરીને નૃત્ય શિખાવતી હતી. તે છોકરી પરમ સુંદર વર્ષ બારની હતી. કંઠ પણ પરમ સુંદર

हतो। सो गाननृत्य में चतुर बहोत हती। सो वह वेस्या ख्याल टप्पा गावत हती। सो वह छोरी को गान कृष्णदास के कानपें पर्‍यो हतो सो कृष्णदास के मनमें बैठि गयो, सो प्रसन्न होय गये। तब कृष्णदास ने तहां अपनो रथ ठाड़ो कियो। सो भीड़ सरकायके वा छोरी को रूप देखे, सो तहां गान सुनिके मोहित होय गये।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र सेवक वेस्या के गान पर मोहित क्यों भये? जो-ये तो श्रीठाकुरजी के ऊपर मोहित हैं। सो उनकों अप्सरा देवांगना तुच्छ दीसत हैं। और श्रीआचार्यजी आपु जलभेद ग्रंथ में कहे हैं, जो—

'वेश्यादिसहिता मत्ता गायका गर्तसंज्ञिताः।
जलार्थमेव गर्तास्तु नीचा गानोपजीविनः॥

वेस्यादि सहित गायक भाट, डोम, नीच को गान सूकर के गड़ेला के जलवत् है। सो वामें न्हाय, पीवे, सो जैसें नीच को गानरस पीवे। या प्रकार के दोष श्रीआचार्यजी कहे हैं। सो कृष्णदास परमज्ञानवान मर्यादा के रक्षक। सो ये वेस्या के गानपें रीझे? सो इनकी देखादेखी करे सो बहिर्मुख होय। ये तो सब कों सिक्षा देवे कों उद्धार करन कों प्रगटे हैं, तासों ये कृष्णदास वेस्या के ऊपर क्यों रीझे? यह संदेह होय तहां कहत हैं, जो-यहां कारन और है। जो-यह

હતો. ગાન-નૃત્યમાં ચતુર ઘણી હતી. એ વેશ્યા ખ્યાલ-ટપ્પા ગાતી હતી. તે છોકરીનું ગાન કૃષ્ણદાસના કાન ઉપર પડયું હતું. તે કૃષ્ણદાસના મનમાં બેસી ગયું. તેથી પ્રસન્ન થઇ ગયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે ત્યાં પોતાનો રથ ઉભો રાખ્યો. પછી ભીડ ખસેડીને એ છોકરીનું રૂપ જોયું અને ત્યાં ગાન સાંભળીને મોહિત થઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—અહીં સંદેહ થાય કે કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના કૃપાપાત્ર સેવક વેશ્યાના ગાન ઉપર મોહિત કેમ થયા? એ તો શ્રીઠાકુરજી ઉપર મોહિત છે. એમને અપ્સરા દેવાંગના તુચ્છ દેખાય છે વળી શ્રીઆચાર્યજી પોતે 'જલભેદ' ગ્રંથમાં કહે છે કે 'वेश्यादि सहिता' (ઉપર જુઓ). વેશ્યાદિ સહિત ગાયક ભાટ, ડોમ. નીચનું ગાન. ભૂંડના ખાડાના જલવત્ છે. તેમાં ન્હાય પીવે તેમ નીચનું ગાન રસ પીવું છે. આ પ્રકારનો દોષ શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યો છે. તેથી કૃષ્ણદાસ પરમજ્ઞાનવાન મર્યાદાના રક્ષક તે વેશ્યાના ગાન ઉપર રીઝયા? એમની દેખાદેખી કરે તે બહિર્મુખ થાય. એતો બધાને શિક્ષા દેવાને ઉદ્ધાર કરવાને પ્રકટ્યા છે. તેથી એ કૃષ્ણદાસ વેશ્યાના ઉપર કેમ રીઝયા? એ સંદેહ થાય ત્યાં કહે છે કે અહીં કારણ બીજું છે. આ વેશ્યાની

वेस्या की छोरी लीला संबंधी दैवी जीव ललिताजी की सखी हैं, सो लीला में इनको नाम 'बहुभाषिनी' है। सो एक दिन ललिताजी श्रीठाकुरजी के लिये सामग्री करत हती, तब ललिताजी ने बहुभाषिनी सों कही, जो–तू मिश्री पीसिके ले आउ। सो बहुभाषिनी मिश्री को डबरा भरिके ले चली। सो दूसरी सखी सों बात करते करते छांटा उड्यो, सो मिश्री में पर्‍यो। सो बहुभाषिनी कों खबरि नाहीं। पाछे मिश्री को डबरा लेके ललिताजी के पास आई, तब ललिताजी परम चतुर हती, सो जानि गई। पाछे बहुभाषिनी सों कही, जो–यह सामग्री छुइ गई, जो–तेरे मुख तें छांटा पर्‍यो है। सो भगवद् इच्छा होनहार। तब बहुभाषिनी ने कही, जो–तुम झूठ कहत हों, छींटा तो नाहीं पर्‍यो। और श्रीठाकुरजी सखामंडली में सबकी जूठनि हू लेत हैं। सो तब ललिताजी ने कह्यो, जो-प्रभुन की लीला तू कहा जाने? प्रभु प्रसन्न होय चाहे सो करें सोई छाजे। जो-अपने मन तें कछू हीन क्रिया करे सोई भ्रष्ट। तासों तू हीन ठिकाने जनमेगी। तब बहुभाषिनी ने कही, जो-तुमहू शूद्र के घर जनम लेके मेरो उद्धार करो। जो-तुमकों छोड़िके मैं कहां जाऊँ? सो या प्रकार परस्पर शाप भयो। तब कृष्णदास शूद्र के घर जन्मे, और बहुभाषिनी को जनम वेस्या के घर मात्र भयो, सो लौकिक पुरुष को मुंह नाहीं देख्यो। सो कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर प्रेरिके आगरे में वा वेस्या के अंगीकार के लिये पठाये। तासों कृष्णदास के हृदय में वेस्या को गान प्रिय लग्यो।

છોકરી લીલા સંબંધી દૈવી જીવ લલિતાજીની સખી છે. લીલામાં એમનું નામ 'બહુભાષિની' છે. એક દિવસ લલિતાજી શ્રીઠાકુરજીને માટે સામગ્રી કરતી હતી ત્યારે લલિતાજીએ બહુભાષિનીને કહ્યું, કે તૂ મિશ્રી પીસીને લઇ આવ. એટલે બહુભાષિની મિશ્રીનો ડબરો ભરીને લઇ ચાલી ત્યારે બીજી સખીને વાત કરતાં કરતાં છાંટો ઉડ્યો તે મિશ્રીમાં પડયો. તેની બહુભાષિનીને ખબર નહીં. પછી મિશ્રીનો ડબરો લઈને લલિતાજીની પાસે આવી. ત્યારે લલિતાજી પરમ ચતુર હતી તે જાણી ગઇ. પછી બહુભાષિનીને કહ્યું, કે આ સામગ્રી છેવાઇ ગઇ છે. તારા મુખથી છાંટો પડયો છે. પછી ભગવદીચ્છા હોનહાર ત્યારે બહુભાષિનીએ કહ્યું. કે તમે જૂઠું બોલો છો છાંટો તો નથી પડ્યો. વળી શ્રીઠાકુરજી સખા મંડલીમાં બધાની જૂઠ પણ લે છે ત્યારે લલિતાજીએ કહ્યું, કે પ્રભુની લીલાને તૂ શું જાણે? પ્રભુ પ્રસન્ન થઇ ચાહે તે કરે તેય શોભે પરંતુ પોતાના મનથી કંઇ હીન ક્રિયા કરે તે ભ્રષ્ટ. તેથી તૂ હીન જગાએ જન્મીશ. ત્યારે બહુભાષિનીએ કહ્યું, કે તમે પણ શુદ્રના ઘરે જન્મ લઇ મારો ઉદ્ધાર કરો. તમને છોડીને હું કયાં જઉં? આ પ્રકારે પરસ્પર શાપ થયો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શૂદ્રના ઘરે જન્મ્યા અને બહુભાષિનીનો

सो ठाड़े होयके गान नृत्य सुनिके मनमें विचारे, जो–यह सामग्री तो अति उत्तम है, और दैवी जीव है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक है। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वाकों अंगीकार करें तो आछो है। सो यह कृष्णदासजी अपने मन में विचार करिके दस रुपैया वा वेस्याकों देके कहे, जो–हमारे डेरान पर रात्रिकों आइयो। यह कहिके कृष्णदासजी जहां हवेली में हमेस उतरते ताही हवेलीमें उतरे, और सामग्री जो लेनी हती सो गाड़ा लदाय दिये। ता पाछें रात्रि प्रहर एक गई, तब वह वेस्या समाज सहित आई, सो तब नृत्य गान कियो। सो कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये। तब वा वेस्या कों रुपैया १००) सौ दिये। और वा वेस्या सों कहे, जो–तेरो रूप, गान, नृत्य सब आछे हैं। तासों सवारे हम श्रीगोवर्द्धन जायगें, और हमारो सेठ तो उहां हैं, जो–तेरो मन होय तो तू चलियो। तब वा वेस्या ने कही, जो–हमकों तो यही चहिये। पाछें वह वेस्या अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई, जो–ये इतने रुपैया दिये तो सेठ न जाने कहा देयगो? सो तब वेस्या ने घर आयके अपनी गाड़ी सिद्ध कराई, सो गायवे को साज सब आछे बनाय गाड़ी ऊपर धरि राख्यो। तब

જન્મ માત્ર વેશ્યાના ઘરે થયો પણ લૌકિકપુરુષનુ મુખ ન જોયું. એટલે કૃષ્ણદાસને શ્રીગોવર્દ્ધનધરે પ્રેરીને આગ્રામાં તે વેશ્યાના ઘરે મોકલ્યા. તેથી કૃષ્ણદાસના હૃદયમાં વેશ્યાનું ગાન પ્રિય લાગ્યું.

એથી ઉભા રહીને ગાન નૃત્ય સાંભળીને મનમાં વિચાર્યું, કે આ સામગ્રી તો અતિ ઉત્તમ છે. વળી દૈવી જીવ છે એથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના લાયક છે. તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે એનો અંગીકાર કરે તો સારૂં છે. એમ કૃષ્ણદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કરીને દશ રૂપૈયા એ વેશ્યાને આપીને કહે, કે અમારા મુકામે રાત્રિએ આવજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસજી જ્યાં હવેલીમાં હંમેશ ઉતરતા હતા તેજ હવેલીમાં ઉતર્યા અને સામગ્રી જે લેવી હતી તેનું ગાડું ભરાવી દીધું. તે પછી રાત્રિ પ્રહર એક ગઇ. ત્યારે એ વેશ્યા સમાજ સહિત આવી ત્યારે નૃત્યગાન કર્યું. તેથી કૃષ્ણદાસ બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે એ વેશ્યાને રૂપીઆ ૧૦૦) સો આપ્યા અને એ વેશ્યાને કહે, કે તારૂં રૂપ, ગાન, નૃત્ય બહું સારૂં છે. તેથી સવારે અમો શ્રીગોવર્દ્ધન જઇશું અને અમારો શેઠ તો ત્યાં છે. જો તારૂં મન હોય તો તૂ ચાલજે. ત્યારે એ વેશ્યાએ કહ્યું, કે અમારે તો આ જ જોઇએ. પછી એ વેશ્યા પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થઇ, કે આમણે આટલા રૂપીઆ આપ્યા તો શેઠ ન જાણે શું આપશે? ત્યાર પછી વેશ્યાએ ઘર

सवारे भये कृष्णदास के पास आई। पाछें कृष्णदास वा वेस्या कों लिवाय के ले चले, सो मथुरा आय रहे। तब दूसरे दिन मथुरा तें चले सो मध्यान्ह समय गोपालपुर में आये। पाछें वा वेस्या कों न्हवाय के नवीन वस्त्र पहेरवेकों दियो, सो वाने पहर्यो। तब कृष्णदास अपने मन में विचारे, जो–यह ख्याल टप्पा गायगी सो श्रीगोवर्द्धनधर सुनेंगे। तासों मैं याकों एक पद सिखाऊं। तब कृष्णदास ने वा वेस्या कों एक पद सिखायो। और कह्यो, जो–ये पद तू पूरवी राग में गाइयो। सो पद—

राग पूर्वी—मेरो मन गिरिधर छबि पर अटक्यो। ललित त्रिभंगी अंगन ऊपर चलि गयो तहां ही ठठक्यो॥ १॥ सजल स्यामघन नील बरन है फिरि चित्त अनतन भटक्यो। 'कृष्णदास' कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो॥ २॥

यह पद कृष्णदासने वा वेस्या कों सिखायो। ता पाछें उत्थापन के दरसन होय चुके, तब भोग के दरसन के समय वा वेस्या कों समाज सहित कृष्णदास परवत के ऊपर ले गये।

भावप्रकाश—सो भोग के समय यातें ले गये, जो–उत्थापन के समय निकुंज में जागिके (श्रीठाकुरजी) उठत हैं। तातें उत्थापन भोग वेगि आयो चहिये। और भोग के दरसन–व्रज के मारग में पधारत हैं, सो अनेक भक्तन कों अंगीकार हैं। तासों याहू को अंगीकार करनो है। तासों भोग के समय कृष्णदास वेस्या कों परवत उपर ले गये।

આવીને પોતાની ગાદી સિદ્ધ કરાવી. પછી ગાવાનો સાજ બધો સુંદર બનાવી ગાદી ઉપર ધરી રાખ્યો. પછી સવાર થયે કૃષ્ણદાસની પાસે આવી. પછી કૃષ્ણદાસ એ વેશ્યાને સાથે લઇને ચાલ્યા તે મથુરા આવી રહ્યા. ત્યારે બીજા દિવસે મથુરાથી ચાલ્યા તે મધ્યાહ્ન સમયે ગોપાલપુરમાં આવ્યા. પછી એ વેશ્યાને ન્હવડાવીને નવીન વસ્ત્ર પહેરવાને આપ્યું એ એણે પહેર્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસ પોતાના મનમાં વિચારે, કે આ ખ્યાલ-ટપ્પા ગાશે તે શ્રીગોવર્દ્ધનધર સાંભળશે. તેથી હું એને એક પદ શિખવાડું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે એ વેશ્યાને એક પદ શિખવાડ્યું અને કહ્યું, કે તું પૂર્વી રાગમાં ગાજે. તે પદ—'મેરો મન ગિરિધર છબી પર અટક્યો૦' (ઉપર જુઓ). એ પદ કૃષ્ણદાસે એ વેશ્યાને શિખવાડ્યું. તે પછી ઉત્થાપનનાં દર્શન થઇ ચૂક્યાં. ત્યારે ભોગના દર્શનના સમયે એ વેશ્યાને સમાજ સહિત કૃષ્ણદાસ પર્વત ઉપર લઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—ભોગના સમયે એથી લઇ ગયા કે ઉત્થાપનના સમયે નિકુંજમાં જાગીને (શ્રીઠાકુરજી) ઉઠે છે. તેથી ઉત્થાપનનો ભોગ વ્હેલો આવવો જોઇએ અને ભોગનાં દર્શન (એટલે) વ્રજના માર્ગમાં પધારે છે ત્યારે અનેક ભક્તોને અંગીકાર

सो ठाड़े होयके गान नृत्य सुनिके मनमें विचारे, जो-यह सामग्री तो अति उत्तम है, और दैवी जीव है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक है। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वाकों अंगीकार करें तो आछो है। सो यह कृष्णदासजी अपने मन में विचार करिके दस रुपैया वा वेस्याकों देके कहे, जो-हमारे डेरान पर रात्रिकों आइयो। यह कहिके कृष्णदासजी जहां हवेली में हमेस उतरते ताही हवेलीमें उतरे, और सामग्री जो लेनी हती सो गाड़ा लदाय दिये। ता पाछें रात्रि प्रहर एक गई, तब वह वेस्या समाज सहित आई, सो तब नृत्य गान कियो। सो कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये। तब वा वेस्या कों रुपैया १००) सौ दिये। और वा वेस्या सों कहे, जो-तेरो रूप, गान, नृत्य सब आछे हैं। तासों सवारे हम श्रीगोवर्द्धन जायगें, और हमारो सेठ तो उहां हैं, जो-तेरो मन होय तो तू चलियो। तब वा वेस्या ने कही, जो-हमकों तो यही चहिये। पाछें वह वेस्या अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई, जो-ये इतने रुपैया दिये तो सेठ न जाने कहा देयगो? सो तब वेस्या ने घर आयके अपनी गाड़ी सिद्ध कराई, सो गायवे को साज सब आछे बनाय गाड़ी ऊपर धरि राख्यो। तब

જન્મ માત્ર વેશ્યાના ઘરે થયો પણ લૌકિકપુરુષનું મુખ ન જોયું. એટલે કૃષ્ણદાસને શ્રી-ગોવર્દ્ધનધરે પ્રેરીને આગ્રામાં તે વેશ્યાના ઘરે મોકલ્યા. તેથી કૃષ્ણદાસના હૃદયમાં વેશ્યાનું ગાન પ્રિય લાગ્યું.

એથી ઉભા રહીને ગાન નૃત્ય સાંભળીને મનમાં વિચાર્યું, કે આ સામગ્રી તો અતિ ઉત્તમ છે. વળી દૈવી જીવ છે એથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના લાયક છે. તેથી શ્રી-ગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે એનો અંગીકાર કરે તો સારૂં છે. એમ કૃષ્ણદાસે પોતાના મનમાં વિચાર કરીને દશ રૂપૈયા એ વેશ્યાને આપીને કહે, કે અમારા મુકામે રાત્રિએ આવજો. એમ કહીને કૃષ્ણદાસજી જ્યાં હવેલીમાં હંમેશ ઉતરતા હતા તેજ હવેલીમાં ઉતર્યા અને સામગ્રી જે લેવી હતી તેનું ગાડું ભરાવી દીધું. તે પછી રાત્રિ પ્રહર એક ગઇ. ત્યારે એ વેશ્યા સમાજ સહિત આવી ત્યારે નૃત્યગાન કર્યું. તેથી કૃષ્ણદાસ બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે એ વેશ્યાને રૂપીઆ ૧૦૦) સો આપ્યા અને એ વેશ્યાને કહે, કે તારૂં રૂપ, ગાન, નૃત્ય બહું સારૂં છે. તેથી સવારે અમો શ્રીગોવર્દ્ધન જઇશું અને અમારો શેઠ તો ત્યાં છે. જે તારૂં મન હોય તો તું ચાલજે. ત્યારે એ વેશ્યાએ કહ્યું, કે અમારે તો આ જ જોઇએ. પછી એ વેશ્યા પોતાના મનમાં બહુ પ્રસન્ન થઇ, કે આમણે આટલા રૂપીઆ આપ્યા તો શેઠ ન જાણે શું આપશે? ત્યાર પછી વેશ્યાએ ઘર

सवारे भये कृष्णदास के पास आई। पाछें कृष्णदास वा वेस्या कों लिवाय के ले चले, सो मथुरा आय रहे। तब दूसरे दिन मथुरा तें चले सो मध्यान्ह समय गोपालपुर में आये। पाछें वा वेस्या कों न्हवाय के नवीन वस्त्र पहेरवेकों दियो, सो वाने पहर्‍यो। तब कृष्णदास अपने मन में विचारे, जो–यह ख्याल टप्पा गायगी सो श्रीगोवर्द्धनधर सुनेंगे। तासों मैं याकों एक पद सिखाऊं। तब कृष्णदास ने वा वेस्या कों एक पद सिखायो। और कह्यो, जो–ये पद तू पूरबी राग में गाइयो। सो पद—

राग पूर्वी—मेरो मन गिरिधर छबि पर अटक्यो। ललित त्रिभंगी अंगन ऊपर चलि गयो तहां ही ठठक्यो॥ १॥ सजल स्यामघन नील वरन है फिरि चित्त अनतन भटक्यो। 'कृष्णदास' कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो॥ २॥

यह पद कृष्णदासने वा वेस्या कों सिखायो। ता पाछें उत्थापन के दरसन होय चुके, तब भोग के दरसन के समय वा वेस्या कों समाज सहित कृष्णदास परवत के ऊपर ले गये।

भावप्रकाश—सो भोग के समय यातें ले गये, जो–उत्थापन के समय निकुंज में जागिके (श्रीठाकुरजी) उठत हैं। तातें उत्थापन भोग वेगि आयो चहिये। और भोग के दरसन–व्रज के मारग में पधारत हैं, सो अनेक भक्तन कों अंगीकार हैं। तासों याहू को अंगीकार करनो है। तासों भोग के समय कृष्णदास वेस्या कों परवत उपर ले गये।

આવીને પોતાની ગાદી સિદ્ધ કરાવી. પછી ગાવાનો સાજ બધો સુંદર બનાવી ગાદી ઉપર ધરી રાખ્યો. પછી સવાર થયે કૃષ્ણદાસની પાસે આવી. પછી કૃષ્ણદાસ એ વેશ્યાને સાથે લઇને ચાલ્યા તે મથુરા આવી રહ્યા. ત્યારે બીજા દિવસે મથુરાથી ચાલ્યા તે મધ્યાહ્ન સમયે ગોપાલપુરમાં આવ્યા. પછી એ વેશ્યાને ન્હવડાવીને નવીન વસ્ત્ર પહેરવાને આપ્યું એ એણે પહેર્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસ પોતાના મનમાં વિચારે, કે આ ખ્યાલ-ટપ્પા ગાશે તે શ્રીગોવર્દ્ધનધર સાંભળશે. તેથી હું એને એક પદ શિખવાડું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે એ વેશ્યાને એક પદ શિખવાડ્યું અને કહ્યું, કે તું પૂર્વી રાગમાં ગાજે. તે પદ:—'મેરો મન ગિરિધર છબી પર અટક્યો૦' (ઉપર જુઓ). એ પદ કૃષ્ણદાસે એ વેશ્યાને શિખવાડ્યું. તે પછી ઉત્થાપનનાં દર્શન થઇ ચૂક્યાં. ત્યારે ભોગના દર્શનના સમયે એ વેશ્યાને સમાજ સહિત કૃષ્ણદાસ પર્વત ઉપર લઇ ગયા.

ભાવપ્રકાશ—ભોગના સમયે એથી લઇ ગયા કે ઉત્થાપનના સમયે નિકુંજમાં જાગીને (શ્રીઠાકુરજી) ઉઠે છે. તેથી ઉત્થાપનનો ભોગ વ્હેલો આવવો જોઇએ અને ભોગનાં દર્શન (એટલે) વ્રજના માર્ગમાં પધારે છે ત્યારે અનેક ભક્તોને અંગીકાર

पाछें भोगके किवाड़ खुले। तब वह वेस्या ने पहले नृत्य कियो, ता पाछें गान करन लागी। सो कृष्णदास ने पद करिके सिखायो हतो सो गायो। सो गावत २ जब छेली तुक आई, जो–'कृष्णदास कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो' या पद को गान करत ही वा वेस्या की देह छूटि गई, सो दिव्य देह होय लीला में प्राप्त भई सो तब सगरे समाजी तथा वा वेस्याकी माता रोवन लागी। जो हम यासों कमाय खाते, अब हम कहा करेंगे? तब कृष्णदासने उनकों नीचे ले जायके कह्यो, जो–अब तो भई सो भई, जो याकी इतनी आरबल हती। सो या बात को कोऊ कहा करे? अब तुम कहो सो तुमकों देऊँ। तब उन कही, जो–हजार रुपैया देऊ जो–कछुक दिन खांय। पाछें जो होनहार होयगी सो सही। तब कृष्णदास नें हजार रुपैया देके उन सबन कों बिदा किये। सो या प्रकार वा वेस्या की छोरी कों श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदास की कानि तें आपु अंगीकार किये।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो–श्रीआचार्यजी के संबंध बिना लीला की प्राप्ति कैसे भई? तहां कहत है, जो–कृष्णदास के हृदय में श्रीआचा-

---

કરે છે. તેથી આનો પણ અંગીકાર કરવો છે. જેથી ભોગના સમયે કૃષ્ણદાસ વેશ્યાને પર્વત ઉપર લઇ ગયા.

પછી ભોગનાં કમાડ ખુલ્યાં. ત્યારે એ વેશ્યાએ પહેલાં નૃત્ય કર્યું. તે પછી ગાન કરવા લાગી. કૃષ્ણદાસે પદ કરીને શિખવાડ્યું હતું તે ગાયું. તે ગાતાં ગાતાં જ્યારે છેલ્લી તુક આવી કે 'કૃષ્ણદાસ કિયો પ્રાન ન્યોછાવર યહ તન જગ શિર પટક્યો'એ પદનું ગાન કરતાં જ તે વેશ્યાની દેહ છુટી ગઇ. તે દિવ્ય દેહથી લીલામાં પ્રાપ્ત થઇ. ત્યારે બધા સમાજી તથા તે વેશ્યાની માતા રોવા લાગી, કે અમે આનાથી કમાઇ ખાતા હતા હવે અમે શું કરીશું? ત્યારે કૃષ્ણદાસે એમને નીચે લઇ જઇને કહ્યું, કે હવેતો થયું તે થયું. એની એટલી જ આયુષ્ય હતી. એ વાતને કોઇ શું કરે? હવે તમે કહો તે તમને આપું? ત્યારે એણે કહ્યું, કે હજાર રૂપૈયા આપો જે થોડાક દિવસ ખાઇએ. પછી જે થવા કાળ હશે તે થશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસે હજાર રૂપૈયા દઇને તે બધાંને વિદાય કર્યા. એ પ્રકારે એ વેશ્યાની છોકરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ પોતે કૃષ્ણદાસની કાનિથી અંગીકાર કરી.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં એ સંદેહ થાય કે શ્રીઆચાર્યજીના સંબંધ વિના લીલાની પ્રાપ્તિ કેમ થઇ? ત્યાં કહીએ છીએ, જે કૃષ્ણદાસના હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી બિરાજે છે.

यॆजी विराजत हैं । सो कृष्णदास ने पद वेस्या की छोरी कों सिखायो, सो देखिवे मात्र है । या पद द्वारा श्रीआचार्यजी को संबंध कराये । तासों यह पहिली तुक में कहे, जो–'मेरो मन गिरधर–छवि पर अटक्यो' सो सगरो धरम, मन लगायवे की रीति करी है । जीव अपनी सत्ता मानि स्त्री, पुत्र, देह में मन लगायो (है) तामों समर्पन करावत हैं । तहां कोऊ कहे, जो-जीव सब दे चुक्यो है, जो-अपनी सत्ता छोड़िके प्रभुन की सत्ता सब है । तासों मोकों तो एक श्रीकृष्ण ही गति हैं । तासों या पद में कहे, जो-मेरो मन श्रीगोवर्द्धनधर की छवि पर अटक्यो, सो सब छोडिके । या प्रकार कृष्णदास द्वारा श्रीआचार्यजी आपु संबंध कराये, यह जाननो । तोहू संदेह होय, जो-गुरु विना लीला में कैसे प्राप्ति भई ? सो अलीखान कों प्रभु दरसन दिये । पाछे अलीखान कों और अलीखान की बेटी कों सेवक होयवे की कही, सो सेवक कराये । यहां नाहीं कराये, यह संदेह होय । सो काहेते ? जो-ब्रह्मसंबंध में श्रीगोवर्द्धनधर की हू यही आज्ञा है, जो-जाकों तुम ब्रह्म-संबंध करवावोगे, ताकूं मैं अंगीकार करूंगो । तासों इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजी द्वारा ब्रह्मसंबंध न भयो और लीला की प्राप्ति कैसे भई ? उद्धार होय परंतु लीला की प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ । सो ब्रह्मसंबंध को दान करिवे के लिये श्री-आचार्यजी के कुल को विस्तार भयो । सो काहे तें ? जो-सेवकन कों श्रीआचार्यजी

કૃષ્ણદાસે પદ વેશ્યાની છોકરીને શિખવાડ્યું. તે દેખવા માત્ર છે. (પરંતુ) એ પદ દ્વારા શ્રીઆચાર્યજીનો સંબંધ કરાવ્યો તેથી એ પહેલી તુકમાં કહે કે 'મેરો મન ગિરિધર છબિ પર અટક્યો' સઘળો ધર્મ, મન લગાડવાની રીત કરી છે. જીવે પોતાની સત્તા માની સ્ત્રી, પુત્ર, દેહમાં મન લગાડ્યું છે તેથી સમર્પણ કરાવે છે, ત્યાં કોઇ કહે જીવ બધું દઇ ચૂક્યો છે એટલે કે પોતાની સત્તા છોડીને પ્રભુની બધી સત્તા છે તેથી મને તો એક શ્રીકૃષ્ણ જ ગતિ છે તેથી આ પદમાં કહ્યું કે મારૂં મન શ્રીગોવર્દ્ધનધરની છબિ ઉપર અટક્યું તે બધું છોડીને એ પ્રકારે કૃષ્ણદાસ દ્વારા શ્રીઆચા-જીએ પોતે સંબંધ કરાવ્યો એ જાણવું. તો પણ સંદેહ થાય કે ગુરુ વિના લીલામાં કેવી રીતે પ્રાપ્તિ થઇ ? અલીખાનને પ્રભુએ દર્શન દીધાં પછી અલીખાનને અને અલી-ખાનની બેટીને સેવક થવાનું કહ્યું તેમને સેવક કરાવ્યાં. અહીં નહીં કરાવી. એ સંદેહ થાય કેમકે બ્રહ્મસંબંધમાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરની પણ એજ આજ્ઞા છે. કે જેને તમે બ્રહ્મસંબંધ કરાવશો તેનો હું અંગીકાર કરીશ તેથી આને શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રીગુસાંઇજી દ્વારા બ્રહ્મસંબંધ ન થયું અને લીલાની પ્રાપ્તિ કેમ થઇ ? ઉદ્ધાર થાય પરંતુ લીલાની પ્રાપ્તિ અત્યંત દુર્લભ બ્રહ્મસંબંધનું દાન કરવાને માટેજ શ્રીઆચાર્યજીના કુલનો

आपु नाम सुनायबे की आज्ञा दीनी, परि ब्रह्मसंबंध की नाहीं। तामों ब्रह्मसंबंध को दान वल्लभकुल ही तें होय। सो औरतें फलित नाहीं है। यह संदेह होय, तहां कहत हैं, जो-वेस्या की छोरी देह तजिके लीला में गई। तहां लीला में ललिता, श्रीस्वामिनीजी सदा विराजत हैं। सो कृष्णदासजी लीला में ललिता रूप होय जगत तें काढिके लीला में पठाये, सो लीला में श्रीललिताजी ने श्रीस्वामिनीजी द्वारा ब्रह्मसंबंध कराय अपनी सेवा में राखे। सो काहेतें? जो--ललिताजी की सखी है। या प्रकार ब्रह्मसंबध भयो। सो जैसे मथुरा में नागर की बेटी कों लीला में ब्रह्मसंबंध श्रीगुसांईजी कराये, यह भाव जाननो।

सो वे कृष्णदास ऐसे भगवदीय हते। जो वेस्या कों अंगीकार करायो।

वार्ता–प्रसंग ६—और एक समय सगरे वैष्णव मिलिके कुंभनदासजी के पास आये। सो उनकों प्रीति सों बैठारिके पूछे, जो–आजु बड़ी कृपा करी, जो–कछु आज्ञा करिये। तब वैष्णवनने कही, जो–तुमसों कछु मारग की रीति सुनिबे कों आये हैं। तब कुंभनदासजी कह्यो, जो–मारग की रीति में तो कृष्णदास अधिकारी निपुण हैं, सो उनसों पूछो। तब उन वैष्णवनने कही, जो–हमारी सामर्थ्य नाहीं है, जो–कृष्णदास सों पूछि सकें। तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो–तुम

વિસ્તાર થયો, કેમકે સેવકોને શ્રીઆચાર્યજીએ નામ સંભળાવવાની આજ્ઞા આપી પરંતુ બ્રહ્મસંબંધની નહીં. તેથી બ્રહ્મસંબંધનું દાન વલ્લભકુલથીજ થાય. બીજાથી ફલિત નથી. એ સંદેહ હોય ત્યાં કહીએ છીએ કે વેશ્યાની છોકરી દેહ છોડીને લીલામાં ગઇ ત્યાં લીલામાં લલિતા, શ્રીસ્વામિનીજી સદા બિરાજે છે. તે કૃષ્ણદાસજી લીલામાં લલિતા રૂપ થઇ જગતમાંથી કાઢીને લીલામાં મોકલી. તે લીલામાં લલિતાજીએ શ્રીસ્વામિનીજી દ્વારા બ્રહ્મસંબંધ કરાવી પોતાની સેવામાં રાખી. કેમકે તે લલિતાજીની સખી છે. એ પ્રકારે બ્રહ્મસંબંધ થયું. જેમ મથુરામાં નાગરની બેટીને લીલામાં બ્રહ્મસંબંધ શ્રીગુસાંઇજીએ કરાવ્યું એ ભાવ જાણવો.

એ કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા, જે વેશ્યાનો અંગીકાર કરાવ્યો.

વાર્તા–પ્રસંગ ૬–વળી એક સમય બધા વૈષ્ણવો મળીને કુંભનદાસજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે એમને પ્રીતિથી બેસાડીને પૂછયું, કે આજ મહાન્ કૃપા કરી કંઇ આજ્ઞા કરો. ત્યારે વૈષ્ણવોએ કહ્યું, કે તમારી પાસેથી કંઇ માર્ગની રીતિ સાંભળવાને આવ્યા છીએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે માર્ગની રીતિમાં તો કૃષ્ણદાસ અધિકારી નિપુણ છે તેથી એમને પૂછો. ત્યારે એ વૈષ્ણવોએ કહ્યું, કે અમારી સામર્થ્ય નહીં જે

मेरे संग चलो, जो-तिहारी ओर तें हम पूछेंगे। तब सगरे वैष्णव कुंभनदासजी के संग गये।

भावप्रकाश—सो कुंभनदासजी यातें नाहीं कहे, जो-कुंभनदासजी को मन रहस्य लीला में मगन है। सो कहा जानिये जो प्रेम में कहा वस्तु निकसि पडे? और कीर्तन में गूढ रीति सों लीला वरनन करत हैं। तासों जाको जैसो अधिकार है, ताकों तैसो कीर्तन में भासत है। और वैष्णवन सों कहनो परे सो खोलिके समुझावनो परे। तासों कुंभनदासजी कृष्णदास के पास सगरे वैष्णवन कों संग लेके आये।

सो तब सब वैष्णवन कों देखिके कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये, और सबन कों आदर करिके बैठारे। ता समय कृष्णदासनें यह कीर्तन गायो। सो पद—

राग सारंग—गिरिधर जब अपुनो करि जाने। ताकौ मन भक्तन की सेवा भक्त चरनरज सदा लुभाने॥ १॥ भक्तन में मति भक्तन में गति हरिजन हरि एक करि माने। 'कृष्णदास' मन वच क्रम करि हरिजन संगे हरि उर आने॥ २॥

यह पद कृष्णदासने कह्यो। पाछें कृष्णदासने पूछी, जो-आज मो पर सगरे भगवदीय कृपा करे, सो-मेरे पास पधारे। तासों अब जो प्रसन्न होयके आज्ञा करो सो मैं करूं। तब कुंभनदासजीने कह्यो, जो-सगरे वैष्णवन को मन पुष्टिमारग की रीति सुनिवे को है। सो कहा कहिये? कहा सुमिरन करिये? जासों ऐसे पुष्टिमारगको अनुभव

(અમે) કૃષ્ણદાસને પૂછી શકીએ. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે તમે મારી સાથે ચાલો. તમારી તરફથી અમે પૂછીશું. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો કુંભનદાસજીની સાથે ગયા.

ભાવપ્રકાશ—કુંભનદાસજીએ એથી ના કહી કે કુંભનદાસનું મન રહસ્ય લીલામાં મગન છે. તેથી શું જાણિએ કે પ્રેમમાં કઇ વસ્તુ નિકળી જાય? અને કીર્તનમાં (તો) ગૂઢ રીતિથી લીલા વર્ણન કરે છે તેથી જેનો જેવો અધિકાર છે તેને તેવું કીર્તનમાં દેખાય છે અને વૈષ્ણવોને કહેવું પડે તે (તો) ખોલીને સમજાવવું પડે તેથી કુંભનદાસજી કૃષ્ણદાસની પાસે બધા વૈષ્ણવોને સંગે લઇને આવ્યા

ત્યારે બધા વૈષ્ણવોને જોઇને કૃષ્ણદાસ બહુ પ્રસન્ન થયા અને બધાને આદર કરીને બેસાડ્યા. તે સમયે કૃષ્ણદાસે આ કીર્તન ગાયું. એ પદ—'ગિરિધર જબ અપુનો કરિ જાને' (ઉપર જુઓ). એ પદ કૃષ્ણદાસે ગાયું. પછી કૃષ્ણદાસે પૂછ્યું, કે આજ મારા ઉપર બધા ભગવદીયોએ કૃપા કરી, જે મારી પાસે પધાર્યા. તેથી હવે પ્રસન્ન થઇને જે આજ્ઞા કરો તે હું કરૂં. ત્યારે કુંભનદાસજીએ કહ્યું, કે બધા વૈષ્ણવોનું મન

होय, सो कृपा करिके सुनावो। तब कृष्णदासने कह्यो, जो-कुंभनदासजी! तुम सगरे प्रकार करिके योग्य हो, जो-श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हो, सो उचित है। तुम बड़े हो, जो-तिहारे आगे मैं कहा कहूं? तुमसों कछू छानी नाहीं है। तब कुंभनदासजी कृष्णदाससों कहे, जो-तुम कहो, हमारी आज्ञा है। जो सगरे सेवकन में तुम मुख्य हो। सेवकन को कार्य तिहारे हाथ है, जो-यह पुष्टिमारग के अधिकारी तुम हो, तातें तुम कहो। तब कृष्णदासने पहले अष्टाक्षर को भाव कीर्तन में कह्यो, सो पद—

राग सारंग—कृष्ण श्रीकृष्णः शरणं मम उच्चरे। रैन दिन नित्य प्रति सदा पल छिन घडी करत विध्वंस जन अखिल अघ परिहरे॥१॥ होत हरिरूप ब्रजभूप भावे सदा अगम भवसिंधुकों बिना साधन तरे। रहत निसदिवस आनंद उरमें भरे पुष्टि लीला सकल सार उर में धरे॥२॥ रमा अज सिव सेष सनकादि सुक सारदा व्यास नारद रटे पल मुख ना टरे। लाल गिरिधरनकी महिमा अतुल जगमगे सरन 'कृष्णदास' निगम नेति नेति करे॥३॥

सो यह अष्टाक्षरको भाव कहिके अब पंचाक्षरको भाव कीर्तन में गाये। सो पद—

राग सारंग—कृष्ण ये कृष्ण मन मांह गति जानिए। देह ईंद्रिय प्रान दारागारादि वित्त आतमा सकल श्रीकृष्ण की मानिए॥१॥ कृष्ण मम स्वामी हों दास मन वच क्रम, कर्ता येही सदा जिय आनिए। 'कृष्णदासनिनाथ' हरिदासवर्यधर चरनरज वल्लभाधीश मन सानिए॥२॥

सो ये दोय कीर्तन कृष्णदासने गाय सुनाये। तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयके कहे, जो-कृष्णदास! तुम धन्य हो, जो-दोय कीर्तन में

પુષ્ટિમાર્ગની રીતિ સાંભળવાનું છે. તેથી શું કહીએ ? શું સ્મરણ કરીએ ? જેનાથી આવા પુષ્ટિમાર્ગનો અનુભવ થાય ? તે કૃપા કરીને સંભળાવો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે કુંભનદાસજી ! તમે બધી રીતે યોગ્ય છો. શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર ભગવદીય છો તેથી ઉચિત છે (જે તમે કહો) તમે મોટા છો. તમારી આગળ હું શું કહું ? તમારાથી કંઇ છાનું નથી. ત્યારે કુંભનદાસજી કૃષ્ણદાસને કહે, કે તમે કહો અમારી આજ્ઞા છે. બધા સેવકોમાં તમે મુખ્ય છો. સેવકોનું કાર્ય તમારે હાથ છે. આ પુષ્ટિમાર્ગના અધિકારી તમે છો તેથી તમે કહો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પહેલાં અષ્ટાક્ષરનો ભાવ કીર્તનમાં કહ્યો, તે પદ—'કૃષ્ણ શ્રીકૃષ્ણ: શરણં મમ ઉચ્ચરે' (ઉપર જુઓ). આ અષ્ટાક્ષરનો ભાવ કહીને હવે પંચાક્ષરનો ભાવ કીર્તનમાં ગાયો. તે પદ—'કૃષ્ણ યે કૃષ્ણ મનમાંહ ગતિ જાનિયે' (ઉપર જુઓ). આ બે કીર્તન કૃષ્ણદાસે ગાઇ

संदेह दूरि कियो। और मारग को सब सिद्धांत बतायो। ता पाछें कृष्णदाससों विदा होयके सगरे वैष्णव अपने घर कों गये। सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ७—और कृष्णदासको गंगाबाइ क्षत्रानीसों बहोत स्नेह हतो।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-लीला में गंगाबाई श्रुतिरूपा के जूथ में तामसी भक्त हैं। सो मथुरा के एक क्षत्री के घर जन्मी। पाछे बरस ११ की भई। तब गंगाबाई को मथुरा में एक क्षत्री के बेटा सों ब्याह भयो। पाछे गंगाबाई क्षत्राणी के जो बेटा होय सो मरि जाय, सो नौ बेटा भये। ता पाछे एक बेटी भई। सो बेटी को विवाह गंगाबाई क्षत्राणी ने कियो। सो गंगाबाई की बेटी के गहना बहोत हतो। सो वह बेटी मरी। सो बेटी को गहनो लाख रुपया को दाबि राख्यो, सो कछू मथुरा के हाकिम कों देके गहनो सब राख्यो। ता पाछे बरस ५५ की भई तब झगडा के लिये श्रीनाथजीद्वार आयके रही। सो कृष्णदास सों मिलिके श्रीआचार्यजी सों सेवक होयवे की कही। तब कृष्णदासने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज! गंगाबाई क्षत्राणी कों सरन लीजिये। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-जीव तो दैवी है, परंतु अभी मन श्रीठाकुरजी में

સંભળાવ્યાં ત્યારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને કહે, કે કૃષ્ણદાસ ! તમે ધન્ય છો. એ કીર્તનમાં સંદેહ દૂર કર્યો અને માર્ગનો બધો સિદ્ધાંત બતાવ્યો. તે પછી કૃષ્ણદાસથી વિદાય થઇને બધા વૈષ્ણવો પોતાને ઘરે ગયા. એ કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૭-વળી કૃષ્ણદાસને ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીથી બહુ સ્નેહ હતો.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે લીલામાં ગંગાબાઇ શ્રુતિરૂપાના યૂથમાં તામસી ભક્ત છે તે મથુરાના એક ક્ષત્રીને ઘરે જન્મી. પછી વર્ષ ૧૧ ની થઈ ત્યારે ગંગાબાઇનું મથુરામાં એક ક્ષત્રીના બેટાથી લગ્ન થયું. પછી ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીને જે પુત્ર થાય તે મરી જાય. એમ નવ પુત્ર થયા. તે પછી એક પુત્રી થઇ. એ પુત્રીનો વિવાહ ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીએ કર્યો. તે ગંગાબાઇની પુત્રીને ઘરેણું ઘણું હતું. તે પુત્રી મરી ગઇ ત્યારે પુત્રીનું ઘરેણું લાખ રૂપીઆનું સંતાડી રાખ્યું. થોડું મથુરાના હાકેમને દઇને ઘરેણું બધું રાખ્યું. તે પછી વર્ષ ૫૫ની થઇ ત્યારે ઝઘડાને લીધે શ્રીનાથજીદ્વાર આવીને રહી. ત્યારે કૃષ્ણદાસને મળીને શ્રીઆચાર્યજીથી સેવક થવાનું કહ્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીઆચાર્યજીને વિનંતી કરી કે, મહારાજ ! ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીને શરણે લો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પોતે કહે, કે જીવ તો દૈવી છે પરંતુ હજુ મન શ્રીઠાકુરજીમાં નથી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે

नाहीं है। तब कृष्णदास ने बिनती कीनी, जो–महाराज! आपकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धननाथजी कृपा करेगें। पाछे श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास के आग्रह सों गंगाबाई कों नामनिवेदन करवायो। सो कृष्णदास पहले श्रीगोवर्द्धननाथजी के भेटिया होय के परदेस कों जाते, तब गंगाबाई क्षत्राणी मथुरा कों आवती। पाछे कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आवते तब गंगा क्षत्राणी हू मथुरा सों सगरी वस्तु ले श्रीजीद्वार आवती। सो कृष्णदास गंगाबाई को मन भगवद्धर्म में लगायवे के तांई दोऊ समे को महाप्रसाद श्रीनाथजी को वाके घर पठावते। क्यों? जो–गंगाबाई की खानपान में प्रीति बहोत हती। सो कृष्णदास बहोत सुंदर सामग्री श्रीनाथजी कों आरोगावते, और गंगाबाई कों भगवद्धर्म समुझावते। पाछे कृष्णदास गंगाबाई कों श्रीनाथजी के सगरे दरसन हू करावते। सो कृष्णदास के संग तें गंगा क्षत्राणी को मन अलौकिक भयो।

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राजभोग समर्पत हते, सो सामग्री के ऊपर गंगाबाई की दृष्टि परी। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग आरोगे नाहीं। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोग सरायो। पाछें राजभोग आरती करि अनोसर करि आपु परवत तें नीचे पधारे। सो सेवक भीतरिया महाप्रसाद

વિનંતી કરી કે મહારાજ! આપની કૃપાથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કૃપા કરશે. પછી શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કૃષ્ણદાસના આગ્રહથી ગંગાબાઇને નામ નિવેદન કરાવ્યું. તે કૃષ્ણદાસ પહેલાં શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના ભેટીઆ થઇને પરદેશમાં જતા ત્યારે ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણી મથુરામાં આવતી પછી કૃષ્ણદાસ શ્રીનાથજીદ્વાર આવતા ત્યારે ગંગાક્ષત્રાણી પણ મથુરાથી બધી વસ્તુ લઇને શ્રીનાથજીદ્વાર આવતી. તે કૃષ્ણદાસ ગંગાબાઇનું મન ભગવદ્ધર્મમાં લગાડવાને માટે બન્ને સમયનો મહાપ્રસાદ શ્રીનાથજીનો એના ઘરે મોકલતા. કેમ? જે ગંગાબાઇની ખાનપાનમાં પ્રીતિ ઘણી હતી. તે કૃષ્ણદાસ બહુજ સુંદર સામગ્રી શ્રીનાથજીને આરોગાવતા અને ગંગાબાઇને ભગવદ્ધર્મ સમજાવતા. પછી કૃષ્ણદાસ ગંગાબાઇને શ્રીનાથજીનાં બધાં દર્શન કરાવતા. તે કૃષ્ણદાસના સંગથી ગંગા ક્ષત્રાણીનું મન અલૌકિક થયું.

તે એક દિવસ શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને રાજભોગ સમર્પતા હતા. તે સામગ્રી ઉપર ગંગાબાઇની દૃષ્ટિ પડી. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે રાજભોગ આરોગ્યા નહીં. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવ્યો. પછી રાજભોગ આર્તિ કરી અનોસર કરી પોતે પર્વતથી નીચે પધાર્યા. પછી સેવક ભીતરિયાએ મહાપ્રસાદ

लिये। और श्रीगुसांईजी आपहू महाप्रसाद लेके पोंढे। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आय रामदास भीतरियाकों लात मारिके जगाये। तब रामदासजी जागे। सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। सो रामदासजी दंडवत् करिके हाथ जोड़िके ठाड़े भये। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु रामदाससों कहे, जो–मैं तो भूख्यो हूं। पाछें रामदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों बिनती कीनी, जो–महाराज! श्रीगुसांईजी ने राजभोग समर्प्यो हतो, और तुम भूखे क्यों रहे? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कही, जो–राजभोग में तो सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टि परी, तासों मैं नाहीं आरोग्यो हूं। तब रामदासजी भीतरिया श्रीगुसांईजी के पास जाय चरणारविंद दाबिके जगाये, और बिनती कीनी, जो–महाराज! श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हैं। सो राजभोग में गंगाबाई की दृष्टि परी है, तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग नाहीं आरोगे हैं। सो यह सुनत ही श्रीगुसांईजी आपु तत्काल उठिके स्नान करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिरमें पधारे। पाछें रामदासजी न्हाय के आये, इतने में सब भीतरिया हू स्नान करिके आये। तब श्रीगुसांईजी आपु सीतकाल देखिके भीतरियान सों कहे, जो–बड़ी और भात करो। सो बेगि सिद्ध होय जायगो, तातें तैयार करो। तब भीतरिया ने बड़ी और भात कियो। सो

લીધો અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પણ મહાપ્રસાદ લઇને પોઢ્યા. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ આવીને રામદાસ ભીતરિયાને લાત મારીને જગાડ્યા ત્યારે જાગ્યા. તે જુએ તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી છે. ત્યારે રામદાસજી દંડવત્ કરીને હાથ જોડીને ઉભા રહ્યા. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે રામદાસને કહે, કે હું તો ભૂખ્યો છું. પછી રામદાસજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! શ્રીગુસાંઇજીએ રાજભોગ સમર્પ્યો હતો અને તમે ભૂખ્યા કેમ રહ્યા? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કહ્યું, કે રાજભોગમાં તો સામગ્રી ઉપર ગંગાબાઇની દૃષ્ટિ પડી તેથી હું આરોગ્યો નથી. ત્યારે રામદાસ ભીતરિયાએ શ્રીગુસાંઇજીની પાસે જઇને ચરણારવિંદ દાબીને (આપને) જગાડ્યા અને વિનંતી કરી કે, મહારાજ! શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આપ ભૂખ્યા છે. રાજભોગમાં ગંગાબાઇની દૃષ્ટિ પડી છે તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે રાજભોગ આરોગ્યા નથી. એ સાંભળતાંજ શ્રીગુસાંઇજી પોતે તત્કાલ ઉઠીને સ્નાન કરીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા. પછી રામદાસજી ન્હાઇને આવ્યા એટલામાં બધા ભીતરિયા પણ સ્નાન કરીને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શીતકાલ જાણીને બધા ભીતરિયાઓને કહે, કે વડી અને ભાત કરો. તે જલ્દી સિદ્ધ થઇ જશે તેથી તૈયાર કરો. ત્યારે ભીતરિયાએ વડી

श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननथाजी कों भोग धरे। ता पाछें राज-भोग की सगरी सामग्री सिद्ध भई, और सेन भोगकी हू सगरी सामग्री सिद्ध भई। सो राजभोग, सेनभोग दोउ भोग संग ही श्रीगुसांईजी ने धरे। पाछें समय भये भोग सरायो। ता पाछें श्री-गोवर्द्धननाथजी कों पोढ़ायके अनोसर करवायके बाहिर पधारे। सो एक डबरा में बड़ीभात श्रीगुसांईजी अपुने श्रीहस्त में लेके परवत तें नीचे पधारे। पाछें सगरे सेवकन कों बड़ीभात अपने हाथ सों रंच-रंच दियो, और रंचक श्रीगुसांईजी आपु आरोगे। बड़ी भात महाप्रसाद बहुत स्वाद भयो, सो श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख सों बहोत सरहायो। पाछें रामदास आदि सब सेवकनने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, महाराज! यह सामग्री तो सीतकाल में कितनीक बार करी है, परंतु आजु बहोत स्वाद भयो। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हते सो प्रीति सों आरोगे, तासों स्वाद अद्‌भुत भयो। ता समय कृष्णदास पास ठाड़े हते। सो कृष्णदास ने कही, जो-महाराज! आपुही करनहारे और आपुही आरोगनहारे, सो स्वाद क्यों न होय? तब श्रीगुसांईजी आपु वा समय श्रीमुखसों कहे, जो-ये तिहारे ही किये भोग भोगत हैं।

અને ભાત કર્યો. તે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ભોગ ધર્યો. તે પછી રાજ-ભોગની બધી સામગ્રી સિદ્ધ થઇ અને સેનભોગની પણ બધી સામગ્રી સિદ્ધ થઇ તેથી રાજભોગ, સેનભોગ બન્ને ભોગ સંગેજ શ્રીગુસાંઇજીએ ધર્યા. પછી સમય થયે ભોગ સરાયો. ત્યાર પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પોઢાવીને અનોસર કરાવીને બાહર પધાર્યા. ત્યારે એક ડબરામાં વડી-ભાત શ્રીગુસાંઇજી પોતાના શ્રીહસ્તમાં લઇને પર્વતથી નીચે ઉતર્યા. પછી બધા સેવકોને વડી-ભાત પોતાના હાથથી રંચ-રંચ આપ્યો અને રંચક શ્રીગુસાંઇજી પોતે આરોગ્યા. વડી-ભાત મહાપ્રસાદ (નો) બહુજ સ્વાદ થયો. તેને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીમુખથી બહુ વખાણ્યો. પછી રામદાસ આદિ બધા સેવકોએ શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ! આ સામગ્રી તો શીતકાલમાં કેટલીય વાર કરી છે પરંતુ આજ બહુ સ્વાદ થયો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે શ્રીગોવ-ર્દ્ધનનાથજી આપ ભૂખ્યા હતા તેથી પ્રીતિથી આરોગ્યા તેથી સ્વાદ અદ્‌ભુત થયો. તે સમયે કૃષ્ણદાસ પાસે ઉભા હતા તે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે મહારાજ! આપજ કરવા-વાળા અને આપજ આરોગવાવાળા. સ્વાદ કેમ ન થાય? ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે તે સમયે શ્રીમુખથી કહ્યું, કે એ તમારાં જ કર્યા ભોગ ભોગવીએ છીએ.

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे नाहीं। सो श्रीगुसांईजी आपु भोग सराये, आचमन मुख वस्त्र करायो। पाछे श्रीगोवर्द्धनधर कों बीरी आरोगाये। सो भूखे श्रीगुसांईजी ने न जानें? और बीरी आरोगत श्रीगोवर्द्धनधर श्रीगुसांईजी सों न कहे, जो-मैं राजभोग नाहीं आरोग्यो? ताको कारन कहा? जो-रामदास भीतरिया सों क्यों कहे? सो यह संदेह होय तहां कहत हैं, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी वा दिना श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के यहां श्रीगिरधरजी ने बड़ीभात करायो हतो, श्रीसोभाबेटीजी किये। सो तब श्रीगिरधरजी और श्रीसोभाबेटीजी के मन में आई, जो-श्रीगोवर्द्धनधर आपु पधारे और नौतन सामग्री आरोगें। तासों उहां वह दूसरो स्वरूप (भक्तोद्धारक) श्रीगिरिराजतें पधारिके श्रीगोवर्द्धनधर बड़ीभात आरोगे। और श्रीगिरिधरजी, श्रीसोभाबेटीजी को तो मनोरथ, सो भक्तन कों अनुभव करावत हैं। सो स्वरूप तो आरोगि पाछें श्रीगिरिराज पर्वत के ऊपर पधारे। सो उहां (गिरिराजपें) सगरे सेवक महाप्रसाद ले चुके। और श्रीगुसांईजी आपु पोंढ़े। ता समय मंदिर में श्रीस्वामिनीजी ने पूछो, जो-कहो, कहां होय आये हो? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-बड़ीभात श्रीगोकुल में श्रीगिरिधरजी श्रीसोभाबेटीजी को मनोरथ (हतो) सो आरोग के आयो हूं। यह सुनिके श्रीस्वामिनीजी हू बड़ीभात आरोगवे को

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં આ સંદેહ થાય કે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી આરોગ્યા નહીં તો શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે ભોગ સરાવી આચમન મુખ વસ્ત્ર કરાવ્યું. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને બીડી આરોગાવી ત્યારે ભૂખ્યા શ્રીગુસાંઇજીએ ન જાણ્યા અને બીડી આરોગતાં શ્રીગોવર્દ્ધનધરે શ્રીગુસાંઇજીને ન કહ્યું, કે હું રાજભોગ નથી આરોગ્યો? તેનું કારણ શું? રામદાસ ભીતરિયાને કેમ કહ્યું? એ સંદેહ હોય ત્યાં કહીએ છીએ કે, શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી એ દિવસે શ્રીગોકુલમાં શ્રીનવનીતપ્રિયજીને ત્યાં શ્રીગિરિધરજીએ વડીભાત કરાવ્યો હતો શ્રીશોભાબેટીજીએ કર્યો હતો ત્યારે શ્રીગિરિધરજી અને શ્રીશોભાબેટીજીના મનમાં આવ્યું કે શ્રીગોવર્દ્ધનધર પોતે પધારે અને નૌતન સામગ્રી આરોગે, તેથી ત્યાં બીજા સ્વરૂપે (ભક્તોદ્ધારકરૂપે) શ્રીગિરિરાજજીથી પધારીને શ્રીગોવર્દ્ધનધર વડીભાત આરોગ્યા અને શ્રીગિરિધરજી શ્રીશોભાબેટીજીનો તો મનોરથ તેથી ભક્તોને અનુભવ કરાવે છે. તે સ્વરૂપે આરોગી પછી શ્રીગિરિરાજ પર્વતના ઉપર પધાર્યા. ત્યાં ગિરિરાજ ઉપર બધા સેવકો મહાપ્રસાદ લઇ ચૂકયા અને શ્રીગુસાંઇજી પોતે પોઢયા. તે સમયે મંદિરમાં શ્રીસ્વામિનીજીએ પૂછ્યું કે, કહો! કયાં થઇ આવ્યા છો? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનધર કહે, કે વડીભાતનો શ્રીગોકુલમાં શ્રીગિરિધરજી શ્રીશોભાબેટીજીનો મનોરથ હતો તે આરોગીને

मनोरथ कियो, जो–बड़ीभात आरोगें तो आछो सो यहाँ (तो) (राजभोग) होय चुके। तब स्वामिनीजी ने श्रीनाथजी सों कह्यो, जो–जायके रामदास सों कहो, जो–सामग्री पें गंगाबाई क्षत्राणी की दृष्टि परी है। सो काहेतें ? जो–लीलासृष्टि के वचन हू सिद्ध करने हैं। सो श्रीगुसांईजी कों छे महिना को विप्रयोग है। सो यातें, जो–लीला में एक समय श्रीठाकुरजी ललिताजी सों कहे, जो–मैं तेरी निकुंज में पधारूँगो। यह बात श्रीचंद्रावली ने सुनी। सो श्रीचंद्रावलीजी ने श्रीठाकुरजी कों विविध चतुराई करि सेवा द्वारा ललिताजी के यहां छे मास तक पधारवे सों बरजे। सो ललिताजी विरह करि महा कृष होय गई। पाछें यह बात श्रीस्वामिनी-जी ने जानी, सो श्रीस्वामिनीजी ललिताजी कों संग लेके श्रीठाकुरजी के पास वाही समय आई। और श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो–तुम (नें) छे महिना लों मेरी सखी कों विरह दियो, अब तुम छे महिना लों ललितासखी के बसमें रहोगे। और जाने मेरी सखी कों दुःख दियो हैं, सो छे महिना लों दुःख पावो, और वाकों तिहारो दरसन हू न होय। सो यह बात सुनिके श्रीठाकुरजी आपु चुप होय रहे। यह बात एक सखी ने श्री-चंद्रावलीजी सों कही। सो सुनिके श्रीचंद्रावलीजी कहे, जो-श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकु-रजी तो बड़े हैं। तासों इनसों तो कछू कही जाय नाहीं। परंतु ललिता सखी होय

આવ્યો છું. એ સાંભળીને શ્રીસ્વામિનીજીએ પણ વડીભાત આરોગવાનો મનોરથ કર્યો જે વડીભાત આરોગીએ તો સારૂં. પણ અહીં તો રાજભોગ થઇ ચૂકયા. ત્યારે શ્રીસ્વામિની-જીએ શ્રીનાથજીને કહ્યું, કે જઇને રામદાસને કહો કે સામગ્રી ઉપર ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીની દૃષ્ટિ પડી છે. કેમકે? લીલા સૃષ્ટિનાં વચન પણ સિદ્ધ કરવાં છે. શ્રીગુસાંઇજીને છ મહિ-નાનો વિપ્રયોગ છે. તે એ માટે કે લીલામાં એક સમય શ્રીઠાકુરજીએ લલિતાજીને કહ્યું, કે હું તારી નિકુંજમાં પધારીશ. એ વાત શ્રીચંદ્રાવલીજીએ સાંભળી. તેથી ચંદ્રાવલી-જીએ શ્રીઠાકુરજીને વિવિધ ચતુરાઇ કરી સેવા દ્વારા લલિતાજીને ત્યાં છ મહિના સુધી પધારતાં રોકયા. તેથી લલિતાજી વિરહ કરીને મહા કૃશ થઇ ગઇ. પછી એ વાત શ્રી-સ્વામિનીજીએ જાણી ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી લલિતાજીને સંગે લઇને શ્રીઠાકુરજીની પાસે તેજ સમયે આવ્યાં અને શ્રીઠાકુરજીને કહ્યું, કે તમે છ મહિના સુધી મારી સખીને વિરહ આપ્યો. હવે તમે છ મહિના સુધી લલિતા સખીના વશમાં રહેશો અને જેણે મારી સખીને દુઃખ દીધું છે તે છ મહીના સુધી દુઃખ પામો અને એને તમારાં દર્શન ન થાય. એ વાત સાંભળીને શ્રીઠાકુરજી આપ ચૂપ થઇ રહ્યા. એ વાત એક સખીએ શ્રીચંદ્રાવ-લીજીને કહી, એ સાંભળીને શ્રીચંદ્રાવલીજી કહે, કે શ્રીસ્વામિનીજી શ્રીઠાકોરજી તો મોટાં છે તેથી એમને તો કંઇ કહી શકાય નહીં. પરંતુ લલિતા સખી થઇ આવું ખોટું કામ

ऐसो खोटो कियो, जो–श्रीस्वामिनीजी की सखी, सो मेरी सखी बराबरि है। सो इन (नें) मोकों शाप दिवायो, जो–छै महिना लों मोकों प्रभुन को दरसन हू नाहीं ? सो ललिता ने श्रीस्वामिनी–द्रोह कियो। सो काहेतें ? जो–श्रीठाकुरजी तें श्रीस्वामिनीजी प्रगटी हैं। और स्वामिनीजी के मुखचंद्रतें श्रीचंद्रावली प्रगटी। श्रीचंद्रावलीतें सगरी स्वामिनी सखी प्रगटी हैं। तातों श्रीठाकुरजी के दक्षिण भाग श्रीचंद्रावलीजी विराजत हैं। यातें, जो–सगरी सखीन के स्वामिनीरूप, श्रीचंद्रावलीजी (सो सब में) श्रेष्ठ हैं। तासों श्रीचंद्रावलीजी ने कही, जो–ललिता ने स्वामिनी–द्रोह कियो है। तासों ललिता की अकाल मृत्यु होऊ, और प्रेतयोनिकूं पावो। सो श्रीठाकुरजी हू, श्रीस्वामिनीहू रक्षा न करि सके। और काहूतें प्रेतयोनि निवृत्त न होय। जो–मोकों शाप दिवायो ताको यह फल भोगो। यह बात काहू सखी ने ललिता सों कही। सो सुनत ही ललिता महा कंपायमान होयके तत्काल दोरिके श्रीस्वामिनीजी के चरनन में आयके गिरि परी ! पाछे अपनी सब बात ललिता ने कही। तब श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी कों बुलाय के कह्यो, जो–ललिताजी अपने हाथ सों गई तासों अब कछु उपाय करो। पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों संग ले ललितादि समाज सहित श्रीचंद्रावलीजी के यहाँ पधारे। सो ललिताजी तत्काल उठिके श्रीठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी कों नमस्कार करिके

કર્યું. શ્રીસ્વામિનીજીની સખી તે મારી સખી બરોબર છે. એણે મને શાપ દેવડાવ્યો ? કે છ માસ સુધી મને પ્રભુનાં દર્શન નહીં ? એ લલિતાએ સ્વામિની–દ્રોહ કર્યો. કેમકે શ્રીઠાકુરજીથી શ્રીસ્વામિનીજી પ્રકટ્યાં છે અને શ્રીસ્વામિનીજીના મુખચંદ્રથી શ્રીચંદ્રાવલી પ્રકટી. શ્રીચંદ્રાવલીજીથી બધી સ્વામિની-સખી પ્રકટી છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીના દક્ષિણ ભાગમાં શ્રીચંદ્રાવલીજી બિરાજે છે. તે એથી કે બધી સખીઓની સ્વામિની રૂપ શ્રીચંદ્રાવલીજી તે બધામાં શ્રેષ્ઠ છે. તેથી શ્રીચંદ્રાવલીજીએ કહ્યું કે લલિતાએ સ્વામિની–દ્રોહ કર્યો છે. તેથી આ લલિતાની અકાલ મૃત્યુ થાવ અને પ્રેતયોનિને પામો. શ્રીઠાકુરજી શ્રીસ્વામિનીજી પણ રક્ષા ન કરી શકે અને કોઇથી પ્રેતયોનિ નિવૃત્ત ન થાય. મને શાપ અપાવડાવ્યો તેનું આ ફલ ભોગવો. આ વાત કોઇ સખીએ લલિતાજીને કહી. એ સાંભળતાંજ લલિતા મહા કંપાયમાન થઇને તત્કાલ દોડીને શ્રીસ્વામિનીજીના ચરણોમાં આવીને ગિર પડી. પછી પોતાની બધી વાત લલિતાએ કહી. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીઠાકુરજીને બોલાવીને કહ્યું. કે લલિતાજી આપણા હાથથી ગઇ તેથી હવે કંઇ ઉપાય કરો. પછી શ્રીઠાકુરજી શ્રીસ્વામિનીજીને સાથે લઇ લલિતાદિ સમાજ સહિત શ્રીચંદ્રાવલીજીને ત્યાં પધાર્યા. ત્યારે શ્રીચંદ્રાવલીજીએ તત્કાલ ઉઠીને શ્રીઠાકુરજીને શ્રીસ્વામિનીજીને નમસ્કાર કરીને ઉંચે આસને પધરાવ્યાં. પછી પરમ પ્રીતિથી

ऊँचे आसन पधराये। पाछे परम प्रीति सों दोउ स्वरूपन की पूजा करिकें सुन्दर सामग्री आरोगाये। ता पाछे बीरी आरोगाय श्रीचंद्रावलीजी हाथ जोरि के ठाड़ी भई। सो तब दोऊ स्वरूप ने प्रसन्न होयके श्रीचंद्रावलीजी को हाथ पकरि के पास बैठारी। ता पाछे श्रीस्वामिनीजी कहे, जो-सुनो श्रीचंद्रावलीजी! तिहारी प्रीति तो महा अलौकिक है, और हमारे तिहारे में कछू भेद नाहीं है। और यह ललिता अपनी सखी है, सो यह तिहारी है। तासों अब याको शाप भयो है, सो ताको छुटकारो करो। तब श्रीचंद्रावलीजी कहे, जो-ललिता अपनी है। तासों यह जो कछू भयो है सो यह जगत पर लीला करन अर्थ भयो है। सो यह ललिता प्रेत होयगी ताको मैं ही उद्धार करूँगी। जो-यह मेरो निश्चय वचन है। तब ललिता श्रीचंद्रावलीजी के चरनन में गिरिके कह्यो, जो-मैं तिहारो अपराध कियो सो पायो है। तब श्रीस्वामिनीजी ने कही, जो-यह सगरो परिकर, कलियुग में श्रीगिरिराज ऊपर लीला करनी है, तहां सब प्रगट होयगो। सो श्रीस्वामिनीजी के यह वचन सुनिके श्रीठाकुरजी श्रीचंद्रावलीजी ललिता आदि सब प्रसन्न भये। सो लीलासृष्टि में अलौकिक स्नेह है, और अलौकिक शाप है, और अलौकिक ही ईर्षा है, जो-मायाकृत तहां नाहीं है। सो उहां ही करिके है। सो भूमि पर जस प्रगट के अर्थ ईर्षा शाप को मिष मात्र। भूमि के जीव लीलागान करि प्रभुन कों पावें,

---

બન્ને સ્વરૂપોની પૂજા કરીને સુંદર સામગ્રી આરોગાવી. તે પછી બીડી આરોગાવી શ્રીચંદ્રાવલીજી હાથ જોડીને ઉભી રહી. ત્યારે બન્ને સ્વરૂપે પ્રસન્ન થઇને શ્રીચંદ્રાવલીજીને હાથ પકડીને પાસે બેસાડી તે પછી શ્રીસ્વામિનીજી કહે, સુનો શ્રીચંદ્રાવલીજી! તમારી પ્રીતિ તો મહા અલૌકિક છે અને અમારા તમારામાં કંઇ ભેદ નથી અને આ લલિતા આપણી સખી છે. તે તમારી છે તેથી હવે એને શાપ થયો છે તેનો છુટકારો કરો. ત્યારે શ્રીચંદ્રાવલીજી કહે, કે લલિતા આપણી છે. તેથી હવે એ જે કંઇ થયું છે તે જગત ઉપર લીલા કરવાને અર્થે થયું છે. આ લલિતા પ્રેત થશે તેનો હું જ ઉદ્ધાર કરીશ એ મારૂં નિશ્ચય વચન છે. ત્યારે લલિતાએ શ્રીચંદ્રાવલીજીના ચરણોમાં પડીને કહ્યું, કે મેં તમારો અપરાધ કર્યો તે પામી છું ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ કહ્યું, કે આ બધો પરિકર કલિયુગમાં શ્રીગિરિરાજજી ઉપર લીલા કરવી છે ત્યાં બધો પ્રકટ થશે. શ્રીસ્વામિનીજીનાં આ વચન સાંભળીને શ્રીઠાકુરજી, શ્રીચંદ્રાવલીજી, લલિતા આદિ બધાં પ્રસન્ન થયાં. તેથી લીલા સૃષ્ટિમાં અલૌકિક સ્નેહ છે અને અલૌકિક શાપ છે અને અલૌકિકજ ઇર્ષા છે માયાકૃત ત્યાં નથી. ત્યાંજ કરીને (અહીં પણ) છે તે ભૂમિ ઉપર યશ પ્રકટ કરવાને અર્થે. ઇર્ષા શાપ તો મિષ માત્ર, ભૂમિના જીવ લીલાગાન કરી પ્રભુને મેળવે એજ અલૌકિક

सो यही अलौकिक करनो। सो लौकिक ईर्षा शाप जाने ताको बुरो होय, और अपराधी होय सो लीला सृष्टि में सब अलौकिक क्रिया है। यह जाननो। या प्रकार श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी की इच्छा तें श्रीगोवर्द्धन गिरिराज में प्रगट भये, और श्रीस्वामिनी रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधर कों प्रगट किये। सो लीला में श्रीस्वामिनीजी तें चंद्रावलीजी को प्रागट्य। ताही भांति सों यहां श्रीआचार्यजी सों श्रीगुसांईजी को प्रागट्य, और ललिता सो कृष्णदास अधिकारी भये। और श्रीगोवर्द्धनधर के अनेक स्वरूप हैं, परंतु दोय रूप सदा रहत हैं। सो एक तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने उहां पधराये सो तहां विराजमान हैं, और एक स्वरूप (भक्तोद्धारक) सों सगरे भक्तन कों सुख देत हैं। जो–कुंभनदास, गोविंदस्वामी के संग खेलते। सो जहां तहां भगवदीय हैं, तिनकों अनुभव करावत हैं। तातें जा समय श्रीगुसांईजी आपु भोग समर्पते हते और गंगाबाई क्षत्राणी की दृष्टि परी, ता समय श्रीगुसांईजी राजभोग धरे हैं सो आरोगे (क्यों) जो–श्रीगोवर्द्धनधर आरोगे नाहीं, तो असमर्पित खाय के सगरे सेवक भ्रष्ट होय जाय? तातें श्रीआचार्यजी के मंदिर में पधराये सो स्वरूप ने आरोग्यो। यातें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो–श्रीगुसांईजी कों छै महीना को वियोग होय, तासों गंगाबाई को नाम लीजियो। सो कृष्णदास की और गंगाबाई की प्रीति है

કરવું. તેથી લૌકિક ઈર્ષા શાપ જાણે તેનું ખોટું થાય અને અપરાધી થાય. માટે લીલા–સૃષ્ટિમાં બધી અલૌકિક ક્રિયા છે એમ જાણવું. એ પ્રકારે શ્રીઠાકુરજી શ્રીસ્વામિનીજીની ઇચ્છાથી શ્રીગોવર્દ્ધન ગિરિરાજમાં પ્રકટ થયા અને શ્રીસ્વામિનીજી રૂપ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પ્રકટ કર્યા. લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીથી શ્રીચંદ્રાવલીજીનું પ્રાકટય તેજ રીતે અહીં શ્રીઆચાર્યજીથી શ્રીગુસાંઇજીનું પ્રાકટય અને લલિતા તે કૃષ્ણદાસ અધિકારી થયા. વળી શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં અનેક સ્વરૂપ છે પરંતુ બેજ રૂપ સદા રહે છે. તેમાં એક તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ ત્યાં (ગિરિરાજમાં) પધરાવ્યા તે ત્યાં બિરાજમાન છે અને એક સ્વરૂપ (ભક્તોદ્ધારક) થી ભક્તોને સુખ આપે છે. જે કુંભનદાસ, ગોવિંદસ્વામિના સંગે રમતા તે જ્યાં જ્યાં ભગવદીય છે તેમને અનુભવ કરાવે છે. તેથી જે સમયે શ્રીગુસાંઇજી પોતે ભોગસમર્પતા હતા અને ગંગાબાઇ ક્ષત્રાણીની દૃષ્ટિ પડી તે-સમયે શ્રીગુસાંઇજીએ રાજભોગ ધર્યો તે આરોગ્યો. કેમ જે શ્રીગોવર્દ્ધનધર આરોગે નહીં તો અસમર્પિત ખાઇને બધા સેવકો ભ્રષ્ટ થઇ જાય. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ મંદિરમાં પધરાવ્યા તે સ્વરૂપે આરોગ્યું. તેથી શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરને કહ્યું, કે શ્રીગુસાંઇજીને છ મહિનાનો વિયોગ થાય. તેથી ગંગાબાઇનું નામ લેજો. કૃષ્ણદાસની

सो गंगाबाई सों श्रीगुसांईजी कहेंगे। और कृष्णदास कों बोली मारेंगे। तव कृष्णदास कों बुरी लगेगीं। सो काहेतें ? जो–यह कार्य करनो, जो–कृष्णदास के मन में बुरी लागे, तब श्रीगुसांईजी कों वियोग होय। तासों तुम जाय के कहो, जो–मैं भूल्यो हूं। तब श्रीनाथजी ने रामदास सों जाय कही। परि रामदास यह भेद जाने नाहीं। सो रामदास ने श्रीगुसांईजी सों जाय कह्यो, तब श्रीगुसांईजी मन में जाने जो–सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टि परी। अब हम सों और कृष्णदास सों लीला में बात भई हती सो पूरन करिवे की श्रीनाथजी की इच्छा है सो निश्चय होयगो, यह जानि परत है। सो तासों अब जो सेवा बने, सो प्रीति सों करनी। क्यों ? जो–सेवा अब दुर्लभ है। यह विचारि के तत्काल न्हाय बड़ी भात यहां नाहीं भयो हतो और श्रीगोकुल तें आरोगि के आये, तासों गिरिराज के ठाकुर कों हू धरनो, सो वेगि सिद्ध करि धरे। ता पाछे सेनभोग की संग राजभोग धरे। ता पाछे सेन आरती करि अनोसर कराय के मन में विचारे, जो–अब श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन महाप्रसाद सब ही दुर्लभ भयो। सो बड़ी भात को डबरा उठाय मृतिका के पात्र ही में ठलाय के परवत तें उतरि रंचकरंचक सबन कों दिये, सो आपही लिये, बहोत सराहे तब कृष्णदास ने भगवद् इच्छातें बोली मारी (व्यंग) जो–आपही करन हारे, और आपही आरोगन हारे। सो क्यों न स्वाद होय ?

અને ગંગાબાઈની પ્રીતિ છે એટલે ગંગાબાઈને શ્રીગુસાંઈજી કહેશે અને કૃષ્ણદાસને મ્હેણું મારશે. ત્યારે કૃષ્ણદાસને ખોટું લાગશે, કેમકે આ કાર્ય કરવું. જેથી કૃષ્ણદાસના મનમાં ખોટું લાગે. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીને વિયોગ થાય. તેથી તમે જઈને કહો કે હું ભુલ્યો છું. ત્યારે શ્રીનાથજીએ રામદાસને જઈ કહ્યું પરંતુ રામદાસ આ ભેદ જાણે નહીં. તે રામદાસે શ્રીગુસાંઈજીને જઈને કહ્યું ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ મનમાં જાણ્યું કે સામગ્રી ઉપર ગંગાબાઈની દૃષ્ટિ પડી. હવે અમારાથી અને કૃષ્ણદાસથી લીલામાં વાત થઈ હતી તે પૂરણ કરવાની શ્રીનાથજીની ઈચ્છા છે. તે નિશ્ચય થશે એમ જાણ્યું જાય છે. તેથી હવે જે સેવા બને તે પ્રીતિથી કરવી, કેમ જે સેવા હવે દુર્લભ છે. એમ વિચારીને તત્કાલ ન્હાઈ, વડીભાત અહીં નહીં થયો હતો અને શ્રીગોકુલથી આરોગીને આવ્યા તેથી ગિરિરાજના ઠાકુરને પણ ધરવો તેથી જલ્દી સિદ્ધ કરી ધર્યો તે પછી સેનભોગની સાથે રાજભોગ ધર્યો. તે પછી સેન આરતી કરી, અનોસર કરી મનમાં વિચારે કે હવે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં દર્શન મહાપ્રસાદ બધુંજ દુર્લભ થયું. પછી વડીભાતનો ડબરો ઉઠાવી મૃતિકાનાજ પાત્રમાં ઠલાવીને પર્વતથી ઉતરી રંચક રંચક બધાને આપ્યો અને પોતે પણ લીધો. બહુ વખાણ્યો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે ભગવદ્‌ઇચ્છાથી વ્યંગ કહ્યું જે આપજ

सो यामें यह जताये जो–हमसों न पूछे, जो–तुम ही जाय सामग्री किये, और तुमही जायके आरोगे। ऐसो सौभाग्य तिहारो ही है। यह बोली कृष्णदास मारे। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–यह तिहारो ही कियो भोग भोगत हैं। सो यह कहिके दोऊ बात जताये, जो–गंगाबाई क्षत्राणी सों प्रीति करि वाकों बैठारि राखे, सो वाकी राजभोग की सामग्री पे दृष्टि परी। सो यहू तिहारो कार्य है। नाहीं तो गंगाबाई ऊहां कैसे जाय? और तुमने लीला में श्रीस्वामिनीजी सों शाप दिवायो, सोहू तिहारो कार्य है। सो तिहारे ही भोग भोगत हैं। यामें यह जताये, जो–हमकों खबरि परि गई, जो–अब तिहारो भाग्य खुल्यो, सो तुम करो सो भोगोगे। जो–मन में तो आय चुकी है। अब ऊपर तें करनो है, सो करोगे।

सो यह बात सुनिके कृष्णदास के मन में बहोत बुरी लगी। तब कृष्णदास मनमें विचारे, जो–श्रीगुसांईजी के दरसन बंद करने। सो या बात को कौन प्रकार सों उपाय करनो। तब श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजी के बड़े भाई तिनके पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी हते। सो तिनसों कृष्णदास मिलिके कहे, जो–तुम श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी हैं, तिनके पुत्र हो। सो तुम क्यों चुप बैठि रहे हो? जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को सेवा सिंगार सब करो। जो–श्रीगुसांईजी ने

કરવાવાળા અને આપજ આરોગવાવાળા તે કેમ સ્વાદ ન થાય? એમાં એ જણાવ્યું કે અમને ન પૂછ્યું, તમે જ જઈ સામગ્રી કરી અને તમેજ જઈને આરોગ્યા. એવું સૌભાગ્ય તમારૂં જ છે. આ વ્યંગ કૃષ્ણદાસે કહ્યું, ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી પોતે કહે. કે આ તમારોજ કર્યો ભોગ ભોગવીએ છીએ. એમ કહીને બન્ને વાત જણાવી કે ગંગાબાઈ ક્ષત્રાણીથી પ્રીતિ કરી એને બેસાડી રાખી જેથી એની રાજભોગની સામગ્રી પર દૃષ્ટિ પડી તે પણ તમારૂં કામ છે નહીં તો ગંગાબાઈ ત્યાં કેમ જાય? અને તમે લીલામાં શ્રીસ્વામિનીજીથી શાપ દેવડાવ્યો તે પણ તમારૂં કાર્ય છે. તે તમારાજ કર્યા ભોગ ભોગવીએ છીએ. એમાં એ જણાવ્યું કે અમને ખબર પડી ગઈ છે કે હવે તમારૂં ભાગ્ય ખુલ્યું તેથી તમે કરો તે ભોગવશો. જે મનમાં તો આવી ચુક્યું છે હવે ઉપરથી કરવું છે તે કરશો.

આ વાત સાંભળીને કૃષ્ણદાસના મનમાં બહુજ ખોટું લાગ્યું. ત્યારે કૃષ્ણદાસે મનમાં વિચાર્યું, કે શ્રીગુસાંઈજીનાં દર્શન બંધ કરવાં તેથી એ વાતનો કયા પ્રકારથી ઉપાય કરવો? ત્યારે શ્રીગોપીનાથજી શ્રીગુસાંઈજીના મોટા ભાઈ તેમના પુત્ર શ્રીપુરુષોત્તમજી હતા તેમને કૃષ્ણદાસ મળીને કહે, કે તમે શ્રીઆચાર્યજીના મોટા પુત્ર શ્રીગોપીનાથજી છે તેમના પુત્ર છો તેથી તમે કેમ ચૂપ બેસી રહ્યા છો? શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં સેવા–

अपनो सब हुक्म करि राख्यो है। टीकेत तो तुम हो। तब श्रीपुरुषोत्तमजी ने कही, जो–हमारी सामर्थ्य नाहीं है, जो–श्रीगुसांईजी सों बिगारें। तब कृष्णदास नें कह्यो, जो–हमारे संग न्हाय के चलो, जो–परवत के ऊपर मंदिर में जायके श्रीनाथजी को सेवा सिंगार करो, जो–हम सब करि लेंइगे। पाछें श्रीपुरुषोत्तमजी उत्थापन तें दोय घड़ी पहले न्हाये, सो कृष्णदास के संग परवत ऊपर जायके मंदिर में बैठि रहे। और कृष्णदास दंडोती सिला पै जायके बैठि रहे। इतने में श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिकें दंडोती सिला के पास आये। तब कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–श्रीपुरुषोत्तमजी न्हाय के मंदिर में पधारे हैं। टीकेत तो वे हैं, तासों जब वे आप कों बुलावेंगे, तब आपु परवत ऊपर आइयो। तासों अब आपु परवत ऊपर मति चढ़ो, जो–श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन न होंयगे तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडवत करि लीला की बात सुमरन करिके परासोली कूं पधारे, तहाँ रहे। सो तहां विप्रयोग को अनुभव करन लागे।

भावप्रकाश—सो श्रीगोकुल हू श्रीनवनीतप्रियजी के यहां याते नहिं पधारे, जो–श्रीस्वामिनीजी के वचन हैं। जो–हमहूं कों और श्रीठाकुरजी कों हू

શૃંગાર બધું કરો. શ્રીગુસાંઇજીએ પોતાનો હુકમ બધે કરી રાખ્યો છે. ટીકેત તો તમે છો. ત્યારે શ્રીપુરુષોત્તમજીએ કહ્યું, કે અમારી સામર્થ્ય નથી કે શ્રીગુસાંઇજીથી બગાડીએ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે અમારી સાથે ન્હાઇને ચાલો. પર્વત ઉપર જઇને શ્રીનાથજીનાં સેવા–શૃંગાર કરો (બીજું.) અમે બધું કરી લઇશું. પછી શ્રીપુરુષોત્તમજી ઉત્થાપનથી બે ઘડી પહેલાં ન્હાયા. તે કૃષ્ણદાસની સાથે પર્વત ઉપર જઇને બેસી રહ્યા અને કૃષ્ણદાસ દંડવતી શિલા ઉપર જઇને બેસી રહ્યા. એટલામાં શ્રીગુસાંઇજી પોતે સ્નાન કરીને દંડવતી શિલાની પાસે આવ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે શ્રીપુરુષોત્તમજી ન્હાઇને મંદિર ઉપર પધાર્યા છે. ટિકેત તો એ છે જેથી જ્યારે એ આપને બોલાવે ત્યારે આપ પર્વત ઉપર આવજો. હવે હમણાં આપ પર્વત ઉપર ન ચઢો. શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં દર્શન નહીં થાય. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીનાથજીની ધ્વજાને દંડવત્ કરી લીલાની વાતનું સ્મરણ કરીને પરાસોલીએ પધાર્યા ત્યાં રહ્યા. ત્યાં વિપ્રયોગનો અનુભવ કરવા લાગ્યા.

ભાવપ્રકાશ—શ્રીગોકુલ પણ શ્રીનવનીતપ્રિયજીને ત્યાં એથી ન પધાર્યા કે શ્રીસ્વામિનીજીનાં વચન છે, કે અમને પણ અને શ્રીઠાકુરજીને પણ વિપ્રયોગ થશે. તેથી

विप्रयोग होयगो। तासों श्रीगोकुल जायेंगे तो कहा जानिये कैसी होय? तासों अब छै महिना लों मिलाप श्रीठाकुरजी सों दुर्लभ हैं, तासों परासोली में बैठि रहैं।

और श्रीगोर्द्धननाथजी के मंदिर में परासोली की ओर एक बारी हती, सो जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके श्रीगुसांईजी कों दरसन देते। सो श्रीगुसांईजी आपु सगरे दिन परासोली तें बारी कों देखते। सो कृष्णदास मंदिर में ते नीचे जाँय तब श्रीगोवर्द्धननाथजी बारी पर आय बैठते। सो कृष्णदास एक दिन आन्योर में आये, तब बारी पर श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बैठे देखे। तब कृष्णदास प्रातःकाल मंदिर में आयके बारी चिनवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-मैं तो श्रीगुसांईजी के दरसन की मने कियो हूं, सो तुम बारी पर क्यों बैठे? और अब उनकी ओर मति जैयो। सो कृष्णदास परासोली की ओर श्रीनाथजी कों खेलिवे कों हू न जान देते। सो श्रीगोवर्द्धनधरकों श्रीगुसांईजी बैठि बैठिके विज्ञप्ति करते। सो रामदास मुखिया भीतरिया जब श्रीगुसांईजी के पास राजभोग आरती सों पहोंचि के जाते, सो आपु कों श्रीनाथजी को चरणोदक देते। तब श्रीगुसांईजी आपु फूल की माला करि राखते, सो माला के भीतर विज्ञप्ति को श्लोक लिखि देते। सो रामदासजी ले जाते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी

શ્રીગોકુલ જઈએ તો કેમ જાણિએ શું થાય? તેથી હવે છ મહિના સુધી મિલાપ શ્રીઠાકુરજીથી (થવો) દુર્લભ છે. તેથી પરાસોલીમાં બેસી રહ્યા.

વળી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં પરાસોલીની તરફ એક બારી હતી. તેના ઉપર આવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી શ્રીગુસાંઈજીને દર્શન દેતા. શ્રીગુસાંઈજી પોતે બધો દિવસ પરાસોલીથી બારીને જોતા. કૃષ્ણદાસ મંદિરમાંથી નીચે જાય ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી બારી ઉપર આવી બેસતા. પછી કૃષ્ણદાસ એક દિવસ આન્યોરમાં આવ્યા ત્યારે (તેમણે) બારી ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને બેઠેલા જોયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે પ્રાતઃકાલ મંદિરમાં આવીને બારી ચણવાવીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને કહ્યું, કે મેં તો શ્રીગુસાંઈજીને દર્શનની મના કરી છે તેથી તમે બારી ઉપર કેમ બેઠા? હવે એની તરફ ન જતા. તે કૃષ્ણદાસ પરાસોલીની તરફ શ્રીનાથજીને રમવાને પણ ન જવા દેતા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને શ્રીગુસાંઈજી બેસી બેસીને વિજ્ઞપ્તિ કરતા. તે રામદાસ મુખિયા ભીતરિયા જ્યારે શ્રીગુસાંઈજીની પાસે રાજભોગ આર્તિથી પહોંચીને જતા ત્યારે આપને શ્રીનાથજીનું ચરણોદક દેતા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી પોતે ફૂલની માલા કરી રાખતા તે માલાની અંદર વિજ્ઞપ્તિનો શ્લોક લખી દેતા. તે રામદાસજી લઈ જતા. પછી શ્રીગો-

कों माला पहिरावते, तब माला में ते विज्ञप्ति को कागज निकासिके श्रीनाथजी बांचते। पाछें वाको प्रतिउत्तर श्रीनाथजी बीड़ा के पान की ऊपर अपनी पीक सों सींकते लिखि देते। सो रामदास कों देते। सो रामदास दूसरे दिन राजभोग सों पहोंचिके जाते, तब श्रीनाथजी को लिख्यो पत्र श्रीगुसांईजी कों देते। सो श्रीगुसांईजी आपु बांचिके पाछें जलमें घोरिके पान करते। यातें श्रीनाथजीके किये श्लोक जगतमें प्रकट न भये। श्रीगुसांईजी आपु विज्ञप्ति किये सो श्रीनाथजी आपु बांचिके रामदासजीकों देते, तासों विज्ञप्ति प्रकटी है। सो एक दिन श्रीगुसांईजीकों बहोत विरह भयो, सो यह लिखे। श्लोक—

त्वद्दर्शनविहीनस्य त्वदीयस्य तु जीवितम्।
व्यर्थमेव यथा नाथ! दुर्भगाया नवं वयः॥

सो यह श्लोक लिखिके पठाये, जो-तिहारे भक्त हैं सो तिहारे विना जीवत हैं सो वृथा ही जीवत हैं। सो दुर्भगावत्। सो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी बांचिके यह लिखे, जो-मेघको लक्षण यह है, जो-समय होय वर्षा को, तब आयके वर्षे। सो सगरो जगत जानत है। सो ऐसे अबही कृष्णदास को समय होय चुकेगो तब मिलाप होयगो। सो यह तुमहू जानत हो, और हमहू जानत हैं। तासों धीरज धरि समय होन देउ, जो-इतनो विरह क्यों करत हो? सो यह पत्र

वर्द्धननाथजीने माळा पहेरावता त्यारे माळामांथी विज्ञप्तिनो पत्र काढीने श्रीनाथजी वांचता. पछी एनो प्रति उत्तर श्रीनाथजी बीडाना पान उपर पोतानी पीकथी सळी वडे लखी देता ते रामदासने आपता. त्यारे रामदास बीजा दिवसे राजभोगथी पहोंचीने जता त्यारे श्रीनाथजीनो लखेलो पत्र श्रीगुसांईजीने आपता. ते श्रीगुसांईजी पोते वांचीने पछी जळमां घोळीने पान करता. तेथी श्रीनाथजीना करेला श्लोक जगतमां प्रकट न थया. श्रीगुसांईजीए पोते विज्ञप्ति करी ते श्रीनाथजी पोते वांचीने रामदासजीने आपता. तेथी 'विज्ञप्ति' प्रकटी छे ते एक दिवस श्रीगुसांईजीने घणो विरह थयो त्यारे आ लख्युं. श्लोक-त्वद्दर्शन विहीनस्य० (उपर जुओ). ए श्लोक लखीने मोकल्यो. जे तमारा भक्तो छे ते तमारा विना जीवे छे ते वृथाज जीवे छे. ते दुर्भगावत्. आ श्रीगोवर्द्धननाथजीए वांचीने ए लख्युं, के मेघनुं लक्षण ए छे के वर्षानो समय थाय त्यारे (वर्षा) आवीने वर्षे. ते बधुं जगत जाणे छे. एमज हमणां कृष्णदासनो समय थइ चूकशे त्यारे मिलाप थशे. ए तमे पण जाणो छो अने अमे जाणीए छीए. तेथी धीरज धरी समय थवा दो. जे आटलो विरह

रामदासजी लेके आये। तब श्रीगुसांईजी आपु बांचिके यह लिखे जो-

'अंबुदस्य स्वभावोऽयं समये वारि मुञ्चति ।
तथापि चातकः खिन्नो रटत्येव न संशयः ॥'

सो मेघ को यह स्वभाव है, जो-समय होयगो, तब ही बरसेगो (मिलाप होयगो) परंतु चातकने मेघ सों प्रीति करी है। सो ऐसे भक्त हैं सो तो तिनकों (मेघरूप श्रीकृष्ण कों) रटत है, सो चेन नाहीं है। सो (आपु) चाहो तब समय होय। तुम विना धीरज हमकों नाहीं है। सो भक्तन को यही धर्म है, जो-चातक की नांई सदा तिहारी चाह करिबो करें। सो यह लिखि पठाये। या प्रकार रामदासजी नित्य आवते, सो श्रीगुसांईजीके पास सब सेवक आवते, सो कृष्णदासजी जानते। परंतु सेवकन सों कछू चलती नाहीं। रामदासजी कों बरजे हू सही, जो-तुम श्रीगुसांईजी के पास पत्र ले जात हो, और पत्र ले आवत हो, सो यह बात ठीक नाहीं है। तब रामदासजी कहे, जो-हम तो नित्य श्रीगुसांईजी के दरसन कों जांयगे, चाहे हमकों सेवामें राखो चाहे मति राखो। तब कृष्णदास चुप होय रहे। सो काहेतें? जो ऐसे सेवक फेरि कहाँ मिले? तासों कृष्णदास कछू बोले नाहीं। सो पौष सुदी ६ तें आषाढ़ सुदी ५ तांई श्रीगुसांईजी ने विप्रयोग कियो। पाछें आषाढ़ सुदी ५ आई, ता दिन राजा

કેમ કરો છો? એ પત્ર રામદાસજી લઈને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ વાંચીને પોતે આ લખ્યું. જે—'अंबुदस्य स्वभावोऽयं०' (ઉપર જુઓ). તે મેઘનો એ સ્વભાવ છે કે સમય થશે ત્યારે જ વરસશે (મેળાપ થશે) પરંતુ ચાતકે મેઘ સાથે પ્રીતિ કરી છે તે એવા ભક્ત છે તે તો તેમને (મેઘરૂપ શ્રીકૃષ્ણને) રટે છે. તેને ચેન નથી તેથી આપ ચાહો ત્યારે સમય થાય. તમારા વિના ધીરજ અમને નથી. ભક્તોનો એજ ધર્મ છે. ચાતકની માફક સદા તમારી ચાહ કર્યા કરે. આ લખી મોકલ્યું. આ પ્રકારે રામદાસ નિત્ય આવતા. શ્રીગુસાંઈજીની પાસે બધા સેવક આવતા તે કૃષ્ણદાસજી જાણતા, પરંતુ સેવકોથી કંઈ ચાલતું નહીં. રામદાસજીને રોક્યા પણ ખરા, કે તમે શ્રીગુસાંઈજીની પાસે પત્ર લઈ જાવ છો અને પત્ર લઈ આવો છો તે વાત ઠીક નથી. ત્યારે રામદાસજી કહે, કે અમે તો નિત્ય શ્રીગુસાંઈજીનાં દર્શને જઈશું. ચાહે અમને સેવામાં રાખો ચાહે ન રાખો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ ચૂપ થઈ રહ્યા. કેમકે એવા સેવક ફરી ક્યાં મળે? તેથી કૃષ્ણદાસ કંઈ બોલ્યા નહીં. તે પૌષ સુદ ૬ થી અષાઢ સુદ ૫ સુધી શ્રીગુસાંઈજીએ વિપ્રયોગ કર્યો. પછી અષાઢ સુદ ૫ આવી તે દિવસે રાજા બીરબલ

बीरबल श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी तो परासोली हते, और श्रीगिरिधरजी घर हते। तब बीरबल श्रीगिरिधरजी के पास आयके दंडवत करिके पूछे, जो–श्रीगुसांईजी कहाँ है? हमकों दरसन किये बहोत दिन भये। हमने उनके दरसन पाये नाहीं। तब श्रीगिरधरजी बीरबल सों कहे, जो–श्रीगुसांईजी तो परासोली में बैठि रहे हैं, जो–कृष्णदास अधिकारीने श्रीगुसांईजी के दरसन बंद किये हैं। सो श्रीगुसांईजी छे महिना तें बड़ो खेद करत हैं। तब बीरबल ने कह्यो, जो–अबही मैं जायके कृष्णदास कों निकासत हों। सो यह कहिके बीरबल श्रीमथुराजी आयो। सो मथुरा की फौजदारी बीरबल की हती, सो मथुरातें पांचसे मनुष्य बीरबल ने पठाये और बीरबलने उनसों कह्यो, जो–श्रीगोवर्द्धनमें जायके कृष्णदास कों पकरि लावो। तब मनुष्य गये, सो सांझ के समय श्रीगोवर्द्धन में आये। पाछें कृष्णदास कों पकरिके वे मनुष्य मथुरा ले आये। तब बीरबलने अर्द्धरात्रि ही कों मनुष्य श्रीगोकुल पठायके कह्यो, जो–कृष्णदास कों पकरिके बंदीखाने में दिये हैं, जो–तुम श्रीगुसांईजी कों लेके श्री-गोवर्द्धननाथजीके मंदिर में जावो। तब ये समाचार मनुष्यननें श्रीगिरधरजी सों कहे। सो रात्रिही कों श्रीगिरधरजी घोड़ा ऊपर असवार होयके परासोली कूं पधारे, सो प्रातःकाल ही आषाढ़ सुदी

શ્રીગોકુલ આવ્યો. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી તો પરાસોલી હતા અને શ્રીગિરિધરજી ઘર હતા. ત્યારે બીરબલે શ્રીગિરિધરજીની પાસે આવીને દંડવત્ કરીને પૂછ્યું, કે શ્રીગુસાંઈજી ક્યાં છે? અમને દર્શન કરે ઘણા દિવસ થયા છે. અમે એમનાં દર્શન કર્યાં નથી. ત્યારે શ્રીગિરિધરજી બીરબલને કહે, કે શ્રીગુસાંઈજી તો પરાસોલીમાં બિરાજી રહ્યા છે. કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ શ્રીગુસાંઈજીનાં દર્શન બંધ કર્યાં છે. શ્રીગુસાંઈજી છ મહિનાથી બહુ ખેદ કરે છે. ત્યારે બીરબલે કહ્યું, હમણાં જ હું જઈને કૃષ્ણદાસને કાઢું છું. એમ કહીને બીરબલ શ્રીમથુરાજી આવ્યો. તે મથુરાની ફોજદારી બીરબલની હતી. તે મથુરાથી પાંચસો મનુષ્ય બીરબલે મોકલ્યા અને બીરબલે એમને કહ્યું, કે શ્રીગો-વર્દ્ધનમાં જઈને કૃષ્ણદાસને પકડી લાવો. ત્યારે મનુષ્યો ગયા. તે સાંજના સમયે શ્રીગોવર્દ્ધનમાં આવ્યા. પછી કૃષ્ણદાસને પકડીને એ મનુષ્યો મથુરા લઈ આવ્યા. ત્યારે બીરબલે અર્ધી રાત્રે જ માણસને શ્રીગોકુલ મોકલીને કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસને પકડીને બંદીખાનામાં મૂક્યા છે. તમે શ્રીગુસાંઈજીને લઈને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં જાવ. ત્યારે એ સમાચાર મનુષ્યોએ શ્રીગિરિધરજીને કહ્યા. ત્યારે રાત્રિએ જ શ્રીગિ-

६ आई । सो श्रीगिरधरजी जायके श्रीगुसांईजी कों नमस्कार करिके कही, जो–आपु श्रीगोवर्द्धनधर के मंदिर में पधारो, और सेवा सिंगार करो। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरधरजी सों कहे, जो–कृष्णदास की आज्ञा होय तो चलें। तब श्रीगुसांईजी सों श्रीगिरधरजीने कही, जो–कृष्णदास कूं तो मथुरा में बंदीखाने में दियो है। यह सुनिके श्री-गुसांईजी आपु कहे, जो–हाय हाय! श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र सेवक भगवदीय कृष्णदास कों इतनो दुःख, और इतनो कष्ट। सो श्रीगुसांईजीने श्रीगिरधरजी सों कही, जो–तुमने बीरबल सों कह्यो होयगो। तब श्रीगिरधरजी ने कही, जो–हम तो सहज ही बीरबल सों कह्यो हतो, जो–श्रीगुसांईजी के दरसन कृष्णदास ने बंद किये हैं, इतनो कह्यो हतो। और तो कछु नाहीं कह्यो। तब श्री-गुसांईजी आपु कहे, जो–कृष्णदास आवेगो, तब ही भोजन करूंगो। सो इतनो सुनत ही श्रीगिरधरजी तत्काल घोड़ा ऊपर असवार होयकें श्रीमथुराजी आये। तब बीरबल तें जायके श्रीगिरधरजी ने कह्यो, जो–काकाजी तो भोजन तब करेंगे जब कृष्णदास वहाँ जायेंगे। तासों कृष्णदास कों छोड़ि देउ। तब बीरबलने कृष्णदासकों बंदीखाने में तें बुलायके कह्यो, जो–देखि; श्रीगुसांईजी की कृपा, जो-तेरे बिना भोजन

રિધરજી ઘોડા ઉપર અસવાર થઇને પરાસોલી પધાર્યા. પછી પ્રાતઃકાલે જ અપાઢ સુદ ૬ આવી. તેથી શ્રીગિરિધરજીએ જઇને શ્રીગુસાંઇજીને નમસ્કાર કરીને કહ્યું, કે આપ શ્રીગોવર્દ્ધનધરના મંદિરમાં પધારો અને સેવા–શૃંગાર કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગિરિધરજીને કહે, કે કૃષ્ણદાસની આજ્ઞા હોય તો ચાલીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇ-જીને શ્રીગિરિધરજીએ કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસને તો મથુરામાં બંદીખાનામાં મૂકયા છે. એ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે હાય, હાય! શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના કૃપાપાત્ર સેવક ભગવદીય કૃષ્ણદાસને આટલું દુઃખ અને આટલું કષ્ટ! પછી શ્રી-ગુસાંઇજીએ શ્રીગિરિધરજીને કહ્યું, કે તમે બીરબલને કહ્યું હશે. ત્યારે શ્રીગિરિધરજીએ કહ્યું, કે અમે તો સહજમાં બીરબલને કહ્યું હતું કે શ્રીગુસાંઇજીનાં દર્શન કૃષ્ણદાસે બંધ કર્યાં છે એટલું કહ્યું હતું. બીજું તો કંઇ કહ્યું નથી. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કે કૃષ્ણદાસ આવશે ત્યારે જ ભોજન કરીશ. એટલું સાંભળતાં જ શ્રીગિરિધરજી તત્કાલ ઘોડા ઉપર અસવાર થઇને શ્રીમથુરાજી આવ્યા. ત્યારે બીર-બલને જઇને શ્રીગિરિધરજીએ કહ્યું, કે કાકાજી તો ભોજન ત્યારે કરશે જ્યારે કૃષ્ણ-દાસ ત્યાં જશે. તેથી કૃષ્ણદાસને છોડી દો. ત્યારે બીરબલે કૃષ્ણદાસને બંદીખાનામાંથી બોલાવીને કહ્યું, કે જો શ્રીગુસાંઇજીની કૃપા! તારા વિના ભોજન નથી કરતા અને

नाहीं करत हैं और तैनें उनसों ऐसी करी। तासों अब तोकूं छोड़त हूं, और आजु पाछें जो–तू श्रीगुसांईजी सों बिगारेगो, तब मैं तोकों फेरि कबहू नाहीं छोडूंगो। सो या प्रकार बीरबल ने कहिके कृष्णदास कों श्रीगिरधरजी के हवाले करि दिये। तब श्रीगिरधरजी कृष्णदास कों लेके परासोली में पधारे। तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्णदास कों देखिके श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकारी जानिके उठि ठाड़े भये। तब कृष्णदास दीन होयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि चरन परस करिके यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—ताही कों सिर नाँइए जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होइ। कीजे कहा आन ऊँचे पद तिनसों कहा सगाइ मोइ ॥ १ ॥ जाके मनमें उग्र भरम है श्री-विठ्ठल श्रीगिरिधर दोइ। ताकौ संग विषम विष हू ते भूले चतुर करो जिनि कोइ ॥ २ ॥ सारासार विचार मतो करि श्रुति-वच गोधन लियो निचोइ। तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो है बिलोइ ॥ ३ ॥ उग्र प्रताप देखि अपने चख असमसार ज्यों भिदे न तोय। 'कृष्णदास' सुर तें असुर भए असुर तें सुर भए चरनन छोय ॥ ४ ॥

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आपु बहोत प्रसन्न भये। तब कृष्णदास ने बिनती कीनी, जो–महाराज! मेरो अपराध क्षमा करिये, और अब आप श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में पधारिये। तब श्री-गुसांईजी आपु कहे, जो–तिहारी आज्ञा भई है, सो अब चलेंगे। तब कृष्णदास कों संग लेके श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे। और श्रीगोवर्द्धनधर कों दंडोत करी। पाछें सिंगार

તેં એમનાથી આવું કર્યું. તેથી હવે તને છોડું છું અને આજ પછી જો તૂ શ્રીગુસાં-ઇજીથી બગાડીશ ત્યારે હું તને ફરી કદીય નહીં છોડું. એ પ્રકારે બીરબલે કહીને કૃષ્ણદાસને શ્રીગિરિધરજીના હવાલે કરી દીધા. ત્યારે શ્રીગિરિધરજી કૃષ્ણદાસને લઇને પરાસોલી પધાર્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કૃષ્ણદાસને જોઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના અધિકારી જાણીને ઉઠી ઉભા થયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે દીન થઇને શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત કરી ચરણસ્પર્શ કરીને આ પદ ગાયું. તે પદ–'તાહીકોં શિર નાઇયેઠ' (ઉપર જુઓ). એ પદ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી પોતે બહુ પ્રસન્ન થયા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મારો અપરાધ ક્ષમા કરો અને હવે આપ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવામાં પધારો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે તમારી આજ્ઞા થઇ છે તો હવે ચાલીશું. ત્યારે કૃષ્ણદાસને સંગ લઇને શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીના મંદિરમાં પધાર્યા અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને દંડવત કર્યા. પછી શૃંગારનો સમય હતો અને અષાઢ સુદ

को समय हतो और आषाढ़ सुदी ६ को दिन हतो सो कसूँमल कुलह पिछोड़ा धराये। तब राजभोग सों पहोंचे। पाछें उत्थापन तें सेन पर्यंत की सेवा सों पहोंचि के सेन आरती करि श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी के सन्मुख कृष्णदास कों दुसाला उढ़ाये। और कहे, जो-श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार करो। तुम धन्य हो। तब वा समय कृष्णदास ने यह पद गायो। सो पद—

राग कान्हरो—परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथै। जे जन सरनि आए अनुसर ही गहि सोंपत श्रीगोवर्द्धननाथै ॥ १ ॥ परम उदार चतुर चिंतामनि राखत भवधारा तें साथै। भजि 'कृष्णदास' काज सब सरही जो जानें श्रीविट्ठलनाथै ॥ २ ॥

सो यह पद कृष्णदास ने गायो, और विनती कीनी, जो-महाराज! मेरो अपराध क्षमा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो-तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे। ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय के सबन को समाधान कियो, तब सगरे वैष्णव सेवक प्रसन्न भये। पाछें जैसें नित्य सेवा सिंगार आप श्रीगोवर्द्धनधर को करते, वैसेही करन लागे। और कृष्णदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें अधिकार की सेवा करन लागे। सो वे कृष्णदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते, सो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन तें श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांईजी

---

૬ નો દિવસ હતો તેથી કસુંબા, કુલહ, પિછોડા ધરાવ્યા ત્યારે રાજભોગથી પહોંચ્યા. પછી ઉત્થાપનથી સેન પર્યંતની સેવાથી પહોંચીને સેન આરતી કરી શ્રીગુસાંઈજીએ પોતે શ્રીનાથજીની સન્મુખ કૃષ્ણદાસને દુશાલો ઓઢાડ્યો અને કહે, કે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો અધિકાર કરો. તમે ધન્ય છો. ત્યારે તે સમયે કૃષ્ણદાસે આ પદ ગાયું. એ પદ :— 'પરમ કૃપાલ શ્રીવલ્લભનંદન૦' (ઉપર જુઓ). એ પદ કૃષ્ણદાસે ગાયું અને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મારો અપરાધ ક્ષમા કરીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી પોતે શ્રીમુખથી કહે, કે તમારો અપરાધ શ્રીનાથજી ક્ષમા કરશે. તે પછી શ્રીગુસાંઈજીએ અનોસર કરાવીને બધાંનું સમાધાન કર્યું. ત્યારે બધા વૈષ્ણવ સેવક પ્રસન્ન થયા. પછી જેમ નિત્ય સેવા-શૃંગાર પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનધરને કરતા તેમજ કરવા લાગ્યા અને કૃષ્ણદાસ શ્રીગુસાંઈજીની આજ્ઞાથી અધિકારની સેવા કરવા લાગ્યા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯-વળી એક સમય શ્રીગુસાંઈજી પોતે શ્રીગોકુલમાં હતા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનથી શ્રીગોકુલ આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ ઉઠીને શ્રીગોવર્દ્ધનના-

उठिके श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकारी जानि कृष्णदास को बहोत प्रसन्नता पूर्वक समाधान कियो, और अपने पास बैठाये। पाछें श्रीगोवर्द्धनधर के कुशल समाचार पूछे और कृष्णदास कों अपने श्रीहस्तसों श्रीनवनीतप्रियजी को महाप्रसाद धरे। ता पाछें सेनभोग को महाप्रसाद लिवाय के रात्रि कों सुंदर सेज पर सेन करायो। सो जब प्रातःकाल भयो तब कृष्णदास चलन लागे। ता समय कृष्णदास ने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो–महाराज ! मेरो मन वृन्दावन देखिवे को बहोत है। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–आछो जावो, परन्तु दुःख पावोगे। तब कृष्णदास श्रीयमुनाजी पार गये, जो–श्रीगुसांईजी ने मने किये तोऊ मन न मान्यो, श्रीवृन्दावन कों चले। सो मध्याह्न समय वृन्दावन आये। तब वृन्दावन के संत महंत कृष्णदास सों मिलन आये, सो कृष्णदास कों वा समय ज्वर चढ्यो, सो प्यास लागी। तब कंठ सूखन लाग्यो। सो कृष्णदास नें कही, जो–प्यास बहोत लगी है, सो कंठ सूखत जात है। तब संत महंतन ने कही, जो–वेगि जल लावे। सो कृष्णदास अकेले ही रथ पर बैठिके गये हते। सो कृष्णदास नें कही, जो–श्रीगोकुल को वल्लभी वैष्णव होय सो वासों कहो, जो–वह जल लावे तो मैं पीऊं। तब सगरे संत महंतन ने कृष्ण-

---

થજીનો અધિકારી જાણીને કૃષ્ણદાસનું બહુ પ્રસન્નતાપૂર્વક સમાધાન કર્યું અને પોતાની પાસે બેસાડ્યા. પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરના કુશલ સમાચાર પૂછ્યા અને કૃષ્ણદાસને પોતાના શ્રીહસ્તથી શ્રીનવનીતપ્રિયજીનો મહાપ્રસાદ ધર્યો. તે પછી સેનભોગનો મહાપ્રસાદ લેવડાવીને રાત્રિએ સુંદર સેજ ઉપર શયન કરાવ્યું. પછી જ્યારે પ્રાતઃકાલ થયો ત્યારે કૃષ્ણદાસ ચાલવા લાગ્યા. તે સમયે કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી કે મહારાજ ! મારૂં મન વૃંદાવન જોવાનું ઘણું છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે સારૂં. જાવ પરંતુ દુઃખ પામશો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ શ્રીયમુનાજીના પાર ગયા. શ્રીગુસાંઇજીએ ના કહી તો પણ મન ન માન્યું ને શ્રીવૃંદાવન ચાલ્યા. તે મધ્યાહ્નના સમયે વૃંદાવન આવ્યા ત્યારે વૃંદાવનના સંત મહંત કૃષ્ણદાસને મળવાને આવ્યા. તે સમયે કૃષ્ણદાસને જવર ચઢયો એથી તરસ લાગી. ત્યારે કંઠ સૂકાવા લાગ્યો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે તરસ ઘણી લાગી છે, કંઠ સૂકયો જાય છે, ત્યારે સંતમહંતોએ કહ્યું, કે જલ્દી જલ લાવીએ. ત્યારે કૃષ્ણદાસ એકલાજ રથ ઉપર બેસીને ગયા હતા તે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે શ્રીગોકુલનો વલ્લભી વૈષ્ણવ હોય તેને કહો કે તે જલ લાવે, તો હું પીઉં. ત્યારે બધા સંત મહંતોએ કૃષ્ણદાસને તર્ક કરીને કહ્યું, કે અહીં તો કોઇ વૈષ્ણવ નથી, શ્રીગોકુલનો ભંગી અહીં

दास सों तर्क करिके कह्यो, जो–यहाँ कोई वैष्णव नाहीं हैं, जो–श्रीगोकुल को भंगी यहां ब्याह्यो है, सो यहां आयो है, सो वाकों तुम कहो तो बुलावें। तब कृष्णदास ने कही, जो–वह गोकुल को भंगी सबतें श्रेष्ठ हैं। सो वासों कहियो, जो–कुम्हार के घर तें कोरो वासन लेके श्रीयमुनाजी में न्हाय के जल भरि लावे। सो तब उनने जायके वा भंगी सों कह्यो, जो–कृष्णदास कों ज्वर चढ्यो है, वह प्यासे हैं। सो कहत हैं, सो तू उनकों जल ले जा। तब वह भंगी उहां सों दोर्‍यो। सो श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग आरती करि श्रीनाथजीद्वार पधारिवे कूं घाट ऊपर आये हते। सो इतने ही में वा भंगी ने कपड़ा की आड़ करिके मुख तें कह्यो, जो–महाराज! कृष्णदास श्रीवृन्दावन में हैं। तहाँ उनकों ज्वर चढ्यो है, सो प्यासे हैं। जल मोसों मांग्यो है, सो मैं वृंदावन तें यहां दोर्‍यो आयो हूं। तब श्रीगुसांईजी खवास सों झारी जल की लेके, घोड़ा ऊपर असवार होयके वेगि ही आपु वृन्दावन पधारे। सो तब कृष्णदास कों रथ ऊपर ते उठाय के जल प्याये। पाछें कृष्णदास सावधान भये। सो ज्वर हू उतरि गयो। तब कृष्णदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत करिके यह पद गाये। सो पद—

राग कान्हरो—श्रीविट्ठलजु के चरननि की वलि। हमसे पतित उद्धारन परम कृपाल आपु आप चलि॥ १॥ उज्वल अरुन दया रंग रंजित नव नखचंद्र विरहतम निर्दलि। सेवत सुखकर सोभा पावन भक्त मुदित ललित पद-अंगुलि॥ २॥ अतिसै मृदुल सुगंध सु सीतल परसत त्रिविध ताप डारत मलि। कहे 'कृष्णदास' वार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपु कलि॥ ३॥

વિવાહ્યો છે તે અહીં આવ્યો છે. એને તમે કહો તો બોલાવીએ. ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, કે એ શ્રીગોકુલનો ભંગી બધાથી શ્રેષ્ઠ છે એને કહેજો કે કુંભારના ઘરથી કોરૂં વાસણ લાવીને શ્રીયમુનાજીમાં ન્હાઇને જલ ભરી લાવે. ત્યારે એમણે જઇને ભંગીને કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસને જ્વર ચઢ્યો છે તે તરસ્યા છે. તે કહે છે તેથી તૂ એમને માટે જલ લઇજા. ત્યારે એ ભંગી ત્યાંથી દોડ્યો. તે સમયે શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનવનીતપ્રિયજીની રાજભોગ આર્તિ કરી શ્રીનાથજીદ્વાર પધારવાને ઘાટ ઉપર આવ્યા હતા. એટલામાં એ ભંગીએ કપડાની ઓટ કરીને મુખથી કહ્યું, કે મહારાજ! કૃષ્ણદાસ શ્રીવૃંદાવનમાં છે. ત્યાં એમને જ્વર ચઢ્યો છે એટલે તરસ્યા છે. જલ મારી પાસે માંગ્યું છે. તેથી હું વૃંદાવનથી અહીં દોડ્યો આવ્યો છું. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી ખવાસ પાસેથી જલની ઝારી

सो यह पद गायके कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मैंने आपको कह्यो न मान्यो तासों इतनो दुःख पायो । ता पाछें श्रीगुसांईजी के संग कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन आये, तब सेन आरती को समय भयो, तब श्रीगुसांईजी न्हाय के सेन आरती किये । तब कृष्णदास ने यह पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—आजु कौ दिन धनि धनिरी माई नैनन भरि देखे नंद नंदन । परम उदार मनोहर मूरति ताप हरत लखि, पूजत चंदन ॥ १ ॥ नवलराय श्रीगोवर्द्धनधारी रूप रासि युवती मन फंदन । ध्वजा वज्रांकुस जव बिराजत 'कृष्णदास' कीनो पद वंदन ॥ २ ॥

पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय के परवत तें नीचे पधारे । सो या प्रकार कृष्णदास ने बहोत दिन लों श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकार कियो ।

वार्ता-प्रसंग ९—पाछें एक दिन एक वैष्णव ने आयके कृष्णदास सों कही, जो-मोकूं यहां एक कुँआ बनवावनो है, और मोकों अपुने देस जानो है, सो मैं तो अपने देश कों जाउंगो, तासों तुम या द्रव्य कों राखो । सो ऐसे कहिके वह वैष्णव तीनसे रुपैया देके अपुने देश कों गयो । तब कृष्णदास वा वैष्णव के रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरिके बाग में एक आँव के वृक्ष नीचे गाड़ि राखे ।

લઇને ઘોડા ઉપર અસવાર થઇને જલ્દીજ આપ વૃંદાવન પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસને રથ ઉપરથી ઉઠાવીને જલ પાયું. પછી કૃષ્ણદાસ સાવધાન થયા. જવર પણ ઉતરી ગયો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને આ પદ ગાયું. તે પદ—' શ્રીવિઠ્ઠલ જી કે ચરણન કી બલિ ' (ઉપર જુઓ). તે પદ ગાઇને કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ! મેં આપનું કહ્યું ન માન્યું તેથી આટલું દુઃખ પામ્યો. તે પછી શ્રીગુસાંઇજીના સંગે કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધન આવ્યા. ત્યારે સેનઆર્તિનો સમય થયો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજીએ ન્હાઇને સેનઆર્તિ કરી. ત્યારે કૃષ્ણદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ— ' આજ કો દિન ધનિ ર રી માઇ૦ ' (ઉપર જુઓ). પછી શ્રીગુસાંઇજી અનોસર કરાવીને પર્વતથી નીચે પધાર્યા. એ પ્રકારે કૃષ્ણદાસે બહુ દિવસ સુધી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનો અધિકાર કર્યો.

વાર્તા-પ્રસંગ ૯-પછી એક દિવસ એક વૈષ્ણવે આવીને કૃષ્ણદાસને કહ્યું, કે મને અહીં એક કુવો બનાવરાવવો છે અને મારે મારા દેશ જવું છે તો હું તો મારા દેશ જઇશ. તેથી તમે આ દ્રવ્યને રાખો. એમ કહીને એ વૈષ્ણવ ત્રણસો રૂપીઆ આપીને પોતાના દેશ ગયો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે એ વૈષ્ણવના રૂપૈયામાંથી એકસો રૂપીઆ એક

चौरासी वैष्णवन की वार्ता

अपने बनवाये हुए अधूरे कूए का निरीक्षण करते हुए—

कृष्णदास

जन्म सं० १५५३]　　　　[देहावसान सं० १६३६

ता पाछें आछो महूरत देखिके पूछरी के पास बागमें कुँआ को आरंभ कियो। तब कितनेक दिन पाछें कुँआ बनिके तैयार भयो, और दोयसे रुपैया लगे। पाछें कुँआ को मोहड़ो बनवावनो रह्यो, सो कृष्णदासजी मनमें विचारे, जो–सौ रुपैया में मोहड़ो आछो बनेगो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधर के उत्थापन के दरसन करिके कृष्णदास वा कुँआ देखवे कूं गये, सो वा कुँआ कों देखन लागे। सो कृष्णदास के हाथ में आसा (लकड़ी) हतो, सो आसा टेक के कृष्णदास वा कुँआ पर ठाड़े भये। इतने में आसा सरक्यो, सो कृष्णदास आसा सहित वा कुँआ में जाय परे। तब सगरे मनुष्य पास ठाड़े हते, सो तिनने सोर कियो। जो कृष्णदास कुँआ में गिरे पाछें कितेक मनुष्य दौरे, सो रस्सा टोकरा लाये, और दोय मनुष्य कुँआ के भीतर उतरे। सो बहोत ढूंढे परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो। तब वे मनुष्य पाछे फिरि आये। ता समय श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधर कों सेनभोग धरिके बाहिर विराजे हते, सो रामदास भीतरिया श्रीगुसांईजी के पास बैठे हते। ता समय मनुष्य ने जायके कही, जो–महाराज! कृष्णदास कुँआ कों देखत हते, सो आसा सरक्यो। सो कुँआ में गिरे। पाछें मनुष्य कुँआ में ढूंढ़िवे कों उतरे। सो कृष्णदास को

કુસડામાં ધરીને બાગમાં એક આંબાના વૃક્ષ નીચે દાટી રાખ્યા. તે પછી સુંદર મુહૂર્ત જોઇને પૂછરીની પાસે બાગમાં કુવાનો આરંભ કર્યો. ત્યારે કેટલાક દિવસ પછી કુવો બનીને તૈયાર થયો અને બસો રૂપીઆ લાગ્યા. પછી કુવાનું મહોડું બનાવવું રહ્યું ત્યારે કૃષ્ણદાસજીએ મનમાં વિચાર્યું, કે સો રૂપીઆમાં મહોડું સારૂં બનશે. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનધરનાં ઉત્થાપનનાં દર્શન કરીને કૃષ્ણદાસ એ કુવાને જોવાને ગયા. ત્યારે એ કુવાને જોવા લાગ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસના હાથમાં લાકડી હતી. તે લાકડીને ટેકીને કૃષ્ણદાસ તે કુવા ઉપર ઉભા રહ્યા. એટલામાં લાકડી ખસી. ત્યારે કૃષ્ણદાસ લાકડી સહિત તે કુવામાં જઈ પડ્યા. ત્યારે બધા મનુષ્ય પાસે ઉભા હતા તેમણે બુમરાણ કરી, કે કૃષ્ણદાસ કુવામાં પડ્યા. પછી કેટલાક મનુષ્ય દોડ્યા. દોરડાં ટોપલા લાવ્યા અને બે મનુષ્ય કુવાની અંદર ઉતર્યા. તે બહુ ખોળ્યા; પરંતુ કૃષ્ણદાસનું શરીર પણ ન મળ્યું. ત્યારે એ મનુષ્ય પાછા ફરી આવ્યા. તે સમયે શ્રીગુસાંઇજી શ્રીગોવર્દ્ધનધરને સેનભોગ ધરીને બહાર બિરાજ્યા હતા અને રામદાસ ભીતરિયા શ્રીગુસાંઇજીની પાસે બેઠા હતા. તે સમયે મનુષ્યોએ જઇને કહ્યું, કે મહારાજ! કૃષ્ણદાસ કુવાને જોતા હતા તે લાકડી ખસી તેથી કુવામાં પડ્યા. પછી મનુષ્ય કુવામાં ખોળવાને ઉતર્યા. તે કૃષ્ણ-

सरीर हू पायो नाहीं है। ता समय रामदासजी उहाँ ठाड़े हते, सो कहे 'तामसानामधोगतिः' तब यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-रामदासजी ऐसे न कहिये। जो कृष्णदास तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र वैष्णव हते, जो यह लीला है। कूप में गिरे तो कहा भयो? कहा जानिये कहा है?

भावप्रकाश—सो याको कारन श्रीगुसांईजी आपु तो जानत हते, जो प्रेतयोनि को शाप है। तासों आपु प्रगट न किये। सो कृष्णदास या देह समेत प्रेत भये। सो पूछरी के पास एक पीपर को वृक्ष है। ताके ऊपर जायके बैठे।

वार्ता-प्रसंग १०—और श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख सों कहे, जो-कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार भलो ही किये और अब ऐसे सेवक कहाँ मिले? और अधिकारी बिना काम चलेगो नाहीं सो विचार करनो। सो या भांति कहे। तब रामदासजीने बिनती कीनी, जो-महाराज! जाकों तुम आज्ञा करोगे, सोई करेगो। जो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा भाग्य सों मिलत है। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-हम कौनसे जीव कों कहें, जो-कौनसे जीव को बिगार करें। सुधारनो तो बहोत कठिन है। और बिगारनो तो तत्काल है।

भावप्रकाश—सो याही सों श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजी में कहे

દાસનું શરીરે મળ્યું નથી. તે સમયે રામદાસ ત્યાં ઉભા હતા તે કહે 'તામસાનામધોગતિ:'. ત્યારે એ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજી આપ કહે, કે રામદાસજી! એમ ન કહિએ. કૃષ્ણદાસ તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના કૃપાપાત્ર વૈષ્ણવ હતા. આ તો લીલા છે. કૂવામાં પડ્યા તો શું થયું? શું જાણિએ શું છે?

ભાવપ્રકાશ—એનું કારણ શ્રીગુસાંઇજી આપ તો જાણતા હતા કે પ્રેતયોનીનો શાપ છે તેથી આપે પ્રકટ ન કર્યું તે કૃષ્ણદાસ આ દેહ સુદ્ધાં પ્રેત થયા. તે પૂંછરીની પાસે પીપરનું વૃક્ષ છે તેની ઉપર જઇને બેઠા.

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૦-વળી શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીમુખથી કહે, કે કૃષ્ણદાસે શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો અધિકાર સારો જ કર્યો અને હવે એવા સેવક ક્યાં મળે? વળી અધિકારી વિના કામ ચાલશે નહીં, તેથી વિચાર કરવો, એ પ્રકારે કહ્યું. ત્યારે રામદાસજીએ વિનંતી કરી, કે મહારાજ! જેને તમે આજ્ઞા કરશો તેજ કરશે. શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની સેવા ભાગ્યથી મળે છે. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, કે અમે કયા જીવને કહીએ, કયા જીવનો બગાડ કરીએ? સુધારવો તો બહુ કઠણ છે અને બગાડવો તો તત્કાલ છે.

ભાવપ્રકાશ—તે એથી કે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીસુબોધિનીજીમાં કહે છે કે શ્રી-

हैं। जो–श्रीभागवत नारायण.ने ब्रह्मा सों कह्यो है, परि ब्रह्मा सृष्टि करन को अधिकारी है। तासों श्रीभागवत फलित न भयो। पाछे ब्रह्मा नारदजी सों कही, सो नारद कों सगरे देसन में फिरवे को अधिकार है तासों फलित न भयो। तब नारद ने वेद्व्यासजी सों कह्यो, सो वेद्व्यासजी सास्त्र करन के अधिकारी हैं, तासों व्यासजी कों हू फलित न भयो। पाछे व्यासजी ने श्रीशुकदेवजी सों कह्यो। सो शुकदेवजी सर्वत्याग कियो है। सो यही त्याग में लगे। पाछे परीक्षित को सर्वत्याग भयो। तब अधिकारी भागवत के भये। (जब) श्रीशुकदेवजी रात दिन तांई कथा कहे। तब सातमें दिन भगवत् प्राप्ति भई। सो तैसे ही यह श्रीभागवत रूप पुष्टिमारग है। सो याके अधिकारी निरपेक्ष होय, ताही के माथे यह मारग होय। और जाको अधिकार पाये अहंकार बढ़े, सो ताकों कछू फल सिद्ध न होय।

तासों श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार हम कौन कों देंय? कौन को बिगार करें। तब रामदासजी सुनिके चुप होय रहे। इतने में सेनभोग को समय भयो, सो सेनभोग श्रीगुसांईजी सरायें। सो सेन आरती करे पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धनधर सों पूछे, जो–महाराज! कृष्णदास की तो देह छूटी और अधिकारी बिना चलेगी नाहीं, सो हम कौनकों अधिकार देके बिगार करें? तासों आपु कहो ताकों अधिकारी करें। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो–हमहू

ભાગવત નારાયણે બ્રહ્માને કહ્યું છે પરંતુ બ્રહ્મા સૃષ્ટિ કરવાનો અધિકારી છે તેથી શ્રીભાગવત ફલિત ન થયું. પછી બ્રહ્માએ નારદજીને કહ્યું, તે નારદજીને બધા દેશોમાં ફરવાનો અધિકાર છે તેથી ફલિત ન થયું. ત્યારે નારદે વેદવ્યાસજીને કહ્યું, તે વેદવ્યાસજી શાસ્ત્ર કરવાના અધિકારી છે, તેથી વ્યાસજીને પણ ફલિત ન થયું. પછી વ્યાસજીએ શુકદેવજીને કહ્યું, તે શુકદેવજીએ સર્વ ત્યાગ કર્યો છે તેથી તે પણ ત્યાગમાં લાગ્યા. પછી પરીક્ષિતનો સર્વ ત્યાગ થયો ત્યારે અધિકારી શ્રીભાગવતના થયા. જ્યારે શુકદેવજીએ રાત દિવસ (સાત દિવસ) સુધી કથા કહી ત્યારે સાતમા દિવસે ભગવત્પ્રાપ્તિ થઇ. તેવો જ આ શ્રીભાગવત રૂપ પુષ્ટિમાર્ગ છે એના અધિકારી નિરપેક્ષ હોય તેનાજ માથે આ માર્ગ હોય અને જેને અધિકાર મળે અહંકાર વધે તેને કંઇ ફલ સિદ્ધ ન થાય.

તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો અધિકાર અમે કોને દઇએ? કોનો બગાડ કરીએ? ત્યારે રામદાસજી સાંભળીને ચુપ થઇ રહ્યા. એટલામાં સેન ભોગનો સમય થયો. ત્યારે સેન ભોગ શ્રીગુસાંઇજીએ સરાવ્યા. પછી સેન આર્તિ કર્યા પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પૂછે, કે મહારાજ! કૃષ્ણદાસની તો દેહ છુટી અને અધિકારી વિના ચાલશે

के ऊपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत होयके बैठे हैं। तब कृष्णदास अधिकारी ने गोपीनाथदास ग्वाल सों जैश्रीकृष्ण किये और कह्यो, जो–अरे भैया! गोपीनाथदास ग्वाल! तू मेरी विनती श्रीगुसांईजी सों करियो, और कहियो, जो–आपके अपराधतें मेरी यह अवस्था भई है। और श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं सो आपकी कृपा ते देत हैं।

भावप्रकाश—सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे अधिकार को दुसाला श्रीगुसांईजी ने कृष्णदास कों (दुबारा) उढ़ायो। तब कृष्णदास ने यह पद गायो— 'परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथे।' सो यह पद गाय के कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–महाराज! मैं छै महिना लों आपकों विप्रयोग करायो, सो आपु मेरो अपराध क्षमा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे। सो यह श्रीगुसांईजी आपु कहे, तासों श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं, ओर बोलत हैं बातें करत हैं। परंतु श्रीगुसांईजी आपु अपराध क्षमा नाहीं किये हैं, तासों प्रेतयोनि छूटत नाहीं है। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर सों हू कहते, जो–महाराज! मोकों दरसन देत हो, सो प्रेतयोनि क्यों नाहीं छुड़ावत हो? तब गोवर्द्धननाथजी कहे, जो–यह हमारे हाथ है नाहीं, उद्धार तो तेरो श्रीगुसांईजी के हाथ है। सो काहेतें? जो–

પાસે એક પીપળની નીચે ખેલે છે અને પીપળની ઉપર કૃષ્ણદાસ અધિકારી પ્રેત થઇને બેઠા છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ ગોપીનાથદાસ ગ્વાલને જય શ્રીકૃષ્ણ કર્યા અને કહ્યું, કે અરે ભાઇ! ગોપીનાથદાસ ગ્વાલ! તૂ મારી વિનંતિ શ્રીગુસાંઇજીને કરજે અને કહેજે કે આપના અપરાધથી મારી આ અવસ્થા થઇ છે અને શ્રીગોવર્દ્ધનધર દર્શન દે છે તે આપની કૃપાથી દે છે.

ભાવપ્રકાશ—હવે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની આગળ અધિકારનો દુશાલો શ્રીગુસાંઇજીએ કૃષ્ણદાસને (બીજીવાર) ઓઢાડ્યો (હતો) ત્યારે કૃષ્ણદાસે આ પદ ગાયું (હતું). 'પરમ કૃપાલ શ્રીવલ્લભ નંદન'. એ પદ ગાઇને કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ! મેં છ મહિના સુધી આપને વિપ્રયોગ કરાવ્યો તે આપ મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે કે તમારો અપરાધ શ્રીનાથજી ક્ષમા કરશે. એ શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધર દર્શન દે છે અને બોલે છે અને વાતો કરે છે. પરંતુ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અપરાધ ક્ષમા નથી કર્યો તેથી પ્રેતયોની છુટતી નથી અને કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પણ કહેતા કે મહારાજ! મને દર્શન દો છો તો પ્રેતયોની કેમ છોડાવતા નથી? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાજી કહે, એ અમારા હાથમાં નથી.

कौन जीवको बिगार करै ? जो-कोई अधिकार लेयगो ताको बिगार होयगो। तासों तुम एक काम करो, जो-अधिकार को दुसाला ले सबके आगे कहो, जाकों अधिकार करनो होय सो दुसाला ओढ़ो। तब जो आयके कहे ताकों देऊ। सो जाकों गिरनो होयगो सो आपुही आवेगो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सेन कराये। पाछें दूसरे दिन राजभोग आरती के समय सगरे व्रजवासी वैष्णव भेले करिके श्रीगुसांईजी आपु दुसाला हाथ में लियो। पाछें सबनकों सुनायके कह्यो, जो-जाकों श्रीनाथजी के घर को अधिकार करनो होय सो या दुसाला कों ओढ़ो। यह सुनिके कितनेकने कही, जो-हम करेंगे। सो पहले एक क्षत्री बोल्यो हतो, सो ताकों दुसाला उढ़ायो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी की आरती करि अनोसर कराय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे।

पाछें कछुक दिन बीते तब एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजी की भैंस खोय गई, सो बरहे में निकसि गई। तब भैंस ढूंढिवे के लिये गोपीनाथदास ग्वाल और पांच सात ग्वाल पूछरी की ओर गये। वे सब परम कृपापात्र भगवदीय हते। सो तब देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी सखान सहित पूछरी पास एक पीपरके नीचे खेलत हैं। और पीपर

નહીં. તેથી અમે કોને અધિકાર દઇને (તેનો) બગાડ કરીએ ? તેથી આપ કહો તેને અધિકારી કરીએ. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કહે, કે અમે પણ કયા જીવનો બગાડ કરીએ ! જે કોઈ અધિકાર લેશે તેનો બગાડ થશે. તેથી તમે એક કામ કરો કે અધિકારનો દુશાલો લઇને બધાની આગળ કહો જેને અધિકાર કરવો હોય તે દુશાલો ઓઢે. ત્યારે જે આવીને કહે તેને દો. જેને પડવું હશે તે આપ મેળે જ આવશે. તે પછી શ્રી ગુસાંઇજીએ પોતે પ્રસન્ન થઇને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને સેન કરાવ્યા. પછી બીજા દિવસે રાજભોગ આર્તિના સમયે બધા વ્રજવાસી વૈષ્ણવોને ભેગા કરીને શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે હાથમાં દુશાલો લીધો. પછી બધાને સંભળાવીને કહ્યું, કે જેને શ્રીનાથજીના ઘરનો અધિકાર કરવો હોય તે આ દુશાલાને ઓઢે. એ સાંભળીને કેટલાકે કહ્યું, કે અમે કરીશું. ત્યારે પહેલાં એક ક્ષત્રી બોલ્યો હતો તેને દુશાલો ઓઢાડ્યો. તે પછી શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની આરતી કરી અનોસર કરાવી શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીગોકુલ પધાર્યા.

પછી કેટલાક દિવસ વિત્યા ત્યારે એક સમય શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની ભેંસ ખોવાઇ ગઇ. તે જંગલમાં નિકળી ગઇ ત્યારે ભેંસ ખોળવા માટે ગોપીનાથદાસ ગ્વાલ અને પાંચ સાત ગ્વાલ પૂછરીની તરફ ગયા. એ બધા પરમ કૃપા પાત્ર ભગવદીય હતા. ત્યારે તે જુએ તો શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી સખાઓ સહિત પૂછરી

के ऊपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत होयके बैठे हैं। तब कृष्णदास अधिकारी ने गोपीनाथदास ग्वाल सों जैश्रीकृष्ण किये और कह्यो, जो–अरे भैया! गोपीनाथदास ग्वाल! तू मेरी बिनती श्रीगुसांईजी सों करियो, और कहियो, जो–आपके अपराधतें मेरी यह अवस्था भई है। और श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं सो आपकी कृपा ते देत हैं।

भावप्रकाश—सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे अधिकार को दुसाला श्रीगुसांईजी ने कृष्णदास कों (दुबारा) उढ़ायो। तब कृष्णदास ने यह पद गायो— 'परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथे।' सो यह पद गाय के कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो–महाराज! मैं छे महिना लों आपकों विप्रयोग करायो, सो आपु मेरो अपराध क्षमा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो–तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे। सो यह श्रीगुसांईजी आपु कहे, तासों श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं, और बोलत हैं बातें करत हैं। परंतु श्रीगुसांईजी आपु अपराध क्षमा नाहीं किये हैं, तासों प्रेतयोनि छूटत नाहीं है। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर सों हू कहते, जो–महाराज! मोकों दरसन देत हो, सो प्रेतयोनि क्यों नाहीं छुड़ावत हो? तब गोवर्द्धननाथजी कहे, जो–यह हमारे हाथ है नाहीं, उद्धार तो तेरो श्रीगुसांईजी के हाथ है। सो काहेतें? जो–

પાસે એક પીપળની નીચે ખેલે છે અને પીપળની ઉપર કૃષ્ણદાસ અધિકારી પ્રેત થઇને બેઠા છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ અધિકારીએ ગોપીનાથદાસ ગ્વાલને જય શ્રીકૃષ્ણ કર્યા અને કહ્યું, કે અરે ભાઇ! ગોપીનાથદાસ ગ્વાલ! તૂ મારી વિનંતિ શ્રીગુસાંઇજીને કરજે અને કહે જે કે આપના અપરાધથી મારી આ અવસ્થા થઇ છે અને શ્રીગોવર્દ્ધનધર દર્શન દે છે તે આપની કૃપાથી દે છે.

ભાવપ્રકાશ—હવે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની આગળ અધિકારનો દુશાલો શ્રીગુસાંઇજીએ કૃષ્ણદાસને (બીજીવાર) ઓઢાડ્યો (હતો) ત્યારે કૃષ્ણદાસે આ પદ ગાયું (હતું). 'પરમ કૃપાલ શ્રીવલ્લભ નંદન'. એ પદ ગાઇને કૃષ્ણદાસે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે મહારાજ! મેં છ મહિના સુધી આપને વિપ્રયોગ કરાવ્યો તે આપ મારો અપરાધ ક્ષમા કરો. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે કે તમારો અપરાધ શ્રીનાથજી ક્ષમા કરશે. એ શ્રીગુસાંઇજી પોતે કહે, તેથી શ્રીગોવર્દ્ધનધર દર્શન દે છે અને બોલે છે અને વાતો કરે છે. પરંતુ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે અપરાધ ક્ષમા નથી કર્યો તેથી પ્રેતયોની છુટતી નથી અને કૃષ્ણદાસ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને પણ કહેતા કે મહારાજ! મને દર્શન દો છો તો પ્રેતયોની કેમ છોડાવતા નથી? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાજી કહે, એ અમારા હાથમાં નથી.

लीला में श्रीचंद्रावलीजी को शाप है, जो–प्रेतयोनि होय। सो कौन छुड़ावे ? तासों यद्यपि श्रीस्वामिनीजी की सखी ललिता रूप (कृष्णदास) हैं। परंतु आगे को वचन विचारि नहीं छुडावत हैं। तासों कृष्णदास ने गोपीनाथदास ग्वाल सों कह्यो, जो–तू मेरी विनती श्रीगुसांईजी सों करियो, जो–श्रीगुसांईजी की कृपा विना मेरी गति नाहीं है।

और बिलछू की ओर बाग में आमके वृक्ष के नीचे रुपया सौ एक कुलरा में भरिके गाड़े हैं, सो निकासि के कूप के ऊपर को मोहड़ो बनवाय दीजियो। यह श्रीगुसांईजी सों कहियो। और श्रीनाथजी की भैंस तुम ढूंढिवे कों आये हो सो उह घना में चरत है। पाछे गोपीनाथदास ग्वाल घना में तें भैंस लेके गोपालपुर आये। सो भैंस बांधि गोदोहन गाय भैंस को किये। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी की सेन आरती करिके अनोसर कराय परवत तें उतरे और अपनी बैठक में आयके बिराजे। तब गोपीनाथदास ग्वाल ने श्रीगुसांईजी कों दंडवत करिके कह्यो, जो–महाराज ! आज श्रीनाथजी की भैंस खोय गई हती सो ढूंढ़न कों पूछरी की ओर गये हते। तहां कृष्णदास अधिकारी प्रेत भये देखे हैं सो कृष्णदास पीपर के वृक्ष के ऊपर बैठे हैं। कृष्णदास ने मोकों भगवत् स्मरण कियो हतो। और

ઉદ્ધાર તો તારો શ્રીગુસાંઇજીના હાથ છે કેમકે ? લીલામા શ્રીચંદ્રાવલીજીનો શાપ છે. કે પ્રેતયોની થાવ. તે કોણ છોડાવે ? તેથી યદ્યપિ શ્રીસ્વામિનીજીની સખી લલિતા રૂપ કૃષ્ણદાસ છે પરંતુ આગળનું વચન વિચારીને છોડાવતા નથી. તેથી કૃષ્ણદાસે ગોપીનાથદાસ ગ્વાલને કહ્યું, કે તૂં મારી વિનંતી શ્રીગુસાંઇજીને કરજે, કેમકે શ્રીગુસાંઇજીનો કૃપા વિના મારી ગતિ નથી.

અને બિલછુની તરફ બાગમાં આંબાના વૃક્ષની નીચે રૂપીઆ સો એક કુલડામાં ભરીને ગાડયા છે. તે કાઢીને કુવાના ઉપરનું મહોડું બનાવડાવી દેજો એ શ્રીગુસાંઇજીને કહેજો. વળી શ્રીનાથજીની ભેંસ તમે ખોળવા આવ્યા છો તે એ ઘના (ઝાડોની સઘન ઘટા) માં ચરે છે. પછી ગોપીનાથદાસ ગ્વાલ વનામાંથી ભેંસ લઇને ગોપાલપુર આવ્યા. તે ભેંસ બાંધી ગોદોહન ગાય-ભેંસનું કર્યું. તે પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે શ્રીનાથજીની સેનઆર્તિ કરીને અનોસર કરાવી પર્વતથી ઉતર્યા અને પોતાની બેઠકમાં આવીને બિરાજ્યા. ત્યારે ગોપીનાથદાસ ગ્વાલે શ્રીગુસાંઇજીને દંડવત્ કરીને કહ્યું, કે મહારાજ ! આજ શ્રીનાથજીની ભેંસ ખોવાઇ ગઇ હતી તે ખોળવાને પૂછરીની તરફ ગયા હતા. ત્યાં કૃષ્ણદાસ અધિકારીને પ્રેત થયેલા દેખ્યા છે. કૃષ્ણદાસ પીપળના

कृष्णदास ने आपसों यह विनती करी हैं, जो-मैं प्रेत हूं, मैंने आपको अपराध कियो है; तासों मोकों प्रेत योनि भई है। आपु कें हाथ मेरो उद्धार है। और बाग में आम के वृक्ष के नीचे कुलरा में रुपया सौ गड़े हैं। सो निकासि के कुँआ को मोहड़ो बनवायवे को कह्यो है। ओर भैंस हू कृष्णदास ने बताय दीनी है, सो हम ले आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने मन में विचारे जो-कृष्णदास कों बड़ो दुःख है। सो अब याकों प्रेतयोनि में सों छुड़ावनो, यह कहिके तत्काल उठिके बाग में पधारे। तब रुपया १००) निकासि के नयो अधिकारी कियो हतो, सो वाकों देके कह्यो, जो-ये रुपयान को कृष्णदास वारे कूँआ को मोहड़ो बनवाइयो। ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु वाही रात्रि कों असवार होयके मथुराजी पधारे। पाछे प्रातःकाल भये श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीहस्त सों कृष्णदास को क्रिया-कर्म करि, ध्रुव-घाट ऊपर श्राद्ध कियो, और कृष्णदास कों प्रेतयोनि छुड़ाय के दिव्य सरीर करिके लीला में प्राप्त किये। सो बिलछू स्याम्हे गिरिराज में बारी, ता द्वार के मुखिया कृष्णदास हैं, सो तहां जायके बिराजे। सो या प्रकार कृष्णदास की लीला-प्राप्ति श्रीगुसांईजी आपु कीये।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-श्रीगुसांईजी की कृपा तें

વૃક્ષ ઉપર બેઠા છે કૃષ્ણદાસે મને ભગવદ્દસ્મરણ કર્યા હતા અને કૃષ્ણદાસે આપને આ વિનંતી કરી છે, કે હું પ્રેત છું. મેં આપનો અપરાધ કર્યો છે તેથી મને પ્રેતયોની પ્રાપ્ત થઇ છે. આપના હાથે મારો ઉદ્ધાર છે અને બાગમાં આંબાના વૃક્ષની નીચે કુલડામાં સો રૂપીઆ ગાડયા છે તે કાઢીને કુવાનું મહોડું બનાવરાવવાને કહ્યું છે. વળી ભેંસ પણ કૃષ્ણદાસે બતાવી દીધી છે તે અમે લઇ આવ્યા છીએ. ત્યારે શ્રીગુસાંઇજી પોતે પોતાના મનમાં વિચારે, કે કૃષ્ણદાસને બહુ દુઃખ છે હવે એમને પ્રેતયોની-માંથી છોડાવવા. એમ કહીને તત્કાલ ઉઠીને બાગમાં પધાર્યા. ત્યારે રૂપીઆ ૧૦૦) કાઢીને નવો અધિકારી કર્યો હતો એને દઇને કહ્યું, કે આ રૂપીઆથી કૃષ્ણદાસવાળા કુવાનું મહોડું બનાવડાવજો. તે પછી શ્રીગુસાંઇજી પોતે એજ રાત્રિએ અસવાર થઇને મથુરાજી પધાર્યા. પછી પ્રાતઃકાલ થયે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે પોતાના શ્રીહસ્તથી કૃષ્ણ-દાસનું ક્રિયા-કર્મ કરી ધ્રુવઘાટ ઉપર શ્રાદ્ધ કર્યું અને કૃષ્ણદાસની પ્રેતયોની છોડાવીને દિવ્ય શરીર કરીને લીલામાં પ્રાપ્ત કરાવ્યા. તે બિલછુ સામે ગિરિરાજમાં બારી છે તે દ્વારના મુખિયા કૃષ્ણદાસ છે ત્યાં જઇને બિરાજ્યા. આ પ્રકારે કૃષ્ણદાસની લીલાપ્રાપ્તિ શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે કરી.

उद्धार न भयो ? सो आपु मथुराजी पधारे और ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध किये ? सो कृपातें (कहा) श्राद्ध अधिक है ? तहां कहत हैं, जो–गोपीनाथदास ग्वाल कृष्णदास कों प्रेत भये देखिके आये । सगरे सेवक ब्रजवासीन के आगे गोपीनाथदास ग्वाल नें श्रीगुसांईजी तें कह्यो, जो–कृष्णदास प्रेत भये हैं । सो आपु सों बिनती करी है, जो–आप मोकों प्रेतयोनि सों छुड़ावो । जो–श्रीगुसांईजी चाहें तो रंचक मन में विचारे तें छुटकारो होय । परंतु पाछे जो सेवक ब्रजवासी कोई प्रेत होय सो श्रीगुसांईजी सों कहे, जो–आपु छुड़ावो । सो तब न छुड़ावें तो दोषबुद्धि होय, तब जीव को बिगार होय । तासों श्रीगुसांईजी आपु श्रीमथुराजी में पधारि के ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध कियो, सो या मिष तें छुड़ाये । सो सबन ने जानी, जो–ध्रुवघाट को श्राद्ध एसो ही है, सो यह महिमा बढ़ाये । सो अपुनो महात्म्य काल–कठिनता जानि छिपाये । सो याको कारन यह है । और दूसरो कारन यह है, जो–कृष्णदास ऐसे भगवदीय हते जो इनके कोटानकोटि पुरुषान को ऊद्धार होय, सो काहेतें ? जो–श्रीभागवत में नृसिंहजी तें प्रह्लाद ने कह्यो है, जो–महाराज ! मेरे पिता को उद्धार होय, तब श्रीनृसिंहजी कहे, जो–जा कुल में भगवद्भक्त होइ सो वाके इकीस पुरुषा तरें । तासों तुम संदेह क्यों करत हो ? सो प्रह्लादजी तो मर्यादाभक्त भये, और कृष्णदासजी पुष्टिमार्गीय भगवदीय भये । सो इनके तों

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં એ સંદેહ થાય, કે શ્રીગુસાંઇજીની કૃપાથી ઉદ્ધાર ન થયો ? તે પોતે મથુરા પધાર્યા અને ધ્રુવ ઘાટ ઉપર શ્રાદ્ધ કર્યું ? તે કૃપાથી શું શ્રાદ્ધ અધિક છે ? ત્યાં કહે છે, કે ગોપીનાથદાસ ગ્વાલ કૃષ્ણદાસને પ્રેત થયેલા જોઇને આવ્યા. બધા સેવકો વ્રજસાસીઓની આગળ ગોપીનાથદાસ ગ્વાલે શ્રીગુસાંઇજીને કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ પ્રેત થયા છે તેમણે આપને વિનંતી કરી છે કે આપ મને પ્રેતયોનીથી છોડાવો. જેથી શ્રીગુસાંઇજી ચાહે તો રંચક મનમાં વિચારે તો છુટકારો થાય. પરંતુ પછી જો સેવક વ્રજવાસી કોઇ પ્રેત થાય તો શ્રીગુસાંઇજીને કહે, કે આપ છોડાવો. ત્યારે ન છોડાવે તો દોષ બુદ્ધિ થાય. ત્યારે જીવનો બગાડ થાય. તેથી શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીમથુરાજીમાં પધારીને ધ્રુવ ઘાટ ઉપર શ્રાદ્ધ કર્યું. એ બહાને છોડાવ્યા. તેથી બધાએ જાણ્યું કે ધ્રુવ ઘાટનું શ્રાદ્ધ એવુંજ છે. આ મહિમા વધારી અને પોતાનું માહાત્મ્ય કાલ—કઠિણ જાણીને ઢાંકયું. એનું કારણ આ છે. બીજું કારણ એ છે કે કૃષ્ણદાસ એવા ભગવદીય હતા કે એમના તો કોટાન કોટી પુરખાઓનો ઉદ્ધાર થાય કેમકે શ્રીભાગવતમાં શ્રીનૃસિંહજીને પ્રહ્લાદે કહ્યું, કે મહારાજ ! મારા પિતાનો ઉદ્ધાર થાય. ત્યારે શ્રીનૃસિંહજી કહે, કે જે કુલમાં ભગવદ્ ભક્ત થાય તેના એકવીશ પુરખા તરે તેથી તમે સંદેહ કેમ કરો છો ? તે પ્રહ્લાદજી તો મર્યાદા ભક્ત થયા અને કૃષ્ણદાસજી તો પુષ્ટિમાર્ગીય ભગવ-

कोटानकोटि पुरुषान को उद्धार है। परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संबंध विना लीला में प्रवेस न होय। तासों कृष्णदास के मिष करि सृष्टि में मुक्त किये। सो काहे तें? जो–कृष्णदासजी, श्रीगुसांईजी, सगरो श्रीगोवर्द्धनधर को परिकर अलौकिक है। सो यहां ईर्षा नाहीं है। सो भूमि पर हू भगवद्‌लीला जानि कहनों, सुननों।

सो या प्रकार कृष्णदास की वार्ता महा अलौकिक है। तासों श्रीगुसांईजी कहे, जो–कृष्णदास ने रासादिक कीर्तन ऐसे अद्‌भुत किये सो कोई दूसरे सों न होय। और श्रीआचार्यजीके सेवक होयके सेवा हू ऐसी करी, जो–दूसरे सों न बनेगी, और श्रीनाथजी को अधिकार हू ऐसो कियो जो दूसरे सों न होयगो। सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कृष्णदास की सराहना किये। सो वे कृष्णदास अधिकारी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धनधर सदा प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं। तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई कहिए ॥८४॥

इति श्री चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये
ताको भाव श्री हरिरायजी कह्यो, सो संपूरणम्।

દીય થયા. તો એમના તો કોટાન કોટી પુરખાઓનો ઉદ્ધાર છે પરંતુ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સંબંધ વિના લીલામાં પ્રવેશ ન થાય. તેથી કૃષ્ણદાસના મિષ કરી સૃષ્ટિમાં મુક્ત કર્યા. કેમકે કૃષ્ણદાસજી, શ્રીગુસાંઇજી, બધો શ્રીગોવર્દ્ધનધરનો પરિકર અલૌકિક છે. અહીં ઇર્ષા નથી. તેથી ભૂમિ ઉપર પણ ભગવદ્ લીલા જાણી કહેવું સાંભળવું.

આ પ્રકારે કૃષ્ણદાસની વાર્તા મહા અલૌકિક છે. તેથી શ્રીગુસાંઇજી કહે કે કૃષ્ણદાસે રાસાદિક કીર્તન એવાં અદ્દભુત કર્યાં, કે બીજાથી ન થાય અને શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થઇને સેવા પણ એવી કરી જે બીજાથી ન બને અને શ્રીનાથજીનો અધિકાર પણ એવો કર્યો કે બીજાથી ન થાય. આ પ્રકારે શ્રીગુસાંઇજીએ પોતે શ્રીમુખથી કૃષ્ણદાસનાં વખાણ કર્યાં. એ કૃષ્ણદાસ અધિકારી શ્રીઆચાર્યજીના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. એમના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનધર સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી એમની વાર્તાનો પાર નથી, તેથી એમની વાર્તા અનિર્વચનીય છે, તે ક્યાં સુધી કહીએ? વાર્તા ॥ ૮૪ ॥

ઇતિશ્રી ચૌરાસી વૈષ્ણવન કી વાર્તા શ્રીગોકુલનાથજીએ પ્રકટ કરી તેનો ભાવ શ્રીહરિરાયજીએ કહ્યો તે સંપૂર્ણમ્।

* राग-बिहाग *

★

दृढ इन चरनन केरो भरोसो, दृ० ॥ टेक ॥

श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिना सब जगमांझ अंधेरो ॥ १ ॥

साधन और नहीं या कलि में जासों होत निवेरो ।

'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरो बिना मोलको चेरो ॥ २ ॥

(सचित्र)

२५२ वै. की वार्ता (तीन जन्म की भावनावाली)

तीन खंड के २८)

मिलने का पता :—(१) मोरवाला जीन, डभोई.

(२) निरंजनदेव शर्मा, बंगालीघाट, मथुरा.